साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक ८ रविवार, १ जनवरी १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन—२५० रुपये विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष । ३१०१५०

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस धूम धाम से मनाया गया

२५ दिसम्बर का दिन आर्य समाज के इतिहास मे ऐसे निर्भीक सन्यासी, गुरुकुल शिक्षा के प्रणेता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का शहीदी दिवस है। उनकी स्मृति मे आज प्रातः श्रद्धानन्द बलिदान भवन मे ९ बजे यज्ञ सम्पन्न करने के उपरान्त शोभायात्रा प्रारम्भ की गई, जिसमे सदा की भाति हाथी, घोडे, रथो पर नेता, विद्वान, सन्यासी शोभायमान थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा कार्यकर्त्ता प्रधान बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट विशेष रथ पर विराजमान थे। नेता सन्यासी विद्वान आर्य नर-नारी, बालक-बालिकायें, गुरुकुल डी०ए०वी० सस्थान आदि के छात्र सभी जलूस मे चल रहे थे। ५ किलोमीटर की यात्रा, श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर लाहौरी गेट, खारी बावली, लालकुआ, हौजकाजी, चावडी बाजार, नई सडक घण्टाघर, चादनी चौक होकर लालकिला पर पहुची।

लालकिले के सामने प्रागण मे आर्य नेता श्री सोमनाथजी मरवाह अधिवक्ता सुप्रीमकोर्ट की अध्यक्षता मे विशाल जन सभा का आयोजन किया गया जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव श्री सूर्यदेव जी कुलाधिपति गुरुकुल कागडी, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आदि प्रमुख नेताओ के श्रद्धानन्द की स्मृति मे भाषण हुए।

इस अवसर पर स्व० मेजर अश्विनी कुमार "कण्व" की स्मृति मे प्रतिवर्ष उनके परिवार द्वारा एक विद्वान को सम्मानित किया जाता है। आज इस पुरस्कार से सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मन्त्री आर्यसमाज के अनथक कार्यकर्त्ता स्वतन्त्रता सेनानी, विद्याभास्कर डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, एम ए "पी एच डी" को सम्मानित किया गया। सम्मान के उत्तर मे शास्त्री जी ने स्व० श्री कण्व को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि देते हुए कहा—

स जातो एन जातेन याति वश समुन्नतिम्।

वही पैदा हुआ है जिसके पैदा होने से वश परिवार उन्नति को प्राप्त हो, वह बहादुर आर्य परिवार के आर्य पुत्र थे। सभी परिवारों मे ऐसे कण्व जैसे होनहार पुत्ररत्न पैदा हो—जो अपने कुल परम्परा को कीर्ति प्रदान करें।

वेद मन्त्र की व्याख्या

एदमगन्म देव यजनम्पृथिव्या यत्र देवासो अजुषन्त विश्वे।
ऋक्सामाभ्या सन्तरन्तो यजुर्भीरायस्पोषेण समिषा मदेम।

इमा आप शमुमे सन्तु देवी। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन हिंसी।

पदार्थ—(आ) समन्तात (इदम) वक्ष्यमाणम (अगन्म) प्राप्नुयाम (देव यजनम) देवाना विदुषा यजन पूजन तेभ्यो दान च (पृथिव्या) भूमेर्मध्ये (यत्र) देशे (देवास) विद्वास (अजुषन्त) प्रीतवन्त सेवित वन्त (विश्वे) सर्वे (ऋक्सामाभ्याम्) ऋचन्ति स्तुवन्ति पदार्थान्येन सऋग्वेद सामयन्ति सान्त्वयन्ति कर्माणि फल प्राप्नुवन्ति येन स सामवेद ऋक् च साम चताभ्याम (स तरन्त) दुखस्यान्त प्राप्नुवन्त (यजुर्भि) यजुर्वेदस्थ मन्त्रोक्तै कर्मभि (राय) धनस्य (पोष्यण) पुष्टया सम) सम्यगर्थे (इषा) इष्ट विद्ययान्ना-दिवा (मदेम सुखयेम (अय) विकरण०प्रत्यय (इमा) प्रत्यक्षा (आप) जलानि (शम) सुख कारिका (उ) वितर्के (मे) मम (सन्तु) भवन्तु (दवी) शुद्ध रोगनाशिका (ओषधे) सोमाद्योषधि गण (त्रायस्व) त्रायताम (स्वधिते) रोगनाशने स्वधितिवज्र वत्प्रवतमान (मा) निषधार्थे (एनम) यजमानम प्राणि समूह वा (हिंसी) हिंस्यात)।

भावथ—जैसे मनुष्य ब्रह्मचय पूवक अग और उपनिषद सहित चारो वदो को पढकर औरा को पढाकर विद्या का प्रकाशित कर और विद्वान होकर उत्तम कर्मो के अनुष्ठान से सब प्राणियो का सुखी करें वैसे ही इन विद्वानो का सत्कार कर इनसे वैदिक विद्या को प्राप्त होकर शरीर वा आत्मा की पुष्टि से धन का अत्यन्त सचय करके सब मनुष्यो को आनन्दित होना चाहिए। (यजुर्वे० चतुर्थ अध्याय प्रथम मन्त्र)

प्रजापति ऋषि अबोधर्यो देवता विराड् ब्राह्मी जगती छन्द निषण्द स्वर

श्री सूर्यदेव जी का अभिनन्दन

इस अवसर पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के नव निर्वाचित कुलाधिपति श्री सूर्यदेव जी को सम्मानित किया गया। श्री सूर्यदेव जी लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान आर्य नेता हैं उनके कार्य कलापो से आर्य जगत भली भाति परिचित है।

सभा का सचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री के सयोजकत्व मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

ऋषि दयानन्द का नारा-ए-मस्ताना

संसार का प्रत्येक मानव 'श्रेष्ठ पुरुष' बन जाए !

प्रिंसीपल ओम्प्रकाश

महर्षि दयानन्द के समकालीन, प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खा ने उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था—'हमारा स्वामी जी से घनिष्ठ सम्बन्ध था और हम उनका आदर करते थे।...वे विद्वान् ही नही, एक अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुष थे।'

उन 'अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुष' की सबसे बड़ी इच्छा, सबसे बड़ा उद्देश्य यही था कि दुनिया के सभी मनुष्य 'श्रेष्ठ पुरुष' बनें। इसलिए उन्होंने अपने सर्वतोमुखी आन्दोलन का नाम 'आर्य समाज' रखा, क्योकि 'आर्य' शब्द का मूल अर्थ ही 'श्रेष्ठ पुरुष' है, प्रगतिशील-सदाचारी-ईमानदार व्यक्ति है। अपने 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' मे ऋषिवर लिखते हैं—"जैसे 'आर्य' श्रेष्ठ पुरुषो और 'दस्यु' दुष्ट मनुष्यो को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हू।" उनके मन्तव्य ही नही, उनका समूचा जीवन तथा कृतिया इसका प्रमाण हैं कि वे ससार मे श्रेष्ठ मानवता का प्रचार-प्रसार चाहते थे। अमेरिका के परोक्षदर्शी विद्वान श्री एण्ड्रूज ने महर्षि की शुद्ध सात्विक भावना की पुष्टि करते हुए आर्य समाज को 'असीम प्रेम की आग' की सज्ञा दी थी, जो मानव के द्वेष को मिटा देगी एवं मनुष्य-मनुष्य मे सौहार्द उत्पन्न करके दुनिया मे फैले पाखण्ड को दूर करके ससार को सच्ची मानवता का पाठ पढ़ाकर पृथ्वी को नवजीवन प्रदान करेगी और सर्वत्र मूक शांति के युग का प्रारम्भ होगा।

'श्रेष्ठ पुरुष' का निर्माण

'श्रेष्ठ पुरुष' के निर्माण की प्रक्रिया देव दयानन्द की अनोखी है। वे उसका आधार 'धर्म' को मानते हैं। पर उनकी धर्म की परिभाषा साम्प्रदायिक नही, मानवीय है। वे कहते हैं—'ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना 'धर्म' है। और, अधर्म उनकी दृष्टि मे है—'ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर और पक्षपात रहित अन्यायी होके अविद्या, हठ, अहकार, क्रूरता आदि दोषों से युक्त होके अपना ही हित करना (सोचना) है। वे 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने के लिए अधर्म एव असत्य को छोड़ने पर बल देते हैं। अत 'सत्पुरुष' की व्याख्या करते हुए वे स्पष्टत कहते हैं—'सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबसे हितकारी महाशय ही 'सत्पुरुष' (अच्छे इसान) कहाते हैं।' और, ससार के प्रत्येक व्यक्ति को वे ऐसा ही सत्पुरुष बनाना चाहते हैं।

दिव्य द्रष्टा दयानन्द की कसौटी भी निराली है। वे घोषणा करते हैं—जो सत्य है, उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना छुड़वाना मुझे अभीष्ट है। अधर्मयुक्त चाल चलन का त्याग और धर्मयुक्त आचार का स्वीकार ही मनुष्य धर्म है, सच्ची मानवता है।' वे आगे लिखते है मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुख दुख और हानि लाभ को को समझे, न कि दूसरो के अधिकार, धन सम्पत्ति, छीनने तथा युद्ध वैमनस्य आदि द्वारा अन्य लोगो के उत्पीडन मे लगा रहे।

अद्भुत योजना

महर्षि की मनुष्य निर्माण की योजना भी अद्भुत है। वे कहते हैं कि मनुष्य पहले अच्छी तरह समझ ले कि दुनिया मे जो कुछ दिखता है, वह महान शक्ति ईश्वर (ईशावास्यमिद सर्वम्) से व्याप्त है, वही उसका निर्माता, पालक व मालिक है। सृष्टिकर्त्ता को मनुष्य निष्ठापूर्वक माने और उसकी कारीगरी को नित्य देखा करे (पश्य तस्य काव्यम्)। उस ब्रह्मा ने मनुष्य के आनन्द भोग के लिए जो सूर्य-चन्द्र, भूमि-आकाश, पर्वत-समुद्र, हवा-पानी, दूध-मलाई, फल-फूल, सब्जी-तरकारी तथा पत्नी पुत्र, कोठी-कार आदि बनाए या दिए हैं, उसका मजे से भोग करे, पर उस 'दाता' को भूले नहीं, उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना नित्य करते रहे। भोग्य पदार्थो का रसास्वादन भी वह मधुमक्खी की तरह करे, उनमे फसे नहीं। तरह मनुष्य अपनी आत्मा को जितना परमात्मा के सुपुर्द रखेगा तथा प्राकृतिक नियमों के अनुसार जीवन-यापन करता रहेगा, उतना ही अधिक वह 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने की ओर अग्रसर होता रहेगा।

फिर अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे महर्षि मनुष्य-निर्माण की योजना को बढ़ाते हैं। वे कहते हैं कि बच्चा पैदा होने से पहले ही मां-बाप संकल्प लें कि गर्भावस्था मे ही बच्चे मे 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने के बीज डालने हैं। तदर्थ दोनों को मर्यादा पालन करना होगा और सयम बर्तना होगा। मा (जननी) को तो विशेष रूप से शुद्ध विचार, शुद्ध आचार, शुद्ध व्यवहार एव शुद्ध आहार सेरहना होगा। 'मातृमान् पितृमान् पुरुषो वेद'—बालक को 'श्रेष्ठ पुरुष' बनाने की योजना 'श्रेष्ठ माता-पिता' ही बना सकेंगे। उसके लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, स्वास्थ्य चरित्र का ध्यान बड़ी सावधानी से रखना होगा, ताकि उम्र के बढ़ने के साथ-साथ बच्चे का शारीरिक, मानसिक एव बौद्धिक विकास ठीक प्रकार से हो सके। माता-पिता और बाद मे आचार्य को इसके लिए विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

गृहस्थाश्रम का महान् दायित्व

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य जीवन को चार आश्रमों या भागों में बांटा है—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। इसमे गृहस्थाश्रम को उन्होंने सर्वोपरि माना है, क्योकि वह अन्यो का मुख्य सहयोगी एव पालक है। उनकी दृष्टि में यह राष्ट्र की धुरी भी है, क्योकि परिवारो का समूह ही तो राष्ट्र है, देश है, जाति है और परिवार सब से शुद्ध पवित्र व व्यावहारिक प्रजातन्त्र है जहा हर सदस्य सहज एव निष्काम भाव से अपना-अपना कर्त्तव्य निभाता है। अत: महर्षि कहते हैं कि जब ब्रह्मचारी लड़का व ब्रह्मचारिणी कन्या अपने आश्रम के दोनो मुख्य काम शरीर की पुष्टि व विद्या की प्राप्ति कर लें, तो युवा-युवती का गुण-कर्म-स्वभाव मिलाकर पाणि-ग्रहण (विवाह) कर देना चाहिए। यह ईश्वर की सृष्टि चलाने के लिए भी आवश्यक है और सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए भी अनिवार्य है। (शेष पृष्ठ ३ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्य युवको से !



युवक न केवल किसी सस्था की रीढ की हड्डी होते है बल्कि राष्ट्र के कर्णधार होते हैं । आर्य समाज मे इस समय अध्ययनशील कर्मठ उच्च चरित्र वाले विद्वान युवको की सख्या कितनी है इसकी मेरे पास कोई सूची नही है । हो सकता है कुछ गुरुकुलो से निकले युवक आर्य समाजो मे सम्मिलित होते हो किन्तु वे केवल समाजो मे कर्मकण्ड कराने के ही इच्छुक होते हैं उनका दायरा वही तक सीमित है । वे पडित जी कहलाने मे ही अपने आपको समादृत समझते हैं । सामाजिक जीवन मे इसके अतिरिक्त उनका कोई महत्व नही है'। कुछ प्रतिभाशाली युवक पोरोहित्य का काम करते-करते इतने पटु बन जाते है कि अपनी दुकान अलग सजा लेते हैं । वे उन पुरोहितो से अधिक आर्थिक लाभ मे रहते हैं जो आर्य समाजो के साथ सम्बद्ध होते हैं ।

आर्य जगत भी उन्ही पण्डितो को अधिक महत्व देता है । घर का पुरोहित उनके लिए "घर का साधु-साधुडा आन गाव का सिद्ध' वाली कहावत चरितार्थ करता है।

बात युवकों की चल रही है अत विचार यह करना है कि इसके अतिरिक्त कितने युवक आर्य समाज से जुडे हुए है। उनकी आर्य समाज मे कितनी हिस्सेदारी है । आर्य युवको मे केवल इतना कहना है कि स्कूल-कालिजो मे जाकर अपनी मित्र मण्डली बनायें और अच्छे प्रतिभाशाली युवको को आर्य समाज की ओर आकर्षित करे ।

बुजुर्ग आर्यजन इस कार्य को पूर्ण नही कर सकते क्योकि उनका अपना सामर्थ्य चुक गया है वे केवल हमारे सम्मान के पात्र है उनके अनुभवो का लाभ हमे उठाना चाहिए सम्भव है उनमे कुछ कमिया भी हो तो हमे उस ओर ध्यान नही देना चाहिए । "यानि-यानि सुचरितानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि' हम केवल उन कार्यों को ध्यान मे रखें जो उन्होने समाज की सेवा की है , आर्य समाज एक प्रशिक्षण केन्द्र है । कोई भी व्यक्ति समाज का सदस्य बनते ही पूर्ण आर्य समाजी नहीं बन जाता है धीरे-धीरे उसको आर्य सिद्धातो का परिचय मिलता है । अपने जीवन मे जितना सीख लेता है उतना ही उसका ज्ञान बढता जाता है । आप भी जिन युवको को अपनी ओर खींचें । यह आवश्यक नही कि वे एक दम आर्यसमाज के सिद्धातो के अनुकूल जीवन यापन करने लगेगे। जीवन पर्यन्त आर्य समाज के सदस्य रहने वाले लोग ही जब पूर्ण नही बन पाये तो नये आगन्तुक युवक से कैसे आशा की जा सकती है। कुछ वृद्ध आर्य जन भी युवको को देख नाक भौं सिकोडने लगते है उनकी आलोचना करने लगते हैं इससे घबराना नही चाहिए ।

युवको मे नशे की प्रवृति बढती जा रही है उन्हे उससे दूर रखने के लिये आवश्यक है कि उनके सामने ऐसी रूप रेखा रखो कि अपने खाली समय का सद्-पयोग सामाजिक कार्यो मे लगा सके । जैसे आजकल ट्यूशन का जोर शोर है ऐसे मे उच्च कक्षाओ के छात्र गरीब जरूरत मन्द छोटी कक्षाओ के छात्रो को निशुल्क पढ़ाने का कार्य करें । इसके लिए आर्य समाज के मन्दिरों का उपयोग किया जा सकता है । प्राय. विद्यार्थी पुराने वस्त्रो को सही अवस्था मे ही पहनना बन्द कर देते हैं । इसके लिए प्रेरणा देकर सभी से बिना फटे पुराने वस्त्र गरीब वस्तियों मे जाकर बाटें जा सकते हैं । वाद-विवाद क्लब बनाये जा सकते है उनमे आज की ज्वलन्त समस्याओ पर विचार किया जा सकता है । धनी परिवार के बच्चो से धन सग्रह करके गरीब छात्रो को पुस्तक कापी कपडे आदि दिए जा सकते है और भी अनेको स्थानीय समस्यायें हो सकती हैं जिनका निराकरण किया जा सकता है। केवल कुछ लोगो के स्वागत सत्कार मे ही अपना समय नष्ट न किया जाए, इसके लिए वृद्ध जनो को छोड देना चाहिए ।

आर्य समाज सामूहिक रूप से राजनीति मे भाग न ले किन्तु युवको को अपना राजनीतिक क्षेत्र बनाना चाहिए जो आर्य समाज के युवको का हल हो वे चाहे तो अपने सामाजिक कार्यो के आधार पर चुनाव लडे या अपनी विचारधारा के किसी उम्मीदवार का समर्थन करें । सर्वे धर्मा राजधर्मे प्रविष्टा को उद्घोष के अपने सामने रखें । आज लाठी बाजी या गदाबाजी व तलवार बाजी का युग नही रहा है । हा ! व्यायाम करना जीवन का आवश्यक अंग होना चाहिए ।

व्यायाम व प्राणायाम शारीरिक व मानसिक स्वास्थ के आवश्यक अग है इनका परित्याग कभी नही करना चाहिये । शिक्षित युवको मे व्यायाम की ओर रुझान कम है इसलिए वे शारीरिक दृष्टि मे दुर्बल होते है अत व्यायाम करने की और प्रेरित करना चाहिये ।

संसार का प्रत्येक मानव

(पृष्ठ २ का शेष)

आजीवन बाल ब्रह्मचारी होते हुए दयानन्द ने 'गृहस्थ' की इतनी ज्यादा महिमा क्यो गाई, इस पर कइयो को अचम्भा अथवा आपत्ति होती है, पर वे तो सत्यधर्म के प्रचारक थे । पति-पत्नी के मेल को वे 'दो आत्माओ का मेल' समझते हैं, जो एक महान् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हुआ । और वह लक्ष्य है तन्तु तन्वन् 'मनुर्भव जनया दिव्य जर्नम्'—संसार का ताना-बाना बुनता हुआ ऐ मनुष्य, तू 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने का निरन्तर प्रयत्न करता रहे और दिव्य सन्तान को उत्पन्न करे ! इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए पत्नी-पति जीवन रथ के दो पहिये है जिनमे पूरा तालमेल होना बहुत जरूरी है, वे एक-दूसरे के सहयोगी भी और पूरक भी, उनमे कोई 'दुर्भाव तो होते की बिल्कुल गुजायश नही ।

विदेशी गुलामी व पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव तथा सिनेमा, रेडियो व टेलीविजन ने तो 'नकली' पति-पत्नी के दिलो को मिलाते हुए दिल के टुकडे हजार कर दिए, छोटी-छोटी मनमुटाव की बातो पर दो आत्माओ के मेल' को तलाक (तोड़) दिया ! पर उस दिव्यद्रष्टा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सस्कारविधि' के अनुसार, विवाह की वेदी पर बैठे वर-वधु से कहलवाया—'समञ्जन्तु विश्वे देवा: समापो हृदयानि नौ' उपस्थित भद्र लोगो हम अपनी प्रसन्नता पूर्व गृहस्थाश्रम मे एकत्र रहने के लिए, जल के समान शांत रहने के लिए एक-दूसरे को स्वीकार करते हैं । यही नही 'ओ३म् मम व्रते ते हृदय दधामि मम चित्त ते अस्तु' के अनुसार एक-दूसरे को अपना 'हृदय, अन्त:करण, चित्त' दे देते हैं और यह मानते है कि परमपिता परमात्मा ने ही हमारा यह 'सयम' रचाया है ।

अब जरा सोचिए कि टी०वी०, सिनेमा आदि का बाजारी 'प्रेम' व्यक्ति को 'श्रेष्ठ पुरुष' बनाएगा या सत्यवक्त दयानन्द द्वारा निर्देशित शुद्ध सात्विक 'प्रेम' !

इस प्रकार शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक तौर पर निर्मित 'श्रेष्ठपुरुष (नेक इसान), अपना कल्याण भी कर पाएगा, देश, धर्म, जाति की सेवा भी कर पाएगा और 'ससार का उपकार' भी। वह खुद सुख शाति से अपना जीवन बिताएगा और दूसरो की शाति भग नही करेगा । तब न तो आतकवादी बनेगा, न चोर-लुटेरा-डाकू बदमाश । यह ससार सदाचारियो का ससार बन जाएगा और भ्रष्टाचार का यहां से खात्मा हो जाएगा । हिन्दू- मुसलमान का फसाद होगा, न मुस्लिम (ईरान) की मुस्लिम (इराक) से लम्बी लडाई । तो कोई सास-बहू से लडेगी, न बेटा-बाप से ! तब मानव-जाति सुख चैन की नीद सो सकेगी और विश्व का मानव वैर-विरोध, लडाई-झगडा, कलह-क्लेश, लोभ लालच की बात न करके श्रेष्ठता व प्यार की बात करेगा । ऐसा ही मानव' ऐसा ही 'श्रेष्ठ पुरुष' ऐसा ही 'नेक इसान' बनाना चाहते हैं ऋषि दयानन्द ससार के प्रत्येक व्यक्ति को ।

आदर्श कुटीर, ३/४५ ए, पजाबी, नई दिल्ली-२६

११५वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, मेस्टन रोड, कानपुर का ११५वा वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के पावन पर्व पर शुक्रवार २४ फरवरी से सोमवार २७ फरवरी १९९५ तक आर्य समाज भवन एव श्रद्धानन्द पार्क मे समारोह पूर्वक मनाया जाना निश्चित हुआ है । नगर कीर्तिन-शोभायात्रा शुक्रवार २४ फरवरी १९९५ तथा महोत्सव २५, २६, २७ फरवरी ९५ तक उत्सव के अवसर पर आर्य जगत के सन्यासियो महोपदेशको एव भजनोपदेशको को आमन्त्रित किया जा रहा है । —डा० विजयपाल शास्त्री, मन्त्री

ऋषि दयानन्द के जीवन का अज्ञातकाल

एतद्विषयक एक लेख आर्य जगत् के १४ अगस्त १९९४ के अंक मे प्रकाशित हुआ है । इस विषय पर ऋषि दयानन्द के जीवनचरित लेखकों के पर्याप्त ऊहापोह किया है । १९६८ के आसपास कलकत्ता के प० दीनबन्धु वेद शास्त्री ने सार्वदेशिक पत्र मे एक लम्बी लेखमाला देकर इस विवादास्पद सामग्री को प्रकाशित किया । तब से निरन्तर स्वामी दयानन्द के जीवन पर गवेषणा करने वाले विद्वानो ने इस सामग्री का समुचित परीक्षण कर इसे कपोलकल्पित तथा स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध मे उपलब्ध अन्त साक्ष्य तथा वहि साक्ष्य से सर्वथा प्रतिकूल सिद्ध किया है । इन विद्वानो मे स्व० आचार्य विश्वश्रवा प्राचार्य श्रीराम शर्मा, आस्ट्रेलिया के प्राध्यापक डा० जार्डन्स प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु, डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री प० मीमासकजी, प० रामवीर शास्त्री, टकारा निवासी प्रा० दयाल आर्य तथा इन पक्तियों के लेखक को सम्मिलित किया जा सकता है ।

हेमचन्द चक्रवर्ती की डायरी के हवाले से यह कहा जाता है कि २२ से ३१ मार्च १८७३ तक स्वामीजी एकान्त मे ग्रन्थ रचना मे सलग्न रहे । इस पर गवेषक प० युधिष्ठिर मीमासक ने टिप्पणी लिखी ऋषि दयानन्द इन दिनो किस ग्रन्थ की रचना मे सलग्न रहे, यह ज्ञात नही हो सका । इन दिनो किसी ग्रन्थ लिखने का वर्णन जीवनचरितो मे उपलब्ध नही होता । ज्ञातव्य है कि ऋषि द्वारा लिखित दो ग्रन्थो (सन्ध्या-१८६३ मे प्रकाशित तथा अद्वैत मत खण्डन-१८७० मे प्रकाशित) के अतिरिक्त उनके सभी ग्रन्थ आज हमे प्राप्त हैं । यदि वादितोष न्याय से यह मान लिया जाय कि इस अवधि मे ऋषि ने अपना आत्म वृत्तात (जिसे पूर्वपक्षी कलकत्ता कथ्य कह कर प्रचारित करते है) लिखा और वह भी एकान्त मे तो यह पूर्वपक्षियो इस कथन से ही विरुद्ध पडता है जिसमे वे कहते है इस कथ्य को लिखने (लिपिबद्ध करने) के लिये ईश्वर चन्द विद्यासागर तथा केशवचन्द्र सेन ने लेखको की नियुक्ति की थी । यदि यह वृत्तान्त लेखको ने लिखा तो इसे एकान्त मे लिखा नही माना जा सकता ।

वस्तुत इस विषय पर इतना कुछ लिखा जा चुका है कि जब तक एक सामान्य पाठक उस सैकडो पृष्ठो मे समाप्त सामग्री को दत्तचित्त होकर, पूर्वापर क्रम को समझ कर नही पढता तब तक वह कुछ भी निर्णय करने की स्थिति मे नही रहता । स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती के तो कलकत्ता सामग्री के खण्डन मे एक पूरी पुस्तक ही लिखी है । पक्तियो के लेखक के पचासो लेख सार्वदेशिक, आर्य मर्यादा, आर्य मार्तण्ड, परोपकारी आदि मे इसी तथाकथित सामग्री की समीक्षा मे छप चुके है । सचाई यह है कि स्वामी दयानन्द ने भारत से भिन्न किसी देश मे कभी प्रवास नही किया जबकि अज्ञात जीवनी के प्रस्तोताओ ने उन्हे तिब्बत, लका तथा नेपाल तक विचरण करा दिया । जो लोग अत्यन्त अवधानपूर्वक महाराज के अत्यन्त प्रामाणिक जीवनचरितों (प० लेखराम प० देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द तथा हरविलास शारदा तथा इन पक्तियो के लेखक द्वारा लिखित) को पढेंगे तो वे अज्ञात जीवनी द्वारा पैदा किये गये भ्रम जाल से मुक्त हो जायेगे ।

इस सामग्री के मिथ्यात्व का एक ही प्रमाण प्रस्तुत कर रहा हू । कलकत्ता कथ्य के समर्थको का कहना है कि १८५५ मे स्वामीजी की मुलाकात हरिद्वार मे अजीमुल्ला, तात्या टोपे, कुवरसिह तथा रानी लक्ष्मीबाई आदि १८५७ के स्वतत्रता सग्राम के सूत्रधारो से हुई । अब स्थालीपुलाक न्याय से लक्ष्मीबाई के जोवन वृत्तात को देखें । रानी का सर्वाधिक प्रामाणिक जीवन चरित्र मराठी लेखक दत्तात्रेय बलवन्त पारसनीस ने लिखा है । इसके अनुसार लक्ष्मीबाई का जन्म १६ नवम्बर १८३५ को हुआ । १८४२ मे उसका विवाह झासी के राजा गगाधर राव के साथ हुआ । १८५१ मे रानी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो तीन मास की आयु पाकर चल बसा । २१ नवम्बर १८५३ को गगाधर राव की मृत्यु हो गई । १८५४ की २७ फरवरी को झासी राज्य को अग्रेजी राज्य मे सम्मिलित करने का निर्णय गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने किया । ७ मार्च १८५४ को झासी का अग्रेजी हुकूमत मे विलीनीकरण हो गया । रानी को ५००० मासिक पेंशन देने का निश्चय हुआ किन्तु रानी ने इसे स्वीकार नही किया ।

रानी ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स की अदालत मे अपील करने के लिये वोमेशचन्द्र बनर्जी (W. C. Banerjee कांग्रेस का प्रथम प्रधान ईसाई बैरिस्टर जिसने १८८५ मे काग्रेस की स्थापना के प्रथम बम्बई अधिवेशन की अध्यक्षता की थी) को अपना वकील बनाकर भेजा, व्यय के लिए ६० हजार रुपये दिये । इसमे समुद्री मार्ग से लन्दन जाने-आने तथा वकील का पारिश्रमिक सम्मिलित था । १२ अगस्त १८५४ को डायरेक्टरों ने अपील खारिज कर दी ।

इस दिनो रानी एक विधवा का सा जीवन-व्यतीत करती रही उसका सारा समय पूजा-पाठ मे व्यतीत होता था । वैधव्य नियमो के अनुसार वह झासी के महल को छोडकर कही (हरिद्वार आदि) बाहर नही गई । ७ जून १८५७ को झासी के देशी सिपाहियो ने विद्रोह किया और बडी सख्या मे अग्रेज स्त्री पुरुषो तथा बच्चों को मार डाला—(७५ पुरुष, १६ स्त्रिया, २३ बच्चे) रानी के झासी के कमिश्नर को पत्र लिखकर यह स्पष्ट किया कि गोरो के इस क्रूर बध मे इसका कोई हाथ नही था । तब तक रानी के मन मे अग्रेजो के प्रति शत्रु-भाव नही था । १८५७ का अन्त हुआ । रानी अब तक अपनी राजधानी मे रही । सेनापति सर ह्यू रोज ने २० मार्च १८५८ को सेना लेकर झासी की ओर प्रस्थान किया । २३ मार्च को झासी का युद्ध आरम्भ हुआ । तीन अप्रैल तक झासी के दुर्ग को जीतने के लिये अग्रेजों के भरसक चेष्टा की । ४ अप्रैल को रानी ने अपनी सैनिक शक्ति को छीजते देखकर झासी से प्रस्थान किया । अपनी राजधानी को अपने प्रथम और अन्तिम बार ४ अप्रैल १८५८ को छोडा । इससे पहले वह कभी अपने नगर से बाहर नही गई । सात वर्ष की अल्पायु मे रानी बनकर झासी के प्रासाद मे १८४२ मे आई और अब १६ वर्ष बाद १८५८ मे अपने झासी का त्याग किया । हरिद्वार जाने और ऋषि से मिलने की सारी कथा कपोलकल्पित है । ज्येष्ठ शुक्ला ७ स० १९१४ वि. मे मात्र तेईस वर्ष की आयु मे रानी ने शहादत प्राप्त की ।

यह विवरण तो केवल यह बताने के लिये ही दिया गया है कि वेद शास्त्री जी ने १८५५ मे रानी तथा गदर के अन्य नेताओ के हरिद्वार मे स्वामीजी से मिलने की जो मिथ्या कथा गढी है उसे १८५७ के इतिहास के परिप्रेक्ष्य मे देखने से उसका मिथ्यात्व भलीभाति सिद्ध हो जाता है । स्वामी दयानन्द का भारत भ्रमण रावलपिण्डी से लेकर दक्षिण मे पूना सतारा, तथा पूर्व मे कलकत्ता, हवडा से लेकर पश्चिम मे राजकोट तक का था । उनके कन्या कुमारी धनुष्कोटि, लद्दाख, नेपाल, ल्हासा (तिब्बत) आदि जाने का कोई प्रमाण आज तक नही मिला । हैरानी की बात है कि बिना ऋषि दयानन्द का गम्भीर तथा पूर्वापर क्रम से विचार किये लोग अन्यथा कथन मे प्रवृत्त हो जाते है तथा इतिहास को भी कथा कहानी बनाकर गवेषक विद्वानों की दृष्टि मे उपहास पात्र बनते है ।

डा भवानी लाल भारतीय

अधिकरण में हिन्दी के प्रयोग को अनुमति हुई

रेलवे दावा अधिकरण (ट्रब्यूनल) मे रेल मन्त्रालय की १५ जून, १९९४ की अधिसूचना द्वारा सम्बन्धित पार्टियो को यह विकल्प दे दिया गया है कि दावा अधिकारियो के समक्ष वे अपने-अपने मामलो की पैरवी हिन्दी अथवा अंग्रेजी में करें । दावा अधिकरण के विकल्प पर अधिकरण के सभी आदेश और निर्णय हिन्दी मे भी हो सकते हैं । उससे उन व्यापारियों को पर्याप्त सुविधा हो गई है जो अपने मामलो की पैरवी हिन्दी मे करना चाहते हैं । यह विकल्प देश के सभी भागो मे लागू है ।

२. इसी प्रकार केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण (सेंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल) के समक्ष पार्टिया अपने कागजात हिन्दी में दायर कर सकती हैं और उन्हें न्याय पीठ अपने समक्ष प्रस्तुत कार्यवाहियों-पैरवी में हिन्दी के प्रयोग को अनुमति दे सकता है । हिन्दी भाषा क्षेत्र मे स्थित पीठों में अन्तिम निर्णय के लिए भी हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दे दी गई है ।

३. दोनो अधिकरणो का दर्जा उच्च न्यायालय के समान है ।

धर्म क्या है ?

सूर्य उदय हुआ है या नहीं, यह बात कहकर बतानी नही पडती । प्रकाश और गर्मी स्वय इस बात का परिचय देते हैं कि सूर्योदय हो गया। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य धर्मात्मा हो तो उसका परिचय यह कर नही दिया जा सकता कि वह मनुष्य धर्मात्मा है, क्योकि उसने सौ बार नाम का जाप किया है, हजार बार गायत्री जपी है, एव वह नित्य धर्म पुस्तक का पाठ करता है। कोई मनुष्य सचमुच महात्मा हो सकता है या नही, इसका पता इस बात से लगता है कि उसके चारो ओर रहने वालों पर उसके व्यवहार से कोई सुखदायक प्रभाव पडता है या नही । अपने चारो ओर की अवस्थाओ मे परिवर्तन धर्मात्मारूपी सूर्य की धूप है। बस यदि हम यह जानना चाहे कि हम धर्मात्मा है या नही, तो इसे हम अपने जाप और पूजा पाठ से नही नाप सकते। इसे हम अपने चारो ओर होने वाले सुखदायक परिवर्तन से जान सकते हैं। लैम्प मे प्रकाश है या नही, इसे हम इस बात से नही नाप सकते कि उसमे पूरा तेल भरा है या नही। लैम्प के प्रकाश का माप केवल इस बात से हो सकता है कि उसके चारो ओर का अन्धकार दूर हुआ है या नही। सूर्य बिना तेल बत्ती के प्रकाशमान है। और बुझा हुआ दीपक तेल-बत्ती के होते हुए भी प्रकाशहीन है। इसी प्रकार कई मनुष्य पूजा पाठ के बिना भी धर्मात्मा हैं, वे सूर्यवत् हैं और कई मनुष्य पूजा पाठ करते रहने पर भी धर्महीन हैं। वे पाखण्डी हैं। परतु साधारण मनुष्यो मे लैम्प के समान प्रकाश उत्पन्न करने के लिए पूजा-पाठ रूपी तेल वत्ती की आवश्यकता रहती है। जो मनुष्य साधारण होते हुए भी पूजा पाठ से तथा सत्सग से हीन हैं, उनका दिया बुझा रहता है। यह बात दूसरी है कि उसके दिए बुझने का कारण पाखण्ड का धुआ नही, अभिमान की आधी है। दिया धुए से बुझे चाहे आधी से—इससे उसके प्रकाशहीन होने मे कुछ अन्तर नही आता। जिस मुहल्ले मे तुम रहते हो यदि उसकी नालिया दुर्गन्ध-युक्त है और चारो ओर कीचड सड रहा है, मच्छरो की बस्तिया बस रही हैं, लोग मैले-कुचैले अनपढ, रोगो के मारे और निर्धनता के सताये हैं, और तुम इन अवस्थाओ मे परिवर्तन करने के लिए कुछ नही कर रहे हो तो मत समझो कि तुम धर्मात्मा हो। चाहे तुम कितनी लम्बी भी समाधि लगाते हो, कितना भजन-कीर्तन करते हो, कितने घण्टे-घडियाल बजाते हो, और कितनी भी सामग्री फूक देते हो, तो भी तुम धर्मात्मा नही हो। यदि तुम्हारे मन्दिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी सन्ध्याओ ने और तुम्हारी पाच नमाजो ने तुम्हारी आखो को गरीबो का दुख देखने के लिए और तुम्हारे हाथो को उनके कष्ट निवारण के लिए प्रेरित नही किया, तो तुम आखे रखते भी अन्धे हो हाथ रखते भी लूले हो। ससार मे जितने भी महात्मा धर्म का प्रचार करने के लिए आए, वह इसी सम्वेदना की भावना का प्रकाश तुम्हारे दिए-बत्ती मे जलाने आये थे। पादरी लोग जब कहते कि मसीह ने अन्धो को आखे दी, बहरों को कान दिए, लूले, लगड़ो को हाथ-पैर दिये तो वह उस महात्मा के कारनामो को ठीक रूप मे पेश नहीं करते। ससार के सभी महात्माओ ने अन्धो को आखें दी, बहरो को कान दिये, लूले-लगडो को हाथ पैर दिये पर इस अभागे ससार ने काम, क्रोध, मोह, लोभ, आलस्य, प्रमाद आदि के घोर विष से अपने आपको अन्धा, बहरा, लूला, लगड़ा बना डाला। जिस समय महात्मा पुरुषो की प्रेरणा से जागृत हुई सम्वेदना की भावना हमे अपने चारो ओर फैली हुई बिगडी अवस्था का परिवर्तन करके, इस धरती को साफ सुथरी और आनन्द भरी बनाने के लिए कटिबद्ध करती हैं, उस समय हमारी खोई आखें वापिस मिल जाती हैं, हमारे बहरे कान सुनने लगते है, और हमारे कटे हुए हाथ-पैर फिर हरे हो जाते हैं। बस जहां यह अपने चारो ओर की अवस्था को सुखमय दशा मे परिवर्तन करने की प्रबल भावना जीती है, वही धर्म है। वही धर्म का स्वरूप है।

धरती की वर्तमान अवस्था

यह धरती एक छोटा सा ब्रह्माण्ड है। अर्थात्, परब्रह्म की शक्ति के गर्भ से निकले हुए अनेक अण्डों मे से एक छोटा-सा अण्डा है। इसका व्यास ८ हजार लबा और परिधि २४ हजार मील है। इस पर इस समय मनुष्य-गणना के अनुसार २ अरब ९० करोड़ मनुष्य बसते हैं। यदि ये सब मनुष्य एक भाषा बोलें, एक मर्यादा में चलें, और इस धरती माता को अपनी माता समझें, समस्त मानव समाज की सेवा को, अथवा, प्राणिमात्र की सेवा को परमात्मा की आराधना का सबसे बड़ा साधन समझें, तो इस धरती पर एक अवर्णनीय सुख का साम्राज्य हो जाये। परन्तु क्या इस समय धरती की जैसी अवस्था होनी चाहिए, वैसी है? क्या मानव जाति की एक मर्यादा है? क्या सम्पूर्ण मानव राष्ट्र को भूमिमाता से प्रेम है? क्या विश्व की एक भाषा है? इस समय भूमिमाता ७० मातृभूमियो मे विभक्त है? इस समय अकेले भारत मे २३ मुख्य भाषाए बोली जाती है। भारत मे छोटी-बडी सब मिलाकर कुल २०० भाषाए है। विश्व का अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है। यदि छोटे-छोटे भाषा भेदो को भुला दें, तो भी विश्व मे इस समय लगभग १०० हजार मुख्य भाषाये बोली जाती हैं। मर्यादाओ की बात तो पूछो ही मत। "मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना, तुण्डे-तुण्डे सरस्वती," अर्थात्, "प्रत्येक खोपडी मे अलग-अलग मत है और हरेक मुह मे अलग-अलग बात।"

सबसे अधिक कष्ट की बात तो यह है, कि मानव-जाति के शत्रु तो आपस मे सगठित है, पर मानव-जाति आपस मे इतनी विभक्त है। ससार के किसी देश के लोगो से पूछिये, कि तुम्हारे देश पर यदि कोई शत्रु आक्रमण करे, तो तुम्हारा कर्त्तव्य क्या है वे निश्चित रूप से उत्तर देंगे, जी जान से उस शत्रु से लडना। यदि उनसे पूछा जाय; कि जब शत्रु ने आक्रमण किया हो, उस समय जो लोग आपस मे लडे, उन्हे आप क्या कहेगे? तो ये निश्चित रूप से ऐसे मनुष्य को हत्यारे, देश-द्रोही आदि नामो से पुकारेंगे। किन्तु क्या यह आश्चर्य की बात नही है, कि मानव जाति के शत्रुओ के घोर आक्रमण की बाढ सिर पर रहते हुए भी ये लोग जो मानव जाति का सर्वोत्तम हित करने की योग्यता रखते हैं, परस्पर लडने मे व्यस्त है। यदि भाईयो को कोई कहे, कि तुम देश-द्रोही हो, राष्ट्र हत्यारे हो, तो ये नि सन्देह लडने, मरने और मारने के लिए तैयार हो जायेंगे। परन्तु यदि किसी शान्त आत्मनिरीक्षण के समय मे वे अपनी ओर देखें, तो उन्हे लज्जा से मुह छिपाना पडे।

इससे पता लगता है कि इस ससार मे धर्म की उचित मात्रा उपस्थित नहीं है। यदि धर्म का बिल्कुल अभाव होता, तो मानव समाज का बिल्कुल विध्वस हो जाता। परन्तु ७० बड़े-बड़े राष्ट्र खडे हैं। वे अपना-अपना अस्तित्व धारण कर रहे हैं। इससे पता लगता है कि धर्म का सर्वथा लोप भी नही हुआ है। किन्तु जब तक मनुष्य समाज इकट्ठा हो कर अपने शत्रुओ से नहीं लड़ता, तब तक धर्म का पूरा विकास हुआ है, यह भी नही कह सकते। जिस दिन सुख की धूप ससार के प्रत्येक कोने मे प्रविष्ट होगी, उस दिन धर्म का सूर्य अपने पूरे प्रताप पर पहुचा है, ऐसा कह सकेंगे।

शोक प्रस्ताव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा शोक श्रद्धांजलि

नई दिल्ली २६ दिसम्बर। भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी का निधन। स्वाधीनता सेनानी, राष्ट्रभक्त और मानवता वादी महापुरुष थे। वे धार्मिक सकीर्णता से परे सर्वधर्म के समर्थक और मानवमात्र के कल्याण के लिए समर्पित महापुरुष थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक समारोहो मे उन्होने पधारकर स्वामी श्रद्धानन्द की अर्ध बलिदान शताब्दी के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी के पर तथा आर्य समाज स्थापना के शताब्दी पर्व पर मानवता का सन्देश दिया था। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर नवस्नातको को सम्बोधित करते हुए उन्होने गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा प्रणाली की महत्ता को रेखांकित किया था।

ऐसे महामानव के प्रति दिल्ली की समस्त आर्य समाजो, शिक्षण सस्थाओ, गुरुकुलो, कालेजो, स्कूलो, ट्रस्टो तथा अन्य सम्बन्धित सस्थाओ की ओर से विनम्र श्रद्धाजलि।

सूर्यदेव, प्रधान

अश्वमेध यज्ञ की वास्तविकता (३)

श्री वेदप्रिय शास्त्री

५—शुन उपप्लावन—

अश्व को रस्सी से बाधकर जल छिड़क कर प्रोक्षण करते है और पानी मे तैराते हैं। पश्चात् एक चार आख वाला पागल कुत्ता मारकर घोडे के पेट के नीचे से पानी मे बहा देते हैं। वास्तव मे यहा एक ऐसा पुतला लेना चाहिए जिसका शरीर आदमी और मुह कुत्ते का हो तथा चार आखें (दो असली और दो आखो जैसे निशान) होनी चाहिए।

इसका तात्पर्य है प्रजा अपने राजा का इस महाकार्य के लिये अभिषेक करती है और इस प्रकार राजा सभी विद्वत्जनो व साधारण जनो का इस हेतु अनुमोदन प्राप्त करता है और यह भाव व्यक्त करता है कि प्रजा मे विचरता हुआ मैं श्वानवृत्ति दुष्ट पुरुषो को जो जाति द्रोही, व्यभिचारी, खुशामदी, दोहरे चरित्र के, बान्ताशी, (उल्टी करके खाने वाले) टुकडे पर ईमान बेचने वाले, वचन से मुकरने वाले लोगो को जनहित के लिए समाप्त कर दूगा जल मे बहाने का तात्पर्य प्रजा मे बिचरने वाले दुष्ट को प्रजा मे बिचरने वाले वरुण अर्थात् गुप्तचर व पुलिस सस्था द्वारा चुन-चुन कर नष्ट करता है। इसके लिए कहा गया है कि "अश्वमेध करना दुष्टो से वैर मोल लेना है।" अश्ववज्र है सो इस वज्र (दण्ड साधन एव न्याय व्यवस्था) से दुष्टो का दमन करना होता है।

अब अश्व को जल से बाहर निकाल कर जब तक शरीर से जल की बूदें टपकती रहती है तब तक आहुतिया दी जाती हैं। इस प्रकार सहस्राहुति तक दी जाती है।

६—सावित्री इष्टि—

तत्पश्चात् सविता देवता वाले मन्त्रो से तीन सावित्री इष्टिया की जाती हैं। ये तीन इष्टियां प्रतिदिन वर्ष भर की जाती है। इन इष्टियो का प्रयोजन यह है कि राष्ट्राध्यक्ष राजा जिस कारण से कोई कृत्य करता है, वह तभी पूर्ण हो सकता है जब सारी प्रजा वही चाहे जो उनका राजा चाहता है। इसके साथ ही राजा भी लोकप्रिय हो और प्रजा भी उसको चाहती हो। विजयाभिलाषी राजा की प्रजा मे भी विजय की अभिलाषा व उत्साह ठाठें मारता हो यह आवश्यक है। इसके लिये राजा का सविता विभाग कार्य करें। सविता, देवो का प्रसविता, जन्म दाता, प्रेरणादायक है। वह लोक बुद्धि को प्रेरित कर उसमे दिव्यता या देवत्व का सचार कर देता है। तब प्रजा देवत्व मे भर जाती है। वह सत्य के प्रति आस्थावान् एव समर्पित हो जाती है। वह सत्य और न्याय के लिये प्राणोत्सर्ग करने को समुद्यत हो जाती है और इसी से यशस्वी रहती है तथा अपने सम्राट को भी यशस्वी देखना चाहती है।

सम्राट भी अपनी प्रजा की भावनाओ का आदर करता हुआ प्रतिदिन सविता परमात्मा से प्रेरणा प्राप्त कर सत्य और न्याय के प्रतिपूर्ण समर्पित व आस्थावान् हो। वह प्राणप्रण से अपनी प्रजा मे यह विश्वास बैठा दे कि उनका सम्राट देव है और वह जो कर रहा है प्रजा के हित व लोक कल्याण के लिए कर रहा है। यही सावित्री इष्टि का रहस्य है। यथा प्रजापति अश्वमेधमसृजत्…(शतपथ १३ १-४१) से स्पष्ट है। अर्थात् प्रजापति ने अश्वमेध रचा वह इससे दूर चला गया। तब दोनो ने उसे खोजने की इच्छा से इष्टियो द्वारा उसका पीछा किया और पुन उसे प्राप्त किया। सो जो इष्टियो से यजन करते है सो उस मेध्य अश्व को यजमान पुन पाना चाहता है, अत निरन्तर एक वर्ष तक इस प्रकार प्रजा को प्रेरित, उत्साहित सन्नद्ध करता रहता है।

७—धृतिहोम—

सावित्री इष्टि के साथ प्रतिदिन धृति होम भी होता है। प्रात काल इष्टि की जाती है और सायकाल धृति होम किया जाता है। इसका तात्पर्य है राष्ट्र मे बेरोजगारी दूर करना और प्रजा के योगक्षेम की अच्छी व्यवस्था करना, इसके बिना कोई प्रेरणा प्रभावशाली नही हो सकती है। इष्टि से योग अर्थात् अप्राप्त की प्राप्ति और धृतियो से प्राप्त की रक्षा व सम्यक् उपभोग होता है।

८—गाथागान—

इस कृत्य मे दो वीणावादक गायक जिनमे एक ब्राह्मण होता है दूसरा क्षत्रिय, वीणा सजाकर वर्ष भर प्रतिदिन गाथा गान करते रहते हैं। ये दोनों साथ-साथ नही गाते। एक दिन मे गाता है दूसरा रात में। ब्राह्मण गायक दिन मे और क्षत्रिय गायक रात मे गाता है। ब्राह्मण गाता है "अयजत" अर्थात् यज्ञ करो और क्षत्रिय गाता है "अजयत" अर्थात् विजय प्राप्त करो। ब्राह्मण का इष्टापूर्त वीर्य है वह इनसे राष्ट्र को समृद्ध करता है। क्षत्रिय का वीर्य युद्ध है सो वह पराक्रम से राष्ट्र को समृद्ध करता है। इसका तात्पर्य ब्राह्मणकार बताता है कि जो अश्वमेध से यज्ञ करता है वह अपगत श्री हो जाता है और जब उसे श्री प्राप्त होती है तब वीणा बजाता है। वीणा वादक वर्ष भर जो गाते हैं सो यजमान मे श्री को धारण कराते हैं। यह वीणा श्री का रूप है। (शतपथ-१३-१ ५-२)

भाव यह है जब विजयाभियान चलेगा तो धन का व्यय बढेगा और समृद्धि न्यून होगी, जन हानि और चिन्ता भी राष्ट्र व्यापी होती है। उसके निराकरण के लिए राष्ट्र मे एक वातावरण बनाने की आवश्यकता होती है। वातावरण बनाने मे गायन, वादन, सगीत, नाटक और काव्य गाथा आदि का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। यहा मीडिया या प्रचार माध्यम का महत्व बताकर राष्ट्रहित मे उसके उपयोग की चर्चा की गई है। यहां दो प्रकार का वातावरण तैयार करना है एक पुरुषार्थ, कर्म एव के प्रति रुचि का आदर का तथा भगवत् भक्ति एव त्याग का और दूसरा पराक्रम, विजयेच्छा, उत्साह एव वीरत्व का। अत ब्राह्मण यज्ञगान अर्थात् कर्म एव श्रम की प्रशस्ति गाता है, पुरुषार्थ युक्त भक्ति का वातावरण बनाता है। परन्तु क्षत्रिय जयगान गाता है और पराक्रम से ब्राह्मण द्वारा उत्पादित पदार्थों की रक्षा करता है। पुरुषार्थहीन भक्ति काम चोरो और हरामखोरो की वृद्धि करती है। केवल विजयगान लूटपाट और अराजकता उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार केवल, श्रमगीत व भक्ति गीत गाने से कमाता कोई और है और भोगता कोई और है। अत केवल ब्राह्मण या केवल क्षत्रिय असमय का राग अलाप कर राष्ट्र की श्री समृद्ध नही कर सकते। किन्तु दोनो समय से गाकर ही ऐसा कर सकते है।

९—अश्वकर्ण मे जप—

तृतीय सावित्री इष्टि मे अध्वर्यु और यजमान अश्व के कान मे एक मन्त्र जपते है। इसमे अश्व की महिमा का वर्णन है। सो इसका भाव है कि राष्ट्र के क्षत्रिय वर्ग को उसके महत्व और शक्ति का बोध कराया जावे, उनके साथ अपनत्व उत्पन्न किया जावें उनका नाम लेकर पुकारना और यह सम्बन्ध बताना कि पृथ्वी हम सबकी माता और द्यौ पिता है। अत हम सब भाई-भाई हैं। यह राष्ट्र हम सबका है इत्यादि ऐसा व्यवहार प्रदर्शन करना जिससे प्रत्येक क्षत्रिय अपने राजा को अपने ही समान और अपना ही समझे। राजा के शत्रु को अपना ही शत्रु समझे। प्रशसा, प्रोत्साहन, अपनत्व व आदरभाव राजा और राष्ट्र दोनो को सुदृढ करता है यह मनोवैज्ञानिक रहस्य है। इसीलिये इस कृत्य का फल बताया है कि शिष्ट और अनुशासित प्रजा उत्पन्न होती है।

१०—आशापालों की नियुक्ति—

अब अश्व को छोड़ने से पूर्व उसकी रक्षा हेतु सौ विवाहित ऐसे राजपुत्रो को नियुक्त करता है जो राजा के समीप सम्मान पूर्वक बराबर बैठने की क्षमता रखते हो। इन्हे आशापाल कहा जाता है। सो इसका तात्पर्य राष्ट्र रक्षा मे विश्वास पात्र लोगो की नियुक्ति करना ही है।

११—अश्वमुञ्चन—

अश्व के कान मे मन्त्र जपकर सौ अन्य अश्वो के साथ छोड़ दिया जाता है। वर्ष भर यथेष्ट विचरता है, स्वेच्छा से आगे बढ़ता है परन्तु पीछे नही लौटने देते। अश्व को पानी मे नही घुसने देते तथा मादा से नही मिलने देते। इसका तात्पर्य है कि विजय यात्रा पर निकले सेनापति व सेना के वीर क्षत्रिय युद्धक्षेत्र मे अभीष्ट सिद्धि पर्यन्त आगे ही बढ़ते रहते, पीछे नही लौटते, पीठ नही दिखाते और सयम पूर्वक रहते हैं। जनसम्पर्क और मोह-माया से दूर रहकर ही सफलता सम्भव है, अन्यथा नही। "राजस्य मूल इन्द्रियजय—(कौटिल्य)पत्नी, बच्चों, इष्ट-मित्रो के मोह तथा सयम हीनता से कर्तव्यच्युत होकर पराजित होने की सम्भावना रहती है। (क्रमश)

गुरुकुल कांगड़ी की रक्षार्थ-गुरुकुल प्रकाशन सजग रहने की भूमिका निभायेगा

विद्यालकार—

गुरुकुल के वर्तमान प्रशासन के साधनों को व्यवस्थित कर गुरुकुल की चरमरती अर्थ स्थिति से छुटकारा दिलाकर आश्रम मे फ्लस शौचालय एव स्नानागार कम्पलेक्स निर्माण मृत प्रात गोशाला में नई दुधारू गाय क्रय कर ब्रह्मचारियो को निःशुल्क दूध, कम्प्यूटर शिक्षा व्यवस्था नया ट्रैक्टर तथा थ्रेसर क्रय भावी दृढ अर्थव्यवस्था के लिए ३५ बीघा मे आम का नया बाग लगाकर अनुपयोगी जमीन को उत्पादक बनाकर आय वृद्धि उपेक्षित स्नानाघाट का जीर्णोद्धार सन्तोषजनक भोजन व्यवस्था, कूडो के लिए जगह जगह गड्ढे खुदवाकर खडञ्जा लगवाकर यथाशक्ति-यथासम्भव उचित वेतनमान तथा महगाई भत्ता मे कर्मचारियो के स्तर को बनाना, आर्य समाज को ठीक कराकर साप्ताहिक यज्ञ व्यवस्था श्रद्धानन्द चिकित्सालय की सुव्यवस्था, मानविकी सकाय भवन, भौतिकी एव रसायन प्रयोगशाला सूक्ष्म विज्ञान भवन, विश्वविद्यालय कार्यालय विस्तार, डीन कार्यालय तथा दो बडे सभागार कन्या गुरुकुल देहरादून की नवीन छात्रावास निर्माण, केन्द्रीय वातानुकूलित कम्प्यूटर का अलग भवन आदि सन्तोषजनक व्यवस्थायें दो वर्षो मे कर नये आयाम दिये हैं।

उक्त विचार रोहतक से पधारे आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी हरिद्वार के मन्त्री प्रो० प्रकाश वीर विद्यालकार ने अपने दो दिनो के प्रयासकाल मे सभी विभागो का गहन निरीक्षण कर एक सभा को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। इसके साथ ही आर्य विद्या सभा के प्रधान तथा विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष प० सूर्यदेव जी आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती परिद्रष्टा जस्टिस महावीरसिह जी कुलाधिपति प्रो० शेरसिह जी सीनेटर चौ० सूबेसिह जी तथा आर्य विद्या सभा सदस्य डा० सत्यवीरसिह मलिक ने भी गुरुकुल के सभी कार्यो का निरीक्षण करके सन्तोष व्यक्त किये हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D.P.S.O. on 29 30 12 1994 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/94
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/६४ पूर्व भुगतान किए [illegible] नं० यू (सी०) [illegible]
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १ जनवरी १९९५

(पृष्ठ ७ का शेष)

सभा मन्त्री प्रो० विद्यालकार ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रशासन को इतने से ही सन्तुष्ट न रहकर ब्रह्मचारियो के सर्वागीण विकास और उन्नति के लिए वैदिकता से प्रकाश मे सुसस्कारो से युक्त आज के युग मे दृढ विश्वास से खडे होकर अपने जीवन को सार्थक करने के लिए योग्य नागरिको का निर्माण करने हेतु कठोर परिश्रम करना होगा ।

प्रो० प्रकाशवीर जी ने कहा कि आर्य विद्या सभा गुरुकुल के चौमुखी उत्थान के लिए सभी प्रकार के सहयोग देने मे पीछे नही रहेगी । मन्त्री जी ने कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि आर्य विद्या सभा के सकल्प के साथ साथ गुरुकुल के योग्य, समर्पित शिक्षाविद व्यवस्थापटु कुशल कुलपति तथा मुख्याधिष्ठाता डा० धर्मपाल जी की सेवाए उपलब्ध हुई हैं । वही यह कहना भी उचित है कि सहायक मुख्याधिष्ठाता के रूप मे प० महेन्द्रकुमार जी कुलसचिव के रूप मे डा० जयदेव वेदालकार, व्यवसायाध्यक्ष के रूप मे डा० राजकुमार रावत जैसे कर्मठ निष्ठावान सहयोगियो के साथ-साथ कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मचारी मिले हैं ।

दुःखित होकर प्रो० विद्यालकार जी ने कहा कि कुछ अनाधिकृत निहित स्वार्थी तत्व गुरुकुल को गुरुकुल के लिए दान मे दी गई सम्पत्ति को बेचा है और बचने का इरादा कर गुरुकुल की प्रगति को नष्ट कर धर्म तथा दानभाव का मखौल उडाकर जनविश्वासघात करने मे नही हिचक रहे हैं । सन्तोष इस बात का है कि वर्तमान प्रशासन गुरुकुल की सम्पत्ति रक्षार्थ-सजग प्रहरी की भूमिका निभाने के लिए दृढ़ सकल्प है ।

प्रवासकाल मे मन्त्री जी कर्मचारियो की समस्याओं से भी भलीभांति अवगत होकर उचित समय पर समस्याओ का समाधान किये जाने की बात कही ।

अत्यन्त तकनीकी उच्च परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प हुआ

भारत सरकार की भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली के एक पत्र के अनुसार-कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा आयोजित कृषि वैज्ञानिक सेवा/नेट भर्ती परीक्षाओ मे हिन्दी माध्यम का विकल्प दे दिया गया है । इनमें अंग्रेजी का कोई अनिवार्य प्रश्न-पत्र नही होता । यही नहीं मण्डल द्वारा भर्ती के लिए आयोजित साक्षात्कारो मे भी हिन्दी माध्यम का विकल्प दे दिया गया है और इसकी सूचना अभ्यर्थियो को प्रेषित साक्षात्कार पत्रों मे दी जाती है और उनसे हिन्दी या अंग्रेजी माध्यम का विकल्प चुनने का अनुरोध किया जाता है । इसके अलावा व्यावसायिक विषयों के प्रश्न पत्रो को छोड़कर, सभी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र द्विभाषिक रूप मे सुलभ कराये जाते हैं । अब व्यावसायिक विषयों के प्रश्न-पत्रो को भी द्विभाषिक रूप मे तैयार कराने के लिए सकल्पशील प्रयत्न किये जा रहे हैं ।

(जगन्नाथ) सयोजक, राजभाषा कार्य,



सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : -३१०१५० के लिए प्रकाशित । रजि० नं० डी० (एल ११०२४)-६३

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ९ | रविवार, ८ जनवरी १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन—२५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

आर्यसमाज राजौरी गार्डन में पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा, नई दिल्ली द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह एवं श्री सूर्यदेव जी का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति चुने जाने पर अभिनन्दन

विगत रविवार को आर्य समाज राजौरी गार्डन मे पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के सामूहिक समारोह मे श्री सूर्यदेव जी के गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति बनने पर स्वागत किया गया। उस अवसर श्री बी०एल० शर्मा "प्रेम" सासद, श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव, प्रधान, श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उपस्थित होकर आर्य समाज की प्रगति के लिये आर्य जनो का उद्‌बोधन किया।

गुरुकुल दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर नई दिल्ली मे दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बडे समारोह पूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने की। इस अवसर पर श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय डा० प्रेम चन्द श्रीधर, श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली सभा, श्री हरिप्रसाद शास्त्री, आचार्य हरिदेव जी आदि अनेको विद्वानो ने अपने विचार रखे और स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यो पर प्रकाश डाला। श्री सत्यपाल पथिक के मनोहर भजन हुये।

श्री कृष्ण लाल सिक्का जी प्रधान दक्षिण दिल्ली प्रचार सभा ने ग्यारह हजार रुपये वेद विद्यालय गौतम नगर को दान दिया इस प्रकार दक्षिण दिल्ली को अन्य समाजों ने भी अपना आर्थिक सहयोग दिया।

अभिनन्दन समारोह

इस अवसर पर श्री सूर्यदेव जी का गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति बनने पर दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजो की ओर से फूल-मालाओं द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व स्वामी दीक्षानन्द जी ने उन्हे आशीर्वाद दिया।

श्री मदन लाल खुराना, मुख्यमन्त्री
दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली-५४

माननीय खुराना जी, सादर नमस्ते।

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एव सानन्द होगे।

दिल्ली में लाटरी बन्द करे आपने जो सराहनीय कार्य किया है, उनके लिए मैं दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ की ओर से आपको धन्यवाद देता हू। आशा है आप सम्पूर्ण दिल्ली मे मद्य निषेध लागू करने का श्रेय भी प्राप्त करेंगे। नव वर्ष की शुभकामनाओ सहित,

डा० धर्मपाल, महामन्त्री,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वेद मन्त्र की व्याख्या

यौ भरद्वाजमवथो यौ गविष्ठिर विश्वामित्र वरुण मित्र कुत्सम्।
यौ कक्षीवन्तमवथ प्रोत कण्वतौ नो मु चतमहस ।।

भावार्थ—(यौ) जो (मित्र वरुण) मित्र और वरुण तुम दोनो (भरद्वाजम्) अन्न वा बल, वा ज्ञान के धारण करने वाले को (यौ) जो तुम (गविष्ठिरम्) वेद वाणी मे स्थिर को (विश्वामियम्) सबके मित्र को वा सब हैं मित्र जिसके उसको और (कुत्सम्) सगतिशील व दोषों के कतरने वाले को (अवथ) बचाते हो (यौ) जो तुम दोनो (कक्षीवन्तम्) उद्योगी व शासनशील (उत) और (कण्वम्) स्तुति करने वाले मेधावी पुरुष को (प्र) अच्छे प्रकार (अवथ) बचाते हो (तौ) वे तुम दोनो (न) हमे (अहस) कष्ट स (मुञ्चतम्) छुडाओ।

भावार्थ—पुरुषार्थी वेदो की आज्ञा पालन करने वाले सर्वहितकारक आदि पुरुषो के लिए समय और आत्म बल सदा अनुकूल रहते हैं।

हिन्दी के प्रति हमारा कर्तव्य

बडे आश्चर्य और चिन्ता की बात है कि जो कार्य हमारी सर्वोच्च विधायिका (ससद) को करने चाहिए उन्हे देश के सर्वोच्च न्यायालय को करना पड रहा है ससद वोटो की सकीर्ण राजनीति मे फस कर राष्ट्रहित मे निर्णय नही ले पा रही। इसलिए आज तक शिक्षा मे अग्रेजी की अनिवार्यता तो है ही, नौकरी की भरती-परीक्षाओ मे भी संसद और सरकार इसे समाप्त करने का साहस नही जुटा पा रही। इस सरकारी प्रवृति के चलते अग्रेजी के पिछलग्गू व्यक्तियो द्वारा पिछले दिनों कर्नाटक सरकार द्वारा प्राथमिक पाठशालो मे मातृभाषा कन्नड माध्यम को अनिवार्य करने के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय मे याचिका दी गई। उन विद्वान राष्ट्रभक्त शिक्षाविद न्यायाधीशो की जितनी प्रशसा की जाये वह कम है जिन्होने बच्चे के कोमल मस्तिष्क पर विदेशी भाषा के बोझ को अनावश्यक और बच्चे के स्वाभाविक विकास मे बाधक बताते हुए प्राथमिक कक्षाओ मे केवल मातृभाषा के माध्यम का औचित्य सिद्ध किया है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा ही नही राष्ट्रभाषा और राजभाषा भी है। हमारा कर्तव्य है कि — (शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक - आचार्य सुधाकर एम०ए०

विवाहित जीवन सुखमय बनाएँ

डा० सुनीति

आज कही किसी विवाहिता ने दु खी होकर आत्महत्या कर ली या किसी विवाहिता ने नीद की गोलिया खाकर चिर निद्रा का वरण कर लिया। कही किसी नव वधु को दहेज के लोभियो का शिकार होना पडा आदि समाचारो से आए दिन दैनिक समाचार पत्रो के कालम भरे होते हैं।

पास पड़ोस मे बैठे तो प्राय यह चर्चा सुनाई पडती है कि किसी ने विवाहिता को छोड़ दिया कोई विवाहिता पति के व्यवहार से तग आकर मायके मे आ बैठी है। कोई नारी पति के हाथो यातनायें भुगतती हुई नारकीय जीवन जीने के लिए विवश है तो कोई पत्नी से सत्रस्त पति किसी अन्य स्त्री से अभिसार किए बैठा है। अपने चारो ओर गृहस्थियो को हाहाकार करते देख नई पीढ़ी के नवयुवक नवयुवतिया वैवाहिक जीवन पर ही प्रश्न चिन्ह लगाने लगे है। वे सोचते हैं कौन ऐसे झमेले मे फसे। स्वच्छन्द और स्वतन्त्र जीवन छोडकर काहे को इस मुसीबत को गले लगाया जाय। विवाह जैसी पवित्र सस्था आज दुखो का धाम बनी हुई है।

आज के इस वैज्ञानिक युग मे जबकि मानव चन्द्रमा पर बसने के स्वप्न देख रहा है धरती पर निराशा और दु ख के बादल उमडते-घुमडते दिखाई पड रहे हैं। मानव समाज पथभ्रष्ट होकर अपने ही हाथो विनाश के बीज बो रहा है यह स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक है। एक ओर सुख सुविधाओं के अम्बार और दूसरी ओर अपने ही हाथो नरक का निर्माण। कैसी विडम्बना है।

परमात्मा ने इस सृष्टि का सर्वोत्तम सुख मानव जन्म के लिए ही सुरक्षित रखा है। मानव जीवन की तीन अवस्थाए हैं—शैशव, यौवन और बुढापा। शैशव तो जीवन का प्रारम्भ है जब मनुष्य कुछ न कुछ सीखता हुआ ज्ञान का आचल पकड कर क्रमश अज्ञान, अन्धकार से प्रकाश की ओर बढता है। वृद्धावस्था तो जीवन की साझ है जब जीवन का प्रकाश धूमिल पड़ने लगता है अत यौवन ही वह स्वर्णिम काल है जब मनुष्य ससार के सुखो का उपभोग कर धरती पर निर्माण के बीज बोता है। यौवन की सार्थकता है विवाहित जीवन मे। ससार का सारा सुख विधाता ने स्नेही दम्पति के आचल मे भर दिया है। स्वर्ग कही है तो वह विवाहित जीवन के प्रांगण मे ही उतरता है।

मनुष्य जीवन का पथ इतना कण्टकाकीर्ण और समस्याओ से घिरा हुआ है कि न अकेला पुरुष न अकेली स्त्री इस जीवन यात्रा को निर्बाध पार कर लेने मे सक्षम है। जीवन की नैया को नर और नारी मिलकर ही खेल सकते हैं। एक दूसरे के बिना दोनो का ही जीवन अधूरा है। अत. दोनो को मिलकर साथ-साथ आगे बढते हुए एक-दूसरे के उत्तरायित्व को निभाने के लिए वचनबद्ध होने का नाम ही विवाह है। हमारे पूर्वजो ने मनुष्य जीवन को पल्लवित पुष्पित व आकर्षक बनाने के लिए ही विवाह की व्यवस्था प्रारम्भ की थी। इससे बढ़कर सुख से जीने का सुन्दर उपाय दूसरा हो ही नही सकता। इसका कोई विकल्प ही नही है। सुखमय जीवन की सर्वोत्तम प्रणाली वैवाहिक जीवन को सारे विश्व के धर्म एवं सस्कृतिया अगीकार करती हैं। किन्तु कितने दुख और आश्चर्य का विषय है कि जो व्यवस्था समाज मे सुख और शान्ति को बढ़ाने की दृष्टि से प्रारम्भ की गई थी वही व्यवस्था दु.ख और अशान्ति को जन्म देने का कारण बने। आज चारो ओर गृहस्थ जीवन नरक धाम के रूप में दिखलाई पड रहे है। जहा आसू है निराशा है, पश्चाताप है, आक्रोश है विद्रोह है। वेदना मे घुल-घुलकर जीवन ढोये जा रहे हैं। घर के इस दारुण वातावरण मे नई पीढी का निर्माण या नए जीवन का सौरभ जो कि विवाह का मुख्य उद्देश्य था कही तिरोहित हो गया है। लडते हुए माता पिता के घरो मे लड़का लड़की ही जन्म ले रहे हैं सुपुत्र और सुपुत्रियों का अभाव सा हो गया है। धरती की गोद मे सुख भरने वाली मशीनरी को ही जग लग रहा है। परिवारो को यही अशान्ति विश्व मे हिंसा और युद्ध के वातावरण को जन्म देने का कारण बन रही है। आइए हम वैवाहिक जीवन के सुखमय न हो पाने के कतिपय कारणों पर दृष्टिपात करें। विवाहित जीवन के सुखमय न होने का पहला कारण आज के युग में धन को ही सर्वोपरि महत्व दिया जाना है। शास्त्रों मे मनुष्य के लिए चार पुरुषार्थ बताये हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। आज हम येन केन प्रकारेण धन को ही सब कुछ मान बैठे हैं। धन सुख का साधन अवश्य है पर वह साधन कोटि से निकल कर साध्य कोटि मे आ जाए तो फिर सुख के स्थान पर दु.ख का ही कारण बन जाता है। विवाह के लिए वरवधु का चुनाव होता है तो पहली दृष्टि धन पर ही जाती है लड़की वाले धनी वर की खोज में जुट जाते हैं तो लड़के वाले अधिक-से-अधिक धन देने की क्षमता वाले परिवार की लड़की चाहते हैं यहीं वैवाहिक जीवन का मूल्याकन धन की तुला पर तुलने लगता है। विवाह मे सबकी दृष्टि वैवाहिक धूमधाम और लेन-देन पर अधिक केंद्रित होती है। लड़की के घर से आए हुए सामान को परखने के लिए सम्बन्धी उत्सुक से जान पड़ते हैं और फिर शुरू होता है आलोचना टीका टिप्पणी हास्य और व्यग्य का दौर। इन्ही घटिया वैचारिक पृष्ठभूमि पर वैवाहिक जीवन का श्रीगणेश होता है। लड़की भी वर द्वारा दिए आभूषण व उसके घर के वैभव को ही अपने सौभाग्य का मापदण्ड मानती है। यही वह राहू की छाया है जिसने हमारे वैवाहिक जीवन को स्पर्द्धा व असतोष से भर दिया है। अब तक शिक्षित नवयुवक व नवयुवतियां चेतन की अपेक्षा जड़ चीजो को ही महत्व देती रहेगी तब तक सुख की कल्पना मृग मरीचिका मात्र ही रहेगी। सच्चरित्रता से ऊपर भौतिकता को को महत्व देना हमारे वैवाहिक स्तर की निम्नता का प्रतीक है। विवाह के पश्चात् भी दम्पत्ति अपने घर को आधुनिक सुविधाओ मे सुसज्जित करने मे जितने तत्पर दिखाई देते हैं काश ! उसका चतुर्थांश भी जीवन को समृद्ध करने मे दिया जाय तो बहुत से मनमुटाव के कारण स्वय ही समाप्त हो जायें। परमात्मा ने इस सृष्टि को दो रूपों मे विभाजित किया है जड और चेतन। जड वस्तुए चेतन के प्रयोग के लिए बनाई गई हैं पर जब चेतन की उपेक्षा कर जड को अधिक महत्व दिया जाता है तो समझो नरक का द्वार खुलता जा रहा है। चेतन के गुण कर्म स्वभाव को भली प्रकार परख कर ही आपस मे जीवनसाथी बनने की शपथ लेनी चाहिए। इसीलिए प्राचीनकाल मे विवाह की उत्तम प्रथा स्वयवर विवाह मानी जाती थी। कन्या पुरुष के गुणो को जानकर स्वय उस ओर आकृष्ट होकर विवाह सूत्र मे बधना वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए अति आवश्यक है। धन या रूप से आकृष्ट होकर किया गया विवाह कालान्तर मे अपना आकर्षण खो बैठता है। आज के वैवाहिक जीवन के दु खमय होने का दूसरा कारण है स्वार्थ परता अर्थात् त्याग की भावना का अभाव। पुरुष अपने अहम को प्राथमिकता देता है और स्त्री के अहम को स्वीकार करना तो दूर उसके अहम् को कुचलने मे ही पुरुषत्व की सार्थकता समझता है। यह परिस्थिति जीवन को नरकमय बना देती है। विवाह संस्कार के मन्त्रों मे वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए बड़े सुन्दर नुस्खे बतलाए गए हैं किन्तु आजकल तो रस्म के नाम पर मन्त्रो का पाठ भर कर लिया जाता है उसमे छिपे गूढ़ उपदेशो को हृदयगम नही किया जाता विवाह सस्कार के मन्त्रों मे पहला मन्त्र, वर वधु दोनो मिलकर पढते हैं वह इस प्रकार है—

समजन्तु विश्वेदेवा समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सम् धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ॥

ऋ० १०-८५-४७

नौ अर्थात् हम दोनो के हृदय एक-दूसरे से मिल कर शान्ति को जन्म दें अपना अस्तित्व एक-दूसरे मे विलीन कर लें जिस प्रकार वायु सबको सुखी करता है उसी तरह हमारा आचरण एक दूसरे को सुखी करें। हम सुखो को धारण करने के लिए नवजीवन को अगीकार करते हैं। वर कहता है द्यौरह पृथ्वी त्व जैसे पृथ्वी और सूर्य मिलकर सारे ससार को सुखो मे भर रहे हैं हम भी एक-दूसरे के लिए देवताओ की भावनाओ को अगीकार कर जीवन को सुखी बना सकते हैं। दोनों मिल कर कहते है मम व्रते ते हृदय दधामि ममचित्तं अनुचित्तं ते अस्तु मम वाचमेकमना जुषेस्व प्रजापतिस्त्वा विनियुनक्तु मह्यम् हम दोनो की वाणियो हमारे मनों को परस्पर मिलाने का कार्य करे तोड़ने का नहीं। प्रजापति परमात्मा ने हम दोनों को एक-दूसरे के लिए नियुक्त किया है। आओ हम दोनों मिलकर सुखी और नए जीवन का निर्माण करें। सप्तपदी मे सातवा पैर मिलकर उठाते हुए वर वधु को सखे ! कह कर सम्बोधित करता है मित्रता ही एक ऐसा सम्बन्ध है जिसमें न कोई छोटा है न कोई बडा। रथ को दोनो पहिए समान दिशा मे अग्रसर होंगे जीवन के अनुपम सुख को पाने के लिए ? आज से वे अपने लिए नही दूसरे के लिए जिएंगे। एक-दूसरे को मिष्ठान्न खिलाने के पीछे भी यही भावना परिलक्षित होती है। दूसरे

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली का एकादश

आर्य युवा महासम्मेलन

आर्य वीर दल की शाखाओं तथा दिल्ली स्थित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए चित्रकला एवं निबन्ध-लेखन, खेल-कूद, भाषण, वाद-विवाद एवं समूहगान प्रतियोगिताओं का स्वर्णिम अवसर।

प्रतियोगिताओं में भाग लेकर भारी पुरस्कार प्राप्त करें।

पुरस्कार वितरण समारोह

शनिवार, २१ जनवरी, १९९५

प्रातः ९.०० बजे, रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल

राजा बाजार, निकट शिवाजी स्टेडियम

निवेदक

सूर्यदेव प्रधान फोन . ३२६४१२६ डा. धर्मपाल महामन्त्री फोन : ७११११६७१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रियतमदास रसवन्त अधिष्ठाता आचार्य सुशीराम शर्मा सहसंचालक

ईश कुमार नारंग, महामन्त्री आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली दूरभाष : ३११०१५०

चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिता

दिनांक : ७ जनवरी, १९९५ दिन : शनिवार समय : प्रात: १०.०० बजे।

स्थान : सत्यभावा आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, करौल बाग, नई दिल्ली

चित्रकला

वर्ग प्रतियोगिता

कक्षा १ से ५—गाय, कक्षा ६ से ८—कोई महापुरुष, कक्षा ९ से १२—पर्यावरण शुद्धि।

निबन्ध

कक्षा १ से ५—आदर्श छात्र, कक्षा ६ से ८—चलचित्र का विद्यार्थी जीवन पर प्रभाव, कक्षा ९ से १२—स्वाधीनता आन्दोलन में आर्यसमाज का योगदान।

नियम व पुरस्कार

—चित्रकला तथा निबन्ध का समय एक-एक घण्टा होगा।
—प्रत्येक विद्यालय एक प्रतियोगिता मे अधिकतम दो छात्र-छात्राओं के नाम भेज सकता है।
—प्रतियोगी पैन, पैंसिल, रंग अपने साथ लाएंगे। ड्राईंग शीट व निबन्ध के लिए कागज विद्यालय से दिए जायेंगे।
—प्रत्येक प्रतियोगिता मे प्रथम, द्वितीय तृतीय, स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं पुरस्कृत होंगे।
—प्रत्येक वर्ग में प्रथम आने वाली टीम के विद्यालय को शील्ड दी जाएगी।

संयोजक . श्रीमती सावित्री गाबा, प्रिंसिपल दूरभाष . ५७२५४३२

खेल-कूद प्रतियोगिता

दिनांक : १७ जनवरी, १९९५ मगलवार समय प्रात. ६ ०० बजे।

स्थान . सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली

छात्र-छात्राओं दोनों के लिए अलग-अलग शिशु वर्ग आयु १० वर्ष तक।

(१) १०० मीटर दौड़।

कनिष्ठ वर्ग आयु १४ वर्ष तक

(१) १०० मीटर दौड़ (२) २०० मीटर दौड़ (३) लम्बी कूद (४) ऊंची कूद।

वरिष्ठ वर्ग आयु १७ वर्ष तक

(१) ४०० मीटर दौड़ (२) ८०० मीटर दौड़ (३) १५०० मीटर दौड़, (४) लम्बी कूद (५) ऊंची कूद (६) गोला फेंक।

नियम एवं पुरस्कार

—प्रत्येक विद्यालय से प्रत्येक प्रतियोगिता मे केवल दो प्रतियोगी होंगे।
—एक प्रतियोगी अधिकतम तीन प्रतियोगिताओ में भाग ले सकता है।
—प्रत्येक प्रतियोगी के पास प्रधानाचार्य द्वारा प्रमाणित पहचान-पत्र जिसमें फोटो एवं जन्मतिथि अनिवार्य रूप से प्रमाणित होना चाहिए।
—प्रत्येक प्रतियोगिता में तीन पुरस्कार होंगे।
—चार से कम प्रतियोगी होने पर केवल प्रथम स्थान पाने वाला प्रतियोगी पुरस्कृत होगा।
—निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

आर्य वीर दल की शाखाओं के लिए

आयु १८ से २५ वर्ष

४०० मीटर, ८०० मीटर, १५०० मीटर दौड़ ऊंची कूद लम्बी कूद गोला फेंक।

संयोजक : श्रीमती बृजबाला मल्ला, प्रिंसिपल दूरभाष · ५३२१६१

भाषण प्रतियोगिता

दिनांक : १० जनवरी, १९९५ दिन · मगलवार समय : प्रात १० बजे।

स्थान : दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली-११००२७

वर्ग-प्रतियोगिता विषय

कक्षा १ से ५ शाकाहार का महत्व; कक्षा ६ से ८ यज्ञ का महत्त्व, कक्षा ९ से १२ मर्यादा पुरुषोत्तम राम।

नियम एवं पुरस्कार

—एक विद्यालय से प्रत्येक प्रतियोगिता में केवल दो छात्र-छात्राएं भाग ले सकते हैं।
— प्रतियोगी को केवल ५ मिनट का समय दिया जाएगा।
—प्रत्येक वर्ग में ३ अर्थात् कुल ९ पुरस्कार दिए जाएंगे।
—निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

संयोजक . श्रीमती रेणुका कौल, प्रिंसिपल दूरभाष · ५००३८६, ५४६३८०६

वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनांक : ११ जनवरी, १९९५ दिन : बुधवार समय : प्रात: १०.०० बजे।

स्थान : रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, वाई ब्लाक, सरोजनी नगर नई दिल्ली।

वर्ग-प्रतियोगिता विषय

कक्षा १ से ५ प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा मे ही होनी चाहिए।
कक्षा ६ से ८ पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम है।
कक्षा ९ से १२ आरक्षण नीति देश के लिए घातक है।

नियम एवं पुरस्कार

—एक विद्यालय से अधिकतम दो छात्र/छात्राएं (एक पक्ष तथा एक विपक्ष) मे भाग ले सकते हैं।
—एक छात्र-छात्रा को ५ मिनट का समय दिया जाएगा।
—प्रत्येक वर्ग में ३ तथा कुल ९ पुरस्कार दिए जाएंगे।
—प्रत्येक वर्ग मे प्रथम आने वाली टीम (एक पक्ष-एक विपक्ष) के विद्यालय को शील्ड दी जाएगी।
— निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

संयोजक : श्रीमती अनीता कपिला प्रिंसिपल दूरभाष : ६७७०६३

समूह-गान प्रतियोगिता

दिनांक : १२ जनवरी, १९९५ दिन : बृहस्पतिवार समय : प्रात. १० बजे

स्थान : महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज मंदिर, जे-३-२०६-२०७, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७

वर्ग

कक्षा १ से ५ प्रथम वर्ग कक्षा ६ से ८ द्वितीय वर्ग कक्षा ९ से १२ तृतीय वर्ग।

नियम एवं पुरस्कार

—एक विद्यालय प्रत्येक वर्ग मे केवल एक बार भाग ले सकता है।
—समूह-गान में अधिकतम ११ छात्र-छात्राएं भाग ले सकते हैं। समय की अधिकतम अवधि ७ मिनट होगी।
—भक्तिरस अथवा वीररस का कोई वैदिक गीत समूह-गान के रूप में प्रस्तुत करना है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

—प्रत्येक वर्ग मे ३ अर्थात् कुल ९ पुरस्कार दिए जाएंगे।

—प्रत्येक वर्ग मे प्रथम आने वाली टीम के विद्यालय को शील्ड दी जाएगी।

—विद्युत वाद्य-यन्त्र वर्जित है।

—निर्णायको का निर्णय सर्वमान्य होगा।

सयोजक : श्रीमती विभा पुरी, प्रिंसिपल दूरभाष . ५०१२६६, ५४५८११७

वालीबाल प्रतियोगिता केवल (बालिकाओं के लिए)

दिनाक : १६ जनवरी, १९९५ दिन सोमवार समय प्रात १० बजे।

स्थान रत्नदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल; कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

नियम एवं पुरस्कार

—केवल प्रथम आने वाली विजेता टीम के विद्यालय को शील्ड दी जाएगी।

—प्रथम द्वितीय तृतीय आने वाली टीमो की सभी सदस्याओं को पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र दिए जाएंगे।

—निर्णायको का निर्णय सर्वमान्य होगा।

सयोजक श्रीमती महेश्वरी खन्ना, प्रिंसिपल दूरभाष २२१३४८३

पुरस्कार वितरण समारोह

शनिवार, २१ जनवरी, १९९५ प्रात ९ बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकण्डरी स्कूल, राजा बाजार निकट शिवाजी स्टेडियम, नई दिल्ली।

—वेद गायन

—पी. टी., योगासन, शास्त्रादि प्रदर्शन ।

—पुरस्कार वितरण :—

अध्यक्षता श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव प्रधान; सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वागत समिति . श्री राममूर्ति कैला, प्रधान, रघुमल स्कूल प्रबन्ध समिति
श्रीमती चन्द्रा किनरा-प्रिंसिपल,
आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

सूर्यदेव	डा० धर्मपाल	प्रियतमदास रसवन्त
प्रधान	महामन्त्री	अधिष्ठाता आर्य वीर दल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५—हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

विशेष :

—दिल्ली स्थित विद्यालयो के प्रिंसिपल, आर्य वीर दल के शिक्षक महोदयो से निवेदन है कि वे अपने विद्यालयों की टीमो तथा प्रतियोगियों की सूची आवश्यक जानकारी के साथ सम्बन्धित सयोजक के पास शीघ्र भिजवाए।

—पी. टी. योगासन तथा शस्त्र प्रदर्शन मे अलग-अलग तीन प्रथम आने वाली टीमो को बड़ी शील्ड दी जाएगी।

—सभी पुरस्कार विशाल समारोह 'आर्य युवा महासम्मेलन' मे दिनांक २१ जनवरी, १९९५ को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, नई दिल्ली मे समारोहपूर्वक दिए जाएंगे।

—सभी प्रतियोगिताओ मे निर्णायको का निर्णय सर्वमान्य होगा।

शिक्षित मुस्लिम युवती व ईसाई युवक हिन्दु धर्म में

कानपुर। आर्य समाज गोविन्द नगर मे समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक ३० वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवती कु० शमीम तथा एक शिक्षित ईसाई युवक रिचर्ड को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म की दीक्षा देकर हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया। इनके नये नाम मीना कुमारी व रघुवीर प्रसाद रखे।

श्री देवीदास आर्य ने शुद्धि सस्कार के बाद मीना कुमारी का विवाह शिक्षित व सरकारी कर्मचारी श्री योगेश कुमार तथा श्री रघुवीर प्रसाद का विवाह शिक्षित व सरकारी कर्मचारी कु० नेहा से वैदिक रीति से कराए। यह लोग स्नातक है। विवाह के पश्चात मीना कुमारी ने बताया कि उनको हिन्दू धर्म की यह बात पसन्द है जिसमें वर वधु आजीवन दुःख में एक साथ रहने का सकल्प लेते हैं। जबकि अन्य मजहबों में तलाक की आम बीमारी है। रघुवीर प्रसाद ने बताया कि उनके बुजुर्गों ने धर्म बदलने का जो पाप किया था उसको मैंने आज पुण्य में बदल दिया। श्री आर्य ने दोनों को साहित्य व सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां स्वाध्याय हेतु दीं जिससे उन्हें वैदिक धर्म की विशेषतायें ज्ञात हो सकें।

बालगोविन्द आर्य
मन्त्री, आर्य समाज, गोविन्द नगर, कानपुर

विवाहित जीवन

(पेज २ का शेष)

के लिये जीने में ही मानव जीवन की सार्थकता है। वैसे तो सन्तानोत्पत्ति के लिए पशु पक्षी भी कुछ समय साथ रहते हैं। किन्तु मनुष्य जीवन भर के लिए एक-दूसरे के हाथ अपने को सौंप देता है।

हमारी प्राचीन सस्कृति की सबसे अमूल्य धरोहर है त्यागपूर्ण जीवन और यही परिवार को समाज को राष्ट्र को सुखमय बनाने का अचूक उपाय है। विवाहित जीवन के सर्वोच्च आदर्श बिन्दु होने मात्र से राम और सीता युगो-युगों से हमारे मन प्राण मे बसे हुए हैं उनकी अलौकिकता ने उन्हें इतना लोकप्रिय नहीं बनाया है वरन् एक-दूसरे के प्रति उनके अनन्य प्रेम ने भारतवासियों के पोर-पोर मे उन्हे बसा दिया है। वनवास के घोर कठिन समय में भी जहा धन सम्पदा का सर्वथा अभाव था प्रेम की डोर मे बधे वे कितना सुखमय जीवन बिता रहे थे। जिस प्रकार मिठाई का प्राण शक्कर की वह चाशनी है जो भिन्न-भिन्न वस्तुओं को जोडकर उसे सुन्दर आकार एव स्वाद प्रदान करती है उसी प्रकार पति-पत्नी के हृदय का स्नेह ही उन्हे एक-दूसरे के लिए उत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान कर जीवन को सुखों से भर देता है। राम जिसने स्वप्न में भी पर नारी के दर्शन नहीं किए। सीता जिन्होने स्वप्न में भी पर पुरुष का ध्यान नही किया यह केवल राम और सीता की कोरी प्रशसात्मक विरुदावली नही है वैवाहिक जीवन के भवन की दृढ़ता के लिए आवश्यक नीव की तरह अटल नुस्खा ही है। विवाह सस्कार मे सर्व प्रथम मधुपर्क की विधि केवल एक दिन मधु यामिनी मनाने का ही सकेत नहीं करती अपितु जीवन को मिठास से भर लेने का दिव्य सकल्प करने की ओर प्रेरित करती है—

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव
माध्वी नं सन्त्वौषधी ।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव रज
मधु द्यौरस्तु न पिता
मधुमान्नो वनस्पति मधुमा अस्तु सूर्य
माध्वी गांवो भवन्तु न ।

हमारे व्यवहार वाणी मे इतनी मिठास हो कि उसके सामने ससार की सारी दिव्यताएं फीकी पड़ जायें। बहती हुई पवन चमकता हुआ चन्द्र और सूर्य हरियाली की चादर ओढ़े धरती जल से पूरित नदिया नीलाम्बर से झरती फुहारें यही सब की विशेषताओ को हम समेट ले और अपने वैवाहिक जीवन को मधुमय बनाएं कितनी उदात्त कल्पना है ईश्वरीय आदेश वेद मन्त्रो की।

कई लोग वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने का सारा उत्तरदायित्व स्त्री के ऊपर डालकर अपने कर्तव्य की इति श्री कर लेते हैं तो कई लोग पुरुषों को ही सुखमय जीवन का एकमात्र आधार बतलाते हैं। किन्तु वेदमाता ने दोनों पर ही समान उत्तरदायित्व डाला है तभी तो मनु महाराज कहते हैं —

सन्तुष्ट भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च
यस्मिन्नेव कुले नित्य कल्याण तत्र वैध्रुवम् ।।

जिस कुल में पति से पत्नी और पत्नी से पति सन्तुष्ट होकर जीवन यापन करते हैं उसी कुल मे सुख और शान्ति स्थिर रहती है यही कल्याण का पथ है। पति और पत्नी दोनो ही एक-दूसरे का अप्रिय आचरण कभी न करें यही सुखमय जीवन की कुजी है। इस तरह वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के मुख्य तीन नुस्खों पर हमने विचार किया पहला—धन से अधिक गुणों का महत्व परस्पर मीठी वाणी और मित्रता का व्यवहार और एक-दूसरे पर अनन्य प्रेम और अटूट विश्वास। प्रभु कृपा करें कि समाज इन गुणों को अपने वैवाहिक जीवन में धारण कर सुखमय जीवन की ओर अग्रसर हो।

अथक समाज-सेवक

देवव्रत चाली

देश-विभाजन के समय १९४७ में हिन्दुओं को कैसे संकट से गुजरकर पाकिस्तान से निकलना पड़ा था, यह अब सर्वविदित है। एक हिन्दू परिवार की युवती बेटी इस भागम-भाग मे किसी प्रकार परिवार से बिछुड़कर लाहौर में रह गई थी। कई वर्षों के बाद उसे पता चला कि उसकी बहिन और बहनोई देहरादून में हैं। इस बीच उस अभागिन बेटी को लाहौर के एक मुसलमान ने बलात् अपनी पत्नी बना लिया था और उसके गर्भ से बच्चे भी जन्म ले चुके थे। परन्तु अपनों का अत्याचार द्वारा लादा गया, विछोह उसे निरन्तर तड़पाता रहा था। वह पाकिस्तान से पारपत्र आदि कागजों का प्रबन्ध करके अपनी बहिन से मिलने देहरादून आई। जब वीजाकी अवधि समाप्त होने की आई तो वह वापस उस नरक मे जाने को अपने मनको तैयार नही करा पाई, जिसे साम्प्रदायिकता के आधार पर देश के विभाजन ने बनाया था परन्तु कानून कहता था कि उसे बालत् वापस उसी नरकमे धकेला जाएगा।

उसने यहां के प्रशासनिक अधिकारियो से बहुत लिखा-पढ़ी की कि वह पाकिस्ताम मे अपहृत अवस्था मे बलात् रख ली गई और कि अब वह वापस वहा जाना नहीं चाहती अतः यहीं सदा के लिए रहने की अनुमति दी जाए। परन्तु कोई उपाय सफल न होने पर उसने मुझसे सम्पर्क किया। मैने उसे लाला रामगोपाल जी, शालवाले, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पास अपना पत्र देकर दिल्ली भेज दिया। कई दिनों के पश्चात् अपने मनोरथ मे सफलता प्राप्त करके वह देवी वापस देहरादून आई तो उसके जीजा ने मुक्त कण्ठ से पूज्य लाला जी की प्रशसा करते हुए मुझे बताया कि कैसे कई दिनो तक वे इनके काम के लिए सरकारी कार्यालयो यहा तक कि विदेश मन्त्रालय के भी, चक्कर लगाते रहे थे और अन्त मे कार्य साध कर ही उन्होने चैन लिया था।

इस प्रकार एक आर्य ललना का उद्धार हुआ और वह अपनी सस्कृति के समाज मे स्थायी रूप से रह सकने की वैध अनुमति प्राप्त कर पाई। मैंने जब उससे पूछा कि क्या उसका मन अपने उन बच्चो के लिए नही तरसता जो पाकिस्तान मे जन्मे थे, उसका उत्तर था कि धर्म और सस्कृति के लिए उसे-वह मोह त्यागना ही पड़ा जिसके साथ उसे विवशता ने जोड़ा था।

कार्यकर्ताओं के प्रति आत्मीयता का भाव

कुछ वर्ष पूर्व मै दिल्ली अपनी पुत्री के पास गया हुआ था। हमने वैदिक साधन आश्रम, तपोवन मे वक्ता के रूप मे प० पृथ्वीराज जी शास्त्री को आमन्त्रित कर रखा था परन्तु उनकी स्वीकृति पत्र अब तक हमारे पास नही पहुंचा था। अतः मैंने ने शास्त्री जी से बात करने के लिये सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में दूरभाष मिलाया तो उधर से स्वामी आनन्द बोध जी ने ही उसे उठाया। मैंने उनकी आवाज को न पहचान पाने के कारण पूछा कि क्या मैं प० पृथ्वीराज जी शास्त्री से बात कर सकता हूं? उत्तर मिला कि वे तो देहरादून गये हैं। मैंने कहा कि देहरादून से मैं आ रहा हू। वहा तो वे नही पहुचे थे। देहरादून का नाम सुनकर स्वामी जी बोले—आप क्या चाली जी बोल रहे हैं? मैंने "हां" मे उत्तर देते हुए पूछा—क्या आप स्वामी आनन्द बोध जी बोल रहे है? उन्होने कहा—हां; और झिड़की-सी के साथ कहा—"आप वहा ग्रेटर कैलाश मे बैठे क्या कर रहे हैं? यहां क्यों नहीं आए।" मैंने निवेदन किया कि आपका समय बहुत मूल्यवान हैं। कोई आवश्यक काम भी नही था इसलिए आपके समय का ध्यान करके नहीं आया। स्वामी जी का आदेश हुआ—"तुरन्त आओ।" मैं उपस्थित हुआ और उनका वात्सल्य प्राप्त किया। लगभग दो घण्टे उनके पास बैठा। कश्मीर मे नष्ट किये गये मन्दिरो के मामले पर स्वामी जी द्वारा की गई कार्रवाइयो का हाल सुना और हिन्दू समाज की रक्षा के लिए हुए महत् कार्य की कई घटनाओं की जानकारी मिली।

देहरादून के वैश्य परिवार की एक स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त ३२ वर्षीया कुमारी को एक मुसलमान ने बहकाकर उसके साथ 'सिविल मैरिज' का जाति प्रमाणपत्र बनवा लिया था और उसे डराकर भगा ले जाने की तैयारी मे था। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को इस षडयन्त्र का पता चिल्ली भेजा और उनसे राय मागी कि क्या किया जाए। उनकी ओर से तुरन्त कार्रवाई हुई और हमे बताया गया कि इसका वह जाति विवाह रद्द कराया जाना पहली कानूनी आवश्यकता है। आपने अपना नैतिक सहयोग और परामर्श बराबर हमे दिया और लगभग तीन साल तक मुकदमा लड़ने के पश्चात उस नकली सिविल मैरिज से उस कन्या को छुटकारा मिला और उसके माता-पिता ने हिन्दू घराने मे उसका विवाह कराया।

बड़े-बड़े आन्दोलनों मे तो स्वामी जी ने कैसे जान को हथेली पर रखकर सदा नेतृत्व किया था, यह सबको विदित है। ऐसे छोटे-छोटे मामलों की ओर भी उन्होंने कभी अनदेखी नहीं की। यह दयानन्द के उस सैनिक की विशेषता रही।

अन्तिम दर्शन

२५, २५, २६ जून १९९४ को गढवाल के आर्य महासम्मेलन मे स्वामी जी से मेरी अन्तिम भेंट हुई। स्वामी जी ने इस बात के लिए मेरी पीठ ठोकी कि मैंने वाणिज्य-व्यवसाय से पूरी तरह किनारा करके अपना समय वेदप्रचार के लिए दे दिया है। आर्य समाज के सगठन मे आ गई त्रुटियो पर भी उन्होने बात की। वे कहने लगे। मैं तो चाहता हूं कि आर्य समाज के लिए ही मेरे प्राण काम आए।

सम्पादक 'पवमान' मासिक, देहरादून

अश्वमेध यज्ञ की वास्तविकता (४)

श्री वेदप्रिय शास्त्री

१२—पारिप्लवाख्यान—

अश्व छोड़ने के पश्चात् कशिपु नामक आसन विशेष दक्षिण वेदी पर बिछाकर होता बैठता है इसके दाहिने ओर यजमान दर्भ के आसन पर बैठता है दक्षिण में ब्रह्मा और उद्गाता बैठते हैं। अब होता पारिप्लव नामक आख्यान सुनाता है। यह दस दिन तक चलता है। इसमें एक ही राजा के दस भिन्न रूप, अधिकार व कर्तव्यों का बोध कराया गया है तथा दस प्रकार की प्रजा का वर्णन किया गया है।

१३—प्रक्रम होम—

अब दीक्षा ग्रहण के समय प्रक्रम होम करता है चार उद्ग्रमण की तथा तीन वैश्वदेव कुल सात-सात के क्रम से दक्षिणाग्नि में ४९ आहुतियां दी जाती हैं इसका सम्बन्ध दीक्षा से है सो वहीं इसका रहस्य कहेंगे।

१४—दीक्षा—

दीक्षा का अर्थ है निश्चित अवधि के लिये किसी नैमित्तिक कार्य विशेष के लिए नियुक्त हो जाना और प्रमाद रहित हो उसे समय पर पूरा करने मे प्राणप्रण से लगे रहना। अश्वमेध में वर्ष भर मे २१ दीक्षाएं होती हैं। इसका तात्पर्य है दिनचर्या नियत कर ठीक-ठीक कार्य विभाजन करना तथा विभागो का पुष्टीकरण समय पर करते रहना। बड़े कार्यो मे योजनाहीन; अस्तव्यस्त रहने, दिनचर्या के बिगड़ जाने से स्वास्थ्य खराब होता है। क्षीणता आती है तथा सभी कार्य बिगड़ जाते हैं। अत: दीक्षा से दक्षता प्राप्त करते हैं।

१५—पर्यंग पशु निरूपण—

अश्व के वापस लौट आने पर अहीन सोमयाग का आयोजन किया जाता है इसमें १३ दीक्षा १२ उपसद् और तीन सुत्या होती हैं। इस समय २१ यूप (खूंटा) गाड़े जाते हैं। उनमें पशुओं को बाधा जाता है। बीच-बीच मे आरण्य पशु पक्षी भी रखे जाते हैं। पशु पक्षियों को रखने का तात्पर्य यह है कि राष्ट्रोन्नति मे पशु पक्षियो का भी महत्व स्वीकार किया जाता है। रात को अन्न होम किया जाता है जो सत्तू, धाना, लाजा और घी से होता है। इसका प्रयोजन देवो और विद्वानों को प्रसन्न करना है। अश्व के सारे शरीर पर रस्सी लपेट देते है। फिर उसमे एक क्रम से पशुओ को बाधते हैं। यही पर्यंग पशु निरूपण है। फिर इक्कीस युपो में पन्द्रह-पन्द्रह पशु बाधते हैं और एक मे सत्रह पशु बाधते हैं। आरण्यक पशुओ को अग्नि के चारो ओर घुमा-कर छोड़ दिया जाता है। ग्राम्य पशु ही ग्रहण किये जाते है।

इस सम्पूर्ण कृत्य के द्वारा राज्य व्यवस्था को सर्वांग पुष्ट और स्वस्थ बनाकर प्रजा को व्यवस्थित बनाने की शिक्षा दी गई है। विस्तार भय से हम उसे यहा नहीं दे पा रहे हैं। प्रजापति ने कामना की कि दोनों लोकों पर विजय प्राप्त करूं, पृथ्वी लोक पर और देव लोक पर। उसने दो प्रकार के पशुओं को देखा ग्राम्य तथा आरण्य। सो ग्राम्य पशुओ को पृथ्वी के लिए प्राप्त किया और आरण्य पशुओ को देव लोक के लिए। ग्राम्य पशुओं को बाधने का भाव यह है कि लोगमार्गो मे मिलकर चलें तथा ग्राम के समीप ग्राम बसें और लोग मिलकर रहे। परन्तु जो आरण्य हैं वे रीछ, शेर; व्याघ्रादि सब, चोर, तस्कर, डाकू, हत्यारों के प्रतीक हैं। इन्हे तो वन मे ही रहना ठीक है अत. छोड़ देता है। ग्रामवासियो के मध्य न आने पावें। जैसे आरण्य पशु ग्राम्य पशुओं की तरह उपयोगी नही है वैसे ही ये लोग ग्राम्यजनों के शत्रु हैं। परन्तु यदि इन्हे शासित कर उपयोगी बनाया जा सके तो बना सकते हैं। यह कार्य देवो अर्थात् विद्वानों का है। इन्हें वे ही वश मे करने की युक्ति जानते हैं। आरण्य मे ही हमारे तपस्वी विद्वान् अनुसन्धान का अध्ययन, अध्यापन व तपश्चर्या करते हैं। आरण्य पशुओं और आरण्य मनुष्यों दोनों से ही इनकी रक्षा आवश्यक है। अन्यथा राष्ट्र का ब्रह्म बल समाप्त हो जाएगा इत्यादि उत्तम शिक्षा इस प्रकरण में प्राप्त होती है।

१६—अश्व सञ्ज्ञपन—

आज अश्व अर्थात् छात्र संगठन दिग्विजय कर, वापस लौटा है। अत: सर्वप्रथम उसका उल्लास पूर्वक स्वागत होगा। वह थका हुआ, घायल और क्षीण प्राण है। पर्याप्त जन धन की हानि उठानी पड़ी है। अत: उसे उपचार व चिकित्सा की आवश्यकता है। पश्चात् परिजनों से स्नेहालाप सम्मिलन भी होता है। तत्पश्चात् राष्ट्र को पुन: व्यवस्थित करने, समृद्ध व सुदृढ़ बनाने, विभागों का वितरण, पारिश्रमिक, पुरस्कारादि प्रदान करना तथा राष्ट्र के उपयोगी भाग को कहा-कहां लगाना इत्यादि प्रशिक्षण कार्य चलेगा। यह सब कार्य प्रतीको के द्वारा किया जाता है।

अत: अश्व को जल से प्रोक्षण कर बेंत की चटाई पर वस्त्र बिछाकर सुवर्ण खण्ड रखकर लिटा देते हैं। अब उसे चार प्रकार की पत्नियां सहलाती हैं तथा पखा करती हैं। पत्नियां सुइयो से उसे खुजलाती हैं। इस प्रकार राष्ट्र कों श्री समृद्ध—और प्रजा से समर्थ करती है।

यहां कुछ लोग कहते हैं कि सञ्ज्ञपन मे घोड़े को जान से मार देते हैं और उसकी मेद से अग्नि मे आहुतियां देते हैं, यह ठीक नहीं है। ब्राह्मण कार के कथन को न समझ कर यह मूर्खता प्रचलित हो गई है। वह कहता है—"घ्नंति वा एतत् पशुम् यदेनं सञ्ज्ञपयन्ति" अर्थात् यह जो इस अश्व का संज्ञपन करते हैं सो यह पशु को मारते हैं। यहां अश्व को मारने की बात नहीं है किन्तु अश्व में जो पशु अर्थात् अनुपयोगी अंश है उसे मारकर संस्कृत करना है तभी वह राष्ट्र यज्ञ में आहुति के योग्य होगा। अश्व मर जायेगा तो राष्ट्र मर जायेगा। अत: कहते हैं प्राणाय—स्वाहाऽपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा इत्यादि। यहां पर स्पष्ट लिखा है कि वह अश्व मे प्राणों का आधान करता है यथा—"प्राणानेवास्मिन् एतद्दधाति" (शतपथ १३-२-२-२) अपि च तपो ह्यस्यैतेन जीव तैव पशु नेष्टम्भवति", अर्थात् तथ्य है कि जीवित पशु के द्वारा ही यज्ञ कार्य करना अभीष्ट है। यहां हरिस्वामी ने मूर्खतापूर्ण व्याख्या की है कि उत्क्रान्त प्राण होने के बाद ही तो प्राणों का आधान असंभव है। हमारा कहना है कि फिर तो मृत अश्व पुन: जीवित हो जाना चाहिए। वास्तव में उत्क्रान्त प्राण का अर्थ उखड़े प्राण अर्थात् थका, घायल व बेहोश है। अत: अश्वमेध यज्ञ मे घोड़ा नहीं मारा जाता। राजा और राष्ट्र तथा प्रशासन व सैन्यबल सबकी राष्ट्र यज्ञ में आहुतियां देने के योग्य मेध्य बनाना ही सञ्ज्ञपन है।

१७—चार पत्नियां—

अश्वमेध मे चार पत्नियां अपनी अनुचरियों के साथ नियुक्त की जाती है तथा पांचवी एक कुमारी होती हैं इनके नाम हैं महिषी, परिवृक्ता, वावाता, तथा पालागली। ये राजा की रानियां नहीं हैं, अपितु राष्ट्र की रक्षिका संस्थाओं की प्रतीक हैं। ये क्रमश भूसंरक्षण एव प्रबन्ध संस्था, महा-सभा, कार्यकारिणी तथा गुप्तचर संस्था की प्रतीक है। कुमारी शिक्षा विभाग एवं एम्पलायमेंट संस्था है। शेष अनुचरियां इन्हीं की पूरक व पोषक—उप संस्थाओं की प्रतीक हैं। ये सभी एक स्थान पर बैठकर राजा के साथ व्यवस्था सम्बन्धी बातचीत परामर्शादि करती हैं। इसे न समझकर महीधर सायण व हरिस्वामी ने मूर्खतापूर्ण प्रलाप किया है।

१८—वपा होम—

देवों को प्रसन्न करने अर्थात् विद्वानों की राष्ट्र के लिए सहानुभूति सदाशयता व सहायता पाने हेतु स्वयं का अंशदान करना ही वपा होम कह-लाता है, जो आज्य अर्थात् घी से ही करना चाहिए, क्योंकि आज्य ही मेध है और देवों का प्रियधाम है। यहा आज्य अश्व की वपा (चर्बी) का प्रतीक है, अत. इसे वपा होम कहा जाता है। अर्थात् राष्ट्र का सार भाग राष्ट्र हित मे प्रदान करना। जब राष्ट्र, उत्पादन और संरक्षण हेतु श्रम करता है तब शरीर की वपा (चर्बी) की ही आहुति लगती है। उसे भूखादि खाकर पूरा करते हैं, सो यह वही कृत्य है। विजय के पश्चात् क्षतिपूर्ति करना ही वपा होम है।

१९—ब्रह्मोद्य—

इसके पश्चात् ज्ञान चर्चा होती है। राष्ट्र की शिक्षा संस्थाओं को समुन्नत और विकसित बनाने का परामर्श, योजना निर्माण और तत्त्व ज्ञान का उप-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हिन्दी के प्रति हमारा कर्त्तव्य

(पृष्ठ १ का शेष)

१. हम दिल्ली सहित सभी हिन्दी भाषी राज्यो की सरकारों से अनुरोध करें कि वे कर्नाटक के समान सभी प्राथमिक विद्यालयों मे हिन्दी माध्यम को अनिवार्य करें। पब्लिक स्कूलों के लिए भी प्राथमिक कक्षाओं मे हिन्दी माध्यम की अनिवार्यता हो। ऐसी ही अपील हम अन्य राज्य सरकारो से अपनी-अपनी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की करें।

२. हम इन सरकारो से यह भी अनुरोध करें कि माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं मे भी सभी विद्यालयो मे अधिकतर हिन्दी माध्यम ही रखें। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि अब भारत सरकार द्वारा अधिकाश नौकरियों की भरती परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का विकल्प दिया जा चुका है।

३. अपने बच्चो को हिन्दी माध्यम से पढ़ायें और घर पर सब विषयों मे हिन्दी शब्दो का ही व्यवहार करे।

४ अपने नाम-पट्ट हिन्दी मे बनवायें तथा अपने सभी निमन्त्रण और अभिनन्दन पत्र हिन्दी मे ही छपवा कर भेजें।

५. अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, पत्रों का पता लिखने, चैक काटने, बैंक और डाकघर मे पैसा जमा कराने रेल मे आरक्षण कराने, बीमा कराने आदि कार्यों में हिन्दी का ही प्रयोग करें।

६. यदि हम व्यापारी अथवा उद्योगपति हैं तो अपने प्रतिष्ठान का मुख्य नाम पट्ट हिन्दी में ही बनवायें और अपने बही-खातो, रसीदों आदि मे हिन्दी का ही प्रयोग करें। उससे हमें हानि नहीं, लाभ ही होगा। ध्यान रखिए कि हिन्दी सबको समझ आती है, इसलिए यह व्यापक प्रचार का सशक्त माध्यम है। अपने उत्पादनो पर वस्तु का नाम और अन्य विवरण हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में लिखें।

७ हिन्दी जन-जन की भाषा है, सबको जोड़ती है। अपने बच्चो को अंग्रेजी परस्त बना कर उन्हें सामान्य समाज से अलग न करिये।

८. अपने घर पर हिन्दी का समाचार-पत्र अवश्य लीजिए।

९. सरकार से अनुरोध करे कि दूरदर्शन पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रम हिन्दी मे दिये जायें जिससे सबको लाभ हो।

आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली-३४ द्वारा स्वतन्त्रता सेनानी डा० भारत भूषण, रानी बाग, दिल्ली के आर्थिक सहयोग से प्रचारित।

अश्वमेध यज्ञ

(पृष्ठ ६ का शेष)

योग यह सब ब्रह्मोद्य है इससे राष्ट्र ब्रह्मवर्चस्वी होता है। यज्ञ के पश्चात् ही यह सब सम्भव हो पाता है। जब उदर भरा हो और वातावरण शान्त हो। वैज्ञानिक अनुसन्धान भी तभी सम्भव हो पाते हैं। अत इस कृत्य मे ऋत्विको और यजमान के प्रश्नोत्तर होते हैं।

२०—अभिमेथन—

यह एक दूषित कृत्य वैदिक धर्म विरोधी लोगों द्वारा बाद मे जोड दिया गया है। रानियो से अश्लील हसी मजाक आदि ऋत्विको द्वारा करने का वर्णन है सो सब धूर्तकृत्य है। इसे शतपथ मे परिशिष्ट कहा गया है। अत. यह प्रक्षेप है। यथा यथाद्रिगो परिशिष्ट भवति"'इत्यादि अत: यह अश्वमेध का भाग नही है।

२१—अवभृथ स्नान एवं दक्षिणा—

अब यज्ञ समाप्त हो रहा है। अवभृथ स्नान के पश्चात् अनुबन्ध्याइष्टि करके उदवसानीया नामक इष्टि करते हैं। पश्चात् दक्षिणा प्रदान की जाती है। इस समय चारो पत्निया व अनुचरिया एक निश्चित क्रम में ऋत्विकों के पास खड़ी की जाती हैं क्योकि ये उन्ही से सम्बन्धित समस्याओं की प्रतीक होती हैं। अत. दक्षिणा के समय ऋत्विको को धनादि देकर उन रानियो व अनुचरियो को भी उन्हें सौंपते हैं। इसका आशय न समझकर सायण व हरिस्वामी और अन्य कई आचार्यो ने इस प्रकरण का अर्थ किया कि यजमान रानियो और अनुचरियों को दक्षिणा के रूप में ऋत्विजों को दे देता है। यह नासमझी है। देखो उदवसानीय इष्टि में स्थित चार जाया, पांचवी कुमारी और १०४ अनुचरियों को जैसे जिसके साथ नियुक्त किया था उसी अवस्था मे दक्षिणा स्वरूप द्रव्य प्रदान करता है। यह है इसका वास्तविक अर्थ न कि स्त्रियो को ही दान मे दे देता है।

इस प्रकार अश्वमेध कृत्य का संक्षिप्त परिचय कराया गया। बहुत-सी क्रियाएं छूट गई हैं। मुख्य मुख्य का ही ग्रहण किया गया है। इस अश्वमेध मे सम्पूर्ण राजनीति, सार्वभौम शासन व्यवस्था आदि का उत्तम शिक्षण प्रतीकों के माध्यम से दिया गया है। अश्वमेध का अर्थ है पृथ्वी के सभी अच्छे राजाओं का प्रजा के सहयोग से विनियोग कर विश्व साम्राज्य (कामन वेल्थ) का गठन करना। सार्वभौम साम्राज्य का एक सर्वसम्मत सम्राट अभिषिक्त करना इत्यादि। वाममार्गी काल मे वैदिक यज्ञों का स्वरूप भ्रष्ट कर दिया गया और उसमे हिंसादि का प्रक्षेप कर दिया गया, अश्वमेध मे जो घोड़ा मारना, चर्बी व मांस की आहुति देना, रानी का मृत अश्व के साथ सहवास कराना तथा रानियो और अनुचरियो को ऋत्विको के लिए दान कर देना लिखा है यह सब धूर्तो का प्रक्षेप ही समझना चाहिए। मध्य कालीन कर्मकाण्डी कर्मकाण्ड का आशय ही नही समझते थे इसमे कोई सन्देह नहीं। अन्यथा यह विदूषण हो ही नही पाता। इस युग मे मात्र महर्षि दयानन्द ही एक मात्र विद्वान् हुए हैं। जिन्होने वैदिक कर्म का वास्तविक स्वरूप और रहस्य समझा और उसकी उपयोगिता जानने का मार्ग प्रशस्त किया।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : —३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४/—९३

ओ३म्
साप्ताहिक आर्य सन्देश
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १८, अंक १० | रविवार, १५ जनवरी १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५
मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन—२५० रुपये | विदेश मे ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

आर्य जगत् की एक और अपूरणीय क्षति
श्री डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार का निधन

स्व नाम धन्य श्री डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार गुरुकुल कांगडी, विश्व-विद्यालय के सुयोग्य स्नातक थे। अपने जीवन मे अत्यन्त कर्मठ कार्यकर्ता के रूप मे जाने जाते हैं। उन्होने विभिन्न क्षेत्रो मे रहकर आर्य समाज की अनुपम सेवा की है।

डा० हरिप्रकाश का निधन दिनाक ४ जनवरी १९९५ को अपराह्न १२ ४५ बजे यमुना नगर मे हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार अम्बाला के राम बाग श्मशान घाट पर ५ जनवरी को प्रात. ११ बजे हुआ। इस अवसर पर श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय हरिद्वार, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा० राजकुमार रावत व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल फार्मेसी तथा हरिद्वार के अनेकों गण्यमान्य महानुभाव, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेको सदस्य अम्बाला की विभिन्न आर्य समाजों के अनेकों सदस्य उपस्थित थे।

डा० हरिप्रकाश संयुक्त आर्य प्रतिनिधि पंजाब के लगभग १५ वर्षों तक मन्त्री रहे। गुरुकुल फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष का कार्य अत्यन्त कुशलता पूर्वक करते रहे।

इनका जन्म सन १९१२ मे कमालिया (पाकिस्तान) मे हुआ। गुरुकुल के स्नातक होने के पश्चात वे अनेक क्षेत्रो मे कार्यरत रहे। गुरुकुल विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी के सदस्य, स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय के प्रबन्धक कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के मुख्याधिष्ठाता, ज्वाला पुर इन्टर कालेज के अध्यक्ष, आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला के अध्यक्ष तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य के रूप मे सदैव आर्य समाज के कार्यो मे अग्रणी रहे। इनका जीवन अत्यन्त सरल एव सादगी पूर्ण था। इनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसको पूर्ति करना असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

ऋषि दयानन्द वचनामृत

—मेरी अन्त करण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक आर्य समाज स्थापित हो और देश मे व्यापी हुई कुरीतिया उन्मूलित हो जाए।

—सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात सामान्य सार्वजनिक धर्म, जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसलिए उसको सनातन नित्यधर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।

—मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हू कि तीन काल मे सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नही है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोडना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है।

—ज्ञान प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यो की सिद्धि होना। उसमे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये सिद्ध होते हैं इनको प्राप्त होकर मनुष्यो को सुखी होना उचित है।

—इससे मनुष्यो को उचित है कि सद्विद्यादिक उत्तम गुणो का जगत् मे प्रचार करना, व्यवहार परमार्थ की शुद्धि और उन्नति करना तथा वेद-विद्यादि सनातन ग्रन्थ का पठन-पाठन और नाना भाषाओ म वेदादि सत्य शास्त्रो का सत्यार्थ प्रकाश करना, एक निराकार परमात्मा की उपासनादि का विधान करना, कलाकौशलादि मे स्वदेशादि मनुष्यो का सुख विधान, परस्पर प्रीति का करना हठ, दुराग्रह, दुष्टो के संगादि को छोडना, उत्तम-उत्तम पुरुष तथा स्त्री लोगो की सभाओ मे सब मनुष्यो का हिताहित विचारना और सत्य व्यवहारो की उन्नति करना इत्यादि मनुष्यो का आवश्य कर्त्तव्य है।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली का एकादश
आर्य युवा महासम्मेलन

आर्य वीर दल की शाखाओ तथा दिल्ली स्थित विद्यालयो के छात्र-छात्राओ के लिए चित्रकला एव निबन्ध-लेखन, खेल कूद, भाषण, वाद-विवाद एवं समूहगान प्रतियोगिताओं का स्वर्णिम अवसर।

प्रतियोगिताओं में भाग लेकर भारी पुरस्कार प्राप्त करे।

पुरस्कार वितरण समारोह

शनिवार, २१ जनवरी, १९९५

प्रात ९ ०० बजे, रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल

राजा बाजार, निकट शिवाजी स्टेडियम

निवेदक

सूर्यदेव प्रधान फोन ३२६४१२६ | डा धर्मपाल महामंत्री फोन : ७१११६७१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रियव्रतदास रसवन्त अधिष्ठाता | आचार्य खुशीराम शर्मा सहसंचालक

ईश कुमार नारग, महामन्त्री आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली दूरभाष ३१०१५०

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव | सह सम्पादक · आचार्य सुधाकर एम ए.

मानव निर्माण कैसे होगा ?

आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद

आज ससार भौतिक विज्ञान की खोज मे बडी तीव्रता व तत्परता से जुटा है ? यह विश्व की उन्नति के लिए एक अच्छा लक्षण है। पर इस समय मानव निर्माण की दिशा में घोर उपेक्षा और सही दिशा मे प्रयत्नों का अभाव एक अत्यन्त पीडा देने वाली बात है। हमारी स्थिति ठीक एक ऐसे धनपति जैसे हो चली है जिसके पास भौतिक ऐश्वर्यों का अम्बार लगा है। भोग विलास के सारे साधन उपस्थित हैं पर धनपति की स्थिति यह है कि वह डेढ फुलका हजम नही कर सकता। मधुमेह व रक्त चाप के कारण नमक व मिष्ठान्न दोनो भी उसके लिए वर्जित हैं। ऐसा ऐश्वर्य ऐसी भौतिक उन्नति का कोई महत्व नही है। इससे तो वह अभाव ग्रस्त जीवन ही सुखदायी है जहा प्रतिदिन श्रम करके श्रमिक पेटभर रोटी तो खा लेता है और फिर दूसरे दिन श्रम करने के लिए एक नयी ताजगी लेकर तैयार रहता है।

एक स्वस्थ शरीर पवित्रमन और श्रेष्ठ स्वभाव से युक्त आत्मा के वास्तविक ऐश्वर्य के सामने कुबेर का खजाना भी पत्थरो के ढेर से अधिक महत्व नही रखता।

पर जीवन की सार्थकता और विश्व की श्रेष्ठतम स्थिति वह है कि—आदमी तन, मन और आत्मा का भी धनी हो और हर प्रकार के भौतिक साधन भी उपलब्ध रहें।

मोटर बगला और उद्योग प्राप्त कर लेना अपेक्षाकृत सरल है कि मनुष्य तन, मन और आत्मा से पूर्ण स्वस्थ रहे।

वास्तव मे वैदिक जीवन पद्धति का उद्देश्य अभ्युदय और नि.श्रेयस दोनों प्रकार के समन्वित सुख प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करता है। तर्क मे ऊहा मे आर्यसमाज आज भी आगे है पर मानव तीनों स्तर की उन्नति मे पिछडा चला जा रहा है।

हमारी अवनति का मूल कारण यही है। हमारा सम्बन्ध लगभग सभी आर्य शिक्षण सस्थाओ आदर्श गुरुकुलो से है। पर हम बड़े दु.ख के साथ लिख रहे हैं कि हमारे आदर्श गुरुकुलो के छात्र भले ही शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ दिखाई पडते हैं पर ब्रह्मचारियो के चेहरे भी पीले और निस्तेज नजर आते हैं। छात्र और छात्राओ के स्कूल कालेजो की दुर्दशा के तो कहने ही क्या हैं ?

अब तो ऐसी फिल्मे तैयार हो चुकी हैं जो युवाओ मे खुलकर प्रचार कर रही हैं कि—वीर्य की हानि करना वैज्ञानिक दृष्टि से हानि कारक नही है। वीर्य नाश का कोई दुष्प्रभाव नही होता। न डाक्टर ही इस बात की ओर ध्यान देते हैं फिल्म सेंसर बोर्ड के अधिकारी तो इस दिशा मे सर्वथा अनभिज्ञ और अयोग्य ही माने जा सकते हैं। माता-पिता और बच्चें तथा किशोर अवस्था के बच्चे फिल्म और टी० वी० के दृश्यो मे ऐसी कामुकता भरी घटनाए बड़ा रस लेते हुए चल चित्रो मे देखते है। अपने बच्चो के साथ बैठे नित्य कामुकता को उभारने वाले दृश्यो को तीन पीढी के सदस्य एक साथ देखकर लजाते तक नही है। फिर मानव निर्माण की बात कैसे सोची जाए :

सस्कार हीन बालको के निर्माण मे हमारे अनेक तेजस्वी ओजस्वी महापुरुष गुरुकुल खोल-खोलकर बैठे हुए है, उपाधि प्राप्त छात्र तो तैयार हो रहे हैं। पर तेजस्वी, ओजस्वी विद्वानों का निरन्तर अप्रत्याशित ढग से अभाव हो रहा है।

जिस युग मे देव दयानन्द उत्पन्न हुए थे उसमे और आज के युग मे जमीन आसमान का अन्तर आ गया है। वास्तव मे प्राचीन काल से भारत मे मानव निर्माण पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता था। भारतीय इतिहास से परिचित हर व्यक्ति जानता है कि जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम चन्द्र जी की पत्नी सीता गर्भवती हुई थी उनको…तो ऋषि के आश्रम मे भेज दिया गया था। मध्यकालीन अज्ञानी लोगो ने कल्पना गढ ली कि—राम ने सीता का त्याग कर दिया था। परन्तु यथार्थ यह था कि—हमारे देश मे पु सवन सस्कार अर्थात जब यह सुनिश्चित हो जाता था कि—स्त्री गर्भवती हो गई है तब उसे प्रकृति के सुन्दर व स्वस्थ वातावरण मे पूर्ण सयम के साथ रखने के उद्देश्य से वनस्थ आश्रमो मे भेज दिया जाता था। यदि आज भी हम लोग इस वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण करें तो फिर से धरती पर राम-कृष्ण और देव दयानन्द जैसे सयमी व्रती महापुरुष उत्पन्न हो सकते हैं।

घर के प्रकोष्ठ मे माता पिता डबलबेड डाले पड़े हैं तो बगल में पुत्र और पुत्रवधु का डबलबेड का शयन कक्ष है। बहुएं सासु जी के प्रसव के समय सहायताएं कर रही हैं। लेखनी लिखते हुए काप उठती है पर परिवारों में सोच विचार का अभाव हो चला है। यह दुर्दशा है आज मानव समाज की।

इसमे भी सर्वाधिक दुर्दशा ग्रस्त है भारत। जो कभी विश्व का गुरु था। भारत के किसी भी भीड भरे स्थल पर आप खड़े हो जाए और नजर दौड़ाएं तो आप देखेंगे कि अधिकाश पुरुषो और स्त्रियो के पेठ छाती से काफी आगे बढे हुए हैं। अभी विदेशी इस दृष्टि से भारतीयो की अपेक्षा स्वस्थ स्वावलम्बी व फुर्तीले देखे जा सकते है। हमारी गर्भवती बहिन बेटिया बड़े मनोयोग से टी. बी. और फिल्मे देखती हैं। उन्हे इस बात का पता ही नही है। कि इस समय गर्भ मे विकसित होने वाला शिशु एक कार्बन कापी के रूप मे उनके गर्भ मे स्थित है जो वह सोचती है देखती है और करती है या सुनती है वह सब कुछ उस गर्भस्थ शिशु मे सस्कारों के रूप मे अकित हो रहा है। जैसे वह सोचती है देखती हैं और सुनती है बस उसकी सन्तान मे वही कुछ विकसित हो जाएगा। हिंसा, हत्या, बलात्कार की घटनाए देख देखकर जिन्होंने बच्चो को जन्म दिया है वही आज उग्रवादी नक्सली और भ्रष्टाचारी बन रहे है।

यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष पडने वाला सूक्ष्म प्रभाव सस्कार कहलाता है। मानव एक कठपुतली मात्र है सस्कार ही उसका अदृश्य सचालक होता है।

इसी लिए आधुनिक युग के सर्वश्रेष्ठ विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव निर्माण करने की विधि का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है जिसका नाम "संस्कारविधि" है। यह मानव निर्माण करने के लिये एक प्रमाणिक सर्वश्रेष्ठ दिशा बोधक ग्रन्थ है। सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि पठनीय ग्रन्थ हैं संस्कार विधि करणीय ग्रन्थ है। सस्कार शब्द मे जो कार शब्द हैं वह सम् अर्थात सम्यक् रूप से कार अर्थात करणीय विधि का बोधक ग्रन्थ है।

हम सबने इस ग्रन्थ की घोर उपेक्षा की है। इस ग्रन्थ को हमने केवल पुरोहितो के काम का ग्रन्थ समझ लिया पुरोहित ने इसे मन्त्रो के संकलन का ग्रन्थ मान लिया है। उसके साधारण आधार पर यज्ञ करा दो और दक्षिणा प्राप्त कर लो।

यह कितनी घोर विडम्बना है बस हमारी आर्यसमाज रूप गाडी का मुख्य मुख्य दोष यही पर है जिससे लाख यत्न करने पर हमारी प्रगति होना तो दूर हम निरन्तर अवनति के शिकार हो रहे हैं। हम दुर्भाग्य से इस समय हैदराबाद के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा केन्द्र के एक वातानुकूलित प्रकोष्ठ मे बन्द पड़े हैं प्रभु की कृपा है कि हमारा ब्लड प्रेशर ८० से १२० चल रहा है। सब कुछ सामान्य है। योग्य चिकित्सक बडी सावधानी से हमें किसी भावी खतरे की आशका का निराकरण करने मे जुटे हुए है। हमारे सामने करोड़ो की योजनायें हैं और क्रियात्मिक रूप से सस्कारविधि के अनुरूप मानव निर्माण के कार्य को मूर्तरूप देकर ही हम इस देह को बडे सन्ताप से त्यागना चाहते है। पर जो कुछ हम सोचते हैं आवश्यक नही है कि वह सब कुछ हो ही जाए। यह तो सब हमारे आचरण देह की स्थिति व क्षमता व प्यारे प्रभु की व्यवस्था पर ही आधारित होता है। इसी लिए हास्पीटल मे बैठे बैठे हम इस योजना को आर्यजगत् मे प्रस्तुत कर देना आवश्यक समझ रहे है।

हमे कार्य आरम्भ करना है। २४ वर्ष के युवको व सोलह वर्ष की युवतियो के समक्ष कुछ ऐसी प्रेरणाप्रद शिक्षाओं मे जिससे उन्हे गृहस्थजीवन मे जाने से पूर्व अपने जीवन साथी के चयन मे तथा हनिमुन तथा मधुरात्रि से पूर्व की ऐसी तैयारी जिससे व सस्कारित सन्तान को जन्म दे सके। ऐसी पुस्तिका तैयार करना और गृहस्थ के मुख्य उद्देश्य व कर्तव्यों के प्रति उन्हे जागरूक रखना। यह कार्य का प्रथम चरण होगा।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

मानव निर्वाण

(पेज २ का शेष)

दूसरा कार्य ऐसे दृढ़ सुस्कारित दम्पति के लिए हनिमुन मनाने को एक ऐसे केन्द्र की मसूरी पर्वत पर संकल्पी करना जहा उन्हें एक मास तक आमोद प्रमोद का अवसर श्रेष्ठ आवासीय व्यवस्था तथा दिन में दो-दो बार प्रेरणाप्रद उपदेश प्रेरणाप्रद सन्तान निर्माण की दिशाए उत्तम प्रेरणा देने वाली फिल्मो का प्रदर्शन व आहार में ऐसी उत्तम औषधियों की व्यवस्था करना उनकी सन्तान अत्यन्त बुद्धिमति और योग्य हो ऐसे वातावरण व साधनों की सुविधा प्रदान करना ।

जो स्त्रियां गर्भवती हों और अपने बच्चें का आदर्श निर्माण करने लिए दृढ़ सकल्पी हो ऐसी पुत्रियों के लिए दस मास तक सुख सुविधा पूर्वक रहने तथा हर प्रकार के श्रेष्ठ सस्कारों का मनोरजन पूर्वक वातावरण देते हेतु व्यवस्था करना ।

इसी कालावधि में उसे पाच वर्ष तक अपने बच्चे को कैसे सस्कार देगी और योग्य बनाएगी का प्रशिक्षण देना । पिता के लिए भी जब वह एक मास हनिमुन आश्रम मे रहेगा उसे भी बालक के प्रति कर्तव्य का प्रशिक्षण देना ।

तीसरी योजना एक ऐसे गुरुकुल की स्थापना करना जिसमे आधुनिक केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम की श्रेष्ठ व्यवस्था तथा साथ ही महर्षि देव दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्मित वेदांगप्रकाश के आधार पर प्राच्य विद्या प्रदान करने की उत्तम व्यवस्था ।

इस गुरुकुल मे हाईस्कूल स्तर तक की पढ़ाई अग्रेजी व सस्कृत माध्यम से कराई जाएगी । जिसके की हमारे पास पढ़े हुए छात्र आगे स्वेच्छा से अपने पसन्द की पढाई विश्वविद्यालयो में पूरी कर सके , सम्भव हो सके तो ऐसी सभी विषयो की पढाई वाली व्यवस्था का विश्वविद्यालय भी खोला जाय जहां ब्रह्मचर्य के आदर्शों का पालन करते हुए हमारे ओजस्वी तेजस्वी ईमानदार छात्र हर क्षेत्र मे आगे सुयोग्य पदों पर जा सके । सस्कारित सतानो को उत्पन्न करने की दिशा में क्रियात्मक योगदान पथप्रदर्शन पुन सस्कारित बच्चो को लेकर उन्हें आधुनिक व प्राच्य विद्या में समान स्तर की योग्यता वाला बनाना ।

आज वातावरण अत्यन्त दूषित है । पर प्रभु कृपा से हमारे पास मसूरी मे व हैदराबाद में लगभग आठ एकड भूमि है । गलत दानवीर महानुभावों से हमारे घनिष्ट सबध हैं । हम इस दिशा में अपनी आयु को लगाना चाहते हैं । सस्कार-विधि हमारा योजना ग्रन्थ है जो मानव निर्माण की रचनात्मक दिशा प्रदान करता है । पर यदि हम इस कार्य को पूरा न भी कर पाए तो भी आर्यजगत् में सैकड़ो पवित्र त्यागी तपस्वी तथा विद्वान व दानी कुबेर विद्यमान हैं । जो इस कार्य को साकार कर सकते हैं । हमें न तो सार्वदेशिक सभा की चिन्ता है और न आर्यसमाज की । न राष्ट्र की । ये सब क्रम दो पर आते हैं । यदि हम पांच, दस, बीस, पचास सौ हजार जितने भी सम्भव हो उतने सस्कारित व पूर्ण आश्रम मर्यादाओं का पालन करने वाले योग्य व्यक्ति तैयार करेंगे तो ये संस्थाए समाज राष्ट्र सब ठीक हो जाएगे । आवश्यकता मानव निर्माण की है । आर्य तो बने नहीं तो आर्य राष्ट्र या आर्य समाज नहीं बनेगा । इस बात को पत्थर की लकीर समझकर गोठ कर लीजिए । हमारी प्रथम आवश्यकता मानव निर्माण की है । ऐसे क्रियात्मक चरित्र-वान सदाचारी तपस्वी त्यागी यदि दस बीस भी मनुष्य आर्य तैयार हो जाए तो ससार स्वर्ग बन जायगा । संसार हमारे क्रियात्मक प्रयत्नों का अनुकरण करने लगेगा ।

आज हमारे पास अच्छे लोग तो हैं । कोई वित्तैषणा मे तो कोई लोकैषणा व पदैषणा में तो कोई पुत्रैषणा में ग्रस्त है । हमारे सस्कारों में कमी है दुर्बलता है । हम अपने इन दुर्बलताओं पर विजय पाने वाले कुछ लोगों को तैयार कर सकेंगे तो अपना जीवन सफल बना सकेंगे ।

चिन्ता की घबराने की निराशा की कोई बात नहीं है । केवल हम अपने को इन दुर्बलताओं से बचाकर गर्भाधान से समाप्ति तक के कार्य को सही ढग से करेंगे तो सफलता हमारा चरण चूमेगी । ससार मे वैदिक धर्म छा जाएगा । वैदिक धर्म तो शुद्ध मानवीय धर्म ही है । एक सही जीवन पद्धति है । इसमें कोई शार्टकट नहीं है । इन मन्जिलों को हमें रत्ती-रत्ती भर पूरा करना ही पड़ेगा । महर्षियों की योजना से वेद की योजना से सुन्दर अच्छी और सरल योजना विश्व में कोई मिटा नहीं सकता है । आवश्यकता है हम इस योजना को समझें और तदनुसार चलें । इसमें हमें आधुनिक विज्ञान का पूरा सहयोग भी लेना चाहिए । अष्टाध्यायी धातुपाठ, गणपाठ निघण्टु आदि के टेप तैयार हों जिन्हें सुन-सुनकर बच्चे इन ग्रन्थों को कण्ठाग्र कर लें उन्हें मुन्नों को सुन्दर श्लोक मन्त्र योजनाबद्धढग से टेप करके घरों मे फैला दें ।

उत्तम सन्तानकेनि मणि विधि नवयुवकों तक टेपों के चलचित्रों के माध्यम से पहुचाई जाए । महर्षि ने उत्तम सन्तानों के निर्माण के लिए जिस सर्वौषधि का विधान किया है उन्हें हमारी फार्मेसियां शुद्ध रूप मे बनाए उनकी सेवनविधि को सरल रूप में प्रचारित किरे तो हमारा विश्वास है आगे वाले पचास वर्षों में हम ससार को बदल देंगे ।

महर्षि की सस्कार विधि का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर सारी बातें अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है । हम चाहते हैं कि इस प्रकार के सुप्रयत्न आरम्भ किए जाए और मानव निर्माण की वास्तविक प्रक्रिया का विश्व मे फिर से प्रचलन हो ।

यह कार्य भाषणों से सम्भव नहीं होगा । इस दिशा में क्रियात्मक प्रयत्न आरम्भ करने होंगे । प्रभु परमेश्वर हमें शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें कि जिससे हम सच्चे आर्य निर्माण करने की दिशा में रचात्मक प्रयत्न आरम्भ कर सके ।

इस योजना को प्रत्यक्ष करके जब यह सिद्ध कर दिखला दिया जाएगा तब यह विधि समूचे विश्व में स्वयं ही प्रचलित हो जाएगी इसीलिए हम कहते हैं कि "आर्य बनाए जाते हैं आर्य तो पैदा किए जाते हैं ।"

इसके साथ यज्ञ पर वैज्ञानिक अनुसधान और उसका प्रचार तथा सारे विश्व में शाकाहार गोदुग्ध मक्खन मलाई के प्रयोग और उसके लाभ को प्रचारित किया जाए । बस यही हमारी विजय है । प्यारे प्रभु की सृष्टि को सवारने मे आर्यसमाज का योगदान है । आर्यों सोचो विचारो और करने मे जुट जाओ । बातों का युग चला गया है कर युग है कुछ तो करो । प्रभु हमें भी शक्ति दे हम इस कठिन लगने वाली योजना को सरल रूप में साकार करने का शिव सकल्प करते हैं ।

सूचना

पलवल हरियाणा आर्य युवक परिषद (रजि०) के तत्वावधान में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे २२ जनवरी १९९५ को आर्य युवक परिषद का प्रान्तीय रजत जयन्ती महासम्मेलन स्वामी विवेकानन्द हाई स्कूल रेलवे रोड, पलवल मे होगा। इस अवसर पर आर्य युवक परिषद के सस्थापक स्वर्गीय मा० धर्मपाल आर्य की स्मृति मे व्यायाम शिक्षकों व परिषद के सक्रिय कार्यकर्ताओ को सम्मानित किया जायेगा।

प्रान्तीय रजत जयन्ती महासम्मेलन दो सत्रो में सम्पन्न होगा। प्रथम सत्र में राष्ट्र रक्षा यज्ञ व उदघाटन होगा। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विजयानन्द सरस्वती सचालक आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर होंगे तथा समारोह का उदघाटन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य द्वारा किया जायेगा। समारोह के दूसरे सत्र में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की अध्यक्षता मे रजत जयन्ती महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन मे श्री आर्य वीर मल्ला प्राचार्य डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद व श्री भगत भगतूराम मुख्य अतिथि होंगे।

१९९५ नव वर्ष की शुभ कामनाएं

ले० एवं, भेंटकर्ता-स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

उन्नीसौ पिच्चानवा शुरु हुआ नव वर्ष।
मिल करके स्वागत करो, तन मन से सहर्ष॥
तन मन से सहर्ष खुशी के साज बजायें।
उन्नति पथ के उच्च शिखर पर चढते जायें॥
भारत की उर्वरा धरा धन धाय उपजायें।
कलुषित कलह कपट कटुता को दूर भगाये॥
करे देव पूजा घर घर मे यज्ञ रचाये।
मिटे रोग दुष्काल परस्पर प्रीति बढाये॥
राष्ट्र अखण्ड रहे भारत माता की जय हो।
नूतन वर्ष सुखद शान्तिमय मगलमय हो॥

टंकारा चलो ऋषि जन्मभूमि, द्वारका चलो भगवान कृष्ण की राजधानी, सोमनाथ मन्दिर एतिहासिक स्थान, भगवान कृष्ण को जहां बाण लगा था

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट टंकारा एवं श्री रामनाथ सहगल जी की प्रेरणा से प्रति वर्ष की भांति ऋषि मेला टंकारा अवश्य चलो।

दर्शनीय स्थान

१—अजमेर पुष्कर ब्यावर जोधपुर, माऊन्ट आबु, टंकारा द्वारका पोर बन्दर सोमनाथ राजकोट, उदयपुर, चित्तौड, जयपुर, दिल्ली।

२—आने जाने का किराया १४०० रुपए प्रति सवारी होगा।

३—बाहर से आने वाले आर्य समाज अनार कली मन्दिर मार्ग एव चूना मण्डी पहाडगंज समाज मे ठहर सकते हैं।

सयोजक — सीट बुक कराने के लिए सम्पर्क करे

श्याम दास सचदेव मन्त्री	बलदेव राज सचदेव	श्री अविनाश जी
आर्य समाज चूना मण्डी, पहाडगंज	डी बी-३ २७४	सै० न ३ पाकेट
नई दिल्ली ५५	विकासपुरी	एफ-२५ फ्लैट न ११४
फो घर ७५२६१२८ पी पी ७३८३०४	नई दिल्ली	जी एम आई जी
घर का पता २६१३/६, भगतसिह गली		रोहिणी
चूना मण्डी, पहाडगंज नई दिल्ली-५५		नई दिल्ली

मकर संक्रान्ति पावन पर्व है

आर्यों का ये मकर-सक्रान्ति, पावन पर्व है।
पर्वों का ये तो मूल है, हम सबको इस पर गर्व है॥
राम कृष्ण, ऋषि वृन्द ने, इस पर्व को माना सदा।
पाला सनातन धर्म को, था सत्य को जाना सदा॥
इस दिन घरो मे यज्ञ पावन, आर्य जन करते थे सब।
वैदिक कथा से मानसिक, पीडा सकल हरते थे सब॥
ज्ञान की गगा विमल, बहती थी प्रजा थी सुखी।
था स्वर्ग का वातावरण कोई नही था तब दुःखी॥
शासक थे सब धर्मात्मा, जनता का रखते ध्यान थे।
वीर, व्रतधारी, सदाचारी, महा बलवान थे॥
विश्व हित की योजना, इस दिन बनाते थे सुनो।
न्यायकारी थे प्रजा का, दुख मिटाते थे सुनो॥
हम गुरु थे विश्व के, इसका सुखद परिणाम था।
भारतीय सब देवता थे, हर तरह आराम था॥
चोर, डाकू, जार, मद्यप, इस जगत में थे नहीं।
व्यभिचारिनी नारिया, तब विश्व मे ना थीं कहीं॥
यदि अर्थ इस त्योहार का, ससार सारा जान ले।
गौतम, कपिल, दयानन्द की, यदि सीख दुनिया मान ले॥
सद भावना जागे दिलो में, विश्व के कल्याण की।
सब ईश विश्वासी बनें बातें तजें अभिमान की॥
वेद के अनुकूल जीवन, ये हमारा हो प्रभो।
सबके जीवन का सहारा, तू ही प्यारा हो प्रभो॥
विश्वास है हमको जगत, के दूर होंगे दुःख सभी।
दीन, दुखिया ना रहेंगे, प्राप्त होंगे सुख सभी॥
हे ईश तुम वरदान दो, हम कर्म नेकी के करें।
मानव बनें, मानव सभी, ससार की पीड़ा हरें॥

—ले० नन्दलाल "निर्भय"

आर्यसमाज प्रगति के पथ पर

वैदिक धर्म के प्रचार एव प्रसार के लिए एक सेना तैयार की जा रही है। जिसके लिए १४ जनवरी १९९५ से १०० व्यक्तियो का एक शिविर एक मास के लिए आर्य समाज बिरला लाइन्स दिल्ली मे सीताराम आर्य प्रधान, महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा के सयोजन मे होने जा रहा है। जिसमे प्रत्येक प्रान्त से व्यक्ति लिए गये हैं। जो प्रशिक्षण लेकर अपने प्रान्तो मे जाकर अपनी भाषा मे आर्य समाज का प्रचार करेंगे। शिविर मे भाग लेने के निमित्त निम्न पते पर सम्पर्क कर। सीताराम आर्य

२१/३६ सी चन्द्रलोक दिल्ली-५१
फोन न० ५३१४११

वानप्रस्थ आश्रम नोएडा

आर्य समाज नोएडा के तत्वावधान में वानप्रस्थ आश्रम निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। ५०वर्ष से अधिक के पुरुष अथवा महिलायें जो वैदिक धर्म मे आस्था रखती है इसमें आजीवन निवास के लिए कमरा बनवा सकते हैं। अथवा एक लाख रुपये की राशि एक बार में या चार किस्तों में नकद अथवा चैक ड्राफ्ट द्वारा वानप्रस्थ आश्रम, आर्य समाज मन्दिर नोएडा को भेजकर अपना कमरा आरक्षित करवा सकते हैं। प्रातः सायं संध्या हवन, भजन, प्रवचन एवं योग साधना का विशेष प्रबन्ध है। समस्त महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि हमारे इस प्रयास को सफल बनाने में तन-मन-धन से सहयोग करें।

कार्यान्वयन की प्रतीक्षा में न्यायालय का आदेश

गत: शेष डा० प्रशान्त वेदालंकार की प्रथम स्मृति के अवसर पर १ दिसम्बर को 'हिन्दी माध्यम की अनिवार्यता' विषय पर आयोजित संगोष्ठी आर्य समाज बिड़ला लाइन्स कमला नगर, दिल्ली-७ में की गई जिसमें विभिन्न वरिष्ठ प्रतिष्ठित विद्वानों ने विविध विचार व्यक्त किये।

संगोष्ठी के अध्यक्ष स्वामी उत्तम प्रकाशानन्द जी ने प्रश्नात्मक शैली में निम्न विचार रखे।

क्या हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास का प्रश्न इसी प्रकार खेमे और गुटबन्दी का शिकार होता रहेगा? क्या देश की शिक्षा और संस्कृति के विकास के इच्छुक बुद्धिजीवी तथा अन्य सभी हितैषी अभी और समय की प्रतीक्षा करेंगे? क्या ये सब मिलकर भारतीय भाषाओं की लड़ाई को नहीं लड़ेंगे?

याद रखिए देश उसी दिन वास्तविक अर्थों में स्वतंत्र होगा जिस दिन देश की जनता विदेशी जकड़नों से मुक्त हो जायेगी और देश की भाषाएं अंग्रेजी के प्रभाव से मुक्त होकर अपना विकास करेंगी।

आनन्द स्वरूप गर्ग ने कहा कि यह सत्य है कि देश की भाषाओं के विकास में अंग्रेजी महान बाधक है उसके वर्चस्व के कारण भारतीय भाषाओं का विकास अवरुद्ध हो जाता है। यह विचित्र विडम्बना है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत जहां का छात्र अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का जो अच्छा जानकार था, पर अब जो नई पीढ़ी आ रही है, वह केवल अंग्रेजी जानती है उसे सैंतीस और सड़सठ समझ नहीं आते, थर्टी सेवन तथा सिक्सटी सेवन को ही वे समझते हैं।

जो अंग्रेजी के न जानने से ज्ञान की दृष्टि से देश के पिछड़ जाने की बात कहते हैं, उनसे हमारा निवेदन है कि अंग्रेजी की शिक्षा और सेवा से पूर्ण बहिष्कृत कर देने के बाद भी वह अभी अगले ७५-८० वर्षों तक इस देश में व्यापी रहेगी। यदि इसका संबंध ज्ञान-विज्ञान के विकास के साथ है तो उसका लाभ इस देश को मिलता रहेगा।

यह सत्य है कि शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम के कारण भारतीय छात्र का मस्तिष्क कुण्ठित हो गया है, उसमें मौलिक चिन्तन की शक्ति नहीं रही। माध्यम के रूप में किसी भी विदेशी भाषा का कोई स्थान विश्व के किसी भी शिक्षा शास्त्री की समझ में नहीं आता। इसी प्रकार प्रशासनिक कार्यों में भारतीय भाषाओं को छोड़कर अंग्रेजी का प्रयोग केवल दास मनोवृत्ति का प्रमाण है। यह सोचने की बात है कि क्या लोकतन्त्र में विदेशी भाषा के द्वारा जनता को सरकारी कार्यकलाप से अनभिज्ञ उचित रखना है?

श्री रामकिशन जी गोयल ने कहा संघ लोकसेवा आयोग का अखिल भारतीय भाषा संरक्षण के आन्दोलन को पिछले दिनों धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक सभी नेताओं ने अपना समर्थन दिया। पर क्या यह अखबारी कवरेज के लिए था हमारे शिक्षा मन्त्री प्रतिदिन अपनी स्टेटमेंट घुमा-फिराकर दे रहे हैं।

किसी राजनीतिक प्रश्रय के अभाव में यह सत्याग्रह लड़खड़ा रहा है। यह भारतीय भाषा के प्रेमियों और अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन के आयोजकों के लिए अप्रतिष्ठा की बात है। बड़ी दुखद बात है कि १९६५ में राजभाषा विधेयक के विरोध में हुए आंदोलन मे जो युवक शहीद हुए वे आज उनके कोई नाम भी नहीं जानता। हिन्दी तथा १९६५ में राजभाषा विधेयक के आने पर उत्तर भारत में प्रबल आन्दोलन हुआ। ये आन्दोलन अपनी मौत स्वयं मर गये। पंजाब में किया गया सत्याग्रह हिन्दी को प्रतिष्ठापित करने के लिए था, पर उसे पंजाबी विरोधी ठहराया गया। यह विचित्र विडम्बना है कि जब कभी हिंदी के विकास की चर्चा हुई, इसे दक्षिण भारतीय भाषाओं का विरोधी माना गया आज स्वतंत्रता प्राप्ति जैसे आंदोलन की तरह भाषाओं के स्वतंत्र विकास के लिए भी एक महान् जन आन्दोलन की आवश्यकता है। सभी राजनैतिक दलों के नेता ये मगरमच्छी आंसू बहाकर आपके सम्मेलन की प्रशंसा कर जायेंगे, पर भारतीय भाषाओं के लिए करेंगे कुछ नहीं।

पं० चिन्तामणि जी—शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का प्रभावी बनें स्वयं अंग्रेजी के प्रभुत्व से पराभूत है और अंग्रेजी के महत्व देने का आधार बना रहा है। उससे कोई आशा नहीं?

यह जनमत बनाना चाहिए कि जो व्यक्ति संसद, विधानसभा तथा अन्य निर्वाचित निकायों में अंग्रेजी का प्रयोग करेगा जनता उसका बहिष्कार करेगी और उसे चुनावों में पराजित करने के लिये कृत संकल्प होगी।

डा० कृष्णलाल—आज आरक्षण की आवश्यकता है। यदि देश में कुल ३-४ प्रतिशत ही अंग्रेजी जानने वाले हैं तो सेवा कार्यों में अंग्रेजी जानने वाले कुल ३-४ प्रतिशत ही होने चाहिये। शेष भारतीय भाषाओं के ज्ञाता हों। जिस भाषा के जितने प्रतिशत ज्ञाता है, उतने प्रतिशत वे केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सेवा मे रखे जाएं। निजी सेवाओं में भी इसी प्रकार का नियम लागू करना आवश्यकक है।

माध्यम व प्रशासनिक कार्यों से अंग्रेजी के प्रयोग के समाप्त होने के बाद देश की सम्पर्क भाषा स्वयं विकसित हो जायेगी, उसके लिए प्रयत्न या चिन्ता की आवश्यकता नहीं।

सरकार की गलत नीतियों के कारण अंग्रेजी का सम्बन्ध सेवा कार्यों के साथ भी है। इस वृत्ति पर कठोर प्रहार करना आवश्यक है।

प्रि० जगदेव जी—पिछले दिनों स्वयं सारा कार्य अंग्रेजी में करने वाले सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा के पक्ष में और अंग्रेजी के विरोध में निर्णय दिया जाना आश्चर्यजनक परन्तु तथ्यपरक, उत्साहजनक एवं सराहनीय है। यह सभी राज्य सरकारों को कम-से-कम प्राथमिक कक्षाओं में अंग्रेजी हटाकर हिन्दी या मातृभाषा का माध्यम लागू करने का आधार प्रदान करता है।

हम राष्ट्रवादी दिल्ली सरकार से अनुरोध करते हैं कि वह अंग्रेजी के आधार पर पब्लिक स्कूलों की दुकानदारी चलाने वाली चिन्ता किये बिना प्राथमिक कक्षाओं में अंग्रेजी की पढ़ाई बन्द करवाये बच्चों के मस्तिष्क का बोझ कम करे और पोलिटेक्निक आदि सभी संस्थाओं में 'हिंदी माध्यम' का विकल्प दें।

संगोष्ठी का संयोजन जितेन्द्र कुमार ने किया। इसके अतिरिक्त विचार गोष्ठी में भाग लेने वालों में प्रमुख रूप से श्रीमती सुशीला सेठी, श्री दयानन्द वत्स, श्री आनन्द शर्मा, कु० पुष्पा शर्मा, श्री वेदपाल आदि ने अपने विचारों द्वारा उक्त बातों का अनुमोदन किया।

इसके अनुमोदन के लिए पत्रक तैयार करके हस्ताक्षर अभियान भी आरम्भ किया हुआ है तथा दिल्ली सरकार के शिक्षा एवं विकास मन्त्री श्री साहिब सिंह वर्मा से मिलने की योजना भी बनाई है।

—जितेन्द्रकुमार

डी०ए०वी० माध्यमिक विद्यालय शान्ति नगर (चारणवास सोनीपत हरियाणा) का वार्षिक उत्सव

यह विद्यालय परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा, आपके योग्यतम मार्ग दर्शन, सहयोग एवं शुभ कामनाओं सहित अपना वार्षिक उत्सव धूमधाम से १-१-१९९५ रविवार प्रातः १० बजे से १ बजे तक मनाया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के योग्य एवं उच्च प्रतिभाशाली छात्र/छात्राओं को भी सम्मानित किया गया। विद्यालय के छात्र/छात्राओं द्वारा शिक्षाप्रद, प्रभावशाली व मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये गये।

"धर्म-निरपेक्षता में अनौचित्य"

वेद प्रकाश आर्य, योग अध्यापक

यह सार्वकालिक व सार्वभौमिक अटल नियम है कि मनुष्य को छोड़कर सभी प्राणी जातियां पशु पक्षी अपने अपने मूल स्वभाव के आधार पर ही अपना आहार-व्यवहार करती आ रही हैं। उससे हटकर जीवन-यापन करना या अपने मूल स्वभाव को भूल जाना उनके सामर्थ्य से बाहर है। उन्हें सिखाने वाला परम-पितापरमेश्वर ही है। शहद के छत्ते में बना प्रत्येक मधु-कोष (खाना) जिस आकार का होता है उससे अधिक या कम कोई खाना नहीं होता और सभी खानों को केवल एक मधु-मक्खी ही बनाती हो ऐसा नहीं कहा जा सकता। उन्हें यह ज्ञान जन्म से ही मिला है। कीकरों पर उलटे लटके हुए बैया चिड़िया के घोंसले इस प्रकार बने हुए होते हैं कि कितनी भी आंधी-वर्षा आये लेकिन वे उनमें सुरक्षित रहती हैं। वे घोंसले गर्मियों मे ठण्डे, सर्दियों में गरम रहते हैं। उनके अन्दर इस प्रकार की मिट्टी लाकर रखती है कि अन्धेरे मे चमकती है और रात में उनके घर में प्रकाश रहता है। यह ज्ञान उन्हें जन्म सिद्ध है। राजस्थान की भैंस को (जो कभी तालाब आदि मे नहीं घुसी है) किसी तालाब में ले जायें तो तैरना प्रारम्भ कर देगी। पशु जब बीमार हो जाता है तो स्वयं चारा खाना बन्द कर देता है। कुत्ते को जब कभी सख्त कब्ज हो जाती है तो प्रातःकाल घास-विशेष को खाता जाता हुआ पाया जाता है।

उपरोक्त प्रकार का जो ज्ञान पशु-पक्षियों में विद्यमान है उसे सीखने के लिये उन्हें विद्यालय की आवश्यकता नहीं होती। जिजीविषा, आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि तो सभी प्राणियों की भांति मनुष्य मे भी होता है। लेकिन अन्तर इतना है कि मनुष्येतर प्राणी में आहार-निद्रा आदि जिस रूप मे पाये जाते हैं। उसी रूप में विद्यमान रहते हैं परिवर्तन सम्भव नही क्योंकि उन्हें स्वाभाविक ज्ञान के रूप में परमेश्वर द्वारा जन्म से ही प्राप्त है। जबकि मनुष्य में इसका स्वरूप विकृत भी हो जाता है।—

जिजीविषा—जीने की इच्छा सभी मनुष्यों मे है। कोई भी मरना नहीं चाहता फिर भी आत्म-हत्याएं होती रहती हैं।

आहार—भोजन का प्रकार सभी मनुष्यों में एक समान है अर्थात् शाकाहार को संसार का प्रत्येक मनुष्य करता है फिर भी अन्न के साथ-साथ मांसादि को भी खाने वाले पाये जाते हैं।

नींद को समय पर (रात को) लेना सभी मनुष्यों के लिये जरूरी है। फिर भी इसमे व्यतिक्रम करके नींद को कभी दिन मे, कभी सायंकाल को, तो कभी प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक भी सोते हुए पाये जाते हैं। वैसे मनुष्य न्याय चाहता है। लेकिन कभी-कभी अन्यायकारी को बलवान देखकर डरने लगता है। मैथुन के प्राकृतिक तरीके मे व्यतिक्रम करके बिना समय भी इसमें लिप्त रहता है।

इस प्रकार मनुष्य का जो प्राणियों के समान मूल स्वभाव है उसको यथोचित बनाये रखने के लिये भी मनुष्य को अपने से अतिरिक्त अपने माता-पिता-गुरु आदि से सीखना पड़ता है। मूल स्वभाव के अतिरिक्त विद्यादि से मनुष्यत्व प्राप्त करने के लिये भी अवश्य सीखना पड़ता है। जो कि बिना सिखाये प्राप्त नहीं हो सकता। वे सब मानवता के वाचक गुण जो मनुष्य को धारण करने पड़ते हैं वे निम्नलिखित हैं :—

धैर्य धारण करना। निर्बल की गलती होने पर क्षमा कर देना। अन्याय का दमन करना चाहे बलवान से क्यों न टक्कर लेनी पड़े। चोरी न करना। शरीर के साथ-साथ मन-बुद्धि-आत्मा को पवित्र बनाये रखने के लिये पानी से शरीर को शुद्ध करना, सत्य का व्यवहार करना, विद्या एवं तप द्वारा परिश्रम करना एवं फलस्वरूप जो प्राप्त हो उसी मे सन्तुष्ट रहना। इन्द्रियों का निग्रह करना (संयम करना)। इन्द्रियों के वशीभूत होकर उनके पीछे-पीछे भागने का व्यसनी न होकर दुर्व्यसनों मे न फसना (दुर्व्यसन=अण्डा, मांस, मछली, बीड़ी, सिगरेट, शराब, तम्बाकू, अफीम, चरस गांजा, भांग, आदि नशीले, बुद्धि विनाशक, व्यभिचार आदि कुकर्म)। बुद्धिपूर्वक अथवा विचारपूर्वक ही अपने सभी कर्मों को करना। अविद्या का नाश करना। विद्या की वृद्धि करना। क्रोध में आकर किसी को हानि न पहुंचाना। किसी भी प्राणी को स्वार्थ वश पीड़ा न देना।

उपरोक्त सभी गुणों की अपेक्षा केवल मनुष्य से ही की जाती है। संसार का प्रत्येक मानव इन गुणों की प्रशंसा करता है चाहे ये गुण उसमें आधे अधूरे हों, या कुछ हो, या कुछ भी ना हो लेकिन इस प्रकार के गुणों से युक्त पुरुष के सम्पर्क को अच्छा समझता है। ये सभी गुण मनुष्य को स्वयं प्राप्त नहीं होते उसे प्राप्त करने पड़ते हैं। मनुष्य की आत्मा में जन्मजन्मान्तरों के विविध संस्कार गौण रूप से विद्यमान रहने के कारण मनुष्यत्व की शिक्षा लेना समाज व राष्ट्र को स्वस्थ रखने के लिये परम आवश्यक है वरना अन्य पाशविक प्रवृत्तियां स्वतः ही प्रसंगानुकूल गौण से प्रधान बन जाया करती हैं जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य-मनुष्य न रहकर साक्षात् पशु बन जाता है। समाज और राष्ट्र में पैशाचिक नृत्य प्रारम्भ हो जाता। जघन्य-अपराधों की शृंखला टूटने नहीं पाती।

मनुष्य ही ऐसी जाति है जो कि सिखाने पर सीखती है। नहीं पर नहीं सीखती है। मूलतः सिखाने पर गलत सीख लेती है। ठीक सिखाने पर ठीक सीख लेती है। लेकिन एक बार गलत सीखने या सिखाने पर उसे पुनः ठीक रूप में सीखना या सिखाना बहुत कठिन काम हो जाता है।

मनुष्य को छोड़कर अन्य प्राणी उपरोक्त मनुष्यत्व के वाचक गुणों को सीखकर प्राप्त नहीं कर सकते। मनुष्य को मनुष्य इसलिये कहा जाता है कि वह विचार या मनन करके कार्य करने वाला है। पशु को पशु इसलिये कहा जाता है क्योंकि "पश्यति इति पशु:" उसे आहार दिखाई दो खाना प्रारम्भ कर देता है। किसका है? उसे इस पर विचार करने से कोई मतलब नहीं होता।

मनुष्यत्व के वाचक सभी गुणों का समाहार रूप अपनाने का जो सामर्थ्य मनुष्य मे प्रयत्नपूर्वक शिक्षा लेने से प्राप्त होता है उसी का नाम भारतीय ग्रन्थो में 'धर्म' है। क्योंकि समाज और राष्ट्र को निर्द्वन्द्व बनाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को मनुष्यत्व रूप धर्म को धारण करना अनिवार्य है।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारों व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमों के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क १५ रुपये तथा आजीवन शुल्क १५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालों को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक निःशुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। इस दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनों या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमंत्रित है।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

२६, ३० अप्रैल १९९५ को शिमला में शताब्दी समारोह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत आर्य प्रादेषिक प्रतिनिधि उपसभा हिमालय प्रदेश द्वारा शिमला में २९, ३० अप्रैल १९९५ को शताब्दी समारोह मनाया जायेगा। इसका निश्चय १४ नवम्बर १९९४ को शिमला में जो बैठक हुई थी, उसमे किया गया था। इस समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री दरबारी लाल जी करेंगे और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह जी इस समारोह के मुख्य अतिथि हों, इसके लिये प्रयत्व किया जा रहा है। इसके लिए उपसभा हिमाचल प्रदेश के प्रधान श्री रमेश चन्द्र जी जीवन और मन्त्री श्री के० एल० मनुजा जी ने हिमाचल की समस्त आर्य समाजो, डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य आर्य सस्थाओं से प्रार्थना की है कि वे अभी से यह तिथि अंकित कर ले और उक्त तिथि को अपना कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारीह में सम्मिलित होने के लिए शिमला पधारे। हिमाचल के वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये सभा प्रधाप श्री दरबारी लाल जी को रु० ५,००,००० रु० पांच लाख) की थैली उपसभा हिमाचल प्रदेश द्वारा भेट की जायेगी।

(अजय सहगल)

चुनाव समाचार

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल (४० आर्यसमाजों का संगठन) का वार्षिक चुनाव (९४-०५) श्री कुलभूषण साहनी की अध्यक्षता में आर्य समाज, अशोक विहार, फेस-१, दिल्ली में दि० ११-१२-९४ को सम्पन्न हुआ। इसमें सर्वसम्मति से प्रधान—श्री महाशय रामविलास खुराना, कार्यकारी प्रधान—श्री जसवन्तराय साही, महामन्त्री—श्री ओमप्रकाश सपरा, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश आर्य, सरक्षक—श्री लाजपतराय निझावन निर्वाचित हुए। कार्यकारिणी के गठन का अधिकार माननीय प्रधान जी को दिया गया।

प्रेषक कार्यालय—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 12 13-1-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/94
दि. पी पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९४ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९४
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १५ जनवरी १९९५

आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव

गुड़गांव में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। गुड़गावा : - आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के तत्वाधान में एक विशाल शोभा यात्रा आर्य समाज नई कालोनी से आरम्भ होकर शिवपुरी, भीम-नगर, न्यू रेलवे रोड एव मैन बाजार से होते हुए कबीर भवन चौक पर सभा मे परिवर्तित हो गई। जिसमे तीन गुरुकुलों जसात (पाटौदी), भावस (नगीना), लौहकला (बहादुरगढ़) आदि का गुड़गांव की जनता पर तलवार व लाठी प्रहार का प्रदर्शन का आकर्षक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार गुड़गांव नगर के अनेक स्कलो के छात्र/छात्राओं ने डम्बल, व्यायाम, रूमाल के खेल आदि से जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया। भजन मण्डलियों ने ईश्वर भक्ति की मस्ती भरे गीत गाए। बाजार वालो ने अनेक स्थानो पर स्वागत किया।

तत्पश्चात् माननीय प्रो० उत्तम चन्द जी शरर की अध्यक्षता में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया जिसमे हरियाणा राज्य के स्थानीय निकाय मन्त्री चौ० धर्मवीर जी गाबा, देहली राज्य के वित्त मन्त्री प्रो० जगदीश मुखी महात्मा सत्यपाल आर्य, गुलाब सिह राघव आदि ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि दी। स्थानीय निकाय मन्त्री चौ० धर्मवीर गाबा ने पाटौदी चौक से सोहना अड्डा का नाम दयानन्द मार्ग और आर्य समाज जैकमपुरा रोड का नाम श्रद्धानंद मार्ग बनाने का आश्वासन पूर्ण करने की घोषणा की जिसका जनता ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। मंच का संचालन श्री लक्ष्मण पाहूजा महामन्त्री ने किया। अन्त में आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांवा के प्रधान श्री ओमप्रकाश कालड़ा ने वक्ताओं, तीन गुरुकुलों, नगर के विभिन्न स्कूलों, सोहना व मेवात क्षेत्र के आये हुए सज्जनों, स्थानीय नगर की समस्त पुरुष व स्त्री आर्य समाजों तथा भजन मण्डलियों एवं सहयोगी कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद किया।

ओम प्रकाश

'मधुर तरंग' कैसेट तैयार

आर्य जगत के सुयोग्य भजनोपदेशक श्री प० सत्यपाल जी 'मधुर' द्वारा गाये गये भजनो की 'मधुर तरंग' नामक आडियो कैसेट तैयार हो चुकी है। जो सज्जन कैसेट प्राप्त करना चाहे वे कृपया इस पते पर सम्पर्क करे—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक आर्य समाज पंजाबी बाग (पश्चिमी) नई दिल्ली-२६

फोन ५३३७८९ निवेदक ·

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेद प्रचार
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ल

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : —३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)—९३

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ११ | रविवार, २१ जनवरी १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

पत्र

डा० हर्षवर्धन
मंत्री चिकित्सा, जन स्वास्थ्य,
परिवार कल्याण, विधि, न्याय
एवं विधायी कार्य विभाग

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-५४

प्रिय महोदय,

दिल्ली सरकार द्वारा चलाए गए "पल्स पोलियो अभियान" के अन्तर्गत प्रथम चरण की सफलता वर्ष १९९४ की एक विशिष्ट उपलब्धि है। इस कार्यक्रम में आपकी संस्था ने सराहनीय योगदान दिया है। दिल्ली सरकार ने इस मानव कल्याणकारी कार्यक्रम में आपके नि.स्वार्थ सेवाभाव के लिए सत्प्रयास की नागरिक सराहना करने का निश्चय किया है।

आगामी १४ जनवरी, १९९५ को अपराह्न ३-३० बजे मौलाना आजाद मेडिकल कालेज सभागार में एक "अभिनन्दन समारोह" का आयोजन किया गया है जिसमें पल्स पोलियो कार्यक्रम से जुड़ी संस्थाओं को दिल्ली सरकार की ओर से प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाएगा।

आपकी संस्था को भी इस सम्मान के लिए चुना गया है।

कृपया आप स्वयं इस कार्यक्रम में अपने संगठन के अधिक से अधिक सदस्यों/कार्यकर्ताओं सहित उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढाएं।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका
(डा० हर्षवर्धन)

श्री सूर्यदेव
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली

अभिनन्दन समारोह

अध्यक्षता : आदरणीय श्री पं० वन्देमातरम रामचन्द्र राव
(प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

दिनांक २२ जनवरी, १९९५, रविवार, सायं ५ बजे
स्थान : आर्यसमाज मन्दिर, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपति का पदभार ग्रहण करने पर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय आर्य महिला सभा, गुरुकुलों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से हार्दिक अभिनन्दन किया जा रहा है।

आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निवेदक

डा० धर्मपाल	राममूर्ति कैला	वेदव्रत शर्मा
महामन्त्री	प्रधान	मन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली	
फो०-३१०१५०	फो०-३११२९८०, ३३४६६०२	

प्रशस्ति पत्र

यह प्रशस्ति पत्र

२ अक्तूबर और ४ दिसम्बर १९९४ को
स्वास्थ्य मंत्रालय, दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित
पल्स पोलियो उन्मूलन अभियान के अन्तर्गत
पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम १९९४
के सफल आयोजन मे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, भा० ज० पा०

के विशिष्ट सक्रिय योगदान
की अनुशंसा मे
प्रदान किया गया

मदनलाल खुराना
मुख्यमन्त्री

डा० हर्षवर्धन
स्वास्थ्य मन्त्री

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान
१४ जनवरी १९९५

ऋषि दयानन्द वचनामृत

—यदि हम आर्य लोग वेदोक्त धर्म के विषय में प्रीतिपूर्वक पक्षपात को छोड़कर विचार करें तो सब प्रकार का कल्याण ही है। यही मेरी इच्छा है।

—परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देख मिला कि वेदभाष्य सम्पूर्ण हो जावे, तो निस्सन्देह इस आर्यावर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जावेगा कि जिससे मेटने और झांपने को किसी का सामर्थ्य न होगा। क्योंकि सत्य का मूल ऐसा नहीं कि जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके। और कभी भानु के समान ग्रहण में भी आ जावे, तो थोड़े ही काल में फिर उदय अर्थात् निर्मल हो जावेगा।

—जिस लिए सब मनुष्यो को सुशिक्षा से युक्त होना आवश्यक है, इसलिए यह बालक से लेकर वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के अर्थ व्यवहार सम्बन्धी शिक्षा का विधान किया जाता है।

—जो धर्म युक्त व्यवहार में ठीक ठीक वर्त्तता है, उसको सदा सर्वत्र लाभ और जो विपरीत वर्त्तता है, वह सदा दुखी होकर अपनी हानि कर लेता है।

—धन्य वे मनुष्य हैं कि जो अपने आत्मा के समान सुख में सुख और दुख में दुःख, अन्य मनुष्यों का जान कर धार्मिकता को कदापि नहीं छोडते।

—हे धार्मिक लोगो! आप इन पशुओं की रक्षा तन, मन और धन से क्यों नहीं करते?

—धन्य है आर्यावर्त्त के आर्य लोगों को कि जिन्होंने ईश्वर के सृष्टिक्रम के अनुसार परोपकार ही में अपना तन, मन, धन लगाया और लगाते हैं।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम.ए०

हिन्दी के महत्व को घटाने का कुचक्र

जगन्नाथ संयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद नई दिल्ली

हिन्दी विश्व की दूसरी भाषा

यद्यपि हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है, किन्तु अंग्रेजी समर्थक उसे विश्व की तीसरी अथवा चौथी भाषा के रूप मे प्रचारित करते रहते हैं। अंग्रेजी वाले अंग्रेजी को विश्व मे ४५ करोड लोगो की बोलने और समझने वाली भाषा बताते हैं और उनके संचार माध्यम हिन्दी बोलने वालो की संख्या ३६ करोड ही आंकते हैं। किन्तु तथ्य यह है कि भारत मे ही ४० करोड़ लोगों की तो मातृभाषा ही हिन्दी है। उनके अतिरिक्त भारत के हिन्दीतर मातृभाषा वाले लोग और मारीशस, फिजी, सूरीनाम, अमेरीका, यूरोप, अफ्रीका, नेपाल, खाड़ी देश तथा दुनिया के अन्य मुल्को मे लगभग ४ करोड़ लोग हिन्दी जानते और समझते हैं। यही कारण है कि जी० टी० वी० वाले खाड़ी देशों तक मे हिन्दी के कार्यक्रम दिखाते हैं। इसके अतिरिक्त उर्दू भी हिन्दी की ही एक शैली है। हिन्दी और उर्दू मे मुख्यत: लिखते समय ही लिपि भेद दिखाई देता है। उर्दू जानने वाले हिन्दी को और हिन्दी जानने वाले उर्दू को पूरी तरह समझ लेते हैं। जब वे बोलते हैं तो कोई यह समझ ही नहीं सकता कि वे हिन्दी बोलते हैं अथवा उर्दू। भारत तथा पाकिस्तान आदि में ऐसे उर्दू जानने वाले लोगों की संख्या लगभग १० करोड़ हैं। इस प्रकार हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या लगभग ५४ करोड़ है। अत. हिन्दी का स्थान नि:सन्देह विश्व मे दूसरा है।

अंग्रेजी वालों का एक और कुचक्र

भारत में अंग्रेजी के हिमायती यह पूरी तरह समझते हैं कि हिन्दी के विरोध में अंग्रेजी को खड़ी करके वे सफल नहीं हो सकते। अत. वे पिछले कुछ वर्षों से यह चाल चल रहे हैं कि हिन्दी की बोलियों को पृथक भाषा के रूप मे खड़ा किया जाए। एक विद्वान श्री ईश्वर लाल वैश्य के शब्दों मे : —

"ऐसा होने से हिन्दी का वर्तमान क्षेत्र विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं वाले राज्यों में बंट जाएगा और तब हिन्दी को अधिसंख्यकों की भाषा के रूप मे उसका राष्ट्रभाषा होने का आधार ही टूट जाएगा, क्योंकि हिन्दी सात राज्यों की भाषा नहीं रह जाएगी। उसका स्थान ब्रज, अवधी, बुन्देली, मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी, मालवी आदि ले लेंगी।

अंग्रेजी वालों के इस कुचक्र का प्रभाव राजस्थान मे हो चुका है जिसकी घोषित राजभाषा केवल हिन्दी है। वहां पर "राजस्थान की भाषा राजस्थानी" नारा उछाला जा चुका है, जिसे राजनीति से प्रभावित क्षुब्ध मानसिकता वाले कई व्यक्तियो का समर्थन प्राप्त है। उसी विद्वान के शब्दों में —

"यदि राजस्थान में यह आन्दोलन सफल रहा तो इसकी प्रतिक्रिया उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश जैसे बड़े-बड़े हिन्दी भाषी प्रदेशो पर भी पड़ेगी और वे भी ऐसे भाषाई आन्दोलनों की चपेट मे आने से नहीं बच सकेंगे। तब हिन्दी कहां की भाषा होगी और ऐसी स्थिति में अंग्रेजी को ही केन्द्र की राजभाषा के रूप में मान्य रखने के अलावा हमारे पास अन्य कोई विकल्प नही होगा।"

यह कोई काल्पनिक डरावा नही है। सितम्बर, १९९४ में आलुवाई (केरल) मे पेरियार नदी के तट पर भारतीय भाषाओ के साहित्यकारो का सम्मेलन हुआ जिसमे दैनिक जागरण (२०-९-९४) के अनुसार लगभग १५० से अधिक लेखको ने राजस्थानी, मैथिली व डोगरी को संविधान की आठवी अनुसूची मे शामिल करने की मांग की थी। उनका तर्क था कि इन भाषाओ का साहित्य पर्याप्त अधिक श्रेष्ठ है। लगता है कि ये साहित्यकार अंग्रेजी वालो के दुष्प्रभाव से प्रभावित हो गए हैं। हमारा कहना यह है कि अपनी बोली और अपनी मिट्टी से प्रेम होना स्वाभाविक है, किन्तु स्थानीय बोलियो को सरकारी काम-काज की दृष्टि से क्षेत्रीय भाषा का नाम नही दिया जा सकता। माना कि राजस्थानी, हरियाणवी, ब्रज भाषा, अवधी, बुन्देली, मैथिली, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी और पहाड़ी बोलियों मे समृद्ध साहित्य है और इनके बोलने वाले भी काफी बड़ी संख्या मे हैं। किन्तु इन सभी को समेट कर ही तो हिन्दी बनी है। इन सभी का साहित्य हिन्दी साहित्य की श्रेणी मे स्वीकार किया गया है और हिन्दी को उस पर गर्व है। किन्तु यदि जन गणना मे से इन बोलियों को बोलने वालों की गिनती अलग-अलग होने लगी तो हिन्दी बोलने वालों की संख्या उतनी ही घट जाएगी। इस प्रकार हिन्दी का राजभाषा बनने का आधार ही समाप्त हो जाएगा। इस बात को समझ कर अंग्रेजी वालों का आंकड़े की इस बाजीगरी पर आधारित कुचक्र है। अंग्रेजी के हिमायती इन षडयन्त्रकारियों को भी समझ लेना चाहिए कि इस तर्क से तो स्वयं अंग्रेजी भाषा के महत्व को खतरा हो जाएगा। क्योंकि उसमें भी अनेक बोलिया हैं जिनको समेट कर अंग्रेजी भाषा बनी है। एक विद्वान श्री विश्वम्भर प्रसाद गुप्त के शब्दों में .—

यह एक दुरभिसन्धि है जो क्षेत्रीय भाषाओं के विकास, सम्बर्द्धन और सम्मान करने की आकर्षक चाशनी में लपेटी हुई विष की गोली के समान होगी जिसे राष्ट्रभाषा के पक्षधरो के गले उतारने की कोशिश हो रही है। राष्ट्र-चेता विद्वान अभी से सावधान हो जाएं। साहित्य अकादमियों की गति विधियां भी कुछ अंग्रेजी-भक्तों द्वारा निर्देशित होती है जो स्थानीय बोलियों को भाषाओं बाना पहिना कर प्रत्यक्षत: विद्वानो का सम्मान करते हैं और परोक्ष रूप से हिन्दी का मार्ग अवरुद्ध करते हैं।

क्षेत्रीय राजभाषाओं को भी संकट

जिस प्रकार अब हिन्दी की बोलियो को भाषा का नाम देकर राज्यों की राजभाषा बनाए जाने की मांग उठाई जा रही है, उसके बाद तमिल, तेलुगु, कन्नड मराठी और बंगला आदि क्षेत्रीय भाषाओ की बोलियों को भी पृथक् से भाषा का नाम देकर उन क्षेत्रीय भाषाओं के क्षेत्रीय राजभाषा के महत्व को भी कम करने की साजिश रची जाएगी।

इस कुचक्र के भावी दुष्परिणाम

(१) हिन्दी भाषियो की संख्या कम हो जाने से अंग्रेजी वालों को यह कहने का अवसर मिल जाएगा कि इतनी कम-संख्या-बल-वाली हिन्दी से राजभाषा का दर्जा छीन लिया जाए फिर वे यह भी कहने लग जाएंगे कि अष्टम सूची में अंग्रेजी को भी शामिल कर लिया जाए।

(२) संघ लोक सेवा आयोग इसी आधार पर अपनी परीक्षाओं से अंग्रेजी को नही हटा रहा है कि भारतीय भाषाओं की संख्या अधिक होने के कारण उन सभी में परीक्षा लेना सम्भव नहीं है। जब मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं की संख्या और भी अधिक बढ़ जाएगी तो आयोग के बहाने को और भी अधिक दृढ़ आधार मिल जाएगा।

(३) श्री विश्वम्भर प्रसाद गुप्त के शब्दों मे .—अंग्रेजों के जाने के बाद लौह-पुरुष सरदार पटेल ने पांच-छह-सौ देशी रियासतों का भारत में विलय करके एक शक्तिशाली गणतन्त्र स्थापित किया था। अंग्रेजी वाले उस एकात्मता का विध्वंस करके राष्ट्र को फिर छोटे-छोटे राज्यों मे बांट देना चाहते हैं जिनका बिखराव रोकना कठिन होगा। कुछ राज्यों के स्वतन्त्र होने के प्रयास किसी न किसी रूप मे हो भी रहे हैं।

बहुत सी समृद्ध बोलिया जो भाषा के रूप में संविधान मे अनुसूचित नहीं हैं, विश्वविद्यालयो मे ऊंचे स्तर तक पढ़ाई जाती हैं। उनमे समृद्ध साहित्य और शानदार परम्पराए हैं। उनमें गम्भीर शोध कार्य और उत्कृष्ट साहित्य-सृजन हो रहा है। सभी के अध्येता, लेखक और कवि एवं विद्वान यथायोग्य सम्मान के पात्र हैं और सम्मानित होते भी हैं। हिन्दी कवि सम्मेलनो मे ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, हरियाणवी, राजस्थानी आदि को सम्मानपूर्ण स्थान दिया जा जाता है और उनकी कविताओं को रूचि पूर्वक सुना समझा जाता है क्योंकि वे सब वस्तुत: हिन्दी का ही एक रूप हैं। यहां तक कि हिन्दी कवि सम्मेलनों मे पंजाबी, उर्दू की कवितायें भी सम्मानपूर्वक सुनी-समझी जाती हैं। हिन्दी का कभी इन भाषाओं से दुराव नहीं रहा। ये सब भाषायें-बोलियां हिन्दी रूप महासागर मे मिलकर एक हो जाने वाली धारायें हैं। लोक साहित्य की वृद्धि से हिन्दी साहित्य समृद्ध होता है। किन्तु राष्ट्र भाषा हिन्दी सारे की सम्पर्क भाषा तथा राजभाषा होनी चाहिए और सभी को उसके प्रति उचित श्रद्धा रखते हुए उसकी सेवा करनी चाहिए। राष्ट्रभाषा का उचित सम्मान राष्ट्र-प्रेम का प्रतीक है जो स्वभाषा-प्रेम से कहीं ऊपर है। हमें कोई भी ऐसा कार्य या प्रस्ताव न करना चाहिए जिससे राष्ट्रभाषा के अस्तित्व या प्रचार-प्रसार पर तात्कालिक या दूरगामी प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

जैसा कि हम ऊपर सिद्ध कर चुके हैं, हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। अत: हम अपनी शक्ति बोलियो को भाषा का नाम दिए जाने में नष्ट न करके संगठित रूप से अपनी शक्ति को हिन्दी को राष्ट्रसंघ में मान्यता प्राप्त भाषा का दर्जा दिलाने के लिए लगाना चाहिए। फिर अवैज्ञानिक और अधूरी लिपि वाली भाषा का स्थान समय आने पर वैज्ञानिक और सर्व-रूपेण पूर्ण लिपि वाली भाषा हिन्दी ले सकेगी। हिन्दी की विश्व-भाषा के रुप में कल्पना आज की सनक नहीं है। अपितु महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे विचारकों ने इसकी कल्पना १९वीं शताब्दी में ही कर ली थी।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में श्री सूर्यदेव के कुलाधिपति बनने पर भव्य समारोह

दिनांक १६-१-९५ को मध्याह्न १२ बजे गुरुकुल के वेद मन्दिर में श्री सूर्यदेव का नवीन कुलाधिपति के रूप में अभिनन्दन किया गया। पूर्व कुलाधिपति श्री प्रोफेसर शेर सिंह का व वर्तमान कुलाधिपति काविश्वविद्यालय के कुलपति ने माल्यार्पण व शाल उढ़ाकर स्वागतकिया उसके बाद माल्यार्पण का कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसमे पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री अश्वनि कुमार शर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हरियाणा और दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के साथ अन्य आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भी माल्यार्पण किया। गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों-छात्रों, कर्मचारियों तथा अन्य अधिकारियों ने निवर्तमान व वर्तमान कुलाधिपति का माल्यार्पण करके स्वागत किया।

हरिद्वार कांग्रेस के उपाध्यक्ष श्री भारतेन्द्र हाड़ा द्वारा डा० डी-के माहेश्वरी डीन लाइफ साइन्स डा० महेश विद्यालंकार दिल्ली श्रीमति भगवती गुप्ता कन्या गुरुकुल देहरादून डा० राजकुमार रावत गुरुकुल फार्मेसी व्यवसायाध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार सहायक मुख्याधिष्ठाता डा० श्रवणकु मार अध्यक्ष अध्यापकसंघ श्री कमलेश नाथानी, डा० विष्णु दत्त राकेश श्री आलोक कुमार प्राचार्य, श्री विजेन्द्र स्नातक दिल्ली, डा० वेद प्रकाश अध्यक्ष प्राच्य विद्या सकाय, श्री एस० एल० सिंह आदि महानुभावों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

श्री अश्वनी कुमार शर्मा ने अपने भाषण मे कुलाधिपति को सम्बोधित करते हुए कहा कि पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली के पक्ष मे निर्णय देकर संगठन शक्ति का परिचय दिया। हम विश्वास दिलाते हैं कि पंजाब सभा सदैव पूर्ण सहयोग देगी।

श्री प्रकाश वीर ने अपनी ओर से आश्वासन दिया कि हरियाणा प्रतिनिधि सभा उदारता पूर्वक सहयोग करेगी—

श्री वेद व्रत शर्मा ने सभी को विश्वास दिलाया कि आपने जो दिल्ली पर उत्तरदायित्व सौंपा है दिल्ली उस भार को सबके सहयोग से पूर्ण रूपेण निभायेगी।

श्रीमति प्रभा शोभा पत्नि श्री प्रोफेसर शेर सिंह निवर्तमान कुलाधिपति ने कहा कि आज दो पुरुषों ने वर मालाओं का परस्पर आदान-प्रदान किया है। जिसमे सौहार्द का भाव दृष्टि गोचर होता है।

कन्या गुरुकुल देहरादून की श्रीमति दमयन्तीदेवी ने अपनी ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। प्रो० राम प्रसाद प्रति उप कुलपति ने आशा व्यक्त की कि जिस प्रकार विगत मे गुरुकुल ने अपने कीर्तिमान को जीवित रखा है आने वाले अधिकारी भी उसे उत्तरोत्तर बढाने का प्रयत्न करेंगे।

प्रो० शेर सिंह ने कहा कि मेरा गुरुकुल से पुराना सम्बन्ध है मैं सदैव इसकी उन्नति के लिये सक्रिय सहयोग देता रहूगा। अंत मे श्री सूर्यदेव ने कहा कि जो भार आपने मुझे सौंपा है मैं उसे भार नही समझता क्योंकि उस भार मे आप सब सहयोगी एवं सहभागी हैं आपने मेरा भार बांट लिया है तो मैं उसे सहर्ष आपकी आशाओं की तुला पर खरा उतारूंगा। परमात्मा मुझे शक्ति प्रदान करे।'

अन्त मे श्री जयदेव कुल सचिव ने सब का धन्यवाद किया और आभार व्यक्त किया दिल्ली के प्रतिनिधियों का विशेष रूप से धन्यवाद किया।

कुलपति श्री डा० धर्मपाल ने श्री प्रोफेसर शेर सिंह को अभिनन्दन पत्र भेंट किया तथा उसका वाचन करके उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद दिया।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली की ओर से दक्षिण कोरिया के हिन्दी सीखने वाले छात्रों का अभिनन्दन

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी की ओर से दक्षिण कोरिया के हकुक विश्वविद्यालय, सीओल से यहां आए हिन्दी सीखने वाले १२ छात्र छात्राओं का त्रिवेणी सभागार, नई दिल्ली मे आयोजित एक समारोह मे अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन के रूप मे उनको सरस्वती की प्रतिमा तथा हिन्दी साहित्य व संस्कृति की पुस्तकें भेंट की गई। ये छात्र-छात्राएं दिल्ली विश्वविद्यालय मे उनके लिए लगाए गए हिन्दी प्रशिक्षण छात्र शिविर मे भाग लेने आए हुए हैं।

इस अभिनन्दन समारोह मे प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा, संसद सदस्य अतिथि थे। डा० सुरेश वाजपेयी ने अध्यक्षता की। दक्षिण कोरिया के राजदूत श्री वागचाग शू, जवाहर लाल विश्वविद्यालय मे कोरियन भाषा के प्रोफेसर श्री एच० के० शू, और दक्षिण कोरिया मे हिन्दी प्रोफेसर डा० दिविक रमेश भी इस अवसर पर उपस्थिति थे।

दक्षिण कोरिया के राजदूत श्री वाग चाग शू ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि वर्तमान समय मे भारत और कोरिया के आर्थिक सम्बन्धों मे सुधार हो रहे हैं। हिन्दी भाषा इन सम्बन्धों को मजबूत करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उन्होंने हिन्दी अकादमी के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि दक्षिण कोरिया की सरकार हिन्दी भाषा के विकास के लिए प्रयत्नशील है। दक्षिण कोरिया के दो कालेजों मे लगभग ५०० छात्र छात्राएं हिन्दी सीख रहे हैं।

इस अवसर पर कुछ छात्रों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम भारत मे आकर बहुत प्रसन्न हैं और हम यहां जो कुछ सीख रहे हैं उसका अपने देश मे आकर प्रचार करेंगे।

स्वामी विद्यानन्द अभिनन्दन समारोह

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वामी विद्यानंद जी को उनकी अशीतिपूर्ति के उपलक्ष्य मे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। इस 'पीयूष महोत्सव' मे आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय हैं।

कार्यक्रम

स्वागताध्यक्ष : आर्यश्रेष्ठी श्याम सुन्दर आर्य, कमला नगर दिल्ली

दिनांक एवं समय : २२ जनवरी १९९५ प्रात. १० बजे

स्थान : आर्यसमाज वेदमन्दिर डी १२, सै० ८ रोहिणी (खादी भण्डार के पास)

"सौ बातों की एक बात"

सोहन लाल शारदा शाहपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् आर्य समाजो की प्रगति मे कुछ न्यूनतायें दृष्टि गोचर हो रही हैं। जिसे देखकर सभी प्रगतिशील जन कुछ चिन्तित से दृष्टि गोचर हो रहे है। पुन पूर्वावस्था प्राप्ति हेतु अनेकानेक विविध उपाय भी बताये जा रहे हैं। सत्य तो यही है कि वर्तमान मे अधिकाश आर्य जनो का जो महर्षि की विचार-धारा से सर्वथा अनभिज्ञ है। आज हमारी इस प्रगतिशील सस्था मे बाहुल्यता को प्राप्त हो रहे हैं। इन्हे भी सही मार्ग पर लाना है। सही मार्ग पर चलने चलाने के लिए हमे केवल महर्षि की मान्यताओ पर ही अपनी बुद्धि चातुर्य पर विराम देकर महर्षि पर ही श्रद्धा भक्ति से पूर्ण अपना जीवन बनाकर अन्यो को भी प्रेरित करना है।

आज हमारे मे मुण्डे-मुण्डे मतिभिन्ना पूर्ण रूपेण हमारे ऊपर अधिकार जमाये हुये है। जैसे —महर्षि ने जो नियम दश हमारे लिए बनाये उनमे तीसरे नियम मे निम्न प्रकार से पाठ लिखा गया था। कि "वेद सत्य विद्याओ का पुस्तक है।" वह पाठ पूरी तरह से इसी प्रकार से अर्द्ध शताब्दी पर्यन्त चलता रहा। जो तत्कालीन प्रकाशित पुस्तको मे प्रत्यक्ष मे देखा जा सकता है। पुस्तको के नाम हैं दयानन्द दिग्विजयार्क १८८५। लेखराम कृत दयानन्द उर्दू चरित्र १८५७ धर्मेन्द्र जीवन १६०५। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित दयानन्द ग्रन्थसग्रह १६२५। श्रीमद्दयानन्द प्रकाश १६१८ इत्यादि में यही पाठ सर्वत्र विद्यमान है।

लेकिन निर्वाण अर्द्ध शताब्दी पश्चात् यह पाठ बदल कर शनैः शनैः "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" कर दिया गया। यहा महर्षि की विचारधारा-नुसार नहीं होकर यहा सब शब्द बढ़ाया गया है। महर्षि ने तो एक पत्र मे जो भारत मित्र नामक समाचार पत्र के सम्पादक के नाम लिखा गया था। जो वर्तमान मे श्रद्धे यमीमांसक जी द्वारा सम्पादित पत्र और विज्ञापन भाग के पृष्ठ ७३७ से ७४० मे प्रकाशित है वहा निम्न वाक्यांश विद्यमान है। "और पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त की अनेक विद्याओ का मूल वेदो मे है।" यहा सब शब्द का उपयोग नही करके स्वय महर्षि ने अनेक शब्द का प्रयोग किया है। अत. प्रत्येक मननशील जन का कर्त्तव्य है कि हमारे इस मोह माया जन्य शब्द को अर्द्ध शताब्दि पश्चात् कितनी प्रगति हुई है।

२. ऐसा ही एक शब्द है। जिसका प्रयोग महर्षि ने हमारे मुख्य प्रेरणा के श्रोत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास मे किया है। वहा पाठ निम्न है।— "तथा सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र करने का भी समय है।" आर्ष प्रचार ट्रस्ट अष्टम सस्करण मे, "भी" शब्द पर विचार करके सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने अपनी ओर से प्रकाशित बृहद् यज्ञ पद्धति के प्रथम संस्करण के प्रथम पृष्ठो मे 'अग्निहोत्र करने का समय' प्रकरण मे निम्न पाठ टिप्पणी में दिया है। "भी" शब्द का अर्थ है कि अन्यों ने अन्य भी समय यज्ञ के बताये हैं। दुःख है कि इस 'भी' शब्द को सत्यार्थ प्रकाश के वर्तमान सस्करणो मे से निकाल दिया है।"

विशेष तो यह भी है कि इसी पुस्तक के दूसरे व तीसरे सस्करणों मे पुन इस सभी प्रकरण को हटा दिया गया है। सत्य तो यह है कि हमारी विचारधारा-नुसार पूरी तरह से बार-बार अध्ययन करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि पहिले सध्या पुन यज्ञ महर्षि ने ऐसे ही विधि का निर्माण किया है। यदि कुछ रात्रि भी हो जाय तो भी कोई आपत्ति महर्षि ने नही मानी। प्रत्यक्ष में विवाह सस्कार की उत्तर-विधि रात्रि को ही ध्रुव पश्य से है। फिर भी आर्य वैदिक विद्वान् अपने विचार देवें तो अच्छा ही रहेगा।

ऐसा ही एक प्रसग सन्ध्या का है। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने जो सन्ध्या की पुस्तक प्रकाशित की है उसमे तो पच महायज्ञ विधि के अनुसार ही "गायत्र्यादि मन्त्रार्थान् मनसा विचारयेत्" पूरा प्रसंग ठीक ढग से रक्खा है। लेकिन अन्य सभी प्रकाशकों ने तो इस प्रसग की बहुत कुछ अवहेलना ही है। साथ ही सार्वदेशिक सभा ने भी सस्कार विधिस्थ गृहाश्रम सस्कारान्तर्गत जो सन्ध्या का वर्णन सुधार कर स्वय भगवान् दयानन्द जी महाराज ने लिखा है उसकी पूर्णतया अवहेलना की है। महर्षि का यहा कथन है कि :—यथा विधि उचित समय पर प्रभु भक्ति सन्ध्या और यज्ञ द्वारा करने से उसके सहाय्य से महाकठिन कार्य भी सरल हो जाते हैं। सम्भव है यहा चार बजे सवेरे जाग्रत होने का विधान है। हमारे नेता वर्ग जागने मे असमर्थ हो प्रात काल की पूर्णतया अवमानना करते हैं। अत इसको पूर्णतया निरस्त कर देना भी हमारी प्रगति मे बाधक ही समझें। आर्य जन इस पर भी विचार देने की कृपा करें।

अब आगे सृष्टि सवत् को महर्षि ने प्रथम चादा पुर मेला के अवसर पर घोषित किया। फिर ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में पूरी तरह से समझा कर कहा। पुन जब सत्यार्थ प्रकाश जो हमारा सर्व सुलभ समझने योग्य धर्म ग्रन्थ हैं उसमें भी तदनुसार ही लिखा है। आगे पुन प्रसगानुसार उदयपुर शास्त्रार्थ मे भी इसी एक अरब छयानवे करोड आठ लाख तरेपन हजार वर्तमान मे पचानवे (१६६०८५३०६५) सृष्टि सवत् का उपयोग किया है।

अत हमारे सभी समाचार पत्रो नेता माने जाने वाले सज्जनो यति मण्डलों के सदस्यो का यही कर्त्तव्य है कि महर्षि की बातो को निरस्त नहीं करके तदनुसार ही इसे अपनायें। अन्यथा एक तरफ तो हम महर्षि को कई-कई विशेषण लगाकर जय घोष करें। और दूसरी तरफ हम ही उनके लिखे हुये की अवहेलना करें। तो भला हमारी कथनी और करनी में स्पष्ट ही विरोधाभास है। और यह भी आगे प्रगति मे थोड़ा बहुत ही बाधक है अवश्य.

अब आगे हमारी यज्ञ विधि है। हम लोगो ने इसे भी स्वान्त सुखाय के आधार पर बहुत कुछ परिवर्तन किया है। महर्षि ने आठ मन्त्रो की स्थापना पौरा-णिक गणेश या स्वस्तिक चिन्ह के बजाय निराकार परब्रह्म की उपासना का निर्देश किया है। और यहा पाठ भी लिख दिया है कि —"इन मन्त्रों का पाठ एक विद्वान् वा बुद्धिमान् जन करें और सब सुनें और विचारें।" आगे जो पाठ स्वस्ति वाचन एवम् शान्तिप्रकरण का पाठ है उसके लिए महर्षि कहते हैं कि "सभी मंत्र पाठ यजमान ही बोलें। यदि निरक्षर हो तो भी इतने तो अवश्य पढ़ लेवें।" और अन्त मे यह भी घोषणा कर दी कि विशेष कर्मकर्त्ता और कर्म कराने वाला शान्ति और धैर्य से क्रम पूर्वक करे और करावें।

अब विचारे बार-बार विचार करें कि हम प्रथम ही प्रभु के आह्वान के बजाय स्वय ऋत्विज वरणकरा लेवे। महर्षि ने तो गृहाश्रम सस्कार मे कहा है कि —"शन्नो देवी मत्र से तीन आचमन कर यज्ञ का आरम्भ करें।" फिर हम अमृतोपस्तरण का आचमन प्रथम कर अपने को वरण कर सभी उच्चारण हम ही करें किसी नये आगुन्तक को मौका ही नही दें। आर्य समाजो मे पढाने की कोई व्यवस्था ही नही करे तो फिर भला उन्नति चाहे तो भला हमारी उन्नति कैसे हो सकेगी। यही एक विचारणीय विषय है कि महर्षि के ही पदचिन्हों पर चल कर ही हम आगे बढ सकते है। अन्यथा हमारी प्रगति का होना महा-कठिन न भी माने तो भी कठिन है अवश्य।

पत्र और विज्ञापन के पृष्ठ सख्या ७६३ पर महर्षि उपदेशको के कर्त्तव्य का निर्देशन देते हुये लिखते हैं कि —उपदेशक जिस-जिस समाज में जायेंगे। व्याख्यान देंगे और सभासदो को उचित समय मे पढ़ावेंगे भी। महर्षि ने सातवें समुल्लास मे ज्ञान प्राप्ति हेतु पढाना अत्यावश्यक माना है। ऐसा ही पृष्ठ ६४३ पुस्तक पत्र विज्ञापन पर भी महर्षि कहते हैं कि परमेश्वर के ज्ञान के बिना मुक्ति किसी की नही हो सकती। पठन पाठन से ही ज्ञानाभाव कभी नहीं हो सकेगा। और ज्ञान से ही धर्म मे दृढ़ आस्था रख सकता है।" समाजों के पदाधिकारी और हमारे नेता वृन्द बार-बार विचारे कि हम महर्षि कृत ग्रन्थ एवम् सन्ध्या यज्ञ सम्बन्धित पुस्तकें कितनी पढा रहे हैं।

गायत्री मंत्र पर भी महर्षि कहते हैं कि —गायत्री का जाप वेदोक्त रीति से करें तो फल अच्छा ही होता है। क्योंकि इसमें गायत्री के अर्था-नुसार आचरण करना लिखा है। पोप लीला युक्त जप से तो अधर्म रूप फल की ही प्राप्ति समझे।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

क्या पापी सुखी और धर्मात्मा दुखी हैं ?

यशपाल आर्यबन्धु

प्राय. लोग यह कहा करते हैं कि जब सुख-दु:ख हमे अपने कर्मों के फल-स्वरूप ही मिलने हैं, तो फिर पापी सुखी और धर्मात्मा जन दु खी क्यो रहते हैं ? पापी फलते-फूलते और साधन-सम्पन्न दिखाई देते हैं विपरीत इसके धर्मात्मा जन दु.खी और अभावग्रस्त दिखाई देते हैं । ऐसा क्यो है प्रश्न अत्यन्त महत्पूर्ण है और सरल भी नही प्रतीत होता । किन्तु यदि थोडी गहराई मे उत्तर कर सोचें तो प्रश्न इतना जटिल नहीं लगेगा ।

हमारी तुच्छ मति में यह धारणा ही भ्रान्त है कि पापी जन सुखी और धर्मात्मा दु खी हैं । क्योकि सुख-दु ख तो मन के ही विकल्प हैं हमारा विश्वास है कि धर्मात्मा दु ख को दु ख मानता ही नही । वह सुख और दु.ख मे सदा एकरस रहता है । दूसरे यदि कोई व्यक्ति धर्मात्मा है, तो निश्चय ही वह सन्तोषी भी होगा और विवेकी भी । ऐसे सन्तोषी और विवेकी व्यक्ति से यह आशा की ही नहीं जा सकती कि वह किसी भी परिस्थिति में स्वय को दु.खी महसूस करे । यदि उसे दु खो और कष्टो का सामना करना भी पड़ता है तो भी उन्हें अपने किन्हीं पूर्व कर्मों का फल समझ कर धैर्य पूर्वक सहन कर लेता है । वह कष्टो एव अभावों में भी दु:ख नही मानता । विपरीत इसके पापी व्यक्ति को यदि संसार भर के समस्त सुख-साधन उपलब्ध करा भी दिये जावें, तो भी उसे सन्तोष नही होगा । उसकी तृष्णा कभी शान्त नहीं हो सकती । और यदि उसकी तृष्णा ही शान्त नही, तो वह सुखी कैसे माना जा सकता है ? "तृष्णारतिर्भवं दु:खम्" के अनुसार तृष्णा मे रत रहना दु खी रहना है । जबकि तृष्णाक्षय. स्वर्गपदं के अनुसार तृष्णा के क्षय होने से स्वर्गपद की प्राप्ति होती है। ऐसी स्थिति मे यह कैसे मान लिया जाये कि तृष्णा में रत रहने वाला पापी व्यक्ति सुखी हो सकता है ।

यहा यह भी जान लेना आवश्यक है कि जिसके अन्त मे दु ख है, वह वस्तुत: सुख नहीं, दु:ख ही है और जिसके अन्त मे सुख है, वह दु ख भी दु ख न होकर सुख ही है । पापी जो कर्म करता है, वे ऐसे होते हैं कि जिनका अन्त दु.खदायी होता है । विपरीत इसके पुण्यात्मा जो पुण्य कमाता है, वे प्रारम्भ मे दु खदायी अवश्य लगते हैं, किन्तु उनका अन्त सदैव सुखमय होता है । इस लिए यह कहना कि पापी सुखी और पुण्यात्मा दु.खी रहते हैं, यथार्थ नही । एक भौतिक सुख-साधनों के रहते हुए भी अपनी मन स्थिति के कारण दु खी रहता है और दूसरा अभावो मे भी सुख की अनुभूति कर रहा है ।

पापी जो फलता-फूलता और सुखी दिखाई देता है, वह अपने पाप-कर्मों के फल मे नही, क्योकि उन कर्मो का फल मिलना तो अभी शेष है । अत: दिखने वाला सुख उसके कर्मफल में नहीं कर्ममात्र से प्राप्त हो रहा है । पाप की कमाई इस समय तो सुखकारक प्रतीत होती है, किन्तु उसका अन्त सदैव दु खदायी होता है । कहा गया है कि पाप की कमाई दस दिन से अधिक नहीं चलती अर्थात् वह थोड़े दिन तक ही रह पाती है, अधिक दिनों तक नही । निम्न श्लोक इसमें प्रमाण है—"अन्यायेनागता लक्ष्मी, खद्योत इव दीप्यते क्षण प्रकाश्य वस्तूनि निर्वाणि केवल तम ।। अर्थात् अन्याय से उपार्जित धन जुगनू की भाति थोड़ी देर तक ही चमकता है परन्तु थोड़ी देर प्रकाश कर फिर अन्धेरा हो जाता है । पापी के फलने-फूलने और सुखी रहने और फिर अन्त मे समूल नष्ट हो जाने का अति सुन्दर वर्णन मनु जी के निम्न श्लोक मे मिलता है—"अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति । तत· सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति ।।" (४/१४) अर्थात् पाप-अधर्म से पहले फलता फूलता है, फिर सब ओर कल्याण देखता है, फिर शत्रुओ पर विजय प्राप्त कर लेता है और अन्त मे समूल नष्ट हो जाता है । इतना ही नही मनु जी तो यहा तक कहते हैं कि—

"नाधर्मश्चरितो लोके सद्य फलति गौरिव । शनैरावर्तमानस्तु कर्तुमूलानि कृन्तति ।।" अर्थात् मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस ससार मे जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नही होता वैसे ही किए हुए अधर्म का फल भी शीघ्र नही होता किन्तु धीरे धीरे अधर्मकर्त्ता के सुखो को रोकता हुआ सुख के मूलों को काट देता है, पश्चात् अधर्मी दु.ख ही दु ख भोगता है । (देखें—सस्कारविधि, गृहाश्रम प्रकरण) ।

इस विषय में आचार्य दीनानाथ जी सिद्धातालकार यथार्थ निष्कर्ष, प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं कि—"पापी के सुख-ऐश्वर्य और धर्मात्मा के दु:ख-कष्ट को देख तात्कालिक परिणाम नही निकालना चाहिए, किन्तु दूरदृष्टि से देखना चाहिए । इन बाह्य सुखी व्यक्तियो के जीवन की अन्तरग पड़ताल से पता चलता है कि उनके हृदय मे दु:ख, चिन्ता, क्लेश, उधेड़-बुन की कितनी प्रसुप्त और गुह्य ज्वालायें जल रही हैं । इसके विपरीत बाहर से दु:खी दीखने वाले धर्मात्माओ के अन्तर्हृदय मे कितना आत्म-सन्तोष, धैर्य, और सर्वाधिक अविचल ईश्वरार्पण के प्रबल शान्तिपूर्ण स्रोत बह रहे हैं ।" (द्रष्टव्य-अध्यात्म योग, जन-ज्ञान, दिसम्बर, ७३ पृष्ठ ३६) ।

धर्मात्मा जनों को धर्म कमाने की ही अधिक चिन्ता होती है। भले ही धर्म के मार्ग मे कितने ही कष्ट और दु.ख क्यो न आयें । भौतिक सुखसाधन तो क्षणिक सुख देते है । पारलौकिक सुखो की उपलब्धि उनसे कदापि नही हो सकती । किन्तु धार्मिक जन तो इस लोक की अपेक्षा परलोक की अधिक चिन्ता करते हैं । परलोक सवारने के लिए धर्मसग्रह अत्यन्त आवश्यक है और धर्मसग्रह के मार्ग मे जो कष्ट आते हैं, धार्मिक जन उनको कष्ट समझते ही नहीं, क्योकि उन्हे तो वे स्वेच्छा से आमन्त्रित करते हैं और स्वय आमंत्रित किये गये कष्टों को कोई भी कष्ट नही मानता । कल्पना करें कि एक व्यक्ति अभावग्रस्त रहने से भूखा रहता है और दूसरा स्वेच्छा से उपवास की दृष्टि से भूखा रह रहा है : एक भूखा रहने मे कष्ट अनुभव कर रहा है किन्तु दूसरा नही । ऐसा क्यो है, निश्चय ही मन स्थिति के

(शेष पेज ८ पर)

"धर्म-निरपेक्षता में अनौचित्य"

वेद प्रकाश आर्य: योग अध्यापक

समाज और राष्ट्ररूपी जो भवन है उसके स्तम्भ भी यही धर्म है। धर्म ही उसको धारण करता है। धर्म रूप स्तम्भ के बिना समाज और राष्ट्र धराशाही हो जाते हैं। इस धर्म को धारण करने की सम्यक् प्रणाली भारतीय मनीषियो ऋषियों द्वारा लाखो वर्ष पूर्व ही प्रारम्भ की जा चुकी है जो कि एक पुरुष के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सोलह वैदिक सस्कारो के माध्यम से अब भी आर्य समाज द्वारा उसी रूप मे व्यवहार मे लाई जा रही है और विश्व मे भी कही ज्यादा-कम रूपातरित होकर प्रचलित है।

इस प्रकार धर्म की प्राप्ति मनुष्य को आत्मा मे होती है। यही धर्म शरीर त्यागने पर आत्मा के साथ ही जाता है और इस धर्म के स्वरूप के आधार पर ही मनुष्य की आत्मा को परमेश्वर की न्याय व्यवस्था के अधीन अन्य योनियों मे भी शरीर धारण करना पड़ता है। ऐसा सम्यक् दर्शनो का निर्विरोध सिद्धान्त है। मानव जाति मे प्रथम बार समाज के लिये जब कभी नियम उपनियमो की आवश्यकता हुई तो सर्वप्रथम मनु महाराज जी ने वेद के अनुकूल व्यवस्था बनाई तथा उपरोक्त मानव धर्म को इस प्रकार प्रस्तुत किया .—

"अहिंसा तु परमोधर्म ।"

"धृति क्षमा दमोऽस्तेयम् शौचमिन्द्रिय निग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकम् धर्म लक्षणम् ।।"

योग दर्शन मे भी इसी मानव धर्म को योग के आठ अगों मे सर्वप्रथम स्थान मिला जो कि यम-नियम के रूप में जगत् विख्यात है :—

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान ।

धर्म के इस लक्षण अथवा यम-नियम के पालन को यदि प्रचलित भाषा के रूप मे कहे तो इस प्रकार कर सकते हैं, कि मनुष्य धर्म के बिना अर्थात् चरित्र के बिना 'मानव' समाज के लिये विजातीय तत्व (अवाञ्छनीय) गिना जाता है। धर्म (चरित्र) के विषय मे कहा है :—

अर्थात् धन एव स्वास्थ्य से भी अधिक महत्वपूर्ण मनुष्य का चरित्र (मनुष्यत्व) नष्ट हो जाने से कुछ भी शेष नही रहता है —

"चरित्र परम धनम्"

अत चरित्र अर्थात् मनुष्यत्व रूप धर्म का विशेष स्थान है जैसा कि कहा है —

"आहार निद्रा भय मैथुन च, सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि एको अधिको विशेष धर्मेण हीना पशुभिःसमाना ।।"

अर्थात् खाना-पीना-सोना आदि तो पशुओ और मनुष्यो मे समान है। मनुष्यो मे धर्म ही की विशेषता है। धर्म के बिना मनुष्य पशु के समान होता है।

इस उपरोक्त सम्पूर्ण वृतान्त से यही स्पष्ट होता है कि पृथ्वी पर समस्त मानव जाति का एक ही धर्म है, दो नही। दो तो हो ही नही सकते क्योकि यदि दो या दो से अधिक धर्म होंगे तो या तो वे आपस मे एक-दूसरे के अनुकूल होगे या प्रतिकूल होगे। यदि अनुकूल हुए तो फिर उन्हे दो रहना मूर्खता है क्योकि जब किसी विषय मे अनेक व्यक्तियो का एक मत होता है तो वे सब प्रतिकूल न होने के कारण एक ही कहलाते है। यदि प्रतिकूल हुआ तो फिर उसे धर्म नही कह सकते क्योंकि जो धर्म के प्रतिकूल है उसे धर्म कहलाने का हक नही बनता वह तो अधर्म ही कहलायेगा अत सभी मनुष्यो का एक ही धर्म होता है।

महाभारत युद्ध मे पूर्व भी इस पृथ्वी पर कोई मजहब, मत, सम्प्रदाय आदि न था केवल एक वैदिक धर्म ही था जो कि धर्म की पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या करने वाला है। वैदिकता के विपरीत सभी मान्यताए अधर्म ही कहलाती थी। सभी वेद के मानने वाले थे जो कि आस्तिक, श्रेष्ठ, आर्य, सज्जन आदि नाम से सम्बोधित किये जाते थे। वेद-विरुद्ध मान्यताओ को सर्वहितकारी न होने के कारण शासन की तरफ से बल पूर्वक दमन कर दिया जाता था।

महाभारत युद्ध मे श्रेष्ठ क्षत्रियो का प्रचुर मात्रा मे विनाश होने से कालान्तर मे स्वेच्छाचारी सामन्तवादी राजाओ के प्रमाद से वैदिक वर्ण-व्यवस्था छिन्न-भिन्न होकर जन्म मूला हो गई। परिणामस्वरूप ब्राह्मणत्व के वेश मे छिपे अज्ञानी, स्वार्थी, पाखण्डी, आचरण मे भ्रष्ट लोगो के परामर्श से केन्द्र (शासन) में अनार्यत्व का बोलबाला बढता गया तो उसमें पाखण्डो व अन्धविश्वासों को दबा पाने का वह ज्ञान पूर्वक सात्विक बल नही रहा जो कभी पहले आर्यावर्त (भारत) मे रहता आया था। अत समस्त वेद-विरुद्ध मान्यताए अर्थात् अधर्म भी अनेक धर्मो के नाम से अज्ञानता के कारण प्रचलित हो गया और मत, मजहब, सम्प्रदाय आदि भी धर्म के नाम से सुशोभित होने लगे। अत धर्म का वास्तविक वैदिक स्वरूप तिरोहित होता चला गया। धर्म और वेदो के नाम पर ही अधर्म, अन्धविश्वासो, पाप-पाखण्डों के दुर्व्यवहार से जन साधारण त्रस्त होने लगा परिणामस्वरूप उसका विरोध हुआ। अधर्म का तो विरोध होना ही था आखिर कब तक चल सकता था। लेकिन उस अधर्म पर धर्म नाम की चेपी अभी तक लगी हुई। आवश्यकता है धर्म को समझा जाये तथा मनुष्य को और मनुष्य की राजनीति को धर्म-सापेक्ष एव 'राज-धर्म' के द्वारा सुशोभित करके मानवता का सरक्षण किया जाये।

जब भी कोई समाज और राष्ट्र धर्म के वास्तविक वैदिक स्वरूप से अनभिज्ञ रहेगा तो कभी भी मानवता का प्रसार शासन के द्वारा नही होगा। अत: हमारी राजनीति मे विद्यमान 'धर्म-निरपेक्ष' शब्द धर्म के नाम पर होने वाले मजहबी, अन्धविश्वासो, पाखण्डो एव सकीर्णताओ का विरोध करने के लिये है न कि धर्म के वास्तविक अर्थ (मानवता) के विरोध के लिये। लेकिन व्यवहार मे ठीक इनके विपरीत नजर आता है कि धर्म के नाम पर होने वाली देश की दुर्दशा पर शासन अकुश लगाने में असमर्थ है तथा धर्म के वास्तविक अर्थ से पूर्णतया अनभिज्ञ है। यह इसलिये है क्योकि भारत के सविधान निर्माताओ को वैदिक मान्यताओं का भली-भाति परिचय नही था। इसका कारण ईसाई अग्रेजो के द्वारा जानबूझ कर भारतीय सस्कृति को नष्ट करने की कूटनीति के परिणामस्वरूप वेद के दूषित भाष्य किये गये। जिनका दुष्प्रभाव तत्कालीन मैकालेवादी शिक्षाविदो पर पड़ा और वे भी वेदो पर लगाई गई कालस को देखकर वैदिक मान्यताओ से अनभिज्ञ बने रहे। यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का वेद-भाष्य पढ़ने-पढ़ाने का विषय बना लिया होता तो कभी भी हमारे सविधान मे धर्म-निरपेक्ष शब्द नही लिखा जाता। तथा हमारा सविधान उठा-पटक वाली राजनीति का शिकार न होता। 'राजनीति' के स्थान पर 'राजधर्म' शब्द सदा प्रयुक्त होता। मनुष्य को परिवार को, समाज को, राष्ट्र को और राष्ट्र-सविधान को धर्म-निरपेक्ष न कहकर धर्म सापेक्ष ही जाना जाता, माना जाता, पढ़ाया जाता, और व्यवहार में लाया जाता।

मजहब, मत, सम्प्रदाय आदि के लिये स्पष्ट सकेत होता कि —"जो-जो बातें जो-जो नियम वेदानुकूल, सर्व-हितकारी, सार्वभौम, एवं सार्वकालिक सत्य पर आधारित हो। बुद्धि-पूर्वक, वैज्ञानिक, सर्वमान्य प्रमाणों से पुष्ट है वही मनुष्य जाति का मुख्य धर्म है। अपरिवर्तनीय कानून है। परम कर्त्तव्य है उसी का पालन करना कराना सरकार का मुख्य उत्तरदायित्व है। इसके विपरीत जो भी बातें हैं। रूढ़िया हैं। वे सबके लिये समान रूप से अधर्म है। चाहे किसी भी मतमतातर मे क्यों न हो। उन सबका विरोध करना-कराना तथा जड़ मूल से उखाड़ना सविधान का पालन कराने वाले न्यायधीशो एव शासक वर्ग के साथ-साथ सभी नागरिकों का परम धर्म है।"

इस प्रकार हम देखते है कि मानव धर्म पर आधारित पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय नियम-उपनियम, कानून आदि सभी का पालन करना मनुष्य मात्र का धर्म है। तो फिर 'धर्म-निरपेक्षता' का अर्थ तो मात्र पाशविक जीवन जीने की तरफ ही सकेत करता है। अत. हमारे सविधान में रखा हुआ 'धर्म-निरपेक्षता' शब्द भारतीयता के नाम पर कलक है।

श्री दरबारी लाल सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के निर्वाचन मे श्री दरबारी लाल जी को दिनांक १ जनवरी १९९५ को हुई साधारण सभा की बैठक मे सर्वसम्मति से डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति का प्रधान चुना गया।

समुपस्थित समुदाय ने श्री दरबारी लाल को बधाई एवं शुभकामना प्रदान करते हुए पुष्पमालाओ से उनका अभिनन्दन किया।

(रामनाथ सहगल) मंत्री

सूचना

वेद की प्रतिष्ठा में आर्य समाज सरस्वती विहार (सी० ब्लाक), दिल्ली द्वारा श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के नवनियुक्त कुलपति आर्य वैदिक परम्परा में दीक्षित आचार्य वाचस्पति उपाध्याय का भव्य अभिनन्दन

मुख्य अतिथि—डा० धर्म पाल आर्य (कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय)।

आशीर्वाद—पूज्य स्वामी विद्यानन्दन सरस्वती

अध्यक्ष—आचार्य सत्यव्रत शास्त्री

दिनांक—२९ जनवरी १९९५ समय—प्रात. ९.३० बजे

आप बन्धु-बान्धवों सहित सादर निमन्त्रित हैं।

संयोजक, निवेदक,

डा० कृष्ण लाल सरदारी लाल (प्रधान) विनय भूषण (मन्त्री)

एवं अन्तरग सभा के सदस्य

सौ बातों की एक बात

(पृष्ठ ४ का शेष)

अत हमारी प्रगति पुनः पूर्वापर लाने के लिये हमे सौ बातों को छोड़कर मूल रूप से एक मात्र महर्षि कृत ग्रन्थानुसार ही पढकर सन्ध्या यज्ञ विधि उचित समय पर करना सिखावें। संस्कार विधिस्थ सन्ध्या पद्धति की अवमानना नही करके सांगोपांग सन्ध्या यज्ञ विधि नई पीढ़ी को सिखावे। अर्थ सहित महर्षि शैली से तर्क पूर्वक तत्व से समझाना है।

जब तक हम महर्षि कृत ग्रन्थों पर नही आवेंगे तब तक संसार का उपकार करना तो दूर की बात रही। अपना ही उपकार नहीं कर सकेंगे महर्षि कहा करते हैं कि :—मेरा शरीर सदा नहीं रहेगा। आप लोग मेरी पुस्तकों से शिक्षा लेते रहना और दूसरों को देते रहना।

देखिये लेखराम कृत जीवनी नया बांस दिल्ली प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या ४७३॥

यही सौ बातों की एक ही बात है। इस पर चलकर ही प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकेंगे। अन्य मार्ग कुछ भी नहीं है।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 19 20-1-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/94
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी-११०२४/९४ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९४
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक २२ जनवरी १९९५

क्या पापी सुखी

(पेज ५ का शेष)

कारण। हम देखते हैं कि एक श्रमिक भी श्रम करता है और एक कसरत करने वाला बलवान भी। किन्तु उस श्रम का दोनो पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ा करता है। श्रमिक क्लान्ति और थकान अनुभव करता है जबकि कसरत करने वाला पहलवान स्फूर्ति और उत्साह की अनुभूति रखता है। ऐसा क्यों? इसलिए न कि एक स्वेच्छा से श्रम कर रहा है और दूसरा मजबूरी से। इसी कारण दोनो की मानसिक स्थिति भी भिन्न-भिन्न है। यही अन्तर एक धर्मात्मा और दुराचारी की अनुभूति मे भी समझना चाहिए। धर्मात्मा कष्ट और दुःख उठाते हुए भी दुःखी नही होता जबकि पापी सुख-सम्पत्ति मे भी चैन नही पाता। अतः यह कहना यथार्थ नही कि धर्मात्मा जन दुखी और पापी सुखी हैं। महामुनि चाणक्य सुख का मूल ही धर्म बताते हैं। यथा—सुखस्य मूलं धर्मं। अर्थात् सुख का मूल धर्म है। जब सुख का मूल ही धर्म है तो फिर यह कैसे हो सकता है कि धर्मात्मा दुःखी रहे और अधर्मी सुखी? महर्षि दयानन्द की सुस्पष्ट मान्यता है कि—"धर्म करने वालों को सुख और अधर्मी दुष्टो को दुःख सदा प्राप्त होते हैं।" इसलिए जो कोई दुःख को छोड़ना और सुख को प्राप्त करना चाहे, वह अधर्म को छोड़ धर्म का सेवन करे। फिर चाहे धर्म के मार्ग मे चलने से कितने ही कष्टों और दुःखों का सामना भी क्यो न करना पड़े।

यह भी ध्यान रहे कि "अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः। नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः॥ अर्थात् शरीर अनित्य है, वैभव भी शाश्वत नही, मृत्यु नित सिरहाने खडी रहती है, इस लिए धर्म संग्रह ही कर्त्तव्य है। क्योंकि—नामुत्र हि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठति। न पुत्रदारा न ज्ञातिधर्मस्तिष्ठति केवलम्॥ अर्थात् परलोक मे माता, पिता, पुत्र, स्त्री व जाति कोई भी सहायी नहीं होते, किन्तु एक धर्म ही सहायक होता है। और मृत शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ। विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति॥ अर्थात् मृत शरीर को मिट्टी के ढेले के समान फेंक कर एवं पीठ फेर कर बन्धुजन विमुख होकर चले जाते हैं, कोई उसके साथ जाने वाला नही होता, किन्तु एक धर्म ही उसका होता है। इसलिए—तस्माद्धर्मं सहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छनैः। धर्मेण हि सहायेन तमस्तरति दुस्तरम्॥ अर्थात् परलोक में सुख और जन्म के सहायार्थ नित्य धर्म का संचय धीरे-धीरे करता जाये क्योंकि धर्म ही के सहाय से बड़े-बड़े दुःख सागर को जीव तर सकता है। फिर ऐसे धर्म के मार्ग में यदि कोई कष्ट, क्लेश, अभाव अथवा दुःख भी आ जाये तो उसकी क्या चिन्ता करनी?

आज संसार दुःखों का घर बना हुआ है, इसका मुख्य कारण है, धर्म का परित्याग। यदि दुःखों से बचना है तो कष्टों-क्लेषों की चिन्ता किए बिना धर्म के मार्ग पर निष्ठा और दृढ़ता के साथ आरूढ़ होना होगा तभी कल्याण है, अन्यथा नही।

आर्य निवास, चन्द्र नगर,
मुरादाबाद-२४४०३२

मुद्रक द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन: ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी ११०२४)-९४

साप्ताहिक ओ३म्

आर्य सन्देश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १८, अंक १२ | रविवार, २९ जनवरी १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

११वां आर्य युवक महासम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ७ जनवरी से २१ जनवरी तक दिल्ली सभा से सम्बन्धित समस्त शिक्षण संस्थाओ मे चित्रकला एव निबन्ध प्रतियोगिता भाषण प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, खेल कूद प्रतियोगिता, समूहगान प्रतियोगिता, वाली बाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दि० २१-१-९५ को प्रात काल ९ बजे आर्य युवक महासम्मेलन का समापन व पारितोषिक वितरण समारोह मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री सोमनाथ मरवाह कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

सम्मेलन मे विशिष्ट वक्ताओ मे श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा डा० धर्मपाल मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री राममूर्ति केला प्रधान आर्य समाज हनुमान रोड श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री आर्य समाज हनुमान रोड श्री प्रियतम दास रसवन्त अधिष्ठाता आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश प्रिंसिपल श्री चन्द्र किन्नरा श्री चन्द्रदेव आदि उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से यह आयोजन रघुमल कन्या सीनियर सैकेन्डरी स्कूल राजा बाजार नई दिल्ली मे किया गया, इसमे आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से सम्बन्धित आर्य समाजो द्वारा संचालित स्कूलो के बालक बालिकायें लगभग ढाई हजार सम्मिलित थे।

समारोह मे विभिन्न स्कूलो की छात्राओं ने व्यायाम व आसनो का प्रदर्शन किया इसमें कन्या गुरुकुल नरेला की छात्राओ का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ माना गया और इन्हे प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण से पूर्व भाषण की परम्परा का पालन किया गया, श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि आज राष्ट्र के सामने चरित्र, जातिवाद आरक्षण आदि की ज्वलन्त समस्यायें हैं। आर्य समाज के स्कूलो तथा आर्य संस्थाओ को चाहिये कि वे इनका मुकाबिला करें।

श्री डा. धर्मपाल ने कहा कि शिक्षण संस्थायें आर्यसमाज का प्रचार करे दूषित वातावरण को मिटाने का संकल्प ले इसलिये हमने छात्र-छात्राओ को ऐसे विषय दिये जिनके द्वारा उनमे अपने देश के प्रति प्रेम जागृत हो और राष्ट्र के महापुरुषों को जाने।

अध्यक्षीय पद से श्री मरवाह जी ने कहा कि मैं तीन बातो की ओर अपनी बच्चियों तथा अध्यापिकाओ का ध्यान आकर्षित करना चाहता हू कि हमारी प्रत्येक लडकी रसोई का ज्ञान अवश्य प्राप्त करे। आर्य समाज क्या है? इसे जाने पहचाने, तीसरा लड़किया पूर्णतया स्वस्थ हो बचपन से चश्मे आदि धारण करने वाली न हों। बूचड खानो की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देश के सभी बूचड़ खाने बन्द हो, उच्चतम न्यायालय ने संस्कृत के पक्ष मे निर्णय देकर वही कार्य किया है जिसे महर्षि दयानन्द चाहते थे। हमारे इतिहास को बदला जा रहा है, इस विषय मे सावधान होने की आवश्यकता है।

इसके पश्चात पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसकी सूची नीचे दी जा रही है। जिसमें लगभग ३५० बच्चो को शील्ड ट्राफी, कप, प्रशस्ति पत्र तथा वैदिक साहित्य के लगभग २० हजार रु० के पुरस्कार वितरण कर प्रोत्साहित किया गया।

(शेष पेज २ पर)

कुलाधिपति श्री सूर्यदेव जी का अभिनन्दन

आर्यसमाज हनुमान रोड द्वारा दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से श्री सूर्यदेव जी के कुलाधिपति निर्वाचित होने पर आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली मे एक समारोह आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री सोमनाथ मरवाह कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण करके श्री सूर्यदेव का स्वागत किया। आर्य समाज हनुमान रोड के प्रधान श्री राममूर्ति केला ने शाल उढाकर सूर्यदेव जी का स्वागत किया। निम्नलिखित आर्य समाजो के पदाधिकारियो ने स्वागत समारोह मे भाग लिया। जिसमे लगभग ५०० आर्य पुरुषों ने भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-स्वा स्वरूपानन्द, आर्यकेन्द्रीय सभा-डा शिवकुमार शास्त्री, प्रान्तीय महिला सभा की श्रीमती प्रकाश आर्या, आशा वर्मा, श्रीमती शशि, श्रीमती राजपाडे श्रीमती राम चमेली, स्नातक मण्डल गुरुकुल कांगड़ी-श्री सुभाष विद्यालंकार गुरुकुल कांगडी फार्मेसी-डा०राजकुमार रावत, श्री उप्रेती, डा०शर्मा, वैदिक विद्वान डा महेश विद्यालंकार, धर्माचार्यों की ओर से डा० कर्णदेव, शिष्ट परिषद श्रीमती सुमेधा, दीवान हाल श्री राजसिंह भल्ला, श्री मूलचन्द जी, करौलबाग श्री हरिदेव जी, श्री ओमप्रकाश जी, जनकपुरी सी ब्लाक श्री महेन्द्र पाल आर्य, श्री शिव-कुमार मदान, श्रीपुरी जी राजौरी गार्डन श्री जगदीश आर्य, श्री नागिया, श्री मेहदी रत्ता, तिमारपुर श्री तेजपालसिंह मलिक, श्री कलीराम शर्मा, किंग्जवे कैम्प श्री जैलसिंह, श्री गोपाल आर्य, लड्डूघाटी श्री वीरभान चावला, चूना मण्डी श्री प्रेम दास, गुलमोहर पार्क श्री प० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, शकरपुर श्री पतराम त्यागी, शादी खामपुर चौ० खेमचन्द, श्री कृपाल सिंह, खिचडीपुर श्री दामोदर जी आर्य, शकूर बस्ती डा० भारत भूषण, देवनगर डा० रघुवर दयाल, जंगपुरा विस्तार श्री रामशरणदास आर्य, साकेत श्री कटारिया, श्री सत्यदेव शर्मा, तिलक नगर प्रि० वीरभान जी, ला० नन्दलाल जी, लाजपत नगर श्री पुरुषोतम गुप्त, सफदरजंग एन्क्लेव श्री हरबससिंह खेर, दरियागंज श्री बीबी सिंगल, श्री योगेन्द्र मिश्र, बुराडी डा० राजेन्द्र अग्रवाल, मुखर्जी नगर श्री रविदत्त गौतम, अशोक विहार श्री सुरेन्द्र कुमार हिन्दी, अनाज मण्डी शाहदरा श्रीमती ईश्वर देवी धवन सदर बाजार श्री चन्द्रदेव, आर० के० पुरम श्री हरवंश लाल कोहली, सरोजनी नगर श्री रोशनलाल गुप्त, निर्माण विहार श्री रवि बहल, श्री कुमार, श्री सूद, शालीमार बाग श्री चन्द्रप्रकाश तायल, जोर बाग डा० ओमप्रकाश मान, कृष्णनगर नवीन श्रीनेतरामशर्मा, हौजखास श्रीधर्मवीर गुप्त, लोधीकालौनी इन्द्रपुरी श्रीरघुराज शास्त्री, सार्वदेशिक प्रेस श्री बीरसिंह व श्री जगदीश सिंह, ए०जी०सी०आर०एन० श्री कृष्ण कुमार आहूजा, नबीकरीम श्री ऋषिपाल शास्त्री, ग्रीन पार्क-श्री गोविन्द लाल, अमरीका से श्री राजेश्वर चन्द्र गुणसागर सैक्सना, किंग्जवे कैम्प कर्मठ कार्यकर्ता श्री नरेन्द्र सिंह जी, मयूर विहार श्री कृष्ण लाल बुद्धि राजा मन्त्री, आर्य समाज शालीमार अवनीश कुमार शास्त्री पुरोहित, आर्य समाज नांगलोई

(शेष पेज ७ पर)

प्रधान सम्पादक सूर्यदेव

सह सम्पादक आचार्य सुधाकर एम०ए०

(पेज १ का शेष)

आर्य युवा महासम्मेलन-१९९४-९५

विजेताओं तथा पुरस्कार दाताओं की सूची

१ चित्रकला प्रतियोगिता-श्री ओमप्रकाश आर्य पुरस्कार

कक्षा-९ से १२ प्रथम-कु० नीरज-बिरला सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, बिरला लाइन्स

द्वितीय-कु० ममता-कन्या वही कमला नगर

तृतीय-श्री मनोज वर्मा-सरस्वती बाल मंदिर, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

कक्षा-६ से ८ श्रीमती सत्यवती सूद पुरस्कार

प्रथम-कु० मनीषा गेरा-सरस्वती बाल मंदिर राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

द्वितीय-कु० गगन-सत्भावा आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, करोल बाग नई दिल्ली

तृतीय-कु० मालती-बिरला आर्य कन्या सी० सैकेण्डरी स्कूल, बिरला लाइन्स

कु० ज्योति सिंह-सत्भावा आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल करोल बाग

कक्षा-१ से ५ श्री मशाराम आर्य पुरस्कार

प्रथम-श्री मनीष चन्दन-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री वरुण सूद-सरस्वती शिशु मंदिर, पटेल नगर, नई दिल्ली

तृतीय-श्री गौरव सेठी-जी० एल० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, पटेल नगर

२. निबन्ध लेखन प्रतियोगिता-श्री महाशय चुन्नीलाल पुरस्कार

कक्षा-१ से ५ प्रथम-कु० सन्नी गिरधर-सरस्वती शिशु मंदिर पटेल नगर, नई दिल्ली-८

द्वितीय-श्री दीपक अरोड़ा —वही—

तृतीय-कु० विन्ध्या-महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, राजौरी गार्डन नई दिल्ली

कक्षा-६ से ८ श्री राकेश कैला पुरस्कार

प्रथम-कु० वाक अरोड़ा-दयानन्द माडल स्कूल, पटेल नगर, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री प्रदीप बंसल-महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर, सुभाष नगर नई दिल्ली

तृतीय-कु० राधा रानी-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

कक्षा-९ से १२ श्री चुन्नीलाल मेहता पुरस्कार

प्रथम-कु० मंजु-बिरला आर्य कन्या सी० सैकेण्डरी स्कूल, बिरला लाईन्स न० दि०

द्वितीय-कु० ज्योति-सत्भावा आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, करोल बाग, नई दिल्ली

तृतीय-कु० चेतना-रघुमल आर्य कन्या सी० सैकेण्डरी स्कूल, राजा बाजार,

—श्री मुकेश कुमार-राजकीय उ० मा० बाल विद्यालय, पूसा, नई दिल्ली

३ वाद-विवाद प्रतियोगिता-श्री प्रियतम दास रसवन्त पुरस्कार

कक्षा-१ से ५ प्रथम-कु० कनिका-रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री के० आर० निदान —वही—

तृतीय-कु० श्वेता-महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

वाद-विवाद प्रतियोगिता—श्री हरबंस सिंह कौर पुरस्कार।

कक्षा-६ से ८ प्रथम-कु० रश्मीत कौर—दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर,

द्वितीय-कु० पूनम रुपानी —रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर

तृतीय-कु० दमनजीत कौर—दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर

कु० नम्रता —महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, राजौरी गार्डन

कक्षा-९ से १२ श्री लालमन आर्य पुरस्कार

प्रथम-श्री ललित कुमार-बिरला सी० सै० स्कूल कमला नगर

४-भाषण प्रतियोगिता-कुमारी विद्यावती पुरस्कार

कक्षा-१ से ५ प्रथम-श्री सन्नी गिरधर-सरस्वती शिशु मंदिर पटेल नगर, नई दिल्ली

द्वितीय-कु० प्रियका-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

तृतीय-कु० एकता गुप्ता महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, राजौरी गार्डन नई दिल्ली

कक्षा-६ से ८ श्रीमती शन्नोदेवी पुरस्कार

प्रथम-कु० वन्दना आर्य-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

द्वितीय-कु० रश्मीत कौर —वही—

तृतीय-कु० रुचि-महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, राजौरी गार्डन, नई दि०

कक्षा-९ से १२ श्रीमती नेमवती पुरस्कार

प्रथम-कु० मंजु-बिरला आर्य कन्या सी० सैकेण्डरी स्कूल, बिरला लाईन्स

५-खेल-कूद प्रतियोगिता श्री रतनलाल सहदेव पुरस्कार

१०० मीटर दौड़ प्रथम-श्री तरुण-एस० एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

(बालक) द्वितीय-श्री हरिमोहन-गुरु अमरदास पब्लिक स्कूल, तिलक नगर, नई दिल्ली

५ से १० वर्ष तृतीय-श्री ईश्वविन्द्र-गुरुनानक पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली

" सुखबीरसिंह " अमरदास पब्लिक स्कूल तिलक नगर

१०० मीटर दौड़ श्रीमती वीरावाली मालीन पुरस्कार (बालिकायें)

५ से १० वर्ष प्रथम-कु० किरण-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

द्वितीय-कु० गगनजीत-गुरुनानक पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-कु० नीतू राय-डी० ए० वी० माडल बाल विद्यालय, सं-५ आर० के० पुरम्

१०० मीटर दौड़ माता चन्ननदेवी पुरस्कार (बालक)

प्रथम-श्री लक्ष्मण-राजकीय सिंधी उ० मा० विद्यालय, राजेंद्र नगर, न० दि०

१० से १४ वर्ष

द्वितीय श्री हरमीत सिंह-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-श्री जसदीप —वही—

१०० मीटर दौड़ श्री लाला इन्द्रनारायण पुरस्कार (बालिकाएं)

१० से १४ वर्ष प्रथम-कु० साहिल-रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल राजा बाजार

द्वितीय-कु० मोना-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-कु० दीपा-सत्भावा आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, करोल बाग नई दिल्ली

(शेष पेज ३ पर)

(पृष्ठ २ का शेष)

२०० मीटर दौड़ (बालक) श्री विश्वभर नाथ भाटिया पुरस्कार
१० से १८ वर्ष प्रथम-श्री लक्ष्मण-राजकीय सिंधी उच्चतम मा० विद्यालय, राजेन्द्र नगर नई दिल्ली

द्वितीय-श्री हरमीत सिंह-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-श्री मनीश-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

२०० मीटर दौड़ (बालिकायें) श्री ईश्वर चन्द आर्य पुरस्कार
१० से १४ वर्ष प्रथम-कु० दीपा-सत्भ्रावा आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, करोल बाग, नई दिल्ली

द्वितीय-कु० गुरमीत-राजकीय उ० मा० बालिका विद्यालय, पूसा, नई दिल्ली

तृतीय-कु० मन्जु-बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, बिरला लाईन्स, दिल्ली

लम्बी कूद (छात्र) श्री केशव चन्द बुशा पुरस्कार
१० से १४ वर्ष प्रथम-श्री हरमीत-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री सुनील-सचदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, न० दि०

तृतीय-श्री लक्ष्मण-राजकीय सिंधी उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, राजेन्द्र नगर नई दिल्ली

लम्बी कूद (छात्राएं) श्री हरबस लाल सहगल पुरस्कार
१० से १४ वर्ष प्रथम-कु० ताहिल-रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार

द्वितीय-कु० अनीता —वही—

तृतीय-कु० नेहा गर्ग-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

ऊंची कूद (बालक) श्रीमती मोहनदेवी मुखी पुरस्कार
१० से १४ वर्ष प्रथम-श्री शरद-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री छोटेलाल-राजकीय उच्चतम माध्यमिक बाल विद्यालय, पूसा, नई दिल्ली

तृतीय-श्री अब्दुल्ला-दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली

ऊंची कूद (बालिकायें) प० जगत राम आर्य पुरस्कार
१० से १४ वर्ष प्रथम-कु० इन्दु-रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल, राजा बाजार

द्वितीय-कु० दीपा —वही—

४०० मीटर दौड़ (बालक) स्व० श्रीमती वेदकुमारी सहगल पुरस्कार
आयु १४ से १७ प्रथम-श्री लूसर-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री अमित-एस० एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-श्री जसविन्द्र-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

४०० मीटर दौड़ (बालिकायें) श्री वैद्य प्रहलाद दत्त पुरस्कार
आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-कु० नीरू-रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार. नई दिल्ली

द्वितीय-कु० पूजा —वही—

तृतीय-कु० कमलेश-बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, बिरला लाईन्स, दिल्ली

८०० मीटर दौड़ (बालक) श्री भगवानदास घवन पुरस्कार
आयु १४ से १७ प्रथम-श्री नरेन्द्र-राज० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पूसा, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री गौरवविनि-एस०एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, न० दिल्ली

तृतीय-श्री संदीप-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

८०० मीटर दौड़ (बालिकायें) श्री महेन्द्र पाल वर्मा पुरस्कार
आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-कु० नीरू-रघु मल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, बाजा बाजार

द्वितीय-कु० पूनम —वही—

तृतीय-कु० सुनीता-सत्भ्रावा आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, करोल बाग नई दिल्ली

१५०० मीटर दौड़ (बालक) श्रीमती सत्यप्रिया पुरस्कार
आयु १४ से १७ प्रथम-श्री पवन कुमार-राज० उच्चतर मा० विद्यालय, पूसा, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री गौरव विनि-एस०एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-श्री मनजीत-राज० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पूसा, नई दिल्ली

१५०० मीटर दौड़ (बालिकाएं) श्री तीर्थराम आहूजा पुरस्कार
आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-कु० नीरू-रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, करोल बाग नई दिल्ली

द्वितीय-कु० रजनी-सत्भ्रावा आर्य कन्या सीनियर सै० स्कूल, करोल बाग, नई दिल्ली

तृतीय-कु० पूनम-रघुमल आर्य कन्या सीनियर सै० स्कूल, राजा बाजार

गोला फेंक (बालक) श्री जगदीश आर्य पुरस्कार (राजौरी गार्डन)
आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-श्री गुरमुख-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, दिल्ली

द्वितीय श्री आदित्य -वही-

तृतीय श्री अमित-एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग नई दिल्ली

गोला फेंक (बालिकाएं) श्री राधाकृष्ण शान्ति देवी धर्मार्थ ट्रस्ट पुरस्कार
आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-कुमारी शशि-बिरला आर्य कन्या सीनियर से० स्कूल, बिरला लाईन्स
द्वितीय-कु० सारिका-एस० एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-कु० गीता-रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार

लम्बी कूद (बालक) प्रि० प्रकाश वर्मा पुरस्कार
आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-श्री अमित-एस० एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

द्वितीय-श्री लुसर-गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

तृतीय-श्री सदीप —वही—

लम्बी कूद (बालिकाये) स्व० श्री हरिओम गुप्ता पुरस्कार
आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-कु० ममता-रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली

द्वितीय-कु० पूजा —वही—

ततीय-कु० शशि-राज० उच्च०मा० बालिका विद्यालय, पूसा, नई दिल्ली

ऊंची कूद (बालक) श्रीमती बृजबाला भल्ला पुरस्कार
आयु १४ से १७ प्रथम सदीप गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग नई दिल्ली

द्वितीय मनमीत राज०उ०मा०बाल विद्यालय, पूसा नई दिल्ली

(शेष पेज ४ पर)

आर्थिक सहायता के लिए अपील

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर महर्षि दयानन्द के परम गुरु दण्डी विरजानन्द जी की जन्म स्थली पर उन्ही की स्मृति मे १९७० ई० मे चार ब्रह्मचारियो के साथ आरम्भ हुआ था। आज इसमें १३० ब्रह्मचारी आधुनिक विषयों के साथ-साथ वेद, गीता तथा सस्कृत के अन्यान्य शास्त्रो का अध्ययन कर रहे हैं। जिनका भोजन, शिक्षण, निवास तथा अन्य सभी सुविधाए पूर्णतया नि:शुल्क हैं। शुद्ध दूध के लिए गुरुकुल की अपनी गोशाला है। आजकल गुरुकुल का मासिक खर्च लगभग ६० हजार रुपए (सात लाख रुपये वार्षिक) आ रहा है। जिस सारे लिए गुरुकुल दान पर ही निर्भर करता है।

गुरुकुल के पास जो भूमि थी उस पर दो मंजिल भवन बनाने पर भी कुल १०० विद्यार्थियों के लिए ही वे भवन पर्याप्त हो सके। जबकि प्रवेश हेतु १५० से भी अधिक प्रार्थना पत्र आए और हमे विवशतावश भारी मन से यह निर्णय लेना पड़ा कि इस वर्ष १३० विद्यार्थियों को प्रवेश देकर प्रवेश बन्द कर दिया जाए। परन्तु हम हृदय से चाहते थे कि अधिक से अधिक युवक सस्कृत पढें, वेद पढें तथा वेद का प्रचार प्रसार करे। क्योकि महर्षि दयानन्द का आदेश है कि "वेद का पढ़ना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" परन्तु स्थान का अभाव हमारी विवशता थी।

प्रभु कृपा से बहुत यत्न करने पर गुरुकुल से २०० गज की दूरी पर हमे चार कनाल (८० मरले) भूमि जिसकी चार दीवारी की हुई है और कुछ गोदाम भी बने हुए हैं, मिल गई है। जिसकी रजिस्ट्री आदि पर १५ लाख रुपए खर्च होंगे। इस भूमि के लिए हमे यह सारा धन इक्ट्ठा करना ही होगी। इस यज्ञ मे हम आपकी आहुति पर ही निर्भर करते हैं।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज, अपनी शिक्षण सस्था तथा अन्य सबधित सस्थाओं की ओर से अधिकाधिक दान राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बने। इस भूमि यज्ञ मे आपके द्वारा दिया गया सहयोग हमारे लिए उत्साह वर्धक होकर तथा भारतीय सस्कृति, सस्कृत व वेद के प्रचार प्रसार मे आपका यह उचित योगदान होगा। अपनी दान राशि का क्रास चैक या ड्राफ्ट "श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट" के नाम से ही बनवाए, जो करतारपुर या जालन्धर मे भुगतान योग्य हो। मनिआर्डर/चैक या ड्राफ्ट निम्न पते पर ही भेजें—श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, जी० टी० रोड, करतारपुर-१४४८०१ (जिला. जालन्धर) पंजाब। इस ट्रस्ट को दिया गया दान आयकर से मुक्त है।

हरबन्स लाल शर्मा	निवेदक	चतुर्भुज मित्तल
प्रधान		मन्त्री

सूचना

१ जनवरी १९९५ को आर्य समाज पिम्परी मे सस्कृत वर्ग पारितोषिक वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, आर्य समाज पिम्परी की ओर से एक महीने का सस्कृत सस्कार शिविर आयोजित किया था, इस वर्ग मे लगभग ६० छात्रो और प्रौढ व्यक्तियो ने भाग लिया, इसी कार्यक्रम मे यशस्वी छात्रो को अध्यक्ष जी ने पुरस्कार प्रदान किये।

वैदिक धर्म अपनाया

दिनाक ६ दिसम्बर १९९४ को एक ईसाई युवती ने ईसाई पथ त्यागकर वैदिक धर्म की दीक्षा ली। श्री पी ए दास की पुत्री कु० अँरिन ने ईसाई धर्म त्यागकर वैदिक धर्म को स्वीकार किया उसका नया नाम वर्षा रखा गया, उसके पश्चात आर्य समाज पिम्परी के मन्त्री श्री हरगुनलाल गणेशवाणी जी के सुपुत्र राजेन्द्र कुमार के साथ उसकी सगाई तय की गयी। उनका विवाह २७ दिसम्बर ९४ को सम्पन्न हुआ। इस शुद्धि का पौरोहित्य आर्य समाज के पुरोहित प० विश्वनाथ जी आर्य ने किया। इस शुद्धि समारभ में बडी सख्या मे आर्य समाज के पदाधिकारी और सदस्यगण उपस्थित थे।

(पेज ३ का शेष)

तृतीय गुरु गुरुनानक पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग नई दिल्ली

ऊंची कूद (बालिकाए) श्रीमती सुशीला सेठी पुरस्कार

आयु १४ से १७ वर्ष प्रथम-कु० पूजा-रघुमल आर्य कन्या सीनियर सै० स्कूल, राजा बाजार

४०० मीटर दौड आर्य वीर दल श्री तिलक राज चोपड़ा पुरस्कार

प्रथम-श्री तरुण शर्मा-आर्य वीर दल शादी खामपुर दिल्ली

द्वितीय श्री दीपक —वही—

तृतीय-

भाला फैंक श्री लालचन्द सहदेव पुरस्कार

प्रथम-श्री कृपाल-आर्य दल शादी खामपुर दिल्ली

द्वितीय-श्री राजबीर —वही—

तृतीय

समूहगान प्रतियोगिता प० दुर्गादास पुरस्कार

शिशु वर्ग प्रथम-अब्बन लाल डी०ए०वी०पब्लिक स्कूल पटेल नगर

श्री लालमन आर्य पुरस्कार

द्वितीय-एम०एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली

श्री रतन चन्द सूद पुरस्कार

तृतीय-सत्यभावा आर्य कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल करोल बाग

कनिष्ठ वर्ग चौ० खानचन्द पुरस्कार

प्रथम-सत्यभावा आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल करोल बाग

श्री तिलक राज चोपड़ा पुरस्कार

द्वितीय-महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, राजोरी गार्डन नई दिल्ली

श्री जगदीश आर्य (राणा प्रताप बाग) पुरस्कार

तृतीय-एस०एम० आर्य पब्लिक स्कूल पजाबी बाग, नई दिल्ली

वरिष्ठ वर्ग श्री राम लाल मलिक पुरस्कार

प्रथम-रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल कृष्ण नगर दिल्ली

द्वितीय-सत्यभावा आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, करोलबाग

तृतीय-एस०एम० आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग नई दिल्ली

वाली बाल प्रतियोगिता श्री एम०आर०दुर्गा पुरस्कार

प्रथम-रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल कृष्ण नगर

सत्यार्थ प्रकाश के यशस्वी प्रणेता—महर्षि दयानन्द सरस्वती

—लेखक यशपाल आर्यबन्धु

किसी विद्वान् का कथन है कि यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी मृत्यु के बाद लोग तुम्हें याद रखें तो या तो ऐसा साहित्य लिख जाओ जो पढने के योग्य हो या फिर ऐसा कार्य कर जाओ जो लिखने अर्थात् उल्लेख करने के योग्य हो। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उपर्युक्त दोनों कार्य अपने जीवन मे सम्पादित किये थे। यही कारण है कि उनके देहावसान के बाद भी लोग उन्हें श्रद्धा से याद करते हैं। यद्यपि महर्षि दयानन्द सासारिक एषणाओं से कोसों दूर थे और उन्हे उपर्युक्त दोनो कार्य इसलिए नही सम्पादित किये थे कि मृत्यु के पश्चात् लोग उन्हे याद करें अपितु लोकहित तथा कर्त्तव्य भावना से उन्होने ये दोनो कार्य सम्पादित किये थे। जानते हैं वे दो कार्य कौन से थे? एक तो सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका तथा अन्य पठनीय ग्रन्थो का लेखन और दूसरा आर्यसमाज जैसे क्रान्तिकारी आंदोलन का गठन एव वेदाभाष्य जैसे दुरुह कार्य का निष्पादन, वह भी जन सामान्य की भाषा हिन्दी मे। अपने इन कार्यो के लिए वे ससार मे मर के भी अमर हो गये हैं।

प्रस्तुत लेख मे केवल महर्षि के विचारपुंज सत्यार्थ प्रकाश के महत्व एव धार्मिक जागरण में उसकी भूमिका पर विचार करेंगे। हमारा यह सुदृढ विश्वास है कि महर्षि दयानन्द को ठीक से समझने के लिए उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को ठीक से समझना अत्यन्त आवश्यक है। बिना इसके महर्षि को ठीक से नहीं समझा जा सकता। अत —

यदि महर्षि को समझना है तो प्रथम सत्यार्थ प्रकाश को समझें—

महामानव दयानन्द को समझना है तो प्रथम उनके विचारपुंज सत्यार्थ प्रकाश को समझने की आवश्यकता है। पर दुख इस बात का है कि महर्षि की ही भाति उनके इस अमर ज्ञानकोष को भी समझने मे ससार ने बडी भूल की है। और इसे ठीक से न समझने के कारण ही महात्मा गाधी जैसा प्रबुद्ध एव विचारशील व्यक्ति भी महर्षि द्वारा लोक-कल्याण की भावना से अभिप्रेत खण्डन-मण्डन के अभिप्राय को लेखक की सदाशयता के अनुकूल न आककर उसे एक निराशाजनक पुस्तक कह बैठे। अनेकश मतवादी लोगो ने उस पर राज्य द्वारा प्रतिबन्ध लगाये जाने के अत्यन्त घिनौने उपक्रम किये गये। उन लोगो ने उसके पन्नो को फाड-फाडकर होली जलाने की कुचेष्टाये की और न जाने इसके विरुद्ध किस किस ने कितना विषवमन किया। पर आखिर यह सब क्यो? निश्चय ही यह सब सत्यार्थ प्रकाश को ठीक से न समझने के कारण ही हुआ है। अत आवश्यकता इस बात की है कि इस ग्रन्थ को ठीक से समझा जावे। सत्यार्थ प्रकाश को समझने के लिए ग्रन्थकार के ग्रन्थ रचना के उद्देश्य को ठीक से समझने की आवश्यकता है। हमे उन परिस्थितियो एव कारणो की खोज करनी होगी कि जिनसे प्रेरित होकर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की गई।

सत्यार्थ प्रकाश क्यो लिखा गया?

गुरुवर विरजानन्द जी से दीक्षा लेने के पश्चात् जब महर्षि कार्यक्षेत्र मे अवतीर्ण हुए तो अपने क्रातिकारी विचारो से जगती को हिला दिया। सर्वत्र एक हडकम्प सा, एक भूकम्प एक अनोखी एव अद्भुत हलचल सी, क्राति सी चारो ओर मच गई। लोग आश्चर्य मे थे कि यह कौन है जो हलचल मचा रहा है। सुश्री सावित्री देवी के शब्दो मे—

> हुआ चमत्कृत विश्व अरे यह कौन वीरवर सन्यासी,
> जिसकी भीषण हुकारो से काप उठी मथुरा काशी।
> यह किसका गर्जन-तर्जन है कौन उगलता ज्वाला है?
> किसकी वाणी मे से निकली आज धधकती ज्वाला है?

महर्षि कभी यहां तो कभी वहा अपने क्रांतिकारी विचार दे रहे थे। लोग उनके विचारो से प्रभावित हो रहे थे और वे उन विचारों को स्थायित्व देना चाहते थे ताकि महर्षि दयानन्द की अनुपस्थिति मे उनके क्रातिकारी विचारो के बल पर कार्य को आगे बढा सकें। अत. प्रबुद्ध लोगो ने महर्षि दयानन्द को अपने विचारों को लिपिबद्ध करने का सुझाव दिया। दूसरी ओर महर्षि दयानन्द भी अपने प्रचार कार्य को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने के लिए एक संगठन बनाने की सोच रहे थे। प्रत्येक समाज अथवा सगठन के लिए किसी न किसी आधारभूत ग्रन्थ की आवश्यकता हुआ ही करती है, जिसमे उसके आदर्श, मन्तव्य, सिद्धात एव उद्देश्यादि की समुचित व्याख्या की गई हो। सत्यार्थ प्रकाश की रचना के पीछे एक उद्देश्य यह भी है। पर इसका जो मुख्य उद्देश्य है वह ग्रंथकार के अपने शब्दो मे इस प्रकार है। 'मेरा इस ग्रन्थ लिखने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य का अर्थप्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।" साथ मे यह भी कि "सब मतमतान्तरो की गुप्त व प्रकट बुरी बातो का प्रकाश कर विद्वान्-अविद्वान् सब, साधारण मनुष्यों के सामने रखना है कि जिससे सबसे सबका होकर परस्पर प्रेमी होकर एक सत्य मतस्थ होवें।"

महर्षि की मान्यता है कि "विद्वानो आप्तो का यही मुख्य काम है कि उपदेशो या लेख द्वारा सब मनुष्यो के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् स्वय अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहें।" अत स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द का इस पवित्र ग्रंथ की रचना का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य का निर्णय करना और उसके द्वारा मानवमात्र का हितसाधन था न कि किसी का मन दुखाना। इसी पवित्र उद्देश्य से प्रेरित होकर ही उन्होने अन्य मतमतान्तरो की निष्पक्ष समालोचना की है। अपनी अनुभूमिका मे वे स्पष्टतया लिखते हैं कि—"मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने मे नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है।"

फिर खण्डन क्यों किया?

किसी भी धर्म संशोधक के लिए खण्डन-मण्डन का कार्य, चाहे वह कितना ही अप्रिय एव अरुचिकर क्यो न हो, अवश्यमेव करणीय होता है। महर्षि ने अंतिम चारों खण्डनात्मक समुल्लासों की पृथक्-पृथक् अनुभूमिका लिखकर उन-उन मतो की समीक्षा के भविष्य मे अपने दृष्टिकोण तथा सौहार्द्र को सुस्पष्ट कर दिया है। वस्तुत इन मतो की आलोचना में निहित महर्षि की सदाशयता और पक्षपातशून्यता उनके निम्न कथन से प्रस्फुटित होती है जबकि वे लिखते हैं कि—"मेरे इस कर्म से यदि उपकार न मानें, तो विरोध भी न करें, क्योकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने मे नहीं, किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है।" दुख है कि महर्षि की इस स्पष्टोक्ति के रहते हुए भी सत्यार्थप्रकाश मे की गई आलोचना के आशय को लोग क्यो नही समझ पाये?

खण्डन या विचार स्वातन्त्र्य—

महर्षि दयानन्द की जिस सदाशयता भरी भावना को लोग खण्डन-मण्डन के नाम पर अंकित करने का दुःसाहस करते हैं, उसी को कुछ निष्पक्ष उदारमना महानुभावो ने खूब सराहा भी है। इस सम्बन्ध मे श्री जहूर बख्श हिन्दी कोविद के विचार उल्लेखनीय हैं। वे लिखते हैं कि—"कुछ लोग महर्षि के जिस गुण और उसके निष्काम को दोष समझते हैं, उसे ही मैं एक बडा आवश्यक गुण समझता हू। बालक मूलशकर की शिवरात्रि से सम्बद्ध घटना से लेकर ऋषि दयानन्द पर पुराण, कुरान, बाइबिल आदि की स्वतन्त्र आलोचना तक लोग विचार-स्वातन्त्र्य को अन्य धर्मों की ओर घृणात्मक दृष्टि का लाछन लगाते हैं, परन्तु उन्होने कब और कहा अन्य धर्मों पर घृणात्मक दृष्टि की है, मुझे तो इसका पता नही चलता? उन्होने यह तो कही लिखा कि अमुक मत बुरा और घृणा के योग्य है? इसलिए इस मत के अनुयायी उसे मानना छोड दें। उन्होने सत्यार्थप्रकाश मे अन्य मत सम्बन्धी ग्रन्थो की जो आलोचना की है, वह उनके विचार-स्वातन्त्र्य का सुन्दर उदाहरण है। स्मरण रखना चाहिए कि विचार स्वातन्त्र्य कोई भयकर वस्तु नही, इससे ससार मे युगान्तर उपस्थित होता है। वही ससार को उत्थान के शिखर पर ले जाता है। विचार स्वातन्त्र्य से घबराना कोरी कायरता है।" (देखें सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ ५९-६०) वस्तुत महर्षि दयानन्द का खण्डन किसी मत विशेष के प्रति विरोध का सूचक न होकर अज्ञान, अधर्म और असत्य की परिसमाप्ति के लिए था।

(शेष पेज ६ पर)

सत्यार्थ प्रकाश

(पेज ५ का शेष)

सत्यार्थ प्रकाश की विशेषता—

सत्यार्थप्रकाश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द के विचारो के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व का भी प्रकाशक है। "स्टाइल इज द मैन्स" के अनुसार शैली लेखक के व्यक्तित्व की प्रकाशिक होती है। किसी लेखक की रचना या कृति को पढ़कर उसके व्यक्तित्व का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

वैसे शैली पर विषय और व्यक्ति दोनों का ही प्रभाव पड़ता है। इस लिए शैली भी कभी विषय-प्रधान और कभी व्यक्ति-प्रधान हो उठती है। फिर भी शैली विषय से चाहे कितनी ही प्रभावित क्यो न हो, उस पर लेखक के व्यक्तित्व का प्रभाव पड़े बिना नही रहता। अपितु यू कहना चाहिये कि उसका व्यक्तित्व स्वय को प्रकट करता हुआ, एक प्रकार से गरजता हुआ सा चलता है।

महर्षि दयानन्द वैचारिक क्राति के अग्रदूत थे और सत्यार्थप्रकाश उनके विचारों का प्रकाशमान पुज है। यह उनकी दार्शनिक अभिव्यक्ति तथा ज्ञानकोष है। इसी कारण यह ग्रन्थ भी वैचारिक क्राति का अग्रदूत माना जाता है। वैचारिक क्राति के अग्रदूत इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि इसमे विश्व भर के सभी प्रमुख मतमतान्तरों के मान्य सिद्धातो को एक ही स्थान पर एकत्रित कर दिया गया है। अत: इसे विश्वधर्म कोश कहे तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी, कहते हैं कि सयुक्त राज्य अमेरिका मे कभी एक ऐसे मन्दिर के निर्माण की योजना बनी थी कि जिसमे विश्व भर के प्राय सभी प्रमुख मतो एवं उनकी शिक्षाओ का एक ही स्थल पर सग्रह बना हो। दुर्भाग्य से वह मन्दिर नही बन सका परन्तु देव दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के रूप मे वह दिव्य मन्दिर हम को प्रदान कर दिया है।

सत्यार्थप्रकाश की एक विशेषता यह है कि इसमे सत्यासत्य के निर्णय हेतु निष्पक्ष भाव से मतमतातरो की जो आलोचना की गई है, वह जहा सुधी पाठकों को सत्यासत्य के निर्णय करने मे सहायक सिद्ध हुई है, वहा उन मतमतातरो के लिए भी बड़ी ही लाभदायक सिद्ध हुई है। ये लोग सत्यार्थप्रकाश मे की गई आलोचनाओं के कारण अपने सिद्धातो, मन्तव्यो एव मान्यताओं की नवीन व्याख्यायें करने मे लगे हैं एव यथासम्भव उन्हे बुद्धिसम्मत एव तर्कसगत बनाने का प्रयत्न करने लगे है। जैसे आकाशवाणी से उद्घोषित स्टैंडर्ड टाईम से सभी लोग अपनी-अपनी घड़ियो की सुईयो का मिलान कर समय के दोषों को दूर करते हैं, ठीक वैसे ही मतवादी लोग भी सत्यार्थप्रकाश मे उद्घोषित सत्य सनातन सिद्धातो से अपने-अपने सिद्धातो का मिलान कर उनके दोष दूर करने लगे हैं। क्या यह छोटी बात है? जिन्हे इतिहास का ज्ञान है वे इस तथ्य को अवश्य स्वीकार करेंगे कि गत शताब्दि मे अन्धविश्वास, पाखण्ड, एव कुरीतियो का कूड़ा-करकट जितना इस एक ग्रन्थ के अध्ययन से दूर हुआ है, उतना किसी दूसरे ग्रन्थ से नहीं। गली सड़ी अवैज्ञानिक मान्यताओ तथा रूढिवादी निरर्थक परम्पराओ तथा कुप्रथाओं मे एकदम परिवर्तन लाने का नाम ही क्रान्ति है और यह कार्य सत्यार्थप्रकाश ने बड़ी सुन्दरता से किया है। वस्तुत विगत शताब्दि मे वैचारिक, धार्मिक, सास्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि विभिन्न दृष्टिकोणो मे जो व्यापक परिवर्तन हुए हैं, उन सबके पीछे सत्यार्थप्रकाश मे उल्लिखित क्रातिकारी भाव ही कार्य करते दिखाई देते हैं।

अन्त में हम यही कहेगे कि क्रातिकारी सामाजिक परिवर्तन के लिए जो महर्षि दयानन्द अपने जीवन काल मे दिशा-निर्देश दे गये थे, उसे उनका क्रांतिदूत सत्यार्थप्रकाश एक शताब्दि से भी अधिक काल से बड़ी सफलतापूर्वक सम्पादित कर रहा है और उसी की सुखद छाया में आज मान्यताए बदल रही हैं, परिभाषायें बदल रही हैं, व्याख्यायें बदल रही हैं। सत्य है—

ऋषिराज तेज तेरा चहु ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर ससार आ रहा है ॥

सत्यार्थप्रकाश के इस यशस्वी प्रणेता को हमारा शतशत वन्दन।

वैदिक प्रवक्ता आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद पिन २४४०३२

'ऐसा हो गणतंत्र हमारा'

—राधे श्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

सब आशा, अभिलाषाओं के,
भारत मे फिर खिले सुमन।
राष्ट्रवाद की प्रखर भावना—
करें पुन आन्दोलित अभिमन।
वैदिक पद का अनुगामी हो,
नेतृवर्ग भारत का सारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा ॥

वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था,
पुन. यहा स्थापित हो।
छुआ छूत से जाति-पाति से—
मनुज नहीं सतापित हो।
गूज उठे सारे भारत मे—
वैदिक साम्यवाद का नारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा ॥

राजनीति से स्वार्थ हटे सब,
नैतिकवान बने नेतागण।
क्षत-विक्षत, अन्याय-अनय हो,
शान्ति समन्वित हो कण-कण।
विश्व गुरु बन गौरवमण्डित—
हो अपना भारत यह प्यारा।
ऐसा हो गणतंत्र हमारा ॥

शौर्य शाति—साहस से पूरित,
हो, बलिदानी युवक हमारे।
वीर-जयी सेनाएं होवे—
यज्ञ पुन हो द्वारे-द्वारे।
मनसा वाचा तथा कर्म से—
सत्य निष्ठ हो जन जन न्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा ॥

आदरणीय पं. गोपदेव शास्त्री-सिकन्दराबाद को १९९५ का वेद वेदांग पुरस्कार एवं पं. आशानन्द जी (दिल्ली) व पं. देशराज जी आर्य (मेरठ) को वेदोपदेशक पुरस्कार देने की घोषणा

आर्य समाज सांताक्रुज ने वर्ष १९९५ के आर्य जगत के सर्वोच्च वेद वेदांग पुरस्कार श्री प० गोपदेव शास्त्री—सिकन्दराबाद व वेदोपदेशक पुरस्कार सर्व श्री प० आशानन्द जी भजनोपदेशक (दिल्ली) व श्री प० देशराज जी आर्य भजनोपदेशक (मेरठ) को देने की घोषणा की है। वेद वेदाग पुरस्कार से प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान को पुरस्कृत किया जाता है, जिन्होने आजीवन वेद वेदांगों पर अनुसधान एव महर्षि दयानन्द के सिद्धातो का प्रचार-प्रसार किया हो। पुरस्कृत विद्वान को २५००१ रुपये रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र तथा शाल व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जाता है।

वेदोपदेशक पुरस्कार आर्य समाज के ऐसे उपदेशक, भजनोपदेशक तथा कार्य कर्त्ता को दिया जाता है, जिन्होंने आजीवन समर्पित भाव से आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धातों के प्रसार का कार्य किया हो। पुरस्कृत विद्वान को १५,००१ रुपए अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी एव शाल तथा श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जाता है।

उपरोक्त तीनों विद्वानो ने आजीवन वेद वेदागों के अनुसधान कार्य के साथ आर्य समाज के प्रचार व प्रसार का कार्य करते हुए जीवन समर्पित किया है। इन विद्वानो को दिनांक २९ जनवरी १९९५ को आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) के ५१ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपरोक्त पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

सगीत शर्मा, महामन्त्री

श्री सूर्यदेवजी का अभिनन्दन

(पेज १ का शेष)

डा० रमेश चन्द्र मिश्र, नेहरू विहार से श्री चन्द्र आर्य जी।

इस सभा मे डा० महेश विद्यालंकार ने अपने विचार प्रकट करते हुए गुरुकुल की वर्तमान अवस्था का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के क्रिया कलाप पर प्रकाश डाला। गुरुकुल से वेद दयानन्द श्रद्धानन्द व गुरुकुलीय वातावरण समाप्त हो गया है जिसे सुधारने की आवश्यकता है। प्रत्येक अधिकारी अपना आत्मा निरीक्षण करे।

डा० शिवकुमार शास्त्री ने गुरुकुल, डी ए वी. संस्था की पूर्ववर्ती स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि उस समय स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य समाज, वेद दयानन्द को जीवित रखने के लिए गुरुकुल की स्थापना की, आज उसमे ये तीनो ही गायब हो गये हैं।

डा० धर्मपाल ने बताया कि गुरुकुल की स्थापना १८९८ मे मुंशी अमनसिंह द्वारा की गई विशाल भूमि पर हुई। मुझ से पूर्व के पदाधिकारी गुरुकुल की भूमि बेच गये उस पैसे का पता नही कहा चला गया। जीर्ण क्षीर्ण स्थिति मे हमें गुरुकुल मिला है। उसकी स्थिति अब सुधरी है।

श्री सोमनाथ मरवाह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उस स्थिति का वर्णन किया जिसमें सूर्यदेव जी का कुलाधिपति बनना सम्भव हुआ। उन्होंने कहा कि पंजाब और दिल्ली की सभाओं का गठबन्धन होने पर ही यह निर्वाचन सम्भव हुआ।

श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि मुझे जो स्थान मिला है उसका श्रेय दिल्ली की आर्य समाजों को प्राप्त होगा क्योंकि उनके सहयोग के बिना मैं कुछ भी नही कर सकता। मैं विश्वास दिलाता हू मैं प्रयत्न करूगा कि गुरुकुल का वातावरण गुरुकुलीय रहे। वहा वेद का प्रतिस्थापन हो, आर्य समाज के अनुरूप वहां कार्य शैली हो। स्वामी दयानन्द व श्रद्धानन्द की भावना फलीभूत हो। यदि ऐसा करने मे हमे सफलता नही मिली तो मैं वहा से पद छोड कर चला आऊगा। आपने जो मेरा स्वागत किया हैं मैं आपकी भावना के अनुरूप कार्य करने मे सफल होऊं मैं आप सबका आभारी हूं। डा० धर्मपाल ने सभा की ओर से सबका धन्यवाद किया। सभा का संचालन श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री आर्य समाज हनुमान रोड ने सुचारू रूप से किया।

आर्य समाज हनुमान रोड की ओर से सभी अभ्यागतो के लिए प्रीति भोज की व्यवस्था की गई।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 26 27-1-1995 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्य सन्देश" साप्ताहिक
२९ जनवरी १९९५

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का अनुकरणीय स्वागत

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (पूर्व श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित) का आर्य समाज वेद मन्दिर रोहिणी मे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे स्वागत सभा का आयोजन किया गया। उन्हे ११ हजार रुपया भेंट किया गया। स्वामी जी महाराज ने अनेक पुस्तको की रचना की है जिसमे 'सत्यार्थ प्रकाश भास्कर' तथा आर्यों का आदि देश आदि प्रसिद्ध पुस्तके विशेष उल्लेखनीय हैं। इस सभा मे विशिष्ट वक्ता के रूप मे श्री डा०महेश विद्यालकार श्री सूर्यदेव कुलाधिपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय व प्रधान दिल्ली आ० प्र० सभा डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय व मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री साहिब सिह वर्मा, मन्त्री दिल्ली सरकार, स्थानीय विधायक श्री गौरी शकर भारद्वाज आदि उपस्थित थे।

दूरदर्शन वैदिक विवाह की व्याख्या प्रसारित

भुवनेश्वर दूरदर्शन मे ५ जनवरी को उडिसा की आर्य विदुषी श्रीमती शन्नोदेवी वैदिक विवाह की व्याख्या प्रस्तुत की थी। आर्य समाज मन्दिर मे उन्ही के पौरहित्य मे अनुष्ठित एक विवाह सस्कार का कुछ दृश्य भी इस प्रसारण में सम्मिलित किया गया था। श्रीमती शन्नो देवी का वेदपाठ दिवगत राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह का प्रार्थना सप्ताह में भी कई बार दूरदर्शन में प्रसारित हुआ।

वीरेन्द्र, प्रचार मन्त्री
आर्य समाज भुवनेश्वर

डा. स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती का निधन

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डा० स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती का स्वर्गवास दिनाक २०-१-९५ को अमेठी कोर्मा जि० सुलतानपुर (उ०प्र०) में हो गया। स्वामी जी इलाहाबाद विश्व विद्यालय मे विज्ञान संकाय के अध्यक्ष थे। वैदिक साहित्य पर उनका पाण्डित्य पूर्ण अधिकार था। उन्होंने अंग्रेजी में वेदों का भाष्य किया। अनेक पुस्तको के लेखक थे उनको अनेको पुरस्कार प्राप्त हुए। श्री प० ग गा प्रसाद जी उपाध्याय पूर्व मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सुपुत्र थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित किया था। उनके दिवंगत होने पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सम्वेदना प्रकट करती है तथा प्रभु से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को शान्ति व सदगति प्राप्त हो। ऐसे विद्वान सन्यासी के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : —३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४/—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक १३ रविवार, ५ फरवरी १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द : १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०५१

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

स्व० के० एल० महता की पुण्य तिथि पर आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद में विशेष आयोजन

कर्मवीर श्री के० एल० महता की द्वितीय पुण्य तिथि पर फरीदाबाद की समस्त आर्य समाजो व शिक्षण संस्थाओ की ओर से विशेष आयोजन किया गया। श्री महता ने अपने जीवन मे आर्य समाज की अनथक सेवा की। अनेको शिक्षण सस्थायें स्थापित की। आर्य समाज को आज ऐसे ही कर्मवीरो की आवश्यकता है। उसके समस्त उत्तरदायित्व उनकी पत्नि डा० विमला महता ने सम्भाल रखे हैं। इसी प्रसग मे २७-१-९५ से २९-१-९५ तक आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद में समारोह आयोजित किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के द्वारा फरीदाबाद मे वैदिक प्रचार के आयोजन मे श्री स्वामी स्वरूपानन्द जीव सभा के प्रधान ने भाग लिया। नगरकीर्तन मे स्वामी जी सम्मिलित हुए। २७-१-९५ से यह कार्यक्रम नगरकीर्तन के साथ आरम्भ हुआ। २९-१-९५ को इसका समापन हुआ। श्री सूर्यदेव जी व स्वामी ओमानन्द, श्री प्रोफेसर शेरसिह, श्री ए० सी० चोधरी, उद्योग मन्त्री हरियाणा सरकार आदि महानुभाव इस कार्यक्रम मे विशेष रूप से उपस्थित हुए। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पुरस्कार वितरण श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह

दिनांक २४-२-९५ को महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह समय २ बजे दोपहर से ५ बजे सांयकाल तक दयानन्द गो-संवर्द्धन केन्द्र गाजीपुर (निकट पटपड़गंज बस टर्मिनल) में मनाया जायेगा।

समारोह की अध्यक्षता श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा करेंगे।

ऋषि बोधोत्सव

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिनांक २७-२-९५ को लाल किला मैदान में प्रातः ८ बजे से ४ बजे तक ऋषि बोधोत्सव मनाया जायेगा।

सभी आर्य समाजों तथा आर्य जनों से आग्रह है कि दोनों स्थानों पर अधिक से अधिक संख्या मे सपरिवार पधारें।

श्री ओमप्रकाश भारती का निधन

श्री महाशय धर्मपाल जी प्रधान दिल्ली केन्द्रीय आर्य सभा के बहनोई श्री ओम प्रकाश भारती के निधन पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा शोक सम्वेदना प्रकट करती है तथा उनकी आत्मा की सद्गति व शान्ति के लिए एव दिवगत भारती जी के परिवार को धैर्य प्रदान करे, यह ईश्वर से प्रार्थना करती है।

सूर्यदेव

ऋषि दयानन्द वचनामृत

—जब मेरा देह छूटे तो न उसको गाडने, न जल मे बहाने न जगल मे फेकने दें केवल चन्दन की चिता बनावें और जो वह सम्भव न हो तो दो मन चन्दन चार मन घी पाव सेर कपूर ढाई सेर अगर तगर और दस मन काष्ठ लेकर वेदानुकूल जैसे कि सस्कार विधि मे लिखा है वेदी बनाकर तद्वत वेदमन्त्रो से होम करके भस्म करें इससे भिन्न कुछ भी वेद विरुद्ध क्रिया न करें।

—यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत मे पाये जाते हैं, (परन्तु यदि) वे पक्षपात छोडकर सर्वतन्त्र सिद्धात को स्वीकार करे जो-जो बाते सबके अनुकूल है और सब मे सत्य हैं उनको ग्रहण करें और जो बातें एक-दूसरे से विरुद्ध पाई जाती है उनको त्यागकर, परस्पर प्रीति मे वर्तें वर्तावे तो जगत् का पूर्ण हित हो जावेगा। विद्वानो के विरोध ही से अविद्वानो मे विरोध बढकर विविध दु खो की वृद्धि और सुखो की हानि होती है। यह हानि स्वार्थी मनुष्यो को प्यारी है, परन्तु इसने सर्वसाधारण को दु ख सागर मे डुबो दिया।

- यद्यपि मैं आर्यवर्त्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हू तथापि जैसे इसके मत-मतान्तरो की झूठी बातो का पक्षपात किए बिना यथातथ्य प्रकाश करता हू वैसा ही बर्ताव दूसरे देश के मत वालो के साथ करता हू। मेरा मनुष्यो की उन्नति का व्यवहार जैसा स्वदेशियो के साथ है वैसा ही विदेशियो के साथ है। सब सुजनो को इसी प्रकार वर्त्तना योग्य है।

—यदि मैं किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के मतवादी अपने मत का मण्डन और प्रचार करते है तथा दूसरे मतो की निन्दा और हानि करते है और प्रचार करते हैं और उनका प्रचार बन्द करवा देते हैं, वैसा ही मै भी करता हू। परन्तु ऐसा करना अमानुषी कर्म है। जैसे बलवान् पशु निर्बलो को दु ख देते और मार डालते हैं ऐसा ही काम यदि मनुष्य तन पा कर भी किया तो यह मानुषी स्वभाव से विपरीत है, पशुओ के सदृश है। जो बलवान् होकर निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहा जा सकता है और जो स्वार्थ वश पर हानि पर तुला रहता है वह तो मानो पशुओ का भी बडा बन्धु है।

—जिस पुरुष मे जिस वर्ण के गुण कर्म हो उनको उसी वर्ण का अधिकार देना चाहिए ऐसी व्यवस्था रखने से सब मनुष्य उन्नतिशील हो जाते हैं।

—जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं वैसे ही वेद भी सब मनुष्यो के लिए प्रकाशित किए है।

—स्त्रियो को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिए। भारत की स्त्रियो मे भूषणरूप गार्गी आदि देवियां शास्त्रो को पढकर पूरी विदुषी हुई। देखो आर्यावर्त के राजपुरुषो की स्त्रियां धनुर्वेद, युद्ध विद्या अच्छे प्रकार जानती थी। यदि ऐसा न होता तो कैकेयी आदि स्त्रियां दशरथादि राजाओ के साथ सग्राम मे कैसे जा सकती थी ? स्त्रियो को व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित और शिल्प विद्या अवश्य सीखनी चाहिए।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक आचार्य सुधाकर एम०ए०

आखिर हम कहां जा रहे हैं?

—महाशय धर्मपाल वानप्रस्थी

आर्यसमाज का एक निष्ठावान अपना सेवक होने के नाते आज अपने तमाम आर्य समाजी भाइयो से कुछ अपने मन की बात कहने का साहस कर रहा हू।

अपने सत्तर वर्ष से अधिक के इस जीवन मे मुझे आर्य समाज के विभिन्न रूपो को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। एक जमाना वह भी था, जबकि

हर व्यक्ति को, अपने को आर्यसमाजी कहलाने मे गर्व महसूस होता था।

समाज के हर क्षेत्र मे प्रत्येक आर्यसमाजी को इज्जत की निगाह से देखा जाता था।

आर्य समाजी होने का अर्थ एक ऐसा सच्चा चरित्रवान और ईमानदार व्यक्ति समझा जाता था, जिसकी गवाही को हर अदालत में विशेष महत्व दिया जाता था।

हर वर्ग और हर तबके के छोटे-बड़े सभी लोग एक सच्चे आर्यसमाजी के सम्पर्क मे आने और उसके आशीर्वाद पाने के लिये लालायित रहते थे।

इस सबका मुख्य कारण यह था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की उच्च शिक्षाओ और महान् आदर्शो मे पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा रखने वाले, उनके सच्चे अनुयायी ही आर्य समाज के कर्णधार थे।

आर्य समाज के समस्त नियमों का पालन पूरी निष्ठा से किया जाता था।

आर्य समाज के महान् सिद्धातो का प्रचार नियमित रूप से किया जाता था।

हर आर्यसमाज मे सप्ताह मे कम-से-कम एक दिन सन्ध्या, हवन तथा सत्सग का कार्यक्रम नियमित रूप से चलता था, जिसमे समाज के लगभग सभी सदस्य सम्मिलित होते थे।

प्रत्येक आर्य समाज की ओर मे हर वर्ष नियमित रूप से वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जाता था, जिसमे पहले दिन होने वाले नगरकीर्तन आयोजन मे सारा नगर ओ३म्मय हो जाता था। नगर मे अनगिनत ओ३म् पताकायें फहरा उठती थी तथा स्थान-स्थान पर स्वागतद्वार निर्मित होते थे। भजनीक तथा प्रचारक मण्डल के सदस्य पूरे नगर मे ओ३म् का शखनाद कर नागरिको को समारोह मे भाग लेने के लिये आमन्त्रित करते थे।

आर्य समाज की सभाओं मे श्रोताओ की भीड कई बार तो नियन्त्रण मे बाहर हो जाती थी।

आर्यसमाज मे ऐसे-ऐसे विद्वान और वक्ता थे कि वे किसी के भी शास्त्रार्थ के चैलेंज को स्वीकार करने के लिये हर समय तत्पर रहते थे तथा अपने ज्ञान से सदा ही आर्यपताका को ऊचा उठाये रहते थे।

आर्य समाज का सगठन इतना मजबूत, शक्तिशाली, अनुशासित और मर्यादित था कि अग्रेजी सरकार तो भयभीत थी ही, अन्य सम्प्रदायो के लोग भी डरते थे।

अपनी उसी सगठित शक्ति की बदौलत ही आर्यसमाज ने १९३९ मे निजाम हैदराबाद को घुटने टेकने के लिये विवश कर दिया। यह वह धर्मयुद्ध था, जिसमे समस्त भारत के ही नही, विश्व के अनेक राष्ट्रो के आर्य युवको ने भाग लिया था और कारागार की कठोर यातनायें सहन की थी।

प्रत्येक आर्यसमाजी सच्चा देशभक्त था। यही कारण था कि अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा घोषित प्रत्येक स्वतन्त्रता सघर्ष मे असख्य आर्य युवको ने भाग लिया और बडे से बडा बलिदान दिया। यहा तक कि क्रातिकारियो का नेतृत्व करने वाले श्री प० रामप्रसाद बिस्मिल तथा सरदार भगत सिंह जैसे कट्टर आर्यसमाजी सेनानी थे।

हर आर्य समाज अपने पूरे परिवार को आर्यसमाजी बनाने का सतत प्रयत्न करता था।

भली प्रकार हिन्दी-सस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी सध्या-हवन आदि के मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण कर लेते थे।

अतत १९४७ आया। वर्षो के निरन्तर सघर्ष और बेशुमार कुर्बानियो के परिणाम स्वरूप देश आजाद हुआ, परन्तु भारत विभाजन के साथ। और उस विभाजन का जो दुखद परिणाम पश्चिमी पजाब, सरहद, बिलोचिस्तान तथा सिन्ध प्रान्त के हिन्दुओ, सिखों तथा पूर्वी बगाल के निवासियों को भोगना पडा, उसको याद कर आज भी रूह काप उठती है। उसकी भयानकता को केवल वही समझ सकता है, जिसने अपनी आखो से वह दृश्य देखा हो। मैं स्वयं उसका शिकार हुआ हू, इसलिये वह सब-कुछ जानता हू, जो आज बहुत कम लोग जानते है। विशेष रूप से पश्चिमी पाकिस्तान के धर्मान्ध मुसलमान इतनी बर्बरता पर उतर आये थे, जिसकी मिसाल इतिहास मे ढूढे नही मिलती। हमारे छोटे-छोटे मासूम बच्चो को ऊपर उछाल कर नेजो पर तोला जा रहा था। सुन्दर-सुन्दर किशोरियों और जवान लडकियो को अपनी हवस का शिकार बनाने के लिये भेड़-बकरियों की तरह खदेड़ कर ले जाया जाता था। हमारा सारा मालो-जर लूटकर मकानो को आग के सुपुर्द किया जा रहा था। वहा से भाग कर भारत आने वाले बेबस लोगों की पूरी की पूरी गाडी काटी जा रही थी। एक सिख के सिर की कीमत केवल एक सौ रुपये निश्चित थी। (कितने दुर्भाग्य की बात है कि आज उसी सिख कौम के कुछ भ्रमित नौजवान उन्ही नरपिशाच पाकिस्तानियों की शह पर भारत मे "खालिस्तान" बनाने का षड्यन्त्र रच रहे है और आतकवादी हरकतो में सलग्न हैं) इतना ही नही हिन्दू-सिख स्त्रियो को जबरन नगा कर उनके स्तनो पर "पाकिस्तान-जिन्दाबाद" लिखने की जलील हरकत भी आम थी।

उन हालात मे हम-सबके मुह से केवल यही आवाज निकलती थी कि हे मेरे दयालु प्रभु, तू हमे जिन्दा केवल हिन्दुस्तान पहुचा दे। हमे बिस्तर-चारपाई की आवश्यकता नही है, हम जमीन पर ही सो लेंगे। रूखी-सूखी खाकर ही तेरा गुणगान करते रहेगे। किन्तु पिछले इन ४७ वर्षों के इतिहास पर नजर डाले, तो ज्ञात होता है, कि हम वह सब-कुछ भूल गये और वही विपत्तिग्रस्त लोग आज आसमान पर उड रहे है, धन-ऐश्वर्य के पीछे दीवाने हो रहे हैं। उन्हे न अब धर्म का पता है, न कर्म का।

१९४७ के बाद.—

१९४७ के बाद धीरे-धीरे स्थिति मे परिवर्तन आता गया। लोगो की विचारधारा मे अन्तर आता गया। समय के साथ-साथ आर्य समाजियो की रीति-नीति और कार्यप्रणाली भी बदलती गई। स्वार्थ की भावनायें तथा महत्वाकाक्षायें बलवती होती गई। सेवा, व्यापार हो गई। आस्था के साथ शर्तें जुड गई। देश की आबादी निरन्तर बढती रही, किन्तु आर्य समाजियो की सख्या घटती गई। कारण कि पुराने आर्य समाजी वृद्ध होते गये, किन्तु अन्त समय तक कुर्सी से चिपके रहे। उन्होने दूसरों, विशेषकर नौजवानो को आगे आने का अवसर ही नही दिया। परिणामस्वरूप कुछ उत्साही, किन्तु महत्वाकाक्षी लोगो ने श्रद्धालु जनता से चन्दा माग-माग कर नयी-नयी आर्यसमाजें बनाकर खडी कर दी और खुद ही उनके आजीवन पदाधिकारी, अर्थात्—प्रधान, मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष बनकर आसन जमाकर बैठ गये, उन नये-नये मुसलमानों की तरह जो अपनी डेढ ईट की मस्जिद बनाकर खडी ना कर लेते है, परन्तु वहा होते है—केवल मुअज्जन और इमाम, नमाजी तो यदा कदा ही नजर आते है। इस प्रवृत्ति से देश मे आर्य समाजो की सख्या मे तो निरन्तर वृद्धि हो रही है, परन्तु उनके सदस्यो की सख्या नगण्य ही नजर आती है। ऐसे मे प्रचार-प्रसार की तो आशा करना ही व्यर्थ है।

कही भी कोई ठोस काम होता दिखाई नही देता है। जो भी हो रहा है, उसके पीछे सच्ची निष्ठा, श्रद्धा और आस्था का अभाव ही दृष्टिगोचर होता है। उत्साह तो बीते दिनो की बात हो चुका है। यही कारण है कि आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे जनसाधारण ने दिलचस्पी लेना कम कर दिया है। यदि ऐसा नही होता तो चालीस आर्यसमाजो के सगठन की ओर से आयोजित विशेष समारोह मे भाग लेने वालो की सख्या केवल सौ सवा सौ तक सीमित न रहती। जबकि उनके मान्य पदाधिकारियो की सख्या भी उससे कई गुना अधिक होगी। उस पर तुर्रा यह कि चालीस आर्यसमाजो के उस विशाल आयोजन मे ढग के चार झण्डे भी नही थे।

हमारे सबसे बडे आर्य नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के दुःखद निधन पर, लगभग एक करोड़ की आबादी वाली, भारत की राजधानी महानगरी दिल्ली के निवासियो की उदासीनता तथा हृदय हीनता की भावना देखकर तो हृदय टुकडे टुकडे हो गया। साफ जाहिर था,

(शेष पेज ५ पर)

जातिवाद पर प्रहार करो

आचार्य सुधाकर एम० ए०

जातिवाद का विष फिर से सिर उठा रहा है। आज जातियो के नाम राजनैतिक रोटिया सेकी जा रही है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक तथा आर्थिक सस्थाओं पर अधिकार किये जा रहे है। अतीत काल मे इस जातिवाद ने भारत को कितनी हानि पहुचाई थी उसका दर्द आज किसी को नही है हमारी पराधीनता का कारण जातियो मे बटा भारत था। आज राजनैतिक नेता अपने स्वार्थ मे अन्धे हो गये हैं कि उन्होने अपनी-अपनी जातियो को सगठित करके सत्ता तक पहुचने की सीढिया बना ली हैं। ऐसे लोगो को देशद्रोही शब्द इनकी शख्सियत को बताने के लिये हल्का शब्द है और कोई कठोर शब्द ऐसा नही मिल रहा है जो इन नीच कमीन लोगो पर उपयुक्त बैठ सके। विश्वनाथ प्रताप सिह, मुलायम सिह, लालू प्रसाद सीताराम केसरी आदि ऐसे नाम हैं जिन्हे आने वाली सन्तानें तथा इतिहास कभी माफ नही करेगा, जैसे जय चन्द, मीरजाफर, अर्जुन राठौर, आदि को छोटे से छोटा बच्चा भी गद्दार कह कर पुकारता है वैसे ही इन लोगो का नाम भी अत्यन्त घृणा के साथ लिया जायेगा।

आर्य समाज ने इस जातिवाद के भूत के मारने का प्रयत्न किया किन्तु अफसोस है कि आर्य समाज के सदस्य भी बडे अहकार के साथ अपने नाम के आगे जाति सूचक शब्द लगाने मे गर्व का अनुभव करते हैं। हमे शर्म आनी चाहिये कि महर्षि दयानन्द ने अत्यन्त कठोर शब्दो मे इसकी निन्दा की है। इतिहास का अवलोकन करने पर इस जातिवाद की, भाषावाद की प्रातवाद की जितनी निन्दा की जाय कम है।

भारतीय क्षितिज पर आर्य समाज का सस्थापन एक क्रातिकारी कदम था वास्तव मे हम भारत के इतिहास के प्रति इतने जागरूक न थे न हैं। इसका कारण की शताब्दियो की पराधीनता तथा एक ऐसे वातावरण का निर्माण होना जिसके कारण भारतीयो की निष्ठा का अपने राष्ट्र के प्रति न होना था और न अब है। केवल जातियो के साथ निष्ठा जुडी है एक बात आप कह सकते हैं कि भारत पर जब भी किसी विदेशी ने आक्रमण किया तो कोई न कोई एक व्यक्ति उसका प्रतिरोध करने के लिये उठ खडा हुआ। किन्तु इसका प्रतिवाद भी किया जा सकता है भारत पर सबसे पहला आक्रमणकारी सिकन्दर था, यदि उसका विरोध करने के लिये पौरुष उठ खडा हुआ तो आम्भी तक्षशिला के अधिपति ने सिकन्दर का साथ दिया। इसके साथ ही पौरुष ने पर्वतीय राजाओ से सिकन्दर के विरुद्ध सगठित होकर सामना करने का आह्वान किया तो एक भी राजा पौरुष का साथ देने को तैयार नही हुआ।

दूसरा आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम ने किया। उस समय सिन्ध पर दाहर का शासन था। दाहर के विरोध मे सिन्ध के बौद्ध और वहा के राजपूत विशेष रूप से जाट जागीरदार कासिम से मिल गये उसकी पराजय का मुख्य कारण बने। मुसलमानो का यह पहला आक्रमण था। यद्यपि उनकी उस समय कोई बहुत बडी शक्ति न थी किन्तु आपसी फूट के कारण पहली बार मे ही मुसलमानो को भारत भूमि पर अपने पैर जमाने का अवसर मिल गया। कासिम ने सिन्ध को खूब लूटा। सम्पन्न प्रदेश होने के कारण सिन्ध से अरबो रु० की सम्पत्ति लूट कर ले गया। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप मुसलमानो को यह पता चल गया कि भारतीय अपने राष्ट्र के प्रति विशेष वफादारी नही रखते। इसलिये मुसलमानो को यह सोचने का अवसर मिल गया कि भारत पर आक्रमण करने पर भारत के ही लोग उनका मुकाबला नही करेंगे, बल्कि आक्रमणकारी की ओर से प्रलोभन देने पर उसका साथ देंगे। इस बात को आधार बनाकर मुसलमानो ने कई आक्रमण किये। गजनबी का आक्रमण होने पर पजाब का धर्मपाल अकेला ही लडता रहा। पजाब की कई जातियो ने धर्मपाल का विरोध किया तथा गजनवी का साथ दिया, परिणामस्वरूप राजा की पराजय हुई और छोटे से राज्य का अधिपति सुबुक्तगीन पजाब से चौथ वसूल करता रहा। धर्मपाल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र आनन्दपाल जब पजाब का राजा बना तो उसने चौथ देनी बन्द कर दी। उस समय गजनबी का शासक महमूद था उसने पुन चौथ वसूलने के लिये पजाब पर आक्रमण किया उस समय भी भारत की फूट सामने दिखाई दी। आनन्दपाल की पराजय हुई महमूद ने पजाब को ही नही लूटा बल्कि राजस्थान-मध्य भारत व गुजरात को भी लूटा, राजस्थान लुटा तो मध्य भारत ने साथ नही मध्य भारत लुटा तो गुजरात ने साथ नही दिया। गुजरात लुटा तो सिन्ध ने साथ नही दिया। मनमानी लूट करके महमूद अपार धन सम्पत्ति लूट कर अपने साथ ले गया, साथ मे हजारों नौजवान लडकियो को लडको को गुलाम बना कर ले गया। भारत के अन्य हिस्सो के कानो पर जू तक भी न रेंगी।

गजनबी के बाद गौर प्रदेश अफगानिस्तान का छोटा-सा राज्य था उसने भी सुना कि भारत के निवासियो मे जातीयता के आधार पर फूट है तथा अपार धन सम्पत्ति है। लूटने का अच्छा अवसर है उस आक्रमण कर दिया उसने समय दिल्ली पर पृथ्वी राज का शासन था। गौरी पजाब को व राजस्थान को लूटता हुआ, हरियाणा तक पहुच गया। कन्नौज के राजा जयचन्द ने उसे सहायता का वचन दिया। उसने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया, और पृथ्वीराज को परास्त कर पजाब व राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली पर अपना अधिपत्य जमा लिया। पहली बार मुसलमान भारत का शासक बन बैठा। वह कुछ दिन राज्य करके वापिस जाने लगा तो अपने गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को शासन सौप गया। ऐबक ने गुजरात, मध्य भारत पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार भारत मुसलमानो के अधीन होता चला गया।

इससे पता चलता है कि हिन्दुओ मे आपसी फूट तो थी ही साथ ही विलासिता ने इन्हे युद्ध की कला से भी विमुख कर दिया था। राष्ट्र प्रेम की बात भी उस समय किसी के मन मे नही थी। आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द की दृष्टि पहली बार इस ओर गई।

महर्षि दयानन्द की दूर दृष्टि

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश की रचना की उसमे अपनी भूलो का वर्णन किया तथा अपने प्राचीन इतिहास को सामने रखकर यह दर्शाने का प्रयत्न किया कि भारत जातियो मे बटा देश नही है। यह एक विशाल राष्ट्र है। कश्मीर से कन्या कुमारी तक पेशावर से ढाका तक यह एक है। हमने अपनी अज्ञानता के कारण इसे टुकड़ो मे बाट रखा है। यदि हम इसे समग्र रूप मे नही देखेंगे तो भारत का मानचित्र अलग-अलग हिस्सो मे बट जायेगा, इसलिये सबसे पहली आवश्यकता एक राष्ट्र के रूप मे समझने की है। आजादी से पूर्व भी हम सब यद्यपि मिलकर सघर्ष कर रहे थे किन्तु उस समय भी पजाबी, बगाली मद्रासी, मराठी, आदि का स्वर अलग अलग था। महर्षि दयानन्द ने अनुभव कराया कि यह देश एक ही जाति का है और वह है आर्य जाति। यद्यपि मूर्ख लोगो ने आर्य शब्द का विरोध किया जबकि इतिहासकार लिख रहे है कि भारत की मूलनिवासी आर्य जाति है महर्षि ने जब आर्य समाज की स्थापना की तो उसके साथ सत्यार्थ प्रकाश को जोड दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं के अनेकों सम्प्रदायो ने आर्य शब्द का ही विरोध करना आरम्भ कर दिया। मुसलमान, ईसाई लोग भी आर्य शब्द का विरोध करने लगे जबकि वे भी आर्य जाति के ही है। उसका सबसे बडा कारण स्वामी जी द्वारा सभी सम्प्रदाओ की आलोचना करनी थी यदि स्वामी जी सम्प्रदायो की आलोचना न करते तो सम्भव था कि आर्य समाज का इतना विरोध न होता। यह एहसास करना कि सम्पूर्ण सम्प्रदायो का उद्गम स्थान एक ही है तथा जन्म से जातियो को न मान कर कर्मानुसार विभाजन करना, ऊच-नीच-छूत-छात को न मानना राष्ट्रहित मे है। सभी मिलकर इस सम्पूर्ण राष्ट्र को अपना समझे ऐसी भावना व धारणा बनाना महर्षि को अभीष्ट था जिसके लिये सत्यार्थ प्रकाश की रचना और आर्य समाज की स्थापना की।

आर्य शब्द को व्यापक अर्थ मे नही लिया, बल्कि विदेशी इतिहासकारो ने दक्षिण व उत्तर भारत को बाटने का खतरनाक कदम उठाया। उन्होंने इतिहास की धारा को मोडकर लिखना आरम्भ कर दिया कि आर्य लोग इस देश के निवासी ही नही थे, बल्कि बाहर से यहा आकर बसे। यहा के आदिवासी द्रविड लोग थे। आपस मे फूट डालने के लिये विदेशी इतिहासकारो ने यह षड्यन्त्र रचा। स्वामीजी ने इस धारणा को गलत बताया तथा यह सिद्ध किया कि आर्यो के महर्षि मुनि इसी धरती के पुत्र थे। दक्षिण भारत के तथा उत्तरी भारत के निवासी उन्ही की सन्तान हैं। पुलस्त्य ऋषि थे जो आर्य थे उनकी सन्तान द्रविड कैसे हो सकती है। जहा तक दक्षिण और उत्तर की भाषाओ का प्रश्न है वह एक अलग प्रश्न है। मूल-

(शेष पेज ७ पर)

आत्मकल्याण एवं विश्वशान्ति हेतु–अनुष्ठान

--भगवान देव "चैतन्य" एम० ए० साहित्यालंकार

दयानन्द मठ चम्बा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार का मुख्य केन्द्र बन गया है। रावी के सुरम्य तट पर दयानन्द मठ के अतर्गत सस्कृत विद्यालय, उच्च पाठशाला और आयुर्वेदिक फार्मेसी का सचालन हो रहा है। इसके अतिरिक्त प्रचार के दृष्टिकोण से समय-समय पर अन्य भव्य आयोजन भी किए जाते है। वार्षिक उत्सव के अतिरिक्त आखो के निशुल्क आप्रेशन भी किए जाते है। स्वामी सुमेधानन्द जी का मूल उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना ही है। चम्बा के ग्रामीण क्षेत्रो मे उपदेशको तथा भजनोपदेशको द्वारा विशेष प्रचार की व्यवस्था की जाती है। स्वामी जी स्वय अत्यधिक उत्साह ही हैं। इसी का सुफल है कि चम्बा नगर मे जो स्थान एकदम उपेक्षित सा था वहा आज जगल मे मगल की उक्ति चरितार्थ हो रही है। उनका कथन है कि इस क्षण शगुर चोले का कोई विश्वास नही कि कब छूट जाए इसलिए अधिक से-अधिक परोपकार के कार्य हो जाने चाहिए। इसी कडी मे स्वामी जी ने गायत्री महायज्ञ का अनुठा अनुष्ठान कर रखा है। यह महायज्ञ गत वैशाखी से आरम्भ हुआ था तथा एक साल चलने वाले इस यज्ञ की पूर्णाहुति रामनवमी के पावन पर्व पर होगी।

एक समय था जब आर्यावर्त मे बडे-बडे यज्ञो का अनुष्ठान हुआ करता था तब यह आर्यवर्त भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धियो से भरपूर थी मगर कालातर मे ज्यो ज्यो हम यज्ञ सस्कृति से दूर होते चले गए, सुख समृद्धिया भी समाप्त होती चली गई। दयानन्द मठ का यह अनुष्ठान अपने आप मे बहुत सार्थकता लिए हुए है। महाभारत काल के बाद इतना लम्बा यज्ञानुष्ठान शायद ही कोई हुआ हो। रावी नदी के किनारे बनी भव्य यज्ञशाला मे प्रतिदिन प्रात और साय लगभग सात-आठ घण्टे यह यज्ञ चलता है। यज्ञ मे भाग लेने के लिये देश-विदेश से निरतर लोगो का आना-जाना लगा रहता है। इसी क्रम मे विद्वान, भजनोपदेशकों और आर्यजगत के नेता एव सन्यासीगण भी यहा पधारते रहते हैं। इस प्रकार उपदेशो और भजनो का सिलसिला भी निरन्तर चालू है। प्राचीनकाल मे जगलो नदियो के किनारो पर इसी प्रकार के मठ और आध्यात्मिक केन्द्र हुआ करते थे जहा लोग यज्ञो और आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ उठाया करते थे। आज दयानन्द मठ उसी प्रकार का एक तीर्थ बन गया है।

निरन्तर चलने वाले इस यज्ञ मे लाखो रुपयो की सामग्री, घृत और समिधाए लग रही हैं। जो यज्ञ विज्ञान को जानते हैं वे भली प्रकार इस व्यय के महत्व को जानते हैं मगर जो नही जानते उनके मन मे शका भी हो सकती है और जिज्ञासा भी कि अन्तत इस प्रकार अपव्यय करने का लाभ क्या है? महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से भी इसी प्रकार की शका की गई थी तो उस यज्ञ मर्मज्ञ ने साफ शब्दो मे कहा था कि यदि आप पदार्थ विद्या को जानते तो ऐसी शका कदापि न करते। वैज्ञानिक तथ्य है कि अग्नि का स्पर्श पाकर किसी भी पदार्थ की शक्ति सूक्ष्म होकर कई गुणा अधिक बढ जाती है। इसके लिए मिर्च का उदाहरण दिया जा सकता है। मिर्च के खाने से केवल एक व्यक्ति को ही उसका तीखापन परेशान करेगा मगर यदि उसे आग मे डाल दिया जाए तो उसकी शक्ति कई गुणा बढकर कितने ही लोगो के लिए परेशानी पैदा कर सकती है। वेदो के अदर यज्ञ को एक महाविज्ञान के रूप मे वर्णित किया गया है। इसीलिए धर्म जब अपने व्यावहारिक और अमली रूप मे था तो यज्ञ करना दैनिक कृत्यो मे शामिल था। आज यह परिपाटी समाप्त हो रही है और इसके कुपरिणाम भी हमारे समक्ष उपस्थित हो रहे है। आज पर्यावरण मे आ रहा बिगाड एक महान समस्या बन गई है तथा भविष्य मे समस्या और भी अधिक विकट बनती चली जा रही है। यज्ञ विज्ञान पर्यावरण को शुद्ध करने का और बिगडने न देने का अचूक नुस्खा है। यज्ञ मे जली हुई सामग्री और घी सूक्ष्म रूप मे शक्तिशाली होकर पर्यावरण को शुद्ध करती है। ये तत्व केवल पर्यावरण ही शुद्ध नही करते है बल्कि शारीरिक पुष्टि भी प्रदान करते है। इस यज्ञ से केवल शारीरिक और पर्यावरण की शुद्धि ही नही होती है बल्कि इससे आध्यात्मिक लाभ भी होते हैं। यज्ञ आत्मिक उत्थान का आधार है। यज्ञ करने से प्राणीमात्र का कल्याण होता है। परोपकार का इससे अच्छा और भला क्या साधन हो सकता है? इसलिए कहा गया है—यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म। (श० ब्रा०) अर्थात् यज्ञ से बढकर और कोई कर्म श्रेष्ठतम नही है। यही नही श्रेष्ठतम कर्म ही सुखदायक भी होता है। अत कहा गया है—यज्ञो वै सुम्नस (श० ब्रा०) अर्थात् यज्ञ सुखद है। यजु० ३१-१६ मे भी कहा है—यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन। इस उक्ति का भाव है कि देवों ने यज्ञ के द्वारा भगवान का पूजन, यजन किया तथा वे उत्तम धर्म को प्राप्त हुए।

वैदिक सस्कृति है ही यज्ञ सस्कृति। "यज्ञो वेदेषु प्रतिष्ठित (गो० ब्रा०)" यह यज्ञ वेदो मे प्रतिष्ठित है अर्थात् यज्ञ का मूल वेद है। गोपथ मे ही अन्यत्र एक स्थान पर लिखा है—" वेदैर्यज्ञ मभिपन्नो प्रसित पराभ्रष्ट, तानि ह वा एतानि द्वादश महाभूतानि एव विधि प्रतिष्ठतानि तेषा यज्ञ एव परार्घ्य. इसका भावार्थ है कि ब्रह्म, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, अन्न, प्राण, मन, वाणी, वेद तथा यज्ञ ये बारह महाभूत—उत्तम पदार्थ हैं। इनमे भी यज्ञ सर्वोत्तम है क्योकि यह मानव जीवन का सार है। यजुवेद के दूसरे अध्याय मे एक मन्त्र है जिसका अर्थ अत्यधिक सारगर्भित है तथा यज्ञ की उत्कृष्टता को सिद्ध करता है। कहा यह गया है कि जो यज्ञ का त्याग करता है उसका क्या होता है? उत्तर दिया गया कि उसे ईश्वर छोड देता है। ईश्वर उसे क्यो छोडता है? दुख भोगने के लिए। यज्ञ न करने वालो के लिए यह कितनी बडी चेतावनी है। वास्तव में यज्ञ की परिपाटी का त्याग जब से हुआ तभी से इस आर्यावर्त के दुर्दिन भी आरंभ हो गए है। ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र, राम, कृष्ण, गोतम, कणाद आदि सभी ऋषि मुनि यज्ञ सस्कृति का ही अनुकरण करने वाले थे। इन्हीं ऋषि मुनियो की परम्परा मे १९ वी शताब्दि मे महान यज्ञ प्रेमी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आए और उन्होने यज्ञ को पुन धर्म का आवश्यक अग बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। आज भी आर्यसमाज भवनो मे दैनिक और साप्ताहिक यज्ञ होते हैं। कितने ही आर्य परिवारों मे प्रतिदिन दोनो समय या एक समय यज्ञ होते हैं। महर्षि ने साफ शब्दो मे कहा कि यज्ञ न करने से पाप लगता है क्योकि हम अपने शरीर से मल-मूत्र, थूक-पसीने आदि के द्वारा दुर्गन्ध ही तो फैलाते है अत कम से कम उतनी मात्रा मे सुगध फैलाना भी हमारा नैतिक दायित्व बन जाता है।

वेद परायण यज्ञ या गायत्री महायज्ञ आदि के अनुष्ठान विशेष रूप से और भी अधिक लाभदायक सिद्ध होते हैं क्योकि इनमे घी और सामग्री आदि अत्युत्तम और प्रचुर मात्रा मे प्रयोग मे लाई जाती है। यही नही मन्त्रो के चिन्तन मनन से साधको को अत्यधिक लाभ होता है। वेद का प्रत्येक मन्त्र महान और अद्भुत है क्योकि समूचा वेद ईश्वरीय ज्ञान है मगर गायत्री महामन्त्र का अपना विशेष ही महत्व है। ऋषि वशिष्ठ, विश्वामित्र, याज्ञवलक्य, राम, कृष्ण, शकराचार्य, गुरु विरजानन्द, महर्षि दयानन्द, रामकृष्ण परमहस, विवेकानन्द लोकमान्य तिलक, मदनमोहन मालवीय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, महात्मा गांधी आदि ने गायत्री को साधना का सर्वोत्तम आधार माना है। वेद, उपनिषद, स्मृतियो, महाभारत, पुराणो आदि अनेक ग्रन्थो मे भी इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

विरजानन्द जी ने गायत्री मन्त्र के माध्यम से ही अपनी ऋतभरा बुद्धि को जागृत करके अतुलनीय विद्वता प्राप्त की थी। महर्षि दयानन्द जी ने भी इसे गुरु-मन्त्र कहा है। सन्ध्या मे इस मन्त्र का तीन स्थानो पर प्रावधान किया गया है। आरम्भ मे तथा समर्पण से पूर्व तो इसका विधान है ही मगर अघमर्षण मन्त्र के पश्चात् विशेष रूप से गायत्री के चिन्तन और मनन का निर्देश है। महर्षि दयानन्द जी ने पूना प्रवचन मे कहा—"गायत्री मन्त्र के अर्थ पर विचार करना चाहिए। इस मन्त्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलीनता दूर हो जाती है और धर्माचरण मे श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है। दूसरे किसी मत मे प्रार्थना के मन्त्रो की ऐसी गहराई और सच्चाई नही है। "महर्षि जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रन्थ के प्रामान्याप्रामाण्य विषय मे गयादि तीर्थों की कथाओ का रहस्य खोलने के लिए शतपथ का उद्धरण देते हुए लिखा है—प्राणो वै बल, तत्प्राणे प्रतिष्ठित, तस्मादाहुर्बल सत्यादोजो। इत्येवम्वैषा गायत्र्यध्यात्म प्रतिष्ठिता। सा हैपा गयास्तत्रे। प्राणा वै गयास्तत्प्राणास्तत्रे। तद्यद्गयास्तत्रे गायत्रीनाम। इन वचनों का भावार्थ यह है कि अत्यन्त श्रद्धा से गया सज्ञक प्राण-आदि मे परमेश्वर की उपासना करने

(शेष पेज ६ पर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

अभिनन्दन-पत्र

प्राच्यार्षाच्यविद्यापारगतानाम्, आर्यसमाजाभ्युदयकरणरताना, वैदिक सिद्धान्तोन्मेषतत्पराणा परोपकारैकविताना पवित्रवृत्ताना, प्रणीतिमणिमालामण्डित जीवितानाम्, अभीप्सितनयशास्त्रविवर्धितजीवनाना, गुरुकुलकांगडीविश्वविद्यालयस्य कुलाधिपतिचराणा, सकलगुरुकुल कमलदिवाकराणा, पण्डितगणगणनीयगुणाना, प्रख्यातपितृवशावतसाना, स्वनामधन्याना, प्रोफेसर शेरसिंह महोपदयाना, पाणिपयोजयो· श्रद्धया समुपह्रियमाणम् अभिनन्दनपत्रम् ।

हे शारदातनय !

राजनीतिधर्मशास्त्र शिक्षाशास्त्रादि ग्रन्थाध्ययनरत भवन्तमालोक्य विदुषा चेत सहजतयैव मोदमावहति वैदिकसिद्धान्तानामन्वेषण भवज्जीवनस्य प्रमुखमगम् । आन्ताराष्ट्रिय दयानन्दवेदपीठस्याध्यक्षपदमलकुर्वाणैर्भवद्भिरभिवन्धपरम्परया विश्वविद्यालयेषु शोधसस्थानेषु च विद्वद्गोष्ठी सम्बर्ध्यते ।

हे देशभक्तिभावविभूषित ।

राष्ट्रप्रेमरसेन आत्मानमभिषिच्य दशे प्रजातन्त्रमभि वर्धयता भवता राजनीतिक्षेत्रेऽपि बहुकालपर्यन्त नयविदा शिक्षाप्रद महत्साफल्य लब्धम् । भारतसर्वकारे शिक्षामन्त्रिपदमलङ्कृत्य शिक्षापद्धतिमुन्नेतु कार्यं कृतम् । कृषिमन्त्रिपद विभूष्य कृषिक्षेत्र परिष्कृतम् । रक्षामन्त्रिपद चाधिगत्य राष्ट्ररक्षोपाया सदृष्टा भारतीयस्वातन्त्र्यसग्रामे भवता भागगृहीत्वा महत्कष्टमनुभूय देशभक्ति प्रकटिता। हैदराबाद सत्याग्रहे सत्य परिपालयति भवति सत्यमराजत । केशवहिन्दीमहाविद्यालयस्य प्राचार्यपदमधिगतवति प्रतिष्ठावति भवति हिन्दी भाषा लब्धादरा समदृश्यत ।

हे राष्ट्रभाषोन्नायक ।

हिन्दीसत्याग्रहक्रममभिवर्धयता श्रीमता तस्मिन्नान्दोलने सर्वजन प्रशस्या गुणवत्ता व्याकृता । पजाबप्रदेशीय कैरोसर्वकारस्य हिन्दी विरोधिनी प्रवृत्तिमसहमानैर्भवद्भि सर्वकारपद परित्यज्य हिन्दीसमर्थकाना मनासि जितानि। केन्द्रीय- हे गुरुकुलपरम्परापरिपोषक! सर्वकार निर्मितयोजनाऽऽयोगे प्रतिष्ठा प्रापिता ।

गुरुकुलकागडीविश्वविद्यालयमनवरतमुन्नेतु भवता प्रारम्भादेव महान्त प्रयासा कृता बहुविधप्रकल्पितकार्या वर्त्तमाने काले गुरुकुलकागडीविश्वविद्यालयस्य कुलाधिपतिपदमलङ्कृतवता श्रीमता सफलानि षड्वर्षाणि सुगीतानीव कुलवासिजनगेयानि सन्ति । हरयाणाप्रदेशस्थार्यप्रतिनिधिसभाया प्रधानपदमवाप्य भवता गुरुकुलझज्जराद्यनेकगुरु कुलानामभ्युदये सर्वविध प्रदाय गुरुकुलीयशिक्षापद्धति सजीविता । हे तपोनिष्ठा

भवता निखिल जीवनमार्यसमाजमेवायामेवार्पित विभाति । दिने दिने श्रद्धावता भवता मानससरोवरे वैदिकसिद्धान्ताभ्युदयविचारतरगचय समुल्लसति । वयमद्य पूर्णिमावसरे विद्यातपोभ्या परिपूते गुरुकुले समवेता सन्त श्रीमता यशस्विता दीर्घजीवितम् अहीयमाना प्रतिष्ठामभेद्य भद्र च भूयोभूय कामयामहे ।

दिनाक १४-१-९५ एते स्मो वयम्

कुलपति डा० धर्मपाल सर्वे कुलवासिनश्च

आर्य समाज अशोक विहार में आर्य मिलन समारोह में डा०सच्चिदानन्द शास्त्री का विशेष प्रवचन

आर्य समाज अशोक विहार चरण ३ के सदस्यो द्वारा आर्य मिलन समारोह के नाम से एक नया कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम मे प्रतिमाह एक सदस्य के घर पर यज्ञ तथा वैदिक प्रवचनो का सत्सग आयोजित किया जायेगा । प्रथम समारोह स्त्री आर्य समाज की मन्त्रिणी श्रीमती प्रेम सब्बर वाल के निवास पर आयोजित किया गया था इस समारोह मे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट, श्री राजसिंह भल्ला तथा माता प्रेमशील महेन्द्रू ने अपने विचार रखे ।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने सत्सग शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि सत्य का संग एक छोटा सा उपदेश है परन्तु इस पर प्रत्येक व्यक्ति को आजीवन आचरण करना चाहिए ।

अगले माह यह आर्य मिलन समारोह १८ फरवरी को साय ४ बजे श्री विमल वधावन एडवोकेट के निवास पर होगा जो कि इसी समाज के सदस्य हैं ।

आखिर हम कहाँ जा रहे (शेष पेज २ का)

कि जनसाधारण से हमारा सम्पर्क नाम मात्र को भी नही रहा है। हमारी साख ही समाप्त होती जा रही है। आर्यसमाज एक उपेक्षित सगठन होकर रह गया है।

यह सब देखकर भी यदि हमारी तथा हमारे कर्णधारो की आखें न खुलें, तो इसमे बडी दुर्भाग्य की बात क्या हो सकती है ?

अत: अपने सभी आर्य भाइयों से मेरा यही विनम्र निवेदन है कि आइए, हम सब मिलकर समस्त भेद-भावो को भूलकर, एक साथ बैठें और सारी स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें और देखे कि हम से कहा-कहा और क्या-क्या गलतिया हुई हैं और उन्हे कैसे सुधारा जा सकता है ? समाज के प्रचार-प्रसार और सेवा के ठोस कार्यक्रम तैयार करे और उन पर पूर्ण निष्ठा से उत्साहपूर्वक अमल करें। किसी को हेय न समझें और हर उस व्यक्ति को, जो पूरी आस्था और उत्साह से आर्य समाज की सेवा करना चाहता है, सेवा का पूरा पूरा अवसर दें। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित महान्—आदर्शो का निष्ठापूर्वक अनुसरण कर आगे बढें और आर्यसमाज की खोई हुई प्रतिष्ठा वापस लाने के सत्प्रयत्नों मे जी-जान से जुट जायें ।

जगह-जगह बडे बडे आयोजन करे, जिनमे प्रसिद्ध आर्य विद्वानो, अच्छे वक्ताओ तथा गुणी भजनीको की सेवायें लेकर जनसाधारण को अपनी ओर आकर्षित करे तथा जनकल्याण के उन ठोस कामो को हाथ मे लें, जिनके द्वारा जनता का विश्वास और सहयोग प्राप्त किया जा सके ।

सूचना

आर्य समाज विनय नगर (सरोजिनी नगर) नई दिल्ली का ४४वां वार्षिकोत्सव व धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस समारोह

शनिवार ४ फरवरी व रविवार ५ फरवरी १९९५ को आर्य समाज मन्दिर, 'बाई' ब्लाक, सरोजिनी नगर, मे मनाया जाएगा।

११५ वां वार्षिकोत्सव आर्य समाज

आर्य समाज, जेनरल रोड कानपुर का ११५ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के पावन पर्व पर शुक्रवार २४ से सोमवार २७ फरवरी १९९५ तक आर्य समाज भवन व श्रद्धानन्द पार्क मे समारोह पूर्वक मनाया जाना निश्चित हुआ है।

आत्मकल्याण एवं विश्वशान्ति

(पेज ४ का शेष)

से जीव की मुक्ति हो जाती है। प्राण मे बल और सत्य प्रतिष्ठित है, क्योकि परमेश्वर प्राण का भी प्राण है और प्रतिपादन करने वाला गायत्री मत्र है, जिसको गया कहते हैं। इसलिए कि उसका अर्थ जानकर श्रद्धासहित परमेश्वर की भक्ति करने से जीव सब दुखो से छूटकर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। तथा प्राण का भी नाम गया है, उसको प्राणायाम की रीति से रोक कर परमेश्वर की भक्ति के प्रताप से पितर अर्थात् ज्ञानी लोग सब दुखो से रहित होकर मुक्त हो जाते हैं। क्योकि परमेश्वर प्राणो की रक्षा करने वाला है इसलिए ईश्वर का नाम गायत्री का नाम गया है। यहा महर्षि ने गायत्री को जीव की मुक्ति का साधन कहा है। अन्य स्थानो पर भी महर्षि दयानन्द जी ने गायत्री के महत्व पर प्रकाश डाला है तथा इसके जप, पुरश्चरण, मनन एवं चिन्तन पर बल दिया है।

गायत्री मन्त्र द्वारा यज्ञ किया जाना भौतिकता और आध्यात्मिकता का सृजन करने के लिए भी अधिक सार्थक है। महर्षि दयानन्द जी ने देव यज्ञ में लिखा है—"इस प्रकार प्रात और सायकाल सन्ध्योपासना के पीछे इन पूर्वोक्त मत्रो से होम करके अधिक होम करने की जहा तक इच्छा हो वहा तक स्वाहा अन्त मे पढकर गायत्री मन्त्र से होम करें। गो० ब्रा० मे जहा गायत्री के तीन पादो का विवेचन किया है वहा सकेत रूप मे बताया गया है कि कर्म वेद है, यज्ञ वेद है, यज्ञानुष्ठान से प्राणीमात्र का उपकार होता है। तीनो पादो की व्याख्या के बाद ब्राह्मण मे कहा गया है कि जो इस प्रकार जानकर इस वेद माता सावित्री का अनुष्ठान करता है, वह जीवन मुक्त हो जाता है। यही तो मानव जीवन का चरम लक्ष्य है जो गायत्री के यथार्थ अनुष्ठान से साध्य है। ऋ० ३,६२,११-१२ मे कहा है —

देवस्य सवितुर्वय वाजयन्त पुरन्ध्या। भगस्य रातिमीमहे।
देव नर सवितार विप्रा यज्ञै सुवृक्तिभि। नमस्यन्ति धियो षिता।

अर्थात् हम विशाल धारणावति बुद्धि के द्वारा सवितादेव से ज्ञान, अन्न, बल की कामना करते हुए उस परम एश्वर्यवान देव का ज्ञान मागते हैं। सर्वगुणी मेधावी नेता बुद्धि मे प्रेरित होकर उत्तम त्यागमय यज्ञो के द्वारा सविता देव को नमस्कार करते हैं।

इस प्रकार गायत्री मन्त्र का मनन, चिन्तन तथा इसके द्वारा यज्ञानुष्ठान व्यक्ति को लोक परलोक की सिद्धि देने वाला है। आज जबकि धर्म के नाम पर खून की नदिया बहाई जा रही हैं। व्यक्ति का मानसिक पतन अपनी पराकाष्ठा पर पहुच गया है। पर्यावरण बिगड रहा है। तरह-तरह के शारीरिक और मानसिक असाध्य रोग पनप रहे हैं। जीओ और जीने दो का सिद्धान्त मात्र नारा बनकर रह गया है मानव से मानवता कही दूर बहुत दूर छूटती चली जा रही है। ऐसे समय मे दयानन्द मठ चम्बा मे श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान किया गया है जो एक आशा की किरण है। इसमे भाग लेने वाले लोग तो आत्मिक लाभ प्राप्त करेंगे ही मगर यह महायज्ञ प्रदेश, राष्ट्र और समूचे विश्व मे भी सुख और शान्ति का सृजन करेगा क्योकि इस महायज्ञ का मूल उद्देश्य ही आत्म कल्याण और विश्व शान्ति है।

२१५/एस-३ सुन्दरनगर १७४४०२ (हि०प्र)

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से वेद प्रचार व वन विहार का आयोजन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से रविवार, १५ जनवरी १९९५ को वेद प्रचार व वन विहार का विशेष आयोजन किया गया। दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजो ने इसमे भाग लिया। गाव हेली मडी (गुडगाव) मे आर्यसमाज के उत्सव मे सम्मिलित हुए और वहा की नई आर्य समाज के सत्सग हाल के निर्माण के लिए निम्न प्रकार आर्थिक सहयोग दिया —

१. श्री रघुनन्दन लाल गुप्ता	११,००० रु०
२ श्री रघुनन्दन लाल जी की माता जी व पिताजी द्वारा	१०,००० रु०
३ श्री रघुनन्दनलाल जी की सुपुत्री द्वारा	११,००० रु०
४ दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से	५,१०० रु०

इस प्रकार आर्ष गुरुकुल किशनगढ घासेडा जिला-रेवाडी का भी सभी ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

रोशन लाल गुप्ता, उपप्रधान

पं. आशानन्द जी को वर्ष १९९५ का वेदोपदेशक पुरस्कार देने की घोषणा

आर्य समाज सान्ताक्रुज की ओर से वर्ष १९९५ के वेदोपदेशक पुरस्कार प० आशानन्द जी को देने की घोषणा की गयी है।

वेदोपदेशक पुरस्कार आर्य समाज के ऐसे उपदेशक, भजनोपदेशक तथा कार्यकर्ता को दिया जाता है, जिन्होने आजीवन समर्पित भाव से आर्य समाज व वैदिक सिद्धातो के प्रचार प्रसार का कार्य किया हो। पुरस्कृत विद्वान को १५००१ रुपये अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी एव शाल तथा श्रीफल भेट कर सम्मानित किया जाता है।

प० जी को दि० २९ जनवरी १९९५ को आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) के ५१वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपरोक्त पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ की शिरोमणि सस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मचारी तथा "आर्य सन्देश" आर्य वीर दल, आर्य विद्या परिषद, सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाज-सेवी, दानवीर, आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री प० चमन लाल ग्रोवर जी के प्रिय सुपुत्र श्री सुरेश ग्रोवर के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुख एव शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त दुखी परिवार एवं सगे सम्बन्धियो को इस दारूण दुख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे।

सूर्यदेव, प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मास फरवरी के ५ तारीख के रविवार के सत्संग का कार्यक्रम

५ फरवरी ९५ रविवार के सत्सगो के कार्यक्रम आर्यसमाज अशोक नगर डा० धर्मदेव शास्त्री

किशनगज मिल एरिया प० बलवीर शास्त्री-किग्जवे कैम्प-श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, गुजरा वाला न० २ प० तुलसीराम आर्य गायक, तिमारपुर-प० कृष्णचन्द्र आर्य, श्री निवासपुरी-श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, न्यू मोती नगर-प० योगेश्वरचन्द्र प्रताप नगर-श्रीमती सावित्री, महरौली-श्री उदय नारायण शास्त्री, मोती बाग-आ० विष्णुदत्त, माडल बस्ती-प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, रमेशनगर-प० कामेश्वर शास्त्री, रोहताश नगर-प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य, अमर कालोनी श्री वेदप्रकाश शास्त्री शकरपुर-प० नन्द लाल निर्भय, मोहनगज मे-प० योगेश्वर कुमार शास्त्री, सराय रूहेला-प० ऋषि पाल शास्त्री, सरोजनी नगर प० देव शर्मा।

व्यवस्थापक— स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के नवनिर्वाचित प्रधान श्री दरबारी लाल ने अपनी नई कार्यसमिति मे प्रिंसिपल श्री राधे श्याम शर्मा को डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति का महामन्त्री नियुक्त किया है।

जातिवाद पर प्रहार

(पेज ३ का शेष)

काल का अफगानिस्तान, बर्मा, ईराक-ईराक कभी बृहद् भारत के ही अंग थे किन्तु उनकी भाषा-वेश भूषा देशकाल के भेद से भिन्न-भिन्न हैं वैसे ही भारत की विशालता को यदि ध्यान में रखा जाये तो भारत बहु भाषी देश हो सकता है, जबकि संसार के छोटे छोटे देश बहुभाषी हैं। महर्षि दयानन्द ने भारत की प्राकृतिक रचना को भी आधार मानकर यह बताया कि समुद्र जिसकी मेखला है और हिमालय जिसका मुकुट है वह सम्पूर्ण भूमि भारत या आर्यावर्त है।

आर्य शब्द का इतिहास गौरव मण्डित है। आज ससार के अनेक देशों के निवासी अपने आपको आर्य बताने लगे हैं। मध्य युरोप के सभी देश अपने आपको आर्य जाति का तथा अपनी भाषा को भारतीयता के साथ जोड़ते हैं। भाषा विज्ञाव में एक भारोपीय परिवार कहलाता है। अर्थात् युरोप की भाषाओं का उद्गम स्थल सस्कृत भाषा है जिसका प्रादुर्भाव वैदिक-साहित्य तथा लोक साहित्य के रूप में भारत में हुआ। लेकिन भारत के पढ़े-लिखे लोग भी अभी तक आर्य कहलाने के लिये तैयार नहीं हैं।

महर्षि दयानन्द ने इतिहास के आधार पर आर्य राजाओं की वशावली देकर यह सिद्ध किया है कि जब तक इस देश पर आर्य राजाओं ने राज्य किया तब तक इसका राज्य चक्रवर्ती रहा। जब जातियों में देश बटा तो राज्यों का भी बण्टाधार हो गया।

आर्य समाज के कर्णधारो को चाहिये कि वे जातिवाद सूचक शब्द अपने नामों से हटायें तथा भाषावाद व प्रातवाद का मोह छोड दें। दिल्ली भारत का दिल है यहा की आर्य जनता को समस्त देश का पथ प्रदर्शन करना है। इसे अनुकरणीय बनना चाहिये। आर्य समाजो मे पाण्डे, त्रिपाठी, शर्मा, वर्मा, मरवाह, खन्ना सचदेव, सहगल, नारग, यादव जयसवाल, जैसे नाम धारियों की आवयश्कता नहीं है। यदि इस देश को फिर से परतन्त्र होने से बचना है तो जाति पात भूल कर सर्वमिदम्-आर्य राष्ट्रम् का उद्घोष करना पड़ेगा।

सूचना

आर्य समाज एजूकेशनल ट्रस्ट रजि० की साधारण सभा मे दिनाक ८-१-९५ को श्री राजसिंह भल्ला सर्वसम्मति से आगामी तीन वर्षों के लिये ट्रस्ट के प्रधान चुने गए।"

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
A. M. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 23-2-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/95
दि० नी पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक
२ फरवरी १९९५

श्री दरबारीलाल का सीरीफोर्ट सभागार में सार्वजनिक अभिनन्दन

खेल गाव, नई दिल्ली के सीरी फोर्ट आडिटोरियम मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संयुक्त तत्वावधान में डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के नवनिर्वाचित प्रधान श्री दरबारी लाल का उनके ६५वें जन्म दिवस के अवसर पर भावभीना अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सोमनाथ मरवाह, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

इस अवसर पर भारत सरकार के विदेश मन्त्री श्री आर० एल० भाटिया, कुलपति डा० सर्वदानन्द आर्य, श्री बी० पी० चोपड़ा, श्री दीपचन्द बन्धु, श्री विजयकुमार मल्होत्रा, प्रिंसिपल कृष्ण सिंह आर्य, प्रिंसिपल एस० अहलावत आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने श्री दरबारी लाल को हार्दिक बधाईयां दीं और जन्म दिवस के अवसर पर शुभकामनायें व आशीर्वाद दिये तथा कामना की कि उनके कुशल नेतृत्व में डी०ए०वी० परिवार वटवृक्ष की भांति और अधिक फैलता हुआ इस राष्ट्र को शिक्षा जगत मे एक अनूठी छाया प्रदान करे।

अपने अभिनन्दन के उत्तर मे श्री दरबारी लाल ने विनम्र शब्दो मे आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रादेशिक सभा सार्वदेशिक सभा का ही अंग है, अत हमे कभी यह नही सोचना चाहिए कि हम अनेक है। उन्होने कहा कि मुझे अपने अभिनन्दन से और अधिक सेवा करने की प्रेरणा प्राप्त हुई है। आपके आशीर्वाद से मुझे कार्य में सफलता प्राप्त हो यही प्रभु से कामना है।

श्री सोमनाथ मरवाह के छोटे भाई का देहावसान

आर्य जगत को यह जानकर दुख होगा कि सार्वदेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष के छोटे भाई श्री नरेन्द्र नाथ मरवाह जो काफी समय से अस्वस्थ थे उनका लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। अन्तिम समय मे बाबू सोमनाथ जी का उनसे मिलना न हो पाया। वे आर्य समाज के यशस्वी परिवार के व्यक्ति थे। उनके निधन से आर्य समाज की महान क्षति हुई है वे हिमाचल प्रदेश मे आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे।

दिल्ली प्रतिनिधि सभा की समस्त संस्थायें तथा अधिकारीगण एव कर्मचारी उनके निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करें।

सूर्यदेव, प्रधान

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा, सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक १६ | रविवार, १२ फरवरी १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

बाल हकीकत राय बलिदान दिवस पर राष्ट्र रक्षा का संकल्प

आर्य समाज सरोजनी नगर के तत्वावधान में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा बाल हकीकत राय बलिदान दिवस मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की। इस अवसर पर डा० महेश विद्यालंकार श्री प० श्रीधर व श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व स्थानीय विधायक श्री रामभज उपस्थित थे।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे सभी वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए सरकार की फिरका परस्त नीति का विरोध किया। बहु सख्यक और अल्प संख्यक का बीजारोपण करके सरकार अपने स्वार्थ को सिद्ध करने तथा नेतागण वोटों की खातिर राष्ट्र को फिर से बाटते का षड्यन्त्र रच रहे हैं।

श्री सूर्यदेवजी ने अपने भाषण मे कहा कि बाल हकीकतराय के बलिदान से शिक्षा लेनी चाहिए। यदि इस देश का उद्धार होगा तो मुस्लिम तुष्टिकरण का मार्ग छोड़ना पड़ेगा। शुद्धि के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द ने राष्ट्र को एक नई दिशा दी थी हमें अब भी उस कार्य को प्रचलित करने की आवश्यकता है। स्वतन्त्र भारत में भी पाकिस्तानी झण्डा फहर सकता है गौ हत्या हो सकती है। पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगते हैं। वन्देमातरम का विरोध किया जाता है। ये सब हमारी दुर्बलता का ही कारण है। इसलिए आर्यों अब सचेत होने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के लिए अपना बलिदान दिया देश जाति व धर्म तीनो की रक्षा करने का बीडा उठाया। हम दिल्ली की सरकार से माग करते हैं कि ऐसे राष्ट्र पुरुष के जन्म दिवस पर अवकाश घोषित किया जाए, यदि सरकार न माने तो हमे अपने पैरो पर खडे होकर सरकार को झुकने के लिए विवश करवा चाहिए। सरकारें झुकती हैं झुकाने वाला चाहिये। महर्षि का जन्म दिवस मनाने के लिए सभी आर्य समाजों को अधिक से अधिक सख्या मे दयानन्द गौ सवर्द्धन केन्द्र गाजीपुर मे २४ फरवरी को पहुंचकर अपनी आवाज को सरकार तक पहुचाने के लिए प्रबल आन्दोलन करने का निश्चय करना चाहिए।

उक्त आयोजन के समय पर रतन चन्द आर्य पब्लिक, स्कूल विनय नगर के छात्रो ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसकी स्थानीय जनता ने भूरि-भूरि प्रशसा की। इस आयोजन की व्यवस्था श्री रोशन लाल गुप्ता श्री पी०एल० गुप्ता श्री तिलकराज चोपड़ा ने सुचारू रूप से की।

अभिनन्दन समारोह

अध्यक्षता : श्री सुरेन्द्र कुमार रैली
(प्रधान, आर्य समाज मन्दिर, प्रीत विहार दिल्ली)

सानिध्य . श्री पन्ना लाल सेठ स्वतन्त्रता सेनानी

दिनांक : १२ फरवरी, १९९५ रविवार प्रात १०-३० बजे

स्थान - आर्य समाज मन्दिर, सी ब्लाक प्रीत विहार दिल्ली-९२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपति का पदभार ग्रहण करने पर क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पटपडगंज दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन किया जा रहा है।

आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निवेदक

दामोदर प्रसाद आर्य प्रधान	पतराम त्यागी मन्त्री	रवि बहल कोषाध्यक्ष

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पटपडगज क्षेत्र दिल्ली

मदन गोपाल आहूजा मन्त्री	ओमदत्त शर्मा उपमन्त्री

आर्य समाज प्रीत विहार दिल्ली

ऋषि दयानन्द वचनामृत

—जब पाच वर्ष का लड़का लड़की हो तब उनको देवनागरी अक्षरो का अभ्यास कराना चाहिए। अन्य देशीय भाषाओ के अक्षरो का भी अभ्यास कराना उचित है।

—अनिवार्य शिक्षा के विषय मे लिखते हैं :इसमे राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि पाचवे वर्ष के उपरान्त कोई मनुष्य अपने लडको या लडकियों को घर मे न रख सके। अवश्यमेव उन्हें पाठशाला मे भेजे। यदि न भेजे तो वह दण्डित किया जाए।

—उन्होने अपने पश्चिमी शिष्य 'बीस' महाशय को लिखा था कि आप भारतवासियो को शिल्प कला सिखाने का प्रबन्ध कीजिए।

—मास का खाना तो दूर रहा, मैं तो उसके देखने मात्र से ही रोगी हो जाता हू। मेरे योग्य तो केवल फलादि हैं। यदि आप मेरा न्योता करना ही चाहते हैं तो अन्न और फल आदि वस्तु भिजवा दीजिए। मेरा ब्रह्मचारी यहा भोजन बना लेगा।

—सत्य के लिए कारावास कोई लज्जा की बात नही है। धर्म पथ पर आरूढ़ होकर मैं ऐसी बातों से सर्वथा निर्भय हो गया हू प्रतिपक्षी लोग यदि अपने प्रभाव से ऐसा कष्ट दिलायेंगे, तो वहा कष्ट सहते हुए मेरे चित्त मे शोक का कोई तरंग भी उत्पन्न न होगा वहा मैं अपने प्रतिपक्षियो की अकल्याण कामना भी कभी नही करूगा। पादरी जी मैं लोगो के डराने से सत्य को नही छोड सकता ईसा को भी लोगों ने फासी पर लटका ही तो दिया था।

प्रधान सम्पा० सूर्यदेव | सह सम्पादक - आचार्य सुधाकर एम०ए०

सामान्य जिज्ञासु के लिए उपनिषदों की देन?

जीवन में समुचित सामंजस्य : ईश-उपनिषद की सीख

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

एक अच्छे शिक्षक अपने शिष्यों को सीख दे रहे थे, "जीवन में स्वस्थ एवं प्रगतिशील रहने के लिए आवश्यक है कि न तो तन कर बैठो और न इतना लचको कि तुम्हारी कमर धनुष की तरह घूम जाए, प्रत्युत उसमें एक सन्तुलन रखो। इसी सम्बन्ध मे एक ऐतिहासिक घटना है। दुध मुंहे पुत्र राहुल-पत्नी और कपिलवस्तु सरीखे राज्य का मोह छोडकर सिद्धार्थ तपस्या के लिए चल पड़े। उन्होंने योग-साधना सीखी, समाधि लगाई, केवल तिल-चावल खाकर कठिन तप शुरू किया, बाद मे सब तरह का खाना बन्द कर दिया, फल यह हुआ कि शरीर सूख कर काटा हो गया। इस प्रकार कठिन तप करते हुए छह वर्ष बीत गए, पर सिद्धार्थ की तपस्या फलीभूत नही हुई, एक दिन किसी नगर से समवेत मधुर स्वरों में गाती हुई कुछ स्त्रियां निकलीं—उनके समवेत मधुर स्वरों का बोल था—

वीणा के तार ढीले न छोड़ो, स्वर सुरीला न निकलेगा।

वीणा के तार इतने कसो भी नही कि वे चरमरा जाए, टूट जाएं।

बात सिद्धार्थ को जची, उन्हें विश्वास हो गया कि जीवन के लिए जहा, नियमित सन्तुलित आहार-विहार अपेक्षित है, जीवन उसी समय व्यवस्थित होगा जब उसमे किसी बात की अति न हो, उसमें मध्य मार्ग अपनाया जाए।

इसी तरह देश के प्रधानमन्त्री कहते हैं कि राष्ट्र की समस्याओ का समाधान तभी सम्भव है जब हम न तो अधिक बाई ओर झुकें और न अधिक दाईं ओर झुकें, बल्कि मध्य मार्ग मे रहे। इन्ही स्वरो की स्पष्ट अभिव्यक्ति देते एक प्रमुख अर्थशास्त्री कह रहे थे—हमारा राष्ट्र उसी स्थिति मे समृद्ध हो सकता है जब हमारे सभी देशवासी भौतिक रूप से सुखी हो और आध्यात्मिक रूप से सन्तुष्ट रहें, दूसरे शब्दो मे धर्म हमारा आधार होना चाहिए और विज्ञान हमारा दृष्टिकोण होना चाहिए। जो उत्पादन हो, उसको समुचित आपूर्ति हो, एक ओर भरपूर उत्पादन हो और दूसरी ओर जन-जन तक समृद्धि पहुचनी चाहिए। यह आर्थिक विचारधारा पुरुषार्थ के आधार पर परमार्थ की भावना से सफल हो सकती है।

थोडा-सा विचार या चिन्तन किया जाए तो स्पष्ट अनुभूति हो जाएगी जीवन को व्यवस्थित प्रगतिशील बनाने तथा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल मध्य मार्ग अपनाना पर्याप्त नही है, प्रत्युत जीवन मे समुचित सामजस्य स्थापित होना चाहिए। एक आधुनिक तत्व चिन्तक ने सामाजिक न्याय की उपलब्धि के लिए सलाह दी थी। सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। इस तरह आपने देखा कि जहा पुरुषार्थ और परमार्थ मे समुचित सामजस्य अपेक्षित है, सच्चे रामराज्य या जनराज्य की प्रतिष्ठा के लिए प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार अपेक्षित है। हम थोडा-सा गम्भीर अध्ययन एव चिन्तन करें तो मालूम पड़ेगा कि ईश-उपनिषद् का भी यही सन्देश है।

विवेचक कहते हैं कि वेद मानवीय चिन्तन या ज्ञान के प्रारम्भिक स्रोत हैं। उन्हीं वेदो की सरल व्याख्या उपनिषदो में की गई है। यजुर्वेद के अन्तिम चालीसवें अध्याय और ईशोपनिषद् में बहुत थोडा अन्तर है। विवेचक कहते हैं कि कण्व ऋषि ने यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय को समझाने के लिए—उस अध्याय मे वर्णित ब्रह्मविद्या को समझाने के लिए कुछ आरम्भिक परिवर्तन-परिवर्धन किया है। कई विवेचक कहते हैं कि यह उपनिषद् सब उपनिषदो का मूल है। उपनिषद् ब्रह्मविद्या के भण्डार स्वीकार किए जाते हैं। सब उपनिषदो की बुनियाद या मूल होने से यह ईशोपनिषद् ब्रह्मविद्या की बुनियाद कही गई है कई आलोचक कहते हैं कि वेदो मे कर्मकाण्ड है, यजुर्वेद तो यज्ञों और कर्मकाण्ड का ग्रन्थ समझा जाता है, परन्तु इसी वेद का यह चालीसवा अध्याय ब्रह्मविद्या का उपदेश करता हुआ उस धारणा का निराकरण करता है।

यजुर्वेद के इस चालीसवें-अध्याय और ईशोपनिषद् में चार विषयो की मुख्य चर्चा की गई—१. पिण्ड एव ब्रह्माण्ड की नियामिका आत्म-शक्ति का विवेचन दूसरा २. प्राणी या मानव पतन या दुर्गति के रास्तो पहचानें और उनसे बचें। ३ यह देखें कि अभ्युदय या सद्गति का उपाय है और ४. अभ्युदय के लिए इस नियामिका आत्मशक्ति से सन्मार्ग एव कल्याण-मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देने के लिए पूरी विनम्रता और विवेक से हार्दिक प्रार्थना की गई है।

नियामिका आत्मशक्ति का विशद विवेचन

इस ईशोपनिषद् के पांच मन्त्रों में इस पिण्ड-ब्रह्माण्ड के नियामक परम तत्व का सूक्ष्म एव गहन चिन्तन है—पहले ही मन्त्र में कहा गया है—यह सारा ब्रह्मांड ईश्वर से व्याप्त है। कोई काल और कोई स्थान ऐसा नही, जहां वह विद्यमान न हो, इस ससार के अणु-अणु और कण-कण में उसकी अपार शक्ति और उसके शासन की अनुभूति होती है। सारा संसार गतिशील है, इसको गति देने वाली ऐसी शक्ति होनी चाहिए जो चेतन हो और विवेकक्षमता से संयुक्त हो, उसे सर्वत्र विद्यमान होना चाहिए, वह सबका नियामक, सूत्रधार या शासक होना चाहिए। मन्त्र मे कहा गया है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। ?।

इस गतिशील संसार में सबकुछ ईश्वर से—सारे संसार के स्वामी से—सब ओर से आच्छादित-ढका है और इस ससार के अणु-अणु-कण-कण में वह व्याप्त है। इस परमतत्व की व्याख्या करते हुए इस उपनिषद् के चौथे मन्त्र में बतलाया गया है यह ब्रह्म मन से भी अधिक तीव्रगामी है, क्योंकि जहां मन कल्पना कर पहुचता है, वहा ब्रह्मशक्ति पहले से विद्यमान होती है, इसे इन्द्रियो रूपी दिव्य शक्तियां प्राप्त नही कर सकतीं, वह ब्रह्म वहां पहले ही प्राप्त हो जाता है, वह ब्रह्म गति न करता हुआ दूसरे दौड़ने वालों को पीछे छोड़ देता है। सर्वव्यापक परमात्म शक्ति (मातरिश्वा) के आश्रय मे रहने वाला ज्ञानी अपने सारे विस्तार को—सब कर्मों को ब्रह्मार्पण कर देती है।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्शत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥ ४

ब्रह्म अनन्त है, इसलिए जहा-जहा मन जाता है, वहा वह ब्रह्म पहले से ही विद्यमान् और अवस्थित है। इस ब्रह्म का ज्ञान शुद्ध मन से ही होता है, उसे आंख-चक्षु आदि इन्द्रिया और अविद्वान् लोग नही देख सकते। वह सर्वत्र अवस्थित रहता हुआ सब प्राणियो को नियम से चलाता है और उन्हें धारण करता है। वह ब्रह्म अति सूक्ष्म और अतीन्द्रिय-इन्द्रियो से अगोचर है, फलत. केवल योगी धर्म-परायण विद्वान् ही उसकी अनुभूति कर सकते हैं।

मूढ़ सामान्य मानव समझते हैं कि ब्रह्म चलता है, वह सर्वव्यापक है, फलत: उसे चलायमान होने की अपेक्षा नही है, वह ब्रह्म अयोगियों अधर्मात्मा मूढ़ों से दूर है, परन्तु योगियो धर्मात्मा विद्वानों के समीप है। वह ब्रह्म सब जगत् एवं प्राणियों के अन्दर विराजता है। निश्चय से वह इस सम्पूर्ण दृश्यमान एव अदृश्य ब्रह्माण्ड के बाहर भी विराजमान है।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यत: ॥ ५

इस प्रकार वह सब के भीतर-अन्दर प्रतिष्ठित है, वह दूर से भी दूर है और वह अत्यन्त समीप है। मूढ़ों की दृष्टि मे वह ब्रह्म चलता है, परन्तु योगियों और विद्वानों की दृष्टि मे अचल है, वह ब्रह्म मूढ़ों से दूर है और योगियों तथा विद्वानों के अत्यन्त समीप है वह जगत् के अन्दर है और बाहर भी।

इस ईश उपनिषद् मे उस नियन्ता परमतत्व ईश्वर के स्वरूप का वर्णन इन शब्दों में किया गया है—वह सर्वशक्तिमान है, वह अकाय शरीर रहित है, फलत: उसे किसी भी प्रकार की क्षति की सम्भावना नहीं है, वह शिराओं से विहीन, शुद्ध, सब प्रकार के पापों से शून्य सर्वज्ञ, मननशील, स्वयम्भू, सर्वनियन्ता है, वह सब प्राणियों के संकल्पों एव मनोकामनाओं को जानने वाला है, वह अनादिकाल से समस्त पदार्थों और सम्पूर्ण प्राणियों की यथार्थ व्यवस्था करता है। (क्रमश:)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के १७१वें जन्मोत्सव पर गायत्री महायज्ञ

आप को जानकर हर्ष होगा कि युग प्रवर्तक, महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७१ वां जन्म दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है।

यह उत्सव २६ फरवरी, १९९५ को सैक्टर १६ वेवर चौक पर 'गायत्री यज्ञ' के साथ प्रारम्भ होगा।

आर्य वीर दल, आर्य समाज सैक्टर ९, पंचकूला

महर्षि दयानन्द का ऐतिहासिक दृष्टिकोण

आचार्य सुधाकर एम० ए०

महर्षि दयानन्द ने कहा है कि आर्यावर्त समुद्र से हिमालय पर्यन्त था। जो लोग यह कहते हैं कि आर्य लोग बाहर से आये इस बात को सबसे पहले महर्षि ने ही मिथ्या सिद्ध किया। इतिहासकारों का यह कहना कि आर्य लोग ईरान से आकर यहां बसे हैं। भारत में जंगली लोग बसते थे जिनको असुर और राक्षस कहते थे। आर्य लोग अपने को देवता बतलाते थे जब उनका संग्राम हुआ उसका नाम देवासुर संग्राम कहा गया। महर्षि दयानन्द ने कहा यह बात सर्वथा झूठ है। वेद का प्रमाण देते हुए उन्होंने बताया कि—

वि जानीहि-आर्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासद व्रतान (ऋग. मं-१-सू. ५१-मं. ८ ॥

उत शूद्रे उतार्ये (अथर्व का १९-सू. ६२-मं. १)

आर्य नाम धार्मिक, विद्वान, आप्त पुरुषों का और इनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान है। तथा क्षत्रिय वैश्य द्विजों का नाम आर्य और शूद्र का नाम अनार्य अर्थात् अनाड़ी है।

यहां पर ऋषि ने शूद्रों को दस्यु नहीं कहा है बल्कि अनार्य अर्थात् अनाड़ी कहकर सम्बोधित किया है इससे सिद्ध होता है कि आर्यों की वर्ण व्यवस्था में शूद्रों को स्थान नहीं दिया गया है। आर्यावर्त के बाहर चारों ओर जो हिमालय के पूर्व, आग्नेय, दक्षिण नैर्ऋत, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान देश में मनुष्य रहते हैं उन्हीं का नाम असुर सिद्ध होता है। क्योंकि जब-जब हिमालय प्रदेशस्थ आर्यों पर लड़ने को चढ़ाई करते थे तब-तब यहां के राजा महाराज लोग उन्हीं उत्तर देशों में आर्यों के सहायक होते थे।

जो (रामचन्द्र जी से दक्षिण में युद्ध हुआ है उसका नाम देवासुर संग्राम नहीं है, किन्तु उसको राम-रावण अथवा आर्य और राक्षसों का संग्राम कहते हैं। किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों को लड़कर, जय पाकर निकाल के इस देश के राजा हुए, पुन. विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।

जो आर्यावर्त देश से भिन्न देश हैं वे दस्यु देश और मलेच्छ देश कहाते हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि आर्यावर्त से भिन्न पूर्व देश से लेकर ईशान-उत्तर-वायव्य और पश्चिम देशों में रहने वाले दस्यु मलेच्छ तथा असुर हैं। नैर्ऋत दक्षिण तथा आग्नेय दिशाओं में आर्यावर्त देश से मिले रहने वाले मनुष्यों का नाम राक्षस था। अब भी देख लो। हबशी लोगों का स्वरूप भयंकर जैसा राक्षसों का वर्णन किया है वैसा ही दीख पड़ता है। आर्यावर्त की सूध पर नीचे रहने वालो का नाम नाग और उस देश का नाम पाताल इसलिये कहते हैं कि वह देश आर्यावर्तीय मनुष्यों के पाद अर्थात् पग के तले हैं। और उनको नागवंशी अर्थात् नाग नाम वाले पुरुष के वंश के राजा होते थे। उसी की उलोपी राज कन्या से अर्जुन का विवाह हुआ था। अर्थात् इस्वाकु से लेकर कौरव पांडव तक सर्वभूगोल में आर्यों का राज्य और वेदों का थोड़ा-थोड़ा प्रचार आर्यावर्त से भिन्न देशों में भी रहा।

इसमें यह प्रमाण है कि ब्रह्मा का पुत्र विराट, विराट का मनुमनु का मरीच्यादि दश इनके स्वायंभ्वादि सात राजा और उनके सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा जो आर्यावर्त के प्रथम राजा के जिन्होंने यह आर्यावर्त बसाया है।

अब अभाग्योदय से आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का, अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े से राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतांतर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा-न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक-पृथक शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इनके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

दयानन्द का पथ

जिस डगर को दयानन्द बताकर गये।
वह बडी ही कठिन है डगर आर्यो।।
तीव्र शूलो भरा बहुत दुर्गम ये पथ।
हर कोई चल न सकता बशर आर्यो।
दयानन्द की डगर पर चलेगा वही।
सत्य कहने से जो हिचकिचाये नही।।
विघ्न बाधाओं से घबराये नहीं।
वह कहलायेगा श्रेष्ठ नर आर्यो।१।।

पाप पाखड जग में पनपने न दे।
भीरुता पिशाचनी को फटक न दे।
बेधड़क कदम आगे बढाते रहे।
वह हमेशा रहेगा निडर आर्यो ।२।

श्रद्धानन्द जी इस डगर पर चले।
आर्य मुसाफिर ने यही पकडी डगर।
वेद प्रचार मे अग्रसर वह रहे।
कर गये नाम जग मे अमर आर्यो।३।

राह मे खूब कांटो की भरमार थी।
आंधी वर्षा व अ गारों की बौछार थी।
डगमगाये नही पग हटाये नही।
कुछ हुआ न किसी का असर आर्यो ।।४।।

स्वामी स्वरूपानन्द

महर्षि स्वामी दयानन्द का महान व्यक्तित्व

चमन लाल

उत नः सुभगो अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टमः। स्यामोदन्द्रस्य शर्ममि ॥

इस ऋग्वेद की ऋचा में भगवान से प्रार्थना की गई है कि दुर्गुणों और पापों के क्षीण करने वाले परमात्मन्। हमारे शत्रु भी हमें श्रेष्ठ और और सौभाग्यशाली कहे, तुम परमैश्वर्यशाली भगवान के कल्याण में हम रहें।

मनुष्य के उसके अपने बन्धु-बान्धव परिवार परिजन के लोग, इष्ट मित्र और अन्य सम्बन्धी तो उसकी प्रशंसा करते ही हैं जो विरोधी लोगों के भी मुह से निकले वास्तव में गुण वही है जिनकी दुश्मन भी तारीफ करें। सचमुच ऐसा ही व्यक्ति महान होता है।

इस प्रकार के सौभाग्यशाली मनुष्य संसार मे बहुत कम मिलते हैं। गत पाच सहस्र वर्षों में योगी राज श्री कृष्ण के पश्चात ऐसे ही सर्व प्रशसनीय महान आत्माओं में (१६ वीं शताब्दी में (सन १८२४) महान क्रान्तिकारी, समाज, सुधारक, आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्दजी जैसे अद्वितीय राष्ट्र नेता का प्रादुर्भाव हुआ, कुछ विरोधी विचार वाले, विधर्मी, धर्म गुरुओं, विद्वानों, चिकित्सकों और राजनीतिक नेताओं के द्वारा महर्षि को मार्मिक शब्दों में दी गई श्रद्धाजलिया नीचे दी जा रही हैं। जिनसे पता चलेगा कि विरोधी धारा वाले लोगों के दिलों में भी ऋषि के प्रति कितनी महान श्रद्धा और उच्च भावना थी। और वास्तव में महर्षि कितने महान व्यक्तित्व के धनी थे।

१—श्री मोहम्मद अली—३० अक्तूबर, १८८३ के सायं काल जबकि दीपावली की रात कृत्रिम दीपकों से प्रकाशमान था, संसार को प्रकाशित करने वाला सच्चा सूर्य अस्त हो गया था। आज के दिन संसार से वह चला गया जो बुरी प्रथाओं की बेड़िया पैरों मे और मद्यपान की हथकड़ियां हाथों मे पड़ी थी, उनसे मुक्ति दिलाता था। स्वायी दयानन्द जो मनुष्य मात्र को भाई बताता था, वह आज इनसे जुदा हो गया।

२—सर सैयद अहमद खां—अत्यन्त खेद की बात है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती साहब ने जो संस्कृत भाषा के बड़े विद्वान थे, और वेद के बहुत बड़े ज्ञाता थे ३० अक्तूबर १८८३ को अजमेर में परलोक गमन कर दिया। इनके चेले उनको देवता मानते थे। आपने हिन्दू धर्म का बहुत सुधार किया था। मूर्ति पूजा के बड़े कट्टर विरोधी थे। उन्होंने इस विषय में पण्डितों पर विजय पाई थी। हमसे और परलोक वासी दयानन्द से बहुत मुलाकात थी। हम सदा उनका निहायत सम्मान करते थे क्योंकि वे ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे कि प्रत्येक धर्म वालों को उनका सम्मान अनिवार्य था।

३—मिस्टर ह्यूम—स्वामी दयानन्द बड़ी पुण्य आत्मा थे और देश की प्रतिष्ठा का कारण थे।

४—श्री यूनिस—अग्रेजियत की बुरी आदतों से बचाने में स्वामी दयानन्द ने बहुमूल्य कार्य किया। उससे हिन्दुओं के साथ साथ मुसलमानों को भी बहुत फायदा पहुचा।

५—डा० स्टाक—शिकागो-वर्तमान समय में संस्कृत का एक ही बडा विद्वान, साहित्य का पुतला, वेदों के महत्व को समझने वाला अत्यन्त नैयायिक यदि भारतवर्ष मे हुआ तो वह ऋषि दयानन्द सरस्वती थे।

६—मिर्जा याकूब वेग-स्वामी दयानन्द जी मुसलमानों के मित्र थे और मुसलमानों का भी बर्ताव बहुत अच्छा था। यहा तक कि सनातन धर्मी हिन्दुओं ने उनको बहुत पसन्द नहीं किया तो फिर जनाब डा० रहीम साहब ने स्वामी जी को अपने घर में स्थान दिया (लाहौर में) और आदरणीय अतिथि के रूप में उनकी आवभगत की।

७—श्री अरविन्द-श्री ऋषि दयानन्द जी की सबसे बड़ी महत्ता इसमें थी कि उन्होंने इतिहास की तिमिराच्छादित अज्ञानमयी कोठरों में से निकालकर वेदों को सर्वसाधारण के सम्मुख उपस्थित किया और उसकी संकुचित व्रत से परे मनुष्यमात्र के कल्याण के लिये प्रस्तुत किया वेदार्थ कुंजी ऋषि ने ही खोज निकाली।

८—श्री जस्टिस हेरिसन-बहुत से धार्मिक तथा सदाचार सम्बन्धी कारणों के कारण हिन्दू जाति परतन्त्र बनी। उस पर ऋषि दयानन्द ने खेद व्यक्त किया था। दयानन्द के प्रचार का मुझे एक उद्देश्य यह भी दिखाई देता है कि देश को स्वराज्य प्राप्त हो।

लोकमान्य तिलक—ऋषि दयानन्द जाज्वल्यमान नक्षत्र थे जो भारतीय आकाश पर अपनी अलौकिक भावना से काम करके और गहरी निद्रा में सोये हुए भारत को जागृत किया। स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देश वाहक और मानवता के उपासक थे।

७—मिस्टर ऐन्ड्रूज जेकसन-मुझे एक आग दिखाई पड़ती है जो सर्वत्र फैली है जो द्वेष को जलाने वाली है और प्रत्येक वस्तु को जलाकर शुद्ध कर रही है। हिन्दू, मुसलमान और ईसाई इस प्रचण्ड अग्नि को बुझाने के लिए चारों ओर वेग से दौड़े परन्तु यह आग ऐसे वेग से बढ़ती गई कि जिसका इसके प्रकाशक स्वामी दयानन्द को ध्यान भी न था। सम्पूर्ण दोषों को नित्य की शुद्धि करने वाला भट्टी में जलाकर भस्म हो जावेगा। यहां तक कि झूठे विश्वासों के स्थान में तर्क पाप के स्थान में पुण्य, अविद्या की जगह विज्ञान, द्वेष की जगह मित्रता, नरक के स्थान में स्वर्ग, भूत प्रेतों के स्थान में परमैश्वर्य और प्रकृति का राज्य हो जावेगा। यह आग एक भट्टी में थी जिसे आर्य समाज कहते हैं। यह भारत वर्ष के परम योगी दयानन्द के हृदय मे प्रज्वलित हुई थी।

इसी प्रकार और अनेको महानुभावों ने ऋषि के प्रति उनके विचारों से सहमत न होते हुए भी बड़े मार्मिक शब्दों में श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं, यहां स्थानाभाव के कारण अब नही दी जा सकती। ऐसे जगत विख्यात सर्वप्रशंसनीय महान क्रान्तिकारी देशहितैषी, वेदोद्धारक, समाज सुधारक उन्नीसवीं शताब्दी की जाग्रति के अग्रदूत, साधु, दृढ़ निश्चयात्मक प्रतिभाशाली, बालक, निष्ठावान विलक्षण गुरु आज्ञा पालक, सर्वजनहितकारी आर्य समाज जैसी पवित्र सस्था के संस्थापक निर्भीक सन्यासी का भौतिक जन्म (माता-पिता द्वारा) आज से १५७ वर्ष पूर्व सन् १८२४ में गुजरात काठियाबाड़ की मौरवी नामक स्टेट में एक टंकारा नाम के ग्राम में एक स्टेट अधिकारी शिव भक्त प० कृष्णदत्त तिवारी के घर हुआ था। और उनका बौद्धिक जन्म लगभग आज से १५० वर्ष पूर्व सन १८३८ में महाशिवरात्री पर्व के अवसर पर चौदह (१४) वर्ष की आयु में अपने घर के समीप स्थित एक शिव मन्दिर मे शिवव्रत का पालन करते हुए हुआ था। उनके इस वैयक्ति जन्म को आर्य समाज के बन्धु बांधव गत अनेक वर्षों से प्रति वर्ष इसी शिवरात्रि के व्रत के दिन ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाते आ रहे हैं। कुछ वर्षों से उनके जन्म स्थान टंकारा ग्राम में भी यह उत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनता आ रहा है। हिन्दी महीनों की तिथियों के अनुसार इन दोनों जन्मों का अन्तर केवल ३ दिन हैं। अर्थात् भौतिक जन्म, फाल्गुन वदी दसवी और बौद्धिक जन्म फाल्गुन वदी त्रियोदशी है। अतः हमे चाहिए इन दोनों दिनों को एक साथ ही मिलाकर बड़ी धूम-धाम से मनाये।

ऐसे क्रातिकारी निर्भीक संन्यासी द्वारा स्थापित जनहितकारी संस्था आर्य समाज ने महर्षि के जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के पश्चात अपनी अल्प आयु में अपने प्रचार-प्रसार के द्वारा देश समाज, राष्ट्र का स्वरूप ही बदल दिया है। जीवन के हर क्षेत्र में महान क्रान्ति पैदा कर दी। इसके परिणामस्वरूप हम आज स्वतन्त्र देश के हैं और सब प्रकार से उन्नत हैं। विश्व के विकसित और उन्नत देशों की पंक्ति में उचित स्थान प्राप्त किये हैं। इसी संस्था के सम्बन्ध में महर्षि प्रायः कहा करते थे "जो उन्नति करना चाहे तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करता

(शेष पेज ८ पर)

(पेज ४ का शेष)

स्वीकार कीजिए। नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना और जिनसे अब भी पालन होता है और आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से मिलकर सब करें, इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस आर्य समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं। परन्तु विगत कुछ दशकों से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों में काफी कुछ शिथिलता आई है। विशेषकर स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् १९४७ से। इसके परिणामस्वरूप जो सामाजिक दुष्प्रवृत्तियां वर्षों से समाप्त हो गई थी फिर से उभर कर आ खड़ी हो गई है। संघटन का स्थान विघटन ने ले लिया है। साम्प्रदायिकता की क्रूर राक्षसी फिर से अपना ताण्डव नृत्य करने लगी है। भ्रष्टाचार का बोल बाला है जिसके दूषित प्रभाव से जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं है।

ऐसी संस्था के शिथिलता के कुछ प्रचार-प्रसार के कारणों से एक मुख्य कारण यह है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व हमारे जीवनों पर धर्म की छाप लगी थी जबकि अब दूषित राजनीति की छाप लगी है। इसके साथ-साथ आर्थिक व सामाजिक स्थितियों में भी बड़ा परिवर्तन हो गया है, जिस प्रकार साधारण जनता धर्म के महत्व और प्राचीन मूल्यों की महत्ता को भूलकर कंचन कामिनी के सुन्दर प्रलोभनों में सत्य मार्ग को त्याग कर विषयभोगों की संकीर्ण गलियों में चले जा रहे हैं। प्रचार-प्रसार के अभाव में लोगों ने सदाचार तथा धर्म के तत्वों के महत्व को परमात्मा की सत्ता की भावना को अपने जीवन व्यवहार में से ऐसा तुच्छ समझकर बाहर फेंक दिया है जैसे कोई गृहणी दूध में पड़ी मक्खी को निकाल बाहर फेंक देती है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार फैला है विशेषकर राजनीति के क्षेत्र मे तथाकथित हमारे नेता लोग जैसे-तैसे एन-केन-प्रकारेण सत्ता हथियाने में लगे हैं। इन्हीं राजनीतिक लोगों ने अपने वोट बैंक को सुसमृद्ध करने हेतु किन्हीं प्रदेशों में सम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रखा है। जिस कारण एक जाति दूसरी जाति के लोगों की हत्या करने पर ऐसे उतारू प्रतीत होती है जैसे कोई भेड़-बकरी को मारता हो। महर्षि ने तो समाज को सुसमृद्ध और सशक्त बनाने हेतु जातिपाति रहित समाज का स्वप्न लिया था।

इसी प्रकार अन्य और सामाजिक कुरीतियां उभर कर आगे आ खड़ी हुई हैं। जिनका दमन करना आवश्यक हो गया है। अतः हमें चाहिए कि इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कुछ ऐसे ठोस कदम उठाने की योजना बनाएं कि जिससे ये दुष्प्रवृत्तियां सर न उठा सके यह तभी सम्भव है जब सब आर्य सभाएं व बन्धु बान्धव सब आपसी भेद-भाव को मिटाकर एकजुट होकर कार्य सलग्न हों। यही समय की मांग है ताकि आगे आने वाली पीढ़ियां आज के नेताओं को इस ह्रास के उत्तरदायी न ठहरायें।

प्रभु हम सबको सुमति दे।

पुरोहित सन्यासी व वानप्रस्थी की आवश्यकता है

आर्य समाज मन्दिर, ग्राम व डाकघर-तुगलकाबाद दिल्ली-४४ के लिए, नि:शुल्क, आवास तथा भोजन की व्यवस्था, आर्य समाज की ओर से होगी। जो आय संस्कारों आदि से होगी वह उपरोक्त व्यक्ति की होगी। शीघ्र सम्पर्क करें।

घर फोन-६४२०१५५ भगवतसिंह, मन्त्री

करोल बाग महिला मण्डल

महिला मण्डल करोल बाग के तत्वावधान में आर्य स्त्री समाज चूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव व शिवरात्री का पर्व ८ ३ ९५ को १२ बजे दोपहर से ४-३० बजे तक मनाया जायेगा।

कृष्णा रघुनन्दन मन्त्रिणी

पद्मश्री डा. कपिलदेव द्विवेदी को १९९२ के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

ज्ञानपुर (भदोही) प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान 'पद्मश्री' डा० कपिलदेव द्विवदी को उ. प्र संस्कृत आकादमी १९९२ के विशिष्ट पुरस्कार देने की घोषणा की है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत पच्चीस हजार रुपये तथा प्रशस्तिपत्र से सम्मानित किया जाता है। यह पुरस्कार उ०प्र० संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत साहित्य के प्रचार-प्रसार एव विकास की २५ वर्ष से अधिक की विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है।

डा० द्विवेदी के ७० से भी अधिक उच्चस्तरीय ग्रन्थ वेद, संस्कृत साहित्य, संस्कृत व्याकरण एव भाषा विज्ञान पर प्रकाशित हो चुके हैं। आप वैदिक वाङ्मय के सुप्रतिष्ठित विद्वान है। इससे पूर्व आपके आधा दर्जन ग्रन्थ-अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन, संस्कृत व्याकरण, संस्कृत निबन्धशतकम्, राष्ट्रगीताजलि, भक्ति-कुसुमांजलि व अथर्ववेद का सास्कृतिक अध्ययन उ०प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं। संस्कृत साहित्य मे विशिष्ट योगदान के लिए भारत सरकार ने आपको १९९१ मे 'पद्मश्री' से अलंकृत किया। १९९१ मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार दिया गया। आपको लन्दन विश्वविद्यालय, फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी आफ ईस्टवेस्ट यूनिवर्सिटी न्यूयार्क, टोरन्टो विश्वविद्यालय, सूरीनाम विश्वविद्यालय एव सूरीनाम तथा मारीशस के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

७६ वर्षीय डा० कपिलदेव द्विवेदी देश विदेशी १० भाषाओ के ज्ञाता हैं। आप संस्कृत भाषा की सरलीकरण पद्धति के उन्नायको मे से है। आप वेदामृतम् ग्रन्थमाला के ४० भागो पर लेखन कार्य कर रहे हैं—जिसके १६-भाग सुखी जीवन सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा, नीतिशिक्षा, वेदो में नारी, वैदिक मनोविज्ञान, चारो वेदो के सुभाषितावली तथा वेदो मे आयुर्वेद प्रकाशित हो चुके है। यह ग्रन्थ जनसाधारण को वेदो का अत्यन्त सरल भाषा मे समझने के लिए लिखे गए हैं। वेदामृतम् ग्रन्थमाला तथा एसेन्स आफ वेदाज, अथर्ववेद का सास्कृतिक अध्ययन देश विदेश मे काफी लोकप्रिय हुए हैं।

आपने २५ हजार से अधिक पृष्ठो पर लेखन कार्य किया है। आर्यसमाज एव भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ दो दर्जन देशो की यात्रा भी की है। आपने प्रमुख रूप से अमेरिका, जर्मनी, हालैण्ड, इंग्लैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, फ्रास, ईटली मारीशस, सूरीनाम, गुयाना की यात्रा कर चुके हैं। आप विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर के निदेशक भी हैं।

डा० आर्येन्दु
मन्त्री विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (भदोही)

कृपया पाठक ध्यान दें

प्रिय पाठक गण !

स्वामी प्रज्ञानबोध सरस्वती विशेषांक प्रकाशित होने पर सभी को यथा समय प्रेषित कर दिया जायेगा।

--सम्पादक

सूचना

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा, नई दिल्ली के तत्वाधान में आर्य समाज श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली के उत्सव पर महर्षि दयानंद निर्माण दिवस।

रविवार २७ नवम्बर ९४ को बड़े समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता दानवीर श्री कृष्ण लाल जी सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा नई दिल्ली ने की। समारोह ने सर्वश्री डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा० महेश विद्यालंकार, श्री विश्वमित्र मेधावी शास्त्री पण्डित रविदत्त गौतम, श्री हुकमचन्द वेदालंकार, श्री हरबन्स लाल कोहली, श्रीमती सरला पौल ने अपने विचार रखे। और श्री गुलाबसिंह राघव के मनोहर भजन हुए।

श्रद्धांजलि अर्पित

नई दिल्ली २६ जनवरी। आर्यसमाज पालम कालोनी के निवर्तमान कोषाध्यक्ष श्री नेकीराम जी की श्रद्धांजलि सभा उनके निवास स्थान राज-नगर पालम कालोनी में आर्यसमाज पालम कालोनी के प्रधान कै० भागमल सिंह जी की अध्यक्षता मे आयोजित की गई। जिसमें अनेक गणमान्य महानुभावों ने अपने श्रद्धासुमन श्री नेकीरामजी को अर्पित किये।

श्री नेकीराम जी एक कर्मठ, स्वाभिमानी, मधुरभाषी तथा कर्मशील व्यक्ति थे। सन् १९८४ से १९९२ तक आर्यसमाज पालम कालोनी के कोषाध्यक्ष के रूप में काम करते रहे। बुरे से बुरे दिन में भी समाज में समर्पण की भावना से काम करते रहे थे। ७१ वर्ष के थे। लम्बी बीमारी के कारण दिनांक १५-१-९५ को इनका देहावसान हो गया।

दिनांक २६-१-९५ को प्रातः १० बजे स्वामी स्वरूपा नन्द जी के ब्रह्मत्व में एक शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। तत्पश्चात दोपहर दो बजे श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इसमें स्वामी स्वरूपा नन्द जी का प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक श्री धर्मदेव सोलंकी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, दिल्ली प्रदेश के प्रधान, पालम के निरंकारी सभा के प्रधान, आर्य समाज के उपप्रधान पं० श्याम प्रकाश आर्य, समाज के भूतपूर्व मन्त्री श्री जगदीश चन्द गुप्ता, श्री डा० एस० आर० डोगराजी आदि अन्य गण-मान्य व्यक्तियों ने इन्हे महान त्यागी, तपस्वी बताते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज के प्रधान श्री कै० भागमलजी ने कहा कि इनके साथ रहकर समाज का काम करने में बड़ा उत्साह तथा आनन्द आता था। ये एक कर्मठ ईमानदार एवं नेक व्यक्ति थे। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर इनकी आत्मा को शांति प्रदान करे एवं इनके परिवारजनों को साहस धैर्य दें ताकि समाज के अधूरे काम को ये लोग पूरा कर सकें। रस्म पगड़ी के साथ शान्ति पाठ व उनके सुपुत्र श्री सुशील कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। मंच संचालन आर्य समाज के उपमन्त्री श्रीकृष्ण माधव प्र० आर्य ने किया।

कृष्ण माधव आर्य
उपमंत्री

आर्य समाज, पांडव नगर दिल्ली-९१ की ओर से

-अपील-

जनवरी १९९३ मे राष्ट्रीय मार्ग २४ को चौड़ा करने के नाम पर ई १६०-१६१ पाण्डव नगर-९१ पर स्थित आर्य समाज मन्दिर को लोक निर्माण विभाग, दिल्ली द्वारा गिरा दिया गया था। यह मन्दिर सन् १९८२ से लगभग १८० गज में दो कमरे तथा यज्ञशाला के साथ बना हुआ था। इस सम्बन्ध में समाज ने दिल्ली प्रदेश के उप-राज्यपाल तथा मुख्यमन्त्री दिल्ली को समाज मन्दिर गिराये जाने के स्थान में बदले में कोई स्थान दिलाने का निवेदन किया था परन्तु किसी ने भी कोई सुनवाई नहीं की।

पाण्डव नगर मे ही एक देसी शराब का ठेका है जहां उसके आस-पास अनेक दुर्घटनाएं होती रहती हैं साथ में कल्याणपुरी तथा त्रिलोकपुरी के निवासी इस ठेके से शराब खरीदते हैं। पाण्डव नगर की जनता समय-समय पर इस ठेके को हटाने की माग करती रहती है परन्तु इसे हटाने के लिए कोई अभी तक उचित कार्यवाही नहीं की गई।

दिल्ली की सभी आर्य समाजो से पाडव नगर आर्य समाज अपील करती है कि इस दिशा मे इस शराब के ठेके को शीघ्र से शीघ्र हटाने में समाज की सहायता करें। आजकल सरकारी अधिकारी प्रदर्शन व आन्दोलन के अलावा और कुछ नहीं जानते। पांडव नगर निवासी इस ठेके को हटाने का अभियान चलाने के लिए काफी उत्साही हैं और धरना देने को तैयार हैं। हमारा अनुरोध है कि इस पाप की जड़ को यहां से शीघ्र हटाया जाय और इस स्थान को आर्य समाज पांडव नगर को मन्दिर के लिए दे दिया जाय।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती समारोह

२४ फरवरी १९९५ (शुक्रवार)

स्थान :

महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन दुग्ध केन्द्र

काजीपुर, केन्द्रीय गोदाम के पास, दिल्ली

समय : दोपहर २ बजे से ५ बजे तक

अध्यक्षता : **श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव**
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

मुख्य अतिथि : **श्री बलराम जाखड़**
केन्द्रीय कृषि मन्त्री

विशिष्ट अतिथि : **श्री मदन लाल खुराना,** मुख्यमन्त्री, दिल्ली
श्री मोहन लाल मोहथंब, उच्चायुक्त; मौरीशस

आपकी उपस्थिति सपरिवार एवं मित्रों सहित प्रार्थनीय है।

प० धर्मपाल — प्रधान
शिवकुमार शास्त्री — मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

। ओ३म्।

दैनिक यज्ञ पद्धति

मूल्य ३०० रुपए सैकड़ा

पुस्तक के मुख पृष्ठ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का सुन्दर चित्र

सफेद कागज, सुन्दर छपाई, शुद्ध संस्करण
प्रचारार्थ घर-घर पहुंचाए।

१—आर्य समाजों, स्त्री आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध है कि वैदिक संध्या तथा यज्ञ की भावना को घर-घर पहुंचाने के लिए आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव तथा अन्य पर्वों पर इस पुस्तक को अधिक से अधिक क्रय करके अपने-अपने क्षेत्र के प्रत्येक घर में इसे अवश्य वितरित करें।

२—आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धकों तथा प्रधानाचार्यों से आग्रह है कि वे अपने विद्यालय में पढ़ने वाले प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक उपलब्ध करायें ताकि उसे वैदिक संध्या तथा यज्ञ कंठस्थ हों।

३—पुस्तक की एक प्रति का मूल्य ४ रुपए है। प्रचारार्थ ५० पुस्तकों से अधिक क्रय करने पर २५ प्रतिशत की छूट दी जायेगी।
पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जायेगा। कृपया अपना पूरा पता एवं नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान— दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष-३३०१२०

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-३६३६५० फोन: (०२८२२) ८४७५६

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

मान्यवर,

सादर नमस्ते।

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव २६. २७. २८ फरवरी १९९५ तदनुसार रविवार सोमवार, मगल को ऋषि जन्मस्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा, जिसके ब्रह्मा प्रो० धर्मेन्द्र शास्त्री होंगे। इसके अतिरिक्त देश विदेश से पधारे हुए आर्य विद्वान ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

इस समय टंकारा में (१) अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय इसमें ४ वर्ष का सिद्धांताचार्य कोर्स एवं गुरुकुल ज्वालापुर से सम्बन्धितपंचवर्षीयविद्याभास्कर कोर्स आचार्य विद्यादेव शास्त्री के प्राचार्यत्व में सुचारु रूप से चल रहा है। अब तक लगभग २०० स्नातक इस विद्यालय से उपाधि प्राप्त करें। (२) गौशाला (३) अतिथि गृह (४) प्रचार के कार्य सुचारु रूप से चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार मे लेकर विश्वदर्शनीय बनाना सबसे अग्रणी कार्य है। पिछले वर्ष वर्ष हमने बहुत बड़ा भाग अपने अधिकार में ले लिया था जिसका पुनर्निर्माण करना है।

ऋषि मेले पर देश विदेश से हजारों ऋषि भक्त पधारते हैं, उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क ट्रस्ट की ओर से की जाती है।

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने में व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय में आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक स० अवश्य लिखें।

—सम्पादक

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 9-10-2-1995 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C) 139/95

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५

"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १२ फरवरी १९९५

आर्य महिला [illegible] शिक्षण महाविद्यालय में कु. शैलजा के उद्गार

अलवर, १६ जनवरी। केन्द्रीय शिक्षा एवं संस्कृति उपमन्त्री कु० शैलजा ने कहा कि लोगों के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है लेकिन वह ऐसी होनी चाहिए जो लोगो को नैतिक सम्बल प्रदान कर सके तथा अच्छे सस्कारो से देश को अच्छे नागरिक दे पाने मे समर्थ हो सके।

शिक्षा उपमन्त्री ने सोमवार को आर्य कन्या महाविद्यालय के सभागार में आयोजित एक समारोह को सबोधित करते हुए कहा कि देश मे चल रहे कुलैपव के दौर मे टेलीविजन व फिल्मों के जरिये हमारी सांस्कृतिक विरसत पर खतरे के बादल मडरा रहे हैं। इसका किशोर पीढ़ी पर जो प्रभाव पड़ रहा है उसका सही अहसास बीस वर्ष बाद होगा जबकि आज का किशोर कल के देश का उत्तरदायी नागरिक बनेगा। इसलिए ऐसे समय में हमें गम्भीर विचार मंथन करके ही हमारी सतति को शिक्षा देनी है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक देश आधुनिकता में बहुत आगे कहे जाते हैं लेकिन उनके पास अपनी सास्कृतिक धरोहर की पहचान बताने वाले कोई चिन्ह नहीं हैं और भारत एक ऐसा देश है जिसने अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखा है। अ: हम उचित शिक्षा के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को कायम रख सकते है।

कु० शैलजा ने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत महिला शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है और आजकल स्वय प्रधानमन्त्री इस मन्त्रालय को देख रहे हैं जो कि महिलाओं को श्रेष्ठ [illegible] के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने कहाकि महिला उत्थान के लिए आर्य समाज का योगदान अत्यन्त सराहनीय है। जिसने विषम परिस्थितियों मे भी महिला उत्थान के लिए कार्य किया और जिसे तत्कालीन समय मे सुषुप्त क्राति का नाम दिया गया। उन्होंने महिला शिक्षण सस्थाओं के सचालन के लिए स्वयसेवियो से आगे आने का भी आह्वान किया।

गुरुकुल आश्रम पूठ, गाजियाबाद द्वारा गढ़ गंगा के मेले पर विशाल शिविर का आयोजन

गुरुकुल आश्रम पूठ गाजियाबाद द्वारा कार्तिक मेले के अवसर पर १५ नवम्बर से १८ नवम्बर ९४ तक एक वेद प्रचार शिविर का विशाल आयोजन किया गया। जिसमें आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, साधु महात्माओं के प्रवचन हुए उपदेशको के भजन हुए साथ ही विभिन्न प्रकार के सम्मेलन आयोजित किए गए। प्रात: यज्ञ पर लोगों से प्रतिज्ञा कराई गई कि कोई नशे का सेवन नहीं करेंगे दहेज के लिए युवकों ने सकल्प लिए मध्यांत के कार्यक्रमों में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया जिसका जगत पर विशेष प्रभाव पड़ा। किसान नेता महेन्द्रसिंह टिकैत ने भी आकर शिविर मे पूज्य आचार्य धर्मपाल जी सचालक से आशीर्वाद लिया और गुरुकुल के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त की जिले के किसान नेताओं के अतिरिक्त श्री मनवीर सिंह जी, सौदानसिंह आर्य, बलराजसिंह आर्य ने मेरठ से आकर शिविर की शोभा बढाई। तीन दिन तक ऋषि लगर चलता रहा प्रदीप आर्य प्रकाश आर्य का सहयोग प्रशसनीय रहा।

सेवा में—

(३६)

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

[illegible] द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : —३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४/९५

साप्ताहिक ओ३म्

आर्य सन्देश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १८ अंक १७ रविवार, १९ फरवरी १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द : १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०५१

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन—२५० रुपये विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३३०१५०

आर्यसमाज प्रीति विहार में पूर्वी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि उपसभा द्वारा भव्य आयोजन

कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्री सूर्यदेव जी का परम्परागत अभिनन्दन

१२-२-९५ रविवार को पूर्वी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि उपसभा के सानिध्य में आर्य समाज प्रीति विहार मे समस्त पूर्वी दिल्ली की आर्य समाजों के लगभग २०० प्रतिनिधियो की उपस्थिति मे श्री सुरेन्द्र कुमार रैली प्रधान आर्य समाज प्रीति विहार की अध्यक्षता मे श्री सूर्यदेव जी को शाल भेट करके तथा प्रतीकचिन्ह देकर स्वागत किया गया। श्री दामोदार प्रसाद व श्री पन्नालाल सेठ ने स्वागत की प्रक्रिया को पूर्ण किया। इस अवसर पर श्री मिश्री लाल, ओम प्रकाश रोहिल; रामनिवास कश्यप, नन्द कुमार वर्मा शकरपुर, श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा, सुशीला लाल, सुभाष शर्मा लक्ष्मी नगर, श्री बी० आर० सोहल, सतीश दुआ, आहुजा जी, सूरजमल विहार श्री वेद प्रकाश बत्रा, ओम प्रकाश दयानन्द विहार, श्री सूर्य प्रकाश रणजीत लाल चावला मयूर विहार, श्री दामोदर प्रसाद आर्य खिचड़ी पुर, श्री रवि बहल, श्री कुमार, सूद साहब निर्माण विहार, श्री रोशन लाल गुप्ता सरोजनी नगर आदि विशेष रूप से अपनी-अपनी समाजो का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

विशेष वक्ता :—

श्री डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय व महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा श्री वेदव्रत शर्मा, श्री स्वामी स्वरूपानन्द, श्री गुलाब सिह राघव, माता अग्निहोत्री आदि ने अपने विचार प्रकट किये।

डा० धर्मपाल ने सभी उपस्थित जनो को विश्वास दिलाया कि गुरुकुल के स्वरूप को स्वामी श्रद्धानन्द व आर्य समाज की आशा के अनुरूप बनाने में हम दोनो अथक परिश्रम करेंगे। दिल्ली के नाम को उज्ज्वल रखेंगे। अभी तक जो भी व्यवस्था थी उसमे बहुत सुधार हो चुका है।

श्री सूर्यदेव ने कहा कि आर्य समाज इस राष्ट्र का सजग प्रहरी है। जब भी इस देश पर सकट आया है आर्य समाज ने अत्यन्त कर्त्तव्य निष्ठा से अपने उत्तर-दायित्व का निर्वाह किया है। पाकिस्तान अपनी हरकतो मे हमे बार-बार चुनोती देता है। अभी २६ जनवरी को जो उसने घृणित कार्य किया है उस पर समस्त आर्य जगत को अपना रोष प्रकट करना चाहिए।

गुरुकुल की चर्चा करते हुए कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति मे अब इस प्रकार का परिवर्तन हो कि वहा का स्नातक आजीविका के लिए दर-दर भटकता न रहे बल्कि शिक्षा आजीविकोन्मुख हो। जहा वेद के प्रचारक उत्पन्न हो वहा उन्हे परामुख पेक्षी न बनना पडे। ऐसा प्रयत्न होना आवश्यक है।

सभा मे स्वामी स्वरूपानन्द ने कविता पाठ किया। गुलाब सिह राघव ने सगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जगदीश आर्य ने भी कविता पाठ किया। श्री वेदव्रत शर्मा ने भी अपने उद्‌गार प्रकट किये। माता अग्निहोत्र ने आशीर्वाद दिया। सभा का सुचारू रूप से सचालन श्री पतराम त्यागी मत्री उपसभा ने किया। आर्य समाज प्रीति विहार ने सभी अभ्यागतो का स्वागत व प्रीति भोज का आयोजन किया।

इस सप्ताह के विशेष कार्यक्रम

आर्य समाज तुगलकाबाद मे आर्य समाज हनुमान रोड के आयोजन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली देहात प्रचार का कार्यक्रम दिनांक १३-२-९५ से १९-२-९५ तक रखा गया है जिसमे सभा की ओर से स्वामी स्वरूपानन्द व श्री चुन्नीलाल भजनोपदेशक का प्रचार कार्य विशेष रूप से रहेगा।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस

दिनांक २४-२-९५ दिन शुक्रवार को

स्थान—श्री दयानन्द गो सम्वर्द्धन केन्द्र गाजीपुर

(पटपड़गंज बस डिपो के समीप) (पूर्वी दिल्ली) मे मनाया जायेगा।

ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज सूरज मल विहार मे ऋषि बोधोत्सव दिनांक २६-२ ९५ रविवार को प्रातः ९ बजे से १-३० बजे मध्याह्न तक मनाया जायेगा। उसके बाद प्रीतिभोज होगा अध्यक्षता श्री सूर्यदेव करेंगे।

ऋषि बोधोत्सव

दिल्ली केन्द्रीय आर्य समाज के तत्वावधान में दिनांक २७-२-९५ को लाल किला मैदान में दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से ऋषि बोधोत्सव मनाया जायेगा। अध्यक्षता श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा करेंगे।

ऋषि दयानन्द वचनामृत

—काम वासना जीतने का यह विधान है कि एकान्त स्थान में रहे, नाच आदि कभी न देखे। अनुचित स्वरूप को देखना, अनुचित शब्द सुनना और अनुचित वस्तुओ का स्मरण करना परित्याग कर देवे। स्त्रियों की ओर न निहारे, नियम पूर्वक जीवन व्यतीत करे। इन साधनो से वासना मन्द हो जाती है। मनुष्य जितना वासना की तृप्ति का यत्न करेगा वह शान्त न होकर उतनी ही बढती चली जायेगी। इसलिए विषय वासना का चिन्तन भी न करे।

—प्राचीन काल मे आर्य जन वैदिक सस्कार किया करते थे, वैदिक आचारयुक्त होते थे, इसलिए उनकी सन्तान मे ओज होता था, तेज होता था और शूरवीरता होती थी। परन्तु इस युग मे लोग इन्द्रियाराम और विषयानन्द को ही प्रधानता दिए हुए हैं, वैदिक सस्कारों का त्याग कर बैठे हैं। लोगो के गृहो मे कुरीतियों की भरमार है। इसलिए उनकी सन्तान भी निस्तेज, दीन दुखीया उत्पन्न होती है।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

खान पान के विषय में ऋषि दयानन्द का मन्तव्य

आचार्य सुधाकर एम० ए०

महर्षि दयानन्द ने भोजन के विषय में पवित्रता को ध्यान में रखकर अपने विचारों को सत्यार्थ प्रकाश में निम्न रूप में लिखा है :—

प्रश्न—एक साथ खाने में दोष है वा नहीं ?

उत्तर—दोष है क्योंकि एक के साथ दूसरे का स्वभाव और प्रकृति नहीं मिलती, जैसे कुष्ठी आदि के साथ खाने से अच्छे मनुष्य का भी रुधिर बिगड़ जाता है, वैसे दूसरे के साथ खाने में भी कुछ बिगाड़ ही होता है, सुधार नहीं इसीलिये :—

नोच्छिष्टं कस्य चिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा।
न चैवात्यसनं कुर्यान्न चोच्छिष्टः क्वचिद्व्रजेत ॥

न किसी को अपना जूंठा पदार्थ दे और न किसी के भोजन के बीच आप खावे। न अधिक भोजन करे और न भोजन किये पश्चात् हाथ मुख धोये बिना कही इधर-उधर जाय।

आजकल कुछ लोग अपने गुरुओ का जूंठन खाने को उत्तम समझते हैं। गुरु की जूठन को भक्तों के खाने में डाल देते हैं स्वामीजी महाराज ने इसका स्पष्ट निषेध किया है।

प्रश्न—गुरोरुच्छिष्ट भोजनम्, इस वाक्य का क्या अर्थ होगा ?

उत्तर—इसका यह अर्थ है कि गुरु के भोजन किये पश्चात् जो पृथक अन्न शुद्ध स्थित है उसका भोजन करना अर्थात् गुरु को प्रथम भोजन कराके पश्चात् शिष्य को भोजन करना चाहिये।

प्रश्न—जो उच्छिष्ट मात्र का निषेध है तो मक्खियों का उच्छिष्ट शहद बछड़े का उच्छिष्टदूध और एक ग्रास खाने के पश्चात् अपना भी उच्छिष्ट होता है पुनः उसको भी न खाना चाहिये।

उत्तर—शहद कथन मात्र को ही उच्छिष्ट होता है परन्तु वह बहुत-सी औषधियों का सार ग्राह्य, बछड़ा अपनी मां के बाहर का दूध पीता है, भीतर के दूध को नही पी सकता है इसलिये उच्छिष्ट नहीं होता, परन्तु बछड़े के पिये पश्चात् जल से उसकी मां का स्तन धोकर शुद्ध पात्र मे दोहना चाहिये। अपना उच्छिष्ट अपने को विकार कारक नहीं होता. देखो। स्वभाव से यह बात सिद्ध है कि किसी का उच्छिष्ट कोई न खावे, जैसे अपने मुख. नाक, कान, आख, उपस्थ और गुह्येन्द्रियों के मल मूत्रादि के स्पर्श में घृणा नही, क्या वैसे किसी दूसरे के मलमत्र के स्पर्श में नही होती है ?

इससे सिद्ध होता है कि यह व्यवहार सृष्टि क्रम से विपरीत नहीं है, इसलिये मनुष्य मात्र को उचित है किसी का उच्छिष्ट अर्थात् जूंठन न खाय।

प्रश्न—भला स्त्री पुरुष भी परस्पर उच्छिष्ट न खावें ?

उत्तर—नहीं, क्योंकि उनके शरीरों का स्वभाव भिन्न-भिन्न है।

प्रश्न—कहो जी ! मनुष्य मात्र के हाथ की हुई रसोई उस अन्न के खाने में क्या दोष है ? क्योंकि ब्राह्मण से लेके चाडाल पर्यन्त के शरीर हाड़, मास, चमड़े के हैं और जैसा रुधिर ब्राह्मण के शरीर में है वैसा ही चांडाल आदि, पुनः मनुष्य मात्र के हाथ की पकी हुई रसोई के खाने में क्या दोष है ?

उत्तर—दोष है, क्योंकि जिन उत्तम पदार्थों के खाने-पीने से ब्राह्मण-ब्राह्मणी के शरीर मे दुर्गन्धादि दोष रहित रज वीर्य उत्पन्न होता है वैसा चांडाल और चाडाली के शरीर में नही। क्योंकि चांडाल का शरीर दुर्गन्ध के परमाणुओं से भरा हुआ होता है वैसा ब्राह्मण वर्णो का नहीं। इसलिये ब्राह्मणादि उत्तम वर्णो के हाथ का खाना और चाडालादि नीच भगी चमार आदि का न खाना। भला जब कोई तुमसे पूछेगा कि जैसा चमड़े का शरीर माता, सास, बहन, कन्या, पुत्रवधु का है वैसा ही अपनी स्त्री का भी है तो क्या माता आदि स्त्रियों के साथ भी स्व स्त्री के समान वर्तेंगे ? तब तुमको संकुचित होकर चुप ही रहना पड़ेगा। जैसे उत्तम अन्न हाथ और मुख से खाया जाता है वैसे दुर्गन्ध भी खाया जा सकता है तो क्या मलादि भी खाओगे ? क्या ऐसा भी कोई हो सकता है ?

प्रश्न—जो गाय के गोबर से चौका लगाते हो तो अपने गोबर से क्यों नहीं लगाते हो ?

उत्तर—गाय के गोबर में वैसा दुर्गन्ध नही होता जैसा कि मनुष्य के मल से (गोमय) गोबर चिकना होने से शीघ्र नही उखड़ता न कपड़ा बिगाड़ता मलीन होता है। मिट्टी से मैल चढ़ता है वैसा सूखे गोबर से नहीं होता है। और गोबर से जिस स्थान का लेपन करते हैं, वह देखने में अति सुन्दर होता है। जहा रसोई वनती है वहा भोजनादि करने से घी, मिष्ट और उच्छिष्ट भी गिरता है उससे मक्खी, कीड़ी आदि बहुत से जीव मलिन स्थान के रहने से आते हैं। जो उसमें झाड़ू लेपनादि से शुद्ध प्रतिदिन न की जावे तो जानो पाखाने के समान वह स्थान हो जाता है। इसलिये गोबर, मिट्टी, झाड़ से सर्वथा शुद्ध रखना चाहिये और जो पक्का मकान हो तो जल से धोकर शुद्ध रखना चाहिए। इससे पूर्वोक्त दोषों की निवृत्ति हो जाती है। जैसे मियाजी के रसोई के स्थान में कही कोयला कहीं राख, कही लकड़ी, कही फूटी हाडी, कही जूठी रकेबी, कही हाड़ गोड़ पड़े रहते हैं और मक्खियो का तो क्या कहना ! वह स्थान ऐसा बुरा लगता है कि कोई श्रेष्ठ मनुष्य को तो वमन होने का भी सम्भव है और उस दुर्गन्ध स्थान के समान ही स्थान नही दीखता है। भला जो कोई इनसे पूछे कि यदि गोबर से चौका लगाने मे तो तुम दोष गिनते हो परन्तु चल्हे मे कण्डे जलाने, उसकी आग से तमाखू पीना, घर की भीति पर लेपन करने आदि से मिया जी का चौका भ्रष्ट हो जाता होगा इसमे क्या सन्देह।

प्रश्न—चौके में बैठके भोजन करना अच्छा है बाहर बैठकर ?

उत्तर जहा पर अच्छा रमणीय सुन्दर स्थान दीखे वहां भोजन करना चाहिये परन्तु आवश्यक युद्धादिको मे तो घोड़े आदियानो पर बैठकर वा खड़े-खड़े भी खाना-पीना अत्यन्त उचित है।

प्रश्न - क्या अपने ही हाथ का खाना और दूसरे के हाथ का नहीं ?

उत्तर जो आर्यो मे शुद्ध रीति से बनावे तो बराबर सब आर्यों के साथ खाने मे कुछ भी हानि नही, क्योंकि जो ब्राह्मणादि वर्णस्थ स्त्री पुरुष रसोई बनाने, चौका देने, बर्तन भाडे माजने. आदि बखेड़े में पड़े रहें तो विद्यादि शुभ गुणों की वृद्धि कभी नही हो सकती, देखो ! महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भूगोल के राजा, ऋषि, महर्षि आदि थे। एक ही पाकशाला मे भोजन किया करते थे। जब से ईसाई, मुसलमान आदि के मत-मतातर चले, आपस मे वैर विरोध हुआ। उन्होने मद्यपान, गोमांसादि का खाना-पीना स्वीकार किया उसी समय से भोजनादि मे बखेड़ा हो गया। देखो ! काबुल, कान्धार, ईरान, अमेरिका, युरोप आदि देशों के राजाओं की कन्या गान्धारी, माद्री, उर्वशी आदि से आर्यावर्त्त देशीय राजा लोग विवाह आदि व्यवहार करते थे। शकुनि आदि कौरव पांडवों के साथ खाते-पीते थे, कुछ विरोध नही करते थे, क्योंकि उस समय सर्व भूगोल में वेदोक्त एक मत था उसी मे सबकी निष्ठा थी।

इससे पता चलता है कि स्वामीजी महाराज इसीलिए अपने साथ अपना पाचक (रसोईया) रखते थे, क्योंकि जब वे रजवाड़ों में भ्रमण कर रहे थे तो उस समय उन्हें यह ज्ञात था कि राजाओं का भोजन मद्य, मांस से युक्त है अतः स्वयं स्वामी जी भोजन की पवित्रता पर विशेष ध्यान देते थे। कुछ आर्य समाज के लोग भोजन की सात्विकता पर ध्यान नहीं देते हैं बल्कि कुतर्क करके यह सिद्ध करते हैं कि आर्य लोग मद्य मांस का सेवन करते थे उन्हें सत्यार्थ प्रकाश का दशम् सम्मुल्लास का अन्तिम भाग पढ़ना चाहिये। मुझे यह कहने में संकोच नहीं करना चाहिये कि आर्य समाज के साधु-संन्यासियों, उपदेशकों, पुरोहितों आदि को उन तथाकथित नामधारी

(शेष पृष्ठ १ पर)

वेदों के विद्वान् एवं वैज्ञानिक संन्यासी : स्व० स्वामी सत्यप्रकाश

डा० भवानीलाल भारतीय

वेदों में वैज्ञानिक तत्वों के अनुसधाता स्वामी सत्यप्रकाश का नब्बे वर्ष की आयु में गत १९ जनवरी को निधन हो गया वे वेदों के उत्कृष्ट विद्वान्, दार्शनिक, परिव्राजक तथा विज्ञान एव वेद विषयक साहित्य के सुगम्भीर लेखक थे। डा० सत्यप्रकाश का जन्म १९०५ में हिन्दी के विख्यात दार्शनिक लेखक पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय के यहा हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रसायन विषय लेकर १९२७ में एम० एस० सी० की परीक्षा उत्तीर्ण और वहीं प्रथम डिमास्ट्रेटर, फिर प्राध्यापक और अन्त में विभागाध्यक्ष के पदों पर कार्य किया। १९३२ में उन्होंने डी० एस० सी० की उपाधि प्राप्त की और वे देश के सम्मानित रसायन विज्ञान के पण्डित बने। विज्ञान की ही भांति उनकी रुचि वैदिक अध्ययन में भी रही। विश्वविद्यालय की सेवा निवृत्त होने के बाद उन्होंने अपना सम्पूर्ण समय वैदिक अध्ययन को समर्पित कर दिया। मोहन मीकिन्स के आर्थिक सहयोग से उन्होंने वेद प्रतिष्ठान की स्थापना कर चारों वेदों का सुगम अंग्रेजी में अनुवाद किया। वेदों के उदात्त उपदेशों को विदेशी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने का उनका यह प्रयास अपने आप मे महत्वपूर्ण था।

डा० सत्यप्रकाश ने १९७१ में सन्यासी का बाना धारण कर लिया। अब वे देश विदेश में सर्वत्र भ्रमण कर वैदिक ज्ञान से जिज्ञासु जनों को कृतार्थ करने लगे। इग्लैण्ड तथा यूरोपीय देशो के अतिरिक्त अफ्रीका, अमेरिका तथा सुदूर मारिशस देश मे भी उन्होने धर्म प्रचारार्थ अनेक यात्रायें कीं। वेदों के अध्ययन में ब्राह्मण ग्रन्थो की सहायता अपरिहार्य होती है। हिन्दी में ऐतरेय तथा शतपथ ब्राह्मण का शाब्दिक अनुवाद स्वामीजी के पिता पं० गगाप्रसाद उपाध्याय ने किया था। शतपथ के इस अनुवाद को जब प्रकाशित करने का अवसर आया तो स्वामी सत्यप्रकाश ने इस ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका लिखकर यजुर्वेदीय शतपथ के विषय, कथा और शैली पर आलोचनात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला। उपनिषदों मे आये उपाख्यानों का उन्होंने अग्रेजी में अनुवाद पैरेबल्स एण्ड डायलोग्स फ्राम दि उपनिषद्स शीर्षक से किया।

वेदों के कल्प साहित्य में जहा श्रौत, धर्म तथा गृह्य सूत्रों पर विशेष रूप से टीका, भाष्य आदि, लिखे गये हैं, वहा इसी वेदाग मे परिगणित होने वाले शुल्व सूत्रो पर लेखनी चलाने का साहस बहुत कम विद्वानों ने किया है। स्वयं वैज्ञानिक होने के कारण स्वामीजी शुल्वसूत्रों के वैज्ञानिक आधार से सुपरिचित थे। फलत. उन्होंने आपस्तम्ब तथा बोधायन शुल्व सूत्रों को संस्कृत भाष्य तथा अंग्रेजी टीका सहित सम्पादित किया। भारत के प्राचीन वैज्ञानिकों और विज्ञान विषयक उनकी उपलब्धियो को प्रकाश मे लाने का उनका कार्य भी महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से उनकी कृतिया प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार, प्राचीन भारत मे रसायन का विकास, कोइन्डों इन एन्शिमेंट इण्डिया, ब्रह्मगुप्त के ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन तथा प्राचीन भारत में रेखागणित आदि विशेषतया चर्चित रही। स्वामी सत्यप्रकाश का योग विषयक अध्ययन गहन तथा तलस्पर्शी था। उन्होने पातञ्जल योग सूत्रों की अंग्रेजी में व्याख्या लिखी तथा योगागों को स्पष्ट करने के लिये अनेक लघु ग्रन्थ लिखे।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को वैज्ञानिक साहित्य से समृद्ध करने के लिये स्वामीजी ने इलाहाबाद की विज्ञान-परिषद् को पूर्ण सहयोग दिया। स्मरणीय है कि हिन्दी के माध्यम से वैज्ञानिक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिये १९१३ में विज्ञान परिषद् की स्थापना की गई थी। श्रीमती एनी बेसेन्ट, सर सी० वाई० चिन्तामणि, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, डा० गंगानाथ झा, डा० नील रत्न धर, गणिताचार्य डा० गोरखप्रसाद आदि अनेक गण-मान्य देश भक्त नेता तथा विद्वान् परिषद् के सभापित रह चुके थे। स्वामी सत्यप्रकाश भी १९६१ से ६७ तक इसके अध्यक्ष रहे। उनके प्रयास से ही परिषद् की विज्ञान नामक शोधपत्रिका प्रकाशित हुई और हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर लिखने के लिये लेखकों को प्रोत्साहित किया गया। हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली के कोश निर्माण बने स्वामीजी का पूर्ण सहयोग रहा। स्वामीजी के लेखन और विज्ञान एवं वेद विषयक, उनके अवदान को उत्तर प्रदेश सरकार, केन्द्रीय सरकार तथा आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई द्वारा समय-समय पर सम्मानित किया गया। निश्चय है कि उनके निधन से वैदिक और वैज्ञानिक जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है।

—८१४२३ नन्द वन जोधपुर

खान पान के विषय में (पृष्ठ २ का शेष)

आर्य समाजियो के यहा भोजन नही करना चाहिये जो मासादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते हैं। किन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे बड़े-से-बड़े संन्यासी भी मासाहारियों के यहा भोजन करते है। मैं सबको तो नहीं कह सकता किन्तु कालेज पार्टी से सम्बन्धित बहुत से आर्य समाजी मासाहार करते हैं तथा अण्डे खाते हुए तो गुरुकुल पार्टी के आर्य समाजी भी देखे जाते हैं। आर्य समाजों को अपने सदस्यों के आहार की शुद्धि पर ध्यान देने का आह्वान करना चाहिये। मैं जब कलकत्ता गया तो वहा कुछ बंगालियों ने मुझसे कहा कि आर्य समाज विधान सारिणी के लोग हमे आर्य समाज का सदस्य नहीं बनाते। मैंने आर्य समाज के पदाधिकारियों से बातचीत की तो उन्होंने उत्तर दिया कि बगाली मछली खाते हैं इसलिये इनको सदस्य नही बनाते। क्या दिल्ली की आर्य समाजे भी ऐसा कदम उठा सकती हैं ?

महर्षि स्वामी दयानन्द के उपदेश

बालकों को गायत्री मन्त्र का उपदेश

प्रथम लडको का यज्ञोपवीत घर मे हो और दूसरा पाठशाला मे आचार्यकुल मे हो। पिता-माता वा अध्यापक अपने लडके-लड़कियों को अर्थसहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें। वह मन्त्र यह है—

ओ३म् भूर्भुवः स्व। तत्सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात्॥

हे मनुष्यो! जो सब समर्थो मे समर्थ, सच्चिदानन्दा-नन्तस्वरूप, नित्यशुद्ध, नित्यबुद्ध, नित्यमुक्त स्वभाव वाला, कृपा सागर, ठीक-ठीक न्याय का करने हारा, जन्म-मरणादि क्लेशरहित, आकाररहित, सबके घट-घट का जानने वाला, सबका धर्त्ता, पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करने हारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त, जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है, उस परमात्मा का जो शुद्ध, चेतनस्वरूप है उसी को हम धारण करें। इस प्रयोजन के लिए कि वह परमेश्वर हमारे आत्मा और बुद्धियो का अन्तर्यामिस्वरूप हमको दुष्टाचार अधर्मयुक्त मार्ग से हटा के श्रेष्ठाचार सत्य मार्ग मे चलावे, उसको छोडकर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नही करें। क्योकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है। वही हमारा पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों का देनेहारा है।

इस प्रकार गायत्री मन्त्र का उपदेश करके सन्ध्योपासना की, जो स्नान, आचमन, प्राणायाम आदि क्रिया हैं सिखलावें। (३९)

आयुर्वेद का अध्ययन

सब वेदो को पढ के आयुर्वेद अर्थात् जो चरक, सुश्रुत आदि ऋषि-मुनिप्रणीत वैद्यक शास्त्र है उसको अर्थ, क्रिया, शस्त्र, छेदन, लेप, चिकित्सा, निदान, औषध, पथ्य, शरीर, देश, काल और वस्तु के गुण ज्ञान पूर्वक चार वर्ष के भीतर पढ़ें पढावें।

महापर्व शिवरात्रि का सन्देश

वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति

टेक—शिवरात्रि आज फिर आई है नूतन संदेश लाई है।
तुम पड़े हुए किस उलझन में ग्रन्थियां सभी हैं सुलझाओ,
सत्यार्थ कसौटी लो करमें सन्मार्ग दिखाने आई है। शिवरात्रि।
तुम चक्रवर्ति थे बने हुए और जगत गुरु कहलाते थे।
इस विकृत रूप के मस्तानो क्या लज्जा तुम्हें नहीं आई है। शिव।
गुरु डमको घोर अन्धेरी मे पाखण्ड धरा पर छाया है।
शास्त्रार्थ पुन प्रारम्भ करो यह पाठ पढ़ाने आई है। शिव।
तुम ओ३म् नाम अनुगामी हो और आर्य पुत्र कहलाते हो।
इस राग-द्वेष के चक्कर से तुम्हे मुक्त कराने आई है। शिव।
गोमात के कण्ठ कटारी से भारत माता दुखियारी है।
इस पाप को शीघ्र मिटाने की सौगन्ध दिलाने आई है। शिव।
अंग्रेज गये अंग्रेजियत का यह भूत सवाया छाया है।
निजभाषा के गौरव का सौरभ सिखलाने आई है। शिव।
मम्मी-डैडी अकल-आन्टी भारत का मान घटाते है।
यह माता-पिता, चाचा-चाची का मान बढ़ाने आई है। शिव।
श्रद्धानन्द और लाल-पाल नहीं बाल नजर कोई आता है।
उनकी यह धरोहर गंवा रहे कैसी आजादी आई है। शिव।
इस मद्य-पान, अण्डे-मछली से हुई आसुरी वृत्ति है।
तुम राम-कृष्ण के वंशज हो यह भान कराने आई है। शिव।
अब भी शिवजी की पिण्डी पर ये मूषक उछल कूद करते।
यह निराकार ओंकार प्रभु का मान बढ़ाने आई है। शिव।
वेदाधिकार नहीं नारी को पाखण्डी शोर मचाते हैं।
मैदान मे आ शास्त्रार्थ करो चैलेंज कराने आई है। शिव।
ये पापी नर पिशाच तान्त्रिक जो नर बलिया कर खाते हैं।
बहिष्कार करो इन धूर्तों का यह बिगुल बजाने आई है। शिव।
पाषाण को माता मान रहे माता की जय बुलवाते हैं।
वह जगदीश्वर ही माता है यह बोध कराने आई हैं। शिव।
उस दयानन्द ऋषिराज का ऋण अब तक हमने न चुकाया है।
वेदो का नाद बजाने की शपथ दिलाने आई है। शिवरात्रि।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारों व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमों के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क १५ रुपये तथा आजीवन शुल्क १५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालों को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक निःशुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनों या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमंत्रित है।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

डा० रामनाथ वेदालंकार जी के स्वास्थ्य में सुधार

देहरादून ५ फरवरी। आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० रामनाथ वेदालंकार जी के स्वास्थ्य मे सुधार जारी है। गत २४ जनवरी को तीव्र ज्वर से वह अस्वस्थ हो गये थे।

उक्त जानकारी आज आर्य समाज धामावाला के सत्संग में कार्यक्रम का संचालन कर रहे मनमोहन कुमार आर्य ने श्रोताओं को दी। डा० रामनाथ वेदालंकार द्वारा की जा रही आर्य जगत की सेवाओ से भी उन्होंने आर्य सदस्यों को अवगत कराया। सभी सदस्यो ने डा० रामनाथ वेदालकार के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की।

सत्संग मे मनमोहन कुमार आर्य ने स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की नवीन कृति संस्कार-भास्कर, परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित आर्य धर्मेन्दु जीवन एवं आर्य संसार कलकत्ता के पुस्तकाकार विशेषांक 'सत्य-उपदेशमाला' ले० स्वामी सत्यानन्द सरस्वती की जानकारी देते हुए इन ग्रन्थो के महत्व पर प्रकाश डाला और सदस्यों को इनसे स्वाध्याय-लाभ करने की प्रेरणा दी। इन सूचनाओं के साथ सदस्यो को आर्य समाज धामावाला मे आगामी अवसरों पर महाराणा प्रताप जयन्ती, ऋषि जन्मोत्सव-ऋषि बोधोत्सव पर आर्य सम्मेलन एवं वेदभाष्यकार विश्वनाथ विद्यालंकार स्मृति दिवस आयोजित करने की भी जानकारी दी।

आर्य समाज, धामावाला, देहरादून

शिवरात्रि जगाने आई है

उठो सपूतो! आज तुम्हें! शिवरात्रि जगाने आई है।
ज्योतिपुंज की दिव्य धरा पर, छाया घना अंधेरा है।
दानवता की सैन्यवाहिनी ने धरणी को घेरा है।
अनाचार का, दुर्विचार का, आज लगा यहां डेरा है।
सूरज तो उग आया लेकिन, दिखता नहीं सवेरा है।
ऋषि मुनियों की वसुन्धरा पर, सोती क्यों तरुणाई है।
प्रेम-दया-ममता-समता के, तत्व सिसकते रोते हैं।
सत्य धर्म के लक्षण सारे, चिर निद्रा में सोते हैं।
बढ़े हुए पाखण्ड चतुर्दिक, कालिख बीपे पोते हैं।
मानवता के तत्व सुनहरे, गरिमा अपनी खोते हैं।
मद-आलस्य प्रमाद भरी सरिता बन हृदय समाई है।
दयानन्द के सैनिक हो तुम, निर्भय आगे आओ।
दानवता से टक्कर लेकर, शौर्य शक्ति दिखलाओ।
शपथ तुम्हें है मातृभूमि की, दानव मार गिराओ।
आर्य बनो, संकल्पित हो, यह जगती आर्य बनाओ।
प्राची से दे रही शक्ति, वह आज अरुण अरुणाई है।
उठो आर्यो! आज तुम्हें, शिवरात्रि जगाने आई है।
उठो आर्यो! आज तुम्हें, शिवरात्रि जगाने आई है।

राधे श्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्य वन में योग शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन मे १ से १० अप्रैल १९९५ तक दस दिवस का योग प्रशिक्षण शिविर लगेगा। ११-१२ अप्रैल को आर्य वन का उत्सव होगा।

शिविर मे भाग लेने वाले महानुभावों से निवेदन है कि प्रार्थना पत्र लिख कर १५ मार्च से पूर्व ही स्वीकृति ले लेवें तथा २५० रु० शिविर शुल्क (मन्त्री, आर्यवन, पो० सागपुर जि० साबरकांठा गुजरात पिन-३८३३०७) के नाम मनिआर्डर द्वारा प्रेषित करके अपना पंजीकरण करवा लेवें।

डा० जी आर जी वेलाणी
प्रधान, आर्य वन

स्वामी सत्यपति परिव्राजक
शिविराध्यक्ष

पुरुषार्थ से आत्म ज्ञान की प्राप्ति

मनुष्य संसार में सबसे अधिक गुण, समृद्धियां लेकर अवतरित हुआ है। परमेश्वर ने उसके मस्तिष्क मे ऐसी-ऐसी गुप्त आश्चर्यजनक शक्तियां प्रदान की हैं जिनके बल पर वह हिंसक पशुओं पर भी राज करता है। वह दुष्कर कृत्यों से भयभीत नहीं होता, आपदा व कठिनाई में भी वेग से आगे बढ़ता है।

पुरुषार्थ मनुष्य के प्रत्येक अंग मे कूट-कूटकर भरा है। वह अकेला समय के प्रवाह की गति को मोड़ सकता है। धन-दौलत, ऐश्वर्य तो क्या परमात्मा भी पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त होता है। जब आप शक्ति को अपने सत्कर्मों से से बाहर निकालेंगे, तब प्रभावशाली बन सकेंगे। ससार के चमत्कार कहां से प्रकट हुए? उनका जन्म पुरुषार्थ से ही हुआ है। संसार की सभी शक्तियां, सभी गुण, सभी चमत्कार, पुरुषार्थ से निकले हैं जिसका उद्गम स्थान हमारा अन्त:करण ही है।

संसार मे आदतों का गुलाम क्यों बना जाए? दु:ख, क्लेशों और चिन्ताओं से विचलित क्यों हुआ जाये? मनुष्य के लिए इन सबसे घबराने की आवश्यकता नही। वह तो अचल, दृढ़, शक्तिशाली और महाप्रतापी है। पुरुषार्थ के बल पर सबको पछाड़ सकता है। दृढतापूर्वक अपनी कमजोरी व कायरता को छोड़ देने से भीतर छिपी अबूझ सामर्थ्य और शक्ति काम आती है।

मनुष्य को ससार की महत्ता प्रदान करने वाला पुरुषार्थ ही है। उसी की मात्रा के अनुसार साधारण तथा महान व्यक्ति में अन्तर होता है। पुरुषार्थ पर ही मनुष्य के सारे भौतिक व आध्यात्मिक क्रियाकलाप निर्भर हैं। केवल मनुष्य ही सुख सम्पत्ति, यश, कीर्ति, एव शान्ति प्राप्त कर सकता है। पुरुषार्थ के बल पर ही मनुष्य की उन्नति निर्भर है।

पुरुषार्थ का निर्माण : कई मानसिक तत्वों के सम्मिश्रण से होता है।

साहस इन सबमें मुख्य है। नये कार्यों को प्राप्त करते समय तथा कठिनाई के समय हमे कोई भी बाह्य शक्ति आश्रय प्रदान नही कर सकती कभी कोई निर्बल व्यक्ति भी ऐसा पुरुषार्थ कर दिखाता है, जिसे बलवान भी नहीं कर पाते। पुरुषार्थ का सम्बन्ध मनुष्य के अन्त: स्थित निर्भयता की भावना से है। उसी से साहस की वृद्धि होती है।

दृढ़ता दूसरा तत्व है, दृढ़ व्यक्ति अपने कार्यों मे खरा और पूरा उतरता है। वह एकाग्र होकर अपने कर्तव्य पर डटा रहता है। उसमे पुरुषार्थ की भावना कूट-कूटकर भरी हुई होती है।

महानता की महत्वाकांक्षा पुरुषार्थी को नवीन उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने का निमन्त्रण देती है और मुसीबत में धैर्य एव आश्वासन प्रदान करती है। विवेकानन्द के अनुसार, महानता की भावना रखने से हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है। वे जागृत हो जाती हैं। इस गुण के बल पर पुरुषार्थी जिस तरफ भी बढ़ता है उसी मे ख्याति प्राप्त करता चला जाता है। वह समाज का कल्याण भी पुरुषार्थ के बल पर ही करता है। किसी ने कहा :

धीमन्तों बन्द्यचरिता मन्यन्ते महत।
अशक्ता पौरुष कुर्तं क्लीब देवमुपासते।

अर्थात् "बन्दनीय चरित्र वाले बुद्धिमान जन पुरुषार्थ को प्रधान मानते हैं। जो नपुसक एव पुरुषार्थहीन हैं। वे भाग्य की ही उपासना करते हैं।

"उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथे, नहि सुप्तस्य सिहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा।

अर्थात् उद्यम अथवा पुरुषार्थ से सम्पूर्ण कार्य सफल होते हैं। मनोरथ से नहीं, क्योकि सोते हुए सिह के मुख मे मृग प्रवेश नही करते। इससे सिद्ध होता है कि पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस मे लिखा है कि 'देव देव आलसी पुकारा। अर्थात् भाग्य को पुरुषार्थहीन लोग ही पुकारते हैं।

भागीरथ भाग्य पर निर्भर न रहते हुए पुरुषार्थ द्वारा पतित पावनी वैतरणी गगा को अपने पितरों को तारने के लिये इस धरा धाम पर लाये तथा विश्व का कल्याण किया। जिससे महापुरुष गगा जी को मोक्षदायिनी कहकर पुकारते हैं। जब व्यक्ति अन्त:करण मे बहने वाली वैतरणी गगा को अपने हृदय मे जान लेता है, तो मनुष्य को फिर गगा के घाट पर जाने की आवश्यकता नही पडती। यह साधु समाज का चलता-फिरता "प्रयागराज" होता है जो कि भक्तजन उस हृदय स्थित परमात्मा को अपने अन्त:करण मे जानकर पवित्र मन से गोता लगाते रहते हैं। वह सत्सग ही है जिसकी उत्पत्ति पुरुषार्थ है। इसीलिए पुरुषार्थ को अपने जीवन मे जानकर अपने जीवन का आत्मज्ञान द्वारा कल्याण करना चाहिए।

इससे निश्चय ही समाज से, बुराई, कुरीति व अनेकता की भावना वैमनस्य मिटेगा और एक स्वच्छ, व शान्ति प्रिय समाज का निर्माण होगा।

वीरसिंह, हरसिंहपुर (गाजियाबाद)

सीताष्टमी पर्व

आर्य वीर दल हांसी द्वारा सीताष्टमी पर्व (सीता जन्मोत्सव) २० से २२ फरवरी तक पुरानी कमेटी ग्राउन्ड हांसी मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश के प्रसिद्ध विद्वान तथा साध्वी पधार रही है। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें।

आर्यसमाज में वसन्तोत्सव एवं हकीकतराय बलिदान दिवस

असंख्य बलिदानों से प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा सर्वोपरि कर्तव्य

धर्मेन्द्र सिंह आर्य

देहरादून ५ फरवरी। काग्रेस का यह मानना असत्य है कि आजादी बिना खून की बून्द टपके हासिल हुई है। यह कहकर प्रसिद्ध राष्ट्रीय आर्य नेता धर्मेन्द्र सिंह आर्य ने कहा कि हजारों साल तक लगातार बलिदान देने के बाद आजादी मिली है। श्री धर्मेन्द्र सिंह आज प्रातः आर्य समाज धामावाला में वसन्तोत्सव एव बाल हकीकतराय के बलिदान की स्मृति में आयोजित विशेष कार्यक्रम मे बोल रहे थे। उन्होंने देश मे स्थान-स्थान पर सिर उठा रही पृथकता की आवाजों, नेताओं राजनीतिक दलों द्वारा कुर्सी के लिए वोट-बैक राजनीति एव अन्य राष्ट्रीय समस्याओं की चर्चा की और कहा कि कही आजादी न खो जाये। उन्होने आगे कहा कि स्वतन्त्रता की रक्षा हमारा सर्वोपरि कर्तव्य है।

श्री धर्मेन्द्र सिंह, आर्य ने कहा कि वर्तमान की परिस्थितिया विकट हैं। देशभर में मैं आर्य समाज के सगठन आदि कार्यो से घूमा हू और सामयिक समाज मे बलिदानियों के प्रति उपेक्षा से मुझे निराशा मिली है। उन्होंने आगे कहा कि आर्य समाज का वातावरण भी विकृत हो गया है। उत्थान की बातों का सगठन पर अमुकूल प्रभाव न होने पर उन्होंने दुःख व्यक्त किया।

श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य ने कहा कि सफलता प्राप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती की भाति स्वय को त्याग, तपस्या एवं बलिदान के के मार्ग पर आरूढ़ करना होगा। १५ वर्षीय हकीकतराय के बलिदान की चर्चा कर श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य ने कहा कि जीवन दान सहित अनेकं प्रलोभन दिये जाने एव माता-पिता एव परिवारजनों के धर्मपरिवर्तन के लिए सहमत हो जाने की सलाहो को अस्वीकार कर बाल हकीकतराय ने अपना सर कलम कराकर वैदिक धर्म की सर्वोपरि महानता स्थापित की। गुरु गोविन्द सिह जी के बच्चो के बलिदान, महाराणा प्रताप, भाई बाल मुकुन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिह आदि की देश पर बलिदान होने की घटनाओ को उन्होने स्मरण किया और कहा कि यह सब आजादी की पूरक थी। अपने व्याख्यान मे श्री धर्मेन्द्र सिह आर्य ने देशवासियों को स्वार्थी राजनीतिक दलो द्वारा सस्कृति एव सभ्यता पर किये जा रहे प्रहारों से सावधान किया और कहा कि देश को बचाने के लिए ईश-प्रार्थना तप, त्याग एव बलिदान आदि की दीक्षा लेकर सस्कार जागृत करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम मे बोलते हुए आर्य विद्वान अनूप सिह ने कहा कि इतिहास को भूलने वाला मनुष्य निरा गधा हो जाता है। आजादी बिना खून दिए मिली' इसे अनूप सिह ने इतिहास को तोड़ने मरोडने की सज्ञा दी और कहा कि यह एक बड़ा फ्राड है कूका आदोलन को स्वाधीनता आदोलन का महत्व पूर्ण अग बताते हुए अनूप सिह ने नामधारी सिक्खों की भूरि-भूरि प्रशसा की। मोहन कोटला मे कूका शहीदों के बलिदान स्मरण कर उन्होंने घटनाओ का मर्मान्तिक चित्रण किया और श्रोताओ को अग्रेज शासक कोवन द्वारा पचास कूकाओ को तोप के मुह से बाधकर उड़ाने एव देवी खेम कौर के १३ वर्षीय पुत्र के शरीर की बोटी-बोटी कर देने की लोभ हर्षक घटना सुनाकर भाव-विह्वल कर दिया।

अनूप सिंह ने कहा कि असली बलिदान उत्सव तो आजादी से पहले के लोगो ने मनाये थे। बाद के लोगो ने तो स्यालकोट, ननकाना साहिब को देश से अलग करवाकर राष्ट्रीय पाप किया है। बाल हकीकतराय के जीवन एव बलिदान की घटना का भी अनूप सिह ने ओजस्वी वाणी में चित्रण किया और कहा कि धर्म पर मरने वालों को अमरता प्राप्त होती है। अनूप सिह ने कहा कि भारत में इस्लाम का प्रसार तलवार के जोर पर हुआ है। मुस्लिम शासकों के काल मे इस्लाम स्वीकार न करने वाले व्यक्ति का सर तलवार से कलम कर दिया जाता था। आगे अनूप सिह ने कहा कि भारत के मुसलमान भी वैदिक धर्मी पूर्वजों की सन्तानें हैं जिन्हें भय, लोभ से विधर्मी बनाया गया था। उन्होंने कहा कि यदि शुद्धि आंदोलन सफल हो जाता। तो प्राचीन वैदिक काल की सी स्थिति उत्पन्न हो जाती अनूप सिह ने कहा कि मुसलमानों को सरकार अनेकों सुविधाये देती है जबकि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख अंग गोरक्षा के लिए गोवध-बन्द करने वाले वैदिक धर्मियों के नेता शकराचार्य को पकड़ कर उस नारकीय जगह रखती है जहा गोवध किया जाता है। अनूप सिंह ने हिन्दुओं को राजनीतिक दृष्टि से मूर्ख होना कहकर श्रोताओं को बताया कि राजनैतिक शक्ति उन लोगों ने ले ली है जो कम सख्या में हैं। व्याख्यान को विराम देते हुए अनूप सिंह ने कहा कि आर्य समाज ने सभी शहीदों एवं बलिदानियों का स्मृति दिवस मनाकर उनका सच्चा श्राद्ध किया है।

कार्यक्रम का सचालन मनमोहन कुमार आर्य ने किया। उन्होंने सदन को सूचित किया कि सुप्रसिद्ध वेदभाष्यकार डा० रामनाथ वेदालंकार विगत सप्ताह गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गये थे। सम्प्रति उनके स्वास्थ्य में सुधार है। सदन ने इनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। मनमोहन कुमार आर्य ने सूचित किया कि आगामी सप्ताह महाराणा प्रताप जयन्ती एवं शिवरात्रि एव दयानन्द जन्म-दिवस पर आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। आर्य जगत की प्रतिष्ठित पत्रिका आर्य संसार के सद्यः प्रकाशित पुस्तककार विशेषांक 'सत्य-उपदेश माला' की जानकारी के साथ पुस्तक के महत्व की भी उन्होंने सूचना दी। वसन्तोत्सव का उल्लेख कर मनमोहन कुमार आर्य ने कहा कि शीत के अपसार खेतों में सरसों की पीली चादर एव वृक्षों एव पौधों मे रग-बिरगे फलों से मनुष्य का मन प्रमादी बनकर भौतिकता की ओर प्रवृत्त होता है जिसे वेदो एवं आर्य ग्रन्थों के स्वाध्याय से आध्यात्मिकता की ओर ले जाना चाहिये। बाल हकीकतराय पर उनकी भावनाओ को प्रकट करने वाली एक कविता के पाठ के साथ उन्होंने अग्रेजों के विरुद्ध चले क्रातिकारी आदोलन के प्रमुख योगदान को आजादी का प्रमुख हेतु बताया।

कार्यक्रम सन्ध्या एव देव-यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। प० सुगनचन्द एवं दीपक ने सगीत वाद्य-यन्त्रों पर प्रेरणाप्रद भजन प्रस्तुत किये। सामूहिक प्रार्थना शान्ति स्वरूप जी ने कराई। प्रशासक राजेन्द्र कुमार काम्बोज के सभापतित्व में आयोजित इस कार्यक्रम में पंकज कुकरेती, शिवनाथ आर्य, ठाठ सिंह, विजय वीर, धर्म सिह, स्वतन्त्रता सेनानी जगदीश जी, लाली देवी मल्होत्रा, विजय कुमार सहित बड़ी संख्या में स्त्री पुरुष उपस्थित थे।

गृह सं० १९६, ब्लाक दो
जुक्खूवाला, देहरादून-२४८००१

पुरातत्व संग्रहालय उत्कर्ष की ओर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुरातत्व संग्रहालय समाचार

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा सन् १९०७ मे स्थापित संग्रहालय अपने पुनंगठित रूप में ६० के दशक मे अपने बहुउद्देशीय कलेवर मे क्षेत्रीय संग्रहालय के रूप मे ज्ञान वर्धन एव मनोरजन केन्द्र के रूप मे विख्यात हो चुका था। कुछ काल अन्तराल के पश्चात इतिहास को परम्पराओ को सार्थक करता हुआ यह पुरातत्व संग्रहालय केवल निष्प्राण भण्डार गृह ही बनकर रह गया था। गत दशक मे इसके उत्थान के लिए समय-समय पर प्रयास किये गये लेकिन किन्ही अज्ञात कारणों वश विशेष उपलब्धि नही बन सकी। गत कुछ माह से संग्रहालय के विकास के लिए पुन. प्रयास प्रारम्भ किये गये परिणाम स्वरूप गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय को पुन एक बार उत्तर प्रदेश पर्यटन मानचित्र पर अकन किया गया है।

गतमाह में हरिद्वार क्षेत्र के पर्यटक अधिकारी ने संग्रहालय का अवलोकन किया। संग्रहालय के बहुउद्देशीय कलेवर विविध संग्रह एवं ह्रास में सम्पन्न सुधारों से प्रभावित होकर उन्होंने पुरातत्व संग्रहालय को २७ जनवरी १९९५ से प्रारम्भ संचालित भ्रमणो (पेकेज टूर) मे शामिल किया है। भ्रमण संख्या एक व तीन में विश्वविद्यालय संग्रहालय दर्शन शामिल है।

२७ जनवरी १९९५ को हरिद्वार सचालित भ्रमणो को परियोजना के उद्घाटन के पश्चात भ्रमण का प्रारम्भ विश्वविद्यालय संग्रहालय के दर्शन से ही हुआ। संग्रहालय के सहसंग्रहपाल डा० सुखबीर सिंह ने भ्रमणार्थियों को संग्रहालय परिक्रमा एव दिग्दर्शन कराया।

उदघाटन समारोह पर संग्रहालय निदेशक डा० काश्मीर सिंह भिंडर उपस्थित थे, जिला अधिकारी वरिष्ठ अधीक्षक पुलिस एव हरिद्वार के अन्य गण्य-मान्य व्यक्ति मौजूद थे। इस अवसर पर पर्यटन विभाग के सहयोग से हरिद्वार परिचय पुस्तिका के लेखन के लिए निदेशक पुरातत्व संग्रहालय ने अपनी सहमति प्रदान की।

(शेष पेज ८ पर)

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 16 17 2-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ११६/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक
१९ फरवरी १९९५

(पेज ७ का शेष)

प्राचीन कला, संस्कृति के पृष्ठों के साथ साथ विभिन्न भारतीय सभ्यताओं के अवशेष, पाण्डुलिपियां विशेष रूप से स्वामी दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश की प्रथम प्रेस प्रति सिक्के अष्टधातु अस्त्र शस्त्र एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित छायांकन चित्रों द्वारा सुसज्जित कक्ष विशेष रूप से दर्शनीय है।

संग्रहालय के विकास की दृष्टि रखते हुए भारत की सभी आर्य समाज संस्थाओं, आर्यजनों से प्रार्थना है। कि कला संस्कृति, इतिहास एवं आर्य समाज से सम्बन्धित वस्तुओं को मुक्त हस्त से संग्रहालय को उपलब्ध करायें जब भी उन्हें हरिद्वार आने का अवसर मिले तो एक बार संग्रहालय का दर्शन अवश्य करें।

डा० काशमीर सिंह, भिन्डर

ऋषि बोधोत्सव

(ऋषि मेला)

२७ फरवरी ९५, सोमवार,

प्रातः ८ से सायं ४ बजे तक

लालकिला मैदान, दिल्ली-६

समारोह में सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पधारने की कृपा करें।

निवेदक :—

महाशय धर्मपाल — प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने में व्यय का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय में आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक सं० अवश्य लिखें।

—सम्पादक



सेवा में—

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार

की औषधियों का

सेवन करें।

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन। ३२६१८७१

सुदर्शन द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४/–९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक १८ | रविवार, २६ फरवरी १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

आर्य समाज ग्रामों को ओर !

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा तुगलकाबाद दिल्ली में वेद प्रचार की धूम

दिनाक १९-२-९५ रविवार को श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के दिल्ली देहात वेद प्रचार योजना के अन्तर्गत आर्य समाज तुगलकाबाद में वैदिक धर्म के जयघोषों के साथ अत्यन्त धूमधाम से उत्सव मनाया गया। जिसमें लगभग १५०० आर्य पुरुष सम्मिलित हुए। इस उत्सव में दिल्ली की अनेकों समाजों एवं आर्य विद्यालयों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। आर्यसमाज पहाड़गंज आर्यसमाज शकरपुर, आर्यसमाज निर्माण विहार, आर्य समाज खिचड़ीपुर, आर्य समाज तिलक नगर द्वारा संचालित दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र-छात्रायें एवं अध्यापिकायें, आर्य समाज कृष्ण नगर के रतनदेवी आर्य बाल विद्यालय के छात्र-छात्रायें एवं अध्यापिकायें, सरोजनीनगर से खानचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के छात्र छात्रायें व अध्यापिकायें, करोल बाग के आर्य पुरुष, प्रांतीय आर्य महिला सभा की ओर से श्रीमति प्रकाश आर्या, शान्तिदेवी मलिक, प्राणनाथ घई एडवोकेट, तेजपालसिंह मलिक प्रधान व मन्त्री विमल कान्त आर्य समाज तिमारपुर, महेन्द्रपाल वैद्य आर्यसमाज जनकपुरी, शामदास सचदेव मन्त्री आर्यसमाज पहाड़गंज आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

डा० अमर जीवन की देखरेख में स्वास्थ्य निरीक्षण शिविर लगाया गया जिसमें लगभग ३०० व्यक्तियों का शारीरिक परीक्षण किया गया। इस कार्य की सभी ग्रामवासियों ने सराहना की। आर्य समाज हनुमान रोड आगामी दिनों में इसी प्रकार के एक शिविर का आयोजन करने की व्यवस्था कर रहा है जिसमें नेत्रों के रोगों का उपचार किया जायेगा।

इस अवसर पर भव्य शोभा यात्रा निकाली गई ग्रामवासियों ने स्थान-स्थान पर फलों आदि से स्वागत किया तथा फूलमालाओं से आर्य नेताओं का सत्कार किया। उत्सव स्थल विविध प्रकार के बैनरों से सजाया हुआ था। श्री शामदास सचदेव ने शोभायात्रा में अपने भजनों द्वारा धूम मचा दी। विशेष वक्ता के रूप में श्री डा०धर्मपाल, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार व महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व मन्त्री आर्य समाज हनुमान रोड श्री राममूर्ति केला प्रधान आर्यसमाज हनुमान रोड, डा० कर्णदेव शास्त्री धर्माचार्य आर्य समाज हनुमान रोड, स्वामी स्वरूपानन्द अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग श्री चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक, श्री मनोहरकुमार "चमन" संगीताचार्य, श्री गुलाबसिंह राघव आदि ने अपने अपने विचार प्रगट किये तथा सुमधुर भजनों द्वारा वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का वर्णन किया।

श्री सूर्यदेव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ग्रामवासियों को विश्वास दिलाया हम सदैव आपके साथ हैं। आर्य समाज समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिये कृत संकल्प है। शराब बन्दी में यदि ग्रामवासियों ने हमारा साथ दिया तो वह दिन दूर नहीं जब शासन को बाध्य किया जायेगा और शासन शराब बन्दी करेगा। इसी प्रकार दहेज प्रथा भी समाज का कोढ़ बनता जा रहा है। अनेकों बधुयें प्रतिवर्ष दहेज की वेदी पर बलिदान हो जाती है। इस कलंक को भी समाज से मिटाना आवश्यक है। आर्य समाज ने सदैव सामाजिक जीवन की श्रेष्ठता एवं पवित्रता पर बल दिया है। आर्यसमाज हनुमान रोड की ओर से प्रीतिभोज का आयोजन किया जिसमें लगभग ८०० व्यक्तियों ने भोजन किया।

ऋषि दयानन्द वचनामृत

योगी जनों का यह दृढ़ विश्वास है कि अविद्या की तमोराशि को सत्य का सूर्य अकेला ही तुरन्त जीत लेता है। जो मनुष्य पक्षपात का परित्याग करके, केवल लोक हित के लिए ईश्वर की आज्ञानुसार सत्योपदेश करता है उसे भय कहां है ?

इस सप्ताह के विशेष कार्यक्रम

ऋषि बोधोत्सव

[illegible] विहार में ऋषि बोधोत्सव दिनांक २६-२-९५ रविवार को प्रातः ६ बजे से १-३० बजे तक [illegible] जायेगा। उसके बाद [illegible] श्री सूर्यदेव [illegible]

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव | सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

आर्य समाज का दसवां नियम

—श्री विजय बिहारी लाल माथुर

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

व्याख्या

आर्य समाज के दसवें व अन्तिम् नियम मे दिए गए निर्देश को पिछले सभी नियमो के सन्दर्भ मे लेना चाहिए। नवम् नियम मे आदेश है कि अपनी उन्नति करने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए भी केवल अपनी उन्नति से ही सन्तुष्ट न रहकर सब की उन्नति के लिए भी प्रयत्नशील रहना चाहिए तथा सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इस सन्दर्भ में हम दशम् नियम पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि सबकी उन्नति हेतु सब व्यक्ति प्रयत्न करेंगे तो अपनी उन्नति तथा सब की उन्नति मे संघर्ष के बिन्दु आ सकते हैं। उस सघर्ष को बचाने की दृष्टि से दशम् नियम मे यह आदेश है कि जहां तक ऐसे कार्य व नियम हैं जिनका सम्बन्ध पूर्ण रूपेण व्यक्तिगत उन्नति, जीवनचर्या, कार्यकलाप प्रवृत्तियो से है। वहां व्यक्ति को अपनी रुचि, इच्छा व चयन के द्वारा कार्य करते हुए अपने को स्वतन्त्र रखने का विधान किया है, परन्तु जहा ऐसे कार्य व नियम हैं जिसका एक सम्बन्ध व्यक्ति से बढकर समाज की उन्नति सामाजिक व्यवहार, सामाजिक सगठन एवं समाज के विभिन्न व्यक्तियो के पारस्परिक सम्बन्धों से है, वहां व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर समाज हित के नियन्त्रण का अंकुश लगाया गया है।

मानव प्रकृति एवं सामाजिक बंधन

मनुष्य सामान्यतया प्राकृतिक मूल प्रवृत्तियो की प्रेरणा से सदा बन्धन रहित स्वतन्त्र ही नही स्वेच्छाकारी रहना चाहता है। अपनी इच्छा अनिच्छा व पसन्द ना पसन्द को मनमाने तरीके से स्वसामर्थ्य व स्वसाधनों को उपयोग मे लेकर अपनी आकांक्षाओ की पूर्ति करना चाहता है। परन्तु यदि मानव को यह स्वतन्त्रता सब कार्यो के लिए दे दी जावे तथा वास्तव में मनुष्य पशु से भी निम्न कोटि का प्राणि रह जावेगा तथा जंगल राज जो जंगल के पशुओ में पाया जाता है और भी भयंकर रूप से मानव मे पाया जावेगा।

परिवार एवं समाज

समाज के लघु परिवार को ही देखिये। नवजात शिशु आयु की मास एव वर्ष की सीढ़ियां पार करता हुआ किशोर व युवावस्था के देहली पर पहुचता है। प्रत्येक स्तर पर पिता एवं परिवार जन जब देखते हैं कि बालक की कोई चेष्टा या क्रिया उचित नहीं है तो समझा-बूझाकर तथा अत्यावश्यक हो तो दण्ड देकर भी उसे रोकते हैं तथा परिवार की परम्परा मर्यादा के अनुसार उसका आचरण एवं व्यवहार ढालते हैं। यही स्थिति बालक के नागरिक के रूप में विकसित होने पर व्यक्ति एवं समाज के बीच स्थापित होती है। समाज की परम्परा मर्यादा के अनुसार उनका आचरण एवं व्यवहार ढालते हैं। यही स्थिति बालक के नागरिक के रूप मे विकसित होने पर व्यक्ति एवं समाज के बीच स्थापित होती है। समाज की परम्परा, मर्यादा, सस्कृति. नियम, विधि विधान सब को परिधि के बीच नागरिक रहता है। इन मर्यादा एवं विधि के उल्लघन पर उसे न केवल प्रताड़ना हेतु समाज उपस्थित रहता है, वरन् समाज के नियम व व्यवस्था हेतु तत्परता से कार्य करती व व्यक्ति पर नियन्त्रण रखती है। यह सारी व्यवस्था समाज हितकारी नियमो के पालन हेतु नागरिक को परतन्त्र बनाती हैं। नियम ने यह निर्देश दिया है कि सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए यह निर्देश तो एक प्रकार सभ्य सुसंस्कृत व्यक्तियो को स्वेच्छा से ही अपने पर समाज विरोधी कार्य न करने का प्रतिबन्ध लगाने की प्रेरणा है, अन्यथा नागरिको को समाज हितकारी नियम पालन करने एवं समाज विरोधी कार्य न करने मे परतन्त्र रखने की समाज की, स्वयं की, न्यायपालिका की व्यवस्था है ही। यह नियम उन व्यवस्थाओ का उल्लंघन कर अनाचारी, हिंसक, चोर आदि बनने की प्रवृत्तियो पर विशेष रूप से अंकुश लगाता है।

व्यक्ति के हित में समाज

मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर परस्पर विचारों, ज्ञान आविष्कार आमोद-प्रमोद, जीवनोपयोगी वस्तुओं एवं सेवाओं के आदान-प्रदान से प्रत्येक व्यक्ति का जीवन इतना सुखी हो सका है जितना आज है। एक वस्तु का उत्पादन या केवल एक प्रकार की सेवा करता है तथा अपनी व अपने परिवार की अन्य सभी आवश्यकताओं सम्बन्धी उत्पादनो एवं सेवा हेतु वह समाज के अन्य व्यक्तियों ही नहीं, संसार के अन्य देशो के नागरिको पर भी निर्भर रहता है। कल्पना कीजिये कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व अपने परिवार की सभी आवश्यकताओ से सम्बन्धित उत्पादन एवं सेवायें स्वयं करनी पड़े तो क्या उसका जीवन दूभर एवं असम्भव नही हो जायेगा। प्रत्येक समाज के नागरिक एव संसार के सारे देश आज इतने अधिक अन्योन्याश्रित हैं उतने इतिहास के किसी देश या काल में नहीं रहे। अतः आज यह और भी अधिक आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहे।

प्रत्येक देश काल के समाज की कतिपय मान्यताएं होती हैं। उस समाज के साहित्य, विधि निषेध रीति-रिवाज, सामाजिक आचार-व्यवहार, रहन-सहन व सभी सामाजिक विशेषताओ को मिलाकर 'संस्कृति" नाम दिया गया है। देश काल के समाज की यह संस्कृति समाज की प्रत्येक पीढ़ी द्वारा नवीन पीढ़ी को विरासत में सोपी जाती है तथा प्रत्येक पीढी का यह पूर्ण प्रयत्न और उत्तरदायित्व होता है कि उसकी नवीन पीढ़ी उस समाज की सांस्कृतिक धरोहर को मान्य कर जीवन में उसे क्रियान्वित करे। सामाजिक ढाचे की मान्यताओ एव संस्कृति के अनुपालन में ही सामान्यजन की रुचि और आग्रह होते है।

सामाजिक क्रान्ति

परन्तु समय-समय पर ऐसे क्रान्तिकारी युगपुरुष उत्पन्न होते हैं, जो समाज की विकृत मान्यताओ की धारा के प्रवाह मे बहने से इन्कार कर देते हैं तथा उस धारा को नवीन दिशा प्रदान कर उसकी कुरीतियो, रूढियो, अन्धविश्वासों एवं खोखले पूर्ण परम्पराओ मे वैचारिक एव क्रियात्मक क्रान्ति से सुधार एव परिमार्जन का मार्ग प्रशस्त करते है। इस प्रकार के महामानवो के प्रयत्न स्वरूप तथा कालापेक्ष के कारण भी सामाजिक भावनाओ मे परिवर्तन होते रहते है।

सामाजिक न्यायों के बन्धन

दशम् नियम सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्रता का बन्धन सामान्य जन-जन के लिए इसलिए भी निर्देशित है कि सामाजिक परिवर्तन व सुधार के नाम पर उच्छृंखलता सामाजिक अराजकता व अव्यवस्था न हो जावे। व्यक्ति को प्रत्येक स्व हितकारी नियम के पालन में जो स्वतन्त्रता प्रदान की गई है सामाजिक हित की परतन्त्रता के आलोक मे उसका भी मुख्य लक्ष्य यह है कि व्यक्ति अपने निजी कार्यों में भी समाज का ध्यान रखे तथा उसका कोई व्यक्तिगत कार्य अन्य व्यक्तियों के हित के विरुद्ध न होवे। आज नैतिक एव सामाजिक मूल्यों का भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात चालीस वर्षों में जो अवमूल्यन ह्रास हुआ है तथा भौतिकवाद ने जो अपना भयंकर प्रभाव स्वतन्त्र भारत की नवोदित पीढ़ी पर डाला है वह बड़ा चिन्ताजनक है। आज उद्देश्य मुख्य है, उद्देश्य प्राप्ति के साधनों की पवित्रता पर कोई ध्यान नहीं देता है। इसी भावना का परिणाम है कि उचित अनुचित साधनों का ध्यान रखे बिना विद्यार्थी परीक्षा पास कर डिग्री लेना चाहता है। व्यापारी, तस्करी मिलावट, कर चोरी आदि साधनों से धनी बनना चाहता है। पुलिस का सिपाही, दफ्तर का बाबू, स्कूल का अध्यापक, चिकित्सालय का डाक्टर, अदालत का बाबू, वकील, व्यापारी, उद्योगपति सभी के सामने केवल जल्दी से जल्दी किसी भी साधन से लाखों कमाने का लक्ष्य है व लखपति, करोड़पति बनने, करोड़पति से अरबपति जल्दी से जल्दी किसी भी प्रकार बनने के लिए दीवाना है। यह सब प्रत्येक हितकारी कार्य, सामाजिक हित के मूल्यों के बलिदान पर किए जाते हैं।

मूल्यो के इस अवमूल्यन एवं ह्रास के युग में आर्य समाज का दसवां नियम एक प्रेरणादायक दिशा निर्देश देता है। यह उस महर्षि दयानन्द की भावना की ज्योति को आलोकित करते हुए आर्यजनों से अपेक्षा करता है कि हम महर्षि के बताए मार्ग पर उनके निर्धारित नियमों को जीवन में यथार्थ रूप से क्रियान्विति के द्वारा उनके ऋण से उऋण हो सकें, उनके सच्चे योग्य अनुयायी बन सकें, और अपने समाज व प्राणिमात्र का कल्याण कर सकें। प्रभु दया करे और ज्ञान, श्रद्धा, दृढ़ता, निष्ठा एवं क्षमता प्रदान करें कि हम आर्य समाज के दशों नियमो का जीवन में पालन करते हुए सच्चे अर्थों में आर्य बनें व अन्यों को आर्य बना सकें।

सत्यबोध का पर्व

—डा० महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि का आर्य समाज से गहरा सम्बन्ध है। इस पर्व का इतिहास स्वरूप व परम्परा पूर्व से ही प्रचलित रही है. किन्तु आर्य समाज के लिए इस दिन की महत्ता इसलिये महत्वपूर्ण है कि मूलशंकर को कण-कण में व्याप्त शंकर के वास्तविक सत्य स्वरूप को जानने और पाने की प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हुई थी। शिवरात्रि की घटना ने मूलशंकर के जीवन की दिशा ही मोड़ दी। वे तप त्याग साधना बलिदान, परोपकार आदि की दृष्टि से इतने ऊंचे उठे कि वे संसार के इतिहास में हस्ताक्षर बन गए। महापुरुषों के जीवन की घटनाएं व्यवहार व बलिदान संसार की प्रेरणा, गति चेतना, जागरुकता आदि प्रदान करती हैं। इस दृष्टि से ऋषि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आद्यन्त प्रेरक रहा है। उनका जीवन खुली किताब रहा है। कहीं किसी प्रकार की न्यूनता, दुर्बलता और कमजोरी नही मिलेगी। ऐसी प्रेरक अनुपम विशेषता शायद ही संसार के किसी महापुरुष में सम्भव हो। इसीलिए इतिहासविदों को कहना पड़ा यदि गांधी जी राष्ट्रपिता हैं तो ऋषि दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। ऐसा दिव्य अमूल्य पारसमणि जिस व्यक्ति परिवार समाज एवं राष्ट्र को मिला हो, फिर भी उसकी दीन हीन पाप अधर्म एवं नास्तिक दशा हो इससे बढ़कर दुर्भाग्य और कुछ न होगा।

सदियों के बाद इस धरती का सौभाग्य जागा। जब इस धरा पर ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। वह पवित्रात्मा संसार को जगाने आई थी। भूले-बिसरे गौरवपूर्ण इतिहास के पन्नों को प्रकाशित करने का संकल्प लेकर चले थे ऋषिवर इसलिए शिवरात्रि उनके सत्य बोध का पर्व है इसी दिन उन्हे जड़ और चेतन, सत्य और असत्य का बोध हुआ था। उनका हृदय सत्यबोध के लिए लालायित हो उठा। सत्य ज्ञान की आंधी ने सब छुड़ा दिया। सत्य के शोधन के लिए सत्य के पाने के लिए और सत्य के प्रकाशित करने के लिये उस महामानव ने न जाने कितने जहर पिये कितना अपमान सहा, कितना शारीरिक कष्ट उठाया। कितने स्थानों की खाक छानी। तब कहीं जाकर उन्हें सत्य की उपलब्धि हुई। उसी सत्य को उन्होंने जीवन भर प्रचारित व प्रसारित किया ऐसा सत्यवक्ता इतिहास में दुर्लभ है।

हाय ! हम भारतीय उस योगी आध्यात्मिक पुरुष और महान क्रान्तिकारी का मूल्यांकन न कर सके ? उनके योगदान तथा महत्व को समझ सकते, तो शायद यह हमारी दुर्दशा व दीन हीन स्थिति न होती। वह देव पुरुष जीवनभर सत्य के लिए लड़ाई लड़ता रहा। सत्य के लिए जहर पीता रहा हर साल शिवरात्रि आती है। मेले, जलसे, जलूस श्रद्धाञ्जलि में ही अपनी करुण कहानी छोड़ जाती हैं। कही भी आत्म चिन्तन, आत्म सुधार, दुर्गुण और दुर्व्यसनों से छूटने की ललक बेचैनी व पीड़ा नजर नही आती है। जीवन से सद्धर्म, सत्यकर्म एव सद्भाव छूटते जा रहे हैं ? पाप और पुण्य, सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म विवेचना शक्ति का निरन्तर ह्रास हो रहा है। जीवन, शरीर और ससार का सत्य मृत्यु आत्मा एव परमात्मा आंखों से ओझल होने लगा है चारों ओर अधर्म, पाप पाखण्ड, प्रदर्शन का बोलबाला हो रहा है ? चमत्कार को नमस्कार के प्रवाह मे सब तेजी से बहे जा रहे। पहले सामाजिक पारिवारिक व नैतिक मूल्यों का भय और सीमाए होती थीं। उन्हें आज आधुनिकता की आंधी ने इतना दूर उडा दिया है कि कहीं नामो-निशान भी नजर नही आता है। अब पाप अधर्म असत्य व अनैतिक कर्म करते हुए किसी को लज्जा और सकोच नही होता है ? यह हमारे आत्मिक पतन की चरम सीमा हो रही है ? अन्दर आत्मा की आवाज को सुनने के लिए कोई तैयार नही है। न किसी को अन्दर की आवाज सुनने की फुर्सत है। आर्य समाज का इतिहास साक्षी है कि इसके प्रवर्तक और अनुयायियों के जीवन व्यवहार तथा कार्य मे सत्य कूट-कूटकर भरा था। आर्य समाज के दस नियमों मे पाच बार सत्य का प्रयोग किया गया है। इसी सत्याचरण, सत्यभाषण तथा शुद्ध पवित्र जीवन के कारण जनता में आर्य समाज और आर्य समाजियों की विश्वसनीयता थी। लोग सहज रूप से विश्वास व सम्मान करते थे। आज ये विश्वसनीयता टूट रही है। अब हमारे जीवन व्यवहार और आचरण में असत्य और अधर्म अनैतिक चिन्तन, पाप कमाई बड़ी तेजी से फैलते जा रहे हैं। उदाहरण सामने हैं—आर्य समाज की सम्पत्ति को पगड़ियों दूकानों स्कूलों के माध्यम से मिल बांट कर खाया जा रहा है ? आने जाने के झूठे बिल बन रहे हैं ? जो जहां बैठ गया, हिलने का नाम नहीं लेता है। कब्जे की भावना आ गई। विद्वज्जन किराया प्रथम श्रेणी का लेते हैं सफर द्वितीय श्रेणी में कुछ लोग करते हैं। करनी कथनी का फासला बढ़ता जा रहा है। उससे हमारी साख गिरी है। पहचान खत्म हो रही है। विश्वसनीयता घट रही है। आर्यत्व छूट रहा हैं।

खान पान की दृष्टि से भी हमारे में गिरावट आ रही है। अब आर्य समाज का संगठन दावे के साथ नही कह सकता है कि हमारे संगठन में खाने पीने वाले नहीं हैं ? खान-पान की दृष्टि से भी हम सत्य से बहुत दूर होते जा रहे हैं। आर्य समाज में बड़े लोग खूब शौक से खाते-पीते हैं। उन्हें सबसे बड़ा सम्मान भी मिलता है। उन्हें आर्य समाज का उद्धारक, कर्णधार और दयानन्द के बाद सबसे बड़ा आर्य समाज का हित चिन्तक के विशेषणों से विभूषित भी किया जाता है। क्या ये हमारी गिरावट की पहचान नहीं है ? एक आर्यसमाजी दीवाने का वह भी सस्मरण हैं जब वह मृत्यु शैया पर था, डाक्टरों ने कहा आपके स्वास्थ्य के लिए दवाई के रूप में मांस का सेवन करना होगा तो उन्होंने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया था मरना स्वीकार है पर मास का सेवन नहीं करूंगा। यह आत्मा के विरुद्ध है।

आर्य समाज ने अपने तप त्याग सेवा सच्चाई और बलिदानों से संसार में अपनी अलग पहचान बनाई थी। वह पहचान अब हमारे और कर्णधारो के कर्मो से ढह रही है। धूमिल हो रही है। यह चिन्तनीय और विचारणीय है। पर्व हमें जगाने, दिशाबोध कराने और सम्भालने की प्रेरणा व चेतना देने के लिए आते हैं। यदि पर्वो से महापुरुषों के जीवनों और धर्म ग्रन्थों से कुछ नहीं सीखा तो ये हमारी नासमझी होगी। शिवरात्रि का पर्व हमें आत्म-चिन्तन तथा सत्य पथ की ओर चलने की प्रेरणा देता है। ससार में व्याप्त अज्ञान अधकार जड़ता पाखण्ड अध विश्वास आदि हैं उनसे सत्यज्ञान के द्वारा मुकाबला करने की भावना जाग्रत करता है। सच्चे शिव के साथ नाता जोड़ने की प्रेरणा देता है। बिना प्रभु सम्बन्ध के जीवन नीरस, अतृप्त, अशान्त व चिन्तित रहेगा। जब तक हम उस जगन्नियन्ता को कण-कण मे अनुभव नही करेंगे, तब तक हम पाप कर्म से छूट नही सकते हैं। यही शिवरात्रि के जागरण पूजा व प्रार्थना का प्रयोजन है।

आज आवश्यकता है आर्यसमाज और आर्य समाजियों को जीवन व्यवहार आचरण, सभा सगठनों, मन्दिरो सस्थाओं आदि मे सत्याचरण के द्वारा ऋषि प्रदत्त पहचान बनाए रखने की। तभी हम दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सकेंगे। तभी हम आत्मा परमात्मा के नजदीक हो सकेंगे। तभी हम बाहर के दिखावटी बनावटी व प्रदर्शनपूर्ण जीवन व व्यवहार से मुक्त हो सकेंगे। तभी हम सच्चे अर्थ मे ऋषि के नाम के लेने के हकदार होंगे। यही शिवरात्रि प्रति वर्ष हमे सन्देश देती है। क्या हम इस सन्देश को सुनेगे ? पालन करेंगे ? कुछ जीवन मे परिवर्तन का सकल्प लेंगे?

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा का त्रैमासिक अधिवेशन सम्पन्न

"आर्य सभ्यता व संस्कृति की रक्षा के लिए तथा सामाजिक कुरीतियो के निवारणार्थ गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गढ़वाल मण्डल के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सम्मेलनो व अधिवेशनों का आयोजन किया जाता है, जिनमें महत्वपूर्ण निश्चय लिये जाते हैं और उन्हें क्रियात्मक रूप दिया जाता है। अपूर्व उत्साह व लगन से जनता भाग लेती हैं। सभा के प्रचारक गत दो वर्षो से गाव-गांव में जाकर वैदिक धर्म व आर्य समाज का सन्देश जन-जन तक पहुचाते आ रहे हैं। प्रचार योजना मे अपेक्षित गति तथा प्रौढ़ता लाने के लिए पर्वतीय अशिक्षित जनता मे शिक्षा का प्रचार किया जाता है। आर्य समाजों का संगठन युवक तथा कुमारियों मे प्रचार किया जाता है। विशेष पर्वो पर पम्पलेट आदि भीभेजे जाते हैं।

इसी क्रम में सभा ने अपने जनवरी अधिवेशन में दो निम्न स्थानों पर आर्य समाज इकाईयों का पुनर्गठन किया है। इस अधिवेशन में सभा की ओर से भाग लेने वाले सदस्यों में सर्वश्री दीनदयाल राय, श्री डी०एल० प्रेमी श्री मनोहरलाल, आर्य श्री चेतराम आर्य, श्री राजाराय शास्त्री, श्री चन्द्रीप्रसाद व्यथित, श्री राजपाल बत्रा, श्री महेन्द्रकुमार वर्मा श्री बच्चीराम आर्य, श्री हीरालाल आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। समाजों का पुर्नगठन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ ?

चौंदकोट आर्यसमाज नौगांवखाल (गढ़वाल)

सभा का त्रैमासिक अधिवेशन दिनांक २२-१-९५ को नौगांवखाल में श्री दीनदयालराय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह के आरम्भ में यज्ञ हुआ जो कि सभा के पुरोहित श्री राजा राय शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस यज्ञ के यजमान श्री बलवन्तसिंह रावत एव अन्य जनता ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। सर्वप्रथम स्व० आत्माओं का स्मरण किया गया। दिवंगत आर्य नेताओं स्व० प० श्रीराम पं० रुद्रीदत्त, केसरसिंह रावत प० रघुवरदयाल, स्व० जयानन्द भारती, पचमसिह स्व० मार्नासिह, पं० तारादत्त, पं० तोताराम जुगरान, गंगाराम, ब्रह्मचारी बालक राम, प्रज्ञाचक्षु, सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, इस उपसभा के प्रधान स्व० श्री बुद्धिसिह आर्य आदि के प्रति भावपूर्ण श्रद्धाजलिया अर्पित की गई तथा दो मिनट का मौन रखा गया। सभा का परिचय सभा प्रधान श्री दयाल राय ने दिया। इस अवसर पर सभा के कार्यकर्ताओं का भी स्वागत किया गया इस क्षेत्र के वक्ताओं ने आर्यसमाज की पुर्नस्थापना पर अपने विचार किए।

१—श्री श्यामलाल पाँथरी भूतपूर्व प्रधानाचार्य ने कहा कि सदवुद्धि एव सद्सेवा बहुत बड़ी देन है और यह देन आज आर्य समाज नौगावखाल को दी गई है। उन्होने कहा हमारे कार्य दूसरों के सामने अच्छे होने चाहिए आचरण एव खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा हम आर्यसमाजी, उपहास के शिकार बन जाते हैं।

(२) श्रीमती सुलोचना देवी पाथरी ने अपने उद्बोधन मे कहा कि हम सबको पुरानी पीढ़ी का आशीर्वाद प्राप्त है। भगवान आप सबको सद्‌बुद्धि दे। शराब न पियो, बकरे न काटो, यही मेरा आशीर्वाद है:

३—श्री झबनलाल विद्यावाचस्पति ने आशा व्यक्त की कि चौदकोट आर्यसमाज को विधिवत आगे बढ़ाने के लिए सभा के कार्यकर्ताओं का उन्हे सहयोग मिलेगा। उन्होने श्री श्याम लालपाथरी भूतपूर्व प्रधानाचार्य से भी अनुरोध किया कि वे विद्यार्थियो की तरह उन्हे भी शिक्षा देते रहेगे।

४—श्री बलवन्तसिंह रावत ने कहा कि सन् १९९२ में यहां पर जो आर्यसमाज का गठन किया गया था, वहां न चल सका इसका हमें खेद है। उन्होंने आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का आश्वासन देते हुए शीघ्र जणदाखाल में आर्यसमाज भवन के लिए भूमि दान की घोषणा कर दी। इसके पश्चात चौन्दकोट आर्यसमाज नौगांवखाल (पौड़ी गढ़वाल) का विधिवत गठन किया गया, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए:—

प्रधान श्री बलवन्तसिंह रावत (जगदाखाल). उपप्रधान श्री सतेन्द्रप्रसाद पाथरी ग्राम पाथर, श्री सतीशचन्द्र ग्राम आर्यनगर. मन्त्री एवं श्री झब्बनलाल, विद्यावाचस्पति नौगांवखाल, उपमन्त्री श्री अरविन्दकुमार पाथरी श्री अर्जुनसिंह नेगी, कोषाध्यक्ष श्री जयदेव पांथरी (नौगांवखाल) संरक्षक एव लेखा श्री श्यामलाल पांथरी, भूतपूर्व प्रधानाचार्य

अन्त में सभी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए संस्था की प्रगति की कामना की। (२) आर्यसमाज दुगडडा (पौड़ी गढ़वाच का पुर्नगठन—

दिनांक २३-१-९५ को सभा का दूसरे दिन का अधिवेशन गढ़वाल की एकमात्र पुरानी मण्डी दुगडडा में श्री श्यामलाल मधवाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त क्षेत्र के गणमान्य एवं प्रतिष्ठित महानुभावों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। सर्वप्रथम भजनीको के सुमधुर भजन हुए। 'वैदिक धर्म की जय" "महर्षि दयानन्द की जय", "भारत माता की जय" "आर्य समाज अमर रहे आदि नारों से दुगडडा मण्डी गूंज उठी। सभा प्रधान श्री दीनदयाल राय ने पर्वतीय क्षेत्रों में सामाजिक कुरीतियों के निवारणार्थ दुगडडा जैसे केन्द्र स्थान पर आर्यसमाज की नितान्त आवश्यकता बतलाई है। इस अवसर पर यज्ञ भी सम्पन्न कराया गया। ओ३म् पताकाओं व वेदमन्त्रों से पाण्डाल सजा हुआ था। आर्यसमाजों और ग्रामों से लोग प्रातकाल से ही आने लग गये थे। अनेक वक्ताओं ने दुगडडा में आर्य समाज की पुर्नस्थापना पर अपनी सहमति व्यक्त की। वक्ताओं ने निम्न प्रकार विचार दिए।

१—श्री श्यामलाल मधवाल जी ने कहा कि दुगडडा गढ़वाल का व्यापार केन्द्र रहा है। सास्कृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना का उदय यहीं से हुआ। ब्रिटिश काल में भी अनेक सामाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया। राजनैतिक चेतना के रूप में महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना सन् १८७५ में बम्बई में की। आजादी को यदि प्रभावित किया तो आर्य समाज ने किया। महर्षि ने जहां एक ओर वेदों को समस्त ज्ञान का श्रोत बताया, वहां उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों जैसे सती प्रथा, बाल विवाह महिलाओं की अशिक्षा, को दूर करने का आह्‌वान किया। वे सन्त भी थे। समाज सुधारक भी थे। 'दूसरों की उन्नति समझनी चाहिए।" आदि शिक्षाएं आज भी शाश्वत है। उन्होंने आगे कहा, इस नगर में जब आर्य समाज नही थे, तब बाबा गुरमुखसिह, पजाब से यहां पर आए। उन्होंने डी०ए०बी० व आर्य समाज की स्थापना यहां पर की। उन्होंने दस हजार रुपये दान भी दिए। यह नगर आर्य समाज का ऋणी है। भीषमचन्द जी, श्री रामचन्द्र जी, श्री बलदेवसिंह आर्य आदि के महान ऋणी हैं, जिन्होंने इस योग्य इस स्थान को समझा, उन्होंने दुगडडा में में आर्यसमाज संगठन को विधिवत चलाने के लिए आश्वस्त किया है।

गुरुकुल उत्सव सूचना

श्री मद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी तहसील पलवल जिला फरीदाबाद हरियाणा का ५८वा वार्षिकोत्सव दिनांक ३, ४, ५ मार्च १९९५ को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आप सपरिवार व इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

—तेज तेवितया

नया युग, नयी बातें

डा० त्रिलोक तुलसी, डी० लिट्०

नयी युग में नयी बातें

राष्ट्रवाद ने विदेशी पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष किया। स्वाधीनता बहुत आवश्यक है इसमें कोई सन्देह नहीं। किन्तु स्वाधीन हुए राष्ट्रों में उठने वाली नई समस्याओं ने बता दिया कि लोगों की खुशहाली के लिए मात्र स्वाधीनता ही पर्याप्त नहीं है।

शोषण के विरुद्ध मार्क्सवाद ने संघर्ष किया, मजदूरों को संघटित किया। यह संघर्ष भी बहुत आवश्यक था। इसी के कारण सामाजिक न्याय की चेतना सब ओर फैली। किन्तु रूस के अनुभवों से यह स्पष्ट हो गया कि मजदूर-क्रान्ति ही पर्याप्त नहीं है। राजनीतिक सत्ता छीन लेने से ही आर्थिक प्रगति नहीं हो जायेगी।

विज्ञान ने इस युग में अद्भुत प्रगति की है। मानव को इतनी व्यापक समृद्धि दी है जितनी उसे पहले कभी नहीं मिली थी। किन्तु विज्ञान जब सामाजिक विकास की चेष्टा करता है तो कई प्रकार के असन्तुलन भी ले आता है।

इन सब विचारधाराओं के प्रति भ्रम-भग हो जाने के कारण लोगों में प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियां भी उभरी हैं और धार्मिक कट्टरता अधिक लोकप्रिय होने लगी है। इसके कारण भी रगे-फसाद होते रहते हैं। किन्तु एक बात स्पष्ट है। नए युग में नई समस्याएं उभरी हैं तो उनके नए समाधान ही खोजने पड़ेंगे। पीछे नहीं लौटा जा सकता और पुराने समाधानों से काम नहीं चल सकता।

आगे बढ़ने से पहले समझ लेना भी आवश्यक होगा कि इस शताब्दी की तीनों प्रमुख विचारधारायें असफल हुई तो क्यों। ऊपर से देखने में वे तीनों विचार-धाराएं भिन्न दिखाई देती हैं। किन्तु इनके मूल में एक गहरी समानता है, और वह कर्त्ता भाव का आधार किसी एक व्यक्ति या शक्ति को मूल कारण समझ लेना। धर्म कहता है कि ईश्वर ही मूल कारण है, उसी को प्रसन्न करो। राष्ट्रवाद कहता है कि विदेशी-शासन ही मूल कारण है उसी को हटाओ। मार्क्सवाद कहता है कि पूंजीपति ही मूल कारण है उसी से लड़ो। विज्ञान कहता है कि प्रत्येक समस्या का कोई एक मूल कारण है, उसे खोजो और उसे दूर करो—रोग का मूल कारण कोई जीवाणु है उसे नष्ट करो, हिंसा का मूल कारण कोई आतंकवादी नेता है उसकी हत्या करवा दो, इत्यादि।

किन्तु अब हमें इस कर्त्ता भाव या मूल कारणवाद से आगे बढ़ना होगा। सारी व्यवस्था को समझना होगा। समाज को, बल्कि सारे ससार को, उसकी समग्रता में देखते हुए उसके सर्वांग विकास के लिए प्रयत्न करना होगा।

हम लोग इक्कीसवी सदी की दहलीज पर खड़े हैं। इस नई शताब्दी में कई नई समस्याए उभरती दिखाई दे रही हैं। तो इन पर एक संक्षिप्त दृष्टिपात करते चले।

अपराध और हिंसा

इस समय संसार का सबसे अधिक समृद्ध देश है 'अमरीका'। अन्य सभी देश उसी को अपना आदर्श या माडल बनाकर प्रगति करने का प्रयास कर रहे हैं। अतः यह आशा की जा सकती है कि अमरीकन लोग बहुत प्रसन्न रहते होंगे, सुख और शान्ति से अपना जीवन व्यतीत करते होंगे। किन्तु वहा से जो समाचार मिल रहे हैं वे बताते हैं कि अमरीका का साधारण नागरिक आज एक बहुत ही डरा हुआ आदमी है। पता नहीं वह कब अपराधियों का निशाना बन जाए, राह चलते कब उसकी पिटाई हो जाए या उसे लूट लिया जाए। पिछले एक वर्ष में लगभग डेढ़ करोड़ गम्भीर अपराधों की रिपोर्ट पुलिस को दी गई और इनसे भी कहीं अधिक अपराधों की सूचना पुलिस तक नहीं पहुंची।

अपराधियों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि जेलों में स्थान नहीं बचा है। अतः नई जेलें बनाई जा रही हैं, और कई पुराने कैदियों को समय से पहले ही जेल से रिहाई भी मिल जाती है ताकि नए कैदियों के लिए जेल में जगह बन सके। अमरीका की इस हालत का जीवन्त चित्र देखने के लिए एक अमरीकन पत्रिका (U.S.A. Today, दिनांक १२. ४. ९४) में छपे इस विज्ञापन को देखिये—"आज अमरीका में १४ व्यक्तियों का खून होगा, ४८ स्त्रियों पर बलात्कार होगा और ४७८ लोग लूटे जायेंगे। यह सब उन अपराधियों द्वारा किया जाएगा, जिन्हें पहले पकड़ा गया था और दण्ड मिला था, किन्तु वे जेल से इसलिए छोड़ दिए गए कि वहा पर्याप्त स्थान नहीं था। इस वर्ष साठ हजार अपराधियो को हिंसक अपराधों के लिए सजा मिलेगी, किन्तु वे जेल नही जायेंगे।"

यह एक विशेष बात भी देखने मे आई है कि बहुत से नए अपराधी नवयुवक होते हैं। वे अधिक उग्र हैं और उच्छृंखल हैं। अनुमान है कि एक लाख स्कूली बच्चे जेबों में पिस्तौलें लिए घूमते हैं।

स्वाभाविक है कि अमरीका में बहुत सा धन अपराधों पर ही खर्च हो जाता है। नई जेलें बनानी पड़ती हैं, पुलिस बढ़ानी पड़ती है, अदालतों का खर्च है, और फिर कैदियों को जेल में रखने का खर्च है। अनुमान लगाया गया है कि जब किसी व्यक्ति को उम्र-कैद की सजा मिलती है तो उसे जेल में रखने के लिए छः लाख से दस लाख डालर तक खर्च करने पड़ते हैं।

जो अमरीका में हो रहा है वैसा ही कुछ प्रायः सारे ससार में भी हो रहा है। इस बीसवीं शताब्दी को यदि हिंसा की शताब्दी कहा जाए तो गलत न होगा। एक अनुमान लगाया गया है कि इस अकेली शताब्दी में बारह-तेरह करोड़ मनुष्य मानवीय हिंसा का शिकार हुए हैं। लोग युद्धों में मरे हैं, पुलिस द्वारा यन्त्रणा देने के बाद मरे हैं, आतंकवादियों द्वारा मारे गए हैं और उन आतंकवादियों के विरुद्ध चलाए गए अभियान में मरे है। अकाल भी पड़े हैं और महामारिया भी फैली हैं। इनका कारण भी मानव का लोभ और असावधानी ही रहा है।

इस युग की हिंसा की एक और विशेषता यह है कि लोगों की हत्या बड़े सुनियोजित ढंग से और ठण्डे दिल से की गई है (Cold-blooded murders)। पहले लोग युद्धों में एक दूसरे को मारते थे। वे उत्तेजित होकर अपने राजा के लिए, अपने देश के लिए या अपने धर्म के लिए लड़ते थे, मरते और मारते थे। मरने वाला 'वीर गति' को प्राप्त होता था और मारने वाले को यश मिलता था—दोनों वीर कहलाते थे। किन्तु अब लोग छोटे-छोटे लाभों के लिए मारे जाते हैं, जैसे किसान अपनी फसल को बचाने के लिए खेत मे हजारों कीड़ों-मकोड़ों को मार देता है। मारने वाले छिप कर बम फेकते हैं, मरने वाले अनजाने में मारे जाते हैं।

आज के युग में खिलाड़ी ही पेशेवर नही बने, हत्यारे भी पेशेवर हो गए हैं। किसी को मारना चाहे तो किसी पेशेवर हत्यारे की सेवाए किराए पर ले ले। कहते हैं कि आज के राजनीतिक दलों ने भी पेशेवर अपराधियों और हत्यारो को बकायदा नौकरी दे रखी है। जैसे प्रत्येक दल के अपने-अपने वकील होते हैं वैसे ही प्रत्येक दल के अपने-अपने पेशेवर अपराधी हत्यारे भी होते हैं। और मजेदार बात यह है कि जैसे वकील कचहरी में तो एक दूसरे के विरुद्ध लड़ते हैं और फिर बाररूम में एक साथ बैठ कर चाय पीते हैं, वैसे ही ये पेशेवर अपराधी जब 'काम' पर हों तो आपस में लड़ते है और जब फुरसत हो तो एक साथ बैठकर दावत उड़ाते ओर शराब पीते हैं।

आज के युग के लिए हिंसा इतनी स्वाभाविक बन चुकी है कि जब कोई नेता या पत्रकार लोगों को मरने-मारने के लिए भड़काता है तो उसे पागल नही समझा जाता, वल्कि वह अधिक लोकप्रिय हो जाता है।

स्पष्ट है कि भाषण झाड़ने से, या उपदेश देने से, या पुलिस बढ़ाने से और अधिक कठोर दण्ड देने से हिंसा की यह बाढ़ नही रुकेगी। उस पूरी सामाजिक व्यवस्था को समझना पड़ेगा जो हिंसा की मनोवृत्ति को इतने व्यापक स्तर पर जन्म देती है और समझ कर, उस व्यवस्था को आमूल बदलना होगा। (क्रमशः)

महर्षि का जन्म दिवस

जिसको तुम कहते जन्म दिवस।
मैं उसको कहता क्रान्ति दिवस॥
वह था सचमुच आलोक दिवस।
आर्यों का अनुपम ज्योति दिवस॥
उस जन्म दिवस का मूल्य।
नहीं शब्दों से आंका जाता है॥
उसकी गरिमा इतनी महान।
कण-कण में गाया जाता है॥
उस जन्म दिवस ने सारा ही।
इतिहास देश का बदल दिया॥
जागृति का निर्भय शंख फूंक।
निद्रित स्वदेश को जगा दिया॥
वैदिक सिद्धान्तों 'आदर्शों।
का जन्म दिवस यह मूर्त रूप॥
युग को देता है नव-सन्देश।
तप त्यागपूर्ण इसका स्वरूप॥
यह दयानन्द की गुण-गरिमा।
भू-मंडल में फैलाता है॥
सब कुरीतियों, भ्रमजालों को।
क्षण भर मे दूर भगाता है॥
इस जन्म दिवस के कारण ही।
पाखण्ड, पाप हैं भस्म हुए॥
नव भारत का निर्माण हुआ।
और कष्ट अनेक निरस्त हुए॥
खुद पीकर के विष के प्याले।
सुख सुधा अमित सरसाई है।
चैतन्य नया इक छाया है॥
फिर देश ने ली अंगड़ाई है।
इस जन्म दिवस का बाल वृद्ध।
मिल स्वागत सौ-सौ बार करो॥
है "शान्त" यही कामना।
आर्य बनकर स्वदेश उद्धार करो॥

—सत्यभूषण "शान्त" वेदालंकार एम०ए०
१२, मुनीरका विहार, नई दिल्ली

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपये तथा आजीवन शुल्क ३५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक नि:शुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखको के कथनो या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमंत्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

वैदिक यति मण्डल के साधुओं की राजस्थान में प्रचार यात्रा

जयपुर। आर्य जगत् के शिरोमणि संन्यासी वैदिक मण्डल के अध्यक्ष श्रद्धेय श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सान्निध्य में दिनांक ३ मार्च से १८ मार्च तक राजस्थान में एक वाहन यात्रा का आयोजन किया गया है।

यह यात्रा जयपुर से ३ मार्च को प्रारम्भ होकर चुरु, नागौर, जोधपुर, सिरोही, जालौर, पाली व अजमेर जिले से होती हुई वापिस जयपुर में समाप्त होगी। इस यात्रा मे स्वामी जी महाराज के साथ अन्य प्रमुख संन्यासियों में श्री स्वामी धर्मानन्द जी. उड़ीसा, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी, ज्वालापुर, श्री स्वामी धर्मानन्द जी, आबू-पर्वत के अतिरिक्त लगभग बीस-पच्चीस अन्य संन्यासी, वानप्रस्थी व ब्रह्मचारी होंगे। सभा की दो भजनमण्डलियां यात्रा में साथ रहेंगी। इस यात्रा में न्यूनतम पांच वाहन होंगे। वाहनों में प्रचार सामग्री साहित्य आदि भी उपलब्ध होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री व वैदिक यति मण्डल के संयुक्त मन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने यति मन्डल के सभी सदस्यों से अपील की है कि वे इस यात्रा में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हों। जो सज्जन इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं वे दो मार्च की सायकाल तक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क (आर्य समाज, आदर्श नगर) जयपुर पहुंचे।

उक्त यात्रा की व्यवस्था एव प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से किया गया है।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी कन्या महाविद्यालय में काव्य गोष्ठी सम्पन्न

डा० आशा जोशी रीडर हिन्दी विभाग के संयोजकत्व में दिनांक ६-२-९५ को एक विशिष्ट काव्य गोष्ठी का आयोजन मुखर्जी कालेज के प्रांगण में किया गया।

अध्यक्षता वरिष्ठ कवि श्री रमानाथ अवस्थी ने की और संचालन श्री अरुण जैमिनी द्वारा किया गया।

काव्य गोष्ठी में—

श्री मधुर शास्त्री ओमप्रकाश आदित्य, महेन्द्र अजनबी डा० प्रेमसिंह श्री गोविन्दव्यास, अरुण जैमिनी श्रीमती अर्चना शर्मा, धर्मचन्द्र अवोध, सुनील जोशी ने काव्यपाठ के माध्यम से महाविद्यालय के श्रोता वर्ग को आनन्द-विभोर करके दिशाबोध भी कराया।

डा० आशा जोशी के नेतृत्व में इस प्रकार से समय-समय पर सफल आयोजन हिन्दी विभाग द्वारा किये जाते हैं।

महाविद्यालय की प्राचार्या जी का आयोजनों को सफल बनाने में विशेष सहयोग प्राप्त होता है। —विशेष सम्वाददाता द्वारा

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने मे व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय मे आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक स० अवश्य लिखे।

—सम्पादक

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५१वां वार्षिकोत्सव व स्वर्ण जयन्ती समापन समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई का आठ दिवसीय ५१वां वार्षिकोत्सव व स्वर्ण जयन्ती समारोह दिनाक २२ से २९ जनवरी १९९५ तक उत्साह व सौहार्द पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सामवेद यज्ञ, वेद प्रवचन, भजन आदि के साथ-साथ महिला सम्मेलन, वक्तृत्व स्पर्धा युवा सम्मेलन व संगीत सन्ध्या का भी आयोजन किया गया। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वेद-वेदांग पुरस्कार व श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार समारोह में विद्वानों को पुरस्कृत किया गया।

सम्मेलन का सुचारु रूप से संचालन समाज के महामन्त्री श्री संगीत शर्मा ने किया जिसमें श्री दिलीप वेलाणी, श्री विनोद आर्य, डा० वाचस्पति उपाध्याय आदि ने अपने ओजस्वी विचार प्रकट किये। दिनांक २९ जनवरी को प्रातः ७ से ९.३० तक सामवेद यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। वार्षिकोत्सव के अवसर पर भारत के विभिन्न प्रान्तों से लगभग २०० प्रतिनिधि पधारे थे। तत्पश्चात ११ से १ बजे तक पुरस्कार समारोह सम्पन्न हुआ।

पवित्र सामवेद भाष्य

'वेदानां सामवेदोऽस्मि' ऐसा यथार्थ, व्याकरण संगत भाष्य देखना है, तो श्रीचन्द गुप्त 'योगमुनि' कृत पवित्र सामवेद भाष्य पढ़िये। प्रथम भाग (सुन्दर कपड़े की जिल्द, पृ० ४००) मूल्य ५० रुपये, नमूना (पृ० १२८) दस रुपये की वी०पी० द्वारा प्राप्य। मूल्य लागत से कम। अभी तक के वेदभाष्यों से असन्तुष्ट विद्वानों के लिए अनुपम उपहार विश्व में पहली बार ऐसा अद्भुत भाष्य।

पता – वैदिक साधना ओक:
३२२-ए/गली-४ श्रीनगर कालोनी, दिल्ली-११००३४

निर्वाचन

आर्यसमाज भुसावर की साधारण सभा दिनांक ९-२-९५ में लिए निर्णयानुसार निम्नांकित पदाधिकारी सर्व सम्मति से दो वर्ष के लिए निर्वाचित घोषित किये जाते हैं।

प्रधान श्री व्रजेन्द्रकुमार मित्तल, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश पंसारी, मन्त्री श्री वैद्य दिनेश चन्द्र पाण्डेय, उपमन्त्री श्री मा० प्रकाशचन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री दीप a आर्य. आय-व्यय निरीक्षक श्री भगवतप्रसाद जी गुप्ता पुस्तकालयाध्यक्ष श्री रघुनाथ प्रसाद बोहरा।

इनके अतिरिक्त श्री बैजनाथ जी मित्तल, श्री सूरजमल गुप्ता, श्री कजौड़ीलाल जी बोहरा श्री अशोक आर्य, श्रीमती प्रेमवती आर्या, एवं श्री राजेन्द्र जी मित्तल सदस्य कार्यकारिणी निर्वाचित हुये।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : –३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)–९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक १७ रविवार, ५ मार्च १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द : १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

फूले-फले संसार में यह वेद वाटिका

महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस



महर्षि दयानन्द

दिन तो प्रतिदिन सूर्य के निकलने के साथ ही आरम्भ हो जाता है किन्तु बाग का माली उस दिन हर्षित होता है जब उसके रोपे पौधे धरती माता के स्तन का पान करके ऊपर उठकर अपनी अनुपम छटा बखेरने लगते हैं। वसन्त का आगमन ही इस बाहर को मुखरित करता है ऐसे ही किसी वसन्त मे एक पुष्प अंकुरित हुवा जिसके अनुपम सौरभ से दिग्दिगन्त आह्लादित हो उठा। उसी का आगमनोत्सव दिनाक २४ फरवरी १९९५ को सोल्लास मनाया गया।

महर्षि दयानन्द का जन्म दिन पुण्य पर्व है धरा धाम पर उनका आना प्रकाश विकीर्णता का उत्सव है। आओ हम सब उस ओर चलें जहां यह सन्देश मिल रहा है कि आज के दिन धरा धाम पर इस महान् आत्मा ने पदार्पण किया था।

दिल्ली मे एक स्थान है महर्षि दयानन्द गो सम्बर्द्धन केन्द्र, जो गाजीपुर मे स्थित है उसी स्थान पर २४ फरवरी ९५ को श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे महर्षि का जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस समारोह मे विशिष्ट महानुभावो ने पधार कर महर्षि को शत शत नमन किया तथा उनके द्वारा कृतकार्यों की भूरि भूरि प्रशसा की। श्री शिवराज पाटिल अध्यक्ष लोक सभा ने अपने वक्तव्य मे कहा कि महर्षि दयानन्द ने आधुनिक युग मे पहली बार यह उदघोषित करके कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है ससार को आश्चर्य चकित कर दिया, वेद वास्तव मे विज्ञान और अध्यात्म ज्ञान के भण्डार हैं। जो व्यक्ति वेद मार्ग पर चलेगा उसके सभी प्रकार के ज्ञान के द्वार उद्घाटित हो जायेंगे। ससार के मतमतान्तर अपनी डफली अपना राग अलापते हैं यदि वे सब वेद का अनुसरण कर लोगो को भ्रमित करना त्याग कर सही दिशा दिखाने लगे तो मानव जाति का अनुपम कल्याण हो। (शेष पेज ८ पर)

भक्ति संगीत

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभा भवन मे दिनाक २५-२-९५ को भक्ति सगीत का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की इस सगीत सन्ध्या मे भाग लेने के लिये पूर्व आमन्त्रित सगीतज्ञो मे श्री दीन दयाल, श्री सत्यपाल मधुर, श्री मनोहर लाल ऋषि, श्रीमती यशोदी देवी (हालेन्ड निवासी) श्री स्वामी स्वरूपानन्द, श्री मोहन लाल "चमन", श्रीमती सरला, श्री आचार्य रविदत्त गौतम, श्री इन्द्र सैन "विश्व प्रेमी" श्री प० वेद व्यास उपस्थित थे।

सभा के अध्यक्ष का माल्यार्पण करके दिल्ली की समाजो के प्रतिनिधियो ने तथा श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वागत किया। सभा विसर्जन से पूर्व आर्य समाज हनुमान रोड की ओर से सभापति का शाल उढाकर श्री राममूर्ति केला ने अभिनन्दन किया श्री सूर्यदेव ने माला पहनाई।

श्री विजय मनोचा का शाल भेंट करके स्वागत किया गया यह स्वागत उनकी पारिवारिक परम्परा के निर्वाह के कारण किया गया। उनकी माता श्रीमती स्नेह प्रभा का इस आर्य समाज से घनिष्ट सम्बन्ध रहा था अब उस परिपाटी को उनका परिवार निबाह रहा है।

सभा मे विगत विजेताओ को पुरस्कार बाटे गये जिनमे प्रथम पुरस्कार श्री सत्यपाल "मधुर" ने प्राप्त किया, तृतीय पुरस्कार श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी ने ग्रहण किया। कुछ विजेता सभा मे अनुपस्थित थे।

सभा समापन से पूर्व सभाध्यक्ष श्री वन्देमातरम ने अपने उद्गार प्रकट करते हुये कहा कि महर्षि दयानन्द का कार्य अद्भुत था वे वीतराग महापुरुष थे जीवन की अन्तिम वेला भी अनेको विद्वानो को स्फूर्ति प्रदान कर गई। कैसा विचित्र समय था जब मृत्यु सम्मुख आ रही है और ऋषि आसन पर बैठकर अत्यन्त आह्लाद के साथ वेद मन्त्रो का उच्चारण कर रहे थे। महान उल्लास की आभा बिखेर कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। महर्षि ने देह और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को समझ लिया था। साथ ही उन्होने उपराष्ट्रपति के एक कथन की चर्चा भी की जिसमे उन्होने अपने भाषण मे यह कह दिया था कि ऋग्वेद मे तमिल भाषा के शब्द हैं। सार्वदेशिक सभा की ओर से इसका विरोध किया गया उपराष्ट्रपति ने अपने कथन का परिमार्जन कर कहा कि वास्तव मे वैदिक भाषा सर्व प्रथम भाषा है जो ईश्वरीय ज्ञान से परिपूर्ण है।

सभा का सुरुचि पूर्ण सचालन समाज के कर्मठ मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा किया गया उन्होने नेत्र रोग परीक्षण शिविर के आयोजन की घोषणा की और कहा कि समाज की ओर से निशुल्क परीक्षण की व्यवस्था है तथा चश्मे भी समाज की ओर से प्रदान किये जायेंगे। अन्त मे शान्ति पाठ व जय घोषो के साथ सभा समाप्त हुई। उपस्थित महानुभावो को भोजन कराया गया, यह प्रबन्ध भी आर्य समाज हनुमान रोड की ओर से किया गया।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

क्या ऋषि मन्त्ररचियता हैं?

प्रियम्वदा शाब्दिकीनजीबाबाद

योगिराज ऋषिवर ने अपने अलौकिक बुद्धिबल एव तपोबल से सहस्रो ग्रन्थो का मन्थन जिन सत्यसनातन आर्ष परम्परानुमोदित सिद्धातो की पुन प्रतिष्ठा की खेद है कि उनके परिपालन मे हम शनै -शनै शिथिल होते जा रहे है। वह सैद्धान्तिक दृढता जो कभी आर्यसमाज की प्राचीन दिग्गज विभूतियो के मन वचन कर्म में परिलक्षित होती थी प्राय अब दुर्लभ हो है। उदारीकरण के इस युग मे सिद्धान्तो का भी उदारीकरण होने लगा है। इसी का परिणाम है कि सिद्धातविहीन लेख भी आर्य पत्र-पत्रिकाओ मे वरीय स्थान प्राप्त कर रहे है। महान् आश्चर्य एव खेद होता है यह सोचकर कि क्या आर्य पत्र-पत्रिकाओ के कतिपय सम्पादक प्रवर आर्यसमाज के मूल सिद्धातो से भी पूर्णतया परिचित नही हैं ? यदि नही तो सचमुच आर्य सिद्धातो के प्रचार प्रसार का गुरुतर दायित्व इन्हे सौपकर बहुत बडी भूल की गई है। यदि वस्तुत है तो सिद्धात विरुद्ध लेखो को साभार छापने की आवश्यकता क्यो पडी इसका स्पष्टीकरण जनता के समक्ष इन्हे अवश्य करना चाहिये।

प्रस्तुत सन्दर्भ मे मेरा तात्पर्य आर्य समाज की प्रसिद्ध पत्रिका 'आर्य जगत्' के गत ८ नवम्बर के दीपावली विशेषाक मे "नवभारत टाइम्स" से साभार उद्धृत कर छापे गये "अक्ष सूक्त का प्रणेता कवष ऐलूष' नामक लेख से है। इस लेख के लेखक डा० सूर्यकान्त बाली का जहा तक प्राचीन व्यक्तियो का यह निष्कर्ष कि जिन्हे आज की सामाजिक राजनीतिक शब्दावली मे दलित या पिछडावर्ग कहा जाता है ऐसे लोगो ने भारत देश के काव्य, ज्ञान, अध्यात्म, राजप्रणाली, समाज-व्यवस्था आदि क्षेत्रो मे ब्राह्मण परम्परा से कही ज्यादा ही योगदान किया है" आर्यो के लिये आपत्तिजनक नही (आर्यसमाज कर्मणा वर्णव्यवस्था का पक्षपाती प्रारम्भ से ही रहा है, आर्यसमाज के सिद्धातानुसार तो ब्राह्मणोचित गुण-कर्म-स्वभाव वाले ये महीदास, कवष, ऐलूष, सत्यकामादि महिष ब्राह्मण ही कहे जायेगे शूद्र नही। किन्तु "वेदमन्त्रो के रचयिता ऋषि हैं" लेखक की यह मान्यता आर्यसमाज को कथमपि स्वीकार्य नही। स्वाध्यायशील पाठक जानते है कि महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के वेद-नित्यत्व-विषय, वेदोत्पति विषय तथा अन्य सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थो मे भी ऋषियो के मन्त्ररचयितृत्व पक्ष का प्रबल खण्डन करते हुये "वेद ईश्वरीय ज्ञान है" इस सिद्धात को ही सुस्थिर एव परिपुष्ट किया है।

आर्य जगत् मे हुये आपत्तिजनक इस लेख के लेखक महोदय वेदो को डा० मैकडानल, मैक्समूलर, वेबर ग्रिफिथ आदि पाश्चात्य स्कालरो की शैली मे लोभी, जुआरी महापुरुषो की रचना बताते हुये हर्ष से फूले नही समाते और बडे बेवाक ढग से लिखते चले जाते है। तद्यथा देखे दो-तीन स्थल—

"अक्षसूक्त कवष ऐलूष का एक अद्भुत वैदिक काव्य है। सारा सूक्त पढने से साफ झलकता है कि कवष खुद जुआरी रहा होगा, जमकर जुआ खेलता रहा होगा और उसके तमाम सामाजिक दुष्परिणामो को भी भुगतता रहा होगा। बार-बार प्रतिज्ञा करता होगा कि बस तोबा, आगे से जुआ नही खेलू गा पर पासो की आवाज सुनकर फिर उसका मन फिसल जाता होगा।

"कैसा रहा होगा कवष ऐलूष जुवारी कवि और दृढनिश्चयी महापुरुष ! ब्राह्मणो ने दुत्कारा तो सरस्वती का रुका प्रवाह बदलने पर उतारू हो गया।"

"बौद्धिकता और जीवट की इस अद्भुत मूर्ति कवष ऐलूष का वैदिक काव्य भी पढने लायक है। कवष के कुल मिलाकर पाच सूक्त मिलते है जिनमे से पहला सूक्त तो अपानपात् को ही सम्बोधित है, एक विश्वे देवा को समर्पित है, दो इन्द्र की स्तुति मे है, तो पाचवा वही अतिप्रसिद्ध अक्षसूक्त (जुआरी का सूक्त। है जिसने कवष ऐलूष को बाकी वैदिक कवियो से अलग पात मे ला खडा किया है।"

पाठकवृन्द ! भारत के गौरवसर्वस्व वेदो एव वैदिक ऋषियो के विषयी मे किये गये ऐसे घिनौने चिन्तनो से महर्षि दयानन्द ही नही समग्र प्राचीन भारतीय मनीषा ही मर्माहित हो उठी है। भारत के सभी ऋषि एक स्वर से वेदो को अपौरुषेय, नित्य, अनादि, अनन्त, सर्वविद्या-निधान, स्वत.प्रमाण ज्ञान स्वीकार करते हैं तो फिर ऐसे महनीय वेदो मे अनित्य जुआरी कवष की आत्मकथा बलात् सत्यापित करना और इसी कवष को अपौरुषेय वेद के पाच सूक्तो का रचयिता बताना समस्त आर्य आर्ष सिद्धातो पर कुठाराघात नही ? हमे ज्ञात होना चाहिये कि वेदो के उपर्युक्त नित्यत्वादि सभी गुण परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। अपौरुषेयता के सिद्धात का परित्याग करते ही वेदो की अन्य विशेषतायें स्वत समाप्त हो जायेंगी क्योकि उस दशा में निस्संदेह यह भी मानना होगा कि तत्-तत् ऋषियो की उत्पत्ति के बाद तत् सूक्तो की रचना हुई, परिणामत. वेद रामायण महाभारत की भाति अनित्य, परत: प्रमाण, ऐतिहासिक ग्रन्थ ही सिद्ध हो पायेंगे जो किसी को भी मान्य नही।

वेदो की अपौरुषेयता के सम्बन्ध मे कतिपय प्रबल आर्य प्रमाण इस प्रकार है—

(१) पुरुष विद्यानित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे (निरुक्त) (पुरुषो की विद्या अनित्य है, वेदो मे चूकि सम्पूर्ण कर्मो की सम्पन्नता प्राप्त होती है इसलिये वेद पौरुषेय नही हो सकते।

(२) अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यत सर्वा प्रवृत्तय ॥

(महाभारत)

(यह वेदमयी दिव्य वाणी अनादि अनन्त नित्य एव सृष्टि के आदि मे स्वयम्भू द्वारा प्रदत्त।)

(३) शास्त्रयोनित्वात् (वेदान्त) दर्शन)।

(वेदशास्त्र की उत्पत्ति का कारण ब्रह्म है।

वेदान्त दर्शन के 'शास्त्रयोनित्वात्' सूत्र का शाकर भाष्य भी स्पष्टता के लिये अत्यन्त द्रष्टव्य है। शकराचार्य जी लिखते है—

"ऋग्वेदादे शास्त्रस्यानेकविद्यास्थानोपबृहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिन: सर्वज्ञकल्पस्य योनि कारण ब्रह्म। न हीदृशस्य शास्त्रस्य ऋग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यत सम्भवोऽस्ति।"

अर्थात् अनेक विद्याओ से युक्त सूर्य के समान सब सत्य अर्थो का प्रकाश करने वाले ऋग्वेदादि शास्त्र का रचयिता ब्रह्म है क्योकि सर्वज्ञ-गुणयुक्त वेदो की रचना सर्वज्ञ ब्रह्म के द्वारा ही सम्भव है।

इस प्रकार वेदो की अपौरुषेयता का सिद्धात एक सर्वस्वीकृत सिद्धात है। इस सिद्धात के स्थिर कर लेने पर जनसाधारण के मन मे जो कुछ भ्रान्तिया उत्पन्न हो सकती है उनका समाधान भी परावरज्ञ ऋषि पहले ही उपस्थित कर गये है। यहा विशेषत उदित होने वाली तीन शकाये तथा उनके ऋषिकृत समाधान प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

प्रथम भ्रान्ति एव समाधान —

यदि वेद वस्तुत अपौरुषेय है तो ऋग्वेद को शाकल्य शाखा, यजुर्वेद को वाजसनेय सहिता, सामवेद को कौथुम शाखा, अथर्ववेद को शौनक या पैप्पलाद सहिता इस प्रकार पुरुष विशेषो के नामो से व्यवहृत होते हैं। इससे प्रतीत होता है कि वेद उन-उन ऋषियो के बनाये हुये हैं।

महर्षि जैमिनि मीमासा दर्शन मे "वेदाश्चै के सन्निकर्ष पुरुषाख्या १।१।२७ सूत्र के द्वारा इस प्रथम पूर्वपक्ष को रखकर समाधान इस प्रकार करते हैं—

आख्या प्रवचनात् १।१।३० वेदो की काठक कालापक, वचन=अनन्यसाधारण अध्यापन के कारण व्यवहृत होते है। इसलिये वेदो के साथ सम्बद्ध पुरुष-विशेषो के नामो को देखकर यह नही कहा जा सकता कि वेद निकट काल के है या पौरुषेय हैं। वेद तो ऋषियो से पूर्व भी विद्यमान थे ही।

द्वितीय भ्राति एव समाधान :—

वेदो मे उत्पत्तिमरणधर्मा वसिष्ठ, विश्वामित्र, पुरुरवा, उर्वशी, कृष्ण, अर्जुन आदि नामो के पाये जाने से प्रतीत होता है वेद अपौरुषेय न होकर पौरुषेय हैं।

अनित्य दर्शनाच्च (मी. द १।१।२८) सूत्र द्वारा इस द्वितीय शका को रखकर महर्षि जैमिनि ने अपना समाधान इन शब्दो मे रखा—

परतु श्रुतिसामान्यमात्रम् (१।१।३१) परम्=दूसरा अनित्यदर्शन हेतु तु=ठीक नही क्योकि ऐसे शब्द श्रुति सामान्यमात्रम्=शब्द के सामान्य अर्थ के वाचक हैं। अर्थात् वेदो के विश्वामित्रादि शब्द व्यक्ति विशेषो के वाचक न होकर यौगिक प्रक्रिया से निकलने वाले सर्वमित्रादि साधारण अर्थो के वाचक ही होते हैं।

तृतीय भ्रान्ति एव समाधान :—

वैदिक सूक्तो तथा अध्यायो के ऊपर ऊपर कवष-ऐलूष, वसिष्ठ, विश्वामित्र

(शेष पेज पर ७)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज ने देश हित को ही मानव कल्याण के रूप में प्रचारित किया । —अर्जुनसिंह

नई दिल्ली । आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में दिल्ली एवं उसके आस-पास की समस्त आर्य समाजों के हजारों सदस्यों ने ऐतिहासिक लालकिला मैदान में महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर युगदृष्टा एवं वेदों के प्रकाण्ड विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोध दिवस को समारोह पूर्वक मनाया ।

समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामन्त्री एव वैदिक विद्वान डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द ने सृष्टि को अन्धकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान, अन्याय से न्याय, की ओर बढ़ने का मार्ग दिखाया और विलुप्त होती वैदिक संस्कृति को समाज के सम्मुख वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया ।

समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एव वरिष्ठ इंका नेता श्री अर्जुनसिंह ने भाव विभोर होकर कहा कि मैं यहा राजनीति की चर्चा करने नहीं आया हू, और न मैं कोई विद्वान हू मैं तो भारत के एक महान सपूत, विद्वान, सन्त और समाज उद्धारक पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि उनके चरणों में अर्पित करने आया हूं । उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति विलक्षण है जो समूची मानव जाति के कल्याण की कामना करती है । हिन्दू धर्म का आधार वेद है जो व्यक्ति आधारित नहीं है, अपितु बोध आधारित है । उन्होंने कहा कि आज तक जितनी हिंसा धर्म के नाम पर हुई है उतनी हिंसा किसी क्षेत्र में नही हुई, जब कि कोई भी धर्म हिंसा की बात नहीं करता । आज जो यह हिंसा है यह बोध के अभाव में है, यदि बोध के सही रूप को पहचान लिया जाये तो इस वातावरण को समाप्त किया जा सकता है तथा बोध का वास्तविक स्वरूप वेद में प्रतिपादित है, जो हमें महर्षि दयानन्द के द्वारा बताया गया है । आज शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर समस्त नागरिक बोध के वास्तविक रूप को समझकर मानव जाति तथा देश के कल्याण हेतु कार्य करे जिसकी आज नितान्त आवश्यकता है ।

समारोह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने विदेशी शासन में दृढ़ता पूर्वक कहा कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है विना स्वराज्य के व्यक्ति पूर्ण रूप से अपने कार्यो का सम्पादन करने मे असमर्थ है । समारोह का सचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया तथा समारोह की व्यवस्था चौ० लक्ष्मीचन्द ने की ।

श्री कृष्णचन्द्रजी आर्य अमृतमहोत्सव गौरव समारोह निवेदन

आर्य समाज पिंपरी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा व पिंपरी चिंचवड नगर के सम्माननीय नागरिको महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व महाराष्ट्र के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री कृष्ण चन्द्र जी आर्य के ७५ वर्ष आयु के पूर्ण होने उपलक्ष मे अमृत महोत्सव २१,२२ व २३ अप्रैल ९५ को मनाने का सनिश्चय किया है । इस शुभ अवसर पर उन्हे एक अभिनन्दन ग्रन्थ व पाच लाख रुपये की थैली देना निश्चित हुआ है । अत आपसे सविनय प्रार्थना है कि इस कार्य में आप श्री कृष्ण चन्द्र जी आर्य के विषय मे अपने विचार, लेख, कविता इत्यादि व अपना पासपोर्ट साईज फोटो तुरन्त भेजे ।

श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य को इस अवसर पर अर्पण करने हेतु पाच लाख रुपये युक्त थैली में आपके योगदान के रूप मे आपसे अधिक से अधिक राशि अपेक्षित है । आप से सविनय प्रार्थना है कि उक्त राशि रोख, चेक अथवा ड्राफ्ट आर्य समाज पिंपरी के नाम से भेजकर हमारा उत्साह बढायें ।

जगदीश वासवानी

ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ

पातंजल योग धाम आर्य नगर ज्वालापुर (हरिद्वार) मे गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे दिनाक ३ अप्रैल १९९५ से ९ अप्रैल १९९५ तक ध्यान योग शिविर तथा १० अप्रैल से १४ अप्रैल तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है । योग शिविर मे यम, नियम धारणा, ध्यान, समाधि आदि अष्टांग योग तथा शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जायेगा ।

अत: शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभार्थ पधारने का कष्ट करें ।

स्वामी योगानन्द, महामन्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द के उपदेश

होम न करने से पाप

जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होके वायु और जल को बिगाड कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियो को दुख प्राप्त करता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है । इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल मे फैलाना चाहिये । और खिलाने पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है । जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखो मनुष्यो का उपकार होता है ।

परन्तु जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावे तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके । इससे अच्छे पदार्थ खिलाना-पिलाना भी चाहिये । परन्तु उसमें होम अधिक करना उचित है, इसलिए होम करना आवश्यक है ।

होम का प्रचार

इसलिए आर्यवरशिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि राजे, महाराजे लोग बहुत-सा होम करते और कराते थे । जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय । (३,४५)

नित्य कर्म अवश्य करे

नित्य कर्म मे अनध्याय नही होता, जैसे श्वास प्रश्वास सदा लिये जाते हैं बन्द नही किये जा सकते, वैसे नित्य कर्म प्रतिदिन करना चाहिए, न किसी दिन छोडना, क्योंकि अनध्याय मे भी अग्निहोत्रादि उत्तम कर्म किया हुआ पुण्यरूप होता है, जैसे झूठ बोलने मे सदा पाप और सत्य बोलने मे सदापुण्य होता है वैसे ही बुरे कर्म करने मे सदा अनध्याय और अच्छे कर्म करने मे सदा स्वाध्याय ही होता है ।

आयु विद्या, कीर्ति और बल की वृद्धि के उपाय

जो सदा नम्र, सुशील, विद्वान् और वृद्धो की सेवा करता है उसका आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चार सदा बढते हैं, और जो ऐसा नही करते उनके आयु आदि नही बढते ।

आर्य समाज धामावाला में लाला लाला लाजपत राय जयन्ती

राजाओं का राजा किसान यदि सम्पन्न होगा तो देश भी सम्पन्न होगा : अनूपसिंह

देहरादून २९ जनवरी। महर्षि दयानन्द सरस्वती के वचनों से प्रेरणा प्राप्त कर लाला लाजपतराय जी ने किसान आन्दोलन चलाया था। महर्षि दयानन्द के शब्द, किसान राजाओं का भी राजा है, का उल्लेख कर श्री अनूपसिंह ने कहा कि जिस देश का किसान सम्पन्न अथवा समृद्ध होगा, वह देश भी सम्पन्न एव समृद्ध होगा वह देश ही विकसित होगा। प्रो० अनूपसिंह आज प्रात: आर्यसमाज धामावाला मे लाला लाजपत राय की १३० वी जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम मे बोल रहे थे।

आर्य समाज मेरी माता है, महर्षि दयानन्द मेरे पिता हैं और मैं आर्य समाज रूपी माता की गोद मे पलकर बड़ा हुआ हू—लाला लाजपतराय के इन शब्दो का अनूपसिंह ने उल्लेख किया और कहा कि लालाजी डी०ए०वी० आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारो मे थे। लाला जी के पिता श्री राधा किशन जी की धार्मिक आस्थाओ का उल्लेख कर अनूपसिंह ने कहा कि प्रभावशाली वक्ता एव तर्क प्रवीण लाला जी ने उन्हे अपने अनुकूल आर्य विचारो का बना लिया था जबकि लाला जी की माता को पति के अनेक उपालम्भ सुनने पडते थे।

प्रो० अनूपसिंह ने कहा कि माता, पिता एव आचार्य अपने शिष्यो एव सन्तानो से हारकर प्रसन्न होते हैं और उन्हे आर्शीवाद देते हैं।

आर्य विद्वान अनूपसिंह ने कहा कि अग्रेजो द्वारा भारत के इतिहास की सच्चाईयो को दबाने का प्रयास किया गया है। स्वतन्त्रता सग्राम मे प्रयुक्त गरम और नरम दल का प्रतिवाद कर उन्होने कहा कि सही वर्गीकरण राष्ट्रवादी एव लायलिस्ट है। लायलिस्ट अग्रेजो के पक्ष मे सदैव ताली बजाते थे। राष्ट्रवादी, अग्रेजो द्वारा फैलाये जाने वाले सभी भ्रमो का खण्डन करते थे। राष्ट्रवादियो की मान्यता थी कि आर्य भारत के मूल निवासी थे, हमारी सस्कृति सर्वोत्कृष्ट एव महान है, अग्रेज विदेशी हैं एव उन्हे भारत से निकालना है तथा देश आजाद करना है।

लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित लोक सेवा मण्डल का उल्लेख कर अनूपसिंह ने बताया कि लाल बहादुर शास्त्री एवं राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन उसके सदस्यो मे थे। लाल बहादुर शास्त्री, लाला जी को अपना गुरु मानते थे व प्रधानमन्त्री बनने पर उन्होने लाला जी के जन्म दिवस २८ जनवरी पर सार्वजनिक अवकाश घोषित कर दिया था। प्रो० अनूप सिंह ने कहा कि महात्मा गाधी के प्रमुख सहयोगो व काग्रेस के इतिहास लेखक प्यारे लाल ने लिखा है कि काग्रेसियो को महारानी के लिए तीन बार ताली बजाना आवश्यक था जिसका उद्देश्य काग्रेस को अग्रेजो के प्रति वफादारी प्रकट करना था।

अनूप सिंह ने कहा कि साइमन कमीशन का ३० अक्तूबर १९२८ को विरोध करने फलस्वरूप पुलिस कप्तान साडस ने लाला जी की गर्दन पर तीखे लाठी प्रहार किये जो इस घटना के १७दिन पश्चात उनकी मृत्यु के कारण हुए। लाला जी ने इस घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि मेरे शरीर पर पड़ी एक-२ लाठी ब्रिटिश शासन के कफन में कील का काम करेगी। अनूपसिंह ने आगे कहा कि लाला जी की शवयात्रा मे लाखो लोग शामिल हुए थे एवं इस अपमान का बदला शहीद भगत सिंह और उनके साथियों ने १७ नवम्बर १९२८ को साडर्स की हत्या कर दिया।

अपने लम्बे वक्तव्य मे अनूपसिंह ने लाला जी के लोकमान्य बाल गगाधर तिलक से पारिवारिक सम्बन्ध, अग्रेजो द्वारा भारत के इतिहास, धर्म एव सस्कृति की सुनियोजित भ्रामक असत्य व्याख्यायें एव लाला जी के जीवन के अनेक प्रसग प्रस्तुत किये।

मनमोहन कुमार आर्य ने कार्यक्रम का सचालन किया। उन्होंने परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा प्रकाशित महर्षि दयानन्द के जीवन चरित 'आर्य धर्मेन्दु जीवन' एव आर्य जगत के सम्प्रति शिरोमणि सन्यासी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की पुस्तक 'सस्कार भास्कर' के प्रकाशन की सूचना दी। सस्कार-भास्कर महर्षि दयानन्द रचित सस्कार विधि का विस्तृत भाष्य है। मनमोहन कुमार आर्य ने कहा कि कर्मकाण्ड अत्यन्त क्लिष्ट होने के कारण कर्मकाण्डी विद्वानो के सामने अनेक आशकायें रहती हैं। पुस्तक के लेखन की पृष्ठ भूमि का उल्लेख कर मनमोहन आर्य ने कहा कि इसके प्रकाशन से सभी आशकाये दूर हो जायेगी।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी डा० सत्य प्रकाश जी की १८ जनवरी को मृत्यु की सूचना के साथ वैज्ञानिक क्षेत्रो व आर्य समाज के क्षेत्र मे की गई उनकी सेवाओ को मनमोहन कुमार आर्य ने स्मरण कराया एव उनके द्वारा किये गये अग्रेजी वेद भाष्य आदि साहित्य व इ० सत्यदेव सैनी (महामन्त्री, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ) द्वारा २० जनवरी को उनकी अत्येष्टि आदि कार्यों की जानकारी दी। अन्य दिवगत आत्माओ महात्मा ओ३म् आश्रित व डा० कल्हण के पिता को भी स्मरण कर मौन श्रद्धाजलि दी गई।

अधिवेशन प्रात ८-०० बजे सन्ध्या एव यज्ञ से आरम्भ हुआ। यज्ञोपरान्त प० सुगनचन्द एव दीपक जी ने भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उनके भजन 'मेरे देवता के बराबार जहा मे कोई देवता न कही और होगा। जमाने मे होंगे बहुत लोग पैदा, दयानन्द सा न कोई और होगा।' को श्रोताओ ने पसन्द किया। श्री रघुनन्द जी की पुत्री आरती द्वारा प्रस्तुत भजन 'मैं आर्य समाजो की लड़की हू, पत्थरो को कभी नही पूजूगी, पूजूगी अपनी माता को जिसने मुझे दूध पिलाया है।' सराहा गया।

प० शान्ति प्रकाश जी ने सामूहिक प्रार्थना कराई। आर्य नेता धर्मेन्द्र सिंह आर्य, प्रशासक राजेन्द्र कुमार काम्बोज, एडवोकेट, ईश्वर दयाल आर्य, धर्मपाल सिंह, श्रीमती विजय कुमार, कृष्णा कुमारी, सुमित्रा देवी, रामेश्वर प्रसाद आदि कार्यक्रम मे उपस्थित थे। शान्ति पाठ के समवेत स्वरो से पाठ से अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

—मनमोहन आर्य

ऋषि दयानन्द का चिन्तन

आचार्य सुधाकर एम० ए०

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज केवल भारतवर्ष के लिये ही नही है अपितु सम्पूर्ण ससार के लिये है। यह ठीक है कि सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ नगर मुम्बई मे हुई। महर्षि का स्वय का कार्य क्षेत्र भी भारत ही रहा। महर्षि की दृष्टि मे ससार के श्रेष्ठ पुरुष आर्य हैं। वे उनका एक सगठन बनाना चाहते थे किन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि ससार मे भारत के अतिरिक्त किसी भी देशवासी ने आर्य समाज के सगठन मे भागदारी नही की। विदेशो में जो आर्य समाजें हैं वे केवल भारतीयो के द्वारा ही स्थापित हैं। विदेशो मे स्थापित आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने भी स्थानीय निवासियो को आर्य सदस्य नही बनाया।

भारत वर्ष मे मुसलमानो को यथारूप मे आर्य समाज का सदस्य नही बनाया जा सकता। यदि कोई मुसलमान इब्राहीम नाम के साथ आर्य समाज का सदस्य बनाना चाहे तो नही बन सकता इसी प्रकार यदि कोई हिन्दू रामप्रसाद नाम रखकर मस्जिद मे नमाज पढना चाहे तो नही पढ सकता। इससे आर्य समाज का सार्वभौम रूप नही बन पाया। केवल हिन्दू नामधारी ही आर्य समाजी है गैर नही। अस्तु महर्षि दयानन्द ने भी तीन बातो को सर्वाधिक महत्त्व दिया है।

(१ आर्यो का सार्वभौमिक चक्रवर्ती राज्य हो।

(२) वेद का प्रचार घर-घर मे हो।

(३) ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।

अर्थात् समस्त ससार में आर्य समाज का सगठन हो।

इनमे से एक भी बात पूर्ण नही हो पायी। क्योकि आर्य समाज इन तीनो ही बातो को पूर्ण करने मे असावधान रहा। आर्यो का चक्रवर्ती राज्य तभी सम्भव था जब आर्य समाज राजनीति मे सक्रिय भाग लेता उसका राजनैतिक कोई सगठन होता। और वह केवल भारत तक ही सीमित न रहता बल्कि दूसरे देशो मे भी सगठित होता। भारत मे स्वतन्त्रता सघर्ष मे एक भी आर्य समाज के नेता का ऐसा व्यक्तित्व उभर कर नही आया जो महात्मा गाधी का स्थान लेता, जितने भी आर्य नेता थे वे महात्मा गाधी को ही अपना नेता मानने के लिये विवश हुए। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय आदि नेताओ का भी कोई स्वतत्र व्यक्तित्व नही था वह भी महात्मा गाधी को ही सर्वोपरि नेता स्वीकार करते थे। इनके अतिरिक्त और छुटभैये आर्य समाज के स्वतन्त्रता सेनानो नेता थे वे केवल तीसरी या चौथी लाइन के नेता थे। उनमे अपना स्वतत्र राजनीतिक दल बनाने की क्षमता न थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी जयप्रकाश नारायण, डा० राममनोहर लोहिया जैसा भी कोई स्वतत्र नेता राजनीतिक नेता आर्य समाज मे न हुआ। सबके सब जवाहर लाल के पीछे, उसकी हा मे हा मिलाने वाले थे। १९५ में श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जब जनसघ की स्थापना की तो जो आर्य समाजी राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ मे जुडे हुए थे वे राजनीतिक दृष्टि से मुकर्जी के अनुयायी बन गये। आर्य समाज अपने सम्मेलनो के लिये दूसरे दलो से नेता उधार मागता रहा, उनके गले मे मालाओ का ढेर पहनाता रहा, बस दयानन्द की जय बौलता रहा परिणामस्वरूप आर्य समाज का पूरा सगठन दूसरो का पिछलग्गू बन गया।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जो भी आन्दोलन आर्य समाज के द्वारा किये गये उनके लिये भी दूसरे दलो से सहयोग लिया जाता रहा जिसका राजनैतिक लाभ उन दलो ने उठाया आर्य समाज को उससे कोई लाभ नहीं मिला, पजाब का हिन्दी आन्दोलन कोई अपनी पहचान न छोड पाया, पजाब मे आज भी हिन्दी नही है। गौरक्षा आदोलन किया गया आज भी केन्द्रीय सरकार ने ऐसा कानून नही बनाया जिससे सारे देश मे गोवध बन्द हो जाये। यदि आर्य समाज का राजनैतिक वर्चस्व होता तो किसी न किसी प्रदेश मे आर्य समाज द्वारा सगठित राजनैतिक दल की सरकार होती। वैसा इसलिये नही हो सका क्योकि राजनैतिक दल बनाने का इनमे साहस नही है।

दूसरे राजनैतिक दलों से उधार मांगे नेता

जब भारत में ही आर्य राज्य न हो सका तो ससार की बात करना ही व्यर्थ है। आज भी आर्य समाज में ऐसा नैतृत्व नही है जो राजनैतिक दल की स्थापना कर सके। वैसे समय की माग है कि आर्य समाज राजनैतिक दल बनाये, उसका सगठन आर्य समाज के अन्तर्गत एक स्वतत्र इकाई हो। आर्य समाज दूसरे राजनैतिक दलों से कब तक नेता उधार लेता रहेगा, कब तक उनकी पूजा करता रहेगा। इसे स्वाभिमानी आर्य समाजी तो स्वीकार नही कर सकता।

दूसरी बात महर्षि को अभीष्ट थी कि घर-घर मे वेद पहुचे। आरम्भिक काल मे इसी कार्य हेतु आर्य समाज ने गुरुकुलो की स्थापना की थी। गुरुकुलों मे भी महर्षि दयानन्द की आर्ष पाठविधि का क्रियान्वयन न हो सका। महर्षि दयानन्द ने अपने समय मे कई सस्कृत पाठशालायें इस उद्देश्य की प्राप्ति करने के लिये स्थापित की किन्तु उनसे दयानन्द को अपने अभीष्ट की प्राप्ति होती न दिखाई दी तो उन्होने अपने जीवन काल मे ही बन्द कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना की उसके आरम्भिक काल मे कई वर्षो तक योग्यता विद्वान् बनकर निकले, उन्होने आर्य समाज की अथक सेवा की, अब उसी गुरुकुल की अवस्था कैसी है मैं उसका वर्णन करना उचित नही समझता। इसके अतिरिक्त और भी अनेको गुरुकुल जिनकी अवस्था अत्यन्त दीन-हीन है उनका महत्व केवल इतना है कि उनमे से कोई शास्त्री आदि परीक्षा पास करके आर्य समाज मे पुजारी बन जाता है।

जिस अग्रेजी शिक्षा का विरोध आर्य समाज का लक्ष्य था आज दयानन्द के नाम पर ही अग्रेजी का प्रचार हो रहा है। ऐसी दयानन्दी दुकान (स्कूल) है जहा सौदा पैसे से मिलता है उसके कर्ताधर्ता भी आर्य समाजी नही हैं। उनसे कुछ कहना ही व्यर्थ है दयानन्द ऐंग्लो वर्नाक्यूलर के नाम पर (डी० ए० वी०) सक्षिप्त रूप मे अग्रेजी का प्रचार-प्रसार उनका प्रिय कार्य है। स्थान-स्थान पर उनके कर्ताधर्ताओ को स्कूलो के अध्यापको प्रधानाचार्यो द्वारा फूल मालाओ से लादा जाता है, उस समय वे भी दयानन्द के बाद अपने को ही सर्वोपरि नेता मानते हैं। वेद का सुनना, सुनाना, पढना, पढाना सब आर्यों का परम धर्म है। अर्थात् न सुनो, न सुनाओ न पढो, न पढाओ।

वैसे सभी आर्य समाज के सदस्य परम विशिष्ट विद्वान् हैं उन्हे वेद के पडितो की कोई आवश्यकता भी नही है। केवल जलसे के लिये बहुत से नेता हो कोई एक पण्डित हो जो सबको आशीर्वाद दे दे। वेद के लिये आर्य समाज को एक ऐसा केन्द्र स्थापित करना चाहिये जहा सस्कृत के आचार्य बैठकर वेद का पठन पाठन करते हो उनकी आजीविका की पूर्ण व्यवस्था आर्य समाज की शिरोमणि सभा को करनी चाहिये। प्रति सत्र मे केवल १० विद्वानो को प्रवेश दिया जाय। वे निरन्तर वेदो पर तथा उसके सहायक ग्रन्थो पर अनुसन्धान करते रहे। उनकी घोषणायें सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिये माननीय हो। अपनी-अपनी ढपली-अपना-अपना राग न अलापा जाय। कुछ यज्ञ के नाम पर ठगी आर्य समाज मे भी प्रचलित हो गई है मनमाने ढग से यज्ञ पद्धतिया प्रचलित कर ली हैं जो उनका एजेन्ट किसी समाज मे यज्ञ कराने आता है वह अपनी पद्धति सिखा जाता है। अनभिज्ञ आर्य समाजी उनकी बात को ही ठीक समझकर मानकर उसी पद्धति को अपना लेते है इससे यज्ञो मे वैविध्य आ गया है। इस विविधता को वे विद्वान ही समाप्त कर सकते है जो कर्म काण्ड की पूर्ण-अभिज्ञता रखते हो। शिरोमणि सभा की धर्मार्य सभा यह काम नही कर सकती।

आर्य समाज विश्वव्यापी रूप नही ले सका यद्यपि ससार के अनेक देशो मे आर्य समाजे है किन्तु वे भारत से आप्रवासी हिन्दुओ द्वारा ही स्थापित है उस देश के अधिवासी नागरिको द्वारा स्थापित नही है। अब तो कुछ दयानन्द के नाम पर स्कूल भी विदेशो मे आरम्भ किये जा रहे है। आर्य समाज की अपेक्षा भक्ति वेदान्वा स्वामी के अनुयायी प्रत्येक युरोपीय देश मे मिल जायेंगे जो वहीं के अधिवासी है उन्होने अपने ढग से भारतीयता को अपनाया है। उनके अनुयायियो ने सस्कृति, तमिल आदि भाषाओ का भी अध्ययन करना आरम्भ कर दिया है। उनके अपने गुरुकुल है, गोशाला है जहा वही के ही छात्र-छात्राये पढते हैं। अमेरिका आदि देशो मे रामकृष्ण मिशन की शाखायें है। योगदा सोसायटी की भी शाखाये है किन्तु उनके अनुयायियो का जीवन दर्शन इस्कान वालो की भाति परिवर्तित नही हुआ है। मास, शराब आदि का सेवन इस्कान वाले नही करते जबकि स्वामी विवेकानन्द तथा योगदा सोसायटी के अनुयायी इनका सेवन करते हैं। भारतीय आर्य समाजी तो भारत मे ही मद्य, मास का सेवन करते हैं चाहे वे कालेज पार्टी से ही सम्बन्ध क्यो न रखते हो, हैं तो आर्य समाजी। इस दिन तक हम साधिकार वही कह सकते कि आर्य समाज सार्वदेशिक सगठन है। मारीशस जैसे देश मे भी आर्य समाज केवल भारतवशियो का है। काश ? हम ससार की सभी नस्लो को आर्य समाज मे लाने मे सफल हो तभी आर्य समाज का यह सम्बोधन सार्थक होगा कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् कब सार्थक होगा ?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

१. नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२ नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
३. नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३.००
४. नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४.००
५. नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५.००
६ धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५.००
७. फ्लैश आफ ट्रूथ	(डा० सत्यकाम वर्मा)	२.००
८. सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,, ,,	२.००
९. एनोटामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०. आर्यों का आदि देश	,, ,,	२.००
११. प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	,, ,,	२५.००
१२. दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	,, ,,	२.००
१३. चत्वारो वै वेदा:	,, ,,	५.००
१४ द्वैतसिद्धि	,, ,,	५.००
१५ दैनिक यज्ञ पद्धति	(दि० आ० प्र० सभा)	४.००
१६. निकष	(डा० धर्मपाल)	१०.००
१७. भारतीय संस्कृति के मूलाधार चार पुरुषार्थ	(डा० सुरेन्द्र देव शास्त्री)	२०.००
१८. महर्षि दयानन्द की जीवनी	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
१९. पञ्चमयकोष	(महात्मा देवेश भिक्षु)	२०.००
२०. वैदिक योग	(" " ")	५.००
२१. कर्म फल ईश्वराधीन	(श्री ओम्प्रकाश आर्य)	५.००
२२. युग सन्दर्भ	(डा० धर्मपाल)	५.००
२३. आचार्य रामदेव आदर्शवाद ज्योति स्तम्भ	" ")	१०.००
२४. आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	१०.००
२५ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
२६. हसता चल, हसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६.५०
२७. दयानन्द एण्ड दा वैदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैंकड़ा
२८ पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैंकड़ा
२९. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैंकड़ा
३०. योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैंकड़ा
३१ आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैंकड़ा
३२. महर्षि दयानन्द की विशेषताएं (ट्रैक्ट)		५० रु० सैंकड़ा
३३. महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन् १९८३)		५.००
३४ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १९८५		५.००
३५. महर्षि दयानन्द निर्माण शताब्दी स्मारिका १९८५		१०.००
३६ महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषांक		१०.००
३७. ऋषिबोधांक		१०.००
३८ योगीराज श्रीकृष्ण विशेषांक		१०.००
४०. हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती स्मृति अंक	"	१०.००
४१. धर्मवीर पंडित लेखराम स्मृत्यंक	"	५.००
४२. स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती	"	२५.००
४३ प० नाथूराम शकर शर्मा 'शकर'	"	२५.००
४४. श्रावणी एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	"	५.००
४५ प० चमूपति स्मृत्यंक	"	५.००
४६. स्वामी रामेश्वर नन्द सरस्वती	"	५.००
४७. स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	"	५.००
४८. प० गणपति शर्मा	"	५.००
४९ प० रामचन्द्र देहलवी	"	५.००

नोट · उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एव नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान . **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

स्वामी दयानन्द ने कुरीतियां दूर की

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज में फैली कुरीतियों व अन्धविश्वासों को दूर भगाया। बाल विवाह छुआ-छूत पाखण्ड विदेशी संस्कृति के आक्रमण के विरुद्ध महर्षि दयानन्द ने प्रचण्ड आन्दोलन चलाया। ये शब्द गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल ने लाल किला मैदान मे विद्यालय स्तर के छात्र-छात्राओ की "सामाजिक कुरीतियो को दूर करने मे महर्षि दयानन्द का योगदान" भाषण प्रतियोगिता मे बोल रहे थे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद व आर्य युवक परिषद् दिल्ली के सयुक्त तत्वावधान आयोजित इस प्रतियोगिता मे आर्य विद्यालयो के कुमारी मंजू (बिड़ला लाईन्स) कुमारी रंजना अग्रवाल (करोल बाग) दीपती कुमार (पटेल नगर) क्रमश प्रथम द्वितीय तृतीय रहे। विजेताओ को शील्ड, नकद, वैदिक साहित्य के पुरस्कार मिले। प्रोत्साहन पुरस्कार कुमारी दीपमाला (सदर बाजार) व कुमारी रश्मीत कौर (तिलक नगर) ने बोले।

चन्द्रमोहन आर्य
(उपाध्यक्ष)

समाचार

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव ९ अप्रैल से १४ अप्रैल १९९५ तक होगा। उत्सव पर आयोजित वेद सम्मेलन, संस्कृति-सम्मेलन, सास्कृतिक सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलनो में-उच्चकोटि के विद्वान, व्याख्याता, भजनीक, उपदेशक, विचारक, सन्यासी, वैज्ञानिक मार्गदर्शन करेंगे।

तकनीकी उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी में कराए जाने के लिए आग्रह

माननीय श्री ललित किशोर चतुर्वेदी, उच्च शिक्षा मन्त्री, राजस्थान सरकार, जयपुर को केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने पत्र लिखकर अनुरोध किया था कि वे तकनीकी उच्च का माध्यम अविलम्ब हिन्दी में कराए जाने के लिए आदेश दें। इसके उत्तर मे परिषद के श्री जगन्नाथ, सयोजक, राजभाषा कार्य, के नाम मन्त्री जी के विशिष्ट सहायक ने अपने २४-१-९५ के पत्र सख्या-सानिम/९५/५०६ द्वारा सूचित किया है कि इस दिशा मे वे निरन्तर प्रयासशील हैं। हिन्दी मे तकनीकी विषयों के लिए मौलिक पुस्तक लिखने के साथ-साथ श्रेष्ठ पुस्तकों के लिए भी प्रयत्नशील हैं। हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के माध्यम से हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए व्यवस्था की जा रही है। डा० आर० सी० मल्होत्रा एव डा० पी० एल० चतुर्वेदी की अध्यक्षता मे गठित समिति की रिपोर्ट अ शत आ गई है और उस पर अब विचार किया जायेगा। विश्वविद्यालयो के कुलपतियो से आग्रह किया जा रहा है कि वे हिन्दी माध्यम से छात्रो को शिक्षा देने के लिए अनुमति प्रदान करें।

(जगन्नाथ)
संयोजक, राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
एस० वाई० ६८, सरोजिनी नगर
नई दिल्ली-११००२३

वार्षिक शुल्क भेजयें

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने मे व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय मे आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक स० अवश्य लिखे।

—सम्पादक

क्या ऋषि मंत्ररयिचता हैं?

(पेज २ का शेष)

आदि के नाम लिखे हुये जो उपलब्ध होते हैं उनका इन सूक्तो के साथ किम्प्रकारक सम्बन्ध है ? क्या इन मन्त्रो की रचना उन्ही ऋषियो ने की है ?

इस तृतीय शका का समाधान यद्यपि महर्षि जैमिन के पूर्वप्रदत्त "आख्या प्रवचनात्" सूत्र से ही भली प्रकार हो जाता है तथापि विशेष परिपुष्टि के लिये हमे महर्षि कात्यायन की ऋग्वेदसर्वानुक्रमणी के इन वाक्यो पर भी ध्यान देना चाहिये—

"गृत्समदो द्वितीय मण्डलभपश्यत् । वामदेवो गौतमश्चतुर्थ मण्डलभपश्यत् ।"

यहा सर्वत्र अपश्यत् क्रियापद रखा गया है । अम्यरचयत् नही । यह इस बात का प्रबल प्रमाण है सभी वैदिक सूक्तो के ऊपर उल्लिखित ऋषियो को उन-उन सूक्तो का दर्शन करने वाला ही मानते हैं रचयिता नही ।

अन्त मे यह कहकर मैं अपने लेख को विराम देती हू कि महर्षि दयानन्द के सभी सिद्धात तर्क प्रमाणसिद्ध पूर्ण आर्ष परम्परानुमोदित है अत हम आर्यो का चिन्तन, मनन, लेखन सम्पादन सब उन्ही के अनुकूल होना चाहिये । महर्षि निर्दिष्ट मार्ग का अवलम्बन करके ही वेदो की गरिमा को सुरक्षित रखा जा सकता है । अक्षसूक्त में उत्तम पुरुष प्रयोग तथा पुत्र, जाया, माता आदि शब्दो को देखकर "कवष, ऐलूष एव जुआरी रहा होगा" इस प्रकार कल्पनालोक मे विचरण करने से निश्चय ही वेदो के साथ न्याय नही किया जा सकता । वेद परमात्मा का अमर काव्य है, उसमे कही गम्भीर शैली तो कही सरस शैलिया भी उपलब्ध होती हैं । परमात्मा ने सरस शैली मे सम्भावित विपदाओ का बडा मार्मिक चित्रणकर अपनी गृहस्थ सन्ततियो को द्यूतनामक दुर्व्यसन से सावधान किया हो, ऐसा सोचकर हम अपनी चिन्तनशैली ही बदल दे यो क्या आपत्ति है ? जहा तक बात है ब्राह्मण ग्रन्थो के कथानको की, उनके रहस्य भी महान् परिश्रम की अपेक्षा रखते है । ब्राह्मण ग्रन्थ वैदिक विषयो को रोचक बनाने की चेष्टा मे ऐतिहासिक शैली का आश्रयण अवश्य करते है पर उनका तात्पर्य प्राय नित्य इतिहास से ही रहता है । निश्चय ही वैदिक रहस्य यौगिक प्रक्रिया द्वारा ही समधिगम्य हैं ।

(स्नातिका-पाणिनिकन्या महाविद्यालय)

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 2,3 3-1995 Allowed to post without prepayment, Licence No U (C) 139/95

दि.ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/६५ — पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३६/६५

"आर्यसन्देश" साप्ताहिक — ५ मार्च १९९५

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज का वार्षिक उत्सव रविवार ५ फरवरी १९९५ को बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें कई हजार नर, नारियों व बच्चों ने भाग लिया। प्रात ८ से १० बजे तक पण्डित रामानन्द आचार्य द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया और श्री गुलाबसिंह राघव के मनोहर भजन हुए। इसके पश्चात १० से १२ बजे तक प्रतियोगिता मे विजेता बच्चो की धर्मवीर हकीकत राय के जीवन पर भाषण व कविता और रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चो ने बहुत ही आकर्षक धर्मवीर हकीकत राय का ड्रामा व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। दोपहर १२ से २ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव, प्रधान सार्वदेशिक सभा ने की। दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजों की ओर से वन्देमातरम जी का स्वागत किया गया। सम्मेलन मे मुख्य अतिथि सर्वश्री साहिब सिंह वर्मा, शिक्षा मंत्री, भारत सरकार, श्री रामभज जी सदस्य, दिल्ली विधान सभा व मुख्य सचेतक, श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा० महेश विद्यालंकार, डा० प्रेमचन्द श्रीधर, ने अपने ओजस्वी विचार रखे। राष्ट्र कवि सारस्वत मोहन मनीषी की सारगर्भित व ओजस्वी कविताए हुई। अन्त मे कई हजार लोगो ने श्रद्धापूर्वक ऋषि लंगर मे भाग लिया। इस उत्सव को सफल बनाने मे श्री कृष्ण लाल मित्रका प्रधान हकीकत राय समिति व श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता उप प्रधान दक्षिण वेद प्रचार सभा व दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजो का विशेष सहयोग रहा।

रोशन लाल गुप्ता, उप प्रधान

फूले-फले संसार में यह वेद वाटिका

१ का शेष

दिल्ली के मुख्य मन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने आर्य समाज की इस बात को मानने की स्वीकृति प्रदान की है कि विकास मार्ग का नाम महर्षि दयानन्द मार्ग रख दिया जाये।

इस सभा मे श्री एच०के० भगत, श्री बी० एल० शर्मा 'प्रेम' सांसद श्री नरेन्द्र मोहन 'दैनिक जागरण' डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

इस अवसर पर श्री सागर सूरी ने पचास हजार (५००००) रु० दान दिया महाशय धर्मपाल जी (एम०डी०एच०) ने इक्कीस हजार (२१०००) श्री मदनलाल खुराना ने गोशाला की उन्नति के लिये सरकार की ओर से दस हजार (१००००) रु० दिया।

श्री मदन गोपाल आहूजा ने श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी से संन्यास ग्रहण किया, जिनका नाम श्री स्वामी गोपालानन्द रखा गया। उन्होंने पांच हजार (५०००) रु० दान दिया तथा १० पखे गोशाला को भेंट किये। भिक्षा में जो धन प्राप्त हुआ वह भी दान कर दिया। इस समारोह मे दिल्ली की अनेको आर्य समाजों के सदस्यों ने भाग लेकर ऋषि को श्रद्धापूर्वक नमन किया।

मुद्रक द्वारा सम्पादन एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ फोन : -३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एस ११०२४/-६५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक १८ | रविवार, १२ मार्च १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

आर्य समाज किंग्जवे कैम्प में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज किंग्जवे कैम्प हडसन लाइन दिल्ली मे महर्षि दयानन्द बोधोत्सव धूम धाम से मनाया गया। श्री राजेन्द्र गुप्त विधायक द्वारा सभा की अध्यक्षता की गई। सभा मे श्री सूर्यदेव जी का कुलाधिपति के रूप मे अभिनन्दन किया गया। विशेष वक्ता के रूप मे श्री डा० प्रेमचन्द श्रीधर व आचार्य रविदत्त गौतम उपस्थित थे। श्री गुलाबसिंह राघव ने सुमधुर भजनो द्वारा महर्षि का गुण गान किया।

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली की ओर से पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आर्य समाज तुगलकाबाद मे डा० अमर जीवन के सरक्षण मे अनेको डाक्टरों की देख भाल मे स्वास्थ शिविर का आयोजन किया गया। इसमे डा० राजीव गर्ग, डा० के० के० सूद (आई० एम०ए० ब्राच) डा० मिसिज अग्रवाल, डा० मिसिज सवी आदि अनेक डाक्टरो ने सेवा भाव से कार्य किया। लगभग ५०० रोगी उपस्थित हुए जिसमे लगभग ३०० नेत्र रोगी थे २०० का स्वास्थ परीक्षण किया गया। १५-२० नेत्र रोगियो को निशुल्क चश्मे दिये गये। ७-८ रोगियो के मोतिया बिन्द के आप्रेशन किये गये। आस-पास के ग्रामीणो ने इस कार्य की बडी ही सराहना की। डा० अमर जीवन ने बताया कि हमारा विचार आगामी दिवसो में महरोली के समीपस्थ ग्राम किशन गढ मे इसी प्रकार का कैम्प लगाने की योजना है। आर्य समाज मोर की सराय मे भी एक कैम्प लगाया जायेगा। आर्य समाज हनुमान रोड इस कार्य के लिए लगभग २०००० रु० व्यय करेगी इन कार्यो मे दिल्ली की अन्य सामाजिक सस्थाए भी सहयोग प्रदान कर रही है तुगलकाबाद मे लायन्स हास्पिटल से डाक्टरो की सेवा सराहनीय हैं।

आर्य समाज शकर नगर में वेद प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की आर्य समाजो मे प्रचार की योजना के अन्तर्गत दिनांक ५ मार्च को आर्य समाज शकर नगर झण्डेवालान मार्ग (गली रविदास) नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव मनाया गया। अध्यक्षता स्थानीय विधायक श्री मोती लाल सोढी ने की। सभा की ओर से श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी ने ब्रह्मा के पद को सुशोभित करते हुए यज्ञ का कार्यक्रम पूर्ण कराया तथा यजमानों को आशीर्वाद दिया। श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने उद्बोधन किया इसके अतिरिक्त श्री मागीलाल आर्य अ० रा० स० क आयोग श्री ब्रह्मचारी पूर्णसिंह, श्री शिवराज शास्त्री, श्री छविकृष्ण शास्त्री, श्री गुलाबसिंह राघव आदि उपदेशक उपस्थित थे। ब्रह्मचारी पूर्णसिंह द्वारा शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

आर्य अनाथालय पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली

आर्य समाज की सामाजिक सेवा का जीता जागता उदाहरण यदि कोई है तो आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस दरियागज दिल्ली है। इसकी स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के द्वारा की गई थी। इस अनाथालय के द्वारा मा-बाप से बिछुडे बच्चे तथा समाज से भटके बच्चो का पालन पोषण जिस रूप मे किया जाता है उसकी जितनी प्रशसा की जाये कम है। इस सस्था मे लगभग ५०० लडके और ५०० लडकिया का सरक्षण होता है। इसकी गतिविधिया प्रातः काल यज्ञ सध्या आदि से आरम्भ होती हैं। जो बच्चे यहा रह रहे हैं उन्हे आर्य चरित्र के साचे मे ढालने का पूरा प्रयास किया जाता है।

यद्यपि आर्य समाज की अधिकाश शक्ति स्कूल कालेज खोलने मे लग रही हैं जबकि वहा पढने वाले कितने बच्चो को आर्य समाज के सिद्धातो का ज्ञान कराया जाता है, इसका उदाहरण वहा के वातावरण से ही मिलता है। उसका कारण वहा पर पढाने वाले अध्यापक और अध्यापिकायें आर्य समाज के सिद्धान्तों से स्वय अनभिज्ञ होते हैं।

कम से कम अनाथालय के कर्मचारी समर्पित भाव से जहा बच्चो की सेवा करते हैं, वहा आर्य समाज के लिए भी उनके मन मे बडी श्रद्धा है। सस्था का प्रत्येक कार्य सराहनीय है। निवास के स्थान स्वच्छ एव साफ हैं। राजकीय सहायता जो भी मिलती उससे अनाथालय का कार्य पूरा नही चल पाता। अनाथालय के कार्यकर्ता, कर्मचारी व अधिकारी वर्ग सतत् इस प्रयत्न मे लगे रहते हैं कि यहा रहने वाले बच्चो के लिए किसी बात का अभाव न रहे। बच्चो को घरेलू वातावरण मिले इसकी सतत चेष्टा की जाती है। अनाथालय के भवन भी अवलोकनीय हैं यहा की यज्ञ शाला अत्यन्त भव्य है। अभी स्कूल के लिए तीन मन्जिल की विशाल बिल्डिग का निर्माण हुआ है, अभी तक बच्चे दूसरे स्कूलो मे पढने जाते थे। छोटे-छोटे बच्चो को दूसरे स्कूलो मे भेजते समय बडी सावधानी रखी जाती है अब अपना स्कूल होने के कारण कही दूर नही जाना पडेगा।

बडी लडकियो के लिए भी चन्द्रावती आर्य विद्यालय मे छात्रावास की व्यवस्था की गई है वही रहकर लडकिया अपनी उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकती है। ऐसा स्तुत्य कार्य करने वाली सस्था को जनता को विशेष रूप से आर्य समाजों को भरपूर सहायता करनी चाहिये।

दयानन्द जी के उपदेश

मनुष्य मात्र का धर्म

धर्म जो पक्षपातरहित, न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियो का अर्थात मनुष्य मात्र का एक ही है।

सन्यासी महात्मा

जो स्वय धर्म मे चलकर सब ससार को चलाते है जिससे आप और सब ससार को इस लोक अर्थात वर्तमान जन्म मे, परलोक अर्थात दूसरे जन्म मे स्वर्ग अर्थात सुख का भोग करते है वे ही धर्मात्मा जन सन्यासी और महात्मा है।

प्रधान सम्पादक सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

नया युग, नयी बातें (२)

डा० त्रिलोक तुलसी, डी० लिट्०

बेकारी

अपराधों की सख्या इसलिए भी बढती है कि बेकारो की सख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है। हम समझते हैं कि हमारे देश मे औद्योगिक पिछड़ेपन के कारण बेकारी बढी है—नए कारखाने लगाओ तो बेकारी भी दूर हो जाएगी। किन्तु जो देश औद्योगिक दृष्टि से बहुत विकसित हैं वहा भी बेकारी की समस्या दिन-प्रतिदिन अधिक उग्र होती जा रही है। यूरोप मे लगभग दो करोड़ व्यक्ति बेकार हैं। लगभग २५ प्रतिशत युवक-युवतियों को काम नही मिलता।

इस प्रसग मे एक मजेदार बात यह है कि जैसे हम विकसित देशों को अपनी विभिन्न समस्याओं के लिए कोसते रहते हैं वैसे ही अमरीका, जापान, और यूरोप के विकसित देश विकासशील देशो को कोसते हैं। वे कहते हैं कि चीन और भारत जैसे देशो मे शिक्षित व्यक्ति सस्ते दामो मे मिल जाते हैं अत: वे नौकरिया हथिया लेते हैं। अधिक लाभ कमाने लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियां (Multinationals) अपने कारखाने अमरीका इत्यादि विकसित देशों से हटाकर भारत इत्यादि देशो मे ले जा रही है, जिससे वहा नौकरिया बढती हैं और विकसित देशों मे बेकारी फैलती है।

हमारे देश मे जब स्वाधीनता आन्दोलन चला था तो गान्धी जी ने स्वदेशी का नारा लगाया था। आज भी विदेशी कम्पनियो के आगमन से घबराकर कई लोग स्वदेशी के नारे फिर लगा रहे हैं। मजेदार बात यह है कि अब अमरीका और यूरोप मे ये स्वदेशी के नारे लगने लगे हैं। भारत, चीन, जापान इत्यादि से आने वाला माल अधिक सस्ता मिल जाता है जिसके कारण स्थानीय उद्योग बन्द हो रहे हैं और बेकारी बढ रही है। इसलिए वहा इस प्रकार के नारे लगते है—"स्वदेशी माल खरीदो, चाहे वह महगा ही क्यो न हो, चाहे वह घटिया ही क्यो न हो।"

ऐसे प्रचार का एक परिणाम यह भी होता है कि इन देशो मे जातिवाद के भाव भडकते है—विदेशियो पर आक्रमण होने लगते हैं।

एक और भी अधिक खतरनाक परिणाम यह होता है कि बेकारी कम करने के लिए इन देशो मे हथियार बनाने वाले कारखानो को चालू रखना जरूरी समझा जाता है। हथियार तभी बनेंगे यदि उनकी माग होगी। अत. विदेशो मे युद्ध भडकाए जाते हैं ताकि वहा हथियार बिक सके। इस प्रकार बेकारी दूर करने का प्रयास आतकवाद को भडकाता है और विश्वशान्ति के लिए भी खतरा बनता है।

औद्योगिक देशो मे बढती हुए बेकारी का एक कारण टेक्नोलाजी भी है, अधिक से अधिक काम अब मशीने करने लगी हैं। अत अधिक से अधिक मजदूरो की छटनी हो जाती है। किन्तु यदि अधिक मजदूरो को काम देने के लिए नवीनतम टेक्नोलाजी का बहिष्कार करोगे तो प्रतिस्पर्धा मे पिछड़ जाओगे और कम्पनी ही फेल हो जायेगी—जो लोग काम पर लगे हैं। वे भी बेकार हो जायेंगे।

उपभोक्तावाद

बेकारी दूर करने के लिए एक तरीका जो झट-पट दिखाई दे जाता हैं वह यह है—अधिक से अधिक उद्योग-धन्धे स्थापित करो ताकि नए नए काम निकले व लोग को नौकरी मिल सके। भारत जैसे अविकसित देशो मे तो अभी तक यह तरीका अपनाना बहुत कुछ सम्भव है, क्योकि हमारे करोडो लोगो की मूल आवश्यकताए भी अभी तक पूरी नही हुई। किन्तु विकसित देशों मे नए उद्योग बने तो वे उत्पादन किस वस्तु का करेगे, क्योकि उन लोगो की मूल आवश्यकताए तो बहुत कुछ पूरी हो चुकी हैं। अत. वहा लोगो को प्रचार माध्यमो के द्वारा बताया जाता है कि उन्हें किस किस नई वस्तुओ की जरूरत हैं और आकर्षक विज्ञापनो के द्वारा उन्हें खरीदने के लिए लोगो को प्रेरित किया जाता है। उनके मन में नई-नई मानसिक इच्छाए जगाई जाती हैं और लोग इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए नए नए खिलोने खरीदने निकल पड़ते हैं, और खूब दौड़-धूप करते हैं। इससे मन में तनाव भरता है, छीना-झपटी होती है, हिंसा बढती है, और अपराध बढ़ते हैं। नए कारखानों से प्रदूषण भी बढता है। इस प्रकार बेकारी की एक समस्या को हल करने के लिए जब उपभोक्तावाद को प्रोत्साहित किया जाता है तो दर्जनो दूसरी समस्याए उभर आती हैं।

असहिष्णुता और आत्मविश्वास

बढती हुई हिंसा का एक कारण नए युग की असहनशीलता भी है। लोग छोटी-छोटी बातो पर भडक उठते हैं और मरने मारने को तैयार हो जाते हैं। धार्मिक कट्टरता भी इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देती है। सलमान रुश्दी और तस्लीमा नसरीन ने दो उपन्यास ऐसे लिखे जिन्हे इस्लाम के लिए अपमानजनक समझा गया और उन्हे मार डालने के फतवे जारी कर दिए गए। ये दोनो लेखक आज भी यूरोप मे छिपते फिरते हैं।

प्रश्न है आज के इस युग मे इतनी व्यापक असहिष्णुता उभरी क्यों है? मनोविज्ञान कहता है कि इसका कारण आत्मविश्वास का अभाव है।

इस प्रसग मे जापान से एक रोचक समाचार भी मिला है। अमरीका मे एक फिल्म बनी थी 'चढ़ता सूरज'। इसमे दिखाया गया था कि जापानी व्यापारी बेईमान होते हैं और अनैतिक तरीको से धन कमाते है। अमरीका मे रहने वाले जापानियो ने इसके विरुद्ध प्रतिवाद किया और प्रदर्शन किए। किन्तु जब यह फिल्म जापान मे दिखाई गई तो वहा के लोगो ने इसे हसी मे टाल दिया। कारण यही है कि अमरीका मे रहने वाले थोड़े से जापानी आश्वस्त नही थे। उन्हे डर था कि इस फिल्म के कारण अमरीकन उनके विरुद्ध भडक जाएगे। किन्तु, इसके विपरीत, अपने देश मे रहने वाले जापानी यह सोचकर प्रसन्न हो रहे थे कि देखो हम कितने सफल और महत्त्वपूर्ण हो गए हैं कि खुले मैदान मे अमरीकन व्यापारी हमारा सामना नही कर पाते, और वे छिप-छिप कर ये ओछे वार करने पर उतर आए हैं।

यदि हम मे आत्मविश्वास होगा तो हम अपनी आलोचना और निन्दा सुन कर उसे हसी मे टाल देगे। किन्तु यदि हम आश्वस्त नही हैं तो छोटी सी आलोचना पर भी भडक उठेंगे। बल्कि बेबात के भी लडने पर उतारू हो जाएगे, कवि-वर 'फैज' के इस महबूब की भान्ति —

वो बात सारे फसाने मे जिसका जिक्र न था,
वो बात उनको बहुत नागवार गुजरी है।

एक बार फिर साहिर की उस नज्म की ओर लोटे जिससे इस लेख का प्रारम्भ हुआ था। साहिर से मुख्यत तीन प्रकार की बाते करने के लिए निमन्त्रण दिया था—राष्ट्रवाद, साम्यवाद और विज्ञानवाद। बीसवी सदी के लिए ये बाते बहुत आवश्यक थी, इसमे सन्देह नही। किन्तु अब नयी सदी के लिए ये बहुत कुछ अप्रासगिक हो चुकी हैं, अत. कह सकते हैं कि साहिर की वह नज्म भी अब पुरानी पड चुकी है। किन्तु इसकी ये चार पक्तिया आज भी प्रासगिक प्रतीत होती हैं—यदि इसकी तीसरी पक्ति मे केवल एक शब्द बदल दें, 'दीन' के स्थान पर 'जहन' रख दे —

दहर के हालात की बाते करें,
इस मुसलसल रात की बाते करें।
आओ परखें जहन के ओहाम को,
इल्मे-मौजूदात की बातें करें।

ससार की परिस्थितियों की बाते करें—सारे ससार की बाते, किसी एक खण्ड की नही, किसी एक देश या प्रदेश की नही। सारे पर्यावरण की बाते, किसी एक जीव-जाति की नहीं—चाहे वह जीव-जाति मानव ही क्यों न हो, जो स्वयं अपने आप को स्रष्टा की सर्वश्रेष्ठ रचना कह कर इतरा रहा है, यद्यपि आज वह सारी धरती के लिए और सभी जीव-जातियों के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। आज की यह मुसलसल रात इसी मानव की हिंसक प्रवृत्तियों के कारण खत्म होने में नही आती।

शेष पेज ५ पर)

कोउ नृप होहि हमैं का हानि

आचार्य सुधाकर एम० ए०

राजनीति की अन्धी गलियों में आज मेरा भारत खो गया है। कभी राजीव गांधी ने सर्वत्र लिखवा दिया था "मेरा भारत महान है" वास्तवमें राजनैतिक भ्रष्टाचार ने भारत को महान् बना दिया है तभी तो एक स्कूल के बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए पंजाब के पुलिस महानिरीक्षक के० पी० एस० गिल ने बच्चे की तुष्टि करते हुए कहा था कि भ्रष्टाचार पुलिस मे ही नही सभी विभागो मे है। इसलिये यदि पुलिस भ्रष्टाचार करती है तो क्या बुरा है? भारत की संसद में जब घोटालो की चर्चा होती है तो ऐसा लगता है कि भारत सरकार अब गई। बोफोर्स के हीरो वी० पी० सिंह मण्डल के चक्रव्यूह मे ऐसे-फसे कि अब उनका पता ही नही चलता कि वे भारत में भी है या नही। यदा-कदा उनके बयान अवश्य अखबारो की सुर्खियों की शोभा बढ़ाते हैं। अखबार वालो की भी नियति है कि उन्हे तो अखबार काले करने के लिये कुछ खबर चाहिये, चाहे उससे पाठक को कोई सरोकार हो या न हो।

बैंको के घोटाले, प्रतिभूति घोटाले, चीनी घोटाले, बड़े नेताओ के घोटाले न मालूम कितने खोटा हैं कि भारत की निरीह जनता उन घोटाओ द्वारा खूब रगडी जा रही है। विपक्षी दल अपनी छवि बनाने के लिये अखबारो मे उनके नेताओ के फोटो तथा भाषण छपें तभी तो पार्टी जिन्दा रहेगी अन्यथा भारत की जनता कही पार्टी को भूल न जावे, क्योकि हम लोगो की याद दास्त बडी कमजोर है। हम अपने जिन्दे माता-पिता को ही भूल जाते हैं उनका बुढापा आया नही और हमने उन्हे भुलाया नही, इसलिये राजनैतिक दलो के सामने अपने अस्तित्व का खतरा बना रहता है।

किसान-किसान रहेगा, मजदूर-मजदूर रहेगा, सरकारी अफसर-अफसर रहेगा, नेता-नेता रहेगा। तो जब समाज की परिणति स्थिर है तो क्यो माथा-पच्ची की जावे। पांच साल बाद या कभी बीच-बीच मे भी वोटो की हमे भूल-भुलैयों जाना पडता है जिसके नगाड़े ज्यादा बजे उसी को हमने राष्ट्र-भक्त मान लिया, चाहे वह मीसा मे बन्द रहा हो या डकैती मे बन्द रहा या विदेशी दोस्तो को भारत के गुप्त भेद देता रहा हो जब वह जनता जनार्दन के सामने आकर कहता है, मैं तो रात-दिन जनता की भलाई के स्वप्न देखता हू कि कोई पूंजीपति न बचे सब गरीब हो जाये केवल सीधा सा रास्ता है किसी पूंजीपति का गला पकड़ो वह नीबू की भांति निचुड़ जायेगा। यदि बडा काबू मे न आवे तो उसका लड़का. बच्चा पकड़ लो फिरोती मे एक-आध करोड ले लो। चुनाव मे खर्च के लिये पैसे भी तो चाहिये।

शेषन ने पता नही कौन सी भाग खाली कि वे चुनावों मे सुधार करने चल दिये। भाई लोगो को यह कैसे सहन होता सो राष्ट्र की सर्वोच्च न्यायापालिका मे फरियाद कर दी कि शेषन हम पर ज्यादती कर रहा है। हमारे साधन छीने जा रहे है, हम जनता के आदमी हैं, प्रजातन्त्र के रक्षक हैं, हमारे बिना गरीबो का ध्यान कौन रखेगा, जरूरत पड़ने पर गरीबी समाप्त कर दी जायेगी। देश की आबादी बढ़ रही है उसे ठिकाने लगाने के लिये गोली-बन्दूक-लठैत चाहिये तब जाकर भारत का कल्याण होगा कि शेषन किसी को शेष ही नही रहने देते क्योकि उनका नाम ही शेष-न है उच्च न्यायालय ने दूध का दूध और पानी-का-पानी अर्थात् नीरक्षीर विवेक से न्याय कर दिया।

चुनाव लडो चाहे जैसे लड़ो, शेष-न नही रहेंगे अपनी किसी बात मे अडंगा लगाने के लिये।

निर्वाचन आयोग चुनाव पद्धति के नियमो का हवाला देता रहे उसका नेताओं पर क्या असर पड़ता है। वाह ! हमारे नेता कैसे उदार है कि भ्रष्टाचार मे लिप्त सरकार को दो-चार खरी-खोटी सुनाकर आराम से सोते हैं। जनता उनकी खरी-खोटी को बड़ी उत्सुकता से पढती-सुनती है। नेता भी खुश उनके पैरोकार भी खुश। जनता से कहा देखा ! हमारे सासद ने सरकार की कैसी धज्जिया बखेर दी। अब आप समझ ले हमसे ज्यादा आपका कौन हितैषी है।

बेचारा ! जूती गांठने वाला, पीठ पर बोरी लादने वाला कारखाने में मजदूरी करने वाला, कड़कती सर्दी मे अपने खेतों मे रातभर पानी देने वाला इन सब खटरागों को क्या जाने उसे तो नेता बनना नही, सरकारी अफसर बनना नही। सरकार किसी की भी आ जाये उससे उसे क्या लेना-देना है। उसकी नियति नही है जो वह कर रहा है। तुलसी बाबा ने राम राज्य का उदाहरकरण देकर लिख दिया कि राम के राज्य मे भी "कोउ नृप होहि हमैं का हानि" "चेरी छाडि अब होउ का रानी" तब यह हाल था तो अब राम-राम भी नही। शायद सरकार जय रावण भी कहने लगे तो भी हम अपनी गर्दन झुकाकर कहेंगे। सत्य वचन महाराज।

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

हरिद्वार। प्रादेशिक सस्कृत विद्यालय अध्यापक समिति जनपद हरिद्वार/सहारनपुर का वार्षिक निर्वाचन डा० हरिगोपाल शास्त्री (प्राचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय, की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमे १९९५ एवं १९९६ के लिए डा० हरिगोपाल शास्त्री(अध्यक्ष),श्री पदम प्रसाद सुवेदी एव श्री रामेश्वर प्रसाद (उपाध्यक्ष), श्री चण्डी प्रसाद उनियाल (मन्त्री), श्री ब्रह्मानन्द बिडालिया (उप मन्त्री), श्री मृत्युंजय पाण्डेय (कोषाध्यक्ष) निर्वाचित किए गए।

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने मे व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय मे आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करें धन भेजते समय अपनी ग्राहक स० अवश्य लिखे।

—सम्पादक

गणतन्त्र दिवस वैदिक युग में

श्री आर० पी० श्रीवास्तव

वैदिक जीवन ही भारतीय जीवन पद्धति, का स्रोत है। भारतीय जीवन व्यवस्था चाहे वह धार्मिक क्षेत्र में हो, राजनैतिक क्षेत्र में हो अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र मे हो उसका मूल स्वर है .—

सर्वेऽत्र सुखिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामया.।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग
भवेत् ।।

इस विश्व में सब प्राणी सुखी हो, सब लोग रोग से आक्रान्त न हो, सब प्राणी कल्याण की उपलब्धि करें। कोई प्राणी दुःख का भाजन न हो।

कितनी उदात्त भावना है। यही भावना वैदिक युग की मूल भावना है।

वैदिक युग में गणतन्त्र की अवधारणा को जानने के लिए हमे गणतन्त्र का सामान्य अर्थ जानना चाहिए। विभिन्न लोग गणतन्त्र का विभिन्न अर्थ समझते हैं। कुछ लोगो के लिए यह सामाजिक जीवन का मार्ग है। पहले विचार के लोग गणतन्त्र का मूल तत्व एक देश मे प्रचलित मताधिकार प्रणाली तथा निर्वाचन पद्धति और शासन तथा जनता के बीच सम्बन्धों मे देखते है, जबकि दूसरे विचार के व्यक्तियो को उसका सार राज्य के आदर्शो तथा जनता की जनपद्धति में दिखायी पड़ता है। प्राचीनकाल से लेकर आज तक बहुत से विचारक गणतन्त्र को शासन का एक रूप समझते रहे हैं। शासन का एक रूप होने के अतिरिक्त यह एक जीवन पद्धति, एक सामाजिक दर्शन भी है। जनहित की साधना का नैतिक कर्तव्य है।

प्राचीन ग्रन्थो तथा राजाओ के शिलालेखो के अनुसार वैदिक युग मे इन्द्र का अभिषेक दक्षिण दिशा में भौज्य के लिए किया गया है। ब्राह्मण युग की भौज्य एक शासन पद्धति थी, जिसमें गणराज्य की स्थापना मान्य थी। ऐतरेय के अनुसार यह पद्धति सात्वत राजाओ (अर्थात् यादवो) मे प्रचलित थी। भौज्य शासन गणराज्य का एक विशिष्ट प्रकार का शासन था। स्वराज्य का राजनैतिक विधान उस प्रणाली से सम्बद्ध था, जिसमें गणो के ऊपर एक अध्यक्ष या राष्ट्रपति शासन करता था। वाजपेय यज्ञ करने का फल स्वराज्य की प्राप्ति बतलाया गया है।

य एवं विद्वान वाजपेयन यजति, गच्छति
स्वराज्यम्। अग्र समानाना पर्वति।
तिष्ठतेऽस्मै ज्यैष्ठ्याय।

—तैति० ब्रा० १/३/२२

स्वराज्य वह शासन है जिसमे कोई भी व्यक्ति समान व्यक्तियो मे अग्रगण्य स्थान प्राप्त करता है। गण के समस्त सभासद 'सदृशा सर्वे' माने जाते थे, इसलिए 'अग्र समानाना पर्वति' का तात्पर्य गणराज्य के अध्यक्ष पद पाने से है। वैराज्य पद्धति का प्रचार ऐतरेय के अनुसार उदीच्य देशो मे हिमालय से भी आगे (परेण हिमवतम्) था, जहा उत्तर-कुरु तथा उत्तर-मद्र नामक जातिया निवास करती थी। वैराज्य का अर्थ है राजा से रहित देश। फलत वह एक विशिष्ट गणतन्त्रीय शासन पद्धति थी जिसमे राजा का नितात अभाव था।

ऐतरेय मे साम्राज्य-पद्धति का प्रचलन भारत की प्राचीन दिशा में बताया गया है तथा मध्य प्रदेश में जहा कुरु—पाचालो का निवास था, राज्य पद्धति का प्रसार अंगीकृत है। ब्राह्मण ग्रन्थो के अनुसार कुरु तथा पांचाल देशो पर शासन करने वाला 'राजा' कहलाता था। छादोग्य मे पांचालो के राजा का नाम प्रवाहण जैवलि दिया गया है। इस प्रकार वैदिक युग मे गणतन्त्र तथा राज्यतन्त्र दोनो प्रकार के शासन विधान के दृष्टात मिलते हैं।

ऋग्वेद-काल के प्रत्येक जन (जाति) का आधिपत्य राजा के हाथ में होता था। राजसत्ता का प्रादुर्भाव वेद की दृष्टि में युद्धकाल से सम्बन्ध रखता था। इसलिए उन लोगो ने एक बलिष्ठ तथा ओजिष्ठ इन्द्र को अपना राजा बनाया। वैदिक-काल में राजपद का निर्वाचन होता था। 'समिति' में एकत्र होने वाली प्रजा के द्वारा राजा चुना जाता था। उपस्थित प्रजा एक राय होकर राजा को उसके महनीय पद के लिये चुनौती थी और इससे विश्वास किया जाता था कि वह अपने पद से कभी भ्रष्ट न होगा।

अथर्ववेद (७-८७-८८ तथा ऋग्वेद (१८-१७३) में पूरा सूक्त ही राजा के निर्वाचन के लिये प्रयुक्त हुआ है। इस मन्त्र में समिति के द्वारा राजपद के निर्माण की धारणा स्पष्टत. घोषित की गयी है।

ध्रुवोऽच्युतः प्र मृणीहि शत्रून्छत्रूयतोऽ
धराना पादयस्वः।
सर्वा दिश समनस सध्रीची ध्रुवाय ते
समिति कल्पतामिह ।।
(अथर्ववेद ६-८८-३)

अपने कर्त्तव्य से च्युत होने पर राजा पद से तथा देश से च्युत कर दिया जाता था और अपने दोषों को स्वीकार करने पर पुनः चुना जाता था। इस पुनः स्थापना तथा प्रजा के द्वारा राजा के संवरण का उल्लेख अथर्व के दो सूक्तों में (३-३,३-४) विशेष रूप से किया गया। विश के द्वारा राजा के संवरण का निर्देश यह मन्त्र कहता है

त्वा विशो वृणता राज्याय,
त्वामिमा प्रदिश पञ्च देवो।
वर्ष्मन राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व,
ततो न उग्रो विभजा वसूनि ।।
।। अथर्व (३।४।२)

राजा अपने जीवन-काल के लिए निर्वाचित होता था। उसकी सहायता के लिए दो विशिष्ट जनसघो का निर्देश ऋग्वेद में मिलता है, जिसमे एक का नाम था 'समिति' तथा दूसरे का नाम था 'सभा'। इन ससदो का पृथक-पृथक क्या कार्य था। इसके विषय में विद्वानो में एक वाक्यता नही है, परन्तु अधिकाश वेदज्ञो की सम्मति मे 'समिति' पूरे राष्ट्र की सस्था थी जिसमे राष्ट्र की समस्त जनता एकत्र होकर राजा का निर्वाचन किया करती थी। समिति में राजा की उपस्थिति अनिवार्य थी।

समिति के समान तथा समकक्ष एक अन्य राजनैतिक सगठन था, जो 'सभा' के नाम से विख्यात था। सभा और समिति दोनो ही प्रजापति की पुत्रिया मानी जाती थी। दोनो ही जनता द्वारा चुनी गयी सस्थाए थी। अथर्व के एक मन्त्र में सभा 'नरिष्टा' के नाम से जानी जाती है। सायण भाष्य के अनुसार इस शब्द का तात्पर्य यह है कि सभा मे अनेक लोग मिलकर निर्णय पर पहुचते थे वह सबके लिये अनुबन्धनीय था। सभा मे सभासदो के बीच किसी प्रश्न के ऊपर स्वतन्त्रतापूर्वक विचार-विमर्श होता था तथा निर्णीत सिद्धात सबके लिये मान्य और अनिवार्य होता था।

समिति मे जनसाधारण को स्थान मिलता था, परन्तु इसके विपरीत सभा मे राष्ट्र के वृद्धो को ही स्थान मिलता था। 'न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, न सभा यत्र न सन्ति सन्तो।' (जातक गाथा) आदि वाक्यो का निष्कर्ष यही है कि सभा राष्ट्र के वृद्धो की एक विशिष्ट संस्था थी। इसका कार्य अपराधियो के अपराध का निर्णय करना तथा उसके अनुसार दण्ड विधान होता था। एक प्रकार से सभा उच्च न्यायालय का कार्य सम्पादन करती थी। इन्ही की सहायता से राजा अपने कार्य का निर्वाह करता था।

ब्राह्मण—ग्रन्थो मे राज्याभिषेक का अनेक स्थानो पर उल्लेख है, जो राजनैतिक दृष्टि से बडा ही महत्व रखता है। शतपथ (६।३।५।२ तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण (१।८।१०।१।६) मे इस अवसर पर राजा जो प्रतिज्ञा है, उसका उल्लेख मात्र है, परन्तु इसका पूरा वर्णन ऐतरेय-ब्राह्मण मे ऐन्द्रमहाभिषेक के अवसर पर दिया गया है। वह यथार्थ सेवक है, प्रजा के कल्याण के निमित्त वह एक प्रतिष्ठापित पदाधिकारी है। जब तक उस प्रतिज्ञा को निभाता है तब तक वह सिंहासन पर बैठने की योग्यता रखता है, अन्यथा वह हटाया जा सकता है। इस प्रकार अत्यन्त प्राचीनकाल से हिन्दू राजा स्वेच्छाचारी नरपति कभी नहीं होता था। सभा तथा समिति की सहायता से राष्ट्र की मगल साधना करना ही वैदिक राजा का परम लक्ष्य होता था।

वैदिक संस्कृति में सबसे पहला महत्व व्यक्ति को दिया गया है। व्यक्ति कोई भी सामूहिक दायित्व के निर्वाह के लिए किसी भी अनुबन्ध को स्वीकार करता है तो

(शेष पेज ८ पर)

हम भारतवासी क्या थे व क्या बन गये ?

ब्रह्मचर्य, प्रधान देश था भारत लाखों वर्षों तक,
कामुकता में उलझ गया है वापिस ब्रह्मचर्य को अपनाओ।

प्राकृतिक नियम पर सब प्राणी चलते फिर मानव क्यों इतराया है,
हाड़ मांस की बनी देह यह इस पर क्यों ललचाया है।

वीर भूमि भारत कहलाया प्राकृतिक नियम पर चलने को,
महावीर हुये बहुत यहां पर ब्रह्मचर्य अपनाने से।

जिनके भुज बंद के आगे दुनिया दहशत खाती थी।
क्रोध की सांस निकले जब ही अग्नि सी जल जाती थी।

ब्रह्मचर्य पालन करने को वेदज्ञान बतलाता है,
स्वस्थ्य बल दीर्घायु बनकर बल बल बुद्धि बढ़ाने को।

ब्रह्मचर्य पालन किया नहीं तेज पौरुष सब गया,
महिलाओं की निर्बलता का अनुचित लाभ उठाने से।

बलात्कार भी करते पुरुष जब जरा शर्म नहीं आती है,
शासन की उदार नीति का जनता अनुचित लाभ उठाती है।

काम क्रोध मद लोभ मोह में जकड़ गई दुनिया सारी,
मानव का नैतिक पतन हुआ है वेद ज्ञान बिसराने से।

जगत गुरु भारत कहलाया वेद ज्ञान पर चलने से,
मानवता का पाठ पढ़ाया मानव को देव बनाने को।

दुर्भागी है मानव समाज के वेद ज्ञान का लोप हुआ,
मार्ग भटक गया है मानव महर्षि आया था मार्ग बताने को।

वसुधैव कुटुम्बकम् का नारा वेद ज्ञान से आया था,
संकीर्ण विचार मे, सिमिट गया है विश्व दृष्टि को अपनाओ।

राष्ट्रवादिता से ऊपर उठकर सम दृष्टि से सबको देखो,
वेद ज्ञान की यही कसोटी मानव मात्र का हित राखो।

थे ब्राह्मण विद्वान यहां पर नहीं ज्ञान की कमी रही,
विद्या के भण्डार शास्त्र छ बना गये थे सही-सही।

नहीं था उनकी शानी का कोई गुरु कहती थी वह सकल मही,
पर नारियों से भोग करन की वृत्ति पुरुषों ने धारी है।

कुमति का चक्र चला है सदबुद्धि सब की मारी है,
पर नारी प्रसन्न भई दे न सके कुछ और।

मूत्र पात्र आगे धरे यही नरक का ठोर,
पर नारी मीठी छुरी पाच ठोर से खाय।

तन छूटे जोबन घटे पत (मान) पचो मे जाये,
जीवित खाये कालजा मूआं नरक ले जाये।

पर नारी पेनी छुरी को मत लागो अ ग,
दशो शशि रावण कटे पर नारो के सग।

आदित्य ब्रह्मचारी के शरीर मे से एक तेज निकलता है वह कम से कम एक फीट तक प्रभावित रहता अत:, रोग के कीटाणु दूर से ही मर जाते है वेदोपदेश मानव की सर्वांगीण विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करता है उसके मूल सूत्र है। ब्रह्मचर्य, सत्याचरण, परोपकार, विद्या अध्ययन कर अध्यात्म को समझने का, प्रयत्न करना व इन शक्तियों से परोपकार करना।

विनीत भवानी शकर "वानप्रस्थ" स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी
हासपुर मनासा-मंदसौर (म०प्र०)

बसन्त पंचमी कार्यक्रम

बसन्त पंचमी एवं वीर हकीकत राय बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य समाज मन्दिर (पूर्वी) डा० मुखर्जी नगर, दिल्ली की ओर से यज्ञ हवन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प० हरिप्रसाद शास्त्री जी के सुन्दर प्रवचन हुए।

नया युग, नयी बातें

(शेष पेज २ का)

साहिर की तीसरी पंक्ति का मूल रूप है—"आओ परखे दीन के औहाम को।" इसमें 'दीन' के बदले 'जहन' आज अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है, क्योंकि भ्रान्तियां केवल दीन (धर्म) की ही नहीं होती। मानव के जहन (मस्तिष्क) में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां भरी पड़ी हैं। इस प्रसंग में साहिर के इन दो शेरों की भी याद आती है :—

अकाइद वहम हैं, मजहब खयाले-खाम है साकी,
अजल से जहने-इन्सां बस्ता-ए-औहाम है साकी।

(मान्यताएं वहम हैं, धर्म अपरिपक्व धारणा है साकी। आदिकाल से मानव का मस्तिष्क भ्रान्तियो से ग्रस्त है साकी।

'हकीकत-आशनाई' अस्ल मे गुमकर्दा-राही है,
उरूसे-आगही पर्वर्दा-ए-इब्हाम है साकी।

('सत्य का ज्ञान' वास्तव मे रास्ता भूल जाना है, ज्ञान-रूपी दुलहन भ्रमों की पाली हुई है, साकी।)

तो मानव मन के सभी भ्रमो को, सत्य समझी जाने वाली सभी मान्यताओ को, पूर्वाग्रहों से मुक्त हो कर देखना, समझना और परखना होगा। अत मौजूदात (उपस्थित वस्तुओ) का ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। उन्हीं की बात होनी चाहिए। सैद्धान्तिक अटकलबाजियों मे उलझ कर हम रास्ता खो बैठते हैं और सब प्रकार की विपत्तियो को स्वयं आमन्त्रित कर लेते हैं।

कुछ उपस्थित परिस्थितयों पर संक्षिप्त दृष्टिपात करने का अवसर हमे इस लेख में मिला है।

एक पत्र, कुछ प्रश्न

श्री माधीलाल यादव ने अपने एक पत्र मे कुछ सवाल पूछे हैं। ये बुनियादी प्रश्न हैं और इनकी चर्चा इन लेखो मे किसी न किसी सन्दर्भ मे होती रही है। अत इन्हें यहा सक्षेप मे देख लेना पर्याप्त होगा।

(१) धर्म क्या है, अधर्म क्या है ?

धर्म मनुष्य के चार पुरुषार्थों मे से एक है। इसका सम्बन्ध औचित्य से है। अन्य पुरुषार्थो के सदर्भ मे धर्म को इस प्रकार समझा जा सकता है। मानव अपनी आवश्यकताओ (काम) की सतुष्टि के लिए विभिन्न वस्तुओ (अर्थ) का उपार्जन ऐसे उचित ढंग (धर्म) से करे कि वह सदैव (मोक्ष) की अवस्था मे रहे। जब हम अनुचित ढग अपनाते हैं तो आसक्तियो के बन्धन मे बन्ध जाते हैं। यह अधर्म है। (तो मैंने देखा—लेख १०)

(२) क्या ईश्वर की पूजा करना बुरी बात है ?

अपने आप मे कोई भी काम अच्छा बुरा नहीं होता। यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह काम किस उद्देश्य के लिए किया गया है। यदि ईश्वर की पूजा किसी लोभ के लिए या दिखावे के लिए की जाती है तो वह बुरी है। यदि वह सहजभाव से अनायाम ही हो जाती है तो वह व्यक्ति के अह को पीछे छोडकर उसके मन मे स्वातीत भाव जगाती है, अत: अच्छी है।

(३) अन्तत. आदमी क्या करे ?

सबसे पहले वह अपने आपको पहचाने, अपनी नैसर्गिक क्षमताओ का विकास करे, और इस भान्ति आत्मयथार्थीकरण करे।

(४) आज की शिक्षा—एक नजर ?

आज की शिक्षा व्यक्ति को दौडना और दौडते रहना सिखा रही है। अब यह आवश्यक है कि वह उसे शान्ति से बैठकर कुछ आराम के सास लेना भी सिखाए।

(५) इस भ्रष्ट दुनिया का क्या किया जाए ?

दुनिया जैसी भी हो हमे जीना तो इसी मे पडेगा। हम इतना ही कर सकते हैं कि हम जीवन के जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हों उसमें स्वय ईमानदारी से काम करें। हमारा वास्तविक आचरण (कोरी बातें नहीं) दूसरो को भी भ्रष्टाचार से बचने की प्रेरणा दे।

—नया कृष्णा नगर, होशियारपुर १४६००१

कैसे बचें सांस्कृतिक प्रदूषण से ?

प्रो० कल्पनाथ शास्त्री

(सांस्कृतिक प्रदूषण देश के सामने आज सबसे बड़ा खतरा, एक गम्भीर चुनौती है। कैसे उसका निवारण किया जाय, इस सम्बन्ध मे प्रबुद्ध लेखक ने यहा कतिपय व्यावहारिक सुझाव दिए है, उन पर मनन और आचरण परम अपेक्षित है।

—सम्पादक

भारत का गणतन्त्र ४५ वर्ष की आयु प्राप्त कर प्रौढ़ हो गया है। इन ४५ वर्षों मे हमने भौतिक प्रगति भी की है और औद्योगिक उन्नति भी। इस भौतिक समृद्धि की ललक ने हमारे अन्य मूल्यो को, चरित्र को नैतिकता को प्रभावित किया है या नहीं, यदि किया है तो वह प्रभाव सकारात्मक है या नकारात्मक, इन सब आकलनो का भी अवसर ऐसे राष्ट्रीय पर्वो पर आता है। ऐसे आकलन के साथ आज की क्या अपेक्षाए हैं इस पर भी विचार आवश्यक हो जाता है। विश्व के अन्य देशो की तरह हम आज पर्यावरण प्रदूषण से विशेष चिंतित हैं और वृक्षों के विनाश, ओजोन परत को क्षति पहुंचाने वाले तत्वो के प्रयोग तथा वायु एव ध्वनि का प्रदूषण फैलाने वाले वाहनो की विभीषिका को सदा मन मे बसाए रहते हैं। इन प्रदूषणो का नियंत्रण हमारे भौतिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है किंतु मानसिक स्वास्थ्य के लिए जिस प्रदूषण की चिन्ता अन्य देशों को हो रही है उतनी यहां नही दिखती। अनेक देशो मे अपनी सास्कृतिक पहचान बनाने के लिए प्राचीन परम्पराओं की ओर लौटने के जो नारे बुलन्द किए जा रहे हैं उनका कुछ निदर्शन अरब देशो में मिलेगा जहां भौतिक समृद्धि के फलस्वरूप तथाकथित विकसित जीवन के अत्याधुनिक तौर तरीकों का दौर चला था किंतु उसके साथ नई पीढी को अपनी परम्पराओ से जोडने और अपनी पहचान कायम रखने की आवश्यकता का उन्हे जब बोध हुआ तो पुरानी सारी परपराओ को एक ही झटके में स्थापित कर देने के आदोलन शुरू हो गए। भौतिकता और आधुनिकता जब चरम स्थितियो को स्पर्श करती है तो प्रतिक्रिया स्वरूप चक्का दूसरी ओर घूम ही जाता है।

हमारे यहा अपनी पहचान कायम रखने और परम्पराओं की ओर लौटने के नाम पर जो प्रयत्न हुए वे किन्ही कारणो से या तो राजनीति तक या मन्दिर मस्जिद तक सीमित रह गये या रामायण, महाभारत जैसी कथाओं को मीडिया के माध्यम से प्रसारित कर समाप्त हो गए। हमने पत्तो को सीचना ज्यादा जरूरी समझा जड़ों की ओर ध्यान नही दिया। नई पीढी मे परम्पराओ की जिस पहचान का अकुर उगाया जा सकता था उसके बीजो की तलाश ही सही नही हो पाई। यही कारण है कि नई पीढी आज भी अंग्रेजी माध्यम के उन स्कूलो की जीवनचर्या की समृद्धि और उच्च स्तर का प्रतीक मान रही है जिसमे पाप म्यूजिक, डिस्को सस्कृति तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार एव अग्रेजी फिल्मो की जानकारी विकास की अनिवार्य शर्त समझी जाती है। कभी-कभी यह विकास स्मैक, हेरोइन के गलियारो तक बच्चो को पहुचा देता है। इस सास्कृतिक प्रदूषण से बचने के जो उपाय खोजे गए उनके तहत कुछ प्राचीन परपराओ के पोषक शिक्षणालय अवश्य पनपे किंतु उनके प्रयत्न अन्तर्राष्ट्रीयता की आधी मे अधिक खडे नही रह पा रहे हैं। पिछले दिनो केवल टी० वी० की लहर ने फिर हमारी नई पीढी को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से जोडा है जिससे हमारी रही-सही पहचान भी लुप्त हो जाने का खतरा है।

यह पहचान क्या है इसकी परिभाषा भी सरल नहीं है। आज हम भारतीयता की परिभाषा करते हुए शिक्षणालयो मे न तो धोती कुर्ता अनिवार्य कर सकते हैं और न मेज कुर्सी की बजाय दरी चटाई ला सकते हैं। घरो में भी टेबिल पर काटे छुरी से खाना अभारतीय मानकर प्रतिबन्धित नहीं किया जा सकता तब कैसे हमारी अपनी पहचान बनी रहे, कहीं इसका चिंतन हो रहा है? सभी प्राचीन देशो मे यह पहचान सास्कृतिक पर्वो और परिवार के धार्मिक अनुष्ठानों मे व्यक्त होती है। हमारे यहा भी दुर्गापूजा, जन्माष्टमी, दीपावली जैसे सास्कृतिक पर्वो पर कभी सार्वजनिक पूजा ही लेती है कभी उसका अधिक मुखर रूप भगवती जागरण और हरि कथाओं में व्यक्त हो लेता है किंतु नई पीढी का उससे जुडाव नही हो पाता। जिन बातो से जुड़ाव है उनमे कुछ तो ऐसी असगतिया हैं कि सास्कृतिक और पारंपरिक अवसरो पर भी हम देशी जमीन पर ऐसी विदेशी क्यारी लगाते हैं कि देखते ही बनती है। हमारे बहुत से मित्र इस बात को उपहासपूर्वक कहते ही रहे हैं कि अब तक विवाहों के अवसर पर रस्मी तौर पर ही सही पडित अवश्य बुलाया जाता है और भारतीय पद्धति से सप्तपदी भी होती है, हम चाहे उस पारंपरिक विवाह के निमंत्रण पत्र अंग्रेजी में छपाएं और वर टाई सूट मे फेरे ले। डर यह है कि पंडित बुलाकर फेरे लिवाने की यह पहचान भी अन्तत. लुप्त न हो जाए।

न केवल अत्याधुनिक परिवारो मे बल्कि कुछ पुराने परिवारो मे भी बच्चों के जन्म दिन केक काटकर मनाए जाने का दृश्य पिछली शताब्दियो में सुपरिचित, सुविदित हो गया है। और तो और इंग्लिस्तानी पद्धति की केक पर वर्षो की संख्या के अनुसार मोमबत्तियां रखकर उन्हें बुझवाने की रस्म भी बिल्कुल इंग्लिस्तानी तर्ज पर निभाई जाती है, 'हेप्पी बर्थडे टू यू' का मन्त्र पाठ भी होता है। उस समय हम यह भूल जाते हैं कि हमारे यहां ज्योति जीवन का प्रतीक है और ज्योति बुझना या बुझाना मृत्यु का। मृत्यु के बाद दीपक उलट कर बुझा दिया जाता है। जन्म दिन जैसे शुभ अवसरो पर दीपक बुझाने का यह अशुभ कृत्य न जाने कब से और कैसे इस देश मे चल निकला। इसमे सर्वाधिक हाथ तो उन फिल्मो का लगता है जिनमें जन्म दिन की यही पद्धति रात-दिन बच्चे देखते हैं। दक्षिण भारत में अब तक यह प्रदूषण नही फैला था किंतु धीरे-धीरे वहां की केक काटने लगे हैं। दक्षिण भारत के एक हिंदी समाचार पत्र ने तो इसीलिए विस्तार से इस पर सामग्री निकाली है कि आखिर बच्चे का जन्मदिन पारपरिक रीति से किसी प्रकार मनाया जाए। हमारे यहा वर्षों से बच्चो के भाल पर तिलक लगाकर, आरती उतारकर और दीर्घायु की कामना और आशीर्वाद दे लेकर जन्मदिन मनाये जाते रहे थे किंतु उत्तर भारत मे यह जानकारी भी लुप्त होने लगी है। तब अपनी पहचान बचाने के पक्षधरो को बतलाना पड़ता है कि जन्मदिन के अवसर पर यह सब करके मार्कण्डेय, अश्वथामा, व्यास आदि चिरंजीवियो का स्मरण कर और बड़ों के चरण छू कर आशीर्वाद लेने चाहिए।

बड़ो के अभिवादन का पारपरिक प्रकार हमारे यहा चरणस्पर्श का था जो अब धार्मिक अवसरों पर साधु सन्तो के चरणो तक सीमित हो गया है। कला और संस्कृति के नाम पर तिलक लगाना और आरती उतारना पर्यटको को दिखाने में ही सीमित रह गया है। प्राचीन उत्सवो की परम्परा होली पर रंग लगाने और दीवाली पर दीपक जलाने तक सीमित रह गई है। इस बात की उतनी चिंता नही है कि हमारी अत्यन्त प्राचीन परम्पराए नई पीढी के जीवन से विदा न ले ले जितनी इस बात की कि परम्पराओं के वे नये प्रदूषण जिन्हे हम आयातित करते जा रहे हैं हमारी पहचान के अंग न बन जाए। जन्मदिन के उपर्युक्त दृश्य और विवाह आदि अवसरों पर डिस्को, ट्विस्ट, और पाप म्यूजिक के दृश्य ऐसे ही आयातित प्रदूषण के उदाहरण हैं। हमारी नई पीढी इतनी मूढ़ नही है कि इतनी सी विसगति को नहीं समझ सके। उसे समझाने भर की आवश्यकता है। उन्हें किसी भी स्तर पर भारतीय संगीत के आधार पचम आदि स्वरो की और भैरवी, मल्हार आदि रागो की कोई जानकारी दी ही नही जाती तो वे कहा से सीखें? इनकी जानकारी दी जाए तो फिल्मो और बुद्धू बक्से से सीखे पाप म्यूजिक का असर अगर समाप्त न हो तो कम तो अवश्य हो सकता है। हम रहन-सहन के आधुनिक तौर तरीके अपना लें, वेष-भूषा भी सुविधानुसार पहनें किंतु ऐसे स्थलो और तवसरों पर जिनमे पारंपरिक पहचान ही केंद्र बिंदु रहती है अपनी परपराओ का स्मरण अवश्य करें। ग्रेगेरियन कलैण्डर की तिथियों का प्रयोग विश्वजनीन हो गया है, उसे छोड़ना नितान्त अबुद्धिमत्तापूर्ण होगा किंतु साथ ही वैशाख, श्रावण, फाल्गुन, कार्तिक आदि महीनों की जानकारी भी नई पीढ़ी को रहे तो परपराएं टूट नही पाएंगी। अभिवादन मे 'नमस्कार' तो चल निकला है पर 'अकल जी' जैसे सम्बोधन और 'टाटा' जैसे अभिवादन नहीं छूट पा रहे हैं तो कम से कम पारंपरिक अवसरों पर चरण स्पर्श करने तथा नमस्कार और आशीर्वाद देने के प्रकार उन्हें याद रहें तो क्या बुरा है। आज तेजी से बढ़ रहे सांस्कृतिक प्रदूषण को रोकने का यही उपाय है कि नई पीढ़ी की शिक्षा में और परिवारों के रहन सहन में ऐसी परम्पराओ की जानकारी अवश्य समाहित की जाए जिसमें वे कभी विदेशों में जाएं तो यह कह सकें कि हमारी वर्षों पुरानी संस्कृति के तौर-तरीके अब भी इन प्रतीकों में खोजे जा सकते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश उपदेशामृत

सामान्य और विशेष स्वर्ग

जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द वही विशेष स्वर्ग कहाता है। सब जीव स्वभाव से सुख प्राप्ति की इच्छा और दुःख का वियोग होना चाहते हैं परन्तु जब तक धर्म नही करते और पाप नही छोड़ते तब तक उनको सुख का मिलनाऔर दुःख का छूटना न होगा क्योंकि जिसका कारण अर्थात् मूल होता है वह नष्ट कभी नही होता, जैसे मूल कट जाने से वृक्ष नष्ट होता है वैसे पाप को छोडने से दुःख नष्ट हो जाता है।

स्वर्ग

स्वर्ग नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है।

नरक

नरक जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री को प्राप्त होना है।

धर्म-अधर्म

जो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदो से अविरुद्ध है उसको धर्म और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण, मिथ्या भाषणादि ईश्वराज्ञा भंग वेदविरुद्ध है उसको अधर्म मानता हूं।

सन्ध्या और हवन अवश्य करना

दिन और रात्रि के सन्धि मे अर्थात् सूर्योदय और अस्त समय मे मिथ्या है और जब आते ही नही तो भाग कौन जायेंगे, जब अपने पाप पुण्य के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से मरण के पश्चात् जीव जन्म लेते हैं तो उनका आना कैसे हो सकता है? इसलिए यह भी बात पेटार्थी, पुराणी और वैरागियों की मिथ्या कल्पी हुई है। हां यह तो ठीकहै कि जहा संन्यासी जायेंगे वहा यह मृतक श्राद्ध करना वेदादि शास्त्रो से विरुद्ध होने से पाखण्ड दूर भाग जायेगा। (५,१२१)

होम से उपकार

देखो! जहा होम होता है वहां से दूर देश मे स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि मे डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके फैल के वायु के साथ दूर देश मे जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु का प्रवेश कर देता है।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 9,10 3-1995 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक
१२ मार्च १९९५

वैदिक युग में

(शेष ४ पेज का)

वह अपनी स्वेच्छा से करता है। उसके ऊपर कोई ब्राह्य दवाव या हीन भावना का प्रभाव नही पडता। वह अपने ऊपर स्वत अनुशासन, शील, मर्यादा और प्राकृतिक नियमो को सुचारु रूप से निबाहने का अनुबन्ध स्वीकार करता है।

इस प्रकार जनता और राजा एक दूसरे के पूरक थे। दोनो के बीच आपस मे टकराव और सघर्ष का कोई प्रश्न नही था। राजा के साथ भी पुरोहितो और ऋषियो का एक समूह होता था, जो यज्ञ अनुष्ठान के साथ नैतिक, न्यायिक और अन्य विषयो पर उचित और अनुचित का परामर्श देता था।

कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि 'गणतन्त्र' की स्थापना जनपद से पहले हुई। जनपद गणतन्त्र का सुचारु रूप से चलाने के लिए बाद मे बने। वैसे देखने मे लगता है कि जनपदो का विकास बौद्धकाल मे हुआ। पहले छोटे-छोटे गणतन्त्र बने। इन गणतन्त्रो की व्यवस्था का आधार भी यही था। प्रत्येक क्षेत्र का नाम जनपद था।

जनपद की विशेषता थी कि एक जनहृद मे जातीय, सास्कृतिक और वैयक्तिक एकता होती थी। उसी के आधार पर उन ग्रामो के सघ को जनपद कहा जाता था। ग्राम की उत्पत्ति गोष्ठियो से हुई। कई गोष्ठिया एक साथ रहने लगी तो उसे ग्राम और कई ग्राम जब सघ बनाकर रहने लगे तो 'विसाह' और कई 'विसाहों' के सघ का नाम जनपद और कई जनपदो का गणतन्त्र बना।

इन गणतन्त्रो का एक मुखिया होता था। उन्हे प्रत्येक जनपद गणतन्त्र की व्यवस्था के लिए दाय देता था। यही स्वेच्छा से दिया गया दाय बाद मे करके रूप मे वसूल किया जाने लगा। गणतन्त्र और गणपतियो का स्वतन्त्र राज्य बन गया। मल्लो का गणतन्त्र, लिच्छिवियो का गणतन्त्र, वैशाली का गणतन्त्र ये सभी इसी रूप मे विकसित हुए और उनकी सस्था का क्रमश. विकास राज्य और राज्य वशो के रूप मे हुआ।

सुप्रसिद्ध विद्वान श्री एन० के० वर्मा के अनुसार राजा का मुख्य कर्त्तव्य था लोक रजन करना। रजन का अर्थ है वृद्धि करना, विकास करना, साथ ही साथ योग-क्षेत्र का वहन करना। राजा शब्द की व्युत्पत्ति में भी रंजन का भाव निहित है। लोकरजन वही कर सकता है जो निष्पक्ष और नि सग होकर न्याय दे सके, आततायी दुष्ट और अपराधी को दण्ड दे सके और अपने अधीनस्थ की रक्षा कर सके।

यह बड़े सौभाग्य की बात है कि हमारा वर्तमान सविधान भारतीय चेतना के परम्परित स्वरूप की रक्षा करते हुए हमारे भारतीय मनीषियो ने हमें उत्तराधिकार के रूप मे दिया है। यह हमारा परम पुनीत ग्रन्थ है जिसमे हमारी राजनीतिक आस्थाए, नैतिक मर्यादाए और सास्कृतिक मूल्यो का स्रोत सुरक्षित है।

धर्मदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक १९ रविवार, १९ मार्च १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द : १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

भारतीय गोरक्षा अभियान परिषद् में डा० धर्मपाल का उद्घाटन भाषण

रविवार १२-३-९५ को आर्य समाज दीवानहाल के सभा भवन में भारतीय गोरक्षा अभियान परिषद की संगोष्ठी श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। अभियान परिषद के महासचिव श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने आर्य समाज तथा अन्य संस्थाओं द्वारा समय-समय पर गोरक्षा हेतु किये गये आन्दोलनो का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर उद्घाटन भाषण में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा इस दिशा मे किये गये सत्प्रयासों का संक्षिप्त परिचय दिया। महर्षि ने हिन्दी भाषा के अनुमोदन में एक हस्ताक्षर अभियान चलाया, इसी प्रकार का एक आन्दोलन गोरक्षा के लिए भी किया। अजमेर में एक अंग्रेज कमिश्नर की विदाई के अवसर पर बोलते हुए ऋषि ने कहा कि इंगलैंड जाकर अपनी मलिका विक्टोरिया से कह देना कि यदि उन्होंने भारत में गोवध बन्द नहीं किया और इसी प्रकार भारतवासियों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ जारी रखी तो सरकार को सन् १८५७ के गदर के समान दूसरी बार भी इसी प्रकार का गदर दुहराया जा सकता है।

डा० धर्मपाल ने गुरुकुल कांगड़ी का अपना अनुभव बताते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा गोकरुणानिधि में गौ के महत्व एवं आर्थिक लाभ के आंकड़ों का स्वय अवलोकन किया है। वहां पर केवल ८ गौ हैं, जिनके द्वारा समस्त गुरुकुल परिवार को दूध की आपूर्ति की जाती है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने वर्ष व्यतीत हो जाने पर पूर्ण गोवध बन्दी की यहां घोषणा नहीं हुई है। जबकि पाकिस्तान में गोवध बन्दी है।

इसी संगोष्ठी मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने बताया कि कुछ राज्यों में पिछले दिनो गोवध पर प्रतिबन्ध लगाया है, किन्तु हमारी यात्रा अभी बहुत लम्बी है।' उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा समय-समय पर गोरक्षा हेतु किए गए प्रयासों की चर्चा की।

इस संगोष्ठी में इन्दौर से जगदीश प्रसाद वैदिक, रोहतक से प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, उड़ीसा से स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, श्री सोमनाथ एडवोकेट दिल्ली, डा० शिवकुमार दिल्ली, कैप्टन देवरत्न आर्य बम्बई, पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल, जत्थेदार श्री रछपाल सिंह, नामधारी समाज के प्रवक्ता श्री छोटूसिंह एडवोकेट अलवर आदि अनेकों गण्य मान्य महानुभावों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

आर्यसमाज स्थापना दिवस व नव संवत के अवसर पर कृपया इस प्रकार के कार्ड छपवावें

॥ ओ३म् ॥

नव सम्वत् २०५२

मंगलमय हो

आर्य समाज स्थापना दिवस

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् २०५२ १ अप्रैल, १९९५ ई०

के अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

....

प्रधान मन्त्री

आर्य समाज मन्दिर.......... .... दिल्ली

आर्यसमाज स्थापना दिवस को मनाने हेतु सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी की आर्य-समाजों से अपील

इस वर्ष नव सम्वत् २०५२ तथा आर्य समाज स्थापना दिवस १ अप्रैल १९९५ को पड़ रहा है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने निश्चय लिया है कि सभी आर्यसमाजों से अनुरोध किया जाये कि वे इस पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनायें और इस अवसर पर निम्न कार्यक्रम आयोजित करें :—

१. अपने आर्यसमाज मन्दिरों पर नये ओ३म्ध्वज लगायें और दीपमाला करें।

२. अपने अपने आर्यसमाज मन्दिरों तथा अपने क्षेत्र मे विशेष यज्ञों के आयोजन रखें और प्रसाद, मिठाईयां बांटे।

३. यज्ञों मे अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों, सरकारी उच्च अधिकारियों राजनीतिक नेताओं को आमन्त्रित करें। यज्ञ के समय सभी आर्य भाई केसरिया पगड़ी, टोपी, धोती कुर्ता तथा बहनें केसरिया साड़ी अथवा दुपट्टे पहने तो इस कार्यक्रम में एकरूपता आयेगी।

४. इस अवसर पर अपने आर्य समाज मन्दिरों में संगीत सन्ध्या (भजनों) के कार्यक्रम आयोजित करें।

५ इस अवसर पर सम्वत् २०५२ तथा आर्य समाज स्थापना दिवस के बधाई तथा शुभकामना कार्ड प्रकाशित कर सभी सदस्यो को भेजें तथा अपनी आर्य समाज तथा समाज की ओर से चल रही संस्थाओं की ओर से कम से कम ५०० पोस्टर प्रकाशित कर अपने क्षेत्र के सार्वजनिक स्थानों पर चिपकवायें। पोस्टर तथा कार्ड का प्रारूप इस पत्र के साथ संलग्न है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप उपरोक्त कार्यक्रमों को क्रियान्वित कर आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे अपना सहयोग प्रदान करे। कृपया अपने कार्यक्रमों की दो-दो प्रतियां सभा कार्यालय को भी अवश्य भेजें।

सूर्यदेव, प्रधान

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा

माधव के० देशपांडे

आज से तीन सौ तेरह वर्ष पूर्व महाराष्ट्र के राष्ट्रीय सन्त श्री समर्थ रामदास स्वामी ने माघ कृष्ण नवमी को देह त्याग दिया था। बाल्यकाल के प्रथम बारह वर्ष के उपरान्त विवाह मण्डप से अपना घर त्याग दिया। नासिक शहर के समीप यकलीं गाव मे उन्होंने बारह वर्ष पर्यन्त अत्यंत कठिन परिस्थितियों में तपश्चर्या की। और पुन: बारह वर्ष पर्यन्त भारत भ्रमण कर सम्पूर्ण आर्यावर्त का राजकीय, सामाजिक और कौटुम्बिक स्थितियो का अवलोकन किया। अपनी सम्पूर्ण ७३ वर्ष की आयु मे राष्ट्र निर्माण कार्य में, समाज सुधार के कार्य मे पचास वर्ष अथक परिश्रम किया। एक मानव यदि दृढ निश्चय से प्रयत्न करे तो चक्रवर्ती राज्य का निर्माण कर सकता है इस तथ्य का पुन: प्रयत्न मिला। आज की सामाजिक स्थिति और ३५०/४०० वर्ष पूर्व की महाभारत की स्थिति मे अनेक दृष्टिकोण से समानता थी। समर्थ रामदास स्वामी की कार्यप्रणाली में और महर्षि दयानन्द के विचारो मे अति साम्य दृष्टिगोचर होता है। यह एक शोध का अन्य विषय है। प्रस्तुत लेख मे समर्थ रामदास स्वामी के विचारों मे 'प्रयत्न' इस विषय पर हम वैदिक दृष्टिकोण से विशेष विचार करेंगे।

समर्थ रामदास स्वामी ने आजन्म ब्रह्मचर्य का पालन किया। इस आदित्य ब्रह्मचारी पुरुषार्थ की प्रयत्नवाद की संजीवनी पिलाई। अपने कार्य की पूर्ति सौभाग्य से उन्हे देखने को मिली। शिवाजी समान त्यागी क्षत्रिय राजा उन्हें मिला और स्वतन्त्र विशाल भारत का स्वप्न छोटे से महाराष्ट्र में साकार हुआ। काश ! महर्षि दयानन्द को शिवाजी समान क्षात्र शक्ति मिली होती, तो आज भारतवर्ष का नक्शा ही कुछ और होता ! समर्थ रामदास स्वामी का स्वतन्त्र शासन का स्वप्न साकार होते ही आनन्द उमंग से उनके शब्द निकले "उदड झाले पाणी। स्नान सध्या करावया।" अर्थात् उससे पूर्व स्नान सध्या करना भी कठिन था।

पुरुषार्थ ही परमेश्वर है, कहते-कहते समर्थ वेदोक्त कर्मफल-सिद्धान्त वर्णन करते हैं। अपनी बारह वर्ष की तपश्चर्या के काल में उन्होंने नासिक मे उपलब्ध वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र, गीता, महाभारत, रामायण इन वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन किया था। वे अपने प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'दास बोध' (मराठी पद्यरूप २० अध्ययन का ग्रन्थ) में प्रारब्ध को 'सुकृत' कहते हैं। सुकृत अर्थात पूर्व-कर्म। पूर्व कर्म इस जन्म के हो सकते हैं अथवा पूर्वजन्म के भी हो सकते हैं। प्रारब्ध को यदि सुख-दु:ख का फल कहें तो यह प्रारब्ध फिर कैसे बनता है ? अथवा हमे कैसे प्राप्त होता है ? 'प्रारब्ध' यह शब्द ही 'प्रारम्भ' इस शब्द का भूतकाल है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रारम्भ में किये कर्म ही भूतकाल मे 'प्रारब्ध' बनते हैं। समर्थ रामदास स्वामी अपने दासबोध ग्रन्थ मे लिखते हैं.

"केल्या कर्मांचे फक। प्राप्त होईल सकल।

जन्म दु:खाये मुक। तुदे ना की। दासबोध दशक २ समास ७ ओवी ४०॥" (हम यहां कुछ मराठी पक्तियो का उपयोग करेंगे। मुझे विश्वास है यदि यह मराठी भाषा मे है, वे हिन्दी भाषिओं को भी समझने मे कठिन नही है।) यह मानवजन्म हमे मिला यही हमारे पूर्वजन्म का फल है और अपने कर्म का फल अवश्यमेव भुगतना पडेगा। हमे मानव देह प्राप्त हुआ यह हमारे अनेक अच्छे कर्म का परिणाम है। कहते हैं—

"नाना सुकृताचे फल। तो हा नरदेह केवल।"

आज जो कर्म हम कर रहे हैं वहीं कल के प्रारब्ध बन रहे हैं। इसलिए आज के प्रयत्न (कर्म) महत्त्वपूर्ण हैं। लोग अपनी हस्तरेखा पर भविष्य का अनुमान लगाते हैं। समर्थ कहते हैं पुरुषार्थ से 'रेखाही पुसोनि जाते अपनी हस्तरेखा भी बदल जाती है। देव कोटी के जनो का लक्षण बताते हैं। "ऐक सदेव पणाये लक्षण। रिकामा जाऊ नेदी क्षण।" जो अपने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ जाने नही देते वे ही 'स देव' हैं। म० दयानन्द को पूछा गया था कि आपके मन मे कभी पाप के के विचार आये अथवा नही। महर्षि ने उत्तर दिया था मुझे अपने कार्य से अतिरिक्त विचार करने के लिए समय कहा ? क्षण भी व्यर्थ व्यतीत ना हो, इस पर उनका कटाक्ष है। जो उचित कर्म नही करते, उचित प्रयत्न नहीं करते, जो अपने अवगुण नहीं जानते वे ही भाग्य पर विश्वास रखते हैं, और निठल्ले बैठते हैं और अपयश अथवा सुख-दु:ख प्राप्ति का कारण भाग्य समझकर उसे कोसते हैं।

"अचूक यत्न कर वेना। म्हणौन केले ते सजेना।
आपला अवगूण जाणवेना। कांही केल्या॥" दा०बो० १२.२.६।

"एक सुखी एक दुखी। प्रत्यक्ष वर्तते लोकी।
कष्टि होऊनिया सेखी। प्रारब्ध वरी घालीती।" १२-२-५। दा० बो०।

भाग्य पर निर्भर रहने हारे निष्क्रिय लोगो को समर्थ "करंटा" कहते हैं। करटा का अर्थ होता है भाग्यहीन, आलसी, निष्क्रिय, निठल्ला, दरिद्री इत्यादि। समर्थ को आलसी लोगों से अति घृणा है। कहते हैं, आलस्य से कोई भी कार्य यशस्वी नही होता। जिसके पास कुशलता नहीं, व्यापार अर्थात उद्योग नहीं वही प्राणी 'करंटा' है। आलस्य छोड़कर जो अनन्त (उदड) प्रयत्न करते हैं, कष्ट करते हैं वे ही भाग्य के योग्य उपभोक्ता हैं बाकी लोग केवल बातें बनाकर करंटे बन जाते हैं।

"जेही उदंड कष्ट केले। ते भाग्य भोगून गेले।
येर ते बोलतचि राहीले। करंटे जन॥ १८-७-१६ दा० बो०॥"

परिश्रम करने वालो के मार्ग के सारे संकट उसके तप से नष्ट होते हैं। उदड (अथक) कष्ट करने हारे व्यक्ति ही केवल भाग्य का उपभोग लेते हैं। वेदों ने परिश्रम से प्राप्त सम्पत्ति को ही पवित्र माना है, अपनी प्राप्ति इस प्रकार की हो कि जिससे राष्ट्र की समृद्धि बढे। जो औरों की जीविका का आधार बने। वही पवित्र सम्पत्ति है। इसलिए कृषि उद्योग को भारतवर्ष में, आर्यावर्त मे सर्वोत्तम माना गया है। इसमें बिना परिश्रम कुछ भी प्राप्त नही होता, और परिश्रम से जो भी प्राप्त होता है, उससे राष्ट्र की सम्पत्ति बढ़ती है, और अपने साथ-साथ अनेको की जीविका इससे बनती है। इसीलिए कृषि व्यवसाय सर्वश्रेष्ठ माना गया है। आज भी यह श्रेष्ठ है। (इसके आय पर आयकर लागू नही है।)

भाग्य भाग्य कहते हैं, वह हमे कैसे प्राप्त होता है ? कर्म के तीन प्रकार वेद को मान्य है। (१) क्रियमाण (२) संचित (३) प्रारब्ध· अर्थात वर्तमान में जो कर्म किया जा रहा है वह क्रियमाण कर्म होता है जैसे—किसान खेत में बीज बोता है। इसी के साथ क्रियमाण की अवधि भी समाप्त होती है। बोया हुआ बीज जब अंकुरित होता है और उसे लगे फल परिपक्व होते हैं, इस स्थिति का नाम है "सचित" 'संचित' का अर्थ होता है जमा। जैसे बैंक बैलेन्स। जो कर्म किया था, वह अभी जमा है। किसान जब फसल काटकर, दाने निकालकर घर ले आता है। उसी का नाम प्रारब्ध है। जो कर्म किया था, उसका जब फल मिलना आरम्भ होता है वही प्रारब्ध है। कुछ लोग इसे ही भाग्य कहते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जैसे कर्म होगे वैसे ही भाग्य बनेगा।

उन्नीसवी शताब्दी के महान समाज सुधारक, विचारक, महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखते हैं—"पुरुषार्थ प्रारब्ध से बडा इसलिये है कि जिससे सचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधारने से सब सुधरते हैं और जिसके बिगाडने से सब बिगडते हैं। इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।" भगवद्गीता मे भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं "मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं रचयिता है, जैसे कर्म रूपी बीज बोता है वैसे ही भाग्य रूपी फल को प्राप्त होता है।" और "अपनी वर्तमान क्रिया कर्म द्वारा अगले जन्म का निर्णय स्वय करता है।" इस प्रकार मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है किन्तु उसके फल भोग प्राप्त करने में परतन्त्र है। वह उसे परमेश्वर की न्याय व्यवस्था से प्राप्त होता है। "कर्मण्येवाधिकारास्ते मा फलेषु कदाचन।" वेद के आधार पर महर्षि दयानन्द अपने दिनाक १६ फरवरी १८८२ के मुम्बई व्याख्यान में कहते हैं "परमेश्वर की स्तुति करने से वह न्यायकारी प्रसन्न नहीं होता और पाप-पुण्य के फल भोग से नही छूटता। परन्तु जो परमेश्वर की वेदयुक्त आज्ञा के अनुसार उत्तम पुरुषार्थ और उत्तम कर्म का आचरण करता है तो उससे बिना स्तुति प्रार्थना के परमात्मा अपने आप प्रसन्न होता है और उत्तम कर्म के अनुसार अपने आप उत्तम फल प्राप्त करता।"

(क्रमश:)

मांसाहार घोर पाप और स्वास्थ्य विनाशक

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

मांसाहार आत्म-हत्या का कारण

डा० हेग ने एक और मार्के की बात लिखी है, वे कहते हैं कि "मास और शराब के सेवन से मनुष्य के स्नायु इतने कमजोर हो जाते हैं कि वह जीवन से निराश होकर आत्म हत्या करने पर बाधित हो जाता है। इंग्लैंड में मांस और शराब का अधिक प्रयोग है। अत: वहां आत्म-हत्यायें बहुत होती हैं, स्काटलैंड में कम।"

मांस, शराब और मैथुन ये तीन चीजें हैं जिनसे मनुष्य में उत्तेजना बढ़ती और उसके स्नायु दुर्बल हो जाते हैं। वातसस्थान बिगड़ जाता है और निराशा दबा लेती है।

आज कल मांस और शराब का रिवाज बढ़ता जाता है और सिनेमा एवं थियेटर आदि उत्तेजना उत्पन्न करके मैथुन की प्रवृत्ति बढ़ा रहे हैं इसीलिए आत्म हत्यायें बढ़ती जाती हैं। आन्तरिक प्रफुल्लता और ओज चले जाने पर, शराब, मांस, भांग आदि के द्वारा शक्ति लाने का यत्न किया जाता है इसी से हानि होती है।

जीव रक्षा के अनुकरणीय उदाहरण

अंग्रेजी भाषा के ख्यातनामा साहित्यकार बर्नार्डशा ने अपने जीवन के बसन्त में ही मांसाहार का परित्याग कर दिया था। ये उन दावतों में सम्मिलित होने से इन्कार कर देते थे, जिनमें मांसाहार किया जाता था। डाक्टरों ने उन्हें कहा—"मांस भक्षण न करोगे तो मर जाओगे।" उन्होंने कहा—"मुझे परिक्षण कर लेने दो। यदि मैं न मरा तो तुम निरामिष भोजी बन जाओगे।" बर्नार्डशा लगभग १०० वर्ष की आयु के होकर मरे और मरते समय तक वे स्वस्थ बने रहे। उन्होंने एक बार कहा था—"मेरी परिस्थिति बड़ी गम्भीर हैं। मुझ से कहा जाता है कि मांस खाओ तभी जीवित रहोगे। मैंने अपनी वसीयत लिख दी है मेरे मरने पर मेरी अर्थी के साथ विलाप करती हुई गाड़ियों आवश्यकता नहीं है। मेरे साथ बैल, भेड़, गायें, मुर्गे और मछलियां रहेंगी क्योंकि मैंने अपने साथी प्राणियों को खाने की अपेक्षा मरना अच्छा समझा है। हजरत नूह की किश्ती को छोड़ना यह दृश्य सबसे अधिक उत्तम और महत्वपूर्ण होगा।

भारतवासियों को मांस तत्काल छोड़ देना चाहिए

भारतवर्ष के निवासियों के लिए यह प्रश्न है ही नहीं, अत: भारतीयों को तो मांस-भक्षण तत्काल छोड़ देना चाहिए। मांसाहारी न केवल हिंसा का ही पाप करते है, अपितु विशुद्ध शाकाहार की भी बड़ी हानि करते हैं। हजारों गाय, भैंस बकरियां आदि जो मांस और चमड़े के लिए प्रतिदिन काटी जाती हैं, यदि न कटें तो दूध की नहर बहने लगे और उनके गोबर, मल मूत्र आदि से अरबों रुपयों की आय हो, जो मांस और चमड़े की आय की तुलना में बहुत बढ़ी-चढ़ी हो सकती है। आज कल भारत में वह और दूध की कमी का शोर है परन्तु कोई नहीं सोचता कि दूध देने वाले पशुओं को मार कर दूध कैसे मिल सकता है। इसके अतिरिक्त मांसाहार के कारण बहुत सी खेती योग्य भूमि मांस के लिए पाले जाने वाले पशुओं के दाने चुग्गे के काम में प्रयुक्त होने से खेती के कार्य मे प्रयुक्त नहीं हो पाती।

एक मुस्लिम महिला की गोमांस में अरुचि

हम शाकाहारी नहीं हैं परन्तु मैंने कभी भी गौ, बैल या बछड़े का मास अपने घर में नहीं आने दिया। (श्रीमती रोम हेमबाब, मदरास)।

उच्चकुल की उस मुसलमान महिला का उदाहरण क्या ही उत्तम है, जिसके पुत्र ने अंग्रेज कलेक्टर के कहने से बिना दूध की गायों को बेकार समझकर उन्हे बेचना और मारना चाहा था, किन्तु माता ने लड़के को जवाब दिया था कि 'गाय पीछे मारो पहले मेरा ही काम तमाम कर दो।'

(१९१७ ई० मे अखिल भारतीय गौ महासभा के सभापति पद से दिये हुए कलकत्ता हाईकोर्ट के माननीय विचारपति सर जान वुडरफ के भाषण से)।

अनुभवहीन डाक्टरों ने संसार को पशु बना दिया है

डाक्टरों ने अपनी सीमा का उल्लंघन करके संसार को पशु बनाया है। लोगों में मास भक्षण की प्रवृत्ति बढ़ गई है। किसी पशु को मारना पाप नहीं समझा जाता। डाक्टरी परीक्षण के लिए लाखों जीवो की हत्या हुआ करती है। यदि डाक्टर लोग अपने दिमाग को अन्य ऐसे पदार्थों की खोज में लगाएं जिनके ग्रहण करने से हिंसा न हो और रोग दूर हो जाये तो बड़ा अच्छा हो। जितने जानवर हैं उनके शरीर अन्ततोगत्वा वनस्पतियो से ही बनते हैं अत: जो तत्व उनके मांस मे पाये जाते हैं वे वनस्पतियों से लिए गये होंगे। डाक्टर लोग पशुओं के मांस से ही वे पदार्थ लेते हैं जो औषधि का काम करते है। वे उन वनस्पतियों की खोज में परिश्रम नहीं करते जिनको खाकर उन पशुओं ने अपने शरीर मे उन विशेष पदार्थों का उपार्जन किया है परन्तु जिन डाक्टरो ने निष्पक्ष होकर अन्वेषण किया है वे मांसाहार के विरुद्ध है जैसा कि उनकी उपर्युक्त सम्मतियों से स्पष्ट है।

मांसाहार से शराब पीने की कुटेव पड़ती है

मास और शराब का साथ होता है। वैज्ञानिकों ने इसका भी कारण बताया हैं। डा० हेग का कहना है कि अफीम, कोकीन और शराब की तरह मास भी उत्तेजक है और जब इसकी आदत पड़ जाती है तो मनुष्य अधिक उत्तेजक पदार्थों की इच्छा करता है, अन्त मे यह दशा हो जाती है कि अधिक से अधिक उत्तेजक पदार्थ भी उत्तेजना नहीं दे सकता और सिर दर्द, उदासी और निर्बलता सताने लगती है। शराब छोड़नी हो तो मांस छोड दो। मुसलमानों के धर्म मे शराब पीना हराम लिखा है इसलिए धर्म परायण मुसलमान शराब से परहेज करते है परन्तु मांस खाने के कारण इस्लामी देशों से शराब बिल्कुल उड़ाई नहीं जा सकी। जर्मनी मे शराब छुड़ाने का सबसे उत्तम उपाय यह सोचा गया है कि मास कम कर दिया जाये।

— दूध, रोटी, मक्खन, शाक दाल और दलिया बच्चों के लिए सब खानों में सर्वोत्तम है और अच्छी मात्रा में देना चाहिए।

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की मृत्यु तथा आर्य समाजों का वर्तमान रूप

लेखक प्रो० धर्मवीर

स्वामीजी महाराज गत दो-तीन वर्ष से रुग्ण चल रहे थे, बीच मे एक बार ऐसा लगा वे नही बचेंगे परन्तु उनके शिष्य श्री दीनानाथ सिंह और उनके परिवार की सेवा ने उन्हे बचा लिया। वे पहचान भूल चुके थे, उनकी स्मृति लुप्त हो गई थी परन्तु इन भक्तो की सेवा ने उन्हे स्वस्थ कर लोगों को पहचानने योग्य बना दिया था परन्तु व्यक्ति के प्रयास से ईश्वर के नियम प्रबल है, आज स्वामीजी महाराज हैं से थे हो गये। जब उनके जीवन से सम्बन्धित प्रसगो पर विचार करते हैं तो अनेक प्रश्न उत्तर खोजते प्रतीत होते है। स्वामीजी इस विषय मे भाग्यशाली थे कि उनके अनेक शिष्य उनकी सेवा करने मे अपना गौरव समझते थे इसलिए जब कभी विश्राम की इच्छा, बीमारी का कष्ट होता था तो वे अपने शिष्यो, भक्तो को सेवा का अवसर प्रदान करते थे। वस्तुत देखा जाये तो उनके इन भक्तों ने ही उनके सन्यास को सार्थक किया है। आर्यसमाज एक प्रजातान्त्रिक सस्था है यहा कुर्सी के साथ जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है। आर्यसमाजी आर्यसमाज मन्दिर में आर्यसमाजी होता है फिर लौटने पर उसे आर्यसमाज की आवश्यकता नही रहती। इस कारण आज आर्यसमाज के पास ऐसी कोई संस्था नही हैं जिसमें परम्पराये हो, जहा पर मच के पीछे मच के कार्यकर्ताओ के लिए कोई स्थान हो, सभी समाजों में व्यक्तियो की आवश्यकता अनुभव की जाती है, संन्यासी वानप्रस्थी नहीं मिलते परन्तु सस्थाये या समाजें कहा है जहा सन्यासी, वानप्रस्थी अपने विश्राम या बीमारी के क्षणो मे विश्वासपूर्वक आश्रय ले सके। हमारी विचारधारा आधुनिक हो चली है, पहले देश मे किसान अपने बैल को अशक्त होने पर भी अपने परिवार का अंग मानकर उसकी मरण पर्यन्त सेवा करता था। आज दूध देने वाली गाय-भैंस दूध बन्द होते ही कसाई को बेच दी जाती हैं और परिवार के वृद्ध बोझ बनकर अनादर, उपेक्षा के पात्र बन बीमारी, अभाव आदि के दुःख सहते हैं। ऐसी परिस्थिति में सन्यासी वानप्रस्थियो की सेवा का भार कोई कैसे वहन करे। एक ओर सन्यासियो का अभाव खलता है। दूसरी ओर सन्यासी को सहन करने का सामर्थ्य नही। यदि ऐसी परिस्थिति मे भी कोई सन्यासी बनता है तो उसका साहस ही कहा जायेगा। आज सन्यासी होने पर भी व्यक्ति को विश्राम के लिए घर और जीवनयापन के लिए अपने बच्चो को सहायता की आवश्यकता पडती है। एक प्रतिष्ठित आर्य विद्वान ने संन्यास, लेकर, एक आर्यसमाज मन्दिर मे अपना आसन जमाया और वहां वे बीमार हो गये, आर्यसमाज के अधिकारियो ने सेवक के द्वारा उनकी पत्नी की सूचना भिजवाई, "स्वामीजी बीमार हैं आकर घर ले जाओ" ऐसे समाज मे सन्यासी कहा से आयेंगे? इन घटनाओ को देखकर स्वामी सत्यप्रकाशजी महाराज कहा करते थे--"आर्यसमाजियो मैं असमर्थ हो जाऊ और तुमसे मेरी सेवा न हो सके तो मुझे मेरे परिवार वालो को मत सौपना, भले ही मुझे सडक पर फेक देना क्योकि मैं परिवार के लिए मर चुका हू और परिवार मेरे लिए मर चुका है।' स्वामीजी को घर परिवार मे आखिरी समय तक भी नही लौटना पडा। यह उनके शिष्यो की कृपा है।

आर्यसमाज की इन समस्याओ का हल प्रजातन्त्र मे नही है, हो भी नही सकता, इसका उपाय स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी महाराज ने सोचा था, उनकी इच्छा हर जिले मे एक दयानन्द मठ स्थापित करने की थी जिससे संन्यासी वानप्रस्थी वहां बैठकर साधना करे, स्वाध्याय और शिक्षण ग्रहण करे। उनके बीमार और थके होने पर वे कहीं निश्चिन्त और निश्चित होकर बैठ सके। ऐसे मठ सभाओ के माध्यम से नहीं चल सकते वहा तो सन्यासी ही प्रमुख हो, इस प्रकार के केंद्र यतिमण्डल जैसे सगठन के अधीन चल सकते हैं जहा गुरु शिष्य परम्परा से व्यवस्था चले। यद्यपि हर व्यवस्था मे दोष होते है परन्तु हर व्यवस्था का गुण उसकी अनिवार्यता को सिद्ध करता है। इसलिए इस प्रजातान्त्रिक सगठन के साथ एक परम्परागत व्यवस्था भी अत्यन्त आवश्यक है—क्योकि धर्म का प्रचार वैतनिक उपदेशको से कभी सम्भव नही है। न ही दक्षिणा लोलुप पुरोहित और पार्ट टाईम उपदेशक ही धर्म प्रचार के कार्य को पूरा कर सकते हैं ये सब सहायक हो सकते हैं, काम चला सकते हैं परन्तु धर्म का संसार मे डंका बजाना है तो साधुओ की स्वस्थ गुरुशिष्य परम्परा का विकास समाज को करना होगा।

यह परम्परा इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि आज आर्यसमाज का प्रत्येक साधु स्वतन्त्र है उसे न सगठन की आवश्यकता है न किसी गुरु के आदेश की आवश्यकता। साधु बनने पर उसकी पहली इच्छा और आवश्यकता एक संस्था बनाने की होती है और सस्था मे पड़ा हुआ साधु एक बड़ा गृहस्थी बन जाता है। उसकी सारी शक्ति चन्दा इकट्ठा करने और आश्रम बनाने मे लगती है। जैसे उसे किसी न अपने पास नहीं रहने दिया वैसे ही वह भी किसी को नही रहने देता अन्ततोगत्वा वह सम्पत्ति साधुओ की तो नही रह पाती किसी गृहस्थ की बन जाती है अथवा किसी समाज कण्टक के हिस्से आ जाती है। ऐसी परिस्थिति में प्रचारक केवल प्रचारक नही रह पाता और जब तक उसका आश्रय नही केवल प्रचारक कैसे रहेगा। यह स्थिति स्वामीजी महाराज के सामने आई और कई बार स्थान बदलने पड़े, वे कहा करते थे आर्य समाजियो का भरोसा नहीं कब चलता कर दें इसलिये एक प्रबन्ध आगे रखना पड़ता है। उन्होने पृथक् संस्था नहीं बनाई दो कमरे विज्ञान परिषद् इलाहबाद में बनवाये थे जो उनके पश्चात् घर से दूर थे—स्वामीजी महाराज ने संन्यास के पश्चात घर से नाता तोड़ा तो दुबारा उस ओर देखा भी नही। उन्होंने एक बार बताया था कि संन्यास लेने के बाद वे इलाहाबाद रहे अवश्य परन्तु उस गली मे नहीं गये जिसमे उनका घर था। मनुष्य मनुष्य है, आत्मा के संस्कार तो जन्म जन्मान्तर तक जाते हैं। उनका केवल सन्यास लेने से तो छूटना सम्भव नहीं है परन्तु संस्कारों को दुर्बल करके उन्हें समाप्ति की ओर ले जाना सन्यासी का कर्तव्य है। स्वामीजी महाराज के जीवन मे इसका अनुभव किया जा सकता है। सुना है स्वामीजी महाराज कहीं बाहर से दिल्ली पधारे, उनके एक पुत्र दिल्ली में कार्यरत थे, उन्हें कोई सूचना देनी थी—स्वामीजी महाराज ने कार्यालय में दूरभाष किया, विदित हुआ, पुत्र घर गये हैं, पुत्र के निवास पर दूरभाष किया पता लगा बीमार हैं, हार्टअटेक हो गया। थोड़ी देर मे पता लगा कि पुत्र दिवगत हो गये। स्वामीजी ने किसी से चर्चा नहीं की कोई दुःख व्यक्त न होने दिया, कही गये नही। दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु से उनका बडा स्नेह था, उनसे दूरभाष पर सम्पर्क किया, कहने लगे —आज बात करने की इच्छा है, मेरे कमरे पर आ जाओ, दिनभर इधर-उधर की चर्चा करते रहे दो-तीन दिन बाद अन्त्येष्टि के कार्य समाप्त कर पुत्रवधू स्वामीजी महाराज के पास गई तो स्वामीजी ने कहा—ईश्वर की इच्छा जो होना था हो गया अब तुम अपना काम देखो मैं अपना काम देखता हू, कह कर अपने निर्धारित कार्यक्रम पर रवाना हो गये। ऐसा हम में कितने लोग कर सकते हैं।

स्वामीजी महाराज की आर्य समाज के सिद्धातो मे दृढ आस्था तथा ऋषि दयानन्द मे गहरी निष्ठा थी। यावज्जीवन उन्होने आर्य समाज की सेवा की, वे ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जो आज के अधिकाश मूर्ख नेताओ से हटकर पूरे ससार के पठित लोगो मे आर्यसमाज के प्रवक्ता का कार्य करते थे। वे हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी के अच्छे लेखक और वक्ता थे। वे अच्छे विचारक, स्पष्टवक्ता, निर्भीक संन्यासी थे। आर्य समाज से उन्हें गहरा लगाव था वे सब प्रकार निन्दा स्तुति को सहन करते हुए आर्य समाज के कार्य करके प्रसन्नता अनुभव करते थे। उनके इस लगाव का अनुभव इस घटना से किया जा सकता है। उनके पिता प० गगाप्रसाद उपाध्याय आर्य समाज क मूर्धन्य लेखक और प्रचारक थे। वे जब बिजनौर मे अध्यापक थे तब वहां के आर्य-समाज मन्दिर मे उनका परिवार निवास करता था वही पर स्वामी सत्यप्रकाशजी का जन्म हुआ था। इस बात को सुनाते हुए स्वामीजी महाराज कहते थे—मैं जानना चाहता हू ऐसे कितने सौभाग्यशाली लोग हैं जिनका समाज से इस प्रकार सम्बन्ध है। स्वामीजी महाराज ने बतलाया था —बचपन में वे आर्यकुमार सभा चलाते थे परन्तु आर्य समाज में बड़े लोगों के साथ कार्य करने की इच्छा बड़ी प्रबल थी। उन्होंने बतलाया जिस दिन वे अट्ठारह वर्ष के हुए उसी दिन आर्यकुमार सभा से त्यागपत्र देकर आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण कर ली। ऐसा उत्साह आज ढूंढने से भी नहीं मिलेगा। स्वामीजी महाराज जिस उत्साह से कार्य का प्रारम्भ करते थे कार्य समाप्त होने पर उसी अनासक्त भाव से उससे सम्बन्ध विच्छेद भी कर लेते थे। स्वामीजी ने संन्यास लिया तो आर्यसमाज की सदस्यता से भी त्याग पत्र दे दिया। लोगों ने बहुत आग्रह किया ऐसा न करने का, दुबारा सदस्यता स्वीकार करने का, परन्तु स्वामीजी ने कभी स्वीकार नही किया। जब स्वामीजी शरीर से असमर्थ हो गये

(शेष पेज ५ पर)

"चम्बा दयानन्द मठ में एक वर्ष का गायत्री महायज्ञ"

स्वामी सर्वानन्द

श्री स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज सरस्वती की यज्ञ के प्रति बहुत श्रद्धा है। क्योंकि यज्ञ लोक परलोक कल्याण का बहुत बड़ा साधन है। यज्ञ का भाग सारे संसार को मिलता है। यज्ञ में डाली हुई आहुति का प्रभाव बहुत दूर तक होता है। अन्न, फल, फूल मनुष्यों और पशुओं की सभी आहार की वस्तुओं पर यज्ञ का प्रभाव होता है। आहारीय सभी पदार्थों के दोष निर्मूल हो जाते हैं और विशेष गुण उनमें उत्पन्न हो जाते हैं। सूर्य भूमि से सभी द्रव्यों का रस खेंचता रहता है। जीव हितकारी और अहितकारी सभी द्रव्यों का सार सूर्य आकाश में वहां तक पहुचा देता है जहां हवा और पानी का स्थान है। यज्ञ से निकली हुई रोग नाशक सुगन्ध को भी ऊपर आकाश में ले जाता है। वर्षा के समय जो भी सुगन्ध और दुर्गन्ध सूर्य द्वारा ऊपर गयी है वर्षा के पानी में मिलकर सब नीचे भूमि पर आ जाती है। उस वर्षा के पानी में यज्ञ में डाले सभी पदार्थों के गुण भी साथ होते हैं। मनुष्य और पशुओं के अनेक रोगों और अल्प आयु के कारण होते वे दोष नष्ट हो जाते है। मनुष्यो के मन और चिन्तन और विचारों में भी पवित्रता आ जाती है। जैसे यज्ञ सभी के लिए हितकारी है इसी प्रकार मनुष्यों का मन भी "वसुधैव कुटुम्ब के" इस प्रकार के विचारो का बनता है।

मनुष्य सर्व हितकारी बातें सोचने लगता है। ईश्वर सारे संसार के लिए सुख शान्ति चाहता है सब जीव मात्र के लिए। इसी प्रकार यज्ञ भी (सर्वहितकारी) संसार मात्र का हित करता है। इस प्रकार इन सब बातो से पता लगता है कि यज्ञ सबसे बड़ा पुण्य कार्य है। वैदिक धर्म का उपदेश मनुष्य मात्र के लिए आदि सृष्टि में ईश्वर ने किया है चार ऋषियों के द्वारा धर्म को यदि एक शब्द से बताया जाये या कहा जाये तो वह केवल यज्ञ शब्द ही है। यज्ञ से संसार का बहुत बडा उपकार होता है और यज्ञ कर्ता आहुति डालकर कहता है—

"इदन्नमम" यह मेरे लिये नही है यह सारे ससार के लिए है। इस प्रकार यज्ञ एक निष्काम कर्म है। इससे बडा निष्काम कर्म और कौन-सा हो सकता है निष्काम कर्मों का फल ही मुक्ति है।

गत १३ अप्रैल १९९५ वैसाखी से लोक कल्याण और सारे संसार के सुख की भावना से श्री स्वामीजी महाराज ने यह यज्ञ प्रारम्भ किया है जिसकी पूर्णाहुति १३ अप्रैल ९५ को होनी है। यज्ञ के उपकरण सामग्री, समिधा, घी आदि पर लगभग अभी तक छः (६) लाख रुपये खर्च हो चुके हैं। नित्य प्रात सायं आठ घटे यज्ञ होता है। इस पुण्य कार्य में दानी लोग बहुत उदारता से दान दे रहे है।

कुछ दानियों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) श्रीमति कमला आर्या-साठ (६०) हजार, (२) श्रीमति वेदवती शर्मा, पैतालीस (४५) हजार लन्दन, (३) के० सी० आनन्द बीस हजार, (४) पुष्पा मेहता करतारपुर सोलह (१६) हजार, (५) दया कपूर लन्दन सत्तरह (१७) हजार, (६) रामनाथ दुग्गल अमृतसर इक्कीस (२१) हजार, (७) इन्द्र गौतम चौदह (१४) हजार (८) पुष्पा नैय्यर चण्डीगढ़ चौदह हजार इत्यादि।

दयानन्द मठ कमेटी के सदस्य अन्य नगर के नरनरी जुलाहकड़ी मोहल्ले की देवियां तथा पुरुष निरन्तर सहयोग दे रहे हैं। और प्रतिदिन यज्ञ मे सम्मिलित होते हैं। यज्ञ के प्रति लोगों में बहुत ही श्रद्धा है।

मठ मे सेवा के अन्य कई कार्य हो रहे है। नि.शुल्क धर्मार्थ औषधालय, आयुर्वेद फार्मेसी, संस्कृत विद्यालय दयानन्द आदर्श बाल विद्यालय, प्राकृतिक चिकित्सालय प्रतिमास मठ मे आइ (नेत्र) कैम्प लगता है। जिसमे गावो के लोगो के आपरेशन होते हैं। सब रोगियो को मठ में भोजन व्यवस्था के साथ नि शुल्क औषधिया भी दी जाती हैं। इस प्रकार मनुष्य मात्र की सेवार्थ स्वामीजी महाराज के जीवन का एक-एक क्षण समर्पित है। ऐसे महात्मा ऐसे संन्यासी देश में बहुत से हों तो देश पर कोई दैवी आपत्ति नहीं आ सकती।

विरोधियों के मन भी बदल जाते हैं।

यज्ञ पर व्यय—यज्ञ के लिए दान देने वालों को दोहरा लाभ होता है। यज्ञ से प्राणि मात्र का कल्याण उससे पुण्य के भागी बनते हैं। उनका दिया हुआ धन, घी सामग्री, समिधा आदि देते वालो को मिल जाता है। इस प्रकार देने वालों ने यज्ञ से लोक कल्याण पुण्य भी किया और वस्तु विक्रेताओं को कार्य और रुपया भी दिया। जो यह समझते हैं कि यज्ञ मे घी सामग्री आदि जलाकर धन नष्ट होता है यह उनकी भूल है। रुपया तो वैसे का वैसा ही रह जाता है। एक सेनिकल कर दूसरे के पास चला जाता है। और यज्ञ का लाभ पुण्य अलग है। रुपया कभी भी नष्ट नही होता। वह एक से चलकर दूसरे के पास पहुंच जाता है।

एक वर्ष तक चलने वाले अभूतपूर्व यज्ञ की १३ अप्रैल ९५ को पूर्णाहुति के समारोह पर आर्य समाज के विद्वान सन्यासी, वानप्रस्थी तथा हिमाचल के राज्याधिकारी पहुंचेंगे। यह समारोह बहुत भव्य होगा। सभी देवियो पुरुषो को इसमें पहुचकर और महान सन्यासी, तपस्वी त्यागी जिनका १ वर्ष का गायत्रीयज्ञ का सकल्प है। जिन्होने बाहर निकलने का द्वार एक वर्ष तक नही देखना, उनका अमोघ आशीर्वाद प्राप्त कर पुण्यार्जन करें।

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती (पेज ४ का शेष)

और यात्रा करना उनके लिये कठिन हो गया उन्होने स्वत परोपकारिणी सभा की सदस्यता से त्याग-पत्र भेज दिया और लिख दिया मुझे मरा समझ लें और किसी योग्य व्यक्ति को सभा का सदस्य बना लें। यह अलग बात है कि स्वामीजी के त्याग-पत्र को सभा ने स्वीकृत नही किया और मृत्यु तक उनको सदस्य रखने मे सभा ने अपना गौरव समझा। स्वामीजी ने मरने से पूर्व अपनी सब सामग्री बाट दी थी। दिल्ली छोड़ने से पूर्व स्वामीजी से भेंट हुई तो अपने सग्रह की बहुत सारी पुस्तकें सभा के पुस्तकालय के लिए दे दी। समाज में उनके आलोचक थे तो सम्मान करने वालो की सख्या भी कम न थी। उनके प्रशंसकों ने एक बार उन्हे सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाने का प्रस्ताव किया तो उनके विरुद्ध पर्चे छापकर बांटे गये—स्वामीजी महाराज के पास जानकारी पहुंची, उन्होने उसे भी उतने सहज भाव से लिया, स्वामीजी ने बताया कि उन्होनें व्यक्तिगत आलोचना को कोई महत्व नही दिया और इसी कारण कभी उत्तर भी नही दिया। हा, ऐसे लोगों को गद्दी छिनने के भय ने सन्यास अवश्य दिलवा दिया।

स्वामीजी शिक्षित थे, विचारक थे, वैज्ञानिक थे, आधुनिक थे। उन्हें आर्यसमाज के पिछड़ेपन से बड़ी खिन्नता होती थी। आर्यसमाज की अव्यवस्था और गन्दगी पर मन्त्री-प्रधान को अवश्य टोकते थे। वे अपने व्याख्यानो मे भी कहा करते थे—मन्त्री प्रधानों के घर तो बड़े भव्य सुसज्जित होते हैं परन्तु समाज मे दरिद्रता का वातावरण रखते हैं। यदि सोफा उनके घर में रह सकता है, समाज के मैले-कुचैले आसनो पर उन्हे शर्म क्यो नही आती। समाज का टूटा-फटा फर्निचर, गन्दे बर्तन, मैले आसन, गले-सडे बिस्तर यह अव्यवस्था बताती है कि आर्य समाजी का अपनापन समाज मन्दिर मे नही अन्यथा इसमे सुधार असम्भव नही है। स्वामीजी महाराज चिन्तक थे और अपने विचारो का लेखों और भाषणो के माध्यम से व्यक्त भी करते थे उनके विचार बहुत बार भिन्नता लिए होते थे और असहमति का कारण बन जाते थे परन्तु उस विषय मे उनका चिंतन जारी रहता था, वे अन्यो को भी विचार के लिए प्रेरित करते थे। आर्यसमाज में बढते हुए पुरोहितवाद से वे सदा सावधान किया करते थे। किसी भी समाज का सुधार और बिगाड नेताओ और पुरोहितो पर निर्भर करता है। नेता समाज को पुरोहित परिवार को मार्ग पर ला सकता है और मार्ग से हटा सकता है। पुरोहित जब अपने लिए करता है तब परिवार को गलत रास्ते ले जाता है जब परिवार के हित की भावना रखता है तब ही वह सत्यमार्ग पर ले जा सकता है। जो कार्य पुरोहित लोग दक्षिणा बटोरने के लिए करते हैं, स्वामीजी महाराज उन कार्यो की आलोचना करते थे और इस पुरोहितवाद से बचने की सलाह देते थे।

स्वामीजी ने जहां घूम-घूम कर देश-विदेश में प्रचार किया वहीं पर हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषा में प्रचुर साहित्य भी उपलब्ध कराया। स्वामीजी के लेख और उनका जीवन आर्यसमाज के लिए शोध व शिक्षा का विषय रहेगा। आज भर्तृहरी की ये पंक्तियां सहज याद हो आती है—

परगुण परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

(परोपकारी से साभार)

'आर्य सन्देश' सम्बन्धी घोषणा

फार्म-४

१. प्रकाशन का स्थान	१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली
२. प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३. मुद्रक का नाम	सूर्यदेव
क्या भारत का नागरिक है :	हां
४. मुद्रक का पता :	१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
५. प्रकाशक का नाम	सूर्यदेव
६. क्या भारत का नागरिक है .	हा
७. प्रकाशक का पता :	१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
८. सम्पादक का नाम :	सूर्यदेव
क्या भारत का नागरिक है :	हा
सम्पादक का पता :	१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

मैं सूर्यदेव एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये हुए विवरण सत्य हैं।

सूर्यदेव
प्रकाशक

ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सूरजमल विहार दिल्ली-९२, में रविवार २६-२-९५ को ऋषिबोधोत्सव मनाया गया। उत्सव पवित्र यज्ञ से आरम्भ हुआ, तथा ऋषिलंगर (प्रीतिभोज) से सम्पन्न हुआ।

२. उत्सव की अध्यक्षता श्री सूर्यदेव जी, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने की। श्री बैकुण्ठ-लाल शर्मा 'प्रेम' सांसद पूर्वी दिल्ली, उत्सव पर मुख्य अतिथि थे। श्री मदनलाल बाबा, क्षेत्रीय विधायक तथा श्री ईश्वर दास महाजन, प्रसिद्ध समाज सेवी, ने उपस्थित होकर उत्सव की शोभा बढ़ाई। इन सब महानुभावो ने अपने शुभ वचनों द्वारा इस समाज को बल, गति और प्रेरणा दी। पूज्यपाद स्वामी स्वरूपानन्द वेद प्रचार अधिष्ठाता, आर्य प्रति० सभा हनुमान रोड, नई दिल्ली, ने इस समाज के कामल्यार्थ आशीर्वाद दी।

३. इस उत्सव पर वेद प्रवचन, कविता इत्यादि निम्नलिखित विद्वतगण द्वारा हुए —

(१) डा० धर्मपाल, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, (२) राष्ट्र कवि डा० सारस्वत मोहन मनीषी, (३) श्री विश्वमित्र मेधावी शास्त्री विद्यावागीश, (४) श्री धर्मवीर शास्त्री (५) श्री भूदेव साहित्याचार्य, (६) अयोध्या प्रसादशुक्ल।

४. इस उत्सव को सफल बनाने मे क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पूर्वी दिल्ली पटपड़गज तथा दिल्ली शिक्षक सहकारी भवन निर्माण दिल्ली का बहुत सहयोग रहा। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थलों से आई समाजों का सहयोग प्रशसनीय रहा।

(डा० सोमदत्त)
मन्त्री, आर्य समाज सूरज विहार

ओमध्वज गीत

रचयिता--स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

लहर-लहर लहराये यह झण्डा प्यारा ओम का,
झण्डा प्यारा ओम का यह झण्डा प्रभु नाम का।

इस झण्डे मे अंकित है नाम प्रभु का प्यारा,
भेदभाव और ऊच नीच का भेद मिटाये सारा।

समता का पाठ पढ़ाये। यह झण्डा प्यारा···

मिथ्या मत पाखण्ड विनाशक सत्य मार्ग दर्शाये,
एक ईश का पूजन करना मानव को सिखलाये।

जीवन ज्योति जगाये—यह झण्डा ··

इस झण्डे के नीचे आकर मिटे अविद्या सारी,
करें देव पूजन घर में यज्ञ हवन नर नारी।

सुखद सुधा बरसाये—यह झण्डा···

जीवन का आनन्द इसी मे वेद धर्म अपनायें,
ओम ध्वजा हाथों में लेकर गीत प्रभु के गायें।

जग को आर्य बनाये-यह झण्डा प्यारा ओम का,
लहर लहर लहराये यह झण्डा प्यारा ओम का।

कार्यक्रम वृत्त

आर्य समाज पिपरी की ओर से दि० २६-२-९५ को प्रात: ८-१० बजे से ऋषि बोध उत्सव पर्व बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया।

इस उपलक्ष्य में पं० धर्मवीर जी आर्य का ओजस्वी प्रवचन हुआ। साथ ही श्री संजीव कुमार जी तथा केवल्यधाम लोणावाला के आर्य वीर दल के शिक्षक द्वारा सुमधुर भजनों का भी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसका लाभ पिपरी के लगभग ९०० से भी अधिक निवासियों ने उठाया।

अलवर में शराब कारखाना लगाने का तीव्र विरोध

अलवर, ३ मार्च। जिले के सारेखुर्द गाव मे एक निजी समूह द्वारा लगाए जा रहे चौदह अरब के शराब कारखाने के विरोध में समाजसेवी एव राजनीतिक संगठन उठ खड़े हुए हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने तो इसके विरुद्ध तिजारा में आमसभा की है एव विधान सभा पर प्रदर्शन करने तक का निर्णय किया है।

उल्लेखनीय है कि तिजारा तहसील के सारेखुर्द गांव मे एक मदिरा कम्पनी द्वारा लगाए जा रहे शराब कारखाने पर आर्य समाज ने इसे शराब के पक्षधर एव विरोधियों की लड़ाई का सवाल बना दिया। इसी क्रम मे सर्वप्रथम आर्य समाज ने शराबबन्दी अभियान चलाकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान छोटू सिंह के नेतृत्व मे आंदोलन शुरू किया। गुरुवार को इसी क्रम मे पूर्व मे किए गए जनजागरण अभियान के बाद तिजारा मे एक हजार से अधिक लोगों की सभा की गई। इसमे वहा के स्थानीय भाजपा एव अन्य बड़े सगठनो के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अभियान के संयोजक छोटू सिंह ने इसी क्रम मे २४ मार्च को विधानसभा पर प्रदर्शन की चेतावनी दी है। इस आंदोलन को लेकर युवा जनता दल, शिवसेना, जैन समाज एवं अन्य संगठन भी सामने आ गए हैं। सभी ने इस कारखाने को जिले से स्थांतरित करने की माग करते हुए आन्दोलन की चेतावनी दी है। दूसरी तरफ कारखाने का भूमि पूजन हो चुका है तथा निर्माण कार्य जारी है। गुरुवार को तिजारा मे हुई सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष विद्यासागर शास्त्री, वरिष्ठ उपाध्यक्ष केशवदेव वर्मा सहित कई समाजसेवी संगठनो के प्रतिनिधियों ने सम्बोधित किया।

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने मे व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय मे आलस्य नही करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक स० अवश्य लिखे।

—सम्पादक

प्रेषक—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D P.S O. on 16,17 3-1995 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १९ मार्च १९९५

सृष्टि विद्या पर गोष्ठी

नई दिल्ली, १ मार्च। ऋग्वेद के भाव वृत्त सूक्तो पर एक वेद-गोष्ठी ८-९ अप्रैल ९५ को नई दिल्ली की प्रसिद्ध संस्था वेद संस्थान मे होगी। भाव वृत्त सृष्टि विद्या का वैदिक नाम है गोष्टी का विषय वेद के अलावा दर्शन काव्य और विज्ञान को भी स्पर्श करता है। वेद संस्थान प्रतिवर्ष गोष्ठी का आयोजन करता है। उस क्रम मे यह ग्यारहवी वेद गोष्ठी है।

गोष्ठी मे पाच सत्रो मे कुल पन्द्रह शोधनिबन्ध प्रस्तुत किए जाएगे। निबन्ध लेखक विद्वान दिल्ली के अलावा हरियाणा उत्तर प्रदेश मध्यप्रदेश और राजस्थान के हैं। इनमे कुछ उल्लेखनीय नाम हैं—डा० फतहसिंह डा० ब्रह्मानन्द शर्मा डा० कृष्णलाल डा० मानसिंह अनन्त शर्मा, विष्णुकान्त वर्मा डा० सत्यकाम वर्मा।

वैदिक विद्वान डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री का अभिनन्दन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठानम उज्जैन की तरफ से जम्मु काश्मीर प्रदेश के विद्वानो मे सर्व श्रेष्ठ वैदिक विद्वान का चुनाव करके २६ २ ९५ को डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री का विशेष अभिनन्दन किया गया। शास्त्री जी एक दजन ग्रन्थो का निर्माण कर चुके हैं। गुरुकुल बदायू तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक बनकर उन्होंने नव्य-व्याकरण शास्त्री हिन्दी संस्कृत से एम० ए० तथा त्रैतवाद पर पी०एच०डी० उत्तीर्ण की वे सम्पूर्ण भारत में वेद प्रचार का कार्य कर रहे हैं। वेद सुरभि तथा वेद मे अलकारिक कथाऐ ये उनके दो नये ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे है। धर्मार्थ ट्रस्ट, सनातन धर्म सभा एव आर्य समाज के अधिकारियो ने उनके सम्मान मे समारोह किया उन्हें अभिनन्दन पत्र शाल, शील्ड एव राशि भेंट की गई।

डा० वेद कुमारी, जम्मू-काश्मीर

आर्यसमाज स्थापना दिवस

हिमाचल भवन, नई दिल्ली

१ अप्रैल ९५, शनिवार मध्याह्नोत्तर

२ से ५ बजे तक मनाया जायेगा

आप सब सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

—: निवेदक :—

महाशय धर्मपाल	**डा० शिवकुमार शास्त्री**
प्रधान	महामन्त्री

सुरेन्द्र द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा ... परिवारगंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ... के लिए प्रकाशित। पंजी० नं० डी० (एस ११०२४)-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक २० | रविवार, २६ मार्च १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

शिक्षा का उद्देश्य मानवीय गुणों का चतुर्दिक विकास है। —डा० धर्मपाल

कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

आर्य कालेज पानीपत हरियाणा के दीक्षांत समारोह के अवसर पर

ओ३म् या मेधादेवगणा पितरश्चोपासते । तया मामद्यमेधयाऽग्नेमेधाविन कुरू ॥

समादरणीय प्रधानाचार्य डा० सुभाष चन्द्र जैन, प्रबन्ध समिति के प्रधान, मन्त्री एव अधिकारीगण, प्राध्यापक साथियो एव छात्रो ।

मैं इसके लिए हृदय से आभारी हू कि आपने मुझे अपने यहा आने एव कुछ कहने का अवसर प्रदान किया । यह दीक्षान्त का अवसर जिसे प्राचीन भारतीय चिन्तक समावर्तन कहते हैं, बहुत महत्वपूर्ण है । जब छात्र अपनी शिक्षा पूर्ण कर लेता है तो आचार्य उसे समाज को सौप देता है । समाज के श्रेष्ठ पुरुष उस समय साक्षी के रूप मे उपस्थित होते है । प्राचीन काल मे चली आई यह परम्परा हमे अब तक दिखाई देती है । अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त मे इसकी पर्याप्त चर्चा की गई है । इस शिक्षा की सम्पूर्ण परम्परा के अन्त मे केवल अन्तिम उपदेश ही शेष रहता है और उसे छोड देने पर मानो सम्पूर्ण सूत्र हाथ मे निकल जाते हैं । आचार्य अपने शिष्य को उपदेश देता है ·

सत्यवद, धर्मंचर, स्वाध्यायान्माप्रमद

अर्थात सदा सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय मे कभी प्रमाद न करो । इसके साथ ही कहा गया है कि स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम् अर्थात स्वाध्याय के साथ ज्ञान के प्रचार प्रसार मे कभी प्रमाद नही करना चाहिये। इस एक वाक्य के छूट जाने का परिणाम हुआ कि जगद्गुरु यह देश सबसे अधिक अशिक्षित व दरिद्रो का देश बन गया । मेरे प्रिय छात्रो, इस राष्ट्र के प्रति यह तुम्हारा सर्वप्रथम कर्त्तव्य है कि जिस ज्ञान को तुमने अपने से पूर्ववर्ती पीढी से प्राप्त किया है, उसे सम्भव हो तो बढाकर, अथवा उतनी ही मात्रा मे आगे आने वाली सन्तति को सौपोगे । ससार मे उत्पन्न होने वाला प्रत्येक मनुष्य तीन ऋणो से ऋणी होता है । उनमे एक ऋण है ऋषि ऋण, अर्थात ज्ञान की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखना ।

हर्बर्ट स्पेन्सर ने कहा है 'हम मनुष्य को जो लाभ पहुचाना चाहते है, वह उसे शिक्षा के माध्यम से पहुंचाना चाहिए क्योंकि शिक्षा बौद्धिक होने की अपेक्षा भावना प्रधान अधिक है । परिणामस्वरूप यह व्यक्ति एव समाज को शीघ्र प्रभावित करती है । शिक्षा का उद्देश्य माननीय गुणो का चतुर्दिक विकास है । जब तक यह विकास नही होता व्यक्ति साक्षर तो हो सकता है पर उसे शिक्षित नही कहा जा सकता । असाक्षर और शिक्षित मे विरोध नही है । शिक्षा का उद्देश्य होता है स्वतन्त्र चिन्तन में समर्थ बनाना । परन्तु इसमे एक भय है कि यदि यह चिन्तन किन्ही अपरीक्षित बन्धी बधाई लकीरो के अन्दर ही रहता है तो वह कोल्हू के बैल की भाति निरन्तर चलता हुआ भी कही आगे नही बढता, इसलिए परम्पराओ के सत्य व असत्य या वैज्ञानिक अवैज्ञानिक पक्ष को समझबूझ कर ही उन पर टिप्पणी करनी चाहिए ।

व्यक्तिगत रूप से तो भारतीयो की बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति जिसे अंग्रेजी मे आई क्यू कहते है, वह किसी देश के नागरिको से कम नही है अपितु गणित जैसे विषयो मे सर्वाधिक हैं । हम भारतीय दूसरे देशो के विश्वविद्यालयो मे परीक्षाओ मे बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त कर लेते है परन्तु जहा हमे एक दूसरे के साथ मिलकर सामूहिक रूप से काम करना होता है वहा हम पिछड जाते है। इसका स्पष्ट कारण हमारे सस्कारो की, हमारी सामाजिकता की हमारी सामाजिक सस्थाओ की त्रुटि है · हम अपने घर को दूसरे का घर जलाकर भी प्रकाशित करने से परहेज नही करते जबकि दूसरी ओर एक व्यक्ति समाज के हितो को सर्वोपरि मानकर चलता है । चाणक्य ने कहा था परिवार के लिए व्यक्ति, ग्राम के लिए परिवार, जनपद के लिए ग्राम व राष्ट्र के लिए जनपद को उत्सर्ग करने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए । वस्तुत. यही साक्षर एव शिक्षित का भेद है परन्तु इसका यह तात्पर्य नही समझा जाना चाहिए कि इस देश मे मार्क्स के सिद्धानो के अनुसार समाज के सम्मुख व्यक्ति तुच्छ है । वस्तुत इस देश मे व्यक्ति व समाज के सम्बन्धो को वर्णाश्रम के माध्यम से सबसे सुन्दर रूप से सुलझाया गया है । व्यक्ति अपनी उन्नति करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्र है पर सामाजिक बन्धनो से वह ऊपर नही है ।

विज्ञान के विद्यार्थियो से मे विशेष रूप से कहना चाहूगा कि यूरोप और अमेरिका ने नये युग मे जो आर्थिक और विज्ञान सम्बन्धी अद्भुत उन्नति की है, उसका श्रेय क्रियात्मक विज्ञान के आविष्कारो को है, जो विज्ञान के विद्यार्थियो ने परीक्षणो द्वारा किये हैं । गत २५ वर्षों मे वैज्ञानिक ससार मे भारत ने भी अपना कदम बढाया है, परन्तु हमारी गति बहुत मन्द है । जो शिक्षा प्रणाली अपने पाठयक्रम मे विज्ञान को आवश्यक स्थान नही देती उसकी शिक्षा के लिए सक्षम प्रबन्ध नही करती उसे मैं सर्वथा दोषयुक्त समझता हू । विज्ञान की शिक्षा से बौद्धिक विकास मे बहुत सहायता मिलती है परन्तु हृदयपक्ष का विस्तार नही होता । अत. विज्ञान के विद्यार्थियो को साहित्य की डोर को सदा थामे रहना चाहिए । दुर्भाग्य से आज शिक्षा का तात्पर्य सूचनाओ का सग्रह मात्र रह गया है । परीक्षाओ और प्रतियोगिताओ मे छात्र की विभिन्न योग्यताओ एव निर्माणात्मक सामर्थ्य का आकलन नही होता ।

शिक्षा को राजसत्ता व साम्प्रदायिकता के बन्धन से मुक्त रखना चाहिए । जहां मैं यह कहता हू कि शिक्षा पर राजसत्ता और साम्प्रदायिक विचारो का

(शेष पेज ३ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा (२)

माधव के० देशपांडे

अथर्ववेद ४-१६-५ मे कहा है "सख्याता अस्य निमिषोजनानाम् ।" अर्थात् "जीवन मे जितनी बार मनुष्य की आख की पलक झपकती है, प्रभु के ज्ञान मे उनका भी हिसाब है । अत. हमारा कोई भी कर्म बिना फल के नही छूट सकता ।" प्रभु केवल साक्षी है । जो कुछ भी सुख-दुख, हानि-लाभ, हमे प्राप्त हो रहा है वह सब हमारे कर्मो का फल है ।" अवश्यमेव भोक्तय कृतकर्म शुभा शुभम् ।" वैदिक धर्म की ही यह विशेषता है । अन्य धर्मो मे माफी मागकर कर्मो के फल दुख से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है ।" लोग धर्म के फल-सुख की तो इच्छा करते है किन्तु धर्म का आचरण करना नही चाहते । इसी प्रकार पाप के फल दुख को नही चाहते किन्तु पूरी शक्ति के साथ पाप करते है । ससार मे विचित्र बात है कि लोग सहज प्राप्त अमृत को ठुकराकर कठिनता से प्राप्त विष का प्याला पीते है ।" (श्रुति सौरभ, ले०—प० शिवकुमार शास्त्री)

सन्त तुलसीदासजी अपने 'रामचरितमानस' मे लका आक्रमण के समय लिखते हैं "सामने समुद्र देखकर सभी योद्धा दैव और भाग्य की बाते है करते है किन्तु लक्ष्मणजी कहते है—

मारहु बाण सिन्धु करि सोषा ।
नाथ देव करि कौन भरोसा ।
दैव दैव आलसी पुकारा ।
पुरुषारथ कर्त्तव्य हमारा ।"

पुरुषार्थ ही कर्त्तव्य है । प्रारब्ध शब्द का अनर्थ करने से भारतवर्ष फलित ज्योतिष वालो का भाग्य फल देने लगा। इस भ्रमपूर्ण कल्पना से भारतवर्ष का अनत नुकसान हुआ है । बख्तियार खिलजी केवल ७० सैनिक पठानो के सहारे बिहार प्रान्त का शासक बन गया । शत्रु के आक्रमण के समय यश-अपयश के मुहूर्त की प्रतीक्षा कराने से, राष्ट्री सोमनाथ का धनाढ्य मन्दिर लूट लिया गया । यदि पुरुषार्थ का "सत्यार्थ प्रकाश" क्षत्रिय राजाओ को होता तो आज भारत गरीब ना होता और गुलाम ना बनता । इसका यथार्थ कारण महान अर्थज्ञ आर्य चाणक्य अपने अमर ग्रन्थ कौटिल्य अर्थशास्त्र मे लिखते है—

"नक्षत्रमति प्रच्छन्न बालमर्योऽति वर्तते ।
अर्थो ह्यर्थस्य नक्षत्र किं करिष्यन्ति तारका ॥"

अर्थात् "प्रत्यक्ष कार्य करे बिना नक्षत्र और मुहूर्त देखने वाले बालक है । अज्ञानी है । ऐसे अबोध व्यक्तियो को सफलता और यश प्राप्त नही होता । जो काम जो-जो उपायो से यशस्वी होता है, उसी का उपाय करना चाहिए । इसमे नक्षत्र, तारे, यश और अपयश कैसे प्रदान करेगे ? इसलिए सामाजिक कार्यो में विचारो मे, लिखित रूप मे व्याख्यानो मे जीवन के हर कदम पर हम इस अन्धश्रद्धा का विरोध करेगे । शिक्षण क्षेत्र के माध्यम से परिश्रम का महत्व स्थापित करेंगे । परिश्रम से किया कौन-सा भी कार्य छोटा अथवा हीन नही होता । हीनता तो धोका देकर, छल-कपट से धन प्राप्त करने में है । श्रमिको का समाज मे आदर और सन्मान बढाना होगा । प्रयत्नो का पर्याय नही । इसीलिए समर्थ रामदास स्वामी कहते हैं—"प्रयत्न ही परमेश्वर है ।"

अथर्ववेद का एक मत्र है "श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋतेश्रिता " १२-५-१) इसमे मुख्यत चार तत्वो की आवश्यकता प्रतिपादन की है । प्रथम तत्व है समाज के प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रम करना आवश्यक है । जिस देश के लोग उद्यम और परिश्रम से कतराए वह देश सदा दरिद्र और पिछडा रहेगा । दुर्भाग्य से हमारे देश मे यह दुर्गुण भी घुसा है । परिणाम इसके आज हमारे सामने हैं । इस विषय मे हमे कुछ दिन पहले दूरदर्शन पर प्रसिद्ध उद्योगपति श्रीमान स्वर्गीय शतनुरावजी किर्लोस्कर का साक्षात्कार समीप से दर्शाया गया याद आ रहा है । उनसे प्रश्न पूछा गया था—"अपने देश मे बेकारों की सख्या बढती जा रही है, इसमे आपके क्या विचार है ?" आपने उत्तर दिया था वह उपरोक्त वेद मत्र ही था । आपने कहा—"परमेश्वर ने हमे पट के साथ दो हाथ भी दिये हैं इसे हम भूलते जा रहे हैं ।" इसी मे रामदास स्वामी का प्रयत्नवाद है, वेदोक्त पुरुषार्थ की महिमा है और वैदिक परिश्रम का महत्व है ।

परिश्रम और उद्योग के क्षेत्र में आज जापान और जर्मनी अग्रसर है । किसके बल पर ? द्वितीय महायुद्ध में यह दोनों राष्ट्र समाप्त हो गये थे । पचास वर्षों में ही आज यह दोनो फिर से प्रथम स्थान पर हैं, हमारा देश अभी भी 'विकसनशील' है । जापान का क्षेत्र और महाराष्ट्र का क्षेत्र लगभग समान है और जनसख्या जापान की दुगुनी है । वहां पर परिवार नियोजन का कार्यक्रम नही । व्यवस्थापन शास्त्र में उद्योग व्यापार का गुणवत्ता के आधार पर क्रम लगाया जाता है । इस क्रमवारी में आज जापान 'एक्सलन्स' की योग्यता मे है । यह योग्यता से भारत अनंत दूरी पर है । जापान ने अपने परिश्रम और पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा से ही यश प्राप्त किया है ।

वेद मे कहा है अपने राष्ट्र को स्वाधीन रखने के लिए समाज मे आठ गुणो की आवश्यकता है और उसमे द्वितीय गुण है 'उद्यम' । जो राष्ट्र उद्योगप्रिय है वही महान बन सकता है । आज देश मे यह धारणा दृढ हो रही है कि कम से कम परिश्रम से अधिक धनी कैसे बनें ? इसके लिए कोई भी मार्ग अपनाना पड़े तो कोई हानि नही । परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति अपने माल की गुणवत्ता मे सुधार करे बिना अधिक से अधिक कीमत पर बेचना चाहता है । इससे क्या कि हमारा माल ससार के बाजार में निकृष्टता का प्रतीक न बन रहा है । हमारे देश मे लाटरी को राजमान्यता मिल गई है । मटका बन्द कर नही सकते इसलिए लाटरी शुरू हो गयी । लाटरी एक जुआ ही है । इसमे परिश्रम के बिना धन कमाने की इच्छा प्रबल होती है । समाज इससे निष्क्रिय बन जाता है । वेदो मे द्यूत क्रीडा की अत्यन्त निंदा की गयी है । भगवान् श्रीकृष्ण वनवास के समय पाडवो की मिलने के उपरांत कहते हैं—"यदि मैं द्यूत क्रीडा के समय युद्ध मे व्यस्त ना होता, तो यह द्यूत बन्द करवा देता और ना माने तो बलपूर्वक बन्द कर देता ।" महाभारत का यह ज्वलन्त उदाहरण प्रत्यक्ष सामने है । द्यूत का परिणाम क्या होता है ? आज भी हम भारतवासी इसका परिणाम भोग रहे है और आज का महान् व्यंग्य यह है कि हमारी जनता धर्मराज का नाम लेकर द्यूत का समर्थन कर रही है ।

मत्र मे कहा गया है "परिश्रम व उद्योग के बिना दारिद्रय और पिछडेपन का दोष नही हट सकता". दुर्भाग्य से हमारे देश मे से यह दोनो गुण कहा गये, पता नही । हमारे उद्योग, विशेषकर शासकीय उद्योग नुकसान मे चल रहे हैं । केन्द्रीय लेखा परीक्षण से पता चलता है कि विगत आठ-दस साल मे राष्ट्रीय महसूल मे कमी आई है और सरकारी खर्च तीन गुना बढ गया है । सरकार कर्ज चुकाई के लिए दूसरा कर्ज ले रही है । जमा वसूली मे से ८५ प्रतिशत जमा कर्जो के किस्त चुकाने मे जाते है और खर्च निभाने के लिए दूसरा कर्ज लेना अनिवार्य हो गया है । देश की आर्थिक स्थिति कहा जा रही है ? यह स्थिति बदलनी चाहिए । परमेश्वर ने प्रत्येक नागरिक को बुद्धि प्रदान की है । हमे बुद्धि के सहारे कठिनाइयो पर मात कर परिश्रम से यह चित्र बदलना होगा । आज के युवको को इसके लिए प्रवाह के विरुद्ध तैरना होगा । दृढ निश्चय और धैर्य की आवश्यकता है । मार्ग कठिन है किन्तु इसका यह अर्थ नही कि उस ओर चलना ही असम्भव है । यदि विचार परिपक्व है तो कोई कठिनाई बाधक नही होती ।

परिश्रम और उद्योग के विषय मे हमारी आखो के सामने यहूदियो के देश इस्राइल ने जन्म लिया । वहा वही सब कुछ हो रहा है जो हमारे सतयुग मे वर्णित है । गत विश्व युद्ध में जर्मनी और जापान धूल मे मिला दिए गए थे । परन्तु आज समृद्धि के शिखर पर वे विराजमान है । क्या सारा कलियुग हमारे देश के लिए ही है ? जर्मनी, जापान, इग्लैण्ड, अमेरिका इनके लिए कलियुग नही है ? कारण एक ही है, परिश्रम का महत्व । समर्थ रामदास स्वामी की उक्ति उन्होंने अपनाई हैं । "यत्न तो देव जाणावा" प्रयत्न ही परमेश्वर है । आज से ही हम इस ओर चलने का प्रयास करें । नही तो हमारा क्या हाल होगा ? एक कवि के शब्द है—'अन्यथा हाथ से लगाई गाँठें दांतो से खोलनी पड़ेंगी ।" (क्रमश:)

शिक्षा का उद्देश्य

(पेज १ का शेष)

हृठात व डाकना चाहिए, वहा मैं यह भी समझता हूं कि उसको लक्ष्यहीन भी न होना चाहिए। आज शिक्षा जहां स्वतन्त्र छोड़ दी गयी है वहां लक्ष्यहीन भी है। इसका कारण यह है कि आज समाज का सारा सगठन, समाज का सारा जीवन लक्ष्यहीन है। व्यक्ति का लक्ष्य है धन कमाना, स्वतन्त्र होना, यदि ऐसा करने में उसे दूसरों के जीवन को भी छिन्न भिन्न करना पड़े, तो वह ऐसा नि.संकोच होकर करता है। मनुष्य की उन्नति मनुष्य के शोषण पर, राष्ट्र की उन्नति राष्ट्र के शोषण पर निर्भर है। प्रतियोगिता आगे बढ़ने का मूल मन्त्र है। सम्पत्ति, वेतन, योग्यता का मापदण्ड बन गए है। इसी से युद्ध पर युद्ध होते हैं। सन्धि पर सन्धि टूटती है। राजसत्ता के अनुचित प्रभाव तथा व्यक्ति के अह एवं लोभ के कारण राष्ट्र से प्रतिभा का पलायन हो रहा है। एक वैज्ञानिक, डाक्टर या इन्जीनियर बनाने में राष्ट्र का अकूत धन एवं बहुमूल्य समय लगता है पर उस व्यक्ति के देश से चले जाने के कारण उसका कोई भी प्रतिफल देश को प्राप्त नही होता। इस ओर शीघ्र एवं समुचित ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

वेद की एक प्रार्थना है 'अभय ज्ञातादाभय परोक्षात्' अर्थात हमें अपने ज्ञात एवं अज्ञात विषयों से भय न हो। आज हमें अज्ञात से विशेष भय नहीं रहा है क्योकि ज्ञान का दायरा बहुत विस्तीर्ण हो गया है। दुर्भाग्य से हमारा ज्ञान ही हमारा शत्रु हो गया है आज हर देश का श्रेष्ठतम वैज्ञानिक रक्षा के नाम पर मानव को समूल नष्ट करने के उपाय व साधन बनाने मे लगा है चाहे इससे पृथ्वी से जीवन ही क्यों न समाप्त हो जाये।

आजकल छात्राएं भी शिक्षा के क्षेत्र मे आगे बढ रही हैं। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि स्वतन्त्रता के उपरान्त नारी शिक्षा मे पर्याप्त प्रगति हुई है, पर यह अभी उतनी सन्तोषजनक नही है। वैसे तो इस देश मे अनपढ़ो की सख्या प्रतिवर्ष बढ जाती है, बहुत से बच्चे या तो स्कूल का मुख ही नहीं देख पाते या विद्यालय तक पहुंचे भी तो प्राईमरी तक छोड़ देते है, या आठवी अथवा दसवी तक सख्या बहुत घट जाती है। इसका एक मनोवैज्ञानिक कारण यह भी है कि पठित बेरोजगारो की समस्या बढ़ती चली जा रही है। उसका कोई समाधान हमारे पास नहीं है क्योंकि हमारी शिक्षा अब भी मैकाले के उन नियमों पर चल रही है जिसका उद्देश्य ब्रिटिश कम्पनी के लिए क्लर्क तैयार करना था। इसी से आज शिक्षा व नौकरी का सम्बन्ध मूल हो गया। शिक्षा को नौकरी परक न होकर रोजगार परक होना चाहिए। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गतवर्ष कुछ व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये हैं।

एक समय था जब ऋषि दयानन्द के शिष्यो ने छात्रो के साथ ही छात्राओं के लिए महिला विद्यालय खोले थे। परिणामस्वरूप, सामाजिक बहिष्कार, पत्थर एव डण्डे सहने पड़ते थे। उन धैर्यशाली व्यक्तियों के कारण ही आज आर्यसमाज के माध्यम से विश्व का सबसे बडा अशासकीय शिक्षा संस्थाओं का जाल विश्व मे फैल गया है।

मैं कला वर्ग के छात्रों को विज्ञान एव विज्ञान के छात्रो को साहित्य से जुड़े रहने की पुन प्रेरणा करूंगा जिससे मस्तिष्क व हृदय दोनो का यथोचित विकास एव सन्तुलन बना रहे। ब्रह्म शक्ति व क्षात्र शक्ति, दोनो का परस्पर सम्बन्ध होने पर ही व्यक्ति पूर्णता के निकट पहुचता है। एक सस्कृत के कवि ने कहा है—

अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनु
इदं ब्रह्ममिदं क्षात्रं शापादपि शरादपि॥

इसी बात को ऐतरेय ब्राह्मण मे भिन्न शब्दो मे कहा गया है।

यस्यैव विद्वान ब्राह्मणों राष्ट्रगोपः पुरोहितः।
तस्य क्षत्रेण क्षत्रं बलेन बलमश्नुते॥

मैं एक बार फिर उन स्नातकों को जिन्होंने आज उपाधि प्राप्त की है, बधाई देता हूं और कामना करता हूं कि वे देश के सच्चे नागरिक बने और जीवन में सफलता प्राप्त करें। धन्यवाद!

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गोविन्दपुरी (पंजी.) के इक्कीसवें वार्षिकोत्सव पर आप सादर आमन्त्रित है। कार्यक्रमानुसार पधार कर धर्म लाभ उठावें।

चैत्र कृष्ण एकादशी सोमवार से चैत्र कृष्ण द्वितीया रविवार तक
दिनाक २७-३-९५ से दिनाक २-४-९५ रविवार तक

शोक समाचार

आर्य समाज कृष्ण नगर दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता रतनदेवी आर्य कन्या सी० सै० स्कूल कृष्ण नगर के प्रबन्धक श्री नेतराम शर्मा का निधन १७-३-९५ को हो गया। वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भी अन्तरंग सदस्य थे। उनके निधन से आर्य समाज की बहुत बडी क्षति है। सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मचारी परमपिता से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को सदगति एव शान्ति प्रदान करे तथा उनके परिवार को धैर्य प्रदान करे।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, बडका (मेरठ) का द्वितीय वार्षिकोत्सव मै० सिन्धी ज्वैलर्स सब्जी मण्डी, दिल्ली के सौजन्य से आयोजित।

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा तथा धर्मप्रेमी सज्जनो के सद्-सहयोग स्वरूप आर्य समाज बडका जनपद मेरठ अपना द्वितीय वार्षिकोत्सव चैत्र कृष्णा अमावस्या, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा एव द्वितीया सं० २०५२ तदानुसार दिनांक ३१ मार्च, १-२ अप्रैल १९९५ दिन शुक्रवार, शनिवार एव रविवार को उल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। अत. आप अपने परिवार एव मित्रो सहित कार्यक्रम-अनुसार पधार कर धर्म लाभ प्राप्त कर कृतार्थ करे।

गायत्री-महायज्ञ

आर्य समाज इन्द्रप्रस्थ विस्तार दिल्ली-९२ के तत्वावधान मे गायत्री-महायज्ञ इन्द्रप्रस्थ विस्तार के भद्र निवासियो! आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आप के ही क्षेत्र की एक मात्र आर्य समाज ने रविवार दिनाक २६-३-९५ को प्रात ७-३० बजे से ११ बजे तक सब प्राणीमात्र के परम कल्याण हेतु अत्यन्त सुखदायक विशेष आकर्षक द्रव्यमय आहूत्यात्मक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया है जो कि बाथला अपार्टमैंट्स के पीछे ए० वी० बी० पब्लिक स्कूल के सामने वाले डी०डी०ए० पार्क मे सम्पन्न होगा।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपये तथा आजीवन शुल्क ३५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक नि:शुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखको के कथनों या मतो से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

मृत्यु से अमृत की ओर

कृष्णओतार बढ़ापुर (बिजनौर)

ओ३म् असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मामृतं गमयेति ॥ बृहदा० १.३.२८

'मृत्यु' का भय सर्वव्यापक है। प्रत्येक प्राणी मृत्यु से डरता है परन्तु वैदिक विचार धारा हमे निर्भय बनाती है। मृत्यु से लेशमात्र भी डरने की आवश्यकता नही है।

'मृत्यु' क्या है? मृत+यु=मृत्यु। 'यु' सस्कृत की एक धातु है। जिसका अर्थ है 'यु मिश्रणामिश्रणयो:' अर्थात तोड़ना और जोड़ना। यह तोड़-जोड़ ही मृत्यु है। आत्मा का पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर को धारण कर लेना ही मृत्यु और जन्म है। जन्म के पश्चात मृत्यु और मृत्यु के पश्चात जन्म निश्चित है।

शरीर की बचपन, जवानी, व वृद्धावस्था मे आत्मा सदा एक रूप बना रहता है। इस प्रकार जो मनुष्य मृत्यु के रहस्य को समझ लेता है, उसका मृत्यु भय समाप्त हो जाता है तथा उसके जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाता है। ऐसा व्यक्ति ससार मे अनासक्त भाव से रहते हुए अपने कर्तव्य कर्मो को निष्काम भाव से करते हुए हंसते हुए इस ससार से विदा होता है। उसके विदा होने पर अवशिष्ट परिवार-जनो को जो दुख होता है, उसका कारण महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस प्रकार लिखा है—"जगत मे प्राणियो के वियुक्त होने पर जो दुःख अवशिष्ट परिवार को हुआ करता हैं, उसका हेतु यह नही होता कि वियुक्त प्राणी उन्हे बहुत प्रिय था, बल्कि असली कारण यह होता है कि वियुक्त प्राणी के साथ अवशिष्ट परिवार के स्वार्थ जुड़े थे और वियोग स्वार्थ-सिद्धि मे बाधक होता है। बस असली दुःख इतना ही होता है कि स्वार्थ हानि हुई।'

अपने किसी प्रियजन के वियोग के अवसर पर वेदमाता गये हुओ का शोक न करके अपने कर्त्तव्यो के पालन करने का उपदेश कर रही है—

मैत पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ त ब्रवीमि ।
तम एतत्पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्ताद भय ते अर्वाक ॥
अथर्व—८-१-१०

हे पुरुष ! (एत पन्थाम् मा अनुगा) इस मार्ग के पीछे मत जा, जिससे कि मृत जाते हैं। (एष भीम) यह गये हुओ का स्मरण करते रहने का मार्ग भयंकर हैं। मृतो का शोक करते रहना ठीक नही इस मार्ग पर जाने के निषेध के द्वारा मैं तुझे (त ब्रवीमि) उस मार्ग का उपदेश करती हू (येन पूर्व न इयथ) जिससे मृत्युकाल से पूर्व तू नही जाता है। मरो का शोक करता रहेगा तो समय से पहले जायेगा ही। (एतत) यह मरे हुओ का ही शोक करते रहना तो (तम) अन्धकार है—अज्ञान है। (मा प्र पत्था) इसकी ओर मत जा। (परस्तात् भयम्) परे अर्थात इहलोक के कर्त्तव्यो में ध्यान न देकर गये हुओ का शोक करते रहने मे तो भय ही भय है।(अर्वाक्) हम सबके सम्मुख आने मेही (अभयम) निर्भयता है। कल्याण इसी बात में है कि तू शोक को छोडकर जीवितों के सम्मुख प्राप्त हो और उनके प्रति अपने कर्त्तव्यो का पालन कर।

कठोपनिषद मे ब्रह्मचारी नचिकेता आचार्य यम से पूछता है 'मृत्यु क्या है? आचार्य यम उत्तर देते है—ससार मे दो मार्ग हैं—'प्रेय' तथा 'श्रेय'। मानव-इन्द्रियो को प्रिय लगने वाले ससार के विषय-भोगो (प्रेय मार्ग) मे डूब जाना मृत्यु हैं, तथा इन विषयो मे न डूबना (श्रेय मार्ग पर चलना) जीवन है, अमृत है।

ससार मे दो प्रकार के मनुष्य हैं। एक वे जो शरीर को ही आत्मा मानते हैं और खाओ-पियो मौज करो' को ही जीवन समझते हैं तथा शरीर के नष्ट हो जाने पर आत्मा को भी नष्ट हुआ मानते हैं। दूसरे वे है जो शरीर को आत्मा नही मानते, आत्मा को शरीर से अलग इसका स्वामी मानते हैं। उनकी समझ में शरीर नष्ट हो जाता है, आत्मा नही, आत्मा अमर है। जो शरीर को ही सब कुछ मानते हैं, उनका मार्ग 'प्रेय-मार्ग' कहलाता है। जो व्यक्ति श्रेय मार्ग के पथिक बनकर योग-जीवन पद्धति को अपना लेते हैं। वे आजीवन स्वस्थ रहकर सुखद दीर्घायु का उपभोग करते हुए मृत्यु पर विजय प्राप्त करके अमृत की प्राप्ति करते हैं।

मृत्यु से निर्भय तथा अमृत प्राप्त के लिए वेद माता निम्न मन्त्र मे मानव मात्र का मार्ग दर्शन कर रही है—

मृत्युरीशे द्विपदा मृत्युरीशे चतुष्पदाम् ।
तस्मात् त्वा मृत्योर्गोपतेरुद् भरामि स मा बिभे: ॥
अथर्व० ८-२-२३

मृत्यु दो पैर वाले और चार पैर वाले सभी मानवो व पशु पक्षियो पर शासन करता है। मृत्यु की मार से वही बच पाता है जो मेरी (ब्रह्म की) गोद मे समाहित रहता है, अथवा जो मानव योग जीवन-पद्धति पर चलते हुए कर्तव्य कर्म करते हैं, उन्हें मृत्यु से निर्भय कर देता हू। मृत्यु का शासन भोगियो पर है, योगियों पर नही।

विद्या की परिभाषा - अनित्य को अनित्य, नित्य को नित्य, अशुचि को अशुचि, शुचि को शुचि, दुःखकारक पदार्थो को दुःखकारक तथा सुखकारक पदार्थो को सुखकारक, अनात्म को अनात्म तथा आत्मा को आत्मा समझना विद्या है। केवल जान लेना ही विद्या नही है, इसे जीवन मे उतारना होगा, आचरण मे लाना होगा. अन्यथा हम जो कुछ जानते ही हैं—करते नही, वह जैसे हमने जाना कि हिंसा करना, चोरी करना, झूठ बोलना, क्रोध करना बुरा है परन्तु करते हैं, यह अविद्या है।

अविद्या से मृत्यु को कैसे तरते है—आज के युग मे भौतिक विज्ञान को विद्या कहा जाता है। वेद मे उसे अविद्या कहा गया है। इस मन्त्र में कहा है 'भौतिक विज्ञान' अर्थात 'अविद्या' से केवल 'मृत्यु' को तर सकते हैं—अमृत का प्राप्त नही कर सकते। विज्ञान के द्वारा मृत्यु (दुःखो-कष्टो) से बचने के ही उपाय निकाले जा सकते हैं, औषधियों का पता लगाया जा सकता है, परन्तु संसार के सम्पूर्ण विज्ञान से 'अमृत' प्राप्त नही हो सकता। विज्ञान (अविद्या) से हम केवल भौतिक सुख-वैभव ही प्राप्त कर सकते हैं।

विद्या से अमृत कैसे प्राप्त होता है—वेद की भाषा में 'विद्या' वह है, जिससे मानव को अनुभूति हो जाए कि वह शरीर नही आत्मा है। आत्म-ज्ञान होने के बाद ही योगाभ्यास द्वारा अमृत (ब्रह्म) प्राप्ति होती है।

अमृत प्राप्ति का साधन हमारा यह मानव शरीर है। हमारा यह मानव शरीर प्रभु की श्रेष्ठतम रचना हैं यह शरीर सम्पूर्ण सुखो एवं ज्ञान तथा अज्ञात आनन्दों का भंडार है। इसी के द्वारा व्यक्ति ईश्वर, जीव एवं प्रकृति का साक्षात्कार करता है। संसार की सार्थकता स्वस्थ शरीर के ऊपर निर्भर है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पटपड़गंज में निःशुल्क हिन्दी टंकण केन्द्र एवं पुस्तकालय की स्थापना

दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री डा० हर्ष वर्धन ने आज यमुनापार त्रिलोकपुरी के पास बस्ती विकास केन्द्र, शास्त्री मोहल्ला पटपड़गंज में निःशुल्क हिन्दी टाईपिंग प्रशिक्षण केन्द्र तथा पुस्तकालय का उद्घाटन किया। यह केन्द्र एवं पुस्तकालय दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी द्वारा अपनी "हिन्दी प्रसार केन्द्र की स्थापना" योजना के अन्तर्गत खोला गया है। हिन्दी टाईपिंग प्रशिक्षण केन्द्र में युवक-युवतियाँ दोनों ही हिन्दी टाईप मुफ्त सीख सकते हैं और पुस्तकालय में साहित्यिक एवं पुरस्कृत पुस्तकें, दैनिक समाचारपत्र तथा पत्रिकायें पाठकों के लिए उपलब्ध होंगी।

डा० हर्ष वर्धन ने अपने उद्घाटन भाषण मे इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि हिन्दी अकादमी की इस योजना से हिन्दी भाषा के प्रचार के साथ-साथ बेरोजगार और जरूरत मन्द युवक-युवतियों को अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर भी प्राप्त होगा। उन्होंने आशा प्रकट की कि पटपड़गंज, त्रिलोकपुरी और आस-पास अन्य क्षेत्रो के इच्छुक लोग इस हिन्दी टंकण केन्द्र तथा पुस्तकालय से पूरा लाभ उठाएंगे।

दिल्ली विधान सभा के सदस्य डा० ज्ञान चन्द ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिन्दी हमारी सम्पर्क और मातृभाषा है। इसके प्रचार-प्रचार के लिए हमें एक सूत्र मे बन्धकर अथक प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होने कहा कि इस प्रकार के हिन्दी प्रसार केन्द्र दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों—विशेषकर झुग्गी झोपड़ी बस्तियो और पिछड़े क्षेत्रों में खोलने से हिन्दी के प्रसार-प्रचार के साथ-साथ वहां के गरीब एव इच्छुक लोग अपनी रोजी कमाने के योग्य बन सकेंगे।

हिन्दी अकादमी के सचिव डा० रामशरण गौड ने इस अवसर पर बताया कि अकादमी के इस प्रकार के सात केन्द्र पहले ही हिन्दी के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं और यह आठवा हिन्दी प्रसार केन्द्र है। उन्होंने यह भी कहा कि इन केन्द्रों की नागरिकों मे बढ़ती लोकप्रियता को दृष्टिगत रखते हुए क्षेत्रीय सगठनों की इच्छा पर भविष्य में और भी हिन्दी प्रसार केन्द्र खोले जा सकते हैं। उन्होने बताया कि वर्तमान केन्द्रो से दिल्ली के सैकड़ो युवक युवतियां लाभान्वित हो रहे हैं।

'चम्बा चलो' एक वर्षीय यज्ञ की पूर्णाहुति

चम्बा में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती की प्रेरणा से गायत्री महायज्ञ जो १३-४-९४ से शुरू हुआ था, उस यज्ञ की पूर्णाहुति वैशाखी पर्व के दिन १३-४-९५ को होगी।

बस ८-४-९५ को प्रातः ६ बजे आर्य समाज चूना मण्डी पहाड़गंज से चलेगी और १५-४-९५ को वापिस दिल्ली आयेगी।

आने जाने का मार्ग व्यय ८५० रुपये प्रति सवारी होगा।

—दर्शनीय स्थान—

चिन्त पूर्णी, ज्वाला जी, कागड़ा, चोमुण्डी देवी, डलहौजी, धर्मशाला, चम्बा, दीनानगर, करतार पुर, दिल्ली।

यात्री अपने पैसे ४-४-९५ तक जमा करा दें। यात्री अपना नाम, आयु पता तथा टेलीफोन न० अवश्य लिखें। यात्री रात्रि को आर्य समाज मन्दिर चूना-मण्डी पहाड़ गंज नई दिल्ली में ठहर सकते हैं। समय के अनुसार प्रोग्राम में परिवर्तन करने का अधिकार सयोजक को होगा।

सीट बुक कराने के लिए— सयोजक—

१— श्यामदास सचदेव, मकान न० २६१३

भगतसिंह गली नं० ६ चूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली-५५

फोन—घर ७५२६१२८, ७३८५०४ पी.पी.

२—आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली-५५

३—बलदेव राज सचदेव डी.जी-३ २७४, विकासपुरी, नई दिल्ली-१८

श्री धर्मवीर झण्डाधारी का भ्रमण

श्री धर्मवीर झण्डाधारी की गतिविधियों का उनके द्वारा प्रेषित पत्रों द्वारा परिचय मिलता है झण्डाधारी आर्य समाज के अनथक कार्यकर्ता हैं। उनके द्वारा आयोजित कार्यों में अनेकों सहयोगी जनों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, सब से बड़ी बात तो ओ३म का झण्डा लेकर सम्पूर्ण दिल्ली में भ्रमण उनका मुख्य कार्य है। भगवान उनको सफलता प्रदान करे।

पंजाब सरकार द्वारा हिन्दी में पत्राचार

निदेशक, भाषा विभाग, पंजाब ने अपने १५-११-९४ के पत्र संख्या-विकास ९ग/३१८०९ द्वारा सूचित किया है कि राज्य सरकार की ओर से केन्द्र सरकार के कार्यालयो तथा हिन्दी भाषी राज्यों से प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी मे ही दिया जाता है। भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला तथा पंजाब सचिवालय, चण्डीगढ़ में स्थित भाषा विभाग, पंजाब के हिन्दी सैल द्वारा यह कार्य किया जाता है।

जगन्नाथ

संयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद

एक्स.वाई. ६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

दशाब्दि महोत्सव

आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि, अपना यह प्रिय गुरुकुल वेदश्री उत्तरोत्तर उन्नती करता हुआ अपनी स्थापना के ग्यारहवें वर्ष मे पहुंच गया है। अतः इसका दशाब्दि महोत्सव (दशम वार्षिकोत्सव) तिथि फाल्गुन वद ८ से १० मी सं० २०५१ अर्थात २४ से २६ मार्च १९९५ को मनाने का निश्चय हुआ है।

इस समारोह पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है, संस्कृत भाषा सम्मेलन, वेदरक्षा, राष्ट्ररक्षा, आर्य के पुनर्जीवन विषयपर परिसवाद, ब्रह्मचारियों का शारीरिक तथा बौद्धिक कार्यक्रम, यजुर्वेद स्वाहाकार, महायज्ञ, ध्यान योगाभ्यास शिबिर, व्याख्यान, वेद प्रवचन, भजन आदि।

भारत की समस्याओं का मूल कारण भारतीय संविधान

विमल वधावन एडवोकेट, संयोजक सार्वदेशिक न्याय सभा

कानूनी पत्रिका के जनवरी १९९५ के अंक में "आर्य समाज भी प्रहरी है—समानता और न्याय का" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया गया था। आर्यसमाज के महान जिन्दा शहीद श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने जो कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष हैं. एक संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि आर्यसमाज को साधारण अर्थों में धर्म नहीं माना जा सकता, वास्तव में यह धार्मिक नैतिक उच्च सिद्धान्तों पर आधारित एक जीवन पद्धति है जिसका मूल सदाचार और पवित्रता है। आर्यसमाज राज्य संचालन के मामलों में तो पूर्णतः पन्थ निरपेक्ष सिद्धान्तों का समर्थन करता ही है परन्तु राज्य संचालन के लिए भी उसी उच्च नैतिक और धार्मिक आचरण की आवश्यकता है जिसकी अपेक्षा एक नागरिक से की जाती है। यदि कोई कानून या राज्य नागरिकों को तो मिल-जलकर बिना किसी भेद-भाव के पन्थ निरपेक्ष होकर रहने के लिए निर्देश दे परन्तु स्वय नागरिकों में तरह-तरह के भेद पैदा करके उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में सूचीबद्ध करे तो राष्ट्रीय एकता की कल्पना करना भी मूर्खता के अतिरिक्त कुछ भी नही।

यदि किसी परिवार के निवास स्थान वाले भवन को मन्दिर घोषितकर दिया जाए तो क्या केवलमात्र घोषणासे या द्वार पर खुदवा कर वह भवन मन्दिर कहा जा सकेगा जब तक कि उसके अन्दर का वातावरण किसी मन्दिर या आश्रम जैसा न दिखे, घर में फिल्मों के अश्लील गानों के स्थान पर धार्मिक भजनों का स्वर सुनाई देना चाहिए, वेदमन्त्रो की गूंज हो.सफाई पवित्रता तथा धार्मिक आत्माओं का निवास हो, जन-साधारण के प्रवेश पर रोक न हो, उसमें प्रवेश करके धार्मिक प्रवचन सुनने को मिले। तभी उस भवन को मन्दिर या आश्रम कहा जा सकता है केवल मात्र घोषणा से नहीं।

इसी उदाहरण को अब भारतीय सविधान पर लागू किया जाए। भारतीय सविधान की यात्रा सन् १९५० की २६ जनवरी से प्रारम्भ होती है। यह संविधान वैसे एक तरफ अनुच्छेद १४ में पूर्ण समानता की बहुत बड़ी घोषणा के साथ अनुच्छेद १५ में यह स्पष्ट कहता है कि राज्य नागरिको में धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान आदि के आधार पर कोई भेद नही करेगा। अनुच्छेद १६ में भी यही कहा गया है कि रोजगार के सम्बन्ध में समस्त नागरिकों को समान अवसर दिए जायेंगे। इन मुख्य तीन अनुच्छेदों, जो कि मूल अधिकारों का ही एक हिस्सा है, के पूर्ण विरोध में स्वयं यही सविधान धारा २९ और ३० में यह कहता है कि अल्पसंख्यकों को अपनी शिक्षण सस्थाएं चलाने की विशेष स्वतन्त्रता है क्योंकि उन्हें अपनी अलग भाषा अलग लिपि तथा अलग सस्कृति बचाकर रखनी है, इस अलग-अलग-अलग के बचाव के चक्कर में संविधान यह भूल जाता है कि भारत की मूल वैदिक सस्कृति को बचाने की छूट भी किसी को देनी है या नहीं। राम और कृष्ण की संस्कृति को बचाने की छूट भारतीय सविधान में नहीं दी गई। यदि किसी स्कूल में इस संस्कृति को बचाने का प्रयास किया जाए तो उसकी सरकार सहायता बन्द भी कर सकती है।

इन सब भेद-भाव पैदा करने वाले सिद्धान्तों/नियमों के दृष्टिगत सन् १९७६ में जब यह संविधान २६ वर्ष की यात्रा पूर्ण कर चुका था, तो एक संशोधन के द्वारा इसकी उद्देशिका में इसके 'सेक्यूलर' होने की घोषणा कर दी गई, 'सेक्यूलर' का अर्थ स्पष्ट है कि सरकार किसी पन्थ आदि को विशेष प्रोत्साहन या कोई विशेष दर्जा नहीं देगी। वैसे इस शब्द की परिभाषा भारतीय सविधान मे या किसी भी भारतीय कानून में नहीं मिलती, इसलिए साधारण अर्थ से ही काम चलाना पड़ेगा। क्या यह मान लिया जाए कि केवल मात्र घोषणा से संविधान और भारत की व्यवस्था 'सेक्यूलर' बन गई। यह तो वैसा ही हुआ जैसे किसी गृहस्थ भवन के केवल द्वार पर मन्दिर या आश्रम लिखकर तदनुसार मान लिया जाए, परन्तु अन्दर जाकर पता लगे कि रसोई में मांस पक रहा है। बैठक में शराब के दौर चल रहे हैं, फिल्मों के अश्लील गाने वातावरण और दीवारों को भी अश्लील बना रहे हैं।

जी हां, भारतीय संविधान एक ऐसा ही मन्दिर या आश्रम है, अर्थात् एक ऐसा ही सेक्यूलरवादी है जिसके अन्दर स्थान-स्थान पर गैर-सेक्यूलर धाराओं की भरमार है।

भारत की संसद का आदेश देश के समस्त राज्यों में नहीं चल सकता क्योंकि जम्मू-काश्मीर और नागालैण्ड जैसे राज्यों को विशेष दर्जा प्राप्त है, दिल्ली या उत्तर प्रदेश में पैदा हुआ व्यक्ति जम्मू-काश्मीर में स्थाई निवास, नौकरी, भूमि विक्रय आदि नहीं कर सकता। क्या यह अनुच्छेद १५ के विपरीत जन्म स्थान के आधार पर भेद-भाव नहीं। जब जम्मू-काश्मीर में जन्मा व्यक्ति अन्य राज्यों में स्वतन्त्र है तो इसके विपरीत क्यों नहीं ?

दूसरी तरफ भारतीय संविधान का भाग चार कुछ ऐसे नीति निर्देशक तत्वों की ओर संकेत करता है जिन्हें संविधान बनाने वाली सभा ने इस उद्देश्य से बनाया था कि ये राज्य संचालन की नीतियों के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण निर्देश है। इस भाग में अनुच्छेद ३६ से ५१ तक कई महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का उल्लेख मिलता है, जैसे एक समान नागरिक कानून उपलब्ध कराना परन्तु सरकार ने इस ओर आज तक कोई ध्यान नहीं दिया, इसका कारण है अनुच्छेद ३७ में सरकार को प्राप्त अनैतिक छूट, इस अनुच्छेद में जहां एक तरफ यह कहा गया है कि यह नीति निर्देशक तत्व राज्य संचालन के मूल तत्व है तथा कानून बनाते समय इन तत्वों को लागू करना सरकार का कर्तव्य होगा, वही साथ में यह छूट भी दे दी गई कि इन तत्वों को लागू करने के लिए कोई अदालत आदेश नहीं जारी कर सकेगी। ये तो वैसा ही हुआ कि परिवार का कोई बुजुर्ग नवयुवक को समझाए कि बेटा महिलाओं के साथ किसी प्रकार का बुरा सलूक नहीं करना चाहिए, यह नीति निर्देशक सिद्धान्त है और साथ ही यह भी कह दे कि यदि तू ऐसा करेगा तो भी हमारी ओर से कोई विरोध या नाराजगी जाहिर नही की जाएगी।

इस प्रकार ये थे कुछ दृष्टान्त भारतीय संविधान की अनैतिकता के। इनसे साबित होता है कि हमारे राष्ट्र पर जो गृह युद्ध का शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य राष्ट्रीय मंच द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन-

२६ मार्च, १९९५ रविवार को सायं ४ बजे आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली मे विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया है।

विषय : प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, अध्यक्ष पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् प्रधान सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा।

उद्घाटन : प्रि० मोहन लाल प्राचार्य पी० जी० डी० ए० वी० कालेज वक्ता : प्रो० बलराज मधोक श्री दीपचन्द बन्धु श्री वीरेश प्रताप चौधरी प्रो० पी० के० चादला श्रीमती सरोज दीक्षा। आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

नेमराज आर्य स्वागताध्यक्ष, (प्रधान आर्य समाज	सुधाकर शास्त्री, (सयोजक)	नरेश आर्य प्रबन्धक

भारत की समस्याओं का मूल कारण

(पृष्ठ ६ का शेष)

खतरा हर समय विद्यमान रहता है उसका मूल कारण है यह भारतीय संविधान जो भारत के लोगों को एक जैसी संस्कृति के सदस्य बनाने के स्थान पर अलग-अलग संस्कृतियों में बांट कर रखना चाहता है, जब कि इतिहास गवाह है कि भारत के समस्त नागरिक मूलत: एक ही वैदिक संस्कृति से सम्बन्ध रखते हैं। यहां के नागरिक चाहें वे अपने को हिन्दू, मुसलमान या ईसाई कुछ भी कहें, उनकी नाड़ियों में राम और कृष्ण की संस्कृति वाला रक्त बह रहा है। राष्ट्रीय एकता का सपना तभी पूरा हो सकता है जब भारतीय संविधान असमानता का राग बन्द कर दे।

आज ४५ वर्ष बाद हम इस नतीजे पर पहुचे हैं कि भारत की समस्त सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का समाधान भारतीय संविधान में आमल-चूल परिवर्तन लाकर ही सम्भव हो सकता है।

सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की सेवायें उपलब्ध है अपने उत्सवों कथा प्रवचन आदि के शुभावसर पर आमन्त्रित कर धर्म लाभ उठायें।

व्यवस्थापक

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग दिल्ली सभा

आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २५ मार्च १९९५ को नई दिल्ली के कान्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित की गई एक विद्वत गोष्ठी में कई कानून विदों तथा सेवानिवृत्त न्यायाधीशों ने इस बात पर सहमति जताई है कि वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय संविधान पर पुनर्दृष्टि अत्यन्त आवश्यक है।



आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 23,24-3-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/95

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/६५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५

"आर्यसन्देश" साप्ताहिक २६ मार्च १९९५

मृत्यु से अमृत की ओर

(पृष्ठ ४ का शेष)

'शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्'। अत अमृत-प्राप्ति की इच्छा करने वालो को सर्वप्रथम अपने शरीर को बलिष्ठ, निरोग और सामर्थ्यवान बनाना चाहिए। शरीर को सामर्थ्यवान एव शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए पवित्र आहार विहार भद्र विचार एव श्रेष्ठ मनोभावो का होना अति जरूरी है। भाव और विचार ही जीवन के सचालक हैं। हमारा जीवन एव सम्पूर्ण जगत विचार और भावो का ही मूर्त रूप है। कहा भी है 'जैसे विचार वैसा ससार'। श्रेष्ठ विचार एव पवित्र भावनाये आयु वर्धक एव अमृत प्रदाता है।

अमृतसे ही मृत्यु का निवारण होता है। पूर्ण आयु सौ वर्ष या और अधिक सुस्वास्थ्य के साथ सुखपूर्वक जीना अमृत है। जो कुछ सुखी करने वाला है, आनन्दित करने वाला है, सुस्वास्थ्य देने वाला है, आयु बढाने वाला है, मोक्ष प्राप्त कराने वाला है, वह सब अमृत है। इससे उल्टा जो कुछ है वह सब मृत्यु है। चरित्र से गिर जाना, धर्म से हीन होना परिवार, समाज, राष्ट्र से विमुख होना, कायरता, चिन्ताग्रस्त और भयभीत रहना भी मृत्यु के रूप हैं।

मृत्यु से मुक्त और अमृत से युक्त रहने के लिए प्रत्येक साधक को सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक परमात्मा से उपासना एव आत्मसमर्पण द्वारा सगत होकर निरन्तर ऐसी साधना करनी चाहिए जैसे खरबूजा अपने पूर्ण आकार को प्राप्त होकर पूर्णतया पक जाने पर बिना किसी का हाथ लगाये स्वयमेव बेल से अलग हो जाता है और जिसकी सुगन्धि से वातावरण दूर-दूर तक महक जाता है। इसी प्रकार साधको के जीवन से दुर्गुण, दुष्कर्म और दुर्विचारो की दुर्गन्धि दूर होकर उसके जीवन मे सुगन्धि, सुयश और सुदिव्यता का समावेश हो जाये। यही मृत्यु से मुक्त होकर अमृत को प्राप्त करना है।

निम्न प्रार्थना के साथ इस लेख को यही विराम देते हैं—

ओ३म विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ यजु० ३०-३

हे सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी जगतपिता! हे अजर, अमर, अभय, शुद्ध, पवित्र, सृष्टिकर्ता परमात्मन्! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखो को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, वह हमे प्राप्त कराइए।

हे दयानिधे! आपकी अपार दया से हम असत् से सत्य पथ की ओर, अज्ञान-अन्धकार से ज्ञान प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत-पथ की ओर बढते हुए, सत्कर्म करते हुए यज्ञमय जीवन बनाकर आपकी शरण मे, आपकी छत्र-छाया मे रहे। हम आपके सच्चे पुत्र/पुत्री (अमृत-पुत्र) बन कर आपके गुणो को धारण करते हुए हे देव! अपना जीवन धन्य बनाकर आपका आशीर्वाद प्राप्त करें। ज्योतियों की ज्योति, हे देव! आपसे प्रकाश प्राप्त करके तथा अन्यो को सुपथ पर चलाते हुए सबका कल्याण कर सके। हे ज्ञान के भण्डार प्रभो! हम आपके वेद ज्ञान को प्राप्त कर घर-घर मे पवित्र वेद का प्रचार-प्रसार कर सकें, हमे ऐसी मेधा एव शक्ति प्रदान कीजिए।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन -३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक २१ रविवार, २ अप्रैल १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द : १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन—२५० रुपये विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

संविधान में संशोधन आवश्यक है

आर्यसमाज देश भर में जन-जागृति अभियान चलाएगा

नई दिल्ली—२५ मार्च, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी की अध्यक्षता मे देश के कई पूर्व न्यायविदो अधिवक्ताओ, सासदो, पत्रकारो तथा समाज शास्त्रियो की एक गोष्ठी विठ्ठल भाई पटेल भवन मे सम्पन्न हुई। गोष्ठी का विषय था "भारतीय सविधान पर पुनर्दृष्टि"।

अल्पसख्यक वर्ग को शिक्षण सस्थाए चलाने का विशेषाधिकार, जम्मू-कश्मीर जैसे कुछ राज्यो को विशेष दर्जा, सेक्यूलरवाद के नाम पर समाज में भेदभाव पैदा करते सविधान के कई प्रावधानो को बदला जाना चाहिए, यह विचार सर्वसम्मति से इस गोष्ठी मे उजागर हुआ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् जी की पवित्र प्रेरणा से आर्य समाज मे एक नए अध्याय का सूत्रपात होने जा रहा है। इन विचारो को जन-जन तक पहुचाने के लिए आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओ को सविधान के महत्वपूर्ण विषयों की पूर्ण जानकारी रखनी चाहिए।

इस गोष्ठी के अन्त मे दिए अध्यक्षीय भाषण मे श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने कहा कि आने वाले समय मे यदि देश की मूल सस्कृति की रक्षा करनी है तो आर्य समाज को ही यह जिम्मेवारी अपने कन्धो पर लेनी होगी। श्री वन्देमातरम् ने कहा कि आर्य समाज की ताकत जब विदेशी सहायता प्राप्त उस निजामशाही को झुका सकती है जिसके समक्ष भारत की पूरी सरकार भी अपने आपको असहाय महसूस कर रही थी, तो कोई कारण नही कि आज इन प्रावधानो में परिवर्तन के लिए हम भारतीय नेताओ पर अपना नैतिक दबाव न डाल सके।

गोष्ठी मे न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह, न्यायमूर्ति श्री गुमान मल लोढा, न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र सच्चर, सासद श्री रासा सिंह रावत, विजय कुमार मलहोत्रा, लोक सभा के पूर्व महासचिव श्री सुभाष कश्यप, पूर्व सांसद श्री बलराज मधोक वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह, श्री प्राणनाथ लेखी रामफल बंसल तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री अनिल नरेन्द्र ने अपने विचार व्यक्त किये।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह ने कहा कि भारतीय संविधान में व्यापक परिवर्तनो की माग, आर्य समाज कई वर्षों से करता आ रहा है। परन्तु अब यह मांग एक व्यापक आन्दोलन का रूप लेगी। उन्होंने देश भर के आर्य समाजियो का आह्वान किया कि आज यदि इस दायित्व को न निभाया गया तो आने वाला समय हमारे राष्ट्र तथा सस्कृति के लिये विनाशकारी साबित होगा।

लोक सभा के पूर्व महा सचिव श्री सुभाष कश्यप ने कहा कि जिन लोगो ने संविधान बनाया वे ब्रिटिश राज्य के निर्देशो से बन्धे थे अतः वे भारतीय जनता की मूल कठिनाइयों को दूर करने के लिये कुछ नही कर पाये। सविधान निर्माताओं ने बेशक संप्रभुता, समाजवाद, एव पंथ निरपेक्षता जैसे उच्च सिद्धांतों की रचना की थी परन्तु कोई प्रावधान इन सिद्धांतों की रक्षा करने मे सक्षम नही हो सका इसलिए सविधान पुनरावलोकन की अत्यन्त आवश्यकता है।

श्री कश्यप ने कहा कि आर्थिक व राजनैतिक स्तर पर देश को बेचा जा रहा है जबकि भारत मे अधिकांश लोग आज भी शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मूल अधिकारों से वचित है। श्री गुमान मल लोढा तथा श्री विजय कुमार मलहोत्रा ने सविधान के तहत कुछ राज्यो को विशेष दर्जा देने वाले प्रावधानो को राष्ट्र विरोधी बताया। श्री मलहोत्रा ने कहा कि संविधान की इस भेदभाव पूरक तथा अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के प्रावधानो के कारण ही आज जामिया मिलिया तथा अलीगढ विश्वविद्यालय जैसी सस्थायें खुले रूप से पाकिस्तान का प्रचार केन्द्र बन गयी है। जबकि इन्हे सारा धन भारत सरकार द्वारा भारतीयों के कर से दिया जाता है।

प्रो० बलराज मधोक ने कहा कि इन पक्षपात पूर्ण प्रावधानो मे परिवर्तन की आवश्यकता को चुनावी मुद्दा बनाया जाना चाहिये और यह तभी सभव है जबकि केन्द्र मे हिन्दुत्व मे आस्था रखने वाली पूर्ण राष्ट्रवादी सरकार हो उन्होंने श्री बाल ठाकरे को हिन्दूवादी तथा राष्ट्रवादी नेता बताया।

लोक सभा सदस्य श्री रासासिंह रावत ने कहा कि समाजवाद शब्द भी पश्चिमी दृष्टिकोण का है उन्होने भी सविधान 'मे भारत की मूल संस्कृति तथा परिवेश के मुताबिक परिवर्तन से सहमति व्यक्त की। दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा पूर्व अध्यक्ष श्री प्राणनाथ लेखी ने कहा कि देश की एकता के साथ किसी भी कीमत पर कोई भी समझौता नही किया जा सकता चाहे हमे राष्ट्रविरोधियो के अन्तिम बीज तक उनका खून बहाना पडे।

गोष्ठी के अन्त मे सभामंत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जिसे उपस्थित वक्ताओ तथा श्रोताओ ने सर्वसम्मति से पारित किया। (शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

ब्रह्मचर्य आश्रम की महत्व

आचार्य सुधाकर, एम.ए.

महर्षि दयानन्द के तीन ग्रन्थ विशेष महत्त्व रखते है। (१) सत्यार्थ प्रकाश २ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (३) संस्कार विधि। इन तीनो ग्रन्थो में महर्षि ब्रह्मचर्य आश्रम की महिमा का वर्णन किया है। किन्तु इस ओर जितना ध्यान देना चाहिये था वह नही दिया गया, न इस विषय मे कोई विशेष कार्य किया गया। इसका एक ही बहाना बताया जाता है कि परिस्थितिया ऐसी नही है कि बच्चो को ब्रह्मचर्य आश्रमो मे भेजा जाये। गुरुकुलो मे भी जो छात्र-छात्रायें छात्रावासो मे निवास करते है, उनकी समुचित व्यवस्था न होने के कारण वहा पर कोई भी अपने बच्चों को भेजना उचित नही समझता। गुरुकुलों के सचालको के अपने बच्चे भी उन छात्रावासो मे नही रहते क्योंकि वे स्वय प्रबन्धकर्ता होने के कारण वहा के प्रबन्ध से सन्तुष्ट न होने के कारण क्यो अपने बच्चो को कुपोषण का शिकार बनने दे दूसरो के बच्चो के स्वास्थ या जीवन से उन्हे क्या लेना देना। उनका सस्था के नाम पर उचित भरण-पोषण होना आवश्यक है। "कोई जिये या कोई मरे सुथरा घोल बताशे पिये।'

मैं सबसे पूर्व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे महर्षि ने जो उदाहरण अथर्ववेद से दिये उनका उल्लेख करना आवश्यक समझता हू। महर्षि ने वेद के आशय को स्पष्ट करते हुए लिखा है .—

इनमे से प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम जो कि आश्रमो का मूल है उसके ठीक-ठीक सुधरने से सब आश्रम सुगम और बिगडने से नष्ट हो जाते है। इस आश्रम के विषय मे वेदो के अनेक प्रमाण हैं, उनमे से कुछ यहा लिखते हैं —

वेदाशय —जो गर्भ मे बस के माता और पिता के सम्बन्ध से मनुष्य का जन्म होता है वह प्रथम जन्म कहाता है और दूसरा यह है कि जिसमे आचार्य पिता और विद्या माता होती है। इस दूसरे जन्म के न होने से मनुष्य को मनुष्य-पन नही प्राप्त होता है। इसलिए उसको प्राप्त होना मनुष्यो को अवश्य चाहिये। जब आठवें वर्ष पाठशाला मे जाकर आचार्य अर्थात विद्या पढाने वाले के समीप रहते हैं तभी से उनका नाम ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी हो जाता है। क्योंकि वे ब्रह्मवेद और परमेश्वर के विचार मे तत्पर होते हैं। उनको आचार्य तीन रात्रि पर्यन्त गर्भ मे रखता है। अर्थात ईश्वर की उपासना धर्म परस्पर विद्या के पढने और विचारने की युक्ति आदि जो मुख्य-मुख्य बातें हैं वे सब तीन दिन मे उनको सिखाई जाती हैं। तीन दिन के उपरान्त उनको देखने के लिए अध्यापक अर्थात विद्वान लोग आते हैं। फिर उस दिन होम करके उनको प्रतिज्ञा कराते है कि ब्रह्मचारी पृथिवी, सूर्य और अन्तरिक्ष इन तीनो प्रकार की विद्याओ को पालन और पूर्ण करने की इच्छा करता है सो इन समिधाओ मे पुरुषार्थ करके सब लोको को धर्मानुष्ठान से पूर्ण आनन्दित कर देता है।

जो ब्रह्मचारी पूर्व पढ के ब्राह्मण होता है वह धर्मानुष्ठान से अत्यन्त पुरुषार्थी होकर सब मनुष्यो का कल्याण करता है, फिर उस विद्वान ब्राह्मण को जो कि अमृत अर्थात परमेश्वर की पूर्ण भक्ति और धर्मानुष्ठान से युक्त होता है। देखने के लिये सब विद्वान आते हैं।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुतेगर्भमन्त।

त रात्री स्तिस्र उदरे बिभर्त्ति त जात द्रष्टुमभि सयन्ति देवा ॥ अथर्ववेद

जो ब्रह्मचारी होता है वही ज्ञान से प्रकाशित तप और बडे-बडे केश श्मश्रुओ से युक्त दीक्षा को प्राप्त होके विद्या को प्राप्त होता है। वह ब्रह्मचारी वेद विद्या को यथार्थ जानके प्राणविद्या लोक विद्या तथा प्रजापति परमेश्वर जो कि सबसे बडा और सबका प्रकाशक है उसका जानना, इन विद्याओ मे गर्भरूप और इन्द्र अर्थात ऐश्वर्य युक्त होके असुर अर्थात मूर्खो की अविद्या का छेदन कर देता है। इससे ब्रह्मचर्याश्रम ही सब आश्रमों में उत्तम है।

वही राजा उत्तम होता है जो पूर्ण ब्रह्मचर्य रूप तपश्चरण से पूर्ण विद्वान सुशिक्षित जितेन्द्रिय होकर राज्य का विविध प्रकार से पालन करता है। और वही विद्वान ब्रह्मचारी की इच्छा करता है और आचार्य हो सकता है जो यथावत ब्रह्मचर्य से सम्पूर्ण विद्याओ को पढता है—

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्र वि रक्षति। आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिण-मिच्छते। अथर्ववेद।

इत्यादि प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि बच्चा अपने विद्याध्ययन काल मे ही ब्रह्मचर्य का पालन करे। आज गृहस्थी आर्यसमाजी नही चाहता कि वह अपने बच्चों को ब्रह्मचर्य-आश्रमो मे भेजकर आर्य बनावे। वह तो अपने बच्चों को पप्पू, टोनी, बन्टी, सन्टी आदि बनाना चाहता है। उसके बच्चों को रेडियो, टी०वी०, वी०सी०आर० तथा केबल लाइन पर विदेशी नृत्य, गान तथा अन्य अश्लील बातें चाहिए जब माता पिता से बात की जाती है तो उनका एक ही उत्तर होता है क्या करें? बच्चे नही मानते उनकी इच्छा की पूर्ति तो करनी ही पड़ती है। उनका अपना परिवार चाहे जैसा रहे उस ओर से आखें मूद लेते हैं। विशेष रूप से धनी आर्यसमाजी यदि वह समाज के अधिकारी वर्ग मे है तो उसकी अगुलि दूसरो की ओर सदा उठती रही है वह अपनी ओर देखता ही नहीं है।

महर्षि लिखते हैं: - यह ससार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत साधन असख्य प्रयोजनो से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष विषयासक्ति और प्रमाद बढता है। इससे देश मे सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं। जैसे कि मद्य, मांस सेवन, बाल्यावस्था में विवाह और स्वेच्छाचारितादि दोष बढ जाते हैं।

प्रश्न—क्या यह ब्रह्मचर्य का नियम स्त्री वा पुरुष दोनो का तुल्य ही है?

उत्तर—नही, जो २५ वर्ष पर्यन्त पुरुष ब्रह्मचर्य करे तो १६ वर्ष पर्यन्त कन्या, जो पुरुष ३० वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे तो स्त्री १७ वर्ष जो पुरुष ३६ वर्ष तक रहे तो स्त्री १८ वर्ष जो पुरुष ४० वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री २० वर्ष जो पुरुष ४४ वर्ष ब्रह्मचारी रहे तो स्त्री २२ वर्ष यदि पुरुष ४८ ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री २४ वर्ष ४८ वर्ष से आगे पुरुष और २४ वर्ष से आगे स्त्री को ब्रह्मचर्य न रखना चाहिए।

अत्यन्त कामातुरता और निष्कामता किसी के लिये भी श्रेष्ठ नही है, क्योंकि जो कामना न करे तो वेदो का ज्ञान और वेदविहित कर्मादि उत्तम कर्म किसी से न हो सके।

कामत्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता।

काम्यो हि वेदाधिगम कर्म योगश्च वैदिक।

जीवात्मा इन्द्रियो के वश होके निश्चित बडे बडे दोषो को प्राप्त होता है, और जब इन्द्रियो को अपने वश मे करता है तभी सिद्धि को प्राप्त होता है।

इन्द्रियाणा प्रसगेन दोषमृच्छत्य सशयम्।

सन्नियम्य तु तान्येव तत सिद्धि नियच्छति॥

जो दुष्टाचारी अजितेन्द्रिय पुरुष है उसके वेद, त्याग, यज्ञ, नियम और तप तथा अन्य अच्छे काम कभी सिद्धि को प्राप्त नही होते।

वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपासि च।

न विप्र दुष्टस्य सिद्धि गच्छन्ति कर्हिचित॥

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी, मद्य, मांस, गन्ध, माला, रस, स्त्री और पुरुष का सग, सब खटाई, प्राणियो की हिंसा, अगो का मर्दन, बिना निमित्त उपस्थेन्द्रिय का स्पर्श, आखो मे अजन, जूते और छत्र का धारण, काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, ईर्ष्या, द्वेष और नाच, गाना बाजा बजाना, द्यूत, जिस किसी की कथा, निन्दा, मिथ्या भाषण, स्त्रियो का वा पुरुषो का दर्शन, आश्रय, दूसरो की हानि आदि कुकर्मों को सदा छोड़ देवें। सर्वत्र एकाकी सोवें, जो कामना से वीर्य स्खलित कर दे तो जानो कि अपने ब्रह्मचर्य व्रत का नाश कर दिया।

इस ओर आर्य जनो को ध्यान देना चाहिए। जब तक आर्य समाज महर्षि का तथा वेदोक्त मार्ग का अनुसरण करके योग्यतम ब्रह्मचारियो का निर्माण नही करेगी तब तक केवल उपदेशको के प्रलाप का साधारण जनों पर कोई प्रभाव नहीं पडेगा। महर्षि दयानन्द स्वय ब्रह्मचारी थे, वेदोक्त मार्ग के अग्रगामी थे इसीलिए उनके मुख से निकला हुआ एक-एक वाक्य लोगों के हृदय में अपना स्थान बना लेता था उस समय के अनेको नास्तिक भी इस ब्रह्मचारी के सम्पर्क मात्र में आकर आस्तिक बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द, पं० गुरुदत्त, अमीचन्द आदि के जीवन परिवर्तन का कारण एक मात्र ऋषि का ब्रह्मचर्य तेज था।

काश! आर्य समाज ऐसे ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित करता जिससे सारे राष्ट्र का कल्याण होता।

आर्य राष्ट्रीय मंच की विचार गोष्ठी

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के सरक्षण मे आर्य राष्ट्रीय मच की ओर से "प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा" विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में किया गया । इस सामयिक विचारपर अपने उद्घाटन भाषण में श्री मोहनलाल प्राचार्य, पी० जी० डी० ए० वी० कालेज ने कहा कि हिन्दी हमारी अपनी मातृ भाषा है दिल्ली की जनता का यह अधिकार है कि वह अपने बच्चों को अपनी मातृ भाषा मे शिक्षा दिलायें । श्री पी० के० चान्दला विधायक भारतीय जनता पार्टी ने कहा कि सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि सभी स्कूलो में शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा हो किन्तु हिन्दी या अपनी मातृ भाषा की हिमायत करने वाले ही इसका विरोध भी करते हैं सबसे पहले आर्य समाज व सनातन धर्म सभा द्वारा सचालित स्कूलों को अपने यहां मातृ भाषा में शिक्षा का माध्यम स्वीकार करके दूसरो के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करना चाहिये ।

श्री बलराज मधोक ने कहा कि सभी भारतीय भाषाओ के लिये देवनागरी-लिपि अपना ली जाये तो मातृभाषा को माध्यम बनाने का कार्य अत्यन्त सुगम हो जायेगा ।

सभा के अध्यक्ष श्री वन्देमातरम् ने कहा कि हमारे सविधान मे ऐसे अनुच्छेद हैं जहा राष्ट्रभाषा तथा मातृभाषा मे शिक्षा का प्रावधान है किन्तु वह केवल लेख मात्र हैं । उन्हें लागू करने का सकल्प सरकार मे नही है । भारतीय भाषाएं एक-दूसरी भाषा के अत्यन्त निकट हैं । शब्दावलि मे भी समानता है ऐसी कोई कठिनाई नही है कि हम अपनी मातृभाषा मे शिक्षा ग्रहण करके पिछड़ जायेंगे । ससार मे अनेको भाषायें हैं । वहा के लोगों ने अपनी मातृभाषा में वैज्ञानिक उन्नति करके यह सिद्ध कर दिया कि हमारी भाषा सर्वोपरि है । भारत के लोगो में मानसिक दासता के कारण अभी तक अंग्रेजी व अंग्रेजियत की गुलामी दिमागो में भरी हुई है । यदि सरकार दृढ़ निश्चय के साथ निर्णय ले ले तो मातृभाषा मे शिक्षा कठिन कार्य नही है।

श्रीमति सरोज दीक्षा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आर्य राष्ट्रीय मंच सदैव उन ज्वलन्त समस्याओं को आपके सामने लाता रहेगा जिनका हमारे राजनैतिक सामाजिक शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आर्थिक जीवन से सम्बन्ध है । मैं महिलाओ की ओर से विश्वास दिलाती हू कि हम आपके साथ हैं और सदा ऐसे कार्यो में अग्रणी रहकर अपना योगदान देती रहेगी ।

इस उत्तेजक विचार धारा का सयोजन करने मे आचार्य सुधाकर जी ने अपनी कुशलता का परिचय दिया । विचारक अनेक थे किन्तु समय की सीमा का ध्यान रखते हुए उन्होने सभी वक्ताओ को समय देकर जन समुदाय की भावना को पूर्ण किया । अन्त मे श्री प्रो० कृष्ण लाल शर्मा ने सभा मे पारित करने के लिये एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया । आर्य राष्ट्रीय मच के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री ने सबका धन्यवाद किया स्वागताध्यक्ष श्री नेभराज प्रधान आर्यसमाज राजेंद्रनगर ने सबका स्वागत करते हुए कहाकि इस प्रकार के आयोजन करने के लिये मेरी समाज सदा तत्पर रहेगी, क्योकि आर्य समाज राष्ट्र की वह सस्था जिसने अपने आरम्भिक काल से राष्ट्र हितैषी सभी विषयो मे मार्ग-दर्शन किया है । सभा मे लगभग २५०-३०० बुद्धिजीवि उपस्थित थे सभी ने इस आयोजन की हार्दिक सराहना की । इस आयोजन को सफल बनाने के लिये मच के महामन्त्री प्रिंसिपल जगदेव ने बड़ी दौड़-धूप की जिसके लिये वे प्रशसा के पात्र हैं । आर्य समाज राजेन्द्र नगर ने जलपान का आयोजन किया, उसके कार्यकर्ता बडे ही प्रेम से सबको आमंत्रित कर कर के जलपान, करा रहे थे । प्रस्ताव अविकल रूप में दिया जा रहा है ।

जो हिन्दी से प्यार नहीं करता वह भारत से प्यार नहीं करता

२४ अक्टूबर, १९९४ को रबड़ बोर्ड द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन में अपने उद्घाटन भाषण मे केरल विधान सभा के उपाध्यक्ष प्रो० के० नारायणकुरुप ने कहा —"हिन्दी पढने से उत्तर भारत के आदमियो के अधीन हो जाएंगे" ऐसी चिन्ता भी छोडना है। हम भारतीय में यह भावना पैदा करने रके लिए भारत की एक भाषा की जरूरत है ।

हमारा चिंतन, मनन, लेखन और कहना उसी भाषा मे होना चाहिए । कोई भी व्यक्ति हिन्दी से प्यार नही करता है तो यह समझना है कि वह भारत की अखडता को नही मानता और भारत को पूरी तरह प्यार नहीं करता । भारत की सेवा करना हर एक भारतीय का कर्तव्य है । और समूचा भारत का विकास हरेक भारतीय का लक्ष्य है । यह कर्त्तव्य निभाने के लिए, और लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमारी राष्ट्र-भाषा और संपर्क भाषा हिन्दी का पूरा विकास और प्रचार होना चाहिए ।

तमिल, मलयालम, उर्दू, तेलुगु, कन्नडा, असमी, गुजराती, पंजाबी आदि सभी भाषाएं श्रेष्ठ हैं । सांस्कृतिक और साहित्यिक पूर्ण भी हैं । लेकिन भारत का दिल सारे भारतीयों का दिल है । इसलिए हरेक का हृदय स्पदन भारत का हृदय तल जानने के लिए, हमारे लिए एक ही भाषा की जरूरत है । सबको एक में बाधने का सूत्र है भाषा ।

("रबड़ समाचार" के फरवरी-मार्च १९९५ के अक से साभार)

आर्य राष्ट्रीय मन्च द्वारा आयोजित संगोष्ठी में सर्व-सम्मति से पारित प्रस्ताव

आर्य राष्ट्रीय मंच द्वारा "प्रथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा" विषय पर आयोजित तथा दिल्ली के मुख्य राजनैतिक दलो के शीर्ष प्रतिनिधियो द्वारा सम्बोधित, गोष्ठी का यह दृढ मत है कि प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो । इससे विद्यार्थियो में मौलिक प्रतिभा का विकास होता है । उनके व्यक्तित्व का विकास होता है और वे उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे चुनौतियो का सामना कर सकते हैं । इससे विद्यार्थियो मे राष्ट्रीय चेतना और सस्कृति के प्रति प्रेम पैदा होता है ।

इस विषय मे सर्वोच्च न्यायालय के ८ दिसम्बर १९९३ के ऐतिहासिक निर्णय से यह विवाद सदा के लिए समाप्त हो गया है कि प्राथमिक शिक्षा का माध्यम कोई अन्य भाषा हो सकती है। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री एम० एन० वेकटचलैया तथा न्यायमूर्ति एस० मोहन की खण्डपीठ ने, कर्नाटक के अग्रेजी पढने वाले विद्यार्थियो के अभिभावको के कर्नाटक सरकार के आदेश पर दिये गये, कर्नाटक उच्च न्यायालय के आदेश के विरुद्ध याचिको को खारिज करते हुए निर्णय दिया है कि मातृभाषा द्वारा शिक्षा पाना बालक-बालिकाओ का मौलिक अधिकार है तथा उन्हे विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा देना उनके कोमल मस्तिष्क पर अत्याचार है ।

यह सगोष्ठी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सरकार से इस विषय पर अपनी नीति को स्पष्ट रूप से घोषित करने की मांग करती है । सरकार द्वारा अपने सयुक्त (सरकारी) स्कूलो मे अग्रेजी माध्यम की कक्षाओं को चलाए जाने का भी विरोध करती है ।

यह गोष्ठी सरकार से माग करती है कि सरकार सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन करते हुए, जन भावनाओ का आदर करते हुए तथा मूक नन्हे शिशु के हित का ध्यान करते हुए, सरकारी, मान्यता प्राप्त और नगर निगम के सभी विद्यालयो को प्राथमिक कक्षाओ में मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने का निर्देश देकर इस पवित्र कार्य मे पहल करें । अपनी इस नीति को लागू करने तथा इस कार्य की प्रगति पर निगरानी रखने के लिए एक उच्चाधिकार प्राप्त उच्चस्तरीय समिति का गठन हो ।

अध्यक्ष सगोष्ठी

सीताष्टमी पर्व

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे सीताष्टमी पर्व आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट II में अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया । जिसमे दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के अतिरिक्त दिल्ली की अनेक प्रमुख आर्य समाजो ने हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया । यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती कृष्णा रहेजा एव ध्वजा रोहण श्रीमती आशा बत्तरा द्वारा सम्पन्न हुआ ।

कृष्णा ठुकराल

पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा (३)

माधव के० देशपांडे

आज समाज का व्यवहार कैसा है ? यदि मेरे पास स्कूटर है तो कोई भी अपना स्कूटर देने के लिए तैयार होता है। यदि मेरे पास कार है तो मुझे कोई भी अपनी कार देने को तैयार होता है। यदि मेरे पास साइकिल है तो कोई मुझे अपनी कार नही देगा। दुर्बलो के साथ कौन मित्रता करेगा ? यदि वन मे आग लगी है तो वायु उसे और भडकाने मे मदद करती है। यदि छोटी-सी बत्ती जलाई है, तो बलवान वायु उसे क्षणभर मे बुझा देती है।

समर्थ रामदास स्वामी ने तत्कालीन समाज को रामबाण सजीवनी पिलाई। सारी जनता कर्मप्रवण बन गई। बलोपासना का कार्य महाबली हनुमान को आदर्श मानकर बढने लगा। परिश्रम का मूल्य समझने वाला राज मिल गया। महराष्ट्र की जनता को स्वतन्त्र और स्वदेशी राज का फल चखने को मिला। समर्थ रामदास स्वामी कहते हैं—"जैसा न्याय तैसे वैभव" ऋग्वेद का मन्त्र कहता है "जो उद्योगप्रिय हैं, परमेश्वर उनका मित्र है।" ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ मे प्रयत्न के विषय मे सुन्दर मन्त्र है—

"नानश्रान्ताय श्रीरस्ति, पापोनृषद्वरो जन ।
इन्द्र उच्चरत. सखा । चरैवेति चरैवेति।"

अर्थात जो पूरी शक्ति से परिश्रम नही करते उन्हे लक्ष्मी नही मिलती। आलसी मनुष्य पापी होता है। भगवान् श्रम करने वालो का मित्र बनता है। इसलिए श्रम करो, श्रम करो। आश्चर्य तो इस बात का है कि जिस समाज मे इतनी प्रेरणा-युक्त विचार सम्पत्ति है उस समाज में कर्महीनता के विचार आये कहा से, इसका कारण हो सकता है—समाज का वृद्धवर्ग दैव और भाग्य को ही सर्वस्व समझने लगा लगा और भाग्य को ही सर्वस्व समझने लगा और कहने लगा—"अनहोनी होनी नही, होनी होय सो होय।" एव

"अजगर करे ना चाकरी, पछी करे ना काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।"

जनता कर्म से उदासीन होने लगी। "भाग्यं फलति सर्वत्र। न विद्या न च पौरुषम्॥" (भविष्य) बोलने वालो का बोलबाला हो गया। एक बार एक प्रख्यात ज्योतिषि महाराज, राजा शिवाजी के दरबार मे उपस्थित हुए। कहने लगे—हम राजा का भविष्य कहेगे। ज्योतिषि महाराज की ख्याति बहुत दूर तक चली थी और वहा कुछ अच्छे धन की प्राप्ति होगी, इस उद्देश्य से ज्योतिषि महाराज शिवाजी के दरबार मे उपस्थित हुए थे। राजा ने एकाएक ज्योतिषि को दरबार मे ही ५०० कोडे लगाने की आज्ञा दी। सारे स्तब्ध हो गए। ज्योतिषि गिडगिडाने लगा। "सुना था राजा न्यायी हैं। मेरा कसूर क्या है जो मुझे यह सजा दी गई है। मैंने तो अभी भविष्यवाणी कही भी नही।" राजा शिवाजी ने उत्तर दिया—"तुझे अपना भविष्य पता नही, तू औरो का भविष्य क्या बताएगा। यदि तुझे यह पता होता तो यहा आता ही नही। इसे राज्य के बाहर निकाल दो।" यह था समर्थ रामदास का शिष्य। समर्थ कहते है—

"हे प्रचितीचे बोलिले। आधी केले मग सांगितले।
मानले तरी पाहिजे। कोजी येके।'
'आधी कष्ट मग फक। कष्टचि नाही ते निर्फक।
साक्षेपे विण केवक। वृथा पुष्ट॥"

प्रयत्न ही परमेश्वर है यह मत्र (विचार) देकर समाज को राष्ट्र निर्माण कार्य मे लगाया। शक्ति-युक्ति का विहगम सगम कराके उसे परिश्रम की जोड लगाई। प्रयत्न की महत्ता कहते हैं—

"जयास यत्नचि आवडे। नाना प्रसवी पवाडे॥
धीट पणे प्रगटे दडे। ऐसा नन्हे।"

अर्थात् जिसे परिश्रम से प्यार है वह सकट के समय पर पीछे हटता नही। हिम्मत से सकट का सामना करता है और विजयी होता है। यदि वेदोक्त कर्मफल सिद्धात पर हम विचार कर उसे अपनाए तो हमे तीन लाभ मिलते हैं। (१) कोई भी सकट हमे विचलित नही कर सकता। हम धैर्य से उसका सामना करने मे समर्थ होंगे। (२) हम परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे कि, हमे कष्ट सहन करने की शक्ति दो क्योकि हमे पता है मागने से ना दु.ख मिलता है ना सुख। जो कुछ प्राप्त होता है वह अपने कर्मानुसार ही होता है। दुख मिला तो हम निर्भय बन सकते हैं और तीसरा लाभ यह होगा कि हम दुष्कर्मो का परित्याग करेंगे। क्योंकि इस जगत् मे समस्त पाप सुख के लिए ही किये जाते हैं। दुःख के लिए नही। क्या पाप का फल सुख हो सकता है ? दुख से छूटना है तो पाप न कर, दुष्कर्मो का त्याग करना हम सीखेंगे क्योकि इसका फल हमे फिर से ना भुगतना पडे।

रामदास स्वामी कहते है "कष्ट करिना सेन पिके।" परिश्रम करने से भूमि मे अन्न उत्पन्न होता है। प्रयत्न से क्या प्राप्त होता है ? "जवरी चन्दन झिजेना। तव तो सुगन्ध ककेना।" जब तक चन्दन घिसता नही उसकी सुगन्ध आ नही सकती। प्रयत्नपूर्वक ज्ञान प्राप्त क्यो करना चाहिए इसका उत्तर लिखते हैं—"रूप लावण्य अभ्यासिला नये।" हम अपना रूप अभ्यास से बदल नही सकते किन्तु—

"अवगुण साडिता जाती। उत्तम गुण अभ्यासिता येती। कुविद्या साडूनि सिकती। शाहजे विद्या।"

अवगुन छोडने से जा सकते हैं, उत्तम गुण अभ्यास से प्राप्त हो सकते हैं, कुविद्या छोडकर सुविज्ञजन विद्या सीखते है। इस ससार में किसी को भी व्यर्थ मान्यता नही मिलती। उसके लिए सही प्रयत्न करना आवश्यक। कहते हैं —

"प्रयत्ने वीण कार्य झलि। छेविल्यावीण पोट भरले।
ज्ञाने वीण मुक्त झाले। हे तो घडेना॥
६-७-२३ दासबोध॥"

बिना प्रयत्न कार्य होता नही, खाना खाये बिना पेट भरता नहीं, ज्ञान बिना मुक्ति नही मिलेगी। (पतजलि योग सूत्र)। परिश्रम से प्राप्त वैभव से क्या करना चाहिए ?

"आपल्या पुरुषार्थ वैभवे। बहुतास सुखी करावे।
परन्तु कष्टी करावे। हे राक्षसी क्रिया॥ १२-१०-२७

अपने पुरुषार्थ से वैभव प्राप्त करना और उससे बहुजनो को सुखी करना। बहुजन को जो कष्ट देता है वह राक्षस है। समर्थ रामदास स्वामी का ध्येय यही था। बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय। बहुजनो के सुख के लिए वैयक्तिक मोक्ष पद का त्याग करने वाले समर्थ रामदास के पश्चात् भारतवर्ष मे एक आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती हुये। रामदास स्वामी को जो छात्र शक्ति राजा शिवाजी के रूप मे मिली यदि शिवाजी के समान एक भी राजा महर्षि दयानन्द को मिलता तो आज भारत का आर्यावर्त हो जाता। किन्तु यह होना नही था। अभी और भोग बाकी है। अपने हाथ मे कर्म की स्वतन्त्रता है। भोग भोगकर समाप्त करते चलो, भविष्य के लिए पुरुषार्थ से प्रारब्ध बनाते चलो। समर्थ के शब्दो मे "केल्याने होत आहे रे। आधी केलेचि पाहीजे।" अर्थात् परिश्रम से ही कार्य होते है, प्रथम कार्य तो करना ही चाहिए।

नेत्रहीन किन्तु साहसी हिन्दी आशुलिपिक

दिल्ली सरकार के रोजगार निदेशालय में कार्यरत हिंदी आशुलिपिक श्री श्रीगोपाल सिसोदिया ने अपने नेत्रहीन होने के बावजूद बड़े ही आत्मविश्वास से इस चुनौती को स्वीकार कर यह सिद्ध कर दिया है कि विकलांग व्यक्ति दया के पात्र नही वरन् उचित प्रोत्साहन के अधिकारी हैं। श्री सिसोदिया सामान्य हिन्दी टाइप मशीन पर बडे ही आत्मविश्वास के टाइप करते हैं।

उन्हें इस प्रयास मे और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए एक आशुलिपि मशीन रोजगार निदेशालय ने विशेष प्रयत्न कर उपलब्ध करा दी है। इस मशीन की सहायता से श्री सिसोदिया १०० से १२० शब्द प्रति मिनट की गति से हिन्दी में आशुलिपि से डिक्टेशन लेकर सामान्य टाइप मशीन पर टाइप कर सकते हैं।

श्री सिसोदिया शतरंज के क्षेत्र में भी विशेष महारत हासिल कर चुके हैं। इस खेल में नेत्र के अलावा तीक्ष्ण बुद्धि की भी आवश्यकता होती है। इस प्रकार अगर प्रोत्साहन मिला तो इस क्षेत्र में भी दिल्ली सरकार को गौरवान्वित करने के लिए श्री सिसोदिया आत्मविश्वास पूर्वक पूरी लगन से जुटे रहेंगे।

श्री सिसोदिया ने अपनी नेत्रहीनता को अपने क्षेत्र मे बाधा नही बनने दिया। यह एक उदाहरण है विकलांग व्यक्तियो के लिए कि वे भी इस उदाहरण से प्रेरित हो पूरी लगन से अपने क्षेत्र मे सफलता के लिए कमर कसे। उन्हे दया की नही उचित प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

कहा जाता है कि हिन्दी आशुलिपि सीखने मे कठिनाई होती है। इस भ्रम को दूर करने के लिए उचित होगा कि श्री सिसोदिया की कला का प्रदर्शन कराया जाए जिससे अन्य युवक-युवतिया भी प्रेरणा ले सके। आवश्यकतानुसार श्री कृष्ण-मोहन अग्रहरि, उप प्रादेशिक रोजगार अधिकारी (मुख्यालय) बैटरी लेन राजपुर रोड, दिल्ली-५४ (फोन न० २५१७१०२ या २५१८३६३) से सम्पर्क किया जा सकता है।

पुस्तक समीक्षा :

हैदराबाद सत्याग्रह पर प्रामाणिक दस्तावेज लघु पुस्तिका द्वारा प० ब्रह्मदत्त स्नातक ने हैदराबाद रियासत के नवाबी दौर मे आर्य समाज के सत्याग्रह में स्वय भागीदारी करके उस समय की स्थिति का दिग्दर्शन कराया है। व्यक्तिगत रूप मे लेखक ने जो अनुभव किया उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। साथ ही बहुत से लोगो ने बनावटी सत्याग्रही बनकर जो धोखाधडी की है उसकी भी झलक दिखाई है। सत्याग्रह को जिन लोगो ने पहले साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखा था उन्ही लोगो द्वारा बाद मे उसकी प्रशसा की गई यदि लेखक सत्याग्रह से पूर्ववर्ती स्थिति का भी सिंहावलोकन कराते तो पुस्तक और भी उपयोगी होती। लेखक स्वय छात्रावस्था मे जेल जीवन का भुक्तभोगी रहा है इसलिये यह दस्तावेज प्रमाणिक ही माना जायेगा। हैदराबाद आन्दोलन मे भाग लेने वालो को स्वतन्त्रा सेनानी की श्रेणी मे रखाने मे भी लेखक ने स्तुत्य कार्य किया है। आर्य समाज के लोगो के लिये पुस्तक पठनीय है।

सुधाकर

ऋषि बोधोत्सव

१९ मार्च १९९५ रविवार को आर्य समाज मोती बाग नई-दिल्ली ने अपने समाज परिसर मे शिवरात्रि तथा ऋषिबोधोत्सव बडे धूमधाम से मनाया।

उत्सव का आरम्भ यज्ञ से हुआ जो देवव्रत जी शास्त्री तथा दयानन्द जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

आर्य जगत के उच्चकोटि के वैदिक विद्वानो डा० महेश विद्यालकार तथा डा० प्रेमचन्द श्रीधर ने अपने सारगर्भित प्रवचनो द्वारा वैदिक जीवन पद्धति अपनाने का तथा महर्षि दयानन्द के विचारो का सन्देश दिया।

श्री रामनाथ जी सहगल की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी व एक कर्मठ कार्यकर्त्ता है।

जहा श्री गुलाब जी राघव ने अपने सुन्दर भजनो द्वारा ऋषि-जीवन के विषय मे बताया वहा उपस्थित युवको, बच्चो तथा महिलाओं ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किये।

उत्सव की भव्यता का अनुमान इसी से लगता है कि मोती बाग के आस-पास के क्षेत्रो, शांति निकेतन, आनन्द निकेतन से बहुत से गण्यमान्य लोगो ने इसमें भाग लिया।

समाज के कार्यो में सभी प्रकार का सहयोग देने वाले कुछ पुरुषों और महिलाओं को वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

सृष्टि सम्वत् एवं विक्रमी संवत्

के उपलक्ष्य में

गायत्री महायज्ञ

यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध कीजिए, स्वच्छता को अपनाइए।
मानव कल्याण के लिए, यज्ञ मे आहुति डालिए।।

कार्यक्रम

गायत्री महायज्ञ.		ब्रह्मा—डा० कर्णदेव शास्त्री
दिनाक	:	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रमी सम्वत् २०५२ (१ अप्रैल, १९९५, शनिवार)
समय	:	प्रात ८ से १० बजे तक
स्थान		सेण्ट्रल पार्क, फव्वारे के पास, कनाट सर्कस, नई दिल्ली

भारी सख्या मे उपस्थित होकर यज्ञ मे आहुति दीजिए।

निवेदक

राममूर्ति कैला — प्रधान

वेदव्रत शर्मा — मन्त्री

(आर्यसमाज मन्दिर, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-१)

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें, बी०पी० आदि भेजने मे व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय मे आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक स० अवश्य लिखें।

—सम्पादक

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नजफगढ़ नई दिल्ली-४३ का ६२वा वार्षिकोत्सव १४,१५,१६ अप्रेल ९५ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। —प्रधान

आर्यसमाज बनाया

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सम्वत् अठारह सो पिछत्तर का, दिवस सुहाना आया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।
स्वाभिमान राष्ट्र प्रहरी ने ध्रुव सम निभाया।
पावन पथ की खोज लगाने जहा-तहां पता लगाया।।
लक्ष्य पवित्र प्राप्त करने को जीवन सुख बिसराया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।१।।
भव्य भूमि भारत गारत हो रही अविद्या छाई।
ऊंच-नीच और भेद-भाव का चलन महा दुखदाई।।
वातावरण अशान्त वेद का सुखद मार्ग दरशाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।२।।
बाल-विवाह सती प्रथा पर्दा प्रथा को दूर किया।
मत-मतान्तर पाखण्डों के गढ़ को चकनाचूर किया।।
फूंका आर्य जाति में जीवन भीषण कष्ट उठाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्य समाज बनाया।।३।।
रच सत्यार्थ प्रकाश काट दिये मत पन्थों के बाजू।
सत्य असत्य तोल दिखलाया लेकर धर्म तराजू।।
कहें 'स्वरूपानन्द' पिया विष अमृत हमें पिलाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।४।।

चैत्र सुदी प्रतिपदा नव विक्रमी सम्वत् २०५२
(तदनुसार शनिवार, १ अप्रैल १९९५)

आर्यसमाज स्थापना दिवस

के मंगलमय अवसर पर आर्यसमाज हल्द्वानी (नैनीताल) मे सम्वत्सरेष्टि यज्ञ एव सार्वजनिक सभा

कार्यक्रम · प्रात ८ बजे से ९ बजे पर्यन्त सम्वत्सरेष्टि यज्ञ, आचार्य श्री प० यशपाल जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में (वेदपाठ वैदिक सत्संग मण्डल, भोटिया पडाव द्वारा) गुरु विरजानन्द यज्ञशाला मे, ९-०५ बजे से ९-१५ बजे तक ध्वजारोहण—ठा० कर्णसिंह प्रधान आ० स० हल्द्वानी द्वारा ९-१५ बजे से १०-३० बजे तक सार्वजनिक सभा (श्री स्वामी श्रद्धानन्द सभागार मे)

वक्ता .—डा० विनोद चन्द्र वेदालकार (पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय) डा० जगदीश चन्द्र जोशी आयुर्वेदाचार्य, आचार्य श्री पं० यशपाल जी शास्त्री । कार्यक्रम समापन पर प्रीतिभोज । कृपया पधार कर पर्व प्रकाश प्राप्त करें ।

(ठा० कर्णसिंह, प्रधान) (नानकचन्द, कोषाध्यक्ष) पृथ्वीराज, मन्त्री)

बसन्तोत्सव

दिल्ली आर्य महिला प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे आर्य समाज अमर कालोनी मे वीर हकीकतराय स्मृति दिवस बसन्त मेले के रूप मे समारोह पूर्वक मनाया गया । अध्यक्षता श्रीमती कृष्णा जी ठुकराल ने की ।

यज्ञ प्रार्थना के अनन्तर ध्वजारोहण श्रीमती हरबन्स खन्ना के द्वारा सम्पन्न हुआ । महिलाओ की खेल प्रतियोगिता इस समारोह का आकर्षक बिन्दु रही । आर्य स्कूलो के नन्हे मुन्ने बच्चो का रंगारंग कार्यक्रम ने तो समय ही बाध दिया । जाफना मे शहीद हुए मेजर डा० अश्विनी कण्व वी० एस० एम० की माता श्रीमती सुभाष कण्व ने खेलो मे विजयी महिलाओं एव बच्चों को पुरस्कृत किया ।

दोपहर बाद श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया । जिसमे मण्डल की अध्यक्षता श्रीमती शकुन्तला आर्या ने भटकती हुई युवा पीढ़ी को उचित मार्ग दर्शन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि पुरानी पीढी को आज की तरुणाई पर अपनी साधना त्याग तपस्या व निजी जीवन के निचोड़ के इस बिखेरते हुए उन्हें स्नेह के बन्धन से बांधकर अपना आशीर्वाद दे ताकि युवा पीढी में वीर हकीकत जैसो धर्म के प्रतिनिष्ठा व आततायियों को ललकारने की शक्ति उत्पन्न हो । श्रीमती मोहिनी गर्ग, सुभाष कण्व राजपाडे व कृष्णा ठुकराल ने भी सभा को सम्बोधित किया । अन्त मे समाज अमर कालोनी की ओर सभी अभ्यागत महिलाओ का जलपान से आतिथ्य किया गया ।

सरिता सूद

वैदिक विद्वान डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री का अभिनन्दन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठानम् उज्जैन की तरफ से जम्मू काश्मीर प्रदेश के विद्वानो मे सर्वश्रेष्ठ वैदिक विद्वान का चुनाव करके २६-२-९५ को डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री का विशेष अभिनन्दन किया गया । शास्त्री जी एक दर्जन ग्रन्थों का निर्माण कर चुके हैं । गुरुकुल बदायूं तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक बनकर उन्होने नव्य-व्याकरण शास्त्री, हिन्दी संस्कृत से एम० ए० तथा द्वैतवाद पर पी० एच० डी० उत्तीर्ण की । वे सम्पूर्ण भारत मे वेद प्रचार का कार्य कर रहे हैं । वेद सुरभि तथा वेद मे आलंकारिक कथाऐ ये उनके दो नये ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं । धर्मार्थ ट्रस्ट, सनातन धर्मसभा एव आर्य समाज के अधिकारियों ने उनके सम्मान मे समारोह किया उन्हें अभिनन्दन पत्र, शाल, शील्ड व राशि भेंट की गई ।

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में गौरक्षक युवकों का स्वागत

डेरा बस्सी में बन रहे बूचड़खाने के विरोध में आमरण

अनशन कर रहे तीन युवकों का आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली में दिनाक २६-३-९५ को श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सानिध्य मे स्वागत किया गया । ये युवक जिनके नेता श्री संजय कुमार भारद्वाज थे ६ माह से आर्य समाज हनुमान रोड के अतिथि थे । यहीं से वे जन्तर-मन्तर पर अपना कार्यक्रम चला रहे थे । इन युवकों में आत्म विश्वास, गौरक्षा के लिए आत्म त्याग की भावना इतनी प्रबल थी कि अनेको कष्ट सहने के पश्चात भी इन्होने अपने इरादे नही बदले । कई प्रलोभन भी इन्हे दिये गये किन्तु वे अपनी प्रतिज्ञा से टस से मस न हुए । अन्त में सरकार को इन युवकों के समक्ष झुकना पडा और पंजाब के मुख्यमन्त्री को यह घोषणा करनी पड़ी कि डेरा बस्सी मे जो बूचडखाना बना था वह बन्द कर दिया गया है अपनी सफलता पर ये युवक अत्यन्त प्रफुल्लित हैं और अपने घर लौट रहे है । इन्होने कहा कि यदि आर्यसमाज किसी भी बूचड़खाने को बन्द करने के लिए मोर्चा लगायेगी तो उसके लिए भी हम अपनी जान की बाजी लगाने मे पीछे नही रहेंगे । इन युवको को प्रोत्साहित करने के लिए सभा प्रधान ने १००० रु० उन्हे भेंट किया । श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली भी बधाई के पात्र हैं कि उन्होने ६ मास तक इन युवकों को सरक्षण दिया और उनकी सभी सुविधाओ का ध्यान रखकर उनको हौसला बढाया ।

आर्य समाज, दरियागंज का वार्षिक चुनाव

श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री चुनाव अधिकारी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ । श्री बी०बी० सिंगल प्रधान, श्री धर्मपाल गुप्ता वरिष्ठ उपप्रधान, श्री वीरेन्द्र पाल उप-प्रधान, श्री योगेन्द्र मिश्रा महामन्त्री, श्री वेद प्रकाश कत्याल, उपमन्त्री श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए ।

योगेन्द्र मिश्र, महामन्त्री

मांसाहार घोर पाप

शाकाहार की मांसाहार पर विजय के कतिपय उदाहरण

२९ जून १७९८ के डेलीन्यूज में बर्लिन संवाददाता ने एक संवाद भेजा जिसका शीर्षक था 'शाकाहार की विजय। १४ मांसाहारी और ८ शाकाहारियों में ७० मील चलने की होड़ लगी। सब शाकाहारी स्वास्थ्य पूर्वक निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गये जो प्रथम रहा उसने साढ़े चौदह घण्टे मे यात्रा पूरी की। सबसे पिछले शाकाहारी के १ घण्टा पीछे पहला मांसाहारी पहुंचा वह नितांत थक गया था शेष सब ३५ मील के पश्चात थक गये थे

१९०२ मे १८ शाकाहारी और १४ मांसाहारी ड्रस्डन से बर्लिन (जर्मनी की राजधानी) चले उनमे से १० शाकाहारी और ३ मांसाहारी निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गए। जो सबसे प्रथम था उसका नाम कालमैन था। वह सबसे पहले मांसाहारी से ७ घण्टे पहले पहुंचा था उसकी एक ५९ वर्ष के मनुष्य ने जो ३८ वर्ष शाकाहारी रहा था ४ घण्ट पहले पहुंच कर हरा दिया था।

परमात्मा पशु खाने से प्रसन्न नही होता

पशुओ मे आत्मा नही होती इस धार्मिक अन्ध विश्वास ने तो मनुष्य को पशु वध के लिए मानो खुली छूट दे दी है। क्या यही धार्मिकता है? एक ओर परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए रोजा और व्रत रखना और दूसरी ओर उसके बच्चों को मार कर खाजाना क्या यही ईश्वर पूजा है? क्या परमात्मा इस जघन्य से कृत्य प्रसन्न होता है? परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए जीवन में दयालुता संयम और पवित्रता धारण करनी होती है और अपने को मनुष्य सिद्ध करना होता है।

सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मे उपदेशकों तथा भजनोपदेशको की सेवायें उपलब्ध है अपने उत्सवों कथा प्रवचन आदि के शुभावसर पर आमन्त्रित कर धर्म लाभ उठायें।

व्यवस्थापक

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग दिल्ली सभा

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 30,31 3-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक २ अप्रैल १९९५

आर्यसमाज देशभर में [illegible]-जागृति अभियान चलाएगा

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह सम्मेलन, जिसमें न्यायपालिका के पूर्व सदस्य, संसद सदस्य, विधि व्यवसाय के सदस्य, संवैधानिक कानून के प्राध्यापक आदि सम्मिलित हैं, सर्व-सम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित करता है।

(१) भारतीय सविधान के अगीकृत करने के पश्चात, साढ़े चार दशको से भी अधिक समय के अनुभव से इसका पुनरावलोकन करने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

(२) ऐसा मालूम होता है कि हम धीरे धीरे "राज्यीय संघ" के स्थान पर एक "विभिन्न तत्वों के संघ" के रूप मे परिवर्तित हो रहे हैं।

(३) केन्द्र तथा राज्य स्तर की विधान सभायें अब ऐसी संस्थायें नही रह गयी हैं, जहां जन साधारण की इच्छाओ और अपेक्षाओ को मान्यता दी जाती हो।

(४) 'धर्म-निरपेक्षता' के नाम पर, जिसकी संविधान में कही भी व्याख्या नही की गयी है, भारत की जनता को धर्म, भाषा और संस्कृति के आधार पर विभाजित किया जा रहा है।

(५) यह सत्य है कि संविधान का प्रारूप तैयार करते समय अंग्रेजो द्वारा व्यवहारित 'पृथक मताधिकार" की योजना ताक पर रख दी गयी थी, लेकिन अब यह दूसरे रूप मे, समान परिणामों सहित, पुन. प्रकट हो रही है।

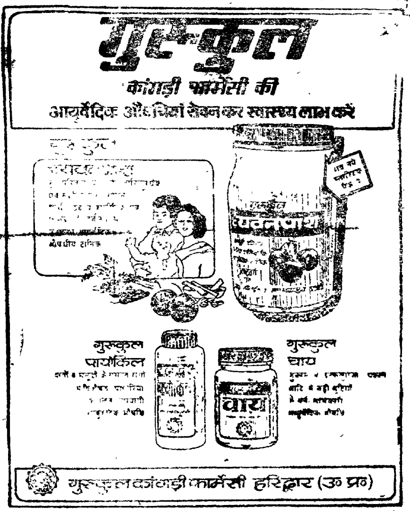
(६) हम यह मानते और जानते हैं कि हमारे संविधान के सिद्धांतों के अनुसार भारत का प्रत्येक नागरिक "कानून की दृष्टि" में बराबर हैं और उसे रोजगार के समान अवसर प्राप्त हैं, लेकिन उसमें निहित कुछ धारायें इसके सर्वथा विपरीत है।

यह सम्मेलन संविधान के पुन: आलेखन की माग तो नही करता है। लेकिन इतना अवश्य चाहता है कि उसमे निहित उन धाराओं को, जो देश की जनता को विभाजित करने वाली हैं और पृथकता-वाद को प्रोत्साहित करती है, उन्हे पूर्णरूपेण तुरन्त रद्द कर दिया जाय।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एक समिति के गठन का भी प्रस्ताव करती है जो इस प्रकार की धाराओ को पूर्णत: रद्द करने के लिए अथवा उनमें अपेक्षित संशोधन करने के लिए, अपनी संस्तुति प्रस्तुत करें।

संशोधनों के सुझाव के लिये विशेष समिति गठित करने की घोषणा

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने "भारतीय संविधान में पुनर्दृष्टि, पर आयोजित गोष्ठी मे दिये अपने अध्यक्षीय भाषण में यह घोषणा करते हुये कहा कि देश के वरिष्ठ न्यायविदो अधिवक्ताओ पत्रकारो तथा समाज शास्त्रियों को लेकर एक विशेष समिति गठित की जायेगी जो यथाशीघ्र इस आशय का सुझाव देगी कि सविधान के किन प्रावधानो मे क्या परिवर्तन किया जाय।



पुस्तकाध्यक्ष महोदय
कांगड़ी विश्वविद्यालय
(उ० प्र०)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : -३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)—९५

ओ३म्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १८, अंक २२ | रविवार, ९ अप्रैल १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौन्ड, १०० डालर | दूरभाष ।३१०१५०

आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस व नव सम्वत् के उपलक्ष्य मे सेण्ट्रल पार्क (फव्वारे के पास) कनाट सर्कस नई दिल्ली प्रात: ८ बजे से श्री कर्णदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व मे गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ मे यजमान के रूप मे आर्य समाज हनुमान रोड के प्रधान श्री राममूर्ति कैला व मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा आर्य समाज पहाड गज के वीरभान जी आदि विराजमान थे। इस आयोजन मे आर्यसमाज चूना मण्डी पहाड-गज, आर्य समाज करोल बाग तथा रघुमल आर्य कन्या विद्यालय डाक्टर लेन की छात्रायें बहुत बडी सख्या मे उपस्थित थी। विशेष रूप मे आर्य नेता श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कागडी हरिद्वार व आर्य सन्देश के सहसम्पादक श्री सुधाकर, श्री अजय कुमार भल्ला श्री स्वामी स्वरूपानन्द आदि अनेक गण्य मान्य व्यक्ति उपस्थित थे। शान्ति पाठ के पश्चात प्रसाद वितरण के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

यदि सभी आर्य समाजें अपने कार्यक्रम इसी प्रकार सार्वजनिक स्थानो पर मनायें तो सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। अभी भी हिन्दुओ मे यज्ञ के प्रति विशेष श्रद्धा विद्यमान है।

आर्य समाज स्थापना दिवस नव सम्वत समारोह का आयोजन

केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली के तत्वावधान मे हिमाचल भवन मे दिनाक १-४-९५ को श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, की अध्यक्षता मे मनाया गया।

इस अवसर पर डा० महेश विद्यालकार, उत्तमचन्द्र शरर, डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कागडी हरिद्वार डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा व महाशय धर्मपाल आदि आर्य नेता उपस्थित थे। सभी ने उपस्थित जन सम्मुदाय को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज के अतीत गौरव का वर्णन किया तथा प्रोत्साहन स्वरूप आज भी आर्य समाज की सार्थकता को अपरिहार्य बताया।

एक महान विभूति-प्रहलाद दत्त वैद्य

जिनका जन्मदिन फागुन पूर्णिमा (होली) को मनाया गया

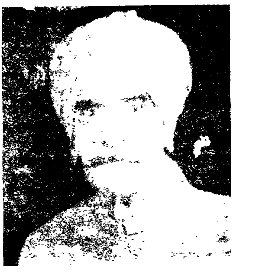
(नोट)(स्व० वैद्य प्रहलाद दत्त जी से मेरा सम्बन्ध १९४८ से है। आप श्री सूर्यदेव कुलाधिपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा डा० वामदेव, श्री चन्द्रदेव (प्रिंसीपल) प्रस्ताता आर्य विद्या परिषद श्री वासुदेव वैद्य इन्द्रदेव श्री ध्रुवदेव के पूज्य पिता, स्व० वैद्य मूलचन्द जी आर्य जी के छोटे भाई व कविराज वैद्य महावीर जी के चाचा है।

स्व० वैद्य जी का जन्म १८९५ को ३ मार्च फागुन पूर्णिमा होली के दिन हुआ था अर्थात एक सौ वर्ष पूर्व-विद्यार्थी काल मे रोहतक आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज से आर्य समाज के सिद्धांतो की जानकारी और साक्षात्कार सन् १९१५ मे किया। तत्पश्चात आप आर्य समाज के सत्सगो व उत्सवो पर नियमित रूप से आने लगे।

सन् १९१९ मे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का चादनी चौक घटाघर दिल्ली मे गोरो की सगीनों के सामने सीना तान कर खडे होना, आखो देखा दृश्य और स्वामी जी महाराज की निर्भीकता ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला जिस से आर्य समाज के प्रति विशेष लगाव हो गया। सन १९२० मई मास मे विद्यापीठ गुरुकुल भैंसवाल (हरियाणा) मे जब स्वामी जी द्वारा आधारशिला रखी गई तो उस समारोह में उत्साह पूर्वक भाग लेने वहा पहुचे।

सन १९२१-२२ में अपने व्यवसाय के लिए दिल्ली मे प्रयत्न किया! सन १९२३-२४ मे आर्य समाज झज्झर के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर पहले से स्थापित गुरुकुल झज्झर के लिए अपने बड़े भाई वैद्य मूल चन्द आर्य के सहयोग से गुरुकुल के लिए सेवार्थ कार्य (अन्न व धन सग्रह) मे जुट गए।

सन १९२५ से मलकाना शुद्धि आन्दोलन मे कूद पड़े तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के आदेशानुसार कार्य करने लगे।



सन १९२०-३० मे गुरुकुल झज्झर की प्रबन्ध समिति मे सदस्य के रूप मे सेवा करते रहे गुरुकुल के विद्यार्थियो को गणित की निशुल्क शिक्षा देते रहे, (अध्यापक के रूप मे)।

सन् १९३१ में दिल्ली मे एक औषधालय की स्थापना की तब मे लगातार आजीवन दिल्ली मे आर्य समाज के कार्यक्रमो मे भाग लेते रहे जिसमे नेतृत्व प्रदान

(शेष पेज ४ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

लोकतन्त्र में हिन्दी हटाकर अंग्रेजी थोपने का दुस्साहस क्यों ?

देश को आजादी मिले अनेक वर्ष बीत गए, बहुत कम लोग ऐसे होंगे जिन्हें अंग्रेजी शासन की आखो देखी घटनाए याद हो। नई पीढी को तो स्कूलों मे भी पूरी तरह यह नही बताया जाता कि आजादी के लिए देश ने कैसे कैसे और कितने बलिदान दिए हैं। अंग्रेजी ने बाकायदा न्यायपालिका का ताम-झाम खड़ा किया था। किन्तु कभी-कभी तो न्याय केवल एक स्वाग ही होता था जिससे उस प्राचीन दास-प्रथा की बर्बरता याद आ जाती थी जब न्याय करने से पहिले आरोपी से कुछ पूछने की जरूरत ही नही समझी जाती थी। किन्तु देश-भक्तो को न्याय का ढोग रचाकर फासी या फिर काला-पानी दिए जाने के चश्मदीद कुछ गवाह अभी भी मिल जाए गे।

ऐसी दासता मे जकड़ने के लिए अंग्रेजी ने देश मे अंग्रेजी की विष-बेलि बोई और मेकाले का अंग्रेजी को शिक्षा, प्रशासन और न्यायपालिका का माध्यम बनाने का प्रस्ताव, भारी विरोध होने के बावजूद मजूर कर लिया, क्योंकि,

"आक्रान्ता करता सदा जन-सस्कृति का नाश।
शिक्षा पर अधिकार कर कसे दासता-पाश।।"

१९४७ मे अंग्रेज चले गए तो अंग्रेजी की गुलामी की जजीर तोड़ने के प्रयास शुरू हुए। इसमे भी एड़ी-चोटी का जोर लगाने के बाद आशिक सफलता मिली। एक उत्तर प्रदेश मे ही २७ वर्ष के कठोर सघर्ष के बाद ३० मार्च १९७४ को एक अधिसूचना द्वारा सभी जिला न्यायालयो मे हिन्दी मे काम करने की अनुमति दी गई और फिर इसको कार्यान्वियन कराने के लिए अंग्रेजी की टाइप-मशीनें बदलने और टाइपिस्टो/स्टेनोग्राफरो को हिन्दी टकन/आशुलिपि कला सिखाने मे करोडो रुपये खर्च किए गए। तब कही न्याय की भाषा हिन्दी हो पाई और पिछले दो दशक से जनता की भाषायी आजादी की नीव दृढ़ होती जा रही थी। वादी और प्रतिवादी समझने लगे थे कि उनके बारे मे वकीलो और जजो के द्वारा जो कुछ कहा जा रहा है वह क्या है और स्वय भी अपना पक्ष स्पष्ट कर सकने की स्थिति मे आ गए थे। उनकी न्यायपालिका पर आस्था बढ़ी थी।

किन्तु जिस प्रकार एक वर्ग अंग्रेजो की गुलामी मिटाने को तैयार नही था, उसी प्रकार यह भाषायी आजादी थी निहित स्वार्थ वाले एक वर्ग की आखो की किरकिरी बनी। यहा तक कि एक कट्टर अंग्रेजी विरोधी नेता के हाथो ही इसकी नीव उखाड़ने का षडयन्त्र रचा गया। जल्दी-जल्दी एक समिति गठित कर के ढाई पृष्ठ की उसकी तथाकथित रिपोर्ट के आधार पर मुख्य मन्त्री महोदय से इस योजना की स्वीकृति भी ले ली गई कि १-७-९५ से सभी जिला न्यायालयो का काम हिन्दी में नहीं, अंग्रेजी मे ही होगा, और यह परिवर्तन लागू करने के लिए करोडो रुपये के खर्च की भी मजूरी प्राप्त कर ली गई। न्याय मागने वाली जनता पर होने वाले इस अन्याय को नवभारत टाइम्स के सम्पादक ने "उत्तर प्रदेश मे उल्टी गगा" कहकर विरोध किया है। यह निर्णय स्पष्ट ही हिन्दी के सर्वनाश की दिशा में एक कदम है। यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी प्रभृति राष्ट्रनेताओ के विचारों एव संविधान की भावना व उसकी अपेक्षा के प्रतिकूल तथा राजभाषा आयोग और ससदीय राजभाषा समिति की विभिन्न सिफारिशो के भी विरुद्ध है।

प्रसगवश, ससदीय राजभाषा समिति के सदस्यों मे १० राज्य सभा के और २० लोक सभा के सासद हैं जिनमे सभी राष्ट्रीय दलों के और पूर्वाचल तथा दक्षिणी राज्यो की मातृभाषा वाले भी हैं। गृहमन्त्री स्वय इसके अध्यक्ष हैं। इस समिति ने उच्च प्रशासनिक अधिकारियो, न्यायाधीशों और विधि विशेषज्ञों तथा राज्य सरकारो से राय लेकर विधि के सभी क्षेत्रो मे हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए अपनी सिफारिशें वृहदाकार के अपने पाचवे प्रतिवेदन मे राष्ट्रपति जी को दे दी थी। इनके कार्यान्वियन पर अब केन्द्रीय विधि मन्त्रालय और राजभाषा विभाग विचार कर रहे हैं रेल मत्रालय के अन्तर्गत रेल दावा अधिकरण मे (जिसका) दर्जा उच्च न्यायालय के समकक्ष है। पार्टियो को यह विकल्प है कि वे अपने कागजो मे और अन्य कार्यवाहियो मे हिन्दी का प्रयोग कर सकें और न्यायाधीश भी अपने आदेश और निर्णय हिन्दी मे दे सकते हैं। यह विकल्प देश के सभी भागो मे है। फिर हिन्दी भाषी उत्तर प्रदेश को ऐसी क्या उतावली पड़ी थी कि केवल दो विधि वेत्ताओ की राय लेकर हिन्दी को हटाने का आदेश दे दिया गया? इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला उत्तर प्रदेश के राजकाज में हिन्दी द्वारा की गई प्रगति को रोककर मुख विपरीत दिशा मे कर देना। यह अनेक कानूनी उपबन्धो से भी असगत है।

लोकतन्त्र को उन्नत करने के बजाय इस प्रकार अवनत करने का यह कदम अलोकतान्त्रिक और चुने हुए नेताओ द्वारा जनता के प्रति विश्वासघात ही होगा। भाषायी आजादी की दिशा मे हुई प्रगति रोककर और अंग्रेजी की गुलामी का फदा फिर से गले लगाने के लिए दलीलें दी गई हैं। ये भी बिल्कुल थोथी और लचर हैं। जैसे :—

(१) कुछ विद्वान न्यायाधीश अन्य राज्यो से स्थानातरित होकर आते हैं। उनको हिन्दी नही आती, या वे थोड़े प्रयास से हिन्दी सीख नहीं लेंगे, यह मान लेना उनकी विद्वता और क्षमता पर ही उंगली उठाने जैसा है। जब पूर्वी या दक्षिणी राज्यो के हिन्दीतर भाषा-भाषी आई ए एस और आई पी एस अधिकारी हिन्दी राज्यो मे हिन्दी सीखकर प्रशासनिक और तकनीकी सभी काम कुशलतापूर्वक कर सकते हैं तो न्यायाधीशो के बारे मे ही सदेह क्यों किया जा रहा है?

(२) हिन्दी दस्तावेजो का अनुवाद करने वाला विभाग कुशल और पर्याप्त नही है। यह एक प्रशासनिक कमजोरी है, जिसे दूर करने के बजाय हिन्दी का प्रयोग रोककर विदेशी भाषा थोपना हिन्दी भाषी राज्य की सरकार का जनता पर अन्याय होगा।

(३) हिन्दी मे काम करने के कारण विद्वान न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय के निर्णयो को समझ नही पाए गे, ऐसा कहना उनका उपहास ही नहीं घोर अपमान हैं। क्या पिछले बीस वर्षों मे कोई भी ऐसे मौके आए हैं जब किसी विद्वान न्यायाधीश द्वारा उच्चतम न्यायालय का निर्णय न समझ पाने की शिकायत किसी ने की हो?

लोकतन्त्र की यह माग है कि न्याय भी जनता की भाषा मे ही हो ताकि यह सबकी समझ मे आ सके। अत यह आवश्यक है कि यथास्थिति बनाए रखी जाए और हिन्दी के बजाए अंग्रेजी का प्रयोग आरोपित करने के आदेश तत्काल रद्द किए जाए। इस सम्बन्ध मे कुछ समय पूर्व हुई प्रधानमन्त्री जी की अध्यक्षता मे केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठक की सिफारिशो पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है जिसमे उच्च न्यायालयो और उच्चतम न्यायालय मे हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए कहा गया है। इस समिति मे कई केन्द्रीय मन्त्रियों और सचिवों के अतिरिक्त कई राज्यो के मुख्यमन्त्री भी सदस्य हैं। यह कितना बड़ा विरोधाभास है कि इतने ऊचे स्तर पर की गई उक्त सिफारिशो के बावजूद भी उत्तर प्रदेश सरीखे हिन्दी-भाषा-भाषी राज्य की जनता को जिला स्तर पर भी अपनी भाषा मे न्याय पाने के अधिकार से वचित किया जा रहा है, और वह भी तब जबकि देश महात्मा गाधी की १२५वी जयन्ती और सन्त विनोबा भावे की जन्म-शताब्दी मना रहा है। अत: यह आवश्यक है कि हिन्दी को हटाकर अंग्रेजी लाए जाने के विरोध मे सगठित रूप से तत्काल प्रयत्न किए जाएं और जनता के प्रतिनिधियों और समाज सेवा सस्थाओ तथा पत्र-पत्रिकाओ का सहयोग लेकर उक्त निर्णय का सर्वतोमुखी विरोध किया जाए। इस विषय मे निम्नलिखित को तत्काल विरोध-पत्र लिखवाए जिससे कि उक्त निर्णय रद्द हो सके :—(१) माननीय न्यायमूर्ति ए०एम० अहमदी, मुख्य न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली। (२) माननीय महामहिम मोती लाल वोरा, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ। (३) माननीय श्री हसराज भारद्वाज, मत्री, न्याय विभाग, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। (४) माननीय न्यायमूर्ति एस०एम० सोढ़ी मुख्य न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

अन्यथा बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश के अन्य राज्यो मे भी हिन्दी को हटाकर अंग्रेजी को थोपने का षडयन्त्र किया जाएगा।

विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त-बन्धु'
डी-११४, लोक विहार दिल्ली-३४

आर्य समाज का युवक संगठन

आचार्य सुधाकर, एम.ए.

स्वामी श्रद्धानन्द की मृत्यु के पश्चात आर्य नेताओं ने एक ऐसे संगठन का अनुभव किया जो आर्य नेताओं की विधर्मियों से रक्षा कर सके। इस चिन्तन के गर्भ से पहले यह विचार आया कि युवकों की एक आर्य सेना गठित की जावे किन्तु विदेशी राज्य होने के कारण सेना शब्द का प्रयोग उपयुक्त न समझा गया, इसका एक कारण और भी था, जापान में रास बिहारी बोस ने एक आर्य सेना का संगठन खड़ा कर दिया था, जिसके वे स्वय सर्वे सर्वा थे, बाद में नेता जी के जापान पहुंचने पर रासबिहारी ने अपनी सेना नेता जी सुभाष को सौंप दी जिसका नाम आजाद हिन्द फौज रखा गया इसलिये आर्य सेना नाम स्थगित कर दिया गया।

युवकों का एक सगठन आर्य कुमार परिषद के नाम से अस्तित्व में आया। इसमें आर्य समाज के कई उच्चकोटि के नेताओ ने रुचि ली, महात्मा हंसराज, नारायण स्वामी, महात्मा आनन्द स्वामी चादकरण शारदा, प० जियालाय, धुरेन्द्र शास्त्री आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, आर्यकुमार सभायें प्राय: प्रत्येक आर्य समाज में स्थापित हो गई। अनेकों बाल, बालिका, युवक, युवती इसमे सम्मिलित होते थे। जो आगे चलकर आर्यसमाज की बागडोर सम्भालने लगे थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य कुमार परिषद को कोई महत्व नहीं दिया परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे कुमार सभायें समाप्त होने लगीं। सार्वदेशिक सभा ने अपना एक संगठन आर्य वीर दल के नाम से आरम्भ किया, किन्तु आर्य समाजों ने इस कार्य में रुचि नहीं ली, इसका कारण यह था कि उस समय राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ की शाखायें प्रत्येक आर्य समाज मे लगने लगी थीं।

इन्द्र विद्यावाचस्पति उस समय सार्वदेशिक सभा के मन्त्री थे उन्होंने समस्त आर्य समाजों को परिपत्र भेजा कि आर्य समाजों के स्थान में रा० स्व० सघ की शाखायें न लगाई जाय बल्कि उनके स्थान पर आर्यवीर दल की शाखायें लगाने की व्यवस्था की जावे किन्तु अधिकांश समाजों ने इस परिपत्र की उपेक्षा की। आर्य वीर दल के संगठन का कार्य श्री ओम प्रकाश त्यागी को सौंपा गया, उन्होंने अत्यन्त तल्लीनता से आर्य वीर दल को सगठित करने का प्रयास किया, उनके प्रयत्न स्वरूप आर्य वीर दल प्रत्येक प्रांत मे साकार होने लगा।

यह समय भारत के लिये बड़ा ही नाजुक था, मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के साम्प्रदायिक रूप को उत्तेजित करके जहा तहां हिन्दू मुस्लिम झगड़े शुरू करा दिये। जिन प्रांतों या नगरों मे मुसलमानों की संख्या अधिक थी वहां के हिन्दू आत्म रक्षा के लिये सहारा ढूढने लगे। सघ की शाखायें जहा लगती थी उनके सदस्यों की संख्या बढ़ने लगी, जिन स्थानो पर उनकी शाखायें लगती थी उन्होने उन स्थानों को छोड़ने से इन्कार कर दिया, इसके परिणाम स्वरूप अनेक स्थानों पर आर्य वीर दल व संघ मे भी सघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई। अनेकों आर्य समाज के सदस्य जो रा०स्व० सघ से जुड़े हुए थे उन्होंने आर्य वीर दल का विरोध किया और वे सघ को छोड़ कर आर्य वीरदल में नहीं आये। यह स्थित आज तक बनी हुई है। संघ की एक सोची समझी यह नीति रही है कि हिन्दू संगठन के नाम पर सभी हिन्दू सस्थाओं पर अधिकार कर लो, जहा उनकी पहुच नहीं थी वहा पर उन्होंने हिन्दू सस्थाओं के समानान्तर सस्थायें खड़ी कर दी जैसे पजाब सनातन धर्म सभा के समानान्तर अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा, क्योंकि पजाब सनातन धर्म सभा पर गोस्वामी गणेशदत्त के परिवार का आधिपत्य था वह आज भी है सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समानान्तर विश्व हिन्दू परिषद, स्वामी दयानन्द के समकक्ष स्वामी विवेकानन्द को प्रस्तुत किया। नमस्ते के स्थान पर नमस्कार शब्द का प्रयोग किया। आज भी अनेको आर्य समाजें राष्ट्रीय स्वयं सघ के अधिकार में हैं। वहां पर गुरु पूजा आर्य समाज मन्दिरों में की जाती है। उन आर्य समाजों ने आरम्भ से अब तक आर्य वीर दल की स्थापना नहीं की। सघ के कार्यकर्ताओं ने आर्य समाजी परिवार के युवकों को संघ की शाखाओं में लाने का पूर्ण प्रयत्न किया। आर्य वीर दल के द्वारा जो युवक शक्ति आर्य समाज को प्राप्त होनी चाहिये थी वह न हो सकी।

आर्य समाजों की पार्टीबाजी ने भी युवकों को आर्य समाज से दूर रखा। जहा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य वीर दल नाम रखा तो प्रादेशिक सभा ने आर्य वीर संघ नाम रखा। आज भी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद नाम से अलग-अलग संगठन कार्य कर रहे हैं। उनका परस्पर कोई सम्बन्ध नही है। ईसाइयों की वाई०एम०सी०ए० और वाई-डब्लू० एम०सी०ए० केवल दो संगठन हैं और वे विश्व व्यापी हैं उनकी अपनी शक्ति है, किन्तु आर्य समाजों के अलग-अलग प्रांतीय संगठन, प्रादेशिक संगठन है उनकी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग ही पकती है, कुछ आर्य समाजी नेताओ ने आर्य वीर दल को दरी बिछाने वाला समूह समझा उन्हें कभी बराबरी का स्थान नहीं दिया। जो युवको का प्रवाह आर्य समाज की ओर आ रहा था वह दूसरी ओर मुड़ गया। जैसे रा० स्व० संघ का वृद्ध से वृद्ध कार्यकर्ता प्रात:काल उठकर लोगों को सोते से जगाकर शाखा मे जाने की प्रेरणा देता था उसको आर्य समाजियों ने अपने साहबी ठाट-बाट के आगे हेय समझा क्योंकि उन्हें हुक्म चलाने की आदत पड़ गई थी परिणाम स्वरूप युवकों ने इसे अपना अपमान समझा और वे आर्य समाज से दूर हो गये। स्वेच्छा से सेवा कार्य प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्नता पूर्वक करता है किन्तु हुक्म चला कर कराने में किसी की रुचि नहीं होती।

पाकिस्तान बन गया, लोगों के मन से मुसलमानों का भय निकल गया। अब सभी हिन्दू संगठन ढीले पड़ गये इस बात को संघ के अधिकारी वर्ग ने भाप लिया उन्होने सूझबूझ से काम लिया और अपना राजनैतिक सगठन खड़ा करने का निश्चय कर लिया जिसकी परिणति जन संघ के रूप मे हुई। सघ के शीर्षस्थ कार्यकर्ता जनसंघ के संगठन कर्ता बन गये। सघ की अपनी पृष्ठ भूमि भी थी ही उसी के आधार पर उत्तरी भारत मे जनसंघ स्थापित हो गया। आर्य समाज कांग्रेसियों और जनसंघियों का पिछलग्गू बन गया। कुछ इधर कुछ उधर चले गये,

(शेष पेज ६ पर)

श्री राम को याद करो

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम को याद करो।
ऋषियो के वशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो।।

श्री राम निर्बल, निर्धन, दुखियो के सबल सहारे थे।
मानवता के पूजक थे, सारी प्रजा के प्यारे थे।।
वीर, साहसी, चरित्रवान थे जीवन मे ना हारे थे।
बाली, रावण, कुम्भकरण से, दुष्ट राम ने मारे थे।

ढूढ-ढूढ असुरो को मारो, मन मे मत अवसाद करो।
ऋषियों के वशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो।।

देवों की धरती भारत मे, पाप बढ़ गया भारी।
बन्दूके लेकर हाथो मे, फिरते है अत्याचारी।।
उग्रवाद, आतकवाद की, पनप गई है बीमारी।
सीधे-सच्चे, भोले-भाले, मरते है नित नर-नारी।

लव, कुश जैसी वीर, बहादुर, पैदा तुम औलाद करो।
ऋषियो के वशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो।।

याद रखो जो नर जीवन मे, चूक समय पर जाता है।
कभी सफलता के दर्शन वह मूढ़ नही कर पाता है।।
कर्म हीन है वह पूरा, धरती पर भार कहाता है।
अपयश का भागी बनता है जीवन भर पछताता है।।

भला इसी मे है जीवन में, कभी नही प्रमाद करो।
ऋषियों के वशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो।।

आर्य वीर जवानो जागो, श्री राम के गुण धारो
पावन वैदिक धर्म निभाओ, पुत्र राम के तुम प्यारो।।
लक्ष्मण, अगद, जाम्वन्त बन, वैरी दल को सहारो।
बनो वीर हनुमान, दुष्ट रावण की सेना को मारो।।

"नन्दलाल" तुम युद्ध क्षेत्र मे, निर्भय हो सिंह नाद करो।
ऋषियो के वशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो।।

प० नन्दलाल 'निर्भय' सिद्वात शास्त्री, भजनोपदेशक
ग्राम व पो० बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपये तथा आजीवन शुल्क ३५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक नि:शुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनो या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमंत्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

प्रहलाद दत्त वैद्य

(पृष्ठ १ का शेष)

करना व प्रचार व प्रसाद के लिए विभिन्न आर्य समाजो में उपदेश हेतु जाना नई आर्य समाजें खोलना शामिल था।

सन् १९३२ मे दिल्ली के शिव मन्दिर आन्दोलन की बागडोर सम्भाली। सन् १९३९ मे हैदराबाद सत्याग्रह की सचालन समिति के सदस्य मनोनीत किए गए। दीवानहाल, दिल्ली की आर्य समाज मे सदर बाजार क्षेत्र की ओर से अन्तरंग सदस्य बने। आर्य सत्याग्रहियों का स्वागत और उनको थैली भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त किया। तत्पश्चात पण्डित व्यासदेव शास्त्री (बी० ए० एल० एल०बी०) द्वारा आर्य युवक संघ की स्थापना होने पर उसकी अन्तरंग सभा के सदस्य बने।

सन् १९४१ मे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ मे प्रवेश कर सेवा में लग गए तथा दिल्ली मे सघ के प्रमुख व्यक्तियो मे उनका शुमार होने लगा। देश का बटवारा होने पर दिल्ली में आए हिन्दू सिख शरणार्थियों को बसाने का कार्य अपने हाथ में लिया तथा दिल्ली छोड गए मुसलमानों के मकानो में उनको बसाना शुरू कर दिया।

सन् १९४८ में महात्मा गाधी की हत्या पर सघ पर प्रतिबन्ध लगा। इस प्रतिबन्ध को हटवाने के लिए प्रथम डिक्टेटर के रूप मे सत्याग्रही जत्था ले कर घन्टाघर दिल्ली में सत्याग्रह किया। इस पर एक वर्ष कारावास व पाच सौ रुपए के दण्ड की सजा भुगतनी पड़ी।

(लेखक वैद्य जी के साथ ६ मास जेल में रहा जहा प्रतिदिन सन्ध्या, प्रार्थना, भजन व उपदेशो का प्रबन्ध हम मिलकर करते थे। उपदेश स्वय वैद्य जी तथा उनके बडे भाई वैद्य मूल चन्द जी के होते थे (वैद्य जी के सुपुत्र डा० वामदेव व भतीजे वैद्य महावीर भी जेल मे थे।

सन् १९५० में फिर से आर्य समाज के कार्य मे सलग्न हो गए। परन्तु कश्मीर आन्दोलन में जब जनसघ के प्रधान डा० श्याम प्रसाद मुखर्जी का निधन हुआ तो एक बहुत बड़ा जलूस दिल्ली मे रोष प्रकट करने के हेतु वैद्य जी ने निकालने का आह्वान किया। कुछ आर्यसमाजी इस पक्ष मे नही थे परन्तु वैद्य जी ने जलूस निकाला ही नही अपितु उसका नेतृत्व भी किया। नई सड़क पर जलूस के पहुचने पर उनको अवैध घोषित किया गया तथा अनेक व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए, वैद्य जी को कहा गया कि आप अदालत मे यह बयान दे दो कि मै तो किसी रोगी को देखने जा रहा था जलूस मे भाग नही लिया तो आप छूट जाऐंगे परन्तु उन्होने ऐसा करने से मना कर दिया तथा यह बयान दिया कि वह जलूस का नेतृत्व कर रहे थे। परन्तु सैशन कोर्ट ने अपील होने पर उनको सम्मान पूर्वक रिहा कर दिया, मुकदमा एक वर्ष तक चला।

सन १९५६-५७ मे पजाब हिन्दी सत्याग्रह का सचालन दयानन्द मठ रोहतक मे ६ मास रह कर किया।

सन् १९६६ ६७ मे गोरक्षा आन्दोलन का संचालन सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार केन्द्रीय स्थल आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली से करते रहे। आर्य समाज सदर बाजार मे लगातार मन्त्री व प्रधान व प्रतिष्ठित सदस्य के रूप मे आर्य समाज के कार्य करने का सुअवसर प्राप्त होता रहा।

आप सार्वदेशिक सभा से भी सम्बन्धित रहे तथा उसके गोरक्षण दुग्ध केन्द्र की स्थापना आपके तप व त्याग का ही फल है।

मैंने उनके जीवन काल मे उन द्वारा किए गए कार्यो का थोड़ा सा ब्योरा मात्र दिया है।

दिल्ली में यदि किसी आर्य समाज के उत्सव व शोभायात्रा व जलूस में हाथ में मोटा डन्डा लिए हुए सिर पर पगडी कन्धे पर अग वस्त्र डाले लम्बे कद का व्यक्ति दिखाई पड़ता था तो वह वैद्य प्रहलाददत्त जी ही होते थे। वैद्य जी आर्य समाज के नेता तो थे ही परन्तु एक कुशल कार्यकर्ता भी थे। सदा प्रसन्न मुद्रा में रहते थे प्रभु ने सन्तान भी ऐसी दी जो अपने पिता से भी आगे निकल गई है।

मेरा उनसे बहुत स्नेह व प्यार था। मैं प्राय. उनको मिलने के लिए जाता तो देर तक चर्चा चलती रहती। एक तो मैं आर्य समाज का सेवक दूसरे राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ से सम्बन्ध रखने के कारण उनके निकट था तीसरे उनके [illegible] मे उनका सहयोगी था। मैं उनके जन्म दिन उनको अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

नन्दकिशोर भाटिया, जे-६/१२७ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७

स्थापना दिवस और हमारा कर्त्तव्य

—मोहनलाल आर्य शाहपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान

आर्यावर्त राष्ट्र को एक सूत्र मे बाधने का प्रयास पाच हजार वर्ष पूर्व भगवान् कृष्ण ने किया था। इसी उद्देश्य के पूर्त्यर्थ महर्षि दयानन्द जी महाराज ने भी सम्पूर्ण आर्यावर्त देश मे अपनी दोपैरो की मोटर कार से भ्रमण कर पातजल शास्त्रानुसार विभूतियों का साक्षात्कार करते हुये मथुरा मे दन्डी स्वामी पूज्यपाद विरजानन्द जी महाराज से पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर आर्ष ज्ञान के प्रचार निमित्त कार्य क्षेत्र मे पदार्पण किया। सर्वप्रथम अपना कार्य क्षेत्र गगा क्षेत्र तक ही सीमित रखा।

पुन: कुछ आगे बढ़ने का विचार कर बिहार मे आरा नगर मे एक सभा का आयोजन हुआ। इस का मात्र एक ही अधिवेशन हुआ कि यह सभा महर्षि के आरा नगर छोड़ने के साथ ही साथ समाप्त हो गई।

आगे जब कलकत्ता मे पाश्चात्य शिक्षाविद जनो से सम्पर्क हुआ। तब वहा स्थापित ब्रह्म समाज व प्रार्थना समाज के कार्य कलापों को देख उसमें कुछ त्रुटि जान आगे जब गुजरात प्रदेश मे आये तभी यहा राजकोट मे एक सभा 'आर्यसमाज' के नाम से स्थापित की। पदाधिकारियों का चुनाव भी हुआ था। यहा नियम भी २६ पारित हुये थे। मगर कुछ राजनैतिक कारणो से सफलता प्राप्त नही हो सकी।

महर्षि जी महाराज का जब बम्बई मे आगमन हुआ तभी वहां के कतिपय आर्य जनों ने पुन: इस प्रकार की सभा की विधिवत स्थापना पर विचार किया। तदनुसार ही चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सम्वत् १९३२ को अनोपचारिक बैठक मे आर्य समाज की स्थापना का निश्चय कर स्थान समय के साथ-साथ सदस्य संख्या में भी पूरे सौ तक करने का विचार हुआ। उस समय यह संख्या ६० के थी। महर्षि ने भी जो २६ नियम बनाये उनमें दो और अन्तिम के बढ़ाकर २८ बना लिये गये। और चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही इसकी स्वीकृति कर ली गई थी।

अब आर्य समाज की स्थापना विधिवत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा शनिवार तदनुसार दि० १० अप्रैल सन् १८७५ ईसवी को आर्य समाज की स्थापना यज्ञ से शुरू करके प्रधान श्री गिरधर लाल दयाल दास कोठारी व मन्त्री श्री पानचन्द आनन्द जी पारेख एव साथ में अन्य सदस्य भी मनोनीत किये गये। इस समय तक सदस्यों की सख्या ६९ हो गई। इनमें साधारण सभासदों में ही महर्षि का नाम भी ३९वे स्थान पर निम्न प्रकार से लिखा गया।

क्रम सख्या	जाति	नाम	व्यवसाय	शिक्षा
३९	ब्राह्मण,	प० दयानन्द सरस्वती	सन्यासी	सस्कृत वैदिक संस्कृत

महर्षि अपने विचार प्रकट करते हुए कहते है कि "हमारा कोई मत स्वतन्त्र नहीं है। मैं वेद के अधीन हू। सन्यासी हू। आप लोगों का जो अन्न खाता हू। इसके बदले मे, जिसे सत्य जानता हू उनको ही निर्भयता पूर्वक उपदेश करता हू। मुझे यश कीर्ति की कोई इच्छा नही हैं। चाहे मेरी कोई स्तुति करे वा निन्दा। मैं अपना कर्त्तव्य समझ कर ही सत्य वैदिक धर्म का बोध कराता हू। चाहे कोई माने या न माने। इसमें मेरा कोई हानि लाभ नही है। आर्य समाज मन्दिर मे मेरा चित्र नही रखा जाये।"

(आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग सत्यकेतु जी पेज २५०)

इस समय जो २८ नियम पारित हुए थे उनमे कुछ नियम तो ऐसे हैं जो आज भी हमारी कुछ निम्न स्तरीय अवस्था को पुन जागृत करने मे महत्व पूर्ण योग दान कर सकते हैं। जैसे नियम दवां :—"इस समाज मे सत्पुरुष, सत्यनीति, सत्याचारणी, मनुष्यो के हितकारक ही समाजस्थ किये जावेगे।"

कितना महत्वपूर्ण है यह नियम। अब भी हमें इसे ही कार्य रूप मे परिणित करना है जो केवल पदाधिकारी बने रहे अथवा स्वय के पदाधिकार पर आंच नहीं आने देवै। मात्र इसी उद्देश्य से हस्ताक्षरी सदस्यों को इकट्ठा करते है। वे भी नाम मात्र के सदस्य नही रहकर इस नियम का आचरण कर कथनी करनी के भेद को मिटा कर आर्य समाज की प्रगति मे सहायक हों। तभी हम कुछ कार्य करने में समर्थ होकर कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं।

आगे इसी के लिए सभासदो का कर्त्तव्य निर्देशन भी आगे दसवें नियम में है जो आज के सन्दर्भ मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस नियम मे कहा गया है कि—

"हर आठवें दिन प्रधानमन्त्री और सभासद, समाज स्थान में इकट्ठे हों। सब कामों में इस काम को मुख्य समझें।"

इस नियम की उपेक्षा भी हमारी प्रगति में बाधक बन रही है हम बराबर देख रहे हैं कि समाजों मे जहां मुख्य रूप से सन्ध्या यज्ञ का ही कार्यक्रम उतमोत्तम सामग्री घृत, समिधा शुद्ध उच्चारण, महर्षि कृत यथा विधि उचित समय पर होना अनिवार्य है। वहा इसकी कुछ भी पढाई नही होने से हर जगह पर कुछ न कुछ भिन्नताये दृष्टि गोचर होती है। सत्य तो यही है कि हमारा विधिलेखक एक भगवान और दयानन्द जी महाराज मे आनन्द यह भी है कि महर्षि ने अपने अन्तिम समय सस्कार विधि एतद् विषयक एक ही ग्रन्थ लिखा। फिर भेद कैसा और क्यो।

अत आर्य समाजों में फैली शिथिलता दूर करणार्थ हमारा कर्त्तव्य है कि हमे हमारे सभी यज्ञीय पात्र समिधा आसन वेदी यज्ञ कुण्ड उतमोत्तम धातु के बने हो। क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि जिस किसी मन्दिर धर्म स्थान मे सजावट कृत्रिम तडक भडक शोभायुक्त अधिक होती है। साधारण जनों का आकर्षण भी वहा अत्यधिक होता ही है। इस कर्त्तव्य कर्म के लिए सभी पदाधिकारी एवं साधारण सदस्य और नवीन सभासद किसी सेवक या परोहित के भरोसे नहीं रहकर सभी मिलकर समय पर आकर इस कर्म को करें।

महर्षि की विचारधारा यही है कि सब कामो मे इस काम को मुख्य समझें नये सभासदो के लिए भी हमे कुछ समय सत्सग मे या पश्चात शंका समाधान का रखना प्रश्नो का उत्तर पारिवारिक समस्या का

ओ३म्-ओम् ओ का यथास्थान पर प्रयोग अयन्त इधम के एक मन्त्र ५ आहुतियां क्यो। तो दो मन्त्र एक समिधा का क्या महत्व अचिमनमे कितना पानी होना चाहिए तो मध्यमा-अनामिका का उपयोग कैसे क्यो? शनो देवी० का आचमन करके यज्ञ प्रारम्भ का महत्व ऋषि सम्बत दयानन्द सम्वत को ही क्यों माने सकल्पोच्चारण का क्या लाभ। ब्रह्म होता अध्वर्यु उदगाता किसे कहते है। इनके आसन निश्चत स्थान पर क्यों। इत्यादि अनेक विषयो को महर्षि विचार धारा से ही समझाया जाय। इनके महत्व को समझायेगे। तभी हमारी प्रगति होकर आगे बढ पायेगे यह ध्रुव निश्चय है।

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी व कर्मचारी माता लाजवन्ती जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख व शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त दुखी परिवार व सगे सम्बन्धियो को इस दारुण दुख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे।

सूर्यदेव, प्रधान

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ की शिरोमणि सस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी व कर्मचारी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, समाजसेवी, दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामसरण दास आर्य की छोटी पुत्रवधु श्रीमती ईश्वरदेवी आर्या की अमृतसर में हुई सड़क दुर्घटना मे मृत्यु हो जाने पर गहरा दुःख व शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त दुःखी परिवार व सगे सम्बन्धियो को इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे।

सूर्यदेव, प्रधान

आर्यसमाज का युवक संगठन

(पेज ३ शेष का)

इनमें आपस का विरोध बढ़ता चला गया। आर्य समाजों के संगठन से आर्यसमाज निकल गया अब केवल बचे कांग्रेसी और जनसंघी जिसका जिस आर्य समाज पर वर्चस्व रहा वह उस पर कब्जा जमा कर बैठ गया। जनसंघ के आधार को लेकर रा० स्व० संघ अपनी प्रतिष्ठा बचाकर ले गया। आजादी के पश्चात् महत्वाकांक्षी युवकों को राजनीतिक छतरी चाहिए थी जो उन्हें मिल गई। कांग्रेस का युवक दल भी पिछड़ गया। मजबूर होकर कांग्रेसियों को छात्र कांग्रेस, पिछड़ वर्ग कांग्रेस, महिला कांग्रेस दलित कांग्रेस के नाम से अनेक संगठन बनाने पड़े। इनका शासन था तो भले बुरे सभी इनके साथ जुड़ना चाहते थे जुड़ गये। शासन की सत्ता आते ही युवक शिक्षित-अशिक्षित शरीफ-गुण्डे सभी उन राजनैतिक दलों के युवक संगठनों से जुड़ गये।

आज स्थिति यह है कि आर्यसमाज का आर्यवीरदल केवल इतना भर है कि वर्ष में दो-चार स्थानों पर आर्यवीरों के कैम्प लगा दिये जाते हैं, उनमें से कितने आर्य वीर लौटकर आर्य समाज में आते हैं या नहीं आते इसकी किसी को चिन्ता नहीं यदि कहीं किसी आर्य समाज ने किसी युवक को समाज के खर्चे पर किसी शिविर में भेज दिया और शिविर से लौट कर वह समाज में नहीं आता है तो आर्य समाज के पदाधिकारी उलाहना देते हुए कहते हैं कि देखो जी आर्य समाज के खर्चे पर शिविर में गया अब समाज में आता ही नहीं यानी किसी को खरीद कर समाज में लाने की प्रवृत्ति काम करती है।

आर्य वीर दल के शिक्षकों के साथ समाजों का कैसा बर्ताव रहा है यह किसी से छिपा नहीं है समय आने पर उनसे चौकीदार का काम लिया जाता है आर्य समाजी सेवा करना अपनी तौहीन समझते हैं इसलिए उनको सेवादार चाहिए। "लीडरों की धूम है फालोअर कोई नहीं।" सुना है कि आर्य युवक संगठन के नाम पर कुछ लोगों ने अपनी दुकानें बना रखी हैं जो लोगों से पैसा इकट्ठा करके मौज ले रहते हैं। इस समय युवक दल आर्य समाजों की पार्टी बाजी के कारण आर्य समाज से दूर दूर ही रहना ठीक समझते हैं आर्य समाजियों में आपस का सौहार्द समाप्त हो गया है प्रत्येक आर्य समाज में सदस्यों के न आने का कारण पूछने वाला कोई नहीं है प्रत्येक पदाधिकारी अपना गुट बनाने के प्रयत्न में रहता है यदि अधिकारी वर्ग के गुट का बस चले तो दूसरे लोगों को समाज से निकाल बाहर करे, ऐसी धापाधापी में कौन इस बात की सुध ले कि आर्य समाज में युवक नहीं आ रहे हैं युवकों की मानसिकता में भी परिवर्तन आया है अब उनके भीतर भारतीयता, संस्कृति सामाजिक सेवा, धार्मिक भावना नगण्य है, विदेशी आकर्षण उनका प्रिय बनता जा रहा है। शिक्षित युवक अधिक से अधिक संख्या मे सुविधा मिलते ही विदेश जाने के लिए उत्सुक है। स्कूलों व कालेजों के अध्यापकों में भी ७५% अपने तक ही सीमित हैं उन्हे दीन दुनिया से कुछ लेना देना नहीं है। अधिक से अधिक हुआ तो किसी राजनैतिक दल के साथ जुडने की चेष्टा करते हैं, सम्भव है वहा जाने मे उन[illegible] व्यक्तिगत कुछ लाभ होता होगा, किसी विशेष विचारधारा से उनका कोई लगाव नही होता, हा! जनता मे आकर उस दल की रीतिनीति पर बढ़िया भाषण दे सकते है और प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं लेकिन कुछ दिनों के बाद ही पता चलता है कि वे सज्जन किसी दूसरे दल के नेताओ को चिरोरी कर रहे हैं। ऐसा चरित्र आज के शिक्षित वर्ग का बन गया है।

टंकारा ट्रस्ट के निर्णय

दि० [illegible] ९५ को प्रात ९ बजे से ११ बजे तक [illegible] ट्रस्ट के ट्रस्टियों व प्रतिष्ठित [illegible] की एक बैठक टंकारा महालय मे [illegible] जित हुई। प्रधान श्री दरबारी लाल ने अपने विचार रखते हुए कहा [illegible] जन्म स्थान को [illegible] बनाने के लिए ३४ आर्किटेक्टो [illegible] बुलाया जाये और [illegible] जाये और दिल्ली [illegible] बैठ[illegible] जन की जाये [illegible] के आधार पर इन्टरनेशनल [illegible] ट्रस्ट [illegible] जाने [illegible] प्रस्ताव पारित किया जाय

बैठक में यह प्रस्ताव भी पारित हुआ कि टंकारा में जो सहशिक्षा का विविध लक्ष्मी दयानन्द विद्यालय चल रहा है उसे तुरन्त बन्द कराकर छात्र-छात्राओं के लिये पृथक पृथक शालियों में विद्यालय आरम्भ किया जावे यह भी निश्चय हुआ कि टंकारा में एक दयानन्द माडल स्कूल लड़कों व लड़कियों के लिये अलग-अलग आरम्भ किया जाये।

श्री दरबारी लाल जी ने यहा इस बार १,११,१११) (एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रु०) की राशि डी०ए०वी० के भिन्न-भिन्न विद्यालयों से दिलवाने का आश्वासन दिया।

टंकारा ट्रस्ट की बैठक में निश्चय हुआ कि विदेशों से लगभग १० उपदेशकों जोकि हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी धाराप्रवाह प्रवचन दे सकें की मांग है, इसके लिए टंकारा उपदेशक विद्यालय में तुरन्त अंग्रेजी अध्यापक रखा जाये और प्रयत्न किया जावे कि इस उपदेशक विद्यालय में कम से कम [illegible] छात्र अवश्य होने चाहिए, इस पर टंकारा ट्रस्ट का कितना ही व्यय क्यों न हो जाये। इसके अतिरिक्त जो स्नातक छात्र टंकारा उपदेशक विद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहे उन्हें प्रशिक्षण तो निःशुल्क दिया ही जावे साथ ही उन्हें छात्रवृत्ति भी दी जाये।

टंकारा के इस ऋषि बोधोत्सव को सफल बनाने का [illegible] उपदेशक विद्यालय के प्राचार्य आचार्य विद्यादेव शास्त्री व उनके शिष्यों को जाना चाहिए। उनकी लगन, निष्ठा व कर्तव्यपरायणता की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) वी०पी० रोड बम्बई-५४

पंचम-श्री मेघजीभाई आर्य साहित्य पुरस्कार—१९९५

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा सम्मानित पंचम-श्री मेघजीभाई आर्य साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविष्टियां आमन्त्रित की जाती हैं। यह पुरस्कार मस्कट निवासी श्री मेघजीभाई नैनसी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कनकसिंह मेघजीभाई के आर्थिक सहयोग से आरम्भ किया गया था। पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है।

उद्देश्य :—आर्य साहित्य के लेखकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार का आरम्भ किया गया है। जिन लेखकों ने आर्य समाज की सेवा अधिकतम साहित्य लिखकर की हैं उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पुरस्कार : पुरस्कार प्राप्त लेखक को १५,००१ रुपए की राशि, रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जायेगा।

नियम :—जिस आर्य विद्वान ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्य समाज की अधिकतम सेवा की हो।

२—जिनके प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्य समाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धांत अथवा आर्य महापुरुषों के जीवन आदि से है, वे ही पुरस्कार की सीमा में माने जाएंगे।

३—ग्रन्थ लेखक को अपनी समस्त रचनाओं की दो दो प्रतियां आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) बम्बई को भेजनी होंगी। एक बार ग्रन्थ प्राप्त होने के पश्चात पुन: अगले वर्ष भेजने की आवश्यकता नहीं होगी।

४—लेखक का चयन एक समिति करेगी जिसका मनोनयन आर्य समाज सान्ताक्रुज करेगा। आर्य समाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा का निर्णय अन्तिम निर्णय माना जाएगा।

५—इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्रन्थों की दो-दो प्रतियां संयोजक-आर्य साहित्य पुरस्कार आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ को ३० अप्रैल [illegible] तक भेजने की कृपा करें।

कैप्टन देवरत्न आर्य
संयोजक पुरस्कार समिति एवं प्रधान-आर्य समाज सांताक्रुज

तपोवन देहरादून का वार्षिक उत्सव

वैदिक साधना तपोवन आश्रम का उत्सव १९-४-९५ से २३-४-९५ तक होना निश्चित हुआ है। आर्य समाज मन्दिर शिवाजी पार्क रोहताश नगर शाहदरा और आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी पहाड़गंज दिल्ली से प्रतिवर्ष की भांति १९.४.९५ को रात्रि १० बजे बसें चलेंगी। और २३-४-९५ को रात्रि ८ बजे दिल्ली पहुंचेगी आने जाने का मार्ग व्यय प्रति सवारी २४० रु० होगा। मंसूरी जाने वालों का प्रबन्ध कर दिया जायेगा उसका खर्चा अलग होगा।

नोट:—१ यात्री अपना नाम, आयु तथा मार्ग व्यय दिनाक १४-९५ तक अवश्य जमा करा दें।

२. कार्यक्रम मे समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार सयोजक को होगा। मौसम के अनुसार बिस्तर साथ लायें।

संयोजक	सयोजक
शाम दास सुखदेव मन्त्री आर्य समाज चूना मण्डी	वेद प्रकाश चावला
पहाड़गंज म०न० २६१२ भगतसिह गली न० ६	म० न० ९१६० गली न० ४
चूना मण्डी पहाड़गंज दिल्ली	पश्चिमी रोहताश नगर शाहदरा
फोन : ७५२६१२८	फोन : २२९१४१०, २२९८३४०

ऐतिहासिक यज्ञ की पूर्णाहुति

दयानन्द मठ चम्बा मे १३ अप्रैल ९४ से प्रारम्भ हुए गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति वैसाखी के पावन पर्व पर पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे १३ अप्रैल ९५ को होगी। १२ अप्रैल को रावी नदी व पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य बसी इस चम्बा नगरी मे एक भव्य व विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी।

इस ऐतिहासिक यज्ञ के समापन पर आप हजारो की संख्या मे पधारने की कृपा करे।

स्वामी सुमेधानन्द दयानन्द मठ चम्बा (हि. प्र.)

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने मे व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय में आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक सं० अवश्य लिखे।

—सम्पादक

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 7-4-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/६५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
९ अप्रैल १९९५

सयुक्त संघर्ष समिति के संयोजक श्री छोटूसिंह आर्य के नेतृत्व में–

सारेखुर्द शराब कारखाने के खिलाफ विधान सभा के समक्ष प्रदर्शन

जयपुर, २४ मार्च । अलवर जिले के तिजारा तहसील के सारेखुर्द गाव में करीब १४ सौ करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले शराब कारखाने की अनुमति निरस्त किए जाने की माग को लेकर शुक्रवार को यहां राज्य विधान सभा के समक्ष हजारो लोगों ने प्रदर्शन किया । इसका आह्वान सारेखुर्द शराब कारखाना विरोधी संयुक्त सघर्ष समिति ने किया था ।

प्रदर्शन के बाद संघर्ष समिति का एक प्रतिनिधि मडल मुख्यमन्त्री भैंरोसिंह शेखावत से विधानसभा मे उनके कक्ष मे मिला और इस सम्बन्ध में ज्ञापन दिया । शेखावत ने प्रतिनिधिमडल से बातचीत में स्पष्ट किया कि सारेखुर्द गाव मे लगने वाला कारखाना शराब का निर्माण नही करेगा बल्कि 'परिष्कृत स्प्रिट' बनाएगा । उन्होने कहा, वे भी इस बात के समर्थक हैं कि राज्य मे शराब का प्रचलन नही बढे और नए शराब कारखाने नही खुलें । उन्होने प्रतिनिधिमंडल को भरोसा दिलाया कि राज्य में शराब का कोई नया कारखाना नही खुलेगा । मुख्यमन्त्री ने सारेखुर्द गांव के कारखाने को लेकर चलाये जा रहे आन्दोलन को समाप्त करने को अपील की :

इससे पहले प्रदर्शन के लिये अलवर और अन्य नगरों से जयपुर पहुंचे प्रदर्शनकारी रामनिवास बाग के दक्षिणी द्वार के बाहर जमा हुए । यहां से वे जुलूस बनाकर आरोग्य मार्ग अजमेरी गेट, न्यूगेट और त्रिपोलिया होते हुए विधानसभा के जलेबी चौक वाले दरवाजे के बाहर पहुंचे । प्रदर्शनकारियों में आर्य समाज सहित विभिन्न राजनीतिक व स्वयंसेवी संगठनों के कार्यकर्ता शामिल थे । प्रदर्शनकारी सारेखुर्द गांव मे शराब कारखाने को नहीं बनने देने और राज्य मे पूर्ण शराब बन्दी लागू किए जाने के समर्थन मे नारे लिखे, बेनर हाथ में लिए चल रहे थे । प्रदर्शन में काफी संख्या में महिलाएं भी शामिल थी ।

जुलूस के जलेब चौक मे राज्य विधान सभा के समक्ष पहुंचने पर सभा की गई । संघर्ष समिति के सयोजक छोटूसिह आर्य, विधायक डा० उजला अरोड़ा, आर्य समाजी नेता सत्यव्रत सामवेदी, पूर्व मन्त्री जगतसिंह दायमा आदि कई नेताओ ने सभा को सम्बोधित किया और शराब कारखाने के विरोध मे किये जा रहे आन्दोलन के औचित्य पर प्रकाश डाला । बाद मे ग्यारह सदस्यीय शिष्टमडल सघर्ष समिति के सयोजक छोटूसिह आर्य के नेतृत्व में मुख्यमन्त्री भैरोसिह शेखावत से मिलने विधानसभा मे गया ।

सुखदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ के लिए प्रकाशित । रजि० नं० डी० (एल ११०२४)–९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

वर्ष १८, अंक २३ | रविवार, १६ अप्रैल १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५
मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के दीक्षान्त समारोह में
श्री शिवराज पाटिल का दीक्षान्त भाषण



हरिद्वार ९ अप्रैल। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्मस्थली गुरुकुल कांगडी एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप मे अब विशाल वटवृक्ष बन चुका है। इस विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह को लोकसभा के अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने सम्बोधित किया। अपने लिखित भाषण के अतिरिक्त बोलते हुए श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि जब वे विज्ञान मन्त्री थे तब तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हमे निर्देश दिया था कि पर्यावरण समस्या के समाधान के लिए हमे वेद मन्त्रो और उपनिषदो से मार्गदर्शन लेना चाहिए। श्री पाटिल ने कहा कि वेद मन्त्रो के उपदेश आज केवल श्रवण माध्यम के कारण हम तक पहुंचे है इसलिए उसी माध्यम से इन्हे जन-जन तक पहुचाना चाहिए। इस अवसर पर श्री पाटिल ने पर्यावरण पर वैदिक विचारो की दो पुस्तको के अतिरिक्त वेद मन्त्रो पर आधारित एक कैसेट का भी विमोचन किया।

शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि शिक्षा एक बहुत बड़ी शक्ति है क्योंकि इससे प्राप्त ज्ञान के आधार पर मनुष्य न केवल अपने लिए सुख और समृद्धि को प्राप्त करता है अपितु दूसरो की भी सेवा करते हुए, समाज और संस्कृति का संरक्षक भी बन सकता है। इसलिए शिक्षा को जहा आर्थिक उद्देश्यो से जोडा जाए वही उसे जीवन-निर्माण से भी जोडना पडेगा।

इस समारोह मे श्री शिवराज पाटिल को विद्या मार्तण्ड की मानद उपाधि से अलकृत किया गया। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सूर्यदेव ने शाल ओढा कर श्री पाटिल का अभिनन्दन किया। कुलपति डा० धर्मपाल ने संस्कृत मे श्री पाटिल का अभिनन्दन पत्र पढा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली का आर्यसमाजों के अधिकारियों को आवश्यक परिपत्र

आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९९५ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्य समाज के नियमो उपनियमो के अनुसार ३१ मई १९९५ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों, आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन यदि गत वर्ष न किया हो, तो कर लें। आपकी आर्य समाज की ओर से प्रथम बस सभासदों पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद रहा हो।

१५ मई १९९५ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें :—

१. १ अप्रैल १९९४ से ३१ मार्च १९९५ तक का वार्षिक विवरण :

(अ) यज्ञ संस्कार, शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति व बिना दहेज कराये गये विवाहो का तथा समारोहो का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही संस्थाओ, विद्यालयो, चिकित्सालय, पुस्तकालय सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण।

२ १ अप्रैल १९९४ से ३१ मार्च १९९५ तक का आय-व्यय विवरण।

३. सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना लें :

क्रमसंख्या। सदस्य का नाम। पिता का नाम। पता। वर्ष भर मे प्राप्त सदस्यता शुल्क

४ सदस्यता शुल्क का दशांश, वेदप्रचार राशि और आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपए अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क ३५० रुपए।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपनी आर्य समाज को सहयोग प्रदान करे।

सूर्यदेव, प्रधान

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव   सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज की जीवन झलकी

चमन लाल

बूझो तो जाने ! आज से १३१ वर्ष पूर्व पंजाब जिला होशियारपुर के बजवाड़ा नाभक एक छोटे से ग्राम के एक सामान्य साधारण स्थिति के परिवार मे श्री चुन्नी लाल जी के घर सन् १८६४ मे जन्मे २२ वर्षीय नवयुवक ने सन् १८८६ मे एक अदभुत घोर प्रतिज्ञा करके आर्य जगत मे फैली निराशा के बादलो को छिन्न-भिन्न करके खुशी की लहर बहा दी थी वह था महान प्रतिभाशाली "नवयुवक हंसराज बी०ए०" ।

आज से पाच सहस्र वर्ष पूर्व, महाभारत काल मे भीष्म प्रतिज्ञा तो गगा पुत्र देवव्रत नामक महा तेजस्वी वीर नवयुवक ने की थी, जो बाद में इस प्रतिज्ञा के कारण ही भीष्मपितामह के नाम से जाने गए । परन्तु इन दोनो प्रतिज्ञाओ मे एक बड़ा भेद यह है कि गगा पुत्र देवव्रत की प्रतिज्ञा तो केवल अपने परिवार की वृद्धि समृद्धि और अपने पिता की प्रसन्नता तक ही सीमित थी, जबकि हमारे चरित्र नामक नवयुवक हंसराज की प्रतिज्ञा तो परिवार के हितो की सभी सीमाओ को लाघ कर और धन दौलत राजपाट के प्रलोभनो से दूर मानव जाति के कल्याण के लिए थी या यू कहिए कि मानव जाति के अज्ञान-अधकार को शिक्षा प्रसारण द्वारा सारा जीवन अवैतनिक सेवाओ को अर्पण करने का व्रत, ऐसी अनोखी प्रतिज्ञा का करना साधारण आदमी के वश की बात नही होती ।

दान की महिमा—

दान की महिमा का वर्णन हमारे धर्मग्रन्थो मे स्थान-स्थान पर उपलब्ध है ।

"जुहाते प्र च ति तिष्ठति ।" "मान्त स्थुर्न अरातय."—वेद

"दान एक कलौभुमे"—मनु

"दान जीवन का सार है"

महाभारत यक्ष युधिष्ठर सवाद

"श्रिया देय अश्रिया देय, भिन्ना देय इत्यादि"—उपनिषद

परन्तु यह भौतिक द्रव्य दान रुपये पैसे आदि का दान कोई भी किसी समय भी कर सकता है परन्तु ज्ञान, विद्या दान का महत्व ही कुछ निराला है । साधारण सासारिक लोगों की सामर्थ से यह दूर की वस्तु है । आज से १३० वर्ष पूर्व सन् १८६३ मे महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने गुरु ज्ञान पालन मे सारा जीवन लोगो के अज्ञान अन्धकार को दूर करने और ज्ञान देने मे ही लगा दिया था । और उस २३ वर्ष पश्चात सन १८८६ मे ऋषि के अनन्त भक्त हंसराज ने अपने गुरु को पुण्य स्मृति में बनाये जा रहे स्मारक को भव्य रूप देने के निमित्त यह विद्या दान का दृढ सकल्प किया था ।

भीष्य प्रतिज्ञा का अवसर—

किन्ही दुष्षडयन्त्र के कारण ३० अक्तूबर १८८३ मे अजमेर नगर मे आर्य समाज के सस्थापक प्रहरी युगपुरुष' युगप्रवर्तक, महान क्रान्तिकारी बीसवी शताब्दि के नव जागृति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के देहान्त होने का शोक पूर्ण समाचार सारे भारत मे फैल गया । लाहौर के अनुयाईयो ने उनकी पुण्य स्मृति मे एक भव्य शिक्षा सस्था (डी०ए० वी०) एंग्लोवैदिक कालेज) मे रूप मे एक चिरस्थाई स्मारक बनाने का निश्चय किया । परन्तु धनाभाव के कारण इस पवित्र योजना के. मूर्तिमान न होने के कारण आर्य जगत मे निराशा और मायूसी के बादल छाये हुए थे । ऐसे विकट समय मे एक २२ वर्षीय नवयुवक हंसराज मे एक अलौकिक ज्योति जली और अन्तर आत्मा को आवाज को सुनकर अपने बडे भाई मुलकराज जी की सहमति से महर्षि को पुण्य स्मृति मे स्थापना किये जाने वाली डी०ए०वी० कालेज जैसी शिक्षा सस्था के लिए आजीवन अवैतनिक सेवाओं के करने का दृढ निश्चय करके आर्य जगत मे खुशी की लहर बहा दी ।

हंसराज जी ने बी० ए० की परीक्षा सन १८८५ मे पास कर ली थी । जब का ग्रेजुएट होना आज के आई०ए०एस० होने के बराबर था । उन दिनो किसी ग्रजुऐट के लिए किसी भी सरकारी बडे से बडे पद का पाना कदाचित कठिन नही था । यदि हंसराज जी चाहते तो अपने मित्र राजा नरेन्द्रनाथ को तरह डिप्टी कमिश्नर और फिर कमिश्नर बनकर अपनी निर्धनता मिटा डालते, और ऐशोराम का जीवन बिताते परन्तु उन्होने सासारिक सुख भोगो को लात मारके अपने गुरु स्वामी दयानन्द के स्मारक को भव्य रूप देने मे ही जीवन लगावा श्रेष्ठ समझा ।

वास्तव मे ससार मे कार्य करते हुए हर मनुष्य के सामने दो मार्ग आते हैं ।

'द्वे सृती अशण्वम् पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिद विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च ।"

यजुर्वेद १९/४७

इन्हीं दो भागो का उपदेश कठोपनिषद मे यमाचार्य ने नचिकेता को इस प्रकार दिया है—

श्रयश्च श्रेयश्च मनुष्यमे तस्तौ, सम्परीत्य निविमक्ति धीर: ।
श्रेयरेहि धीराऽभि प्रयसोवृणोति, प्रेमा मन्दो योक्षमाद वृण्योति ।।

इन दो श्रेय, प्रेम मार्गो मे से प्रेम को सभी सर्वसाधारण लोग अपनाते ही हैं परन्तु श्रेय मार्ग को तो हंसराज जैसे त्यागी तपस्वी लोग ही अपनाना जीवन की सफलता समझते हैं ।

अवैतनिक जीवन दान के इस अलौकिक निश्चिय के सम्बन्ध मे महात्मा हंसराज जी ने एक प्रसग मे एक बार लाला खुसहाल चन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) को बताया था कि जिस दिन जीवन अर्पण का मन मे निश्चय किया और भाई ने स्वीकृति भी दे दी तो उस रात मुझे देर तक नीद नही आयी । आसन लगाकर मे प्रभु भजन मे लगा रहा । गायत्री का जाप करते-करते ऐसी ज्योति मेरी मुदी आंखो ने देखी कि जिसका वर्णन नही हो सकता । मैंने अनुभव किया कि मेरा आत्मा ऊपर उठ रहा है । वैसा आनन्द प्राप्त करने के लिए जीवन बार-बार आग्रह करता है ।

कालेज और महात्मा हंसराज—

हा, तो जून सन १८८६ मे एक छोटे से स्कूल के रूप मे भव्य डी०ए०वी० कालेज की स्थापना हो ही गई । महात्मा हंसराज जी की निष्काम सेवाओं त्याग और अनथक परिश्रम के फलस्वरूप यह छोटा सा स्कूल रूपी पौधा तीस वर्ष के अल्प काल मे ही कलकत्ता के विशाल वट वृक्ष की तरह चहू ओर फैल गया । आज देश के कौने-कौने मे ही नही, अपितु कही-कही विदेशो मे भी डी० ए० वी० स्कूलों की मानो बाढ सी आई दीख पड़ती है ।

महात्मा जी जिस सस्था के अधिष्ठाता, प्रहरी और कर्णधार थे । उनके साथ उनका मानसिक एकीकरण था । वे सस्था के और सस्था उनकी थी । उन्होंने अपने आपको इस शिक्षा सस्था के साथ इस प्रकार मिला लिया था, जिस प्रकार नदी के तट नदी की धारा से मिला रहता है । निस्सन्देह इस प्रकार किसी सस्था अथवा किसी सामाजिक आदर्श के साथ अपने आप को एकीकरण करना नैतिक उन्नति का चिहन है अवश्य परन्तु स्वार्थ, मानसिक स्वार्थो इच्छाओ, भावनाओं को त्याग कर सस्थाओ के साथ अपने आप को विलीन करना ऐकीकरण करना साधारण लोगो का काम न होकर महात्मा हंसराज जी जैसे तपस्वी, त्यागमूर्ति देवता स्वरूप व्यक्तियो का ही काम है । सोते-जागते, उठते बैठते, खाते-पीते कालेज को वृद्धि, उन्नति और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की चिन्ता मे ही मग्न रहते थे । वह प्राय कहा करते थे कि मनुष्य के जीवन का एक ध्येय होना चाहिए, एक केन्द्र, जहा पहुचकर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके । अपनी धन-दौलत और बाल बच्चो को भी आसानी से छोड सके । एक स्थान होना चाहिए, जहा पहुच कर गर्व के साथ वह कह सके कि चाहे प्राण चले जायें चाहे सब ओर से विनाश का ताण्डव घेर ले, पर वह उस स्थान मे लौटेगा नही, पीछे नही हटेगा । ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका वास्तविक मोल मालूम होता है ।

कालेज ही महात्मा जी का ऐसा ध्येय था, जिसकी वृद्धि, समृद्धि के लिए अपने जीवन की आहुति दी और जिसके लिए जीए और मरे ।

"ईश्वर पर विश्वास रखो और निष्ठापूर्वक अपने ध्येय की पूर्ति मे लगे रहो" को अपने जीवन का सिद्धात बनाकर महात्मा जी अग्रसर रहे । इस कार्यपूर्ति मे वे लोगो की उपेक्षा का विषय भी बने और हंसी, उपहास के पात्र बने । उनके साथी, सह कार्यकर्त्ता, लाला लाजपतराय जी जैसे कुछ नेता चाहते थे कि कालेज स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रत्यक्ष रूप मे एक अग बन जाय परन्तु महात्मा जी का

(शेष पेज ४ पर)

यदि आर्यों ने ऋषि दयानन्द की बात को माना होता तो?

१—आज आर्यों पर अनार्यों का राज्य नही होता। आज हमें शराब बन्दी के लिए आन्दोलन नहीं करना पड़ता। आज हमें गौहत्या विरोधी आन्दोलन नही करना पड़ता। आज हमें वैदिक सिद्धांतो के हत्यारे डी० ए० वी० वालों से नही लड़ना पड़ता। आज हमें अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन नही करना पड़ता। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में आर्यो को स्पष्ट निर्देश दिया था कि आर्यो की तीन सभाएं हों, विद्या आर्य सभा, राज्य आर्य सभा, धर्म आर्य सभा किन्तु हम आर्यो ने सन् १९०८ मे धर्म आर्य सभा (सार्वदेशिक) को ही बनाया यदि उसी समय तीनो सभाओं का गठन हो जाता तो आर्यों की यह दशा न होती स्वतन्त्रता संग्राम में जितने भी बलिदान हुए उनमें ८६ प्रतिशत आर्य थे किन्तु राजगद्दी लेने का समय आया तो हमारी धर्म आर्य सभा के अधिकारियो ने राज्य लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि हमारा राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम तो केवल हवन सध्या एण्ड पार्टी हैं और करते भी क्या वे बेचारे सारे ब्राह्मण ही तो थे। यदि उस समय हमारे क्षत्रियों की आर्य राज्य सभा होती तो आज भारत में राज्य आर्यो का होता और १६ अगस्त सन १६४७ को ही शराब बन्दी, गौहत्या आदि बिल पास हो जाते। आज हमे इतनी शक्ति नही लगानी पड़ती।

यदि तीसरी विद्या आर्य सभा भी होती तो दयानन्द के नाम पर आज इतनी भारी लूट न होती। १८-१८ साल के लडके लड़किया एक साथ नही पढ़ते। डी० ए० वी० या तो पैदा ही नही होती अगर होती तो हमारी विद्या आर्य सभा के अनुकूल व अधीन होती और ये नगे डान्स फिल्मी एक्टरों के डान्स आज दयानन्द के नाम पर न होते। आज विद्या आर्य सभा न होने के कारण दयानन्द के नाम का खुला दुरुपयोग हो रहा है। जिसके जो मन मे आया किया। किसी का अंकुश तो न था न ही सच्चे आर्य ही रहे हैं, नकली आर्य दयानन्द के नाम बदनाम करके धन बटोर रहे हैं।

हे आर्यो! अब भी समय है उठो और अपनी कमी को पूरी करो ताकि आने वाली सन्तति हमें धिक्कारें न कब होगी गौहत्या, शराब बन्द, नगे डान्स व दयानन्द के नाम पर सहशिक्षा व लूट बन्द।

आर्य मुनि (सीताराम आर्य)

पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अभिनन्दन समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर एव विश्व की प्रथम आर्य समाज, आर्यसमाज मुम्बई (काकडवाडी) के सयुक्त तत्वावधान मे आगामी ऋषि मेले पर दिनांक ४ नवम्बर १९९५ को पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का ३१ लाख की थैली से अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है।

स्मरण रहे पिछले वर्ष मुम्बई मे आर्य समाज मुम्बई (काकडवाडी) ने पूजनीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का साढे सात लाख की थैली से सम्मान कर उनकी इच्छानुसार एक स्थाई कोष व ट्रस्ट की स्थापना करके यह निर्णय लिया था कि इस कोष से प्राप्त ब्याज की राशि विभिन्न भाषाओ में गुरुकुल के मेधावी छात्रों को वैदिक बनाने मे व्यय किया जायेगा।

पू० स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की गणना आर्य जगत के सर्वोच्चतम त्यागी और तपस्वी सन्यासियो मे की जाती रही है। वे आर्य यती मण्डल के अध्यक्ष, श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान व दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष है। उन्होंने इच्छा व्यक्त कि है कि अभिनन्दन की राशि का श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के अन्तर्गत एक स्थाई कोष बना दिया जाये एव उसके ब्याज की राशि से महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित ग्रन्थों व वेद भाष्यों को विभिन्न विदेशी भाषाओं में अनुवाद कर प्रकाशित किया जाय। सभा ने महर्षि के ग्रन्थों का विदेशी भाषाओं में अनुवाद करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

भारत भूमि का यश गान

जिस भूमि पर प्रभु ने पावन, वेदो का प्रकाश किया है।
उसी धरा पर समय-समय पर महापुरुषों ने जन्म लिया है।
(१) अग्नि, वायु आदित्य अगिरा, चारो ऋषि महान कहाए।
ऋग्, यजु, साम, अथर्व वेद के, इन ऋषियों ने मन्त्र सुनाए॥
सब सत्य विद्याओ का उदगम, ऋषि मुनियो ने वेद बताए।
विद्या पढने दुनिया भर के लोग इसी धरती पर आए॥
स्वय जीओ और जीने दो का, जग को शुभ सन्देश दिया हैं॥१॥
(२) गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी, से ऋषियों की जन्म दात्री।
मैत्रेई, गार्गी, अनुसुईया, जन्मी थी यहां सीता सावित्री।
छ दर्शन छ शास्त्र इसी धरती पर गाई मा गायित्री।
इसी धरा को नमन करे थे, दुनियां भरके आकर यात्री॥
इसी भूमि पर आकर जगने, शान्ति का पीयूष पिया है॥२॥
(३) मैगस्थनीज कभी फाहीयान, आते रहते थे इसी देश में।
इस माटी का तिलक लगाकर, कहा था ये यात्री के वेष मे
हो इसी धरा पर जन्म हमारा, करता हूं विनती महेश मे।
स्वर्ग धाम भारत भूमि है, गुणा गाऊं इसके हमेश मे॥
जो भी आया हुआ प्रभावित, मन सब का ही मोह लिया है॥३॥
(४) पुरुषोत्तम श्रीराम चन्द्र जी, लखन भरत से भ्रात यहा थे।
पवन पुत्र हनुमान वीर से, ब्रह्मचारी बलवान यहा थे।
योगेश्वर श्रीकृष्ण चन्द्र, अर्जुन से सर सन्धान जहा थे।
विदुर भगत जैसे तपधारी, ज्ञानी और विद्वान जहां थे।
ऋषि बाल्मीकि ने रामायण, श्री कृष्ण ने गीता ज्ञान दिया है।४।
(५) गौतम, गाधी, ऋषि दयानन्द, गुरुनानक की पावन धरती।
भक्त कबीर, रविदास सन्त, जहा मीराबाई फिरी विचरती।
रहीम और रसखान ने जिसकी, सदाकरी पुर जोर आरती।
सत्यदेव जिमके गुण गाता, वो है मेरी भव्य भारती।
इस भारत भूमि का हमने, अन्न छका और जल पीया है॥५॥

गीतकार—पं० सत्यदेव "स्नातक" आर्य भजनोपदेशक
गायक कलाकार-आकाशवाणी व दूरदर्शन
भवन स० ४६१/५, ४६२/५ सैक्टर-५ जागृति विहार, मेरठ

तेश्रो राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२०५१ वीरगंज (नेपाल)

आदरणीय महोदय,

नेपाल आर्य समाज सामान्य जनता को स्नेह रसहयोगमा सचालित एउटा गैरराजनीतिक समाज सेवामूलक सस्था हो। धर्मको नाममा देखिने छुआछूत, जात-पात आदि विसगतिहरुलाई निर्मूल पाई आध्यात्मिक निष्ठालाई व्यवहारिक रुप दिन यो सस्था निरन्तर प्रयत्नशील छ। नेपालमा विभिन्न महानुभावहरुको सहयोगमा अधिराज्य को विभिन्न भागमा रहेका ४० भन्दा बढी शाखाहरु मार्फत नेपाल आर्य समाज ले निरक्षरता निवारण, दीन दुखी को सेवा, वातावरण सरक्षक, नैतिक उत्थान, सीपमूलक कार्यक्रम सचालन, उच्च आध्यात्मिक साहित्य प्रकाशन, पुस्तकालय र वाचनालय सचालन आदि कार्यक्रमहरु उत्साहजनक रुपमा चलाए को छ।

अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री को बलिदान बाट प्रेरणा प्राप्त यस सस्थाले आपना कार्यक्रमहरुलाई बढी गति दिने उद्देश्यले यही २०५१ चैत्र २५, २६ र २७ गते (८, ९ र १० अप्रैल १९९५) तेश्री राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को आयोजना गर्ने भएको छ। सम्मेलनमा नेपाल अधिराज्यमा रहेका समस्त शाखा प्रशाखाहरूका साथै भारतबाट समेत आर्य समाज सस्थाका हजारौं प्रतिनिधिहरुका अतिरिक्त विभिन्न सन्यासी, विद्वान र उपदेशकहरुले भाग लिनुहुनेछ।

जनसामान्यको दान-चन्दाबाटे सुसम्पन्न गर्ने लक्ष्य भएको यस सम्मेलनका लागि आपनो तर्फबाट यथाशक्ति नगद वा जिन्सी सहयोग उपलब्ध गराई पुन्यार्जन गर्नु हुन हार्दिक अनुरोध छ।

साथै यस अवसरमा आयोजित यज्ञ र प्रवचनमा सहभागी भै धर्मलाभ उठाउनु हुन समेत हार्दिक आमन्त्रण गर्दछौं।

नेपाल आर्य समाज

त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज

(पेज २ का शेष)

विचार था कि शिक्षण कार्य और राजनीति को एक सूत्र मे बांध देना सर्वदा हानिकारक है अत कालेज को राजनीति मे भाग लेने के विचार का कड़ा विरोध किया परन्तु किसी प्रकार की निन्दा, उपहास उनको अपने इस उद्देश्य से विचलित न कर सकी और अपनी बात पर एक चट्टान की तरह खड़े रहे और कालेज को किसी प्रकार की भी हानि का विषय नही होने दिया । ऐसे थे महात्मा जी अपने ध्येय के पक्के ।

महात्मा जी का व्यक्ति और कार्यकुशलता—

महात्मा जी का जीवन यज्ञमय था । वे बाहरी दिखावा और आडम्बर से दूर रहते थे । वे सादगी और सरलता के पुजारी ही नहीं थे, अपितु साक्षात मूर्ति भी थे । "सादा जीवन और ऊंचे विचार" के सिद्धांत को उन्होने जीवन का अंग बनाया था । उनके विचार, आचार और व्यवहार मे महानता, विशालता और उदारता की झलक पायी जाती थी और उनके मन, वचन और कर्म मे एकता पाई जाती थी, जो महात्माओ का एक विशेष गुण होता है ।

जब कोई उपदेशक, प्रचारक तथा कोई कार्यकर्ता सेवकजन महात्मा जी के पास अपनी समस्याओ और कठिनाई को लेकर आता तो महात्मा जी बड़े ध्यान पूर्वक उनकी बात सुनते थे और संस्था के हितो को ध्यान मे रखकर किसी पक्षपात बिना ऐसा कुछ हल निकालते थे कि किसी को कोई आपत्ति न होती थी । कौन नही जानता कि जब आर्य जगत के दो मूर्धन्य विद्वानो—पं० भगवत दत्त जी और पं० विश्व बन्धु जी के बीच किन्हीं वैदिक सिद्धान्तो के विषय मे कुछ ऐसा मतभेद हुआ कि वे एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करना पसन्द न करते थे, जिस कारण सारे आर्य परिवार मे एक बड़ी हल-चल पैदा हो गई थी, और आर्य समाज जैसी जनहितकारी संस्था को भारी क्षति की आशंका हो रही थी । दो विद्वानो का भी संस्था से पृथक करना कुछ कम हानिकारक नही । ऐसी विषम परिस्थित मे महात्मा हंसराज जी ने जिस सुन्दर ढंग से दोनों विद्वानों को संस्था मे रखकर भी अलग-अलग स्थानो पर नियुक्त करके स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करने पर सहमत किया, यह उनकी दूरदर्शिता और प्रतिभा का चिन्ह है । दोनो विद्वानो ने पं० भगवत दत्त ने कालेज मे ही रहकर और पं० विश्वबन्धु ने विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान होशियारपुर मे वह महत्वपूर्ण कार्य किया कि जिसने आर्य जगत के गौरव को चार चांद लगा दिए ।

आदर्शों से समझौता नही—

महात्मा जी सच्चे आदर्शवादी थे और महर्षि के अनन्य भक्त भी थे । बड़े से बड़े धन सम्पत्ति और सत्ता के प्रलोभनो के सामने अपने सिद्धांतों और आदर्शों के साथ समझौता नही किया । किसी की इतिहास की पुस्तक का प्रस्तावना लिखने के लिए पचास सहस्त्र रुपये के प्रस्ताव को भी ठोकर मार दी और पंजाब के शिक्षा मन्त्री के पद के लोभ ने भी उनको लेशमात्र भी विचलित नहीं किया, क्योंकि ऐसा करने पर उनको कुछ अपने सिद्धांतों के प्रतिकूल करना पड़ता था ।

सारा जीवन ज्ञानदान—

जीवन के पहले २२ वर्षों मे विद्या प्राप्त कर अगले २५ वर्ष (सन् १८८६ १९११) कालेज के अधिष्ठाता के रूप मे, फिर अगले २७ वर्ष स्वतन्त्रता पूर्वक आर्य समाज के प्रचार-प्रसार द्वारा ज्ञान प्रसार करते रहे । घर में रहते हुए स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन कर और देश के कोने-कोने में वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए मानो वह क्रमश. ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी तथा सन्यासी का जीवन व्यतीत करते रहे अर्थात वह युवावस्था से मृत्यु पर्यन्त श्वेत वस्त्रों में सन्यासी बने रहे ।

नित्य कर्म—

महात्मा जी हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियों के बताये मार्ग के सच्चे अनुयायी थे । वह चार-स-पध्या, स्वाध्याय, सत्संग और सेवा के व्रतों के पालन करने वाले थे । इस कार्य मे किसी प्रकार की कठिनाई भी उनकी कोई बाधा न होती थी । समय-समय पर दैविक प्रकोपों के फलस्वरूप देश के भिन्न स्थानों पर भूकम्पों बाढ़ो, अतिवृष्टि-अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ने के कारण पीड़ा ग्रस्त लोगों के दुख-दर्द दूर करने मे कभी पीछे नही रहे ।

अपने धर्म और कर्त्तव्य के पालन के लिये निरन्तर कष्ट क्लेश सहन करते हुए जो कभी किसी के दबाव में नही आए जिन्होंने अपने त्याग और तपस्या से न केवल स्वय उत्तम लोक प्राप्त किया, किन्तु अन्य लोगो को भी उत्तम स्थिति तक पहुंचा दिया, जिन्होने इतना महान तप किया ऐसे महामानव महात्मा हंसराज को शत्-शत् प्रणाम् ।

आओ आर्य बन्धुओ । इस वर्ष ऐसे दिव्य गुण युक्त महामानव के जन्म दिवस पर कुछ ऐसे ठोस कार्यक्रम को योजना बनाकर चलें जिससे वर्तमान में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे आई शिथिलता को दूर करके ऋषि स्वप्न को साकार कर सकें ।

अशोक बिहार, दिल्ली

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी व कर्मचारी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, सेवाजसेवी श्री दयाल मल अरोड़ा जी की धर्मपत्नी श्रीमती मायादेवी जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख व शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके वियोग में शोक सतप्त दुःखी परिवार व सभी सम्बन्धियों को इस दारुण दु.ख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे ।

सूर्यदेव, प्रधान

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओ की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी व कर्मचारी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, समाजसेवी, आर्यसमाज हृडसन लाईन्स, किंग्जवे कैम्प के पूर्व प्रधान श्री लोकनाथ खन्ना के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख व शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त दु:खी परिवार व सभी सम्बन्धियों को इस दारूण दुःख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ प्रदान करे। श्री खन्ना जी ने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे व्यतीत किया उनके अकस्मात चले जाने से समाज की जो महान क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असम्भव है।

सूर्यदेव, प्रधान

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ की शिरोमणि सस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी व कर्मचारी सुप्रसिद्ध दानवीर, लाला हसराज गुप्ता जी की धर्मपत्नी तथा रघुमल जी की लड़की श्रीमती अंगोरा देवी जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख एव शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त दु:खी परिवार व सभी सम्बन्धियों को इस दारूण दुःख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ प्रदान करे।

सूर्यदेव, प्रधान

सूचना

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी त० पलवल जिला-फरीदाबाद हरियाणा जो दिल्ली से ४५ और मथुरा से ९६वे कि० मी० जी० टी० रोड पर स्थित है। यहा पर दूसरी कक्षा से दसवीं कक्षा तथा एम०डी० विद्यालय रोहतक की प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री, प्रभाकर कक्षाओ मे १ अप्रैल से प्रवेश आरम्भ है।

अत: आपसे अनुरोध है कि अपने बच्चो को प्रवेश दिलाने के लिए किसी भी दिन आकर स्वय मिले या पत्र द्वारा सम्पर्क स्थापित करे।

डी०ए०वी० विकासपुरी, नई दिल्ली "वैदिक धर्म चर्चा सम्मेलन एवं अध्यापक अध्ययन गोष्ठी कार्यक्रम सम्पन्न

इस कार्यक्रम का आयोजन डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल स्थित आर्य समाज के तत्वावधान में किया गया। इसका उद्देश्य अध्यापक वर्ग को वैदिक सिद्धातो का परिचय कराना एव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे सहभागी बनाना था।

दिनाक १५ मार्च से २४ मार्च तक इस कार्यक्रम मे मानसिक शान्ति के उपाय, स्वाध्याय का महत्व, आर्ष-अनार्ष ग्रन्थो का परिचय, वेदों की जीवन मे उपयोगिता, सत्यार्थ प्रकाश का परिचय एवं लाभ, ईश्वर का स्वरूप तथा प्रार्थनोपासना का महत्व व सस्कारों का मानव-जीवन मे औचित्य जैसे गम्भीर विषयो पर प्रवचन एवं विचार विमर्श हुआ।

प्रवचनकर्ता आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० भगवान देव वेदालंकार जी, श्री अवेश गौतम जी विद्यालंकार, डा० धर्मेन्द्र कुमार जी शास्त्री, डा० जितेन्द्र कुमार जी थे।

कार्यक्रम की मूल प्रेरणा सभा प्रधान, श्री दरबारीलाल जी एवं महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल जी की रही। सम्मेलन व गोष्ठी का उद्‌घाटन समापन समारोह की अध्यक्षता डी०ए०वी० विद्यालय विकासपुरी की सुयोग्य प्राचार्या श्रीमती चित्रा नाकरा जी ने की एवं संयोजन, श्रीमती रजनी वासुदेव जी ने किया। पूरे सम्मेलन में अपना आर्शीवाद प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री खेमचन्द खेर तथा श्री कुलवीर कालिया जी ने प्रदान किया। सम्मेलन में लगभग २०० शिक्षकों और २० चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों ने भाग लेकर ज्ञान-गगा मे स्नान किया एवं आनन्द की अनुभूति की।

त्यागी, तपस्वी, दृढ़व्रती महात्मा हंसराज

देश धर्म की रक्षा के लिए भारत मा के अनेक सपूतों ने हसते-हसते अपने जीवन को राष्ट्र मा की बलिवेदी पर न्योछावर कर दिया। इसी प्रकार जातीय उत्थान, धर्म प्रचार तथा सत्य विद्या के प्रसार हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त एव अनुयायी महात्मा हंसराज ने अपना जीवन आर्यसमाज को अर्पण कर दिया था। वह समय था जब हम पराधीन थे, वेद ज्ञान का सूर्य अज्ञानान्धकार से आवृत्त था, भारत मा की सन्तानें भटक कर धर्म परिवर्तन कर रही थी, भारतीय तथा राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा देने वाली शिक्षा का भी अभाव था, उस समय ऋषिवर दयानन्द ने सत्यार्थ का आलोक फैलाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश और विचारधारा को दिग-दिगन्त तक फैलाने का व्रत लेने वाले आरम्भिक शिष्य थे—स्वामी, श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, प० लेखराम और प० गुरुदत्त विद्यार्थी। इन मा भारतीय के सपूतो ने अपने त्याग और तपस्या के बल पर वेद प्रचार, शुद्धि, संगठन और शास्त्रार्थो के द्वारा जनता को सन्मार्ग दिखाया। इसके अतिरिक्त इन्होने एक और महान कार्य किया और वह था शिक्षा के माध्यम से देश भक्ति और धर्म के प्रति श्रद्धा आस्था और निष्ठा का सचार। अंग्रेज शासको द्वारा दी जा रही शिक्षा, हमारे नव युवको को देश और धर्म तथा मानव मूल्यो से दूर ले जा रही थी। उस घृणित एव विषैली शिक्षा प्रणाली से छुटकारा दिलाने के लिए आर्य समाज के गौरव महात्मा हंसराज ने किसी भी बड़ी नौकरी का प्रलोभन ठुकराकर डी० ए० वी० आन्दोलन की नीव डाली। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धांतो के अनुरूप देश और जाति को ऊंचा उठाने वाली, धर्म मे आस्था उत्पन्न करने वाली शिक्षा का सूत्रपात किया। जब महात्मा जी ने अपना मन्तव्य व उद्देश्य देवता स्वरूप भाई मुल्खराज के सामने प्रकट किया तो वे भाई की ऐसी त्यागमयी पवित्र भावना को देखकर भावाभिभूत हो गए। उन्होने सहर्ष कहा—'वह अपने वेतन मे से आधी राशि उनके निर्वाह के लिए दे दिया करेंगे। धन्य है वह भाई जिसने भाई को ऐसा प्रोत्साहन दिया। धन्य है वह भाई जिसने त्याग और तपस्या का मार्ग चुना! धन्य हैं वे डी० ए० वी० के सचालक जिन्होने महात्मा जी के लक्ष्यपूर्ति मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

महात्मा जी के साथी अध्यापको ने भी इसी प्रकार के नि:स्वार्थ, तप और त्याग का परिचय दिया। वह छोटा सा पौधा आज विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। हमारी इन्ही सस्थाओ ने शहीद भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे युवको का निर्माण किया।

महात्मा हंसराज के सुपुत्र श्री बलराज को देश की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित गतिविधियों के कारण, अंग्रेज सरकार ने मृत्यु दण्ड दिया था। महात्मा हंसराज एक बार गवर्नर को कहते, तो सब माफ हो जाता, पर वह सच्चरित्रता और स्वाभिमान का धनी उस दिन डी० ए० वी० कालेज भी न गया जब गवर्नर स्वय वहा पधारने वाले थे। उसने सोचा कि मेरे सहज स्वागत को अंग्रेज अफसर कहीं अन्यथा न ले। वाह रे सत्यव्रती महात्मा हंसराज!

महात्मा हंसराज ने शिक्षा जगत मे तो चमत्कार किया ही, वे सामाजिक कार्यो मे भी कभी पीछे नही रहे। आर्यसमाज के वेद प्रचार के कार्यो मे वे बढ़ चढ़कर स्वय भी भाग लेते थे तथा सहयोगियो को भी सदा प्रेरित किया करते थे। इस वर्ष प्रकृति का प्रकोप उत्तराखण्ड मे हुआ और आर्य समाज ने बढ चढ़कर पीड़ितो की सहायता की। इसी प्रकार महात्मा हंसराज के समय मे बीकानेर मे भयकर अकाल पड़ा था,उस समय महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, प० लखपत राय वकील तथा अन्य अनेक महानुभावो ने गाव-गाव जाकर धन तथा अन्न का वितरण किया। उस समय मध्य प्रदेश व बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र में भी भयकर अकाल पड़ा था, महात्मा जी तुरन्त वहां पहुचे। १८९९ का राजपूताना का अकाल

(पेज ८ शेष का)

पदक वितरण

दीक्षान्त समारोह--९-४-१९९५

१—श्री गणपति वेदालकार स्वर्ण पदक एम० ए० सस्कृत साहित्य

वेद महाविद्यालय मे एम० ए० सस्कृत साहित्य मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले छात्र को आर्य समाज ज्वालापुर की ओर से श्री गणपति वेदालंकार की पुण्य स्मृति मे प्रति वर्ष स्वर्ण पदक देने का सकल्प किया है। वर्ष १९९४ की परीक्षा मे श्री विनयकुमार पुत्र श्री लोटन सिंह ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।

अत. श्री गणपति वेदालकार स्मृति स्वर्ण पदक तथा प्रमाण पत्र श्री विनय कुमार को प्रदान किया जाता है।

२—श्री आचार्य चन्द्र स्वर्ण पदक—हिन्दी साहित्य

एम० ए० हिन्दी साहित्य विषय मे सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को उदासीन पचायती अखाड़ा कनखल ने श्री आचार्य चन्द्र की स्मृति मे एक स्वर्ण पदक देने का निश्चय किया है। वर्ष १९९४ की एम० ए० हिन्दी साहित्य विषय मे श्री सुशील कुमार पुत्र श्री सुल्तान सिंह ने सर्वाधिक अंक प्राप्त करके सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। अत. इन्हे स्वर्णपदक तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

३—प० सुखदेव विद्यावाचस्पति स्मृति पदक—दर्शन शास्त्र

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पूर्व उपाचार्य व दर्शन शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान स्व० प० सुखदेव विद्यावाचस्पति की पुण्य स्मृति मे उनकी सुपुत्री डा० सुमेधा विद्यालकार ने दर्शन शास्त्र विषय मे एम० ए० परीक्षा मे सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को स्वर्ण पदक देने हेतु स्थिर निधि स्थापित की।

१९९४ की एम० ए० दर्शन शास्त्र परीक्षा मे कुमारी नीरा बड़ोनी पुत्री श्री एम० डी० बड़ोनी ने सर्वाधिक अक प्राप्त करके सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।

अत पं० सुखदेव विद्यावाचस्पति स्मृति स्वर्ण पदक तथा प्रमाण पत्र इन्हें प्रदान किया जाता है।

४—आचार्य नरेन्द्र देव स्मृति स्वर्ण पदक—एम०ए० मनोविज्ञान

आचार्य नरेन्द्र देव की स्मृति मे एक स्वर्ण पदक जन अधिकार अभियान उत्तर प्रदेश लखनऊ की ओर से एम० ए० मनोविज्ञान मे सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को दिया जाता है। १९९४ की एम० ए० मनोविज्ञान परीक्षा में कुमारी वन्दना शर्मा ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किए है।

अत इन्हे स्वर्ण पदक तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

५—प० हरिदत्त वेदालाकार स्मृति स्वर्ण पदक—एम० ए० प्रा० भा० इति० स० पुरा

स्व० प० हरिदत्त वेदालकार की स्मृति मे जन अधिकार अभियान उत्तर प्रदेश लखनऊ की ओर से स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है।

१९९४ की प्रा० भा० इति० सस्कृति व पुरातत्व विषय की परीक्षा में कुमारी सपना रानी ने सर्वाधिक अक प्राप्त किए हैं। अत: इन्हें स्वर्ण पदक तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता हैं।

६- एम० एससी०—रसायन शास्त्र

सौजन्य से जन अधिकार अभियान उत्तर प्रदेश—

स्वतन्त्रता सेनानी, पूर्व सासद तथा सविधान सभा के पूर्व सदस्य स्व० श्री पं० हीराबल्लभ त्रिपाठी स्मृति स्वर्ण पदक जन अधिकार अभियान उत्तर प्रदेश लखनऊ के सौजन्य से एम०एससी० रसायन शास्त्र मे सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को प्रदान किया जाता है।

१९९४ एम०एससी० रसायन शास्त्र परीक्षा में श्री राजेश जोशी ने सर्वाधिक अक प्राप्त किये है अत इन्हें स्वर्ण पदक तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

७—डा० विजय कुमार शास्त्री स्वर्ण पदक—एम०एससी० माइक्रोबायोलोजी

एम०एससी० माइक्रोबायोलोजी में सर्वाधिक अक प्राप्त करने वाले छात्र को योगी फार्मेसी नि० हरिद्वार ने स्व० डा० विजय कुमार शास्त्री की स्मृति में एक स्वर्ण पदक देने का निश्चय किया है।

१९९४ की परीक्षा में कुमारी सीमा त्यागी ने सर्वाधिक अंक प्राप्त करके सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।

अत. कुमारी सीमा त्यागी को स्व० डा० विजय कुमार शास्त्री स्मृति स्वर्ण पदक तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

तपोवन (देहरादून) का ग्रीष्मोत्सव १९ अप्रैल से होगा

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन में प्रति वर्ष अप्रैल में होने वाला ग्रीष्मोत्सव और अक्तूबर में होने वाला शरदोत्सव अब प्रभूत लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं और इन अवसरों पर आयोजित बृहद् यज्ञों की पूर्णाहुति वाले दिन तो दूर के स्थानों से आगत श्रद्धालुओं का मेला हो जाया करता है। इकले दुकले आने वालों के अतिरिक्त दिल्ली आदि नगरों से बड़े-बड़े यात्री समूह विशेष बसो से भी आते हैं।

इस वर्ष का ग्रीष्मोत्सव १९ अप्रैल से आरम्भ होकर २३ अप्रैल तक चलेगा। योग-साधना-शिविर का निर्देशन डा० स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती महाराज करेंगे।

महोत्सव की तैयारियां श्रद्धा और उत्साह के साथ चल रही है।

वेद में सृष्टि-विद्या पर संगोष्ठी

नई दिल्ली, २९ मार्च। ऋग्वेद के भाववृत्त सूक्तों पर जो वेद-संगोष्ठी अप्रैल मे होने वाली थी वह अब ६ और ७ मई को होगी। "भाववृत्त" सृष्टि-विद्या का वैदिक नाम है। प्रति-वर्ष होने वाली यह ग्यारहवीं सगोष्ठी है, जिसका आयोजन दिल्ली की प्रसिद्ध सस्था, "वेद-संस्थान" (सी २२, राजौरी गार्डन) करती है। मई की गोष्ठी में पन्द्रह निबन्धो पर विचार होगा जिन्हे हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली प्रदेश के विद्वान् प्रस्तुत करेंगे। डा० फतहसिंह, डा० ब्रह्मानन्द शर्मा, डा० कृष्णलाल, डा० मानसिंह, डा० सत्यकाम वर्मा, अनन्त शर्मा, विष्णुकान्त शर्मा, कुछ प्रमुख विद्वान हैं जो संगोष्ठी में भाग लेंगे।

शोक समाचार

—अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि शास्त्री सदन १२/१२४ पश्चिम आजाद नगर दिल्ली निवास आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री प० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री की धर्म शीला पत्नी श्रीमती सरलादेवीशर्मा का देहावसान दि ७-४-९५ के प्रात:काल हो गया अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक विधान से निगम बोध घाट पर किया गया। श्रद्धाजलि सभा दिनाक १६-४-९५ को सायकाल ३ से ५ बजे तक होगी।

पुत्र—अभय देव शर्मा, अशोक कुमार भारद्वाज, अरुण कुमार शर्मा

मन की दौड़

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

रोको मन को कही न भागे।
प्रात: साय प्रभु चिन्तन मे क्षण भर को न लागे
दूर-दूर तक दौड़ लगाकर अपना रग जमाए।
विषय विकारो मे फसकर के जग मे हसी कराये।
तन रूपी उज्ज्वल चादर मे काले दाग न लागे॥
रोको मन को कहीं न भागे॥१॥
सच्चा मित्र कभी बन जाता शत्रु बन दिखलाये।
भूमि न दू सुई नोक बराबर दुर्योधन बन जाये।
अकड़ ऐंठ दिखलावे पेश न चलती इसके आगे।
रोको मन को कही न भागे॥२॥
भेदभाव भय भ्रान्ति भीरुता दिखलाता पल पल मे।
अभिमान द्वेष छल कपटी है ये कूद पड़े गहरे जल में।
पाकर मानव तन ये मन रहे अचेत न जागे।
रोको मन को कहीं न भागे॥३॥
मलिन विचार भरे ये नहीं है धर्म कर्म का ध्यान।
से ही सखा प्रिय बन्धु जनो का कर देता अपमान।
बरस संयमी बनकर रोको ये मर्यादा न त्यागे।
रोको मन को कहीं न भागे।४।

नव साल २०५२ वि० की शुभकामनाएं

पावन पर्व प्रकाशमय, शुरू विक्रमी साल ।
स्वागत किया सभी ने, उठ कर प्रातःकाल ।

उठकर प्रातःकाल किया हार्दिक अभिनन्दन ।
सुख सौहार्द समृद्धि में रहे स्वस्थ सभी जन ।

देश अखण्ड रहे अपना, दिग-दिगन्त विजय हो ।
सब विधि यह नव साल, शान्ति मंगल मय हो ।

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

अमूल्य शिक्षा

१. सच्चरित्रता दूसरी सभी वस्तुओ से श्रेष्ठ है ।

२. तुम अपने चरित्र को इतना पवित्र रखो कि यदि कोई तुम्हारी निन्दा करे तो भी मनुष्य उस पर विश्वास न करें ।

३ यदि सुखी रहना चाहो तो सदा निष्पाप रहो ।

४. तुम्हारे चरित्र को तुम्हारी कृति के सिवा और कोई भी कलंकित नही कर सकता ।

५. जब किसी के साथ बातचीत करो तब उसी के मुंह की ओर देखो ।

६ कभी आलसी मत बनो, यदि तुम्हारे हाथ किसी कार्य मे नहीं लग सकते हो, तो मानसिक विकास की ओर ध्यान दो ।

७. अपनी गुप्त बात यदि कोई हो तो कभी किसी से मत कहो ।

८. यदि सफलता चाहते हो तो धनी बनने के लिए जल्दी मत करो ।

९ बुढापे के लिए जवानी के समय बचाकर जरूर रखो ।

१० अल्प और स्थिर लाभो से चित्त को शान्ति और योग्यता प्राप्त होती है ।

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ५, ६, ७ मई १९९५ को आर्य समाज टिहरी का हीरक जयन्ती समारोह

आपको जानकारी देते हुए प्रसन्नता होती है कि गढवाल आर्योपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे ५, ६, ७ मई १९९५ को आर्य समाज टिहरी की हीरक जयन्ती समारोह पूर्वक मनायी जा रही है । इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास नव निर्मित टिहरी नगर मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् जी के करकमलो से किया जायेगा ।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 13,14-4-1995 Licence to post without prepayment, Licence
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक 16 अप्रैल १९९५

महात्मा हंसराज

(पेज ५ का शेष)

१९०७-०८ का अवध का अकाल तथा १९१८ का गढवाल का अकाल—महात्मा हंसराज, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द तथा प० रलियाराय और महात्मा जी के सुपुत्र लाला बलराज ने रात दिन इन अकाल पीड़ितो की सहायता की। अनाथ बच्चो को लाकर पंजाब और दिल्ली मे संचालित अनाथालयो मे रखा गया और उनकी ऐसी परवरिश की जैसी शायद उनके मा बाप भी न कर पाते।

स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज का शिक्षा जगत मे योगदान सदैव स्वर्णाक्षरो मे अंकित रहेगा। आज भी सरकार के बाद, शिक्षा मे सर्वाधिक बजट आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओ का है। प्रिंसिपल साईदास, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द, श्री मेहरचन्द महाजन श्री जीवन लाल कपूर, श्री गोवर्धनलाल दत्ता, श्री सूरजभान आदि महानुभावो ने शैक्षिक-सामाजिक-प्रशासनिक जगत के विशिष्ट आयामों का सृजन किया।

महात्मा हंसराज ने केरल के मालाबार क्षेत्र मे जाकर साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना मे विशेष सहयोग दिया था। पंजाब से इतनी दूर जाकर उस समय कार्य करना वास्तव मे एक अद्भुत दृढ़ व्रती होने का साक्षात प्रमाण हैं।

महात्मा हंसराज की मृत्यु पर पंजाब असेम्बली के स्पीकर सर शाहबुद्दीन ने कहा था—"आज पंजाब से शिक्षा की ज्योति जगाने वाला एक सन्त उठ गया।" लाला लाजपतराय ने अपनी पुस्तक 'आर्य समाज' में लिखा है--महर्षि दयानन्द के बाद महात्मा हंसराज और महात्मा मुन्शीराम के बिना आर्य समाज असम्भव था। डी०ए०वी० कालेज तो लाला हंसराज के बिना सर्वथा असम्भव ही था।

महात्मा हंसराज ने समाज सुधार का कंटकाकीर्ण मार्ग, त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग अपने लिए चुना था। उनका रास्ता ऊबड़-खाबड़ था, भयावना था और बलिदान मांगता था। महात्मा हंसराज ने यह बलिदान दिया। यही कार्य उन्हे 'महात्मा' के नाम से पुकारे जाने की सार्थकता को सिद्ध करता है। उनका कार्य युगों-युगों तक मानव के मार्ग को प्रशस्त व आलोकित करता रहेगा। उनकी स्मृति मे मेरी विनत श्रद्धांजलि।

डा० धर्मपाल
कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन। ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एस ११०२४/–९५

साप्ताहिक ओ३म्

आर्य सन्देश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १८, अंक २५ | रविवार, २३ अप्रैल १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष : ३३१०१५०

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आजादी का बिगुल सबसे पहले बजाया था ?

सूर्यदेव



भारत के स्वतन्त्रता सग्राम की नीव का सबसे पहला पत्थर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आज से लगभग १०० वर्षपूर्व रखा था। उन्होने देशवासियो का आह्वान करते हुए कहा था कि आजादी मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने आर्यसमाज शकरपुर के इक्कीसवें वार्षिकोत्सव पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे व्यक्त किए थे। उन्होने कहा कि सबसे पहले आर्यसमाज ने ही नारी उत्थान, छुआछात, जातपात को समाप्त करने की बात कही थी, नारी शिक्षा के क्षेत्र मे भी आर्य समाज ने बढ चढकर काम किया। आर्य समाज ने भारत की आजादी मे बढकर भाग लिया। आजादी की लड़ाई मे आर्य समाजियो ने अपने जीवन का आहुत कर दिया जिन्हे आज भुलाया जा रहा है राजनीतिक दल आज स्वार्थी होते जारहे हैं। सम्प्रदायगत जातिगत, राजनीति हो गयी है और सभी दल अपने-अपने राजनीतिक स्वार्थो मे लिप्त हैं ऐसे कठिन समय मे आर्य समाज को सगठित होकर काम करना होगा और ऐसे स्वार्थवाद का मुहतोड़ जबाव देना होगा जो केवल सगठन से ही सम्भव है, इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि इतिहास गवाह है कि आर्य समाज के नेताओ ने आर्य समाज की स्थापना से लेकर आज तक देश की बहुत सेवायें की है। महात्मा मुंशीराम जैसे तपोनिष्ठ नेताओ ने अपने जीवन का बलिदान दिया। २५ दिसम्बर को अक्सर एक चित्र अखबारो मे प्रकाशित होता है जिसकी अगली पक्ति में महात्मा मुंशीराम के साथ मोतीलाल नेहरू कुर्सियो पर बैठे हैं और उनके साथ नीचे पण्डित जवाहर लाल नेहरू भी है। २५ दिसम्बर से इस चित्र का बहुत गहरा सम्बन्ध है। यह बताता है कि आर्य समाज के नेताओ ने स्वतन्त्रता सग्राम मे अग्रणी होकर किस प्रकार से काम किया। इस अवसर पर अन्य लोगो ने भी अपने विचार रखे। दैनिक हिन्दुस्तान के वरिष्ठ पत्रकार श्री आशुतोष उपरेती ने कहा कि आर्य समाज ही भारत के नवनिर्माण का स्तम्भ है। उन्होने कहा कि अगर स्वामी दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना न होती तो शायद ही हमे अब तक आजादी मिल पाती। समारोह प्रारम्भ होने से पूर्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द ने ओ३म् ध्वजा फहरायी, इस अवसर पर उन्होने कहा ओ३म् ध्वजा एकता का प्रतीक है और सबको मिलकर आर्यसमाज का काम करना चाहिए। आर्य समाज प्रीत विहार के धर्माचार्य श्री विश्वमित्र मेधावी ने तीन दिन तक यज्ञ और प्रवचन किए।

समारोह की अध्यक्षता वहा के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जयप्रकाश अग्रवाल ने की और आर्य समाज शकरपुर के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता ने सभी का धन्यवाद किया और उन्होने बीस पुस्तको का सैट शिव प्रसाद उपाध्याय पुस्तकालय व वाचनालय को भेंट किया, तथा स्वर्गीय श्री नारायणदास खन्ना की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी व श्री उत्तम चन्द के सुपुत्र श्री श्रुति प्रकाश आर्य समाज शकरपुर के संस्थापक एव पूर्वमन्त्री श्री ओम प्रकाश भटनागर और श्री ओम प्रकाश कौशिक सरक्षक का अभिनन्दन किया गया। अन्त मे सभा के मन्त्री श्री रामनिवास कश्यप ने सभी का धन्यवाद किया।

कार्यक्रम का सचालन क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप सभा (पटपड़गज क्षेत्र) के महामन्त्री तथा आर्य समाज शकरपुर के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रतराम त्यागी ने अत्यन्त कुशलता पूर्वक कर समारोह को सफल बनाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

महाराष्ट्र के नवनिर्वाचित मुख्यमन्त्री श्री मनोहर जोशी से महाराष्ट्र विधान सभा में

गोवश हत्या पर प्रतिबन्ध के लिए विधेयक लाने का अनुरोध

भारतीय गोरक्षा अभियान के महासचिव, सनातनधर्मी नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने महाराष्ट्र सरकार के नवनिर्वाचित मुख्यमन्त्री श्री मनोहर जोशी से अनुरोध किया है कि दिल्ली सरकार की तरह महाराष्ट्र विधानसभा के प्रथम अधिवेशन मे महाराष्ट्र मे गोवश हत्या पर प्रतिबन्ध का विधेयक पारित कर पुण्य व यश के भागी बनें।

—महेन्द्र कुमार

प्रधान सम्पादक – सूर्यदेव | सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय में

लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल का दीक्षान्त भाषण

माननीय श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी, कुलाधिपति जी, परिद्रष्टा जी, कुलपति जी, आचार्यगण, बन्धुओं, बहनो एव नवस्नातको ।

आज गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह मे आपने मुझे यहा आमन्त्रित कर युगपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की तपःस्थली देखने का जो सुअवसर प्रदान किया है, उसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभारी हू । स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश की स्वाधीनता अखण्डता, समृद्धि तथा सास्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया । वह मानव कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे । वह देश के युवको को एक ऐसे वर्ग के रूप मे तैयार करना चाहते थे जो ज्ञान-विज्ञान की भिन्न भिन्न शाखाओ-प्रशाखाओ में पारगत होने के साथ-साथ वैदिक ज्ञान एव विश्व प्रसिद्ध भारतीय सस्कृति से भी भली-भाति परिचित हो तथा राष्ट्र के रचनात्मक विकास मे अपनी सक्रिय भूमिका निभा सके । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षा सम्बन्धी अवधारणाओ के अनुरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी भारतके लिए एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षानीति बनाना चाहते थे, जिसमे प्राचीन विद्याओ के साथ-२ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का समन्वय हो । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही स्वामी श्रद्धानन्द ने सन १९०२ मे इस गुरुकुल की स्थापना की । उनका दृढ विश्वास था कि देश की आजादी और आजाद भारत की चहुमुखी प्रगति तब तक सभव नही होगी, जब तक देश में शिक्षा, हमारी राष्ट्रीय सस्कृति एव भारतीय पद्धति के अनुरूप लागू नही होती । वस्तुत. शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए जो जीवन निर्माण करने वाली. इन्सानियत लाने वाली और चरित्र निर्माण करने वाली हो, और जो जीवन में विभिन्न विचारो को आत्मसात कर सके ।

यह गुरुकुल, एक विचार और आन्दोलन के रूप मे अस्तित्व मे आया, केवल एक सस्था के रूप मे नही । वैदिक साहित्य व दर्शन के अध्ययन-अध्यापन के साथ राष्ट्रीयता की रक्षा करना इसका उद्देश्य था इसलिए सरकारी विश्वविद्यालयो द्वारा अपनाई गई शिक्षा पद्धति से हटकर इस गुरुकुल ने समानता के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा देने की योजना तैयार की थी । शिक्षा का माध्यम राष्ट्र भाषा हिन्दी हो इसकी योजना भी सर्वप्रथम इसी गुरुकुल ने कार्यान्वित की थी । यह संस्था तत्कालीन भारतीय विश्वविद्यालयो से सर्वथा भिन्न थी और किसी प्रकार की सरकारी सहायता नही लेती थी क्योकि उसका उद्देश्य ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति तैयार करना था जो विदेशी प्रभाव से मुक्त रहकर राष्ट्रीय विचारो से ओत-प्रोत नवयुवक तैयार कर सके । वर्तमान शताब्दी मे सरकारी नियन्त्रण से सर्वथा स्वतन्त्र रहते हुए सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए सबसे पहली और सफल क्राति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने ही की थी । अब इसमे हिन्दी, सस्कृत, वेद, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व एव सस्कृति, मनोविज्ञान और अंग्रेजी साहित्य विषयो मे शोध आदि करने की व्यवस्था भी विद्यमान है । मुझे ज्ञात हुआ है कि इस गुरुकुल का पुस्तकालय उत्तरी भारत का एक महत्वपूर्ण पुस्तकालय है जिसमे प्राचीन साहित्य, धर्म और दर्शन पर न केवल दुर्लभ पुस्तकें हैं बल्कि प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपिया भी सुरक्षित हैं । गुरुकुल का एक महत्वपूर्ण दर्शनीय सभाग सग्रहालय है, जिसमें प्राचीन इतिहास अभिलेख, पुरातत्व और उत्खनन से प्राप्त दुर्लभ सामग्री रखी गयी है । इस संग्रहालय मे हरिद्वार और कांगड़ी ग्राम तथा जनपद के अन्य स्थानो से प्राप्त प्राचीन मूर्तियां दर्शनीय हैं । इसी संग्रहालय मे स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष भी है जिसमे स्वामी जी की पादुकाएं, वस्त्र, कमंडल और दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं । यह और भी गर्व की बात है कि इस विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण कार्य ग्राम विकास योजना है । सड़कों का निर्माण, वृक्षारोपण, बायोगैस प्लाट की स्थापना आर्थिक विकास, परिवार कल्याण, सार्थक ज्ञान आदि विश्वविद्यालय द्वारा ग्रामोत्थान के लिए किए जा रहे प्रमुख कार्य हैं ।

स्वामी जी का विलक्षण व्यक्तित्व, उनकी विलक्षण प्रतिभा इस विश्वविद्यालय के विलक्षण स्वरूप का परिचायक है । स्वामी जी में आध्यात्मिक एव लौकिक गुणो का अदभुत संगम था । इसीलिए वह इस शिक्षणालय को एक आधुनिक विश्वविद्यालय और प्राचीन गुरुकुल परम्परा का समन्वित रूप देने मे पूर्णत सफल हुए । वह देश के युवको को अपने गुरुकुल में शिक्षा देकर एक ओर उन्हे आत्म साक्षात्कार की शिक्षा देना चाहते थे और दूसरी ओर उन्हे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सुसज्जित कर देशभक्त, भारतीय संस्कृति के रक्षक, दलितो एव जरूरतमदो के सहायक, अल्पसंख्यको के हमदर्द, अस्पृश्यता जात-पात धार्मिक वैमनस्य एव रूढिवादिता के कट्टर विरोधी और पारस्परिक सौहार्द, समानता तथा मेल-मिलाप के प्रबल समर्थक बनाना चाहते थे क्योकि ये सभी गुण स्वामी जी के अपने व्यक्तित्व मे विद्यमान थे ।

शिक्षा ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा अतीत की उपलब्धियों का मूल्याकन होता है, वर्तमान की समस्याओ का समाधान खोजा जाता है और भविष्य के लिए रूपरेखा बनायी जाती है । शिक्षा ही वह त्रिवेणी है जो वास्तव मे मन को बल देती है,आत्मा को पवित्र करती है और मनुष्य को सही अर्थो मे मनुष्य बनाती है । स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है । उस प्रशिक्षण को "शिक्षा" कहा जाता है जिसके द्वारा इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियन्त्रण स्थापित होता है । अत इसे शब्द-समूह की स्मृति के रूप मे न देखकर विभिन्न शक्तियो के विकास के रूप मे देखा जाना चाहिए । सही शिक्षा वह है जो हमे विभिन्न लौकिक विषयो के ज्ञान के साथ-साथ आत्मज्ञान करवाए तथा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने की प्रेरणा, शक्ति, सामर्थ्य एव कौशल प्रदान करे और अन्तत हमे सत्य व ईश्वर मे मिला दे ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रणीत शिक्षा पद्धति की सार्थकता, उपयोगिता और सर्वकालिकता इसी बात से सिद्ध होती है कि वर्ष १९८६ में घोषित और १९९२ मे संशोधित हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत सस्कृत और भारत की अन्य प्राचीन भाषाओ के अध्ययन, अनुसंधान और शोध को बढ़ावा देने के लिए स्वायत्त आयोग के गठन, पूरे देश मे सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने, माध्यमिक स्तर तक मुफ्त शिक्षा उपलब्ध कराने, मुक्त अध्ययन प्रणाली को जीवन पर्यन्त अवसर के रूप मे प्रोत्साहित करने और शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने पर विशेष बल दिया गया है ।

शिक्षा मे हमारा दृष्टिकोण केवल व्यवसायमूलक न होकर जीवनपरक भी होना चाहिए । जीवन को पद्धति वैज्ञानिक दृष्टि से रखते हुए हम राष्ट्र की रचनात्मक धारा के साथ जुडते चलें, सत्य के ग्रहण तथा असत्य के परित्याग के लिये सदैव तत्पर रहे । उपनिषद कहते हैं—आत्म-ज्ञान सत्य से मिलता है, सत्य, त्याग और सहिष्णुता से प्राप्त होना है जिसे तप कहते हैं । सत्य के साक्षात्कार के लिए गुरू ज्ञान है तो श्रद्धा जीवन की आस्था और मार्गदर्शिका है । स्वाध्याय, दान और सयम तप की रक्षा करते हैं, इनके बिना ज्ञान तथा शिक्षा की प्राप्ति करना दुष्कर है । ज्ञान की नीव ब्रह्मचर्य है । अतः शिक्षा के मूल मे तर्क, स्वाध्याय, संयम, त्याग, सहिष्णुता, श्रद्धा और ब्रह्मचर्य का स्थान अनिवार्य रूप से रखा जाए ।

गुरुकुल कागडी मे दी जा रही शिक्षा में उपरोक्त सभी उद्देश्य और लक्ष्य निहित हैं । इन गुणो से सुसज्जित शिक्षित युवक जिस क्षेत्र में भी कार्य करते हैं, वहीं अपना और अपनी शिक्षण सस्था का नाम गौरवान्वित करते हैं । मेरी यह मान्यता है कि ऐसे युवको के हाथों जनकल्याण सुनिश्चित है । मैं चाहता हूं कि देश में ऐसे गुरुकुल विश्वविद्यालय अन्यत्र भी स्थापित किये जाएं । मुझे प्रसन्नता है कि इस गुरुकुल के अधिकारीगण तथा आचार्यगण स्वामी जी के आदर्शो का निष्ठापूर्वक अनुसरण कर रहे हैं और अपने शिष्यों को भी उन पर चलने हेतु प्रेरित कर रहे हैं ।

प्रिय स्नातको, आप जिस सस्था से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

अमर शहीद मेजर डा० अश्विनी कण्व वी० एस० एम० औषधालय स्मृति स्मारक का अनावरण समारोह

डा० हर्षवर्धन, स्वास्थ्य मन्त्री दिल्ली सरकार द्वारा

सोमवार २० फरवरी १९९५ को प्रातः दस बजे मेजर डा० अश्विनी कण्व वी०एस०एम० औषधालय ए-२ पश्चिम विहार नई दिल्ली स्मृति स्मारक का अनावरण समारोह सम्पन्न हुआ।

श्रीमती शकुन्तला (उपाध्यक्षा महिला सभा) ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुये अपने स्वागत भाषण मे मन्त्री महोदय को इस प्रकार सम्बोधित किया :—

"स्वागत सुमन समर्पित करने को हम सबका मन मचल रहा।
उर में लिए कोटि आशाएं, हर्षित हो मन छलक रहा है।
लोक तन्त्र के सजग प्रहरी, कर्मठ स्नेहिल और संग्रामी।
तुम ने तो बस स्वास्थ्य रक्षा की, बागडोर है कर मे थामी।
समाज सेवाहित तुम चलो, तो आफताब से चलो।
तुम्हारे कदम जिधर उठें उधर नई लहर उठे॥
हे कर्मक्षेत्र के सेनानी! चिरंजीव हो, है मम चिंतन।
स्वर्णिम सपनों को सजोए, हम सब करते अभिनन्दन।

श्रीमती शकुन्तला आर्या जब फूलो द्वारा मन्त्री महोदय का स्वागत करने आयी तो भावुक एवं कर्मश्रेष्ठ डा० हर्षवर्धन जी ने कहा कि स्वागत तो उस बलिदानी अमर शहीद के माता-पिता का होना चाहिये जिन्होंने अपनी तपस्या से देश को ऐसा कर्त्तव्य परायण, देशभक्त डाक्टर प्रदान किया है नम्रता की मूर्ति मन्त्री जी ने स्वयं उन्हीं सुरभित पुष्पों से माता-पिता का स्वागत कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

तत्पश्चात स्मारक समिति के सरक्षक एवं डा० अश्विनी के बहनोई श्री युद्धवीर सिंह मलिक, आई०ए०एस० ने डा० अश्विनी की स्मृतियो को ताजा करते हुए दिल्ली सरकार से अनुरोध किया कि ऐसे कर्त्तव्य निष्ठ शहीदों के स्मारक बनाकर उनके परिवारो को सम्मानित किया जाना चाहिये। इतना ही नही, शहीद की माता श्रीमती सुभाष कुमारी कण्व ने भी अपने को गौरान्वित अनुभव करते हुये "इन्सान बन के रहना, कर्त्तव्य जिन्दगी के हंस-हंसकर तुम निभाना" शीर्षक भजन द्वारा अपने प्रिय पुत्र अश्विनी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। श्री हीरा लाल चावला (प्रधान, आर्य समाज पश्चिम विहार) ने मेजर डा० अश्विनी को महामानव बताते हुये उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

ऐसे भावुक वातावरण में सौम्यता के प्रतिरूप माननीय डा० हर्ष वर्धन ने उस साहसी वीर डा० अश्विनी को "भाई सम्बोधित करते हुये भावभीनी श्रद्धांजलि दी तथा श्रीमती शकुन्तला आर्या द्वारा प्रस्तुत एक प्रस्ताव पर विचार करने का आश्वासन दिलाया जिसमे सर्वसम्मति द्वारा यह प्रार्थना की गई कि प्रति वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रतिभा शाली डाक्टर को सम्मानित किया जाये जिस प्रकार २६ जनवरी को वीरता पुरस्कार दिये जाते हैं। इसके उपरान्त अध्यक्षा क्षत्रीय विधायक ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किये। अन्त मे स्मारक समिति के प्रधान डा० शिवकुमार शास्त्री, महामन्त्री, केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा) ने अभ्यागत जनो का धन्यवाद करते हुये मन्त्री महोदय से अनुरोध किया कि नैतिक शिक्षा की पुस्तक में वीरगति को प्राप्त हुये मेजर डा० अश्विनी कण्व वी०एस०एम० का संक्षिप्त जीवन परिचय भी सम्मिलित किया जाना चाहिये। "नमन्ति फलिनो वृक्षा." की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए स्वास्थ्य मन्त्री जी अमर शहीद के निवास स्थान (अश्विनी भवन ए-१/३६० पश्चिम विहार) मे पधारे तथा शहीद के चित्रो एवं प्रतिमा का अवलोकन किया। कार्यक्रम भी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपये तथा आजीवन शुल्क ३५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालों को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक निःशुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनों या मतो से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमंत्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

नव "संवत्सर" के उपलक्ष में

हास्य कवि सम्मेलन

दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी ने नव भारतीय वर्ष "संवत्सर" के उपलक्ष मे एक अखिल भारतीय स्तर के "हास्य कवि सम्मेलन" का आयोजन फिक्की सभागार, नई दिल्ली मे किया। इस अवसर पर श्रीमती सुषमा स्वराज, ससदसदस्य मुख्यअतिथि के रूप मे आमन्त्रित थी। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित करके इस हास्य कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण मे कहा कि समाज मे सांस्कृतिक और साहित्यिक वातावरण बनाने की दृष्टि से इस प्रकार के कार्यक्रमो का आयोजन अपने में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ऐसे कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन होते रहना चाहिये। इसके लिए उन्होंने हिन्दी अकादमी की सराहना की।

दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना भी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा, ससद सदस्य ने कवि सम्मेलन की अध्यक्षता की।

इस कवि सम्मेलन मे हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी के जाने-माने कविगण सर्वश्री मनोहर 'मनोज', गोपीनाथ उपेक्षित, चन ननकानवी, असरार जामयी, विनय सरगम, हरिसिंह दिलबर, अरुण जैमिनी, प्रदीप चौबे तथा ओम प्रकाश आदित्य ने भाग लिया और हास्यरस की कविताएं सुनाकर श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध किया।

श्रीमती शाहीन अब्बासी व उनकी सखियो ने इस अवसर पर वन्देमातरम् तथा "संवत्सर" का गीत प्रस्तुत किया।

यह कवि सम्मेलन अपनी किस्म का अनूठा था, जिसमें श्रोतागण से खचाखच भरे सभागार मे लगभग ३ घण्टे तक हंसी के फव्वारे चलते रहे और कविताए सुनकर श्रोतागण बहुत आनन्द विभोर हुये।

हिन्दी अकादमी के सचिव डा० रामशरण गौड ने अतिथियो, कविगण तथा श्रोतागण के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि हिन्दी अकादमी, हिन्दी भाषा के प्रचार के साथ साथ भारत को प्राचीन परम्पराओं व आस्थाओं की आम जनता को जानकारी देने की दिशा में भी अग्रसर हो रही है।

मृत्यु मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती

हमारे शरीर मे पाच कोष होते हैं, स्थूल शरीर अन्नमय कोष कहलाता है। इसके अन्दर प्राणमय कोष होता है। जैसे फुटबाल के अन्दर हवा भरी होती है, ट्रक और साईकिलो के टायर हवा भरी रहने पर ही चलते हैं। हवा के निकल जाने पर वे बेकार हो जाते हैं। उसी प्रकार प्राणों के निकल जाने पर शरीर की मृत्यु हो जाती है।

मुख्य पाच प्राण हैं . —उदान, प्राण, समान, अपान, व्यान।

मन, बुद्धि एव इन्द्रियो के साथ मिलकर प्राण प्राणमय कोष कहलाते है। मृत्यु मे केवल यह प्राणमय कोष, अन्नमय कोष को छोडकर बाहर निकल आता है। जैसे हम कमरे से बाहर निकल आते हैं। प्राणमय कोष को चलाने वाला, उससे भी सूक्ष्म मनोमय कोष है। विचारो का समूह ही मन है। मनोमय कोष के भीतर बुद्धि (ज्ञानमय कोष) है। ज्ञानमय कोष के भीतर आनन्दमय कोष है। जिसका अनुभव जीव सुषुप्ति अवस्था मे करता है। आनन्दमय कोष के परे आत्मा है। यह शरीर घडे की तरह है। मिट्टी का घडा कभी भी टूट-फूट सकता है। उसके टूटने पर दुखी होना मूर्खता है। यदि हम पक्का घडा चाहते है तब हमे लोहे या पीतल का घडा खरीदना चाहिये। (आत्मा को जानना चाहिए) हमारा शरीर एक यन्त्र की तरह है। आत्मा इस यन्त्र को चलाने वाला है। मृत्यु मे यह शरीर यन्त्र टूटता है। परन्तु हमारा कुछ नहीं बिगडता जैसे रेडियो टूट जावे तो हम नया ला सकते है। इसी तरह मृत्यु के बाद नया शरीर पुन मिल जाता है। वेद मे आता है 'अहम् इन्द्रो न पराजिग्ये' अर्थात मैं इन्द्र हू (इन्द्रियों का प्रयोग करने वाला हू) मैं कभी हार नही सकता।

मृत्यु वस्त्र परिवर्तन के समान है। जैसे हम पुराने कपडों को उतार कर नये कपड़े पहन लेते हैं। उसी प्रकार मृत्यु में मनुष्य शरीर को छोडकर नये शरीर को धारण कर लेता है। गीता मे कहा गया है —

वासासि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि, अन्यानि सयाति नवानि देही।

मैथिलीशरण गुप्त ने भी इसी विषय मे कहा है—

मृत्यु एक सरिता है। जीव उसमे नहाकर नूतन धारण कर लेता है। काया-रूपी वस्त्र बहा कर। मनुष्य का शरीर एक मकान की तरह है। जब मकान नया-नया बनता है तब हम कभी सोच भी नही सकते कि यह कभी पुराना होगा या गिरेगा। परन्तु यह कुछ साल के बाद मकान पुराना होने लगता है और तब हमे ख्याल आता है कि कभी न कभी ये गिरेगा और इसे गिराकर नया बनाना पड़ेगा। इसी प्रकार २५ वर्ष की आयु तक शरीर का निर्माण होता रहता है और मनुष्य को यह ख्याल नही आता कि मेरी मृत्यु भी होगी। परन्तु डाक्टरो का कहना है कि ८० वर्ष की आयु के बाद मनुष्य के शरीर का क्षय होना शुरू हो जाता है और कभी-कभी उसे आभास होता है कि उसकी मृत्यु होगी।

मृत्यु एक आप्रेशन की तरह है। आप्रेशन मे रोगी को ऐसी दर्द होती है, जिसे वह सह नही सकता, इसलिए उसे बेहोश कर दिया जाता है। मृत्यु के समय भी प्रकृति मनुष्य को बेहोश कर देती है। आप्रेशन मे डा० हमारे शरीर के किसी एक अंग को ही चीर फाड़ कर बदलता है। परन्तु मृत्यु मे हमारे सूक्ष्म शरीर (आत्मा) को निकाल कर दूसरे शरीर मे डाल देते हैं। मृत्यु एक नीद की तरह है। दिन भर कार्य करके हम थक जाते हैं और रात को सो जाते हैं। रात को नीद लेने के पश्चात मनुष्य दूसरे दिन फिर कार्य करने की शक्ति जुटा लेता है। यदि रात को नीद नही आती तो दूसरे दिन हम बड़े बेचैन रहते हैं। इसी प्रकार जीवन भर मनुष्य भय व चिन्ताओं से थक जाता है और मृत्यु के बाद दूसरा जन्म पाकर फिर उत्साह से कार्य करने लग जाता है। इसी प्रकार सृष्टि मे प्रलय होता है। मृत्यु प्रश्वास की तरह है (स्वांस छोडना) हम सांस छोडते हैं, तभी ले पाते हैं और लेकर पुन छोडते हैं। श्वास प्रश्वास जन्म और मृत्यु की तरह है।

मनुष्य की प्रतिदिन मृत्यु हो रही है, दिन भर कार्य करने से हमारे शरीर का थोडा-थोड़ा क्षय होता रहता है। लगभग एक तोला कोष क्षय हो जाते है। रात्रि को नीद मे जितना शरीर का क्षय होता है उतना ही फिर से बन जाता है। इस प्रकार हमारे शरीर का थोड़ा सा हिस्सा रोज नया बनता है। सात साल में हमारा सारा शरीर फिर से नया हो जाता है।

मृत्यु की आवश्यकता

अतीत काल को भुलाने के लिए मृत्यु आवश्यक है। बचपन से ही हमारे मन पर भय और चिन्ता के संस्कार पडने लग जाते हैं और मनुष्य निराश एवं कमजोर होना शुरू हो जाता है। १०० वर्ष के आस पास अगर उसकी मृत्यु न हो तो अतीत काल के सस्कारो से वह बेचैन होना शुरू हो जायेगा।

जितनी आयु लम्बी होगी, मृत्यु उतनी दुखदायी होगी। अमेरिका मे डाक्टरों ने कई रोगियों को उल्टे लटका कर जिन्दा रखा है। वे मरना चाहते है, परन्तु डा० उन्हें मरने नही देते, उन रोगियो ने आन्दोलन शुरू किया है, कि हमे मरने दो मरना हमारा अधिकार है। उनके विषय में यह कहा जा सकता है—

मौत ही इन्सान की दुश्मन नही,
जिन्दगी भी जान लेकर जायेगी।

अंग्रेजी के लेखक जार्ज बर्नार्ड शॉ ने एक नाटक लिखा है उस नाटक में उन्होने कल्पना की है कि सृष्टि के आरम्भ मे जो प्राणी पैदा हुआ वह शरीर से भी अमर था। वह जिन्दगी से तंग आ गया, जीवन को तरो ताजा रखने के लिये मृत्यु का आविष्कार किया गया। जैसे कि नदी मे पानी बहता रहे तो वह स्वच्छ रहता है।

सिकन्दर के विषय मे कहते हैं कि वह एक ऐसी जगह जहा आबे हयात (अमृत का झरना) था, जिसका पानी पी लेने से मनुष्य अमर हो जाता है। वहां एक कौवा पडा था, जिसकी गर्दन कटी हुई थी, वह तड़प रहा था पर उसकी मृत्यु नहीं हो रही, क्योंकि वह कौवा उस झरने का पानी पी चुका था। सिकन्दर ने कहा, ऐसे अमर होने से कुछ लाभ नही।

इतिहास मे राजा ययाति की कथा आती है, यह भी काल्पनिक ही प्रतीत होती है। राजा ययाति की आयु जब सौ वर्ष की हो गई। तब मृत्यु उन्हें लेने आई। उन्होने कहा—अभी मैंने ससार का कोई सुख नहीं भोगा है। अभी मैं नही जाना चाहता हूं। मृत्यु ने कहा कि यदि तुम अपने बदले किसी और व्यक्ति को दे दो, तो तुम्हें मैं छोड़ सकती हू। राजा ययाति के एक पुत्र ने विचार किया, कि मेरे पिताजी ने सौ वर्ष की आयु तक कोई सुख नही भोगा, तो ऐसे ससार में मैं क्या सुख भोग सकता हू। इस संसार को छोड़कर चलना चाहिए, वह लड़का मृत्यु के साथ जाने को तैयार हो गया, तब राजा ययाति को सौ वर्ष की आयु और मिल गई। तब सौ वर्ष बाद जब पुन मृत्यु आई तब पुन राजा ने वही उत्तर दिया। इस बार उनका नाती मृत्यु के साथ जाने को तैयार हो गया। कहते हैं कि ययाति ने इस प्रकार ३०० वर्ष की आयु तक ससार के सुख भोगे। जब फिर मृत्यु आई, तो ययाति ने कहा कि यदि मैने अभी तक कोई सुख नहीं भोगा तो भविष्य मे भी कोई सुख नही मिल सकता। अतः अब चलना ही चाहिए।

काश्मीर मे अमर नाथ एक हिन्दुओ का तीर्थ स्थान है वहां पर कहते हैं कि शिव जी ने पार्वती को अमर कथा सुनाई थी जिसको सुनने से आदमी अमर हो जाता है। एक कबूतरो के जोड़े ने वह कथा सुन ली और वे अमर हो गये। पार्वती को नीद आ गई थी। आजकल पुजारी लोग तीर्थ यात्रियों के आने पर पालतू कबूतरों का जोड़ा छोड़ देते हैं। लोग समझते है कि यह वही जोड़ा है। यदि अमर कथा सुनने से कोई अमर हो सकता है तो शिवजी भी आज कहीं होते।

(क्रमशः)

वार्षिक शुल्क भेजिये

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने में व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय में आलस्य नहीं करेंगे।

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करें। धन भेजते समय अपनी ग्राहक सं० अवश्य लिखें।

—सम्पादक

श्री मोरार जी देसाई को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली १२ अप्रैल। आज सम्पूर्ण भारत एवं विश्व में श्री मोरार जी भाई के शरीरान्त पर शोक के रूप में अवसान दिवस मनाया जा रहा है।

श्री मोरारजी भाई ने जीवन के जीने की कला "क्रतोस्मर किलवेस्मर कृतं स्मर" हे जीव मृत्यु से डर कैसा ? उसी प्रकार सिखाई है जैसे भारतीय ऋषियों ने मृत्यु का वरण कर नये जीवन की प्राप्ति का सन्देश दिया है।

मोरार जी भाई का जीवन एक साधु और ऋषि परम्परा का आदर्शमय जीवन था। आपके जीवन ने शोक का सन्देश नहीं अपितु प्रसन्नतामय जीवन जीना सिखाया है। ऐसे सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्ति का व्यक्तित्व हमारी संस्कृति जीवन मुक्ति की कोटि में रखती है।

समस्त आर्य जगत की ओर से हम आर्य जन उस ऋषि भक्त अपरिगृहीसन्त के प्रति जिसने मृत्यु मे भी अपने आदर्श को प्रस्तुत किया हो प्रसन्नता के रूप में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

श्री मोरार जी भाई ने "पश्येम् शरदः शतं जीवेम् शरदः शतम्" का पाठ पढा और हमें सिखाकर संसार से विदा हुये। पुनः आर्य जगत की ओर से उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। और परमात्मा से प्रार्थना है कि उपरोक्त गीता के श्लोक की शिक्षा के अनुसार ही उनके पारिवारिक एव सम्बन्धी जनों को इस महान वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

भारत रत्न मोरार जी देसाई

पूर्व प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई के निधन से गांधीवादी युग का एक मजबूत और वास्तविक स्तम्भ ढह गया। वैसे गांधी जी का नाम तो लिया ही जाता रहेगा, लेकिन गांधी जी के आदर्शों और सिद्धान्तों पर ईमानदारी के साथ चलने वाले व्यक्ति अब इस देश में लगभग नहीं रहे। मोरार जी भाई उन चन्द व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने गांधी जी के आदर्शों और मान्यताओं को अपने जीवन में हर सम्भव तरीके से उतारा। सत्य के प्रति स्वार्थविहीन आग्रह गांधीवादी दर्शन का प्रमुख आधार है। मोरार जी भाई ने भी अपने राजनैतिक जीवन में स्वार्थ को कभी महत्व नहीं दिया और इसीलिए वह गांधी जी के सिद्धान्तों के समीप पहुंचते चले गए। सच बात तो यह है कि उन्होंने गांधीवादी दर्शन को पूरी निष्ठा से और अधिक निखारा। भारतीय संस्कृति के प्रति मोरार जी भाई की जैसी अटूट निष्ठा थी वैसी निष्ठा आज के राजनीतिकों मे देखने को नहीं मिलती। उनकी इसी निष्ठा के कारण देश के एक वर्ग, विशेष रूप से अंग्रेजियत प्रधान वर्ग ने उन्हें हठी कहकर सम्बोधित किया पर मोरार जी हठी नहीं, बल्कि सिद्धान्तनिष्ठ थे और उनका मूल्यों और आदर्शों के प्रति पूर्ण समर्पण था। यह समर्पण ही उनकी सबसे बड़ी शक्ति थी, लेकिन अंग्रेजियत प्रधान मानसिकता के लोगों ने उनकी इस शक्ति को उनकी कमजोरी कहा और उनका उपहास उड़ाया।

निःसन्देह राजनीति में होते हुए भी स्थितप्रज्ञ की तरह से आचरण करने की जो चेष्टा मोरार जी भाई ने की, उससे भारतीय राजनीति के इतिहास में वह सदैव आदर्श पुरुष की तरह चमकते रहेंगे। भौतिक और दैहिक आकर्षण ने उन्हें कभी प्रभावित नहीं किया और उन्होंने अपने को देश के लिए अर्पित किया और इसीलिए वह राजनीति में होते हुए भी मौजूदा दौर की राजनीति से कोसों दूर थे। अपने चरित्र की इसी विशेष उत्कृष्टता के कारण ही जहां भारत सरकार ने उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया, वहीं

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हमारा आर्थिक शोषण

सरकार की सरचना इसलिये की जाती है कि वह अपने देशवासियों का चतुर्मुखी विकास करे। किन्तु आज कुछ राजनैतिक पार्टिया तथा जो पार्टी शासन करने लगती है उसके नेता जब राष्ट्र के कर्णधार बनकर स्वार्थ मे अन्धे हो जाते हैं, तब उस देश का जन जीवन नारकीय बन जाता है। हमारे देश की इस समय ऐसी ही अवस्था है। हमारा देश स्वाधीनता का फल भी न चख पाया कि स्वार्थी नेताओ ने राष्ट्र का आर्थिक शोषण करने वालों को छूट देकर उनसे बडी-बड़ी रकमे रिश्वत मे लेकर दौलत का स्वाद चख लिया। अब उनकी जीभ को जनता के खून का स्वाद मिल गया है। वह इतनी स्वछन्द हो गई है कि अधिक से अधिक लोगों के शोषण की छूट देकर अधिक से अधिक पूजी रिश्वत में ली जाये चाहे जनता का जीवन काटो की भाति सूख जाये। धिक्कार है ऐसे नेताओ को, धिक्कार है ऐसी सरकार को।

देशी-विदेशी पूजीवादी कम्पनियो को खुली छूट दी जा रही है कि वे भारत को जितना लूटना चाहे लूट लें। हमारा देश जन शक्ति का देश है। करोडों लोग बेकार हैं, भुखमरी अपना मु ह बाये खड़ी है। चाहिये तो यह था कि हमारे प्रत्येक हाथ को काम मिलता, काम का मतलब है प्रत्येक को तन की भूख मिटाने के लिए दो वक्त की रोटी, तन ढकने को वस्त्र, बिमारी मिटाने को औषधि, रहने को मकान तथा बच्चो को अच्छी शिक्षा, लेकिन इन पर वर्षो मे देखा यह गया है कि कुछ लोग मौज मस्ती की जिन्दगी बिताते है। जबकि देश की ८० प्रतिशत जनता नारकीय जीवन बिताने के लिए विवश है उसका कारण सभी जानते हैं कि महा मानव शक्ति की उपेक्षा करके बडी-बडी कम्पनिया बनाकर मशीनो के द्वारा १००० आदमियों का काम एक मशीन से ले लिया जाता है। इस देश के बुद्धिजीवियो की बुद्धि पर भी पाला पड गया है, वे यह नही सोचते कि हमारा भविष्य क्या हो गया यदि एक एम०ए० पास या पी० एच० डी० पास या डाक्टर व इन्जीनियर को कुछ हजार रुपए की नौकरी मिल जाए तो वह समझने लगता है कि मेरा जीवन तो सफल हो गया। जबकि वह जिन्दगी भी विदेशी साधारण मनुष्य के बराबर भी अर्थ सम्पन्नता की बराबरी नही कर सकता। शिक्षित लोगों की बुद्धि पर तरस आता है कि वे लोग क्यों नहीं ऐसी सरकार के प्रति अपना आक्रोश प्रकट नहीं करते, क्यो नही विद्रोह करते। अशिक्षित किसान-मजदूर तो अभी उस जाल को जाल ही नही समझ रहे हैं जिसमें वे फसते जा रहे हैं। उन्हें कभी गरीबी हटाओ, कभी उत्पादन बढ़ाओ कभी गेहू का दाम दो रुपया क्विटल बढ़ा दिया, कभी गन्ने की कीमत दो-चार रुपए बढ़ा दी इसी भूल भुल्लैयों में फसा रखा है। उनके नौजवान लड़कों के लिए कोई काम नहीं परिणाम स्वरूप वे लूट पाट के कार्यो मे सलग्न हो जाते हैं।

पूंजी पतियों ने अपनी एक अलग सस्कृति बना ली है वह क्लब की संस्कृति है। वह टी.टी. की सस्कृति है जितनी अश्लीलता बढ़े उन्हें उसी मे आनन्द आने लगा है। नगी लडकियो को देखने का चाव बढ़ता जा रहा है। ऐसी संस्कृति मे पलने वालों को क्या चिन्ता है कि उसका पड़ौसी भूखा है या नगा है उसे तो अपनी मौज मस्ती से वास्ता है।

विदेशी कम्पनिया सरकारी तन्त्र को धन का लोभ देकर अपने उद्योग स्थापित करके यहां की धन दौलत को लूट कर अपने देशों को ले जा रही है फिर भी हमारा मन चचल नहीं हो रहा।

देश के शिक्षित युवको तुम्हारा जीवन अन्धकार में है। उसे सुधारो। ऐसे शासन को उखाड फेंको जो तुम्हारी जिन्दगी से खिलवाड़ कर रहा। तुम्हारी सभ्यता, सस्कृति बिना मौत मर रही है। सामाजिक जीवन की स्वच्छता मिट रही है। पुराने आदर्श उपहास के योग्य बन रहे हैं। क्या आप यह सब चुप-चाप देखते रहोगे। यदि तुम्हारी जवानी का खुन ठ डा पड़ गया है तो यह देश रसातल को चला जाएगा फिर से गुलामी के कारण पैदा किए जा रहे। राष्ट्र की अस्मिता खतरे मे है। हमारे स्वतन्त्रता सग्राम मे बलिदान देने वालो ने पहले ही सावधान कर दिया था कि विदेशी पूंजी को अपने देश मे न आने दो। पहले भी ऐसे ही व्यापारियों के रूप मे विदेशी आए थे।

भारत रत्न मोरार जी देसाई

(पृष्ट १ का शेष)

पाकिस्तान ने उन्हें अपना सर्वोच्च सम्मान 'निशान-ए-पाकिस्तान' प्रदान किया। सम्भवत. भारतीय उपमहाद्वीप में मोरार जी भाई अकेले ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिन्हें भारत और पाकिस्तान, दोनों राष्ट्रों के सर्वोच्च सम्मान मिले। स्पष्ट है कि मोरार जी भाई न केवल भारत पाक मैत्री के पक्षधर थे, बल्कि वह हिन्दू-मुस्लिम एकताके भी सच्चे हिमायती थे। काश, उनके इन गुणों को आज के राजनीतिक अपना सकते। आज जाति, क्षेत्र, भाषा और सम्प्रदाय के आधार पर जिस तरह की राजनीति को बढ़ावा दिया जा रहा है, उससे राष्ट्र के समक्ष समस्याए बढ़ती चली जा रही हैं। हमारा राष्ट्र नित नई गम्भीर समस्याओ से घिरता चला जा रहा है। राष्ट्र को इन समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है, यदि वर्तमान राजनीतिक मोरार जी भाई के आदर्शो का अनुसरण कर सकें।

भारत रत्न मोरार जी भाई के निधन पर जो राष्ट्रीय शोक मनाया जा रहा है, उस शोक के दौरान उनकी राजनैतिक, चारित्रिक प्रतिमा का गुणगान होना स्वाभाविक ही है, लेकिन केवल गुणगान का तो कोई मूल्य है नही। किसी महापुरुष का गुणगान वास्तविक गुणगान तभी कहा जा सकता है, जब गुणगान कर रहे लोग उस महापुरुष द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की चेष्टा ईमानदारी के साथ करें। मोरार जी भाई द्वारा बताया गया मार्ग राष्ट्र के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो सकता है, पर क्या आज की राजनीति उन श्रेष्ठतम मूल्यों, आदर्शो और मान्यताओं को वास्तव में अपनायेगी, जिन पर मोरार जी भाई चला करते थे? निश्चित रूप से मोरार जी देसाई के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि जिन मूल्यों, सिद्धान्तों और आदर्शो की रक्षा के लिए वह जिए उनका सम्मान किया जाए, और उनके सिद्धान्तों, आदर्शो के प्रति सम्मान भाव का अर्थ यही है कि उन पर अमल किया जाए।

दीक्षान्त भाषण

(पृष्ठ का २ शेष)

सार्वजनिक जीवन में पदार्पण कर रहे हैं उसकी परम्परा और इतिहास गौरवशाली है। यह वह संस्था है जहां हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया गया था। आज भी इस संस्था में गणमान्य नेता आकर अपने को धन्य समझते हैं। संस्कृति, साहित्य, धर्म, दर्शन, चिकित्सा, पत्रकारिता, राजनीति, विज्ञान तथा व्यवसाय के क्षेत्रों मे यहां के स्नातकों ने निस्सन्देह नाम अर्जित किया है और आप सभी इस परम्परा को बनाये रखेंगे। मेरी इच्छा है कि आप जीवन के विविध क्षेत्रों का चयन करें और राष्ट्र सेवा के लिए स्वयं को समर्पित करें, समाज के टूटते हुए रिश्तों और सम्बन्धों को मधुर एवं सुदृढ करें और समानता तथा सामाजिक न्याय के लिए विवेकसम्मत वातावरण बनाये। मेरी शुभ कामना है कि आप सभी अपने जीवन में निरन्तर सुख-समृद्धि की ओर अग्रसर हो और साथ ही राष्ट्र के रचनात्मक विकास मे अपना सक्रिय योगदान दें।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने दीक्षान्त समारोह के निमित्त मुझे आमन्त्रित कर स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महामानव को श्रद्धांजलि अर्पित करने का जो सुअवसर मुझे दिया इसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। आचार्यगण और उपस्थित भाई-बहनों के लिए मेरी मंगल कामनाएं।

डी०सी०एम० रेलवे कालोनी में नव वर्ष महोत्सव

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने नव वर्ष विक्रमी सम्वत् २०५२ के उपलक्ष्य में डी०सी०एम० रेलवे कालोनी में २ अप्रेल (रविवार) प्रात ९-३० बजे "नव वर्ष महोत्सव" का आयोजन किया गया।

बच्चों का सुरुचिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम, जरूरतमन्द व प्रवीण छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री तथा (वैदिक) चरित्र-निर्माण साहित्य वितरण किया गया।

सार्वदेशिक सभा प्रधान, महान स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने आर्य समाज मन्दिर डी सी०एम०रेलवे कालोनी के मुख्यद्वार का उद्घाटन किया। —चन्द्रमोहन आर्य

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 20,21 4-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C 139/95

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५

"आर्यसन्देश" साप्ताहिक २३ अप्रैल १९९५

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय,

५ अप्रैल १९९५ के टाइम्स आफ इण्डिया के नई दिल्ली के संस्करण मे समाचार छपा है कि नेपाल के स्वास्थ्य व श्रम मंत्री श्री पद्मरत्न तुलाधर ने नेपाल सरकार के रेडियो द्वारा संस्कृत समाचारो के प्रसारण के विरोध मे मन्त्रि-पद से त्याग पत्र दे दिया है। यह आश्चर्यजनक एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। संस्कृत को सभी देशो मे मान्यता प्राप्त है क्योंकि इसका साहित्य प्राचीनतम है और इसने संसार की अनेक भाषाओ को प्रभावित किया।

नेपाल और भारत के प्राचीन काल से जो घनिष्ठ सम्बन्ध चले आ रहे हैं उनका कारण केवल भौगोलिक निकटता और सांस्कृतिक एकता ही नहीं अपितु साहित्यिक और भाषायी सम्बन्ध भी है। उनके आधार मे संस्कृत रही है। नेपाल मे प्राचीन काल से ही संस्कृत के अनेक उत्कृष्ट विद्वान होते रहे है और आज भी हैं। संस्कृत किसी भाषा के मार्ग मे बाधक नही, वह उसके लिए सहायक ही है।

पश्चिमी देश जर्मनी मे भी डोयत्शेवले रेडियो से संस्कृत का कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित होता है।

सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करना इसका मूल उद्देश्य है। संस्कृत सेवी संस्थाओ विशेषत आर्य समाज द्वारा नेपाल मे संस्कृत की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए प्रयत्न किया जाना चाहिये। यह भारत और नेपाल के सांस्कृतिक सम्बन्ध सुदृढ करने के लिये भी आवश्यक है।

संस्कृत का विरोध वहां काठमाडू घाटी की नेवारी भाषा और संस्कृति के पक्षधर समूह द्वारा किया जाना और भी आश्चर्य की बात है क्योंकि संस्कृत इन दोनो का पोषण ही करती है।

नेपाल स्थित भारतीय राजदूतावास को भी संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिये अपनी आवश्यक उचित भूमिका निभानी चाहिए।

डा० कृष्ण लाल
आचार्य संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

सीताष्टमी पर्व मनाया

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल के तत्वावधान में सीताष्टमी पर्व आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-२ मे अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमे दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के अतिरिक्त दिल्ली की प्रमुख आर्यसमाजो ने हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया। यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती कृष्णा रहेजा एवं ध्वजा रोहण श्रीमती आशा बत्तरा द्वारा सम्पन्न हुआ।

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल की अध्यक्षता श्री० शकुन्तला आर्या ने माता सीता को श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि भारतीय नारी समाज की आधार शिला है। नारी से ही समाज का धर्म, सभ्यता, संस्कृति, परम्पराएं, सौन्दर्य समृद्धि और सौष्ठव टिका हुआ है।

सभा को श्रीमती प्रकाश आर्या, सरिता सूद और स्नेहलता ने भी सम्बोधित किया। सभा की अध्यक्षता श्रीमती सरला महत्ता ने की।

—कृष्णा ठकराल, मन्त्रिणी

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन: -३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एस ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक २६ | रविवार, ३० अप्रैल १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष : ५१०१५०

एक दिलेर दम्पति-महाशय अचरज लाल जी एवं माता सोमावन्ती आर्या

(लेखक — नन्द किशोर भाटिया)

स्व० महाशय अचरज लाल जी का जन्म पेशावर मे हुआ था। आप के पिता महाशय फकीरचन्द जी जहानिया मण्डी जिला मुलतान (वर्तमान पाकिस्तान) के निवासी थे। बचपन से ही आपको आर्य संस्कार मिले। किशोर अवस्था होने पर आप स्थानीय आर्य समाज की गतिविधियो मे सक्रिय भाग लेने लगे। आप वर्षों आर्य समाज मुलतान के प्रधान पद पर सेवा करते रहे। आप का विवाह झेलम निवासी श्रीमती सोमावन्ती से हुआ। तथा अपनी जीवन संगिनी का भी आर्य संस्कारो की दीक्षा दी। श्रीमती सोमावन्ती ने भी अपने पतिदेव के साथ आर्य समाज के कार्य कलापों मे पूर्ण सहयोग करते हुए न केवल अपने पतिव्रत धर्म का निर्वाह किया बल्कि स्वतन्त्र रूप से आगे बढकर सामाजिक उत्तरदायित्व का भली-भाति निर्वाह करते हुए अपने परिवार के यश का संवर्द्धन किया। पजाब हिन्दी आदोलन एव गौरक्षा आन्दोलन मे आर्य समाज के आह्वान पर सक्रिय भाग लेकर इस दम्पति ने पारिवारिक सुखों को ठुकरा कर जेल यात्रा की माता सोमावन्ती ने गौरक्षा आन्दोलन मे महिलाओ के सबसे पहले जत्थे का नेतृत्व करते हुए राजौरी गार्डन नई दिल्ली मे सत्याग्रह किया। माता सोमावन्ती पढी लिखी महिला न होते हुए भी अपने सिद्धात के पक्ष मे वाद-विवाद मे दक्ष व प्रवीण महिला थी। तथा आर्य समाज के हित को लेकर बड़े-बडे सरकारी अधिकारी से भी जा टकराने मे नही डरती थी।

१९४६ मे भारत विभाजन की विभीषिका को झेलकर दिल्ली के दरियागज क्षेत्र मे किराये का मकान लेकर रहने लगे तथा सदर बाजार मे अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया। लेकिन आर्य समाज को न भूले। आर्यसमाज दीवान हाल के कोषाध्यक्ष व उप प्रधान पद पर आप वर्षों तक कार्य करते रहे। १९६४ मे आप राजौरी गार्डन नई दिल्ली मे अपना मकान बनाकर रहने लगे। तथा यहा भी आर्य समाज के कार्यों मे सक्रिय भाग लेने लगे। आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली की यज्ञ शाला ६५ फुट ऊंची बनवाकर मिसाल कायम की। आर्य समाज के कई सदस्यो ने इतनी ऊंची यज्ञशाला बनवाने का विरोध किया। तथा धमकी दी कि वह यज्ञशाला के ऊपर से छलाग लगाकर अपने जीवन का अन्त कर देंगे। यदि यज्ञशाला की ऊंचाई इतनी रखी गई। महाशय जी का कहना था कि मैं इसकी ऊंचाई इसलिए इतनी चाहता हू, कि बाहर के लोगो को पता चले कि यहा आर्य (हिन्दू) बसते है। आर्य समाज के वर्तमान प्लाट को दिलाने मे महाशय अचरज-लाल जी ने जिस उत्साह व कार्यकुशलता का परिचय दिया वह अति सराहनीय है। महाशय जी पर नगर निगम ने १४ अभियोग चलाये परन्तु वह नही घबराये! मृत्यु के पश्चात भी कोर्ट से उनके नाम से सम्मन आते रहे। माता सोमावन्ती कहती थी कि या तो आप स्वयं उनके पास चले जाओ या उनको पकड़कर वापस ले आओ। या मुझे कोर्ट मे पेश कर दो। उस दिलेर नारी पर कोई प्रभाव नही ऐसे सम्मनो का। महाशय जी उस समय आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली के प्रधान थे तथा अपने कार्यकाल मे ही आर्य समाज की यज्ञशाला का निर्माण करवाया जिसकी गगन चुम्बी गुम्बद आज भी आस-पास की इमारतो से ऊपर सिर उठाकर अपनी महिमा को दर्शा रही है। स्व० माता सोमावन्ती वर्षों तक स्त्री आर्य समाज की प्रधाना रही, तथा अन्त तक संरक्षिका के पद की शोभा को बढ़ाये रखा।

महाशय अचरज लाल जी न केवल आर्य समाज के क्षेत्र मे ही लोकप्रिय थे। अपितु सदर बाजार दिल्ली के व्यापारियो के नेता भी थे। कोई भी समस्या आ जाती तो आप अपनी सूझबूझ से उसका हल निकाल लेते थे। व्यापार में इमानदारी इतनी थी कि कभी किसी सरकारी अधिकारी ने उन्हें परेशान नहीं किया पाकिस्तान मे भी वह अपनी दुकान के आय-व्यय खाते हिन्दी भाषा मे लिखते थे। वहा के कर अधिकारी उनके खातो की जाच पडताल तक नही करते थे। हैरान होते थे, कि महाशय जी को अपनी मातृ भाषा से कितना प्यार है। बाकी सभी लोग या तो मुण्डी मे अथवा उर्दू मे खाते लिखते थे। इस दम्पति मे दान की भावना भी कूट-कूट भरी हुई थी। देश प्रेम के लिए तो महाशय जी फासी की कोठरी मे भी रह चुके थे। मानवता तो उनका जीवन था। केवल एक ही मिसाल इस जीवन का दर्शन के लिए पर्याप्त है। एक बार पाकिस्तान से आये हुये मुसलमान युवको को किसी दोष के बिना पर कोर्ट मे पेश किया गया। महाशय जी भी किसी कारण वहा थे। (मैं लिख चुका हू कि उन पर आर्य समाज के प्रधान के नाते १४ अभियोग थे)। उन युवको की कोई जमानत देने वाला नही था। ना कोई मुसलमान न ही कोई हिन्दू महाशय जी ने उन युवको से बातचीत की जब विश्वास हो गया कि वह निर्दोष है तथा जासूस भी नही है तो उन पर तरस खा कर जमानत देकर रिहा करवा लिया वह दोनो युवक पाकिस्तान पहुचकर वहा से उनको अब्बा कहकर पत्र लिखते रहे।

इस आर्य दम्पति की सबसे बडी उपलब्धि अपनी सन्तानो को आर्य संस्कारो से दीक्षित करना रही है। आज उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री जगदीश जी आर्य जहा आर्य समाज राजौरी गार्डन के लौह-स्तम्भ हैं। (प्रधान पद पर कार्य कर रहे हैं।) वहा महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का प्रधान व चेयरमैन के नाते बडी कुशलता के साथ संचालन कर रहे है। आप की धर्म पत्नी श्रीमती शशि आर्या स्त्री समाज राजौरी गार्डन मे अपना सक्रिय योगदान दे रही है। (मन्त्रिणी पद पर कार्यरत है।) आप स्व० आनन्दबोध सरस्वती की छोटी सुपुत्री है। आप एक अच्छी गायिका भी है महाशय जी के कनिष्ठ पुत्र श्री सुभाष आर्य समाज सेवा के कार्यों मे सलग्न है आप आर्य समाज राजौरी गार्डन के मन्त्री पद पर कार्य कर चुके है। आप भारतीय जनता पार्टी के एक नेता हैं। तथा दिल्ली महानगर परिषद के सदस्य रह चुके है।

नोट लेखक का इस परिवार मे घनिष्ठता का सम्बन्ध है। लिखने को तो बहुत कुछ है परन्तु लेख लम्बा न हो जाय इस कारण यही समाप्त करता हू।

माता सोमावन्ती जी का ३० अप्रैल को पुण्य स्मृति दिवस है। महाशय जी का स्मृति दिवस २४ मार्च को था मैं अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

पता-६/१२६ राजौरी गार्डन नई दिल्ली

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक – आचार्य सुधाकर एम०ए०

चिन्ता क्यों ?

किसी के मन की चर्चा करना कठिन कार्य है क्योकि मन का रहस्य अभी तक किसी ने खोला नही हैं। वेदो मे लेकर उपनिषद तथा आधुनिक काल के मनोवैज्ञानियो ने मन की चर्चा अवश्य की है किन्तु मन ने अभी इन सबसे आगे हार नही मानी है उसने अभी आत्म समर्पण नही किया है सब अपनी-अपनी कहते चले गये उनकी सुनकर मन हसता रहा, क्योकि मन को अपनी स्थिति का स्वत ज्ञान हैं। वेद ने तो कह दिया कि मन जागते, सोते दूर-दूर तक जाता है, वह प्रकाशो का प्रकाशक है। इसका तात्पर्य है मन अभी तक काबू से बाहर है। छोटा बच्चा भी मन रखता है उसकी मन प्रक्रिया का अध्ययन किसी ने नही किसी। लोग कहते हैं कि उसकी मानसिक शक्ति का विकास नही होता है तो फिर यह भी कह जाता है कि बुनियाद बचपन मे ही पडती है उसी पर जीवन आधारित होता है तो क्यो नही बचपन की मानसिकता का दिग्दर्शन कराया गया। यह ठीक है कि बचपन मे इन्द्रिया इतनी पैनी नही होती कि वह अपनी बात को कह सके, बस इतनी ही उसकी असमर्थता है। तो वही से सुधार की प्रक्रिया क्योकि नही शुरू की जाती सब उपदेश बड़ो के लिए ही सुरक्षित है। बच्चा छोटे पन मे शराब नही पीता, मास नही खाता, फिर कौन सी मानसिक पृष्ठ भूमि है जिसके कारण बडा होकर मास भी खाने लगा, शराब भी पीने लगा। इसका तात्पर्य केवल यह समझ लेना चाहिए कि बच्चे की कमजोरी का बडे लोग अनुचित लाभ उठाकर उसकी बचपन की मानसिकता को कुचलकर अपनी तरह का बनाने का प्रयत्न करते हैं।

बच्चा बडा होने लगा तो वह मन मानी करने लगा अब मा बाप को चिन्ता हुई कि लडका या लडकी हाथ से निकलता जा रहा है उसे कैसे वश मे किया जाये तो उसके साथ डाट-डपट शुरू होती है तब मा बाप को अपने लडके लडकियो से सुनने को मिलता हम अब बच्चे नही है अपने विषय मे स्वतन्त्र चिन्तन करने का हमे पूर्ण अधिकार है आप हमारे कार्यकलापो मे दखलन्दाजी न करें। अब मा बाप की मजबूरी उजागर होती है कि क्या किया जाये। अपने आचरण पर तो मा बाप ने भी नियन्त्रण नहीं किया। यह सत्य हैं कि मा-बाप का सबसे बढिया नजदीकी चित्रकार उसकी सन्तान हैं, जब बच्चा छोटा था तब उसे ना समझ समझकर अपने आचरण को बेलगाम छोड रखा था जिसका परिणाम यह हुआ कि बच्चो को मुखर होना पडा। उसका मन अपने छोटे पन मे भी सक्रिय था। एक उदाहरण इसे अधिक स्पष्ट करेगा। एक लडकी किसी लडके के साथ घर से निकल गई, निकलने कुछ दिन बाद पुलिस तथा मा-बाप ने प्रयत्न करके उसे खोज निकाला उस समय लडकी आयु लगभग १८ वर्ष नहीं होगी। उसे पुलिस ने कोर्ट मे उपस्थित किया तथा माननीय न्यायाधीश ने लडकी से पूछा कि तुम घर से क्यो निकल गई तो उसने अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए उत्तर दिया, मेरे माता पिता दोनो अलग-अलग क्लबो मे जाते हैं कभी-कभी मा हमे अपने साथ ले जाती थी उसी समय उसकी हरकत का हम कोई अर्थ नही समझते थे जैसे-जैसे समय बीतता गया हमारी पकड़ मे वे बातें स्पष्ट होने लगी, घर का वातावरण भी ऐसा बन गया कि रात्रि मे हमारे माता-पिता के मित्रगण आते घर मे बैठकर शराब पीते उसके बाद उनका व्यवहार जैसा था वह हमको भी प्रभावित करने लगा और हमारा मन भी वैसा करने के लिए उत्सुक होने लगा बस यही से आप समझ लीजिए की मैं घर से क्यो निकल गई। मैंने भी वैसा ही जीवन जीने का लक्ष्य निर्धारित कर लिया अब आप विचार सकते है कि बच्चे का मन आपका अनुकरण करने के लिये सचेतन था या नही।

अभी कुछ दिन पूर्व आर्य समाज के दो स्कूलो ने इकट्ठा अपना वार्षिकोत्सव मनाया। स्कूल के प्रबन्धको, प्रिंसिपल आदि ने सास्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर बढिया प्रदर्शन किया उसमे गजल गायक किसी व्यक्ति को बुलाया गया, उसने आशिकी की गजलें सुनाकर छात्र-छात्राओ, अध्यापको, प्रबन्धको, और अभिभावकों का बढिया मनोरजन किया, बच्चो के भी कार्यक्रम आयोजित किये गये वे क्यों पीछे रहते उन्होने भी गजल गायक से दो कदम आगे बढकर बढिया फिल्मी गानो की श्रृंखला पेश की जिन्हे सुनकर सभी बड़ो-छोटों की भरपूर मानसिक तृप्ति हुई।

गालिब दुखी है जमाने के दर्द से तो न मालूम कुछ लोग ऐसे कार्यक्रमो से क्यों नाराज होते हैं क्या उनके घर का वातावरण वैसा नही हैं मैं भी कहा की दकिया नूसी दुनियां की चर्चा करने लगा आज के माहौल मे हमें भी समाविष्ट होना चाहिये। जब सामाजिक सुधार के अलमबरदार नेता इस प्रकार के कार्यक्रमो मे सम्मिलित होकर गलो को फूल मालाओ से सजाते हैं सजवाते हैं तो इस निरीह सम्पादक की क्या ओकात जो उनके कार्यो मे मीन मेख निकाल सके। इसे तो वही लिखना चाहिये जो नेता चाहते हैं तभी लेख की सार्थकता है।

मैं चिन्तित हू क्योंकि मेरी लेखनी को एक रोग लग गया है सबको सुधारने का। मेरे बच्चे सुधरें, परिवार सुधरें, व्यक्ति-व्यक्ति सुधरे, समाज सुधरे, राष्ट्र सुधरे, हमारे स्कूल सुधरे, अध्यापक सुधरें माता पिता अपना उत्तर दायित्व समझें तो हम समझेंगे कि हमारे लेखन सार्थक है। आज ऐसा साहित्य उच्च कोटि के साहित्यकारो द्वारा लिखा जा रहा है जिसे पढकर युवक तो युवक बूढ़ो की भी नसें फडकने लगती हैं। घर-घर मे ऐसा फूहड पन आधुनिकता के नाम पर आ गया है कि नगा पन जगली पन आता जा रहा है। आदि सभ्यता का युग आधुनिकता के नाम पर आ रहा। लडकियां आधी नगी, बूढी महिलायें भी आधी नगी बजारो मे घूमती फिरे ओर अपने को आधुनिका प्रदर्शित करे तो बच्चो का भगवान ही रखवाला है अत हम सब इस कर्त्तव्य को पहचाने विशेष रूप से स्कूल कालिजो को इस अपराध मे बचाये, नही तो चिन्ता बढती जायेगी, हमे खाती जायेगी, हम असहाय बनकर टुकुर टुकुर देखते रह जायेंगे। कारवां निकल गया, हम देखते रहे खडे-खडे।

आचार्य सुधाकर

आर्य समाज पाली का निर्वाचन

आर्य समाज पाली जनपद-हरदोई उ० प्र० का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से दिनाक २-४-९५ को सम्पन्न हुआ। जिसमे नीचे लिखे पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किए गए।

प्रधान—श्री लालाराम वाजपेई मन्त्री—श्री करुणाकान्त मिश्र

कोषाध्यक्ष - श्री जयप्रकाश मिश्र

अंग्रेजी ने हमें क्या दिया?

मस्तराम कपूर

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए भारतीय भाषाओं को माध्यम के रूप में स्वीकार करने और अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने की मांग को लेकर छह साल से सत्याग्रह चल रहा है। कुछ दिन पहले इस धरने में पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह तथा पूर्व उप प्रधानमन्त्री चौधरी देवीलाल सहित कई कई वरिष्ठ नेताओं ने शिरकत की। पूर्व प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा चन्द्रशेखर और पूर्व लोकसभा अध्यक्ष रवि राय, लोकसभा में विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी और ३०० के लगभग सांसद भी सत्याग्रहियों की मांग का समर्थन कर चुके हैं। और इस सम्बन्ध में राष्ट्र के उच्च नेताओं को ज्ञापन भी दिए जा चुके हैं। लेकिन इन तमाम कारणों के बावजूद सरकार अपनी बात पर अडी है। संसद के २५ साल पुराने प्रस्ताव को लागू करने के लिए तैयार नहीं हैं। संविधान में कुछ समय के लिए सहभाषा के रूप में स्वीकार की गई अंग्रेजी को सरकार हमेशा के लिए प्रमुख भाषा के रूप में बनाए रखने की जिद पर अडी है और उसके लिए वह नेहरू के आश्वासन की आड लेती रही हैं, गोया नेहरू का आश्वासन संविधान से भी ऊपर हो।

कांग्रेस का अंग्रेजी प्रेम—

जिस कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंग्रेजी बनाम भारतीय भाषाओं को एक प्रमुख मुद्दा बनाकर स्वतन्त्रता संग्राम की अगुवाई की थी, उसका वर्तमान अंग्रेजी प्रेम देखकर किसको आश्चर्य नहीं होगा? यह इस बात का उदाहरण है कि कैसे एक कदम भटकने से मुसाफिर कोसों भटक जाता है। संविधान ने कल्पना की थी कि अंग्रेजी १५ साल में हट जाएगी। किसी भी राष्ट्र के लिए अपने साम्राज्यवादी जुए को उतार फेंकने के लिए १५ साल की अवधि कम नहीं होती। तुर्की और इजराईल ने तो एक दिन में ही यह काम कर लिया था। संविधान-निर्माता यदि १५ साल की अवधि के बाद अंग्रेजी पर पूर्ण विराम लगाने का स्पष्ट निर्देश देते, तो आज यह समस्या न होती। लेकिन संविधान में अल्प विराम लगाकर कुछ और समय लेने की छूट दे दी गई। इस छूट का फायदा उठाकर निहित स्वार्थों ने अंग्रेजी को स्थायी बना दिया। यह कैसे हुआ और निहित स्वार्थ कौन थे, इन सवालों में जाने की जरूरत नहीं है। साधारण आदमी भी जानता है कि "निहित स्वार्थ" वही लोग थे जो ब्रिटिश शासन की व्यवस्था को चला रहे थे और जिन्हें स्वतन्त्र भारत की व्यवस्था को चलाने का काम भी सौंप दिया गया था और उन्होंने अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए ऐसा माहौल बनाया कि अंग्रेजी अनिवार्य बन गई।

अंग्रेजी और राष्ट्रीय एकता—

सवाल उठाता कि हमारी भाषाओं के सारे अधिकार छीनने के अतिरिक्त अंग्रेजी ने हमें दिया क्या? क्या इसने राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया, जिसका दावा अंग्रेजी वाले हमेशा किया करते हैं? यह देखने के लिए दूरदर्शी या सूक्ष्मदर्शी यन्त्र की जरूरत नहीं है कि हमारी राष्ट्रीय भावना पिछले ४० वर्षों में उत्तरोत्तर लहूलुहान ही हुई है। राष्ट्रीय राजनैतिक दलों का अवसान और क्षेत्रीय राजनैतिक दलों का उदय इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। लगभग सभी राजनैतिक दलों का चरित्र इस समय क्षेत्रीय बन गया है। हमारे सीमावर्ती राज्यों में ही असंतोष, विद्रोह और अलगाव का उफान नहीं उठा है, मध्यवर्ती राज्यों में भी भूमि-पुत्रों की मांगें हावी हो रही हैं।

क्या अंग्रेजी ने हमारे लोकतन्त्र को मजबूत किया? शासक और जनता के बीच भाषा की अगम खाई बनाकर इसने समूचे राष्ट्र को दो फाड़कर दिया है। इसका एक हिस्सा उन लोगों का है जो शासन कर रहे हैं और स्वर्ग का सुख भोग रहे हैं दूसरे हिस्से में वे लोग हैं जो शासकों का बोझ ढो रहे हैं और नरक की यातना झेल रहे हैं। राज्य की सारी योजनाएं पहले हिस्से को अधिक से अधिक सुविधाएं जुटाने के लिए बनती हैं। उनके लिए बेहतर शिक्षा संस्थाएं, बेहतर स्वास्थ्य केन्द्र, बेहतर यातायात के साधन, बेहतर संचार सेवा और इसके विपरीत आम जनता के स्कूल, अस्पताल, बसें रेलगाडियों, डाक संचार प्रणाली सब की हालत खस्ता। आम जनता पर महंगाई की मार पडती है और खास लोगों की कमाई बढती है। उनके वेतन भत्ते भी बढते हैं और मुनाफे भी। आम और खास जनता के द्वैत के चलते लोकतन्त्र मजाक बनकर रह गया है।

क्या अंग्रेजी ने हमारे देश की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाया? जब हम आजाद हुए थे तो हमारा देश दुनिया के देशों में ऊपर से आठवें-नौवें स्थान पर था। अब हमारा स्थान दुनिया के देशों में नीचे से तीसरा या चौथा है। एक बात में जरूर हमने प्रगति की। पहले हमारे देश के बडे पूंजीपति और धनी लोग धोती-अंगरखा पहनते थे और देशी बीडी पीते थे। अब वे कोट-पतलून, सफारी पहनते हैं और विदेशी शराब-सिगरेट का मजा लेते हैं। पहले वे पूंजी निर्माण करते थे और नए-नए उद्योगों में धन लगाते थे। अब वे विदेशी कम्पनियों के साथ मिलकर कीमतों तथा शेयर बाजार की हेराफेरी करके सिर्फ मुनाफा कमाते हैं और अपने धन को विदेशी बैंकों में जमा करते हैं। लेकिन अंग्रेजी ने जो सबसे बडी क्षति इस देश की अर्थव्यवस्था को पहुंचाई वह यह है कि इसने देश को आर्थिक गुलामी में जकड़ दिया। अंग्रेजी की वजह से ही हम पश्चिमी देशों के रहन-सहन की बन्दर-नकल करने की ओर उन्मुख हुए, जिसके परिणामस्वरूप हम उत्तरोत्तर पश्चिमी देशों के कर्जदार बनते गए और आज हम उनके आगे घुटने टेकने को विवश हैं।

बौद्धिक और सांस्कृतिक योगदान—

अंग्रेजी के बौद्धिक और सांस्कृतिक योगदान की तो चर्चा करना ही व्यर्थ है। अंग्रेजी ने हमारी सारी मौलिकता को छीन लिया है और हम केवल पश्चिम के विचारों की प्रतिध्वनि मात्र बन गए हैं। हमारे जीवन में अंग्रेजी इस तरह समा गई है कि गरीबी की चक्की में पिसते परिवारों को भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेजना पड़ता है और इस प्रकार उनकी मौलिक प्रतिभा बचपन में ही कुंठित हो जाती है। जो प्रतिभाशाली बच्चे अंग्रेजी शिक्षा प्रणाणी से तैयार होकर निकलते हैं, उनका सपना होता है विदेशों में नौकरी ढूंढने और वहां बसने का। एक स्वतन्त्रता सेनानी के कथनानुसार हम निर्यात के लिए बच्चे पैदा करते हैं। यह पुरानी गिरमिटिया प्रथा का ही आधुनिक रूप है। संविधान में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का जो सपना देखा गया था, उसे त्याग दिया गया है और हर स्तर पर शिक्षा का व्यापारीकरण हो गया है। इस शिक्षा ने बेरोजगारों की फौज को ही बढाया है और नौजवानों को जीवन से निराश बनाकर उन्हें आत्मघाती या समाजघाती प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख किया है। कालेजों और विश्वविद्यालयों में पढने वाली नौजवान पीढ़ी पश्चिमी देशों की उपभोक्ता संस्कृति की गुलाम बन गई है और उसकी सृजनात्मक भूमिका लगभग शून्य हो गई है।

क्या हम कभी अंग्रेजी की दासता से मुक्त हो पाएंगे? इस प्रश्न का उत्तर देना अब कठिन हो गया है। इधर गैट के भेष में देश पर जो नई व्यवस्था लादी जा रही है उसमें अंग्रेजी के हटने की सारी संभावनाएं खत्म होती दीख रही हैं। विश्व-ग्राम का सदस्य बनने के लिए हम पर विश्व-भाषा (अंग्रेजी) को स्थायी रूप से बनाए रखने के लिए दबाव पड़ेंगे। यह देश अंग्रेजी वालों का स्वर्ग बनेगा। यही वजह है कि देश के लगभग सारे अंग्रेजी अखबार और उनके स्तम्भकार-सम्पादक गैट समझौते के गुणगान में बढ़-चढकर लगे हुए हैं। अमरीका आदि पश्चिमी देशों से घृणा करने वाले वामपंथी बुद्धिजीवी भी गैट के पक्ष में झुकते जा रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि इससे मजदूरों-सफेदपोश कर्मचारियों और अध्यापकों की तनखाहें बढेंगी। पत्रकारों-लेखकों की आय भी यूरोप-अफ्रीका के पत्रकारों-लेखकों जितनी होने लगेगी। साम्यवाद और पूंजीवाद एक ही सभ्यता की संतानें हैं और गैट की विजय इस सभ्यता की विजय है। अतः इसके प्रशस्तिगान में दक्षिण पन्थ वामपंथी भेद मिट रहा है।

नई पीढी का भविष्य

नई पीढी का भविष्य अब सारी आशाएं नौजवान लडके-लडकियों की उसी पीढी पर टिकी है जो अंग्रेजी को इस देश से हटाना चाहती है। लेकिन इस सम्बन्ध में यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिए कि अंग्रेजी को हटाना अब तभी सम्भव है जब अंग्रेजी के रास्ते आई पश्चिमी सभ्यता की गुलामी के खिलाफ

(शेष पेज ६ पर)

मृत्यु मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती

मृत्यु के कारण

१. इटली के मनोवैज्ञानिक 'सिग मन्ड फ्राईड' ने अपने अन्तिम दिनों मे इस बात का अनुभव कि मनुष्य की मृत्यु इसलिए होती है, कि वह मरना चाहता है। जिस दिन जीवन मे यह ख्याल आवे कि जीवन व्यर्थ है, उसी दिन से आदमी मृत्यु की ओर चल पडता है। मनुष्य मे मूल रूप से दो प्रवृत्तिया हैं। जब वह सुखी होता है तब जीना चाहता है, जब दुःखी होता है तब मरना चाहता है। इसलिए मनुष्य का जन्म और मृत्यु होते रहते हैं। ये प्रवृत्तिया मनोविज्ञान मे इरोस और थानटोस कहलाती हैं।

२ अमेरिका के वैज्ञानिक 'आलबर्ट आइनस्टीन' ने यह अनुभव किया कि मनुष्य के मृत्यु का कारण पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण है। पृथ्वी हर वस्तु को अपनी ओर खीचती है। मनुष्य की शक्ति को भी अपनी ओर खीचती है। इससे मनुष्य बीमार एव कमजोर होकर एक दिन मृत्यु का शिकार होता है। यदि मनुष्य किसी ऐसे स्थान मे रहे, जहा किसी भी ग्रह का गुरुत्वाकर्षण न हो, तो हजारो साल तक उसके शरीर मे कोई परिवर्तन नही होगा।

३—चिन्ता, भय, क्रोध व रोग के कारण मनुष्य बीमार और कमजोर होता है और मृत्यु का वह शिकार होता है।

४. प्रारब्ध कर्म—मनुष्य के जन्म के समय पिछले जन्म के सचित कर्मो मे से कुछ कर्म लेकर परमात्मा मनुष्य को जन्म देता है।

उस प्रारब्ध के अनुसार ही मनुष्यो का सुख दुःख भोग और आयु निश्चित होती है।

मृत्यु भय के कारण

१—अपरिचित का भय। २—अन्धेरे का भय।
३—अकेलेपन का भय। ४—जीवन से अतृप्ति।

जिस प्रकार कच्चा फल वृक्ष से स्वत नही टूटता उसी प्रकार ही जो मनुष्य जीवन से अतृप्त रहा है वह मरने से डरता है।

जर्मनी के दार्शनिक नीत्से ने कहा है वेद मे कहा गया है—उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय। हे ईश्वर मैं मृत्यु के समय शरीर से ऐसे छुट जाऊ जैसे पका हुआ खरबूजा लता से आसानी से अलग हो जाता है।

५—अतीत का मोह-अतीत काल मे आदमी अपने को सुरक्षित समझता है। भविष्य अनजाना होने से मानव उससे डरता हैं। इसलिए मरना नही चाहता।

६—कजूस व्यक्ति मृत्यु से ज्यादा डरता है। क्योकि जिसने अपना धन दौलत नही छोडा वह शरीर को कैसे छोड़ेगा।

७—अहकार—जिस व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति का अहकार रहा वह मृत्यु से ज्यादा डरेगा। क्योकि मृत्यु मे उसे सब छोडना पड़ेगा। गरीब आदमी मरने से नही डरता क्योकि उसके पास छोडने के लिए कुछ भी नही है। मृत्यु उस से कुछ छीन नही सकती। अमेरिका मे लोग मृत्यु से बहुत डरते है।

मृत्यु भय निवारण

बचपन से बच्चे को हम किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ कभी-कभी छोड़ते रहें तो वह किसी अपरिचित वस्तु से भयभीत नही होगा। बच्चे को हम कभी अपरिचित के साथ नही जाने देते। इसलिए अपरिचित का भय जीवन भर उसके साथ रहता है। मृत्यु से हमारा कोई परिचय नही है, इसलिए हम मृत्यु से डरते हैं क्योकि मृत्यु के समय व्यक्ति बेहोश हो जाता है। सामान्य रोग जुखाम या बुखार आदि से हमारा परिचय है क्योकि जब बुखार शुरू होता है तो हम होश में रहते हैं बुखार तेज होता है और उतर जाता है तो भी हम पूरे समय होश मे रहते हैं। इसलिए दोबारा जब भी कभी बुखार चढ़ता है तो हम उससे कभी भयभीत नही होते। हमें पहले ही पता चल जाता है कि अब बुखार चढेगा।

मृत्यु बेहोशी मे होती है इसलिए अनजानी रह जाती है। ध्यान के अभ्यास से यदि मनुष्य की चेतना का स्तर ऊंचा उठ जाए तो उसकी मृत्यु होश में होगी और अगला जन्म भी होगा। फिर जब मृत्यु होगी तब वह व्यक्ति मृत्यु से नहीं डरेगा।

इसी तरह बच्चे को हम कभी अन्धेरे मे तथा अकेले मे नही छोड़ते। अतः अकेलापन व्यक्ति को बहुत दुःखदायी होता है। यदि बच्चे को कभी-कभी अकेला छोडा जाये और अन्धेरे मे छोडा जाये (बच्चा अन्धेरे मे भयभीत नही होता) तो वह मृत्यु से भयभीत नही होगा। क्योकि मृत्यु हमें अकेला कर देती है, और अन्धेरे मे कर देती है।

ध्यान का अभ्यास करने से पचकोष विवेक होता है और मनुष्य को यह पता चलता है कि मृत्यु मे केवल मेरा शरीर समाप्त होगा मैं नही होऊगा।

वर्तमान काल मे रहने से मनुष्य मृत्यु से निर्भय हो जाता है। हमारा मन अतीतकाल की या भविष्य की बातें सोचता रहता है। वर्तमानकाल मे मनुष्य कभी भी अपने आपको सुखी नही समझता। मृत्यु के समय हमारे पास केवल वर्तमान काल ही रह जाता है।

इटली मे एक बार राजा ने अपने मन्त्री को फासी की सजा दे दी। निश्चित कर दिया कि अमुक दिन शाम को छ बजे फांसी होगी। उस मन्त्री को सगीत सुनने का बहुत शौक था। जिस दिन फासी लगनी थी उस दिन उसने एक बहुत सहभोज दिया अपने सम्बन्धी और मित्रो को बुलाया और संगीत का आयोजन किया। राजा ने सोचा कि उस दिन मन्त्री परेशान होगा। चार बजे राजा उसको मिलने गया, मन्त्री सगीत सुनने मे मस्त था। राजा ने बुलाकर कहा कि छ. बजे तुम्हे फासी होनी है और तुम्हे इसकी जरा भी चिन्ता नही है। मन्त्री ने कहा कि अभी तो दो घण्टे बाकी हैं छ. बजे तक मुझे सगीत सुनने दो, छ बजे मुझे बुला लेना। राजा ने देखा कि इस व्यक्ति को मृत्यु से जरा भी भय नही है। राजा ने उसकी सजा रद्द कर दी।

बचपन से मृत्यु को बुरा समझते है, इसलिए मृत्यु से भय लगता है।

अग्रेजी मे किसी ने कहा है कि मृत्यु की बातचीत करना बुरा है। यद्यपि प्रतिदिन हम मृत्यु के समीप पहुचते हैं।

साक्षी चैतन्य जागृत करने से मनुष्य को पता चलता है कि मैं कौन हू ? इससे पता चलता है कि मैं शरीर नही हू। वह मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। सिकन्दर जब भारत पर आक्रमण करने आया तो आते समय उसके गुरु ने कहा कि भारत से लौटते समय किसी सन्यासी को ले आना। सिकन्दर ने लौटते समय अपने सैनिको को भेजा कि किसी सन्यासी को ढूढ कर लाओ। सैनिको ने एक सन्यासी को ढूढा और उसे कहा कि हमारे साथ चलो। सन्यासी ने उनके साथ जाने से इन्कार कर दिया। तब सिकन्दर खुद तलवार लेकर आया और उस दण्डी स्वामी को कहा कि यदि मेरे साथ नही चलोगे तो मैं तलवार से तुम्हारा सिर अलग कर दूगा। दण्डी स्वामी ने हसते हुए उसे कहा कि क्या बच्चो वाली बातें करता है। जैसे तू मेरे सिर को गिरता हुआ देखेगा, वैसे मैं भी अपने सिर को गिरता हुआ देखूगा। यह सुनकर सिकन्दर बहुत शर्मिन्दा हुआ और उसे छोड़कर चला गया।

इस प्रकार जो व्यक्ति मृत्यु को जान जाते हैं, वे मृत्यु से मजाक करते हैं। जापान मे एक झेन फकीर मरते समय आसन लगाकर बैठ गया और शिष्यों को कहा कि लोग तो लेट कर मरते हैं, मैं बैठ कर मरूंगा। उसके एक शिष्य ने कहा कि मैने एक व्यक्ति के बारे मे सुना है कि वह बैठे-बैठे मरा था।

तब उस फकीर ने खड़े होकर कहा कि मैं खडा होकर मरूगा। उसके एक शिष्य ने कहा कि मैने एक व्यक्ति के बारे में सुना है कि वह खड़े-खड़े मरा था। तब उस फकीर ने कहा कि मैं शीर्ष आसन मे मरुगा। वह शीर्षासन लगाकर स्तब्ध हो गया। उसके शिष्य यह निर्णय न कर सके कि अभी भी वह मजाक कर रहा है या उसने प्राण छोड दिये हैं वे उसकी बहन को बुलाकर लाये, उसकी बहन ने कहा कि जीवन भर मजाक करते रहे हो मरते समय तो मजाक छोड़ो। मरना है तो ठीक ढग से मरो। यह सुनकर वह फकीर सीधा खड़ा हो गया और उसने कहा कि मैं ठीक ढग से मरता हू और लेट कर अपने प्राण छोड़ दिये।

मनो-वैज्ञानिको का कहना है कि यदि श्मशान घाट शहर के बीच मे हो तो हर व्यक्ति रोज मरे हुये लोग को देखेगा। उसके लिये मृत्यु एक सामान्य बात हो जायेगी और अपने मृत्यु के समय भी वह भयभीत नहीं होगा।

(शेष पेज ७ पर)

आर्य समाज के सम्मेलन में शराब कारखाना न लगने देने की घोषणा

जखराना १५ अप्रैल। आर्य प्रान्तीय महासम्मेलन एवं जखराना के ५०वें वार्षिक उत्सव के दूसरे दिन प्रातः यज्ञ, भजन व उपदेश आदि से कार्य प्रारम्भ हुआ। अपराह्न १ बजे आर्य समाज के वरिष्ठ नेता श्री छोटूसिंह आर्य की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें लगभग १० हजार लोगों की उपस्थिति थी। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, हैदराबाद अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली थे।

प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने अपना उद्बोधन करते हुये विश्वास दिलाया कि शराब बन्दी आन्दोलन में पूरे भारत वर्ष की जनता राजस्थान के साथ है। उन्होंने विशेष रूप से स्वयं हैदराबाद के होने के नाते उल्लेख किया किस प्रकार हैदराबाद में आर्यसमाज व महिला जागरण की वजह से सरकार को शराब बन्दी किये जाने पर बाध्य किया।

अध्यक्ष श्री छोटूसिंह आर्य ने राजस्थान में चल रहे शराब बन्दी आन्दोलन का उल्लेख करते हुए सारे खुर्द ग्राम तहसील तिजारा में जो १४००करोड़ रुपये की लागतका कारखाना केडिया ग्रुप अमरिकन कम्पनी की साठ-गाठ से लगाने जा रहा है का विस्तृत वर्णन किया। इस कारखाने में गेहूं से शराब बनाने की योजना है जिसमें ५० लाख लीटर पानी की दैनिक खपत होगी।

श्री आर्य ने घोषणा की कि अलवर जिले की जनता किसी प्रकार से शराब का कारखाना नहीं लगने देगी चाहे इसके लिये कुर्बानी देनी पड़े। उन्होंने कहा राजस्थान मे चलाये जा रहे आन्दोलन से शराब के खिलाफ जनमत रहा है, शराब की दुकान जगह-जगह लगाने का विरोध हो रहा है।

इस अवसर पर डा० कर्णसिंह यादव सवाईमानसिंह होस्पीटल जयपुर, श्री विमल वधावन देहली, श्री ओमप्रकाश झवर ब्यावर, प० विद्यासागर शास्त्री, प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर तथा अनेक आर्य नेता उपस्थित थे जिन्होने अपने विचार रखे। इस सम्मेलन का सचालन स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर ने किया।

कुछ सोचिये

१. हमारी आयु इस तरह घटती जा रही है, जिस तरह कि फूटे घडे मे से पानी टपकता जा रहा है। इस पर भी मनुष्य मै या अभिमान करता फिर रहा है। अभिमान ही परमात्मा के मिलन मे रुकावट पैदा करता है।

२. जब दुनिया के सभी कामो के लिये समय निकाला जा सकता है तो फिर परमात्मा की याद मे सत्-सग, भजन आदि के लिये समय न मिलने की बहाने-बाजी क्यो की जाती है।

३. बुरी सगत, बुरा खान-पान और बुरी पुस्तको को पढना-यह तीनो ही मानव स्वास्थ्य के दुश्मन हैं। इनसे सदा बचे।

४. शान्ति क्या है। संसारी लज्जतो-मौजो पर काबू पाना। दिल से काम क्रोध की गहरी जमी हुई मैल को उखाडकर फेंकना अथवा उसे मिटा डालना ही

५. दुनिया मे कौन कितना बडा धनवान है, इसकी परवाह न करो। देखना यह है कि आज जिन्दगी कैसे व्यतीत हो रही है। क्योकि सस्कार पर ही हम सबकी जिन्दगी की बुनियाद पडेगी।

६ दुनिया मे केवल एक ही सुख है, वह अपना कर्म और धर्म का अच्छी तरह निभाना।

७. परमात्मा के दरबार मे जात-पात कोई नही देखी जाती, वहा केवल भक्ति देखी जाती है। नीच से नीच भी भक्ति के [illegible] उचे कुल के अभिमानी नष्ट हो गये।

८. परमात्मा को मिलने के लिये एक पग आगे बढो और वह सौ पग तुम्हारी तरफ आगे बढायेगा।

९ परमात्मा दूर नही है केवल सच्चे भाव को मन मे पैदा करने की जरूरत है। सच्ची भावना पैदा हुई नही और परमात्मा के दर्शन हुए नही।

१०. सच्चे दिल से दिन मे एक बार परमात्मा का नाम लेना फलदायक है। बिना दिल और बिना लगन से घटो माला फेरते रहना अपने आप को और संसार को धोखा देना है।

वार्षिक शुल्क भेजिये

३५ रु० वार्षिक शुल्क और आजीवन सदस्य शुल्क ३५० रु० भिजवाने की व्यवस्था करेंगे धन भेजते समय अपनी ग्राहक स० अवश्य लिखे।

— सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली) के तत्वावधान में

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा

(पूर्वी दिल्ली)

विकास मार्ग नई दिल्ली-९२ की ओर से

विराट आर्य युवा महासम्मेलन

रविवार, दिनाक ३० अप्रैल १९९५, (विक्रमी सम्वत २०५२)

स्थान : आर्य समाज सी-ब्लाक, प्रीत विहार, नई दिल्ली-९२

समय प्रात ९ बजे से दोपहर १ बजे तक

—कार्यक्रम—

प्रात ९ बजे से १०-३० बजे तक सध्या व यज्ञ (व्याख्या सहित) ध्यान लगाने की विधि, बौद्धिक विकास कैसे। (यज्ञ मे केवल युवा ही यजमान बनाये जाएगें।)

प्रात १०-३० बजे से ११ बजे तक : भजन, गीत प्रतियोगिता

प्रात ११ बजे से १२ बजे तक भाषण प्रतियोगिता

विषय (१) ईश्वर कहा है। (२) दहेज प्रथा (३) भारत के निर्माण मे आर्य समाज का योगदान (४) महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकार

दोपहर १२ बजे से १ बजे तक विचार गोष्ठी विषय : नई पीढी और आर्य समाज

दोपहर १ बजे ऋषि लगर

नोट—भजन व भाषण प्रतियोगिता मे कक्षा ६ से कक्षा १२ तक के बालक/बालिकाए भाग ले सकते है।

—निवेदक—

दामोदर प्रसाद आर्य, प्रधान	सुरेन्द्र कुमार रैली, स्वागताध्यक्ष	पतराम त्यागी मन्त्री
दूरभाष २२५२५८२	२४१२५३०, २२४८७१४	२२२३४०३, २४६२३२१
विश्वमित्र मेघावी शास्त्री सयोजक	रवि बहल कोषाध्यक्ष	रोशन लाल गुप्ता सहसयोजक
(धर्माचार्य आर्यसमाज प्रीत विहार) फो० २४१२४२९		२४११७४१

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा (विकास मार्ग) दिल्ली-९२

सूर्यदेव, प्रधान, फो० ३२६४१२६ डा० धर्मपाल, महामन्त्री, फो. ७११२६७१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत का छटा वार्षिक उत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह

दिनाक २७, २८, २९ मई ९५

विद्या व धर्म प्रेमी बन्धुओं को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि गत पाच वर्षों से गुरुकुल मे शिक्षा कार्य ईश कृपा से अत्यन्त ही उत्तम ढग से चल रहा है।

इस वर्ष दिनाक २७, २८, २९ मई तदनुसार ज्येष्ठ कृष्णा १३, १४, १५ शनि, रवि, सोमवार को छटा वार्षिक उत्सव एव वेदारम्भ सस्कार समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर नये विद्यार्थियो को गुरुकुल मे प्रवेश दिया जायेगा। ५ कक्षा पास लगभग १० से १२ वर्ष की आयु के विद्यार्थी गुरुकुल मे प्रवेश पा सकेंगे। इसलिये जो सज्जन अपने पुत्रो को गुरुकुल मे पढाकर सुयोग्य, चरित्रवान, धर्मात्मा विद्वान सुपुत्र बनाना चाहते हो तो वह गुरुकुल मे प्रवेश दिलाने हेतु अपने पुत्रो को लेकर इस समारोह मे पधारे। विशेष जानकारी हेतु गुरुकुल नियमावली मगव ये।

इस समारोह मे उच्च कोटि के सन्यासी, महात्मा, विद्वान, भजनोपदेशक व राजनेता पधार रहे है, इसलिये धर्म लाभ उठाने की इच्छा रखने वाले आर्य बन्धु सपरिवार पधारे।

स्वामी धर्मानन्द

अंग्रेजी ने हमें क्या दिया

(पेज ३ का शेष)

देश व्यापी असहयोग आदोलन चलेगा। इसके लिए नौजवानों को स्वयं इस सभ्यता का मोह छोडना पडेगा। उन्हे अपने माडल बदलने होगे, अपना रहन-सहन बदलना होगा, प्रचार माध्यमो की मादक मोहक दुनिया से अपने को अलग करना होगा। उन्हें अपने घरो से ही अग्रेजी का और अग्रेजी से आई सभ्यता का बहिष्कार करना करना पडेगा। इसके साथ ही उन्हें एक वैकल्पिक व्यवस्था के लिए सघर्ष करना पड़ेगा। ऐसी व्यवस्था, जिसमे भ्रष्टाचार न हो, कामचोरी न हो, जिसमें सरकारी कर्मचारी जनता के प्रति अपने दायित्व को समझें, जिसमे सरकारी अफसरो और मन्त्रियो के नवाबी रहन सहन पर अकुश लगे, जिसमें जाति सम्प्रदाय और प्रदेश की सकीर्ण निष्ठाओ का स्थान व्यापक राष्ट्रीय निष्ठा ले, जिसमें समाज के उपेक्षित वर्गों और महिलाओ व बच्चो के अधिकारो को पूरी सुरक्षा मिले।

जाहिर है इस काम के लिए नौजवान लडके-लडकियो को तैयार करना आज बहुत कठिन है। फिल्म, टेलीविजन और विज्ञापनो की चकाचौंध वाली दुनिया ने जिन्हें मोह लिया है उनके लिए इस मोह छोड़ना आसान नही है। किन्तु मुझे उम्मीद है कि ऐसे नौजवान अभी जरूर होगे जो समाज और देश के भविष्य के बारे मे चिंतित होगे। उनकी सख्या कम ही सही लेकिन उनकी क्षमताए अनन्त हैं यदि एक प्रतिशत नौजवान भी देश के लिए त्याग और बलिदान करने को तैयार हो तो देश की वर्तमान निराशाजनक स्थिति को बदला जा सकता है। दुनिया के जितने भी बड़े आन्दोलन हुए हैं, उनकी शुरू आत कुछ मुट्ठीभर लोगों ने ही की है। एक प्रतिशत अनुशासित नौजवान तो विशाल जन-शक्ति बनेंगे। यदि वे गाधी जी के बताए हुए अहिसा के रास्ते पर चलते हुए कोई आन्दोलन चलाते हैं, तो उसे सफल होने से कौन रोक सकता है।

गत वर्ष शहडोल (म०प्र०) के कुछ नौजवानो ने चेतना मण्डल के नाम से एक सस्था बनाकर कुछ रचनात्मक काम करने का सकल्प किया था। इसमे कुछ बहुत अच्छे कार्यक्रम तय किए गए थे। व्यापक माहौल के अभाव में यह काम आगे नही बढ़ा। किन्तु यदि प्रत्येक कालेज, विश्वविद्यालय या गली-मोहल्ले मे नौजवान लड़के-लडकियो के छोटे-छोटे समूह भी काम करने लगे, तो इससे स्वत ही एक व्यापक माहौल बनेगा और आदोलन देशव्यापी रूप लेगा। सम्भावनाए कभी खत्म नही होती, उन्हें सिर्फ आगे बढना है।

('राष्ट्रभाषा' अगस्त, १९९४ के अक से साभार

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारों व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपये तथा आजीवन शुल्क ३५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषाक निःशुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखको के कथनों या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

मृत्यु मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती (पेज ३ का शेष)

मनुष्य को अपनी मृत्यु के काल्पनिक चित्र घर मे लगाने चाहिये। हम प्रति वर्ष अपना जन्म दिन मनाते हैं। उसकी बजाए अपना मृत्यु दिवस मनाना चाहिये (काल्पनिक)। तीन माह तक श्मशान में रहने से भी मृत्यु भय दूर होता है। महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों को तीन माह तक श्मशान घाट पर रहने का आदेश देते थे।

अपने आपको प्रकृति का हिस्सा समझो, जैसे पर्वत से कोई शिला टूट कर गिरती है। वैसे ही मनुष्य इस संसार मे अपने शरीर को मृत्यु के समय गिरता हुआ देखे।

चीन के दार्शनिक लाओत्से एक वृक्ष के नीचे बैठे हुये थे। हवा चली और एक सूखा पत्ता वृक्ष से टूटकर गिरा और उड़ने लग गया। इसी बात से उन्हे सत्य का ज्ञान हो गया। मनुष्य भी इसी प्रकार प्रकृति का अंग है।

इसी सम्बन्ध मे ऋषि दयानन्द के अंतिम शब्द विचारणीय हैं कि "हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

पुनर्जन्म पर ध्यान देने से मृत्युभय दूर होता है। यह मत सोचये कि मैं मर रहा हूं। अपितु यह सोचिये कि मेरा दूसरा जन्म होने वाला है।

आर्य समाज महरौली नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज महरौली नई दिल्ली का वार्षिक उत्सव दिनाक २० से २६ मार्च तक बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकाल विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया तथा रात्रि में पं० नन्दलाल निर्भय के भजन तथा वैदिक विद्वान भिक्षु दिवस्य पुत्र भारती के प्रवचन हुए। २६ मार्च को मुख्य कार्यक्रम तथा महर्षि बोधोत्सव जगदीश हाल मेहरौली में आयोजित किया गया। जिसमे दक्षिण दिल्ली की ५० आर्य समाजो ने भाग लिया। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो ने अपने विचार प्रकट किये। समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक कुमार आर्य तथा मंच सचालन आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामशरण दास आर्य ने कुशलता पूर्वक किया।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
D. L. No. 52387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 27,28 4-1995 Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/95
दि. रो पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५.
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक
३० अप्रैल १९९५

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान में अभिनन्दन समारोह

इस सभा की ओर से वैसाखी पर्व पर १३ अप्रैल १९९४ को एच-२८ अंगपुर विस्तार नई दिल्ली मे एक विशेष अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री आर्य मित्र बजाज। प्रचार मन्त्री, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा व वैदिक सत्सग समिति का मार्च ३१, ९५ को राजकीय सेवा से निवृत होने पर विशेष अभिनन्दन किया गया। उन्होंने अपना पूरा समय आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के लिए सर्पित करने का संकल्प लिया।

इस समारोह मे श्री सूर्यदेव जी कुलाधिपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, श्री रामनाथ सहगल, महामन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा व डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेठी व श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता जो इस सभा के उपप्रधान, आर्यसमाज लाजपत नगर के प्रधान और श्रीमती उषा शास्त्री व श्री हरिदेव जी आचार्य श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर का भी अभिनन्दन किया गया।

आर्यमित्र बजाज
प्रचार मन्त्री

रोशनलाल गुप्ता
महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभा की ने निम्न स्थानों पर प्रचार किया

आर्य समाज राणा प्रताप बाग, ३-४-९५ से ९-३-९५ तक
आर्य समाज हापुड शोभायात्रा मे, ८-४-९५ से ११-४-९५ तक
स्वामी स्वरूपानन्द जी प० तुलसी राम आर्य

आर्य समाज वोट क्लब पर आदि ने प्रचार वाहन सहित भाग लिया।

आर्य समाज नजफगढ १४, १५, १६ द्वारा ग्रामीण क्षेत्र मे शोभा यात्रा निकाली गई सभा की ओर से स्वामी स्वरूपानन्द व गुलाबसिंह राघव ने भजनों द्वारा प्रचार किया। आर्य समाज नरेला में ३ अप्रैल से ९ अप्रैल तक सभा की ओर से श्री चन्द्रपाल, किशन दत्त, फतेह चन्द आदि ने भजनों द्वारा प्रचार किया।

मुस्लिम युवक का वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्य समाज जगाधारी की ओर से ९ अप्रैल को आर्य कन्या उच्च विद्यालय में फरीदाबाद निवासी श्री नसीम ने स्वेच्छापूर्वक वैदिक धर्म ग्रहण किया। शुद्धि संस्कार के उपरान्त युवक का नाम पुनीत कुमार आर्य रखा गया। इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों नर नारियों ने पुनीत आर्य को आशीर्वाद प्रदान किया। आर्य समाज की ओर से उन्हे वैदिक साहित्य भेंट किया गया। शुद्धि संस्कार श्री विजयकुमार शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन: —३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक २७ रविवार, ७ मई १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५२ दयानन्दाब्द । १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

[illegible] एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ३० पौंड, १०० डालर दूरभाष । ३३१०१५०

पूर्वी दिल्ली में विराट आर्य युवक मेला

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पूर्वी दिल्ली के तत्वावधान में

आर्य समाज प्रीति विहार में ३० अप्रैल १९९५ को प्रातः ८ बजे से ४-३० बजे तक युवक [illegible] सम्पन्न [illegible] ।

पूर्वी दिल्ली की [illegible] आर्य समाजों के इस विशाल आयोजन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सहयोग [illegible] है [illegible] यज्ञ का [illegible] भी [illegible] द्वारा सम्पन्न किया गया। सारा वातावरण ही युवक मय था। लगभग २५० छात्र [illegible] का यह [illegible] अपने [illegible] से सराबोर था। संगीत, कविता, वाद-विवाद आदि में युवक [illegible] की [illegible] दृष्टि [illegible] हो रही थी। इस आयोजन में युवकों को प्रोत्साहित करने में कुछ [illegible] न थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री [illegible], मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री आर्य समाज के [illegible] स्वामी [illegible] स्वामी [illegible], दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री [illegible] आदि विशेष उल्लेखनीय हैं इस समारोह को सफल बनाने में क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी वर्ग भी बधाई के पात्र हैं। इस सम्मेलन ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि आर्य समाज के कार्यकर्ता चाहें तो युवकों को आर्य समाज की ओर आकर्षित बनाया जा सकता है आर्य समाज का क्षेत्र कितना विस्तृत है यह [illegible] [illegible] में [illegible] है।

आर्य समाज हमारा है

[illegible] "आर्य" विद्यावाचस्पति

मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ०प्र०)

तिमिराच्छन्न अवनि पर जिसने,
वेद ज्ञान की रश्मि बिखेरा।
तोड़ दिया जिसने निर्मम हो,
पाखण्डों का [illegible] घेरा।
आदि पुरुष से जगती तल का,
जिसने भाग्य सवांरा है।
वह आर्य समाज हमारा है॥

अन्यायों अत्याचारों का,
जिसने है प्रतिकार किया।
शूद्र तथा नारी को समुचित,
जिसने है अधिकार दिया।
वेद ज्ञान के बल पर जिसने
असुरों को ललकारा है।
वह आर्य समाज हमारा है॥

बचा रहा सम्पूर्ण धरा को,
सत्य धर्म की बातों से।
मानवता की रक्षा करता,
आडम्बर प्रतिघातों से।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम का
लगा रहा जो नारा है।
वह आर्य समाज हमारा है॥

डी.ए.वी. नैतिक शिक्षा संस्थान

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

प्रवेश सूचना

डी०ए०वी० संस्थाओं में धर्म शिक्षा का अध्यापन सुनिश्चित एवं स्तरानुकूल बनाये रखने के लिये इस संस्थान में संस्कृत के युवा विद्वानों को एक साल का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा तदुपरान्त डी०ए०वी० संस्थाओं में उनकी नियुक्ति को सुनिश्चित बनाया है।

प्रवेश योग्यता :—किसी गुरुकुल का स्नातक/संस्कृत में एम०ए० अथवा [illegible] विशेष प्रतिभा सम्पन्न ऐसे प्रशिक्षार्थी को भी प्रवेश दिया जाता है जिसने बी०ए० में संस्कृत पढ़ी हो अथवा जो हिन्दी में एम०ए० हो।

संस्थान में रहकर [illegible] पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों को भोजनादि हेतु ४०० रु० तथा संस्थान से बाहर रहकर नियम पूर्व प्रशिक्षणार्थ आने वालों को ३०० [illegible] छात्रवृत्ति रूप में दिये जाते हैं।

प्रवेश पाने के इच्छुक [illegible] आवेदन, एवं शैक्षिक योग्यता के प्रमाण पत्रों की [illegible] [illegible] तक भेज दें। प्रवेश परीक्षा (तिथि की सूचना [illegible]) [illegible] में होगी।

[illegible] शास्त्री, डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान,
आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

सत्यार्थ प्रकाश उपदेशामृत

सत्यार्थप्रकाश ऐसा ग्रन्थ है जिससे वैयक्तिक और सामाजिक, धार्मिक, और राजनैतिक, लौकिक और पारलौकिक, शारीरिक और आत्मिक सभी प्रकार के उत्थान की प्रचुर एवं वरिष्ठ प्रेरणाएं मिलती और सामग्री उपलब्ध होती है अपने मस्तिष्क को खुला रखने वाले पूर्वाग्रहों से मुक्त जिज्ञासु इसका अध्ययन और मनन करके इससे बहुत लाभ उठाते और उठा सकते हैं।

इस ग्रन्थ को निष्पक्ष भाव से पढ़ने की भावना पैदा करने और मुख्य-मुख्य शिक्षाओं से परिचित होने में बड़ी सहायता मिल सकती है।

प्रधान सम्पादक—[illegible]

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

आर्य कन्या विद्यालय समिति की अन्तरंग सभा

आर्य कन्या विद्यालय समिति की अन्तरंग सभा की बैठक दि ९-४-९५ को सायं ५ बजे सम्पन्न हुई जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया और सकल्प किया गया कि अलवर में समिति की ओर से इंजिनीयरिंग महाविद्यालय खोला जावेगा जिसमें सारे विषय होंगे। यह भी निश्चय हुआ कि यह महाविद्यालय मात्र छात्राओं का होगा। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए एक उप-समिति का गठन किया गया है।

यह पूरी योजना पर लगभग २ करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है जिसमे महाविद्यालय का भवन, छात्राओं का छात्रावास, वर्कशाप, इक्युपमेन्टस तथा स्टाफ आदि का खर्चा शामिल है। इस सारे कार्य की आपूर्ति के लिये दान दाता उदार मन से सामने आ रहे है। राजस्थान सरकार व नगर विकास न्यास से भी जमीन उपलब्ध किये जाने की योजना है।

सारे राज्य मे अपने किस्म का यह एक ही महाविद्यालय होगा। भारत सरकार व प्रातीय सरकार से पूरी सहायता की अपेक्षा है। अन्तरंग सभा में यह भी निर्णय लिया गया कि आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय आगामी सत्र मे विज्ञान वर्ग की ६० सीटें और बढ़ायी जावेगी जिसके लिए उचित कार्यवाही की जा रही है।

साक्षरता अभियान के अन्तर्गत चालू सत्र मे दो प्राथमिक विद्यालय लाजपत नगर व मालवीय नगर मे खोले है। अगले सत्र मे भी एक या दो प्राथमिक विद्यालय खोलने की योजना है।

छोटू सिंह आर्य एडवोकेट, अध्यक्ष
आर्य कन्या विद्यालय समिति-अलवर

तपोवन का ग्रीष्मोत्सव सुन्दरता से सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून। में ग्रीष्मोत्सव के कार्यक्रमो – बृहत् यज्ञ और योग-साधना शिविर का समापन रविवार २३ अप्रैल को श्रद्धा तथा पवित्रता के वातावरण मे हुआ। यज्ञ मे भाग लेने वालो ने यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती महाराज के कर-कमलों से सादर प्रसाद ग्रहण किया।

तदनन्दर आश्रम के विशाल प्रागण मे समागम आरम्भ हुआ। मच-पर सन्तो, महात्माओं, विद्वानों के सानिध्य मे आश्रम के न्यासी-गण उपस्थित थे। मनौर (हरि०) से आए हुए श्री जयदेव जताई वाले तथा उनके साथी ने भजनो द्वारा जहा उपयोगी प्रेरणाएं दीं, वही अपने आशुकवित्व और हास्यमय कथोपकथन से श्रोताओ का स्वस्थ मनोरंजन भी किया।

आचार्य आर्य नरेश जी ने अपनी ओजस्वी वक्तृता मे कहा कि बल का प्रयोग दुर्बलो की रक्षा और अन्याय को हटाने के लिए जिस समाज मे होता है और जहा त्याग और बलिदान की परम्परा होती है, वही समाज जीवित रहता है।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार ने एक वेदमन्त्र की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की जिससे उनके गम्भीर पाण्डित्य का ही प्रदर्शन नही होता था अपितु वक्तृता की व्यापक प्रभावोत्पादकता भी प्रकट होती थी।

युवा आकाशवाणी कलाकार श्री सुचित कुमार भारत ने भी रवीन्द्र जैन की रचना "हम आर्य पुत्र, हम आर्यश्रेष्ठ, आर्य समाज हमारा है" को भैरवी के स्वरो मे आबद्ध करके जो गाया तो हजारों श्रोता स्वर-लहरी मे बहते प्रतीत हुए।

कार्यक्रम का समापन ऋषि-लगर से हुआ।

देवदत्त बाली

आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर

आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर का वार्षिक चुनाव १२-४-९५ दिनाक बुढवार को चुनाव अधिकारी श्री भगतराम आर्य जी की अध्यक्षता में हुआ।

सर्वसम्मति से श्री भगतराम आर्य प्रधान चुने गए उनको कार्यकारणी बुलाने का अधिकार भी दिया गया है।

चन्द्रपाल आहूजा, मन्त्री

नमन तुम्हें है हे ऋषिराज

जगती के हित मे तुमने ऋषि, स्वयं गरल का पान किया।
सहकर सारे अपमानों को, हम-सबको अभिमान दिया।
स्वयं बने यह धरती जिससे, किया अभय हो वह शुचि काज।
नमन तुम्हे है हे ऋषिराज।

सत्य सनातन धर्म-वेद का, किया पुन: तुमने आवृत।
नहीं थके तुम, नही डरे तुम, आगे बढ़ते रहे सतत।
गौरव अन्वित कर भारत को, किया प्रशस्त स्वराज, सुराज।
नमन तुम्हें है हे ऋषिराज।।

ऋषियों के तुम वंशधर थे, मानवता के भाग्य-विधाता।
दलितों-विधवा तथा अछूतों, के तुम बने अमर त्राता।
वेदो का सन्देश दिया था, कर स्थापित आर्य समाज।
नमन तुम्हें है हे ऋषिराज।।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओं की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो एवं कर्मचारियों की एक बैठक आज सभा कार्यालय मे हुई जिसमें तपोभूमि पत्रिका के संपादक, वैदिक विद्वान, गुरु विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम के सस्थापक आचार्य प्रेमभिक्षु, एम०ए० साहित्यरत्न, सिद्धान्त शास्त्री (पूर्व नाम ईश्वरी प्रसाद प्रेम) के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख व शोक व्यक्त किया गया तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गयी कि वे दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त आर्य जगत व इष्टमित्रो को इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे। श्री आचार्य प्रेमभिक्षु जी ने अपना सारा जीवन आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे लगाया। उनके अकस्मात चले जाने से आर्य समाज की जो महान क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असम्भव है।

सूर्यदेव, प्रधान

आर्य समाज का "वैदिक यज्ञ एवं ग्रामीण प्रचार" अभियान

धर्म प्रेमी सज्जन महानुभाव !

सादर नमस्ते। सत्य सनातन वैदिक धर्म ही वर्तमान विषय परिस्थितियों में धरती को सर्वनाश से बचाकर एक सुखी, समृद्धिशाली, शान्त व सुसस्कृत समाज का निर्माण कर सकता है। ऋषि-मनीषियों द्वारा प्रतिपादित, भगवान राम एवं योगेश्वर कृष्ण द्वारा परिपोषित वेदो का मार्ग ही हमे सत्य, न्याय व प्रेम का पथिक बना सकता है। आइए ! हम वैदिक पथ पर चलने का सकल्प लें और निम्न कार्यक्रमो मे सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

राधेश्याम आर्य	राम कृष्ण	शमशेर बहादुर सिंह	राधे श्यामलाल	सतोष कुमार
अधिष्ठाता	प्रधान	प्रभाव	मन्त्री	सयोजक

जिला सभा सुलतानपुर आर्य समाज मुसाफिर खाना

वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद महायज्ञ

आर्य समाज इन्द्रपुरी का द्वितीय वार्षिकोत्सव आप सभी की प्रेरणा और सहयोग से बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ २८ अप्रैल से ७ मई १९९५ तक आयोजित किया जा रहा है।

इस विशाल समारोह के अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के संन्यासी महात्मा, विद्वान और भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप इन विद्वानों के धार्मिक आध्यात्मिक एवं भौतिकज्ञान से ओत-प्रोत सरल व सुमधुर उपदेशों से जीवन का असली लाभ प्राप्त करें। इसमें ही इस आयोजन की सफलता है। इस अवसर पर अनेकों अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया है।

देश भक्तो ने 'भारत माता' के लिए बलिदान दिया 'इण्डिया माता' के लिए नहीं। भारत के संविधान से 'इंडिया' शब्द हटाया जाए, यही देश भक्तो को शहीदी दिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि होगी

ले.—मांगेराम आर्य

भारतीय संविधान की पहली धारा/अनुच्छेद में देश का नाम "इण्डिया, दैट इज भारत" लिखकर देशभक्तों के बलिदान का अपमान किया गया है आगे संविधान में कहीं 'भारत' नाम का उल्लेख नहीं किया गया है।

तिरूनेलवेली पोलीगर लीग के प्रधान वीर पण्डया कट्टाबम्मन को १७ अक्तूबर १७९९ को फांसी दे दी गयी। चित्तूर की रानी चानम्मा ने ब्रिटिश जेल में ११ जुलाई १८१० को अन्तिम सांस ली। बुन्देलखण्ड में फरवरी १७४४ मे मधकोर शाह को फांसी दे दी गई। दक्षिण में मुबारिजुद्दौला ने ब्रिटिश जेल में १८५४ में अन्तिम सांस ली।

दिल्ली के राजा बहादुरशाह जफर ने अपील की "हिन्दुस्तान के बेटो, निश्चय करो—धर्म और देश को मुक्त कराना है" १८५७ में अनेक नगरो की दीवारो पर क्रांति के विज्ञापन लगे हुए थे—अब या कभी नही, भारत माता युद्ध करने जा रही है, आगे बढ़ो—आगे बढ़ो।

१८४४ में मेजर बोन्दन ने बैरकपुर की छावनी में वर्दी और वेतन मे ४ रुपये बढ़ाने की मांग करने पर उन सैनिको को तोपो से उड़ा दिया। ८ अप्रैल १८५७ को मगलपाडे ने फांसी के तख्ते पर झूलकर स्वाधीनता सघर्ष मे आहुति दी। मंगल पांडे का आदेश न मानने वाले जमादार ईश्वरीय पांडे को भी फांसी दी गई। १४ न० पलटन के सूबेदार को गुप्त सभाएं करने के अपराध मे फांसी दे दी गई।

कश्मीरी गेट दिल्ली शस्त्रागार पर अधिकार करने के प्रयास में ११ मई १८५७ को ३०० के लगभग नागरिक और सैनिक शहीद हुए। १६ मई को दिल्ली मे अंग्रेजी शासन का कोई चिन्ह नहीं था। बादली (दिल्ली) की सराय पर ग्राम नरेला के रामकिशन शहीद हुए। २५ अगस्त १८५७ को नीमचवाली नवाबो और शहजादो की पलटन को नजफगढ़ मे अंग्रेजो ने नष्ट कर दिया। बहादुरशाह जफर की रंगून कारावास मे ७ नवम्बर १८६२ को मृत्यु हो गई। दिल्ली मे अंग्रेजो ने कत्ले आम किया। दिल्ली के अलीपुर गांव के ३६ देशभक्तों को फांसी दी गई। ग्राम बाकनेर के गुलाबसिंह और उसकी बहन को पेड़ो के साथ कीलों से जड़ दिया। वे बलिदान हो गए। उदमीराम (लिवासपुर सोनीपत) को एक वृक्ष से बांध दिया गया। वह भूखा प्यासा ३५ दिन पश्चात बलिदान हो गया।

पंजाब में सैनिकों ने ग्रामवासियों को पंक्ती में खड़ाकर फांसी पर लटका दिया। होती मदान की ५५वीं रेजीमेंट के अधिकांश सैनिक बलिदान हो गए। अंग्रेज अधिकारियों ने कश्मीर में नृशस हत्याकाड किया। क्रान्तिकारी रावतुला-राम (रिवाड़ी) काबुल मे २३ सितम्बर १८६३ मे अन्तिम सांस ली। झज्जर के नवाब अब्दुल रहमान और बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह को चादनी चौक कोतवाली (दिल्ली) मे फांसी दी गई। इस क्षेत्र के अन्य ३२६ बलिदानियो की सूची प्राप्त है। दादरी (उत्तर प्रदेश) के राव रोशन सिंह के २ पुत्रों बिशन सिंह और भगवन्त सिंह को फांसी पर लटकाया गया। बनारस मे अंग्रेजो ने क्रांतिकारियों को ८ व ९ के आकार में पेड़ो पर फांसी पर लटकाया। गाव के गाव जलाकर नष्ट कर दिए। भागते हुओ को गोली से उड़ा दिया। इलाहबाद मे अंग्रेजो ने ६ हजार स्वतन्त्रता सैनानियों को फांसी पर लटकाया। २९ जून १८५७ को नाना साहब के नये दरबार में 'राजा रामचन्द्र की जय' का नारा लगाया।

कानपुर में अंग्रेजों ने असंख्य देशभक्तों को फांसी पर लटका दिया। जीवित शहीद नाना साहब १९०२ में स्वर्ग सिधारे। इटावा में अंग्रेजों ने २०-२५ क्रांतिकारियों को बम से उड़ा दिया। क्रान्तिकारी जंगली हुए शहीद हुए।

लखनऊ के सिकन्दरा बाग में देशभक्तों की लाशों के ढेर हो गए। मौलवी अहमदशाह (अवध) को धोखे से कत्ल किया गया। बिहार के पीर अली ने फांसी के तख्ते पर चढ़कर कहा था, "तुम मुझे फांसी दे सकते हो, किन्तु हमारे सिद्धांत और आदर्श नहीं ले सकते। वीर कुंवरसिंह २४ अप्रैल १८५८ को स्वर्ग सिधार गए। कुंवर सिंह ने अन्तिम संदेश में अपने भाई अमर को कहा, जिस वतन के लिए वीरों ने खून बहाया है उसकी रक्षा करना, अमर!" जगदीशपुर में रहने वाली वीरांगनाओ ने तोप के मुंह के सामने खड़ी होकर देश के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी। १७ जून १८५८ को महारानी झांसी ने रणभूमि मे बलिदान दिया। उड़ीसा के सबलपुर के राजा सुरेन्द्र शाही को १८६२ मे देश से निकाल दिया। कोटा (राजस्थान) के वीर जयदयाल को तोप के मुंह मे बाध कर उड़ा दिया गया। असम के दीवान मनीराम दत्त और उसके साथी प्याली-बरूआ को फांसी दी गई।

वीर शिरोमणि तांत्या टोपे को फांसी पर लटकाया गया। पेशवा राव साहब को २१ अगस्त १८६२ को फांसी दे दी गई। १८६४ से १८७१ तक अनेक वहाबियों (मुसलमानों का एक सम्प्रदाय) को फांसी पर लटकाया गया। १८६१ से १८७२ तक असंख्य कूके (पजाब) रणभूमि में बलिदान हुए। ४८ को तोप से उड़ा दिया गया। अंग्रेजों ने कूका नामधारी एक बच्चे को यह कहा कि तू यह कह दे कि मैं गुरु रामसिंह का चेला नहीं हूं। इस पर उस वीर बालक ने उस अंग्रेज अधिकारी की दाढ़ी खींच ली। अंग्रेज ने अपनी दाढ़ी छुड़ाने के लिए उस देशभक्त गुरु, भक्त बालक के हाथ काट दिए, और फिर उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। गुरु रामसिंह १८८५ मे रंगून की जेल में स्वर्ग सिधार गए।

राजनारायण बोस ने 'हिन्दूमेला' का वार्षिक आयोजन आरम्भ किया। तिलक ने 'गणेश पूजा' 'शिवाजी जयन्ती' और 'महाराणा प्रताप जयन्ती' के आयोजन का शुभारम्भ किया।

कांग्रेस समर्थित पत्र 'तरुण भारत' केवल भारतीयो की मागें प्रकाशित करता था। १८८२ मे बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा रचित अमर गीत 'वन्देमातरम' के गाने पर अनेक देशभक्तों ने गोलियां खाई।

२८ दिसम्बर १८८५ को ब्रिटिश सरकार के अवकाश प्राप्त आई०सी०एस० अधिकारी सर एलन आक्टैवियन ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की। इस कांग्रेस अधिवेशन का समापन महारानी विक्टोरिया की जय के जयकारों के साथ हुआ। १८८५ से १९०५ तक कांग्रेस ने स्वराज्य की कोई मांग नही की।

आधुनिक भारत निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है "जब से…विदेशी शासक राजसत्ता सम्भाल बैठे है, तब से बराबर भारतवासियो मे दुख की वृद्धि होती जाती है" गुरुवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा कि दयानन्द ने भारत को जागृत किया। लोकमान्य तिलक ने कहा 'स्वराज्य के सर्वप्रथम संदेश वाहक थे। दादा भाई नौरोजी ने कहा, "मुझे स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो से स्वराज्य की लड़ाई में बड़ी प्रेरणा मिलती है।" १९०७ मे उपराज्यपाल पंजाब ने आर्य समाज को राजद्रोही गतिविधियो का केन्द्र बताया। विपिन चन्द्र पाल का कहना है, आधुनिक राष्ट्रीय चेतना का जन्म आर्य समाज से हुआ।" १८९३ से १९४७ तक अधिकांश देशभक्त आर्य. शिक्षण संस्थाओं से प्रभावित रहे।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा, "यदि तुम अपने देश का कल्याण करना चाहते हो तो प्रत्येक को गुरु गोविन्द सिंह बनना होगा। सर सैयद अहमद खां ने कहा कि हिन्दू मुसलमान सुन्दर दुल्हन की दो आंखे है। इसमें एक आंख को चोट पहुंचे तो चेहरा बदल जाएगा। १९१० मे देश से निष्कासित अरविन्द घोष ने कहा, "हमारे राष्ट्रीय जीवन की पूर्ति स्वराज्य है।" जीवित शहीद लोकमान्य तिलक ने अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मिलने पर कोई आंसू नहीं बहाया और कहा, 'मैं अपने सारे आंसू अपनी मातृभूमि के लिए बहा चुका हूं।' (क्रमशः)

पर काया प्रवेश सम्भव हैं

सोहन लाल शारदा शाहपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान

जनवरी सन १९९५ के 'दयानन्द सदेश' दिल्ली के अंक मे एक लेख उपरोक्त शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। जिसमें कहा है कि—"पर काया प्रवेश को कल्पना मिथ्या, निराधार, अवैज्ञानिक, तथा सृष्टि क्रम के प्रतिकूल होने से अवैदिक है।" लेकिन भगवान पतजली जी महाराज ने योग दर्शन में विचार निर्देश करते हुए कहते हैं कि—

बन्ध करण शैथिल्यात प्रचार संवेदनाच्च चित्तस्य पर शरीरा वेश. ।
(योग दर्शन ३-३८)

इस विचार पर अपनी समीक्षा करते हुए भगवान दयानन्द जी महाराज ने योगी के आत्म चरित पृष्ठ १५६ पर यह कहते हैं कि—

"महर्षि पतजलि का कहना है कि जिस कारण से चित्त एक मात्र इस शरीर मे ही आबद्ध है इस कारण को हटा देने से अर्थात चित्र के बन्धन को ढीला कर देने से और चित्त के प्रचार-स्थान (शरीरस्थ नाड़ी समूह) जानने से चित्त को योगी दूसरे के शरीर मे प्रविष्ट कर सकता है।" महर्षि जी महाराज फिर आगे कहते हैं कि :—

सयम और समाधी के द्वारा चित्त बन्धन को व धर्माधर्मो को अगर शिथिल कर दिया जाय तो चित्त अपने स्वभाव सर्वगामित्व की स्वाधीन शक्ति को प्राप्त होता है।"

पुन: इसका ही और स्पष्टीकरण करते हुये साधारण शब्दो मे भी कहते है कि "योगी अपने शरीर को छोड़कर दूसरे के शरीर मे अपने मन प्राण इन्द्रियों को संस्थापित करके इच्छानुसार आहार विहारादि कर सकते हैं,

महर्षि ने व्यास आश्रम बचाणेद-कर्णसी मे लगातार तीन वर्ष पर्यन्त संयम साधना योगाभ्यास करने के पश्चात गुरुओं के आदेशानुसार पूरे तीन वर्ष पर्यन्त आबुंद श्रृंग की राम गुफा मे अवस्थित रहकर उग्र तप धारक बन योग जन्य कुछ विभूतियो को प्राप्त की थी। इन विभूतियों के साक्षात्कार हेतु ही धारण-ध्यान-समाधी के कठोर तक नियमों का पालन किया था। अत: गुरुओं को परीक्षा देते समय कहा था कि पातजल योग दर्शन मे वर्णित विभूतियों में से मेरे ध्यान मे आ चुकी है। मैं अब इन विभूतियों के कारण ही बिना अन्न जल के दो महीने तक रह सकता हू। इस प्रकार अन्य भी बहुत सी विभूतियों के बारे मे मेरे अनुभव हैं। तभी गुरुओं ने आदेश किया कि—"हे दयानन्द! तुम द्वितीय श्रेणी के योगी बन गये हो तुम इन योग की शक्तियों को अपने शरीरिक या मानसिक स्वार्थ साधना मे प्रयोग मत करना।"

इतना उपदेश करने पश्चात पुन. आगे के लिए भी कर्त्तव्य निर्देश करते हुए कहते हैं कि—"पदार्थ में और जगत के हित के लिए ही इन विभूतियो का व्यवहार करो। तुम्हारे स्वयं के लिए तो केवल मात्र कैवल्य लाभ की हो विभूति है।

इस प्रकार गुरुओं ने जो आदेश किया था कि महर्षि ने इन विभूतियों का प्रयोग आर्यावर्त्त व आर्य जनो के लिए ही किया था। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप मे उनकी महान विभूतियों का ज्ञान हमे नहीं के बराबर है। फिर भी कही न कही प्रवचनों मे लेखों मे व परस्पर वार्ता करते हुये श्री श्री मुख से कुछ कुछ योग जन्य विशेषताओ का वर्णन हो ही जाता था। जैसे उदाहरण के तोर पर की —तुमने साप देखा है। तुम्हारे पिता जी आ गये हैं, इस सेवक के पांच जूत लगा दो। छाता लेकर आते तो अच्छा रहता। गाड़ी मे एक बैल सफेद और एक लाल धब्बे हैं।

और तो और अपने ब्रह्म लीन होने के पूर्व सिर्फ पाच मिनट शेष पर भी कहते हैं कि "प० सुन्दर लाल आ गये हैं।" भक्तजनो ने इधर उधर देखने पश्चात ही करने लगे के स्टेशन पर है आ रहे हैं। स्मरण रहे अजमेर स्टेशन से भिणाय भवन जो वर्तमान मे स्मृति भवन के नाम से प्रसिद्ध है रास्ता पैदल का सिर्फ दस मिनट से भी न्यून का ही है। जब तक पण्डित जी भिणाय कोठी मे पहुचे तब तक पूर्व ही महर्षि ब्रह्म लीन हो चुके थे।

ऐसे ही प्रत्यक्ष कहें चाहे परोक्ष योगीराज को पृथ्वी के धरातल से एक फुट भर करीब ऊपर उठकर झूलते हुए भी देखा जाना जीवन चरित्र में प्रसिद्ध ही है। अत: हम सभी भक्त महर्षि के आर्यजन यही मानते चले आ रहे हैं कि महर्षि सच्चे योगी थे।

एक बार कुछ विशेष महत्वपूर्ण आश्चर्य युक्त जीवन की घटनायें सुनाई थी मेरठ में आर्य जनों को जो देवेन्द्र बाबू कृत जीवनी के पृष्ठ ५३८ गोविन्द राम हासानन्द २०५० विक्रमी सस्करण मे प्रकाशित निम्न प्रकार से है।

"आप इस समय आश्चर्य करते हैं कि मैं इतनी दूर तक वायु सेवन हेतु जाता। परन्तु अवधूत दशा में चालीस-चालीस मील चलना मेरे लिए कोई बात नहीं थी। मैं एक बार गंगोतरी से गंगा सागर तक और एक बार गंगोत्री से रामेश्वर तक गया था। बद्रीनाथ मे रहकर मैंने गायत्री का जपानुष्ठान किया था। रात्रि मे जब तेल नहीं रहता तो मैं बाजार की दीपक मे पढता था। मैं लगातार कई दिनों तक मध्याह्न की तप्त रेण मे तपा हूँ एव हिमाच्छादित पर्वतों में और गंगा तट पर नग्न व निराहार सोया हूं।" अजमेर प्रवास में भी जब एक पाश्चात्य विज्ञान वेत्ता ने योग की सिद्धियों पर वार्ता की तो प्रथम तो युक्तियों के द्वारा प्रमाण सहित मत्य का निरूपण करते हुए यह भी कहा कि :—"आप समझते है कि इतना बड़ा कार्य योग सिद्धि के बिना ही कर रहे है।" तभी वह विज्ञान वेत्ता शान्त हो गया। (पुस्तक वही पृष्ठ ५९०)

जब श्री महाराज का कलकत्ता मे प्रवास हुआ तभी प्रसिद्ध विद्या विशारद ईश्वर चन्द्र विद्यासागर व कतिपय विज्ञजनो ने यह कहा कि हम युक्ति युक्त व्याख्या के सहित पातजल योगदर्शन की विभूतियो का वर्णन सुनना चाहते हैं। पुस्तकों मे ज्ञान का रहस्य तो मिल जाता है। लेकिन साधना का रहस्य नहीं मिलता।

(शेष पेज ६ पर)

दयानन्द का अमर सन्देश

डा० महेश विद्यालंकार

भारत ऋषि और कृषि प्रधान देश है। भारत भूमि को ऋषियों मुनियों, सन्तों और महापुरुषों की लम्बी परम्परा प्राप्त हुई है। इन दिव्यात्माओं ने समय-समय पर देश-जाति, धर्म संस्कृति जीवन मूल्यों तथा परम्पराओं की रक्षा तप-त्याग तपस्या और बलिदान से की थीं। इसी कारण भारत की ससार मे एक अलग पहिचान बनी। इस पहिचान के मूल्य मे धार्मिक, सास्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक तथा वैयक्तिक मूल्य व जीवन दृष्टि रही है। इन्ही महापुरुषों की शृंखला में स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम संसार बडी श्रद्धा भक्ति और आदर से लेता है। उनका व्यक्तित्व व कृतित्व महान था। उनके व्यक्तित्व मे चुम्बकीय शक्ति थी। उनके हृदय मे आस्तिकता, धार्मिकता और मानव कल्याण की भावना कूट-कूट कर भरी थी। इसलिए उनका आद्यन्त जीवन उपकारक प्रेरक एव मार्ग दर्शक बना। उनका ससार को प्रत्येक क्षेत्र मे प्रेरक एव सत्यमूलक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका आगमन ससार मे सत्य-सनातन वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिए हुआ था। उन्होने संसार को सच्चा-सीधा, सरल और कल्याणकारी मार्ग दिखाया। उनके द्वारा दिखाया गया मार्ग आज भी भूली भटकी अज्ञान, पाखण्ड, रोग शोक चिन्ता दु.खो पापों आदि में फसी मानव जाति का प्रकाशस्तम्भ बन सकता है। सक्षेप में उनके महत्वपूर्ण सदेश निम्नलिखित हैं।

ईश्वर और धर्म का सच्चा स्वरूप

आज ससार मे जितना अज्ञान, पाखण्ड झगडे व्यापार और मतभेद ईश्वर तथा धर्म के नाम पर हैं उतने अन्य किसी के लिए नही है कारण है कि हमें ईश्वर व धर्म का सच्चा वास्तविक स्वरूप मालूम ही नहीं है। हमने ईश्वर और धर्म को बाहर की तथा खरीद फरोख्त की चीज समझ रखा है हम इन दोनो को बाहर की दुनिया में खोज रहे हैं जबकि वे दोनों ही अन्दर की हैं। ऋषि ने हमे जगाया और बताया कि प्रभु इस सारे ससार का स्वामी है। यह सारा ससार उसका मन्दिर है। यहां जितने भी प्राणी हैं वे सभी उसकी चेतन मूर्तियां हैं। उसको प्रसन्न करना है तो उसके बनाए जीवों से प्रेम करो। उसको जानना है तो ज्ञान के नेत्र खोलो। वह सर्वत्र कण-कण में विद्यमान है। उसकी अनुभूति होती है। हमारा हृदय ही उसका मन्दिर है। इस मन्दिर को स्वच्छ सात्विक धार्मिक और पवित्र बना दो। तभी उसका अनुभव होगा। देव दयानन्द ने कहा धर्म को पहिचानो और उसका आचरण करो। सम्प्रदायो को छोडो। सम्प्रदाय ही झगडे कराते है। धर्म मानवता का पाठ पढ़ता है। परस्पर प्रीतिपूर्वक सहयोग तथा सहानुभूति से जीना सिखाता है। धर्म का सम्बन्ध कर्म से है। जब तक कर्म नही किया जायेगा धर्म मात्र वाचिक बनकर रह जायेगा। यही हो रहा है। धर्म घट रहा है। प्रदर्शन बढ़ रहे हैं। धर्म व्यापार बनता जा रहा है। आज धर्म पर सम्प्रदाय हावी हो रहे हैं। धर्म पालन से मानव देवत्व को प्राप्त करता है। धर्म आत्मानुशासन सिखाता है। धर्म बाहर के आडम्बर प्रदर्शनो जुलूस और जलसो से नही ठहरता। यह तो कर्त्तव्यबुद्धि से फलित होता है। ऋषि ने हमें धर्म का सच्चा मार्ग और स्वरूप दिखाया। आज इसी सच्चे धर्म के स्वरूप और मार्ग ही मानवता की पुकार हैं।

वेदो की ओर लोटो।

दयानन्द ने जो वेद के लिए कार्य किया वह अभूतपूर्व एव स्वर्णाक्षरो में अंकित करने योग्य है। उन्होंने वेद को ईश्वरीय ज्ञान के पद पर प्रतिष्ठित किया। "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक" ऐसा किसी अन्य ने नहीं कहा है। जो आज वेद का पठन पाठन, प्रवचन श्रवण चिन्तन दर्शन आदि हो रहा है; इसके मूल मे ऋषि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होने लोगो को आग्रह किया मेरी नही वेद की मानो।' वेद ज्ञान प्रभु का सविधान है। वेद का ज्ञान मानव मात्र को वायु जल, प्रकाश आदि की तरह वरदान के रूप में मिला है। वेद मानव मात्र की सम्पदा है। वेद मानव जीवन की आधार संहिता है। वेद धर्म अर्थ, काम, मोक्ष का मार्ग दिखाते हुए मानव को अपने उद्देश्य की ओर चलने का मार्ग दिखाते हैं। वेद मार्ग पर चलने से जीवन में सच्ची सुख शान्ति और आनन्द प्राप्त होता है। आज आवश्यकता है—वेद ज्ञान को जीवन और जगत् के साथ जोडने की। तभी मानव इस धरती पर चैन से जी सकेगा।

मानवता

वेद का अमर सदेश है 'मनुर्भव' मानव तू मानव बन जा। ऋषि सारे संसार को मानवता का पाठ पढ़ाने आए थे। जगत के सारे प्राणी ईश्वर की सन्तान हैं। संसार मे जीव अपने कर्मानुसार आता है। अपने कर्मानुसार जाता है। दुनिया मे सबसे बड़ा धर्म मानवता कहलाता है। यह मानवता मानवीय जीवन मूल्यों से आगे बढ़ती है। इसी कारण सर्वत्र असन्तोष, विद्रोह, अशांति, झगड़े छीना-झपटी, मारकाट हो रही है। हमने मानवता के मूल चिन्तन को पकड़ा नही। हम मानव होकर भी संसार में ऐसे कर्मों की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। जिससे दानवता को भी शर्म आने लगी है। आज हर कोई मानवता का गला घोटकर अपने को आगे बढाने की होड़ मे भागा जा रहा है। व्यक्ति टूट रहा है। परिवार टूट रहा है। समाज रूठ रहा है। राष्ट्र कट रहा है। इसके मूल में यही पीड़ा छिपी हुई है कि आज मानव-मानव न बनकर मशीन बन रहा है। दयानन्द का आज के ससार को यही अमर सदेश है कि मानव बनकर मानवता के मूल्यो को धारणकर धरती पर जियो। तभी जीवन सफल और सार्थक बन सकेगा। ऋषिवर की शिक्षाए उपदेश सन्देश और प्रेरणाए तो प्रत्येक क्षेत्र के लिए प्राप्त है। आज आवश्यकता है उनको क्रियात्मक रूप देने की। तभी उनके नाम के साथ अपने को जोडने की सार्थकता सिद्ध होगी।

पता—बी-जे-२६, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-५२

चुनाव समाचार

आर्य समाज सिकन्दराबाद जि० बुलन्दशहर उ०प्र० का वार्षिक निर्वाचन श्री नरायण सिंह जी आर्य की अध्यक्षता मे दि० २६-३-९२ को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री राम स्वरूप जी आर्य, मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद कौशल, कोषाध्यक्ष श्री दुर्गाप्रसाद जी गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष श्री विधिचन्द जी गुप्ता

पर काया प्रवेश सम्भव हैं

(पेज ४ का शेष)

इस पर इस महान योगेश्वर ऋषी ने कहा कि "मैं अवश्य ही इन सभी विभूतियों पर प्रकाश डालूंगा। आप लोग और भी अनेक जब इन सबको जादू विद्या, जाकिनी विद्या या कुहुकं विद्या समझ लेवेंगे। ऐसा समझ लेने से मुझको कुछ भी आपत्ति नही हैं।

(योगी का आत्मा चरित्र पृष्ठ १३२)

महर्षि तो साधना में लीन रहकर समाधी पाद तक पहुंच चुके थे। लेकिन गुरुओं के आदेश पर केवल प्रभु चिन्तन पर ही इन विभूतियों को अपने अन्दर ही गुप्त रूप से संजोये रखा। और शेष अपनी सम्पूर्ण शक्ति को आर्य राष्ट्रोन्नति व आर्य जनो की उन्नति में ही लगा दी थी। इसी लिये ही हम गर्व से गाते है कि— "हे दयानन्द तेने एते जन तारे नभ में न तारे है, "ऋषि तेरा भेद नहीं पाया।" "तेरी बात पर कितने ही शहीद हो गये।"

यह तो ध्रुव सत्य ही है कि ऐसी महान आत्मा विगत पांच हजार वर्ष पश्चात भगवान कृष्ण के सदृश आई थी। हम बिना विचारे ही कुछ का कुछ लिख देवे यह उचित प्रतीत नहीं होता है। महर्षि ने सर्वदा ही सत्य का पक्ष ग्रहण किया है। जब पातला देश से युगल दम्पती श्रीमती ब्लेवेट्स्की व कर्नल अल्काट मेरठ में श्री महाराज से मिलना हुआ वहां एक प्रश्न जो कर्नल जी महोदय ने पूछा था वह इसी देवेन्द्र बाबू के नूतन संस्करण के पृष्ठ संख्या ५३३ व ५३४ पर निम्न प्रकार से हैं।

योग की शक्ति—एक दिन कर्नल अल्काट ने श्री स्वामी जी कहा कि मुझे और श्रीमती को इस बात की शका है कि श्री स्वामी शकराचार्य जी महाराज ने अपनी आत्मा को एक राजा के शरीर में जो उसी दिन मरा था, प्रविष्ट कर दिया इसमे सत्य क्या है। उत्तर मे श्री भगवान दयानन्द जी महाराज ने जो कुछ कहा वह प्रत्येक शकालू जनों के ध्यान देने योग्य हैं। महर्षि कहते हैं कि :—

"यह एक विचित्र ही बात है कि मैडम के समान योग विद्या में प्रवीण लोग के इस विषय मे शंका करे। अपनी वार्ता जारी रखते हुए आगे कहते है कि— "मैं प्रथम श्रेणी का योगी नहीं हूं। केवल मध्यम कोटिका ही हूं। फिर भी मैं अपनी चेतना शक्ति को शरीर के किसी एक भाग मे केन्द्रित कर सकता हूं। अर्थात उस भाग को छोड़कर मेरे अन्य सभी भाग मृतवत हो जायेगे। यदि आप चाहे तो यह दृश्य मैं दिखा सकता हूं। जब मेरा जैसा मध्यम कोटिका योगी इतना कर सकता है तो यह सम्भव है कि एक उच्च कोटि का योगी इससे एक पाद आगे, बढ़कर अपनी आत्मा को दूसरों के शरीर में प्रवेश कर सके।"

वह तो सत्य ही है कि महर्षि की प्राण लेवा भयकर बिमारी से बाहर और भीतर सम्पूर्ण पर एवं जिह्वा से पेट के अन्दर छाले ही छाले काल कूट विष के प्रभाव से, हों चुके थे। फिर भी चेतना शक्ति से शून्य नही थे। शान्त, गम्भीर, सहनशील इस अजीब मूर्ति को देखकर ही चिकित्सा के लिए, आये हुए सर्जन डाक्टर न्यूमैन ने आश्चर्य चकित होकर कहा था कि अत्यन्त विशाल कार्य, सुदृढाग, वीर और रोग को सहन करने वाला है। रोग महा असाध्य और असहनीय है। फिर भी यह अपने को दुखी नहीं समझता या मानता है।

यह सब योग का ही चमत्कार था।

फिर भी आर्य विद्वज्जन मनीषी अपने-अपने विचार देने की कृपा करें। ताकि वास्तविकता व महर्षि के पूर्ण योगी होने पर हमारी श्रद्धा अधिकाधिक बनी रहे। महर्षि के कार्य कलापों विचार धारा के विपरीत कुछ भी कहने का साहस नही कर सके, कोई भी।

चुनाव समाचार

१-४-९५ शनिवार को आर्य समाज मन्दिर पीपाड़ शहर का निर्वाचन निम्नानुसार श्रीमान् वृजवल्लभ जी खण्डेलवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रधान-श्री आर्य वृजवल्लभ जी खण्डेलवाले, मन्त्री श्री आर्य देवेन्द्र कुमार टाक, कोषाध्यक्ष श्री आर्य जवाहर लाल जी जडीया, लेखा निरीक्षक श्री आर्य प्यारे लाल जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री आर्य पदमसिंह जी सैनी, प्रचार मन्त्री श्री आर्य सुगन चन्द जी सोलंकी।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य दल वीर परिमण्डल कानपुर
दिनांक २५ जून ९५ दिन रविवार से २ जुलाई ९५ दिन रविवार तक

आर्य समाज मन्दिर, औरैया

संयोजक—डा० अजबसिंह यादव प्रधानाचार्य वैदिक इण्टर कालेज दिबियापुर

आज समाज मे नैतिक मूल्यो में गिरावट, वर्ग भेद, अनुशासन हीनता, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, मादक पदार्थों का सेवन आदि बहुत सी विकराल समस्यायें हैं। राष्ट्रीयता, नैतिकता एवं धार्मिक भावनाओं का संचार करते हुए सच्चरित्र नागरिक बनाना, अन्याय, अभाव व अज्ञान को मिटाना आदि उच्च उद्देश्य लेकर आर्य वीर दल आपके समक्ष है।

इन सकल्पों को क्रियात्मक रूप देने के लिए यह प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है, इसमें प्रातः जागरण से रात्रिशयन तक पूर्ण दिनचर्या सुन्दर ढंग से चलायी जाएगी। आसन, प्राणायाम योग, संध्या हवन जूडो कराटे (निजुद्ध) लाठी आदि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आप से अनुरोध है कि इस शिविर हेतु—

(१) युवाओ को प्रेरित करके प्रशिक्षण हेतु नामांकन कराए स्थान सीमित हैं।

(२) शिविरार्थियों के प्रति परिवारी जनों का भाव रखते हुए तन मन धन से सहयोग करें।

शिविर हेतु सम्पर्क करें—

इटावा मण्डल—

(१) डा० अजबसिंह यादव—प्रधानाचार्य वैदिक इण्टर कालेज दिबियापुर।
(२) लक्ष्मीनारायण शास्त्री मुड़रिया।
(३) डा० सर्वेश कुमार आर्य, आर्य नर्सिंग होम, दिबियापुर रोड, औरैया।
(४) वेदप्रकाश 'आर्य वीर' मण्डलपति आर्य वीरदल इटावा।
(५) आनन्द कुमार आर्य, प्रधान, आर्य समाज बिधूना।
(६) श्री रामरतन आर्य, आर्य समाज बकेबर।
(७) श्री बुद्धसेन सक्सेना, आर्य समाज अजीतमल।

कानपुर (८) डा० श्यामप्रसाद जी नेत्र रोग विशेषज्ञ, गोवापुर।
देहात (९) डा० जयनारायण आर्य अकबरपुर।
कानपुर (१०) डा० हरपाल सिंह प्रधान जिला आर्य सभा कानपुर
नगर (११) डा० आशारानी राय, मन्त्री „ „ „
फर्रुखाबाद (१२) श्री सुरेशचन्द्र आर्य मण्डलपति मक्खन ट्रेडर्स, फतेहगढ़
(१३) गोवर्धन लाल कनौजिया, तिरवा।
जालोन (१४) डा० नरेन्द्र आर्य, आर्य समाज, मुहाल्लाल मगरौल कालसी।

निवेदक— समस्त अधिकारी व सदस्यगण
आर्य वीर परिमण्डल कानपुर एवं
आर्य समाज, औरैया (इटावा)

महर्षि दयानन्द द्वारा मांस भक्षण का खण्डन

वेदों में कही मांस खाना नहीं लिखा। (स० प्र० स० १२)

दयालु परमेश्वर ने वेदो मे मांस खाने या पशु आदि के मारने की विधि नहीं लिखी। (गो करुणा निधि)

इस लिए यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र मे परमात्मा की आज्ञा है कि हे पुरुष! तू इन पशुओं को कभी मत मार।

(गो करुणा निधि)

वाह! वाह! यह बुद्धि का विपर्यय आपको मांसाहार ही से हुआ होगा। (गो करुणा निधि)

जो मरे पश्चात् उनका मांस खावे तो, उसका स्वभाव मांसाहारी होने से अवश्य हिंसक होके हिंसा रूपी पाप से कभी नहीं बच सकेगा इसलिए किसी भी अवस्था में मांस नहीं खाना चाहिए।

(गो करुणा निधि)

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

कोई शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला-जालन्धर जो भारत का एक मात्र सर्वथा निःशुल्क गुरुकुल है जहां भोजन, दूध आदि का कोई किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता। यह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से मान्यता प्राप्त है, उसमें कक्षा-६ उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश १६ मई-९५ से आरम्भ होगा।

विद्या विनोद (+२, इन्टरमीडिएट) के लिए मैट्रिक उत्तीर्ण छात्रों का तथा अलंकार (बी०ए०) के लिए +२ परीक्षा या इन्टरमीडिएट उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश ३ जुलाई ९५ से आरम्भ होगा।

छात्रों को भोजन, दूध, शिक्षा, आवास आदि की सर्वथा निःशुल्क सुविधा दी जाएगी। प्रवेश सीमित संख्या में होगा, इच्छुक माता-पिता शीघ्र मिलें या पत्राचार करें।

आचार्य, श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल, करतारपुर

चुनाव समाचार

आर्य समाज संगम विहार वार्षिक चुनाव १५-१-९५ को हुआ। जिसमें सर्वसम्मति निम्न पदाधिकारी चुने गये।

संरक्षक राजकुमार सिंघल, प्रधान श्री धर्म वीर सिंह
उपप्रधान श्री प्रेमसिंह, श्री के०एल० राणा, मन्त्री रणधीर सिंह
कोषाध्यक्ष कृष्णपाल सिंह पुस्तकाध्यक्ष इन्द्रमणि

प्रवेश परीक्षा

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध आर्ष विद्या केन्द्र प्रभात आश्रम मेरठ की प्रवेश परीक्षाएं इसी वर्ष की १५, २०, २५, ३० जून को होंगी। प्रवेशार्थी स्वस्थ, मेधावी एवं पंचम कक्षा उत्तीर्ण हों। सुदूर प्रान्त के प्रवेशार्थी को वरीयता दी जाएगी। प्रवेशार्थी की उम्र १०–११ वर्ष से अधिक न हो।

व्यवस्थापक, प्रभात आश्रम
भोला, टीकरी मेरठ, उ० प्र०-२५०५०१

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 4,5 5-1995 licence to post without pr.payment licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक ७ मई १९९५

आर्य समाज संयम विहार का द्वितीय वार्षिकोत्सव

सभी आर्य सज्जनो को सूचित किया जाता है। कि आर्य समाज संयम विहार का द्वितीय वार्षिकोत्सव ५, ६ तथा ७ मई को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें बड़े बड़े विद्वान तथा भजनोपदेशक हिस्सा लेंगे।

अत सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इसमे भाग लेकर सफल बनाए।

मुख्यवक्ता डा० योगानन्द शास्त्री

राम किशोर शास्त्री रूप किशोर शास्त्री, लखीराम कटारिया,

रामशरण दास आर्य महामन्त्री, सहदेव बेधड़क भजनोपदेशक

महाशय खेमचन्द भजनोपदेशक, चुन्नी लाल तथा और बहुत से विद्वान हिस्सा ले रहे।

राजकुमार सिंघल, संरक्षक

रणधीर सिंह, मन्त्री के०पी० सिंह, कोषाध्यक्ष धर्मवीर सिंह, प्रधान

९८वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मुजफ्फरपुर (बिहार) का ९८वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न दि० ७, ८, ९ व १० अप्रैल को आर्य समाज मुजफ्फरपुर का वार्षिक उत्सव समाज मन्दिर में बड़े धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर क्रमश रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन तथा गोरक्षा सम्मेलन आयोजित हुए।

उपरोक्त कार्यक्रमो मे सवश्री स्वामी अग्निव्रत, नालन्दा, प्रो० उत्तम चन्द शरर, पानीपत, आचार्य ब्रह्मदत्त शास्त्री, प० बंगाल, प० नवल किशोर शास्त्री, समस्तीपुर, ठाकुर जयपाल सिंह वैशाली प० सुशील कुमार, मधुबनी व श्रीमती सर्वशीला देवी दरभगा आदि के उपदेश, भजन व व्याख्यान होते रहे।

पन्नलाल आर्य, प्रधान

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज नांगल विहार फेस–२ में गायत्री महायज्ञ का आयोजन आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व मे ७ मई ९५ को प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक सम्पन्न होगा इस अवसर पर श्रीमती अर्चना रेडियो सिंगर द्वारा मधुर संगीत का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न होगा। समारोह में डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री श्री प्रेम कुमार आदि विद्वानों के उपदेश होंगे। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

ओम प्रकाश आर्य मन्त्री

वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार

आर्य समाज महावीर नगर नजफगढ़-१० का वार्षिकोत्सव आगामी १४, १५ व १६ मई ९५ को आयोजित है। इसमें उत्तर प्रदेश व बिहार के प्रख्यात उपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

सुदर्शन द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० सं० डी० (एस) ११०२४/९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक २८ | रविवार, १४ मई १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

डा० धर्मपाल द्वारा आर्य समाज का ऐतिहासिक विवेचन

आर्य समाज इन्द्रपुरी दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक ७ ५-९५ को अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमे आर्य जगत के मूर्धन्य नेताओ ने अपने उद्‌गार प्रकट किये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सभा-मन्त्री व श्री डा० धर्मपाल जी कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० महेश विद्यालंकार, श्री प्रकाश चन्द शास्त्री, श्री छविकृष्ण शास्त्री आदि सभी ने वार्षिकोत्सव में उपस्थित होकर स्थानीय जनता तक आर्य समाज के प्रेरणा प्रद सन्देश को पहुंचाया।

डा० धर्मपाल ने कहा कि आर्य समाज का अतीत स्वर्णाक्षरो लिखा जाने के योग्य है कोई भी ऐसा क्षेत्र नही था जिसमे आर्य समाज के कर्णधारों ने बढ़ चढ़कर भाग न लिया है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि दूरगामी थी उन्होंने यह समझ लिया था कि जब तक यह देश पराधीन रहेगा तब तक इसकी उन्नति सम्भव नही हैं। भारतीयता का स्वतन्त्र अस्तित्व तभी स्थापित हो सकेगा जब हम पूरी तरह से स्वतन्त्र होंगे, आगे चलकर महर्षि के उस आदर्श पर ही चलकर स्वामी श्रद्धानन्द ने जहा विदेशी शासन के विरोध में अपने जीवन को अर्पित किया वहा यह भी जान लिया कि मुसलमान इस धरती को अपनी पुण्य भूमि नहीं मानता, वह रहता भारत मे है और गुण गान करता है अरब के अत जब तक मुसलमान इस देश मे रहेगा हमारी स्वतन्त्रता खतरे मे रहेगी यह सोचकर उन्होने शुद्धि का आन्दोलन आरम्भ किया। यद्यपि शुद्धि आदोलन ही उनके बलिदान का कारण बना। हिन्दुओ की दुर्बलता को भी स्वामी जी जानते थे इसी दृष्टि कोण को लेकर उन्होने देश के हिन्दुत्व के पोषक नेताओ के साथ मिलकर हिन्दू महासभा की स्थापना करके हिन्दू नाम धारियो को सगठित करने का प्रयास किया। क्योकि अधिकाश हिन्दू आर्य शब्द से ही चिढ़ते थे इस संस्था का नाम हिन्दुओ को आकर्षित करने के लिए हिन्दू सभा रखा।

किन्तु देश का दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि आर्य नेताओ को हिन्दू सभा से जितनी आशा थी उतना हिन्दुओ ने उन्हे अपना सहयोग न दिया। यद्यपि भाई परमानन्द जैसे तपस्वी का जीवन भी हिन्दू सभा मे खप गया।

आर्य समाज ने सबसे पहले अंग्रेजी भाषा का विरोध किया उसी विरोध का परिणाम था स्थान-स्थान पर गुरुकुलो की स्थापना। महर्षि दयानन्द स्व के पुजारी थे उन्होने ही सबसे पूर्व स्वभाषा, स्वदेशीयता, स्ववेशभूषा को अपनाने का आग्रह किया। गुरुकुलो मे आरम्भ से आर्य समाज को अनेको उच्चकोटि के विद्वान, उपदेशक तथा राष्ट्र नेता दिये। उनके महत्व को आज स्वीकार करने मे हम गर्व का अनुभव करते है। आज भी आर्य समाजो को जो विद्वान उपलब्ध है वे गुरुकुलो की ही कृपा से मिल रहे है। आर्य समाज के इस महत्वपूर्ण अंग को जितना महत्व मिलना चाहिये था नही मिला। अभी भी लोग अंग्रेजी की दासता को सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं। अंग्रेजी स्कूलो को प्रश्रय आर्य समाज के सगठन ही दे रहे हैं। जब कि हमे अपने कार्य कलापो मे हिन्दी भाषा को ही अपनाना चाहिये। मुझे यह कहते हुए खेद है कि अंग्रेजी के विरुद्ध आर्य समाज का एक वर्ग आन्दोलन रत है जबकि दूसरा वर्ग उसे प्रोत्साहन देने के लिये तन-मन-धन से सक्रिय है।

भाईयों! समय आ गया हैं कि अब हम कटिबद्ध होकर अपनी सास्कृति और सभ्यता की रक्षा करे। हमारे समाज को तोड़ने के लिये अनेकों ऐसे प्रच्छन्न षडयन्त्र रचे जा रहे हैं कि हम उस ओर अनदेखी कर रहे है टी०वी० पर नये-नये चैनलो द्वारा ऐसे वीभत्स दृश्य दिखाये जाते हैं।

जो हमारी नई पीढी को हमसे ही दूर कर रहे है। नई-नई कायनिया बनती जा रही हैं जो हमारी अपनी पहचान का उपहास उड़ा रही है और ऐसी मनघड़न्त आख्यायिकायें प्रदर्शित कर रही हैं कि जिन्हें देखकर शर्म से गर्दन झुक जाती है इसलिये सावधान होकर सगठित रूप में इसका विरोध करें तथा उनके मुकाबले अपनी विशेषताओ को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करें।

७-५-९५ को मयूर विहार में गायत्री महायज्ञ समापन का

आर्य समाज मयूर विहार मे विगत एक सप्ताह से गायत्री महायज्ञ का आयोजन चल रहा का उसका समापन ७-५-९५ को हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल जी ने भाग लिया।

गायत्री मन्त्र की महिमा का वर्णन करते हुए डा० धर्मपाल ने कहा कि गायत्री मन्त्र की निरन्तर साधना से मनुष्य को जहा मेधावी बुद्धि प्राप्त होती वहा उससे प्रभु का तेज भी प्राप्त होता है क्योकि जब भक्त सच्चे मन से भगवान की उपासना करता है तभी भगवान उसके चारो ओर अपनी रक्षा का कवच पहना देता है। ईश्वर का तेज अत्यन्त अनुपम और अद्‌भुत है जिस व्यक्ति मे स्थिर हो जाता, उसका जीवन ही विचित्र बन जाता है। उसको जो सिद्धि प्राप्त होती है वह प्रभु का वरदान होता है। हमारे ऋषि मुनि वर्षो तक इस साधना मे सलग्न रहकर अपने का मोक्ष को अधिकारी बनाते है।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

संसार विष वृक्ष के दो मीठे फल—चमनलाल

परमात्मा को हमारे धर्मग्रन्थों मे "शतक्रतु" कहा है। नाना प्रकार की अद्भुत सृष्टि रचना उसकी लीला का प्रतीक है। वेद की ऋचा "देवस्य पश्य काव्य न ममार न जीर्यते।" इसको पुष्टि कर रही है। भक्त ज्यू-ज्यू इस रचना के रहस्य को समझने के लिए इसकी गहराई मे जाता है, त्यू-त्यू वह कुछ चकित अवाक सा रह जाता है और इसमें नवीनता को अनुभव करते-करते कभी ऊबता नही। और यह सब ही उस दीन दयालु पिता ने जीव के हित-मनोरंजन निमित्त बनाई। परन्तु महाभारत मे महात्मा विदुर ने एक प्रसग मे इस ससार को घना भयकर जगल कहा है। इसमे कितने ही रोग, शोक, अग्निकाण्ड, भूकम्प बाढ़ और लड़ाई-झगड़े के भयकर पशु घूमते रहते हैं। इसमे काम, क्रोध, लोभ मोह और अहंकार के सर्प रेंगते हैं। बुढ़ापा एक भयानक स्त्री के रूपी मे लोगों का पीछा कर रहा है। मनुष्य जीवन की जिस शाखा से लिपटा है, उसे दिन-रात के दो सफेद और काले चूहे है और भयानक सर्प के रूप मे मृत्यु प्रतीक्षा कर रही है। इन सबके बीच मे यहा मनुष्य आशा निराशा के साथ इधर-उधर दुखी हुआ विचरण कर रहा है और कही भी उसे शान्ति प्रतीत नही होती। इसी बात को पण्डित शिरोमणि विष्णु शर्मा ने अपने पचतन्त्र नामक जगत प्रसिद्ध ग्रन्थ मे इस संसार को एक "विष वृक्ष" की उपमा दी है। इस पर अनेक विषैले जहरीले फल लगे हैं। जो उन फलो को खा लेता है वह पागल की तरह व्यवहार करने लगता है और हाहाकार मचाने लगता है न स्वय सुख पाता है और नही दूसरो को सुख की नीद सोने देता है। जो व्यक्ति इस विष वृक्ष की छाया मे आ जाता है वह ही आकुल व्याकुल विह्वल हो जाता है। किसी से पूछो, वही अपने को दुखी कहेगा। इसीलिए, गुरुनानक देव ने कहा है—"नानक दुखिया सब ससार"। सब जगह बेचैनी ही बेचैनी है। साख्य दर्शन के निर्माता महा मुनि कपिल ने भी कहा है—"कोऽपि कुत्रापि सुखाति न" कहीं भी कोई भी सुखी नही दीख पडता। यहा सुखी दिखाई देते हुए के भी हृदय मे दुख की ज्वाला है, प्रत्येक आंख मे आसू है, इस बात को बाबा फरीद में देखा और पुकार उठे—

> फरीदा मैं तो जानिया मैं दुखी सुखी सब जग।
> ऊचे चढ-चढ़ देखिआ, तो घर-घर ऐहो अग॥

ससार की इस वास्तविकता को नोबल पुरस्कार विजेता महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने बहुत ही मार्मिक शब्दो मे बड़ी सुन्दरता से ऐसे व्यक्त किया है।

> नदीर ए पार कहे करया पुकार,
> जे सुख जगत सो शकल ओ पार।
> ओ पार कहे छोडया दीर्घ श्वास,
> शुखेर शकल खानी परे पार।"

अर्थात नदी का यह किनारा पुकार-पुकार कहता है कि ससार मे जितना भी सुख है, वह सब का सब नदी के दूसरे किनारे पर है, मैं ही दुखी हू सुख तो दूसरी ओर है परन्तु दूसरा किनारा भी दुखी मन से कहता है कि सुख का भण्डार तो परले किनारे पर है, मेरे पास तो कुछ भी नही—सब दुख ही है। इस दुखमय ससार मे सुख कहा। यही नही योगीराज पतजलि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ योग दर्शन शास्त्र मे बड़े स्पष्ट शब्दों में इस ससार को दुखो का घर बताया है। "परिणाम, ताप, सस्कार दुख गुण वृत्ति विरोधाच्च दुखमेव सर्व विवेकिन" अर्थात परिणाम, ताप, सस्कार और दुख गुण वृत्ति विरोधी इन चार कारणो से पता चलता है कि ससार मे कुछ दुख ही दुख है।

अर्थात सक्षेप मे यह कह सकते है कि जीव यहा सहस्रो वर्षो से भटक रहा है और कही भी चैन नही पा रहा है। किसी कवि ने अपने भजन की एक पक्ति मे यही बात कही भी है "सदियो से जीव भटक रहा, पर चैन नही पाता है"।

परन्तु वेद मे तो बडे स्पष्ट शब्दो मे कहा गया है कि मानव को यहा नाचने, हसने के लिए भेजा गया है—

"प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय" अथर्व० १२।२।२२

किसी और प्रसग मे इससे भी अधिक उत्साहवर्धक बात कही गई है

"शत हिमा सर्ववीरा मदेम" अथर्व १२।२।२८

अर्थात सौ वर्ष तक आनन्द प्रमोद का जीवन बिताने वाले हो। यही नहीं, परमात्मा ने इस संसार ऐश्वर्य इस देह धारी के लिए छोड़ दिया है, अपने लिए तो कुछ भी नही।

"नभोजुवो यन्निरवस्य राधः प्रशस्तये महिना रथवते"। ऋग्० १।१२२।११

अर्थात भगवान का सारा ऐश्वर्य शरीर धारी के लिये ही है। इसकी पुष्टि मे योग दर्शन मे तो महर्षि पतञ्जलि ने और भी स्पष्ट करके लिखा है :

"तदर्थ एव दृश्यस्यात्मा" योग दर्शन २।२१

अर्थात आत्मा के लिए ही यह है।

यद्यपि ये दोनो विपरीत धारणाए हैं, परन्तु ऐसी स्थिति मे वेद वाक्य ही प्रमाण है।

मनुष्य इच्छाओ का पुतला है इसी को वेद में 'पुलुकामः' कहा गया है। इन इच्छाओं की तृप्ति के लिए वह नाना प्रकार के विविध कार्य करता है परन्तु सभी इच्छाए सरल साधारण व्यवहार से पूरी नही हो पाती। अतः वह क्रोध और मोह वश दुर्व्यवहार करने लगता है और जीवन मे कभी-कभी दुर्भाग्य वश ऐसा अवसर भी आता है कि जब वह अपने आपको नितान्त अकेला पाता है। कोई भी साथी दीख नहीं पड़ता। जीवन की ऐसी निराश अधेरी में ईश्वर के नाम का जाप और महापुरुषों के जीवन या जीवित सज्जनो के सग ही भोर की आशा भरी किरण होती है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए पण्डित शिरोमणि महान विद्वान विष्णु शर्मा ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ पतंजलि मे दो मीठे रसीले फलों की ओर संकेत किया है।

प्रभु की दिव्य वाणी(वेद) का स्वाध्याय तथा तदानुकूल आचरण और सज्जनों की सगति कहा है। जिनको आत्मसात करके मनुष्य दुख सागर से तर जाता है।

> "ससार विष वृक्षस्य द्वे एव रसवरफले।
> काव्यामृत रसस्वाद संगमः सुजनै सह॥"

आरम्भ मे रमणीय और अन्त मे पीड़ित करने वाले विषय भोगों मे ग्रस्त प्राणी नरक के समान दुख उठा रहा है परन्तु ये दो मीठे रसीले फल-वेद का स्वाध्याय व तदानुकूल आचरण और "सज्जनो की सगति" जीवन मे सुख की लहर बहा सकती है ससार के घोर दुख के अगार मे जलते प्राणियो के और इनके इस प्रकार भटकने से बचने और सुख शान्ति और चैन की यही अचूक औषधि है। वेद मे सुखी और आनन्द प्रमोद का जीवन यापन करने का बड़ा सुन्दर उपाय बताया है

"अति क्रामन्तो दुरिता पदानि, शत् हिमा सर्व वीरा मदेम।"

अर्थात बुरे चाल चलन छोडने की बात कही है या यू कहिए कि श्रेष्ठ कर्म करते हुए सज्जनो की सगति करके वेदानुकूल आचरण करने मे ही शांति निहित है।

आओ इस विषमता दुख भरे ससार मे भटकने से बचने हेतु इन दो साधनों काव्य अमृत रस (दिव्य वाणी वेद के अध्ययन और तदानुसार आचरण) तथा सज्जनो की सगति पर कुछ विस्तार से विचार करें।

(क) काव्यामृत रस स्वादम्—

जगत नियन्ता भगवान के दो काव्य हैं—एक वेद जो वच वचनात्मक है, दूसरा उसकी कृति जगत थे दोनो ही इस जीव के हित के लिये हैं—

"अस्मा इदुकाव्य वच उक्थमिन्द्राय शस्यम्॥ ऋग्० ५।३।१५

यह वेद वाणी बड़ी प्रशसनीय और पढ़ने पढने योग्य है। इस वेद वाणी को प्रशसा करते हुए अथर्ववेद (१०-८-३२) मे लिखा है—

"पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति।"

इसीलिए महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम "वेद का पढना पढाना, सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म" बताया है। महर्षि मनु ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ मनुस्मृति (४ १४७) मे वेद को पढना प्रधान धर्म और अन्य सब धर्म गौण बताए हैं। यही नहीं मनु जी ने तो इस स्मृति मे (१२ ९६) "वेदात् सर्व प्रसिद्धति" भी कहा है।

अर्थात संसार की सब व्यवस्था मे वेद से ही प्रचलित होती है। किसी वेदज्ञ मनीषी ने बड़ा सुन्दर कहा है—

"प्रभु तेरी वाणी से, क्या कुछ नही मिलता,

(शेष पत्र ५ पर)

देश भक्तों ने 'भारत माता' के लिए बलिदान दिया 'इण्डिया माता' के लिए नहीं। भारत के संविधान से 'इंडिया' शब्द हटाया जाए, यही देश भक्तो को शहीदो दिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि होगी

ले.—मांगेराम आर्य

१८७९ में वासुदेव बलवन्त फड़के ने आधुनिक क्रान्तिकारियों मे सबसे पहले अंग्रेजो के विरुद्ध शस्त्र का प्रयोग किया। १७ फरवरी १८८३ को जेल मे ही उनकी मृत्यु हो गयी। १८ अप्रैल व २२ मई १८९८ को चापेकर बन्धु दामोदर हरि और बालकृष्ण हरि फांसी के रस्से पर झूलकर शहीद हो गए। उनका तीसरा भाई भी फांसी पर लटका दिया। ३० अप्रैल १९०८ को प्रफुल्ल चाकी ने अंग्रेजो के हाथ से मरने की बजाए स्वयं ही गोली मार कर वीरगति प्राप्त की। इसके साथी १९ वर्षीय खुदीराम बोस ने ११ अगस्त १९०८ को गले में गीता लटका कर और होठों पर मुस्कान के साथ फांसी का फन्दा चूम कर बलिदान दिया। १९०८ में बंगाल के कन्हाई लाल दत्त और सतेन्द्र कुमार बसु ने फांसी पर झूलकर नवयुवकों को देशभक्ति की प्रेरणा दी। स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन सरकार और जनता के बीच अघोषित युद्ध के समान थे। २३ दिसम्बर १९१२ को लार्ड हार्डिंग की सवारी पर चांदनी चौक दिल्ली में बम फैंकने वाले बसन्त कुमार बालमुकुन्द मास्टर अमीर चन्द और अवध बिहारी ८ मई १९१५ को 'वन्देमातरम' के नारे लगाते हुए फांसी पर झूल गए। पंजाब के करतार सिंह और बलवन्त सिंह ने फांसी पर झूलकर क्रान्ती का नाद गूंजा दिया। भाई परमानन्द को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। पंजाब के भाई भागसिंह और बंगाल के बतिन बागची ने १५ जून १९१८ को अंग्रेजो की गोली खाकर वीर गति प्राप्त की। इस प्रकार देश मे सैकडों शहीदो के बलिदान से शहीद मन्दिर में अनेक गौरवशाली मूर्तियां स्थापित हो गई।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इंग्लैंड मे 'भारत स्वराज्य सभा' और वीर सावरकर के समर्थक युवकों ने अभिनव भारत संस्था बनाई। १९८७ मे सावरकर द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती मनाई और इंग्लैंड में रहकर 'भारतीय प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध' नामक पुस्तक लिखी। जुलाई १९०९ मे 'अभिनन भारत' के प्रमुख सदस्य मदनलाल ढींगड़ा ने इंग्लैंड मे सर कर्जन वायली की गोली मार कर हत्या कर दी। फांसी का फन्दा चूमने से पहले ढींगड़ा ने कहा "मुझे अपनी मृत्यु पर अभिमान है"। १९१४ में 'कामा गाटामारू घटना' लगभग ३० व्यक्ति शघी हुए। १५ फरवरी १९१५ को वी०जी० पिंगले को केवलरी लाइन मेरठ मे बमों सहित पकड़ लिया। ३२ क्रान्तिकारी फांसी पर झूल गए। जीवित शहीद राजा महेन्द्र प्रताप ने १ दिसम्बर १९१५ मे अफगानिस्तान मे 'आजाद हिन्द फौज सरकार' द्वारा काबुल में नियुक्त राजदूत सरदार डाक्टर मथुरा सिंह को १५ मार्च १९१७ को फांसी पर लटका दिया गया। १८९७ से १९१८ तक अनेक क्रान्तिकारी बलिदान देकर अमर हो गए। १९१८ से १९२८ तक साम्प्रदायिक राजनीति के कारण स्वामी श्रद्धानन्द जैसे देश भक्तों का बलिदान हुआ।

१० मार्च १९१७ को दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पुलिस की गोली से आठ स्वतन्त्रता सेनानी शहीद हुए। १५ अप्रैल १९१९ को जलियावाला बाग अमृतसर में सर माइकल ओडायर ने देशभक्तों पर गोलियों की वर्षा करके हजारो शवो के ढेर लगा दिए। जलियावाला बाग की भयंकर और विभत्स घटना के 'हीरो' डायर को भारत माता के वीर सपूत सरदार ऊधमसिंह ने १९४० मे ब्रिटेन मे जाकर गोली से उड़ा दिया और फांसी की रस्सी चूम कर भारत का गौरव बढ़ाया। १९२१-२२ के असहयोग आन्दोलन मे पुलिस की गोली से ५१ स्वतन्त्रता सेनानी शहीद हुए। बारदोली सत्याग्रह ने (१९२९) ने देश को एक लौह पुरुष (सरदार वल्लभ भाई पटेल) दिया। २० अक्तूबर १९२९ को लाहौर मे साइमन कमीशन का विरोध करने वाले राष्ट्रनेता पंजाब केसरी लाल लाजपत राय पर लाठियों की मार पड़ी, जिसके कारण १७ नवम्बर १९२८ को शेरे ए पंजाब बलिदान हो गए। करोड़ों लोगो के प्रिय नेता के हत्यारे कप्तान साडस को भगतसिंह ने १७ दिसम्बर १९२८ को लाहौर मे दिनदहाड़े सरेआम चौराहे पर उड़ा दिया। लाला लाजपतराय का कहना था, मुझे तो भारत पर भारतीयो का ही राज्य चाहिये।

गाधी जी ने दक्षिण अफ्रीका मे बोअर युद्ध मे अंग्रेजो की सहायता की थी। गाधी जी ने अपनी आत्मकथा' पृष्ठ २०७ पर इस प्रकार लिखा है—'ब्रिटिश राज्य के प्रति मेरी राजभक्ति मुझे उस युद्ध मे भाग लेने को बरबस घसीट ले गई'। गाधी जी ने १३ अगस्त १९१४ को ब्रिटिश सरकार को एक पत्रिका द्वारा अपनी सेवाए अर्पित की। गाधी जी ने नागपुर कांग्रेस अधिवेशन (१९२८) मे कहा "३१ दिसम्बर १९२१ के बाद स्वराज्य पाए बिना जिन्दा रहने कि मैं कल्पना भी नही कर सकता। १२ फरवरी १९२२ को गाधी जी ने असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। कांग्रेस के अनेक नेताओं ने इसे सबसे बडी हिमालय जैसी भारी राजनैतिक भूल बताया। गाधी जी १९२२ से १९२८ तक सक्रिय राजनीति से अलग रहे। १९३८ से १९३३ सविनय अविज्ञा आन्दोलन मे अनेक देशभक्त शहीद हुए।

१९२२ से १९३३ तक सशस्त्र क्रान्ति मे प० रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह, अशफाकउल्ला, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, सूर्यसेन आदि अनेक देशभक्त 'वन्देमातरम्' व 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हुए फांसी पर झूल गए। चन्द्रसिंह गढवाली की अपील पर २३ अप्रैल १९३० को अपने पठान भाइयो पर सैनिको ने गोली चलाने से इन्कार कर दिया और अपनी राइफलें आन्दोलनकारियों को सौंप दी। अग्रणी गढवाली सैनिकों को फांसी पर लटका दिया गया। और चन्द्रसिंह गढवाली को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। गाधी जी ने गोली चलाने की आज्ञा न मानने के कारण चन्द्र सिंह गढवाली की निन्दा की। रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा रचित गीत—सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है।

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल मे है। की सर्वत्र गूंज थी।

२९ अक्तूबर १९३४ को गाधी जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।

कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन (१९३८) और त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन (१९३९) मे सुभाष चन्द्र बोस अध्यक्ष थे। सुभाष चन्द्र बोस ने गांधी जी और उसके साथियो के असहयोग के कारण कांग्रेस पद से त्यागपत्र दे दिया। द्वितीय विश्व युद्ध मे गाधी जी अंग्रेजो का सहयोग देने के विरुद्ध थे। मुस्लिम लीग ने २४ मार्च १९४० को लाहोर मे अपने अधिवेशन मे भारत के बटवारे की मांग की। १९३९ मे हैदराबाद मे आर्य समाज द्वारा किए गए सफल सत्याग्रह ने देश में जन क्रान्ति की लहर पैदा कर दी। इस आन्दोलन मे २७ राष्ट्रभक्तो का बलिदान हुआ। ९ अगस्त १९४२ को महान जन क्रान्ति आरम्भ हुई। इस महान क्रान्ति मे पहला शहीद सिन्ध के सक्खर जिले का १५ वर्षीय छात्र हेमुकालानी था जो फांसी पर लटकाया गया। दिल्ली मे ७६ देश भक्त अंग्रेजो की गोली खाकर शहीद हुए। ११ अगस्त १९४२ को ७ वीरो ने पटना के सचिवालय के पूर्वी द्वार के समक्ष गोलियो की वर्षा के बीच सीना तानकर अपने प्राणो की आहुति दी। देहरादून के केसरी चन्द्र फांसी के फंदे को गले का हार बनाकर शहीद हो गए। बलिया मे हवाई जहाज से देश भक्तो पर बम वर्षा की गई। ५७ आदमी गोलियो से भून दिए गए। देश मे ज्वालामुखी फटा हुआ था। सरकार निर्मम अत्याचार पर उतर आई। ४० हजार के लगभग लोग बलिदान हुए। भारत एक पुलिस राज्य बन गया।

सुभाष चन्द्र बोस ९० दिन की संकटपूर्ण यात्रा के बाद १९ जून १९४३ को जापान पहुंच गए। ३ जुलाई १९४३ को आजाद हिन्द फौज का गठन किया गया।

(शेष पेज ६ पर)

स्वर्ग धरती को बनाएं

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सत्य पथ पर हम चलें, सम्पूर्ण जगती को जगाए,
वेद की गंगा बहाकर, स्वर्ग धरती को बनाए ।
फिर धरा पर प्रतिध्वनित हो, धीरता के भाव सारे,
जय मनुजता के लगें फिर, भूमि पर ये दिव्य नारे,
प्रेम करुणा सौम्यता से ही भरे हों उर हमारे,
भाव हो उज्वल सभी के, प्रेरणादायक सन्यारे,
श्रोत समता, सदाशयता का धरा पर हम बहाए,
वेद की गंगा बहाकर, स्वर्ग धरती को बनाएं ।
चेतना के स्वर सभी के, आज, अन्तस मे जगें,
गूढ़तम के मेघ काले, वायुमण्डल से भगें ।
कार्य परहित के हमे फिर, लाभकारी ही लगें,
अनयकारी तत्व दूषित, अब हमे फिर न ठगें ।
पुण्य सारी ऋषि कथाए, पुन जग को हम सुनाए ।
वेद की गंगा बहाकर, स्वर्ग धरती को बनाएं ।।
हम करें उद्योग ऐसा, वेद पथ गामी धरा हो,
धर्म के उत्कर्ष हित ही, भूमि सारी उर्वरा हो ।
छल कपट का विष कलुष सब ज्ञान की ही शर्करा हो,
वेद की नव ज्योति पाकर, आर्य सारी वसुधरा हो ।
ओ३म् की पावन पताका, हम प्रती बन लहलहाए ।
वेद की गंगा बहाकर, स्वर्ग धरती को बनाए ।।

बगैर पासपोर्ट के विदेश यात्रा

नेपाल काठमान्डु एवं पोखरा

गर्मियों की छुट्टियों का सुनहरी अवसर आनन्द लेने का

नेपाल की यह यात्रा १२-६-९५ प्रात. ११-१५ बजे इन्दिरा एयरपोर्ट से चलेगी और १७-६-९५ को वापिस दिल्ली आयेगी ।

इसमे आने जाने, होटल मे रहने एव भ्रमण बस द्वारा और एयरपोर्ट से होटल और होटल से एयरपोर्ट सब शामिल हैं। सारा खर्च प्रति सवारी ६७०० रुपये होगा । अगर इस समय मे पैट्रोल का खर्च बढ़ गया तो वह अलग से देना होगा ।

यहा से जाने के लिए आर्य समाज मन्दिर अनारकली से प्रात ८ १५ बजे बस चलेगी। यात्री अपनी सीट बुक कराने के लिए २५०० रुपये अडवास देकर सीट बुक करा सकते है। बाहर से आने वाले यात्री अपना ड्राफ्ट एव मनीआर्डर प्रबन्धक के नाम भेज सकते हैं। जाने से १० दिन पहले पूरे पैसे देने होगे ।

बाहर से आने वाले यात्री आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी पहाड़गज एव आर्य समाज मन्दिर अनारकली मन्दिर मार्ग मे आकर रह सकते है ।

सीट बुक कराने के लिए मिलें :—

प्रबन्धक.

शामदास सचदेव	श्री मालविया जी	श्री बलदेव राज सचदेव
मन्त्री	आर्य समाज मन्दिर, अनारकली	डी० जी०-३,
आर्यसमाज मन्दिर चूना मण्डी,	मन्दिर मार्ग,	फ्लैट न २७३
पहाड़गज, नई दिल्ली-५५	नई दिल्ली-१	विकासपुरी
म. न. २६१३, भगतसिंह गली,	फो० कार्यालय	नई दिल्ली
न० ९, पहाड़गज, नई दिल्ली-५५,	३४३७१८	
फो० घर . ७५२६१२८	३१२११०	
७३५०७ पी०पी०		

आर्यसमाज का व्यापक प्रचार अभियान

मुसाफिरखाना (सुलतानपुर) आर्य समाज मुसाफिरखाना के तत्वावधान में सघन प्रचार कार्यक्रम का आयोजन आर्य साहित्यकार एवम् विद्वान श्री राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति के नेतृत्व में ग्रामीण क्षेत्रों में किया गया लगभग साठ गांव सभाओं में यज्ञ एवं प्रवचन आयोजित किया गया जिसमें हजारों की संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया। इस प्रचार अभियान का गांवों की जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा और श्रोताओं ने बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ वेदों का सन्देश सुना ।

आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज मुसाफिरखाना एवं दयानन्द विद्यालय मुसाफिरखाना के सयुक्त तत्वावधान में श्रीराम खत्री धर्मशाला परिसर में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर गत २६ मार्च से २ अप्रैल तक सम्पन्न हुआ। जिसमें एक सौ आर्य वीरों ने बड़े ही शान्त एवम् प्रेरक वातावरण में विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संयोजन जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सुलतानपुर के अधिष्ठाता एवं आर्य विद्वान श्री राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति ने किया। पं० वीरेन्द्र आर्य ने आर्य वीरों को बड़ी ही निष्ठा व कठोर परिश्रम के साथ आसन, व्यायाम, लाठी-भाला, चलाना, जूडो-कराटे आदि अनेक साहसिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९५

वैदिक धर्म, वैदिक साहित्य व आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से की गई श्लाघनीय सेवाओ के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्य समाज फुलेरा जिला जयपुर-राजस्थान की ओर से १०,००० (दस हजार रुपया) नकद, उत्तरीय प्रशस्ति पत्र, अभिनन्दन पत्र तथा राजस्थानी संस्कृति का प्रतीक चुनडी का साफा एव फल महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार स्वरूप प्रतिवर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है। सन् १९९५ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिए कोई भी आर्य विद्वान स्वय अपना या अन्य आर्य विद्वान का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियो सहित दिनाक ३१-७-९५ तक प्रस्तुत कर सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास
आर्य समाज फुलेरा जिला जयपुर (राजस्थान)

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें ।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें ।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए ।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें ।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपये तथा आजीवन शुल्क ३५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक निःशुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें ।

—आर्य सन्देश के लेखको के कथनों या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

पाठको के सुझाव व प्रतिक्रिया आमंत्रित है ।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

संसार विष वृक्ष के दो मीठे फल

यह विषमय दुनिया सारी, अमृत सागर बन जाये।
इसे पान कर प्राणी, अमर पद पा जाये,
इसे अपना कर मानव विषमय सागरतर जाये।"

इस सम्बन्ध मे सामवेद मे (१३०३) बड़े स्पष्ट रूप से वेदवाणी के वरण करने के लाभ बताए हैं :—"पावमानी. स्वस्त्ययनीस्ता भिर्गच्छति नान्दनम्।
पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्व च गच्छति" ।।

अर्थात जीव इस पवित्र करने वाली प्रभु दत्त वेद वाणी को अपनाकर परमानन्द प्राप्त कर लेता है। अत: किसी ने बड़ा सुन्दर कहा है—वेदवाणी तेरी अमृत भरी भरके प्याला, एक घूट पिला दीजिए। अत. ठीक ही कहा है—प्रात नित्य उठ प्रभु गुण गायाकर, वेदानुकूल आचरण किया कर।

ऐसा सब कुछ प्राप्त कराने वाली प्रभु की यह दिव्य वाणी सृष्टि के आदि मे चार ऋषियो द्वारा दी गई प्राणी मात्र के कल्याण के लिए है। स्वय भगवान यजुर्वेद (२६-२) मे कहते हैं—

"यथेमा वाच कल्याणीभावदानि जनेभ्य"

अत: इस कल्याणकारिणी और सरल वेद वाणी को अपनाने का आदेश वद में मिलता है— "अपक्रामन् पौरुषेयाद् वृणानो दैव्या वच:।
प्राणीतीरभ्यावर्त्तस्व विश्वेभि सखिभि सह।"
अर्थववेद ७ १०५-१

अर्थात इस कल्याणी प्रभु दत्त वेद वाणी का अध्ययन करके सब प्रकार के व्यवहार इसके अनुकूल ही करें।

अन्यत्र भी वेद में इसी भाव को और भी बड़े सुन्दर ढग से व्यक्त किया है :—

"साभ्यामुद्वत वेदमय कर्णाणि कृण्महे" अथर्व० १९।६८।१
"चतुष्पदी मन्वेमि व्रतेन" ऋग्०१४।१२।३
"मन्त्र श्रुत्य चरामति" ऋग्० १०।१३४।७ साम० १७६

इस सब विवेचन से यही स्पष्ट है कि यदि मनुष्य इस विषमय ससार मे सुख और शान्ति का जीवन जीना चाहता है जैसा कि कहा भी है "वय स्याम सुमनेषु जीव से" तो इस दिव्य वाणी का अध्ययन कर तदानुसार आचरण करना आवश्यक है।

अत वेद मे कहा है कि प्रभु दत्त इस वेद वाणी का कभी उलघन न करना चाहिए।

"न तेनगिरो अपि मृष्ये तुरुय न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान।
सदा ते नाम स्वतयो विवक्मि।" ऋग्० ७।२२।५। साम० १७६६

(ख) सगम सुज्जनै: सह -

सज्जनो की सगति की महिमा अपार है इसका विशद वर्णन हमारे धर्म ग्रन्थो तथा स्मृतियो मे स्थान-स्थान पर उपलब्ध है। वेद मे साधक सज्जनो की संगति मे रहने की प्रार्थना करता हुआ कहता है— यक्षत दैव्य जनम्" इसके विपरीत दुराचारी लोगो से दूर रहने की भी कामना की है —'मात्वामूरा'।

लाहौर (पाकिस्तान) के प्रसिद्ध भक्त छज्जूराम ने एक प्रसग मे कहा था 'सगतर' अर्थात सज्जनो की सगति पाकर मानव ससार सागर मे तर जाता है इसलिए सत्सग को परम तीर्थ कहा है।

"सत्सग: परम तीर्थं सत्सग परम पदम्।
तस्मात्सर्व परित्यज्य सत्सग सतत कुरु।"

अर्थात सत्सग परम तीर्थ है सत्सग ही परम पद मोक्ष प्राप्ति का साधन है, अत. सब कुछ छोड़कर सत्सग मे लाना चाहिए। महात्मा चाणक्य ने लिखा है—

"साधुना दर्शन पुण्य तीर्थभूता हिसाधव कालेन फलति तीर्थं सद्य साधु समागम:।।" अर्थात सज्जनो पुरुषो का सग पुण्य कारक है।

सज्जन सच्चे तीर्थ हैं। तीर्थ कहलाने वाले तीर्थ तो न जाने कब फल देंगे। परन्तु साधुओं का संग तो तुरन्त ही फल देने वाला है। इसी बात को और भी स्पष्ट करके आगे कहा है कि सत्सग रूपी नाव क्षणभर मे ससार सागर से पार उतरने के लिए एक मात्र साधन है।

(पेज २ का शेष)

'क्षणमिह सज्जनसगतिरेका, भवति भवार्णव तरणो नौका।"

अत: इस कटीले विष-दुख रूपी ससार सागर के तरने के लिए सन्त-साधुओं की सगति नितान्त आवश्यक है। किसी ने बड़ा सुन्दर कहा भी है -

'आग लगी आकाश मे, झड़-झड़ पड़े अगार।
यदि सन्त न होत जगत मे, जल मरता ससार।'

कवियों ने और अनेको नीतिकारो ने अपने-अपने तौर पर सत्सग के महत्व पर बड़े सुन्दर विचार प्रकट किये हैं। हमारे धर्मग्रन्थो मे भी ऐसे महत्वपूर्ण विचारो की कुछ कमी नही है। सत्सग की जितनी स्तुति की जाय उतनी ही थोड़ी है। इसके लाभों की कामना करते हुए महान तपस्वी भर्तृहरि ने नीति शतक में लिखा है—

'जाड्या धियो हरति सिंचति वाचि सत्यम।
मानोन्नति दिशति पापमपा करोति।।
चेत: प्रसादयति दिमु तनोति कीर्ति।
सत्संगति कथम कि न करोति पु साम।'

अर्थात सत्सगति मानव को क्या कुछ नहीं देती--यही बुद्धि की जड़ता को हर लेती है, बुद्धि को सत्य से सिंचन करती है, पापो को दूर भगा देती है, चित्त को प्रसन्न करती है और चहुं ओर कीर्ति यश को विस्तृत करती है। कवियो का कहना है कि सत्सग की किसी से भी तुलना नही की जा सकती। ससार के सब धनधान्य, और निकटतम सम्बन्ध का भी महत्व नहीं है। कहा भी है—

तात् स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरये तुला इक सग।
तुले न ताहि सकल मिली, जो लाभ सत्सग ।।

एक नीतिकार ने तो इसकी महिमा को व्यक्त करने मे सचमुच कमाल ही कर दिया।

'सता ही सग सकल प्रसूते अर्थात मानव जीवन को उच्चमता से बिताने के लिए सत्सगति से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। यह सफल कामनाओं के पूर्ण करने का एकमात्र साधन है और वासनाओ के समार सागर से पार होने की इससे बढ़िया कोई नैया भी तो नही है। इतिहास मे ऐसे प्रमाणो की कुछ कमी नही है जहा सत्सगति ने पाप-दुर्गुण लिप्त लोगो के जीवन की दिशा को ही बदल दिया। शराबी, कबाबी परस्त्री गामी महता अमीचन्द और महानास्तिक, घोर पतन का जीवन बिताने वाले मुन्शीराम, दयानन्द जी की थोड़ी ही सगति से हरि बन गये। महता अमीचन्द ने सुन्दर भक्ति के भजन लिखे और एक सद्गृहस्थ का सा जीवन-यापन करने लगा। उधर पतित मुन्शीराम महर्षि की सगति से स्वामी श्रद्धानन्द के रूप मे मानव जाति के मूर्धन्य होकर भारत के क्षितिज पर वृहस्पति बन कर चमके और गुरु पदवी प्राप्त करके हमारे सामने एक आदर्श स्थापित कर गये।

आज देश की जो दयनीय अवस्था है अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार और मार-काट की जो भयानक दौर चल रहा है, यह सब कुसगति के प्रणाम है। यदि सत्सगति की सुगन्ध इन भूले भटके लोगो को कही से आ छूती तो सच जानिए कि आज देश की कायापलट हुई दिखाई देती। स्वतन्त्रता प्राप्त के पश्चात यदि देशवासी सत्सगति के अमृत रस का थोड़ा-सा भी पान कर लेते, तो यही राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के स्वप्न के रामराज्य के ही सुख और आनन्द की सुगन्ध का पवित्र मार्ग छोड़कर कुसगति का मार्ग अपनाकर इस दुर्दशा को प्राप्त हो गये हैं जिसका इस महान भारत ने कभी स्वप्न मे भी सोचा नही था।

अत देश को पुन गौरवान्वित करने के लिए और मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए और मानव जीवन को सत्सगति के मीठे रसीले फल चखने की आदत डालें। क्योकि इस वर्तमान पतन की अवस्था से छुटकारा पाने के लिए सुज्जनो का सग ही एक अचूक औषधि है।

अत नीतिकारो के तथा कथित दुखमय वासनापूर्ण ससार को वेद के सुख, शान्ति और आनन्दमय ससार बनाने मे दो मीठे फल वेद के स्वाध्याय और सुज्जनो की सगति को अपने जीवन का अग बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करना चाहिए। अविलम्ब इसकी ओर ध्यान देने की नितात आवश्यकता है।

भारत माता

(पेज ३ का शेष)

सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सेना के सेनापति के रूप ने सैनिकों से अपील की, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा।' और जय घोष दिए, जयहिन्द और दिल्ली चलो। सुभाष को सैनिको ने प्यार विभोर होकर 'नेताजी' शब्द से सम्बोधित किया। सुभाष ने शहीदो की याद मे अडमान का नाम शहीद और निकोबार का नाम स्वराज्य रखा। आजाद हिन्द पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। आजाद हिन्द फौज का राष्ट्रीय गान था।

शुभ सुख चैन की बरखा बरसे
भारत भाग है जागा।

सुभाष चन्द्र बोस ने ६ मई १९४४ को मणिपुर मे तिरंगा झण्डा लहरा दिया। १५ अगस्त १९४५ को जापान के हथियार डालने पर आजाद हिन्द फौज पीछे हट गई। सुभाष चन्द्र बोस ने सैनिको को कहा मेरा अन्तिम संदेश है कि स्वतन्त्रता की अग्नि को सदैव भडकाए रखना है। १८ अगस्त १९४५ को वायुयान से वापिस जापान जाते हुए एक वायु दुर्घटना मे भारत के वीर सपूत सुभाष चन्द्र ने वीर गति प्राप्त की। किन्तु अनेक लोगो ने इस दुर्घटना को मनघडन्त बताया है। उनका कहना है कि नेताजी आज भी जीवित है। आजाद हिन्द फौज के हजारो सैनिक शहीद हुए।

१९ से २३ फरवरी १९४६ तक बम्बई में जल सेना की क्रान्ति में २५० के लगभग देशभक्त सैनिक शहीद हुए।

अगस्त १९४६ मे बगाल और बिहार मे खुलकर (खून की) होली खेली गई। महात्मा गाधी ने कहा पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा। १५ अगस्त १९४७ को लगभग १२ लाख लोगो के शवो पर देश का विभाजन हुआ।

लाखो देश भक्तो ने स्वाधीनता सघर्ष में सर झुकाने की बजाए सर कटाना उचित समझा और कभी भी निर्दयी ब्रिटिश सरकार के सामने समर्पण नहीं किया।

इस सैकडो वर्ष लम्बे सघर्ष काल मे भारत माता के प्रति समर्पित थे। उन्होने देश को सदा भारत माता कहकर पुकारा इण्डिया माता कहकर नही। अत शहीदो को सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए भारतीय संविधान से देश का नाम इण्डिया तुरन्त हटाया जाए। देश का एक ही नाम 'भारतवर्ष' रखा जाए, जिस नाम के लिए लाखो शहीदो ने अपने सर भारत माता को भेंट कर दिए। २३ मार्च शहीदी दिवस घोषित किया जाए। इस दिन राजपत्रित अवकाश घोषित किया जाए।

शहीदो के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि देते हुए देश के भावी नागरिक से—

"हम लाए हैं तूफान से किश्ती निकाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चो सम्भाल के।"

जय हिन्द पता—२६६, बाकनेर, दिल्ली-४०

डी.ए.वी. नैतिक शिक्षा संस्थान

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

प्रवेश सूचना

डी०ए०वी० सस्थाओं मे धर्म शिक्षा का अध्यापन सुनिश्चित एवं स्तरानुकूल बनाये रखने के लिये इस सस्थान मे सस्कृत के युवा विद्वानों को एक साल का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा तदुपरान्त डी०ए०वी० सस्थाओं में उनकी नियुक्ति को सुनिश्चित बनाया है।

प्रवेश योग्यता :—किसी गुरुकुल का स्नातक/सास्कृत में एम०ए० अथवा शास्त्री विशेष प्रतिभा सम्पन्न ऐसे प्रशिक्षार्थी को भी प्रवेश दिया जाता है जिसने बी०ए० मे सास्कृत पढी हो अथवा जो हिन्दी मे एम०ए० हो।

सस्थान मे रहकर व्रत पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों को भोजनादि हेतु ४०० रु० तथा संस्थान से बाहर रहकर नियम पूर्व प्रशिक्षणार्थ आने वालो को २०० प्रतिमास छात्रवृत्ति रूप मे दिये जाते हैं।

प्रवेश पाने के इच्छुक अपने-अपने आवेदन पत्र शैक्षिक योग्यता के प्रमाण पत्रो की प्रतिलिपि सहित जून के दूसरे सप्ताह तक भेज दें। प्रवेश परीक्षा (तिथि की सूचना बाद मे दी जायेगी) जुलाई मे होगी।

यशपाल शास्त्री, डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान,
आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

"अभिमन्यु" खण्ड काव्य का विमोचन

मुसाफिर खाना (सुलतानपुर)। स्थानीय साहित्यिक संस्था 'रश्मिरथी साहित्य परिषद' के तत्वावधान मे, 'रश्मिरथी' पत्रिका के सपादक श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति द्वारा प्रणीत खण्ड काव्य 'अभिमन्यु' का विमोचन व लोकार्पण समारोह, वरिष्ठ रचनाकार डा० ओंकार नाथ त्रिपाठी (मुख्य आयकर आयुक्त) की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। खण्ड काव्य का विमोचन उत्तर प्रदेश शासन की शीर्ष सस्था 'उ० प्र० हिन्दी सस्थान' के निदेशक व प्रख्यात बाल साहित्यकार श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' ने किया। इस अवसर पर एक सरस काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमे अन्यान्य रचनाकारों ने अपनी नवीनतमरचनाओ का सस्वर पाठ किया। समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री विनोद जी ने "अभिमन्यु' खण्डकाव्य की प्रशसा करते हुए इसे एक उत्कृष्ट साहित्यि के कृति बताया। ग्रामीण अंचल मे ऐसे मनोहारी साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अध्यक्षीय उद्बोधन मे डा त्रिपाठी ने 'रश्मिरथी साहित्य परिषद' की सराहना की और आधुनिक परिपेक्ष्य मे 'अभिमन्यु' जैसे प्रेरक एव युवकों मे जागृति उत्पन्न करने वाले खण्ड काव्य के रचयिता श्री राधेश्याम आर्य को साधुवाद दिया।

हीरक जयन्ती समारोह सम्पन्न

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज टिहरी का हीरक जयन्ती समारोह ५ से ७ मई ९५ तक आर्य समाज मन्दिर आजाद मैदान टिहरी में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर तीनों दिन प्रात:काल जन जागरण का कार्यक्रम रखा गया तथा ५ मई को चार बजे से विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी।

इस अवसर पर वैदिक धर्म सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, मद्यनिषेध एवं महिला सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गए। इस समारोह में सार्व० सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्र-राव, सार्व० सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, स्वामी सुमेधानन्द, बाबू दरबारी लाल प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा, श्री रामनाथ सहगल, श्री सत्यानन्द जी मुंजाल श्री वेदमुनि परिव्राजक सहित अनेको प्रतिष्ठित विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने पधारकर श्रोताओं को लाभान्वित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

शोक समाचार

हमें बड़े दु:ख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि हमारी आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द गाबा जी का निधन हृदय गति रुक जाने के कारण दिनांक ८-४-९५ को प्रात ६ १५ पर हो गया है, ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

सुभाष गम्भीर (मन्त्री)

आर्य समाज जवाहर नगर पलवल का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जवाहर नगर पलवल का वर्ष १९९५-९६ के लिये वार्षिक चुनाव निम्नलिखित हुआ।

प्रधान-धनपत राय आर्य — उपप्रधान-तीर्थ दास रहेजा
मन्त्री-आनन्द स्वरूप भाटिया — उपमन्त्री-जय प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष-गोविन्द राम रहेजा — लेखा निरीक्षक-भगवान दास जी तनेजा

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 11,12 5-1995 Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल पंजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १४ मई १९९५

आर्यसमाज अमरोहा में विद्यार्थी सम्मेलन सम्पन्न

अमरोहा। आर्य समाज अमरोहा द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी विद्यार्थियो से सम्बन्धित विशेष आयोजन किया गया। इस अवसर पर बालक बालिकाओ द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम भाषण प्रतियोगिता तथा कवि सम्मेलन सहित अनेको अन्य मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस आयोजन से जहा श्रोताओ का भरपूर मनोरंजन हुआ वहा उन्हें शिक्षा भी प्राप्त हुई। बच्चो द्वारा प्रस्तुत कविसम्मेलन, जिसमे प्रसिद्ध कवियो के नाम रखकर बच्चों द्वारा कविता पाठ किया गया था काफी प्रभावशाली रहा। समारोह में मद्य निषेध सहित कई विषयो पर आकर्षक झाकी भी प्रदर्शित की गई।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। कार्यक्रम के आयोजकों ने उनको एक विशेष कालीन भेंट कर उनका स्वागत किया। श्री शास्त्री जी के द्वारा विजयी छात्रो को पुरस्कार भी वितरित किए गये। अन्त मे श्री शास्त्री जी ने जनता तथा बच्चों को सम्बोधित करते हुए सारगर्भित भाषण दिया जिसमे उन्होंने आर्य समाज की गतिविधियो की चर्चा करते हुए महर्षि दयानन्द के सिद्धातो के अनुरूप चलने की प्रेरणा प्रदान की। श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य सहित अनेकों कार्यकर्ताओं ने आयोजन को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। धन्यवाद के पश्चात कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मन्त्री, आ. स. अमरोहा

निःशुल्क ध्यानयोग व पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

(दिनांक १८ जून रविवार से २५ जून रविवार १९९५)

आप सभी को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम मे १८ जून से २५ जून तक निःशुल्क ध्यान योग और यज्ञों व सोलह संस्कारो के गूढ़ मनोवैज्ञानिक रहस्यों के विवेचन एव उनकी एकरूपता लाने के लिए विशिष्ट पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर में भाग लेने के इच्छुक बन्धु व माताए १५ जून तक अपना नाम भेज देवें।

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री दूरभाष : ५५६६२०७

ब्र० आत्मदेव शास्त्री
व्यवस्थापक दूरभाष : ८-३१०१९५
एस०टी०डी० नं० ०१२

आत्मशुद्धि आश्रम (प० न्यास) बहादुरगढ़-१२४५०७ (हरियाणा)

सेवा में—

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

धर्मदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन। -३१०१५० के लिए प्रकाशित। पंजि० नं० डी० (एल ११०२४)–९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक २९ | रविवार, २१ मई १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष । ३३१०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वेद प्रचार के लिये सदा जागरूक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रचार तन्त्र सदैव सक्रिय रहता है। सभा की ओर से अनेको विद्वानो को स्थानीय तथा दिल्ली से बाहर की आर्य समाजो मे प्रचारार्थ भेजा जाता है। यद्यपि सभा के पास अपने नियमित उपदेशक नही है केवल एक या दो भजनोपदेशक अवश्य हैं किन्तु बाहर से विद्वानो का सहयोग सभा को सदा मिलता रहता है। आर्य समाजो के साप्ताहिक सत्सगों मे भी सभा की ओर से प्रति रविवार को उपदेशक भेजे जाते हैं सभा के मन्त्री व प्रधान दोनों भी आर्य समाज के कार्यो मे संलग्न रहते हैं। पिछले दिनो सभा ने कई आर्य समाजों के वार्षिकोत्सवो पर अपनी व्यवस्था के अन्तर्गत सराहनीय कार्य किया।

सभा वेद प्रचार के लिए सदा जागरूक रहती है कोई भी ऐसा अवसर हाथ से नही जाने देती कि जहा कुछ लोगो को वेद प्रचार से लाभ न हो। दोपहर मे भोजनावकाश के समय सभा अपने भजनोपदेशको को भजकर इण्डिया गेट पर सतत प्रचार करती रहती है। वहा के लोग बड़ी ही उत्सुकता से प्रचार की प्रतीक्षा करते हैं।

पूर्वी दिल्ली की आर्य समाजों मे विशेष उत्साह देखने को मिला।

आर्य समाज केशवपुरम द्वारा नशा उन्मूलनार्थ जैन नेत्र चिकित्सालय मे यज्ञ तथा प्रवचन का आयोजन किया जिसमे सभा की ओर से स्वामी स्वरूपानन्द जी ने भाग लिया श्री प० रामदत्त जी का प्रभावशाली भाषण हुआ। अनेको लोगो ने नशा छोडने का सकल्प लिया। केशवपुरम आर्य समाज के इस कार्य की स्थानीय जनता ने भूरि-भूरि प्रशसा की।

दूसरा कार्यक्रम भी रविवार १४ मई को आयोजित किया गया। ४ बजे से ७ बजे तक श्री रामानुजचन्द्रम की अध्यक्षता में हिन्दी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया सभा की ओर से स्वामी स्वरूपानन्द जी सम्मिलित हुए। स्वामी जी ने अपनी हास्य रस से परिपूर्ण कविताओ से श्रोताओ का मनोरंजन किया।

इन दिनो दिल्ली की आर्य समाजों मे चुनावो की हलचल रही।

आर्य समाज गोविन्दपुरी मे प्रधान श्री रामदुलारे मिश्र मन्त्री सोमदेव मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष श्री हंसराज वर्मा चुने गये।

आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली-५४ का निर्वाचन ७ मई ९५ को निम्न प्रकार हुआ, प्रधान श्री तेजपाल सिंह मलिक, मन्त्री श्री विमल कांत शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता।

आर्य समाज केशवपुरम का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ—प्रधान श्री मनवीर सिंह राणा, मन्त्री श्री जयदेव आहुजा, कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर मदान आर्य समाज राजौरी गार्डन मे सर्वसम्मति से श्री जगदीश कुमार आर्य प्रधान तथा स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती राज पाण्डे सर्वसम्मति से चुनी गई।

देश की एकता और एकजुटता के लिए समान नागरिक संहिता बनाई जाए : सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

नई दिल्ली, १० मई। सर्वोच्च न्यायालय ने आज अपने एक ऐतिहासिक फैसले में कहा कि सरकार को समान नागरिक संहिता बनानी चाहिए, यह दुःख की बात है कि यह मामला अभी तक यों ही लटका हुआ है। न्यायालय ने प्रधानमन्त्री पी०वी० नरसिंहराव से कहा कि वह संविधान के अनुच्छेद ४४ पर नए सिरे से गौर करें। इस अनुच्छेद में कहा गया है कि राज्य पूरे भारत में नागरिकों पर लागू होने वाली समान नागरिक संहिता बनाने का प्रयास करेगा।

न्यायाधीशों कुलदीपसिंह और आर०एस० सहाय की खण्डपीठ ने दूसरी शादी करने के लिए इस्लाम कबूल करने सम्बन्धी एक मामले में अपना ऐतिहासिक फैसला दिया। दोनों फैसलेहैं तो अलग-अलग, लेकिन दोनों एक दूसरे से सहमत हैं। फैसले में कहा गया कि राष्ट्रीय एकजुटता और एकता के लिए एवं दलितों के संरक्षण की खातिर समान नागरिक संहिता अपरिहार्य है। फैसले की एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि कोई भी धार्मिक समुदाय अपने धर्म के आधार पर अलग शख्सियत का दावा नही कर सकता।

न्यायाधीशों ने विधि एवं न्याय मन्त्रालय के सचिव को निर्देश दिया कि अगस्त १९९६ तक कोई जिम्मेदार अधिकारी सर्वोच्च न्यायालय में हलफनामा दायर करे। इस हलफनामे मे यह बताना होगा कि भारत सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले के मद्देनजर समान नागरिक संहिता की दिशा में क्या कदम उठाए।

न्यायाधीश सहाय ने अपने फैसले में कहा कि सरकार एक ऐसी समिति के गठन की सम्भावना पर विचार करे जो धर्म परिवर्तन कानून का मसौदा तैयार कर सके। इस प्रस्तावित कानून में यह प्रावधान हो कि कोई भी नागरिक अगर धर्म परिवर्तन करता है तो पहली पत्नी को तलाक दिए बगैर दूसरी शादी न कर सके। यह कानून हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध सब पर लागू हो

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव | सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

मानव जीवन की विविधता

गणपति शर्मा

बहुत से लोगो ने यह समझ रक्खा है कि इन्द्रियारामी होकर समय व्यतीत करना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है और ऐसा ही करते भी हैं। बहुत से उत्तमोत्तम पदार्थों के सूंघने मे ही अपने को कृतकृत्य मानते है। बहुत से उत्तमोत्तम रसो का आस्वादन करना ही जीवन का फल समझते हैं। बहुत से अनेक प्रकार की अभिलशित चीजों के देखने मे ही आनन्द मानते हैं। बहुत से अच्छी-अच्छी शय्याओ पर पड़े रहने मे ही आराम बतलाते हैं। बहुत से गाना बजाना सुनने मे ही अहर्निश लट्टू बने रहते है। तात्पर्य यह है कि कुसग, कुसस्कारों से विषयारामी होकर अभिलक्षित विषयों की प्राप्ति को ही उद्देश्य समझते हुए मनुष्य जीवन के असली उद्देश्य से हाथ धो बैठते हैं। स्त्रियो मे लम्पट रहना ही मनुष्य देहधारी का उद्देश्य होता तो कोई आवश्यकता नहीं थी कि परमात्मा मनुष्य का शरीर देता। कुत्ते का शरीर देता, जिसमें किसी प्रकार का मर्यादादि का भय भी नही है। अगर सुनना ही उद्देश्य होता तो मयूरादि पक्षियों को योनि मिलती क्योंकि उनमे जितनी दूर से सुनने की सामर्थ्य है, किसी भी मनुष्य मे नहीं या सर्प हरिणादि का शरीर प्राप्त होता।

रसो के स्वाद मे भी पशु पक्षी बाज (प्राय) ऐसे होते हैं जो विष या अमृत को चखते ही मालूम कर लेते हैं। मनुष्यो मे प्राय यह बात नही पाई जाती। देखो गृद्ध (गीध) आसमान मे उड़ता हुआ कितनी दूर से पृथ्वी पर पड़ी हुई अपनी खुराक को देख लेता है और जब कभी कुत्ते, गधे आदि मर जाते हैं, उनको खाने के लिए इसी गुण से कितना शीघ्र नीचे उतर आता है। अगर देखना ही उद्देश्य होता तो गीध की योनि अच्छी थी क्योंकि मनुष्यो के नेत्रों मे इसके बराबर देखने का सामर्थ्य नही पाया जाता। क्या शय्या पर पड़े रहने को उद्देश्य समझने वालो मे यह बुद्धि नही कि वे इस बात को बिचारे कि पशु पक्षी भी कैसे उत्तम-उत्तम स्थान और घोंसले कोमल-कोमल बनाते हैं और आराम करते हैं। साराश यह है कि विषयों में लिप्त होकर और इन्द्रियो का गुलाम बनकर जीवन को नष्ट करना मनुष्य का धर्म नही हो सकता। इतना अवश्य कह सकते हैं कि परोपकार तथा निर्वाह मात्र के वास्ते धर्मशास्त्र विहित विधि के अनुकूल सूंघना खाना-पीना आदि हों तो कोई क्षति की बात नहीं है, परन्तु मुख्य उद्देश्य तो भिन्न ही है और वह है—

अथ त्रिविध दुखात्यन्तनिवृत्तिरत्यंन्त पुरुषार्थ

(सांख्य दर्शन का प्रथम सूत्र)

सांख्य विद्या के द्रष्टा, जिनकी महती कृपा से ससार मे सांख्य अर्थात साइन्स फैला हुआ है वे महात्मा करुणानिधान कपिल मुनि अपने सांख्य दर्शन के आरम्भ मे उपदेश करते हैं. (अथ) अर्थात चौरासी लाख योनियो के भोगने के अनन्तर (त्रिविध) तीन प्रकार के आध्यात्मिक-आधिभौतिक, आधिदैविक तापो से आत्मा को बचा लेना, (अत्यन्त पुरुषार्थ) अत्यन्त पुरुष, अर्थात मनुष्य देहधारी जीवात्मा का (अर्थ) मुख्य उद्देश्य तात्पर्य है। जैसे मनुष्य पौडियो (सीढियो), पर चढ़ता-चढता द्वार पर पहुच जाता है। ऐसे ही अनेक योनि भोगते-भोगते मोक्ष द्वार मनुष्य शरीर मिला है। द्वार पर जाकर वापिस गिर पड़ना कितना बड़ा शोक स्थान है।

यह भी ध्यान मे रखने की बात है कि कोई मनुष्य किसी समुद्र मे पड़ा हुआ इसकी तरगों मे आकर यह चाहे कि मैं तरग जनित दु:खो से बचू तो भला यह कब हो सकता है, जब तक उसके बाहर किसी महती नौका का आश्रय लेकर न निकल जावे।

बस, हम एक महान समुद्र मे पड़े हुए है जिसका नाम ससार सागर है। यह समुद्र बहुत-सी नदियो का समूह है। ये नदिया दुराशा, काम, क्रोध लोभ, मोह अहकारादि नाम से प्रसिद्ध है। एक सिन्धु नदी, जो भारतवर्ष मे सबसे बड़ी है उसका प्रवाह जब ऊष्ण ऋतु मे बढ जाता है, कोई आदमी उसके पार जाने का साधन नही हो सकती। बिना साधन साहस करे तो तरंगजनित बाधाओं से पीड़ित होकर प्राण खो बैठता है। अब आप विचार करें जब एक ही नदी बिना साधन दुरत्यय (कठिनाई से पार होने योग्य) है तो जिस वक्त उससे साथ गगा, यमुना आदि नदिया भी मिल जावें तो भला दुरत्यय होने में क्या संशय हो सकता है। यही दशा ससार की है। यह कितनी ही नदियों का समूह है और वे नदियां भी ऐसी हैं जिनकी महत्ता सिंधु आदि के साथ नहीं हो सकती। कहां गगा यमुना और कहा दुराशादि। देखो महात्मा भर्तृहरि अपने बनाये हुए वैराग्य-शतक में किस प्रकार लिखते हैं, जिसको पढते ही रोमाच होना असम्भव नही।

आशा नाम नदी मनोरथजला तृष्णातरंगा कुला,
रागग्राहवती वितर्क विहगा धैर्यद्रुमध्वसिनी।
मोहावर्त सुदुस्तराति गहना प्रात्तुंग चिन्ता तटी,
तस्या पार गता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वरा:।

आशा एक नदी है जिसमे मनोरथ रूप जल भरा है। तृष्णा रूप तरंगों से पूर्ण है। राग उसमे मगर तुल्य हैं। नाना प्रकार के कुतर्क (जैसा आज कल के कई नैयायिक बात करते हैं कि तुम कहो ईश्वर नही है, तो हम सिद्ध कर देते हैं, तुम कहो हैं, तो हम खण्डन कर दिखलाते हैं। हमारा तर्क ऐसा है कि जिस बात को हम सिद्ध करना चाहे वह भले ही झूठ हो उसे सत्य सिद्ध कर ही देते हैं) उसमें पक्षी हैं। नदियों का प्रवाह जिधर से निकलता है उधर वृक्षों को उखाड़ता ही चला जाता है। ऐसे ही आशा नदी का प्रवाह धर्म वृक्ष को समूल उखाड देता है। मोह रूप भ्रमर (भवर) इसमे पड़े हैं। इसलिए बड़ी दुस्तर है, चिन्ता उसका तट है। उस नदी को पार प्राप्त हुए महात्मा शुद्धचित्त योगी ही आनन्द को प्राप्त होते हैं। मित्रगण, जैसी होनी चाहिए वैसी आशा धर्मपूर्वक हो तो कोई चिन्ता की बात नहीं, परन्तु दुराशा सर्वथा नदी रूप ही है। दूसरी नदी क्रोध है। (येनाविष्टो पुमान हान्ति पितृभ्रातृसुहृत सखीन्) जिसके वश होकर मनुष्य पिता, भाई, सुहृत, सखियों को मार देता है, फिर जन्मजन्मान्तरों मे दुःख भोगता रहता है। इसी प्रकार लोभ इस नदी के प्रवाह का धक्का जिसको लगता है, पादरी आकर कहता है कि तुम ईसाई हो जाओ, हम तुम्हें इतना द्रव्य मासिक देते रहेंगे, तत्काल धर्म को तिलाजलि दे देता।

लोभेन बुद्धिश्चलति लोभो जनयते तृषाम्।
तृषार्तो दु:खमाप्नोति परत्रे इह च मानव.॥

लोभ मे बुद्धि चलायमान हो जाती है। लोभ तृषा को उत्पन्न करता है। तृषार्त दुख को प्राप्त होता है, इस लोक में और परलोक मे।

ऐसे ही मोह, दम्भ आदि भी जानना चाहिए। बस इस नदी समूह सागर के पार जाने के लिए जिस प्रकार जलमय समुद्र के पार जाने के लिए काष्ठमय नौका की आवश्यकता होती है ऐसे ही प्रभु भक्ति रूप जहाज की आवश्यकता है। परन्तु इतना विषय इसमे विचारणीय है क्या हम, जिस आदमी को यह ज्ञान नही कि पुस्तक किसको कहते हैं क्या हम,

उससे कभी पुस्तक मगा सकते है। यही दशा इस समय नास्तिकों की है। उनको मालूम नही कि ईश्वर किसको कहते हैं। बहुत से लोग ऐसे हैं जिनका आत्मा चाहे साक्षी भी देता हो कि सर्वशक्तिमान, जगन्नियन्ता कोई अवश्य हैं परन्तु स्वभाव के अनुकूल वितण्डा किये बिना नही रहते। उनसे जिस वक्त हम कहते हैं कि कपिल मुनि के उपदेश अनुकूल आत्मा को त्रिविध दुखों से बचना ही अत्यन्त पुरुषार्थ है तो वे ही लोग झट अपने गुरु चार्वाक का आश्रय लेकर कहने लग जाते हैं—

अंगनालिंगनादिजन्य सुखमेव पुरुषार्थ

औरतो के आलिंगन से उत्पन्न सुख ही पुरुषार्थ है और हम जिस समय यह कहते हैं कि ससार सागर के पारगत होने के वास्ते प्रभु भक्ति रूपी नौका की आवश्यकता है तो उस समय उत्तर देते हैं कि—

अस्ति चेदीश्वर: कर्ता प्रत्यक्षश्च कथ नाहि।

ईश्वर कोई है तो प्रत्यक्ष क्यो नही होता?

प्रिय बन्धु गण, जिस समय हम प्राचीन इतिहासों का अवलोकन करते हैं तो मालूम होता है कि महाभारत से प्राचीन काल में बहुत न्यून ईश्वर विमुख थे। फिर विचार करते हैं कि उसके पश्चात् बौद्धादि नास्तिकों की वृद्धि का क्या कारण हुआ तो सिवाय इस युद्ध के और कुछ नहीं प्रतीत होता। हम जानते हैं कि जिन बातों का संस्कार बाल्यावस्था में जिस मनुष्य के हृदय में हो जाता है, युवा होने पर अनेक प्रकार के उपायों से भी उसका निकालना कष्ट साध्य हो जाता है।

(क्रमश:)

'भारतीय सेक्युलरिज्म' एक बड़ा भारी धोखा, हिन्दुओं के सर्वनाश का एक पापपूर्ण षड्यन्त्र

श्री प्रेमनाथ जोशी एडवोकेट

'सेक्युलरिज्म' का अर्थ

इस देश मे कभी भी, कहीं भी 'सेक्युलरिज्म' (धर्म निरपेक्षा) न था, न आज है। इस देश मे अधितर लोग ऐसा समझते हैं और उन्हे यह विश्वास दिलाया गया है कि 'सेक्युलरिज्म' का अर्थ 'धर्म निरपेक्षता है, अर्थात किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव न करना। परन्तु वास्तविक व्यवहार मे यह इसके विपरीत है।

कुछ राजनैतिक विचारको के अनुसार 'सेक्युलरिज्म' का अर्थ है, "राज्य का विभिन्न धर्मानुयायियों के बीच समान अन्तर रखना।" अर्थात राज्य का झुकाव किसी एक धर्मानुयायियों की ओर न हो। राज्य धर्म के विषय मे पूर्णतया निरपेक्ष हो। अन्य विचारकों के अनुसार सेक्युलरिज्म का अर्थ है कि राज्य सभी धर्मों को समान रूप से समर्थन दे अर्थात धर्मनिपेक्षता नही अपितु धर्म के विषय मे राज्य की पूर्ण सापेक्षता ही 'सेक्युलरिज्म' का अर्थ है।

भारतीय जनता पार्टी तथा 'सेक्युलरिज्म'

भारतीत जनता पार्टी ने अपने १९८९ के चुनाव घोषणा पत्र मे 'सेक्युलरिज्म' की निम्नलिखित परिभाषा की है :—

"भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) यथार्थवादी धर्मनिरपेक्षता मे विश्वास रखती है। जिसका अर्थ हमारे सविधान निर्माताओं के अनुसार 'सर्वधर्म समभाव' है। इसका अभिप्राय धर्मविहीन राज्य नही है"।

उपरोक्त से ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा के विचारको ने 'सेक्युलरिज्म' को अवधारणा तथा इस देश की परिस्थितियों मे उसकी प्रासगिकता के बारे मे गम्भीरता से कोई विचार नही किया है। उन्होने इस बात की ओर भी ध्यान नहीं दिया कि हमारा सविधान तो विभिन्न मतावलम्बियों के बीच समानता को तो स्वीकार ही नही करता। वे 'सर्वधर्म समभाव' के अर्थ व अभिप्राय को समझाने मे भी असफल रहे है। ऐसा प्रतीत होता है कि परिभाषा को जानबूझकर अस्पष्ट रखा गया है। न तो इससे यह स्पष्ट होता है कि भाजपा के मत मे राज्य का अपना धर्म होना चाहिए अथवा नही। यह भी समझ मे नहीं आता है कि यह दल हिन्दू राज्य के पक्ष में है अथवा विरोध मे। भाजपा की 'सेक्युलरिज्म' की परिभाषा न तो 'सेक्युलरिज्य' के मूल अर्थ से मेल खाती है और न ही शब्दकोषों मे दिये गये किसी अर्थ व स्पष्टीकरण के अनुरूप है। विभिन्न राजनैतिक विचारको के सेक्युलरवाद के बारे मे जो विचार हैं, उनसे भी इस परिभाषा का दूर का भी सम्बन्ध नही है। वास्तव मे भाजपा की 'सेक्युलरिज्म'की व्याख्या से 'सेक्युलरिज्म' के समझने में किसी को किसी प्रकार की कोई सहायता नही मिल सकती।

'सेक्युलरिज्म' का प्रपंच

भारतीय राज्य ने सेक्युलरिज्म' की उपरोक्त किसी भी परिभाषा को स्वीकार नही किया है। व्यवहार मे भारतीय राज्य अपने तथा विभिन्न धर्मों के बीच में समान दूरी के सिद्धात को भी नही मानता। इसके विपरीत वह अल्पसख्यक धर्मों के समर्थन मे सक्रिय भाग लेता है। राज्य ने 'सेक्युलरिज्म' के इस अर्थ को भी मान्यता नहीं दी है कि वह सभी धर्मों को समान रूप से समर्थन दे, क्योकि सरकार ने अल्पसख्यक धार्मिक समुदायों को विशेष अधिकार व सुविधाए दी है। धर्मनिरपेक्षता के बारे में तो परिस्थति एकदम विपरीत है। राज्य, शासन के प्रत्येक क्षेत्र में आधार पर नागरिकों के बीच पूर्णतया भेदभाव बरतता है।

यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे सविधान निर्माताओ, ने न तो 'सेक्युलरिज्म' के उपरोक्त दिये गये मूल अर्थ को ही माना है, न ही उन्होने शब्दकोषो में दी गई 'सेक्युलरिज्म' की परिभाषाओं को ही स्वीकार किया है। उन्होने राजनैतिक विचारकों की 'सेक्युलरिज्म' की परिभाषा को भी मान्यता नही दी है। इस के स्थान पर सविधान निर्माताओं ने इसका यही अर्थ समझा कि "राज्य का अपना कोई राज धर्म नहीं होना चाहिए"। 'सेक्युलरिज्म' के अर्थ के बारे मे सविधान निर्माताओ की इस मिथ्या अवधारण, ने देश को सर्वनाश के भयानक कगार पर खडा कर दिया है।

'सेक्युलरिज्म' के बारे मे यह अवधारण कि "राज्य का अपना कोई धर्म नही होना चाहिए", यह सेक्युलरवादियो के उपजाऊ मस्तिष्क की ही उपज है, जिसे उन्होने अपने स्वार्थी उद्देश्यो की पूर्ति के लिए जन्म दिया है।

'सेक्युलरिज्म' कोई असाधारण विचार नहीं

गत चार दशको से भारत सरकार 'सेक्युलरिज्म' को अपने प्रचार माध्यमो से अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनों क्षेत्रो (Show-Windows) मे कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत करने का भारी भरकम प्रयत्न कर रही है जैसे कि भारतीय 'सेक्युलरिज्म' कोई आश्चर्यजनक वस्तु (प्रोडक्ट) हो। सरकार अन्य देशो को इस बात का विश्वास दिलाने मे प्रयत्नशील रही है कि भारत एक धर्म-निरपेक्ष प्रजातन्त्रीय देश है। देश मे सभी नागरिको के साथ समान व्यवहार किया जाता है तथा धर्म के आधार पर विभिन्न धर्मानुयायियो के बीच कोई भेद-भाव नही किया जाता। परन्तु व्यावहारिक रूप मे 'सेक्युलरिज्म' की तस्वीर न तो सुन्दर हैं और न ही कहीं भी प्रस्तुत करने के योग्य ही है। वास्तव मे यह कुरुप है इसे देखने से घृणा ही पैदा होती है। 'सेक्युलरिज्म' के इस उपहार को विभिन्न रग-बिरगे चमकदार पैकेटों मे प्रस्तुत करने के बावजूद भी उसमे से बहुत तेज दुर्गन्ध ही आ रही है। इस अवस्था मे इसे कौन लेगा ?

भारत में सेक्युलरिज्म का वास्तविक अर्थ

भारत मे 'सेक्युलरिज्म' का अर्थ है हिन्दुओ की उपेक्षा, हिन्दुओ के अधिकारो को बेचकर मुसलमान, सिख और ईसाईयो को खुश कर उनके वोटो को को खरीदना, हिन्दुओ के धर्म, उनके धार्मिक पवित्र ग्रन्थ, पूजा स्थल, देवी-देवताओं इतिहास और जननायकों को बुरा भला कहना, नीचा दिखाना तथा उनकी भर्त्सना करना। हिन्दू सस्कृति को नष्ट कर उसके स्थान पर मुस्लिम तथा पश्चिमी सास्कृति, कला और स्थापत्य कला की सराहना करना तथा अल्पसख्यको की मागे कितनी भी अन्यायपूर्ण क्यो न हों, फिर भी उनका समर्थन करना तथा उनकी चापलूपी करते रहना।

इस देश मे 'सेक्युलरिज्म' का अर्थ है, हिन्दुओ का सभी प्रकार से समय असमय सभी विषयो मे विरोध करना। एक दूसरे नागरिक के बीच मे धर्म जाति जाति व भाषा के आधार पर भेदभाव करना, विभिन्न धर्म व जातियो के अनुयायियों मे विद्वेष पैदा करना। केन्द्र तथा राज्य सरकारो के सभी कानून तथा नीतिया, यहा तक कि भारत का सविधान भी धर्म के आधार पर ही बनाया गया हैं।

भारत में 'सेक्युलरिज्म' क्यों !

यह जानने के लिए कि भारत मे 'सेक्युलरिज्म' की यह अवधारणा कैसे और क्यों आई कि "राज्य का अपना कोई धर्म नही होना चाहिए', हमे स्वर्गीय प० जवाहर लाल नेहरू की विचारधारा को जनाना आवश्यक हैं। विभाजन के बाद देश की नीतियो के निर्माण मे पण्डित नेहरू का बहुत बड़ा हाथ था। उन्होने अपने बारे मे कहा था, 'मैं जन्म की दुर्घटना के कारण हिन्दू हू, सस्कृति से मुसलमान और शिक्षा से अग्रेज हू।' इसमे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वे जन्म से ही हिन्दू धर्म पसन्द नही करते थे तथा मन मे इस्लाम को चाहते थे। यही कारण था कि पण्डित नेहरू ने हिन्दू धर्म को भारत का राजधर्म बनने नही दिया, हालाकि हिन्दूओं का यह न्याय सगत अधिकार था, कि हिन्दू धर्म को देश का राजधर्म घोषित किया जाता। इस प्रकार सेक्युलरिज्म' का नया अर्थ भारत की राजनीति में आया। यही कारण है कि आज भारतीय राज्य का कोई राजधर्म नहीं है।

(क्रमश)

स्वास्थ्य-सुधा—

जल-चिकित्सा द्वारा कठिन रोगों का इलाज

श्री सुरेशचन्द्र पाठक

हमारे वेद-शास्त्रों मे जल को जीवन कहा गया है, और यह वास्तव में सत्य भी है। केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु पृथ्वी पर रहने वाले समस्त प्राणियों का जीवन जल पर ही आधारित है। वैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार से खोज करके यह सिद्ध कर दिया है हमारे सौर मडल के अन्य ग्रहों पर किसी भी प्रकार का जीवन नहीं है क्योंकि वहां न जल है और न वायु।

हमारे दैनिक जीवन में जल का महत्व और उसकी उपयोगिता के बारे में सभी जानते हैं। शरीर की वाह्य शुद्धि के लिये, घर में भोजनादि बनाने के लिये तथा अन्य घरेलू कार्यों के लिए जल अत्यावश्यक। लेकिन खेद है कि शरीर के आन्तरिक शोधन के लिये जल के प्रयोग के बारे मे बहुत कम लोग जानते हैं, और यदि जानते भी हैं तो उसको महत्व नहीं देते। जब हमारे शरीर में विजातीय (विषैले) तत्व अधिक मात्रा में जमा हो जाते हैं, तो तरह-तरह के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। यदि इन तत्वों को किसी प्रकार शरीर से बाहर निकाल दिया जाय तो हमारा शरीर पुन: निरोग हो सकता है। और इन विजातीय तत्वों को वाहर निकालने का एक मात्र साधन है जल का अधिक से अधिक प्रयोग। यही सिद्धांत जल चिकित्सा का आधार है। आदमी जितनी अधिक मात्रा में जल पियेगा उतनी ही जल्दी उसके शरीर के विजातीय तत्व मल-मूत्र के द्वारा बाहर निकल जावेंगे। इसी रोग-शाम और आरोग्य-वर्द्धक गुणों के कारण वेदों में जल को 'अमृत' कहा गया है। 'अमृत' का अर्थ है वह तत्व जो प्राणियों को जीवन प्रदान करे। परमात्मा प्राणि-मात्र का जीवन दाता है, अत: उसे भी अमृत कहा जाता है। जल में भी यही गुण है, अत: उसे भी 'अमृत' कहते हैं। इस प्रकार समान-गुण धर्म होने के कारण जल को परमात्मा का प्रतीक माना जाता है। ब्रह्म-यज्ञ तथा देव यज्ञ आरम्भ करने से पहले जल-पीते हुए आवश्यक मन्त्रों का उच्चारण शायद इसी भावना की अभिव्यक्ति है।

नई एवं पुरानी प्राणघातक बीमारिया दूर करने के लिये जल चिकित्सा एक अत्यन्त सरल एवं बहुत बढ़िया प्रयोग है। यथायोग्य रीति से पानी का प्रयोग किया जाय तो मधुमेह डाइबिटीज) सिर-दर्द, ब्लड-प्रैशर एनीमिया (रक्त की कमी) जोड़ो का दर्द लकवा (पैरेलिसिस), मोटापा, कब्ज, खासी, दमा, टी. बी. मेनितआइटिस' पेशाव की बीमारिया यकृत के रोग अम्लपित्त (एसीडिटी) गैस्ट्राइटिस (गैस विषयक तकलीफे) पेचिस आंखो की बीमारियां, स्त्रियों के रोग, नाक-कान-गले से सम्बन्धित रोग आदि सभी बीमारियां दूर हो सकती हैं।

सुबह जल्दी उठकर, बिना मुह धोये हुए, बिना ब्रश किये हुए करीब डेढ लिटर (चार बड़े गिलास) पानी एक साथ पी लें। उसके बाद लगभग ४५ मिनट तक कुछ भी खाएं अथवा पियें नहीं। यह प्रयोग चालू करने के बाद सुबह के अल्पाहार के बाद, दोपहर को एव रात के भोजन के बाद दो घटे बीतने पर ही पानी पिए रात के समय सोने से पहले कुछ भी न खाएं।

बीमार तथा बहुत ही नाजक प्रकृति के लोग, जो एक साथ चार गिलास पानी नही पी सकते, वे पहले एक या दो गिलास से शुरू करके, धीरे-धीरे एक-एक गिलास बढ़ाकर, चार गिलास पर आवें। फिर नियमित रूप से चार गिलास पीते रहे। लेकिन यह याद रहे कि असली लाभ चार गिलास पर आने के बाद ही होगा।

बीमार हो या तन्दुरुस्त, यह प्रयोग सभी प्रकार के व्यक्तियों के लिये हितकर है। अनुभवों और परीक्षणों से यह निष्कर्ष निकला है कि इस प्रयोग से विभिन्न रोग निम्नलिखित समय सीमा में दूर हो सकते हैं:—

१. (रक्त-चाप)	= एक महीना
२. गैस की तकलीफे	= दस महीना
३. मधमेह	= एक महीना
४ कब्ज	= दस दिन
५. टी. बी	= तीन महीने

जो व्यक्ति वायु रोग एवं जोड़ों के दर्द से पीड़ित हों उन्हे यह प्रयोग एक सप्ताह तक दिन में तीन बार करना चाहिये। एक सप्ताह के बाद दिन में एक बार करना पर्याप्त है।

इस चिकित्सा में नियमित रहना अत्यन्त आवश्यक है। बीच-बीच में यदि व्यवधान पड़ गया तो उसका पूरा लाभ नहीं मिलेगा। प्रत्येक व्यक्ति को दिन भर में कम से कम ८ गिलास पानी पीने का ध्येय बना लेना चाहिये। गर्मियों में तो और अधिक पी सकते हैं। पानी के अधिक प्रयोग पर कोई पाबन्दी नहीं है। हां, शरीर-शोधन के लिये हर मौसम में कम से कम ८ गिलास पीना आवश्यक है। पानी सम-शीतोष्ण होना चाहिये। अधिक ठंडा, फ्रिज का पानी नही पीना चाहिये। इस से पाचन-शक्ति खराब होती है।

डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दरबारी लाल जी का हृदय गति रूक जाने से अकस्मात दु:खद निधन

नई दिल्ली १६ मई, डी०ए०वी० मैनेजिंग कमेटी तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान, आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, समाजसेवी श्री दरबारी लाल जी का हृदय गति रुक जाने से अकस्मात निधन हो गया। आप एक लग्न-शील कुशल प्रशासक थे। आपके अकस्मात चले जाने से डी०ए०वी० संस्थाओं तथा आर्य समाज की जो महान क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असम्भव हैं। आप डी०ए०वी० मे एक छोटे से पद पर कार्यरत हुए थे और आज उच्च शिखर पर पहुंचे आपके मन मे डी०ए०वी० के लिए एक अनूठी तड़प थी और दिन रात उन्हीं की उन्नति मे लगे रहते थे। आपकी सूझबूझ से आज दिल्ली के हर क्षेत्र, नगर, ग्राम मे डी०ए०वी० की शिक्षण संस्थायें चल रही हैं। उनकी स्थापना व संचालना मे आपका बहुत बडा योगदान हैं।

उनके अकस्मात निधन का समाचार सुनकर आर्य जगत में एक शोक की लहर दौड गयी। उनके सम्मान मे आर्य समाज की सभी संस्थाओं के कार्यालय बन्द कर दिये गये और दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गयी और शोक प्रस्ताव पारित किये गये। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री सूर्यदेव, सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, वेद-प्रचार विभाग से पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सोमनाथ एडवोकेट, सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री लक्ष्मी चन्द जी उनके निवास स्थान अशोक विहार गये तथा उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की, सायंकाल निगम बोध घाट पर उनका पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार कर दिया। अन्तिम संस्कार के समय भी सभाओं के अधिकारी, दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी, डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओं तथा गुरुकुलों के प्रबन्धक अधिकारी तथा कार्यकर्ता पहुंचे और अपने प्रिय नेता को अन्तिम विदाई दी।

डी.ए.वी. नैतिक शिक्षा संस्थान

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

प्रवेश सूचना

डी०ए०वी० संस्थाओं मे धर्म शिक्षा का अध्यापन सुनिश्चित एव स्तरानुकूल बनाये रखने के लिये इस संस्थान मे संस्कृत के युवा विद्वानो को एक साल का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा तदुपरान्त डी०ए०वी० संस्थाओं मे उनकी नियुक्ति को सुनिश्चित बनाया है।

प्रवेश योग्यता :—किसी गुरुकुल का स्नातक/संस्कृत मे एम०ए० अथवा शास्त्री विशेष प्रतिभा सम्पन्न ऐसे प्रशिक्षार्थी को भी प्रवेश दिया जाता है जिसने बी०ए० में संस्कृत पढ़ी हो अथवा जो हिन्दी मे एम०ए० हो।

संस्थान मे रहकर व्रत पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने वालो को भोजनादि हेतु ४०० रु० तथा संस्थान से बाहर रहकर नियम पूर्व प्रशिक्षणार्थ आने वालो को २०० प्रतिमास छात्रवृत्ति रूप में दिये जाते हैं।

प्रवेश पाने के इच्छुक अपने-अपने आवेदन पत्र शैक्षिक योग्यता के प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपि सहित जून के दूसरे सप्ताह तक भेज दें। प्रवेश परीक्षा (तिथि की सूचना बाद मे दी जायेगी) जुलाई में होगी।

यशपाल शास्त्री, डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान,
आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

भुवनेश्वर में स्वामी सत्यप्रकाश ग्रन्थागार का उद्घाटन

आगामी ३ जून को भुवनेश्वर आर्य समाज मे स्वामी जी की स्मृति में "स्वामी सत्यप्रकाश स्मारक ग्रन्थागार" का उद्घाटन हो रहा है। राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी उत्सव मे पौरोहित्य करेंगे। ओडिशा 'वेदरश्मि' पत्रिका का स्वामी सत्यप्रकाश विशेषांक उसी दिन प्रकाशित होगा। स्वामी जी का तैलचित्र उन्मोचित होगा। ओडिशा के सब दैनिक पत्र मे स्वामी जी का जीवन विषयक लेख प्रकाशित होंगे।

प्रियव्रत दास, आर्यसमाज भुवनेश्वर

R. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 18,19-5-1995 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक
२१ मई १९९५

समान नागरिक संहिता बनाई जाए

(पृष्ठ १ का शेष)

और व्यक्ति के मृत्यु के बाद कोई विवाद न उत्पन्न हो, इसके लिए उत्तराधिकार एव गुजारे का भी प्रावधान हो।

न्यायाधीश सिंह ने अपने फैसले में कहा कि कोई भी धार्मिक समुदाय समान नागरिक संहिता का विरोध नहीं कर सकता।

न्यायाधीश सिंह ने आश्चर्य व्यक्त किया कि संविधानके अनुच्छेद ४४ में सरकार को जो अधिकार प्रदान किया है। उस पर वह अमल कब करेगी। उन्होंने कहा कि परम्परागत हिन्दू कानून जिससे उत्तराधिकार, विरासत और शादी जैसे मसले तय होते थे, १९५५-५६ में समाप्त कर दिया गया और उसकी जगह नया कानून बन गया तो पूरे देशमें समान नागरिक संहिता लागू करने में अनिश्चित-कालीन विलम्ब का कोई औचित्य नहीं हो सकता। आखिर इस हिन्दू कानून का भी स्रोत तो धर्म में था। जैसा कि मुसलमानों या ईसाइयों के निजी काननों का स्रोत। हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों और जैनों ने राष्ट्रीय एकता एवं एकीकरण की खातिर अपनी भावनाओं का परित्याग कर दिया, जब कि अन्य समुदाय ऐसा नहीं कर सके। हालाकि संविधान में पूरे भारत के लिए समान नागरिक संहिता का उल्लेख है।

दोनों न्यायाधीशों ने अपने फैसले में कहा कि समान नागरिक संहिता की दिशा में पहला कदम यह होगा कि अल्पसंख्यकों के निजी कानूनों को तर्कसंगत बनाया जाए ताकि वे धार्मिक और सांस्कृतिक समरता का विकास कर सके। बेहतर यही होगा कि सरकार इस मामले में जिम्मेदारी विधि आयोग को सौंप दे, विधि आयोग, अल्पसंख्यक आयोग के साथ विचार कर पूरे मामले की जांच करे और महिलाओं के मानवाधिकारों की आधुनिक परि-कल्पना के अनुरूप व्यापक कानून का मसौदा तैयार करे।

न्यायाधीशों ने अपने फैसले में कहा कि समान नागरिक संहिता का वांछनीयता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता लेकिन इस पर अमल तभी हो सकेगा जब समाज के कुलीन लोग और राज-नेता निजी लाभ की भावनाओं से ऊपर उठकर परिवर्तन के लिए जनता को जगाएं और सामाजिक वातावरण तैयार करें।

पंचम-श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार के लिए हैदराबाद के श्री पं० मदन मोहन विद्यासागर का नाम घोषित

यह पुरस्कार समारोह दिनांक २ जुलाई १९९५ को आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) के विशाल सभाग्रह मे होगा। इस अवसर पर २ से ४ जुलाई तक विशेष यज्ञ व प्रवचन भी होंगे।

इस अवसर पर आदरणीय प० मदन मोहन विद्यासागर जी को रुपए १५००१, चादी की ट्राफी, शाल व श्रीफल से सम्मानित किया जायेगा।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन। ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ३० रविवार, २८ मई १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

मनुष्य की परिभाषा महर्षि दयानन्द द्वारा तथा आज का मनुष्य

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए लिखा है कि जो सबसे यथायोग्य स्वात्मवत सुख-दुख हानि-लाभ मे वर्तना श्रेष्ठ समझता है इसके अन्यथा वर्तना बुरा समझता है वह मनुष्य है। मानवता के इस रूप को मनुष्य अपने जीवन का आधार बना ले तो उसे कही पर भी शका, भय, दुख आदि न रहे किन्तु मनुष्य को स्वार्थ इतना अविवेकी बना देता है वह दूसरे मनुष्यों से अपने आपको श्रेष्ठ समझता है तथा दूसरे मनुष्यो के साथ वैसा ही वर्ताव करता है जैसा एक पशु दूसरे पशु के साथ करता है जिसका परिणाम यह हो रहा है कि मनुष्य अपनी रक्षा के लिए ऐसे भवनों का निर्माण कर रहा जिनमे अपने आपको पूर्ण सुरक्षित समझे, फिर भी वह भयभीत है अपनी रक्षा के लिए ऐसे कुत्तो को पालता है जिन्हें देखकर दूसरा मनुष्य दूर से ही भाग जाये इसके होते हुए भी घर के द्वार पर बन्दूक धारी चोकीदार को बैठाता है तब भी अपने को सुरक्षित नही समझता। जो आदमी अपने घर मे भी भयभीत है वह बाहर अपने को कितना सुरक्षित समझता होगा। इसका सबसे बडा उदाहरण भारत का राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, अन्य मन्त्री, मुख्यमन्त्री हैं। वे जनता के द्वारा चुने गये जनता के प्रतिनिधि है किन्तु जनता से इतने भयभीत है कि जब अपने घर से बाहर निकलते हैं तो चप्पे-चप्पे पर गुप्तचरो को तथा सुरक्षा कर्मचारियो को खड़ा कर दिया जाता है। जनता को उन मार्गो पर जाने से रोक दिया जाता है। आज उनकी दशा वैसी ही जैसी कि किसी जमाने मे कन्स की थी।

कंस इसलिये भयभीत था कि उसका अन्त उसके ही परिवार के व्यक्ति द्वारा होगा। इसलिये वह वसुदेव और देवकी की सन्तानो को ही मरवा देता है। आज का मनुष्य भी ऐसा ही सोचता है राजनेता चाहता है कि मैं ही जीवित रहू और सब मर जायें तो अच्छा फिर किसी के मृत्यु का भय तो नही रहेगा।

बाप-बेटे से बेटा-बाप से शकित है दोनो एक दूसरे से शकित हैं, भाई-भाई से भयभीत है क्योकि दोनो मे भ्रातृत्व का भाव लुप्त हो चुका है। महर्षि दयानन्द आर्याभिविनय मे —

सहनाववतु सहनौ भुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै,
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।

मन्त्र का अर्थ करते हुए लिखते है हम समस्त मानव एक दूसरे के रक्षक हो, किन्तु आज सब एक दूसरे के भक्षक बने हुए है। किसी भी परिवार, कुटुम्ब, कबीला, समाज, सस्थाओ मे झाक कर देखा जाये तो सब एक दूसरे का पराभव चाहते हैं। अयोग्य से अयोग्य भी अपने को महायोग्य दर्शाने की चेष्टा करता है। कुछ स्वार्थी लोग ऐसे चाटुकार बन जाते है कि अयोग्य व्यक्ति का भी जय-जय कार करते है जब स्वार्थ टूट जाता है तब वही चाटुकार उसकी निन्दा करते हैं। ऐसे एक नही अनेक उदाहरण सामाजिक सस्थाओ से दिये जा सकते हैं राजनैतिक सस्थायें तो है ही चाटुकारो की उनकी चर्चा करना ही व्यर्थ है।

आओ ऋषि की मनुष्य परिभाषा के अनुकूल अपने आपको बनाने का प्रयत्न करें।

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार

-सूचना-

जन साधारण को यह सूचित किया जाता है कि दिनाक ९-४-९५ को विश्वविद्यालय परिसर मे महिलाओ की कक्षायें आरम्भ करने की माग को लेकर सीनेट की बैठक के अवसर पर हुये प्रदर्शन, बैठक की कार्यवाही मे व्यवधान, सदस्यो का घेराव तथा उनके साथ अशोभनीय अभद्र व्यवहार की घटना की जाच के लिये विश्वविद्यालय के विजिटर जस्टिस महावीर सिह ने सविधान की धारा ४ ए के अन्तर्गत जस्टिस एच० सी० मित्तल अवकाश प्राप्त न्यायाधीश उच्च न्यायालय इलाहाबाद की अध्यक्षता मे एक सदस्यीय जाच समिति गठित की है।

अत एतद् द्वारा सभी सम्बन्धित व्यक्तियो/सस्थाओ, जन साधारण को सूचित किया जाता है कि उक्त अशोभनीय घटना के सम्बन्ध मे व्यक्तियो की संलिप्तता तथा उनके द्वारा किये गये अभद्र व्यवहार के सम्बन्ध मे जो भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष जानकारी रखते हो, उसके सम्बन्ध मे अपना लिखित बयान प्रतिवेदन बन्द लिफाफे में डाक द्वारा अथवा दस्ती अधोहस्ताक्षरी को अथवा श्री एच० सी० मित्तल (अवकाश प्राप्त) न्यायाधीश १५३३ सेक्टर-२९ नोएडा-पिनकोड-२०१३०३ को दिनाक ५-६-९५ तक प्रेषित करें।

(सूर्यप्रकाश)
सहायक कुल सचिव
सचिव जाँच समिति

मैनेजमेंट ट्रेनीज की चयन परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प हुआ

दैनिक नवभारत टाइम्स के ११ मई १९९५ के अंक मे छपे एक समाचार के अनुसार नेशनल फर्टीलाइजर्स लिमिटेड (भारत सरकार का उपक्रम) मे मैनेजमेट ट्रेनीज की नियुक्ति के लिए एक लिखित परीक्षा ली जाएगी जिसमे प्रश्न-पत्र दोनो भाषाओ अर्थात हिन्दी और अंग्रेजी मे होगे।

मैनेजमेट ट्रेनीज कैमिकल, मैकेनिकल, इलैक्ट्रीकल, इन्सट्रूमेंटेशन, इ इ इंजी./कम्प्यूटर, वित्त, विधि, विपणन, जन सम्पर्क एव सुरक्षा विषयो मे रखे जाएगे।

उपरोक्त विकल्प की जानकारी अधिक से अधिक उम्मीदवारो को दी जाए और उन्हे हिन्दी माध्यम का विकल्प लेने के लिए प्रेरित किया जाए। अन्य कम्पनियों मे भी मैनेजमेट ट्रेनीज की परीक्षा मे हिन्दी के विकल्प के लिए प्रयत्न किए जाएं।

जगन्नाथ

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

सच्ची गरिमा किस की गुरु की या गोविन्द की

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

सद्गुरु का आश्रय सहारा सदा मिले। 'सति गुरु तेरी ओट' एक प्रसिद्ध उक्ति है—"गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागे पाय, बलिहारी गुरु आपनो, जो गोविन्द दियो दिखाये।" एक सामान्य जिज्ञासु या साधक के सम्मुख प्रेरणा के दो मुख्य स्रोत कहे जाते हैं। एक पग-पग पर रास्ता दिखलाने वाले पथ-प्रदर्शक गुरु और दूसरे अपने गुरु या आचार्य के प्रेरणा के सूत्रधार गोविन्द। कहते हैं गुरु और दूसरे अपने गुरु या आचार्य के प्रेरणा के सूत्रधार गोविन्द। कहते हैं गुरु को नमस्कार है- क्योंकि गुरु विष्णु, शिव के तुल्य हैं, गुरु साक्षात परब्रह्म ओंकार हैं।

गुरु ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात्‌ ब्रह्म तस्मै गुरवे नमः॥

गुरु का अर्थ है, श्रद्धेय, आदरणीय, अध्यापक शिक्षक। पारिभाषिक रूप से गुरु वह है, जो गायत्री मन्त्र का उपदेश करे और शिष्य को वेदाध्यायन कराए। रघुवंश में कविकुलगुरु कालिदास की उक्ति है "आज्ञा गुरुणा ह्यविचारणीया' गुरुओं की आज्ञा पर संकल्प विकल्प न करें, उसका दृढ़ता से पालन करें। इसकी तुलना में गोविन्द का अर्थ है—गोपालक, गौशाला का अध्यक्ष, कृष्ण, बृहस्पति। वैसे पार्थिव गुरु और गोपालक गोविन्द की अपेक्षा उन दोनों के ही असली विषयक सूत्रधार निराकार निर्गुण परब्रह्म ओंकार परमात्मा जो घट-घट के वासी और सच्चे गुरु और पृथ्वी रूपी गौ के सच्चे गोपाल हैं। उक्त वचनों में भी किसी गोपालक स्वामी की जगह जगन्नियन्ता परमेश्वर का ही गुणगान किया गया है।

बम्बई महानगर में श्री महादेव गोविन्द रानाडे नामक एक विख्यात न्यायाधीश रहते थे। वह देश-विदेश की अनेक भाषाएं सीखना चाहते थे। उन्होंने बंगला सीखने के लिए एक बंगाली नाई की सहायता ली। वह हजामत बनवाते समय बंगला भी सीखने लगे। इस पर रानाडे की पत्नी ने अपने पति से कहा—"एक जज होकर भी आपने एक नाई को अपना गुरु बनाया, लोग क्या कहेंगे? क्या नाई को गुरु बनाना अपमानजनक नहीं है?" न्यायाधीश रानाडे ने कहा—"इसमें अपमान की क्या बात है। अवधूत दत्तात्रेय ने कीड़े मकोड़ों पशु-पक्षियों आदि २४ को अपना गुरु बनाया था। उन जैसे साधक ने कीट-पतंगों, पशु पक्षियों को अपना गुरु बनाया था, परन्तु मैने तो मनुष्य इन्सान को अपना गुरु बनाया है।

कीट-पतंगों से भी शिक्षा

स्वभावतः जिज्ञासा होगी कि अवधूत दत्तात्रेय को किन चौबीस पतंगों पशु-पक्षियों सरीखे गुरुओं से सीख मिली थी और उन्होंने इन मूक प्राणियों से क्या शिक्षा ग्रहण की थी?

कहते हैं कि एक अवधूत को मस्ती में झूमते-विचरण करते देखकर राजा यदु ने पूछा—"संसार में सभी लोग इच्छाओं और लालच की आग से जल रहे हैं, पर आपको देखकर लगता है कि आप तक उनकी आंच तक भी नहीं पहुंच पाती। आपको देखकर लगता है कि जंगल में आग लगने पर कोई मस्त हाथी जल के भीतर क्रीड़ा कर रहा हो। कृपाकर बतलायेंगे ऐसा क्यों! जनेषु दह्यमानेषु काम लोभ दावाग्निना,न तप्यसेऽग्निना मुक्तो गंगाम्भः स्थः इव द्विपः।)

वह अवधूत दत्तात्रेय थे उन्होंने जवाब दिया मैंने अनेक गुरु बनाये हुए हैं। उनसे सीख लेकर इस तरह मैं निर्द्वन्द्व मुक्त होकर विचरण करता हूं।' अवधूत दत्तात्रेय के गुरु थे—पृथिवी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, कबूतर, अजगर, समुद्र, पतंग, मधुमक्खी, हाथी, शहद ले जाने वाला, हरिण, मछली, पिंगला वेश्या, कुरर पक्षी, बालक, कुमारी कन्या, बाण बनाने वाला, सांप, मकड़ी और भृंगी कीड़ा।

दत्तात्रेय जी ने बतलाया "उन्होंने पृथिवी से धीरज रखने क्षमा करने की शिक्षा ग्रहण की, पृथिवी सब तरह के उत्पात करने के बावजूद न रोती है, न बदला लेती है इसलिए बुद्धिमान्‌ व्यक्ति को कभी अपना धीरज नहीं खोना चाहिए (तद् विद्वान्न चलेन्मार्गादन्वशिक्षं सितेर्व्रतम्) इसी प्रकार पृथिवी की सन्तति हैं वृक्ष और पहाड़। उनका जन्म ही दूसरों के उपकार के लिए हुआ है। सज्जन पुरुषों को दोनों से परोपकार की शिक्षा लेनी चाहिए (साधुः शिक्षेत भूभृत्तो नगशिष्यः परात्मताम्) दत्तात्रेय ने बतलाया कि उन्होने पाया कि प्राणी की प्राणवायु के लिए आवश्यक भोजन ही पर्याप्त है। वायु से मैंने सीखा किसी गुण-दोष से लिपटे नही, वायु की तरह शुद्ध रहे। आकाश से मैंने सीखा जैसे वह सबसे अछूता है, किसी से लगाव नही, उसी प्रकार आत्मा को सबसे अछूता रखे। जल से सीखा जैसे वह स्वच्छ, मधुर और पवित्र रहता है, वैसे ही हम भी बने रहें। अवधूत दत्तात्रेय ने अग्नि से सीखा कि सब कुछ पचा लेना चाहिए और किसी पदार्थ का संग्रह नही करना चाहिए।

लकड़ियों और पदार्थों में लगी अग्नि पदार्थों जैसी जान पड़ती है, वैसी नही होती इसी प्रकार सबमें व्याप्त आत्मा नाना रूपों में दिखलाई देती हैं, परन्तु भीतर एक है।

अवधूत दत्तात्रेय ने चन्द्रमा से सीख ली कि जैसे कलाओं के घटने बढ़ने के बावजूद चन्द्रमा एक रहता है, जन्म से मृत्यु तक शरीर घटता*

(शेष पेज ७, ८ पर)

'भारतीय सेक्युलरिज्म' एक बड़ा भारी धोखा, हिन्दुओं के सर्वनाश का एक पापपूर्ण षड्यन्त्र (२)

श्री प्रेमनाथ जोशी एडवोकेट

राष्ट्र की अवधारणा का अभाव

सेक्युलरवादी दलों के मस्तिष्क मे राष्ट्र की कोई अवधारणा ही नही है। उनके मस्तिष्क में नागरिक की कोई स्वतन्त्र सत्ता ही नही है। उनके मस्तिष्क मे तो केवल धार्मिक व जातीय समुदाय ही हैं। उन्होंने कभी भी नागरिको में राष्ट्रीयता व देश भक्ति की भावना पैदा नही की। इसके स्थान पर वे तो मुस्लिम' सिख ईसाई जैसे उपराष्ट्रीय दलो को ही प्रोत्साहित करते रहे हैं।

सेक्युलरवादी दलों का शक्ति स्रोत

सेक्युलरवादी दलों की शक्ति का आधार न तो कोई आदर्शवादी विचारधारा है और न ही कोई सिद्धात है, अपितु धर्म तथा जाति ही उनकी शक्ति के आधार हैं। इस प्रकार सेक्युलरवादी राजनैतिक दलो के धर्म व जाति ही दो आधार स्तम्भ है। स्वतन्त्रता के बाद सेक्युलरवादी दलो ने मुस्लिम, सिख व ईसाई वोटों का समर्थन प्राप्त करने के लिए योजना बनाई। अपनी 'फूट डालो राज करो की नीति को और भी बढावा देने के लिए 'बहुसख्यकवाद' व 'अल्पसख्यकवाद' को को जन्म दिया।

कांग्रेस की राजनीति में धर्म व जाति

यदि आज कश्मीर में मुसलमान, पजाब मे सिख व उत्तर पूर्व मे, ईसाई स्वतन्त्र राज्यों की चिल्ला-चिल्लाकर माग कर रहे हैं तो इसके लिए कोई अन्य नही, मात्र कांग्रेस ही उत्तरदायी है। पण्डित जवाहर लाल नेहरू को इस देश में 'सेक्युलरिज्म' का 'मसीहा' कहा जाता है। वे 'सेक्युलरिज्म' का ढोल अवश्य पीटते रहे, परन्तु वे भी इसी रास्ते पर चलते रहे तथा उन्होंने भी धर्म तथा जाति को ही अपनी राजनैतिक शक्ति का आधार बनाया। उन्होंने ब्राह्मण, मुस्लिम, ईसाई तथा अनुसूचित जातियों को अपना वोट बैंक बनाया। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी इसी रास्ता को अपनाया।

१९८१ मे हुए लोक सभा के चुनाव से पूर्व, कांग्रेस, लोकदल तथा जनता पार्टी ने गूजर, जाट, सैनी, अग्रवाल, ब्राह्मण आदि जातियो के अनेक जातीय सम्मेलनों का आयोजन किया। यह सब उनकी सेक्युलरवादी विचारधारा के अनुरूप ही था। मुसलमानों का प्रसन्न रखने के लिए कांग्रेस (ई) तथा जनता पल, प्रतिवर्ष इफ्तार पार्टियों का आयोजन करते हैं। हज यात्रियों के लिए विदाई पार्टियां दी जाती रही है। इसके अतिरिक्त हज यात्रियो को सुख सुविधा के निरीक्षण हेतु एक सरकारी प्रतिनिधि मण्डल प्रतिवर्ष मक्का, मदीना, भेजा जाता है। जिसका नेतृत्व प्राय: एक केन्द्रीय मन्त्री करते हैं।

दूसरी ओर अक्तूबर-नवम्बर (१९९०) मे उ० प्र० सरकार ने, श्री राम जन्म मन्दिर की पचकोसी तथा चौदह कोसी परिक्रमा के लिए जा रहे यात्रियों पर निषेधाज्ञा लागू कर दी। जिन यात्रियो ने इस निषेधाज्ञा का उल्लघन कर यात्रा पर जाने का साहस किया, सरकार ने लाठियों तथा गोलियो से उनका स्वागत किया। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि इस देश मे 'सेक्युलरिज्म' का अर्थ मुसलमानों के लिए 'फूल' तथा हिन्दुओं के लिए 'लाठी' और 'गोली' है।

हिन्दुओं के सर्वनाश का पापमय षडयन्त्र

हिन्दुओं को हिन्दू राज्य के अधिकार से वचित करने के बाद, सेक्युलरवादियों ने हिन्दू धर्म को ही समाप्त करने का पापपूर्ण षडयन्त्र रचा। इस षडयन्त्र को आगे बढ़ाने के लिए सेक्युलरवादियों ने 'सांझा राष्ट्र' मिली जुली सस्कृति' जैसी दो शरारत भरी अवधारणाओ को देश की राजनीति मे प्रचलित किया।

सांझे राष्ट्र की अवधारणा

हिन्दुओं के हिन्दू राज्य के अधिकार को सदा-सर्वदा के लिए समाप्त करने के उद्देश्य से इस देश में 'सांझे राष्ट्र' की भ्रमपूर्ण कल्पना को लाया गया। 'सेक्युलरवादियों' ने कभी इस बात पर ध्यान नही दिया कि 'काफिले' तो आते-जाते रहते हैं। उन्हें देश की भूमि से कभी कोई लगाव नही होता। इस सन्दर्भ मे मुसलमानो और ईसाईयों ने कभी अपने आपको इस भूमि की सन्तान नही माना मुगल साम्राज्य के समाप्त होने के बाद भी मुसलमान इस देश मे अपनी स्थिति को मजबूत बनाने, अपने अधिकार क्षेत्र को सुदृढ़ करने में ही नही, अपितु भविष्य मे बनने वाले अलग देश की सीमाये बनाने मे ही लगे रहे। जब १९४७ मे अवसर आया तो मुसलमान अपने साथ इस देश के बड़े भू-भाग भी लेकर चलते बने, जो आज पाकिस्तान व बगलादेश के नाम से जाने जाते हैं।

आज कश्मीर मे फिर से उसी इतिहास को दोहराया जा रहा है। वहा भी पृथकतावादी मुस्लिम समुदाय जो कश्मीर मे एक स्वतन्त्र राज्य के लिए चिल्ला रहे हैं, वे अपने साथ जम्मू कश्मीर राज्य के भूखण्ड को भी ले जाना चाहते हैं। पजाब के बहुत से सिख नेता भी आज अपने आप को इस देश की सन्तान मानने से इकार कर रहे हैं। वे खालिस्तान की स्थापना के लिए पंजाब के सारे भू-भाग को ही हड़प ले जाना चाहते है। उत्तर पूर्व मे ईसाई मिशनरी भी स्वतन्त्र ईसाई राज्य की स्थापना के प्रयत्न मे लगे हुए है, इस प्रकार साझे राष्ट्र की अवधारणा पूर्णत विफल हो चुकी है। देश के लिए यह घातक सिद्ध हुई हैं। जो लोग अपने देश को अपना नही मानते, उनके यह घातक सिद्ध हुई हैं। जो लोग अपने देश को अपना नही मानते, उनके आधार पर कभी कोई राष्ट्र नही बन सकता। हिन्दुओं के लिए यह देश पवित्र है, यह उनकी मातृभूमि है, पुन्यभूमि है, वह इसी देश के लिए जीते हैं और मरते हैं। वे इस देश को किसी भी कीमत पर छोडने को तैयार नही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह हिन्दू-राष्ट्र है और हिन्दुओ का अपना देश है।

'मिली-जुली सस्कृति'

इस देश के हिन्दू चरित्र को समाप्त करने के लिए सेक्युलरवादियो ने देश मे 'मिली-जुली सस्कृति' का नारा बुलन्द किया। इस नारे के अन्तर्गत उन्होने देश की संस्कृति मे भारी मात्रा मे इस्लामी तथा पश्चिमी सस्कृति का प्रवेश कराया। देश मे 'मिली-जुली सस्कृति' का कोई ग्राहक न था। आज भी कोई भी देख सकता है कि हिन्दू तथा मुस्लिम सस्कृतिया अलग-अलग समानान्तर धाराओ मे बह रही हैं। मुसलमान अपनी सस्कृति को हिन्दू सस्कृति के प्रभाव के लगाव से सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्नशील है। लेकिन हमारे सेक्युलरवादी मित्रो के लिए यह कोई चिंता की बात नहीं है। यदि इस मिली जुली सस्कृति के प्रचार व प्रसार की प्रक्रिया मे हिन्दू सस्कृति को कोई हानि होती है अथवा वह प्रदूषित होती है तो यह यह बात सेक्युलरवादियो को सन्तोष ही देती है।

हिन्दुओ को हिन्दू धर्म के ज्ञान से वचित रखना

हिन्दुओ के मन से, उनके हिन्दू होने की स्मृति को ही मिटा देने के लिए सेक्युलरवादियों ने सविधान के अनुच्छेद २७-२७ के माध्यम से हिन्दुओ को, अपनी शिक्षण सस्थाओ में धार्मिक शिक्षा देने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। यह इसलिए किया गया, जिससे हिन्दू बालक-बालिकायें अपने धर्म के ज्ञान से पूर्णत अनभिज्ञ रहें। आज हिन्दुओ की किसी भी शिक्षण सस्था मे जिसे सरकार अथवा किसी भी स्थानीय निकाय से सहायता मिलती है, अथवा मान्यता प्राप्त है, हिन्दू धर्म की शिक्षा नही दी जा सकती। परिणामस्वरूप हिन्दू बालक-बालिकायें नास्तिक बनते जा रहे है, वे अहिन्दू हो रहे हैं। दूसरी ओर मुसलमान, सिख तथा ईसाईयो को अपनी शिक्षण सस्थाओ मे धार्मिक शिक्षा देने के लिए सविधान मे विशेष रूप से प्रावधान किया गया है। (क्रमश:)

चुनाव समाचार

आर्य समाज लक्ष्मी नगर के वार्षिक चुनाव २१-५-९५ को सम्पन्न हुये। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान-श्री त्रिलोकी नाथ जी महेश्वरी मन्त्री-सुरेन्द्र वर्मा
कोषाध्यक्ष-श्री हरबन्स लाल झाम।

मानव जीवन की विविधता (२)

गजपति शर्मा

आप देखते हैं कि आजकल बहुत से लोग ऐसे हैं जो भूत प्रेतो को, लोगो के मानने के अनुकूल नही मानते। भूतप्रेत कोई चीज नही है, इस वार्ता को दृढ कराने के लिए पुस्तक भी रचे है और चाहते हैं कि ससार का यह भ्रम किसी प्रकार से दूर हो जावे। परन्तु उन महाशयो से जब हम कहते हैं कि आप नही मानते तो उन स्थानो मे, जिनको लोग भूत और उनके स्थान बतलाते हैं श्मशान और कब्रो के नाम से प्रसिद्ध है, अर्द्ध रात्रि पर हो आवें, जिसको लोग उनकी प्रबलता का समय बतलाते हैं, तो प्राय: नही जाते। इसमे सिवाय पूर्वोक्त कारण कुछ नही प्रतीत होता। जिस प्रकार मनुष्यो की बाल, युवा, वृद्धावस्था होती है, उसी प्रकार ससार को भी अलकार के तौर पर समझ लीजिये। जिस समय उत्पन्न हुआ था बाल्यावस्था, तत्पश्चात युवा, प्रलय के दिन वक्त समीप आवेंगे वृद्धावस्था होगी।

कलियुग का प्रारम्भ हुआ था तब इसकी बाल्यावस्था थी। उस समय बुद्ध ने इसके शुद्ध हृदय मे नास्तिकता रूप दावानल को उत्पन्न कर दिया। जलती हुई आग को उसके मित्र पवन देवता का सहाय मिले तो दिन के परार्द्ध की छायावत बढ़ता हुआ, भयानक स्वरूप धारण करा हुआ, शुष्क कीच को भक्षण करता हुआ, आर्द्र वेणु स्तम्भो को भी भक्षण करने लगता है। इसी प्रकार नास्तिकता रूप दावानल नास्तिक प्रचारको की वाणी रूप हवा की सहायता लगभग से पाच हज़ार वर्ष हुए वैदिक धर्म प्रचारको के अभाव से बढता हुआ चला गया।

उन प्रचारको के नाम लिखने की आवश्यकता प्रतीत नही होती क्योकि इतिहास पुस्तको मे सुप्रसिद्ध है। यही नही कि ईश्वर सद्भाव मे ही नास्तिकों ने शका की हो किन्तु प्राय वेदो को नही जानने के कारण मिथ्यावादी लोगो के कथन पर विश्वास करके वैदिक धर्म सम्बन्धी सध्या, अग्निहोत्रादि प्राय: सभी कर्मो को उखाडना चाहा। उसका परिणाम यह हुआ कि वैदिक मतावलम्बियो को यह शका हो गई थी अब ससार मे वेदो का प्रचार रहना कठिन है। देखो, गुजराती भाषा का एक पुस्तक 'महात्मा नो जीवन' नामक है। उसमे लिखा हुआ है कि महात्मा कुमारिल एक समय एक नगर मे आये। उस नगर का राजा नास्तिक था उस राजा की स्त्री भी नास्तिकता को ही श्रेयस्कर समझती थी, परन्तु राजकन्या जिसकी अवस्था अभी छोटी ही थी, परन्तु धर्म पुस्तको के पठन से उसकी बुद्धि मे सत्य का प्रकाश था। इसलिए वेद और तत्प्रतिपादित धर्म को ही मोक्ष मार्ग समझती हुई मानती थी और उनके अनुकूल चलती थी। एक दिन भट्टाचार्य उस मन्दिर के नीचे से निकले जिसके गवाक्ष मे राजकन्या बैठी हुई थी। राजकन्या ने महात्मा को देखा और यज्ञोपवीतादि चिन्हो से मालूम कर लिया कि यह कोई बडा तपस्वी और निगम पथ प्रदर्शक है। यह विचार कर ही रही थी कि ज्यो ही चन्द्र को देखकर समुद्र उछलता है उसी तरह से वैदिक धर्मामृत मे भरा हुआ लडकी का हृदय समुद्र उछला। एक तरफ यह भी विचार होता था कि यह एक मनुष्य क्याकर सकता है, अब किस प्रकार धर्म रहेगा। कन्या ने बहुतेरा रोका परन्तु इस शोक रूप अग्नि धूम आखो के लगे बिना कब रह सकता था। धूम का लगना ही था कि नेत्रो से धारा बह के मुख से आने लगी उस समय कन्या के मुख से रुदन ध्वनि मिश्रित यह वाक्य निकला—

कि करोमि क्व गच्छामि को वेदानुद्धरिष्यति।

हा! क्या करू, कहा चली जाऊ, अब कौन वेदो का उद्धार करेगा। भट्टाचार्य जी ने दृष्टि उठा के देखा और कान लगा कर सुना तो क्या देखते और सुनते हैं कि गवाक्ष मे बैठी हुई लड़की के मुख से आर्तनाद निकल रहा है बोले.—

"मा बिभेषि वरारोहे भट्टाचार्योऽस्ति भूतले।"

हे वरारोहे, डरो मत, मैं कुमारिल भट्टाचार्य पृथ्वी पर हू। तात्पर्य यह था कि मैं फिर वैदिक धर्म ध्वनि से भूमण्डल गुंजा दूंगा। इसी वाक्य के अनुसार भ्रमण करके चारों दिशाओ मे धर्म फैलाया। यहां तक कि शकर स्वामी को प्रचार करने के लिए बड़ी सुगमता हो गई थी। उन्होंने भी बडा भारी प्रचार किया। फिर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने बडा परिश्रम इसी की रक्षा के लिये बीडा उठाया। परन्तु आज तक एक न एक शका लोगो के चित्तो पर कुसस्कारो के कारण दृढ हो रही है।

हा परमात्मा, वह कौन सा दिन होगा कि जब पूर्व समयवत फिर वेद का डंका चारो दिशाओ मे बजेगा।

अब हमे प्रकरण सम्प्राप्त ऐतिहासिक विषय को छोड़कर कि कब से किस प्रकार जगत मे नास्तिकता के प्रचार की अधिकता हुई, प्रभु (ईश्वर है या नही है, तो उसकी किस प्रकार प्राप्ति हो सकती है तथा उसकी प्राप्ति से हमे क्या लाभ है तथा प्रत्यक्ष क्यों नही होता, प्रत्यक्ष है तो किस प्रकार है) अल्पसमय में नही हो सकता। तदापि इन सब विषयो पर परिश्रम उठा कर सूक्ष्म विचार किया भी जावे तो सामान्य दशा के मनुष्यो को समझना भी कठिन है। इसलिए सामान्य शका जो शास्त्र शून्यो के हृदय मे होती है, उन पर ही यह विचार है।

नास्तिको की शका—नास्तिक लोग कहते हैं कि ईश्वर क्या चीज है। प्रत्यक्ष क्यो नही, जिसके विषय मे कहा जाता है कि उसकी भक्ति करो।

रोते हुए बच्चे को डराने के लिए माता के कल्पित हाऊ की तरह यह प्रपच प्रपंचित होता है। क्यों हम मिथ्या जाल मे फस कर सम्प्राप्त सासारिक सुखों को जो श्रम से प्राप्त होते है परित्याग करें। 'दु:खोपसृष्टमिति मूर्ख विचारणैषा' विषय सुख दु:ख सयुक्त हैं यह मूर्खो का विचार हैं।

आस्तिक की तरफ से समाधान—क्या यह नास्तिको का कथन कुछ मूल्य रखता है। रखता है तो अज्ञान के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं प्रतीत होता। प्रथम यह विचार करना चाहिए कि प्रत्यक्ष क्या है। गौतम मुनि न्याय शास्त्र में प्रत्यक्ष का लक्षण यो लिखते हैं कि—

इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि
व्यवसायात्मकम प्रत्यक्षम्।

इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष मे उत्पन्न जो ज्ञान अव्यपदेश्य, अव्यभिचारी और व्यवसायात्मक हो, उसको प्रत्यक्ष कहते हैं। अर्थात इन्द्रियो का जिसमें साक्षात् सम्बन्ध हो।

अब प्रथम इन्द्रियो मे मे नेत्र के विषय मे विचार करना चाहिए कि उसमे पृथ्वी, अप तेज वायु, आकाश इन पच भूतो मे से कौन सा भूत है। (क्रमश:)

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाए कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक सख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क १५ रुपये तथा आजीवन शुल्क १५०- रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषाक नि:शुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनो या मतो से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमंत्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

वेदार्थ के विषय में ऋषि का भाष्य सर्वोत्तम है

भगवानदेव चैतन्य

वेद आदि सृष्टि में परम पिता परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है। वेदों में इसलिए मूल रूप में सभी ज्ञान विज्ञान की शिक्षा विद्यमान है। वेदों के बारे मे लोगों मे अनेक प्रकार की भ्रान्तियां सदा से ही बनी रही हैं और आज भी कुछ लोग वेदों को इतना महत्व नहीं देते हैं जितना कि देना चाहिए। ऐसा इसलिए हैं क्योंकि वे लोग कभी वेदों के बारे में मनन और चिन्तन करने का कष्ट ही नहीं करते हैं। वेद ज्ञान को आज तक सुरक्षित रखने में जिन महापुरुषों ने अपना योगदान दिया वे वास्तव मे ही धन्यवाद के पात्र हैं। चाहे वे भारतीय विद्वान सायण, महिधर, उव्वट आदि हों चाहे पाश्चात्य विद्वान सर विलियम जोन्स, कोल बुक, दि पेरा, दुरबाफ, रुडोल्फराथ, मैक्समूलर तथा मैक्डावल आदि। इन विद्वानों ने वेद को सुरक्षित तो रखा मगर इसके साथ ही साथ इन्होंने वेदों का जो भी भाष्य आदि किया उससे आज तक वेदों के बारे में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैली हुई हैं। चौदहवीं सदी मे हुए सायण ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य तो किया मगर इनके भाष्य ने एक ऐसा गलत आधार दे दिया जिस पर आने वाले विद्वानों ने वेदों पर कलम तो उठाई मगर वेद मन्त्रों के अर्थ कुछ के कुछ कर दिए। सायण दक्षिण भारत में विजय नगर राज्य के संस्थापक हरिहर बुक्ल के मन्त्री रहे थे और उन्हीं के संरक्षण में इन्होंने अन्य पण्डितों के सहयोग से अपना वेद भाष्य तैयार किया। ये एक मात्र ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने चारों वेदों पर सस्कृत में भाष्य किया। जिन दिनों इन्होंने वेद पर अपनी कलम उठाई उन दिनों यज्ञों के प्रति बड़ी निष्ठा थी और इसीलिए सायण का भाष्य यज्ञ परक है। महिधर तथा उव्वट आदि ने भी यज्ञ और कर्म-काण्ड को आधार लेकर ही अपने-अपने भाष्य किए। इसीलिए इनके भाष्यों में स्वतन्त्र देवी-देवताओं का वर्णन है। यही नहीं इन्होंने परवर्ती इतिहास को भी वेदों पर थोंपने का पाप किया है। वेदों में जादू टोना आदि की कल्पना करना, वेद मन्त्रों के अश्लील अर्थ करना, यज्ञो में पशुहिंसा और मांस भक्षण को स्वीकार करना इस प्रकार की अनेक अनर्गल बाते इनके भाष्यों में मिलती हैं। पाश्चात्य भाष्यकारों ने भी इन्ही के स्वर में स्वर मिलाते हुए वेद पर अनेक प्रकार के बेहूदा प्रसंग थोंपते हुए अपने भाष्य किए। उनके भाष्यो में भी स्थान-स्थान पर इतिहास बोलता हुआ दिखाई देता है। इनके सामने एक और भी समस्या थी, वे भारतीय सस्कृति की सहायता को स्वीकार नही करना चाहते थे तथा विकासवादी सिद्धान्तों को सिद्ध करना चाहते थे। अतः उन्होने बहु देवतावाद, अश्लीलता और पशुहिंसा आदि प्रसगों को भी उभारा ही मगर इसके साथ-साथ विकासवादी विचारधारा का पिष्टपोषण करने के लिए सृष्टि नियम के विरुद्ध भी इन्होंने अनेक स्थानों पर वर्णन किया है। इन्हें तो भारतीय सस्कृति और मनीषियों को नीचा दिखाने से ही मतलब था। एकेश्वरवाद का विचार मानव मस्तिष्क में बहुत देर से आया इस बात को सिद्ध करने के लिए इन लोगों ने यहा तक कह दिया कि एकेश्वरवाद को सिद्ध करने वाला मन्त्र 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति', वेदों में बाद मे मिलाया गया है। अश्लीलता का नशा यहां तक बढ़ा था कि ऋग्वेद के 'शिश्नदेव' शब्द से ये लोग यह परिणाम निकालते हैं कि प्राचीनकाल में लिंग पूजा होती थी। जबकि निरुक्तकार ने इस शब्द का अर्थ 'अब्रम्हचारी' किया है। मगर क्योंकि उन्हे तो वेदों को मात्र गडरियों के गीत सिद्ध करना था सो इस प्रकार की अनर्गल और अप्रासांगिक बाते थोंपना उनका अभीष्ट था।

इस प्रकार भारतीय और पाश्चात्य लोगो ने अपने-अपने पूर्वाग्रहों को सामने रखकर ही वेदों पर अपनी कलम उठाई। एक के सामने यज्ञ और कर्मकाण्ड का पूर्वाग्रह था तो दूसरों के सामने विकासवादी विचारधारा का पिष्टपोषण। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि वेद आज आदमी से दूर होता चला गया। अन्ततः १९वीं शताब्दि में एक ऐसा मनीषी आया जिसके अपने कोई भी पूर्वाग्रह नहीं थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पुरातन परंम्परा को पुनः हमारे समक्ष रखते हुए अपने वेद भाष्य का आधार निरुक्त को रखा। यास्क का उल्लेख करते हुए महर्षि दयानन्द जी अपने ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखते हैं :—

ताः त्रिविधाः ऋचः परोक्षकृताः आध्यात्मिकाश्चातत्र परोक्षकृताः सर्वाभिर्नामविभक्तिभिः युज्यन्ते प्रथम पुरुषैश्चाख्यातस्य। अथ प्रत्यक्षकृताः मध्यमपुरुषयोगाः त्व इति चैतेन सर्वनाम्ना। अथापि प्रत्यक्षताः स्तोतारो भवन्ति, परोक्ष कृतानि स्तोतव्यानि। अथाध्यात्मिका. उत्तम पुरुषयोगाः अहस इति चैतेन' सर्वनाम्ना। (निरुक्त अ २०७, खण्ड १, २)

उपरोक्त उद्धारण का भाव है कि ऋचाओं को तीन भागों में बांटा जा सकता है। परोक्ष देवता की स्तुति करना, प्रत्यक्ष देवता की स्तुति करना तथा अध्यात्म देवता की स्तुति करना। इसलिए इनके अर्थ भी प्रत्यक्षपरक, परोक्षपरक और आध्यात्म परक हो सकते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने निरुक्तकार के इन तीनो भागों को थोड़ा सा सरलीकरण करके व्यवहारिक और पारमार्थिक में बांटा है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के प्रयिज्ञा विषय मे वे स्पष्ट करते हैं— "इस भाष्य में पद-पद का अर्थ पृथक-पृथक से लिखा जायेगा कि जिससे नवीन टीकाकारों के लेख से जो वेदों में अनेक दोषों की कल्पना की गई है, उन सबकी निवृति होकर उनके सत्य अर्थो का प्रकाश हो जायेगा। तथा जो-जो सायण, माध्य, महिधर और अग्रेजी व अन्य भाषा में उलटे भाष्य किए जाते व गए हैं, तथा जो-जो देशान्तर भाषाओं मे टीका हैं उन अनर्थ व्याख्याओं का निवारण होकर मनुष्यों को वेदों के सत्य अर्थो को देखने से अत्यन्त सुख लाभ पहुचेगा।"

महर्षि दयानन्द जी के भाष्य की एक नही कितनी ही विशेषताए ऐसी है जिससे वेदों का असली रूप हमारे सामने आता है। उन्होंने केवल रूढ अर्थ न करके योगिक अर्थो पर प्रकाश डाला है। इन्द्र जहा परमात्मा का नाम है, वही जिसमें एश्वर्य हो वह भी इन्द्र है। इस दृष्टि से इन्द्र का अर्थ सूर्य और राजा भी हो सकता है। अश्व घोडा अर्थ मे प्रयोग होता है मगर वेद मे इसका प्रयोग बादल, अग्नि और सूर्य आदि के लिए भी हुआ है। महर्षि दयानन्द जी ने साफ शब्दों मे घोषणा की कि वेदों मे किसी प्रकार का परवर्ती इतिहास होने का प्रश्न ही पैदा नही होता है। सायण आदि योगिक अर्थ को भूल गए इसीलिए इस प्रकार के अनर्थ हुए हैं। एक ओर तो वे लोग वेद को परमात्मा का नित्य ज्ञान मानते हैं और दूसरी ओर उसमें अनित्य इतिहास आदि की कल्पना करते हैं यह बड़े ही आश्चर्य की बात है। विनियोगवाद का भी महर्षि जी ने बड़ा ही तर्कयुक्त समाधान प्रस्तुत किया है। उन्होंने केवल उन्हीं विनियोगों को माना है जो युक्ति सगत, वेदादि प्रमाणानुकूल और मन्त्रार्थानुसारी हो। क्योंकि वेद स्वयं परमेश्वर ज्ञान है अतः ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव के विपरीत उसके अर्थ नहीं किए जाने चाहिए। सृष्टि नियम के विरुद्ध भी वेदो का अर्थ नही किया जाना चाहिए। अर्थ मानव उन्नति में उपयोगी होना चाहिए। तर्कानुमोदित और बुद्धिसंगत होना चाहिये। (क्रमशः)

मास्को में हिन्दी पत्रिका

रूस मे भारतीय समुदाय के लिए पहली हिन्दी मासिक पत्रिका निकलनी शुरू हो गई है। रूस मे भारत के राजदूत की पत्नी श्रीमती सेन ने कल यहा एक सादे समारोह मे पत्रिका का विमोचन किया। 'भारत भूमि' नामक इस पत्रिका के सम्पादक प्रसन्न वर्मा हैं, जो मास्को मे कम्प्यूटर साइस के छात्र हैं। श्री वर्मा ने कहा कि पत्रिका का मकसद रूस मे रह रहे भारतीय समुदाय के लोगो के विचारों का आदान-प्रदान तथा उन्हे स्वदेश की घटनाओ से अवगत कराना है।

(दैनिक नवभारत टाइम्स ३-५ ९५ से साभार)

डी.ए.वी. नैतिक शिक्षा संस्थान

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

प्रवेश सूचना

डी०ए०वी० सस्थाओं मे धर्म शिक्षा का अध्यापन सुनिश्चित एव स्तरानुकूल बनाये रखने के लिये इस संस्थान मे सस्कृत के युवा विद्वानो को एक साल का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा तदुपरान्त डी०ए०वी० संस्थाओं मे उनकी नियुक्ति को सुनिश्चित बनाया है।

प्रवेश योग्यता :—किसी गुरुकुल का स्नातक/सस्कृत मे एम०ए० अथवा शास्त्री विशेष प्रतिभा सम्पन्न ऐसे प्रशिक्षार्थी को भी प्रवेश दिया जाता है जिसने बी०ए० मे सस्कृत पढी हो अथवा जो हिन्दी मे एम०ए० हो।

सस्थान मे रहकर व्रत पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों को भोजनादि हेतु ४०० रु० तथा सस्थान से बाहर रहकर नियम पूर्व प्रशिक्षणार्थ आने वालो को २०० प्रतिमास छात्रवृत्ति रूप मे दिये जाते हैं।

प्रवेश पाने के इच्छुक अपने आवेदन पत्र शैक्षिक योग्यता के प्रमाण पत्रो की प्रतिलिपि सहित जून के दूसरे सप्ताह तक भेज दें। प्रवेश परीक्षा (तिथि की सूचना बाद में दी जायेगी) जुलाई मे होगी।

यशपाल शास्त्री, डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान;
आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

तुम्हें प्रणाम

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

वीर, जयी, सेनानी निर्भय,
भारत मा के अमर सपूत।
शौर्य अपरिमित भरा हुआ था,
भरा हुआ था ओज अकूत।
हिला ब्रिटिश साम्राज्य तुम्हीं ने-
जाग्रत किया नगर-पथ-ग्राम।
सावरकर जी! तुम्हें प्रणाम॥

तुम जीवित शहीद थे अनुपम;
स्वातान्त्र्य वीर थे कहलाए।
भारत से लन्दन तक तुम थे;
दिल दुश्मन का दहलाए।
भारत माकी स्वतन्त्रता हित-
बलिपथ अपनाया निष्काम।
सावरकर जी! तुम्हें प्रणाम॥

हतप्रभ किया समग्र धरणि को,
गहन सिन्धु मे लगा छलांग।
निकल पड़े जोखिम से लड़ने,
मातृ भूमि की करतिपथ मांग।
लिखी वीरता की गाथाए,
अन्दमान में अविरत अथाम।
सावरकर जी! तुम्हें प्रणाम॥

सच्ची गरिमा

बढ़ता है, पर आत्मा पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दत्तात्रेय जी ने कपोत या कबूतर से शिक्षा ग्रहण की किसी से अधिक स्नेह नहीं करना चाहिए ? अन्यथा बहुत कष्ट भोगना पड़ता है । (मातिस्नेहः प्रसंगों वा कर्त्तव्यः क्वापि केनजित्, कुर्वन् विन्देत सन्तापं कपोत इव दीनधीः)

उन्होंने अजगर से शिक्षा ली मीठा-फीका, कम ज्यादा जो कुछ भी मिलने उसी में सन्तोष माने (प्राज्ञं सुसृष्टं विरसं महान्त स्तोकमेव वा। यदृच्छयेवापतितं ग्रसेद जगरोऽक्रियः) अवधूत दत्तात्रेय ने पतंग से शिक्षा ली कि रूप के मोह में पड़कर आग में न कूदे। भौंरे से सीख ली कि जहां से भी सागर या तत्व मिले, उसे वह ले ले। हाथी से शिक्षा ली कि काष्ठ या लकड़ी से बनी स्त्री को भी कभी स्पर्श न करे।

अवधूत दत्तात्रेय ने मधु या शहद का छत्ता तोडने वाले से शिक्षा ली कि किसी भी चीज का संग्रह न करे। 'खाय न खरचे सब धन, चोर सबै ले जाए। (न देयं नोपभोग्यं न लुब्धैर्यद् दुःखने सञ्चितम् । भुङ्क्ते तदपि तच्चान्यो मधुहेवार्थं विन्मधु" हरिण से सीख ली कि संगीत, नाच-गाने के चक्कर में कभी न फंसे। मछली से शिक्षा ली कि जीभ के स्वाद में कभी न पड़े, अन्यथा कांटे में फंसे मांस या रोटी के टुकड़े में प्राण गंवाना होगा। जीभ को जीतना जरूरी है, जिसने जीभ को जीत लिया, सारी इन्द्रियां जीत लीं (तावत् जितेन्द्रियो न स्यात् विजितान्येन्द्रिय पुमान । न जयेद् रसन जितं सर्वं जिते रस न।

पिंगला नामक वेश्या से शिक्षा ली कि खास तौर से धन की उम्मीद कभी न करे, धन की आशा छोड़ने पर वह सुख से सोई कुरर पक्षी से शिक्षा ली कि किसी भी पदार्थ का संग्रह नहीं करना चाहिए। सग्रह से दुःख होता है, जो अकिंचन है, वह सुखी रहता है। बालक से यह सीख ली कि हमें सदा निश्चिन्त और आनन्द में मगन रहना चाहिए। कुमारी कन्या से शिक्षा ली कि कई लोग साथ रहें तो संघर्ष होता है, इसलिए अकेला ही विचरण करे। वह कुमारी धान कूट रही थी, हाथों में पहनी चूड़ियां आवाज करने लगीं, बाहर मेहमान बैठे थे । उसने केवल एक-एक चुड़ी रखी, तब बिना आवाज के धान कुट गया।

(शेष ८ पर)

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
D. (C) No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 25,26-5-1995 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/93
दि. जी पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक २८ मई १९९५

सच्ची गरिमा

एक वाण बनाने वाला कारीगर वाण बना रहा था, उसके पास से बाजे-गाजे के साथ बारात निकल गई, उसे पता ही नहीं चला। उससे सीखा आसन-प्राणायाम, अभ्यास-वैराग्य से मन को वश में कर एक लक्ष्य की पूर्ति में लगा दे (मन एकत्र संयुज्माज्जित-श्वासो जितासनः। वैराग्याभ्यासयोगे ध्रियमाणमतन्द्रियः।

अवधूत दत्तात्रेय ने सांप से शिक्षा ग्रहण की कि उसकी तरह एकाकी विचरे, कहीं घर न बनाए। मकड़ी से शिक्षा ली कि परमेश्वर भी उसकी तरह जाल फैलाकर उसी में बिहार करते हैं, फिर उसे निगल जाते हैं। भृंगी से यह शिक्षा ग्रहण की कि एकाग्र होकर मन को लगावे पर मन जिसमें लगा होता है, वह स्वयं भी वही है। मन चाहे प्रेम से लगाओ, चाहे द्वेष से या भय से उसे लगाओ तुम उस जैसे हो जाओगे।

यत्र-यत्र मनो देही धारयेत् सकलं धिया।
स्नेहाद् भयाद् वापि याति तात्तन्यरूपतःम्॥

गुरु वह है मानव जिससे कुछ ग्रहण करे, कोई शिक्षा सीख ले, फिर वह चाहे कीट-पतंग हो, या प्राणी विशेष, प्रकृति का कोई तत्व हो इन सबसे अवधूत साधक दत्तात्रेय की तरह शिक्षा ग्रहण की जा सकती है अथवा एक सामान्य हीन कार्य करने वाला मानव हो, शिक्षा थी जस्टिस न्यायाधीश रानाडे की तरह उससे भाषा या शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

भारत देश में युगों से गुरु शिष्य परम्परा रही है, यहां गुरु विश्वामित्र, वसिष्ठ, सन्दीपनि, धौम्य, याज्ञवल्क्य, द्रोणाचार्य, विरजानन्द आदि अनेक प्रातः स्मरणीय गुरु आचार्य हुए हैं, उनके भी श्री राम, कृष्ण, अर्जुन, सुदामा, शंकर, विवेकानन्द, दयानन्द सरीखे प्राचीन अर्वाचीन शिष्य हुए हैं। गुरुकुलों एवं ऋषि आश्रमों की लम्बी परम्परा रही है। भगवान् के चरणों में उनकी शिक्षाओं को ग्रहण करने में गुरुओं की भूमिका की सदा महत्ता रही है, जहां से भी कोई अच्छी शिक्षा मिले, उसे लो। तैत्तिरीय उपनिषद में लिखा है—विद्याध्ययन पूर्ण होने पर गुरु उन्हें सीख देता था "सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय, सत्याचरण, अपने सांसारिक सामाजिक धर्मग्रन्थों के निर्वाह में कभी प्रमाद न करो। माता-पिता, आचार्य, अतिथि आदि दिव्य शक्तियों का समादर करो। गुरुजनों से जितनी अच्छी शिक्षाएं मिली हैं, उनका पालन करो। गुरुओं की शिक्षाओं पर चलो, तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा। यही गुरुओं एवं गुरु-परम्परा की दीक्षा है।

मुद्रक और सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा मारुतेश्वर प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन: ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

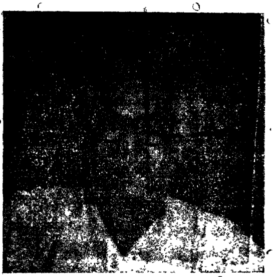
वर्ष १८ अंक ३१ | रविवार, ४ जून १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३३०१५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन २७-२८ मई ९५ को सम्पन्न

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव सर्वसम्मति से प्रधान तथा श्री सोमनाथ मरवाह वरिष्ठ उपप्रधान, श्री सूर्यदेव उपप्रधान चुने गए।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री एवं श्री ओमप्रकाश गोयल कोषाध्यक्ष नियुक्त



पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का त्रैवार्षिक वृहद अधिवेशन एवं निर्वाचन २७-२८ मई १९९५ को श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् की अध्यक्षता में हैदराबाद में सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर देश तथा विदेश के समस्त प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकृत प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् के अध्यक्ष पद का प्रस्ताव श्री सोमनाथ मरवाह तथा अश्विनी कुमार एडवोकेट पंजाब ने प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन सभी प्रान्तीय सभाओं के अध्यक्षों द्वारा किया गया। जिनमें प्रमुख पं० हरवंश लाल शर्मा पंजाब, श्री सूर्यदेव दिल्ली, श्री भूपनारायण शास्त्री बिहार, श्री मनमोहन तिवारी उ०प्र० श्री सत्यानन्द जी मुंजाल प्रादेशिक सभा, श्री वटकृष्ण वर्मन बंगाल, स्वामी सत्यानन्द जी मध्य भारत, श्री नारायण स्वामी कर्नाटक, पं० विद्याधर बंगलोर, श्री कोरटकर आन्ध्र प्रदेश, तथा दक्षिण भारत की सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों ने इनका समर्थन किया। सर्वसम्मति से प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् के सभा-प्रधान चुने जाने पर उपस्थित प्रतिनिधियों ने उन्हें फूल मालाओं से लाद दिया और भारी जय-जयकार की। सभा-प्रधान को सभा के अन्य अधिकारियों तथा अन्तरग सदस्यों को चुनने का अधिकार भी उन्हें दिया गया।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची निम्न प्रकार है:—

१—श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् (प्रधान)
२—श्री सोमनाथ मरवाह कार्यवाहक प्रधान (वरिष्ठ उपप्रधान)
३—श्री सूर्यदेव उपप्रधान (दिल्ली)
४—श्री हरवंशलाल शर्मा, उपप्रधान (पंजाब)
५—श्री सत्यानन्द मुंजाल उपप्रधान (प्रादेशिक सभा)
६—श्री छोटसिंह जी, उपप्रधान (राजस्थान)
७—श्री स्वामी सत्यानन्द जी उपप्रधान (मध्यप्रदेश भोपाल)
८—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री (उत्तर प्रदेश)
९—श्री अश्विनीकुमार शर्मा उपमन्त्री (पंजाब)
१०—श्री दिनकर देश पाण्डे उपमन्त्री (महाराष्ट्र)
११—श्री मनमोहन तिवारी उपमन्त्री (उत्तर प्रदेश)
१२—श्री ओमप्रकाश जी गोयल कोषाध्यक्ष (प्रादेशिक सभा)
१३—श्री वेदव्रत शर्मा पुस्तकाध्यक्ष (दिल्ली)

शेष ८ पर

प्रधान सम्पादक - सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

मानव जीवन की विविधता(३)

गणपति शर्मा

जिसको ठीक-ठीक देख सकते हैं। कहो कि वह पिण्डाकार पृथ्वी और घटादि और इसी प्रकार जल, तेज को भी प्रत्यक्ष देखते हैं और वायु को भी प्रकारान्तर से देख सकते हैं, तो भी ठीक नहीं। क्योंकि पृथ्वी आदि की दो अवस्थायें होती हैं। एक कार्यावस्था और एक कारणावस्था। बस इनको तभी सकते हैं। जब तक यह कार्य दशा मे है। जब यह कारण रूप अर्थात् परमाणु दशा को प्राप्त हो जाते हैं उस समय पुराणोक्त इन्द्र की तरह चाहे किसी के सहस्र नेत्र क्यो न हों, तब भी नही देख सकता। बस जिन चीजो को कारणावस्था अर्थात् असली हालत मे नही देख सकते उनके लिए जब कि वे उपाधि संयुक्त होकर कार्यावस्था मे आने के अनन्तर स्थूल हो जाती हैं उस समय यह कहना कि हम देख रहे हैं, हठ सा ही प्रतीत होता है।

नास्तिक की शंका—अच्छा हमे यह किसी न किसी अवस्था मे तो दृष्टिगत होते हैं, चाहे कार्यावस्था मे ही हो।

आस्तिक का समाधान—परमात्मा के भी परमाणु होते (तो सूक्ष्म से स्थूल हुआ करते तो दिखला सकते थे। किन्तु वह तो अखण्डैकरूप है। जिनके परमाणु होते हैं वे ही सूक्ष्म से स्थूल हुआ करते हैं क्योंकि वे एक दूसरे के साथ मिल जाते हैं। अच्छा अगर इस विचार को ठीक नहीं समझते हो तो जाने दो। परन्तु इस विषय मे कि हजारों चीजें ऐसी हैं जिन्हें कोई भी किसी प्रकार से नेत्रो से नही देख सकता। इसमें तो सन्देह हो ही नहीं सकता।

दूर क्यों जाते हो। थोड़ा-सा शरीरान्तर्गत चीजो की तरफ ही ध्यान दो। देखो, भूख प्रतिदिन लगती है। अन्न खाने से निवृत्त हो जाती है। क्या इसे किसी ने आज तक देखी या देखेगा। प्यास भी लगती है, जल पीने से शान्त हो जाती है। क्या किसी न अद्यावधि देखी है कि वह किस प्रकार की है। डाक्टर लोग फोड़े चीरते ही रहते हैं। किसी ने नेत्रों से देखा कि दर्द क्या चीज है जिसके कारण हाथी भी गिर पड़ता है। सिवाय रक्त मांसादि के वहां और कुछ भी दृष्टिगत नही होता। यह मन जो सहस्रो कोशो की यात्रा करके तत्काल चल आता है, किस मार्ग से आता जाता है और किस प्रकार का है, किसी ने देखा या देखेगा? बस इत्यादि चीजो को छोड़ के केवल ईश्वर सद्भाव मे ही शंका करना कि है तो दीखता क्यो नही, सिवाय ईश्वर विमुखता के और कुछ भी नही प्रतीत होता। इस समय इस बात की तरफ ध्यान देने वाला कोई प्रबल राजा होता तो ईश्वर दिखलाओ, इस शब्द के उच्चारण करते ही एक लाठी सिर मे मार देता। जब प्रत्यक्षवादी चिल्ला कर कहने लगता कि सिर मे दर्द होता है। उस समय पूछता है कि दर्द क्या चीज है, दिखलाओ, नहीं तो हम तुम्हारे एक लाठी और मारने की अपने भृत्य को आज्ञा देते हैं, तो सब नास्तिको को मालूम हो जाता कि ऐसी भी बहुत सी चीजें हैं जिनको नेत्रो से कोई भी नही देख सकता। विचार करो मित्र, नेत्रो से काले, हरे पीले को देख सकते हैं? ईश्वर के भी कोई रंग होता तो हमे दिखलाने म कोई उज नही था। जिस नेत्र से ईश्वर को देख सकते है वह नेत्र अगर तुम्हारे पास हो तो हम अभी दिखला सकते हैं।

यह नेत्र हैं—

अग्रया बुद्धि। दृश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभि।

कठोपनिषद्।

परमात्मा सूक्ष्मदर्शी लोगो द्वारा अग्रया बुद्धि से देखी जाती है। भला कोई अन्धा कहे कि मुझे अमुक पदार्थ को दिखला दो तो हम किस प्रकार दिखला सकते हैं। कान से भी तभी सुन सकते हैं जबकि वह शब्द होता। ऐसे ही अन्य इन्द्रियो से भी उनका विषय होना तभी मालूम कर सकते थे।

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम् तथा रस नित्यमगन्धवच्च यत्।

एक महात्मा उपदेश करते हैं कि परमात्मा अशब्द है, अस्पृश्य है, अरूप है, अव्यय है तथा अरस है। नित्य है, अगन्ध है। प्रमाण भी एक प्रत्यक्ष ही नही है, किन्तु प्रमाण चार होते हैं। देखो न्याय शास्त्र—

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम् तथा रस नित्यमगन्धवच्च यत्।

प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दा: प्रमाणानि।

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द यह चार प्रकार के प्रमाण होते हैं।

तत्रानुमानम्

अथ तत्पूर्वकम् त्रिविधमनुमानम् पूर्ववत् सामान्यतोदृष्टञ्च।

कारण को देख कर कार्य का अनुमान करना पूर्ववत्, कार्य को देखकर कारण का अनुमान शेषवत्। प्रत्यक्ष सदृश मे जो सादृश्यता से अनुमान किया जाता है वह सामान्यतोदृष्ट कहाता है। प्रत्यक्षपूवक यह तीन का अनुमान होता है।

इस अनुमान प्रमाण को संसार मे कोई भी मिथ्या नही ठहरा सकता। क्या कोई लड़के को देखकर कह सकता है। कि बिना माता-पिता के ही उत्पन्न हो गया, या कहीं से किसी मनुष्य का ग्रामान्तर जाना सुनकर कोई कह सकता है कि बिना किसी सवारी के, या चलने के यो ही चला गया। बस ईश्वर सद्भाव में एक बड़ा भारी अनुमान है कि—

यद्यत्कार्यम् तत् तत् सकर्तृकम् कार्यत्वात्।

जो जो कार्य है, सकर्तृक है, कार्य होने से। यद्यपि नास्तिक भाई इसको जब सुनते हैं तो हास्य करते है परन्तु यह इतना भारी नियम है जिसका किसी प्रकार से खण्डन कोई भी नही कर सकता। विचार करो, जिस प्रकार से खण्डन कोई भी नही कर सकता। विचार करो, जिस प्रकार हमारे सामने एक घड़ी आती है। तत्काल ही अनुमान करते हैं कि इसका बनाने वाला कोई अवश्यमेव है। इसी प्रकार जब हम कार्य जगत् को देखते हैं तो उसका एक-एक पदार्थ व्याख्यान सुनाता हुआ प्रतीत होता है कि संसार सकर्तृक है। क्या ऐसी अद्भुत रचना बिना कर्ता कभी हो सकती है। कहां एक ओर सारा ब्रह्माण्ड, कहां एक छोटा सा मनुष्य, जिसमें एक प्रकार से ब्रह्माण्ड का चित्र फोटो घट सकता है। संसार के नेत्र चन्द्र हैं। ऐसे ही मनुष्य के भी दो नेत्र हैं। संसार के पैर पृथिव्यादि हैं ऐसे ही मनुष्य के भी पैर। संसार का श्वास वायु है, ऐसे ही मनुष्य भी श्वास प्रश्वास से जीते हैं। संसार की हड्डी पहाड़ हैं, ऐसे ही मनुष्य के भी हड्डियां होती हैं। संसार के केश वृक्ष हैं। ऐसे ही मनुष्य के भी केश होते हैं। जैसे छोटे से बीज में वृक्ष भरा हुआ होता है ऐसे ही ब्रह्माण्ड का चित्र एक प्रकार से मनुष्य में पाया जाता है।

राजा के भय से ही सब अपने-अपने नियम से स्थित रहा करते हैं। पृथिव्यादि सब अपने-अपने नियम मे स्थित है। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि नियमित रखने वाला कोई बड़ा भारी बलवान राजा है।

अग्नि—यह अग्नि जिसमे इतना बड़ा सामर्थ्य है कि समग्र ब्रह्माण्ड को क्षण भर मे दग्ध कर देवे परन्तु एक तृण जिसके प्रत्येक स्थान मे विद्यमान है और तृण उसका खाद्य भी है तो भी उसको भक्षण नही कर सकता, जब तक हमारी तरफ से किसी प्रकार का तृण को जलाने का यत्न नही किया जावे। यह मेज जो सामने रक्खी हुई है, इसका कोई ऐसा भाग नही जो अग्नि शून्य हो परन्तु इसको आज तक जब से बना है अग्नि ने दग्ध नही किया। यह एक ऐसी बात है कि शेर के पिंजरे मे जैसे कोई बकरी को बन्द कर देवे और शेर बकरी को नही खावे तो अवश्य अनुमान करना पड़ता है कि अवश्यमेव कोई कारण ऐसा है जिससे नही खाता।

नास्तिक की शंका—हमने माना कि काष्ठादि मे अग्नि है और काष्ठादि उसके भक्ष्य भी हैं परन्तु कारणान्तरो मे जब तक उसमें जलाने का सामर्थ्य उत्पन्न नही होता तब तक भक्षण नही कर सकता। जलाने की शक्ति का प्रादुर्भाव घर्षणादि से होता है। देखो, बांसो मे अग्नि होती है परन्तु उनको नहीं जलाती। जिस समय बांसो की आपस की रगड़ से जलाने की ताकत उत्पन्न हो जाती है, तत्काल बांसों को जला देती है।

आपका "आर्य सन्देश" का वार्षिक चन्दा समाप्त हो रहा है, कृपया अपना शुल्क भेजने की कृपा करें। वी०पी० आदि भेजने मे व्यर्थ का खर्च होता है तथा परिश्रम भी निरर्थक होता है। आशा है आप इस विषय में आलस्य नहीं करेंगे।

—सम्पादक

'भारतीय सेक्युलरिज्म' एक बड़ा भारीधोखा, हिन्दुओं के सर्वनाश का एक पापपूर्ण षड्यन्त्र (३)

श्री प्रेमनाथ जोशी एडवोकेट

इतिहास का बदलना

हिन्दुओ मे अपने पूर्वजो के तथा जननायको के बारे मे अभिमान की भावना समाप्त करने के विचार से सेक्युलरवादियो ने इतिहास को ही बदल डाला है। उन्होने हिन्दुओ के ऐसे सभी पूर्वजो, जननायको जैसे राजा दाहिर, राणा सागा राणा प्रताप, शिवाजी तथा ऐसे ही अन्य हजारो शूरवीरो एव योद्धाओं के नाम. जो लगभग ११ शताब्दियों की लम्बी अवधि तक मुस्लिम आक्रमणकारियों तथा शासकों के विरुद्ध देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करते रहे, जिन्हें हिन्दू अपना जन नायक मानते हैं तथा सम्मान देते हैं। उन सबके नाम तक इतिहास के पन्नों से मिटा दिये गये हैं। यहा तक ही नही, उन्होने तो श्रीराम व श्रीकृष्ण जिनकी लाखों हिन्दू मन्दिरों तथा हिन्दुओ के घर-घर मे भगवान के रूप मे पूजा होती है है उनके नाम व उनकी जीवन गाथाओ को भी इतिहास की पुस्तको से हटा दिया है। आज उनके नाम इतिहास मे ऐतिहासिक पुरुषों के तौर पर नहीं अपितु सदर्भ मात्र के लिए ही लिखे जाते है।

नये पूर्वजों का आवंटन

सेक्युलरवादियो ने हिन्दूओं से उनके बाप-दादा व पूर्वज छीन लिए फिर भी उन्होने हिन्दुओं को अनाथ नही होने दिया। सेक्युलरवादियो ने अनन्त दया से आविर्भूत होकर, हिन्दू सन्तानो के लिए उनके पूर्वजो के स्थान पर अमीर खुसरो, लखनऊ के वाजिद अलीशाह, बहादुर शाह जफर, मिर्जा गालिब तथा टीपू सुल्तान जैसे अन्य नये पूर्वज व जननायक बनाकर अपनाने के लिए दे दिये।

हिन्दू समाज के टुकड़े करने की चाल

हिन्दू समाज के विघटन के कार्य मे तेजी लाने के लिए एक के बाद दूसरी आने वाली सेक्युलरवादी सरकारो ने, अनुसूचित जातियो को दिये गये विशेष अधिकार, उन लोगों को भी दे दिये, जो धर्म परिवर्तन कर सिख व बौद्ध बन गये। उन्होने यह भी आश्वासन दिया कि जो अनुसूचित जातियो के लोग मुसलमान व ईसाई बन जायेंगे, उन्हें भी यह विशेष अधिकार प्राप्त कराने के लिए प्रयत्न करेंगे।

हिन्दू द्रोह के अभियान मे उन्होने यहा ही इतिश्री नही की, अपितु हिन्दुओं की पिछडी जातियो को २७ प्रतिशत आरक्षण देकर हिन्दू समाज को दो भागो मे विभाजित कर दिया। यह इसलिए किया कि हिन्दू, हिन्दू के नाते कभी सगठित न हो सकें।

सेक्युलरवादी, एक विचित्र प्रकार के मानव प्राणी हैं, जो इस अभागे देश के अतिरिक्त अन्य कही भी नही पाये जाते। वे केवल जन्म की दुर्घटना से ही हिन्दू हैं। वे न चाहते हुए हिन्दू हैं, उन्हे प्राय अपने माता पिता, पूर्वजो, धर्म, सस्कृति तथा इतिहास को अपनाने मे लज्जा अनुभव होती है। पाखण्ड करना उनका एक साधारण गुण है, दोगली भाषा उनकी एक विशेष योग्यता है और मुसलमान, सिख, ईसाईयो की चापलूसी, उनकी दैनिक परिचर्या है। वह न केवल हिन्दूओं की कृतघ्न सतान हैं, अपितु वे प्राय: अपने पूर्वजो के इति शत्रुता रखते है तथा अपनी सतानो के विनाशक हैं अन्यथा कोई आदमी अपने होशो हवास मे मे अपनी सतानो को उनके अपने धर्म तथा अपने इतिहास के वास्तविक सच्चे ज्ञान से कैसे वचित कर सकता है। परन्तु इस देश के सेक्युलरवादी यही सब कुछ कर रहे हैं।

सेक्युलरवादियो ने हिन्दुओ को बदनाम करने के लिए एक बडा भारी अभियान चला रखा है, जिससे हिन्दूओ को यह विश्वास दिलाया जा रहा है कि वे सम्प्रदायवादी हैं तथा वे ही राजनैतिक अपराधी हैं। इससे हिन्दू एक हीन भावना के शिकार हो गये हैं। वे अपने आपको एक अपराधी के कटघरे मे खड़ा मान रहे हैं। वे सब अपने बचाव मे यही कहते थकते नही, कि वे सम्प्रदायवादी नहीं हैं, वे तो 'सेक्युलर' है। हिन्दुओ के धर्म, सस्कृति व सभ्यता मे ऐसी कोई बात नही, जिससे हिन्दुओ को शर्म अनुभव हो। हिन्दू धर्म ससार के सभी धर्मों मे सर्वोपरि है। हिन्दू धर्म स्वभाव से ही प्राणी मात्र के कल्याण के लिए है।

आज के रक्तपात एव उपद्रव के लिए हिन्दू जिम्मेदार नही हैं। श्रीराम जन्मभूमि सघर्ष आदोलन, शिलापूजन तथा भाजपा की रथ यात्रा, देश मे बढ़ रही हिसा तथा साम्प्रदायिक हिसा के कारण नही हैं। काग्रेस, दोनों कम्युस्टि पार्टिया तथा जनतादल, मुसलमान, सिख तथा ईसाईयो को, अपने-अपने धर्म के नाम पर सगठित तथा सयोजित करते आ रहे है। ये दल श्रीराम जन्यभूमि मन्दिर तथा अन्य विषयों के बारे मे हिन्दू के विरोध मे घृणा के अभियान चलाते रहे हैं। वे मुसलमानों को इस बात के लिए उकसाते रहे हैं कि वह श्रीराम जन्म मन्दिर की पुन: स्थापना का दृढतापूर्वक विरोध करे । उन्होने मुसलमानो को भाजपा की रथयात्रा को बलपूर्वक रोकने के लिए भी उकसाया। स्वतन्त्रा के बाद के काल में ९५ प्रति० साम्प्रदायिक दगों के लिए कांग्रेस तथा उसकी विचारधारा ही उत्तरदायी है। सभी सेक्युलरवादी दलों ने इन सभी दगों मे सदा उन्ही मुस्लिम तत्वों की हरकतो को न्यायसगत बताया, जिन्होंने इन दगो को शुरू किया था।

यदि आज कश्मीर में कश्मीरी मुसलमान एक प्रभुसत्ता सम्पन्न मुस्लिम राज्य की माग कर रहे हैं, पजाब में सिख आतकवादी खालिस्तान की तथा उत्तर-पूर्व मे ईसाई मिशनरी एक स्वतन्त्र ईसाई राज्य की स्थापना के लिये कार्य कर रहे है तो इन सबके लिए कांग्रेस (ई) तथा अन्य सेक्युलरवादी दल ही उत्तरदायी हैं। ये सेक्युलरवादी दल ही देश में अलगाववादी आदोलनो का समर्थन तथा सचालन करते रहे है। कौन नही जनता कि खालिस्तान आन्दोलन के जन्मदाता जरनैल सिह भिडरावाले को कांग्रेस (ई) ने ही खडा किया था।

हिन्दुओ को केवल सुरक्षात्मक लडाईया लड़ने की आदत छोड़ देनी चाहिए हमे सेक्युलरवादियो को मुजरिम के कटघरे मे खडा कर देना चाहिए। वे ही वास्तव मे अपराधी हैं। उन्होने देश की एकता के एक-एक सूत्र को नष्ट कर दिया है। वास्तव मे 'भारतीय सेक्युलरवाद' आज देश की सुरक्षा के लिए एक खतरा बन चुका है।

हिन्दू जागे अपनी शक्ति को पहचाने, तथा देश मे चल रही राजनैतिक बहस मे आक्रान्ता के रूप मे सामने आए ।

हमे आशा है कि इस लेखको के पढने के पश्चात् अधिकतर हिन्दू समझदारी से काम लेंगे, तथा अपने आप को "सेक्युलरवाद" के मायाजाल से मुक्त कर सकेंगे। उनमे सेक्युलरवाद के मुखौटे को उतार फेंकने का पर्याप्त साहस पैदा होगा। सेक्युलरवाद देशभक्ति का कोई प्रमाण पत्र नही है। आज की राजनीति मे इसका अर्थ मात्र 'अपराध' तथा 'देशद्रोह' ही है। पाठक सेक्युलरवाद तथा सेक्युलरवादियो को उनके वास्तविक स्वरूप को पहचाने। कोई भी हिन्दू अपने को सेक्युलरवादी न कहे। 'सेक्युलरवादी' होना तो एक गाली है। यदि हमे इस राष्ट्र को जीवित रखना है तो हमें सेक्युलरवाद जैसी देशद्रोही विचारधारा को तिलाञ्जली देकर इसे बहुत गहरे समुद्र मे डुबो देना चाहिए।

'सेक्युलरिज्म एक गाली बन जाये सेक्युलरपन्थी एक अत्यन्त घृणा का पात्र जैसे एक देशद्रोही।

नार्वे से हिन्दी समाचार पत्र का प्रकाशन

अप्रवासी टाइम्स नाम से नार्वे की राजधानी ओस्लो से प्रथम हिन्दी समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया है जिसकी पहली प्रति १८ मई १९९५ को भारत के राष्ट्रपति जी को भेंट की गई। समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक श्री अमित जोशी के अनुसार उनका सस्थान पिछले ६ वर्षों से हिन्दी पत्रिका 'शान्ति दूत' प्रकाशित करता रहा है जो ससार के लगभग १५६ देशो मे पढी जा रही है। समाचार पत्र शुरू करने का उद्देश्य यूरोपीय देशो के अप्रवासी भारतीयों को एक वैचारिक मन्च प्रदान करने के साथ साथ उन्हे हिन्दी के माध्यम से भारत और भारतीयता से जोड़े रखना भी है। श्री जोशी ने यह भी बताया कि रामायण का नार्वेजियन भाषा मे अनुवाद शीघ्र ही उपलब्ध हो जाएगा।

(दैनिक नवभारत टाइम्स के १९ मई १९९५ के अंक से साभार)

आओ ! कल्याणमार्ग के पथिक बनें

चमनलाल, एच-६४, अशोक विहार दिल्ली

"द्वे सृती अश्रणव पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिद विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितर मातर च ।"

यजु० १९।४७

"ईजानश्चितमारुक्षदग्नि, नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत्पतिष्यन् ।
तस्मै प्रभाति नभसो ज्योतिषीमान्, स्वर्ग पत्था. सुकृते देवयान ॥"

अथर्ववेद

"श्रेयश्च प्रेयश्च समुष्यमेत
स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीर ।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसोवृणीते,
प्रेयो मंदो योगक्षेमाद् वृणीते ॥"

कठोपनिषद बल्ले २।२

ये वेद की ऋचायें और उपनिषद वचन एक ही भाव के द्योतक हैं । यद्यपि शब्द अलग-अलग हैं, परन्तु अर्थ-तात्पर्य एक ही है । अर्थात ससार में केवल दो ही मार्ग हैं जो इस उत्पन्न ससार में प्रत्येक स्त्री-पुरुष, राजा-रंक, विद्वान मूर्ख, शिक्षित-अलहढ़ सभी के सामने खुले पड़े हैं जिनमे से कोई भी किसी एक को धारण कर अपनी जीवन यात्रा आरम्भ करता है । दूसरे शब्दों मे यू कह सकते हैं कि सारा दृश्य जगत इन्ही पर चलने का परिणाम है ।

इन दो मार्गों को भिन्न स्थानो पर अलग-अलग नामों से व्यक्त किया गया है । वेद से इनको पितृमान-देवमान कहा गया तो उपनिषद मे प्रेय-श्रेय नामों से वर्णन किया गया है । अन्यत्र इनको अविद्या विद्या, प्रवृत्ति-निवृत्ति, भोग-योग, मोक्ष-सुख के द्वार सासारिक सुख दायक कहा गया है । योगदर्शन मे इनको और भोग उपवर्ग कहा गया है तो कृष्ण शुक्ल नाम से वर्णन किया है । किन्ही आचार्यो ने इनको इहलौकिक-पारलौकिक और कहीं-कहीं इनको अमृत से द्वार और जीवन मरण के चक्र मे डालने वाले कहा गया है । अंधकार-प्रकाश मार्ग भी इनको कहा जाता है । सक्षेप मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि एक मार्ग प्रकाश-मोक्ष सुख की ओर ले जाता है तो दूसरा मार्ग अन्धकारमय-भोग विलास की ओर ले जाता है ।

चुनाव—मानव देहधारी निसंदेह चेतन प्राणी हैं परन्तु इसका एक बौद्धिक नाम "नेम" है अर्थात यह अल्पज्ञ है । उपनिषद मे इसको 'पराञ्चि खानि' कहा है अर्थात इन्द्रियो जो बाहिर गामी हैं विषय भोगो मे इसे हर कर ले जाती हैं । अत इस कारण साधारणत आदमी प्राय प्रेम-भोग मार्ग को ही अपनाता है और प्रकृति-भोग की प्रवृत्त हो दुख सागर मे पड़ा भटकता रहता है । विश्व के एक से ऊचे से ऊचे भोग सामग्री जुटाने मे दृढ़तापूर्व अग्रसर रहता है । सारा जीवन इन मोहक सासारिक भोगो के जुटाने मे लगा रहने पर भी चैन नही पाता है । उपनिषद के शब्दो मे ये विषय भोग इसके तेज को हर लेते है और इसे निस्तेज कर जीवन मरण के चक्र मे डाल देते है । "पुनरपि जन्म पुनरपि मरण" के कारण बार-बार माता के गर्भ मे ९-१० मास मल मूत्र मे उलटा लटकता है और घोर नरक का दुख भोगता है । शुक्राचार्य के शब्दो मे 'दुखम् जन्म' से बढकर और कोई दुख नही है । यह अनाडी देहधारी मनुष्य इसीलिए इन विषय भोगो मे फस कर विषय-विलास का जीवन यापन करने लगता है, क्योकि नीतिकारो ने इनके सम्बन्ध मे बड़ा सुन्दर कहा है—

"आपात रम्याविषया पर्यन्ते परितापिन ।"

अर्थात यदि विषय भोग आरम्भ मे बड़े आकर्षक दीख पड़ते हैं परन्तु अन्त मे दुखदायी सिद्ध होते हैं । इसलिए किसी ने बडा सुन्दर कहा है कि "सदियो भटक रहा है जीव पर चैन नही पाता है ।" वह इन भोगो मे फसकर "भोगाज" बन गया है तो चैन कैसे मिले । चैन-शान्ति मिले कैसे क्योकि वह तो शान्ति के स्रोत परमपिता से कोसो दूर चला गया है और लाख समझाने पर भी श्रेय निवृत्ति मार्ग की बात सुनना नही चाहता । इसके विपरीत कुछ समझदार, विवेकी, विद्वान लोग इन भोगो की निस्सारित को समझकर इन भोग मार्गो की उपेक्षा कर श्रेय मोक्ष मार्ग को धारण करते है परन्तु ऐसे कोई विरले ही महामानव होते हैं जो इस ओर अर्थात निवृत्ति को अपनाते हैं । ये वे लोग होते हैं जो ससार के सर्वश्रेष्ठ परम लुभावन वाले भोगो की अपेक्षा मोक्ष सुख आत्म सुख को ही श्रेयस समझाते हैं । अत ये कल्याण मार्ग को धारण कर साधारण जनता के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते हैं । यद्यपि यह प्रकाश निवृत्ति का मार्ग आरम्भ मे अवश्य ही कुछ कष्टप्रद हो, परन्तु अन्त मे तो यह अमृत समान कल्याणकारी सिद्ध होता है । किसी ने ठीक ही कहा है—

"यदग्रे विषमिव परिणामे अमृतोपमम ।"

देखने मे तो ये दोनो प्रकार के मार्ग एक दूसरे के विरोधी प्रतीत होते हैं परन्तु वास्तव मे ये दोनों ही मार्ग एक दूसरे के साधक पूरक हैं । इन दोनों मार्ग द्वारा प्रकृति पुरुष के भोग और अपवर्ग नामक दोनो अर्थों का पूरा कर रही है । जीव प्रेम मार्ग को अपना ससार के भोगो को भोगता हुआ शरीर को स्वस्थ हृष्ट पुष्ट कर और श्रेय मार्ग के द्वारा मोक्ष-सुख की ओर अग्रसर हो सकता है । अत विश्वास रखिए कि भोग मार्ग के बिना श्रेय मार्ग का सिद्ध होना सम्भव ही नही । भोग मार्ग साधन है तो योग मार्ग साध्य है । सृष्टि नियम के अनुसार कोई साध्य वस्तु बिना साधन के प्राप्त नहीं हुआ करती ।

जीव के हित के लिए ही प्रभु ने इस सृष्टि की रचना की है और अपना सारा ऐश्वर्य जीव हित के लिए ही दे डाला है ।

'तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ॥"

ऋग० ९।६१।२८

"इन्द्राय द्यावा ओषधीरुतापो रयिं रक्षन्ति जरियो वनानि ॥" ऋग ३।५१।५
"न भोजुवो यन्निरवस्य राध प्रशस्तये महिना रथवते" ऋग १।१२२।११
"तदर्थ एव दृश्यस्यात्मा" योग द० २।२२

अर्थात पृथ्वी से लेकर द्युलोक पर्यन्त जो भी पदार्थ हैं, वे सारे के सारे

(शेष पेज ४ पर)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण शिविर

३ जून १९९५ शनिवार से ११ जून १९९५ रविवार तक
स्थान—गुरुकुल खेडाखुर्द—नई दिल्ली-११००८२
उदघाटन— ३ जून प्रात ६-३० बजे
समापन— ११ जून प्रात ६-३० बजे
उद्देश्य— युवकों का शारीरिक व आध्यात्मिक विकास करके उन्हे सामाजिक उन्नति के लिए प्रेरित करना

नियम

१. शिविरार्थियो को शिविर मे कठोर अनुशासन से रहना होगा, बाहर जाने की आज्ञा नही होगी।

२ न्यूनतम १४ वर्ष या नवी कक्षा से उपर के ही योग्यता के युवक शिविर मे भाग ले सकेंगे।

३. शिक्षणार्थी ऋतु अनुकूल बिस्तर, थाली, कटोरी, गिलास, लोटा या मग, वेशभूषा सफेद कमीज, खाकी निक्कर, सफेद सैन्डो बनियान, सफेद जुराब खाकी पलीट, लगोट, काला कच्छा, कान तक की लाठी, टार्च, कापी-पेन साथ लेकर आयें। यज्ञ हेतु कुर्ता-पजामा भी लाने का प्रयास करें।

४. शिविरार्थी २ जून सांय ७ बजे शिविर स्थल पर पहुच जायें।

५. शिविर शुल्क ५० रु० प्रति युवक रहेगा।

६. सोना-चादी के आभूषण व कोई कीमती सामान पहनकर न आयें।

अपील

राष्ट्र निर्माण के इस रचनात्मक आयोजन मे आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है।

दानी सज्जन आटा, दाल, चावल और घी के टीन आदि भी दे सकते हैं जो कि सभा कार्यालय हनुमान रोड मे २ जून १९९५ से पहले भिजवाने की कृपा करें।

—निवेदक—

सूर्यदेव प्रधान — **डा० धर्मपाल** महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

प्रियतम दास रसवन्त, अधिष्ठाता व शिविर अध्यक्ष — डा० ज्ञान प्रकाश शर्मा, सचालक — खुशी राम शर्मा, सह सचालक

दूरभाष ५११९९१४ — दूरभाष-५७०२०८०

ईश रनारग, मन्त्री, दूरभाष ५१३१९०५ — पतराम त्यागी, महामन्त्री

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

असंगत मिथ्या धारावाहिक का विरोध आवश्यक है

१५ मई के नवभारत टाइम्स मे "द वेद" धारावाहिक की जो रूपरेखा प्रकाशित हुई है उससे यह प्रतीत होता है कि अपौरुषेय वेद के नाम अन्तर्गत पाश्चात्य विद्वानो तथा सायण आदि भाष्यकारो के अनुसार धारावाहिक का निर्माण करके वेद का आख्यानो वाला पौराणिक स्वरूप दर्शको के सम्मुख प्रस्तुत किया जावेगा और महर्षि दयानन्द ने वेद का सच्चा स्वरूप दिखाकर जनमानस मे जो उसकी प्रतिष्ठा बनाई है उसे धूसरित किया जायेगा।

आर्य समाज की ओर से ऐसे असगत मिथ्या धारावाहिक का विरोध किया जाना आवश्यक है। आपके पत्र के माध्यम से मैं आर्य सस्थाओ और नेताओ से आग्रह करता हू कि वे सूचना और प्रसारण मन्त्री को लिखें कि ऐसे विषय तत्वो पर आधारित धारावाहिक के प्रसारण की अनुमति न दे।

कृष्ण लाल

आचार्य, सस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

वर्ष १९९५-९६ के अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची

१. श्री राममूर्ति कैला, प्रधान, एच. १७०, अशोक विहार, फेज-१ दिल्ली-५२
२. श्री सत्य नारायण आर्य, कोषाध्यक्ष डाकघर भवन, बगाली मार्केट, नई दिल्ली-१
३. श्री राजीव भाटिया, अधि० आर्य वीर दल जे-८२५, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१
४. श्री वीरेश कुमार बुग्गा, मन्त्री १४-जैन मन्दिर कम्पाउण्ड, नई दिल्ली-१

आओ ! कल्याणमार्ग (पेज ४ का शेष)

इस शरीर धारी जीव के हित के लिए हैं। जीव काम करने मे स्वतन्त्र है चाहे वह इनका दुरुपयोग करके निधन-मृत्यु का शिकार बनकर जन्म मरण के चक्कर में भटकता फिरे या इनके विवेक के साथ सदुपयोग करके मोक्ष-सुख का भागी बने। अत यह जीव की अपनी इच्छा है जैसा चाहे वैसा करे।

यद्यपि यह शरीर नाशवान है तो यह मोक्ष सुख प्राप्ति का एक मात्र साधन है। अत. वेद मे इसका कल्याणकारी और मधुमय बनाने और कल्याणकारी, निर्दोष मार्ग पर चलने का ही उपदेश वेद मे स्थान-स्थान पर दिया है।

"स्वस्तिदाह रथमितकृणुथवम्।" ऋग० १०।१०१।७
"उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्त:" साम० ४४४
"अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम्।" ऋग ६।५१।१६

इस सारे विवेचन से यही सिद्ध हुआ कि मानव जीवन का उद्देश्य विलास नहीं है, यह तो आत्मोन्नति के लिए मिला है। अत. मनुष्य को चाहिए कि वह प्रभुदत्त वेद ज्ञान को अपनाकर (मन्त्र श्रुत्य चरामसि)श्रेय मार्ग को ओर अग्रसर हो इसी नश्वर देह से अपना सर्वांग विकास करे और मोक्ष-सुख का भागी बने। इसी को कल्याण मार्ग का पाथिक बनना कहा जाता है। परमात्मा का आदेश भी यही है।

"अध ज्मो अधवा दिवो बृहतो रोचनादधि।
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतोपृण।"
। साम ५२।

प्रभु हमे सुमति प्रदान करे और उसकी इस आज्ञा का पालन कर जीवन को सफल बनावे। अत अन्त मे यही कहना उपयुक्त होगा।

प्रात नित उठ प्रभु गुण गायाकर, वेदानुसार जीवन बनायाकर।

डी.ए.वी. नैतिक शिक्षा संस्थान

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

प्रवेश सूचना

डी०ए०वी० सस्थाओ मे धर्म शिक्षा का अध्यापन सुनिश्चित एव स्तरानुकूल बनाये रखने के लिये इस सस्थान मे सस्कृत के युवा विद्वानो को एक साल का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा तदुपरान्त डी०ए०वी० सस्थाओ मे उनकी नियुक्ति को सुनिश्चित बनाया है।

प्रवेश योग्यता :—किसी गुरुकुल का स्नातक/सस्कृत मे एम०ए० अथवा शास्त्री विशेष प्रतिभा सम्पन्न ऐसे प्रशिक्षार्थी को भी प्रवेश दिया जाता है जिसने बी०ए० मे सस्कृत पढी हो अथवा जो हिन्दी मे एम०ए० हो।

सस्थान मे रहकर व्रत पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने वालो को भोजनादि हेतु ४०० रु० तथा सस्थान से बाहर रहकर नियम पूर्वक प्रशिक्षणार्थ आने वालो को २०० प्रतिमास छात्रवृत्ति रूप मे दिये जाते है।

प्रवेश पाने के इच्छुक अपने आवेदन पत्र शैक्षिक योग्यता के प्रमाण पत्रो की प्रतिलिपि सहित जून के दूसरे सप्ताह तक भेज दें। प्रवेश परीक्षा (तिथि की सूचना बाद मे दी जायेगी) जुलाई मे होगी।

यशपाल शास्त्री, डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा सस्थान;
आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

नारी कल्याण और महर्षि दयानन्द सरस्वती

पं० नन्दलाल निर्भय, सिद्धांत शास्त्री

आदि गुरु शंकराचार्य ने स्त्रियों को नर्क का द्वार बताया था। सन्त तुलसी दास ने उसे ताडना का अधिकारी बताया। मोहम्मद हजरत ने पैरों की जूती कहा तो ईसा ने नारी को केवल भोग विलास की सामग्री माना।

जगत गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी को निर्माता एव पूजनीय बताया। उन्होने महर्षि मनु का हवाला देकर साफ कहा कि जहा नारी का अपमान होता है वहां सब क्रियाए बेकार हो जाती है तथा जहा नारी का सम्मान है वहा देवताओं का वास होता है।

महर्षि दयानन्द ने सर्व प्रथम स्त्रियो व अछूतों के लिए शिक्षा का द्वार खोल कर उन्हें ज्ञान प्राप्ती का अवसर प्रदान कराया था। आज देश मे आर्य समाज द्वारा हजारों स्कूल, कालिज तथा गुरुकुल चल रहे हैं जिनमें लड़के, लड़कियां सभी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। परिणामस्वरूप स्त्रियां नेता, अधिकारी बन रही हैं।

स्वतन्त्रता के बाद भारत सरकार ने महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर ध्यान नहीं दिया इसलिए इतिहास की हजारों करवटो के बाद भी स्थिति में कोई ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी नारी की नियति पुरुषों के हाथ की कठपुतली बनकर रह गई है। वह अपनी मर्जी की मालिक नहीं। हमारे देश मे केवल दो प्रतिशत स्त्रियां ही ऐसी होंगी जो नारी मुक्ति का सोच कर रही होंगी।

विश्व की आधी आबादी महिलाओं की है पर उन्हें सम्पूर्ण मानवीय श्रम की दो तिहाई जिम्मेदारी सम्भालनी पड़ती है। सत्य यह है कि विश्व में आज जितनी भी सम्पत्ति है उसके ९९ प्रतिशत हिस्से पर पुरुषों का स्वामित्व है और केवल एक प्रतिशत की मालिक महिलाएं हैं।

यहां तक कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे कि उड़ीसा, असम और छत्तीसगढ आदि क्षेत्रो मे अधिकाश कृषि कार्य स्त्रियों पर ही निर्भर करता है। महाराष्ट्र के बड़े-बड़े नगरो मे अधिकांशत: दफ्तरो में और यहा तक कि सब्जी मण्डियों मे अधिकतर स्त्रिया ही काम करती दिखाई देती हैं।

कामकाजी स्त्रियो की स्थिति हमारे यहा अत्यधिक दयनीय बन जाती है। जब उन्हे दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। घरेलू काम उनका जन्मजात कर्त्तव्य समझा जाता है जिसके लिए कोई अलग पारिश्रमिक की व्यवस्था नहीं।

आफिस मे काम करने वाली मध्यमवर्गीय महिलाए यदि कभी आफिस मे एक-दो घण्टे देर से आती हैं तो घरवालो की नजरो मे वे प्रश्न चिन्ह बनकर रह जाती हैं। जबकि पुरुष को पूर्ण आजादी है समय से खिलवाड करने की।

नारी जाति के कल्याण के लिए सरकारी एव गैर सरकारी दोनो प्रकार की संस्थाए काम कर रही हैं। कानूनी तौर पर यद्यपि नारी को अनेक अधिकारो से सुसज्जित कर दिया गया है जैसे निशुल्क शिक्षा, १८ साल की आयु तक विवाह न होने का कानून, शराबी व दुराचारी पति से तलाक तलाकशुदा परित्यक्ताओ के लिए गृह किन्तु इनके नीचे सत्य कुछ और ही है जिसे समझने की विशेष जरूरत है।

समाज तलाकशुदा नारियो को कहा तक स्वीकार करता है? यदि उनके दूसरे विवाह का प्रश्न उठाया जाता है तो परित्यक्ता की दीवार उसका मार्ग रोक लेती है। जहा तक नारी शिक्षा का सम्बन्ध हैं आज भी छोटे स्तर पर देखें तो लडको की शिक्षा की अपेक्षा लडकियो की शिक्षा को कम महत्व दिया जाता है। यह सब समाज मे वैदिक सभ्यता संस्कृति को भूलने का ही घातक परिणाम है।

लोग यह सोचते है कि लडकी तो पराया धन है। लडका तो घर पर ही रहेगा और आर्थिक रूप मे मा-बाप की मदद करेगा। यहा तक कि उन्हे लड़कियो की अपेक्षा अधिक पौष्टिक आहार दिया जाता है। स्त्री भले ही पुरुष से अधिक पढ़ी लिखी हो किन्तु घर मे उसकी सोच को विस्तार नहीं दिया जाता और न ही घर मे मान होता है क्योकि वह स्त्रियों मे बुद्धि चतुरता आदि गुण बर्दाश्त नही कर पाता इससे उसके अहम् को ठेस पहुंचती है। अहम् भाव ही स्त्री-पुरुषो के सम्बन्धो मे तनाव की स्थिति उत्पन्न करता हैं।

नारी मुक्ति को वास्तविक अर्थ देने के लिए सबसे पहले हमे परम्परागत सामाजिक रीति रिवाजों व रूढियो को तोडना होगा। जब तक हम प्रचलित रूढियों एव प्रथाओ को नही तोडते तब तक नारी मुक्ति अथवा नारी शक्ति की बाते करना बेकार है।

प्राय समाज मे देखा गया है कि शिक्षित नारिया जो नारी मुक्ति के नारे लगाती है वे स्वय परिस्थिति वश अपने को उन्ही रूढियो का शिकार बना डालती हैं। यही वे रूढिया परम्पराए अथवा प्रथाएं हैं जिन्होने पुरुष पुरुष के अहम् को प्रज्जलित किया है।

विवाह से लेकर मरने तक के रीति-रिवाज पुरुष के अहम् को प्रज्वलित करते हैं। पत्नी की मृत्यु होने पर उसे दाग देने के पश्चात पुरुष जब घर में प्रवेश करता है तो उसे जूती बदल कर जाने दिया जाता है अर्थात वह दूसरा विवाह कर सकता है। किसका प्रतीक है?

अवश्य ऐसे रीति रिवाज जिन्होने नारी को अभी तक वास्तविक रूप से आजादी प्रदान नहीं की। चाहते हुए भी रीति रिवाजों ने नारी को दबोच रखा है नारी मुक्ति की जो लहर उठी है उसे हम सबने चाहे पुरुष हो अथवा नारी एक वास्तविक गति प्रदान करनी है। ताकि वे ढकोसला मात्र बनकर न रह जाए।

नारी जाति का कल्याण करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश मे वर्णित नियम व वैदिक सिद्धांतो का प्रचार-प्रसार करने की अत्यन्त आवश्यकता है। सबसे पहले हमे शिक्षा मे आमूल चूल परिवर्तन करना होगा क्योकि स्वतन्त्रता प्राप्ती के पश्चात भी हम विदेशी शिक्षा पद्धति पर निर्भर है यही स्त्रियो की दुर्दशा का मूल कारण है।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमों के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपये तथा आजीवन शुल्क ३५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक नि:शुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनो या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

(पेज १ का शेष)

अन्तरंग सदस्यः—

श्री योगेन्द्रपाल सेठ, डा० के०के० पसरीचा, श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर, श्री भूपनारायण शास्त्री, श्री आनन्दप्रकाश आर्य, श्री वटकृष्ण वर्मन, श्री पं० विद्याधर जी श्री नारायण स्वामी, श्री रामनाथ सहगल, चौधरी लक्ष्मीचन्द्र जी, श्री शिवकुमार शास्त्री, महाशय धर्मपाल जी, श्री ओमप्रकाश कपड़े वाले, श्री भगवतीप्रसाद, श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री राममूर्ति केला, श्री स्वामी तत्वबोधानन्द जी, श्री मिठाईलाल जी।

इस अवसर पर राष्ट्रहित में समान नागरिक संहिता बनाए जाने, गोरक्षा अभियान को सक्रिय रूप देने, देश में बढ़ रहे जात पात और सम्प्रदायवाद को समाप्त करने और दलितो के समुचित उत्थान के कार्यक्रमो को उत्साह पूर्वक संचालित करने सम्बन्धी अनेक प्रस्ताव भी पारित किए गए। नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी की अध्यक्षता में २८ मई को अपरान्ह ३ बजे स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के जन्मदिवस पर एक श्रद्धांजलि सभा का भी आयोजन किया गया। जिसमें आन्ध्र प्रदेश के पूर्व स्पीकर श्री जी० रामाराव मुख्य अतिथि थे। (प्र०)

स्वतन्त्रता सैनानी श्री अमरनाथ मल्होत्रा को पुत्र शोक

दिल्ली। आर्यसमाज के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सैनानी श्री अमरनाथ मल्होत्रा के सुपुत्र श्री सुनील मल्होत्रा का स्वर्गवास ३४ वर्ष की युवा आयु में ही गत फरवरी माह में हो गया था। सार्वदेशिक सभा में इस आशय की सूचना विलम्ब से प्राप्त हुई।

श्री सुनील मल्होत्रा अपने पीछे अपनी पत्नी सुश्री पिंकी तथा ५ वर्ष की कन्या तथा लगभग १ वर्ष का सुपुत्र छोड़ गए हैं।

हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री अमरनाथ मल्होत्रा जी के परिवार को इस क्षति के सहन करने की सामर्थ्य तथा शक्ति प्राप्त हो तथा दिवंगत आत्मा को सदगति मिले।



आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 1,2-6-1995 Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/95
दि.ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक ४ जून १९९५

भारत की शान बढ़ाओ तुम

भारत के नेताओं जागो, अपना कर्त्तव्य निभाओ तुम।
तुम वीर पटेल, सुभाष बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम॥

पाकिस्तान पड़ोसी, दुश्मन भारी बौराया है।
अभिमानी का युद्ध क्षेत्र मे गर्व सदा हमने ढाया है॥
भारत वीर निराले हैं हम, नहीं मौत का भय खाया है।
संसार जानता है सारा, पापी को नीचा दिखलाया है॥
फिर छेड़ रहा है खल हमको, पापी का नाम मिटाओ तुम।
तुम वीर पटेल, सुभाष बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम॥

काश्मीर को अत्याचारी, वह नित अपना बतलाता है।
वह झूठ बोलता है भारी, किंचित भी ना शर्माता है॥
आतंकवाद अरु उग्रवाद, भारत में शठ भड़काता है।
निर्बल, निर्धन, निर्दोषों की, हत्याएं नित करवाता है॥

बेनजीर की पोल खोलकर, जग में निजि धाक जमाओ तुम।
तुम वीर पटेल सुभाष बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम॥

तुष्टिकरण की गलत नीति ने, ही तो सब काम बिगाड़ा है।
अब इसीलिए तो नाच रहा, दानव दल आज उघाड़ा है॥
अफसोस हमें है वैरी का, मुंह तुमने क्यों ना झाड़ा है।
तुम अर्थ शान्ति का भूल गए, दुश्मन को नहीं लताड़ा है॥
तुम राम, कृष्ण के वंशज हो दुनिया में नाम कमाओ तुम।
तुम वीर पटेल, सुभाष बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम॥

याद रखो केवल बातों से, नही सफलता मिल पाती हैं।
वीर, बहादुर जय पाते हैं, बात देखने में आती है॥
समझाने से जो ना माने वह नर पूरा उत्पाती है।
पापी को दो दण्ड कड़ा तुम, मनुस्मृति यह समझाती है॥
बन जाओ स्वामी दयानन्द, वेदों का नाद बजाओ तुम।
तुम वीर पटेल, सुभाष बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम॥

कुर्सी का दो मोह छोड़ यदि भारत की है लाज बचानी।
देश, धर्म पर मिट जाए जो कहलाती है वही जवानी॥
जीवन सफल करो तुम अपना, बनो तिलक, गांधी से त्यागी।
वीर लाजपत जैसे 'निर्भय' जगती में धूम मचाओ तुम॥
कहता है नन्दलाल "निर्भय" जगती में धूम मचाओ तुम।
तुम वीर पटेल, सुभाष बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम॥

—प० नन्दलाल "निर्भय" भजनोपदेशक

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : —३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि०नं० डी० (एल ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ३२ | रविवार, ११ जून १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द । १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष । ३१०१५०

सार्वदेशिक सभा के चुनावों को लेकर मनगढ़न्त खबरों का खंडन

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव विधिवत् निर्वाचित प्रधान तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

नई दिल्ली । कुछ दैनिक समाचार पत्रों में स्वामी विद्यानन्द को सभा प्रधान चुने जाने तथा सभा-भवन पर उनके कब्जे की खबरों का खण्डन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय से इन्हें मनगढ़न्त, बेबुनियाद और झूठी चर्चा बताया गया है ।

गत २५ मई को दिल्ली के एक न्यायालय में स्वामी विद्यानन्द द्वारा सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध किये गये एक मुकदमे में यह अन्तरिम आदेश दिया गया था कि विद्यानन्द को २७, २८ मई के साधारण अधिवेशन में भाग लेने दिया जाये ।

स्वामी विद्यानन्द दिल्ली के स्थाई निवासी हैं, जब कि वोटर बनने के लिए उन्होंने सभा की राजस्थान शाखा से साठ-गांठ की थी । कुछ अन्य अनियमितताओं को ध्यान में रखते हुए सार्वदेशिक सभा के एक कार्यालय आदेश के द्वारा विद्यानन्द जी को वोटर मानने से इन्कार कर दिया गया था । विद्यानन्द जी विधिवत गठित सार्वदेशिक न्याय सभा में जाने की बजाय न्यायालय की शरण में चले गये ।

साधारण अधिवेशन में स्वामी विद्यानन्द को भाग लेने से नहीं रोका गया । परन्तु अधिवेशन सभा प्रारम्भ होते ही अनुशासनहीनता का परिचय देते हुए विद्यानन्द, शेरसिंह और सुमेधानन्द जैसे लोगों ने चुनाव स्थगित किये जाने की माग शुरू कर दी । जब उनकी बात का सारे देश के प्रतिनिधियों द्वारा पुरजोर विरोध किया गया तो लगभग २० या २२ की संख्या में प्रतिनिधियों सहित इन लोगों ने बैठक का बहिष्कार किया ।

इस घटना के बाद चले साधारण अधिवेशन में विधिवत श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को सभा प्रधान चुना गया तथा शेष कार्यकारिणी और अन्तरग सदस्यों के मनोनयन का अधिकार उन्हे दिया गया ।

दूसरी तरफ अपने गिने-चुने २० या २२ साथियों सहित हरियाणा के इस गुट ने स्वामी विद्यानन्द को प्रधान चुने जाने की मनगढ़न्त खबर दिल्ली से प्रकाशित एक अखबार में दे दी ।

१ जून को राजनीति मानसिकता वाले शेरसिंह के कुछ अपराधी साथियों सहित स्वामी विद्यानन्द, ओमानन्द और सुमेधानन्द ने सार्वदेशिक सभा कार्यालय पर ५०-६० असामाजिक और अपराधी तत्वों के साथ मिलकर कब्जा करने का असफल प्रयास किया ।

सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् जी के द्वारा साधारण अधिवेशन की कार्यवाही का समस्त रिकार्ड पुलिस आयुक्त को दिखाया गया जिससे पूर्ण सन्तुष्ट होते हुए पुलिस आयुक्त के आदेश पर सायंकाल तक इन अपराधी तत्वों को पुलिस ने खदेड़ दिया । परन्तु कुछ घण्टों में ही यह असामाजिक लोग सभा कार्यालय से कुछ महत्वपूर्ण रिकार्ड तथा नकद ले गये । इस आशय की रिपोर्ट बाद में पुलिस में दर्ज कराई गई ।

इस बीच सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान तथा वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने दिल्ली की उसी अदालत को विद्यानन्द के सम्बन्ध में अपने पूर्व आदेश का पूर्ण स्पष्टीकरण देने के लिए प्रार्थना की ।

सिविल अदालत की जज सुश्री कामिनी लाऊ ने अपने आदेश में कहा कि विद्यानन्द के सम्बन्ध मे अदालत का २५ मई का आदेश केवल उनके हैदराबाद अधिवेशन में भाग लेने तक सीमित था । अदालत ने २ जून को जारी इस नये आदेश में यह स्पष्ट कहा है कि वादी विद्यानन्द तथा उनके साथी सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर या अन्य किसी प्रकार का दावा न करें ।

अदालत मे बहस के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने कहा कि विद्यानन्द नियमानुसार वोटर तो क्या—नियमानुसार सन्यासी भी नहीं है । क्योंकि सन्यास दीक्षा के बाद भी वह घर में अपनी पत्नी के साथ रह रहे हैं उन्होंने आगे कहा कि विद्यानन्द माडल टाऊन का स्थाई निवासी है और उसका राशन कार्ड भी उसी क्षेत्र का बना हुआ है और सन्यासी होते हुए भी परिवार के साथ रहता है । इसलिए विद्यानन्द को संन्यासी कहते हुए आर्य समाजियों को शर्म आती है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में उपस्थित समस्त प्रतिनिधियों ने श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को सर्व सम्मति से सभा का अध्यक्ष चुना था तथा उनके द्वारा मनोनीत कार्यकारिणी तथा अन्तरंग सदस्यों की सूची को भी सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया था । यह सूची रजिस्ट्रार सोसायटी के कार्यालय में भी विधिवत दाखिल होकर प्रमाणित हो चुकी है ।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—आचार्य सुधाकर एम०ए०

‘आर्य वीर दल’ के पुनर्गठन की आवश्यकता

हमे ‘आर्य सन्देश’ के सम्पादक आचार्य सुधाकर को धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने ९ अप्रैल के अंक में ‘आर्य समाज का युवक संगठन’ लेख लिखकर नेताओं और कार्यकर्ताओं का ध्यान एक बहुत ही महत्वशाली समस्या की ओर आकर्षित किया है। आर्य समाज के वर्तमान कर्णधारों से हमारा अनुरोध है कि वे इस ओर अतिशीघ्र विशेष ध्यान दें, ताकि ‘आर्य वीर दल’, जो संसार भर के आर्यों की शिरोमणि, सार्वदेशिक सभा द्वारा मान्यता प्राप्त एक मात्र युवक संगठन है, पुनर्गठित हो और वह पुन: भारत के राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन मे सक्रिय हो जाए। और, आर्य समाज उसी तरह राष्ट्रीय पटल पर दीखे जैसे हैदराबाद की क्रांति में दीखा था और निजामशाही को समाप्त करने मे भारत के लौह पुरुष सरदार पटेल के लिए उसने रास्ता साफ किया था।

आर्य समाज वैदिक धर्म के पुनरुत्थान, मानव-मात्र को ‘श्रेष्ठ पुरुष’ (नेक इन्सान) बनाने तथा मातृभूमि भारत मे स्वराज्य व सुराज्य प्रतिष्ठापित करने का एक प्रतिभाशाली आन्दोलन था। इसकी सैद्धान्तिक विचार धारा, उसका दार्शनिक चिन्तन, उसके रचनात्मक कार्यकलापों तथा समाज सेवा के काम देख-सुन कर जनता उसकी ओर खिंची आती थी। गुरुकुल कांगड़ी और डी०ए०वी० जैसी आर्य शिक्षण-संस्थाओं मे ‘आर्य’ युवकों का निर्माण बड़े पैमाने पर होता था। तब के नेताओं के चरित्र से प्रभावित होकर बड़े योग्य युवक आर्य समाज को अपनी सेवाए नि:शुल्क या ‘लाइफ मैम्बरी’ की स्वल्प दक्षिणा-राशि लेकर अर्पित कर देते थे। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के कत्ल पर, १९२६ मे, यह आवश्यकता महसूस हुई कि आर्य युवकों का कोई सशक्त संगठन होना चाहिए। अत: महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में हुई सभा मे ‘आर्य वीर दल’ के नाम से यह संगठन निर्मित हुआ। इसका सौभाग्य था कि इसे श्री ओमप्रकाश त्यागी जैसा कर्मठ सेनापति (संचालक) मिल गया। पर इस में जो जान उनके नेतृत्व में आई थी, वह आज नगण्य है। जो कुछ उछल-कूद है, वह उत्सवो अथवा छोटी-मोटी रैलियों तक ही सीमित है, कोई ठोस रूप नदारद है। उसका दु:खद परिणाम सामने है कि आर्य समाज के सत्संगों उत्सवों मे युवक नाममात्र दीखते हैं, जलसो-जलूसों में उनका पुराना जोश आंखों से ओझल है।

मुझे याद है १९४३-४४ मे जब मैं बी०ए० का छात्र था, दयानन्द मठ दीनानगर में स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी की अध्यक्षता और श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के पथ-प्रदर्शन में एक बहुत बडा शिविर लगा था। फिर ५४-५५ मे प्रिंसिपल भगवान दास जी की अध्यक्षता मे आर्य वीर दल, दिल्ली, का कायाकल्प हुआ था। प्रतिदिन २००-२०० आर्य वीरों की शाखाए इन आंखो ने देखी थी। बिरला मन्दिर के पीछे वाले योगाश्रम में हुए वार्षिक अधिवेशन मे बड़े-बड़े उच्च नेता गणवेश मे खड़े थे। पीछे स्वामी ध्रुवानन्द जी ने इसे नई चेतना दी थी।

आर्य समाज का दुर्भाग्य कि इसके जीवन के प्रारम्भिक काल मे ही इसमे ‘फूट’ के अंकुर विकसित हो गए। ‘मास पार्टी’ व ‘घास पार्टी’ अथवा ‘गुरुकुल विभाग’ व ‘कालेज विभाग’ शब्द निर्मित हो गए। उसका असर ‘आर्य वीर दल’ पर भी कालान्तर में पड़ गया। जिन महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता मे ‘आर्य वीर दल’ नाम से आर्य युवकों का संगठन बना था, उन्हीं के नाम लेवाओ ने ‘आर्य सेवक संघ’ की स्थापना कर दी। डी०ए०वी० कालेज लाहौर मे पढ़ते हुए मैंने उस के शिविर भी देखे, पं० गोपाल सिंह जी के संचालन मे खूब उत्साह दीखा। पर आर्य युवको की शक्ति तो बंट गई। देश के विभाजन के बाद दिल्ली मे दोनों को मिलाने की कोशिश तो हुई, पर पदलोलुप व महत्वाकांक्षी लोगों ने उसे नाकाम कर दिया और कालान्तर में मुकाबले पर ‘केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्’ खड़ा हो गया।

जैसा कि श्री सुधाकर जी ने लिखा है, एक प्रहार बाहर से हुआ। ‘हिन्दू संगठन के नाम पर ‘राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ’ से आर्य समाज में घुसपैठ शुरू कर दी। अनेक आर्य समाजों के अधिकारियों ने सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के परिपत्र कि ‘आर्य समाजों में आर०एस०एस० की शाखाएं न लगाई जाएं’ की उपेक्षा व अवहेलना की। इस तरह ‘आर्य वीर दल’ कमजोर पड़ता गया। कई शाखाओं से घिरे भी स्वामी जी पद-संघर्ष में पहुंच गए। तो आर्य वीर दल मृतप्राय हो गया।

यह दु:खद परिस्थिति इसलिए भी पैदा हुई कि आर्य समाज का संगठन ढीला पड़ गया उसमे अनुशासनहीनता छा गई और गुट बन्दी ने शिर उठा लिया। सार्वदेशिक सभा मे व्यक्तिवाद पनपने लगा और उसके अधिकारी युवकों के संगठन ‘आर्य वीर दल’ को एक न कर सके। फिर आर्य सभाओं व आर्य समाजो मे पार्टीबाजी बढने लगी और निष्ठावान् युवक उससे विमुख होने लगे। सम वेश सम्प्रदाय को धींगामस्तियों और कोर्टों के झगड़ों से तंग आकर सार्वदेशिक सभा ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का १९७५ मे निशासन कर दिया, तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सोमनाथ जी मरवाह और मन्त्री श्री सरदारी लाल जी वर्मा के नेतृत्व मे ‘आर्य वीर दल, दिल्ली’ का पुनर्गठन हो गया। पर उसमे पहली जान न आ पाई।

आओ, इस गम्भीर समस्या पर अति शीघ्र विचार करें। श्री सुधाकर के सत्य-परक शब्द हैं—‘आज स्थिति यह है कि आर्य समाज की ‘आर्य वीर दल’ केवल में बल भर है कि वर्ष में दो चार स्थानो पर आर्य वीरों के कैंप लगा दिए जाते हैं. उनमे से कितने आर्य वीर लौट कर आर्य समाज मे आते हैं या नहीं आते, इसकी किसी को चिन्ता नहीं। अत: समय रहते ‘आर्य वीर दल’ के पुनर्गठन की कोई ठोस योजना बनानी चाहिए।

प्रिंसिपल ओमप्रकाश, नई दिल्ली

अदालत द्वारा स्वामी विद्यानन्द तथा उनके साथियों के विरुद्ध जारी स्थगन आदेश

IN THE COURT OF MISS. KAMINI LAU: CIVIL JUDGE: DELHI

Suit No : 200/95

Shri Swami Vidya Nand Saraswati,
Presently residing at, D-14/16, Model Town,
Delhi. ......Plaintiff

Vs.

Sarvadeshik Arya Paritinidhi Sabha,
Meharishi Daya Nand Bhawan,
Ramlila Maidan, New Delhi.
Through Pracident/Secretary/Principal Officer.
......Defendant

ORDER

2/6/1995

File taken up on the application of the applicant. Issue notice on application vide PF & RC to the plaintiff and counsel as well. It is clarified that order dated 25/5/1995 was confined only to the participation of the plaintiff in the conference scheduled for 27th and 28th May, 1995.

Issue notice on application for date fixed. Meanwhile the plaintiff and his representatives shall not poss thimself as the President of the Sarvadeshik Arya Paritinidhi Sabha. Order be given dasti to be served upon the plaintiff.

Given under is my hand and seal of this court today i. e. on 2/6/1995.

(KAMINI LAU)
Sivil Judge
Delhi
2/6/1995

SEAL.
Civil Judge
Delhi.

आर्यों सावधान !

महर्षि दयानन्द जन्म-स्थान टंकारा से महर्षि की मान्यताओं की हत्या

प्रो० रत्नसिंह, बी-२१, गांधी नगर, गाजियाबाद

इस वर्ष शिवरात्रि पर २६ फरवरी १९९५ को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के वार्षिकोत्सव पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। लगभग ४४ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द जी के जन्म स्थान टकारा मे श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट टकारा का गठन हुआ था। प्रारम्भिक वर्षों मे श्री कुवर चादकरण शारदा अजमेर आर्य जगत के प्रसिद्ध नेता महाशय कृष्ण जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज तथा डाक्टर मथुरादास मोगावाले आदि ऋषि भक्त इस ट्रस्ट के ट्रस्टी रहे। इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य महर्षि दयानन्द के सिद्धातो का प्रचार व प्रसार करना है। शिक्षा के सम्बन्ध मे महर्षि का स्पष्ट मत है कि बालक और बालिकाऐ के विद्यालय एक दूसरे से पृथक् हों और उनमे दो कोस की दूरी रहे। लडकियो की पाठशाला मे पाच वर्ष का लडका और लड़को की पाठशाला में पाच वर्ष की लडकी भी न जाने पावे। महर्षि दयानन्द ब्रह्मचर्य पर अत्यन्त बल देते थे। इसी को ध्यान मे रखकर उन्होंने सहशिक्षा का विरोध किया है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि दोनों विषय लिग एक दूसरे के लिए आकर्षण के केन्द्र हैं और एक दूसरे के दर्शन और स्पर्शन होने पर एक दूसरे के प्रति आकर्षण का होना स्वाभाविक है। उस स्थिति में उनका ब्रह्मचर्य अखण्डित न रह सकेगा। इसीलिए ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए लडके और लड़कियों के विद्यालयों का पृथक्-पृथक् होना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द पूर्णत आर्ष पाठ विधि के पोषक हैं। शिक्षा माध्यम के बारे मे उनका स्पष्ट मत है कि बालको को प्रारम्भिक शिक्षा उनकी मातृभाषा के माध्यम से ही देनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द की शिक्षा सम्बन्धी इन सभी मान्यताऐ को धता बताते हुए टकारा ट्रस्ट के वर्तमान अधिकारियो ने महर्षि की जन्म भूमि पर सहशिक्षा का एक हाईस्कूल खुलवा दिया है। पाठको की जानकारी के लिये यह लिखना आवश्यक है कि ट्रस्ट के आरम्भिक काल मे ऋषि भक्तो ने टकारा स्थित मोरवी नरेश के विशाल महल को डेढ लाख रुपये मे खरीद कर उसी स्थान पर सन् १९५९ की शिवरात्रि का आयोजन ६, ७ व ८ मार्च को किया था। कुछ दिनो बाद उस विशाल भवन मे 'महर्षि दयानन्द अन्तराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा को स्थापना की गई जिसमें केवल पुरुष ही शिक्षा प्राप्त करते हैं और अनिवार्यत सभी वही छात्रावास मे रहते है।

यह भी जानना आवश्यक हैं कि इस पवित्र टकारा ट्रस्ट के वर्तमान प्रधान है श्री बाबू दरबारी लाल जी जो डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्मी समिति नई दिल्ली के भी प्रधान थे और मन्त्री है श्री रामनाथ जी सहगल तथा बम्बई निवासी श्री ओकार नाथ जी आर्य इस ट्रस्ट के प्रबन्धक ट्रस्टी हैं। श्री दरबारी लाल जी को डी०ए०वी० की दुनिया से बाहर के आर्य समाजी कम ही जानते हैं। उनके जीवन कालक्ष्य अधिक से अधिक डी०ए०वी० पब्लिक खोलना है। उन्ही के पुरुषार्थ से देश भर मे लगभग पाच सौ डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल खुल चुके हैं। उनका विश्वास है कि इन पब्लिक स्कूलों के माध्यस से ही महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों का प्रचार हो सकेगा। इन पब्लिक स्कूलो के बानगी भी ले लीजिए। १. इनमे शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी (मातृभाषा नही) २. सहशिक्षा अनिवार्य। ३. ब्रह्मचर्य का कोई स्थान नहीं क्योकि लडके और लड़कियों को परस्पर मिलते की पूर्ण स्वतन्त्रता है। ४. प्राचीन भारतीय सभ्यता एव सस्कृति का बहिष्कार ५. नेकटाई का प्रयोग अनिवार्य। ६. स्कूल परिसर मे नमस्ते पर प्रतिबन्ध ७. परस्पर अभिवादन में गुडमोर्निंग का प्रयोग। ८. खान-पान में अण्डा, मांस और मदिरा से परहेज नही। ९. ऊंची फीस और प्रवेश के समय कई-कई १ हजार रु० के डोनेशन। १० प्राचीन गुरु शिष्य परस्परा के लिए कोई स्थान नही। ११. स्कूलों के अनेक प्रिंसिपलो (पुरुष) का विलासी जीवन। मास और शराब का खूब प्रयोग १२. अर्थ काम शुचिता का कोई ध्यान नहीं। १३ इस नास्तिकता से ओत प्रोत वातावरण मे किसी-किसी स्कूल में यज्ञशाला भी बनवाई है और धर्मशिक्षा का पीरियड भी लगाया जाता है। क्यो? इसके पीछे क्या उद्देश्य है? इस समय उसकी चर्चा करनी अप्रासगिक है।

जैसे कि मैंने प्रारम्भ मे लिखा है कि २६ फरवरी को मैं टकारा गया था। वहा ओ३म् ध्यजारोहण करने के बाद बाबू दरबारी लाल जी ने अपने प्रवचन मे कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि हम यहा पर महर्षि दयानन्द के सपनो को साकार करने के लिये एकत्रित हुए है। इन सपनो को साकार करने के लिए हमने निश्चय किया है कि महर्षि जन्म स्थान टकारा सहित गुजरात प्रांत में २५ डी०ए०वी० पब्लिक खोलले जायेंगे।" दरबारी लाल जी की इस घोषणा को सुनकर उनके परम सहयोगी एव मित्र श्री रामनाथ सहगल ने तो हर्षित होकर तालिया बजवाई और मुझे भारी मानसिक पीडा हुई। कुछ क्षणो के लिये मे सचेत हो गया। मैं सोचने लगा कि क्या महर्षि के सपने साकार होंगे इन डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलो से जिनका स्वरूप ऊपर दिया जा चुका है। क्या दयानन्द सहशिक्षा पोषकथा? क्या दयानन्द ब्रह्मचर्य विरोधी था? क्या दयानन्द अनार्ष पद्धति का आग्रहीथा! क्या दयानन्द मद्य मास च मोन च मुद्रा मैथुनमेवच। इन पञ्च मकारो का समर्थक था।

श्री दरबारी लाल जी की इस घोषणा बाद ट्रस्ट कार्यालय मे श्री ओकार नाथ जी आर्य और श्री रामनाथ सहगल की उपस्थिति मे मैंने श्री दरबारीलाल जी से कहा, "अपने उपदेशक विद्यालय परिसर मे सहशिक्षा का विद्यालय खुलवाकर ऋषि दयानन्द की मान्यता के विरुद्ध कार्य किया है और यह भारी पाप किया है।" टकारा से गाजियाबाद लौटकर मैंने ४ मार्च के श्री दरबारी लाल जी को एक पत्र यह जानने के लिए लिखा कि २८ मार्च के टंकारा मे ट्रस्ट की आयोजित बैठक मे इस सह शिक्षा के स्कूल के बारे मे क्या निर्णय लिया है। उन्होंने मेरा पत्र श्री सहगल के पास भेज दिया और उन्होने वह पत्र श्री ओंकार नाथ जी के पास उत्तर देने के लिए भेज दिया। खेद है कि डेढ़ मास व्यतीत होने पर भी मुझे किसी ने उत्तर नही दिया। बहुत प्रतीक्षा करने के बाद अब सार्वजनिक रूप मे यह सारी स्थिति आर्य जनता के सामने प्रस्तुत करने के लिए मुझे बाध्य होना पडा है। विश्वस्त दल सूत्र मे जो मुझे जानकारी मिली है उसके अनुसार श्री दरबारीलाल जी और श्री रामनाथ सहगल ने निश्चय कर लिया है कि टकारा मे डी ए वी पब्लिक स्कूल अवश्य खुलेगा। डी ए.वी शिक्षा अधिकारी को निरीक्षण करने के लिए शीघ्र भेजा जा रहा है जिस स्थान पर डी ए वी पब्लिक स्कूल खुलने जा रहा हैं, वह स्थान महर्षि के जन्म गृह मे केवल एक सौ गज की दूरी पर है। आर्यो! क्या दयानन्द को बदनाम करने का यह षडयन्त्र नही है? क्या इस अपमान को हम सहेगे? क्या हमारा रक्त अब पानी हो चुका है? इस पाप के विरोध मे जनमत तैयार करो।

श्री दरबारी लाल जी को इस पते विरोध पत्र लिखो-आर्य समाज अनार कली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। हमे क्या करना है, इस बारे मे अपने रचनात्मक सुझाव मेरे पास भेजने की कृपा करें। इतना ध्यान अवश्य रखे कि बाहर के शत्रु से मोर्चा लेना सरल है परन्तु अपने घर के विरोधी से लड़ना मुश्किल है। इनके पास डी. ए. वी पब्लिक स्कूलो का अरबो रुपया धन पर इन्हें घमण्ड भी है।

अन्त मे मैं अपने पूज्य आर्य सन्यासियो से भी निवेदन करना चाहता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब आर्यसमाज पर विरोधियो के आक्रमण हुए है, तब-तब उस आक्रमण का सामना करने के लिए आर्य जनता का नेतृत्व आर्य संन्यासियों ने ही किया है। हैदराबाद राज्य मे जब निजाम के अत्याचार चरम सीमा पर पहुच गये तो आर्य सत्याग्रह का नेतृत्व पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज और सचालन स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज ने किया। सिन्ध प्रांत में सत्यार्थ प्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध के विरोध मे जो आन्दोलन चला उसका

(शेष पेज ६ पर)

नेपाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन धूमधाम के साथ सम्पन्न

नेपाल आर्य समाज द्वारा गत अप्रैल ८ से १०, १९९५ को नेपाल के प्रमुख शहर वीरगज मे तीसरा राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सम्पूर्ण वीरगज नगर को 'ओ३म्' पताकाओ तथा स्वागत बैनरो और द्वारो से सजाया गया था। सम्मेलन के शुभारम्भ मे ८ अप्रैल को प्रात नेपाल आर्य समाज केन्द्रीय कार्यालय के सस्थापक श्री टेक बहादुर रायामाझी द्वारा 'ओ३म्' ध्वजोत्तोलन किया गया और गुरुकुल विराटनगर के ब्रह्मचारियो द्वारा ध्वजगान गाया गया। इसके बाद प्रख्यात विदुषी, पाणिनि कन्या विद्यालय वाराणसी की प्राचार्या प्रज्ञा देवी के ब्रह्मात्व मे बृहदयज्ञ हुआ। यज्ञ के पश्चात् एक विशाल शोभा यात्रा द्वारा वीरगज नगर की परिक्रमा की गई। शोभा यात्रा मे विभिन्न सन्यासियों, विद्वानो, विदुषियो के अतिरिक्त नेपाल अधिराज्य मे स्थित नेपाल आर्य समाज की शाखाओं, डी०ए०वी० स्कूल तथा विभिन्न सस्थाओं के साथ ही भारत के सीमावर्ती आर्य समाजों का भी प्रतिनिधित्व था। विभिन्न वारों, मन्त्रो, भजनों के साथ चल रहे शोभा यात्रियों के हाथों मे विभिन्न बैनरों के अतिरिक्त विभिन्न आकर्षक सद्वाक्य अंकित प्लेकार्ड, 'ओ३म्' ध्वज और महर्षि दयानन्द तथा अमर शहीद महात्मा शुकराज शास्त्री के फोटों आदि से सारा नगर आर्यत्व से परिपूर्ण प्रतीत होता था। महर्षि दयानन्द तथा महात्मा शुक्रराज शास्त्री के विशाल फोटो शोभा यात्रा के प्रमुख आकर्षण थे। इसी दिन दोपहर विशेष समारोह में प्रख्यात सन्त श्री स्वामी सच्चिदानन्द विशुद्धदेव ने औपचारिक रूप मे महासम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर नेपाल के प्रधान मन्त्री मनमोहन अधिकारी, वरिष्ठ राजनेता गणेशमान सिंह, नेपाली ससद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा के सभामुख रामचन्द्र पौडेल, राष्ट्रीय प्रजातन्त्र पार्टी के अध्यक्ष सूर्य बहादुर थापा तथा अन्य सघ सस्थाओं से प्राप्त शुभकामना सन्देश पढकर सुनाए गए थे। प्रधानमन्त्री मनमोहन अधिकारी ने अपने सन्देश मे महासम्मेलन की सफलता की कामना के साथ ही पिछड़े समुदाय के सामाजिक उत्थान के लिए कार्यरत रहते हुए बहुजन हिताय वैचारिक क्रांति की आधारशिला तैयार करन मे नेपाल आर्य समाज को सफलता प्राप्त होने की कामना की। इसी प्रकार नेपाल के पार्लियामेन्ट के स्पीकर रामचन्द्र पौडेल ने देश के तमाम अशिक्षित, दीन दुखी और बेरोजगारो के लिए सीपमूलक कार्यक्रम सचालन करके नैतिकवान् सु संस्कृत समाज के उत्थान मे नेपाल आर्य समाज द्वारा अटूट रूप मे प्रेरणा प्राप्त करने की। वरिष्ठ राजनेता तथा अमरशहीद शुक्रराज शास्त्री के समकालीन श्री गणेशमान सिंह ने धर्म के नाम मे दिखाई देने वाली विकृति एव विसगतियों का उन्मूलन करते हुए आध्यात्मिक निष्ठा को व्यावहारिक धरातल मे उतारकर समाज को रुढिवादी विचार तथा अन्धविश्वास की जडता से मुक्त करने मे आर्य समाज द्वारा बहु भूमिका निर्वाह करने की आशा की। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करने वालो में नेपाल के प्रख्यात सन्त स्वामी सच्चिदानन्द विशुद्धदेव, प्रख्यात वैदिक विद्वान् डा० स्वामी प्रपन्नाचार्य, नेपाल आर्य समाज के केन्द्रीय अध्यक्ष गोकुल प्रसाद पोखरेल के साथ भारत से पधारे हुए विशिष्ट महानुभावो मे प्रज्ञा देवी व्याकरणाचार्य, स्वामी ब्रह्मवेश, आचार्य श्रद्धानन्द तथा ब्रह्मचारी नन्दकिशोर प्रमुख थे। इसी अवसर पर नेपाल में आर्य समाज के लिए विशेष योगदान स्वरूप श्री टेक बहादुर रायमाझी को 'महामना' की उपाधि से विभूषित किए जाने के साथ ही शाल ओढाकर सम्मानित किया गया, साथ ही सीताराम अग्रवाल विराट नगर, मोहनलाल राजपाल-वीरगज, लाल बहादुर राई-मोरड तथा आर्य समाज के लिए समर्पित ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी को भी पशुपतिनाथ का मन्दिर अंकित चादी के फ्रेम प्रदान कर अभिनन्दित किया गया।

महासम्मेलन अन्तर्गत ८ अप्रैल को रात्रि मे आर्य युवा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। विशेष रूप से बनाई गई यज्ञशाला मे प्रतिदिन यज्ञ होने के साथ ही १० अप्रैल को पूर्णाहुति के अवसर पर सामूहिक रूप मे उपनयन, मुण्डन, कर्णवेध आदि सस्कार भी सम्पन्न कराये गए।

९ अप्रैल को मध्यान्ह "समाज सेवा, शांति और विकास मे आर्य समाज की भूमिका" विषयक सम्मेलन तथा रात्रि मे नेपाल भारत बीच की साझा सांस्कृतिक सम्पदा बारे चिन्तन सम्बन्धी सम्मेलन सुसम्पन्न हुआ। १० अप्रैल को मध्यान्ह "गतिशील समाज की विकास आवश्यकता" अन्तर्गत निरक्षरता निवारण, दीन दुखियो की सेवा, वातावरण सरक्षण, नैतिक उत्थान, सीपमूलक कार्यक्रम सचालन, उच्च आध्यात्मिक साहित्य प्रकाशन, पुस्तकालय तथा वाचनालय सचालन आदि विषय मे आर्य समाज की भूमिका सम्बन्धी सम्मेलन हुआ। इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि समाज कल्याण परिषद के उपाध्यक्ष श्री भवानी घिमिरे थे। उन्होने समाज सेवा के कार्यों को व्यावहारिक धरातल मे उतारने मे आर्य समाज द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने की आशा प्रकट की।

तीनो दिनो के सभी कार्यक्रमो के लिए वीरगंज के मध्य भाग में स्थित रेशम कोठी के विशाल मैदान मे तैयार किया गया विशाल पण्डाल खचाखच भरा रहा। इसी अवसर पर नेपाल आर्य समाज के चालीस शाखाओं से आए हुए प्रतिनिधियो ने आर्य समाज के संगठन स्वरूप और विधान के ऊपर विस्तृत विचार विमर्श कर विभिन्न निर्णय लेने के साथ ही सर्वसम्मति से आगामी पदाविधि के लिए नेपाल आर्य समाज के केन्द्रीय अध्यक्ष पदमे श्री गोकुल प्रसाद पोखरलको पुन: निर्वाचित किया।

तीसरे राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समापन के अवसर पर अगला राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आगामी वसन्त पन्चमी के अवसर पर विराट नगर मे आयोजित करने के निर्णय किया।

मानव जीवन की विविधता (३)

गणपति शर्मा

आस्तिक का समाधान—अच्छा, अब हम तुमको वह स्थान बतलाते हैं जहां पर स्थित अग्नि मे शक्ति भी है परन्तु कुछ नही कर सकती। देखो, मनुष्य प्रतिदिन अन्न खाते हैं उसको आमाशय मे जाने के अनन्तर अग्नि पका देती है। इससे मालूम होता है कि तत्रस्थ अग्नि मे भस्म करने की सामर्थ्य भी है परन्तु जिस थैली मे जाकर अन्न पकता है उसको आज तक न जलाया। बहुत से पापी लोग पशु का मांस खाते हैं। वह भी आमाशय मे जाकर जठराग्नि से पक जाता है। क्या आमाशय की थैली पशुओ के मास से भी कठोर है जिसको नही जलाती।

वायु वायु मे यह सामर्थ्य है कि ब्राह्मण्ड को क्षण भर मे छिन्न-भिन्न कर देवे। परन्तु पृथ्वी के २४ घण्टे के चक्र को, जिसके कारण से दिन-रात होते हैं कभी भी २३ या २५ नहीं किया करता। किस प्रकार सर्वशक्तिमान् राजाधिराज ईश्वर के नियत किए हुए नियम में स्थित हैं। इसलिए एक महात्मा जप करते हैं—

भयादस्याग्निस्तपति' इत्यादि

पशु पक्षियो की रचना—ऊट प्राय: रेतीले देशो मे होते हैं जहा बैलगाडी, घोडा आदि कठिनता से चल सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो बनाने वाले ने इसके चपटे पैर इसीलिए बनाये हैं कि रेत के न धसे।

देखो, तिब्बत मे गौओं के लम्बे केश होते हैं बनिस्पत आर्यावर्त की गौओं के। ऐसा प्रतीत होता है कि बनाने वाले ने दया करके बर्फ की सर्दी से बचाने के लिये ही बनाये है। इतने लम्बे बाल आर्यावर्त के उष्ण प्रान्तों की गौ के होते तो उनको बडे कष्ट से समय व्यतीत करना पड़ता। कई पक्षी ऐसे होते हैं जिनके पास शरीर को सर्दी से बचाने के वास्ते प्रभु ने कोई सामग्री नही दी तो उनको बुद्धि ऐसी दी है कि वे बर्फ के आरम्भ मे ही उष्ण देशो मे चले जाते हैं। पानी मे रहने वाले पक्षियों के झिल्लीदार पैर होते हैं। अगर उनके अलग-अलग पजे होते तो किस प्रकार अनायास तैर सकते थे। ऐसे पैर वृक्षो पर बैठने वाले मयूरादि के होते तो उनको बडा भारी कष्ट उठाना पडता। और भी एक बात सुनिये और ध्यान दीजिए जिसने उन्हे ऐसे लम्बे बाल प्रदान किए हैं। इसी प्रकार जितने पक्षी वृक्षो पर रहने वाले हैं उनको पकड कर पानी मे भिगो दिया जाता है तो वे बहुत समय तक नहीं उड सकते। परन्तु बत्तक दिन भर पानी मे गोता लगाती है बाहर निकलते ही एक बार परो को फडफडाती है। उसके बाद पैर ऐसे हो जाते हैं मानो बत्तक ने पानी का स्पर्श भी नही किया था। जगन्नियन्ता ने उसको एक शीशी तेल की ऐसी दी है जिसमे से चोच भर-भर कर अपने ऊपर मर्दन कर लेती है। इसी कारण से ठण्डे पानी मे उस पर सर्दी भी कम प्रतीत होती है। और भी विचारो ! पशु-पक्षियो के जितने लम्बे पैर होते हैं उतनी ही लम्बी ग्रीवा। पैर लम्बे और ग्रीवा छोटी होती तो विचारे उदर पोषण किस प्रकार करते। हाथी की ग्रीवा छोटी होती है तो उसको आसानी से खाने-पीने के लिये लम्बी सूण्ड होती है मित्रवर, इस प्रकरण मे कहा तक विचार किया जावे। अगर सृष्टि को विचित्र और अद्भूत यथायोग्य, जिसमे कोई कार्य भी निरर्थक नही एक भी पदार्थ की अद्भुतता का विचार करने लगे तो एक बडी पुस्तक तैयार हो जावे। उसमे भी सारा वर्णन नही आवे। अत: निवेदन यह है कि जहा तक विचार करेंगे स्पष्ट मालूम हो जावेगा कि इसका कोई रखने वाला हैं और सर्व-शक्तिमान् है। दिग्दर्शन मात्र से सोचते हुए चले जावें।

नास्तिक की शका—हमने माना कि ससार का बनाने वाला कोई सर्व-शक्तिमान् ईश्वर है, किन्तु, शका यह होती हैं कि बिना हस्तादि अवयवो के जगत् को किस प्रकार से बनाता है।

आस्तिक का समाधान—हाथ से कोई कुछ नही कर सकता। न कोई कान ने सुन सकता है। हाथ से ही काम करते होते और कान से ही सुनते होते तो जिनके हाथ सूख जाते हैं तथा बहरे हो जाते हैं वे भी काम करते और सुना करते हैं क्योंकि हाथ और कान उनके भी होते ही हैं। परन्तु ऐसा देखने मे नही आता। इससे यह मालूम होता है कि हाथ तथा कान मे निराकार शक्ति होती है। वह शक्ति हाथ कान मे स्थित हुई काम करती है। कान को चीरते हुए चले जावें, आस से कभी देखने मे नही आवेगी कि कौन सी ताकत थी जो सुन रही थी। इसी प्रकार हाथ मे भी, एवम् सर्वत्र अवयवो मे समझ लें। अब तो निश्चय हो गया होगा कि हाथों में भी निराकर ही शक्ति है। जैसे हाथ कर्तृत्व रूपी शक्ति है ऐसे ही सर्वत्र व्याप्त एक कर्तृत्व रूपी स्वाभाविक शक्ति है, उसका नाम ईश्वर है।

जबान नही, परन्तु जबान के भीतर जो निराकर शक्ति है, ऐसे ही एक उपदेश कर्तृत्वरूपी स्वाभाविक शक्ति है जो सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, उसका नाम ईश्वर है। वह कर्त्तृत्वरूपा से भिन्न नहीं, एवम् सर्वत्र समझ लें।

नास्तिक की शका—

शक्ति शक्तिमान् के एक देश मे हुआ करती है। जैसे मनुष्य के नेत्र मे ही देखने का सामर्थ्य है। अन्यत्र नहीं। सुनने का सामर्थ्य कान मे ही है। ऐसे ही परमात्मा के भी देखने का किसी सामर्थ्य एक देश मे होना चाहिए। सुनने का भी मनुष्यों की तरह एक ही देश मे होना चाहिए, ऐसे ही काम करने आदि का भी।

आस्तिक का समाधान

तुमने दृष्टान्त देकर शका की है इसलिए दृष्टान्त द्वारा ही उत्तर दिया जाता है। ससार मे अनेक चीजें ऐसी भी हैं जिनमे अनेक शक्तिया हैं। सर्वत्र ही उनमे पाई जाती है। जैसे दीपक की एक इच प्रमाण ज्वाला मे तीन शक्तिया हैं—उर्ध्व गामित्व—ऊपर को जाने की। दाहकत्व—जलाने की, प्रकाशकत्व-अधकार को निवृत्त करने की। अब बतलाओ, प्रकाशकत्व शक्ति दीपक की ज्वाला के उर्ध्व भाग में है या मध्य भाग मे या अधो भाग मे है। अब तुमको स्पष्ट यही कहना पडेगा कि तीनो शक्तिया दीपक की ज्वाला मे सर्वत्र ही हैं। ऐसे ही सर्व-व्यापक विभु मे सब शक्तिया सर्वत्र ही हैं। अर्थात तद्रूप ही हैं ऐसे विभु को इन्द्रियों से कोई भी नहीं जान सकता। उसके जानने का उपाय भिन्न ही है।

महर्षि दयानन्द जन्म-स्थान

(पेज ३ शेष का)

नेतृत्व महात्मा नारायण स्वामी जी ने किया। पंजाब में चले हिन्दी सत्याग्रह का नेतृत्व पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने किया और गोरक्षा आन्दोलन का नेतृत्व तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने किया। यह भी सत्य है कि अब तक जितने प्रहार हुए है वे आर्य समाजों तथा सत्यार्थ प्रकाश और हिन्दी भाषा पर हुए हैं परन्तु टंकारा ट्रस्ट के प्रधान श्री दरबारी लाल जी का प्रहार आर्य समाज के जन्मदाता तथा सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता महर्षि दयानन्द के ऊपर हुआ है। अतः पूज्य सन्यासियों के चरणो मे मेरा निवेदन है कि महर्षि दयानन्द के पावन जीवन को डी.ए.वी. माध्यम से जिस प्रकार कलंकित किया जा रहा है उसका प्रतिरोध करने के लिये जो आन्दोलन चलाया जाये उसका नेतृत्व यति मण्डल अपने पवित्र व सशक्त हाथो मे ले।

इस बात का ध्यान अवश्य रहे कि हो सकता है कि आर्य जनता के दबाव से श्री दरबारीलाल जी घोषणा कर दे कि इससे खोले हाई स्कूल में अब सहशिक्षा नहीं रहेगी। उसी भवन मे एक पाली मे लड़के पढ़ेंगे और दूसरो मे लड़कियां। इससे आर्य जनों का सन्तोष नही होगा। हमारी तो एक ही माग है कि महर्षि जन्म भूमि पर जो भी विद्यालय चले वहां केवल आर्ष पाठ विधि हो रही। हम इस पर भी विचार करना होगा कि डी०ए०वी० पब्लिक खोलने का एक दूषित अनार्ष विचार मन में आ चुका है, प्रात यह विचार एक ना एक विष वृक्ष भी बन सकता है। क्या ऐसा कुछ किया जा सकेगा कि ऐसे विचार जन्म लेने से पहिले ही ध्वस्त कर दिए जायें। उचित तो यह है कि इस मानसिकता को समूल नष्ट कर दिया जाये हमारा दृढ़ विश्वास है कि प्रकाश और अन्धकार विद्या और अविद्या पुण्य और पाप और सत्य और असत्य की भांति वेदोद्धारक, ब्रह्मचर्य का पोषक और प्राचीन वैदिक सभ्यता व संस्कृति का मूर्तरूप दयानन्द और डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एक साथ नही रह सकते।

बढ़ो आर्य बीरों!

बढ़ो आर्य वीरों! समय ने पुकारा,
बहा दो धरा पर, वेदाऽमृत धारा।

अनाचार चहुं दिशि, अनय है प्रवाहित,
हुआ आज धूमिल, मनुजत्व का हित,
भटके रचपथ पर सभी आज जन है,
भटके हुए राजनेता पुरोहित।

जगत के गुरु तुम! रहे सदा मे
चलो आज दे दो इन्हे फिर किनारा।
बहा दो धरा पर, वेदाऽमृत धारा॥

बढ़ो जा रही हैं मनुज की व्यथाएं,
मुखर हो रही है दनुज की कथाएं,
असुरत्व के इस प्रबल प्रस्फुटन से-
कलंकित हुई हैं चतुर्दिक दिशाएं।

शोषित तथा आज पीड़ित जो जन हैं,
उन्हे चाहिये अब सबल का सहारा।
बहा दो धरा पर, वेदाऽमृत धारा॥

बढे ज्ञान गरिमा, धरा हो प्रफुल्लित,
कण-कण अबीन का बने अब सुगन्धित,
फलो से लदे हों बगीचे हमारे,
हो आंगन मे सत्कर्म के पुष्प पुष्पित,

संस्कृति हमारी प्रभा फिर बिखेरे,
समवेत स्वर मे लगे आज नारा।
बहा दो धरा पर, वेदाऽमृत धारा॥

राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्य समाज से ऋषि दयानन्द की अपेक्षायें

महर्षि दयानन्द ने जब आर्य समाज की स्थापना की थी उस समय भारत मे अनेको समाज कार्य कर रहे थे जिनमे प्रमुख रूप से ब्रह्म समाज व प्रार्थना समाज के नाम उल्लेखनीय हैं। महर्षि ने इन दोनो के विषय मे लिखा है कि।

(१) इन लोगो मे स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयो के आचरण बहुत से ले लिए हैं। खान पान विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं।

(२) अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही उसके स्थान मे पेट भर निन्दा करते है। व्याख्यानो मे ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियो का नाम भी नही लेते, प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजो के सृष्टि मे आज पर्यन्त कोई भी विद्वान नहीं हुआ। आर्यावर्त्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। इनकी उन्नति कभी नहीं हुई।

(४) वेदादि की प्रतिष्ठा तो दूर रही परन्तु निन्दा करने से भी पृथक नहीं रहते। ब्राह्म समाज के उद्देश्य की पुस्तक मे साधुओं की संख्या मे "ईसा" "मूसा" "मुहम्मद" नामक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋषि महर्षि का नाम भी नही लिखा है इससे जाना जाता है कि इन लोगो ने जिनका नाम लिखा है। उन्होने मतानुसारी मत वाले हैं। भला! जब आर्यावर्त्त मे उत्पन्न हुए है और इसी देश का अन्न जल खाया पिया अब भी खाते पीते है, अपने माता-पिता, पिता-महादि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतो पर अधिक झुक जाना, ब्राह्म समाजी और प्रार्थना समाजियो का एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने मे प्रवृत्त होना, मनुष्यो का स्थिर और वृद्धि कारक काम क्यों कर हो सकता है।

(४) अंग्रेज, भवन, अन्त्यजादि से भी खाने पीने का भेद नहीं रखा। इन्होने यही समझा होगा कि खाने पीने और जाति भेद तोड़ने से हम और हमारा देश सुधर जायेगा। परन्तु ऐसी बातो से सुधार तो कहां, उलटा बिगाड़ होता है।

इस दृष्टिकोण को महर्षि ने अब से लगभग १३०-१४० पूर्व रखा था। उस समय अपने मन्तव्यो को प्रचारित करने के लिये वेदादि शास्त्रों का प्रमाणिक स्वरूप सबके सामने रखा। महर्षि लिखते हैं कि एक अग्निहोत्रादि परोपकार कर्मो को कर्त्तव्य न समझना अच्छा नहीं।

ऋषि महर्षियो के किये उपकारो को न मानकर ईसा आदि के पीछे झुक पड़ना अच्छा नही जो विद्या का चिन्ह यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़कर मुसलमान, ईसाइयो के सदृश बन बैठना यह भी व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहिनते हो और तमगो की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीत आदि का भार कुछ बड़ा हो गया था।

इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नही तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता। यदि इस समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नही।

काश! महर्षि की इस अभिलाषा को आज के आर्य समाज के कर्णधार पढ़े, सोचें और समझें तथा सबसे प्रीति पूर्वक यथा योग्य व्यवहार करे तो सम्भव है आर्य समाज भारत की आवाज बन जाये। प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो!

—वीरसिंह, गली न० ६, ब्रह्मपुरी, दिल्ली-५३

चुनाव समाचार

श्रीमद दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, गदपुरी, हरियाणा का चुनाव—

प्रधान श्री विद्याधर जी — मन्त्री-तेजराम तेवतिया

प्रचारमन्त्री-लाल सिंह आर्य — कोषाध्यक्ष-हरीचन्द शर्मा

—आर्य समाज राम नगर गुड़गांव का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी चुने गए—

प्रधान-श्री भक्त राजेन्द्र प्रसाद, — मन्त्री-श्री ओमप्रकाश चुटानी

कोषाध्यक्ष-श्री तारा चन्द — लेखा निरीक्षक-श्री सूरज प्रकाश

शराब बन्दी क्यों आवश्यक है ?

शरीर को नष्ट करने का मनुष्य को अधिकार नहीं

शरीर परमात्मा की सुन्दर देन है इसे खराब करने या नष्ट करने का मनुष्य को अधिकार नहीं होता। जो लोग शराब या अन्य नशों से अथवा अनियमित जीवन से शरीर को जान-बूझ कर नष्ट करते हैं उन पर प्रकृति की मार पड़ती है। शरीर के खराब हो जाने से मन भी खराब हो जाता है और उसमें परमात्मा की जो चिंगारी हो जाती है। हम शरीर को शैतान का घर बनायें या भगवान का मन्दिर ये दोनों बात हम पर निर्भर करती हैं। शराब के द्वारा तो वह शैतान का ही घर बनता है। हमारा जन्म उसे देव मन्दिर बनाने के लिए ही हुआ है न कि शैतान का घर। अतः हमें शराब आदि के नशों से अपने को बचा कर शरीर की पवित्रता, उसकी सुन्दरता, शक्ति और कान्ति की रक्षा करनी चाहिये।

शराब सर्दी की दवाई नहीं शराब से दुःख और कष्ट कम नहीं होते

गरीब लोग जीवन की कठोर सच्चाइयों से बचने के लिये शराब पी लेते हैं। दिन भर झाड़ू बुहारी के काम में व्यस्त भंगी और दूसरों की गन्दगी को दिन भर धोता रहने वाला धोबी शराब पी लेने पर कुछ राहत अनुभव करता है। यही बात कल कारखाने के मजदूर के सम्बन्ध में कही जाती है। शराब के द्वारा ही वह थोड़ी देर के लिये जीवन का आनन्द उठा लेता है। परन्तु इन लोगों का यह आनन्द उनके लिये तथा पत्नी और बाल बच्चों के लिये क्लेश सिद्ध होता है। उनके बच्चे भूखों मरते हैं। इतना ही नहीं पास पड़ोस और घर में लड़ाई-झगड़ों मार-पीट और नरक के भयावने दृश्य उपस्थित रहते हैं।



आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 8,9-6-1995 Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/95

दि. डी पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५

"आर्यसन्देश" साप्ताहिक 11 जून १९९५

मुस्लिम युवती ने हिन्दू धर्म अपनाया

कानपुर आर्य समाज मन्दिर गोविन्दनगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवी दास आर्य ने एक २० वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवती को उसकी इच्छानुसार शुद्धि संस्कार के पश्चात वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में प्रवेश कराया। उसका नाम शबनम से श्वेता रखा। शुद्धि संस्कार के बाद श्वेता का विवाह २३ वर्षीय एक सरकारी कर्मचारी श्री जगतारसिंह से वैदिक रीति से कराया गया।

इस अवसर पर श्वेता ने बताया कि उसे विवाह के चन्द माह में ही तलाक दे दिया गया। अतः मैं इस्लाम की तलाक पद्धति से परेशान हूं। और हिन्दू धर्म के आजीवन साथ रहने के संकल्प को पसन्द करती हूं।

—राजगोविन्द आर्य

मन्त्रयोग

प्रत्येक यज्ञ का प्रारम्भ-ओ३म् से होता है।

"ओ३म्" की विस्तृत व्याख्या

ओ३म् में तीन अक्षर हैं-अ, उ, म्,

अकार से-समस्टि स्थूल जगत् में परमात्मा का स्वरूप 'विराट' है।

व्यस्टि रूप से स्थूलशरीर में आत्मा कास्वरूप- 'विश्व' है।

दोनों की मूल प्रकृति—अग्नि है।

उकार से-समस्टि सूक्ष्म जगत् में परमात्मा का स्वरूप=हिरण्य गर्भ: है।

व्यस्टि सूक्ष्म शरीर में आत्मा का स्वरूप='तैजस' है।

दोनों की मूल प्रकृति=प्राण हैं।

मनसा परिक्रमा

जिसका लिंग एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों से एक समय में ज्ञान न होना, जो समस्त इन्द्रियों का सहायक और सुख-दुःखादि का अनुभव कराने वाला मन है।

यह मन वास्तव ही में बड़ा चंचल है उद्वेगकारक बलवान और दुराग्रही है। मन को वश में करना वायु के समान अतिकठिन है परन्तु यह मन प्राणायाम द्वारा वश में, सृष्टि रचना के रहस्य को समझ लेने पर विरक्त और निरन्तर साधना के द्वारा मन आत्म चिन्तन में संलग्न रहने लगेगा।

मनसा परिक्रमा के मन्त्रों से भी यही बात प्रतिभासित होती है कि साधक इसके लिए चंचल मन को साथ लेकर दशों दिशाओं में परिभ्रमण कराता है ताकि सबल ब्रह्म, अपर ब्रह्म के अनन्त रूप में तल्लीन हो जावे। यहां तक ब्रह्म की सबल उपासना है। सबल उपासना में उपासक "रूपं रूपं प्रति रूपम् बभूव" के अनुसार जिधर भी देखता है उधर ही अपर ब्रह्म को ही देखता है। जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है ऐसा अनुभव होने लगता है।

सुरेश द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन। के लिए प्रकाशित। रजि०नं० डी० (एस ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ३३ | रविवार, १८ जून १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द । १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

श्री वन्देमातरम का आह्वान—

संविधान की विसंगतियां तुरन्त दूर की जाएं
आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के तीन प्रस्ताव
नए अध्यक्ष के नेतृत्व में पूर्ण आस्था व्यक्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान में आन्ध्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तमिलनाडु चार राज्यों का आर्य महासम्मेलन २७, २८ तथा २९ मई १९९५ को हैदराबाद में सम्पन्न हुआ। इस महासम्मेलन में कश्मीर, पंजाब हिमाचल प्रदेश, बंगाल, उडीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्र व हरियाणा आदि लगभग बीस प्रदेशों से प्रतिनिधियो ने भाग लिया। प्रथम दिवस सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग तथा साधारण सभा की बैठकें हुई जिनमें त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुए। सर्वसम्मति से श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी आगामी ३ वर्षों के लिए अध्यक्ष निर्वाचित हुए और उन्हें यह भी अधिकार दिया गया कि नई कार्यकारिणी एवं नए पदाधिकारियों का मनोनयन किया जाए। सन १९९४-९५ के हिसाब की स्वीकृति प्रदान की गई और आगामी वर्ष १९९५-९६ का बजट स्वीकार कर लिया गया। नव निर्वाचित अध्यक्ष जी ने अगले दिन की बैठक में नए पदाधिकारियों और कार्यकारिणी के सदस्यो के नामो की घोषणा कर दी।

रविवार २८ मई को भारतीय संविधान सम्मेलन, विधान-सभा पूर्व अध्यक्ष श्री जी. नारायण राव जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री पं० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी ने अपने उदघाटन भाषण में निम्न उदगार व्यक्त किए :—

(१) भारतीय संविधान अंग्रेज सरकार द्वारा गठित संविधान-निर्मात्री-सभा द्वारा बनाया गया। श्री वन्देमातरम जी ने इस मुद्दे को उठाया कि वास्तव मे क्या भारतीय राज्यो के इस संघ में समान अधिकारो से सम्पन्न राज्य हैं? उन्होने संविधान के अनुच्छेद ३७० का हवाला देते हुए स्वयं इस प्रश्न का उत्तर दिया कि यह समान अधिकार प्राप्त राज्यो का संघ नही है। संविधान मे पश्चिम-उत्तर मे कश्मीर और उत्तर-पूर्व में नागालैण्ड और अरुणाचल राज्यो को विशेष दर्जा दिया गया है, जबकि अन्य राज्यों को यह दर्जा नही दिया गया। यद्यपि यह भेद स्थायी नहीं, अस्थायी बताया गया था, तथापि ४५ वर्षों के बाद उन तीन राज्यों के विशेष दर्जे को स्थायित्व मिल गया है। प्रधानमन्त्री द्वारा कश्मीर की आजादी विशेष का भी आश्वासन दिया गया है।

(२) जिन्ना द्वारा द्वि-राष्ट्रवाद के आधार पर चलाई गई सीधी कार्रवाई के फलस्वरूप जब हजारों लोग मरे, तब भारत विभाजित हुआ। फलस्वरूप जो दो स्वतन्त्र राष्ट्र बने, उनमें से एक पाकिस्तान बना जिसकी बुनियाद मजहब पर रखी गई। इस प्रकार पाकिस्तान मजहबी राष्ट्र बना, जबकि इण्डिया अर्थात भारत दूसरा राष्ट्र बना, जिसकी बुनियाद मजहब पर नहीं है—ऐसा कहा जाता है, परन्तु वास्तविकता तो यह है कि इण्डिया अर्थात भारत में मजहब के आधार पर अल्पसंख्यक भारतीय मुसलमानों को विशेष अधिकार दिए गए हैं। श्री प० वन्देमातरम जी ने भारत सरकार से यह मांग की है कि उपर्युक्त विसंगतियों को तत्काल दूर करें। उन्होंने आशंका व्यक्त की है कि इस प्रकार साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित किया गया है, तो इण्डिया अर्थात भारत फिर से विभाजित हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

राष्ट्र-निर्माण मनुष्य के चारित्रिक उत्थान से

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत श्रीमद्दयानन्द संस्कृत वेद विद्यालय गुरुकुल खेडाखुर्द, में आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश की ओर से एक दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर २ जून १९९५ तक लगाया गया। समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण मे सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि राष्ट्र का निर्माण मनुष्य के चारित्रिक उत्थान के द्वारा ही सम्भव है। यदि राष्ट्र के नागरिक चरित्रवान एवं अनुशासित होंगे तो वह राष्ट्र निश्चय ही उन्नति के शिखर पर पहुंचेगा। आर्य वीर दल प्रदेश का यह प्रशिक्षण शिविर इन युवाओं को चरित्रवान एवं अनुशासित बनाने पर विशेष बल देता है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस शिविर के संचालको ने इस दस दिनों में सराहनीय कार्य किया है।

सफलता केवल निष्ठा से सम्भव

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि अपने जीवन मे वे ही लोग सफल होते हैं जो अपना कार्य समय पर एवं निष्ठा के साथ करते हैं। इस प्रशिक्षण शिविर मे इन युवा बालको को प्रातः समय पर उठना और प्रतिदिन के अन्य कार्य एक सुनिश्चित समय सारिणी के अनुसार मनोयोग पूर्वक करना सिखाया गया है। इन युवकों को वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धांतो से ही हमारे विद्वानों ने परिचित कराया है। इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता प्रि० चन्द्रदेव ने कहा कि सहयोग, सद्भाव, एकता और भाईचारा किसी भी समाज को सुसंगठित करने के लिए आवश्यक हैं। इन बालको को इस शिविर मे भ्रातृत्व की शिक्षा दी गई। इस अवसर पर महाशय रामविलास खुराना, श्री प्रियतम दास रसवन्त, श्री ओमवीर शास्त्री ब्र० राजसिंह आर्य, श्री पतराम त्यागी, श्री खुशीराम शर्मा, श्री ईशकुमार नारंग तथा अन्य सहयोगियों ने अपने विचार अभिव्यक्त किऐ। शिक्षक हरिसिंह का कार्य सभी ने सराहा। युवकों की अनुशासित शारीरिक क्रियाओं मलखम, लाठी-संचालन, तलवार, भाला आदि क्रियाओं की प्रशंसा की गई। श्रेष्ठ कार्य करने वाले युवकों को सभा-प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने पुरस्कृत भी किया।

यह भी उल्लेखनीय है कि शिविर का शुभारम्भ श्री सूर्यदेव डा० धर्मपाल डा० महेश विद्यालंकार, ब्र० राजसिंह आर्य, श्री प्रियतम दास रसवन्त आदि के आशीर्वादों से हुआ था।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

धर्म और अधर्म

पंडित रामचन्द्र देहलवी

धर्म—जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात-रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

आइए, हम धर्म और अधर्म के स्वरूप पर विचार करें और सदैव धर्माचरण करने का निश्चय करें।

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने धर्म का लक्षण करते हुए सबसे पूर्व ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करना आवश्यक समझा, जिससे ईश्वर का मानना स्वत. सिद्ध है। उस ईश्वर को न मानने वाला इस लक्षण के अनुकूल धर्मात्मा नही समझा जा सकता।

बहुधा ऐसे मनुष्य दुनिया में मिलेंगे, जिनका ईश्वर में विश्वास नहीं, परन्तु वे भी सृष्टि, नियमों को मानते हैं और उन पर चलते हैं। ऐसे पुरुष पूर्ण धर्मात्मा नहीं कहे जा सकते, चूंकि उन्होंने नियामक के आवश्यक अंग को नहीं माना जिसके बिना, किसी भी नियम का निर्माण होना असम्भव है।

अनुमान-प्रमाण विशेषकर मनुष्य के लिए ही है, जो कारण से कार्य और कार्य से कारण का अनुमान करके अपने कार्यों की सिद्धि करता हैं। प्रत्येक समय यह आवश्यक नही कि कार्य और कारण दोनों की प्रतीति एक ही साथ हो। यदि दुनिया मे कही ऐसा नियम होता कि दोनों एक ही साथ होते तो अनुमान प्रमाण की आवश्यकता ही न होती।

जैसे बादलो को देखकर होने वाली वर्षा का और हुई वर्षा को देखकर उसके कारण रूप बादलों का अनुमान होता है, इसी प्रकार दुःख को देखकर पाप-कर्मों का, और पापकर्मो को देखकर दुःखों का अनुमान होता है। यदि कोई दुःखों को देखकर पापकर्मों का अनुमान करे, या सन्तान को देखकर माता पिता का, तो उसको पूर्ण ज्ञानी नही कह सकते। इसी प्रकार यदि कोई सृष्टि, नियमों को देखकर और स्वीकार करके भी उनके नियामक को स्वीकार न करे, तो वह भी पूर्ण ज्ञानी न समझा जावेगा। और जो पूर्ण ज्ञानी ही नही, वह पूर्ण धर्मात्मा ही कैसे हो सकता है? चूंकि धर्मात्मा के लिए ज्ञानपूर्वक कर्मों की ही तो प्रधानता है।

यदि कोई यह शका करे कि, ईश्वर ने कानून तो बना दिया, पर वह अब कुछ नहीं करता और न आगे करने की आवश्यकता है। प्रत्येक काय उस ही नियम के अनुसार होता चला आ रहा है। और आगे भी होता रहेगा, तो क्या हानि? इसका उत्तर यह है कि कानून स्वय कुछ नही कर सकता जब तक कि चेतनकर्ता उसको अमल मे न लादे, जैसे कि ताजीरात हिन्द किसी अपराधी का कुछ नहीं कर सकती, जब तक कि पुलिस उसको पकड़ कर जज के सामने पेश न करे और जज उसको अपराध के अनुसार दण्ड न देदे। इसी प्रकार परमात्मा का कानून भी ईश्वर के स्वय अमल मे लाए बिना कुछ नही कर सकता।

जो ईश्वर को कानून का बनाने वाला तो मानता है लेकिन चलाने वाला नही मानते, उनको यह विचारना चाहिए कि जिस बुद्धि ने कानून का निर्माण किया है, वह ही बुद्धि उसको चला सकती है। प्रकृति जड़ होने से स्वय न कोई कानून (नियम) बना सकती है और न किसी के बनाये नियम पर स्वय स्वतन्त्रता से चल सकती है। जीवात्मा भी अल्पज्ञ होने से बिना ईश्वर से शरीर तथा ज्ञान प्राप्त किए न कोई नियम बना सकता है. न चल तथा चला सकता है। जीवात्मा इस प्रकार की ईश्वरीय सहायता प्राप्त करके भी, जो नियम बनाता या चलता है, उसको भी वह अन्य पुरुषों की सहायता से ही कार्यरूप में परिणत करता है। कई स्थानो पर स्वय अल्पज्ञ और अल्पशक्ति होने के कारण, अपनी इच्छा के विरुद्ध फल की प्राप्ति और असफलता का पात्र बनता है। जैसे आपने देखा होगा कभी-कभी बिना किसी इच्छा के स्वय ठोकर लग जाती है तथा भोजन करते समय दांतो के तले जीभ कटकर कष्ट देती है। जिससे कि यह सिद्ध है कि कभी-कभी जीवात्मा अपने शरीर पर भी पूर्ण अधिकार नही रख पाता। पर परमात्मा सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् होने के कारण इकला ही सब नियमों को बनाता और स्वयं उन्हें चलाता है, यह हम में और परमात्मा में भेद है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर की आज्ञा कौन-सी मानी जाए? मुसलमान भाई कहते हैं कि कुरान ईश्वर का हुक्म है। ईसाई बाईबिल को खुदा की पुस्तक बतलाते हैं, इस ही तरह अन्य मजहब भी। परन्तु इन सबकी पुस्तकों में परस्पर भेद और विरोध होने के कारण सबको ईश्वर की आज्ञा नहीं कहा जा सकता।

ईश्वर-आज्ञा वह ही हो सकती है जो ईश्वर की भांति सार्वभौम हो, एक देशी न हो। अर्थात् सब मनुष्यो के लिए हितकर हो, किसी विशेष देश या जाति का पक्षपात न हो तथा उसके दया, न्यायादि गुणो के विरुद्ध न हो, अर्थात् वेदानुकूल हो।

पक्षपातरहित न्याय

यह बहुत कम देखा जाता है कि मनुष्य न्याय करे और वह पक्षपात रहित हो। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान होने के कारण कई दोषों से युक्त होता है। धन का लालच, रिश्तेदारी, मित्रता, दूसरे का भय और मोह आदि उसको पूर्ण न्याय नही करने देते। ईश्वर इन त्रुटियों से रहित होने के कारण पक्षपात रहित न्याय करता है। अत जो पुरुष ईश्वरीय गुणों के अनुकूल अपने गुण बनाकर ससार मे कार्य करता और अपने जीवन को व्यतीत करता है वह एक समय पूर्वोक्त सम्पूर्ण दोषो से मुक्त होकर पक्ष-पात रहित न्याय करने लग जाता है। पक्षपाती पुरुष अपना दायरा अत्यन्त सकुचित रखता है। यह केवल अपने मे या जिसके साथ वह पक्षपात करता है, उस ही तक सीमित रहता है। परन्तु पक्षपात रहित कर्म करने वाला यजुर्वेद के —

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति॥

(यजुर्वेद अ० ४० मन्त्र ६)

मन्त्र के अनुसार अपने को सब प्राणियो मे और सब प्राणियों को अपने में समझता है। एक देशी जीवात्मा के लिए यह असम्भव है कि वह ईश्वर की तरह सब वस्तुओं मे व्याप्त हो जाय, उसके लिए एक यह ही प्रकार है कि यह अपने को "सर्वप्रिय" "सर्वहितकारी" बना सके, यह ही इसकी सर्वव्यापकता है।

पल में हुए पराए, आया अजब जमाना!

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

बरसों से हो रहा था बरताव दोस्ताना।
पल में हुए पराए, आया अजब जमाना॥

जाने किधर से आई ऐसी गर्म हवाऐ।
सुलझाने की जगह ये उलझी हैं समस्याऐ॥

आत्मीयता का रिपुता कहां हो गया रवाना।
बरसो से हो रहा था बरताव दोस्ताना॥

बिगड़े है क्यों पड़ोसी आता यही अचम्भा।
खिसयानी है बिलाई लगी नोचने यह खम्भा॥

क्यों मधुरतम सगीत का कटु बन गया तराना।
बरसों से हो रहा था बरताव दोस्ताना॥

किसको सुनाऐ जाकर यह दुखभरी कहानी।
सब कर रहे हैं अपनी-अपनी ही खींचातानी॥

चाहते हैं तेज आंधियों में दीप यह जलाना।
बरसों से हो रहा था बरताव दोस्ताना॥

वीरान हो रहा है गुलशन जरा निहारो।
विषय उगलने वालों को मिल दूर सतारो॥

कहते हैं सोते शेर को अच्छा न जगाना।
बरसों से हो रहा था बरताव दोस्ताना॥

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के तीन प्रस्ताव

(पृष्ठ १ का शेष)

हमारी सेना के हाथ बांधना ठीक नहीं

कश्मीर के प्रतिनिधि श्री नेत्रपाल जी ने कश्मीर की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए यह प्रश्न किया कि हमारी सेना के हाथ बांधकर उग्रवादियों और विदेशी शत्रुओं के दुराक्रमणों का मुकाबला करने के लिए वहां भेजना कहां तक न्यायसंगत है ? उन्होंने कश्मीर में निर्वाचन कराने के सरकार के निर्णय का विरोध किया। भारतीय सेना में उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि हमारी सेना के होते हुए दुनिया की कोई शक्ति कश्मीर को भारत से अलग नहीं कर सकती।

श्री सोमनाथ मरवाह की चेतावनी

उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सोमनाथ मरवाह ने संविधान के अनुच्छेद ३७ भाग ३ तथा भाग ४ में विद्यमान विसंगति की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि भाग ३ में यदि किसी के मौलिक अधिकारों पर प्रहार होता है, तो न्यायालय द्वारा न्याय प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु भाग-४ "राज्य की नीति के निर्देशक तत्व" में ऐसा प्रावधान नहीं है, जबकि दोनों में समानता होनी चाहिए। उन्होंने भारत सरकार से मांग की है कि यह विसंगति तुरन्त दूर की जाए।

दक्षिण भारत में आर्यसमाज का प्रचार

२९ मई १९९५ को भारतीय विद्या भवन में दक्षिण के चार राज्यों का सम्मेलन आर्यनेता श्री छोटूसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में राज्यों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने विचार और सुझाव प्रस्तुत किए, जिनमें कश्मीर के प्रतिनिधि नेत्रपाल शर्मा, बिहार के शुकनारायण सिंह, तमिलनाडु के प्रतिनिधि गोपाल

—शेष पृष्ठ ८ पर

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 15,16 6-1995 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C) 139/95
दि. ली पोस्टल रजि॰ नं॰ डी॰ (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं॰ यू (सी॰) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १८ जून १९९५

वर्ष १९९५-९६ की सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता शुरू

नई दिल्ली १० जून, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने वर्ष १९९५-९६ के लिए सत्यार्थ प्रकाश की डाक द्वारा पत्राचार प्रतियोगिता प्रारम्भ कर दी है। इस प्रतियोगिता मे किसी भी स्तर के छात्र/छात्राए अथवा अन्य लोग भाग ले सकते हैं। इसमे भाग लेने के लिए शुल्क केवल ३० रु॰ की राशि मनीआर्डर द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ को भेजना होगा। धनराशि प्राप्त होते ही उस परीक्षार्थी के नाम से परीक्षा प्रश्न पत्र तथा फार्म जारी कर दिया जायेगा और उसका रजिस्ट्रेशन करके रोल न॰ भी दे दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए सभा कार्यालय मे पत्र भेजकर पता कर सकते हैं। प्रथम, द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कार दिये जायेंगे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने बताया कि सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित एक ऐसा धर्मग्रन्थ है जिससे व्यक्ति के जीवन मे सत्य के अर्थ का प्रकाश होता है तथा राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति सुनिश्चित होती है। इसलिए श्री वन्देमातरम् जी ने विशेष रूप से युवकों और युवतियो को इस प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान किया है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण केवल ३० रु॰ तथा अंग्रेजी संस्करण के लिए ७० रु॰ म किसी भी आर्य समाज मन्दिर से अथवा सार्वदेशिक सभा कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रचार विभाग, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आर्य महासम्मेलन हैदराबाद (पृष्ठ ७ का शेष)

राय, कर्नाटक के प्रतिनिधि विद्याधर गुरु जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने अपने भाषण में मांग की कि भारतीय संविधान का उल्लंघन करने वालों को देश से बाहर निकाल देना चाहिए और परिवार-नियन्त्रण का पालन न करने वालों को वोट देने के अधिकार से वंचित कर दिया जाना चाहिए। श्री छोटूसिंह जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की है कि दक्षिण भारत में आर्य समाज का व्यापक प्रचार हुआ है। यह गर्व की बात है कि आर्यसमाज ने अपने एक सौ बीस वर्षों के जीवन मे विश्व में अन्य संगठनो की अपेक्षा अपना प्रभाव व्यापक बना लिया है और इसका भविष्य उज्ज्वल है। प्रत्येक आर्य समाजी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के हाथों को मजबूत करना चाहिए।

इस समापन सम्मेलन में तीन प्रस्ताव पारित किए गए—

१. भारतीय विधान में विद्यमान विसंगतियों को संशोधनों द्वारा दूर किया जाए।
२. प्रथम दिवस की साधारण सभा मे राजस्थान एव हरियाणा के कतिपय प्रतिनिधियो द्वारा की गई हुल्लड़बाजी और अनुशासनहीनता की भर्त्सना की गई।
३. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयों, प्रस्तावों और कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु भरपूर सहयोग दिया जाए। नव निर्वाचित अध्यक्ष वन्देमातरम के नेतृत्व में पूर्ण आस्था व्यक्त की गई।

सेवा में—

पूर्णदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन :-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि॰नं॰ डी॰ (एल ११०२४)-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ३३ | रविवार, १८ जून १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द । १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

श्री वन्देमातरम का आह्वान—

संविधान की विसंगतियां तुरन्त दूर की जाएं
आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के तीन प्रस्ताव
नए अध्यक्ष के नेतृत्व में पूर्ण आस्था व्यक्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान मे आन्ध्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तमिलनाडु चार राज्यो का आर्य महासम्मेलन २७, २८ तथा २९ मई १९९५ को हैदराबाद में सम्पन्न हुआ। इस महासम्मेलन में कश्मीर, पंजाब हिमाचल प्रदेश, बंगाल, उडीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्र व हरियाणा आदि लगभग बीस प्रदेशो से प्रतिनिधियो ने भाग लिया। प्रथम दिवस सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग तथा साधारण सभा की बैठकें हुई जिनमें त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुए। सर्वसम्मति से श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी आगामी ३ वर्षों के लिए अध्यक्ष निर्वाचित हुए और उन्हे यह भी अधिकार दिया गया कि नई कार्यकारिणी एवं नए पदाधिकारियों का मनोनयन किया जाए। सन १९९४-९५ के हिसाब की स्वीकृति प्रदान की गई और आगामी वर्ष १९९५-९६ का बजट स्वीकार कर लिया गया। नव निर्वाचित अध्यक्ष जी ने अगले दिन की बैठक मे नए पदाधिकारियों और कार्यकारिणी के सदस्यो के नामो की घोषणा कर दी।

रविवार २८ मई को भारतीय संविधान-सम्मेलन, विधान-सभा पूर्व अध्यक्ष श्री जी. नारायण राव जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री पं० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी ने अपने उदघाटन भाषण मे निम्न उदगार व्यक्त किए :—

(१) भारतीय संविधान अंग्रेज सरकार द्वारा गठित संविधान-निर्मात्री-सभा द्वारा बनाया गया। श्री वन्देमातरम जी ने इस मुद्दे को उठाया कि वास्तव मे क्या भारतीय राज्यो के इस संघ में समान अधिकारो से सम्पन्न राज्य हैं? उन्होने संविधान के अनुच्छेद ३७० का हवाला देते हुए स्वय इस प्रश्न का उत्तर दिया कि यह समान अधिकार प्राप्त राज्यों का संघ नहीं है। संविधान मे पश्चिम-उत्तर में कश्मीर और उत्तर-पूर्व में नागालैण्ड और अरुणाचल राज्यो को विशेष दर्जा दिया गया है, जबकि अन्य राज्यों को यह दर्जा नही दिया गया। यद्यपि यह भेद स्थायी नही, अस्थायी बताया गया था, तथापि ४५ वर्षो के बाद उन तीन राज्यों के विशेष दर्जे को स्थायित्व मिल गया है। प्रधानमन्त्री द्वारा कश्मीर की आजादी विशेष का भी आश्वासन दिया गया है।

(२) जिन्ना द्वारा द्वि-राष्ट्रवाद के आधार पर चलाई गई सीधी कार्रवाई के फलस्वरूप जब हजारों लोग मरे, तब भारत विभाजित हुआ। फलस्वरूप जो दो स्वतन्त्र राष्ट्र बने, उनमें से एक पाकिस्तान बना जिसकी बुनियाद मजहब पर रखी गई। इस प्रकार पाकिस्तान मजहबी राष्ट्र बना, जबकि इण्डिया अर्थात भारत दूसरा राष्ट्र बना, जिसकी बुनियाद मजहब पर नहीं है—ऐसा कहा जाता है, परन्तु वास्तविकता तो यह है कि इण्डिया अर्थात भारत में मजहब के आधार पर अल्पसंख्यक भारतीय मुसलमानों को विशेष अधिकार दिए गए हैं। श्री प० वन्देमातरम जी ने भारत सरकार से यह मांग की है कि उपर्युक्त विसंगतियो को तत्काल दूर करें। उन्होंने आशंका व्यक्त की है कि इस प्रकार साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित किया गया है, तो इण्डिया अर्थात भारत फिर से विभाजित हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

राष्ट्र-निर्माण मनुष्य के चारित्रिक उत्थान से

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत श्रीमद्दयानन्द संस्कृत वेद विद्यालय गुरुकुल खेड़ाखुर्द, में आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश की ओर से एक दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर २ जून १९९५ तक लगाया गया। समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण मे सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि राष्ट्र का निर्माण मनुष्य के चारित्रिक उत्थान के द्वारा ही सम्भव है। यदि राष्ट्र के नागरिक चरित्रवान एव अनुशासित होंगे तो वह राष्ट्र निश्चय ही उन्नति के शिखर पर पहुंचेगा। आर्य वीर दल प्रदेश का यह प्रशिक्षण शिविर इन युवाओं को चरित्रवान एव अनुशासित बनाने पर विशेष बल देता है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस शिविर के संचालकों ने इस दस दिनो मे सराहनीय कार्य किया है।

सफलता केवल निष्ठा से सम्भव

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि अपने जीवन में वे ही लोग सफल होते हैं जो अपना कार्य समय पर एव निष्ठा के साथ करते हैं। इस प्रशिक्षण शिविर में इन युवा बालकों को प्रात समय पर उठना और प्रतिदिन के अन्य कार्य एक सुनिश्चित समय सारिणी के अनुसार मनोयोग पूर्वक करना सिखाया गया है। इन युवको को वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धांतो से ही हमारे विद्वानों ने परिचित कराया है। इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता प्रि० चन्द्रदेव ने कहा कि सहयोग, सद्भाव, एकता और भाईचारा किसी भी समाज को सुसगठित करने के लिए आवश्यक हैं। इन बालको को इस शिविर मे भ्रातृत्व की शिक्षा दी गई। इस अवसर पर महाशय रामविलास खुराना, श्री प्रियतम दास रसवन्त, श्री ओमवीर शास्त्री ब्र० राजसिंह आर्य, श्री पतराम त्यागी, श्री खुशीराम शर्मा, श्री ईशकुमार नारंग तथा अन्य सहयोगियों ने अपने विचार अभिव्यक्त किऐ। शिक्षक हरिसिंह का कार्य सभी ने सराहा। युवकों की अनुशासित शारीरिक क्रियाओं मलखम, लाठी-संचालन, तलवार, भाला आदि क्रियाओं की प्रशंसा की गई। श्रेष्ठ कार्य करने वाले युवकों को सभा-प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने पुरस्कृत भी किया।

यह भी उल्लेखनीय है कि शिविर का शुभारम्भ श्री सूर्यदेव डा० धर्मपाल डा० महेश विद्यालंकार, ब्र० राजसिंह आर्य, श्री प्रियतम दास रसवन्त आदि के आशीर्वादों से हुआ था।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

धर्म और अधर्म

पंडित रामचन्द्र देहलवी

धर्म—जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात-रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणो से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

आइए, हम धर्म और अधर्म के स्वरूप पर विचार करें और सदैव धर्माचरण करने का निश्चय करें।

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने धर्म का लक्षण करते हुए सबसे पूर्व ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करना आवश्यक समझा, जिससे ईश्वर का मानना स्वतः सिद्ध है। उस ईश्वर को न मानने वाला इस लक्षण के अनुकूल धर्मात्मा नही समझा जा सकता।

बहुधा ऐसे मनुष्य दुनिया मे मिलेंगे, जिनका ईश्वर में विश्वास नही, परन्तु वे भी सृष्टि, नियमों को मानते हैं और उन पर चलते हैं। ऐसे पुरुष पूर्ण धर्मात्मा नही कहे जा सकते, चूंकि उन्होंने नियामक के आवश्यक अंग को नही माना जिसके बिना, किसी भी नियम का निर्माण होना असम्भव है।

अनुमान-प्रमाण विशेषकर मनुष्य के लिए ही है, जो कारण से कार्य और कार्य से कारण का अनुमान करके अपने कार्यों की सिद्धि करता हैं। प्रत्येक समय यह आवश्यक नहीं कि कार्य और कारण दोनों की प्रतीति एक ही साथ हो। यदि दुनिया मे कही ऐसा नियम होता कि दोनो एक ही साथ होते तो अनुमान प्रमाण की आवश्यकता ही न होती।

जैसे बादलों को देखकर होने वाली वर्षा का और हुई वर्षा को देखकर उसके कारण रूप बादलों का अनुमान होता है, इसी प्रकार दु:ख को देखकर पापकर्मों का, और पापकर्मों को देखकर दु:खो का अनुमान होता है। यदि कोई दु:खों को देखकर पापकर्मों का अनुमान करे, या सन्तान को देखकर माता पिता का, तो उसको पूर्ण ज्ञानी नही कह सकते। इसी प्रकार यदि कोई सृष्टि, नियमो को देखकर और स्वीकार करके भी उसके नियामक को स्वीकार न करे, तो वह भी पूर्ण ज्ञानी न समझा जायेगा। और जो पूर्ण ज्ञानी ही नही, वह पूर्ण धर्मात्मा ही कैसे हो सकता है? चूंकि धर्मात्मा के लिए ज्ञानपूर्वक कर्मो की ही तो प्रधानता है।

यदि कोई यह शंका करे कि ईश्वर ने कानून तो बना दिया, पर वह अब कुछ नही करता और न आगे करने की आवश्यकता है। प्रत्येक कार्य उस ही नियम के अनुसार होता चला आ रहा है। और आगे भी होता रहेगा, तो क्या हानि? इसका उत्तर यह है कि कानून स्वयं कुछ नही कर सकता जब तक कि चेतनकर्ता उसको अमल मे न लादे, जैसे कि ताजीरात हिन्द किसी अपराधी का कुछ नही कर सकती, जब तक कि पुलिस उसको पकड़ कर जज के सामने पेश न करे और जज उसको अपराध के अनुसार दण्ड न देदे। इसी प्रकार परमात्मा का कानून भी ईश्वर के स्वयं अमल मे लाए बिना कुछ नहीं कर सकता।

जो ईश्वर को कानून का बनाने वाला तो मानता है लेकिन चलाने वाला नही मानते, उनको यह विचारना चाहिए कि जिस बुद्धि ने कानून का निर्माण किया है, वह ही बुद्धि उसको चला सकती है। प्रकृति जड़ होने से स्वयं न कोई कानून (नियम) बना सकती है और न किसी के बनाये नियम पर स्वयं स्वतन्त्रता से चल सकती है। जीवात्मा भी अल्पज्ञ होने से बिना ईश्वर से शरीर तथा ज्ञान प्राप्त किए न कोई नियम बना सकता है, न चल तथा चला सकता है। जीवात्मा इस प्रकार की ईश्वरीय सहायता प्राप्त करके भी, जो नियम बनाता या चलता है, उसको भी वह अन्य पुरुषो की सहायता से ही कार्यरूप मे परिणत करता है। कई स्थानो पर स्वयं अल्पज्ञ और अल्पशक्ति होने के कारण, अपनी इच्छा के विरुद्ध फल की प्राप्ति और असफलता का पात्र बनता है। जैसे आपने देखा होगा कभी-कभी बिना किसी इच्छा के स्वयं ठोकर लग जाती है तथा भोजन करते समय दांतों के तले जीभ कटकर कष्ट देती है। जिससे कि यह सिद्ध है कि कभी-कभी जीवात्मा अपने शरीर पर भी पूर्ण अधिकार नही रख पाता। पर परमात्मा सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् होने के कारण इकला ही सब नियमों को बनाता और स्वयं उन्हें चलाता है, यह हम मे और परमात्मा में भेद है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर की आज्ञा कौन-सी मानी जाए? मुसलमान भाई कहते हैं कि कुरान ईश्वर का हुक्म है। ईसाई बाईबिल को खुदा की पुस्तक बतलाते हैं, इस ही तरह अन्य मजहब भी। परन्तु इन सबकी पुस्तकों में परस्पर भेद और विरोध होने के कारण सबको ईश्वर की आज्ञा नहीं कहा जा सकता।

ईश्वर-आज्ञा वह ही हो सकती है जो ईश्वर की भांति सार्वभौम हो, एकदेशी न हो। अर्थात् सब मनुष्यो के लिए हितकर हो, किसी विशेष देश या जाति का पक्षपात न हो तथा उसके दया, न्यायादि गुणो के विरुद्ध न हो, अर्थात् वेदानुकूल हो।

पक्षपातरहित न्याय

यह बहुत कम देखा जाता है कि मनुष्य न्याय करे और वह पक्षपात रहित हो। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान होने के कारण कई दोषों से युक्त होता है। धन का लालच, रिश्तेदारी, मित्रता, दूसरे का भय और मोह आदि उसको पूर्ण न्याय नही करने देते। ईश्वर इन त्रुटियों से रहित होने के कारण पक्षपात रहित न्याय करता है। अत जो पुरुष ईश्वरीय गुणों के अनुकूल अपने गुण बनाकर ससार मे कार्य करता और अपने जीवन को व्यतीत करता है वह एक समय पूर्वोक्त सम्पूर्ण दोषो से मुक्त होकर पक्ष-पात रहित न्याय करने लग जाता है। पक्षपाती पुरुष अपना दायरा अत्यन्त सकुचित रखता है। यह केवल अपने मे या जिसके साथ वह पक्षपात करता है, उस ही तक सीमित रहता है। परन्तु पक्षपात रहित कर्म करने वाला यजुर्वेद के —

> यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।
> सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति ।।

(यजुर्वेद अ० ४० मन्त्र ६)

मन्त्र के अनुसार अपने को सब प्राणियो मे और सब प्राणियों को अपने में समझता है। एक देशी जीवात्मा के लिए यह असम्भव है कि वह ईश्वर की तरह सब वस्तुओं मे व्याप्त हो जाय, उसके लिए एक यह ही प्रकार है कि वह अपने को "सर्वप्रिय" "सर्वहितकारी" बना सके, यह ही इसकी सर्वव्यापकता है।

पल में हुए पराए, आया अजब जमाना!

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

बरसो से हो रहा था बरताव दोस्ताना।
पल में हुए पराए, आया अजब जमाना ।।

जाने किधर से आई ऐसी गर्म हवाऐं,
सुलझाने की जगह ये उलझी हैं समस्याऐं ।।

आत्मीयता का रिश्ता रहा हो गया रवाना।
बरसो से हो रहा था बरताव दोस्ताना ।।

बिगड़े है क्यो पड़ोसी आता यही अचम्भा।
खिसयानी है बिलाई लगी नोचने यह खम्भा ।।

क्यों मधुरतम सगीत का कटु बन गया तराना।
बरसो से हो रहा था बरताव दोस्ताना ।।

किसको सुनाऐं जाकर यह दुखभरी कहानी।
सब कर रहे हैं अपनी-अपनी ही खींचातानी ।।

चाहते हैं तेज आंधियो मे दीप यह जलाना।
बरसों से हो रहा था बरताव दोस्ताना ।।

वीरान हो रहा हैं गुलशन बरी किनारे।
विषय उगलने वालों को मिल रहे सहारे ।।

कहते हैं सोते शेर को अच्छा न जगाना।
बरसों से हो रहा था बरताव दोस्ताना ।।

१६ हनुमान रोड, नई दिल्ली

सम्पादकीय अग्रलेख

नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा से सामाजिक बुराइयों का समाधान

देश को राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए यह अड़तालीसवां वर्ष चल रहा है। इन वर्षों में हमने क्या पाया और क्या खोया इसका यदि एक निष्पक्ष लेखा-जोखा करें तो राजनीतिक आर्थिक दृष्टि से जहां थोड़ा सन्तोष होता है तो सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से घोर निराशा का सामना करना पड़ता है। इन वर्षों में हमारे स्वाधीन देश में स्वतन्त्र सार्वभौम गणतन्त्र की प्रतिष्ठा हो गई, अनेक पंचवर्षीय आयोजनों एवं आर्थिक सुधार कार्यक्रमों के फलस्वरूप देश में औद्योगिक उन्नति हो गई विश्व के औद्योगिक राष्ट्रों में हमारी गिनती होने लगी, कृषि क्षेत्र में हम स्वावलम्बी हो गए, पड़ोसी राष्ट्रों के विरोधी एवं संघर्षों के बावजूद हम विश्व में आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी और राजनीतिक दृष्टि से समुन्नत हुए हैं, परन्तु सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से जन-जन की स्थिति अवनत हुई है, यह कटुसत्य हम भूल नहीं सकते।

आज महानगर, प्रदेश बुराइयों, हिंसा, अपराधों और भ्रष्टाचारों से सराबोर हो उठे हैं। एक समय समझा जाता था हमारी राजनीति एवं सामाजिक व्यवहार का आधार सत्य और अहिंसा है। यह भी कहा जाता है कि अहिंसक सत्याग्रह ने देश की राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति में प्रमुख भूमिका प्रस्तुत की, परन्तु आज की सामाजिक एवं राजनीति दुरवस्था के देखते हुए जीवन मूल्य तिरोहित से हो गए दीखते हैं। राजनीति में कल तक जो दल मित्र थे, रातों रात वे दुश्मन होते दिखाई देते हैं। चिकित्सा ही नहीं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धक्के-दबाव, संरक्षण एवं आरक्षण के बिना आज गति सम्भव ही नहीं दीखती। योग्यता-क्षमता, मर्यादा न्याय की सर्वत्र उपेक्षा हो रही है। यद्यपि हम अपने को धार्मिक, सहिष्णु, न्यायप्रिय कहते हैं, परन्तु शिशुओं, नारियों अथवा औचित्य की जैसी उपेक्षा आज होने लगी है, वैसे कभी सम्भव नहीं थी।

उस दिन 'एक बेहतर विश्व के लिए जीवन मूल्यों पर' माउण्ट आबू में विश्व के न्यायविदों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के राज्यपाल श्री बलीराम भगत ने सामयिक विश्व को चेतावनी देते हुए आगाह किया था कि आज का समाज बुराइयों, हिंसा, अपराध और भ्रष्टाचारों से रोगग्रस्त हो गया है और उसका इलाज मानवीय, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की तेज खुराकों से ही सम्भव है राज्यपाल महोदय का परामर्श सामयिक एवं उपयुक्त है परन्तु जब आज के शासन व समाज में नैतिक शिक्षा की ही उपेक्षा हो, वहां उसके आधार पर चल सकने वाले नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था करने वाले प्रशासन एवं सामाजिक संगठनों को निरन्तर सजग-सन्नद्ध करने वाले पहलुओं की आवाज की उपेक्षा हो तो स्थिति की भयानकता का अन्दाज हो सकता है।

चिट्ठी पत्री

हिन्दी में प्रकाशन सहायता अनुदान योजना अंग्रेजी पुस्तकों के लिए नहीं

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद व अन्य हिन्दी सेवा संस्थाओं ने मानव संसाधन विकास मन्त्रालय से अनुरोध किया था कि केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा चलाई जा रही पुस्तक प्रकाशन हेतु आर्थिक सहायता योजना में अंग्रेजी की पुस्तकों को भी सम्मिलित किया जाता है, तथा निदेशालय के माध्यम से अंग्रेजी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए कोई सहायता उचित प्रतीत नहीं होती।

अब केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय; मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, ने अपने १५ मई १९९५ के पत्र ७१/९५ के० ह० ए० द्वारा सूचित किया है कि निदेशालय की किसी भी योजना के अन्तर्गत न तो अंग्रेजी पाण्डुलिपियों के प्रकाशन हेतु अनुदान दिया जाता है और न ही अंग्रेजी पुस्तकें खरीदी जाती हैं।

जगन्नाथ, संयोजक; राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
एक्स० वाई० ६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

हिन्दी तथा खादी प्रचारकों को भी स्वतन्त्रता सेनानियों जैसी पेंशन मिलेगी

हिन्दी तथा खादी का प्रचार स्वतन्त्रता आंदोलन में महात्मा गांधी के दो महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम थे। इसीलिए केरल के स्वतन्त्रता सेनानियों को जो पेंशन दी जाती है, उसी प्रकार की पेंशन केरल सरकार द्वारा हिन्दी तथा खादी के प्रचारकों को भी दिए जाने के आदेश दे दिए गए हैं।

अनुरोध है कि अन्य राज्य सरकारों को भी हिन्दी तथा खादी के प्रचार में जिन सज्जनों ने सक्रिय योगदान दिया था उन्हें केरल सरकार की भांति पेंशन दिए जाने के आदेश शीघ्र ही जारी करने चाहिए। इन राज्यों की संस्थाओं को भी इस विषय में अपने-अपने राज्य की सरकार से पत्राचार करना चाहिए।

जगन्नाथ, संयोजक, राजभाषा कार्य

मानव-धर्म से ही मानव-कल्याण

बिहारीगढ़ से ६ किलोमीटर की दूरी पर हरिद्वार जनपद के ग्राम बुग्गा शहीद में आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिवस जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने दो प्रवचन दिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्र और मानवता के कल्याण के लिए सच्चे मानव धर्म को, जिसका महर्षि दयानन्द ने उपदेश किया है, अपनाना होगा, तभी मानवता सुखी होगी सकेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने धर्म की परिभाषा बताई है--पक्षपात-रहित न्यायाचरण इसी धर्म को समाज और राष्ट्र में अपनाने से ही शान्ति स्थापित होगी। वोटों के लिये विशेष समुदायों को खुश करने के लिये जो राजनेता इस धर्म की हत्या कर रहे हैं, वे राष्ट्र-कल्याण के मार्ग को खतरों से भर रहे हैं और अशान्ति के बीज बो रहे हैं।

संजय कुमार,

ईश्वर-प्राप्ति का उपाय (१)

गणपति शर्मा

जब तक मन स्थिर न हो मनुष्य किसी काम को ठीक-ठीक नहीं कर सकता। लिखते समय मन की अस्थिरता से कई अशुद्धिया हो जाती हैं। परीक्षा के समय परीक्षको के भय से छात्र श्रम से पठित को भूल जाते हैं। इसका कारण भी मन की अस्थिरता ही है। मन की अस्थिरता के वाद विवाद मे परास्त हो जाते हैं। मन की अस्थिरता जब विशेष हो जाती है उस दशा में पहुंचा देती है, जिसमे घर-घर के सामने बच्चों के पत्थरों की मार खाते फिरते हैं या राजा के पागलखाने मे पडे-पडे दुख से समय व्यतीत करते हैं। जब यह दशा है तो क्या हम अनुमान कर सकते हैं कि याथात्म्य विभु को बिना मन की स्थिरता के कोई जान सके। मन की स्थिरता बिना किसी बड़े भारी उपाय के नही हो सकती। महात्मा अर्जुन योगविद्या निपुण कृष्ण जी से प्रश्न करता है—

चचल हि मन. कृष्ण प्रमाथिबलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रह मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।

महाराज कृष्ण, मन का निग्रह बिना उपाय, वायु के निग्रह के तुल्य कठिन मानता हूं। महात्मा कृष्ण जी उत्तर देते हैं। महाबाहो, असंशय मन कठिनता से से स्थिर भाव को प्राप्त होता है, परन्तु अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। अभ्यास, योगाभ्यास और वैराग्य से रुद्ध हो जाता है।

योगश्चित्त वृत्तिनिरोध:।

योग नाम ही मन के रोकने का है जिससे उसकी स्थिरता होती है। कि जब तक मन स्थिर नही होता अन्तर्यामी की प्राप्ति नही होती और बिना योगाभ्यास के मन स्थिर नहीं होता। स्मरण रहे जिसके जानने का जो उपाय होता है वह उसी से जाना जाता है। क्या कोई बिना अध्ययन किए विद्वान हो सकता है या बिना नेत्र के देख सकता है, या बिना योगाभ्यास द्वारा मन की स्थिरता के कोई भी अन्तर्यामी को नही जान सकता। प्रिय मित्रो, प्रभु ने यजुर्वेद के ४०वें अध्याय में उपदेश किया है कि—

तद्दूरे तद्वन्तिकते।

भाव इसका यह है कि परमेश्वर दूर है और समीप भी है। इसी को ध्यान मे रखकर उपनिषत्कार महात्मा लिखते है—

दूरात सुदूरेतदिहान्तके च-कठोपनिषद। वह दूर से दूर और समीप से समीप है। समीपस्थ पदार्थ के देखने के लिए किसी महान उपाय की आवश्यकता नही। तथा दूरस्थ के लिए भी, परन्तु दूर से दूर सौ पचास कोश पर पर्वत-शिखरस्थ पदार्थ के देखने के लिए दूरबीन-तन्त्र की आवश्यकता है और समीप से समीप नेत्र को जिससे ससार को देखते हैं, देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता है। ऐसे ही समीपात् समीप दूरात दूर ईश्वर को देखने के लिये जीवात्मा के बुद्धि रूप नेत्र को दूरबीन तथा दर्पण की आवश्यकता है। मल युक्त स्वर्ण, भस्म से छिपा हुआ अग्नि, कोठे मे बन्द दीपक। जब तक इस मल और भस्म को दूर न किया जावे और कपाटो को न खोला जावे समीपस्थ होने पर भी महान दूर है। ऐसे ही जब तक अन्त करण मलाच्छादित अर्थात पाप मलों से लिप्त है तब तक विभु समीप होने पर भी अति दूर हैं।

एक महात्मा उपदेश करते हैं—

ध्यानेनामीश्वरान दुणान्।

ध्यान योग का एक अ ग है। भावार्थ इसका यह है कि ध्यान मे अनीश्वरीय गुणो की निवृत्ति हो जाती है। जैसे, ईश्वर का नाम है दयालु। अन्दर निर्दयता भी है। इस नाम का ध्यान करने से निर्दयता की निवृत्ति हो जाती है।

ईश्वर का नाम है अमर। हम बारम्बार मरते भी हैं।
इस नाम का ध्यान करने से मृत्यु से छूट जाते हैं।

सबसे बड़ा परमात्मा का नाम ओ३म् है ऐसे ही ध्यान द्वारा पूर्णज्ञान होने के अनन्तर जीवात्मा की मुक्ति हो जाती है।

ध्यानावस्था मे जिस वक्त प्रभु के स्वरूप मे गोता लगाता है ऐसा सुख होता है जिसको मनुष्य वाणी से नहीं कथन कर सकता, किन्तु—

स्वय तदन्त करणेन गृह्यते।

स्वयं अन्त:करण से ग्रहण करता है।

प्रिय सज्जनो, बारम्बर यह ही निवेदन है कि यदि आप ईश्वर के प्राप्त होने की इच्छा करते हैं तो जिस प्रकार दुष्ट पशु को जब कि वह अनेक प्रकार के उपद्रव करता है दृढ रज्जु के साथ दृढ बाध दिया जाता है। थोड़े समय पर्यन्त अपनी दुष्टता के वश मे होके नाचता-कूदता है परन्तु थक जाने पर स्वयं शान्त हो जाता है। एवम् इस दुष्ट चचल मन को योग रूप रस्सी से बांध दें। उसके स्थिर होने पर बुद्धि द्वारा जनकादिको की तरह परमात्मा को जान सकते हैं। इन्द्रियों से नही। हन्त, जब से ब्रह्म विद्या के प्रचार की न्यूनता हुई, महारानी मूर्खता ने यहा तक अपनी उन्नति की कि जिसका परिणाम यह हुआ कि आजकल बहुत से मनुष्य ऐसे हो गये हैं जो देखते हुए नहीं देखते व सुनते हुए नहीं सुनते। क्या ईश्वर का जानना इतना सुगम है कि एम०ए० व सिविल सर्जन आदि उपाधियों की प्राप्ति के लिए विद्या महासभा की तरफ से सन्नियत पुस्तकों के पढ़ने मे, जिस की समता आत्मज्ञान की सहस्रवी कला के तुल्य भी नहीं हैं, कितने ही वर्ष लगे और परमेश्वर को कोई तत्काल ही बतला दे या दिखला दे तब ही मानें और भक्ति करें, यह कितनी कम समझ की बात है।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया,
दुर्गपथस्तत्कवयो वदन्ति।। कठोपनिषद।

जैसे छुरे की तीक्ष्ण धारा दुरत्यय होती है ऐसे ही परमात्मा के जानने का उपाय, तत्प्राप्ति का मार्ग अति कठिन है। उपाय ही कठिन है तो उपाय साध्य की तो कथा ही क्या है? एक ब्रह्मवेत्ता महात्मा का उपदेश—

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्त: शरीरे ज्योतिर्मयोहि शुभ्रो यम्पश्यन्ति यतय· क्षीणदोषा:।।
मुण्डकोपनिषद्।

सत्य से; तप करने से, यथार्थ ज्ञान से, ब्रह्मचर्य के नित्य प्रति धारण करने से रागादि दोष जिनके नष्ट हो गए है, शरीर के अन्तर ज्योति रूप शुद्ध परमात्मा को जितेन्द्रिय योगी देखते हैं।

यह उस महात्मा का उपदेश है जिसने इन परम्परागत साधनो के द्वारा परमात्मा को जाना और मोक्ष को प्राप्त हुआ। आजकल के महात्मा, महत्तम, अहर्निश असत्य भाषण, असत्य बर्ताव करते रहते हैं और ज्ञान के तो यहां तक अत्रु है, कहते हैं कि मैटर स्वय बिना किसी कर्ता के जगत स्वरूप हो गया और तप तो कभी आतशक के रोग से, गठिया बात के हो जाने पर अग्नि सेंक करते हैं। ब्रह्मचर्य की यह दशा हैं कि अहर्निश वेश्याओ के मकानों पर पड़े आयु को व्यतीत करते है परन्तु जब कभी कोई कहता है कि ईश्वर भक्ति करो तो साइन्स लड़ाने लग जाते हैं कि और कहते हैं कि बतलाओ, ईश्वर क्या पदार्थ है?

प्रिय सज्जनो! कोई मनुष्य किसी से कहे कि गुड मीठा होता है। उसके कहने पर जिसने खाया नही हो वह कहे कि मीठा क्या चीज होती है, बतलाओ, या दिखाओ तो जिसका खाया हुआ होता है, अनेक प्रकार से समझाता है, परन्तु जब तक वह खाकर न देख लेवे, कथन मात्र से मीठा रस क्या होता है, नहीं मालूम कर सकता। एव अन्यान्य रसो को भी। एव जब तक आप उचित साधनों से, जिनमे से कुछ पूर्व लिख आये है ईश्वर के स्वरूप का अनुभव नही कर लेवे, तब तक जहा तक वाणी पहुचती है बतलाने पर भी यथार्थ ज्ञान को नहीं ग्रहण कर सकते।

भूतपूर्व ऋषि-महर्षि तो अनधिकारी को उपदेश भी नहीं किया करते थे और उपदेश ग्रहण करके किस प्रकार मुमुक्षुजन करते थे इस प्राचीन लेख से विदित हो जावेगा।

देखों, कठोपनिषद। नचिकेता पिता से आज्ञा लेकर यम के पास गया। कारणवश होकर यमाचार्य कहने लगे—प्यारे नचिकेता, इच्छानुकूल तीन वर मांग लो। इस बात को सुनके दो वर मांगने के अनन्तर तीसरा वर आत्मज्ञान सम्बन्धी मांगता हुआ प्रश्न करता है।

(क्रमश:)

शास्त्रार्थ सम्पन्न

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि १८ मास के प्रयत्नों के अनन्तर चिरप्रतीक्षित शास्त्रार्थ, सरस्वती भवन, ऋषि उद्यान, अजमेर मे १४ नवम्बर १९९४ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

सफलता इसलिये है कि जो विद्वान २० वर्षों से प्रयत्नशील थे कि इस विषय में सत्यासत्य का निर्णय हो, और उन्हे अवसर नही मिल रहा था। उनकी यह कामना पूरी हुई।

प्रसन्नता का दूसरा कारण यह है कि शास्त्रार्थ शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। यह सूचना मिलने पर कि शास्त्रार्थ मे पहलवान, राइफलधारी तथा विधायक, सासद और मन्त्री जैसे राजनीतिज्ञ व्यक्ति भी उपस्थित होंगे, तो संयोजक महोदय ने उन्हें सूचित किया कि ऐसे व्यक्तियों की उपस्थिति मे शास्त्रार्थ न होगा। ऐसे व्यक्तियों को न लाना स्वीकार कर लिया गया। बाद मे पता चला अजमेर पहुचने पर, कि ऐसा एक पत्र हरियाणा की आर्य प्रतिनिधि सभा को भी मिला था। अजमेर मे हरियाणा के आर्य अत्यधिक उत्तेजित थे। उन्हे शात करने का दुष्तर दायित्व, स्वामी सुमेधानन्द जी, (मन्त्री, आ०प्र० सभा राजस्थान) ने बडी कुशलता व सूझ-बूझ से सम्पन्न किया। एतदर्थ वे भूरि-भूरि धन्यवाद के पात्र हैं।

शास्त्रार्थ का विषय था—"स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित सस्कार विधि में "अयन्त इध्म:" मन्त्र प्रक्षिप्त है या नही ?"

प्रक्षिप्त मानने वाले विद्वान् थे—(१) आचार्य श्री रघुराज जी शर्मा, शास्त्री, २१४/६ विजय नगर, कानपुर, (२) श्री इन्द्रदेव जी यति आदर्श गुरुकुल बाही, पीलीभीत, (३) आचार्य विद्यादेव, त्रिवेदी, शास्त्री, तर्क-शिरोमणि, खेरागढ़, आगरा।

प्रक्षिप्त न मानने वाले विद्वान थे—(१) डा० ज्वलन्त कुमार, शास्त्री, प्राध्यापक, रणजयसिंह उपाधि महाविद्यालय, अमेठी। (२) आचार्य सत्यव्रत जी राजेश, उपाध्याय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (३) डा० वेदपाल जी सुबोध, पाणिनी ग्राम, तिलोतरा, अजमेर।

सभापति—पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, दयानन्द मठ दीनानगर, जि० गुरुदासपुर, पजाब।

संयोजक—आचार्य धर्मवीर विद्यालकार, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (उ०प्र०)

कार्यकर्ता सभापति—पूज्यवर स्वामी सर्वानन्द जी अधिक समय तक बैठ नही सकते थे। अत उन्होने स्वामी सुमेधानन्द जी (मन्त्री आ.प्र. सभा राजस्थान) को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया।

प० रघुराज शर्मा का लेख सस्कार विधि मे अयन्त इध्म० मन्त्र प्रक्षिप्त है, आर्य मित्र २१-९-९२ के अंक मे छपा। इससे पूर्व "आर्यराष्ट्र" पीलीभीत के १३-८-९० के अक मे छपा। इसके उत्तर में डा० ज्वलन्त कुमार का लेख—"सस्कार विधि" के विषय मे अनर्गल प्रलाप" तथा शास्त्रार्थ की चुनौती आर्यमित्र २१-११-९३ के अक मे छपी। इसके बाद श्री राजवीर शास्त्री का लेख, दयानन्द सन्देश दिल्ली के सितम्बर और अक्तूबर के अंको मे और सार्वदेशिक के ९३ के अंकों मे प्रकाशित हुआ। सार्वदेशिक के अक मे डा० भवानी लाल भारतीय का लेख, आर्यमित्र मे श्री सोहनलाल शारदा, शाहपुरा, भीलवाडा (राजस्थान) और आर्य मित्र में स्वामी योगानन्द का लेख, और इनके उत्तर "आर्य राष्ट्र" मे प्रकाशित होते रहे। दयानन्द सन्देश दिल्ली मे आचार्य वेदभूषण जी हैदराबाद तथा पुन: आचार्य रघुराज जी शर्मा और डा० भवानी लाल भारतीय के लेख प्रकाशित होते रहे।

पक्ष की माग थी कि किसी प्रतिनिधि सभा का अधिकृत व्यक्ति शास्त्रार्थ करे। यह सम्भव न था, न हुआ। आचार्य धर्मवीर विद्यालकार ने दोनो पक्षो से पत्र-व्यवहार किया। योजना यह प्रस्तुत की गई कि शास्त्रार्थ न हो। शास्त्रार्थ मे निर्णय उपस्थित जनता द्वारा होता है। जनता अपने-अपने पक्ष को सही मानती है। अत: निर्णय सम्भव नही। विद्वद्गोष्ठी हो। सद्भावना से एक पक्ष दूसरे पक्ष को अपनी बात समझाए और दूसरे की बात को समझे। निर्णय, निष्पक्ष निर्णायक मण्डल द्वारा हो। शास्त्रार्थ मे उपद्रव और गोष्ठी मे वातावरण अत्यन्त और सौहार्द पूर्ण होगा। गोष्ठी मे विद्वान परस्पर आदर करते हुए पक्षपात रहित होकर अपना पक्ष समझाएगे और दूसरे का पक्ष समझेगे। शास्त्रार्थ मे पूर्वग्रह, हठ एवं पक्षपात रहता है, सत्यासत्य का निर्णय सम्भव नही। फिर भी दोनो पक्ष शास्त्रार्थ ही चाहते थे। फिर यह निर्णय हुआ कि शास्त्रार्थ हो तथा हठ व पक्षपात छोडकर प्रीतिपूर्वक, मानापमान जनक कटु शब्दों का प्रयोग न करते हुए, सत्य तक पहुंचने का प्रयास करेंगे। सभापति सयोजक, सभास्थल, तारीखों का निर्णय एक मत से हुआ। यह भी निर्णय हुआ कि पाण्डुलिपियों हस्तलेख विशेषज्ञ को दिखाकर, आख्या प्राप्त की जाय। उसकी आख्या निर्णायक होगी।

पक्ष का कथन था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती की संस्कार विधि की रचना ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के विधानो के अनुसार है इसमे शास्त्र-विरुद्ध ज्ञात—"अयन्त इध्म" मन्त्र से का समिधादान और पञ्चघृताहुति मे विनियोग—स्वामी दयानन्द नही लिख सकते। और इध्म का अर्थ १५ समिधाओं का गट्ठर होता है, एक समिधा नहीं। अत: यह मन्त्र प्रक्षिप्त है।"

विपक्ष के कथन का सार था—"स्वामी दयानन्द जी ने सभी ऋषि प्रणीत शास्त्रों का अध्ययन कर समन्वयात्मक सकलन किया है। सूत्र ग्रन्थो की अनेक शाखाए हैं। प्रत्येक शाखा का अनुयायी, शाखा के विधान के अनुसार कर्म करता है। स्वामी जी ने सभी ग्रन्थों से ग्राह्य का सकलन किया है। जैसे कि स्वामी जी ने ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के मन्त्रा का चयन, वानप्रस्थ तथा सन्यास सस्कारों की विधिया स्वय निर्धारित की हैं। अत: उनका सकलन किसी शास्त्र का विरोधी नहीं है, समन्वयात्मक है। अत. प्रक्षेप नहीं।

यह बताना भी आवश्यक है कि इस शास्त्रार्थ से पूर्व गठित नियम सख्या ११ मे यह मान लिया गया है कि पाण्डुलिपियों मे किए गए संशोधन, हस्तलेख-विशेष द्वारा, स्वामी दयानन्द जी के सिद्ध होते है, तो यह मन्त्र प्रक्षिप्त नही माना जाएगा।

लगभग १ घण्टा मौखिक शास्त्रार्थ के अनन्तर, ७-१५ बजे, उपस्थित श्रोता विद्वानों ने सयोजक महोदय से निर्णय जानना चाहा। सयोजक महोदय ने कहा—

निर्णय आपका है। मेरी दृष्टि मे अयन्त इध्म० मन्त्र, सस्कार विधि मे प्रक्षिप्त सिद्ध नहीं हो सका। हस्तलेख-विशेषज्ञ की आख्या से, पाण्डुलिपि में किए गए सशोधन, स्वामी दयानन्द जी द्वारा किए गए सिद्ध हो जाते हैं, तो प्रक्षेप सिद्ध नहीं होता और शास्त्रार्थ की आवश्यकता नहीं होगी। आख्या की प्रतीक्षा करें।

सभी उपस्थित विद्वानो ने इस विचार का सहर्ष स्वागत किया। धन्यवाद तथा शान्ति पाठ के अनन्तर सभा विसर्जित हुई।

पूर्ण विवरण मे निम्न बाते भी होगी—

१. शास्त्रार्थ से पूर्व प्रकाशित समस्त लेख।
२. शास्त्रार्थ की प्रथम बैठक मे निर्धारित सभी नियम एव मान्यताए।
३ प्रत्येक प्रश्न, उसका उत्तर और मौखिक शास्त्रार्थ का एक-एक शब्द का पूर्ण विवरण।
४. प्रश्नोत्तरों मे दिए गए प्रमाणो के पूर्ण विवरण।
५ उपस्थित विद्वानो की सम्मतिया तथा हस्तलेख-विशेषज्ञ की आख्या।

शास्त्रार्थ का निर्णय

शास्त्रार्थ का निर्णय निम्न बातो के आधार पर होगा, जिसे दोनो पक्षो ने स्वीकार किया है :--

हस्तलेख विशेषज्ञ की आख्या। इस नियम सख्या ११ मे भी स्वीकार किया गया है। हस्त-लेख विशेषज्ञ ने स्वामी दयानन्द की अन्य पाण्डुलिपियों--जिसको नियम सख्या ११ में निश्चित किया गया—से मिलान करके यह बताना है कि संस्कार विधि के "अयन्त इध्म" सम्बन्धी पृष्ठो की मूल प्रति और प्रेस प्रति मे किए गे सशोधन क्या महर्षि दयानन्द के हाथ के है या नही ?

धर्मवीर
संयोजक शास्त्रार्थ

स्वास्थ्य चर्चा–

आंख बचायें : गर्मी बहुत है

डा० गोविन्द प्रसाद उपाध्याय, एम.डी. (आयुर्वेद)

गर्मियों में जहां चेचक, हैजा जैसे सार्वदेहिक रोग होते हैं, वहीं शरीर के सर्वाधिक उपयोगी एवं सुकुमार अंग नेत्र को भी कई रोग आ घेरते हैं। सहसा आंखों या पलकों मे सूजन, लाली, जलन, खुजली होना, आंख का आना, पलकों में छोटी फुन्सियां (गिनावा) सदृश नेत्र-रोग गर्मियों में अधिक होते हैं। इनके विशिष्ट कारणों के साथ-साथ ग्रीष्म ऋतु का वातावरण भी एक प्रमुख कारण है।

इन दिनों सूर्य की किरणें बहुत प्रखर होती हैं। फलतः तापमान बढ़ जाता है, जिसका कुप्रभाव सारे शरीर की अपेक्षा आंखों पर अधिक पड़ता है, क्योंकि आंख की नमी उष्णता के कारण भाप बनकर शीघ्र उड़ जाती है और नेत्रों में शुष्कता आ जाती है। उष्णता के ही कारण शरीर का रक्त संचार बढ़ जाता है। आंख में बहुत छोटी छोटी रक्त वाहनियां स्थित हैं। रक्त संचार वृद्धि का उन पर सबसे पहले प्रभाव पड़ता है, जिससे जलन, खुजली या सूजन आदि होने लगती है। ऐसी स्थिति में गुलाब जल एवं फिटकरी का घोल बनाकर दोनों आखों में डालने से बहुत लाभ होता है।

गर्मी मे चलना नेत्र के लिए हानिकारक हैं। आचार्य सुश्रुत ने नेत्र रोगों के कारणों मे धूप से आने पर स्नान करना, ज्यादा पसीना निकालना सिरका कांजी एवं अम्ल पदार्थों के सेवन को गिना है, जो इस ऋतु में ज्यादा सम्भव है।

अधिकतर लोग आंखों में कुछ हुआ नहीं कि तीक्ष्ण सुरमा आदि द्वारा आंसू निकालते हैं। उनके मतानुसार आंसू निकालने से सब दोष निकल जाते हैं। ग्रीष्म में नेत्र स्वतः रुक्ष होते हैं। अतः तीक्ष्णांजन द्वारा आंसू निकालने से वे कमजोर हो जाते हैं। विशेषकर दिन में तो आंसू निकालने वाला अंजन लगाना ही नहीं चाहिए, क्योंकि उससे दुर्बल हुई आंखे सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के संयोग से खराब हो जाती हैं। यदि अति आवश्यक हो तो रात में सोते समय अंजन का प्रयोग करना चाहिए।

रात्रि में प्रयोग किया गया अंजन सोने के कारण तथा सौम्य वातावरण के कारण सम्पूर्ण नेत्र में फैल कर दृष्टि को बलवान बनाता है। प्रातः काल अंजन लगायी आखो को अवश्य साफ कर लेना चाहिए। क्योंकि पलकों में लगा वह अंजन रोगो को पैदा करता है। यदि तीक्ष्ण सुरमा आदि लगाने से नेत्रो मे लाली, जलन आदि हो जाए, तो शुद्ध गाय का घी, शुद्ध शहद या ठंडा अंजन लगाना चाहिए। इसे प्रत्यंजन कहते हैं। आखो की शुद्धि सुरमा की विपरीतता एवं ग्रीष्म के हानिकर प्रभावो से बचने हेतु नेत्र स्नान बहुत लाभकर है।

नेत्र स्नान

अन्य ऋतुओ की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में नेत्र स्नान बहुत ही हितकारी है। जिस तरह प्रातः स्नान से सारे शरीर की थकावट दूर हो जाती है, उसी तरह नेत्र स्नान से आंख की मासपेशियों और नाड़ी जाल का तनाव दूर होता है। शांङ्गधर के मतानुसार प्रति दिन तीन बार मुंह में शीतल जल भर के दोनों आंखो पर पानी का सिंचन करने से नेत्र के रोग नहीं होते और दृष्टि क्षीण नही होती—

यो तो हम लोग मुंह धोते समय आखों पर पानी या पानी से भीगे हाथ फेरते ही हैं, परन्तु यह पर्याप्त नहो है अपितु दोनो हाथो की अंजुरी में शीतल पानी लेकर आंखो पर दो इंच की दूरी से धीरे-धीरे जिससे चोट न लगे उछालना चाहिए। ठण्डे पानी की जगह त्रिफला के पानी या नमक के घोल का प्रयोग अपेक्षाकृत ज्यादा फायदेमन्द हैं। स्वच्छ नदी या तालाब में नहाते समय आंखे खोलकर डूबने से भी नेत्र स्नान हो जाता है। चौड़े बर्तन में साफ ठण्डा पानी भरकर उसमे मुंह डुबाकर धीरे धीरे पलकें खोलने, बन्द करने से भी नेत्र स्नान हो जाता है। इस हेतु आजकल शीशे के ग्लास (आई कप) भी मिलते हैं। इसमे एक आंख धोने के उपरान्त दूसरी आंख धोने हेतु दूसरा पानी लेना चाहिए। नेत्र स्नान विधि २-३ मिनट तक करें।

धूप के चश्मे

आजकल लोग हरे, नीले, काले, पीले, विविध रंगो के चश्मे लगाते हैं। इन रंगो की वजह से ये चश्में तीव्र धूप से नेत्र की रक्षा करते हैं। किन्तु ज्यादा गाढ़े रंगो के चश्मो से धूप न रहने पर चश्मा पहने रहने से आंखों पर अनावश्यक जोर पड़ता है। जिससे आंख की पेशी एवं स्नायुओ पर तनाव पड़ता हैं। फलस्वरूप धीरे-धीरे दृष्टि कमजोर हो जाती है। गाढ़े रंग का चश्मा पहनने से एक यह भी खराबी है कि उसे पहने रहने पर आंखे अंधेरे की तरह ठण्डी रहती है और अक्सर लोग बड़े व्यक्तियों के मिलने पर शिष्टतावश अथवा यों ही तीव्र धूप में चश्मा उतार लेते हैं, जिससे आंखों पर सहसा तीव्र सूर्य किरणों के पड़ने से उन्हे हानि हो सकती है। चारो ओर से बन्द आंखों को हवा नही मिल पाती।

फलतः पलको और अक्षिगोलक में जलन होने लगती है। अतः कम गाढ़े धूपरोधी रंग जो चारो ओर से बन्द न हो, ऐसा चश्मा केवल तीव्र धूप में पहनने से हितकर है।

अन्यथा भिन्न विचित्र रंगों के खूब गाढे, बन्द चश्में लाभ की बजाय हानि ही पहुंचाते हैं।

आहार विहार

गर्मियो में पाचन शक्ति मन्द पड जाती है, जिससे कब्ज रहती है। पक्वाशय में मल के रुके रहने से दूषित पदार्थ रक्त में मिलने लगते हैं। रक्त परिभ्रमण के माध्यम से जब वह रक्त नेत्र मे पहुंचता है तो सहज सुकुमार आंखो की पेशियों और नसों मे तनाव आ जाता है। ठीक से पाचन न होने पर शरीर का सामान्य स्वास्थ्य गिर जाता है। रक्ताल्पता के कारण आंखों में रक्त कम पहुंचता है, जिससे नेत्र कमजोर हो जाते हैं। अतः इन दिनो लघु द्रवबहुल, सुपाच्य आहार सामान्य स्वास्थ्य के साथ-साथ आखो की रक्षार्थ लेना चाहिए। कब्ज से बचने और नेत्र शक्ति बढ़ाने के लिए रात में असमान मात्रा में घी और शहद के साथ त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आंवला) चूर्ण लेने का विधान है—त्रिफला मधुसर्पिभ्यां निशि नेत्र बलायच लिहयात—। गर्मियों में ज्यादा चरपरे, खट्ठे, नमकीन, गर्म एवं गरिष्ठ भोजन नहीं करना चाहिए।

धूप मे चलने से बचें। यदि कारणवश चलना पड़े तो पानी पीकर, चश्मा लगा, सिर पर टोप लगा या गमछा बाधकर निकलें। दोपहर में ठण्डे कमरों या घर के निचले भाग मे विश्राम करें। घर के दरवाजों खिड़कियों पर गहरे नीले या हरे रंग के पर्दे लटकाये। एकाएक ठण्डे कमरे से धूप में न निकलें।

आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के तीन प्रस्ताव

(पृष्ठ १ का शेष)

हमारी सेना के हाथ बांधना ठीक नहीं

कश्मीर के प्रतिनिधि श्री नेत्रपाल जी ने कश्मीर की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए यह प्रश्न किया कि हमारी सेना के हाथ बाधकर उग्रवादियों और विदेशी शत्रुओं के दुराक्रमणों का मुकाबला करने के लिए वहां भेजना कहां तक न्यायसंगत है ? उन्होंने कश्मीर में निर्वाचन कराने के सरकार के निर्णय का विरोध किया। भारतीय सेना में उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि हमारी सेना के होते हुए दुनियां की कोई शक्ति कश्मीर को भारत से अलग नहीं कर सकती।

श्री सोमनाथ मरवाह की चेतावनी

उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सोमनाथ मरवाह ने संविधान के अनुच्छेद ३७ भाग ३ तथा भाग ४ में विद्यमान विसंगति की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि भाग ३ में यदि किसी के मौलिक अधिकारों पर प्रहार होता है, तो न्यायालय द्वारा न्याय प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु भाग-४ "राज्य की नीति के निर्देशक तत्व" में ऐसा प्रावधान नहीं है, जबकि दोनों में समानता होनी चाहिए। उन्होंने भारत सरकार से मांग की है कि यह विसंगति तुरन्त दूर की जाए।

दक्षिण भारत में आर्यसमाज का प्रचार

२९ मई १९९५ को भारतीय विद्या भवन में दक्षिण के चार राज्यों का सम्मेलन आर्यनेता श्री छोटूसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में राज्यों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने विचार और सुझाव प्रस्तुत किए, जिनमें कश्मीर के प्रतिनिधि नेत्रपाल शर्मा, बिहार के बुकनारायण सिंह, तमिलनाडु के प्रतिनिधि गोपाल

—शेष पृष्ठ ८ पर

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 15,16 6-1995 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १८ जून १९९५

वर्ष १९९५-९६ की सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता शुरू

नई दिल्ली १० जून, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने वर्ष १९९५-९६ के लिए सत्यार्थ प्रकाश की डाक द्वारा पत्राचार प्रतियोगिता प्रारम्भ कर दी है। इस प्रतियोगिता मे किसी भी स्तर के छात्र/छात्राएं अथवा अन्य लोग भाग ले सकते हैं। इसमे भाग लेने के लिए शुल्क कवल ३० रु० की राशि मनीआर्डर द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ को भेजना होगा। धनराशि प्राप्त होते ही उस परीक्षार्थी के नाम से परीक्षा प्रश्न पत्र तथा फार्म जारी कर दिया जायेगा और उसका रजिस्ट्रेशन करके रोल नं० भी दे दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए सभा कार्यालय मे पत्र भेजकर पता कर सकते हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कार दिये जायेंगे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने बताया कि सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित एक ऐसा धर्मग्रन्थ है जिससे व्यक्ति के जीवन में सत्य के अर्थ का प्रकाश होता है तथा राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति सुनिश्चित होती है। इसलिए श्री वन्देमातरम् जी ने विशेष रूप से युवकों और युवतियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान किया है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण केवल १० रु० तथा अंग्रेजी संस्करण के लिए ७० रु० में किसी भी आर्य समाज मन्दिर से अथवा सार्वदेशिक सभा कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रचार विभाग, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आर्य महासम्मेलन हैदराबाद (पृष्ठ ७ का शेष)

राय, कर्नाटक के प्रतिनिधि विद्याधर गुरु जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने अपने भाषण में मांग की कि भारतीय संविधान का उल्लंघन करने वालों को देश से बाहर निकाल देना चाहिए और परिवार-नियन्त्रण का पालन न करने वालों को वोट देने के अधिकार से वंचित कर दिया जाना चाहिए। श्री छोटूसिंह जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की है कि दक्षिण भारत में आर्य समाज का व्यापक प्रचार हुआ है। यह गर्व की बात है कि आर्यसमाज ने अपने एक सौ बीस वर्षों के जीवन में विश्व में अन्य संगठनों की अपेक्षा अपना प्रभाव व्यापक बना लिया है और इसका भविष्य उज्ज्वल है। प्रत्येक आर्य समाजी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के हाथों को मजबूत करना चाहिए।

इस समापन सम्मेलन में तीन प्रस्ताव पारित किए गए—

१. भारतीय विधान में विद्यमान विसंगतियों को संशोधनों द्वारा दूर किया जाए।
२ प्रथम दिवस की साधारण सभा में राजस्थान एवं हरियाणा के कतिपय प्रतिनिधियों द्वारा की गई हुल्लड़बाजी और अनुशासनहीनता की भर्त्सना की गई।
३. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयों, प्रस्तावों और कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु भरपूर सहयोग दिया जाए। नव निर्वाचित अध्यक्ष वन्देमातरम के नेतृत्व में पूर्ण आस्था व्यक्त की गई।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन :-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एस ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक ३३ रविवार २५ जून १९९५ विक्रमी सम्वत २०५१ दयानन्दाब्द : १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३३०१५०

३ जून को मायावती उ० प्र० की पहली दलित मुख्यमंत्री

काश, यह परिवर्तन गठजोड़ पर आधारित न होकर सिद्धांतों पर आश्रित होता

पहली जून, १९९५ को बयालिस वर्षीया मायावती लखनऊ स्थित उत्तर प्रदेश के राजभवन में पहुंची और राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा को सूचना दी कि बहुजन समाज पार्टी (ब०स०पा०) मुलायमसिंह मन्त्रिमण्डल से अपना समर्थन वापस ले रही है। पिछले कई दिनों से समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी में कई मतभेद उभर रहे थे। ब०स०पा० के सर्वेसवा काशीराम ने एक से अधिक बार सरकार से हटने की धमकी दे डाली थी, परन्तु हर बार यह सरकार और साझा हकूमत चलती रही। उस दिन अप्रत्याशित हो ही गया।

२ जून के दिन मीराबाई मार्ग अवस्थित राजकीय गैस्ट हाउस में ब.स.पा के विधायकों की एक सभा को मायावती सम्बोधित कर रही थी कि सत्तारूढ़ दल के समर्थक कुछ अपराधी गैस्ट हाउस में घुस गए, मारपीट शुरू हो गई, बाद ब०स०पा० के विधायकों का बलात अपहरण कर लिया गया।

नगर के पुलिस सुपरिन्टेण्ड के परामर्श पर मायावती आवास गृह मे चली गई। वहां से उन्होंने राज्य के राज्यपाल और स्थानीय पत्रकारों से सम्पर्क स्थापित किया। फलत. लखनऊ के ७० पत्रकार गैस्ट हाउस पहुंच गए। राज्यपाल श्री वोरा ने स्थिति की गम्भीरता देखकर राज्य के मुख्य सचिव और राज्य के पुलिस विभाग के डायरेक्टर जनरल को आदेश दिया कि मायावती को सरक्षण दिया जाए। राजकीय पुलिस से उचित सहयोग न मिलने पर राज्यपाल ने सैंट्रल सिक्योरिटी फोर्स को गैस्ट हाउस के सरक्षण के लिए भेज दिया।

इसी शाम को मायावती को अनुभूति हुई कि उनके भाग्य मे परिवर्तन आ रहा है। १७७ सदस्यो या विधायको वाली भारतीय जनता पार्टी ब०स०पा० की सरकार का समर्थन करेगी। इस पर स्थानीय पुलिस अधिकारियो का रवैया भी बदल गया, व मैडम मायावती की जी हजूरी मे लग गए।

फलत: ३ जून के दिन लखनऊ के राजभवन मे राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा ने कुमारी मायावती को उ० प्र० के १६वें, उसकी दूसरी महिला मुख्यमन्त्री और एकमात्र दलित मुख्य मन्त्री के रूप मे शपथ दिलाई।

भू०पू० मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह यादव का कथन है बहुजन समाज भारतीय जनता पार्टी का गठजोड़ अपवित्र है। श्री मुलायम सिंह यादव से पूछा गया कि आपकी सरकार को हटाने के लिए कौन जिम्मेदार है तो उनका जवाब था कि अमेरिका ने इसे शुरू किया। इसी के साथ श्री ला० कृष्ण आडवाणी, पी० वी० नरसिम्हाराव, वी० पी० सिंह और इन्द्रजीत गुप्त भी जिम्मेदार थे।

उ० प्र० के भू०पू० मुख्यमन्त्री श्री कल्याणसिंह ने दावा किया है कि भारतीय जनता पार्टी ने देश की सबसे बड़ी आबादी के प्रदेश का मुख्यमन्त्री एक दलित महिला को बनाकर पिछड़े लोगों का दिल जीत लिया है।

उ० प्र० की ब०स०पा० पार्टी सरकार को समर्थन देने के प्रश्न पर जनता दल में मतभेद पैदा हो गए हैं। वी०पी० सिंह मायावती का समर्थन कर रहे हैं और दूसरे नेता उसका विरोध कर रहे हैं।

उ० प्र० में एकमात्र दलित मुख्यमन्त्री के रूप मे मायावती की बहुजन समाज पार्टी की प्रतिष्ठा से एक नारी तथा दलित मुख्यमन्त्री की गरिमा बढ़ी है, वहा हमे यह कटुतथ्य स्वीकार करना होगा कि पिछले आम चुनाव के बाद समाजवादी दल तथा, बहुजन समाज का गठबन्धन सिद्धांतों पर आधारित नही था, अब ३ जून को प्रतिष्ठित सरकार भी सिद्धांतों पर आधारित नही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितो, अछूतो को शिक्षा समाज सुधार के माध्यम से समाज मे उच्च स्थिति प्रदान करने का अवसर दिया था, गुरुकुलो और डी०ए०वी० सस्थाओ के माध्यम से उन्होंने समाज मे अपनी अग्रणी स्थिति बनाई थी, परन्तु पिछले कुछ वर्षो से दलितो को आरक्षण व प्रश्रय की नीति अपनाने की जो रीति-नीति चलाई गई है आज, का उत्तर प्रदेश उसी का शिकार हो रहा है।

७६ वर्ष पहले अछूत भाई-बहनो को अपनाने के बारे मे स्वामी श्रद्धानन्द जी की मार्मिक अपील नीचे पढ़िए।

इन अछूत भाई-बहनों को सच्चा भाई-बहन बनाइए

—स्वामी श्रद्धानन्द

भारत के स्वाधीनता सग्राम मे हरिजन आन्दोलन के लिए महात्मा गाधी ने प्राणो की बाजी लगा दी थी, पिछले दो-तीन वर्षो मे दलितो और पिछड़े वर्गों के आरक्षण के प्रश्न ने उत्तर भारत की राजनीति को झकझोर दिया है, इसके लिए २४ दिसम्बर १९१९ के दिन अमृतसर काग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप मे अपने ऐतिहासिक भाषण मे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने चेतावनी दी थी—

लन्दन नगर मे भारत की रिफार्म स्कीम कमेटी के सामने ईसाई मुक्ति फौज के बूथ ठकर साहब ने कहा कि भारत के साढे छह करोड अछूतो को विशेष अधिकार मिलने चाहिएं और उसके लिए कारण दिया था क्योकि वे भारत मे ब्रिटिश सरकार रूपी लगर हैं इन शब्दो पर गहरा विचार कीजिए और सोचिए कि किस प्रकार आपके साढे छह करोड भाई आपके जिगर के टुकडे, जिन्हे आपने काट कर फेंक दिया है, किस प्रकार भारत-माता के साढे छह करोड़ पुत्र एक विदेशी सरकार रूपी जहाज के लगर बन सकते हैं। मैं आप सब बहनों और भाइयो से एक याचना करूंगा। इस पवित्र जातीय मन्दिर मे बैठे हुए अपने हृदयो को मातृभूमि के प्रेमजल से शुद्ध प्रतिज्ञा करो कि "आज से वे साढ़े छह करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे, बल्कि हमारे बहन और भाई हैं, उनकी पुत्रिया पुत्र हमारी पाठशालाओ मे पढ़ेंगे ? उनके गृहस्थ नर-नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होगे। हमारे स्वतन्त्रता प्राप्ति के सग्राम मे वे हमारे कन्धे से कन्धा जोड़ेंगे और हम सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे। हे देवियो और सज्जन पुरुषो, मुझे आशीर्वाद दें कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह स्वप्न पूरा हो।"

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

सच्चे आर्य बनिए : सत्याचरण करें : असत्य व्यवहार छोड़ें

प्रस्तुति—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

एक पुरानी सत्य घटना है—अंग्रेजो के शासन मे पंजाब की एक अदालत मे न्यायाधीश ने स्वीकार किया था कि "हम आपके इस कहने मात्र से कि आप एक आर्यसमाजी हैं, यह मंजूर करते हैं आप जो कुछ कहेगे, सत्य कहेगे, सत्य को छोडकर कुछ न कहेगे।" स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व विदेशी हकूमत के समय में भी यह एक सामान्य धारणा थी कि आर्य लोग सच ही व्यवहार करेंगे, उसे छोड कर भी मिथ्या झूठ का व्यवहार नही करेंगे। खेद का विषय है कि अपने को आर्य कहने वाले एव उदात्त सत्य मे ऐसी निष्ठा रखने वाली आर्य सस्थाओ के पदाधिकारी एव अपने को सोते-जागते आर्य कहने वालो की कथनी-करनी मे बडा अन्तर आ गया है। वैसे तो राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद सारे देश के राजनीतिज्ञों व राजनीति मे घुसपैठ करने वालो मे नैतिक मूल्यों का अभाव हो गया है। सत्य-अहिंसा एव निष्ठा की शपथ लेने वालो का आचरण भ्रष्ट हो गया है। कुर्सी, गद्दी, स्थिति व धन के लिए कुछ भी कर गुजरने वालो की रेल-पेल हो गई है, पर हम कथित आर्यजनों को राजनीतिज्ञों से क्या लेना-देना, हमे तो अपना आचरण ठीक करना चाहिए। हमे अपनी कथनी-करनी को एक करना होगा, हमे सच्चा आर्य बनना होगा, हमे मन-वचन-कर्म से सत्याचरण करना होगा, असत्य का व्यवहार छोड़ना होगा।

कभी हमारी परम्पराओं ने कहा था 'सदा सत्य बोलो, मीठा बोलो, ऐसा सत्य कभी न बोलो जो कड़ुआ हो, पर वहा यह सीख भी दी गई थी कि ऐसा मीठा भी कभी न बोलो, जो असत्य हो, शास्त्रो में यही धर्म कहा गया है। स्कन्द पुराण ब्रा० धर्म० मा० ६-८८ की प्रसिद्ध उक्ति है—

सत्यं ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेव धर्मो विधीयते॥

पुराणों मे सत्य को कड़ुआ न बोल कर मीठा बोलने की सीख दी गई थी, परन्तु हमे स्मरण रखना होगा कि वेद शास्त्र यह छूट नही देते। ब्रह्मचर्य एव दूसरे आश्रमों के पदार्पण करने वाले व्रती प्रतिज्ञा करते थे—हे सत्यपति, परमेश्वर मैं जिस सत्य धर्म का अनुष्ठान करना चाहता हू। उसकी सिद्धि आपकी कृपा से सम्भव हो सकती है। यजुर्वेद के पहले अध्याय का पाचवा व्रत धारण का प्रसिद्ध मन्त्र इस प्रकार है—

अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि तच्छकेय तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि॥

इसी मन्त्र का शतपथ ब्राह्मण मे यह अर्थ प्रस्तुत किया गया है—जो मनुष्य सत्य के आचरण रूपी व्रत को अपनाते हैं वे देव कहलाते है और जो असत्य का आचरण करते हैं, उन्हें मनुष्य कहते हैं। मन्त्र का भावार्थ सम्मुख रख कर व्रती सकल्प करता था इस मन्त्र से मैं उस सत्य व्रत का आचरण करना चाहता हूं, मुझ पर आप ऐसी कृपा कीजिए, जिससे मैं सत्य धर्म का अनुष्ठान पूरा कर सकू। सो यह एक कठिन व्रत है, जिसे मैं निश्चय से पूर्ण करना चाहता हूं। मेरा एक पवित्र दृढ़ सकल्प है कि मै सभी प्रकार के असत्य, कामो विचारो से छूट कर मन-वचन-कर्म से सत्य का आचरण करूगा।

यजुर्वेद मे सत्य का व्रत लेने वाले दीक्षित व्रतियों के लिए दीक्षा-दक्षिणा-श्रद्धा के मार्ग का अनुसरण कर सत्य की प्राप्ति का एक सुन्दर मार्ग १९ वें अध्याय के इस ३० वें प्रसिद्ध मन्त्र द्वारा प्रस्तुत किया गया है—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोतिदीक्षणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

महर्षि दयानन्द ने अपने भाष्य मे इस मन्त्र का अर्थ—भाष्य इस प्रकार किया है।

"जो मनुष्य सत्य के आचरण को दृढता से करता है, तब वह दीक्षा अर्थात उत्तम अधिकार के फल को प्राप्त होता है। जब मनुष्य उत्तम गुणो से युक्त होता है, तब सब लोग सब प्रकार से उसका सत्कार करते हैं, क्योंकि धर्म आदि शुभ गुणो से उस दक्षिणा को मनुष्य प्राप्त होता है अन्यथा नही। जब ब्रह्मचर्य आदि सत्य व्रतो से अपना और दूसरे मनुष्यों का अत्यन्त सत्कार होता है, तब उसी मे दृढ़ विश्वास होता है, क्योंकि सत्य धर्म का आचरण ही मनुष्यो का सत्कार कराने वाला है, फिर सत्य के आचरण में जितनी अधिक श्रद्धा बढती जाती है उतना ही मनुष्य लोक व्यवहार और परमार्थ के सुख को प्राप्त होते जाते हैं, अधर्माचरण से नहीं। इससे क्या सिद्ध हुआ कि सत्य की प्राप्ति के लिए श्रद्धा और उत्साह आदि पुरुषार्थ को मनुष्य लोग बढाते ही जाए, जिससे सत्य धर्म की यथावत् प्राप्ति हो।"

शतपथ ब्राह्मण के कथन से स्पष्ट है कि जो सत्य आचरण रूपी व्रत करते हैं, वे देव कहाते हैं, असत्य का आचरण करने वाले को उसने मनुष्य कहा है, वैसे सच्चा इन्सान ही मनुष्य (मनुर्भव) है, जो सच्चा मानव नही, वह तो मानव राक्षस है, अपने को आर्यजन कहने वाले अपना हृदय टटोलकर देखें फिर निर्णय करें कि वे देव बन रहे है, या इन्सानियत से भी गिराकर दानवता की ओर बढ रहे हैं? इस प्रश्न के सच्चे उत्तर में ही हमारा आर्यत्व कसौटी पर खरा-खोटा उतर सकेगा?

बोध-कथा

सत्य में गहरी आस्था

छान्दोग्य उपनिषद् में उल्लेख है—एक बार एक सामान्य नारी जबाला के पुत्र सत्यकाम ने अपनी माता से जिज्ञासा की, 'हे जननी, मेरी इच्छा ब्रह्मचर्य धारण कर विद्याध्ययन करने की है, कृपा कर मुझे बतलाइए मेरा क्या गोत्र है? माता ने पुत्र से कहा—'बेटा, मैं नही जानती कि तू किस गोत्र का है? मैं युवावस्था मे अनेक व्यक्तियो की सेवा किया करती थी, उसी समय मैंने तुम्हें पाया, इसलिए मुझे नही मालूम तुम्हारा क्या गोत्र है, जबाला मेरा नाम है, तुम्हारा नाम सत्यकाम है, सो गुरु-आचार्य के पूछने पर कह देना मैं सत्यकाम जाबाल हू।'

ब्रह्मचारी सत्यकाम गौतम गोत्र मे जन्मे हारिद्रुमत मुनि की सेवा मे पहुंचा। बोला-'आचार्यवर, मैं नही जानता मेरा क्या गोत्र है। मैंने मातुश्री से पूछा था—उन्होने मुझे यही बतलाया वह युवावस्था मे अनेक व्यक्तियो की सेवा किया करती थी, उसी समय मेरा जन्म हुआ, इसलिए उन्हें नही मालूम कि मेरा क्या गोत्र है। माता ने कहा उनका नाम, जबाला है, सत्यकाम मेरा नाम है, हे आचार्यप्रवर, इस प्रकार मैं सत्यकाम जाबाल हुआ।"

मुनि हारिद्रुमत ने कहा जो सच्चा ब्राह्मण न हो, उसे छोडकर ऐसी सत्य बात दूसरा कह नही सकता. हे सौम्य शिष्य, समिधा ले आ, मैं तुम्हारा उपनयन करूंगा, तुझे यज्ञोपवीत की दीक्षा दूंगा, तू सत्य से डिगा नही, तू सच्चा विद्यार्थी है।" मुनि ने सत्यकाम का उपनयन सस्कार कर उसे ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी।

—नरेन्द्र

सत्य ही परम पद है !

आहु सत्य हि परम धर्मं धर्मविदो जना:।
सत्यमेकपद ब्रह्म सत्ये धर्म: प्रतिष्ठित:॥
सत्यमेनाक्षरा वेदा सत्येनावाप्यते परम्।

वा० रामा० अयोध्या १४।३।६

धर्म का रहस्य जानने वाले लोग सत्य को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म बतलाते हैं। सत्य ही परम पद ब्रह्म है। सत्य पर ही धर्म टिका हुआ है। सत्य ही नित्य वेद-राशि है और सत्य से ही पर ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

ओ३म् समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा व. सुसहासति ।। ऋग्वेद १०।१९१।४

हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़ सुख सम्पदा ।।

सम्पादकीय अग्रलेख

सभी विसंगतियों का अन्त करो

मई १९९५ के सप्ताहान्त मे हैदराबाद मे दक्षिणी राज्यों और देश के दूसरे सभी प्रदेशो के चुने हुए आर्य प्रतिनिधियो का आर्य महासम्मेलन हुआ। इस महासम्मेलन के अवसर पर एकत्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधियों ने प. रामचन्द्र राव वन्देमातरम् को सार्वदेशिक सभा अध्यक्ष और श्री सोमनाथ मरवाह को सार्वदेशिक सभा का कार्यवाहक अध्यक्ष निर्वाचित किया। आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नव-निर्वाचित अध्यक्ष वन्देमातरम् जी ने कहा यद्यपि समान अधिकारो और दायित्वो वाले अनेक राज्यो का भारत इण्डिया एक प्रभुत्वसम्पन्न सार्वभौम गणतन्त्र राष्ट्र है, तथापि पश्चियोत्तर क्षेत्र में अवस्थित कश्मीर तथा पूर्वोत्तर अंचल मे अवस्थित कुछ राज्यो को विशिष्ट अधिकार दिए गए हैं। यद्यपि ये अधिकार मर्यादित अवधि के लिए देने की बात कही गई थी, परन्तु वह सीमा खत्म होती नही दिखाई देती। इतना ही नहीं, वहां की जनता को खासतौर से वहा के उग्रवादियो को सन्तुष्ट करने के लिए अधिक आजादी की बात कही जाती है।

संविधान की दृष्टि से प्रभुत्व सम्पन्न सार्वभौम गणतन्त्र के सभी घटक राज्यो के समान अधिकार हैं, इसी प्रकार यहा रहने वाली समस्त जनता के भी समान नागरिक अधिकार होने चाहिए, परन्तु जैसाकि हम देख आए हैं, कुछ राज्यो को कुछ विशेष अधिकार पर्याप्त अवधि के लिए दिए गए थे, यह अवधि जल्दी समाप्त होती नही दिखाई देती, इसी प्रकार अल्पसख्यक जनता के निजी अधिकारो के संरक्षण के नाम पर उन्हे निजी कानूनो का लाभ उठाने का मौका मिला हुआ है। पिछले दिनो सर्वोच्च न्यायालय सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्रीय प्रशासन को परामर्श दिया था कि समस्त जनता के लिए एक समान नागरिक कानून का निर्माण एव स चालन होना चाहिए। ईश्वरीय सृष्टि, प्रकृति की दृष्टि में मानव मात्र समान हैं, सविधान की दृष्टि से भी देश के सभी राष्ट्रजन और नागरिक समान हैं। उनमे प्रदेश, धर्म या किसी भी आधार पर कोई भेदभाव या अन्तर नही होना चाहिए। आर्य महासम्मेलन ने एक प्रस्ताव स्वीकार कर तथा सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् और कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह ने आह्वान किया है कि सविधान की इन सभी विसगतियों का अन्त होना चाहिए।

वैसे तो सविधान की भावना और सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देश के अनुसार सविधान की सभी विसगतियो और नागरिक-नागरिक मे भेदभाव या अन्तर करने वाले कानून व्यवस्थाओ का तुरन्त अत हो जाना चाहिए। देश का स्वाधीनता स ग्राम जन-जन की स्वाधीनता और प्रत्येक राष्ट्रजन एव नागरिक के बुनियादी अधिकारो के सरक्षण के लिए लडा गया था। हमारे शास्त्र, सविधान के मौलिक बुनियादी नीति-निर्देश भी उन्हें स्वीकार करते हैं, ऐसी स्थिति में अब वह समय आ गया है जब हम सविधान एव नागरिक कानून की समस्त विसगतियो को दूर करने के लिए समाज, सभाओ, राष्ट्र के छोटे-बड़े सभी सगठनो मे इस सम्बन्ध में आवश्यक जनमत जाग्रत संगठित कर केन्द्रीय राज्य प्रशासनो को कार्रवाई करने के लिए समुचित दिशा-निर्देश दें।

चिट्ठी पत्री

सांसदों ने योग्यता एवं वरिष्ठता को ठेंगा दिया

२ जून, १९९५ को लोकतंत्रीय प्रणाली वाले देश भारत के सांसदों ने वह संविधान संशोधन विधेयक जो अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लोगों को पदोन्नति मे भी आरक्षण की सुविधा जारी रखेगा, ३१९ सदस्यों के समर्थन से लोकसभा म स्वीकृत कर दिया। जातीय आधार पर पदोन्नति जारी रखने वाले इस विधेयक के विरोध मे केवल श्री मोहन रावले (शिव सेना) ने मत देकर सामाजिक न्याय, समता, चेतना का सराहनीय साहस का प्रदर्शित किया।

विभिन्न राजनैतिक दलो का प्रतिनिधित्व करने वाले और सभी धर्मों तथा जातियो के मतदाताओ द्वारा स्वतत्र एव निष्पक्ष चुनाव प्रणाली के माध्यम से चुनकर ससद म आए ३१९ सासदो पर सभी जातियो और सभी धर्मों के मतदाताओ के प्रति समानता का गुरुत्वपूर्ण दायित्व भी है। अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियो के लोगों को भर्ती के बाद पदोन्नति मे भी आरक्षण का अधा समर्थन करके क्या इन माननीय सासदो ने पदोन्नति के योग्य, सक्षम, अनुभवी तथा वरिष्ठ लोगो की उपेक्षा नही की है? और क्या इन जन-प्रतिनिधियों ने सरकारी नौकरियो मे लगे मेहनती तथा वरिष्ठ कर्मचारियो, अधिकारियों के हितों की उपेक्षा कर उन्हें निराश नही किया है? इस तरह क्या इन नेताओं ने योग्यता एव वरिष्ठता को ठेंगा नही दिखा दिया है?

—भूषण द्विवेदी
साउथ मोती बाग, नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश में कल के शत्रुओं के कन्धों पर

कल तक मायावती भारतीय जनता पार्टी को कथित मनुवादी कह गालियां देती थी, आज उसको दृष्टि मे लगता है कि क्राति हो गई है। भाजपा के कन्धों पर चढ़कर सरकार बनाने का इससे भिन्न क्या अर्थ हो सकता है? वैसे मेरी व्यक्तिगत दृष्टि मे भाजपा एक मनुवादी पार्टी न होकर युगानुरूप एक राष्ट्रवादी पार्टी है। सच यह भी है कि मायावती या काशीराम अथवा बसपा या तो मनु और उसकी असली स्मृति को वास्तविक रूप और अर्थ मे जानते ही नही हैं, या फिर सच जाने बिना अपनी राजनीति करना चाहते रहे हैं। मनु का दर्शन वास्तव मे जन्म मे जाति का समर्थक कभी नही था। मनु ने भेदभाव या अन्याय करना नहीं चाहा था। यही कारण है कि अम्बेडकर को आज का मनु कहा जाता है। मायावती का नया कदम अवसरवादी राजनीति का परिचय देता है।

—सतीश कुमार विज, २६/२०, वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-८

सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगे

इसके बिना भारत सुखी-समृद्ध कदापि नहीं होगा

लाला हरदेवसहायजी की जीवनी का लोकार्पण : नेताओं की श्रद्धांजलियां



भारत गोसेवक समाज के संस्थापक स्व० लाला हरदेवसहाय जी की जीवनी का लोकार्पण करते हुए लोकसभा में विपक्ष के नेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी। उनके दाहिनी ओर सरसंघचालक प्रो० राजेन्द्रसिंह-रज्जू भईया तथा जीवनी के लेखक श्री मदनलाल जी जुनेजा। दाहिनी ओर दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल जी खुराना।

नई दिल्ली (वि० प्र०) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री रज्जू भईया ने आशा व्यक्त की कि अब समय नजदीक आता जा रहा है कि धर्मप्राण भारत में सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए जोरदार आवाज उठाई जाएगी। गोहत्या जारी रहना एवं गोमांस का निर्यात हमारे देश के लिए अमिट कलंक है। सभी अहिंसा-प्रेमी इस कलंक को मिटाने के लिए आगे आएं, परमगोभक्त लाला हरदेवसहायजी को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

भारत गोसेवक समाज द्वारा "लाला हरदेवसहाय एक निर्भीक योद्धा" ग्रन्थ के लोकार्पण समारोह में भाषण करते रज्जू भैया ने कहा कि लाला हरदेवसहायजी एक स्वाधीनता सेनानी होने के साथ गोमाता, राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा स्वदेशी के प्रति अनन्य निष्ठावान थे। वर्षों तक गोरक्षा आन्दोलन के दौरान उन्हें निकट से देखने का मुझे सौभाग्य मिला। कांग्रेस के नेता राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन तथा गोविन्ददास उनके गोरक्षा आन्दोलन में सहयोगी रहे, किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि कांग्रेस सरकार ने विनोबा भावे के अनशन के बावजूद गोहत्या-बन्दी की मांग पूरी नहीं की।

ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए लोकसभा में विपक्ष के नेता अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा कि लाला हरदेवसहायजी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से जेल में गो-रक्षा तथा हिन्दी-प्रचार की प्रेरणा ली थी। इन दोनों पुनीत कार्यों के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। उन्होंने यह सप्रमाण सिद्ध किया कि गौ हमारी धार्मिक श्रद्धा का केन्द्र होने के साथ-साथ अत्यन्त उपयोगी भी है। बूढ़ी गाय-बैल हमारे समाज के लिए समग्र रूप में उपयोगी है। अटल जी ने आशा व्यक्त की कि भाजपा शासित सब प्रदेश गोवंश की हत्या का कलंक मिटाकर ला० हरदेवसहायजी के गोरक्षा के सपने को पूरा करेंगे।

श्री वाजपेयी ने कहा कि श्री मदनलाल जुनेजा ने लाला जी की प्रामाणिक जीवनी लिखकर समस्त गोभक्त समाज का बहुत बड़ा उपकार किया है।

दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने कहा कि दिल्ली की भाजपा सरकार ने सबसे पहले गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाकर लालाजी के सपने को साकार किया। अब दिल्ली में १० गोसदन खोले जाएंगे जिससे कोई भी गाय सड़क पर भटकने को बाध्य न हो। मेनका गांधी ने भी एक गोसदन का संचालन करने की आकांक्षा व्यक्त की है।

मुख्यमन्त्री ने घोषणा की कि जिस स्थान पर "भारत गोसेवक समाज" का कार्यालय है, उस "सदर थाना रोड" का नाम "लाला हरदेवसहाय मार्ग" रखा जाएगा।

राज्यसभा में विपक्ष के नेता सिकन्दर बख्त ने कहा कि जिस देश की बहु-संख्यक जनता गाय के प्रति श्रद्धा रखती है, उस देश में गोहत्या जारी रखना शर्मनाक है, गोहत्या पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

सनातनधर्मी नेता तथा भारत गोसेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता ने समारोह का संचालन किया। उन्होंने कहा कि गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर ही लाला हरदेवसहाय जी को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

इस अवसर पर अटलजी ने ग्रन्थ के लेखक मदनमोहन जुनेजा को शाल ओढ़ाकर अभिनन्दित किया।

समारोह में स्वामी भास्करानन्द महाराज, संसद सदस्य गुमानमल लोढा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त संघ चालक श्री सत्यनारायण बंसल, अग्रवाल समाज के अग्रणी नेता लाला रामेश्वरदास गुप्त, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के महासचिव श्री बालेश्वर अग्रवाल, स्व० लाला हरदेवसहाय जी के परिवार के सदस्य तथा अन्य गोभक्त भारी संख्या में उपस्थित थे।

—शिव कुमार गोयल, पत्रकार

दानवता को गीता का सन्देश

फल की आकांक्षा छोड़ कर कर्म करें

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। गीता २।४७

कर्म करना ही तुम्हारे अधिकार में है, फल नहीं, इसलिए तुम्हें न तो कर्मों के फलों की आकांक्षा करनी चाहिए और न हाथ पर हाथ धर कर अकर्मण्य बन-कर बैठो।

योगस्थ कुरु कर्माणि संग त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धसिद्ध्यो समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। गीता २।४८

हे अर्जुन तुम्हें आसक्ति छोड़कर निरन्तर कर्म करने चाहिए। उनमें सफलता मिले या असफलता, दोनों को एक-जैसा मान इसी समभाव को योग कहते हैं।

सब घट मोरा साइयां

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिनः।। गीता ५।१८

ज्ञानी लोग विद्वान् और विनयी विद्वान व्यक्ति में, गौ में, हाथी में, कुत्ते में चाण्डाल में समभाव रखते हैं वे जानते हैं कि सबके भीतर एक ही भगवान विराजमान हैं।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति। गीता ६।३०

जो आदमी भगवान् को सब जगह देखता है और भगवान् में ही सबको देखता है, न तो भगवान उसकी आंखों से ओझल होता है और न वह भगवान की आंख से ओझल होता है। यह चोला ही तो है—

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। गीता २।२०

इस आत्मा का न तो जन्म होता है, न मृत्यु। न होकर यह फिर होने को है। यह अजन्मा है, शाश्वत है, पुरातन है, शरीर के नष्ट हो जाने पर भी इसका नाश नहीं होता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पिछड़े क्षेत्रों में धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए

आर्य समाज सरस्वती विहार में आदिवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

आर्यसमाज रानी बाग की प्रधाना श्रीमती प्रेमलता शास्त्री द्वारा दिनांक १५-५-९५ से २८-५-९५ तक आर्यसमाज सरस्वती विहार में मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र से आए व्यक्तियो का एक वैचारिक क्रान्ति शिविर लगाया गया। जिसमे लगभग ५५ व्यक्तियो ने भाग लिया। इसमे अधिकाश युवा १८ से २५ वर्ष की आयु के थे। इनमे से ६ व्यक्ति ३० से ४५ वर्ष की आयु वर्ग के थे, वे उनके शिक्षक उपदेशक तथा प्रचारक के रूप मे कार्य करते हैं।

मध्य प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रो मे अशिक्षा, गरीबी तथा बेरोजगारी के कारण ईसाई मिशनरी हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन कर रहे हैं। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य ऋषि दयानन्द के अनुसार वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार करके हिन्दुओ को ईसाई धर्म अपनाने से रोकना तथा जो ईसाई धर्म अपना चुके हैं उन्हें पुन: हिन्दू धर्म मे वापस लाना है।

यहा आए व्यक्तियों मे एक ईसाई बन चुका था। श्रीमती प्रेमलता शास्त्री की प्रेरणा से उसकी शुद्धि करके उसे पुन. हिन्दू धर्म मे अपनाया गया तथा उसका नाम 'रघु' रखा गया।

शिविर मे इन लोगों ने प्रतिदिन सन्ध्या, हवन तथा यज्ञ किया। उन मन्त्रों के अर्थ बताकर उन्हे याद करवाया गया। उनमे यह विश्वास पैदा हो गया कि वे अपने गावों मे जाकर स्वय विधि पूर्वक यज्ञ कर सकें। नैतिक शिक्षा द्वारा उनमे यह भावना पैदा की गई कि ईश्वर निराकार सर्वव्यापक तथा सर्व शक्तिमान है। उसकी दृष्टि मे सब मनुष्य समान हैं, कोई छोटा-बड़ा नही। कोई अछूत नही। वेदो मे दिया गया ज्ञान प्राप्त करने का सब को समान अधिकार है।

सरस्वती विहार की आर्यसमाज के अधिकारियो, सदस्यो तथा निवासियो ने इस शिविर मे पर्याप्त रुचि दिखाई। अनेक लोगो ने अपने अतिथियो के खाने-पीने तथा नाश्ते की व्यवस्था की। आर्यसमाज की ओर से इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि उन्हें कोई कष्ट न हो। श्रीमती प्रेमलता शास्त्री तथा उनकी सहयोगी श्रीमती आहूजा आदि के योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए वह थोडी है।

शिविर की समाप्ति पर उन्हे विदा करते समय आर्यसमाज सरस्वती विहार की ओर से उन्हे माइक, एम्प्लीफायर तथा लाउडस्पीकर का पूरा सेट भेट किया गया। जिसका मूल्य लगभग ८०००-०० रु० है इसका सदुपयोग आदिवासी क्षेत्रो मे आर्यसमाज के सिद्धान्तो का प्रचार करने मे किया जाएगा।

कभी मानव पाषाण युग में था, अब मानव में पाषाण-युग है

—ओमप्रकाश

कानन के किसी कुंज मे बैठकर
उपरत भुवन से,
जीवन का उद्देश्य-मूल्य
विज्ञान का रहस्य बीज,
प्रकाशपुन्ज बनकर दिया था अग्रज ने।
उसी वृक्ष की छाया, फल-फूल से
विश्व सुरभित हो रहा है
दिशाओ को मुट्ठी मे बाधकर
सभ्यता की नगी तलवार लेकर
धवल चन्द्र-वाटिका मे
सभ्य मानव उन्मत्त हो रहा है।
शीशे की दीवार पर बैठकर
स्वर्णसौध की कल्पना कर
शिथिलता के जाल मे फसकर
अब मजा रहा है।
चित्त को रिझाने के लिए
कला की चटाई पर
उद्देश्यहीन तन्तु की बनी चादर बिछाकर
उच्छृखल और मदमत्त मुद्रा मे
अगड़ाई ले रहा है।
जैसे स्वर्गिक आनन्द के समुद्र मे
आंखे बन्द कर रहा है,
आत्मबोध को दीवट पर रखकर
उसकी अक्षय निधि मे
आग लगा रहा है।
सभ्यता की चकाचौंध मे
मानस की हाडी मे
विकृति का पुटपाक पका रहा है।
कांटे से नुकीले कला के नाखून से
सभ्यता की खाज को खुजलाकर
आनन्द निमज्जित हो रहा है।

दुग्ध मुंह पर भी पड रही है
सुरा की मादक छाया।
पूर्वजो की विशालता भी
बास की खोखल से देखी जा रही है।
गौरव-गरिमा-गुरुता
कचरा समझकर
शहर के बाहर बहा दी गई है।
पशुता का एक ही सोपान शेष है,
सभ्यता की जड़ता
पराकाष्ठा पर है।
कला का अपसरण
चरित्र की धवलता को
तिरोहित करने को है।
शिरीष के पुष्प पर पड़ी
तुषारबिन्दु पर
जीवन चित्रित हो रहा है।
पाश्चात्य सभ्यता का
नगा नाच देखकर
गगन के तारे भी
बादलो से मुह आच्छादित कर रहे हैं,
इस भीषण प्लावन मे
मनु की नौका कहा रुकेगी ?
क्योकि हिमालय का भी
अस्तित्व खतरे मे है।
कहते है—
कभी मानव पाषाण युग में था,
किन्तु अब मानव मे पाषाण-युग है।

आर्यसमाज रावतमाटा कोटा

वैदिक आयुर्वैदिक ज्ञान कोश

'वेदों में आयुर्वेद' ग्रन्थ का प्रणयन

—डा० सविता द्विवेदी

वेदों की महिमा अपार है। वेद मानव मात्र के लिए प्रकाशस्तम्भ हैं। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं। वेदों में ज्ञान और विज्ञान का अनन्त भण्डार है। आधि व्याधि की चिकित्सा आयुर्वेद द्वारा सम्भव है।

कालिदास का यह कथन सर्वथा उपयुक्त है कि 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' यह स्वस्थ शरीर ही धर्म का साधन है। चरक ने आयुर्वेद का लक्षण दिया है 'आयुर्वेद यति इति आयुर्वेद' जो आयु ज्ञान का कराता है वह आयुर्वेद है। आयुर्वेद ही मनुष्य की आयु के लिए हितकर (पथ्य) और अहितकर (अपथ्य) वस्तुओं का वर्णन करता है। सुखकर और दु:खदायी कारणो का वर्णन करता है। पदार्थों की ग्राह्यमात्रा और अनुचित मात्रा का उपदेश देता है तथा आयुवर्धक और आयुनाशक द्रव्यो के गुणो कर्मो का वर्णन करता है। सुश्रुत का कथन है कि जिसमे आयु के हितकर और अहितकर तत्वों का विचार हो और जो दीर्घ आयु प्राप्त कराता है वह आयुर्वेद है।

'वेदो मे आयुर्वेद' ग्रन्थ से लेखक के गम्भीर ज्ञान और पाण्डित्य का स्पष्ट परिचय मिलता है। यह ग्रन्थ डा० द्विवेदी के दीर्घकालीन वेदाभ्यास और उनकी अनुसधान वृत्ति का परिणाम है। चारों वेदों मे प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध आयुर्वेदीय सामग्री का एक ही स्थान पर सकलन, उनका विषयानुसार विभाजन तथा साथ ही चरक आदि आयुर्वेदीय ग्रन्थो के सम्बन्द्ध अशों के भी उद्धरण दिए गए हैं। आयुर्वेद से सम्बद्ध २८६ औषधियो का विवरण देने से ग्रन्थ की उपयोगिता और अधिक बढ़ गयी है।

यह ग्रन्थ १२ अध्यायो मे विभक्त है। इसमें सूत्र स्थान, शरीर स्थान, चिकित्सा स्थान, प्राकृतिक चिकित्सा, शल्यचिकित्सा, विष चिकित्सा, पशु चिकित्सा, विविधरोग चिकित्सा, मणिधारण और उसके लाभ, अरिष्टनाशन एव विविध औषधियो का विस्तृत वर्णन है।

सूत्र स्थान अध्याय मे आयुर्वेद और उसके उद्देश्य, आयुर्वेद के आठ अंग वैद्य के कर्त्तव्य के साथ-साथ दीर्घायु के साधनो का वर्णन है। शरीर स्थान में हृदय आदि के कार्यो का वर्णन तथा निदान स्थान मे रोगों की उत्पत्ति के कारणो का वर्णन है।

चिकित्सा स्थान मे ज्वर आदि रोग, कफज रोग, सिर आख, नाक, कान, हृदय, नाभि, उदर आदि रोग, मानस रोग, स्त्री रोग, गुप्त रोगो आदि की चिकित्सा का वर्णन है प्राकृतिक चिकित्सा इस ग्रन्थ का महत्वपूर्ण अश है। इसमे सूर्यकिरण चिकित्सा, वायु चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, जल चिकित्सा, मृत् चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा, मन्त्र चिकित्सा, हस्तस्पर्श चिकित्सा आदि का प्रयोगात्मक विस्तृत वर्णन है। इसकी विशेषता यह है कि इस चिकित्सा से किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नही रहती है।

शल्य चिकित्सा अतिप्राचीन समय से भारत मे प्रचलित है। इसमे कायाकल्प विधि, टूटे हुए अगो का जोड़ना और मृतप्राय को जीवित करने की विधि का वर्णन है।

वेदों मे आयुर्वेद ग्रन्थ पूर्णतया मौलिक है और सर्वथा नवीन दृष्टि से इसमे उन आयुर्वेदिक सूत्रो या मन्त्रो को समायोजित किया गया है जो वेदवाणी में उपलब्ध रहे हैं। आयुर्वेद के विभिन्न अगो की जानकारी के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है पुस्तक की भाषा शैली अत्यन्त सरल और सुबोध है। प्रत्येक विषय पर अति सरल भाषा मे सुरुचिपूर्ण ढग से वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक के लेखक डा० कपिलदेव द्विवेदी सस्कृत साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों मे से एक है इस ग्रन्थ मे डा० द्विवेदी ने आयुर्वेद के तत्वों को गम्भीर सर्वागीण व्याख्या करके पुस्तक को उपयोगी बनाया है।

प्रोफेसर्स कालोनी ज्ञानपुर (वाराणसी)

समीक्षित पुस्तक—वेदों मे आयुर्वेद, लेखक : डा० कपिल देव द्विवेदी एव डा० भारतेन्दु द्विवेदी, पृष्ठ सख्या . २९६, मूल्य : ८०-००, सजिल्द-१२०.०० रु०, प्रकाशक : विश्वभारती अनुसधान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी) २२१३०४

जीवन से बुराइयों का अन्त करो

आर्य महिलाओं द्वारा वेद-प्रचार

स्त्री आर्यसमाज लाजपत नगर की ओर से वेद प्रचार का आयोजन निर्मल छाया परिसर के अन्तर्गत बालिका निरीक्षण गृह जेल रोड मे बड़ी श्रद्धा और भक्ति मे आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती शकुन्तला आर्या वरिष्ठ उपाध्यक्षा प्रातीय आर्य महिला सभा ने की। निरीक्षण गृह की बालिकाओं और कार्यरत कर्मचारियो ने बड़ी श्रद्धा, भक्ति और उत्साह से यज्ञ मे भाग लेकर भक्ति रस से भरे हुए गीतो द्वारा प्रभु कीर्तन का आनन्द प्राप्त किया।

यज्ञ के अनन्तर श्रीमती शकुन्तला आर्या ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए मानव जीवन की उपयोगिता पर बल दिया। श्रीमती आर्या ने कहा कि जीवन से बुराइयो को दूर करके ही अच्छाइयो को लाया जा सकता है। बन्द कमरे की दूषित हवा जब तक बाहर नही निकलती तब तक बाहर की सुशीतल और स्वच्छ समीर भीतर कैसे प्रवेश कर सकती है? अत: बुराइयों को दूर करके ही अच्छाइयो को ग्रहण किया जा सकता है। गुणों को धारण करके ही मानव अपने जीवन को सजा और सवार सकता है।

सभा महा मन्त्री श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ने गायत्री मन्त्र के महत्व को बताते हुए सुमेधा बुद्धि को ग्रहण करने की प्रेरणा दी। श्रीमती शकुन्तला आर्या एवं श्रीमती कान्ता सिक्का द्वारा वैदिक साहित्य भी वितरित किया गया।

यज्ञ की सुगन्धि और आध्यात्मिक भावना से सारा वातावरण एक बार सुगन्धित हो उठा। नगर की अनेक स्वय सेवी सस्थाओ ने भी इस धार्मिक आयोजन में भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर यज्ञ शेष वितरित किया गया।

कौशल्या रावी मन्त्रिणी
आर्य स्त्री समाज लाजपत नगर नई दिल्ली-२४

श्री दरबारीलाल जी के निधन से गहरी क्षति

मुजफ्फरपुर (बिहार) स्थानीय श्री चतुर्भुज मेमोरियल ट्रस्ट मे श्री पन्नालाल आर्य, प्रधान, उत्तर बिहार आर्य सभा, मुजफ्फरपुर की अध्यक्षता मे एक शोक सभा की गई। उसमे शिक्षाविद समाजसेवी, तथा आर्य प्रादेशिक सभा एव डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल दिल्ली के प्रधान श्री दरबारीलाल के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया तथा श्रद्धाजलि अर्पित की गई। अध्यक्ष श्री पन्नालाल आर्य ने कहा कि उनके निधन से आर्यसमाज को अपार क्षति हुई, जिसे निकट भविष्य में पूर्ण करना सभव नही।

प्रभु भक्त परिषद मुजफ्फरपुर के महासचिव श्री ब्रह्मानन्द जिज्ञासु आर्य कवि ने कहा कि श्री दरबारीलाल के निधन से आर्य समाज तथा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों की प्रगति मे बाधा आ गई। उनकी इच्छा थी कि पूरे विश्व में वैदिक धर्म एव आर्य समाज के प्रचार हेतु डी०ए०वी० पब्लिक स्कूलों की वृद्धि होनी चाहिए जिससे भावी सताने वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में सहायक हो

हर बच्चे के हाथ में किताब हो

शिक्षाविद् श्री दरबारी लाल का यही सपना था

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मडल के प्रधान श्री महाशय रामविलास सुराना व अन्य अधिकारियों ने आर्यनेता, शिक्षाविद् ६६ वर्षीय श्री दरबारीलाल के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होने १५ जनवरी १९९५ को अपने जीवन के ६५ वर्ष पूर्ण किए थे और पूरे राष्ट्र मे शिक्षा सस्थानो का जाल बिछाया था। उनका कहना था कि "देश के हर बच्चे के हाथ मे किताब हो यही मेरा सपना है।"

ओमप्रकाश सपरा मन्त्री



आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N D.P S O. on 22,23 6-1995 Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/95
दि. ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक २५ जून १९९५

चुनाव समाचार

वेद प्रचार ट्रस्ट मन्डी कालोवाल (हरियाणा) श्री हरिश्चन्द आर्य प्रधान, ईशकुमार-उपप्रधान, हिमराज आर्य-मन्त्री, पवनकुमार माहेश्वरी-उपमन्त्री, सुरतसिंह आर्य-प्रचार मन्त्री, डा० सुखीराम-कोषाध्यक्ष, जगदीश राय आर्य-पुस्तकाध्यक्ष।

आर्य समाज उत्तम नगर नई दिल्ली—प्रधान-श्री सूर्यदेव जी की अध्यक्षता मे ४ जून को सम्पन्न। सरक्षक-श्री रामसिंह गहलोत, प्रधान-डा० गुणपाल आर्य, उपप्रधान सर्वश्री बख्तावरसिंह आर्य, श्यामलाल आर्य, मन्त्री-श्री दयानन्द आर्य, उपमन्त्री-श्री सतीशकुमार अरोड़ा, कोषाध्यक्ष-श्री सुशीलकुमार आर्य। लेखानिरीक्षक-श्री हरद्वारीलाल।

आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली—५ का चुनाव ४ जून को सम्पन्न हुआ। आचार्य हरिदेव सिद्धांत भूषण प्रधान, ओमप्रकाश जी गुप्त-मन्त्री, श्री कीर्ति शर्मा-कोषाध्यक्ष-सर्वसम्मति से निर्वाचित। अतरग सभा के सदस्यों के निर्वाचन का अधिकार अधिकारी-वर्ग को दिया गया।

आर्य समाज हनुमान रोड के नए पदाधिकारी

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव समाज के वरिष्ठ उपप्रधान श्री हंसराज चोपड़ा की अध्यक्षता मे रविवार १४ ५-९५ को हुआ। वर्ष १९९५-९६ के लिए निम्न पदाधिकारी चुने गए :—

प्रधान श्री रामसूर्ति कैला, उपप्रधान-सर्वश्री हंसराज चोपड़ा, डा० अमर जीवन, श्रीमती सरला ठुकराल, मन्त्री श्री वीरेश कुमार बुग्गा, उपमन्त्री-श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा, कोषाध्यक्ष-श्री एन० सत्यनारायण आर्य; पुस्तकाध्यक्ष-श्री धर्मेन्द्र दत्त, अधि० आर्य वीर दल-श्री राजीव भाटिया, अंतरंग सदस्य-सर्वश्री वेदव्रत शर्मा, श्री शान्ति नाथ भल्ला, सुशीलकुमार महाजन, श्री प्रेमनारायण सूद, श्रीमती जानकी देवी धीर, सुभाष चन्द्र मल्होत्रा, रिपुदमन सरीन, विशेष आमन्त्रित-सर्वश्री प्रहलाद राय गुप्त, श्रीमती कमला कैला, श्रीमती आशा वर्मा, श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, श्री कृष्णलाल कपूर, अशोक सहदेव, विजय मनोचा।

गीता का सन्देश (पृष्ठ ४ का शेष)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः। गीता २।२३

इस आत्मा को न तो शस्त्र काट सकते हैं, न आग जला सकती है। जल इसे गीला नहीं कर सकता, वायु इसे सुखा नहीं सकती।

यज्ञदान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥ गीता १८।५

यज्ञ, दान और तप अवश्य करने चाहिएं। उन्हें कभी नहीं छोड़ना चाहिए। ये बुद्धिमानों को पवित्र करते हैं। प्रस्तुति—नरेन्द्र



सेवा में—

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार
की औषधियों का
सेवन करें।

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन। ३२६१८७१

सुरेन्द्र द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्र स, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन :-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि०नं० डी० (एल ११०२४)-९५

ओ३म्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १८ अंक ३४ | रविवार, ९ जुलाई १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५२ | दयानन्दाब्द । १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६
मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

महिलाएं विद्या ग्रहण करें : स्वावलम्बन का व्रत लें

दा०प्र० आर्य स्कूल में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का उद्घाटन : आर्य-नेताओं का आह्वान

दिल्ली रविवार। नोएडा सेक्टर ७ के सामने ए-५६६ न्यू अशोक नगर, दिल्ली-९६ में अवस्थित दामोदर प्रसाद आर्य पब्लिक स्कूल में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र और निर्धन महिलाओं के लिए सिलाई व मुफ्त शिक्षा केन्द्र का उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा० धर्मपाल ने निर्धन महिलाओं का आह्वान किया कि वे इस केन्द्र में आकर विद्या ग्रहण करें। विद्या ग्रहण करने पर उन्हें सिलाई की मशीनें उपहार में दी जाएंगी, जिससे वे अपने तथा परिवार के भरण-पोषण के लिये सिलाई का सहारा लेकर स्वावलम्बन का जीवन व्यतीत कर सकती हैं।

इस अवसर पर प्रातः दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने यज्ञ किया और प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र व सिलाई शिक्षा केन्द्र का उद्घाटन किया।

गुरुकुल कांगड़ी में कन्याओं के लिए पृथक् विद्याध्ययन की व्यवस्था

अमर बलिदान स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों की स्थापना के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इस गुरुकुल में प्रारम्भ से ही ब्रह्मचारियों को शिक्षा दी जाती थी, कन्याओं के लिए देहरादून में पृथक् कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई थी।

उल्लेखनीय है कि महाविद्यालय व स्नातकोत्तर अध्ययन में कन्याओं के के लिये विशेष अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था नहीं थी, इसके लिये अनुभव किया गया कि गुरुकुल कांगड़ी की कुलभूमि से पृथक् योगी फार्मेसी द्वारा कन्याओं की शिक्षा के लिये दी गई भूमि पर गुरुकुल कांगड़ी के महाविद्यालय की उच्च शिक्षा की व्यवस्था की जाए। कुलभूमि के बाहर कन्याओं के लिये पृथक् अध्ययन की व्यवस्था का विचार जल्दी ही कार्यान्वित किया जा रहा है।

ज्ञात हुआ है कि नजीबाबाद के वैदिक संस्थान के अध्यक्ष श्री वेदमुनि परिव्राजक ने गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा के विरुद्ध १४ जुलाई से अनशन करना चाहते हैं, परिव्राजक जी यदि तथ्यों पर ध्यान देंगे तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि गुरुकुल में सहशिक्षा प्रारम्भ नहीं की जा रही है, इसलिए उनके लिए आपत्ति का कोई अवसर ही नहीं है।

परम प्रमाण वेद ही हैं

भारत की परम्परा यही है : ज्ञानियों की संगति करो

देहरादून। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने ग्राम गणेशपुर (जिला सहारनपुर) में आर्य समाज के नव-निर्मित सत्संग भवन में यज्ञ एवं भजनों के पश्चात वेद प्रवचन करते हुए बताया कि सृष्टि के आदि से सत्यज्ञान के स्रोत के रूप में सर्वाधिक प्रामाणिक वेद को ही माना गया है। १२ करोड़ वर्ष पूर्व मनु ने, एक करोड़ वर्ष से अधिक पहले श्री राम ने और ५ हजार वर्ष पूर्व श्री कृष्ण ने भी सर्वाधिक महत्व वेद को ही दिया।

मनु महाराज का कथन है कि कर्तव्य-अकर्तव्य के निर्णय के लिए परम प्रमाण वेद ही है। श्री राम का गुणगान करते हुए महर्षि बाल्मीकि ने उन्हें वेद-वेदांग का तत्वज्ञ बताया। महाभारत काल में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अग्रपूजा के लिए श्री कृष्ण का नाम प्रस्तावित करते हुए भीष्म जी ने जो दो हेतु बताये थे उनमें एक था-वेद-वेदांग का विशेष ज्ञान।

ऋग्वेद ५-५१-१५ की व्याख्या करते हुए श्री बाली ने बताया कि कल्याण के अभिलाषियों को सदा दानी, अहिंसक या ज्ञानी व्यक्ति की संगति करनी चाहिए।

अज्ञान और अविद्या दुःखों का सबसे बड़ा कारण है। अज्ञानी की संगति से अज्ञान और अज्ञानता ही मिलती है, इसीलिए वेद कहता है कि ज्ञानी की ही संगति करो।

आर्य जनता अनिल कुमार शास्त्री से सावधान हो

आर्य समाज बम्बई (काकड़वाड़ी) के मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय की चेतावनी

आर्य समाज बम्बई, काकडवाडी, विठ्ठलभाई पटेल मार्ग, बम्बई के मन्त्री श्री राजेन्द्र नाथ पाण्डेय ने सूचना दी है—अनिल कुमार शास्त्री नाम के कोई व्यक्ति अपने को शास्त्रार्थ महारथी घोषित कर आर्यसमाज को शास्त्रार्थ की चुनौती देते हुए शर्त रखते हैं कि वह संगीत के माध्यम से शास्त्रार्थ करेंगे।

उनकी चुनौती के उत्तर में आर्य समाज बम्बई के मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय ने लिखा है कि शास्त्रार्थ में संस्कृत-हिन्दी या किसी भाषा को संवाद का माध्यम बनाना होगा। शास्त्रार्थ संगीत के माध्यम से सम्भव नहीं है। संवाद की भाषा मान्य होगी जिसे दोनों पक्ष या श्रोता समझते हों। ईश्वर है या नहीं, वह साकार है या निराकार, वह अवतार लेता है या नहीं आदि विषयों में सत्यासत्य का निर्णय तर्क, युक्ति, शास्त्रीय प्रमाणों से किया जाएगा। आप अभद्र भाषा का प्रयोग न करें और लिखित रूप से उसके लिए क्षमा मांगें नहीं तो आपके विरुद्ध समाचार पत्रों एवं न्यायालय में कार्रवाई की जा सकती है।

प्रधान सम्पादक – सूर्यदेव
सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

क्या हम सीख लेंगे, यादवों के कुल को अभ्युदय और नाश से

महाभारत युद्ध के बाद यादवो के वश के अभ्युदय एवं सर्वनाश के प्रामाणिक विवरण से भारतीय समाज बहुत कुछ सीख सकता है जब तक जरासन्ध का डर था, तब तक यादव योद्धाओ मे परस्पर प्रेम था, सुशीलता, सज्जनता और सुहृद-भाव थे। द्वारवती या द्वारका मे सुरक्षित होते ही यादव योद्धाओ का जीवन भोगमय होने लगा, निर्भीकता के कारण उन पर आलस्य छा गया। युधिष्ठिर के साम्राज्य ने उन्हे और भी निश्चित कर दिया। राष्ट्र की रक्षा मे उनका स्वतन्त्रता का जो प्रेम प्रयुक्त होता था, वह राष्ट्र रक्षा के प्रयत्न की जगह आपस के कलह, वैयक्तिक जीवन की उद्दण्डता, सामाजिक नियन्त्रण के विरुद्ध विद्रोह, राष्ट्र के नियमों के उन्मुक्त अतिक्रमण मे होने लगा।

युद्ध के दिनो में महाभारत के रचयिता महर्षि व्यासदेव ने यादव कुल के आचार-व्यवहार की प्रशसा इन शब्दो में की है—"वे वृद्धो की आज्ञा का अनुसरण करते हैं···अपने सजातीयो के धन के प्रति अहिंसा-वृत्ति रखते हैं ··धनवान होकर भी अभिमान रहित हैं। ब्रह्म के उपासक तथा सत्यवादी हैं। समर्थो का मान करते हैं, दीनो को सहायता देते हैं। वे सदा देवोपासना मे रत, संयमी और दान-शील रहते हैं, डीगे नही मारते, इसीलिए वृष्णिवीरों का राज्य नष्ट नही होता।" इस विवरण के बारे मे महाभारत के मूल सस्कृत श्लोको का रस लीजिए—

न ज्ञातिमवमन्यन्ते वृद्धानां शासनं रता.।
ब्रह्म द्रव्ये गुरुद्रव्ये ज्ञातिद्रव्येऽप्यहिंसका:॥
अर्थवन्तो न चोत्सिकता· ब्रह्मण्या सत्यवादिन.।
समर्थानपि मन्यन्ते दीनानभ्युद्धरन्ति च॥
नित्य देवपरा. दान्ता दातारश्चविकत्थना।
तेन वृष्णि प्रवीराणा चक्रं न प्रतिहन्यते॥ द्रोण पर्व १४४।२४.२८

इस उक्ति के चौथाई शताब्दी के बाद वृष्णि कुमार ऋषिगणो का सम्मान करने के स्थान पर उनका उपहास करने लगे। एक पुरुष के पेट मे मूसल बाधकर उन्होंने ऋषियो से जिज्ञासा प्रकट की थी—इस देवी के लड़का होगा या लड़की ? ब्राह्मणों या विद्वानो के उपहास की प्रवृत्ति ही यादवो के नाश का कारण बनी। "ज्यो-ज्यो समय व्यतीत हुआ, त्यो-त्यो यादव अधिकाधिक उच्छृंखल होते चले गए। किसी भी पाप के करने मे उन्हें लज्जा नही रही। ब्राह्मणो, देवताओ, वृद्धो, पितृगणों तथा गुरुओ का वे अपमान करने लगे। पति-पत्नियो मे प्रेम तो क्या, एक दूसरे का लिहाज भी नही रहा।" पच्चीस वर्षों की अवधि मे हुए इस परि-वर्तन का विवरण महर्षि व्यास के शब्दो मे पढिए —

एव बहूनि पापानि कुर्वन्तो वृष्णयस्तदा।
प्राद्विषन ब्राह्मणाश्चापि पितृन् देवास्तथैव च।
गुरुश्चाप्यवमन्यन्त न तु राम जनार्दनौ।
पत्य पतीनुच्चरन्ते पत्नीश्च पतयस्तथा॥ मौसल पर्व २।१०।११

इसी के साथ यादवो मे मद्य या शराब पीने का दुर्व्यसन भी घर कर गया था। सौभनगर के राजा शाल्व के आक्रमण के समय यादव राज्य ने मद्यपान पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। आहुक, बभ्रु, कृष्ण और बलराम-सरीखे प्रमुख यदुवशियो द्वारा यह प्रसारित प्रचारित कराया गया-इस विज्ञप्ति द्वारा राष्ट्र भर में मद्य-निर्माण राजाज्ञा द्वारा वर्जित है। आज के पीछे जो मद्यपान करेगा, उसे बान्धवो सहित प्राणदण्ड दिया जाएगा। यदु नेताओ की उस सामूहिक विज्ञप्ति की एक बानगी लीजिए—

अघोषयश्च नगरे वचनादाहुकस्य च। जनार्दनस्य रामस्य बभ्रोश्चैव महात्मन:। अद्य प्रभृति सर्वेषु वृष्णयन्धककुलेष्विह। सुरासवो न कर्त्तव्य सर्वैर्नगरवासिभि। यश्च नो विदित कुर्यात् पेय कश्चिश्नर: क्वचित् जीवनस शूलमाराहेत् स्वयं कृत्वा स बान्धव:। ततो राजभयात सर्वे नियममञ्चक्रिरे तदा। नरा: शासनमाज्ञाय रामस्याक्लिष्टकर्मण॥ मौसल पर्व १-२८-३१

इस सामूहिक विज्ञप्ति द्वारा यादव क्षेत्र में कुछ समय के लिए मद्य का प्रयोग रुक गया, परन्तु कुछ ही उच्छृंखल यादवों ने इस व्यसन लत को और बढा लिया। एक दिन द्वारका के तीर्थ प्रभास नगर में सभी प्रमुख यादव एकत्र हुए। वे समुद्र तट पर बैठ कर नृत्य, राग-रंग देखने लगे। मद्य या शराब पीने का दौर चलने लगा। इतने मे सात्यकि ने कृतवर्मा के बारे मे व्यग्य-उपहास करते हुए आरोप लगाया, "इन वीरो को देखिए, जिन्होंने रात के समय सोते हुए लोगों का सहार किया था।" श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न ने इस व्यग्योक्ति को दोहरा दिया। उत्तर मे कृतवर्मा ने कहा- "योग मे ध्यानावस्थित अक्षित का सिर काटने वाले ये हैं।"

सात्यकि अपने आपे मे नही था, उसने बिना सोचे-समझे तलवार उठाई और कृतवर्मा का सिर काट डाला। इस पर एकत्र जनसमूह दो भागों में बंट गया। अन्धक और भोज सात्यकि के विरुद्ध हो गए। श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न से सात्यकि का पक्ष लिया। दम के दम मे दोनो पक्षो ने तलवारें निकाल ही और एक दूसरे पर टूट पड़े।

इस सामूहिक मुठभेड़ और इसके बाद की व्यापक हिंसा मे सारे यादव कुल का सर्वनाश हो गया।

वृद्धों की आज्ञा मे चलने वाले दूसरो के धन एव मर्यादा का सम्मान करने वाले संयमी, दान शील आस्तिक यदुवशी शत्रु आक्रमण से सुरक्षित निश्चित होकर भोग-अनाचार मे किस तरह निमग्न हो गए और कैसे मद्य-नशे में आकण्ठ डूब कर आपस मे कट मरे, यादवों के कुल के अभ्युदय व सर्वनाश की कहानी से क्या भारतीय नेता और जनता-जनार्दन सीख लेंगे ?

समानो मन्त्र: समिति. समानी, समानं मन सह चित्तमेषाम् ।
समानी व आकूति : समाना हृदयानि व
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति ॥ऋग्वेद

तुम्हारी मंत्रणाओं मे, समितियो मे विचारों में समानता हो, सद्भावना हो, वैमनस्य और दुर्भावना न हो । तुम्हारे अभिप्रायो मे तुम्हारे हृदयो मे और मनों में एकता की भावना रहनी चाहिए, जिससे तुम्हारी सघीय और समुदाय-शक्ति की समुन्नति हो सके ।

सम्पादकीय अग्रलेख

समान अवसर दीजिए, आरक्षण नहीं

भारत के राजनीतिक इतिहास के अध्येता इस राष्ट्र मे वेदों के काल से ही गणतन्त्र के चिन्ह पाते हैं । वैदिक काल के गणतन्त्र ससार के सबसे पुराने गणराज्य हैं । इसके बाद महाकाव्यों और बौद्ध जैन, महापुरुषों के युग में गणतन्त्रों के भव्य एवं स्पष्ट चित्र दिखाई देते हैं । युगपुरुष श्रीकृष्ण, महात्मा बुद्ध, महात्मा महावीर, महाराजा विक्रमादित्य आदि हमारी विशिष्ट गणतन्त्रात्मक परम्पराओं के प्रतिरूप हैं । भारत का गणतन्त्र वेदों का गणतन्त्र है, वह शाक्यों, लिच्छवियों और मल्लों का गणतन्त्र है, वह वीर मालवों, क्षुद्रकों और यौधेयों का गणतन्त्र है । उल्लेखनीय है कि इन भारतीय गणतन्त्रों में छोटे-बड़े हरेक जन को समान अधिकार थे, किसी को विशेष अधिकार, संरक्षण या आरक्षण नहीं था । पुराने गणतन्त्रों की सभाएं और समितियां नए गणतन्त्र की लोकसभा और राज्य सभा हैं । राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के बाद २६ जनवरी, सन १९५० के दिन भारत का सविधान प्रचलित किया गया । इस संविधान मे भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाया । सैकड़ों वर्षों की पराधीनता के बाद सार्वभौम गणतन्त्र की प्रतिष्ठा के बाद आशा हुई थी कि उसमे जन-जन को न्याय प्रगति, समुन्नति के समान अवसर मिलेंगे, परन्तु खेद है कि अल्पसख्यको, पिछड़े हुए, वन्य क्षेत्रों की जनजातियो और दलितों और समाज के उपेक्षितो की श्रेणियों को संरक्षण-आरक्षण देने का निर्णय किया गया ।

समाज और राष्ट्र के पिछड़े हुए वर्गों-वनजातियों एवं दलितों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव व उपेक्षा अनुचित है । उन्हे सामान्य शिक्षण, प्रशिक्षण औद्योगिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण प्रादन करने में सभी तरह की आर्थिक सुविधाएं एव अवसर मिलने चाहिए । प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एव ऋषि-आश्रमों मे भेदभाव के बिना राजा-रक के पुत्रों को समान सुविधाएं एव अवसर दिए जाते थे, उसी प्रकार आधुनिक शिक्षणालयो एव तकनीकी विद्यालयों मे इन पिछड़े हुए उपक्षितो, वचितों, दलितों को अधिकतम सुविधाए एव अवसर मिलने चाहिए, इस मान्यता से किसी को विरोध नही होना चाहिए, परन्तु खेद का विषय है कि पिछले कुछ वर्षों से सरकारी गैर-सरकारी नौकरियो एव पदोन्नति के साथ इन्जीनियरिंग एवं मेडिकल कालेजों तक में प्रवेश के लिए समाज के उपक्षित तत्वो को विशेष संरक्षण तथा आरक्षण देने की कथित राष्ट्रीय नीति को कार्यान्वितकरने कीबात कही जाती है । प्रतियोगिताओं और परीक्षाओ मे ८०-९० प्रतिशत अक पाने वाले योग्य इन्जीनियरों, चिकित्सकों, तकनीकी विशेषज्ञो को जीवन मे आगे बढ़ने का अवसर न देते हुए प्रतियोगिता परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण या विफल हुए उम्मीदवारो को अवसर देने से राष्ट्र का शैक्षणिक, चिकित्सा सम्बन्धी इन्जीनियरिंग या तकनीकी वर्तमान और भविष्य अन्धकार पूर्ण हो सकता है ।

एक समय था जब गुरुकुलों, डी०ए०वी० संस्थानों में दीक्षित हुए दलित एवं पिछड़े वर्गों के युवकों ने समाज में पण्डितों और आचार्यों के रूप मे प्रतिष्ठा पा ली थी । हमारी स्मृतियां और शास्त्र जन्म से मानव मात्र को निम्न, अपठित समझते थे, गुरु-आचार्य के चरणों में शिक्षा पाकर दीक्षित होने पर वे विद्वान् योद्धा या व्यापारी वर्ग में प्रवेश करते थे । विश्व भर में योग्यता, क्षमता की परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होने पर ही उन्हें ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नियुक्ति एवं पदोन्नति के अवसर दिए जाते हैं; परन्तु हमारे देश में पिछड़े या दलित वर्ग के [illegible] वर्गों के आधार पर प्रवेश नियुक्ति और पदोन्नति की मांग की जा रही है । पिछले पांच छह सालों से पिछड़े वर्गों, उपक्षितों तथा दलितों के [illegible] नियुक्ति एवं पदोन्नति में निर्धारित कोटा अपनाने की राजनीति को प्रश्रय दिया जा रहा है । अब समय आ गया है जब समाज और राष्ट्र के नीति निर्धारकों को इस अमानवीय पक्षपात पूर्ण प्रणाली को त्याग कर समान अवसर—सुविधाएं दीजिए, पर आरक्षण या सरक्षण देना ठीक न होगा, का सिद्धात अगीकार करना होगा ।

चिट्ठी पत्री

अल्पसंख्यकों के आयोगों का कोई औचित्य नहीं

महाराष्ट्र सरकार द्वारा अल्पसख्यक आयोग को खत्म करने के निश्चय की कई समाचार पत्रो ने सराहना की है । वस्तुत: केन्द्र और राज्यों मे इस प्रकार के अल्पसख्यक आयोगो का गठन धर्म निरपेक्ष वाद की मौलिक भावना को ही ठुकरा देता है, क्योंकि उसके माध्यम से एक खास पन्थ या मजहब मे आस्था रखने वाले एक वर्ग विशेष को विशिष्ट स्थिति दी जाती है ।

भारत का सविधान किसी भी विश्वास या मन्तव्य मानने वाले नागरिकों का ख्याल किए बिना सभी नागरिकों से समान व्यवहार का निर्देश देता है, ऐसी स्थिति मे देश के कल्याण मत्री द्वारा भारत के अल्पसंख्यको से पृथक व्यवहार करने की माग करना सविधान की दृष्टि से अनुचित है । राज्यो या केन्द्र मे अल्पसंख्यक आयोगो का बने रहना शायद राजनीतिक दृष्टि से ठीक कहा जाए, परन्तु इन आयोगो द्वारा राष्ट्र में पृथक पहचान बनाने की भावना को प्रोत्साहित करना अनुचित है । यद्यपि हम विविधता में एकता का नारा लगाते हैं, परन्तु ये आयोग विविधता मे और विविधता पैदा करते हैं । राष्ट्रीय नागरिको की जनसख्या को बहुसख्यक एवं अल्पसंख्यको मे बांटना एकदम अनुचित है । इसी के साथ इन अल्पसंख्यक आयोगों की सिफारिशो को कानूनी या सावैधानिक दृष्टि से बाध्य नही मानना है ।

रायसिंह सी ए/६० सी. डी. डी. ए. फ्लेट;
मुनीरिका नई दिल्ली-६७

एक उपलब्धि

पिछले दिनो समाचार पत्रों मे मध्य प्रदेश के इन्जीनियरिंग कालेजों मे किए जा रहे प्रवेश पर चिन्ता प्रकट की गई है । एक अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी ने पूर्व इन्जीनियरिंग परीक्षा के ९०० अको मे से केवल १ अक प्राप्त कर सुरक्षित इन्जीनियरिंग स्थान प्राप्त कर लिया है । यह कोई उपलब्धि नही । प्रत्युत गिरावट है । आरक्षण का लक्ष्य बुनियादी तौर पर अन्यायपूर्ण जात-पात से पूर्ण समाज मे सामाजिक न्याय की प्रतिष्ठा करना था । सामाजिक सामजस्य एव सन्तुलन का युग लाने के लिए न्यायोचित तर्कसगत आरक्षण उचित हो सकता है, परन्तु म०प्र० के उदाहरण से सामाजिक न्याय की सारी योजना ही अर्थहीन हो जाती है ।

वस्तुत दलितो, उपेक्षितो को शैक्षणिक एव प्रशिक्षण की अधिकतम सुविधाए देना एक बात है, परन्तु इ जीनियरिंग, चिकित्सा तथा प्रौद्योगिकी के कठिन जिम्मेदारी के क्षेत्र मे उन्हें अयोग्यता, अक्षमता के बावजूद लादना सर्वथा अनुचित है ।

—तरलोक सिंह
१/२५ रमेश नगर, नई दिल्ली

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अब प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें ।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें ।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए ।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रियाए आमंत्रित हैं ।

कृपया सभी पत्र-व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें ।

—सम्पादक

दुष्ट राजा के राज्य में प्रजा-सुख असम्भव

—आचार्य चाणक्य

आचार्य चाणक्य अद्भुत राजनीतिज्ञ थे। वह मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रधानमन्त्री थे। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ कौटिलीय अर्थशास्त्र का समापन करते हुए घोषित किया था—नन्द राजाओं जैसे दुष्ट राजवंश के हाथ में गई पृथिवी तथा शास्त्र व शास्त्रों को जिसने मुक्त किया उसी आचार्य (चाणक्य) के द्वारा इस ग्रन्थ का प्रणयन हुआ है। कौ० अ० १५ वें अध्याय का (१) १८० वां श्लोक इस प्रकार है—

येन शास्त्र च शस्त्र च नन्दराजगताच भू ।
अमर्षणे द्धृतान्याशु तेन शास्त्रमिदं कृतम् ॥

दुष्ट राजा की अपेक्षा राज्य न होना उत्तम

आचार्य चाणक्य ने परामर्श दिया—दुष्ट राजा के राज्य की अपेक्षा राज्य का न होना उत्तम है, इसी प्रकार धोखेबाज मित्र बनाने की अपेक्षा मित्र का न होना उत्तम है, कुशिष्य को शिष्य बनाने की अपेक्षा शिष्य का न होना श्रेष्ठ है और दुष्ट स्त्री को पत्नी बनाने की अपेक्षा पत्नी का न होना अच्छा है। मूल श्लोक का रस लें।

वरं न राज्य न कुराजराज्यं, वरं न मित्र न कुमित्र मित्रम् ।
वर न शिष्यो न कुशिष्य शिष्यो वर न दारा न कुदारयारा: ॥

एक अन्य श्लोक मे आचार्य चाणक्य परामर्श देते हैं—दुष्ट राजा के राज्य में प्रजा को सुख मिलना असम्भव है, धोखेबाज मित्र की मित्रता से आनन्द, दुष्ट स्त्री को पत्नी बनाने से घर में प्रीति और खोटे शिष्य को पढाने वाले को यश की प्राप्ति असम्भव है। सम्बन्धित श्लोक देखिए—

कुराजराज्येन कुत: प्रजासुख कुमित्रमित्रेण कुतोऽरित्र निर्वृत्ति.।
कुदारदारैश्च कुतो गृहे रति: कुशिष्यमध्यापत: कुतो यश: ॥

ठीक समय और शत्रु-मित्र का विचार करें

महामति चाणक्य ने सत्परामर्श दिया था, बुद्धिमान व्यक्ति या राष्ट्र आत्मचिन्तन करें। उन्हें भली प्रकार सोच विचार कर परीक्षा कर निर्णय करना चाहिए यह देख लेना चाहिए—कि कौन-सा समय है, मेरे सच्चे मित्र और वास्तविक शत्रु कौन है, कौन-सा देश मेरा सच्चा मित्र और असली शत्रु है ? मेरी आय और व्यय क्या है ? मैं कौन हूं, मेरी शक्ति क्या है प्रत्येक व्यक्ति और राष्ट्र को इन मौलिक बुनियादी बातों पर चिन्तन करना चाहिए। मूल श्लोक यह है—

क काल: कानि मित्राणि को देश: को व्ययागमौ ।
कश्चाहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्या मुहुर्मुहु ॥

आन्तरिक पशुता का अन्त करो पशु याग का यही अभिप्राय—डा० राजेश

देहरादून। "मनुष्य के पैदा होने से भी पहले जब उसे पैदा करने का विचार माता-पिता के मन में आया तब से लेकर मरणान्त-कर्म तक का ध्यान जिस ऋषि ने किया वह एक मात्र स्वामी दयानन्द सरस्वती ही थे। मनुष्य का निर्माण उस सकल्प से प्रभावित होता है जो सन्तान के इच्छुक माता पिता के मन में होता है।" ये शब्द गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद-विभाग के पूर्व प्राध्यापक डा० सत्यव्रत राजेश ने आर्य समाज धामावाला, देहरादून में प्रवचन करते हुए कहे।

प्राध्यापक जी ने कहा कि सन्ध्या का वास्तविक अर्थ तो है सम्यक् ध्यान। वाक्, प्राण, चक्षु; श्रोत्र आदि इन्द्रियों की शुद्धि की प्रार्थना जब हम मन्त्रों द्वारा करते है, तब ध्यान में आत्म-निरीक्षण करना चाहिए कि हमारे अन्दर बैठे हुए पशुत्व को हमने अब तक मारा या नहीं। पशु-याग का यही अभिप्राय है परन्तु नबोध लोगों ने स्वयं तो अन्दर के पशुओं को मारा नहीं, किन्तु बाहर के पशुओं का रक्त बहाना प्रारम्भ कर दिया। इन्द्रियों की शुद्धि के प्रसंग में उन्होंने कहा कि देखने की इन्द्रिय आंख है। कोई सिर पर जूते इसलिये खाता है कि उसने किसी लड़की से छेड़-छाड़ की, दूसरी ओर जब कोई भाई अपनी बहन से मिलने जाता है तो बहन भाई को देखकर दौड़कर आती है और उससे लिपट जाती है। यह दृष्टि का ही भेद है। पहले व्यक्ति ने अपनी दृष्टि को पवित्र नहीं बनाया, जबकि भाई-बहन की दृष्टि एक दूसरे के लिए अत्यन्त पवित्र है।

प्रवचन का उपसंहार करते वक्ता ने कहा कि परमेश्वर तो मार्ग-दर्शक है, चलना तो हमें ही पड़ेगा। भगवान की उपासना करने से पवित्र प्रेरणाएं मिलती हैं परन्तु उन प्रेरणाओं के अनुसार कर्म तो हमें करना पड़ेगा और कर्म का ही फल मिलता है।

देवव्रत शास्त्री

बोध-कथा

वह सत् सर्वत्र व्याप्त है

ऋषि आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु गुरुकुल से विद्याध्ययन कर जब घर वापस आया तब पिता को अनुभूति हुई कि बेटे मे कुछ घमण्ड आ गया है। पिता ने कहा बेटे, तुम समझते हो तुम सब जान गए हो, पर यह तो बताओ कि क्या तुमने वह विद्या पढ़ी है, जिसे पढकर सब कुछ पढ़ लिया जाता है।" श्वेतकेतु ने कहा—वह तो मैं नहीं जानता, आप मुझे बताइए।"

ऋषि आरुणि ने कहा—सौम्य, तुमने मिट्टी देखी है, इस मिट्टी के लौंदे से घड़ा, मटका, सुराही आदि बर्तन बनते हैं, इसी मिट्टी से हाथी, घोड़ा, तोता; कबूतर, राजा, रानी, बिल्ली आदि के खिलौने बन सकते हैं, सबके नाम अलग, पर सबके चेहरे अलग। ये मिट्टी के पात्र और पदार्थ पानी मे डालते ही गल जाते हैं। इसी प्रकार सोने, चांदी, लोहे, पीतल आदि धातुओं से लोटा, गिलास, कलश; थाली, बाजबच के गले के हार आदि पदार्थ बन सकते हैं। बर्तनों के नाम चाहे कुछ हों, उनके रूप पृथक् हों, पर उनमे आन्तरिक सत्य मिट्टी का है, इसी तरह धातुओं से बने पदार्थों मे धातु ही सत्य है। इसी प्रकार सारी प्रजा सत् से ही बनी है। यह सम्पूर्ण अणिमा ही जगत की आत्मा है। वह सत्य है। सारे खनिज पदार्थ, सारी वनस्पतियां, सारे पशु-पक्षी एव मानव प्राणी उसी तत्व से बने हैं।

बात कुछ गहरी थी, श्वेतकेतु ने कहा—मुझे ठीक से समझाइए ? आरुणि ने तरह-तरह से श्वेतकेतु को समझाया। ऋषि ने कहा—"सामने के वटवृक्ष का एक फल ले आ।" पिता ने फल को तोड़ने के लिए कहा। तोड़ने पर पिता ने पूछा—"क्या दीखा।" अणु जैसे छोटे-छोटे दाने हैं।" पिता ने कहा-इन दानों को तोड़। तोड़ने पर पिता ने पूछा-कुछ दिखाई दिया ? "इसमे तो कुछ दिखाई नहीं दिया। पिता ने समझाया-जो सूक्ष्य वस्तु दिखाई नही देती, उस अणिमा का ही यह विराट वटवृक्ष है, वही सत् है।

पुत्र ने पूछा-"यह कैसे व्याप्त है ?" पिता ने पुत्र को नमक की एक डली लाकर पानी मे डालने के लिए कहा। अगले दिन सुबह पिता ने पानी के बर्तन से वह डली निकालने के लिए कहा। श्वेतकेतु ने बर्तन में हाथ डाला, डली खोजी पर वह नहीं मिली। श्वेतकेतु बोला-वह नमक की डली तो नही मिल रही। पिता ने कहा कि इस बरतन का पानी अलग-अलग स्थानो से निकाल कर चख कर देखो। पुत्र बोला सब जगह नमकीन स्वाद है।

ऋषि आरुणि ने कहा-जिस तरह नमक की डली दिखाई नहीं देती, परन्तु वह पानी मे सब जगह व्याप्त है, उसी तरह वह सत् भी सब जगह व्याप्त है, वही आत्मा है, वही तुम हो।

—नरेन्द्र

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल, मुरादाबाद द्वारा २७ मई ९५ से ३१ मई ९५ तक आर्यसमाज मन्दिर स्टेशन रोड मुरादाबाद के प्रांगण मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ का विशाल आयोजन किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्राचार्या डा० प्रज्ञादेवी जी थीं। वेद पाठ उसी विद्यालय की छात्राओं ने किया। इस अवसर पर श्री योगेश दत्त आर्य के मधुर भजनोपदेश भी हुए।

—यशपाल आर्यबन्धु

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

१. नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२. नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
३. नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३.००
४. नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४.००
५. नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५.००
६. धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५.००
७. फ्लैश आफ ट्रूथ	(डा० सत्यकाम वर्मा)	२.००
८. सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	" "	२.००
९. एनोटामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०. आर्यों का आदि देश	" "	२ ००
११. प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	" "	२५.००
१२. दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	" "	२.००
१३. चत्वारो वै वेदा:	" "	५.००
१४. द्वैतसिद्धि	" "	५.००
१५. दैनिक यज्ञ पद्धति	(दि० आ० प्र० सभा)	४.००
१६. निकष	(डा० धर्मपाल)	१०.००
१७. भारतीय संस्कृति के मूलाधार चार पुरुषार्थ	(डा० सुरेन्द्र देव शास्त्री)	२०.००
१८. महर्षि दयानन्द की जीवनी	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
१९. पञ्चमयकोष	(महात्मा वैद्य भिक्षु)	२०.००
२०. वैदिक योग	(" " ")	५.००
२१. कर्म फल ईश्वराधीन	(श्री ओम्प्रकाश आर्य)	५.००
२२. यु गसन्धर्म	(डा० धर्मपाल)	५.००
२३. आचार्य रामदेव आदर्श.द ज्योति स्तम्भ	(" ")	१०.००
२४. आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	१०.००
२५. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
२६. हंसता चल, हंसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	१.५०
२७. दयानन्द एण्ड दा वैदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२८. पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२९. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
३०. योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
३१. आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकड़ा
३२. महर्षि दयानन्द की विशेषताएं (टैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
३३. महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन् १९८३)		५.००
३४. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १९८५		५ ००
३५. महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका १९८५		१०.००
३६. महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषांक		१०.००
३७. ऋषिबोधांक		१०.००
३८. योगीराज श्रीकृष्ण विशेषांक		१०.००
४०. हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती स्मृति अक	"	१०.००
४१. धर्मवीर पंडित लेखराम सयुक्ताक	"	५.००
४२. स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती	"	२५.००
४३. प० नाथूराम शंकर शर्मा 'शकर'	"	२५.००
४४. श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	"	५.००
४५. पं० चमूपति सयुक्तांक	"	५,००
४६. स्वामी रामेश्वर नन्द सरस्वती	"	५.००
४७, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	"	५.००
४८. पं० गणपति शर्मा	"	५.००
४९. पं० रामचन्द्र देहलवी	"	५.००

नोट : उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एव नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान : **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

वर्तनी शुद्धता प्रतियोगिता में विजयी शिक्षक पुरस्कृत

हिन्दी शुद्ध वर्तनी चेतना अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्तनी शुद्धता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी द्वारा मंडलीय शिक्षा एव प्रशिक्षण संस्थान, दरियागज के सहयोग से आयोजित एक हिन्दी वर्तनी शुद्धता प्रतियोगिता में विजयी शिक्षकों को ८ जून के समारोह मे पुरस्कृत किया गया। दिल्ली सरकार के भाषा एव शिक्षा सचिव श्री एस० रघुनाथन ने पुरस्कार वितरित किये। "ओपन स्कूल" के अध्यक्ष श्री एम० मुखोपाध्याय ने समारोह की अध्यक्षता की।

मुख्य अध्यापको के वर्ग ने सत्भावा आर्य कन्या स्कूल की श्रीमती सन्तोष पुरी को प्रथम, न० नि० प्रा० विद्यालय, आनन्द पर्वत के श्री कालीचरण को द्वितीय तथा न० नि० प्रा० विद्यालय, गोपालपुर के श्री रणवीर सिंह को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

हर बसर के पेट में कुरसी फुदक रही है

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

जिधर देखो उधर प्रगति की राह रुक रही है;
हर बसर के पेट में कुरसी फुदक रही है।
बाहर उजलापन लिये हैं नीयत के खोटे बड़े,
मुख मे है राम बगल मे छुरी दुबक रही है।
कुरसी फुदक रही है।१।

चाहते हैं बिना पंख के ऊंची उड़ान भरना।
मेढकी के पैर मे टहनाल ठुक रही है।
कुरसी फुदक रही है।२।

पैंदी बगैर लोटा जाता हैं लुढ़क अकसर,
है अचभा पैंदी वाली लुटिया लुढक रही है।
कुरसी फुदक रही है।३।

प्रकाशवान पथ पर चलना नही सुहाता।
है जा रहे है जहा पर अ धेरी झुक रही है।
कुरसी फुदक रही है।४।

वक्त की धार को समझें नहीं कोई क्यू कर,
चूल्हा पड़ा है ठण्डा हाडी खदक रही है।
कुरसी फुदक रही है।५।

स्वर्ग और नरक की वास्तविकता को समझें

—देवदत्त बाली

देहरादून। आर्यसमाज धामावाला देहरादून द्वारा ग्राम सुन्दरवाला में आयोजित पारिवारिक सत्संग में यज्ञ के अनन्तर प्रवचन करते हुए आर्य उप-प्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रधान प० देवदत्त बाली ने कहा कि स्वर्ग और नरक के बारे में लोगों ने बड़ी अलंकारिक कल्पनाएं कर रखी हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि स्वर्ग और नरक में स्थान की दूरी नहीं है। अतिशय सुख की अवस्था ही नरक है। जहां हम सब रहते है, वहीं लोगों को स्वर्ग भोगते हुए देखते हैं और नरक भोगते हुए भी।

यज्ञ को स्वर्ग-प्राप्ति का साधन बताया गया है तो यह वैज्ञानिक तथा युक्ति-युक्त कथन है। उन्होंने बताया कि यज्ञ का अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण और दान। परन्तु हम यह भी भूल चुके हैं कि देव या देवी किसे कहते हैं और उनकी पूजा कैसे करनी चाहिए। श्री राम के जीवन से हम सीख सकते हैं कि देव-देवी कौन है और उनकी पूजा कैसे करनी चाहिए।

दयानन्द-दर्शन की प्रासंगिकता

देहरादून २८ मई। शनिवार २७ मई को सहारनपुर में डा० हर्षवर्धन शर्मा की पुस्तक "स्वाधीनता संग्राम के सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती" का विमोचन उत्तर प्रदेश सरकार के मन्त्री मो० आजम खां ने किया। इस अवसर पर "राष्ट्रीय जन-कल्याण मंच भारत" की ओर से आयोजित संगोष्ठी में श्री देवदत्त बाली ने "दयानन्द दर्शन की प्रासंगिकता" पर व्याख्यान दिया। आपने कहा कि नास्तिकता के प्रचार के कारण ही वाम मार्ग का प्रचार होकर समाज में सदाचार का दीवाला निकल गया था। फिर उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप हम दूसरी सीमा पर पहुंच गए और कहने लगे—"ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या।" ब्रह्म तो सत्य है ही, जगत भी मिथ्या नहीं है। महर्षि दयानन्द ने ब्रह्म, जीवात्माओं और प्रकृति को शाश्वत सत्य बताकर हमें सत्य के धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया।

एक ही जाति-मानवजाति

साम्प्रदायिकता की समस्या का समाधान भी दयानन्द ने प्रस्तुत किया जब उन्होंने कहा कि हमारी जाति एक ही है—मानव जाति। जन्म से सब शूद्र पैदा होते हैं। उनमें से विद्या और योग्यता प्राप्त करके जो अपना जीवन व्रत अज्ञान को समाप्त करना बना लेता है वह ब्राह्मण है चाहे किसी भी देश में या किसी भी समाज में पैदा हुआ हो। और जो अपने जीवन का मिशन अन्याय को नाश करना बना लेता है, वह क्षत्रिय कहलाएगा। जिसने अपना लक्ष्य अभावों से जनता को बचाना बना लिया हो, वह वैश्य कहलाने का अधिकारी है। जिसने इन तीनों में से किसी भी व्रत को नहीं अपनाया, वही शूद्र रह जाएगा। जीवन के उत्थान के लिए दयानन्द का कर्म-सिद्धांत कहता है कि अच्छा या बुरा जो कर्म किया है उसका फल कर्ता को अवश्य भोगना पड़ेगा। इससे बचाने वाला न कोई तीर्थ है, न कोई सन्त या पैगम्बर, और एक बात और कि किसी दूसरे के कर्म का फल किसी को नहीं मिल सकता। जो करेगा वही फल पाएगा।

सजय कुमार,

छात्रवृत्तियों के लिए आवेदन-पत्र

सत्र-जुलाई १९९५ से अप्रैल १९९६

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नए सत्र के लिए गुरुकुलों, स्कूलों, महाविद्यालयों, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयों और अनुसंधान संस्थानो के सुयोग्य और सुपात्र छात्र/छात्राओं और स्पर्द्धात्मक परीक्षाओ के परीक्षार्थियो और परीक्षार्थिणियों को छात्रवृत्तियां देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है।

इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मंगवाने के लिए एक टिकट लगा लिफाफा अपना पता लिखकर ट्रस्ट के आदरी सचिव के नाम निम्नलिखित पते पर भेजे।

जोगेन्द्रनाथ उप्पल, आदरी सचिव
श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, सी-३२ अमर कालोनी,
लाजपत नगर नई दिल्ली-२४

ईशस्तुति से ही दुःख का निवारण

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री
श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य को पुत्री-शोक

देहरादून १६ जून। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के मन्त्री एव यशस्वी आर्य नेता धर्मेन्द्र सिंह आर्य की पुत्री सुनीता आर्या का लम्बी बीमारी के पश्चात १३ जून को देहरादून मे निधन हो गया। वह हृदय रोग से पीड़ित थी। १४ जून को वैदिक रीति से अंतिम संस्कार सम्पन्न किया गया।

१६ जून को श्री आर्य निवास '१२/२, भगवानदास क्वाटर्स, देहरादून २४८००१, पर एक शोक सभा एवं शांति यज्ञ सम्पन्न हुए। आर्य विद्वान प्रो० अनूपसिंह ने आत्मा के स्वरूप, कर्मानुसार जाति, आयु व भोग का मिलना, मृत्युरूपा दुःख से बचने के लिए ईशस्तुति प्रार्थना, उपासना के मार्ग का विवेचन किया, एवं दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी।

—निर्मला आर्य

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N D.P.S O. on 29,30 6-1995 Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/95
दि.ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक २ जुलाई १९९५

चुनाव समाचार

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग—प्रधान श्री जसवन्तराय साहो, उपप्रधान-श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री जगदीश कोछड मन्त्री श्री रमेश डावर, उपमन्त्री-श्री राकेश डावर, उपमन्त्री-श्री राकेश सखूजा, कोषाध्यक्ष-श्री सुरेन्द्र बत्रा, प्रचारमंत्री-श्री बलबीर पबरेजा, पुस्तकलयाध्यक्षा-श्रीमती विमला गुलाटी। अन्तरग सदस्य—सर्वश्री वीरेन्द्र कोछड, दलीप चड्ढा, नरेन्द्र सचदेवा, श्री ओंकारनाथ शर्मा, ओमप्रकाश बेहड़, दिनेश तनेजा, श्रीमती विद्यावती बत्रा और श्रीमती सुशीला ढा।

आर्यसमाज बाकनेर (दिल्ली-४०) की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधि – १ श्री मागेराम आर्य २ डा० महावीर दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के लिए प्रतिनिधि – १ श्री मेहरलाल पवार २ श्री हवासिंह।

आर्यसमाज सोहनगंज, दिल्ली—प्रधान-श्री ओमप्रकाश गर्ग, उपप्रधान-श्री माधोप्रसाद बिन्दल एवं श्री दुर्गाप्रसाद गौड, मन्त्री श्री नारायणदास मित्तल, उपमंत्री श्री शिवशंकर राठौर, श्री हरिचन्द कालरा, लेखापरीक्षक श्री दुर्गाप्रसाद गौड, कोषाध्यक्ष-श्री विनय भाटिया।

आर्यसमाज देवनगर, नई दिल्ली—प्रधान-श्री रघुवरदयाल, उपप्रधान-श्री टेकचन्द दीवान, डा० वी० देव, मन्त्री-श्री एन० एस० देसवाल, उपमन्त्री-श्री राकेश वेदी, कोषाध्यक्ष-श्री अशोक कुमार गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष-श्री पी. एल. आर्य।

आर्यसमाज सिलीगुड़ी—प्रधान श्री मामनचन्द गुप्त, उपाध्यक्ष-सूर्यप्रकाश बोहरा, जयदयाल नकीपुरिया, सूरजकुमार जायसवाल, मन्त्री-श्री मोहनचन्द गुप्ता, उपमंत्री-नागेश्वर चौधरी, कोषाध्यक्ष-सुभाषचन्द नकीपुरिया, प्रचारमंत्री-राजेन्द्र प्रसाद।

आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली—प्रधान-श्री लखीराम कटारिया, उपप्रधान-श्री अर्जुनदेव, राजेन्द्रपाल गुप्त, मन्त्री डा० पूर्णसिंह डबास, उपमंत्री-श्री वीरपाल सिंह, प्रचार मंत्री-श्री चन्द्रभान सोतेया, कोषाध्यक्ष-श्री मनमोहन आहूजा; पुस्तकाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश गुगलानी।

वेदों में आयुर्वेद ग्रन्थ पर डा० कपिलदेव द्विवेदी पुरस्कृत

ज्ञानपुर (भदोही) संस्कृत एवं हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् 'पद्मश्री' डा० कपिलदेव द्विवेदी को उनके ग्रंथ 'वेदों में आयुर्वेद' पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने ११ हजार (ग्यारह हजार रुपए) का बीरबल पुरस्कार देने की घोषणा की है। यह पुरस्कार हिन्दी दिवस पर लखनऊ में एक समारोह में दिया जाएगा।

डा० द्विवेदी के वेद, संस्कृत साहित्य, व्याकरण तथा भाषा विज्ञान आदि पर ७० से अधिक उच्चस्तरीय ग्रन्थ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

सेवा में—

—नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक ३५ रविवार, ९ जुलाई १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द : १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

वेदों पर दूरदर्शन के प्रसारण का विरोध

प्रसारण भारतीय मान्यताओं के आधार पर हो : प्रस्तावित धारावाहिक वैदिक धर्म आस्थाओं व जनमत का विरोधी है : दिल्ली के वैदिक विद्वानों का आह्वान

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम की अध्यक्षता मे शनिवार १ जुलाई, १९९५ को सन्ध्या के समय आर्य समाज हनुमान रोड मे आयोजित वैदिक विद्वानो की एक विशेष सभा ने सर्वसम्मति से दो महत्वपूर्ण निर्णय किए :

पहले निर्णय के अनुसार सार्वदेशिक सभा का एक शिष्ट मण्डल दूरदर्शन टी०वी० के अधिकारी मण्डल से तुरन्त सम्पर्क कर वेदों ('द वेदाज') के बारे में टी०वी० या दूरदर्शन से प्रसारित किए जाने वाले सीरियलों के बारे मे उन्हें आर्य जगत की आपत्तियों और आशकाओ की तुरन्त सूचना दे। वेद ईश्वरीय ज्ञान की प्राचीनतम मानवीय संहिता हैं, उनके बारे मे कथाओ और भ्रान्त विवरणों के आधार पर सीरियल देना उचित नहीं है। वेद प्रामाणिक ग्रन्थ हैं, उनकी महत्ता अंगीकार कर टी०वी० या दूरदर्शन पर कोई सीरियल दिया जाए तो उसकी प्रस्तुति शास्त्रोक्त और प्रामाणिक होनी चाहिए।

दूसरे निर्णय के अनुसार आर्य सार्वदेशिक सभा का एक पाच सदस्यीय शिष्टमण्डल यथाशीघ्र बम्बई भेजा जाए। इस शिष्टमण्डल के सयोजक प० महेश विद्यालंकार होंगे और उसमे ऐसे विद्वान व प्रतिष्ठित व्यक्ति हो जो प्रस्तावित टी०वी० सीरियल के बारे में आर्य जगत का दृष्टिकोण प्रस्तावित 'वेदाज' सीरियल के निर्माता खुल्ला परिवार और पटकथा व संवाद लेखक श्री भूषण वनमाली से तुरन्त सम्पर्क कर उनके सम्मुख रख कर उसमे आवश्यक परिवर्तन व सुधार के लिए प्रयत्न करे।

दोनों ही स्थानों पर सम्पर्क कर आर्य जगत् की ओर से यह चेतावनी दे दी जाए कि प्रस्तावित 'वेदाज' सीरियल को वेदो और वैदिक मान्यताओ के सन्दर्भ में सशोधित किया जाए, अन्यथा इस सम्बन्ध में देश-विदेशो मे आर्य जगत् के संगठित विरोध-प्रतिरोध की आशका है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सूर्यदेव जी ने विद्वद् सभा का संचालन किया, सभा मन्त्री श्री प० वेदव्रत जी शर्मा ने आवश्यक सूचनाएं दी। इस सभा मे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने प्रस्तावित सीरियल के प्रसारण से होने वाले खतरों के विषय मे सावधान किया। देवभिक्षु दिवस्पुत्र भारती ने सूचना दी कि प्रस्तावित टी.वी. सीरियल पश्चिमी दृष्टि से लिखा गया है। सभा मे अनेक आर्य विद्वान् एव विदुषिया उपस्थित थे, जिन्होने चर्चा में भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि दूरदर्शन या टी वी ने 'द वेदाज' शीर्षक से १०४ भागों या एपीसोड के सीरियल के प्रसारित करने की सूचना दी है। इस टी. वी सीरियल का निर्माण बम्बई का खुल्ला परिवार कर रहा है। प्रस्तावित सीरियल 'वेदाज' के पटकथा और सवाद लेखक बम्बई के श्री भूषण वनमाली हैं। श्री वनमाली के अनुसार वेद और पुराण चार हजार ई पू के हैं। इस धारावाहिक में वेदों, पुराणों और ३६ उपनिषदो के प्रमुख व्यक्तियो, देवी-देवताओं, ऋषियों, मुनियों, सूर्यवंशी, चन्द्रवशी शासकों के उपाख्यानो को स्थान दिया जायेगा। वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं, उनमे लौकिक इतिहास नहीं है, राजाओ-रानियो की कथाए नही हैं, वेदो मे एकेश्वरवाद का समर्थन है, परमात्मा की विभिन्न शक्तियों तथा गुणो को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है। वेदो की व्याख्या निरुक्त ब्राह्मण ग्रन्थो के सहारे सम्भव है, उनकी व्याख्या के लिए पुराणो तथा दूसरे ग्रन्थों का सहारा ठीक नहीं। उसका गलत काल-गणना-कपोलकल्पित विवरणों पर आधारित प्रसारण सर्वथा अनुचित व त्याज्य है।

बिहार राज्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान से अनुरोध

उत्तर बिहार आर्य सभा के तत्वावधान में विभिन्न आर्यसमाजो के अधिकारियो एव कार्यकर्ताओ की एक आवश्यक बैठक समस्तीपुर मे दिनाक . ६-४-९५ को हुई। जिसमे "बिहार के आर्यसमाजो की वर्तमान परिस्थिति एवं इसकी प्रगति" पर विचार-विमर्श किया गया। कई आर्यसमाजो की अचल सम्पत्तियों को अन्य लोगो ने कब्जा कर लिया है तथा कई जगहो पर कब्जा करने का प्रयास चल रहा है। प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम नही के बराबर हो रहा है इस स्थिति का मुख्य कारण बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का निष्क्रिय होना है। ज्ञातव्य है कि पिछले कई सत्रों से बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा मे निष्पक्ष चुनाव नही हुए हैं।

अत: बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए सर्वसम्मति से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सुझाव देने हेतु ये निर्णय किये गये—

१ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की न्यायोप सभा की देख-रेख मे यह चुनाव हो।

२ सभी आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित सूची के अनुसार सम्बन्धित आर्यसमाजो को निबन्धित डाक प्रतिनिधि फार्म भेजे जाएं।

३. सभी प्रतिनिधियो का फोटो भी प्रतिनिधि फार्म के साथ होना चाहिए। इसकी तीन प्रतिलिपिया बनाई जाए। एक स्थानीय आर्यसमाज के कार्यालय मे, दूसरा प्रति बि०रा०आ०प्र० सभा के कार्यालय में एव तीसरी प्रतिनिधियों के पास होनी चाहिए।

४ चुनाव मे भाग लेने वाले प्रतिनिधि अधिकतर आर्यसमाजी नही होते। अत उनकी पहचान के लिए यथायोग्य प्रबन्ध होना चाहिए। जाच-पड़ताल के पश्चात ऐसे प्रतिनिधि जो आर्यसमाजी नही हो उन्हे चुनाव मे भाग नही लेने देना चाहिए।

उत्तर बिहार आर्य सभा के प्रधान पन्नालाल आर्य, मन्त्री ओमप्रकाश ब्रह्मचारी, सगठन मत्री-श्री नवलकिशोर शास्त्री, दरभगा आर्यसमाज के प्रधान वेदव्रत वानप्रस्थी, मन्त्री-कमलेश दिव्यदर्शी, समस्तीपुर जिला आर्यसभा के प्रधान रामप्रसाद आर्य ने सार्वदेशिक सभा के नाम पत्र भेजा है।

प्रधान सम्पादक - सूर्यदेव सम्पादक – नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

जापान और थाईलैंड में भारतीय संस्कृति

द० पू० एशिया में आर्यसमाज : डा० श्यामसिंह शशि का मूल्यांकन

यायावर समाजशास्त्री, डा० श्यामसिंह 'शशि' मई-जून की अपनी जापान तथा थाईलैंड की शोध-यात्रा के दौरान टोकियो मे आयोजित जापानी अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य आदान-प्रदान काग्रेस के दूसरे सम्मेलन मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्हे "द्वितीय युद्धोत्तर हिन्दी काव्य के बदलते स्वरूप" विषय पर हिन्दी लेखक के रूप मे व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया गया था। दूसरे भारतीय विद्वान बांग्ला भाषा के प्राध्यापक आशिष सान्याल थे। सम्मेलन मे अनेक देशो के लगभग ३०० विद्वान उपस्थित थे। इस अवसर पर डा० शशि ने विश्व-साहित्य के परिप्रेक्ष्य मे हिन्दी काव्य के समाजशास्त्रीय मूल्याकन की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार समाज-सापेक्ष सजन ही उत्कृष्ट साहित्य है। डा० शशि का भाषण जापानी तथा अन्य भाषाओ में भी अनूदित किया गया।

उन्होने जापानी समाज के वर्ग तथा प्रजाति-सरचना के अध्ययन मे पाया कि कुछ समाजों में भारत की जाति-व्यवस्था की छाया दिखाई पड़ती है, हालाकि उनमे अस्पृश्यकता कही नही है। यहां उन्हे कुछ यायावर समाज तो मिले, किन्तु रोमा जिप्सी नही। वह महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के कार्यकलापों से जुड़े स्थलों पर भी गए तथा योकोहामा व अन्य स्थान देखे।

डा० शशि ने थाईलैंड की यात्रा के दौरान देखा कि वहा का समाज कई दृष्टियों से भारत के समान है। वहां भारत तथा अन्य देशों के अप्रवासी बड़ी सख्या में व्यापार तथा दूसरे कार्यों मे लगे हैं। बैंकाक की आर्य समाज के अध्यक्ष श्री राम पलट पाडे तथा भारत-थाई सस्कृति-संगठन के महामन्त्री श्री कृष्ण मेट्टागुन (माटा जी) तथा अन्य संस्थाओं के अधिकारियों श्री त्रिपाठी, श्रीमती रत्ना तालुकदार, प्रो० तुगनाथ दुबे, श्री अमर एन० सिंह आदि ने एक गोष्ठी मे डा० शशि का गर्म जोशी से स्वागत किया तथा पुन: आने के लिए आमन्त्रित किया। डा० शशि ने थाई की प्रोफेसर-श्रीमती श्रेसु राग फूल द्रव्य तथा डा० चिरापत प्रपढविद्या से भी थाई समाज के बारे मे विस्तृत चर्चा की। उन्होंने यहां की राम-सस्कृति तथा बुनकरो को भी अपने अध्ययन का विषय बनाया ओर अनेक नव तथ्य लेकर भारत लौटे। डा० शशि को जापान तथा थाईलैंड मे विद्वानो ने यत्र-तत्र सम्मानित किया।

जापान के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त विद्वान काजुओ आजुमा के अहर्निश प्रयास से अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य आदान-प्रदान सम्मेलन बडी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। भाग लेने वालो मे अन्य विद्वानों के नाम हैं डा० सेनजी कुरोई, प्रो० तोशियो होराओका, प्रो० तेजी सकता, प्रो० तोशियो तनका (जापान), श्री कबीर चौधरी तथा अहमद रफीक (बांग्ला देश) आदि। डा० शशि के भाषण का अनुवाद टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० तोशियो तनका ने किया। रेडियो जापान पर डा० शशि के साक्षात्कार प्रसारित किए गए।

डा० शशि ने स्वदेश आने पर घोषणा की जापानी काग्रेस के सहयोग से रिसर्च फाउंडेशन दिल्ली तथा आल इण्डिया राइटर्स एसोसिऐशन कलकत्ता के सयुक्त तत्वावधान मे इस वर्ष नवम्बर मे एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है, जिसमे साहित्य, सस्कृति, धर्म, रोमा-जनजाति साहित्य, बाल साहित्य पर सगोष्टिया आयोजित की जाएंगी।

डा० शशि ने आर्य समाज बैंकाक के अध्यक्ष श्री पाडे से विस्तृत चर्चा करने के बाद पाया कि सार्वदेशिक सभा से उसका कोई सम्पर्क नही है। उन्हे पत्रो के उत्तर तक नही मिलते। उन्होंने अनेक समस्याओ से डा० शशि को परिचित कराया।

डा० शशि का कहना है कि यदि सार्वदेशिक सभा इस सम्बन्ध मे जागरूक हो तो महर्षि दयानन्द का 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न सार्थक हो सकता है। भारत मे तो वैसे ही सत्ता और धन के लिए समाजो मे फूट पड़ी है और गुरुकुलों, महाविद्यालयो की स्थिति ठीक नही है। डा० शशि ने कहा कि समाज में कोई ऐसा निष्काम नेतृत्व उभरना चाहिए जो पूरे तन्त्र को जोड़ सके।

डा० शशि को इस बात का दु:ख है कि आर्य समाजों में पुरोहितो का भी शोषण होता है। उन्हे न तो उचित मानदेय मिलता है और नही समाज के प्रधान या मन्त्री उन्हें समुचित सम्मान देते हैं। दूसरी ओर छद्मबुद्धि-जीवी येन-केन प्रकारेण स्वामी दयानन्द का नाम भुनाने मे लगे हैं। लगता है विद्वानों के लिए अब आर्य प्रतिनिधि व सार्वदेशिक सभा मे पहले जैसे अवसर नही रह गए है। डा० शशि ने उक्त उद्गार एक सस्मरण गोष्ठी में अभिव्यक्त किए।

आदर्श विवाह

दिनाक १३ जून ९५ ई० को पं० प्रभाकर भारती बी. काम विद्यावाचस्पति सुपुत्र श्री निरंजन कुमार राय का शुभ विवाह सस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से कु० सुमन देवी सुपुत्री श्री अमूल्य राय के साथ पं० नरेशचन्द्र शास्त्री कांधपुर वाले के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। विवाह में आर्य समाज सोहागंज तथा बागान बाड़ी के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे तथा नवदम्पत्ति को सभी ने आशीर्वाद देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

देश में संस्कृत पढ़ना अनिवार्य हो

—सूर्यकान्त बाली

इस देश का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या कहेंगे कि ये बताने के लिए कि संस्कृत पढ़ना भारत की विरासत की रक्षा के लिए जरूरी है, उच्चतम न्यायालय को हरकत मे आना पड़ता है। यह समझने के लिए कि संस्कृत इस देश की तमाम भाषाओं की जननी है और उसके बिना कोई भी भाषा वाक्य रचना अथवा शब्द भंडार की दृष्टि से समृद्ध नही हो सकती, उच्चतम न्यायालय को एक फैसला सुनाना पड़ता है। लोगों के दिमाग मे यह दर्ज करवाने के लिये अगर इस देश के दर्शन, साहित्य और तमाम पुराने ज्ञान-विज्ञान को सुरक्षित रखना है, तो उसके लिए संस्कृत भाषा पढ़ा जाना निहायत जरूरी है। उच्चतम न्यायालय को एक फैसला सुनाना पड़ता है। जिस बात को सारी दुनिया न केवल जानती है, बल्कि मान चुकी है, उस बात को इस देश के लोगों को समझाने के लिए देश की सबसे बड़ी अदालत को एक मुकदमे के फैसले के दौरान ये तमाम तर्क दोहराने पड़ते हैं। पर शायद हम थोड़ी गलती कर रहे हैं, क्योंकि इस देश के लोगो को भी यह सब भली भांति मालूम ही नहीं है, बल्कि वे मानते भी हैं कि संस्कृत इस देश की सबसे पुरानी भाषा है, देश का तमाम प्राचीन ज्ञान इसी की मार्फत हजारों सालो तक व्यक्त होता रहा है, देश का तमाम प्राचीन विज्ञान और शोध इसमे सुरक्षित है और अगर हमें भारत के व्यक्तित्व को बचाए और बनाए रखना है, तो हमे संस्कृत पढ़नी ही चाहिए। परन्तु इस देश का दुर्भाग्य देखिए कि लोगो की प्रतिनिधि कही जाने वाली सरकार को ये सब बातें नही मालूम और उसने अपनी किसी धर्मनिरपेक्ष झोंक मे आकर एक मूर्खता भरा फैसला कर लिया और संस्कृत को स्कूली पाठ्यक्रम मे एक ऐसा घटिया दर्जा दे दिया कि कोई छात्र चाहते हुए भी संस्कृत पढ़ने की जुर्रत न कर सके। और जब इसके खिलाफ उच्चतम न्यायालय में मुकदमा लड़ा गया, तो जानते हैं आपकी सरकार की दलीलें क्या थी? यह कि संस्कृत पढ़ने से देश की धर्मनिरपेक्ष छवि को नुकसान होगा, कि अगर संस्कृत पढ़ाई जायेगी, तो अरबी-फारसी पढ़ाना भी अनिवार्य हो जायेगा, कि अगर संस्कृत को पढ़ाने की माग स्वीकार कर ली गयी, तो फ्रेंच, जर्मन और लेपचा जैसी भाषाओ को पढ़ने की माग भी उठ खड़ी होगी, और सरकार इतनी सारी भाषाओं को पढ़ाने की व्यवस्था भला कैसे कर पायेगी?

यानी सरकार ऐसा मान कर चलती है कि अगर इस देश मे वेद संस्कृत में लिखे गये तो पुराण फारसी मे और रामायण-महाभारत अरबी मे लिखे गये। अगर बौद्ध-जैन दर्शन पाली प्राकृत के अलावा संस्कृत मे व्यक्त हुए, तो वेदान्त और सांख्य फ्रेंच और जर्मन मे लिखे गये। यदि कालिदास ने अपना साहित्य संस्कृत मे लिखा, तो हमारे जातक ग्रंथ और समयसार ग्रीक और लेटिन मे लिखे गये। यानी सरकार को पता ही नही कि इस देश की संस्कृत पढ़ाया जाना अनिवार्य है और जिन कारणो से उसे पढ़ाया जाना अनिवार्य है, उन कारणो से ग्रीक या लेटिन अरबी या फारसी का पढ़ाया जाना कतई जरूरी नही है। इन भाषाओ का आदर इससे कम नही होगा। परन्तु इन भाषाओ की जरूरत इस देश मे उतनी ही है जितनी किसी विदेशी क्लासिकल भाषा की हो सकती है। जो सरकार इस देश की मिट्टी में से पनपी और पली-पुसी संस्कृत को पढ़ाये जाने से छात्रो को इसलिए रोकती है कि यदि संस्कृत पढ़ायी गयी तो अरबी और फारसी भी पढ़ायी जायेगी और संस्कृत पढ़ाये जाने से धर्मनिरपेक्षता को नुकसान पहुचने के अंदेशे मे डूब जाती है, तो हमारा निवेदन यह है कि साम्प्रदायिकता की पोषक इससे बड़ी कोई दूसरी सरकार हो नही सकती।

ईसाई युवती वैदिक धर्म में प्रविष्ट

आर्यसमाज रामपुरा कोटा द्वारा दिनांक २३-५-९५ को एक ईसाई युवती सुश्री प्रिना पिल्लई आत्मजा श्री एन० गोपालन पिल्लई के शुद्धकर वैदिक धर्म मे प्रविष्ट कराया गया। शुद्धि के पश्चात् इनका नाम प्रिया मेहरा रखा गया, और इनका विवाह श्री अशोक मेहरा एस-आई-२१ महावीर नगर तृतीय के साथ सम्पन्न हुआ।

संस्कृत के प्रति हमारा कर्तव्य

४-१०-९४ के अपने निर्णय मे सर्वोच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीशों ने संस्कृत को भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शन-धर्म, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का आधार बताते हुए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को निर्देश दिया है कि त्रिभाषा सूत्र मे संस्कृत को सम्मिलित करने के लिए उचित परिवर्तन करे।

संस्कृत वेद, उपनिषद, पुराण, सांख्य-योगादि दर्शन, रामायण महाभारत गीता आदि हमारे उत्कृष्ट साहित्य को भाषा है जिससे सारे संसार मे सदैव भारत का मस्तक ऊंचा रहा है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि :—

१. हम विद्यालयों मे अपने बच्चो को अनिवार्य रूप से संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दें।

२. मन्दिरों मे संस्कृत की निःशुल्क कक्षाए लगाए।

३. दिल्ली सरकार से अनुरोध करें कि इस समय जो त्रिभाषा-सूत्र आठवी कक्षा तक चल रहा है उसे ही दसवी कक्षा तक बढ़ायें।

४ ऐसा ही अनुरोध केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से भी करें।

५. हम उपर्युक्त दोनों संस्थाओं से यह भी अनुरोध करे कि ग्यारहवी-बारहवी मे कोई दो भाषाये पढ़ने का प्रावधान हो जिनमे से एक संस्कृत भी पढ़ने की व्यवस्था हो।

६ इसके लिये भी प्रयत्न करते रहे कि सभी स्तरो पर संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाया जाये।

७. यह भी प्रयत्न करे कि भारत के बच्चो के सिर से अंग्रेजी की अनिवार्यता का बोझ समाप्त हो। प्रत्येक विद्यार्थी संविधान की आठवी अनुसूची मे दी गई कोई दो भाषायें और मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करे। जिसकी इच्छा हो वह इसके अतिरिक्त अंग्रेजी अथवा कोई विदेशी भाषा पढ़े।

८. सरकार से आग्रह करे कि विदेश स्थित भारतीय दूतावासो मे संस्कृत का कम से कम एक विद्वान नियुक्त किया जाये।

९. जामिया मिलिया, जवाहर लाल नेहरू और इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालयो मे संस्कृत के अध्यापन की व्यवस्था की माग करे।

स्वतन्त्रता सेनानी डा० भारत भूषण, आर्य समाज, सरस्वती विहार, दिल्ली-३४ द्वारा प्रचारित।

दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा की ७०वीं जयन्ती

दक्षिण अफ्रीका (साउथ अफ्रीका) की आर्य प्रतिनिधि का ७०वा वार्षिकोत्सव समारोह और दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य कल्याण गृह के अध्यक्ष श्री एम० रामभरोस की ७५वी जयन्ती मगलवार ११ जुलाई, १९९५ को शाम के ६ बजे से ७ बजे तक सिटी हाल डरबन मे आयोजित की जा रही है।

इस विशेष समारोह के लिए द० अफ्रीका के राष्ट्रपति महामहिम नेलसन मण्डेला ने अपना विशेष बधाई सन्देश भेजा है। विशेष समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी अग्निवेश और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प० वन्देमातरम् हैं।

विदेशी भाषाओं पर प्रतिबंध लगा

कुछ समय पूर्व समाचार पत्रो मे छपा था कि फ्रांसीसी भाषा मे जो व्यक्ति अंग्रेजी अथवा अन्य विदेशी भाषाओ के शब्दो का प्रयोग करेंगे, और आकाशवाणी तथा दूरदर्शन मे फ्रांसीसी कार्यक्रमो मे अंग्रेजी शब्दो की घुसपैठ करेंगे तो उन्हे दण्डित किया जाएगा। ईरान सरकार का भी कुछ इसी प्रकार का समाचार अखबारो मे छपा था।

अब इण्डोनेशिया जैसे एक छोटे से किन्तु स्वाभिमानी देश का समाचार ५ जून १९९५ को नई दिल्ली के टाइम्स आफ इण्डिया मे प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार राष्ट्र की "भाषा-इन्डोनेशिया" के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए विदेशी शब्दो के प्रयोग पर रेडियो पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। कार्यक्रम प्रारम्भ करने अथवा उनका परिचय देने के लिए भी वहां विदेशी भाषाओ का प्रयोग सर्वथा बन्द कर दिया गया है।

—जगन्नाथ, एक्स वाई, ६८ सरोजिनी नगर नई दिल्ली-२३

देश और समाज के लिए जीवन अर्पित करने वाले

स्वतन्त्र्य सेनानी आचार्य रामशास्त्री जी

—आचार्य रामदयालु

हरियाणा की हरी-भरी पावन धरती, सदा से उर्वरा, अन्नदा रही है। यह ज्ञान की गगा है तो शौर्य की खनि भी· यह आयुधजीवी-योद्धाओं की रगस्थली रही है तो स्नेहमयी सरस्वती का धाम भी। यह धर्मक्षेत्र है तो कुरुक्षेत्र भी। इस वैदिक सस्कृति की उदगमस्थली ग्राम ठोल, जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा) मे पूज्य पितृचरण श्री चमेल जी तुलाराम के घर बालक राम शास्त्री का ५ मार्च १८९० को जन्म हुआ। प० राम शास्त्री एक साधारण किसान परिवार मे जन्म लेकर अपने उच्च-चरित्र, दृढ-सकल्प व कर्मठता के कारण बाल्यावस्था से प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी आर्यसमाज, आयुर्वेद तथा संस्कृत जगत के मूर्द्धन्य विद्वान बने।

धन्य थे उनके पूज्य पितृचरण, प्रेरक व गुरुवर चमेल जी जिन्होंने उन्हे "सच्चा ब्राह्मण" बनाने का सत्संकल्प करके देववाणी के अध्ययन मे प्रवृत्त किया। उन्होने गुरुवर प० श्यामलाल जी शास्त्री (वृद्धजी), प० रघुवीर दास जी, पं० अनन्त राम जी, प० मथुरा दास जी, से अम्बाला, कुरुक्षेत्र, नवलगढ, में सस्कृत साहित्य व व्याकरण का गहन अध्ययन किया। तत्पश्चात लाहौर तथा काशी मे पण्डित ईश्वर चन्द्र जी दर्शनाचार्य, पाणिनि के अवतार पण्डित देवनारायण जी तिवारी जैसे ख्याति प्राप्त विद्वानों के श्री चरणों में बैठकर वेद-वेदांग न्याय आदि दर्शन तथा व्याकरण का गम्भीर अध्ययन करके वह सच्चे अर्थों मे "पद-वाक्य-प्रमाणज्ञ" पदवी के अधिकारी बने। प्रकाण्ड आयुर्वेद विद्वान काशी के वैद्य सम्राट श्री त्र्यम्बक शास्त्री जी के सान्निध्य मे रहकर उन्होंने आयुर्वेद चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त किया। तत्पश्चात बड़े गाव बनारस मे वैद्य बलदेवप्रसाद आयुर्वेद चिकित्सालय मे अच्छे चिकित्सक के रूप मे ख्याति प्राप्त की। उन्होंने इस देववाणी का प्राचीन पद्धति से सम्पूर्ण अध्ययन करके शास्त्र निष्णात बनकर असख्य छात्रों को लगभग पचास वर्ष विभिन्न शिक्षण सस्थाओं में निःशुल्क पढाकर सस्कृत भाषा का विद्वान बनाया।

आचार्य राम शास्त्री जी आयुर्वेद चिकित्सा, स्वाध्याय व लेखन मे निरन्तर व्यस्त रहते हुए भी सिद्धातो को मनन करते रहते थे। वह महर्षि दयानन्द के प्रबल समर्थक थे। उनके एक-एक रक्त कण मे आर्य समाज और ऋषि-निष्ठा विद्यमान थी। वह आर्य समाज के श्वेताम्बर सन्यासी थे। वह देश व समाज की गिनी चुनी उन दिव्य विभूतियो मे थे, जिन्होने अपना समस्त जीवन देश तथा समाज के हित मे लगा दिया। देश रक्षा आन्दोलन मे उन स्वतन्त्रता सेनानियों की पहली पक्ति मे आते हैं, जिन्होने छुपे तौर पर काम तो बहुत किया, यहा तक की कारावास मे भी रहे, परन्तु पेन्शन लेने के लिए अपना नाम तक प्रस्तुत न किया। निर्लोभी व लोकेषणा रहित धन के लोभ म वह कोसों दूर थे। वह १०५ वर्ष पारकर १०६ वो वर्ष मे प्रवेश कर चुके थे। उन्होने अपने हाथो से लाखो रुपए कमाए, परन्तु कभी एक पैसे का भी सग्रह नहीं किया। एक साथ हजारो रुपए आते, वाछित औषधिया बनाने क बाद जो पैसा बचता, उसे दान कर देते थे। उनका प्रिय शेर था "अजल (मौत) मेरे बरनानो से कहती है इतना सामान दो दिन के लिये" उनके जीवन मे यह शेर यथार्थ घटता भी था। उन्होने अपने जीवन मे बहुत-सी गरीब कन्याओ का विवाह खर्च उठाया और कई विद्यार्थियो को पढा-लिखा कर जीविका के योग्य बनाया जो आज लाखो रुपयो की सम्पत्ति के मालिक है। इस समय भी कई बच्चो की पढाई का पूर्ण खर्च वहन कर रहे थे। इन्होंने वास्तव मे "दानानां ब्रह्मदान विशिष्यते" को सार्थक किया।

उन जैसे प्रामाणिक पीयूषपाणी वैद्य विरले ही है, जिन्होने चिकित्सा जगत मे इतनी ख्याति अर्जित की। उन्होने अपने जीवन मे कभी किसी रोग से रोगी नही पूछा, निदान वह स्वय करते थे जहा आप धनवान रोगियों से हजारो रुपए लेकर औषध देते थे वहा अपने निर्धन रोगियो को न केवल निःशुल्क औषध प्रदान करते थे अपितु समय समय पर खुराक के लिए पैसे भी देते रहते थे। वर्तमान में आप "नीरोग आयु का रहस्य" अमूल्य ग्रन्थ लिखने मे व्यस्त थे जो उनके आयुर्वेद क्षेत्र में व्यतीत सत्तर साल के अनुभव का निचोड़ है।

आचार्य जी द्वारा रचित "सस्कृत शिक्षण सरणी" ग्रन्थ आचार्य जी की लोकोत्तर प्रतिभा तथा साहित्यिक सेवाओ के प्रस्तुतीकरण स्वरूप पाण्डित्य का सौरभ देश की विद्वन् मण्डली में व्याप्त है, वह सस्कृत साहित्य के बहु-श्रुत उद्भट विद्वान थे। उनके व्यक्तित्व का निर्माण सश्लिष्ट भारतीय सस्कृति के ताने-बाने मे हुआ था। उनकी गणना भारतीय ऋषि परम्परा में थी। आप विद्यानुरागियों और ज्ञानार्जन के लिए आये तीर्थ स्थान थे। आपके जीवन में अगाध पाण्डित्य के अतिरिक्त अहमभाव शून्यता, निःस्पृहता का भाव अनिर्वचनीयता, सरलता, अकृत्रिमता व उदारता आपकी गौरवान्वित श्रृखला मे आवद्ध है, उनका मधुर स्वभाव स्नेहपूर्ण व्यवहार एक साधारण विद्यार्थी को भी आपसे मिलने और निःसकोच वार्ता करने का अवसर प्रदान करता था। उक्त 'सस्कृत शिक्षण सरणी' ग्रन्थ आचार्य जी के सस्कृत अध्ययन की बहुमूल्य सम्पति है। यह ग्रन्थ रत्न छात्र तथा अध्यापक दोनों वर्ग के लिए प्रकाशस्तम्भ का कार्य कर रहा है। इस ग्रन्थ की उपयोगिता देखते हुए विभिन्न शिक्षण सस्थाओं ने मान्यता प्रदान की है। यथा श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ, भारत सरकार के राष्ट्रीय सस्कृत संस्थान, दिल्ली शिक्षा निदेशालय, सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा राजस्थान सस्कृत शिक्षा निदेशालय आदि। आपके प्रौढ़ पाण्डित्य का यथार्थ मूल्यांकन करके पूर्व लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड ने उन्हे ससद भवन में सम्मानित करते हुए एक चांदी की शील्ड व ५१०० रुपए प्रदान किए। इसी ग्रन्थ पर बम्बई में आर्य समाज सान्ताक्रुज ने भी उन ही के करकमलो द्वारा शाल श्रीफल व स्वर्ण पदक श्रद्धेय आचार्य जी को प्रदान किया। आचार्य जी को शतायु होने पर डी० ए० वी० मेनेजिंग कमेटी ने महात्मा हसराज दिवस पर प्रधान मन्त्री के द्वारा सम्मानित कराया। आज भी बहुत सारी सस्थाऐ श्रद्धेय आचार्य जी का अभिनन्दन करना चाहती थी। अभी बम्बई से कैप्टन देवरत्न आर्य जी का पत्र प्राप्त हुआ है उन्होंने लिखा है कि आर्य समाज काकडवाडी बम्बई आपका सम्मान व एक थैली भेंट करना चाहती हैं क्या आप इतनी लम्बी यात्रा करके आ सकते हैं उनको क्या मालूम कि आज वे अनन्तलोक की यात्रा मे जा चुके हैं। ऐसे महापुरुष सदैव अपने जीवन मे दूसरों का सहारा ही बनते हैं।

जो लोग ऐसे महापुरुषो से लाभ नही उठा पाते यह उनका ही दोष है न कि महापुरुषो का। आचार्य जी १५ जून १९९५ से हमारे बीच मे नही रहे।

हानिस्तु तेषा हि सरोवराणा, येषा मराले सह विप्रयोग.॥

अध्यक्ष विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम (दिल्ली)

नरेला में मांस, शराब–अण्डों की दुकानों की बाढ़

नरेला मे आजकल मास, शराब और अण्डो की दुकानों की बाढ सी आ गई है।

नरेला आर्यसमाज और स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का अपना जन्म स्थान होने के कारण नरेला मे, सिनेमा घर, शराब की व मास की दुकान अभी तक नहीं आ पाई थी, परन्तु अब नगर के अदर मुख्य सड़कों पर मास की खुली बिक्री हो रही है, और वहीं पर पशुओ को मारकर उनका खून व हड्डियां तक पड़े रहते हैं। लोगो का निकालना दूभर हो गया है और बीमारियों के फैलने की आशका है। कृपया इधर ध्यान देवें, सुना है स्वास्थ्य अधिकारी और दूसरे अफसरों के घरो पर मांस मुफ्त मे भेज दिया जाता है और सारे कार्य सभी नियम तोडकर पहले से हो रहे हैं। "इनको रोको" अन्यथा समाज और जनसाधारण को विवश होकर आन्दोलन करने पर बाध्य होना पड़ेगा।

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली-४०

वेद प्रचार मण्डल का गठन

पुराना तलवाड़ा। मिशीपल रलाराम जी जन्म स्थली एवं कर्म स्थली रही है। परन्तु यहां पर काफी समय से वेद प्रचार का कार्य रुका हुआ था। स्थानीय लोगों की वेद के प्रति तड़प को देखते हुए यहां वेद मन्दिर की आधारशिला आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब) के विद्वान भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के कर कमलों से रखी गई। इलाके में सुचारू ढंग से वेद प्रचार का कार्य करने के लिए वेद प्रचार मण्डल जिसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

संरक्षक—श्री शिवपाल वर्मा, प्रधान—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु एम. ए. (संस्कृत), मन्त्री—श्री सुखदेव वर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री सतीश कुमार भट्टी।

वेद प्रचार मण्डल का मुख्य ध्येय प्रचार करना, देश भक्ति की भावना का प्रचार, पाखण्डों का विरोध, ईसाइयत के प्रचार को रोकना तथा वैदिक ढंग से संस्कार करना।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कुठिला (हरदोई के ३२ वें वार्षिकोत्सव में श्री स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती ने धर्मिणी सत्यावती सहित १४ जून को सन्यास आश्रम की दीक्षा ली। अनुज बन्धु श्रीराम पत्नी सहित वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, बिथौरा गढ़ तथा हरदोई के अनेक आर्यजनों ने उत्सव में भाग लिया।

आर्यवीर दल शिविर

दिनांक ६ से १३ जून तक शिविर राजघाट बु० शहर गंगा किनारे लगाया था जिसका उद्घाटन आर्यवीर दल के संचालक श्री रघुराज सिंह आर्य जी के द्वारा हुआ तथा सम्पन्न भी उनकी अध्यक्षता में हुआ यह शिविर— स्वामी महेश्वरानन्द जी के आश्रम में राजघाट में लगा था इसमें शिक्षक नरेन्द्र कुमार शास्त्री तथा महेशचन्द्र शाखा नायक साधु आश्रम अलीगढ़ थे यह शिविर ३५ विद्यार्थियों का पूर्ण रूप से सफल हुआ।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N D.P.S.O. on 6,7 7-1995 licence to post without prepayment licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल पंजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक ९ जुलाई १९९५

शिक्षा के नाम पर लूट

शिक्षा के क्षेत्र मे हो रही दोहरी साजिश मे निम्न एव मध्यम वर्ग के अभिभावक बेहद परेशान हैं। हर गली-मोहल्ले मे कुकुरमतो की तरह उग रहे पब्लिक स्कूलो मे पढाई के नाम पर मनमानी कमाई का धधा बेखौफ चल रहा है। दूसरी ओर सरकारी स्कूलों मे पढाई का स्तर निरन्तर गिर रहा है। इस स्थिति मे जहा अभिभावक असहाय से हैं, वही सरकार भी इन व्यापक गडबडियो पर अंकुश रखने मे सर्वथा अक्षम नजर आती है। सच को पब्लिक स्कूलो की बाबत इनमे कार्यरत् शिक्षकों के शोषण और अभिभावको को नित्य नए फडों के नाम पर लूटने की अनेकों शिकायतें प्राप्त हो रही हैं।

—प्रेम मित्तल, अध्यक्ष . जन समस्या निवारण मच, दिल्ली

चुनाव समाचार

आर्यसमाज यमुना विहार। प्रधान-श्री चेतनसिंह वर्मा, उपप्रधान-श्रीमती रेखा राजदूत, श्री शिवकुमार मेहरा, मन्त्री-श्री हेमचन्द वर्मा, उपमन्त्री-श्रीमती पुष्पलता अग्रवाल, श्री मुशीराम आर्य कोषाध्यक्ष-श्री रजनीशकुमार अग्रवाल, प्रचार मन्त्री-श्री राकेश अग्रवाल, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्रीमती प्रवीण मल्होत्रा, लेखा परीक्षक-श्री वीरप्रकाश माहेश्वरी।

भारतीय वायुसेना में भर्ती परीक्षा में माध्यम हिन्दी का विकल्प

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने रक्षा मत्रालय से उक्त परीक्षा में हिन्दी के विकल्प के लिये अनुरोध किया गया। उसके उत्तर मे अब रक्षा मन्त्रालय ने अपने १२ जून १९९५ के पत्र सख्या—२० (१८)/९३-रक्षा (रा. भा.) द्वारा निम्न प्रकार सूचित किया है :—

(क) वायु सैनिको की भर्ती सम्बन्धी परीक्षाओं का माध्यम द्विभाषी अर्थात् हिन्दी व अग्रेजी कर दिया गया है।

(ख) तकनीकी एव गैर तकनीकी ट्रेडों की परीक्षाओं में उम्मीदवारों को अंग्रेजी के अतिरिक्त सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर हिन्दी या अंग्रेजी में देने की छूट है।

जगन्नाथ सयोजक, राजभाषा कार्य,
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
एच. वाई. ६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

श्री सुधीर कुमार दिवंगत

परोपकारिणी सभा के वयोवृद्ध सदस्य, प्रसिद्ध विद्वान् श्री सुधीर कुमार गुप्ता का निधन १५ जून १९९५ को जयपुर मे हो गया। १७ जून को उनके निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ के बाद तथा परोपकारिणी सभा के समागार मे उन्हें श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गई।

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन –३१०१५० के लिए प्रकाशित। पंजि०नं० डी० (एस ११०२४/–९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक ३६ | रविवार, १६ जुलाई १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५२ | दयानन्दाब्द । १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष । ३१०१५०

भारत राष्ट्र की सुरक्षा खतरे में

भारतीय दूरदर्शन को विदेशी कम्पनी सी०एन०एन० के हाथों बेचने का विरोध : अमेरिकी दूतावास के समक्ष सामूहिक प्रदर्शन आयोजित

दिल्ली । जून मास के अन्तिम सप्ताह में भारतीय दूरदर्शन या टी०वी० और विदेशी प्रसारण कम्पनी सी०एन०एन० के सहयोग और सामञ्जस्य से टी०वी० के संयुक्त प्रसारण की बात कही गई थी, परन्तु इस विदेशी कम्पनी ने प्रथम प्रसारण में ही भारत को गोओ और नक्शे मे कश्मीर को भारत से पृथक् दिखाने के बारे में भ्रान्त एवं निराधार प्रस्तुतिकरण किया । इस पर भारतीय समाचार पत्रों और भारतीय नेताओं ने तीव्र विरोध अभिव्यक्त किया । फलतः इस विदेशी कम्पनी को खेद व्यक्त करना पड़ा ।

यह टी० वी० या दूरदर्शन का संयुक्त प्रसारण एक छोटी-सी घटना नहीं है, प्रत्युत इससे भारत राष्ट्र की सुरक्षा संकट में पड़ गई है । दूरदर्शन को विदेशी कम्पनी सी.एन.एन. के हाथों बेचने के षडयन्त्र को उजागर कर भारतीय जनमत को संगठित करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी और महामन्त्री डा० धर्मपाल ने भारतीय जनता का आह्वान किया है कि दूरदर्शन को विदेशी कम्पनी के हाथो बेचने के विरोध में बृहस्पतिवार १३ जुलाई, १९९५ को प्रात ९ बजे तीन मूर्ति चोक पर एकत्र हो, जिससे अमेरिकी दूतावास के सम्मुख प्रदर्शन किया जा सके ।

'वेद पर टी०वी० सीरियल बनाने की मूर्खता से बचो' आर्यसमाज की चेतावनी

देहरादून । आर्यसमाज, धामवाला, देहरादून के साप्ताहिक सत्संग मे श्रोताओं से भरे हुए हाल में आर्यसमाज के प्रशासक श्री देवदत्त वासी पत्रकार ने भाषण करते हुए "वेद" पर बनाए जाने वाले टी०वी० सीरियल के विरोध मे भाषण किया । एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर निम्न माग की गई—

"हिन्दुओं के धर्म-ग्रन्थ वेद पर टी०वी० सीरियल बनाने की घोषणा की गयी है । "द वेदाज" नामक १०४ एपीसोड के टी०वी० सीरियल का निर्माण किया जा रहा है । इसके पटकथा और संवाद लेखक श्री भूषण बनमाली हैं । श्री बनमाली के अनुसार वेद और पुराण चार हजार ई० पूर्व के हैं । वेदो, पुराणो तथा ३६ उपनिषदों के प्रत्येक व्यक्तित्व, सभी देवी-देवताओ, ऋषियो-मुनियो तथा सभी सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी शासकों को इस धारावाहिक मे स्थान दिया जायेगा ।

वेदों के आधार पर धारावाहिक बनने से महान वैदिक धर्म के बदनाम होने की सम्भावना है । समस्त आर्यसमाजियों तथा वेदों में श्रद्धा रखने वाले समस्त समुदायों की ओर से वेदों के नाम पर बनने वाले किसी सिनेमा या सीरियल का बड़ा विरोध होगा ।

भारत का प्रत्येक हिन्दू यह जानता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेदों में जितनी भी बातें है वे सब वैज्ञानिक, तार्किक और सार्वभौमिक हैं । उनमे कुछ भी ऐसा नहीं है जिसका खण्डन किया जा सके । वेदों मे कोई लौकिक इतिहास नहीं है, राजा-रानियों की कथाएं नहीं हैं, किसी युद्ध का वर्णन नही है । वेद में एकेश्वर-वाद का समर्थन है, देवी-देवताओं का कोई वर्णन नही है । परमात्मा की विभिन्न शक्तियों तथा गुणों को विभिन्न नामो से सम्बोधित किया गया है, भ्रमवश या अज्ञानता के कारण उन्ही नामों को देवता या देवी समझ लिया जाता है ।

वेदो की व्याख्या निरुक्त, निघण्टु; ब्राह्मण-ग्रन्थो तथा योग के सहारे ही सम्भव है । यदि उनसे अतिरिक्त आधार पर धारावाहिक बना तो अनर्थ हो जायेगा । अतः धारावाहिक के निर्माताओ को सचेत किया जाता है कि वे वेद-मन्त्रो का नाटक बनाने का दुस्साहस न करे, ऐसा करके वे लोग भीषण-विवाद तथा विरोध को निमन्त्रित करेंगे ।

भारत विभाजन कृत्रिम था

नई दिल्ली । रूस के विपक्ष के नेता व्लादीमीर झिरनोवस्की ने कहा-यदि पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध युद्ध किया तो उनका देश सैनिक सामग्री और सैन्य सहायता से भारत की मदद करेगा ।

एक प्रेस सम्मेलन मे श्री झिरिनोवस्की ने घोषित किया—पाकिस्तान के साथ युद्ध की स्थिति मे भारत को सैन्य सामग्री और सैनिक सहायता के लिए रूस को कहना होगा अथवा रक्षा समझौता करना पड़ेगा । रूसी लिबरल डैमोक्रेटिक दल के नेता ने कहा वह किसी भी देश के कृत्रिम विभाजन के खिलाफ हैं, क्योंकि इससे संघर्ष और रक्तपात ही होता है । उन्होंने भारत को विभाजन के बिलकुल कृत्रिम बताया ।

चुनाव समाचार

आर्यसमाज कलकत्ता का चुनाव । २५ जून को वार्षिक अधिवेशन—श्री नाथदासगुप्त की अध्यक्षता में हुआ नए पदाधिकारी निर्वाचित प्रधान-श्री सीताराम आर्य, उपप्रधान-सर्वश्री लक्ष्मणसिंह, अच्छेलाल सेठ, श्री नाथदास गुप्त, मन्त्री-श्री राम आर्य उपमन्त्री-सर्वश्री दीपकराम, घनश्याम मौर्य, नन्दलाल सेठ, कोषाध्यक्ष-श्री बिन्देश्वरी प्रसाद जायसवाल, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री अच्छेलाल जायसवाल, उपपुस्तकाध्यक्ष-श्री हीरालाल जायसवाल, आयव्यय निरीक्षक-श्री अवधेश कुमार झा । उनके अतिरिक्त अन्त-रंग सदस्य, प्रतिष्ठित सदस्य आदि निर्वाचित किये गये ।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेदों का सन्देश

वैदिक धर्म मे आत्मा की एकता पर बल देते हुए कहा गया है जो व्यक्ति सब प्राणियो मे एक ही आत्मा को देखता है, उसके लिए किसका मोह किसका शोक ?

यस्मिन्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानत: ।

तत्र को मोह: क: शोक एकत्वमनुपश्यत: ।

वैदिक चिन्तन की मान्यता है कि सारे जगत् मे ईश्वर व्याप्त है, उसे पाने-समझने के लिए यह मानव-शरीर मिला है, उस तक पहुचने के लिए विशिष्ट मार्ग धर्म का है । स्मृति मे धर्म की चार कसौटिया कही गई हैं—१. वेद २. स्मृति ३. सदाचार और ४. वह जिससे आत्मा का सन्तोष हो । वेद . स्मृति सदाचार : स्वस्य च प्रियमात्मन: । एतच्चतुर्विध प्राहु: साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ।

वेदों का अर्थ ज्ञान है । वैदिक संहिताएं चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद । चार वैदिक संहिताओ के साथ उनके समझने के लिये ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद ग्रन्थ हैं ।

वैदिक ऋषि जीवन से उदासीन नहीं थे, वे सादे जीवन और उच्च विचारों में विश्वास रखते थे । ये प्राचीन चिन्तक जीवन से उदासीन नही थे । उनका लक्ष्य था-मानव-जीवन ठीक तरह से विकसित हो, वे जीवन और प्रकृति का भरपूर आनन्द लेने में विश्वास करते थे । उनकी दृष्टि मे मानव के चारों ओर आनन्द बिखरा पड़ा है, जरूरत इस बात की है, हम उस आनन्द का समुचित लाभ उठाए । हम सभी मानव सदा प्रसन्न रहें, सौ वर्ष तक जीएं, हमारा शरीर स्वस्थ रहे, हमारा मन स्वस्थ रहे,हमारी वाणी पवित्र रहे, हम सबके साथ मिल-जुल कर स्नेह से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करें, हमारे परिवार, समाज, राष्ट्र-वसुधा भर का जीवन सुखी हो ।

वैदिक ऋषि मानते थे—हम श्रम करें, मेहनत करें, खेती करें, पसीने की कमाई का भरपूर उपयोग करें, जुए और सभी व्यसनो से दूर रहे, सभी बुराइयो से दूर रहें, न हम चोरी करे और न संग्रह करे, दूसरो के साथ मिल-बांट कर खाएं ।

वैदिक जीवन-दर्शन मे मिल-जुल कर रहने पर बल दिया गया है, हम दूसरो के साथ सहयोग करें, सबसे मैत्री रखे , एक दूसरे की सहायता करें, सबकी सेवा करें । एक सुखी स्वावलम्बी परोपकारी समाज बनाने के लिये प्रयत्नशील हो ।

वेदो मे जीवन का वास्तविक चिन्तन एव कर्म का सिद्धान्त भरा पड़ा है । उसमे केवल आत्मा-परमात्मा का ही वर्णन नही है, केवल धर्म और यज्ञ की ही बात नही है, आनन्द पूर्ण मानवीय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा भी ओत-प्रोत है ।

हम मानव मात्र आनन्द-स्नेह से परिपूर्ण पवित्र यज्ञमय जीवन व्यतीत करते हुए ब्रह्म को समझें, घट-घट मे उसका दर्शन करे , सत्चित् आनन्द की ओर प्रवृत्त हों, यही है हमारे लिए वेदों का सन्देश ।

वैदिक जीवन दर्शन की मांग है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृध: कस्य स्विद्धनम् ॥ यजु० ४० १

इस जगत् मे जो कुछ स्थावर-जंगम है, वह अन्तर्यामी ईश्वर से व्याप्त है, उसने जो कुछ दिया है, उसका त्याग पूर्ण उपभोग करना चाहिए ।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा: ।

एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ यजुर्वेद ४० २

इस लोक मे कार्य करते हुए सौ वर्ष तक जीवित रहने की कामना कर । इस प्रकार निष्काम करने सेकर्मों से लिप्त नही होगा । मुक्ति का यही मार्ग है ।

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥ यजु० ३६।१८

सभी प्राणी मुझे मित्र रूप में देखें और मैं भी सब प्राणियों को मित्र के रूप में देखूं ।

सगच्छध्वं सवदध्व सवो मनांसि जानताम् ।

देवा भाग यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥ ऋग्वेद १०।१९१।२

सभी प्राणी भली प्रकार मिल जुल कर रहें, सब लोग आपस में प्रेमपूर्वक बात-चीत करें, सबके मनों मे एकता का भाव हो । विद्वान् लोग ईश्वर ज्ञान प्राप्त कर उपासना करते रहे हैं । उसी तरह तुम भी ज्ञान व उपासना में लगे रहें ।

बोध-कथा

कुण्ड की स्वच्छता का दायित्व

पंजाब के पुराने समाजसेवी, पत्रकार महाशय कृष्ण जी की जीवनी 'जीवन संघर्ष' के एक संस्मरण मे विवरण दिया गया है । वजीराबाद के एक प्रतिष्ठित परिवार से सम्बन्धित एक कट्टर सनातनधर्मी पिता ने अपने पुत्र कुलभूषण को चेतावनी दी थी कि वह अपने साथी कृष्ण से कोई सम्बन्ध न रखे । पिता की चेतावनी पर ध्यान न करने पर उन्होंने कुलभूषण को घर से निकाल दिया । एक आर्य भाई की सहायता से उन्हें मेडिकल कालेज मे प्रवेश मिल गया । इसी बीच उनके पिता रोगग्रस्त हो गये और उस समय की सेवा से उनका दिल पसीज गया । मेडिकल कालेज लाहौर मे अपना अध्ययन पूर्ण कर कुलभूषण जी ने लन्दन में और ऊंची डाक्टरी परीक्षाएं उत्तीर्ण की ।

विलायत से लौटने के बाद उन्हें कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में हैल्थ अफसर नियुक्त किया गया । कश्मीर मे हिन्दुओं का एक तीर्थ केसरी भवानी है । वहां एक कुण्ड है, जिसमे श्रद्धालु लोग अन्न डालते हैं,समय-समय पर अन्न डालने से इस कुण्ड के स्रोते बन्द हो गये और उसमें से कुछ दुर्गन्ध आने लगी । एक हैल्थ अफसर के रूप मे जब कुण्ड की बदबू का सवाल उनके पास पहुंचा, तो उन्होंने कुण्ड को को साफ करवा दिया । इस पर स्थानीय पण्डितों ने ऊधम मचा दिया कि तीर्थ स्थान का अपमान किया गया है, जो कुण्ड को साफ करवा दिया गया । उन्होने कश्मीर के तत्कालीन महाराजा प्रतापसिंह को उकसाया कि डा० कुलभूषण को उसका दण्ड दिया जाये । डा० कुलभूषण से कहा गया कि क्षमा-याचना करे, जिससे यह मामला निपट जाये, परन्तु डाक्टर साहब अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन के लिए तैयार नही हुए । उनका सबको एक ही जवाब था कि राज्य के हैल्थ आफिसर-स्वास्थ्य अधिकारी के नाते मेरा यह कर्तव्य था कि मैं केसरी भवानी का कुण्ड स्वच्छ रखू । अपने धर्म का पालन करने के लिए मैं क्षमा-याचना क्यों करू । यदि इसके लिए मुझे कोई दण्ड मिलेगा तो मैं उसे सहर्ष स्वीकार करूंगा ।

···नरेन्द्र

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारो व पर्वो से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें ।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमों के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें ।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए ।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है । १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें ।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनों या मतों से सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रियाएं आमंत्रित हैं ।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, '१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें ।

सम्पादक

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् ।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥ अथर्व १२।१।४५

अनेक धर्मों और अनेक भाषाओं वाले मनुष्यों को धारण करने वाली पृथिवी अडिग धेनु के समान मेरे लिए धन की सहस्रो धाराओं का दोहन करे ।

सम्पादकीय अग्रलेख

हम सच्चे भारतीय बनें

उच्चतम न्यायालय के एक निर्णय ने एक सैद्धांतिक समस्या की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है, आशा है सब देशवासी इस समस्या की महत्ता को भली प्रकार समझ कर अपना उत्तरदायित्व निबाहेगे । स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन का दावा था—स्वामी विवेका नन्द ने एक नए धर्म की नीव डाली थी और वेदान्त की शिक्षाओं पर आधारित यह प्रणाली सामान्य हिन्दू धर्म से पृथक् है, इसलिए धर्म के आधार पर एक अल्पसख्यक सगठन है और इस नाते अपनी शिक्षण संस्थाए उसे अपने ढग से चलाने का अधिकार है और मिशन की धार्मिक सस्थाओं के प्रबन्ध में सरकार को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये । प्रसन्नता का विषय है, कि न्यायालय ने जो निर्णय किया है, उसका सम्बन्ध धर्म से नहीं, शिक्षा व्यवस्था से, अल्पसंख्यकता के चरित्र से और हिन्दुत्व की व्यापकता से है । सभी प्रबुद्ध नागरिक स्वीकार करते हैं कि शिक्षा व्यवस्था सामान्यत. पूरे समाज के लिये एक जैसी होनी चाहिये, क्योंकि शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य योग्य और उत्तरदायी नागरिक पैदा करना होता है । राज्य द्वारा स्वीकृत या प्रचलित शैक्षणिक पाठयक्रम में कोई वैचारिक या सास्कृतिक समूह चाहे तो उसमे अपना योगदान कर सकता है, जैसे कि आर्यसमाज और दूसरे सास्कृतिक समूह कर रहे हैं । ऐसा करने में किसी को भी आपत्ति का अवसर नहीं था ।

उच्चतम न्यायालय ने रामकृष्ण मिशन को अल्पसंख्यक समुदाय मानने से इन्कार कर दिया है । वैसे तो अल्पसख्यक समुदाय के नाम पर राष्ट्रीय विचार धारा से पृथक् शिक्षा व्यवस्था प्रचलित करने का अधिकार ईसाई, मुस्लिम, यहूदी या किसी भी पन्थ को देना उचित नही हैं । जिन्हें ये सुविधाए मिली हुई हैं, अब वह समय आ गया है कि इस प्रकार के विशेष अधिकार और सुविधाए तुरन्त बन्द की जानी चाहिए । सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद इस सैद्धान्तिक विषय पर गम्भीरता से विचार कर एक सामान्य राष्ट्रीय शिक्षा पाठयक्रम प्रचलित किया जाना चाहिए । सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से यदि मिशन को छूट मिल जाती वह एक अल्पसख्यक समुदाय है तो इस देश मे अपने को अल्पसख्यक बताने वाले सैकड़ों समूह उठ खड़े होते । वैसे उल्लेखनीय बात यह है कि भारतीय सविधान में भी हिन्दुत्व की कोई परिभाषा नही की गई है, केवल यही बताया गया है कि अमुक-अमुक पन्थों के मानने वाले भी हिन्दुत्व की सीमा में आते हैं । इस स्पष्टीकरण के अनुसार जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि भी हिन्दू ही हैं । स्पष्ट है कि हिन्दुत्व या भारतीय नैतिक आस्थाओं को मानने वाले सभी हिन्दू या भारतीय समझे जाते रहे हैं । इस शताब्दी के प्रारम्भ तक अमेरिका मे एक भारतीय को हिन्दू सम्बोधन से अंगीकार किया जाता था ।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के सन्दर्भ में अब देश के जागरूक नागरिकों एव नीति-निर्धारकों को दो सैद्धान्तिक मन्तव्य स्वीकार कर लेने चाहिए, शिक्षा व्यवस्था, राष्ट्र के सरक्षण, संवर्द्धन और आर्थिक अभ्युदय के प्रश्नों पर बहुसख्यक, अल्पसख्यक, क्षेत्रीय या राज्य के प्रश्रय की दृष्टि भुला देनी होगी । इन सभी प्रश्नों पर समस्त नागरिकों के साथ समान कानून, व्यवहार और परीक्षा की कसौटी होनी चाहिए । प्रत्येक भारतीय प्रजाजन नागरिक को किसी मजहब, पन्थ, क्षेत्र' प्रान्त आदि संकुचित सीमाओं एव स्वार्थों से ऊपर उठकर केवल मातृ-भूमि भारत के लिये तन-मन-धन सर्वस्व न्योछावर करने वाले सच्चे भारतीय बनने का सकल्प करना होगा । संसार के आधुनिकतम उत्तरदायी राष्ट्रों के उत्तरदायी नागरिको और प्रजाजनों की तरह हमारे देशवासियों को भी जीवन के हर क्षेत्र में सच्चे जिम्मेदार भारतीय बनने का संकल्प लेकर उसे कार्यान्वित करना होगा ।

चिट्ठी पत्री

बस्ते का बोझ

केन्द्रीय मानव स साधन मन्त्री श्री माधवराव सिन्धिया ने एक वक्तव्य मे कहा है कि किताबी दुनिया से हट कर बच्चो को पढाया जाए । केवल सुझावों और भाषणो से सुधार होना होता तो आजादी के लगभग ४८ वर्षों में देश अब तक बहुत आगे पहुच चुका होता, परन्तु ऐसा नही हुआ ।

नन्हे बच्चो पर किताबो के बोझ से बच्चे ही नहीं, अपितु उनके अभिभावक भी परेशान हैं, उनमे से बहुतो का सामाजिक जीवन लगभग समाप्त हो चुका है, क्योंकि होमवर्क कराने के लिए उन्हें प्रतिदिन घण्टो बालकों के साथ माथा-पच्ची करनी पडती है । यद्यपि हर वर्ष की भाति आजकल होमवर्क और बच्चों की छुट्टियां पत्र-पत्रिकाओं मे चर्चा का विषय बनी हुई हैं,परन्तु ऐसा नजर नही आता कि शिक्षा की पद्धति मे कोई अन्तर आया हो ।

आश्चर्य तो तब होता है जब नन्हें बच्चो से वह सब कुछ सीखने और करने को कहा जाता है,जो उनकी आयु और समझ के हिसाब से कही अधिक है इस बारे मे जब तक केन्द्रीय मानव संसाधन मत्रालय कारगर कदम नहीं उठायेगा, तब तक कोई सुधार होना सम्भव नही, क्योंकि प्राथमिक अंग्रेजी । पब्लिक स्कूलों में बच्चों को बस्ते का बोझ से लादने की जैसे एक होड-सी लग गई है, जिस पर अकुश लगाना अत्यधिक आवश्यक है ।

—रमेशचन्द्र गुप्त, ।। ए २०७, नेहरू नगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

बराबरी की होड़ में

महिलाओं को बराबरी का दर्जा मिलना ही चाहिए, बराबरी सिगरेट पीने; नशा करने मे नही है । आज परिवारो के बिखरने का यह भी एक कारण बन रहा है । ऐसा नही है, पुरुषो द्वारा वे गलत काम नहीं होते थे,वह तो बुरा था ही,परन्तु परिवारों की आधारस्तम्भ नारियों द्वारा भी उन्ही गलत कामों में शामिल होना तो और भी बुरा है, परिवारो के वर्तमान और भविष्य की दृष्टि से ।

—सजय वेदप्रकाश, दक्षिणपुरी, नई दिल्ली

आज भी नारी निर्बल

रेणु कुमारी ने आज भी नारी निर्बल है-लिखकर एक कटु सत्य उजागर किया है आम तौर पर आधुनिक नारी-जगत-इस तथ्य को नकारता है । आज नारी किसी पर निर्भर नहीं-नारी की यह घोषणा मात्र बाहरी है, अन्दर से तो वह आज भी त्रस्त-भयभीत नजर आ रही है ।

—विमल भट्ट, आर के. पुरम, नई दिल्ली

'नोएडा' नहीं 'नवोदय' कहें

कोई सार्थक नाम रखने की भारतीय परिपाटी बहुत पुरानी है; किन्तु भारत की राजधानी के पास ही एक नोएडा कालोनी है जिसके नाम का कोई अर्थ नही । वास्तव मे यह तो एक सगठन 'न्यू ओखला इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट अथारिटी' के आद्याक्षरो पर आधारित एक सक्षिप्त नाम है, किसी बस्ती का नाम है ही नही ।

किसी नगर, भवन या योजना के लिये भारतीय नाम रखने के लिये भारत सरकार कें भी आदेश हैं । अत: नोएडा कालोनी का भी कोई उपयुक्त भारतीय नाम रखना भारतीय परिपाटी के अनुरूप होगा । 'नोएडा' कई साल से चल रहा है अत: इससे मिलता-जुलता नाम 'नवोदय' रखने का सुझाव विचारणीय है । यह आसानी से 'नोएडा' का स्थान ले सकता है । अत इस सम्बन्ध मे उत्तर प्रदेश सरकार पर जोर डाले जाने की आवश्यकता है।

विश्वभर प्रसाद "गुप्त-बन्धु"
बी-१५४, लोक विहार, दिल्ली-३४

रिक्त-स्थान

आवासीय विद्यालय गुरुकुल कागडी हरिद्वार के लिए आर्यसमाज के सिद्धान्तो नियमों को मानने वाला सात्विक-सदाचारी-कर्मठ-शाकाहारी शिक्षित सेवा निवृत्त, गन-लायसेन्सी मिलिट्रीमैन की ब्रह्मचर्याश्रम मे आश्रमाध्यक्ष कार्य के लिए आवश्यकता है । योग्यतानुसार वेतन के अतिरिक्त भोजन-आश्रम आवास की सुविधाएं ।

प्रार्थना-पत्र ३० जुलाई ९५ तक "सहायक मुख्याधिष्ठाता" गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार उ०प्र० के नाम भेजे।

महेन्द्र कुमार
सहायक मुख्याधिष्ठाता; गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

तप का वास्तविक स्वरूप और महत्ता

चमनलाल

वेदों मे, धर्मशास्त्रों और स्मृतिग्रन्थो में तप का विशुद्ध वर्णन मिलता है। धर्मग्रन्थो मे तप के महत्व और इसकी आवश्यकता पर बल दिया गया है। तप से दोषो का नाश होता है और सारी अशुद्धि दूर हो जाती है।

अष्टांगयोग के दूसरे अंग नियमों मे तप का तीसरा स्थान है। योग दर्शन के निर्माता महर्षि पतजलि ने क्रिया योग की प्रशसा करते हुए इसके तीन महत्वपूर्ण अंग—तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान बताए हैं।

"तप:—स्वाध्याय-ईश्वर प्रणिधानानि क्रिया योग:" योग २।१

तप क्रिया योग का महत्वपूर्ण अंग तो अवश्य है ही, परन्तु इसके बारे मे बड़ा भ्रम फैला है। प्रयाग, काशी, मथुरा, हरिद्वार आदि तीर्थ स्थानो पर, इसके विविध रूप देखने में आते हैं। वृक्ष से पांव बाधकर उलटे लटक जाना, दाए या बाए हाथ को ऊपर उठाकर रखने और उठाए-उठाए इसे सुखा देना, जान बूझकर कांटों या लोहे की गरम या तीक्ष्ण शलाखों पर लेटना, एक पाव पर ही खड़ा रहना, हाथो के होते हुए भी इनसे भोजन न करना, गर्मियो मे अकारण आग तापना या सर्दियों मे अकारण गंगा के शीतल जल मे खड़े रहना इत्यादि। इसी प्रकार की अन्य प्रक्रियाओं का करना तप नही। ये सब कियाए प्रभु कृपा से मिले हुए दुर्लभ शरीर का सरासर दुरुपयोग करना और कृपा सागर भगवान का अपमान करना है।

सच्चा तपस्वी

कुछ धर्मान्ध लोग अपने चारों ओर अग्नि जला और आप बीच मे बैठ और सूर्य को पांचवीं अग्नि बनाकर तप करना जीवन का ध्येय समझते हैं। परन्तु महाभारत के शान्ति पर्व मे इसे तथा कथित पंचाग्नि तप का खण्डन और वास्तविक पंचाग्नि तप का बड़ा सुन्दर वर्णन मिलता है।

"चतुर्णां ज्वसतांमध्ये यो वर: सूर्यपञ्चम:।
तपस्तपति कौन्तेय ! न तत्पचतप: स्मृतम॥"

"पञ्चानामिन्द्रियाग्नीना विषमेन्धन चारिणाम्।
तेषा तिष्ठति यो मध्ये तद्वै पञ्चतप: स्मृतम्॥"

अर्थात हे कुन्तीपुत्र ! जो चार अग्नियो के बीच मे बैठ जाए और सूर्य को पाचवी बनाकर तप करता है, वह तप पच अग्नियों का तप नही हैं। परन्तु विषय-रूपी ईंधन में विचरने वाले पाच इन्द्रिय रूपी अग्नियो के मध्य मे जो बैठता है वही पंच अग्नि तप माना जाता है। सार यह है कि विषय सचमुच आग है, जो व्यक्ति इन विषयरूप अग्नि मे विचरता हुआ भी इसमे जलता नही (प्रभावित नही होता) वही सच्चा तपस्वी है।

वास्तव मे इन शब्दो के सारगर्भित अर्थ न समझकर प्राय. अपने आपको सताने और शारीरिक कष्ट देना ही तप समझा जाता है, परन्तु ऐसा समझना कदाचित उचित नही है। जानबूझकर शारीरिक कष्ट भोगना सरासर मूर्खता है।

तप का वास्तविक अर्थ—किसी भी लक्ष्य की पूर्ति के लिए मार्ग मे आने वाली समस्त विघ्न-बाधाओ को धैर्यपूर्वक सहते हुए आगे बढने का नाम तप है। या यूं कहिए कि चिन्ता शून्य होकर भूख-प्यास, सुख-दु.ख आदि परस्पर विरोधी द्वन्द्वो को सहने का नाम तप है। इसलिए शास्त्रो मे इसकी दूसरी परिभाषा "तपो द्वन्द्व सहिष्णुत्वम" भी की गई है। अर्थात हानि-लाभ, सुख-दुख, गर्मी-सर्दी आदि जितने भी द्वन्द्व हैं, उनकी चिन्ता न करते हुए कर्तव्यपथ पर आगे बढ़ते चले जाना तप कहलाता है। इसी भावना में महाभारत मे यक्ष-युधिष्ठिर के सवाद मे यक्ष ने धर्मपुत्र युधिष्ठिर से अनेक प्रश्न पूछे, उनमे एक प्रश्न है—

"तप: कि लक्षणं प्रोक्तम्" इसका उत्तर देते हुए पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर ने कहा था, "तप स्वकर्मवर्तित्वम" अर्थात अपने कर्तव्य पथ का एकनिष्ठ होकर पालन करने का नाम ही तप हैं। (राजनीति के कुशलकर्मवीर आचार्य चाणक्य ने अपने छोटे ग्रन्थ चाणक्य-सूत्र मे तप की परिभाषा कहते हुए लिखा है—

"तप: सार: इन्द्रियनिग्रह." अर्थात तप का निचोड़ जितेन्द्रियता है। इसी को दृष्टि में रखकर किसी शास्त्रकार ने तपस्वी की परिभाषा यूं की हैं :—

"यस्य कार्यन्न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयरति:।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै तापस उच्यते॥"

अर्थात जिसके कार्यो मे सर्दी गर्मी, भय-प्रेम, ऐश्वर्य निर्धनता बाधक नहीं होते और जो निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़ता ही चला जाता है, उसे तपस्वी कहते हैं। इसी भाव को किसी नीतिकार ने इन शब्दों में व्यक्त किया है:—

"विघ्ने. पुन: पुनरपि प्रतिहन्यमाना:
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।"

अर्थात उत्तमजन, विघ्नो से बार-बार व्यथित किए जाने पर भी आरम्भ किए। कार्य बीच में नहीं छोड़ते। विद्वानो का यह कहना है कि सत्य पर आरूढ़ रहकर कष्ट सहन ही तप है। धर्मग्रन्थो में तो ब्रह्मचर्य पालन को परम तप कहा गया है।

वेद धर्मशास्त्रो एवं स्मृतियो मे तप का बड़ा विशद वर्णन मिलता है इन धर्मग्रन्थो में तप के महत्व और इसकी आवश्यकता पर बड़ा बल दिया गया है। तप से सब प्रकार के दोष दूर होते हैं और इन्द्रिया वश मे होती हैं और शरीर हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली होता है। स्मृतिकार मनु ने लिखा है—

"तपसा किल्विषं हन्ति।" मनु १२-१०४

अर्थात तप के अनुष्ठान से सब प्रकार के दोष दूर होते हैं। दोषों के रहते सुख का मिलना असम्भव है, इसी कारण योग दर्शन के रचयिता महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन मे एक प्रसग मे कहा है—

"कामेद्रिय सिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपस:।" योग दर्शन २-४३

अर्थात तप से सारी अशुद्धियां दूर हो जाती हैं और अशुद्धियों के नाश से इन्द्रियों और शरीर को विशेष सिद्धि मिलती है। इन्द्रियों को वश में करके और मन का सयम करके ही मनुष्य सब कार्यों को सिद्ध कर सकता है, सब प्रकार की सफलताए प्राप्त कर सकता है।

"वशे कृत्वेन्द्रियग्राम संयम्य च मनस्तथा।
सर्वान्संसाधयेदर्थानक्षिण्वन् योगतस्तनुम्॥" मनु २-१००

सब सुख चाहते हैं, कोई भी दुख नही चाहता—

"दुखादुद्विजते सर्व. सर्वस्य सुखमीप्सितम।"

और सुख प्राप्ति के अनेक साधनो मे तप का स्थान भी कुछ कम महत्वपूर्ण नही है।

"स्वर्विदस् तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे" अथर्व० १९-४१-१

इसी भाव को वेद मे एक स्थान पर यूं व्यक्त किया गया है—

"अतप्त तनूर्न तदामो अश्नुते।" ऋग्० ९-८३-१

अर्थात जिन्होंने तप की अग्नि मे नही तपाया, वे इस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते।

तप से कार्यो की सिद्धि

अर्थात सब कार्य रूप से सिद्ध होते हैं रोने धोने से कुछ नही बनता।

"तपसा लोकोऽग्र जयति" शतपथ ३-४-१७

तप से ही मनुष्य भूगोल को जीत लेता है।

"तपसा युजा विजहि शत्रून।" ऋग्० १०-८३-३

तप से ही सम्पूर्ण विभिन्न बाधाओं को जीत।

"त्वं तप परि तप्यजय: स्व:।" ऋग्० १०-१६७-१

तप कर अपने आपको जीत

"एतत् खलु वा तप, यत् स्व ददाति।"

सबसे बड़ा तप त्याग है।

यही नही, प्रभु प्राप्ति के अक्षय आनन्द को भी वे ही महात्मा लोग पा सकते हैं, जो तप के द्वारा पक चुके हैं।

"ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।" ऋग् १०।१९०।१

अत: तप के वास्तविक स्वरूप को समझकर उसके अनुष्ठान से सब प्रकार की सिद्धि को प्राप्त कर उस महान जगत-नियन्ता के दर्शन के अक्षय आनन्द को प्राप्त करने के भागी बनो।

एच-६४, अशोक विहार, दिल्ली-५२

नेपाल में क्या हिन्दू अल्पसंख्यक रह जाएंगे ?

नेपाल यात्रा का आंखों देखा हाल

—शामपाल सचदेव

आर्य समाज चूना मण्डी, पहाड़गंज के मन्त्री शाम दास सचदेव द्वारा एव आदरणीय भ्राता श्री राम नाथ सहगल की प्रेरणा से नेपाल यात्रा का कार्यक्रम बनाया गया। इसमे नेपाल जाने के लिए और वहां समाज के लिए श्री चमन लाल ग्रोवर ने पुस्तकें, कलैन्डर, स्वामी दयानन्द के कैसेट वगैर दिए। श्री सहगल जी ने बहुत-सी पुस्तके कैसट और सामान दिया। तथा श्री तिलकराज कोहली आर्य प्रकाशन ने भी कैलेन्डर, छल्ले वगैरा दिये। श्री सुरेन्द्र लाल आहूजा जी ने यज्ञ के लिए, स्टील के आठ बर्तन दिए। जो बाकी सामान कलैन्डर कैसेट स्टीकर आदि बाजार से खरीदकर साथ ले गये।

११.६.९५ रविवार सांय ५ बजे श्री सहगलजी की अध्यक्षता मे सदभावना यात्रा को विदाई पार्टी दी गई। श्री सहगल जी, श्री प्रधान सूरी जी और बहन सन्तोष हान्डाजी ने अपने विचार रखे सबको आशीर्वाद के रूप मे फूलमालाओं और फोटो से सबका स्वागत किया गया। साथ ही सीता वर्ल्ड ट्रैवल्स के अधिकारी श्री जायसवाल जी अपने साथियों को लेकर पहुंच गये। जिन्होने सबसे एयर टिकट तथा एयर बैग हर यात्री को दिए और शान्ति पाठ के बाद सहगल जी की तरफ से जलपान का आयोजन किया गया। यात्रियों में प्रमुख थे, बम्बई से बहन राज-कोहली अपने साथियों के साथ, श्री के०डी० अरोड़ा आर्यसमाज लाजपत नगर; श्री राजसिंह भल्ला सार्वदेशिक सभा, कौशल्या महाजन डिफेन्स कालोनी कृष्णा वांरग बसन्त विहार आर्य समाज से, श्री धनीराम किदवई नगर से, सुरेन्द्र नाथ आहूजा कोषाध्यक्ष गुजरावाला आर्य समाज, श्री अशोक शर्मा अपने साथियो के साथ जयपुर से बहिन रामप्यारी, बहिन जनक शर्मा जम्मू से, हरि ओम शर्मा अयोध्या (फैजाबाद) से, श्री मुशी राम गुलाटी प्रधान आर्य समाज पश्चिम विहार से, श्रीमती बहिन सन्तोष, प्रधाना स्त्री आर्य समाज नरैना से श्री एच०सी० वधवा नरेना समाज से, श्री गिरधारीलाल गुलाटी आर्य समाज पजाबी बाग से, बहिन निर्मल गुप्ता अमर कालोनी स्त्री आर्य समाज से, श्री सत्यपाल भाटिया गांधी नगर यमुनापार आर्य समाज से सब अपने रिश्तेदारों और समाज के साथियो को लेकर नेपाल यात्रा के लिए आए।

जैसे ही सब बहिन-भाई जहाज में चढे और जहाज चलना शुरू हुआ, सबने गायत्री मन्त्र का तीन बार उच्चारण किया तथा भगवान का धन्यबाद दिया यह सफर केवल एक घन्टा १५ मिनट का था। हम नेपाल की धरती पर पहुंच गये। वहा पहुंचते ही काठमाण्डू आर्य समाज के सदस्य पुष्पमाला लेकर सबका स्वागत करने लगे और यात्रियों के पास ओम के झण्डे ८, १० थे जिनसे पहचान ही रही थी स्वागत करने वाले, श्री शकर लाल कोडिया, बहिन प्रिंसीपल मेहता, श्री आचार्या जी और बहुत से लोगो ने स्वागत किया। इसके बाद हम बसो द्वारा तिलची होटल पर चले गये, जहा पर ठहरने का प्रबन्ध था, वहा की समाज वालो ने हमारे यज्ञ का प्रबन्ध कर दिया जोकि १३ ५ ९५ को प्रात ७ से ८ बजे तक यज्ञ हुआ जिसमे सबने भाग लिया। होटल के मालिक तथा रहने वाले बहुत प्रभावित हुये कि यह पहला मौका था जब होटल के आगन को पवित्र करने का अवसर आया।

सारी दुनिया मे केवल नेपाल ही ऐसा छोटा देश है जो कि "हिन्दू राज घोषित किया हुआ है उसके विधान मे यह लिखा हुआ है कि जो यहा का राजा होगा सस्कृत का विद्वान हिन्दू विचारों वाला हिन्दू ही होगा।"

१. इसकी आबादी १,८४,९१,०९७ है इसमें सब जाति के लोग रहते हैं।

२. इसका क्षेत्रफल लगभग १४७ १०१ वर्ग किलोमीटर है।

३ यहां की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और बाजार मे वस्त्रों मे सब जगह सिवाये हिन्दी के कुछ नहीं लिखा हुआ यहां तक कि की बसो के नम्बर कारों के नम्बर वगैरा है वे सब हिन्दी अक्षरो में हैं।

४. समय वहां का भारत से मिलता-जुलता है और केवल १५ मिनट उनका समय भारत से आगे है।

५. यहां का मौसम २० और २५ डिग्री रहता है, हम भारत से जब गए थे तब दिल्ली का तापमान २६ डिग्री था। सबने भगवान का धन्यवाद किया। और परमात्मा ने वर्षा द्वारा हम सब का स्वागत किया।

फिर हम सब काठमाण्डू के प्राचीन पशुपति नाथ मन्दिर देखने गए और फिर पुराना राजा दरबार देखने गए और बाजार का भ्रमण किया। वहा के सुपर मार्किट को देखा और लोगो ने अपने परिवार वालो के लिए कुछ सामान भी खरीदा। उसके बाद १० व्यक्ति आर्य समाज के प्रधान श्री शकर लाल कोडिया के घर पर हमे ले गए, जहा पर विचार-विमर्श हुआ। सबने अपने-अपने विचार रखे और बहन जनक शर्मा ने ५ बच्चों को पूरे वर्ष का जो खर्च आएगा वह जम्मू आर्य समाज से देती रहेंगी। धर्मान्तर का खतरा: श्री शकर जी ने अपने विचार रखे और हमे बताया कि इस वक्त हिन्दुओ की क्या दशा होने वाली है भले ही यह हिन्दू राज्य घोषित है। क्योकि हिन्दुओं की आबादी कम हो रही है और मुसलमान ईसाई की आबादी लगातार बढ रही है। और वहा पर ईसाइयों का पैसा बहुत आता है और गरीबो को कपड़े रोटी पढ़ाई वगैरा पर खर्च करके अपना बनाते जा रहे हैं। और मुसलमान भी इसी प्रकार हिन्दुओं मे फूट डालकर पैसे का जाल बिछाकर मुसलमान बनाते जा रहे हैं। यहा तक कि साजिश चल रही है, हिन्दुओ में भी ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्य आदि पृथक है। नेपाल मे हिन्दू जाति अलग-अलग होती जा रही है, और जो मुसलमान बगला देश से आता है नेपाल के मुसलमान पहले उससे फार्म भराते है उसे वोट का अधिकार मिल जाता है। इससे भी हम बहुत चिंतित हैं केवल आर्य समाज थोडा बहुत इस तरफ ध्यान दे रहा है। वह भी कब तक देगा। जबकि कोई सहायता हिन्दू जाति को बचाने के लिये नही आती। हम चाहते है कि सार्वदेशिक अपने प्रचारक तथा भजनोपदेशक भेजे जिससे गाव-गाव में बचाया जा सके और एक बहुत बडा हिन्दी सम्मेलन सार्वदेशिक सभा की तरफ से हो ताकि सब हिन्दू नेपाल आए इससे भी हिन्दू जाति का प्रभाव पड सकता है।

इन विचारो के बाद "श्री राजसिंह भल्ला ने आश्वासन दिया कि जितनी आप को सहायता चाहिए सार्वदेशिक सभा से वह अवश्य पूरी कराएगे और उपदेशक तथा भजनोपदेशक भेजने का प्रबन्ध करूगा। आप उन्हे केवल रहने और भोजन का प्रबन्ध कर दें। इसमे २० बहिन भाई थे जिन्होने भाग लिया। विचार के लिये, प्रोग्राम भी बनाया गया।

१४-६-९५ प्रात यज्ञ और नाश्ते के पश्चात ९ बजे हम बसो द्वारा। लग-भग २०० किलो मीटर दूर और ७ घन्टे की यात्रा पर पोखरा चल दिए। रास्ते मे हरियाली बहुत है और पहाडो के दृश्य हैं साथ ही तीनो बसो मे भजन, सत्सग अन्त्याक्षरी चलती रही जो कि सफर का पता ही नही लगा। पोखरा होटल मे पहु-चने पर जहा फिर वर्षा ने हम सब का स्वागत किया। रात्रि का विश्राम किया साथ ही वहा पर रात्रि ८ से ९ बजे तक लोकगीत का प्रोग्राम बहुत ही सुन्दर हुआ।

१५-६ ९५ वीरवार को प्रात नाश्ते के पश्चात पोखरा के दृश्य देखने गये जो कि नेपाल का सबसे सुन्दर कुदरती नजारा है।

१. वहा पर एक बडी झील है, जिसे घुमाने का बोट वाले १०० रु० लेते है। पहाड़ो के सुन्दर दृश्यो, हरियाली ने मन को छू लिया।

२ हिमालय की चोटिया वहा से नजर आती है और लोग विमान द्वारा हिमालय की सैर करते हैं। वर्षा के कारण जहाज नही उडते।

३ वहा पर एक पहाड पर बहुत सुन्दर एक मन्दिर है, जो सब भाई-बहिनो ने देखा।

४. महेन्द्र-गुफा गए जो कुरदती बनी हुई है ऊपर से पानी टपकता रहता है लगभग हम लोग २०० मीटर अन्दर तक गये फिर वापिस आ गये।

५ फिर हम मछली-घर (फिश हाउस) गए, जो अति सुन्दर है दुनिया भर की मछलियो के रग-बिरगे नमूने देखे।

६. सबसे अधिक सुन्दर और ठन्डी हवा के झोके डेविस फाल मे मिले यह अति सुन्दर है पता नही इतना पानी इतने जोरो से तीन तरफ से आ रहा है और इतना गहरा जाता है कि दृष्टि की नजर से बाहिर है और सब नीचे चला जाता है। साथ ही वहा पर हर वक्त इन्द्रधनुष बनता रहता है जो कि बहुत सुन्दर लगा। सबने अपने चित्र वगैरा खीचे, इसके बाद लगभग २ बजे हम सब अपने होटल में वापस आ गए। (शेष पृष्ठ ६ पर)

उन्नति-पथ पर बढ़ने रहना, ऊपर-ऊपर चढ़ते जाना

नव दम्पतो को शुभाशीर्वाद तथा मार्गदर्शन

—डा० कृष्णलाल,
आचार्य सस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मेरी छोटी-सी बगिया की प्यारी फुलवारी मे,
बहू बन बेल नवेली आई नव रस उपहार लिये ।

आज सभी अति प्रमुदित आनन्दित आलोकित नृत्यमग्न हैं,
बड़े और बच्चे भी सब अपना-अपना मधु ससार लिये ।

अगणित आसीसें देते हैं दादा-दादी नये युगल को,
ताऊ-ताई, चाचा-चाची, मामा-मामी, नाना-नानी,

बुआए फूफा मौसा-मौसी सभी आज हैं दिखते हर्षित,
जीजा बहिनें चन्द्र चकोर की जोडी लख फिर-फिर मुस्काती ॥

तुम आज से नव जीवन मे प्रवेश कर रहे नये पथिक बन,
गृहस्थ अपार सुख-सागर सब का ही आधार बना ।

सावधान हो नव पथ पर तुमको अपनी राह बनानी होगी,
परमेश्वर को कभी न भूलो वही मूल आधार यहां ॥

गृहस्थ-समाज अन्योन्याश्रित, समाज-सहयोग करो भरपूर,
सेवा दान, परोपकार से सभ्य आचरण करते रहना ।

मातृभूमि जो सब कुछ देती, उसके प्रति कर्तव्य हमारा,
जिस महान राष्ट्र मे हम रहते उसके हित सब विपदा सहना।

अपनी भाषा अपनी मां है, सर्वत्र प्रयोग उसी का करना,
झूठी शान छोड अंग्रेजी की मां को अपना लो वही पुकारें ।

उसके आचल मे प्यार भरा है, ममता है, अपनापन है,
मत उसको तुम करो तिरस्कृत, वह अपनी है, भाव जगा दे ।

जीवन है सघर्ष, जान लो, गृहस्थ सब सघर्षों का घर है,
नही हारना, त्याग निराशा हाथ-हाथ मे लेकर चलना ।

उन्नति पथ पर बढ़ते रहना, ऊपर-ऊपर चढ़ते जाना,
जहां आत्म-विश्वास रहेगा, विपदाओं से फिर क्या डरना ।

सत्य को कर ग्रहण असत्य को छोड़ो जो है नही वास्तविक,
मिथ्या आडम्बर अन्ध-विश्वास को छोड़ सत्य को समझो ।

शिक्षित हो तुम दोनों, और वेद के पथ पर चलना,
सच्चा मार्ग वही है निराकार का, ग्रन्थों में मत उलझो ॥

चरण-वन्दना शुभ है, विनम्रता हमको वह देती है,
चरण-वन्द [illegible] र्ण समर्पण शुभ विचार का हृदय समर्थन।

यज्ञमय जीवन बन जाये सब ओर कीर्ति-सौरभ फैलेगा,
जन-जन कुल आलोकित हों दोनो, है यह शुभ मेरा सम्बोधन ॥

नेपाल यात्रा

(पृष्ठ ५ का शेष)

१६ ६.९५ शुक्रवार पता चला कि शनिवार को मार्केट बन्द रहता है सब ने कहा कि यहा से जल्दी चलो, नाश्ता पैक करा लिया और प्रात. ७ बजे हम पोखरा से काठमान्डू की ओर चल पड़े, रास्ते में गर्मी का जोर था, कैम्पा वगैरा पीते नाश्ता खाते हुये शाम के चार बजे सब लोग काठमान्डू पहुच गये और शापिंग के लिये चले गये रात्रि को विश्राम किया और सामान पैक किया ।

१७-६-९५ के दिन प्रातः समाज वालो का निमन्त्रण था, उसमें सब तो नहीं गए परन्तु २५ बहिन भाई जो मुखिया थे वहा गए । वे हमारी इन्तजार कर रहे थे । वहां जो आर्य समाज है वह दूसरी मन्जिल पर है। एक व्यक्ति ने बगैर किराए के वह जगह समाज को दी हुई है। वहां के लोग भी लगभग १०० थे और २५ बहन-भाई हमारे यज्ञ के कार्य शुरू हुआ और मन अति प्रसन्न हुआ । जैसा कि एक बच्चा अपनी मा की गोद मे बैठकर आराम पाता है इस तरह हमने भी समाज रूपी माता की गोद मे बैठकर आनन्द लिया ।

सबका स्वागत हुआ और अपने-अपने विचार रखे कि हिन्दू जाति को कैसे बचाया जा सकता है । इस पर राजसिंह भल्ला, बहन जनक शर्मा, मुंशीराम बुलाटी और गिरधारी लाल बुलाटी जी ने अपने सुझाव रखे और बहन रामप्यारी जी ने बहुत ही सुन्दर भजन सुनाया । साथ ही इक्यावन (५१) बहन-भाईयो को भारत आने का निमन्त्रण दिया । जम्मू से आए हुए जनक शर्मा तथा बहिन राम-प्यारी जी ने कहा भारत तुम पहुचो बार्डर के बाद आना जाना रहना खाना पीना भ्रमण करना सारा खर्च जम्मू की समाज खर्च करेगी । सबने तालियो के साथ स्वागत किया । साथ ही लगभग २५ बहन-भाइयों ने ८०००) जो नेपाल के हिसाब से १४८००) होते हैं इकट्ठे किए । शान्ति पाठ के बाद सबने मिलकर भोजन किया और फिर काठमान्डू एयर पोर्ट पर आ गए । सबने आपस में मिलकर एक दूसरे को धन्यवाद किया । शाम को ५-१५ पर दिल्ली वापस पहुंच गए, वहां इतनी गर्मी थी जैसे भट्टी तप रही हो ।

ईश्वर की अपार दया और कृपा से यात्रा अति सुन्दर रही ।

तन्दूर में औरत

दिल्ली के आलीशान होटलों की यह तीसरी घिनौनी वारदात यहां के एक सरकारी होटल से लगे रेस्तरां में २ जुलाई की रात को घटी, जिससे महानगरों में बढ़ते अपराधों के जहरीले पिटारे की एक झलक दिखाई दी। इससे अधिक भयावह बात क्या हो सकती है कि एक औरत की लाश को ठिकाने पर लगाने के लिए उसे जलते हुए तन्दूर में डाल दिया गया। इस घृणित अपराध को कोई जान न पाए, इसलिए दस बजे रात को ही होटल बन्दकर दिया गया, होटल के सब कर्मचारियों को नकद भुगतान कर उन्हें होटल छोड़ने के लिए कहा गया, फिर मक्खन डाल कर लाश को तुरन्त नष्ट करने की कोशिश की गई। यह तो गश्त करने वाले पुलिस सिपाही की सतर्कता और ईमानदारी की सराहना करनी होगी, जिसने दोहरी ड्यूटी करते हुए किसी के झांसे में डराने-धमकाने में न आकर मौके पर एक अपराधी और लाश को बरामद करने मे कामयाबी प्राप्त की।

कहते है कि जिस नारी की अधजली लाश उस दिन मिली है, उसने दस साल पहले राजनीति मे प्रवेश किया था, वह एक अखिल भारतीय छात्र संगठन की छात्रा शाखा की भू०पू० संयोजिका थी, वह स्थानीय युवा संगठन की भू०पू० महासचिव थी, राजनीति मे प्रवेश के साथ ही उसने व्यावसायिक पायलट का प्रशिक्षण प्राप्त किया। सम्बन्धित दलों के छात्र एव युवा नेताओ ने घोषित किया है कि उक्त महिला एक अच्छी युवा कार्यकर्त्री थी, एक प्रशिक्षित पायलट थी, एक बाटिक से सिले-सिलाए वस्त्रों का कारोबार करती थी। ऐसी सुशिक्षित समाज-सेविका व प्रशिक्षित पायलट की हत्या कर उसकी लाश को खत्म करने की घटना ने महानगरो मे बढ़ते अपराधों, एक सुशिक्षित कामकाजी महिला के साथ किए गए जघन्य व्यवहार से नारी की असहाय वस्तु स्थिति की घटना ने सवेदनशील नागरिकों और विशेषत. महिलाओं को झकझोर दिया है। जाग्रत समाज और सवेदनशील महिलाओं को मिल-बैठकर राजनीति में बढ़ते हुए अपराधीकरण की रोकथाम करनी चाहिए।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 13,14 7-1995 Licence to post without prepayment. Licence No U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक १६ जुलाई १९९५

१०वीं कक्षा तक हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ने की छूट: केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का निर्णय

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की व्यवस्था के अनुसार राज्य प्रशासन। सगठन को यह छूट है कि वे १०वीं कक्षा तक अपने अधीन विद्यालयों में अनिवार्य रूप से हिन्दी पढ़ा सकते हैं। बोर्ड की भाषा नीति के अन्तर्गत १०वीं कक्षा तक अनिवार्य रूप से हिन्दी पढ़ाने के लिए प्रशासन पर प्रतिबन्ध नहीं है। केन्द्रीय विद्यालय और नवोदय विद्यालय इसका स्पष्ट उदाहरण हैं जहां अनिवार्यत हिन्दी १०वीं कक्षा तक पढ़ाई जा रही है। निर्धारित योजना के तहत दिल्ली प्रशासन और अन्य संस्थान भी निश्चित रूप से इनका अनुकरण कर सकते हैं।

निगम शिक्षा समिति के पूर्व अध्यक्ष, श्री महेश चन्द्र शर्मा ने पत्रकारों को बताया कि उन्होंने तथा अनेक हिन्दी प्रेमियो ने मानव ससाधन मन्त्री, केन्द्र सरकार, प्रधानमन्त्री भारत सरकार, शिक्षा मन्त्री, दिल्ली सरकार तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को पत्र लिखे थे, जिसमें दिल्ली के स्कूलों में १०वीं कक्षा तक राष्ट्रभाषा हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाना अथवा त्रिभाषा फार्मूला लागू करने की प्रार्थना की थी। इसी पत्र के उत्तर में बोर्ड ने अपने ७-६-१९९५ के पत्र द्वारा उपर्युक्त जानकारी दी है।

श्री महेश चन्द्र शर्मा के अनुसार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पत्र में यह भी स्पष्ट किया गया है कि १२वीं कक्षा तक दो भाषाओ मे से एक भाषा हिन्दी को अथवा ऐच्छिक विषय के रूप मे रखा जा सकता है। बोर्ड किसी भी विद्यालय या शासन या विद्यार्थी को ऐसा करने से वर्जित नहीं करता है।

बोर्ड ने अपने पत्र मे यह सूचना भी दी है कि त्रिभाषा फार्मूला में सस्कृत के स्तर तथा उसे पढ़ाये जाने के सन्दर्भ में बताया गया है कि कक्षा ९ तथा १० मे सस्कृत का स्थान एक ऐच्छिक भाषा के रूप में प्रदान किया गया है तथा विद्यालयों, सस्थाओं को यह सुविधा प्रदान की गई है कि दो भाषाओं के रूप में अथवा अंग्रेजी के अतिरिक्त सस्कृत को भी ऐच्छिक भाषा के रूप में लिया जा सकता है। अत: बोर्ड की त्रिभाषा नीतियों में हिन्दी तथा संस्कृत को उचित तथा वांछित स्थान दिया गया है।

वधू की आवश्यकता है

२९ वर्षीय नवयुवक, बी. काम पास, एयरफोर्स (एकाउंट विभाग) में कार्यरत, वेतन रु. ४०००/-मासिक, कद ५ फुट १० इंच, रंग सफेद, पूर्ण शाकाहारी, स्वस्थ शरीर, (पहली पत्नी की दुर्घटना मे मृत्यु जिससे चार वर्ष का पुत्र है), सम्पन्न परिवार, मकान अपना (चार मंजिला) के लिए, अविवाहित, विधवा व तलाक शुदा-सुशील, गृह कार्य मे निपुण, सुन्दर वधू की आवश्यकता है।

निम्न पते पर फोटो सहित पत्र-व्यवहार एव सम्पर्क करें।

फोन नं० —४६११४०८ रामसरनदास आर्य
ओ-१७ बी. जंगपुरा विस्तार नई दिल्ली-१४

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ।-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि०नं० डी० (एल ११०२४)-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८ अंक ३७ रविवार, २३ जुलाई १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द : १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

दूरदर्शन पर राष्ट्रीय भावनाओं का सम्मान हो

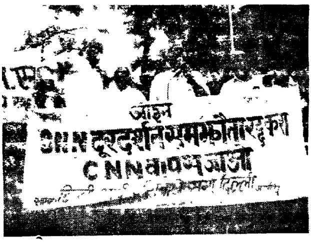
राष्ट्रविरोधी समझौता रद्द किया जाए : पहला प्रसारण राष्ट्रविरोधी था

अमेरिकी राजदूत को आर्यसमाज का ज्ञापन : दूतावास के सम्मुख आर्यजनता का सामूहिक प्रदर्शन

नई दिल्ली । १३ जुलाई, १९९५ को प्रात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियो ने भारत मे सयुक्त राज्य अमेरिका के राजदूत श्री विसनर को एक सयुक्त ज्ञापन देकर माग की कि भारतीय राष्ट्र और जनता की भावनाओ का सम्मान करते हुए समुचित प्रसारण किया जाए । पहले दिन के प्रसारण मे ही गौओ और कश्मीर का सीमा सम्बन्धी प्रसारण भारतीय भावनाओ के प्रतिकूल था ।

प्रदर्शनकारियों का सम्बोधन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाहा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री सूर्यदेव जी, महामन्त्री डा० धर्मपाल जी, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० शिवकुमार शास्त्री और डा० महेश विद्यालकार आदि ने किया ।

इस अवसर पर दिल्ली की आर्यसमाजो, स्त्री आर्यसमाजों आर्य विद्यालयो, महाविद्यालयो, गुरुकुलो के प्रतिनिधि, सदस्य, कार्यकर्ता विद्यार्थी एकत्र हुए थे । आर्य समाज का यह स्मरण-पत्र प० वन्देमातरम्, श्री सूर्यदेव जी, डा० धर्मपाल जी और श्री सोमनाथ मरवाहा ने सयुक्त रूप से अमेरिकी राजदूत विसनर को प्रस्तुत किया ।



आर्यसमाज का ज्ञापन इस प्रकार है

हम, आर्य समाज के सदस्य, अमेरिका की प्राईवेट सस्था सी एन. एन. केबल न्यूज नेटवर्क के एक अविवेकपूर्ण कार्य के विरोध मे यह छोटा-सा ज्ञापन प्रस्तुत करना चाहते हैं ।

यह अविवेकपूर्ण कार्य सी. एन. एन. द्वारा दिनांक १०-६-९५ को दूरदर्शन के चेनल संख्या १४ पर प्रसारित कार्यक्रम से सम्बन्ध रखता है । इसमें "जम्मू-कश्मीर" को पाकिस्तान का भाग दिखाया गया था । तथा कुछ लावारिस गायों को बम्बई शहर की एक भीड़भाड़ वाली सड़क पर घूमते हुए दर्शाया गया था ।

बाद में सी. एन. एन. के उप-प्रधान ने स्वीकार किया कि वे गायो के बारे में कुछ भारतीयो की सवेदनशीलता को नही समझ सके थे, लेकिन उनके सूचना प्रसारण मे जम्मू-कश्मीर को पाकिस्तान का अंग नहीं दिखाया गया था ।

हमारा कहना है कि उनका यह प्रतिवाद हास्यास्पद है । स्पष्टत: एक बड़े गैर सरकारी प्रतिष्ठान के उप-प्रधान स्वय पैदा की हुई एक गलत-स्थिति से अपने आपको बचाकर निकालना चाहते हैं ।

यह केवल असावधानी या भूल का मामला नही है । लगभग १,६०,००,००० से अधिक टेलीविजन देखने वालों ने इसे देखकर सी०एन०एन० के इस कार्य की निन्दा की और इसे दुष्टतापूर्ण बताया । इस दशा में सी. एन. एन. के उप-प्रधान के प्रतिवाद पर विश्वास करना असम्भव हो जाता है ।

सी. एन. एन. ने जान बूझकर तथ्यो को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया है।

महामहिम की कश्मीर यात्रा, उसके लिए व्यापक तैयारिया किया जाना; तथा उसे अत्यधिक प्रचारित करना, वह भी उस समय जब भारत सरकार जम्मू-कश्मीर में चुनाव कराने के लिये तैयार थी, हमे यह सोचने के लिये बाध्य करते हैं कि इस सम्पूर्ण नाटक के परोक्ष मे कुछ न कुछ ऐसा है जो भारत की अखण्डता और सुरक्षा के लिये अशुभ है ।

कश्मीर भारत का अभिन्न अग है पहले यह एक देशी रियासत थी जिसका राजा हिन्दू था, जिसने एक विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके भारत गणराज्य में अपनी रियासत का विलय स्वीकार कर लिया था । यह प्रदेश आज जल रहा है । पाकिस्तानी सेना, अनेक रगो के मुस्लिम आतंकवादी, भाड़े के अफगान सैनिक तथा पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी आई.एस.आई. ये सभी वहा सक्रिय है।

इस सन्दर्भ मे हम लार्ड माउन्टबेटन का वह कथन प्रस्तुत करना उचित समझते हैं जो उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पत्रकार लेरी कालिन्स तथा डामिनिक लापिआरे के एक प्रश्न के उत्तर मे मार्च १९४७ में दिया था । उन्होने कहा था—

"ये (पाकिस्तानी) उसी क्षण समाप्त हो जायेंगे, जिस दिन अमेरिका उन्हे सहायता देना बन्द कर देगा ।"

और अब आपका देश (अमेरिका) पाकिस्तान का जन्म होने के दिन से ही उसे अपने प्रभाव का क्षेत्र बढ़ाने की दिशा मे पैर रखने के पत्थर के रूप में उपयोग कर रहा है ।

वर्तमान में, जम्मू कश्मीर को पाकिस्तान का एक भाग दिखाना, तथा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कल्याण-मार्ग का अनुसरण करें

सहृदय सामनस्यमविद्वेष कृणोमि व ।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्स जातमिवाघ्न्या ।

आप लोगों के लिए सहृदयता मन के उत्तम भावों और वैरहीनता मैत्री की आकांक्षा करता हूं। एक दूसरे से ऐसा स्नेहपूर्ण व्यवहार करो जैसा कि एक गौमाता अपने सद्य: प्रसूत बछड़े के लिए करती है।

सहृदयता, उत्तम मन तथा मैत्री भाव धारण कर एक दूसरे के प्रति स्नेह-भाव बढ़ाना चाहिए। इससे मानव मात्र का कल्याण हो सकेगा।

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु समना: ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ।।

पुत्र पिता के अनुकूल कार्य करने वाला हो, वह माता के साथ उत्तम मन वाला हो। पत्नी पति से मधुर और शान्त भाषण बोले।

पुत्र पिता के अनुकूल कार्य करे और वह माता के साथ शुद्ध मन से व्यवहार करे। पत्नी पति के साथ मधुर और शान्त संभाषण करे।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।

भाई-भाई से द्वेष न करे और बहन के साथ भी द्वेष न करे। सब परिजन एक विचार वाले और एक जैसे उत्तम कर्म वाले होकर कल्याण से परिपूर्ण वाणी का प्रयोग करें।

भाई-बहन आपस में द्वेष न करें। कुटुम्ब-परिवार के सब लोग एक हृदय से मिल-जुल कर अपना व्यवहार करें।

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथ: ।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्य: ।

हम ऐसा उत्तम ज्ञान आपके घर में—सब मनुष्यों के लिए करते हैं, जिससे परस्पर व्यवहार करने वालों में विरोध नहीं होगा और पारस्परिक द्वेष नहीं होगा।

घर के सब लोगों में इस प्रकार का ज्ञान देना चाहिए जिससे उनमें कभी विरोध न हो और उनमें सदा एक जैसा विचार रहे।

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्त: सधुराश्चरन्त: ।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्व: संमनसस्कृणोमि ।

तुम सब बड़ों का सम्मान करने वाले हो, विचारपूर्वक कार्यसिद्धि करने वाले हो, तुम लोग एक धुरी के नीचे चलने वाले हो, तुम लोग पृथक्-पृथक् न हो, आपस में विरोध न करो। एक दूसरे के साथ मनोहर संभाषण करते हुए प्रगति-पथ पर अग्रसर हो। तुम सब एक सन्मार्ग पर चलो, तुम सब उत्तम मन वाले बनो।

बड़ों का सदा सम्मान करो, सदा सोच-विचार कर कार्य करो, कार्य सिद्धि होने तक निरन्तर प्रयत्न करो, एक लक्ष्य की सिद्धि के लिए संलग्न हो जाइए। आपस में कभी विरोध और वैर न करो। सबको ऐसा ज्ञान दो जिससे सबके मन शुद्ध हों।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग: समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि ।
सम्यञ्चो ऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभित: ।।

आप का पेय एक जैसा हो, आपका भोजन एक जैसा हो तुम को एक साथ एक यान में जोड़ता हूं, तुम सब मिलकर अग्रणी भगवान् की आराधना करो जैसे एक नाभि में सब अरे जुड़े होते हैं।

आप सबका खान-पान का स्थल एक जैसा हो और सब मिलकर एक ही कार्य की सिद्धि में संलग्न हों। सब मिलकर भगवान् की आराधना करो और सब एक स्थान पर ही मिल-जुलकर बैठें।

सध्रीचीनान्व: संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्संवननेन सर्वान् ।
देवा इवामृतं रक्षमाणा: सायंप्रात: सौमनसो वो अस्तु ।। अथर्व ३।३०

तुम सब सेवा भाव से एक मार्ग से प्रगति पथ पर अग्रसर हो, तुम सब उत्तम मन वाले एक जैसे खान-पान वाले हो। अमृत की रक्षा करने वाले देवों के समान सायं-प्रात: आपके चित्त प्रसन्न हों।

अपने अन्दर दूसरों की सहायता का भाव रखो, एक कल्याण मार्ग है प्रगति पथ पर आगे बढ़ो, तुम उत्तम सुसंस्कार वाले मन बनाओ, आपस में एक जैसे खान-पान की व्यवस्था रखो। सदा मन को प्रसन्न रखो, इन सब कार्यों से आप कल्याण मार्ग का अनुसरण कर अमृतरूप सुख की प्राप्ति कर सकेंगे।

बोध-कथा

पतिव्रता नारी

गहरे अन्धकार से उबरते हुए युवक मुंशीराम को विशेष सहारा देने वाली एक पारिवारिक घटना थी। पिता ने मुंशीराम को अपनी धर्मपत्नी को बरेली से लाने के लिए घर भेजा। जालन्धर जाकर मुंशीराम अपनी पत्नी को बरेली ले आए। एक दिन मुंशीराम साथी-संगियों की कुसंगति में पड़ कर खूब पी गए। शराब ने अपना पूरा रंग जमाया, उसी नशे में दो मित्रों के भुलावे में पड़कर एक वेश्या के घर भी जा पहुंचे। उस समय तक केवल महफिलों में नाच-तमाशा। देखा था, पर वेश्या के घर जाने का पहला अवसर था। न जाने भीतर क्या भाव पैदा हुए कि वहां अधिक देर नहीं ठहरे। 'नापाक-नापाक' कहते हुए नीचे उतर आए।

घर पहुंचे, तब भी नशा नहीं उतरा था। बैठक में आकर तकिए पर सिर देकर पड़ गए। नौकर ने जूते उतारे। नौकर के सहारे ही सीढ़ियों से ऊपर गए। बरामदे में पहुंचते ही उल्टी होने लगी। पत्नी ने आकर संभाला, मुंह धुलाया और मैले कपड़े उतारे। बिस्तर पर लिटाकर माथा और सिर दबाना शुरू किया। घृणा, उपेक्षा या तिरस्कार की वहां गन्ध भी नहीं थी। स्नेहमयी माता की ममता, सहोदरा बहन का प्रेम, आदर्श पत्नी की भक्ति, स्वामी भक्त सेवक की सेवा और परोपकारी पुरुष की उदारता के सब भावों का उस व्यवहार में अभूतपूर्व मिश्रण था। न सोने वाले को भी ऐसे समय नींद आ जाए। मुंशीराम की पथराई आंखें गहरी नींद में बन्द हो गईं। रात के एक बजे नींद खुली तो शिवदेवी बैठी हुई पैर दबा रही थी। पानी मांगने पर देवी ने गरम दूध का भरा हुआ गिलास मुंह को लगा दिया। नशा दूर हुआ। उस समय तक बराबर जागने और भोजन न करने का कारण पूछने पर देवी ने कहा—"आपके भोजन किए बिना मैं कैसे खाती! अब इतनी देर में भोजन करने में कोई रुचि नहीं। मुंशीराम ने अपने पतन की सारी कहानी सुनाकर क्षमा मांगी तब देवी ने तुरन्त कहा—"आप मेरे स्वामी हो। यह सब सुना कर मेरे सिर पाप क्यों चढ़ाते हो? मुझे तो माता का उपदेश यही है कि आपकी नित्य सेवा करूं।"

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कल्याण मार्ग का पथिक, शीर्षक आत्मकथा में लिखी है "उस रात बिना भोजन किए दोनों सो गए और दूसरे दिन मेरे लिए जीवन ही बदल गया।"

—नरेन्द्र

आर्य समाज अशोक विहार-३ को दान दें

आर्य समाज मन्दिर निर्माण सोसायटी (पंजीकृत) ए-१०३
अशोक विहार फेज-३, दिल्ली-५२

कृपया आर्य समाज मन्दिर का निर्माण करने के लिए, वेदों के साहित्य का प्रचार करने के लिए तथा औषधालय खोलने के लिए धन द्वारा दान करें। क्रास चैक उपरिलिखित पते पर भेजें। आयकर छूट ८० जी के अन्तर्गत है। —हंसराज मदान

बोट क्लब पर श्री चुन्नीलालजी के भजनोपदेश

पिछले अनेक वर्षों से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों के कर्मचारियों के दोपहर के भोजन अवकाश के समय बोट क्लब पर संगीत के माध्यम से जन-जागरण का कार्यक्रम आयोजित कर रही है। पहली जुलाई से ११ जुलाई तक आर्य संगीतज्ञ श्री चुन्नीलाल श्री आर्य मनोरथ कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। चुन्नीलाल जी बीच में ११ से १३ जुलाई तक झुंझनू राजस्थान में प्रचारार्थ गए।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टय: सबभूवु: ।
यस्यामिद जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमि: पूर्वं पेये दधातु ॥अथर्व १२।१।३

समुद्र, नदियों और जल से भरी-पूरी पृथिवी जिसमें कृषि होती है, अन्न होता है, जिससे यह प्राणवान् संसार तृप्त होता है, वह पृथिवी हमे फलरूप रस देने वाले भूभाग में प्रतिष्ठित करे ।

सम्पादकीय अग्रलेख

राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे में

बात छोटी-सी थी, परन्तु इसका परिणाम कितना भयावह हो सकता है, इसकी संभवत: नीति-निर्धारकों को कल्पना नहीं थी । ३० जून के दिन दूरदर्शन नेटवर्क से अमेरिकी केबल न्यूज नेटवर्क (सी. एन. एन.) के उद्घाटन समाचार का मजा उस समय किरकिरा हो गया, जब इसके प्रसारण के पहले ही कार्यक्रम 'वर्ल्ड न्यूज' मे विश्व के मानचित्र पर कश्मीर को भारत का हिस्सा नही दिखाया गया और भारत की छवि के नाम पर महानगर बम्बई की सडको पर गायोंके एक रेवड द्वारा ट्रैफिक या यातायात जाम करते हुए दिखलाया गया । यद्यपि एक दिन बाद केबल न्यूज नेटवर्क के अधिकारियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था सम्बन्धी कार्यक्रम में बम्बई महानगर की सड़कों के रेवड़ से अवरुद्धहोने के प्रसारण के लिए भूल स्वीकार की, उन्होंने मौसम सम्बन्धी प्रसारण मे कश्मीर के नक्शे के प्रसारण को टाल दिया । सारी घटना छोटी-सी मालूम पड़ती है, परन्तु उसके व्यापक भयकर परिणाम हो सकते हैं । इस विदेशी कम्पनी ने अपनी मर्जी के हिसाब से दूरदर्शन नेटवर्क का एक मच के रूप मे इस्तेमाल किया है । स्वभावत जिज्ञासा होती है कि क्या पूर्वोत्तर और कश्मीर जैसे सवेदनशील क्षेत्रों के बारे में सी. एन. एन. के प्रसारण पर भारतीय दूरदर्शन और भारतीय अधिकारियों का नियंत्रण रहेगा ? वास्तविकता यह है कि इस अमेरिकी केबल न्यूज नेटवर्क के समाचार प्रसारण पर कोई भी सम्पादकीय नियन्त्रण नही है ।

उल्लेखनीय है कि यह पहला मौका है जब दूरदर्शन ने किसी निजी प्रसारण कम्पनी को पट्टे पर अपना चैनल दिया है । अमेरिकी नेटवर्क इनसेट-२ बी. पर दूरदर्शन के सी-१२ ट्रांसपोंडर पर चौबीसो घण्टे प्रसारण करेगा । दूरदर्शन को चार घन्टे के प्रसारण के लिए मात्र १५ लाख डालर का सालाना भुगतान किया जाएगा । दूरसचार, बिजली और प्रसारण नाजुक और राष्ट्रीय महत्व के क्षेत्र हैं । अपने सचार उपग्रह का एक चैनल बिना किसी टेण्डर के एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी केबल न्यूज नेटवर्क या सी एन एन को देना जहां आर्थिक दृष्टि से अव्यावहारिक है, वहां वह राष्ट्रीय हितों के भी सर्वथा विरुद्ध है । आज कई भारतीय प्रसारण कम्पनिया विदेशी उपग्रहो के चैनलों पर प्रसारण के लिए बड़ी धनराशि का भुगतान कर रही हैं, अच्छा तो यह होता कि सार्वजनिक टेण्डर आमन्त्रित कर उपयुक्त भारतीय कम्पनियो को उचित आर्थिक दरों पर प्रसारण का मौका दिया जाता, वैसा न कर नाममात्र की रकम पर एक बहुराष्ट्रीय अमेरिकी कम्पनी को भारतीय सचार माध्यमों के नेटवर्क पर प्रसारण की सुविधा देना जहां अनुचित है, वह राष्ट्रीय सुरक्षा को सकट मे डालने के कारण एक मूर्खतापूर्ण कदम है ।

हमे स्मरण रखना होगा कि कुछ शताब्दियों पूर्व विदेशी व्यापारी कम्पनियां भारत में व्यापारिक सुविधा के नाम पर देश के आई थी, उन्होंने हमारे मतभेदों और राष्ट्रीय कमजोरियो का लाभ उठा कर देश को पराधीन कर दिया था । भारतीय दूरदर्शन और अमेरिकी केबल न्यूज नेटवर्क का करार और उसके प्रारम्भिक प्रसारण हमे उस आसन्न विदेशी खतरे से सचेत कर रहे हैं । पहले ही प्रसारण में गायों का रेवड़ दिखाकर जिस तरह हमारी छवि को कलंकित किया गया और जिस प्रकार मौसम की खबरें देते हुए नक्शे में कश्मीर को भारत का अंग नहीं दिखलाया गया, उससे इन विदेशी कम्पनियों का भारत विरोध स्पष्ट उजागर हो जाता है । खेद है कि विदेशी व्यापारी कम्पनियों के संपर्क मे शताब्दियों पहले जो हमारी राष्ट्रीय कमजोरियां थीं, वे आज भी विद्यमान हैं । उस समय भी हमारे आपसी मतभेद और विरोध उग्र थे, इसी के साथ फ्रेंच और अंग्रेज व्यापारिक कम्पनियों ने हमारे ही देशवासियो को भाड़े का टट्टू बनाकर हमें आपस में लड़ा दिया । आज भी हमारे राजनेता आपसी स्वार्थों के सम्मुख राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा कर देते हैं । विभिन्न राजनीतिक दलो के नेता अपने स्वार्थों या क्षेत्रीय या सकुचित हितो के सामने राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा कर देते हैं । दूरदर्शन एव अमेरिकी केबल न्यूज नेटवर्क का प्रसारण सम्बन्धी करार छोटी बात नही है, राष्ट्रीय हितो की अनदेखी के कारण इससे भारत राष्ट्र की सुरक्षा को सकट पैदा हो गया है । भारतीय दूरदर्शन, प्रसार मन्त्रालय और भारत सरकार को इस राष्ट्रीय नीति के प्रश्न पर पुनर्विचार कर इस तरह के करार को वापस लेना चाहिए और भविष्य में ऐसे सवेदनशील राष्ट्रीय प्रश्नों पर आर्थिक हितों के स्थान पर राष्ट्रीय हित और राष्ट्रीय स्वाधीनता को सर्वोपरि स्थान देना होगा ।]

चिट्ठी पत्री

धृतराष्ट्र की चुप्पी

प्राचीन भारत मे महाभारत युद्ध होने का प्रमुख कारण धृतराष्ट्र थे, क्योंकि कौरवों के प्रमुख धृतराष्ट्र दुर्योधन की सभी अनुचित हरकतो के प्रति खामोश रहे और चुपचाप रहे, परन्तु इसका खामियाजा न केवल दुर्योधन को भुगतना पड़ा था, बल्कि धृतराष्ट्र भी अछूते नही रहे ।

इसी प्रकार अमेरिका (धृतराष्ट्र) पाकिस्तान (दुर्योधन) की अनुचित हरकतो के प्रति आंखें मून्दे बैठा है । चीन द्वारा पाक को एम-।। मिसाइलें देने पर भी क्लिण्टन मौन साधे बैठा है, प्रत्युत प्रेसलर कानून मे सशोधन कर पाकिस्तान को एफ-१६ लडाकू विमान देने की पेशकश की है ।

—नीतेश अग्रवाल २८, बगला बाजार, भिण्ड (म.प्र.)

समाधियां नहीं, संस्थान बनाइए

समाधियों पर अनाप-शनाप खर्च किया जा रहा है । कहा जाता है कि इन भव्य और महगी समाधियों से आम जनता को उनके जीवनो का अनुसरण करने की प्रेरणा मिलती है । महात्मा गाधी की समाधि तो लगभग चार दशक पहले बनी थी, उसके बाद समाधियां बन ही रही हैं, पर देश की हालत तो दिन पर दिन बिगडती जा रही है । क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि इन समाधियों से किसी को प्रेरणा नहीं मिली है? यदि मान भी लिया जाए कि कुछतो लाभ हुआ तो वह करोडों रुपए खर्च होने की एवज में नगण्य ही होगा । असल में इन समाधियों के निर्माण के पीछे स्पर्धा ही होती है । लोगों को प्रसन्न करने के लिए शासन समाधि बनवा देता है, पैसा आम आदमी का व्यय होता है ।

महंगी मूर्तिया और समाधिया नही इतिहास के पन्ने ही किसी व्यक्ति के काम का मूल्यांकन करते हैं । सत्ता-परिवर्तन होने पर लेनिन और स्टालिन की मूर्तिया गिरा दी गई । कितना अच्छा हो यदि महान् व्यक्तियों के नामों पर जनसेवी संस्थान बनाए जाए । शिक्षालय, चिकित्सालय, पुस्तकालय, खेल संस्थान; शोध-संस्थान आदि तो सदा ही देश की प्रगति मे अपना योगदान करते हैं, भले ही उनका नाम बदल जाए, तब व्यय भी सार्थक होगा, ये संस्थान अमुक-अमुक महान व्यक्ति के नाम का भी स्मरण कराते रहेंगे । यदि ये स्मारक संस्थान नेताओं के गृहनगरों मे बनाए जाए तो सारे देश मे प्रगति दीखेगी और दिल्ली समाधियों की महानगरी बनने से भी बच जायेगी ।

—सुकुमार, कैंटोनमेंट एरिया, भुरार, ग्वालियर (म०प्र०)

इन बच्चों का भविष्य

देश मे छह वर्ष की छोटी उम्र के लगभग छह करोड़ निर्धन बच्चे ऐसे हैं; जिन्हे माताओ के काम पर जाने के बाद परवरिश और देखभाल के सकट से जूझना पडता है । अनुमान लगाया जा सकता है कि ये बच्चे बड़े होकर क्या पढ़ेंगे या बाल-श्रमिक बनेंगे ? पहले ही बाल-श्रमिक लाखों की सख्या मे मौजूद हैं। उन्हे पढ़ना-लिखना छोडकर दस-दस घण्टे मजदूरी करनी पडती है । बाल-श्रमिकों मे ४० प्रतिशत लड़किया भी हैं । गरीबी और अशिक्षा के कारण ही बाल श्रमिकों की सख्या बढ़ी है । केन्द्र व राज्य सरकारें गरीबी दूर करने के वायदे तो करती हैं । लेकिन उन्हें पूरा कहा किया जाता है । जब तक गरीबी दूर नही होगी, बाल-श्रमिको की जटिल समस्या भी हल नही हो सकती ।

—शंकरलाल माहौर, १६।३ लाडली कटरा, शाहगंज, आगरा

आर्यो ! कभी तो सोचो ?

(उत्तमचन्द्र शरर)

हम लोग जो सदैव सत्संगों के पश्चात् 'संगच्छध्वं, संवदध्वम्' का पाठ करते हैं, आज आपस में इतना वैमनस्य लिए बैठे हैं, कि एक आर्य दूसरे आर्य को देखना भी सहन नहीं करता, और विडम्बना यह कि संगठन सूक्त का पाठ अब भी जारी है, कितनी विचित्र बात है ? आओ ! बन्धुओ, विचारो, क्या इस आचरण से वेद का प्रचार हो सकेगा ? क्या यह सच नहीं कि संसार कथनी को नहीं आज करनी को देखता है। हमारा व्यवहार तो वेद का पोषक नहीं है। काश। हम कभी विचार करें कि हम भगवान के पवित्र मिशन के साथ कितना अत्याचार कर रहे है।

ऋषि ने समाज में प्रजातन्त्रवाद को श्रेष्ठ जाना। धार्मिक क्षेत्र में गुरुडम के स्थान पर ऋषि ने हमारी योग्यता पर विश्वास किया और हमें सोचने और बोलने में स्वतन्त्रता दी, परन्तु आज हम ऋषि की उस देन का कितना दुरुपयोग कर रहे है 'यहां किसी का सम्मान सुरक्षित नहीं, बड़े से बड़ा विद्वान, संन्यासी भी दो कौड़ी का मूल्य नहीं रखता। हम पार्टीबाजी मे स्वय एक दूसरे को धूर्त बता रहे है, और किसी विधर्मी से न्याय मागते है कि हम मे कौन धूर्त है ! आर्य कहलाने वाले हम लोग अनार्यो का यह आचरण कब छोड़ेंगे ?

प्रजातन्त्रवाद में मतभेद होना स्वाभाविक होता है। विचारों की स्वतन्त्रता प्रत्येक के विचारों को सुनने का अवसर देती है, इससे मार्ग प्रशस्त होता है, परन्तु यह तब जब हम दूसरे के विचारो को सुनने का धैर्य रखते हों। आज इस सहनशीलता का हम में सर्वथा अभाव-सा लगता है। मतभेद तो स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज मे भी रहे, कई बातों में पं० लेखराम स्वय स्वामी श्रद्धानन्द की बात स्वीकार नहीं कर पाए, परन्तु इस मतभेद ने दोनों के कार्य में प्रगति दी, वहां कार्य मे आगे बढ़ने की होड़ थी, अदालतों मे जाने की नहीं। आज हम मत-भेद के उस उज्ज्वल रूप को भुला बैठे, जहां विचारों के भेद पर भी आपस के प्रेम मे कमी नहीं आती थी, जहां विरोध के होते भी महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों मे माथा झुका कर आर्यों के संगठन का ही नहीं, व्यक्ति के आर्यत्व का भी परिचय देते थे, परन्तु हम तो एक दूसरे के मिटाने पर तुल गए; आखिर इस का परिणाम ?

आर्यसमाज मे न्यायार्य सभा स्थापित है, हम ने कब अपने विवादो को उस को सौंपा ? क्या न्याय सभा से हम विधर्मी लोगों के न्यायालय को महत्व नहीं दे रहे ? सिख भाई तो अपने विवादो को गुरुद्वारों के ग्रन्थी के सम्मुख रख देते है और उसके निर्णय को एक मुख्यमन्त्री सिख भी स्वीकार कर लेता है, अपने मान-अपमान का विचार न करते हुए उस के निर्णय के अनुसार सगत के जूतें भी साफ करता है, अनुशासन तथा सगठन का यह रूप जातियों को जीवित रखेगा, या यह हमारा व्यवहार ?

आप हम न्यायालय मे खड़े है जो हमे शोभा नहीं देता। समाज का कोई सर्वमान्य नेता ऐसा नहीं, जो दोनो के कान खीच सके। आज हमारे पास महात्मा नारायण स्वामी नहीं, स्वा० स्वतन्त्रानन्द नहीं, स्वामी आत्मानन्द जी भी नहीं, जो हमारी अनुशासनहीनता को दबा सके, समाज के नेता इस कबड्डी में अपने जौहर दिखा रहे हैं जो प्रान्तवाद-जातिवाद की अग्नि को भड़का कर अपनी चौधरी चमकाने में व्यस्त हैं। हममें से प्रत्येक व्यक्ति इस 'सुअवसर को अपनी नेता गिरि चमकाने मे उपयोग कर रहा है, त्याग, तपस्या का कोई मूल्य नहीं"; समझ में नहीं आता, परिणाम क्या होगा ?

मैं आर्य समाज का नगण्य सेवक हू। यदि मेरी प्रार्थना समाज के पूज्य नेताओं तक पहुचे तो वे इस लड़ाई को बन्द करें, ताकि समाज का प्रचारक कहीं मुंह दिखा सके। हमे न्यायालय मे न जाकर घर मे बैठकर न्यायार्य सभा को यह विवाद दे देना चाहिए था, परन्तु यदि वे दुर्भाग्य से न्यायालय मे चले गए हैं, तो उसके निर्णय तक तो आर्य पत्रों मे एक दूसरे के ऊपर कीचड़ न उछाले ? अदालत के निर्णय तक तो मौन रहे ? हम लोग जो समाजो में जनता में प्रचार-कार्य में लगे है, कहीं बात करने का साहस भी नहीं कर पा रहे।

क्या इस प्रार्थना को हमारा नेता वर्ग सुन सकेगा ?

सूर्य की एक किरन भी कहीं दिखती तो नहीं।
फिर भी आशा है बड़ी, अब भी उजाला होगा।।

धर्म-देश की रक्षा करना शुभ कर्त्तव्य हमारा है !

—भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर
प्रधान नगर आर्य समाज

ससार-शिरोमणि भारत का यह कैसा दुखद नजारा है।
आतंकवाद हिंसा अधर्म का भारत में विस्तारा है।।
कश्मीर मे आए दिन हमले पर हमले होते हैं।
जनता क्या सैनिक भी अपने प्राणों को खोते हैं।।
बड़े-बड़े नेतागण को आतंकवादी ने मारा है।। संसार···

मुस्लिम तुष्टिकरण नीति का ही परिणाम है यह।
इनके वोट बटोरने हेतु कांग्रेस का काम है यह ।।
आतंकवाद अलगाववाद पनपा इन्हीं के द्वारा है।। संसार··
टी०वी० द्वारा मारधाड़ के दृश्य दिखाए जाते हैं।
अपराध भयंकर करने की भी सभी कला सिखाते हैं।।
न जाने क्यो टी०वी० ने इस देश का नाश विचारा है।। संसार···

बलात्कार अपहरणों की होती आऐ दिन घटनाए।
अत्याचारों से पीड़ित असहाय सहस्रों अबलाएं।।
नग्न नारि को टी०वी० ने बाजार के बीच उतारा है।। संसार···
व्यापार बनी शिक्षा व चिकित्सा इसमे लूट मची भारी।
बिना डाक्टर, बिना दवा मरते हैं सहस्रों नर-नारी।
दीन-दुखी से प्रेम नहीं, इनको केवल धन प्यारा है।। संसार···

पुलिस और न्यायालय से न्याय न मिलने पाता है।
रिश्वतखोरी महगाई से मानव पिसता जाता है।।
राजनीति के कुटिल जनो का चमका खूब सितारा है।। संसार···
घोर अन्धविश्वास अभी तक भी न मिटने पाते हैं।
मूर्त्त समाधि, कब्र और पाषण पे शीश झुकाते हैं।।
ओम् सच्चिदानन्द प्रभु पर से विश्वास बिसारा है। संसार···

लोग तुले हैं भारत को मुस्लिम-ईसाई बनाने को।
हे आर्यजनो तुम शीघ्र बढ़ो यह षड्यन्त्र मिटाने को।।
धर्म देश की रक्षा करना शुभ कर्त्तव्य हमारा है। संसार···

१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर

ओजस्वी भजनोपदेशक कु. जोरावरसिंह दिवंगत

जीवन का अधिकांश भाग महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार मे अर्पित करने वाले आर्य के सेवा भावी कवि कार्यकर्त्ता ओजस्वी भजनोपदेशक कुंवर जोरावरसिंह का आकस्मिक देहावसान होगा गया।

कुंवर साहब की वाणी मे माधुर्य और ओज था, उन्होंने अपनी धर्मपत्नी विदुषी स्नातिक प्रभावती जी के साथ पूरा जीवन समाज के प्रचार-प्रसार में लगाया था। कुछ वर्ष पूर्व प्रभावती जी का निधन हो गया था। इस आर्य दम्पती के प्रचार-प्रसार की विदेशों में भी महती छाप थी। श्री कुवर जोरावरसिंह और उनकी विदुषी पत्नी प्रभावती जी का अभाव आर्य सामाजिक क्षेत्र मे चिरकाल तक अखरेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिवंगत कुंवर जी के निधन पर अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत कर दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

सात समंदर पार भाषा और संस्कृति की रक्षा

प्रो० माजदा असद

लगभग १५० वर्ष पूर्व अंग्रेज गन्ने की खेती के लिए भारतीय मजदूरों को उल्टा-सीधा बहका कर और सब्ज बाग दिखाकर त्रिनीडाड और टोबैगो ले गए थे, किन्तु उन्होंने अपने परिश्रम, निष्ठा और लगन से उद्योग और कृषि में काफी उन्नति कर ली तथा अब वे आर्थिक तौर पर खुशहाल और सम्पन्न हैं।

मजदूर होते हुए भी वे स्वाभिमानी थे और उन्होंने अपनी सस्कृति व भाषा को न केवल जीवित रखने का अपितु उसे आगे बढ़ाने का पूरा प्रयत्न किया। वे अपनी जड़ों के साथ जुड़ा रहना चाहते थे और भारतीय होने पर गर्व करते थे। हिन्दुस्तान और हिन्दी के प्रति यहां बसने वाले भारतीयो के मन में जो श्रद्धा अपनापन और उत्साह है, उसकी पहचान वहा पहुंचकर ही होती है। वहा भारतीय विद्या सस्थान में सेवाभाव से अनेक लोग लगे हैं। सारे शिक्षक और शिक्षिकाएं अवैतनिक रूप से काम करते हैं। प्रो० फेसर हरिशंकर आदेश ने वहा आदेश आश्रम की स्थापना की थी। उसमें अनेक अध्यापक, अध्यापिकाएं और छात्र हैं। आज भारतीय विद्या संस्थान अनेक स्थानों पर हिन्दी सिखाने का काम कर रहा है। हिन्दी के अनेक वर्ग चलते हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास आदि की परीक्षाओं की व्यवस्था यहां की जाती है।

हिन्दी का नवजागरण

प्रवासी भारतीयों के मन में हिन्दी भाषा के लिए अपार अनुराग है। वे उसके विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। उनके सामने भाषा को लेकर अनेक बाधाएं और कठिनाइयां रही हैं। यहां हिन्दी को योजनाबद्ध तरीके से हटाया गया। वहा के स्कूलों मे हिन्दी वैकल्पिक विषय के रूप मे पढ़ाई जाती थी, उसे खत्म कर उसकी जगह स्पेनिश और फ्रेंच पढाई जाने लगी। यो भी उपनिवेशवाद को बनाए रखने के लिए हिन्दी को हटाकर उसकी जगह अंग्रेजी का प्रभुत्व बढ़ाया गया। इसलिए वहा के रहने वाले अंग्रेजी का प्रयोग अपने कामकाज में करते हैं। हिन्दी समझते हैं लेकिन बोलने मे झिझकते हैं। फिर भी हिन्दी के प्रचलन और उसके पठन-पाठन को बढ़ावा देने में अनेक व्यक्ति और सस्थाएं प्रयासरत हैं। इस कार्य के लिए 'हिन्दी निधि' की स्थापना कुछ लोगो ने मिलकर अप्रैल २६ १९८६ को की। इसके संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है कि हिन्दी विश्व की एक प्रभावशाली भाषा है। विश्व की भाषाओं मे इसका तीसरा स्थान है। त्रिनीडाड और टोबैगो में हिन्दी की दीर्घकालीन परम्परा है, इसलिए नहीं कि धर्म आचरण के लिए इसका उपयोग होता है, बल्कि कला, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा तथा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के विकास में भी यह भाषा काम में आती है। इस समय हिन्दी का समाज मे स्वस्थ नवजागरण हो रहा है।

हिन्दी निधि ने अप्रैल, १९९२ मे अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया था। इस सम्मेलन मे संकल्प लिया गया कि हर परिवार कम से कम एक घण्टा पूरी बातचीत हिन्दी मे करे, तभी हिन्दी का आसानी से अभ्यास हो सकेगा। वे भले ही त्रिनीडाड मे हो लेकिन अपनी भाषा व सस्कृति के प्रति पूरी तरह सचेत और जागरुक हैं। वे अपने घरो को भारतीय वातावरण और भारतीयता से जुड़ी भाषाओ से अलकृत करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि वे हिन्दी सीखें और हिन्दी बोलें।

स्वतन्त्र रहना चाहो तो हिन्दी सीखो

हिन्दी निधि के कार्यकर्ताओं के प्रयत्नो से हिन्दी का विकास, पाठशालाओ, रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से हो रहा है। हिन्दी के विकास के लिए हिन्दी इन्स्टीट्यूट स्थापित किए जाने की योजना भी थी। प्रयत्न यह भी है कि हिन्दी को राष्ट्रीय जीवनपद्धति का ही एक अंग न बनाया जाए बल्कि समग्र विश्व के सन्दर्भ मे एक महती भाषा के रूप मे इसकी पहचान हो। इस बात का पता विशेष रूप से इस सम्मेलन को देखने से लगा कि हिन्दी के प्रति उनमें कितनी ममता है। सम्मेलन का आरम्भ हिन्दी प्रार्थना के माध्यम से हुआ। "हिन्दी सीखें हिन्दी सीखो, हिन्दी को प्यार करो, तुम स्वतन्त्र रहना चाहो तो, हिन्दी सीखो।" इस सम्मेलन में तीन महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। अध्यक्ष बंका सीताराम ने कहा हिन्दी अछूतों की भाषा नहीं। अंग्रेजी का विश्व में प्रभाव भले बढ़े, एक समग्र विश्व संस्कृति की भाषा हिन्दी ही हो सकती है, इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ को अपनी सूची मे हिन्दी को एक विश्वभाषा के रूप में जोड़ना चाहिए। सम्मेलन ने जोरदार ढंग से मांग की कि सयुक्त राष्ट्र सघ हिन्दी भाषा को स्वीकार किए बिना अधूरा है।

(दैनिक जागरण के १ जून १९९५ के अंक से साभार)
प्रेषक—जगन्नाथ, संयोजक, राजभाषा कार्य, दिल्ली-३१

किशोर डाक्टर

विश्व के सर्वाधिक अल्पवयस्क चिकित्सक : बालमुरली कृष्ण अम्बाटी

क्या आप जानते हैं कि सत्रह वर्षीय डा० बालमुरली कृष्ण अम्बाटी विश्व के सर्वाधिक अल्पवयस्क चिकित्सक हैं। पिछले दिनों न्यूयार्क में निवास करने वाले भारतीय तेलगू किशोर तिरुपति में दर्शन के लिए जाते हुए मद्रास से गुजरे थे। उन्हें अपने गाव में भी जाना था। उल्लेखनीय है चार साल पहले तेरह वर्ष की उम्र में न्यूयार्क विश्वविद्यालय के इतिहास में सबसे कम उम्र के ग्रेजुएट बनकर इस किशोर ने ख्याति पाई थी।

विगत १९ मई के दिन अम्बाटी को न्यूयार्क के मेडिसिन के माउण्ट सिनाई स्कूल से चिकित्सा की डिग्री मिली थी। उसने १८ वर्ष की उम्र मे ग्रेजुएट बनने वाले एक इजराइली चिकित्सा विद्यार्थी का रिकार्ड तोड़ दिया था। ११ वर्ष की उम्र मे हाईस्कूल की पढ़ाई खत्म करने वाले इस चमत्कारी किशोर ने पत्रकारों को बतलाया ससार का सबसे कम उम्र का डाक्टर बनने के लिए उन्हें हर पड़ाव पर सघर्ष करना पडा। भारत मे सामान्य धारणा है कि अमेरिकी शिक्षा प्रणाली उदार है। इसमें विपरीत उनके पिता को नौकरशाही लाल फीताशाही की रुकावटों से जूझने के लिए अनेक प्रतिवेदन देने पड़े।

अम्बाटी ने विद्यालय का दो वर्षों का कार्यकाल एक सत्र मे ही पूरा कर दिया था, फलत: उनके पिता को प्रतिवर्ष महापौर (मेयर) के दफ्तर मे जाना पडता था, क्योंकि कई बार वे मेरी कडी मेहनत को स्वीकार नहीं करते थे। छह फुट, दो इंच ऊंचे, प्रतिदिन बालमुरली तीन घण्टा अध्ययन करते थे। उनके अनुसार आप कितने घण्टे पढ़ने मे लगाते हैं, इसकी अपेक्षा उन घण्टो मे क्या करते हैं, उसकी अधिक महत्ता है।

अम्बाटी के पिता मोहनराव भारतीय प्रौद्योगिकी सस्थान मद्रास के प्राध्यापक रहे हैं और उनकी माता गोमती तमिल की विदुषी हैं। बालमुरली जब तीन साल के थे, उनके माता पिता अमेरिका चले गए थे, उनके बड़े भाई डा० जय कृष्ण अम्बाटी ने भी शैक्षणिक क्षेत्र मे अच्छी ख्याति पाई है। अम्बाटी बन्धुओं ने एड्स की रोकथाम के लिए एक पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ का प्रणयन भी किया है।

नत्थूपुर मधुबन मऊ में शहीद स्मारक चिकित्सालय बनेगा

सन् बयालिस के स्वातन्त्र्य सैनिको और शहीदो की स्मृति मे उत्तर प्रदेश के मऊ जिले के नत्थूपुर मधुबन मे महर्षि दयानन्द चादकरण शारदा अस्पताल बनाने का संकल्प किया गया है। इस चिकित्सालय मे रोगियो की चिकित्सा एवं सुश्रूषा के लिए अनेक कमरो का निर्माण किया जाएगा, जिस पर लाखो रुपयों की धन राशि लगेगी। यहा शहीदो की स्मृति मे १० मंजिला कीर्तिस्तूप बनाने का भी विचार है।

यहा सवा लाख गायत्री यज्ञ के करने का संकल्प किया गया है। उद्घाटन कार्यक्रम के लिए विश्व धर्म ससद के अध्यक्ष आचार्य प्रभाकर मिश्र को आमन्त्रित किया गया है। यज्ञ के उद्घाटन के समय पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर जी, पूर्व खाद्यमन्त्री श्री कल्पनाथ राय, उ० प्र० के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा, कुंवर चादकरण जी शारदा की पुत्री श्रीमती सरलाबाई को आमन्त्रित किया गया है।

समिति के सयोजक झण्डाधारी धर्मवीर जी आर्य ने केन्द्र, प्रान्तीय सरकारों और जनता से अस्पताल के निर्माण के लिए धन की अपील की है।

वेद पर निराधार धारावाहिक का प्रसारण रोक दो

तपोवन के सन्तों और साधकों का आह्वान

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (देहरादून) में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज योगाचार्य के सभापतित्व मे सन्तों और साधकों ने सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किया है—

"दूरदर्शन के लिए बनाए जा रहे वेद—विषयक सीरियल (धारावाहिक चलचित्र) का समाचार प्रकाशित हुआ है। वेद को आदि सृष्टि मे परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान के रूप मे करोड़ों लोग मानते हैं। महाभारत के बाद आए अज्ञानान्धकार के युग मे वैदिक परम्परा से अनभिज्ञ लोगों ने वेद के अश्लील और निराधार भाष्य किए थे, जिनके आधार पर पाश्चात्यों ने यूरोपीय भाषाओं में भी अनुवाद किये है जो असभ्य और असहनीय हैं।

यह सभा भारत सरकार से अपेक्षा करती है कि वह निराधार, अयथार्थ, अश्लील भाष्यो के आधार पर कोई धारावाहिक देशी/विदेशी चैनल पर प्रसारित होने से रोक दे अन्यथा करोड़ों वेद-भक्तो की भावनाओं के आहत होने से अशांति से बचना कठिन हो जाएगा।"

तपोवन में सन्त-शिविर सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (देहरादून) मे श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज के निर्देशन में दो सप्ताह का प्रशिक्षण-शिविर सम्पन्न हुआ। इसके दो उद्देश्य थे—

१. जो साधक नैष्ठिक ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ अथवा सन्यासी बनना चाहते हों उन्हें, योग, वैदिक सिद्धान्त, आयुर्वेद तथा वक्तृत्व का प्रशिक्षण देकर समाज-सेवा के लिए तैयार करना,

२. जो साधक वानप्रस्थ या संन्यास की दीक्षा ले चुके हैं, परन्तु अपने अन्दर समाज सेवा के लिए आवश्यक विद्या आदि की कमी अनुभव करते हैं, उनकी उस कमी को दूर कराना।

शिविर तपोवन के बाद योगधाम, ज्वालापुर में भी दो सप्ताह चला। १२ जुलाई को योगधाम में इसका समापन हुआ और कुछ साधकों को नैष्ठिक ब्रह्मचारी वानप्रस्थी सन्यासी की दीक्षा दी गई।

—देवव्रत वाली

प्रिंसिपल दत्तात्रेय बाव्ले सम्मानित

आर्यसमाज की छत्रछाया में एक अनाथ श्रेष्ठ आर्य विद्वान् बना

आर्यसमाज सांताक्रुज ने दिनांक ४ जुलाई, १९९५ को एक विशाल समारोह मे प्रिन्सिपल दत्तात्रेय बाव्ले अजमेर को श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया। गांव गंगापुर महाराष्ट्र मे जन्मे प्रिन्सिपल बाव्ले को उनके परिवार जनो ने ११ वर्ष की अवस्था मे दयानन्द-अनाथालय अजमेर में छोड़ दिया। आर्यसमाज की छत्रछाया मे ही वह पलकर और पढ़कर बड़े हुए और आर्यसमाज अजमेर की शिक्षण संस्थाओ के विकास मे उनका अद्भुत योगदान रहा। लगभग २५ वर्षों तक वह दयानन्द कालेज अजमेर के प्रिंसिपल रहे और पश्चात आर्य शिक्षा सभा के प्रधान पद पर आज तक सुशोभित हैं। प्रिंसिपल जी के प्रयासो के परिणामस्वरूप आज आर्य शिक्षा सभा के अन्तर्गत २० शिक्षण संस्थाए चल रही हैं जिनमे लगभग ७००० विद्यार्थी पढ़ रहे हैं व लगभग ५० करोड की अचल सम्पत्ति है। इस शिक्षा सभा का वार्षिक बजट ढाई करोड़ रुपयों का है व उसमे लगभग ८०० कर्मचारी कार्यरत हैं।

श्री बाव्ले १९५० मे लीडर एक्सचेंज नामक सामाजिक व शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम मे तीन महीने अमरिका मे रहे और ब्रिटिश काउंसिल के निमन्त्रण पर इंग्लैंड व यूरोप गये। वह एक प्रसिद्ध शिक्षाविद्, समाज सुधारक, हैं अजमेर नगर परिषद के तीन बार सदस्य रहे व तीन वर्ष वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा लगभग ४ वर्ष तक प्रथम श्रेणी के आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे।

हिन्दी व अंग्रेजी भाषा मे उन्होने ४० से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उन्होने राष्ट्र के पुनर्निर्माण व उन्नति का श्रेय स्पष्ट रूप से महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज को दिया।

पुरस्कार समारोह में प्रि० दत्तात्रेय बाव्ले को श्रीफल व चन्दन, रजत ट्राफी एवं १५००१/-की थैली से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वर्गीय मेघजी भाई की स्मृति मे प्रारम्भ किए गए पत्राचार मीमांसा दर्शन पाठ्यक्रम का विमोचन किया गया जिसके संचालक एवं सूत्रधार डा० सोमदेव शास्त्री हैं। गत वर्ष के पाठ्यक्रम में सर्वोत्तम अंक प्राप्त विद्यार्थियो को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने समारोह की अध्यक्षता की। मस्कत निवासी श्री कनक भाई आसर विशेष अतिथि के रूप उपस्थित थे। बम्बई के महापौर श्री रा०व० कदम समारोह मे आये थे। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० मनमोहन जी विद्यासागर को भी शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया।

चार साधना शिविर सम्पन्न

आचार्य आर्यनरेश वैदिक प्रवक्ता की अध्यक्षता में उद्गीथ साधनास्थली हिमाचल में १० मई से १८ जून तक प्रभु भक्ति, देशभक्ति, साधना के चार शिविर सम्पन्न हुए। इन शिविरों में हिमाचल, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, चण्डीगढ़ और पंजाब राज्यों के २०० साधको ने साधना की।

इस अवसर पर प्रभात आश्रम मेरठ के विद्वान् सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी, वनस्थली विद्यापीठ जयपुर की डा० कुसुमलता, ज्वालापुर के स्वामी दिव्यानंद जी, गुड़गांव हरियाणा के पं०जयदेव जी, प०वेदभानु जी, महिला आश्रम दिल्ली की वेदवक्ता चन्द्रप्रभा शास्त्री, ओरैया कानपुर की डा० आशा, हिमाचल के व्यायाम-शिक्षक श्री रामफल आदि ने साधकों का पथ-प्रदर्शन किया।

प० मामचन्द आर्य और श्री हरिश्चन्द्र आर्य ने मधुर गीत प्रस्तुत किए। इन साधना-शिविरों मे वैदिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें कर्मकांड; स्वास्थ्य रक्षा, ईश्वर का सच्चा स्वरूप, आर्यराज्य, समाज-सुधार, सामाजिक कुरीति निवारण, संस्कृत शिक्षण, शुद्ध वेदपाठ शिक्षण, योगदर्शन, मनुस्मृति; ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, प्राणायाम, व्यायाम आदि की शिक्षा दी गई। चाय-लाल मिर्च के बिना सात्विक शुद्ध भोजन सब ने किया।

चुनाव समाचार

आर्यसमाज विवेक विहार । ११ जून को चुनाव हुआ । प्रधान-श्री जगदीश चन्द्र शर्मा, उपप्रधान-श्री रूपचन्द कथूरिया, उपप्रधान (सत्कार)-डा० कृष्ण गोयल, मन्त्री-श्रीमती मनोरमा चौधरी, मन्त्री (प्रचार)-श्री धर्मलाल वर्मा, मन्त्री (मवन)-श्री सत्यपाल मलहोत्रा, कोषाध्यक्ष-श्री आसाराम पोपली, आयव्यय निरीक्षक-श्री यशपाल, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्रीमती विमला मिहल, ५ अन्तरग सदस्य चुने गए ।

आर्यसमाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश—प्रधान-श्री मोहिन्द्र प्रताप, मन्त्री श्री प्राणनाथ चड्ढ, कोषाध्यक्ष-श्री अर्जुननाथ मल्ला ।

आर्यसमाज कीर्तिनगर । प्रधान-श्री शिवभगवान लाहोरी, उपप्रधान-सर्वश्री विश्वनाथ मदीन, वीरसेन मुसी, रामगोपाल कथूरिया, मन्त्री श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, उपमन्त्री-सर्वश्री विश्वपाल, ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री जितेन्द्र खरबन्दा, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री अमरलाल बजाज, लेखा निरीक्षक-श्री विनय बजल ।

आर्यसमाज मन्दिर चूना मण्डी, पहाड़गंज । निश्चय किया गया कि वर्तमान पदाधिकारी अपने पदों पर पूर्ववत् बने रहेंगे ।

—**आर्यसमाज नौरोजी नगर** । प्रधान-श्री स्वदेश कुमार, उपप्रधान-श्रीमती शकुन्तला मलहोत्रा, श्री सत्यकाम जी, मन्त्री-श्री मनोहरलाल चौधरी, उपमन्त्री-श्री सत्यपाल सैनी, श्रीमती मीरा शर्मा, कोषाध्यक्ष-श्री राजीव कपूर, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री नरेन्द्र कुमार मेहता, लेखा निरीक्षक-श्री धर्मेन्द्रपाल सेठी ।

—**आर्य समाज दिलशाद गार्डन, दिल्ली-९५** । संरक्षक-श्री रेमलदास अरोड़ा, श्रीमती कृष्णा शर्मा, प्रधान-श्री विश्वमित्र साहनी, उपप्रधान-सर्वश्री रामप्रकाश कपूर, सोमदेव कथूरिया, राणा सेठ, विनोद वालिया, मन्त्री-श्री रामचन्द्र, उपमन्त्री श्रीमती राज लूथरा, श्री सुरेश मुखीजा, कोषाध्यक्ष-श्री कृष्णलाल आहूजा रवीन्द्र बजाज, लेखा निरीक्षक-श्री प्रेमचन्द भण्डारी । ग्यारह अन्तरंग सदस्य चुने गए ।

राष्ट्रविरोधी समझौता रद्द करो

(पृष्ठ १ का शेष)

बम्बई की एक भीड़ वाली सड़क पर लावारिस गायो का घूमते हुए दिखाना अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अमेरिका की एक बहुत सोची समझी हुई चाल है।

इस प्रकार की चाल को हम भारत और अमेरिका के बीच एक नये प्रकार के सम्बन्ध के सूत्रपात के रूप मे देखते हैं जो आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा और हमारे लिये हानिकारक।

भारत के लोग इस प्रकार के सम्बन्ध को कभी स्वीकार नही करेंगे।

भारत की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है, एक ऐसी संस्कृति जहां मनुष्य को जानवर नहीं बनाया जाता है। आर्य समाज का उद्देश्य हो समस्त विश्व को एक उत्कृष्ट मानव समाज बनाना है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हमारा नारा है।

हम पुनः कहते हैं जम्मू-कश्मीर को पाकिस्तान का एक भाग दिखाना एक अशुभ लक्षण हैं। इससे भारत का विखंडन हो सकता है।

आपके क्षेत्र-वाद को बढ़ावा देने, ईसाई मिशनरियों को परोक्ष रूप से सहायता करके भारत को एक ईसाई देश बनाने, जिसका प्रभाव हम देश के पूर्वोत्तर प्रदेशों में देख रहे हैं, अमेरिकन स्कूलों की संख्या बढ़ाने और अंग्रेजी भाषा के प्रयोग और पाश्चात्य संस्कृति को लोकप्रिय बनाने की दिशा मे किए गये प्रयत्न कभी सफल नही होगे। सतर्क भारतवासी आपकी हर चाल का विरोध करेंगे।

हम विदेशी प्रसार-माध्यमों का, चाहे वे वित्तीय हो या अन्य प्रकार के, हम अपनी संस्कृति का नाश करने के लिए भारत में संस्थापित नहीं होने देंगे।

प्राचीन भारतीय विधि वेत्ता महाराज मनु ने कहा है, "आग की एक चिन्गारी सारे वन को जला देती है और विष की एक बूंद मनुष्य को मार डालती है।"

हम विदेशी प्रचार माध्यमों द्वारा अपनी संस्कृति, भाषा और मानवीय मूल्यों को चिन्गारी लगाकर भस्मीभूत नहीं करने देंगे।

हमें आशा है कि आप भारत वासियों की भावनाओं को समझते हुए, दोनों देशो में मधुर सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में उचित कार्य करेंगे।

वृक्ष मेरी आत्मा

मानव जाति के लिए वृक्ष की महत्ता उतनी ही है, जितनी कि शरीर के लिए आत्मा की। शरीर से आत्मा निकल जाए तो मानव का चोला मृतप्राय: हो जाता है। उसी प्रकार पृथ्वी से वृक्ष अगर समाप्त हो गया तो मानव जाति समाप्त हो जाएगी। वृक्ष परोपकारी होता है, जो सदैव अपने फल दूसरों को देता है, वह दूसरों के लिए ही पैदा होता है। पथिक-बटोही-राहगीर को छाया देता है, फल देता है तो पक्षियों को आश्रय। इस प्रकार वृक्ष फल, फूल देता है, सूखने पर भी वह लकड़ी के रूप में ईन्धन के रूप मे मानव के लिए उपयोगी होता है।

—गौरीशंकर तिवारी, महाबलीपुर, पटना, (बिहार)

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन।–३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि०नं० डी० (एल ११०२४/–९५

सान्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ३८ | रविवार, ३० जुलाई १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५२ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

दिल्ली की आर्यसमाजें वेदप्रचार सप्ताह आयोजित करें

अधिक से अधिक जन-सम्पर्क करें : कार्यक्रम सार्वजनिक स्थानों-मुख्य पार्कों में आयोजित हों

प्रतिष्ठित अधिकारी, प्रभावशाली नागरिक बुलाए जाएं : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आह्वान

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने एक पत्रक के माध्यम से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, आर्य सस्थाओं एव आर्य नागरिको से अनुरोध किया है :

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की एक बैठक शनिवार १५ जुलाई १९९५ को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली की अधिकांश आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। वेद प्रचार के सम्बन्ध में विचार करते समय निश्चय लिया गया कि दिल्ली की आर्यसमाजों से अनुरोध किया जाए कि वे वेदप्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक आयोजित करें। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजन-उपदेश तथा रात्रि को भजन तथा कथाओ के आयोजन रखें। हमे अपने कार्यक्रमों को आर्यसमाज मन्दिरों से बाहर सार्वजनिक स्थानों/मुख्य पार्कों में रखना चाहिए। इस अवसर पर अधिक से अधिक जनसम्पर्क करें। आर्यसमाज के अधिकारी/सदस्य तीन-तीन, चार-चार की टोली बनाकर जहां आर्यसमाज के सदस्यों को निमन्त्रण पत्र दें वही अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित दिल्ली सरकार तथा केन्द्र सरकार के उच्च अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारियो, प्रभावशाली व्यक्तियो को उनके पास जाकर निमन्त्रित करें। आर्यसमाज के अधिकारी उनसे मिलें और सरल भाषा में लिखा हुआ वैदिक साहित्य भेंट करें। कुछ पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं--१. टैन कमाडमैन्टस आफ आर्यसमाज-प० चमूपति एम०ए०; २. आर्यसमाज क्या है। ३. पूजा किसकी। ४. सुखी गृहस्थ-महात्मा आनन्द स्वामी ५. हितोपदेश, ६. सत्यार्थ प्रकाश।

आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद प्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित कर लें और सगीत कलाकारों तथा वैदिक विद्वानों को आमन्त्रित करें। अपने कार्यक्रमों में वैदिक साहित्य का अधिक वितरण करें।

आप अपने कार्यक्रमो की जानकारी सभा कार्यालय को भी दें तथा कार्यक्रम के समापन पर उत्सव की विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य सन्देश तथा अन्य पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें। मुझे पूर्ण आशा है कि आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार मे आप अपना पूरा योगदान देंगे।

आर्यसमाज मन्दिरों की मर्यादा रखें

मन्दिरों में असंवैधानिक कार्यों की रोकथाम हो : वर्त्तमान गतिविधियों की सूचना दें :

भविष्य के लिए सभा की अनुमति अनिवार्य : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान का निर्देश

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के नाम एक विज्ञप्ति प्रसारित कर समाजों के अधिकारियो को निर्देश दिया है :—

सभा के सामने गत कुछ वर्षों से कई ऐसे मामले आये हैं, जिसमे आर्यसमाजो के अधिकारी बिना सभा की अनुमति के आर्यसमाज मन्दिरो मे ऐसे सगठनों/संस्थाओं को कार्यालय/विद्यालय/चिकित्सालय तथा अन्य गतिविधियों को चलाने के लिए स्थान दे देती हैं, जिससे वह वहा असवैधानिक कार्य प्रारम्भ कर देती हैं और आर्यसमाज के नियमो, उपनियमो तथा वैदिक विचारधारा के विपरीत कार्य करती हैं, जिससे कुछ समय पश्चात समाज के अधिकारियो मे मतभेद पैदा हो जाते हैं और समाज मे विवाद शुरू हो जाता है। ऐसी परिस्थितियो मे उन संस्थाओं और संगठनों से समाज का स्थान खाली कराना भी मुश्किल हो जाता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से मेरा अनुरोध है कि वे अपने आर्यसमाज मन्दिरो मे चल रहे विद्यालय/चिकित्सालय/कार्यालय तथा अन्य सस्थाओ की जानकारी अविलम्ब सभा कार्यालय को दें और यह भी बताए कि किस सस्था द्वारा यह चलाई जा रही है।

आपसे अनुरोध है कि आप भविष्य मे आर्यसमाज मन्दिरों मे किसी भी ऐसी सस्था वा सगठन को अपना कार्यालय। विद्यालय। अन्य गतिविधियो को चलाने के लिए स्थान न दें। आप अपनी आर्यसमाज द्वारा जो भी गतिविधि चिकित्सालय। विद्यालय खोलना चाहें उसकी लिखित अनुमति सभा कार्यालय से अवश्य लें। यदि किसी भी समाज के अधिकारी ने बिना सभा की अनुमति लिए समाज मन्दिर का स्थान दिया तो उसकी सम्पूर्ण जिम्मेवारी उनकी होगी और उसको खाली कराने का उत्तरदायित्व भी उन्हीं का होगा। आशा है समाज के अधिकारी इसका पूरा ध्यान रखेगें और सभा को समय-समय पर अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आर्यसमाजों का निर्वाचन यथाशीघ्र करें

नए वर्ष के पदाधिकारी एवं सभा के प्रतिनिधि निर्वाचित करें

दशांश और वेदप्रचार राशि यथाशीघ्र भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने एक पत्रक द्वारा दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध किया है :

सभा-कार्यालय द्वारा भेजे गये परिपत्र दि० २४.१९९५ का अवलोकन करें। उपर्युक्त परिपत्र मे आर्य समाजो के अधिकारियो से अनुरोध किया था कि

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक - नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

अथर्ववेद का स्वाध्याय

इस वेद का स्वाध्याय कर वेदों की विषय वस्तु समझी जा सकती है

मनोहर विद्यालंकार

चारों वेदों के स्वाध्याय से अनुभव होता है कि अथर्ववेद की भाषा अन्य वेदो की अपेक्षा सरल हैं। भाषा की सरलता को आधार बनाकर पाश्चात्य विद्वान इस वेद की रचना का काल अन्य वेदो की अपेक्षा पर्याप्त अर्वाचीन मानते हैं। उनके पक्ष में एक तर्क भी है कि बहुत स्थानो पर, केवल तीन वेदों की चर्चा है। और वेदों को त्रयी नाम से भी पुकारा जाता हैं।

वेदो के सम्बन्ध मे भारतीय धारणा।

वेदो मे श्रद्धा रखने वाले स्वाध्यायशील विद्वानो की एक धारणा तो सर्व-सम्मत है कि वेद अपौरुषेय हैं, अर्थात किसी ऐतिहासिक व्यक्ति की कृति न होकर अतिमानव या पुरुषविशेष ईश्वर का मानव हृदय मे सक्रमित ज्ञान हैं, किन्तु इस के बाद तीन विचारधाराए प्रतीत होती हैं।

१. परमात्मा की ओर से सृष्टि के आदि मे, ऋषि कल्प व्यक्तियों के हृदय मे सक्रमित ज्ञान का नाम वेद है। वेद का अर्थ भी ज्ञान है, और मानवीय ज्ञान अथवा बुद्धि और अनुभव का सम्मिलित, तथा भाष्य मे व्यक्त किया जा सकने वाला ज्ञान, किसी के दिए बिना स्वयमेव प्रकट नही हो सकता।

२. इस प्रकार मानव हृदय में संक्रमित सम्पूर्ण ज्ञान का नाम वेद है। यह ज्ञान समय-समय पर मनीषी विद्वानो के मन मे चाहे जब और चाहे जिस भाषा मे स्फुरित हो सकता है। ऐसे सब ज्ञान, जो प्राकृतिक नियमों के विपरीत न हों, मानव मात्र के लिए हितकर और समान रूप से लागू हों, वेद कहलाते हैं।

३. इसलिए सृष्टि के प्रारम्भ मे दिया गया ज्ञान = वेद एक था। उसके बाद वेद के अत्यन्त विस्तृत होने के कारण, ज्ञान, कर्म, उपासना की दृष्टि से वेद को ऋक्, यजु: साम की त्रयी मे विभक्त कर दिया गया। इस धारणा मे यह तर्क सहायक है कि बहुत से मन्त्र दो या तीन वेदों मे पुनरुक्त हुए हैं। सामवेद तो करीब ७० मन्त्रो को छोडकर सारे का सारा ऋग्वेद से लिया गया है।

(ख) दूसरी धारण यह है कि चारों वेद सृष्टि के प्रारम्भ मे चार ऋषियो के हृदयो मे परमात्मा द्वारा सक्रमित हुए हैं।

(ग) तीसरी धारणा यह है कि वेद के सूक्तो पर जिन ऋषियो के नाम हैं, वे ही इन मन्त्रों के रचयिता हैं। वे अपने पक्ष मे तर्क देते हैं कि प्रत्येक वेद के नाम के साथ सहिता जुडा हुआ है। यह शब्द प्रतिपादित करता है कि मन्त्रो की रचना भिन्न समयो में, और भिन्न-भिन्न प्रदेशों मे हुई है, बाद मे इन्हे सग्रहीत करने वेद सहित नाम रख दिया गया।

इसके विपरीत वेद को अपौरुषेय ज्ञान मानने वाले सूक्तों पर दिए हुए ऋषियो को इन मन्त्रो का द्रष्टा अथवा दर्शयिता (व्याख्याता) मानते हैं।

अथर्ववेद

अथर्ववेद की भाषा सरल है, किन्तु इसके साथ ही इसमे इतने अधिक विषयों का समावेश है कि मनुष्य के जीवन के लिए उपयोगी सब विषयों और विद्याओ की इसमे चर्चा है।

कई स्थानों पर ऐसा दृष्टिगोचर होता है, कि जिन विषयो या समस्याओं पर ऋग्वेद मे विचार नही किया गया है, अथवा कोई शका ऋग्वेद मे अनुत्तरित रह गई है, उस पर विचार हुआ है, और शका या समस्या का समाधान भी किया गया है।

इस दृष्टि से सामान्यजन को—जिसे वेद मे विज्ञता नही प्राप्त करनी है, जिसके पास समय की कमी है, वह केवल अथर्ववेद को पढ़कर भी वेदों की विषय-वस्तु या शैली को पूरी तरह से समझ सकता है।

अथर्ववेद का २० काण्ड तो प्राय: पूरे का पूरा ऋग्वेद के मन्त्रों का सग्रह है। इसे ४ रों वेदो का उपसहार परक व्याख्यान भी माना जा सकता है।

इसलिए वेदों से परिचय प्राप्त करने के लिए यदि एक वेद को पढ़ने का अवकाश हो तो उसे केवल अथर्ववेद पढकर भी वेदों का सार प्राप्त करने का सन्तोष हो सकता है।

वेदों के नाम सार्थक है

वेदो के नाम सार्थक ढग मे रखे गए है। उनके नाम उनकी विषयवस्तु तथा उनकी सार्थकता को बताने वाली क्रिया, और उनको हृदयगम करने की शैली को दर्शाते हैं।

(क) अथर्व—का अर्थ (अथ + अर्वाङ्) अब अपने अन्दर देखते हैं। इस वेद का नाम सदा अन्त मे लिया जाता है, अर्थात इसे वार्धक्य का वेद समझना चाहिए। जब मनुष्य खूब पढ-लिखकर, अपने जीविकार्जन से निवृत्त होकर, जनहित या समाजसेवा मे आने को उद्यत हो उसे आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि उसने सारी आयु किस तरह का काम किया है, किस विषय मे विज्ञता प्राप्त की है। उसी विषय को चुनकर उस क्षेत्र मे उतरना चाहिए।

(ख) अथर्वा—अ (न) थर्वति चरति (चर संशये, चर गतौ भक्षणे च) अथर्व-वेद पढ़ने वाले को स्थिर मति होना चाहिए, क्योंकि इसमें इतने विविध विषय हैं कि इसका पाठक यदि स्थिरमति नही होगा—तो वह अपने लक्ष्य से भटक जाएगा। कभी इस ओर भागेगा, कभी उस ओर भागेगा।

उसे प्रत्येक काम निश्चय होकर, इधर-उधर भटके बिना करना चाहिए, जिस क्षेत्र में लग गया, अन्त तक उसी क्षेत्र में लगे रहना चाहिए।

(ग) ऋग्वेद—ज्ञानवेद होने से मस्तिष्क का वेद है। यजुर्वेद कर्मवेद होने से हाथो का वेद है। सामवेद उपासनावेद होने से हृदय का वेद है। अथर्ववेद युद्धवेद व आयुर्वेद होने से उदर का वेद है। उदर विकार-अर्थात धन या भोजन की भूख बढने से ही युद्ध और रोग होते हैं। अत. यदि जीभ के स्वाद, और वाणी के अनुचित प्रयोग को वश मे कर लें वाचस्पति बन जाएं, तो रोग और युद्ध उत्पन्न ही न हो। इस दृष्टि से विश्व को शान्त रखने और युद्धों को समाप्त करने के कारण यह वेद जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

(ग) अथर्ववेद के अन्य नाम यथा ब्रह्मवेद, आंगिरसवेद, भिषग्वेद, क्षत्रवेद आदि इस वेद की विषयविविधता, और साथ ही इसके स्वाध्याय के द्वारा वेद मात्र से परिचय प्राप्त होने की बात की पुष्टि करते हैं।

अथर्ववेद में प्रतिकाण्ड विषय-प्रतिपादन

१—इस वेद का प्रथम काण्ड जीवन के प्रथम आश्रम के लिए निर्धारित प्रतीत होता है। इस काल मे विद्यार्थी या ब्रह्मचारी को दो ही काम मुख्य रूप से करने हैं। ज्ञान की प्राप्ति, और शरीर मे सुप्त वीर्य को धारण करके शक्ति सम्पन्न बनाना।

इस काण्ड के प्रथम सूक्त का देवता—वाचस्पति ज्ञान का देवता है। इस मे प्रार्थना की गई है कि (क) मैं अपने गुरु से जो कुछ सुनू, वह मेरे अन्दर स्थिर हो जा (मय्येवास्तु मयि श्रुतम् (२) मैं अपने ज्ञान से सदा संगत रहूं, तदनुकूल आचरण करूं। उसके विपरीत कभी कोई कर्म न करूं।

इस सूक्त का प्रयोजन मेधा जनन अर्थात मानवता को धारण करने वाली शक्तियों के उत्पादन की प्रेरणा है।

इस काण्ड के अन्तिम ३५ वें सूक्त का देवता हिरण्यम् और विश्वे देवा है (हिरण्यम् = सुवर्ण + वीर्य, प्रत्येक हितकर और रमणीय पदार्थ। तथा सभी प्राकृ-तिक शक्तिया अथवा शरीरस्थ इन्द्रिया।

इसमे प्रार्थना की गई कि मैं १०० वर्ष का दीर्घ जीवन प्राप्त करने के लिए, अपने शरीर में वीर्य को बाध कर रखता हूं। सुवर्ण को धारण और भक्षण करता हूं। शरीर के लिए हितकर पदार्थों का ग्रहण और अहितकर पदार्थों का परित्याग करता हूं।

—शेष पृष्ठ ५ पर

किसी से द्वेष न करो

ओ३म् सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं
करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।

कठ उपनिषद शान्ति पाठ

वह भगवान् हम दोनों की रक्षा करें। हम दोनों का साथ-साथ पालन करें। हमारी शक्ति बढ़े, हमारा सामर्थ्य बढ़े हम जो कुछ पढ़ें, वह तेजस्वी हो। हम एक दूसरे से द्वेष न करें। वैर न करें।

सम्पादकीय अग्रलेख

आधुनिकीकरण हो, परन्तु पूरी मर्यादा के साथ

यह ठीक है, पिछले अड़तालिस वर्षों से हम राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हैं, परन्तु आर्थिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक दृष्टि से अभी हमारी आत्मनिर्भरता में कुछ बुनियादी कमी है, जिसके कारण अभी तक भी हमें विदेशी सहायता का मुंह जोहना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि चार वर्ष पूर्व जब श्री चन्द्रशेखर जी देश के प्रधानमन्त्री थे, उस समय भारत को विदेशी कर्ज की किश्त देने के लिए अपना सोना इंगलैण्ड के बैंकों में गिरवी रखना पड़ा था। आज वैसी स्थिति तो नहीं है, इस समय भारत के पास २० अरब रु० से अधिक का सुरक्षित कोष है, पिछले वर्षों में भारत की मुद्रा स्फीति की दर कम हुई है, इतने पर भी विश्व की अर्थ-व्यवस्था में भारत की स्थिति अभी नगण्य है। संसार के व्यापार मे भारतीय अर्थ-व्यवस्था का स्थान अत्यन्त उपेक्षणीय है। यह ठीक है, प्राकृतिक साधनों एवं मानवीय संसाधनों की दृष्टि से भारत की ऊंची स्थिति है। यदि इन दोनों तत्वों का भली प्रकार बुद्धि संगत प्रयोग किया जाए तो औद्योगिक दृष्टि से भारत विश्व के सर्वाधिक समुन्नत औद्योगिक राष्ट्रों मे परिगणित हो सकता है। भारत इस दिशा मे तेजी से आगे बढ़े, इसके लिए नीति-निर्धारकों की सुविचारित सम्मति है कि हमें कृषि, उद्योगों, वाणिज्य व आर्थिक सम्बन्धों में उदारीकरण की नीति अपनानी चाहिए। तेल, पेट्रोल, खनिज सम्पदा के संसाधनों आदि का समुचित अन्वेषण-दोहन करने के लिए विदेशी पूंजी निवेशकों और उद्योगपतियों को आक-र्षित करने की योजना भी बनाई गई।

महाराष्ट्र के दभोल क्षेत्र मे गैस पर आधारित बिजली का विशाल कारखाना बनाने की एक विशाल योजना कार्यान्वित की जा रही है। एक बहुराष्ट्रीय अमेरिकी कम्पनी एनरोन उसे कार्यान्वित कर रही है। पिछले दिनों इस कम्पनी से हुए करार की तीखी आलोचना हुई है। कहा गया है कि विदेशी कम्पनी को एक निर्धारित लाभ की गारण्टी दी गई है, इस प्रस्तावित कारखाने से बनने वाली दर भी बिजली की सामान्य दर से ज्यादा है। महाराष्ट्र के अथवा किसी भी प्रदेश मे किसी विदेशी कम्पनी से किए किसी करार मे कोई बुनियादी त्रुटि है तो उसे सुधारना ही चाहिए, परन्तु हमे कुछ मौलिक कटु तथ्यों को स्वीकार करना होगा। पूरी तरह स्वदेशी का व्रत लेना आदर्श हो सकता है, स्वावलम्बन का आदर्श भी बहुत आकर्षक और लुभावना है। स्वदेशी के आन्दोलन ने देश के स्वाधीनता संग्राम मे यशस्वी भूमिका प्रस्तुत की, इस तथ्य को मानते हुए भी इस प्रगतिशील प्रतिद्वन्द्विता भरे संसार में आत्म-सम्मान से जीने के लिए उद्योगों, कृषि, प्राकृतिक संसाधनों, यातायात, परिवहन आदि अनेक क्षेत्रों मे वैज्ञानिक आधुनिकीकरण अपे-क्षित है। इसके लिए लाइसेंसों, परमिटों, लाल फीतेशाही के बन्धनों मे शिथिलता लाकर उदारीकरण लाना चाहिए। जापान, जर्मनी, यूरोप, द० पू० एशिया के छोटे-बड़े अनेक देश उदारीकरण की इस व्यवस्था से लाभान्वित हुए हैं। भारत भी इन राष्ट्रों के अनुभवों का लाभ उठाकर विविध क्षेत्रों मे आधुनिकीकरण ला सकता है, परन्तु इस सम्बन्ध में कुछ मर्यादाएं और बन्धन स्वीकार करने होंगे।

जापान-जर्मनी के राष्ट्रों का अनुभव हमारा पथ प्रदर्शन कर सकता है। संसाधनों एवं मानव शक्ति से पिछड़े होने और दूसरे महायुद्ध मे पराजित होने के बावजूद जापान आज संसार का एक सर्वाधिक विकसित सफल औद्योगिक राष्ट्र है। विश्व के व्यापारिक मानचित्र में उसकी सर्वाधिक सफल औद्योगिक राष्ट्रों में गिनती की जा सकती है। जापान की इस चमत्कारी सफलता का राज उसके राष्ट्रजनों की खरी देशभक्ति है। संसाधनों के अभाव और मानवशक्ति की कमी के बावजूद उस राष्ट्र के प्रजाजनों ने अपनी देशभक्ति, संगठन शक्ति और लगन से विश्व की आर्थिक व्यवस्था मे ऊंची स्थिति बनाई है। उसने अमेरिका जैसे राष्ट्र को भी अपनी शर्तों पर व्यापार करने के लिए बाध्य किया है। आज भारत को आधुनिकीकरण और उदारीकरण के रास्ते पर चल कर अपनी अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करना होगा, परन्तु उसके लिए अपेक्षा है हम कुछ मर्यादाएं अपनाएं। पहली मर्यादा है कि हम विदेशों से अनावश्यक ऋण और उपयोग्य वस्तुएं लेना बन्द करे, हम केवल आधारभूत प्रौद्योगिकी, वैज्ञानिक व औद्योगिक विशेषज्ञता लें और उन्हें लेते हुए भी भारतीय हितों, जनकल्याण, दरिद्रों, उपेक्षितों के उन्नयन को सदा प्राथमिकता दे। विदेशों से ज्ञान, विज्ञान, शिल्प, तकनीक का मूलमन्त्र लेना ठीक है, परन्तु उन्हें लेते हुए भारतीय हितों की उपेक्षा सर्वथा अनुचित है।

चिट्ठी पत्री

भारत का वानिकी क्षेत्र घट गया

वर्ष १९९२-९३ के विश्व बैंक एटलस मे भारत का वानिकी क्षेत्र २२ प्रति-शत बताया गया था, जो १९९४ के एटलस में आकर १६ प्रतिशत रह गया। वार्षिक ह्रास-दर के आधार पर किया गया यह आकलन निश्चय ही चिन्ता का विषय है। वन-संवर्द्धन और पर्यावरण सुधारने के नए-नए कार्यक्रम शुरू करने और व्यापक जन-चेतना कार्यक्रमों के बावजूद वन-सम्पदा का तेजी से ह्रास समस्त प्रयासों के खोखलेपन को दर्शाता है। उत्तरकाशी के जंगलों में हर वर्ष आग लगने या लगाने की घटनाएं (ग्रीष्म ऋतु में) होने के बावजूद उनकी रोकथाम के लिए सरकार के पास पुख्ता कार्य-योजना नहीं है। ईंधन के रूप में वनों की कटाई वन-सम्पदा का इमारती लकड़ी के रूप मे बेतहाशा इस्तेमाल की कोई सीमा नहीं है। वानिकी व इसकी रक्षा से जुड़ी सरकारी मशीनरी में व्याप्त अनियमितता व भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है। ऐसे मे वानिकी की प्रतिवर्ष हो रही अपूरणीय क्षति को फिलहाल रोक पाना असम्भव लगता है। हमे सिर्फ हाथ बांधे प्रकृति के विनाश को मूक दर्शक बने देखते रहना है, क्योंकि जनता उदासीन है और देश के व सक्षम राजनेता आपसी जोड़-तोड़ मे लगे हैं।

—प्रद्युम्न व्यास, अनुपम नगर, मन्दसौर

बढ़ती रेल दुर्घटनाएं

भारतीय रेलवे को एशिया की सबसे बड़ी रेल सेवा होने का गौरव प्राप्त है, लेकिन पिछले कुछ सालों मे जिस तरह एक के बाद एक रेल दुर्घटनाएं हो रही हैं, उनसे रेलों की कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिन्ह लग गया है।

हमारे रेलमन्त्री जाफर शरीफ इन दुर्घटनाओं को भले ही मानवीय भूल की संज्ञा दे, लेकिन वे रेलवे की सुस्त और लचर व्यवस्था दर्शाने के लिए पर्याप्त हैं। अच्छा होगा रेलमन्त्री शरीफ साहब मुआवजा राशि बढ़ाने के बजाय रेलवे बोर्ड की कार्यप्रणाली की समीक्षा कर उसे दुरुस्त करे।

—अनूप वर्मा, जापलिनगंज, बालिया (उ०प्र०)

मीमांसा और वेदान्त दर्शन पर पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ

जुलाई १९९५ से मीमांसा और वेदान्त दर्शन पर मेघजी भाई नैनसी प्रका-शन द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है। प्रति मास १६ पृष्ठ की लघु पुस्तिका मे मीमांसा और वेदांत दर्शन मे विद्यमान दार्शनिक विषयों का विवेचन रहेगा। प्रत्येक पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर पांच प्रश्न होंगे जिनका उत्तर लिखकर संचालक के पास भेजना होगा। सबसे अधिक सही उत्तर देने वाले प्रथम तीन पठनार्थियों को क्रमश २०१ रु०, १५१ रु०, १०१ रु० के पुरस्कार व प्रमाण पत्र तथा ४० प्रतिशत सही उत्तर देने वालों को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। परीक्षा परिणाम जून ९६ मे घोषित किया जाएगा। पुस्तक डाक व्यय और प्रमाण पत्रादि के लिये केवल मात्र २५ रु. वार्षिक सदस्यता शुल्क है, सदस्यता धनादेश (एम.ओ) द्वारा भेजकर शीघ्र ही निम्न पते पर सदस्यता प्राप्त करें।

सोमदेव शास्त्री, डी० ३०१ मिल्टन अपार्ट,
आजाद रोड जुहू कोलिवाड़ा, बम्बई-४९

स्वामी समर्पणानन्द जी का साहित्य

खेद है कि उन्हें मौखिक प्रचार का जितना मौका मिला, उतना समय वह लेखन के लिए नहीं दे सके

ले० डा० भवानीलाल भारतीय

उनकी विस्मयकारिणी प्रतिभा और वाग्मिता, अकल्पनीय तर्कशक्ति तथा चमत्कारिणी ऊहा वस्तुत अद्भुत थी। खेद है कि मौखिक प्रचार करने का जितना अवसर उन्हे मिला, उतना समय वह लेखन के लिए नही दे सके। यदि वह एक ही स्थान पर बैठकर विभिन्न शास्त्रो पर भाष्य लिखते या मौलिक ग्रन्थो की रचना करते, तो निश्चय ही हमारे सारस्वत भण्डार मे अपूर्व वृद्धि होती। यह भी खेदजनक प्रसग रहा कि आर्यसमाजो ने अपने सभा-सम्मेलनो और उत्सवो मे उन्हे इतना अधिक व्यस्त रखा कि वह लेखन के लिए अधिक समय नही निकाल सके। यहा हम उनके द्वारा लिखित साहित्य का स्वल्प परिचय दे रहे हैं।

अथर्ववेद भाष्य—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मासिक पत्र मे यह भाष्य धारावाही छपता रहा। यह अपूर्ण ही है। उस समय पण्डित जी उक्त सभा मे महोपदेशक थे और लाहौर का गुरुदत्त भवन उनका मुख्य निवास था।

शतपथ ब्राह्मण पर भाष्य—पण्डित जी ने शतपथ ब्राह्मण का गम्भीर अध्ययन किया था और इस पर उनका अपना मौलिक चिन्तन था। उन्होने एकाधिक बार यह विचार व्यक्त किया था कि वह शतपथ पर विस्तृत भाष्य लिखेंगे, किन्तु अपनी व्यस्तताओं के कारण ऐसा सम्भव नही हुआ। तथापि उन्होने इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ के कुछ अंशों की विस्तृत व्याख्या लिखी थी। इसे दयानन्द संस्थान ने प्रकाशित किया और स्वामी दीक्षानन्द ने शतपथ के एक अन्य विद्वान् डा० वेदपाल सुनीथ से सम्पादित कर पुन प्रकाशित किया है।

शतपथ मे एक पद (१९८६ वि०) वेदों के जिन सूक्तो की उन्होने स्वोपज्ञ व्याख्याएं लिखी उनमे प्रमुख है—अथ मरुत्सूक्त (१९८८ वि०), सप्तसिंधुसूक्त, शाखा सूक्त, वैदिक अग्नि प्रकाश (कारावास के दिनों मे प्रदत्त प्रवचनो का सग्रह) ऋग्वेद के मण्डलों का मणि सूत्र यह ऋग्वेद के दसों मण्डलो मे वर्णित विषयों को परस्पर सूत्रबद्ध करने का अद्भुत प्रयास है। पशु बलि वेद शास्त्र विरुद्ध है। (जयपुर मे दिए गये व्याख्यान पर आधारित) किसकी सेना मे भर्ती होगे? कृष्ण की या कंस की सरिता नामक मासिक पत्रिका मे एक लेखक रतन लाल बसल ने गो हत्या के समर्थन में एक लेखमाला लिखकर यह सिद्ध करने की चेष्टा की थी प्राचीन आर्य शास्त्रो मे गोवध का सर्वत्र विधान मिलता है तथा आर्य लोग स्वय गोमांस का भक्षण करते थे। प० बुद्धदेव जी ने १९५२-५१ की अवधि मे भारत के विभिन्न नगरों मे व्याख्यान देकर रतनलाल बसल के उक्त लेख मे व्यक्त विचारो का तीव्र प्रतिवाद किया था। यह पुस्तक भी इसी विषय को लेकर लिखी गई थी। अन्य ग्रन्थ-वेदो के सम्बन्ध मे क्या जानो और क्या भूलो, गोवावर्त (गाय की महत्ता का निरूपण) वर्ण व्यवस्था और उस पर आक्षेप (१९९५ वि०) वर्ण-व्यवस्था के चार सूत्र, कायाकल्प-प० बुद्धदेव जी वर्ण व्यवस्था के उत्कृष्ट व्याख्याता थे। उन्होंने इस विषय पर देश मे हजारो व्याख्यान दिए थे। इस सामाजिक विधान की पुष्टि मे उन्होने यह पुस्तक लिखी जो अत्यन्त लोकप्रिय हुई। मनु और मास जो लोग मनुस्मृति को मास भक्षण का विधायक ग्रन्थ मानते हैं, उनके इस विचार का खण्डन। भगवद्गीता का समर्पण भाष्य—स्वामी समर्पणानन्द ने गीता के किसी श्लोक को प्रक्षिप्त नहीं माना है। सुर और असुर दोनों शब्दो की व्याख्या। पाणिनि प्रवेशिका संस्कृत भाषा शिक्षण का ग्रन्थ, अथ ब्रह्म यज्ञ, अथ देव यज्ञ (अग्निहोत्र व्याख्या), पञ्च महायज्ञ प्रकाश ये तीनों ग्रन्थ उनके लाहौर निवास काल के हैं, जो क्रमश: १९९० वि० १९९२ वि० तथा १९९७ वि० मे गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुए।

प० बुद्धदेव हिन्दी तथा सस्कृत में सफल काव्य रचना भी करते थे। उनके द्वारा लिखित हिन्दी कविताओ के सग्रह "उसकी राह पर' (१९९६ वि०) प्रार्थनावली तथा बिखरे फूल शीर्षक हैं। तीन देवता, भारतीय लोक संघ की स्थापना क्यों, ससार का पुनर्निर्माण सोम. स्वर्ग, हिन्दु समाज मत चूक आदि उनकी लघु-पुस्तकाए हैं। उनके संस्कृत पद्य वेदवाणी पत्रिका में प्रकाशित हुए। स्वामी दयानन्द विषयक उनकी सस्कृत गीतिकाए अत्यन्त भावपूर्ण हैं। मैंने स्वसम्पादित महर्षि दयानन्द प्रशस्ति काव्य मे इन्हे सानुवाद प्रकाशित किया है।

—८।४२३ चन्दन वन, जोधपुर

वर-वधू को आशीर्वाद

सूर्य तुम दोनों को तेज प्रदान करे, वायु बल, अग्नि ओज,
पृथ्वी शत्रुओं को हराने की शक्ति, पूषा सभी पोषण पदार्थ, और भग धन-सम्पत्ति प्रदान करे।
सरस्वती तुम्हे विद्या, बुद्धि और कलाएं दे।
चन्द्रमा तुम्हारे मन प्रसन्न रखे, मेघ जल और दूध दे।
वरुण तुम्हें धर्म के मार्ग पर चलाए, रुद्र तुम्हें पाप से बचाए।
तुम दोनों परस्पर प्रेमपूर्वक मिलजुल कर रहते हुए।
यशस्वी बन कर, अन्य लोगो के कष्टो को दूर करते हुए
चिरकाल तक जीवो।
सदा देवोचित मार्ग पर चलो, सभी पड़ोसी तुम्हारी प्रशंसा करते रहें।

—विराज

शुभ आशीष

स्व० श्री हरिवश जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीति जी की पौत्री एवं श्रीमती आराधना। श्री अशोक परमार की सुपुत्री आयु० ऋचा और चि० किंशुक के पाणिग्रहण के अवसर पर प० विराज जी के शुभ आशीष।

तुम शरद् ऋतु के कार्तिक मास की पूर्णमासी के चन्द्रमा की चांदनी हो,
तुम वसन्त ऋतु के फागुन मास के फूलों से लदी पलाश (ढाक) की टहनी हो;
तुम वर्षा ऋतु के सावन महीने की काली घटाओं में दमकने वाली बिजली हो;
तुम रात के घने अंधेरे में चमकती हुई दीपशिखा हो।
तुम सूर्य की किरणो से चमचमाती हुई, हिमालय के शिखरों पर जमी उज्ज्वल हिमराशि हो,
तुम तूफान के कारण उमड़ते हुए सागर की लहरों के ऊपर तैरने वाला सफेद झाग हो।
तुम गोमुख से नि:शब्द नीचे की ओर बहती गंगा के शीतल जल की धारा हो;
कानों में आनन्द की वर्षा सी करती हुई तुम सर्वप्रथम ऋषि के कण्ठ से निकला सामगान हो।
तुम ताजे खिले कमल की पखुरियो के ऊपर पड़ी मोतियों को भी लजाने वाली जल बिन्दुओ की पंक्ति हो,
तुम छिपते हुए सूर्य की रंगीन किरणों से सुनहली रंगी जा रही मेघमाला हो,
प्रचंड ग्रीष्म काल में तुम घने काले बादल से बरसती पृथ्वी को तृप्त करने वाली वर्षा हो,
और बर्फीली हवा से कष्टदायक बनी शीत ऋतु में आकाश को छूने वाली आग की लपट हो।
तुम ऊंचे पहाड़ के शिखर से उथलपुथल गिरती दूध के झाग सा बनी जा रही सुन्दर निर्झरिणी हो,
तुम वसन्त ऋतु के चैत्र मास के मादक पवन से झूम रही फूलों और पत्तों से लदी बेल हो।
तुम वेद मन्त्रों के पाठ के साथ भली भांति जलाई गई यज्ञ की अग्नि हो,
जिसमें इतनी सुगन्धित सामग्री डाली गई है कि आग बुझने को हो रही है,
ऊपर उठती हुई अगर के धूपं की कुंडली हो।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अथर्ववेद का स्वाध्याय

(पृष्ठ २ का शेष)

हिरण्य बध्नामि-आयुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।२

प्रथम काण्ड के ज्ञानपरक प्रेरक वचन

१. य. सपत्नो योऽसपत्नो यश्चद्विषन छपाति नः ।
देवास्त सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्मा वर्म ममान्तरम् । अ० १-१९-४

२. स्वस्ति । विशांपति वृत्रहा विमृधोवशी ।
वृषेन्द्र पुर एतुनः सोमपा अभय कर ।। अ० १-२१-१

इन्द्रियों का वशी – शत्रु रहित होता है, दुष्टों का दमनकर्ता प्रजाओं का रक्षक होता है, ऐश्वर्यशाली ही सुखों की वर्षा करता है।

प्रजा को निर्भय करने वाला शान्ति की रक्षा करता है वीर्य का पान करने वाला सौम्य होता है और प्रजा को निर्भय बनाता है।

३. जिह्वा अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम ।

(४) १—शरुमस्म धावय दिद्युमिन्द्र । अ० १-२-३
चमकीले घातक अस्त्र के समान शरुम् = क्रोध व वासना को हमसे दूर कीजिए।

५ उद्बोधक वचन का ४ मन्त्र,
६ " ६ मन्त्र

प्रथम काण्ड के स्वास्थ्यपरक प्रेरक वचन

१. अश्मान तन्व कृधि । अ० १-२-२ । शरीर को पाषाण की तरह ऋतुओं के प्रभाव से अविचलित करो।

२. अरातीरप द्वेषास्या कृधि । अ० १-२-१ । अपने मन से द्वेष को दूर रखो, शत्रु स्वय दूर हो जाएंगे।

३. अप्स्वन्त रमृतमप्सुभेषजम् । १-४-६
अपो याचामि भेषजम् । १-५-४

जलों में अमृत (औषधी शक्ति) और भेषज है। अतः कोई भी रोग हो, उसे दूर करने के लिए जल का समुचित प्रयोग करो।

४. अग्ने तोलस्य प्राशान यातु धानान्विलापय । अ० १-७-२
मितभुक् हितभुक् और कालभुक् बनो, कभी कोई रोग नहीं होगा।

५. यदुवक्थानृत जिह्वया वृजिन बहु ।
राक्षसस्त्वा सत्यधर्म णो मुञ्चामिवरुणादहम् । १-१०-३

मैंने जीभ के स्वाद वश जो अनृतं = ऋतु विरुद्ध या बहुत खा लिया है—उसे, तथा अपनी वाणी से असत्य या कुटिल वचन कह दिया है—उसे सत्यधारक, प्रायश्चित्त के अधिपति वरुण राजा से—प्रायश्चित्त द्वारा अपने को मुक्त करता हूं।

स्वास्थ्यपरक प्रेरक वचन

ये देवा :—तेकृणुत जरसमायुरस्मै शतमन्यान्परिवृणक्तु मृत्यून् । अ० १-३०-३
विश्व सुभूत सुविदत्र नो अस्तु, ज्योगेव दृशेम सूर्यम् । अ० १-३१४

हमारे लिये सुभूतम् = स्वस्ति (शारीरिक)
सुविदत्रम = सुविधावतिनि० ४-३ (मानसिक हार्दिक व
कल्याविद्य: निरु० ६-१४ मस्तिष्क का)

ज्योक्च सूय दृशे । अ० १-६-३
के साथ—अतिभुक्ति रतोबोक्ति. सद्य: प्राणापहारिणी।

नमस्ते राजन्वरुणास्तुमन्यवे विश्वह्य ग्रनिचिकेकेषिदुग्धम ।
सहस्रमन्यान्प्र सुवामिसक शत जीवाति शारदस्तवायम् ॥
द्रोहम् । अ.१-१० २

प्रभु भक्त कभी द्वेष नहीं करता। और द्वेष न करने वाला १०० वर्ष जीता है।

यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्य सजीवेषुकृणुते दीर्घमायु: । अ० १-३५-१
यत् बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय । अ. १-३५-१
दाक्षायणम्-सब प्रकार की बढ़वारों (उन्नतियों) के कारणभूत।

..... इसमें किसी देश-विशेष का

प्रथम काण्ड के उद्बोधक वचन

१ यदि नो गांह सियदश्व यदि पूरुषम ।
तत्वा सीसेनविध्यामो यथानोऽसो अवीरहा ।। अ० १-१६-४

२ अभ्रातर इव जामयस्तिष्ठन्तु हतवर्चस । अ० १-१७-१

३ हिरण्यवर्णा: शुचय: पावका: सुवर्णास्तान आप: शस्योनाभवन्तु । अ० १-३३-१
कस्वमूत्रत्व सुवर्णपात्र मे रखा हुवा भृग के द्वारा स्वर्ण रंग का बनाया हुवा।

४ प्रेमा देवा असाविषु: सौभगाय । अ० १-१८-२
इमाम्--अनुमतिम अनुकूलमति = मस्तिष्क और हृदय की समस्वरता हमारे अन्दर उत्पन्न करे।

५ य आशानामाशा लाश्चत्वभरे स्थन देवा: ।
ते नो निऋंत्या पाशेभ्योमुञ्चता हसो अंहसम । अ० १-३१-२

शरीर में -पूर्वदिशा-मुख इन्द्र = जितेन्द्रिय बनता है,
पश्चिम दिशा-पायु वरुण – रोगों से विवृत्त हो जाता है,
उत्तर दिशा-विद्युति ईशान
दक्षिण दिशा उपस्थ यम = के संयम से सर्वनियन्ता बनता है,
चार मुखों वाला-इनका संयमी-मानव ही ब्रह्मा कहलाता है।

—५२२ ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-६

मारिशस में हिन्दी के लिए कानून बना

मारिशस मे हिन्दी भाषा को प्रोत्साहित करने के लिए वहां की नेशनल असेम्बली ने एक कानून पास किया है जिसका उद्देश्य मारिशस मे और उसके बाहर हिन्दी के पठन-पाठन, अध्ययन अध्यापन को प्रोत्साहन देना है।

मारिशस की पांच दिवसीय यात्रा से लौटने पर लोकसभा मे विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली यह जानकारी दी।

यात्रा के दौरान मारिशस सरकार द्वारा स्थापित हिन्दीभाषी यूनियन संगठन के उदघाटन समारोह में भी श्री वाजपेयी ने भाग लिया। यह संगठन, मारिशस की नेशनल असेम्बली ने एक कानून बनाकर कायम किया है। इसका उद्देश्य मारिशस में और उसके बाहर हिन्दी के पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन को प्रोत्साहन देना है। संगठन अन्य देशों के हिन्दीप्रेमी व्यक्तियों तथा संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहेगा और पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन को भी प्रोत्साहन देना है। संगठन अन्य देशों के हिन्दी प्रेमी व्यक्तियों तथा संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहेगा और पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन को भी प्रोत्साहित करेगा।

श्री वाजपेयी ने बताया कि भारत के अलावा मारिशस पहला देश है जहां संसद द्वारा कानून बनाकर हिन्दी को बढ़ावा देने का दायित्व सरकार ने सम्भाला है भारत सरकार हिन्दी संगठन के लिए पहले ही १० लाख रुपये की सहायता की घोषणा कर चुकी है।

(दैनिक हिन्दी मिलाप, हैदराबाद के १४ जून १९९५ के अंक से साभार)

—जगन्नाथ

शुभ आशीष

(पृष्ठ ४ का शेष)

तुम, मां का दूध पी कर तृप्त हुए, अकारण ही मुस्कराते हुए शिशु के दोनों ओठों के बीच से झाक रही नए दातों की चमक हो।

बहुत समय तक बिजली कौंधने, बादलों के गरजने और बरसने के बाद मेघों के कुछ फटने पर दो मेघ-पुंजों के बीच तनिक से अन्तराल में से फूट कर आ रही तुम सूर्य की किरणों की उज्ज्वल पट्टी हो।

तुम्हें देखकर फूल खिल उठते हैं, तुम्हें देख कर उषाएं रंगीन हो उठती हैं, तुम्हें देख कर वन में मोर नाचने लगते हैं, तुम्हें देख कर सभी मुदित हो जाते हैं।

देवता सदा सब प्रकार तुम्हारी रक्षा करें आगे बिठाएं और जोतुम्हेंप्राप्य हों, जो जो कुछ मैं तुम्हारे लिए चाहता हूं, वह सब पूरा हो और, परमेश्वर तुम पर सदा अपनी दया बनाए रखे।

आर्यसमाज की मान्यताओं के विरुद्ध वेदों पर धारावाहिक नहीं बनेगा

सार्वदेशिक सभा प्रधान के नेतृत्व में ४ सदस्यीय शिष्ट मण्डल का बम्बई दौरा

बम्बई . सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के नेतृत्व मे आर्यसमाज का एक चार सदस्यीय शिष्ट मण्डल "द वेदाज" टी० वी० धारावाहिक के सम्बन्ध में उसके निर्माताओं आदि को आर्य समाज के विरोध की चेतावनी देने के उद्देश्य से १९ जुलाई कोबम्बई पहुचा,इस शिष्ट मण्डल मे श्रीवन्देमातरम् के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री, श्री महेश विद्यालकार तथा वेद प्रकाश श्रोत्रिय शामिल थे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् जी ने निर्माताओ को बताया कि वेद ईश्वर द्वारा चार ऋषियों को सृष्टि के प्रारम्भ मे दिया गया वह ज्ञान है जिसे आर्य समाज पूर्णत: अपौरुषेय मानता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं के अनुसार वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर के सिद्धात को मानता है, वेदो मे धर्म और विज्ञान के सिद्धान्तों का कोई टकराव नही है। जबकि पौराणिक ग्रन्थ जिनमें पुराण और कई उपनिषद शामिल है, अवैज्ञानिक बातों से भरे पड़े है, अत: वेदो के नाम पर पुराणों और उपनिषदो मे वर्णित कहानियां नहीं प्रचारित की जा सकती, यह वेद की निन्दा मानी जाएगी जिसे हम ईश्वर की ही निन्दा मानेंगे। अत: आर्य समाज इस प्रकार की ईश्वरीय निन्दा स्तुति को किसी भी हालत में बर्दाश्त नही करेगा।

आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री तथा श्री महेश विद्यालंकार ने भी इस सम्बन्ध में अपने विचार रखे। इस चर्चा के बाद निर्माता-श्री सुनील सुल्ला ने यह स्वीकार किया कि वेदों के नाम पर बनाए जाने वाले धारावाहिक का निर्माण सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृति के बिना नहीं किया जाएगा।

हिन्दी के प्रयोग से कारोबार में वृद्धि हुई

ससदीय राजभाषा समिति ने विदेशों में हिन्दी की स्थिति जानने के लिए, अन्य देशो के अतिरिक्त, मारिशस की भी यात्रा की थी। समिति को सबसे दिलचस्प अनुभव मारिशस मे बैंक आंफ बड़ौदा की शाखा का हुआ। वहां बताया गया कि जब से बैंक के काम काज मे हिन्दी का प्रयोग बढा है, तब से कारोबार मे वृद्धि हुई है।

(दैनिक नवभारत टाइम्स के २ जुलाई १९९५ के अंक मे प्रकाशित समाचार के आधार पर)

जगन्नाथ, सयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
एक्स०वाई० ६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

हिन्दी का देश व्यापक प्रयोग हो

'विश्व में हिन्दी' पुस्तक राष्ट्रपति जी को भेंट

नई दिल्ली। राष्ट्रपति डा० शकर दयाल शर्मा को संसार के विभिन्न देशों में हिन्दी की स्थिति से सम्बोधित पुस्तक "विश्व में हिन्दी" उसके लेखक श्री हरिबाबू कन्सल ने १४ जुलाई को राष्ट्रपति भवन मे भेंट की।

इस पुस्तक में विभिन्न देशों मे हिन्दी के अध्ययन, अध्यापन तथा व्यवहार, विश्व हिन्दी सम्मेलनों, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठियो के आयोजनो, विदेशों मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार की विभिन्न योजनाओं, विदेशियों के हिन्दी शिक्षण, विदेश की हिन्दी सस्थाओ, विद्वानो, पत्र पत्रिकाओ आदि की तथ्यपूर्ण विशद जानकारी है।

राष्ट्रपति जी ने लेखक के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि हिन्दी समृद्ध भाषा है तथा उसका गत अनेक वर्षों में जो विकास हुआ है उससे इसने विश्व भाषा का स्थान प्राप्त कर लिया है। डा० शर्मा ने इस बात पर बल दिया कि हिन्दी का प्रयोग अपने देश मे भी अधिक व्यापक रूप मे किए जाने की आवश्यकता है जिससे इसे विश्व मे भी वास्तविक उच्च स्थान प्राप्त हो सके।

किस भाषा का कितना महत्व

मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर और असम से केरल के गांव-गांव में जाकर मैं भूदान-ग्रामदान का क्रान्तिपूर्ण सन्देश जनता तक न पहुंचा सकता और यदि मैं मराठी भाषा का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर और कहीं काम न करता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रान्तों में काम चलता, परन्तु गाव-गाव मे जाकर क्रान्ति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी। इसीलिए मैं कहता हू कि हिन्दी भाषा का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है। इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।"

"प्रत्येक प्रान्तीय भाषाका अपना-अपना स्थान है। मैंने अनेक बार कहाकि जिस प्रकार मनुष्यको देखने के लिए दो आखों की आवश्यकता होतीहै उसीतरह राष्ट्र के लिए दो भाषाओ प्रान्तीय भाषा और राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता होती है। इसलिए हम लोगों ने दो भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य माना। भगवान शकर का तीसरा नेत्र था जिसे ज्ञान नेत्र कहते हैं। इसी तरह हम लोगों को भी तीसरे नेत्र की जरूरत अनुभव हो तो सस्कृत भाषा का भी अध्ययन लाभकारी सिद्ध होगा और उस समय अंग्रेजी भाषा चश्मे के रूप मे काम आयेगी। चश्मे की जरूरत सबको नहीं पड़ती। हां, कभी कुछ लोगो को उनकी जरूरत पड़ती है। बस इतना ही अंग्रेजी का स्थान है। इससे अधिक नही। इसीलिए मैं कहता हूं कि हिन्दी का प्रचार अच्छी तरह व्यापक रूप मे होना चाहिए।"

दि इण्डस्ट्रियल फाइनेन्स कारपोरेशन आफ इण्डिया लिमिटेड की पत्रिका 'वित्त दिशा' के जनवरी-मार्च १९९५ के अंक से साभार।

—जगन्नाथ, सयोजक, राजभाषा कार्य

"वेद मानव मात्र के लिए हैं"

उनमें ऐतिहासिक घटनाएं ढूंढ़ना व्यर्थ : देवदत्त बाली का आह्वान

देहरादून। नगर की कालोनी राजेन्द्र नगर मे वेद-प्रचार सप्ताह का उद्घाटन करते हुए आर्य समाज धामावाला, देहरादून के प्रशासक श्री देवदत्त बाली ने अपने प्रारम्भिक भाषण मे वेद की महत्ता पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि आदि सृष्टि मे ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान का नाम वेद है। करोड़ो वर्षों मे मनीषी, विद्वान, ऋषि-मुनि वेद को अपौरुषेय मानते आये हैं क्योंकि वेद का रचयिता कोई मनुष्य नहीं है।

एक करोड़ वर्ष से भी अधिक पहले हुए श्री राम की महिमा मे भी बाल्मीकि ने उनके वेद-वेदांग के ज्ञान की महिमा गायी हैं। ५००० साल पहले श्री कृष्ण का नाम अग्रपूजा के लिए प्रस्तावित करते हुए भीष्म पितामह ने जो दो हेतु दिये हैं उनके पहले श्री कृष्ण का वेद-ज्ञान ही है। सिक्खों की गुरुवाणी मे भी वेद की महिमा गायी गई है और कहा गया है "ओंकार वेद निर्माए परमेश्वर ने वेदों का निर्माण किया।

श्री बाली ने कहा वेद मानव मात्र के लिए हैं। इसमे किसी देश-विशेष का भूगोल या किसी विशेष समाज की ऐतिहासिक घटना ढुंढना व्यर्थ है।

अंग्रेजी की बोलती ऐसे बन्द हुई

प्रसिद्ध इतिहासकार डा० काशीप्रसाद जायसवाल हिन्दी को राष्ट्र भाषा मानने में गर्व महसूस करते थे। जहां तक हो सके वह हिन्दी मे काम करते थे। एक प्रोफेसर उनसे मिलने आए और विद्वता दिखाने के लिए अंग्रेजी में बोलते रहे। जायसवाल जी ने हिन्दी में अपनी बात-चीत जारी रखी। फिर भी वह विद्वान अंग्रेजी में बोलते रहे। जायसवाल जी को बुरा लगा और वह फ्रेंच भाषा में बोलने लगे। प्रोफेसर हक्का-बक्का रह गए, तो जायसवाल जी ने कहा—"महोदय, जब विदेशी भाषा में ही बात करनी है तो हम क्यों न फ्रेंच भाषा में बात करें। यह भाषा अंग्रेजी से मधुर है और सुसंस्कृत भी।"

(दैनिक नवभारत टाइम्स के ४ जुलाई १९९१ के अंक मे साभार)
जगन्नाथ सयोजक, राजभाषा कार्य०

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 27,28-7-1995 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) १३९/९५
साप्ताहिक 'आर्यसन्देश" ३० जुलाई १९९५

आर्यसमाजों का निर्वाचन

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्यसमाजों का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९९५ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्यसमाज के नियमो-उपनियमो के अनुसार ३१ मई, १९९५ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों, आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो का निर्वाचन कर लें। आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदों पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों मे समाज का सभासद रहा हो।

१५ मई १९९५ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे भिजवाने के लिए भी लिखा गया था :—

१. १ अप्रैल १९९४ से ३१ मार्च १९९५ तक का वार्षिक विवरण :

(अ) यज्ञ संस्कार, शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गये विवाहों का तथा समारोहो का विवरण।

(आ) [illegible] अधीन चल रही संस्थाओ, विद्यालयो, चिकित्सालय, पुस्तकालय, सेवा [illegible], आर्य वीर दल आदि का विवरण।

२. १ अप्रैल १९९४ से ३१ मार्च १९९५ तक का आय-व्यय विवरण।

३. सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना लें—(क्रमांक) सदस्य का नाम (पिता का नाम) पता। वर्ष भर में प्राप्त सदस्यता शुल्क

४. सदस्यो मे वर्ष भर मे प्राप्त कुल चन्दे का दसवां भाग दशांश, वेद प्रचार राशि तथा आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क ३५० रुपए।

विपदा भय-भंवर से नवरिया बचाओ

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

विपद भय भवर से नवरिया बचाओ।
जिधर ज्वार-भाटा उधर जा रहे हो।
डुबाओगे नैया क्यों हरषा रहे हो॥
स्वय माझी बन करके बल्ली उठाओ-नवरिया बचाओ॥
बारुद का बिछोना बिछा कर न सोओ।
छलनी मे दोहों और कर्मों को रोओ॥
नहीं अंधेरे में भटको दीपक जलाओ-नवरिया बचाओ।
सत्यपथ के पथिक को दो मिलकर सहारा।
बढ़ो और आगे निकट है किनारा॥
घृणा-द्वेष-ईर्ष्या की होली जलाओ-नवरिया बचाओ॥
इस वैदिक बगीचे को मिलकर के सींचो।
नाव के जल को दोनों करों से उलीचो॥
बनो जन-जन के प्रिय सबके मन मे समाओ।
विपद भय भवर से नवरिया बचाओ॥



सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन।-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि०नं० डी० (एल ११०२४)-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ३९ रविवार ६ अगस्त १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५२ दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६
एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में १० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३३१०१५०

रक्षाबन्धन से कृष्ण जन्माष्टमी तक सभी आर्यसमाजें वेद-प्रचार का कार्यक्रम आयोजित करें

अधिकाधिक परिवारों और घरों में यज्ञ, सत्संग किए जाएं और व्यापक जनसम्पर्क की भूमिका प्रस्तुत करें

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी और महामन्त्री डा० धर्मपाल जी ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, आर्य नागरिकों का ध्यान आकर्षित किया है कि अगले सप्ताह १० अगस्त को रक्षाबन्धन, श्रावणपूर्णिमा का पवित्र पर्व है, उस दिन सभी समाजों मे विशेष यज्ञ आयोजित कर यज्ञोपवीत धारण करें। शुक्रवार १८ अगस्त श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का पवित्र दिन है। इस दिन विशेष कार्यक्रम आयोजित कर श्री कृष्ण जी के जीवन कार्यों से प्रेरणा लें।

दोनों आर्य नेताओं ने आर्य संस्थाओं और आर्य जनता से अनुरोध किया है कि वे यत्न करें कि इन दो पवित्र पर्वों का लाभ उठाकर अपने क्षेत्र मे घर-घर मे यज्ञ, सत्संग और वेद प्रचार के कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। यह भी प्रयत्न करें कि इन पारिवारिक यज्ञो-सत्संगो आदि मे आपके क्षेत्र के बहुसंख्यक स्त्री-पुरुष बडी संख्या मे आएं और आपके कार्यक्रम का लाभ उठाएं जिससे आपके क्षेत्र मे अधिक से अधिक जन-सम्पर्क सम्भव हो।

स्वामी विरजानन्द जयन्ती पर वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम में ८वां वेदप्रचार समारोह और ५०१ यज्ञकुण्डों पर यज्ञ

बृहस्पतिवार ५ अक्तूबर को स्वामी विरजानन्द जी के जन्मदिवस समारोह के अवसर पर ५ से ८ अक्तूबर तक वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम, अशोक नगर, रेलवे वर्कशाप रोड यमुनानगर, हरियाणा मे अष्टम वेद प्रचार समारोह और ५०१ यज्ञकुण्डो पर यज्ञ का आयोजन किया गया है। यज्ञ मे यजमान बनना चाहने वाले ३१ अगस्त तक एक सौ रुपए भिजवा दे जिससे यज्ञकुण्ड और यज्ञपात्र यजमान घर ले जा सकेंगे।

सीताराम केसरी से त्यागपत्र लिया जाए

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने केन्द्रीय कल्याणमन्त्री श्री सीताराम केसरी के कथित दलित विरोधी वक्तव्य के लिए उनके त्यागपत्र की माग की है।

श्री सूर्यदेव जी ने श्री केसरी जी के जयपुर वक्तव्य को राष्ट्रविरोधी घोषित किया और उससे देश के पुन विभाजित होने की आशका हो सकती है। स्मरण रहे कि श्री सीताराम केसरी ने जयपुर मे दिए गए अपने कथित बयान में मे कहा था—अनुसूचित जाति एव जनजाति के लोगो को अपना धर्म-परिवर्तन कर लेना चाहिए।" श्री सूर्यदेव जी ने घोषित किया है कि उक्त बयान से दलितो का अपमान हुआ है, इस राष्ट्रविरोधी कार्य के बावजूद यदि श्री केसरी त्यागपत्र नही देते तो प्रधानमन्त्री को उन्हे हटा देना चाहिए।

सीताराम केसरी हिन्दू समाज का कलंक

—देवीदास आर्य

कानपुर। केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी ने अपने निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर शोषित समाज को जो हिन्दू धर्म को छोडने का मशवरा दिया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उनके दिमाग का सन्तुलन बिगड गया है, ऐसा व्यक्ति हिन्दू समाज के लिए कलंक है। उनका हर स्थान पर बहिष्कार होना चाहिए।

उपर्युक्त विचार आर्य समाज गोविन्द नगर तथा केन्द्रीय समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्य समाज द्वारा गोविन्द नगर मे आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

श्री आर्य ने आगे कहा कि सीताराम केसरी कांग्रेस के नेता हैं और स्वतन्त्रता के बाद आज तक देश मे लगभग कांग्रेस का ही शासन रहा है, ऐसी स्थिति में यदि शोषितो का शोषण सरकार समाप्त नहीं कर पाई तो इसके लिये उत्तरदायी उनकी ही पार्टी है, हिन्दू धर्म नही।

सभा मे प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रपति एव प्रधानमन्त्री से माग की गई कि सीताराम केसरी को मन्त्री पद से तुरन्त बर्खास्त कर दें, उनका इस पद पर रहना हिन्दू समाज, कांग्रेस पार्टी व देश के लिए घातक है।

सभा मे सर्वश्री देवीदास आर्य के अतिरिक्त डा० जाति भूषण, स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, प० जगन्नाथ शास्त्री, श्रीमती राज सूरी, कैलाश मागा, तारा मल्होत्रा आदि ने विचार व्यक्त किये। सभा का सचालन मन्त्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया।

सीताराम केसरी को निष्कासित किया जाए

उनका वक्तव्य देश की एकता के विरुद्ध

—श्री प्रेमचन्द गुप्ता का आह्वान

विराट हिन्दू समाज के महासचिव, सनातन धर्म के नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी के जयपुर मे दिये गये

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद में देवतावाची नामों के अर्थ

मनोहर विद्यालंकार

वेद मे प्रयुक्त देवता वाची शब्द विषय का निर्देश करते है। ये नाम वाची शब्द भी निर्वचन द्वारा सम्पन्न यौगिक माने गए है। अत लोक, क्षेत्र और परिस्थिति के अनुसार इन शब्दो के अनेक अर्थ होते है।

उदाहरणार्थ—अग्नि के परमात्मा, जीवात्मा, मन माता, पिता, गुरु, उपदेशक, अध्यापक, प्रचारक, आग, विद्युत, सूर्य आदि अनेक अर्थ होते है, और वे सभी ठीक है। इसलिए यदि कोई अध्येता देवतावाची शब्द का एक अर्थ, अथवा शरीरधारी १ सूक्ष्म व्यक्तित्व मानकर चलेगा, तो वेद के अन्तर्निहित अर्थ को न समझ सकेगा, अपितु कुमार्ग पर भटक जाएगा।

इस दृष्टिकोण से वेद के एक-एक देवता के कुछ मन्त्राशो को लेकर, उनके स्वाध्याय का प्रयत्न करते है।

अर्थ करते हुए अग्नि शब्द ही रखा गया है। उसके निर्वचन के आधार पर प्रकरणानुसार आप उसका जो चाहे, और जितने चाहे अर्थ ग्रहण कर सकते है, किन्तु वे सब व्यावहारिक और प्रकृति नियम के विरुद्ध नही होने चाहिए।

१ अग्ने यत्ते तपस्तेन त प्रति तप,
योऽस्मान् द्वेष्टि य वय द्विष्म ।। अथर्व० २.१९.१

हे अग्ने ! तुझमे सन्तप्त करने का जो सामर्थ्य है, उससे उन व्यक्तियो को सतप्त कर, जो हमारे समाज से द्वेष करते है, और जिनसे सारा समाज द्वेष करता है।

यहा अग्नि का अर्थ राजा, मन्त्री, सेनापति, नेता मे से कोई भी अथवा सभी लिए जा सकते है और वे सब ठीक होगे।

२ अग्निर्न शत्रून् प्रत्येतु विद्वान्। स सेना मोहयतु परेषाम्। अ० ३.१.१

अग्नि हमारे शत्रुओ पर बलाबल को जानता हुआ आक्रमण करे और वह उनकी सेना को मूढ बना दे।

यहा अग्नि का अर्थ सेनापति बाह्य शत्रुओ के प्रसंग मे ठीक है, किन्तु अन्त शत्रुओ के प्रसग मे (क) रोग कृमियो की चर्चा मे जाठराग्नि और (ख) काम क्रोधादि की चर्चा मे सकल्पाग्नि लेना उचित है।

३ अग्निः सूर्यश्चन्द्रमाभूमिराप अतनमात्रिवृता पारयन्तु। अ० ५-२८-२

अग्नि, सूर्य चन्द्र, भूमि और जल, उपर्युक्त तीन प्रकार के (सत्व, रज, तम) वर्तन, के उचित सहयोग द्वारा हमे इस जीवन के पार कर दे—अर्थात शतायु बना दें।

यहा अग्नि से महाभूत अग्नि, जाठराग्नि और सकल्पाग्नि तीनो का ग्रहण उचित प्रतीत होता है।

४ इद राष्ट्र पिपृहि सौभगाय विश्व एनमनुमदन्तु देवा। अ० ९ ३५ १

हे जातवेद अग्ने ! इस राष्ट्र को सौभाग्यशाली बनाने के लिए इसका पालन-पोषण कर। राज्य के सभी अधिकारी और विद्वज्जन इस कार्य मे इसका अनुमोदन और सहयोग करे।

यहा जातवेद अग्नि से राजा या प्रधानमन्त्री का ग्रहण ठीक प्रतीत होता है।

५ रमन्ता पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम्। अ० ७-११५-४

हे जातवेद, अग्नि ! आप ऐसी कृपा करो कि पुण्य कर्मों से अर्जित सम्पत्ति ही मेरे यहा विराजे। पापकारिणी दुर्लक्ष्मियो को मैं अपने से दूर करता हू।

यहा जातवेद अग्नि से परमेश्वर और राजा या अर्थ मन्त्री का ग्रहण उचित लगता है, क्योकि वे अपनी प्रेरणा और व्यवस्था द्वारा ऐसी मानसिक स्थिति और परिस्थितिया उत्पन्न कर सकते है।

६ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानाम्, श्वर्यन्तु यजमाना स्वस्ति। अ० ४.१४,५

हे अग्ने, आप देवताओ मे सब से मुख्य है, अत: हमे प्राप्त हो, जिससे यज्ञशील यजमान कल्याण-मार्ग पर चलते हुए, ज्ञान और सुख को प्राप्त करे। यहा अग्नि का अर्थ परमात्मा, जाठराग्नि और राजा तीनो ग्रहण किए जा सकते हैं।

७ प्रात. प्रात गृहपतिर्नो अग्नि साय साय सौमनसस्य दाता।
वसो वसोर्वसुदान एधीन्धानास्त्वा शतहिमा ऋधेम ।।
अ० १९.५५.४

प्रत्येक प्रात काल अग्नि हमारे धन को बढाने वाला, तथा प्रत्येक साय हमारे मन को शान्ति प्रदान करने वाला हो। हे अग्ने ! तुझे प्रदीप्त रखकर हम १०० वर्ष तक फलते-फूलते रहे।

यहा अग्नि से परमात्मा, गृहप्रमुख, राष्ट्रप्रमुख, जाठराग्नि और सकल्पाग्नि ग्रहण किए जा सकते है।

८ तपनो अस्मि पिशाचाना व्याघ्रो गोमतामिव।
श्वान सिहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम ।। अथर्व ४ ३६.६

यहा अग्नि से राजा, अथवा आत्मविश्वास को प्रदर्शित करने वाले सकल्पाग्नि का ग्रहण हो सकता है।

मै पर मास भोजियो को वैसे ही सतप्त करता हू, जैसे शेर ग्वालो या चर वाहो को सतप्त (दु खी) करता है। जैसे सिंह को देखकर कुत्ते घबरा जाते हैं, वैसे ही परपीडक जन मुझे देखकर इतने घबरा जाते है कि उन्हे आश्रय स्थान ढूढना भी कठिन हो जाता है।

९ त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे, शिवो अग्ने सवरणे भवान।
सपत्नहाग्ने अभिमातिजिद्भव स्वे गये जा गृह्य प्रयुच्छन ।।
अथर्व० २,६ ३

हे अग्ने, ये ब्राह्मणा अथवा ब्रह्म के जिज्ञासु तेरा वरण करते है। अत तू हमारे सवरण चुनाव या निर्देशन मे हम राष्ट्रवासियो का कल्याणकर्ता बना रह। यहा अग्नि का अर्थ परमात्मा, आचार्य और राजा तीनो सम्भव हैं।

हे अग्ने तू हमारे प्रतियोगियो या शत्रुओ का नाशक तथा अभिमान या शत्रुओ का जेता बना।

यहा अग्नि का अर्थ परमात्मा, राजा या सेनापति सभव है।

हे अग्ने ! अपने घ क्षेत्र या राष्ट्र मे तू प्रमाद किए बिना सदा जागरूक रहा।

यहा राजा सेनापति या प्रत्येक व्यक्ति के लिए सदेश है। इस पाद मे परमात्मा का ग्रहण असमीचीन होगा।

१० येन ऋषयो बलमद्योतयन युजा येनासुराणामयुवन्त माया।
येनाग्निना पणीनिन्द्रोजिवान् सनो मु चत्वहस ।। अ० ४ २३ ५

प्रथमपाद—जिसे अपना सहायक बनाकर तत्व द्रष्टा कर्मठ व्यक्ति अपने बल को प्रकट करते है। अग्नि—परमात्मा या आचार्य।

द्वितीयपाद—जिसकी सहायता से साधक प्राणप्रद देवो के ज्ञान को प्राप्त करते है। अग्नि—परमात्मा, आचार्य।

जिसकी सहायता से साधक आसुर वृत्तियो की व्यामोहन शक्तियो को अपने से पृथक् करते है। अग्नि—परमात्मा या आचार्य।

तृतीय पाद—जिस अग्नि की सहायता से (इन्द्र) राजा या जितेन्द्रिय व्यक्ति पणीन्—दुष्ट व्यापारी यो को, अथवा अपने दुष्ट भावो को जीतकर अपने वश मे करता है। यहा अग्नि का अर्थ परमात्मा, आचार्य, अर्थ मन्त्री (राजा का प्रतिनिधि) किया जा सकता है।

श्याम सुन्दर राधेश्याम, ५२२, कटरा ईश्वर भवन, खारी बावडी दिल्ली-६

रानी बन कर सब पर प्रेम का शासन

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।
नन्दान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु॥ ऋ १०, ८५, ४६

ऋग्वेद के इस मन्त्र के ऋषि आशा-आकाक्षा करते है–हे वधू, तुम सास, ससुर, ननदो, देवर आदि को अपने स्नेह से अपने वश मे रखने वाली बनो। तुम सब की रानी बनकर सब पर अपना प्रेम का शासन चलाओ।

सम्पादकीय अग्रलेख

नारी पर यह अत्याचार खत्म करना होगा

उस दिन रात को एक सार्वजनिक सरकारी होटल के समीप बगिया मे अवस्थित भोजनालय के तन्दूर मे एक शिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्री उड्डयन एव विविध विषयो मे पारगत नारी देह को जलाकर नष्ट करने की घटना ने मानवता को झकझोर कर रख दिया है। वैसे, कहने को शास्त्रकार मनु के शब्दो मे आज का समाज नारा लगाता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'–जिस परिवार समाज मे नारियो की पूजा होती है, वहा दिव्य शक्तिया प्रसन्न होती है। यह ठीक है कि कानून और मान्यता की दृष्टि से पुरुष और नारी बराबर है, इतना ही नही, नारी ने समाज मे अपनी स्थिति सुदृढ की है, वह आज हर मोर्चे पर वह न केवल तैनात है, वह प्रतिस्पर्द्धा, प्रतियोगिता एव समुन्नति के हर मोर्चे पर अपनी अग्रणी स्थिति बनाने के लिए प्रयत्नशील है। लगता है आज के समाज के बहुसख्यक पुरुष वर्ग को या उनका नियत्रण करने वाले नारी-मानस को परिवार और समाज मे लडको के मुकाबले लडकियो का सरक्षण रास नही आता। कम से कम देखने मे और आकडो की दृष्टि से यह कटु तथ्य उभर कर आ रहा है। जब से मशीनी जाच मे माता के पेट मे पल रहे भ्रूण के लिंग पता लगाने का गुर मिला है, तब से न जाने कितनी लडकिया इस ससार मे ही आने से रोकी जाने लगी है।

एक सर्वेक्षण रिपोर्ट ने बतलाया है १९८८ मे अकेले बम्बई मे ऐसी भ्रूण हत्याओ के चालीस हजार मामले हुए और केवल एक क्लिनिक मे सोलह हजार भ्रूण नष्ट किए गए। आकडे यह भी घोषित कर रहे है कि जन्म ले लेने पर भी लडकियो के प्रति बरती गई उपेक्षा का ही यह नतीजा है कि हर साल जन्म लेने वाली एक करोड बीस लाख लडकियों मे से पच्चीस प्रतिशत अपना पन्द्रहवा जन्म-दिन भी नही मना पाती, और लडको की प्रतिवर्ष जितनी मृत्यु दर है, उसमे कही बहुत अधिक लडकियो की है। लडको के मुकाबले तीन लाख लडकिया हर साल अधिक मरती हैं। आकडो के आधार पर यही कडवी सच्चाई उजागर होती है कि लडको के मुकाबले लडकिया लगातार कम हो रही है। १९८१ और १९९१ के जनगणना के आकडे चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे है कि दस वर्षो मे तीन करोड से ज्यादा स्त्रिया लुप्त हो गई। एक कटु तथ्य यह भी है कि इस शताब्दी के पहले १९०१ के वर्ष मे प्रति हजार पुरुषो पर ९७२ स्त्रिया थी तो आज प्रति हजार पुरुषो पर केवल ९२५ स्त्रिया शेष है।

परिवारो और समाज मे ही नही, सम्पूर्ण राष्ट्र मे लडको की अपेक्षा यदि लडकिया कम हो रही है तो स्पष्ट है लडकियो की अपेक्षा लडको से पक्षपात अधिक है। सारी प्रगति और विकास के बावजूद लडको की अपेक्षा लडकियो को कम खिलाना, उनसे कम ही वही घटिया पहनाना, व कम खेलने देना और कम स्वस्थ रहने के अवसर देना है। लड़के की अपेक्षा लडकी को रहने और पनपने के अवसर ही नही है, फिर माता के गर्भ मे भ्रूण का निर्धारण होने पर शहर-शहर मे उनके पदार्पण पर ही रोक लगा दी जाती है। समाज की गाडी का एक पहिया निरन्तर कमजोर किया जा रहा है, जन्म से पहले ही उसे नष्ट किया जा रहा है। आज समाज मे नारी का उत्पीडन कम नही हो रहा है, प्रत्युत नई विधा के माध्यम से तो उसके अस्तित्व को ही नकारा जा रहा है। महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त ने अपने अमर काव्य मे लिखा था–'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आचल मे है दूध, आखो मे पानी,' 'सचमुच नारी आसू बहाती हुई भी अपनी सतान के लिए अपना दूध और रक्त तक न्योछावर कर देती है, बदले मे पुरुष वर्ग और समाज उसे तिल-तिल कर निर्बल बनाने अथवा जन्म से पहले ही उसे नष्ट करने पर तुला है, यह नारी से किया जा रहा, असन्तुलन और अत्याचार तुरन्त खत्म करना होगा, इसके बिना हमारी सारी प्रगति और विकास व्यर्थ हो जाएगे।

चिट्ठी-पत्री

क्यों नहीं, हमारा दिल पसीजता ?

एक नैना साहनी को तन्दूर मे जलाने से देश भर मे तूफान-सा आया हुआ है। जरा सोचिए। रोज लाखो–करोडो बेनाम मासूम बेजुबान मुर्गिया, मुर्गे तन्दूर मे न सिर्फ जलाए जा रहे है, बल्कि खाए भी जा रहे है। क्यो नही, हमारा दिल पसीजता ? क्योकि वह पराया खून है इसलिए ?

—सजय चोपडा, ९११।१० गुरुदेवनगर, जालन्धर शहर–८

अन्दर के दैत्य को मारना होगा

प्रतिशोध मे धधकती नयना की आत्मा अपने कातिल को माफ कर सकती है, पर हिन्दुस्तानी जनता को कभी माफ नही करेगी, यदि वह उसके साथ किए 'कृत्य' पर इन्साफ नही करेगी। इस दुष्कृत्य की पुनरावृत्ति न हो, यही न्याय है; इसको रोकने का एक ही उपाय है, हम सब को अपने अन्दर के 'दैत्य' को मारना होगा, उनके 'चरित्र' से पहले अपना चरित्र सुधारना होगा।

—डा० अनिल शर्मा 'प्रीत', रामपुर मनिहारन, सहारनपुर

धर्म की आड़ में नशे को बढ़ावा

धार्मिक पर्व शिवरात्रि के दिन लाखो श्रद्धालु हरिद्वार से पैदल यात्रा करके ८-१० दिनो के बाद बागात मे पहुचते है। हरिद्वार से कावड खरीद कर लाते है और शिवरात्रि के दिन बागात मे एक मन्दिर मे चढाते है। श्रद्धालुओ का मानना है कि भगवान् शिव भग घोट कर पीते थे तथा जब वह पूर्ण मस्त हो जाते थे, तब अपने श्रद्धालुओं को भी मस्त रहने का वरदान देते थे। इसी आड मे पचास प्रतिशत से भी अधिक लोग हरिद्वार के नजदीक मे अफीम, सुलफा गाजा वगैरा खरीदकर लाते है जिसका सेवन वे रास्तेमे स्वय करते है तथा इसका धन्धा भी करते है। इस धधे से नई पीढी अधिक प्रभावित है। एक तरफ सरकार विज्ञापनो द्वारा नशे की बुरी आदत को समाप्त करने की कोशिश मे है, दूसरी ओर ये नवयुवक धर्म की आड मे इसके चगुल मे फसते जा रहे है।

—सूर्यप्रकाश आर्य, आर्य रेडियो कार्पोरेशन, मेन बाजार झज्जर (रोहतक)

आर्य सभा का राष्ट्रीय अधिवेशन कुरुक्षेत्र में

नई दिल्ली। "आर्य सभा" का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन १२ व १३ अगस्त, ९५ को जाट धर्मशाला, ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) मे होगा, जिसमे सभा की चुनावी रणनीति तथा घोषणा-पत्र को अंतिम रूप दिया जाएगा।

आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश ने बताया कि आगामी चुनावो मे सभा न्यूनतम कार्यक्रम के आधार पर समान विचारधारा वाले दलो के साथ स्थानीय स्तरो पर तालमेल कर सकती है।

शादी खामपुर के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता कलारामजी का निधन

यह जानकर समस्त आर्यजनता को गहरा दु ख और शोक हुआ है कि आर्यसमाज शादी खामपुर के पूर्व प्रधान सुप्रसिद्ध समाजसेवी, कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री कलाराम जी का आकस्मिक देहावसान हो गया है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प० वेदव्रत जी शर्मा ने प्रतिनिधि सभा एव दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो एव आर्यजनता की ओर से उनके आकस्मिक निधन पर गहरा शोक–दु ख अभिव्यक्त करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति और शोक सन्तप्त परिजनो को सात्वना देने की प्रार्थना की।

शुक्रवार २८ जुलाई के दिन श्रद्धाजलि सभा मे स्वामी स्वरूपानन्द जी ने दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की है।

आर्यसमाज मोनीपत नगर—प्रधान-श्री हरिश्चन्द्र नाज वरिष्ठ उपप्रधान-श्री सत्यप्रकाश मुखीजा, उपप्रधान-श्री कवरभान बत्ता, मन्त्री-श्री वेदप्रकाश आर्य, उपमन्त्री-श्री नित्यप्रिय आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री मनोहरलाल सपडा, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री सुदर्शन कुमार, लेखा-निरीक्षक-श्री कृष्णकुमार आर्य, चार अन्तरग सदस्य चुने गए।

आर्यसमाज जवाहरलाल रोड, घिरनी पोखर, मुजफ्फरपुर—प्रधान–श्री पन्नालाल आर्य, मन्त्री–श्री इन्द्रदेव साह, कोषाध्यक्ष–श्री जगदीशप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष–श्री ब्रह्मानन्द जिज्ञासु, प्रकाशन मन्त्री–श्री कमलेश दिव्यदर्शी, आयव्यय निरीक्षक—श्री वैद्यनाथ प्रसाद, उपप्रधान—डा० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, श्री हरिप्रसाद साहु।

टी.वी. सीरियल की स्क्रिप्ट वैदिक विद्वानों को दिखाएंगे

उनके सुझाव सम्मिलित होंगे : वेदों पर टी०वी० सीरियल के बारे में निर्माता–पटकथा लेखक से बम्बई में सार्वदेशिक प्रतिनिधिमण्डल की वार्ता

महेश विद्यालंकार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयानुसार सार्वदेशिक सभा की ओर से एक प्रतिनिधि मण्डल द वेदाज सीरियल की जाच-पडताल के लिए बम्बई जाये, जिसके निर्माता श्री सुनील लुल्ला और पटकथा व सवाद लेखक श्री भूषण बनमाली है। वहा जाकर, उनसे मिलकर यह ज्ञात किया जाए कि वे इस सीरियल मे वेदो के प्रति क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं? किन मान्यताओं और धारणाओं को पर्दे पर लाना चाहते है।

इसी निर्णय के क्रियान्वयन के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी, आर्य जगत के विद्वान शिरोमणि आचार्य विशुद्धानन्द जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी एव मैं १९-७-९५ को बम्बई पहु चे। जाते ही बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकारनाथ जी व श्री शिववीर जी शास्त्री ने हमारी मीटिंग निर्माता लुल्ला जी व भूषण वनमाली से कराई।

उन्होने इस सीरियल की विस्तार से रूप रेखा व चर्चा रखी। उन्होने इसका नाम दिया है–वेद और पुराण, उनका कहना था कि हमने तो वेदो के बारे में वही दृष्टि अपनाई है जो भारतीय व पाश्चात्य विद्वानो की है। हम तो वेदो मे इतिहास, भूगोल, देवी, देवता, अवतारवाद, मूर्तिपूजा जादू टोना, पशुबलि आदि खोज रहे हैं। जिनके आधार पर कहानियो को अतिरजित, रोचक और मनोरजक रूप देकर पर्दे पर उतारा जा सके। उनका कहना था कि वेदो को बने लगभग चार पाच हजार वर्ष हुए है। उन्होने वेदो को पुराणो के साथ जोडने की कल्पना रखी। उनकी वेदो के बारे मे दृष्टि आम प्रचलित धारणाओ जैसी मिली। उनको वेदो के यथार्थ स्वरूप की जानकारी नही है।

उनके सम्पूर्ण प्रारूप को सुनने के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान व वैदिक विद्वानो ने अपने वैदिक स्वरूप व ऋषि दयानन्द का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया–

इन्होने बताया कि वेद सृष्टि के आदि मे परमेश्वर ने मनुष्यो के कल्याण के लिए ऋषियों के हृदयो मे प्रकाशित किए। वेदो का काल सृष्टि उत्पत्ति के साथ है। जितनी पुरानी सृष्टि है, उतने ही पुराने वेद है। वेदो मे सृष्टि का इतिहास है, परन्तु मानवीय इतिहास का वर्णन नही है। वेदो का पुराणो के साथ कोई सम्बन्ध नही है। पुराणो जैसे किस्से कहानिया दन्तकथाए, आदि वेदो मे नही है।

वेदो मे आलकारिक वर्णन सृष्टि विज्ञान परक है। जैसे यम-यमी, पुरुरवा, उर्वशी, इन्द्र अहल्या आदि। वेदो मे मुख्यरूप मे एक ही ईश्वर का प्रतिपादन है। वही आराध्य व उपासनीय है। इसके अतिरिक्त मानवीय कल्पनाओं पर आधारित कोई जड वा मनुष्य देहधारी देवी देवता का वर्णन नही है। वेदो मे अवतारवाद, मूर्तिपूजा, मास, मदिरा जादू टोना आदि का चित्रण नही हुआ है। वेदो के सत्य व यथार्थ स्वरूप से हटकर जो भारतीय व पाश्चात्य विद्वानो ने अर्थ किए है वे अमान्य, अवैदिक और अवैज्ञानिक हैं। चर्चा मे हमारे विद्वानो ने ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के दृष्टिकोण को बडे सशक्त प्रमाण तर्क व युक्ति से प्रस्तुत किया। वे प्रतिनिधि मण्डल से अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होने पूर्ण आश्वासन दिया कि हम जो भी इस सीरियल की स्क्रिप्ट तैयार करेंगे, पहले आपके विद्वानो को दिखायेंगे, उनकी राय लेंगे, जो भी सुझाव होगे उनको यथासभव सम्मिलित करेंगे। हमने उनको अपनी मान्यताओ व विचार विन्दुओ को लिखित रूप मे दिया है। अपने सिद्धातो की पुष्टि मे कई पुस्तकें दी। बम्बई सभा व सान्ताक्रूज के मन्त्री जी ने उन्हे सभी प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन दिया है।

अब देखना है कि वे अपने कथन पर कितना खरे उतरते है। आर्यजनता को जागरुक होना पडेगा। अपनी वेद सम्पदा की धरोहर की चौकसी करनी पडेगी, क्योकि वेद हमारे चिन्तन का मूलाधार है। वेद का यथार्थ स्वरूप बचेगा तो आर्य समाज जिन्दा रह सकेगा। वेदो के स्वरूप को विकृत करने के बडे भयकर कुचक्र चल रहे है? हमारा कर्त्तव्य है कि हम सगठित होकर वेद ज्ञान को सुरक्षित करे।

मुस्लिम युवक ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

आर्य समाज मन्दिर गोविन्दनगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने हमीरपुर निवासी एक १२ वर्षीय एम०ए० तक शिक्षित मुस्लिम युवक श्री अनवर बहीद को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी। यह युवक जिला विकास कार्यालय हमीरपुर में लिपिक हैं। इसका नाम आशीषकुमार रखा गया है। श्री देवीदास आर्य ने शुद्धि संस्कार के पश्चात एक समारोह में इस युवक आशीष कुमार का विवाह वैदिक रीति से कराया। आशीष कुमार ने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों की भूरि-भूरि प्रशसा की। उनको श्री देवीदास आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ भेंट किया।

—बाल गोविन्द आर्य, मन्त्री

बोध-कथा

सच्ची सेवा व्यर्थ नहीं जाती

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी जीवनी 'कल्याण मार्ग का पथिक' मे एक सच्ची घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है–"मैं बतला चुका हू कि मैं विचित्र नास्तिक था, जो योगाभ्यास और उसकी विभूतियो मे विश्वास करने वाला था–मैंने सुना कि त्रिवेणी पार झू सी के जगल मे एक महात्मा रहते हैं, जिनके वश में एक शेर है दिन को अन्तर्धान रहते है, केवल रात को उनके दर्शन हो सकते हैं। मैं अपने मित्र बुद्धदेव तिवारी के साथ, जिनको मेरी सगत ने योग की ओर झुकाया था, मिठौसी भोजन से विवृत्त होकर शाम को पार उतर गया। घूमते हुए दस बजे आश्रम के समीप पहु चे। मैदान मे एक वृद्ध केवल कौपीनधारी महात्मा को देखा। तीन बजे तक न उनकी समाधि खुली और न हमारी आख झपकी। तीन बजे के लगभग शेर की गर्जना सुनाई दी, फिर वह सीधा महात्मा जी की ओर आता दिखाई दिया। समीप पहु चने पर उनके पैर चाटने लगा। महात्मा ने आखे खोली। शेर के सिर पर प्यार का हाथ फेरा और कहा–'बच्चा, आ गया। अच्छा, अब चला जा।" शेर ने सिर चरणो मे रख दिया और उठ कर जगल की राह ली।

उसी समय हम दोनो ने पैर छूकर महात्मा को प्रणाम किया और इस अद्वितीय विभूति पर आश्चर्य प्रकट किया। महात्मा का उत्तर कभी नही भूलता "यह कोई विभूति नही है, बच्चा, इस शेर को किसी शिकारी ने गोली मारी थी। इसके पैर मे ऐसा घाव लगा कि वह चल नही सकता था और व्याकुलता से हृदय-बेधक शब्द कर रहा था। शायद प्यासा था। मैंने पानी लाकर पिलाया और जगल से जानी हुई अपनी एक बूटी लाया और रगड कर इसके पैर मे लगाई। घाव अच्छा होने लगा। जब तक मैं दवाई लगाता रहता, यह नित्य मेरे पैर चाटता रहता। जब सर्वथा नीरोग हो गया, तब भी इसका व्यसन नही छूटा, नित्य मेरी उपासना की समाप्ति पर आ जाता है। सुनो बच्चा! अहिंसा का अभ्यास और सेवा कभी व्यर्थ नही जाते।"

–नरेन्द्र

मानव कल्याणार्थ शाकाहार का महत्व-मांसाहार का दुष्परिणाम

विष खाकर मरना ही है ! तो अण्डे खाइये !!

"अण्डे खाने से हाईब्लडप्रेशर होता है, जो बाद मे हृदय रोग बन जाता है। यह दुष्पाच्य होने से पेट मैं तो गडबड करना ही है, पथरी आदि कई रोगो को पैदा करता है, अण्डे खाने वाले के आमाशय की दीवारो तथा आते रक्तवाही नलिकाओ मे भयकर घाव पड जाते है जो रोग का कारण बनते है। अण्डे खाने से पेचिस आदि बीमारी होती है।"

उक्त विचार है कैलिफोर्निया (अमेरिका) के वैज्ञानिक डा० कैथरिन निम्मी तथा डा० जे० अमेन अनेक परीक्षणो के बाद इस निष्कर्ष पर पहु चे है कि अण्डे मे कालेस्ट्राल नामक विष पाया जाता है। यह विष रक्तवाहिनी नलिकाओ को घायल करता है, जिसके कारण उन पर गदगी जम जाती है तथा उनका मार्ग सकडा हो जाता है। इनसे लचक का अभाव हो जाता है। ये नलिकाए बडी कोमल एव सवेदनशील रचनाये है इनकी कोमलता एव सवेदनशीलता घटने से शीघ्र बुढापा आता है और उसकी आयु कम हो जाती है। यह विवरण अमेरिका के फ्लोरिडा विश्वविद्यालय ने सन् १९९३ के अपने एक स्वास्थ्य बुलेटिन मे प्रकाशित किया था।

अब तक अण्डे को व मासाहार को स्वास्थ्य विज्ञान पिछले दिनो मे सम्पूर्ण भोजन मानता आया था परन्तु नई शोध ने उन्हे अधिक गहराई तक विचार करने के लिए विवश किया है और इस निष्कर्ष पर पहु चाया है कि अण्डे की उपयोगिता वैसी नही जैसी अब तक प्रतिपादित की जाती है। अभी-अभी रूस मे १६० वर्ष की आयु मे एक दीर्घजीवी मानव की मृत्यु हुई। उसके दीर्घ जीवन का कारण शुद्ध शाकाहारी जीवन था।

इ ग्लैंड के डा० राबर्ट ग्राम, प्रो ओकाडा, डेविडसन, इरविग आदि वैज्ञानिको ने भी परीक्षण कर प्रयोग किये है इनके आधार पर उन्होने स्वीकार किया है कि अण्डे खाने वालो को इसके हानिकारक प्रभाव से पेचिस, मन्दाग्नि, आतो तथा आमाशय का क्षय रोग हो सकता है इसी कारण अण्डे मनुष्य के लिए विष है। कैल्शियम तथा कार्बोहाइड्रेट आदि तत्व अण्डे मे कम होते है, इसलिये यह पेट मे सडाध पैदा करके कई बीमारिया पैदा करता है।

—केवलानन्द सरस्वती

इ गलड के डा० आर० जे० विलियम ने कहा है, हो सकता है अण्डे खाने वाले लोगो का यह भ्रम है कि अपने को अधिक स्वस्थ अनुभव करें, पर बाद मे वे कई भयकर रोगो से ग्रस्त हो जाते है जिससे रक्तचाप और एग्जीमा, रक्तविकार जैसे महारोग पैदा करता है।

वैज्ञानिक निष्कर्ष के आधार पर यह सिद्ध होता जा रहा है कि मासाहार से लाभ की अपेक्षा शरीर को हानि ही अधिक उठानी पडती है। मनुष्य का वास्तविक भोजन सात्विक शाकाहार, फल, फूल, सब्जी और दूध, दही, मक्खन, मेवा आदि पदार्थ ही श्रेष्ठ हैं।

मू गफली चना, उडद कीमत मे सस्ते हैं लेकिन बादामो से भी अधिक श्रेष्ठ है। मास व अण्डो की अपेक्षा मू गफली सस्ती है, पौष्टिक व शक्तिवर्धक है। एक मूठभर मू गफली के दाने मे मुर्गी के चार अण्डे की अपेक्षा अथवा पाव किलो मास की अपेक्षा अधिक शक्ति व वीर्य बढाने वाला सामर्थ्य है।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश अध्याय १२ पृष्ठ ५४५) मे लिखा है कि मास का प्रचार करने वाले सब राक्षस के समान है, चारो वेदो मे मास मछली अण्डा आदि खाने का कही भी उल्लेख नही है, स्वामी जी देशवासियो को चेतावनी देते हुए अपनी 'गोकरुणा निधि' पुस्तक मे लिखते है कि गो रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है, गो आदि पशुओ के विनाश से राजा और प्रजा दोनो का विनाश होता है। सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ३२४ मे स्वामी जी लिखते हैं कि शराबी और मासाहारी के हाथ का खाने पीने से भी शराब मासादि के खाने पीने का दोष लगता है।

तपोवन आश्रम, आर्यसमाज आदर्श नगर, अजमेर

वह द्विराष्ट्र सिद्धांत-एक धोखा

हालाकि यह अकादमिक दिलचस्पी का विषय ही हो सकता है, लेकिन अल्ताफ हुसैन द्वारा द्विराष्ट्र सिद्धात को हाल ही मे एक 'धोखा' बताए जाने से उन लोगो के चेहरो पर जरूर मुस्कान की एक स्मित रेखा खिची होगी, जिन्हे विभाजन की त्रासदी याद है। यह भी कम महत्वपूर्ण नही है कि यह दुखद वास्तविकता पाकिस्तान की उस आबादी के नेता—उर्दू भाषी मोहाजिर के दिमाग मे उठी है, जो भारत से सम्बद्ध थे और उपमहाद्वीप के इन्ही लोगो के निवासक्षेत्रो से चौथे दशक मे मुसिलम होमलैण्ड की माग सबसे जोरदार तरीके से उठी थी।

यह इतिहास का तथ्य है कि द्विराष्ट्र सिद्धात के पीछे मुस्लिम लीग थी और वह उत्तर प्रदेश मे बहुत मजबूत थी, जहा मुसलमान अविभाजित पजाब और बगाल के मुकाबले अल्पसख्यक थे। यह भी आश्चर्य की बात नही है कि धर्म के आधार पर देश को बाटने के सिद्धात को पहला धक्का १९७१ मे लगा, जब स्वतन्त्र बागला देश ने १९४७ मे सुहरावर्दी और शरतचन्द्र बोस द्वारा सयुक्त बगाल कायम रखने की अन्तिम क्षणो की कोशिशो की फिर याद दिला दी।

लगता है अब मोहाजिर कौमी मूवमैंट की बारी है कि वे अलग उर्दू प्रात की माग कर रहे है, लेकिन विवादास्पद मोहाजिर नेता ने द्विराष्ट्र सिद्धात को नकारा नही है। वह तो केवल उनके अनुचित तरीके के प्रति शिकायत कर रहे है कि उनका नरससहार हो रहा है और कि १९७१ से बागलादेश मे फसे हजारो बिहारी मुसलमानो को पाकिस्तान स्वीकार नही कर रहा है।

—इण्डियन एक्सप्रेस

मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान्

भारतीय वैदिक संस्कृति समझें : महर्षि के ग्रन्थों का अध्ययन करें

देहरादून। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के प्रबन्धक श्री भोलानाथ आर्य ने उ०प्र० राज्य की मुख्यमन्त्री सुश्री मायावती जी को एक पत्र लिखकर अनुरोध किया है —

समाचार पत्रो के माध्यम से आपके विचार सामने आते रहते है। एक समाचार से पता चला कि आपने स्वय को कुवारी एव चमारी कहा है और जनता से वोट देने की माग की है। आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का विरोध किया था और बताया था कि हमारे मान्य शास्त्रो, वेद, उपनिषद, दर्शन स्मृतियो मे इसका कोई विधान नही है और इसके अनुरूप जो बाते समाज मे प्रचालित है, वे उक्त ग्रन्थो मे स्वार्थी व्यक्तियो द्वारा प्रक्षेपो के कारण आई है। स्वामी दयानन्द ने कहा था कि मनुष्य जन्म से नही कर्म से महान बनता है। शूद्र शब्द उन लोगो के लिये प्रयुक्त है जो सेवा अथवा श्रम से जीवन व्यतीत करते है। शासन व्यवस्था चलाने वाला प्रत्येक व्यक्ति "क्षत्रिय अथवा क्षत्राणी" है।

महर्षि दयानन्द ही पहले व्यक्ति है, जिन्होने लिंग के आधार पर भेद को अनुचित बताया और कहा कि नारी मातृ-शक्ति है एव पुरुष के समान ही नही, अपितु पुरुष से भी महान है। मनुस्मृति का श्लोक प्रस्तुत कर उन्होने कहा था कि जहा नारियो का आदर नही होता वहा देवता निवास नही करते। अपने ग्रन्थो एव व्याख्यानो मे स्वामी जी ने माता, नारी को पूजनीय कहा और माना। उनके विरोधियो ने एक बार उनको अपमानित करने के लिये एक वेश्या को उनके पास भेजा ता वह वेश्या स्वामी दयानन्द द्वारा उन्हे माता शब्द मे सम्बोधित किए जाने पर रोमाचित हो उठी और उसने उन्हे साधुवाद दिया और विपक्षियो के षडयन्त्र का पर्दाफाश कर दिया।

मैं आशा करता हू कि आप महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो का अध्ययन कर भारतीय वैदिक सस्कृति को समझने का प्रयास करेंगी।

आपकी जानकारी के लिए यह भी निवेदन है कि विश्व मे आर्यसमाज एक ऐसा सगठन है जहा बहुत से पुरोहित (पुजारी) दलित वर्ग से सम्बन्ध रखते है और यह व्यवस्था परतन्त्रता के दिनो से चली आ रही है।

आशा है आप जीवन मे हमेशा आशाजनक विचारो को ही प्रस्तुत करेगी। इसके साथ यह भी कहना चाहता हू कि इस समय आप प्रदेश की मुख्यमन्त्री हैं और वैदिक शासन व्यवस्था मे राजा प्रजा का पिता होता है। इस सिद्धात के अनुसार आप प्रदेश की जनता की माता है और आपको उन्ही शब्दो का प्रयोग करना चाहिए जो सभी सन्ताना को प्रिय हो। मुझे आपके वह विचार भी पढने को मिले जिसमे आपने कहा कि आप वर्ग विशेष की नही अपितु, पूरे प्रान्त और इसकी जनता की मुख्यमन्त्री है। आपके विचार प्रशसनीय है।

अनुशासित स्वावलम्बी जीवन बिताओ

योगसाधना शिविर में श्रीमती नाकरा का उद्बोधन

आर्यसमाज (डी०ए०वी०) विकासपुरी के तत्वावधान मे १ से ५ जुलाई १९९५ तक विद्यार्थी वैदिक ज्ञानार्जन शिविर एव आध्यात्मिक योग साधना शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की अध्यक्षा प्रि० श्रीमती चित्रा नाकरा जी ने अध्यक्षीय आसन मे कहा हमारे इस शिविर का उद्देश्य "वैदिक सस्कृति से छात्रो को परिचित कराना, योगाभ्यास से बच्चो के ध्यान को पढाई-लिखाई मे केन्द्रित करना, शरीर को रोग-मुक्त रखना, अनुशासित जीवन बनाना, स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करना इत्यादि बातो पर बल दिया जाना चाहिए।

श्रद्धाजलि सभा—शिविर के उद्घाटन से पूर्व और यज्ञ के उपरान्त एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमे आर्य नेता, शिक्षाविद, डी ए वी मैनेजिग कमेटी के "प्रधान" स्वर्गीय श्री दरबारी जी को उनके महान उपकारो, उनके द्वारा किये शिक्षा के क्षेत्र मे उच्च आदर्शो के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

उद्घाटन समारोह के मुख्य वक्ता प० राजपाल सिंह जी शास्त्री थे। जिन्होंने शिविरार्थियो को तथा अध्यापक वर्ग को मधुर-वाणी के प्रयोग करने पर, सत्सगति तथा योगाभ्यास से ज्ञानार्जन सम्भव है। सगीताचार्या—श्रीमती उदेश आर्या जी ने मधुर-गीतो, शिक्षा प्रद-भजनो के माध्यम से बच्चो को जीवनोपयोगी शिक्षा दी।

शाकाहारी जीवन से लम्बी आयु

इसके पश्चात आर्य युवा नेता श्री अजय सहगल ने अपने उद्बोधन मे शाकाहारी—जीवन व्यतीत करने पर बल दिया। अपने स्वय के अनुभव रखते हुए कहा कि सभी छात्र-छात्राओ तथा शिक्षको को भी शाकाहारी भोजन करना चाहिए। आज का विज्ञान भी इस सत्य को स्वीकार कर रहा है। शाकाहारी जीवन के लाभो का उल्लेख करते हुए कहा कि शाकाहारी मनुष्य लम्बी आयु प्राप्त करता है। उसको क्रोध भी कम आता है। सहन शक्ति का विकास होता है। गर्मी, सर्दी, वर्षा ऋतु के तीव्र प्रकोप को वह आसानी से सहन कर लेता है। चेहरे पर तेज और ओज रहता है। मन मे शान्ति रहती है।

परमेश्वर कण-कण में सर्वत्र व्यापक

उसे मन्दिर, मस्जिद में सीमित नहीं किया जा सकता : कथनी के साथ अपना आचरण सुधारो

देहरादून। हाथी बड़कला एस्टेट शिवमन्दिर मे वेद-प्रवचन करते हुए वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के मन्त्री तथा "पवमान" मासिक के सम्पादक प० देवदत्त बाली ने कहा कि यह समझ लेना कि मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या गिरजे मे ही परमेश्वर है, अपने अज्ञान को ही दर्शाना है। जो सर्वव्यापक नही वह सृष्टिकर्ता ईश्वर नही, उसको अपने दायें-बाये, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, यहा तक कि कण-कण मे सर्वत्र व्यापक जो नही मानता वह परमात्मा को नही, किसी अन्य को ही मानता होगा।

ईश्वर के सृष्टिकर्ता, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सत्, चित्, आनन्द स्वरूप को जानकर, मानकर ही मनुष्य अपना उत्थान कर सकता है अन्यथा वह कहने-भर को आस्तिक है परन्तु कार्य ऐसे करता रहता है जैसे उसके पापो को देखने वाला कोई नहीं। इससे वह उत्थान की बजाय पतन के मार्ग पर फिसलता चला जाता है। महर्षि दयानन्द की सूक्ति कि "जो भाड के समान ईश्वर का गुण—कीर्तन तो करता रहता है परन्तु अपने आचरण को नही देखता, उसका स्तुति प्रार्थना करना व्यर्थ है" की आपने विशद व्याख्या की।

संस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) में प्रवेश प्रारम्भ

सभी शिक्षा प्रेमियो को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) मे प्रथम कक्षा से दसवी कक्षा तक हरियाणा बोर्ड से तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध प्राज्ञ, विशारद तथ. शास्त्री कक्षाओ मे १ जुलाई-९५ से प्रवेश प्रारम्भ है।

यह नि शुल्क शिक्षण सस्था प्रकृति के सुरम्य सात्विक वातावरण मे स्थित है। यहा सरकारी विद्यालयो मे पढाए जाने वाले सभी विषयो के साथ अलग से सस्कृत, धर्मशिक्षा वा हिन्दी माध्यम से सुयोग्य गुरुजनो द्वारा अध्यापन कार्य होता है।

आवश्यकता :—

योग्य अनुभवी (रिटायर्ड अन्य अन्य) शास्त्री, आचार्य की। वेतन योग्यतानुसार। सम्पर्क करें।

प्राचार्य
सस्कृत महाविद्यालय मटिण्डू (सोनीपत)

वर्तमान संदर्भ में श्रीकृष्ण की धर्मनीति पर भाषण प्रतियोगिता : आर्यसमाज हनुमान रोड में वेदजयन्ती समारोह : वाचस्पति उपाध्याय पधारेंगे

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का वेदजयन्ती समारोह (श्रावणी पर्व से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी) दिनांक १०-८-९५ से १८-८-९५ तक बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस पर्व पर आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा प० भिक्षु दिवस्पुत्र भारती होंगे तथा इस अवसर पर आर्य जगत् के जाने-माने संगीतकार श्री गुलाब सिंह राघव जी के मनोहारी भजन होंगे।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभावसर पर दिल्ली-नई दिल्ली के छात्र, छात्राओ के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है, जिसका विषय है "वर्तमान सन्दर्भ मे श्रीकृष्ण की धर्मनीति" और जिसकी अध्यक्षता लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. वाचस्पति उपाध्याय जी करेंगे।

श्री चुन्नीलाल जी आर्य वेदप्रचार निमित्त हैदराबाद में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री चुन्नीलाल जी आर्य ३ अगस्त से १० अगस्त, १९९५ तक आर्यसमाज, दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) के वेदप्रचार सप्ताह के विशेष कार्यक्रम मे भजनोपदेश एवं वेदप्रचार कर रहे है।

आर्यसमाज मुजफ्फरपुर में वेद-कथा

रक्षा-बन्धन १० अगस्त से १८ अगस्त तक आर्यसमाज पथ घिरनी पोखर मुजफ्फरपुर बिहार मे वेदकथा का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, युवा सम्मेलन और महिला सम्मेलन भी किए जाएंगे। डा० व्यासनन्दन शास्त्री प्रवचन करेंगे और बरेली के श्री भानुप्रकाश आर्य और मुंगेर की श्रीमती विद्यावती आर्या के भजनोपदेश होंगे।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
डी. एल. (डी. सी.) 139/95
3,4 8-1995 Licensed to post without prepayment
र. न. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस न० यू (सी०) १३६/९५
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९५
साप्ताहिक "आर्यसन्देश"
६ अगस्त १९९५

पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० युधिष्ठिर जी मीमासक की प्रथम पुण्य तिथि पर इनके शिष्य डा० सोमदेव शास्त्री ने अपने गुरु को श्रद्धांजलि देते हुए घोषणा की कि प्रतिवर्ष आर्यसमाज सान्ताक्रूज के माध्यम से पूजनीय प० युधिष्ठिर जी मीमासक की स्मृति में उनके जन्म दिन २२ सितम्बर को ऐसे विद्वान को ११०००) की राशि से सम्मानित किया जाय जो आर्ष पाठ विधि से गुरुकुल में विद्याध्ययन करके स्नातक होकर कम से कम विगत १० वर्षों से किसी निजी या अध्यापन के लिये गुरुकुलें में या स्वतन्त्र रूप से आर्ष पाठविधि के

इस पुरस्कार का नाम "पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार" होगा। डा० सोमदेव शास्त्री ने घोषणा की वे इस पुरस्कार के लिये अपनी पवित्र आय से आर्य समाज सान्ताक्रूज के अन्तर्गत एक लाख रुपये का एक स्थाई कोष बनायेंगे ताकि इसके ब्याज से यह पुरस्कार सदा चलता रहे। जब तक स्थाई कोष के रूप में एक लाख रुपये आर्यसमाज में जमा नहीं होते तब तक इस वर्ष २२ सितम्बर से वे प्रति वर्ष ११०००) रुपये देते रहेंगे।

सीताराम केसरी को निष्कासित किया जाए

उनका वक्तव्य देश की एकता के विरुद्ध

(पृष्ठ १ का शेष)

वक्तव्य के 'शोषित हिन्दू धर्म छोड दे' केसरी दैनिक जागरण, नई दिल्ली ३२ जुलाई १९९५ पृष्ठ सख्या १–११ पर उपर्युक्त कथन पर घोर आपत्ति करते हुए कहा कि केसरी का यह वक्तव्य देश की एकता व अखण्डता को नष्ट करने वाला है।

श्री केसरी का यह कहना कि "शोषित हिन्दू धर्म छोड दे" सवर्णों ने इन जातियो का बहुत शोषण किया और आज भी कर रहे है। अतः शोषितो को ... जाना चाहिए।

श्री गुप्त ने कहा कि इस प्रकार का वक्तव्य डा० भीमराव अम्बेडकर, बाबू जगजीवनराम व श्री काशीराम ने कभी भी नही दिया। श्री गुप्त ने प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिंहराव से अनुरोध किया है कि देश की एकता व अखण्डता को नष्ट करने वाले मन्त्री को केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल से निष्काशित कर देना चाहिए।

श्री गुप्त ने कहा कि यदि श्री केसरी उक्त वक्तव्य के प्रति खेद प्रगट नहीं करेंगे तो हिन्दू हितो की रक्षा करने वाली सभी सस्थाओ के संयुक्त तत्वावधान मे श्री केसरी के विरुद्ध प्रचण्ड आदोलन करना पडेगा।

सेवा में—

सुदेश द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन -३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० (एल ११०२४)–९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ४० रविवार, १३ अगस्त १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५२ दयानन्दाब्द : १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

श्रावणी पर्व से श्री कृष्णाष्टमी तक वेद-प्रचार की धूम

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में श्रावणी पर्व पर विशेष यज्ञ, वेद-प्रचार एवं प्रवचनों के कार्यक्रम : जन्माष्टमी पर महोत्सव

दिल्ली। प्रसन्नता का विषय है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी एवं महामन्त्री डा० धर्मपाल के निर्देशानुसार श्रावणी–रक्षाबन्धन १० अगस्त के दिन आर्यसमाजो मे श्रावणी रक्षाबन्धन के शुभ अवसर पर विशेष यज्ञ-प्रवचन आयोजित किए गए हैं। शुक्रवार १८ अगस्त के दिन जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर विशेष कार्यक्रम एवं महोत्सव आयोजित करने के लिए आर्यसमाजो से अनुरोध किया गया है।

आर्यसमाज मयूर विहार द्वारा वेद सप्ताह आयोजित

आर्यसमाज मयूर विहार फेज–२ के तत्वावधान में श्रावणी पर्व, वेद-सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव आयोजित किया गया। १० अगस्त से १२ तथा १४ से १७ अगस्त तक प्रतिदिन प्रात ६-३० से ७-४५ तक यज्ञ, प्रवचन हुए। १३ अगस्त को साप्ताहिक सत्संग हुआ। शुक्रवार १८ अगस्त को प्रात ६-३० से ११-३० तक २३६-ए पाकेट के सामने वाले पार्क मे स्वामी जीवनानन्द जी की अध्यक्षता मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव आयोजित किया जाएगा। यज्ञ की पूर्णाहुति ब्रह्मा प० ओम् वीर शास्त्री करवाएंगे। भक्ति संगीत गायक विजयभूषण आर्य व भजन संगीताचार्य विजयभूषण आर्य द्वारा प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर ब्रह्मचारिणी सुश्री इन्दु आर्य के प्रवचन और उपदेश तथा स्वामी जीवनानन्द जी ने आशीर्वाद दिया।

वेदों का जयध्वज लहराए

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

वेद ज्ञान का स्रोत बहे फिर, इस धरती पर सतत निरन्तर,
मिटे अंधेरा अज्ञानो का, बिखरे नव आलोक धरा पर।
वैदिक युग का वैभव-सारा, महिमण्डल पर सहसा आए।
वेदो का जयध्वज लहराए॥
चलें स्वयं हम वेद पथो पर, तथा उसी पर जगत चलाए,
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का, स्वप्न चलो साकार कराए।
ज्ञान तथा विज्ञान वेद का, जगती तल को राह दिखाए।
वेदो का जयध्वज लहराए॥
ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक, ऋषियो ने है मार्ग दिखाया।
ऋषिवर दयानन्द ने उस पर, नई प्रभा फिर से फैलाया।
उसी प्रभु से प्रभासिक्त हो पूर्ण मनुज, मानव बन जाए।
वेदो का जयध्वज लहराए॥

मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में चारों वेदों का पारायण

४ श्रीराम रोड, सिविल लाइन्स दिल्ली में होगा

प्रसन्नता का विषय है कि ब्रह्मलीन महात्मा प्रभु आश्रित जी तथा माता रामप्यारी जी द्वारा प्रस्तुत उदात्त परम्परा के अनुसार बुधवार २३ अगस्त, ९५ प्रात काल से प्रारम्भ होकर ३ सितम्बर १९९५ तक वेद सप्ताह के उपलक्ष्य मे ८ श्रीराम रोड, सिविल लाइन्स दिल्ली मे चारो वेदो का पारायण होगा। यह चतुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी जीवनानन्द जी तथा श्री विद्याव्रत जी शास्त्री की अध्यक्षता मे होगा। पूज्यपाद श्री स्वामी प्रभु आश्रित जी महाराज के लिखित उपदेश एवं दूसरे विद्वानो तथा विदुषी बहनो के भजन–उपदेश साय ३ से ५ बजे तक हुआ करेंगे। उल्लेखनीय है चारो वेदो का पाठ प्रतिदिन प्रात ८-३० से साय ५ बजे तक हुआ करेगा। चतुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति यज्ञ द्वारा ३ सितम्बर को ६ से ११ बजे तक होगी। यज्ञ के बाद १२ बजे ऋषि लंगर होगा।

कार्यक्रम के आयोजको मे श्री सोमाश्रित (लोकनाथ जी) की यज्ञ भवन की सत्संग मण्डली) तथा सर्वश्री अर्जुनदेव खन्ना, विजय लक्ष्मी, राजेश, सन्तोष, योगेश, अल्पना प्रमोद, श्रेष्ठा विशिष्ट आदि है।

आर्यजनता सावधान हो !

आर्य जनता भलीभांति जानती है कि विगत २७–२८ मई, १९९५ को हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक बृहद् अधिवेशन एवं निर्वाचन मे सर्वसम्मति मे प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् सार्वदेशिक सभा के प्रधान, श्री सोमनाथ मरवाह कार्यकारी प्रधान, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा–मन्त्री, श्री ओमप्रकाश गोयल सभा–कोषाध्यक्ष चुने गए।

खेद का विषय है कि कुछ व्यक्ति और कुछ पत्र इस सम्बन्ध मे भ्रान्त विवरण एवं प्रचार कर रहे हैं। आर्य जनता सावधान रहे कि आसफ अली रोड, नई दिल्ली स्थित दयानन्द भवन मे सार्वदेशिक सभा का कार्यालय है, उसमे तथा उक्त अधिकृत अधिकारियो से ही वह सम्पर्क करे।

—सूर्यदेव, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली–१

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वैदिक राज्य व्यवस्था--न्यायपूर्वक राज्य का आधार

--महर्षि दयानन्द सरस्वती

त्रीण राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथ सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वा अपि वायुकेशान्।। ऋ. ३ ३८ ६

तीन प्रकार की सभाओं को ही राजा मानना चाहिए, एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनों ये है—प्रथम राज्य प्रबन्ध के लिए आर्य राजसभा, जिसके माध्यम मे मुख्यतया सब राज्य कार्य पूर्ण किए जाए, दूसरी आर्य विद्या सभा हो जिससे सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार-प्रसार किया जाए, तीसरी आर्य धर्म-सभा का निर्माण होना चाहिए, जिससे धर्म का प्रचार और अधर्म की क्षति होती रहे। इन तीनों सभाओं के माध्यम से सब प्रकार के सघर्षो से सब प्रकार के शत्रुओ को जीत कर नाना प्रकार के सुखो मे विश्व को परिपूर्ण करना चाहिए।

यत्र ब्रह्म चक्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह।
त लोक पुण्य प्रज्ञेष यत्र देवा सहाग्निना।। यजु० मन्त्र २५

जिस देश मे उत्तम विद्वान ब्राह्मण विद्या सभा और राज्य सभा मे विद्वान शूरवीर क्षत्रिय लोग मिल-जुलकर राज्य कार्यो को सिद्ध करते है, वही देश धर्म और शुभ क्रियाओं से सयुक्त होकर सुख प्राप्त करता है। जिस देश मे परमेश्वर की आज्ञा पालन और अग्निहोत्रादि सत्क्रियाओं से परिपूर्ण विद्वान होते हैं—वही देश सब उपद्रवों से शून्य होकर अखण्ड राज्य को नित्य भोगता है।

प्रतिक्षत्रे प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु।
प्रत्यगेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि
पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्यो प्रति तिष्ठामि यज्ञे।। यजु २०.१०

जो मनुष्य इस प्रकार के उत्तम पुरुषो की सभा मे न्यायपूर्वक राज्य करते है, उनके लिए परमेश्वर सकल्प करते है—हे मनुष्यो, तुम लोग धर्मात्मा होकर न्याय से राज्य करो, क्योकि जो धर्मात्मा पुरुष है, मैं उनके क्षात्रधर्म और सम्पूर्ण राज्य मे ओत-प्रोत रहता हू और वे सदा मेरे समीप रहते है। उनकी सेना के अश्व और गौ आदि पशुओ मे भी मैं स्वसत्ता से प्रतिष्ठित रहता हू तथा सम्पूर्ण सेना, राज्यशासन के सभी अगो और उनकी आत्माओ मे भी सदा व्याप्त रहता हू। उनके प्राणो और परिपक्व राज्य कार्यों मे भी सदा व्याप्त रहता हू। सूर्य आदि प्रकाश रूप नक्षत्रो और पृथ्वी आदि अप्रकाशित सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और जितने छोटे-बडे यज्ञ है उन सबके मध्य प्रतिष्ठित रहता हू। तुम लोग इस प्रकार मुझे सब स्थानो मे व्याप्त परिपूर्ण देखो। जिन लोगो की मेरी निष्ठा है, उनका राष्ट्र सदा बढता रहता है।

बृहत्पृष्ठ भवति क्षत्र वै बृहत्क्षत्रेणैव तत्क्षत्र समर्धयत्यथो
क्षत्र वै बृहदात्मा यजमानस्य निष्कैवल्य तद्यद् बृहत्पृष्ठ भवति।।

क्योंकि राज्य-व्यवहार सबसे बडा है, उसमे शूरवीर आदि गुणी पुरुषो की सभा और सेना रखकर अच्छे प्रकार से राज्य को बढाना चाहिए।

ब्रह्म वै रथन्तर क्षत्र बृहद।
ब्रह्माणि खलु वै क्षत्र प्रतिष्ठित क्षत्रे ब्रह्म।

ब्रह्म-परमेश्वर और वेद विद्या से युक्त जो पूर्ण विद्वान ब्राह्मण है वही राज्य के प्रबन्धों मे सुख प्राप्ति का हेतु होता है, इसलिए अच्छे राज्य-सुराज्य के के होने से ही सत्यविद्या प्रकाशित होती है।

ओजो वा इन्द्रिय वीर्य पचदश ओज अत्र वीर्यं
राजन्यस्तदेनभोजसा क्षत्रेण वीर्येण समर्द्धयति।
तद्भारद्वाज भवति भारद्वाज वै बृहत्।। ऐत०प०८, अ०१, क०२.३

उत्तम विद्या और न्याययुक्त राज्य का नाम ओज है, दण्ड के भय से अथवा किसी अन्य कारण से जिसका उल्लघन सम्भव नही है, क्योकि ओज अर्थात बल का नाम क्षत्र और पराक्रम का नाम राजन्य है। ये दोनो जब परस्पर मिलते है, तभी ससार की उन्नति होती है।

हो विश्व शान्तिमय, मातृभूमि की जय हो!

पद्मश्री डा० हरिशंकार शर्मा डी. लिट्

पृथिवी अखण्ड है, खण्ड-खण्ड मत करना,
बन स्नेह शील अति भद्र भावना भरना।
भूतल के सभी निवासी, भाई-भाई,
वसुधा कुटुम्ब फिर क्यो हो युद्ध-लडाई।।
दुर्भाव-दम्भ हो नष्ट, स्वार्थ का क्षय हो,
'मानवता' का अनुपम आदर्श उदय हो।
भव आधि-व्याधि सकट से नित निर्भय हो,
हो विश्व शान्तिमय, मातृभूमि की जय हो।

गौरव मण्डित हो स्वदेश फिर

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

अमर शहीदो के स्वप्नो का, बने हमारा भारत देश,
स्वतन्त्रता के प्रतिफल सबको बिना भेद के मिले विशेष।
गौरवमण्डित हो स्वदेश फिर-पुन बने यह देश महान,
जगे हमारे नवयुवको मे, त्याग-तपस्या व बलिदान।
सूत्रपात हो रामराज्य का, दनुज वृत्तियो का विनाश हो,
निर्धनता-भुखमरी अभावो-अन्यायो का पूर्ण नाश हो।
वेद ज्ञान की धवल रश्मियो-से आलोकित हो यह देश,
फैले यहा पुन ऋषियो का-पावनतम-सा सद् उपदेश।
भगत, सुभाष, शिवा, राणा की, परम्परा फिर हो स्थापित,
मातृभूमि की रक्षा मे हो, लाखो शीश यहा अर्पित।
दानवता के बढते कदमो-का हो फिर व्यापक प्रतिरोध,
मानवता फिर बने विजयिनी, मगलमुखी बने सब शोध।
बने राष्ट्रनायक भारत के, जनता के सच्चे सेवक,
राजनीति से स्वार्थ हटे सब, ग्रामपचन से दिल्ली तक।
शाति-सफलता-समरसता का, हो जनजीवन मे सचारण,
उग्रवाद-आतकवाद का-हो भारत मे पूर्ण निवारण।
हिमगिरि से ले हिन्द जलधि-तक, नव जागृति की ज्योति जले,
प्रेम-दया-ममता-समता की-दिव्य भावना हृदय पले।
आओ! ये सकल्प सभी हम, देश महान बनाए गे,
ऋषि-मुनियो की हम सतति है, दुनिया को दिखलाए गे।
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर, उ०प्र०

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख त्योहारो व पर्वो से सम्बन्धित रचनाएं कृपया उनके प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करावें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनो या मतो से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रियाए आमंत्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

ऐसे व्यक्ति धर्म का मर्म नहीं जान सकते

मत प्रमत्तश्चोन्मत्त· श्रान्त क्रुद्धो बुभुक्षित· ।
लुब्धो भीरूस्त्वरायुक्त कामुकश्च न धर्मवित् ॥ हितोपदेश

जो मतवाला है, जिसमे सामर्थ्य नही है, जो पागल हो चुका है, जो थका-हारा हुआ है, जो बात-बात मे क्रोध करने वाला है, जो भूख से व्याकुल हैं, जो लालची और लोभी है, जो डरपोक है, जो बिना विचारे काम करने वाला है, और जो सदा काम-वासना मे डूबा रहता है, ऐसे व्यक्ति कभी भी धर्म का मर्म नहीं जान सकते ।

सम्पादकीय अग्रलेख

स्वाधीनता के ये वर्ष : क्या खोया, क्या पाया ?

१५ अगस्त, १९४७ के दिन हमारा देश अनेक शताब्दियो की विदेशी गुलामी के बाद स्वाधीन हुआ था । इन अडतालिस वर्षो मे भारत की अनेक उपलब्धियां हैं, तो अनेक क्षेत्र ऐसे है, जहा अभी भी हम पिछडे हुए है, जहा हमे बहुत कुछ करना है । इन वर्षों मे सैकडो की सख्या मे विद्यमान देशी रियासतें भारत का अग बन गई , इन वर्षों मे विदेशी साम्राज्य के अवशिष्ट चिन्ह भी खत्म हो गए हैं । देश मे पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न ससदीय गणतन्त्र की प्रतिष्ठा हो गई है । औद्योगिक एव कृषि क्षेत्रो मे भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है । आज भारत औद्योगिक क्षेत्र मे विश्व के विकसित पहले दस राष्ट्रो मे गिना जाता है, विदेशी शासन के दिनो मे विदेशो से अनाज का आयात करना पडता था, परन्तु अब वह न केवल अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बी हो गया है, वह अन्न का निर्यात भी कर सकता है। अनेक पचवर्षीय योजनाओ के माध्यम से देश ने प्रौद्योगिकी, शिल्प के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, सूई से हवाई जहाज तक, अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी, मिसाइल, कल-कारखानो, उद्योगो के क्षेत्र मे भी हमारी उन्नति तीव्र है । इस सबके बावजूद अभी भी अनेक बुनियादी उद्योगो और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रो मे अभी हम स्वावलम्बी नही हुए हैं । विश्व के विकसित वैज्ञानिक राष्ट्रो की तुलना मे अभी हमे बहुत कुछ करना ।

स्वराज्य के इन दशको में आर्थिक दृष्टि से हम बढ़े है तो अभी भी इन वर्षों मे भूख, रोग, अशिक्षा, अभाव का निवारण नहीं हो सका है । इन वर्षो मे धनी अधिक सम्पन्न हुए, गावो-नगरो मे सम्पन्नता बढी है, पर यह भी तथ्य है, कि आज भी गरीबी की सीमा रखा से नीचे रहने वालो की सख्या करोडो मे है । आज भी ससार की सर्वाधिक निरक्षरता और अशिक्षा अपने देश मे है, अब भी हर वर्ष संक्रामक महामारियो से आक्रान्त होने वाले हमारे देश मे सर्वाधिक है । इन से भी अधिक चिन्तनीय स्थिति यह है इन वर्षो मे नैतिकता, बुनियादी जीवन मूल्यों, चरित्र आदि के क्षेत्र मे हम बहुत पिछड गए है । यद्यपि कानून द्वारा नारी को समान अवसर-अधिकार प्राप्त हैं तथापि वास्तविक जीवन एव व्यवहार मे वह आज भी उपेक्षित, तिरस्कृत ही नही, तिल-तिल कर भस्म की जा रही है । माता के पेट मे ही भ्रूण द्वारा लिंग की जानकारी मिलते ही हजारो-लाखो कन्याए जन्म से पहले ही नष्ट की जा रही हैं । प्रत्येक दृष्टि से योग्य, चतुर, कर्मठ, राष्ट्र और समाज के लिए समर्पित नयना जैसी युवतियो से दुर्व्यवहार कर उन्हे राजधानी में ही नही, सर्वत्र भस्म किया जा रहा है । राजनीति मे अपराधी तत्वो की पहुंच के बारे में एन एन वोहरा समिति ने स्वीकार किया है कि अपराधी गिरोहो पुलिस, सरकारी अफसरो और राजनीतिज्ञो के बीच आपसी साठ-गाठ के कारण माफिया गिरोहो की समानान्तर सरकारें चलने लगी है और उसके कारण राज्य का प्रशासन तन्त्र सर्वथा असगत हो गया है । रिपोर्ट मे सुझाव दिया गया है कि इस साठ-गांठ की खतरनाक भूमिका के कारण यह जरूरी है कि इस मिली भगत को खत्म करने के लिए शीघ्र ही कदम उठाए जाए और प्रशासन को चुस्त बनाकर इन गिरोहों का प्रभाव खत्म किया जाए ।

पर सबसे बड़ा महाप्रश्न यह है कि प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त करना कैसे सम्भव है जिससे इन अपराधी माफिया गिरोहो का खात्मा किया जाए ? यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि आज हमारी राजनीति और राजनीतिक दलो मे अपराधी-माफिया तत्वों की घुसपैठ हो गई है । जिस तरह विदेशी आक्रमणकारी एव महामारियो की रोकथाम के लिए सब राजनीतिक दल एक और संयुक्त हो जाते हैं, उसी प्रकार आज समय आ गया है कि राजनीति से अपराधी तत्वों की रोकथाम के लिए सभी राजनीतिक दलो को मिल-बैठकर एक सयुक्त कार्यनीति बनाकर उसे दृढता से कार्यान्वित करना होगा । राजनीति का अपराधीकरण केवल एक पार्टी की बपौती नही है, सभी पार्टियो मे यही हो रहा है । आज समय की माग है कि सब दलो को मिलकर राजनीति से अपराधी माफिया तत्वो की समाप्ति के लिए और राजनीति मे न्याय, सचाई बुनियादी जीवन-मूल्यो की प्रतिष्ठा के लिए सबको एक राष्ट्रीय नीति का निर्धारण करना होगा, और एक बार एक राष्ट्रीय नीति बनाने पर राजनीति से माफिया अपराधी तत्वो के उन्मूलन के लिए दृढता, पूरी निष्पक्षता से मिलकर कार्य करना होगा । राजनीति शास्त्र मे कहा गया है—'दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति, दण्ड सुप्तेषु जागर्ति दण्ड धर्म विदुर्बुधा ।' सच्चा राजदण्ड ही प्रजा मे सुशासन, सुराज्य की प्रतिष्ठा करता है । और सच्चे राजदण्ड से ही उसकी रक्षा सम्भव है, यह राजदण्ड ही सोती हुई प्रजाओ मे जागता है, इसलिए बुद्धिमान लोग दण्ड को ही धर्म कहते हैं । स्वराज्य के इन वर्षो मे हमने बहुत कुछ पाया है, बहुत-सी हमारी उपलब्धिया है परन्तु हमारी ये सारी उपलब्धिया—जीती हुई बाजी हार मे बदल सकती है, यदि हमने राजनीति और राजनीतिज्ञो मे व्याप्त अपराधी माफिया तत्वो की समय पर रोकथाम नही की और उसके उन्मूलन के लिए आवश्यक है कि एक राष्ट्रीय नीति विर्धारित कर पूरी दृढता, सचाई और न्याय से राजदण्ड का सोते-जागते प्रयोग कर उनका देश मे उन्मूलन कर दिया जाए ।

चिट्ठी-पत्री

आरक्षण का हलुआ

आरक्षण का हलुआ न जाने किस-किस मे बटेगा ? पहले दलित वर्ग; अगडी जाति के पिछडे आरक्षण के लगर मे पत्तलें बिछाए बैठे थे । अब मुसलमान भी लगर का स्वाद लेने पक्तियो मे नजर आएगे और तो और बौद्ध, जैन, ईसाई सभी आरक्षण रूपी प्रसाद चखने के लिए तैयार बैठे है ।

शायद कुछ वर्षों मे हालत यह होगी कि ऊची जाति (पर न जाने आरक्षण के चक्कर मे कब पिछडी बन जाएं)के लोग आरक्षण रूपी भोग की इन्तजार मे बाहर बैठे नजर आएगे ताकि लगर खत्म होने के बाद बचा- खुचा माल उनके कटोरे में आ गिरे ।

वोट-सस्कृति कब कहा, किसे पिछडी जाति साबित कर दे, यह नेता ही जानें ।

—अजु दुआ, फरीदाबाद (हरियाणा)

जल्दी सोओ और जल्दी जागो

अपने विद्यार्थी-जीवन मे हर अध्यापक और बहुत-सी पुस्तकों मे पढाया जाता था—'अर्ली टू बेड, अर्ली टू राइज, मेक्स ए मैन हैल्दी, वैल्दी एड वाइज ।' जल्दी सोने और जल्दी जागने से एक मनुष्य स्वस्थ, सम्पन्न और बुद्धिमान बनता है । यह मुहावरा स्वास्थ्य की दृष्टि से सटीक भी था, किन्तु अब तो जमाने ने ही सब कुछ उलट-पुलट दिया है । हम सब का बुद्धू बक्सा (टी वी) सामान्य तौर पर देर रात तक भोकता रहता है । शनिवार और रविवार की रात को तो फिल्मो के कारण रत-जगा हो जाता है । बच्चे क्या बहुत से बडे भी ८-९ बजे से पहले सुबह उठते ही नही । देश की भावी पीढी के स्वास्थ्य को यह बुद्धू बक्सा । (इडियट बक्सा) चाटे जा रहा है, पर किसी को चिन्ता नही ।

—इन्द्रसिंह धिगान, किंग्सवे कैम्प, दिल्ली

वैदिक सत्संग मण्डल त्रिनगर का वार्षिकोत्सव

वैदिक सत्सग मण्डल ए-२, केशवपुरम, त्रिनगर, दिल्ली-३५ ने अपना वार्षिकोत्सव ८ जुलाई से १० जुलाई तक मुख्य पार्क, गुलाब वाटिका मे धूमधाम से मनाया । आचार्य रामचन्द्र शर्मा और अश्विनी कुमार पाठक के भाषण हुए । तीनो दिन प्रति —साय यज्ञ हुआ । 'स्वामी दयानन्द की विशेषताए ' पुस्तक की हजार प्रतिया वितरित की गई ।

स्वाधीनता संग्राम में क्रान्तिकारियों की भूमिका

नरेन्द्र अवस्थी

यह उन दिनो की बात है जब राष्ट्र को ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त करने हेतु एक तरफ महात्मा गाधी के नेतृत्व ए अहिंसात्मक आन्दोलन चल रहा था, आजादी के दीवाने भारत माता की दासता की जजीरें काटने के लिए लाठिया-गोलिया खाकर शहीद हो रहे थे या जेले भर रहे थे, तब दूसरी ओर शस्त्र-क्रान्ति के माध्यम से सिर धड की बाजी लगाकर हजारो युवक क्रान्तिकारी अभियान से स्वातन्त्र्य समर मे सर्वस्व होम कर रहे थे। वस्तुत यह कहना अधिक प्रासगिक होगा कि क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास भारत के पुनरुत्थान के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अग है। खेद है कि अग्रेजो ने उन्हे विद्रोही या आतकवादी मानकर उनकी अवहेलना की तो दुख की बात है कि स्वातन्त्र्य समर मे इनकी बलिदान गाथा व इतिहास के इन स्वर्णिम पृष्ठो को भारत की स्वाधीनता के उपरान्त भी विशेष महत्त्व नही दिया गया।

क्रान्ति यज्ञ मे बगाल का योगदान बडा ही महत्त्वपूर्ण स्वीकारा जाता है। अलीपुर षड्यन्त्र ने देश भर मे ऐसी धूम मचाई, जिसने देश भर के युवको मे नव उत्साह का सचार किया। इसका मुकदमा अलीपुर (कलकत्ता) मे चला था। इस षड्यन्त्र के सिलसिले मे क्रान्तिकारी खुदीराम बोस से एक जज के धोखे मे मिस कैनेडी की हत्या हो गई थी। इसी काण्ड के अभियुक्त कन्हाई लाल दत्त ने जेल के भीतर रिवाल्वर मगवा कर मुखबिर नरेन्द्र गोस्वामी की बडे आश्चर्यजनक ढग से हत्या कर डाली। यही नही मुकदमा समाप्त होने के बाद लगभग वे सभी प्रमुख व्यक्ति जिन्होने क्रान्तिकारियो मुकदमो मे भाग लिया था, मार डाले गए। इसके फलस्वरूप बगाल मे जो तहलका मचा तथा सरकारी नौकरो के मन मे जो आतक समा गया, उसका एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है। काकोरी केस मे तीन क्रान्तिकारियो को मृत्यु-दण्ड व कई को जेल की लम्बी सजाए देने वाले अग्रेज जज मिस्टर हर्टन न्यायालय से सीधे स्टेशन चले गए। पता चला कि वे अपना सामान पैक करवा कर न्यायालय आए और लन्दन वापस चले गए।

स्वाधीनता आन्दोलन में गति

इन प्रतिशोधपूर्ण हत्याओ मे जिनमे सर्वप्रथम चाफेकर बन्धुओ द्वारा पूना मे एक अग्रेज मिस्टर रैण्ड की हत्या भी शामिल है, भारतवर्ष की स्वाधीनता के आन्दोलन मे गति आई, अग्रेज साम्राज्य से टक्कर लेना असम्भव है जनता की इस धारणा का निराकरण हो गया। क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अहिंसात्मक आन्दोलन का सदैव सहयोग दिया। १९२१ मे जब महात्मा गाधी ने असहयोग आन्दोलन चलाया तो बहुत से क्रान्तिकारियो ने इसमे सक्रिय भाग भी लिया था। जब असहयोग आन्दोलन को सफलता नही मिली, तो क्रान्तिकारी फिर उसी पथ के राही बने। क्रान्तिकारियो मे अत्यधिक जोश, वतन पर मर मिटने की तमन्ना व सघर्ष मे अग्रसर होने की होड उनके इस सुप्रसिद्ध गीत से उजागर होती है—

सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल मे है।
देखना है जो जोर कितना बाजुए कातिल मे है।

काकोरी केस मे नरनाहर प० रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र नाथ लाहिडी, अशफाकुल्ला और शचीन्द्रनाथ बक्शी को काले पानी की सजा दी गई। इसी मुकदमे मे शचीन्द्र नाथ सान्याल को आजीवन कैद, मन्मथनाथ गुप्त को १४ वर्ष का दण्ड, गोविन्द शरण, योगेशचन्द्र चटर्जी, राजकुमार सिन्हा, मुकुन्दीलाल 'भारत वीर' एव रामकृष्ण खत्री को दस-दस वर्ष की सजा सुनाई गई थी। मैनपुरी काण्ड ने भी अग्रेजो की नीद हराम कर दी थी। इसके नेता प० गेन्दालाल दीक्षित जेल से भाग निकले थे और फरार अवस्था मे बडी बुरी दशा मे शहीद हो गए। उस समय क्रान्तिवीर ये पक्तिया बड़े उत्साह से गुनगुनाया करते थे—

भाइयो आगे बढो फोर्ट विलियम छीन लो।
जितने भी अग्रेज हैं सारो की ही बीन लो।

क्रान्तिकारी इतिहास मे सर्वाधिक रोमाचकारी पृष्ठ महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद व शहीद-ए-आजम भगतसिह के हैं। शहीद-ए-आजम भगतसिह एव वीर बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली स्थित केन्द्रीय एसेम्बली मे बम फेंका जिसमे यद्यपि कोई जानी या माली नुकसान नही हुआ—मगर उसकी गूज से सारा देश हिल उठा—वहा बम की फिलासफी नामक पत्रक भी फेंका गया—जिसमे क्रान्तिकारियो के उद्देश्य की समीक्षा की गई थी। बाद मे शहीद-ए-आजम भगतसिह, राजगुरु, सुखदेव को फासी दे दी गई। उससे पूर्व साण्डर्स की हत्या के सम्बन्ध में जिन चार व्यक्तियो पर अभियोग थे, वे चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिह, राजगुरु और सुखदेव ही थे। उन्होने ही बनारस मे पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट पर प्राणघाती आक्रमण, 'साइमन कमीशन' के सदस्यो की गाडी को उडाने का प्रयत्न भी किया था।

२३ दिसम्बर, १९२९ को वायसराय इरविन की स्पेशल ट्रेन को बम से उडाने की चेष्टा की गई—पुलिस ने इस मामले मे काफी खोजबीन के बाद श्री यशपाल को गिरफ्तार किया। उन्हे चौदह वर्ष की सजा मिली थी। इसी बीच पजाब के गवर्नर पर हमला करने के मामले मे श्री हरिकृष्ण को फासी हुई थी। इसी अवधि के लगभग बगाल मे भी बहुत से बडे-बडे अधिकारियो पर हमले आदि हुए। ढाका मे पुलिस का आई० जी० मारा गया। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट बाल-बाल बचा। मेदिनीपुर मे एक के बाद एक करके तीन पुलिस अफसर मारे गए।

देवघर षडयन्त्र काण्ड मे १९ जुलाई १९२८ को ११ व्यक्तियो को सरकार के विरुद्ध षडयन्त्र के अभियोग मे ३ से ७ वर्ष तक कडी कैद की सजा दी गई। ये थे—सर्वश्री शैलेन्द्र चक्रवर्ती, उपेन्द्र घर, विजन बनर्जी, अतुल दत्त, सुरेन्द्र भट्टाचार्य, वीरेन्द्र भट्टाचार्य, सुखेन्द्र दास, सुशील सेन, लक्ष्मीकात घोष, विश्व मोहन सान्याल, प्रसाद चटर्जी। कुछ ऐसे गुमनाम क्रान्तिकारी भी हुए, जिन के बारे मे साधारण जनता कम जानती है। ऐसा ही एक विलक्षण व्यक्तित्व था श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी, जिसका त्याग भारतवर्ष के क्रान्तिकारी इतिहास मे हमेशा अमर रहेगा। उसने असहयोग आन्दोलन शुरू होते ही पढ़ाई छोड दी थी। उसके पिता बनारस के एक बडे डाक्टर थे और पितामह थे डिप्टी मजिस्ट्रेट। जनवरी, १९२८ मे उसने पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट पर हमला करके पिस्तौल की दो गोलियो का भलीभाति उपयोग किया था। गिरफ्तार होने पर जेल मे उसे अनेक प्रकार की यन्त्रणाए दी गई और अन्त मे दस वर्ष की सजा दी गई। मध्यप्रदेश और बिहार मे सन् १९१४-१५ मे विप्लववाद फैलाने का प्रयत्न किया गया था। श्री रास बिहारी बोस ने अपने साथी नलिनी मोहन सान्याल के साथ राजद्रोह का प्रचार जबलपुर मे किया। मध्य प्रदेश के श्री बापले ने एक छोटा-सा दल भी तैयार किया था।

बिहार मे सर्वश्री अर्जुन लाल सेठी, मोतीचन्द्र, माणिकचन्द्र, जोरावर सिंह ने विप्लव का जोरो से प्रचार किया। बकिम चन्द्र मित्र ने बाकीपुर मे एक शाखा-समिति भी बनाई किन्तु वह पकड लिया गया तो बिहार का षडयन्त्र दुर्बल हो गया। इसी समय भारत रक्षा कानून का जन्म हुआ जिसकी सहायता से सरकार ने क्रान्तिकारियो को दबा दिया। मद्रास मे १९०८ ई० मे श्री सुब्रह्मण्यम और चिदम्बरम पिल्ले ने पराधीनता के खिलाफ तीव्र आन्दोलन किया। इसी वर्ष वी०एम० अय्यर ने एक गुप्त समिति स्थापित की। जून १९११ ई० मे अय्यर ने तिन्नेवेली के मजिस्ट्रेट की हत्या कर दी। इस सिलसिले मे ९ व्यक्तियो को सजा दी गई। पंदोचौला गाव मे श्री राजू ने दो अग्रेज कर्मचारियो को मार गिराया और कई पुलिस वालो को घायल कर दिया। सन् १९१४ मे सरकारी सेना ने श्री राजू के अड्डे पर भीषण आक्रमण किया जिसमे उसके दल के लोग मार डाले गए।

(अपूर्ण)

राखी का त्योहार है : भाई-बहन का प्यार है

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

राखी का त्योहार है, भाई-बहने का प्यार है।
चारो तरफ हरियाली छाई, आ रही अजब बहार है॥

रग-बिरगी राखी सुन्दर, शोभा लगे कलाई मे।
रक्षाबन्धन स्वर्ण सलौना हर्ष बहन व भाई मे॥

बहे प्रेम की धार है, खुशियो की बौछार है।
सखी-सहेली झूला झूले गाए गीत मल्हार है॥

लख घन की घनघोर सभी पक्षीगण मन हर्षाते हैं।
दादुर, मोर, पपीहा, कोयल मीठा गान सुनाते है॥

मन मे खुशी अपार है, करें परस्पर प्यार है।
रिमझिम-रिमझिम मेहा वरषे ठण्डी चले बयार है॥

ब्राह्मण त्योहार श्रावणी का आर्यो के मन भाया है।
वेद-प्रवचन भजन-कीर्तन घर-घर हवन रचाया है॥

तबला और सितार है, वीणा की झकार है।
यज्ञादि शुभ श्रेष्ठ कर्म ये वेदो के अनुसार है।

वेद ईश्वरी ज्ञान वेद का पढना और पढाना है।
परमधर्म वेदो का पढना घृणा, द्वेष मिटाना है॥

शुद्ध पवित्र विचार है, ऋषि की जयजयकार है।
कहे स्वरूपानन्द, वेद ही विद्या का भण्डार है॥

परमात्मा के ध्यान की विधि

—डा० भवानीलाल भारतीय

हिन्दू धर्म कोई सुसगत उपासना प्रणाली नही है अपितु वह एक सामाजिक समुदाय है जिसमे धर्म और दर्शन को लेकर विभिन्न तथा परस्पर विरोधी मान्यताये स्वीकार की गई है। लोकमान्य तिलक ने इस धर्म की परिभाषा मे लिखा था—'उपासनाना अनैक्य' अर्थात ईश्वरोपासना मे अनेकता हिन्दू धर्म का एक लक्षण है। कुरान और गुरु-ग्रन्थ आदि कई अन्य धर्मावलम्बियो के मान्य ग्रन्थ हैं। 'जबकि आर्यसमाज का ही नही, अपितु सम्पूर्ण हिन्दू समाज के मान्य ग्रन्थ वेद है। स्वामी दयानन्द का चित्र तो अन्य महापुरुषो के चित्रो की भाति उस महापुरुष की स्मृति को जगाने वाला एक प्रतीक मात्र है। वह पूजा या उपासना की वस्तु नही है।

मूर्तिपूजा के द्वारा मनुष्य का ध्यान केन्द्रित होता है, यह भी कल्पना मात्र है, क्योकि मूर्ति को देखने से तो उस व्यक्ति (जिसकी मूर्ति बनाई गई है) के रूप, रग, वस्त्र, आभूषण आदि की ओर ध्यान जाता है जबकि परमात्मा निराकार, निर्गुण, निरंजन, निर्लेप है। उसके ध्यान की विधि गीता, योग तथा उपनिषदादि ग्रन्थों मे वर्णित है। इन ग्रन्थों मे ध्यान के लिए मूर्ति को स्वीकार नहीं किया गया है। मात्र आस्था या विश्वास ही पर्याप्त नहीं है। आस्था या विश्वास सत्य के प्रति होना चाहिए। यदि रेत में हम शक्कर की आस्था करें तो उससे हमारा मुह मीठा नहीं होगा।

८।४२३ नन्दन वन, जोधपुर, राजस्थान-३४२००८

विद्यालयों में शुद्ध हिन्दी लिखो-बोलो

शुद्ध हिन्दी वर्तनी में पश्चिम मण्डल के प्रतिभागी शिक्षक पुरस्कृत

शुद्ध हिन्दी वर्तनी चेतना अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी वर्तनी की शुद्धता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी द्वारा मण्डलीय शिक्षा व प्रशिक्षण सस्थान के सहयोग से "शुद्ध हिन्दी वर्तनी चेतना अभियान मे शिक्षको का योगदान" विषय पर आयोजित एक प्रतियोगिता मे पश्चिम मण्डल के प्राथमिक स्कूलो के ६३ शिक्षको ने भाग लिया, जिनमे से श्री के०के० अरोडा को प्रथम, श्रीमती निर्मल शर्मा को द्वितीय और श्रीमती कमलेश हरित को तृतीय स्थान प्राप्त हुए।

विजयी शिक्षक एव शिक्षिकाओ को हिन्दी अकादमी की ओर से प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति-पत्र तथा साहित्यिक पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप भेंट की गई।

राजकीय आदर्श कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, विकासपुरी मे आयोजित इस प्रतियोगिता मे विजयी शिक्षको को "रामकथा" के मर्मज्ञ तथा हिन्दी के जाने-माने विद्वान डा० रमानाथ त्रिपाठी ने पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होने शुद्ध हिन्दी वर्तनी के लिए आयोजित कार्यक्रम की प्रशसा की और शिक्षको से अनुरोध किया कि वे स्कूलो मे शुद्ध हिन्दी लिखने व बोलने पर अधिक बल दें ताकि देश व समाज के भावी निर्माताओ की हिन्दी के प्रति नींव मजबूत हो सके।

आर्य सन्देश का शुल्क तुरन्त भेजिए

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० है, उसका आजीवन शुल्क ३५० रु० हैं। निवेदन है कि मनीआर्डर चैक नकद भेजें।

धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, चिट पर आपकी ग्राहक लिखी रहती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

१. नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२. नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
३. नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३.००
४. नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४.००
५. नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५.००
६. धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५.००
७. फ्लैश आफ ट्रूथ	(डा० सत्यकाम वर्मा)	२.००
८. सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	" "	२.००
९. एनोटामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०. आर्यों का आदि देश	" "	२.००
११. प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	" "	२५.००
१२. दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	" "	२.००
१३ चत्वारो वै वेदाः	" "	५ ००
१४ द्वैतसिद्धि	" "	५.००
१५. दैनिक यज्ञ पद्धति	(दि० आ० प्र० सभा)	४.००
१६. निरुक्त	(डा० धर्मपाल)	१०.००
१७. भारतीय संस्कृति के मूलाधार चार पुरुषार्थ	(डा० सुरेन्द्र देव शास्त्री)	२०.००
१८. महर्षि दयानन्द की जीवनी	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
१९. पञ्चमयकोष	(महात्मा वेदभिक्षु)	२०.००
२०. वैदिक योग	(" " ")	५.००
२१. कर्म फल ईश्वर जीव	(श्री ओम्प्रकाश आर्य)	५.००
२२. युगसन्दर्भ	(डा० धर्मपाल)	५.००
२३. आचार्य रामदेव आदर्श व ज्योति स्तम्भ	(" ")	१० ००
२४ आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	१०.००
२५. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
२६. हसता चल, हसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६.५०
२७. दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२८. पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२९. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
३०. योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
३१. आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकड़ा
३२. महर्षि दयानन्द की विशेषताएं (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
३३. महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन् १९८३)		५.००
३४. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १९८५		५ ००
३५. महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका १९८३		१०.००
३६. महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषांक		१०.००
३७. ऋषिबोधांक		१०.००
३८. योगीराज श्रीकृष्ण विशेषांक		१०.००
४०. हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती स्मृति अंक	"	१०.००
४१. धर्मवीर पं लेखराम स्मृत्यांक	"	५.००
४२. स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती	"	२५.००
४३. प० नाथूराम शंकर शर्मा 'शंकर'	"	२५.००
४४. श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	"	५.००
४५. प० चमूपति स्मृत्यांक	"	५.००
४६. स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती	"	५.००
४७. स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	"	५.००
४८. प० गणपति शर्मा	"	५.००
४९. पं० रामचन्द्र देहलवी	"	५.००

नोट उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की पूर्ण राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एवं नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान . **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

जंगपुरा में सामवेद पारायण महायज्ञ

नारी सिलाई केन्द्र का उद्घाटन

सिक्का दम्पती का दान

रविवार ६ अगस्त के दिन श्री किशनलाल जी सिक्का और श्रीमती कांता सिक्का ने जंगपुरा स्थित अपना मकान वेदप्रचार व आर्यसमाज की गतिविधियों के उन्नयन के लिए दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार आर्य सभा को दिया है। इसी दिन यहां स्त्रियो के स्वावलम्बन के लिए नारी सिलाई केन्द्र खोला गया। जल्दी ही यहां संगीत कार्यालय भी खोला जाएगा। केन्द्र का उद्घाटन सार्वदेशिक के सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने किया। दीप प्रज्ज्वलन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने योगदान किया। इस अवसर पर डा महेश विद्यालंकार ने जनता का उद्बोधन किया। जल्दी ही वेदों के प्रचार–प्रसार का भी केन्द्र खोलने का विचार है।

वेद प्रचार केन्द्र मे सामवेद पारायण महायज्ञ किया गया। इसकी पूर्णाहुति ८ अगस्त को हुई। वेदपाठ गुडगाव की डा० उषा शास्त्री ने किया।

आर्यसमाज मालवीय नगर में सामवेद पारायण महायज्ञ

आर्य स्त्री समाज मालवीय नगर की ओर से श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष में रक्षाबन्धन के शुभ अवसर बृहस्पतिवार ता० १० अगस्त १९९५ से शुक्रवार १८ अगस्त, १९९५ के श्रीकृष्णजन्माष्टमी शुभपर्व तक आर्यसमाज मन्दिर मालवीय नगर में सामवेद पारायण महायज्ञ आयोजित किया जा रहा है।

सामवेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा डा. तीर्थराज शास्त्री और पं० मदनमोहन शास्त्री हैं। महायज्ञ के मुख्य यजमान है—श्रीमती सन्तोष व श्री विमल आनन्द श्रीमती व श्रीपाल शर्मा, श्रीमती व विनोद कद, श्रीमती व श्री सत्यभूषण आर्य।

सामवेद पारायण महायज्ञ का कार्यक्रम १० से १७ अगस्त तक प्रतिदिन प्रातः ५.३० से ७ बजे तक किया जा रहा है। महायज्ञ की पूर्णाहुति १८ अगस्त को प्रातः ६ से ९ बजे तक की जाएगी।

महायज्ञ के अवसर पर आर्य पब्लिक स्कूल के नए प्रविष्ट छात्रों का वेदारम्भ सस्कार श्री मनोहरलाल विरक्त कराएंगे। विद्यालय के छात्र-छात्राएं श्री जे०के० पुरी की अध्यक्षता मे अपना सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे।

विद्वान् जागे और कर्मशील बनें

श्रेष्ठ कार्यो से समाज का हित—वेदों का सन्देश

देहरादून। आर्यसमाज धामावाला के सत्संग में आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जिला देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने अथर्ववेद १९–६३–१ मन्त्र की भावपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस मन्त्र में वेद-ज्ञान के रक्षक विद्वान् को निर्देश दिया गया है कि "विद्वानो को श्रेष्ठकर्म के द्वारा तथा पूजा-भाव से जगाइए। श्रेष्ठकर्म करने वाले को बढ़ाइए, उसके जीवन, बल, सन्तान, पशु (गौ, अश्व आदि) तथा कीर्ति को बढ़ाइए।"

वक्ता ने कहा कि विद्वान् व्यक्ति यदि सोया रहे और निष्क्रिय बना रहे तो उसकी विद्या निष्फल हो जाती है। अतः विद्वानो को समाजहित के कार्य मे संलग्न होना चाहिए। आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्य की पहचान बताते हुए वेद में अन्यत्र कहा गया है "सकर्मा आर्य." अर्थात् आर्य वही है जो कर्मशील है और शुभ कर्म करने वाला है।

श्रेष्ठ कर्म करने वाले बढ़ेंगे, उन्नति करेंगे, सुखी होंगे, कीर्ति पाएंगे, उनका आदर–सम्मान होगा तो समाज में अच्छे लोगो की संख्या बढ़ेगी और सामाजिक सुख की भी वृद्धि होगी। यदि उनके प्रति अवमानना और अवज्ञा का भाव समाज में रहा तो श्रेष्ठ कर्म करने वालों की वृद्धि रुक जाएगी। इससे समाज का अहित होगा। अतः विवेकी जनों को चाहिए कि श्रेष्ठ कर्म करने वालों के प्रति आदरभाव बनाए रखें और प्रत्येक शुभ कर्म में उनका सहयोग और उत्साहवर्धन किया करें।

चुनाव समाचार

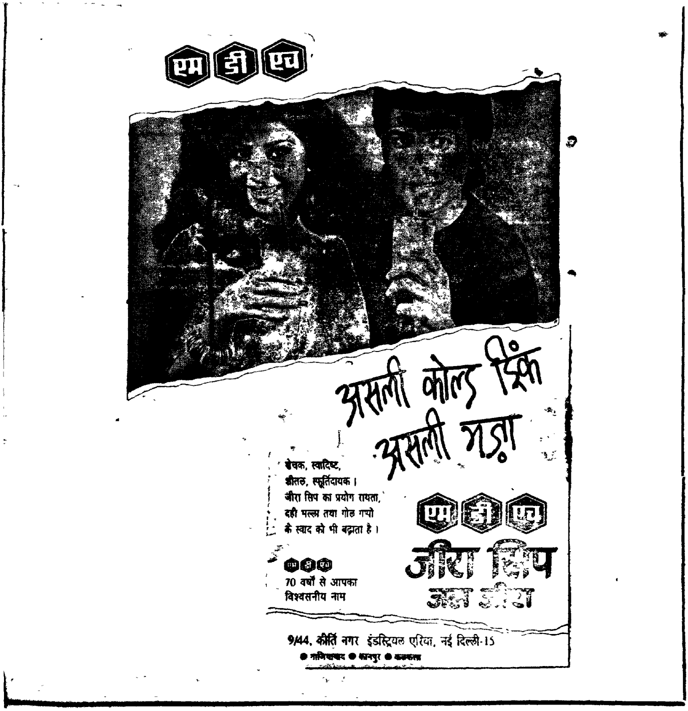
आर्य समाज रमेश नगर। १६ जुलाई को चुनाव सम्पन्न। प्रधान—श्री नन्दलाल, उपप्रधान—श्री भीमसेन गुलाटी, महामन्त्री—श्री नरेन्द्र आर्य, मन्त्री—श्री सत्यपाल नारंग, कोषाध्यक्ष—श्री ओम्प्रकाश, उप-कोषाध्यक्ष—श्री हरीश ढींगड़ा। पांच अन्तरंग सदस्य चुने गए।

—आर्यसमाज संगरूर (पंजाब)—प्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार, मन्त्री—श्री चन्द्र प्रकाश दोपली, कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र आर्य, प्रचार मन्त्री महेश कुमार।

आर्यसमाज लल्लापुर, वाराणसी—प्रधान—श्री रामगोपाल आर्य, उपप्रधान श्री रामलखन आर्य, श्री नन्दलाल, मन्त्री—श्री विजयकुमार आर्य, उपमन्त्री-सर्वश्री लक्ष्मीनारायण आर्य, उपप्रचार मन्त्री—श्री गोपाल आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री राम आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री सत्यप्रकाश आर्य, अधिष्ठाता आर्य वीर दल ज्वाला प्रसाद आर्य आयव्ययनिरीक्षक—श्री जगतनारायण मौर्य। १३ अन्तरंग सदस्य चुने गए।

कार दुर्घटना में युवा इंजीनियर छात्र की मृत्यु

भावी आशा के प्रकाशवान नक्षत्र श्री नरेन्द्र जो स्वामी केवलानन्द सरस्वती अजमेर के पौत्र तथा श्री बी०वी० शर्मा मीरामशीन टूल्स फरीदाबाद के ज्येष्ठ पुत्र थे का २४ वर्ष की अल्पआयु में कार दुर्घटना में नागपुर के समीप स्वर्गवास हो गया। स्वर्गीय नरेन्द्र इसी वर्ष नागपुर इन्जीनियरिंग महाविद्यालय में प्रथम वर्ष में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर फरीदाबाद आये हुये थे। १२-७-९५ को अपने सहपाठियों के साथ वापस नागपुर जा रहे थे कि रास्ते में कार का नियन्त्रण बिगड़ जाने से नरेन्द्र की घटना स्थल पर ही कार के नीचे दब जाने से मृत्यु हो गयी। उनका अन्त्येष्टि संस्कार फरीदाबाद में वैदिक रीति से किया गया। २४-७-९५ को सायंकाल अजमेर स्थित प्रतीक्षा वेद सदन आदर्श नगर में आत्मशान्ति महायज्ञ तथा श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें अश्रुपूरित नेत्रों से श्री नरेन्द्र को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।



साप्ताहिक सार्वदेशिक—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 10,11 8-1995 Licence to post without prepayment licence No U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
१३ अगस्त १९९५
साप्ताहिक "सार्वदेशिक"

चरित्र निर्माण के लिए युवाशक्ति के शिविरों की भूमिका

कोटद्वार। हिमालय की घाटियो के मध्य मे वीर भरत की जन्मस्थली कण्वाश्रम (कोटद्वार) मे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में १० जून से १८ जून तक आयोजित युवक निर्माण शिविर के समापन समारोह मे भाषण देते हुए डी०ए०ए० प्रबन्धकर्त्री सभा नई दिल्ली के संगठन सचिव शिक्षाशास्त्री श्री बी०बी० गक्खड ने युवको का आह्वान करते हुए कहा–युवाशक्ति के चरित्र निर्माण के लिए युवा शक्ति के इन शिविरो की विशिष्ट भूमिका हो सकती है। हमें सावधान होना पड़ेगा और यह अहसास करना होगा कि जब तक नई पीढी तैयार नही होगी, तो आगे आर्यसमाज की बागडोर कौन सम्भालेगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने इस अवसर पर कहा–बाबू श्री दरबारीलालजी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी उनकी इच्छानुसार आर्यसमाज के कार्य को और तीव्रगति से आगे बढ़ाया जाए और युवा पीढ़ी को कार्य करने मे मन-वचन–कर्म से पूरा सहयोग दिया जाए। जब तक हमारी कथनी और करनी मे समानता नही होगी तब तक समाज का उपकार होने वाला नहीं है।

जगा दो भारत को भगवान

जगा दो भारत को भगवान
बिहार जागे, उत्कल जागे, जागे बंग महान,
कर्नाटक, गुजरात, मराठा, सिन्धु बिलोचिस्तान
कश्मीर, पंजाब, अवध, ब्रज, सिक्किम और भूतान
महाकूसल, मालव उठ बैठे, गरजे राजस्थान,
मैं बंगाली, तू मद्रासी इसका रहे न भान,
गंगा-यमुना सम मिल जाए सब भारत सन्तान
ब्राह्मण हो तेजस्वी, त्यागी गौतम-कपिल समान
तन्मय हो मधुर स्वर से गाए सामवेद का गान
क्षत्रिय हो राणा प्रताप से रणबाके बलवान्
स्वतन्त्रता हित करें निछावर हंस-हंस के निज प्राण
भामाशाह समान वैश्य हो करें देशहित दान
शूद्र बनें रैदास भक्त से कबीर से मतिमान
सावित्री-सीता-दमयन्ती फिर से प्रकटें आन
दुर्गावती लक्ष्मीबाई की फिर चमके किरपान
बालक ध्रुव-प्रहलाद सदृश हों धरें तुम्हारा ध्यान।
वीर हकीकत सम हो जाए, धर्म हेतु बलिदान॥



सेवा में—

(११)
२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार
की औषधियां
सेवन करें।

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन : ३२६१८७१

...द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन :–३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एस ११०२४/–९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अक ४० विवार, २० अगस्त १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५२ दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये · आजीवन—३५० रुपए विदेश ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

दिल्ली में जमनापार स्वामी दयानन्द मार्ग का उद्घाटन

सार्वदेशिक सभा का प्रयत्न यशस्वी : दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने किया

दिल्ली से आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के घनिष्ठ सम्बन्ध : दिल्ली की पहली आर्यसमाज का शुभारम्भ महर्षि ने किया था : महर्षि के प्रयत्नों से अ० भा० सुधारक सम्मेलन हुआ था

नई दिल्ली। यह प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष स्वाधीनता दिवस से एक दिन पूर्व सोमवार १४ अगस्त, १९९५ को प्रात जमना पार कडकडडूमा चौक प्रीत विहार दिल्ली मे प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे और सार्वदेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह के सान्निध्य मे दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने श्यामलाल कालेज के समीप से प्रारम्भ होकर गाजीपुर गाव तक जाने वाले मार्ग का स्वामी दयानन्द मार्ग के रूप मे उद्घाटन कर दिया है। कडकडडूमा चौक का नाम स्वामी दयानन्द चौक रखा गया है। सार्वदेशिक सभा के प्रयत्नो से दिल्ली की सरकार ने यह पवित्र कार्य पूरा किया, इसके लिए दोनो ही बधाई के पात्र है। दोनो ही सस्थाओ ने भारत की राजधानी दिल्ली मे महर्षि दयानन्द के नाम पर एक बडे मार्ग की व्यवस्था करवाई, इस उपलब्धि के लिए दोनो को ही श्रेय देना होगा, परन्तु इतिहास के विनम्र विद्यार्थियो की दृष्टि मे दिल्ली से महर्षि दयानन्द सरस्वती के घनिष्ठ सम्बन्धो को देखते हुए राजधानी मे उनके गौरव के अनुरूप किसी विराट स्थायी स्पन्दनशील सस्था के निर्माण की अपेक्षा है। वर्त्तमान दयानन्द मार्ग का उद्घाटन उस दिशा मे पहला चरण कहा जा सकता है। आशा है सभी ऋषि भक्त राजधानी दिल्ली से महर्षि के घनिष्ठ ऐतिहासिक सम्बन्धो का अनुशीलन करेंगे।

उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती दिल्ली मे तीन बार पधारे थे सबसे पहली बार दिसम्बर १८७६ मे दिल्ली पधारे, दूसरी बार सन १८७८ मे पधारे सब्जी मण्डी मे लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द के उद्यान मे विराजमान हुए। शाह जी के छत्ते मे उनके अनेक प्रभावशाली व्याख्यान हुए। इस यात्रा की उल्लेखनीय घटना देहली मे आर्यसमाज की शुभ स्थापना के रूप मे हुई। कार्तिक शुक्ला एकादशी १९३५ को महाराज जयपुर चले गए थे। माघ वदी १ स० १९३५ को स्वामी जी दिल्ली तीसरी बार आए और सब्जी मण्डी के पास बालमुकुन्द किशोरचन्द के मोती उद्यान मे ठहरे। इस बार उन्होने दो-तीन व्याख्यान दिए।

इन तीनो यात्राओ मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वामी जी की पहली दिल्ली यात्रा थी। उन दिनो दिल्ली मे वायसराय लार्ड लिटन का दरबार लगने वाला था। महर्षि उसी सिलसिले मे दिल्ली पधारे थे। दिल्ली से दक्षिण की ओर नरेशो के कैम्प के पास एक वनवाटिका में महर्षि का डेरा लगा। यह बाग शेरमल के अनार बाग नाम से प्रसिद्ध था और अजमेरी दरवाजे के पश्चिम दक्षिण की ओर कुतुब की सडक पर स्थित था। इस बाग के बाहर बडे अक्षरो मे अंकित कर दिया गया—स्वामी दयानन्द सरस्वती का निवासस्थान।

यत्न करने पर भी दिल्ली दरबार के समय महर्षि को प्रमुख भारतीय राजाओं से परामर्श का अवसर नही मिला, परन्तु उस समय के भारत देश के उच्च कोटि के जाने-माने सुधारकों का एक सम्मेलन महर्षि के निवासस्थान पर अवश्य हुआ। सुधारकों के इस अ० भा० सम्मेलन मे महर्षि के अतिरिक्त, मुशी कहैन्यालाल अलखधारी, श्री नवीनचन्द्रराय, बाबू केशवचन्द्र सेन, मुशी इन्द्रमणि सर सैयद अहमद खा, बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि उपस्थित हुए। महर्षि ने प्रस्ताव रखा कि सब सुधारक एक होकर एक प्रकार से सुधार का कार्य करें। खेद है कि सम्मेलन मे सर्वसम्मत प्रस्ताव की रूपरेखा नही बन सकी।

महर्षि का प्रस्ताव था कि वेद के ध्वज के नीचे भारत के सम्प्रदाय एकत्र हो सकते है, अतएव वेद प्रतिष्ठा के आधार पर सुधार कार्य करने से अधिक सफलता मिल सकती हे। प्रस्ताव के प्रबल विरोधी अपने समय के प्रभावशाली ब्रह्मसमाज के नेता बाबू केशवचन्द्र सेन रहे। फल यह हुआ कि महर्षि का यह प्रयत्न विफल हो गया।

दिल्ली मे जमना पार स्वामी दयानन्द मार्ग के उद्घाटन का शुभारम्भ राजधानी मे महर्षि दयानन्द के स्मृतिचिह्न के रूप मे अच्छी शुरूआत है, परन्तु दिल्ली मे महर्षि दयानन्द के घनिष्ठ सम्बन्धो को देखते हुए राजधानी मे उनके गौरव के अनुरूप किसी विराट स्थायी सक्रिय सस्था के निर्माण की अपेक्षा है। आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था व दूसरी सस्थाओ को इस महत्वपूर्ण पहलू पर सहानुभूति से विचार करना चाहिए।

आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य

अविनाश भाई भट्ट जामनगर के मेयर

आर्यसमाज जामनगर के सक्रिय सदस्य श्री अविनाश भाई भट्ट, ११ जुलाई, १९९५ के दिन जामनगर (गुजरात) की महानगर पालिका के महापौर या मेयर चुन लिए गए। डा० अविनाश भट्ट स्व० डा० मगनभाई भट्ट के सुपुत्र है जिन्होने तन-मन-धन मे आर्य समाज के कार्य को गति दी है और समाज के सक्रिय सदस्य से लेकर प्रधान पद तक कार्य किया है।



१२ जुलाई, १९९५ के दिन आर्य समाज जामनगर द्वारा जामनगर के मेयर अविनाश भट्ट का सम्मान किया गया।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

बृहत्तर भारत में धर्मराज्य के संस्थापक : श्रीकृष्ण जी

प्रस्तुति—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रसिद्ध समाजवादी नेता डा० राममनोहर लोहिया ने कहा था

त्रेता के राम हिन्दुस्तान की उत्तर-दक्षिण एकता के देव है।

द्वापर के कृष्ण देश की पूर्व-पश्चिम एकता के देव है।

इस उक्ति के माध्यम से समाजवादी नेता ने घोषित किया था कि श्री राम ने उत्तर का दक्षिण से जोडा था तो श्री कृष्ण ने पूर्व को पश्चिम से जोडा था। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि इन दोनो महापुरुषो ने एक और सयुक्त भारत के निर्माण मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की थी। यह स्थिति उस समय अधिक उजागर हो जाती है जब शताब्दियो पूर्व लिखे 'शिशुपाल वध' की साक्षी से पाच हजार वर्ष पूर्व के एक हुए बृहत्तर भारत के निर्माण के लिए श्री कृष्ण जी के वर्चस्व को मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया गया है।

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का प्रारम्भ होने पर भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा—उपस्थित राजाओ मे जो सबसे श्रेष्ठ है, उसे ही सर्वप्रथम अर्घ्य-अग्रपूजा का सम्मान देना चाहिए। सम्राट युधिष्ठिर ने जब भीष्म से ही पूछा 'ऐसा कौन-सा व्यक्ति है—आप ही ऐसा अधिकारी व्यक्ति बतलाए जो भारत भर की इस विशिष्ट राज सभा मे प्रथम-पूजा-अर्घ्य का अधिकारी है?" इस पर भीष्म ने कहा—"जैसे जब सब ज्योति-मालाओ मे आदित्य सबसे प्रकाशमान हैं, वैसे ही इन राजाओ मे श्रीकृष्ण तेज, बल, पराक्रम से अति प्रकाशित दीख पडते है। अत वह ही प्रथम अर्घ्य के उपयुक्त पात्र है।"

महाकवि माघ रचित शिशुपाल वध महाकाव्य की साक्षी के अनुसार इस अवसर पर सम्राट युधिष्ठिर ने घोषित किया था।

हे भारी भार सभाले (श्रीकृष्ण जी) आपकी कृपा का यह कितना बडा चमत्कार है, आज सम्पूर्ण भारतवर्ष मेरे अधिकार मे है। मूल सस्कृत श्लोक इस प्रकार है—

सा विभूतिरनुभावसम्पदा भूयसी तव यदायतायति।
एतदूढगुरुभार! भारत वर्षमद्य मम वर्तते वशे॥

इस प्रकार महाकवि के अनुसार श्रीकृष्ण तत्कालीन भारत सम्राट युधिष्ठिर के मन्त्री, पाण्डव साम्राज्य के निर्माता, महाभारत युग के श्रेष्ठतम पुरुष थे। पर राजसूय यज्ञ के बाद घटनाचक्र इस तेजी से घूमा कि पाण्डवो ने जुए-घूत—क्रीडा मे अपना सारा साम्राज्य गवा दिया। घटना से आहत हुए श्रीकृष्ण जी ने यह सकेत दिया था कि यदि वह उपस्थित होते तो युधिष्ठिर को ऐसे अधर्म पूर्ण कृत्य मे कभी प्रवृत्त न होने देते। बारह वर्ष के वनवास के बाद और एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद भी पण्डवो को उनका राज्य वापस न मिला। मन्त्री सजय और श्री कृष्ण के दौत्य कर्म के बावजूद दुर्योधन ने युद्ध के बिना सूई की नोक के बराबर भूमि लौटाने से इन्कार कर दिया। फलत १८ दिन का भीषण युद्ध हुआ और तत्कालीन भारत की सारी युवा पीढी काल-कवलित हो गई। श्रीकृष्ण जी की मन्त्रणा और सहयोग से पाण्डवपक्ष विजयी हुआ, भारत की एकता-अखण्डता भी स्थापित हुई, परन्तु युग की युवा पीढी के नष्ट होने से भारत की केन्द्रीय सत्ता सुदृढ और चिरस्थायी न रह सकी, फलत एक बृहत्तर भारत का सपना चिरस्थायी नही रह सका।

बाल्यावस्था से लेकर जीवन के अन्तिम क्षणो तक श्रीकृष्ण जी उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहे। धर्म के अनुसार जनता को स्व-कर्त्तव्य पालन के लिए प्रेरित करना ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रहा। वह स्वय धर्म मे अनन्य निष्ठा रखने वाले और उसके वास्तविक रहस्य को जानकर उसका उपदेश देने वाले महान धर्मोपदेष्टा ही नही, वह गीतोपदेष्टा थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यहा तक लिख दिया है कि श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कुछ भी बुरा काम नही किया। सम्भवत इसीलिए महाभारतकार ने लिखा था—

य धर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततो जय। भीष्म पर्व ४३।६०

जहा श्री कृष्ण है, वहा धर्म है और जहा धर्म है, वहा जय है। गीता का उपसहार करते हुए गीताकार ने लिखा था—

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर।
तत्र श्रीविजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ १८।७८

जहा योगेश्वर कृष्ण और गाण्डीवधारी अर्जुन हैं, वही श्री है, वहीं विजय है, अधिक क्या कहे वही ऐश्वर्य और ध्रुव नीति है।

एक दृढ विचार वाले पुष्ट शरीर वाले और स्वस्थ मन तथा सकल्पनिष्ठ आत्मा वाले ब्रह्मचारी मे जो-जो विशेषताए होनी चाहिए, वे हमे श्री कृष्णजी मे देखने को मिलती है। उनका शारीरिक बल अतुलनीय है, जिससे उन्होने बाल-काल मे ही अनेक भीषण हिंसक शत्रुओ-जन्तुओ का सहार किया। युद्ध नीति के वह प्रकाण्ड पण्डित थे, अर्जुन और सात्यकि जैसे वीरो को उन्होने युद्ध विद्या सिखलाई थी। अनेक प्रकार के युद्धो के वह ज्ञाता—आचार्य थे, इसी के साथ वह निर्भयता और चतुरता के भण्डार थे। वह वेदो—वेदागों के ज्ञाता थे, संगीत, चिकित्सा शास्त्र, अश्व-परिचर्या आदि अनेक लौकिक विद्याओ के भी पण्डित थे।

श्री कृष्ण सन्ध्योपासना तथा अग्निहोत्र आदि दैनिक कर्त्तव्यो का पालन करने मे कभी प्रमाद नही करते थे। महाभारत मे स्थान-स्थान पर उनकी इस प्रकार की दिनचर्या का उल्लेख है—दुर्योधन से सन्धिवार्ता के लिए मार्ग मे सुबह-शाम वह सन्ध्या-अग्निहोत्र करना नही भूले। महाभारत मे उल्लेख है कि प्रात काल उठकर श्रीकृष्ण ने आह्निक (सन्ध्या—हवन आदि) सब क्रियाए की, पुन. ब्राह्मणो की आज्ञा लेकर नगर की ओर प्रस्थान किया।

प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु कृतवान् सर्वमाह्निकम्।
ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञात प्रययौ नगर प्रति॥ उद्योग ५.८.७१

फिर उन्हो पवित्र तथा वस्त्राभूषणा से अलकृत हो सध्या वन्दन, परमात्मा का उपस्थान एव अग्निहोत्र आदि पूर्वाह्न कृत्य सम्पन्न किए। उद्योग पर्व का मूल श्लोक है।

कृत्वा पौर्वाह्णिक कृत्य स्नात शुचिरलकृत।
उपतस्थे विवस्वन्त पावक च जनार्दन॥ उद्योग ८३।६

कृष्णचरित्र की सर्वोपरि विशेषता उनकी राजनीति विज्ञता और नीतिज्ञता है। श्रीकृष्ण का राष्ट्रवाद लोककल्याण, जनहित और सब प्रकार की अराजकता अन्याय तथा शोषण की प्रवृत्ति को समाप्त कर सम्पूर्ण बृहत्तर भारत मे धर्म-राज्य की सस्थापना का लक्ष्य था। सम्पूर्ण मानव जाति ही नही, अपितु प्राणिमात्र के कल्याण के भाव को लेकर ही उन्होने राजनीति के क्षेत्र मे पदार्पण किया था।

सर्वप्रथम उन्होने मथुरा जनपद के स्वेच्छाचारी, एकतन्त्रात्मक अत्याचारी कस का सहार किया। फिर राजसूय यज्ञ मे शिशुपाल का वध किया। उसके बाद अपनी नीतिमत्ता और भीम के शौर्य से ८६ राजाओ को कैद करने वाले जरासन्ध का अन्त किया। न तो युद्ध हुआ और न अनावश्यक रक्तपात। युधिष्ठिर के धर्मराज्य की सस्थापना मे श्री कृष्ण का योगदान सर्वोपरि था। युद्ध के मैदान में कायरता प्रकट करने वाले अर्जुन मे क्षात्र धर्म को श्री कृष्ण ने अपनी ओजस्विनी वाणी से प्रेरित किया। आज सहस्रो वर्ष बीत गए है परन्तु श्री कृष्ण की ओजस्विनी शिक्षा जन-जन की निराशा, ग्लानि और दौर्बल्य को दूर कर कर्त्तव्य पालन करने के लिए प्रेरित करती है।

राम स्वय राजा थे, परन्तु श्रीकृष्ण स्वय कभी राज्यगद्दी पर नही बैठे, परन्तु उन्होने बृहत्तर भारत मे आदर्श राज्य सस्थापना का कार्य स्वय किया। कह सकते है कि श्री कृष्ण राजाओ के निर्माता, राज्यसत्ता से दूर रहने वाले साम्राज्य सस्थापक थे। इस प्रकार कह सकते है कि श्री कृष्ण का चरित्र और व्यक्तित्व त्रेतायुग क समस्त भूमण्डल मे अपूर्व, अद्वितीय और आदर्श था।

अभ्युदय, बी-२२, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-४९

सम्पादकीय अग्रलेख

न दैन्यं न पलायनम्

आज हमारे पास सब कुछ है, हिमालय से लेकर दक्षिणी समुद्र तक और द्वारिकापुरी से लेकर बगाल की खाडी तक फैला हुआ विशाल भौगोलिक क्षेत्र है, बारह महीने निरन्तर बहने वाली नदिया एव प्राकृतिक ससाधनो से भरपूर मातृ-भूमि भारत देश है, इसमे ९० करोड से अधिक जनसख्या निवास करती है, निरन्तर आगे बढने की ललक विद्यमान है। आज देश मे छोटे से लेकर विराट विमान, जलपोत सब कुछ बन रहे हैं, देश मे छोटे-बडे हजारो कल-कारखाने उद्योग है, पिछले दशको मे कृषि क्षेत्र मे न केवल हम स्वावलम्बी हुए हैं, प्रत्युत नए कीर्तिमान प्रस्तुत किए हैं। कृषि, उद्योग, शिल्प, प्रौद्योगिकी के क्षेत्रो मे हमारे वैज्ञानिको, शिल्पियो और कारीगरों ने देश का सिर ऊचा किया है। बड़े-बडे इस्पात कारखाने, बडे-बडे बाध, आणविक, मिसाइल और उपग्रहो के निर्माण प्रक्षेपण के क्षेत्र मे हमने अपने ही बलबूते एवं प्रतिभा के बल पर अनेक उपलब्धिया प्राप्त की हैं। इस सबके बावजूद अभी भी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, जिन मे अभी हमे विश्व के अग्रणी सर्वोच्च राष्ट्रो की पक्ति मे पहुचने के लिए बहुत कुछ करना है, कई क्षेत्रों मे वैज्ञानिक विशेषज्ञता चाहिए, अनेक पिछडे क्षेत्रो मे प्रौद्योगिकी, शिल्प के फार्मूले चाहिए। हमारी खुली आर्थिक नीति ने विश्व के पूजी बाजार को आकर्षित किया है। ऐसे समय हमे कुछ सावधान होना चाहिए, जब पश्चिम ने हमारे बाजार की महत्ता समझ ली है तो हमे अपने उपभोक्ताओ के लिए बाजार का राजनीतिक दुरुपयोग यत्नपूर्वक रोकना होगा। भारत मे सैकडो की सख्या मे कम लागत पर बिजली बनाने वाले कारखाने है, ऐसी हालत मे अधिक लागत पर ऊंची दर पर बिजली उत्पादन की हमारी कोई मजबूरी नही है। इसी प्रकार विदेशी उपभोक्ता वस्तुओ का आयात करने या उनके निर्माण के लिए उन्हे अधिक सुविधाए देना व्यर्थ है।

उदारीकरण के नाम पर विदेशी निर्माताओ और उद्योगपतियो को भारत मे अनावश्यक सुविधाए देना, जिस प्रकार अनुचित है, उसी प्रकार सब कुछ होते हुए भी विदेशी चौराहो पर विदेशी पूजी और वस्तुओ के लिए अपनी अस्मिता और स्वाभिमान को नीलाम करना उचित नही जान पडता। हमे विश्व के वैज्ञानिक एव प्रौद्योगिक क्षेत्रो के नए फार्मूले चाहिए, उन्हे न केवल हमे लेना चाहिए, उन्हे अपने वैज्ञानिको और तकनीकी विशेषज्ञो द्वारा देश मे ही विकसित करना चाहिए। हमे इस क्षेत्र मे जापान और चीन से बहुत कुछ सीखना होगा। उन्होने पश्चिम से बहुत कुछ लिया है, परन्तु कभी भी अपनी अस्मिता और स्वाभिमान को गिरवी रख कर नही। हमारे देश मे महाभारत के युग मे धनुर्धर वीर अर्जुन जैसा अजेय योद्धा रहा है, उसके दो प्रण थे, जीवन मे और युद्ध मे वह न कभी दीनता दिखलाएगा और न कभी पलायन करेगा 'न दैन्यम् न पलायनम्' करेगा। यह भूमि वीर भोग्या है, जहा वीर पराक्रमी और अपने बाहू-बल पर अवलम्बित रहने वाले व्यक्ति ही विजयश्री प्राप्त कर सकते हैं। जो बात आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र मे उचित है, उससे भी कही अधिक प्रशासनिक एवं जीवन निर्वाह के क्षेत्र मे वह उचित है। नयना हत्याकाण्ड से राजनीति और राजनीतिज्ञो को जब अपराधी तत्त्वो से भरपूर पाया गया तो पर्याप्त सकोच और दुविधा के बाद पौने दो साल तक तहखाने मे पडी वोहरा समिति की रिपोर्ट के प्रकाशन से अपराध के कीचड़ में राजनीति और राजनीतिज्ञो के गर्दन तक डूबे रहने का कटु तथ्य उजागर हुआ। इस रपट मे स्वीकार किया गया है कि अप-राधी माफिया छोटे नगरो से महानगरो तक व्याप्त हो गए हैं। गैर-कानूनी शराब बनाने, जुआ, सट्टा, वेश्यावृत्ति करवाने के जरिए स्थानीय स्तर के अप-राधी धीरे-धीरे अपहरण और नशीले पदार्थो की तस्करी के बडे अपराधो तक पहुंचे हैं। उन्हें राजनीतिक नेताओं से सरक्षण मिलता है, नौकरशाही और पुलिस से उनकी सांठ-गांठ रहती है। न्यायपालिका से भी उन्होने रसूख बना लिए हैं। इस घुसपैठ के कारण ही वे अपनी समानान्तर व्यवस्था या हकूमत चला रहे हैं।

उक्त रिपोर्ट मे वर्तमान व्यवस्था को अपर्याप्त कहा गया है। उच्च स्तर पर एक प्रकोष्ठ या समिति की प्रतिष्ठा मात्र से यह राजनीति और अपराधी जगत् की साठ-गांठ खत्म नहीं हो सकती। इसके लिए सभी राजनीतिक दलो को मिल-बैठकर कुछ सिद्धान्त मान्य कर उनकी प्रतिष्ठा और कार्यान्वयन करने के लिए पूरी दृढता, सचाई और लगन से काम करना होगा। आर्थिक क्षेत्र का उदारीकरण हो अथवा राजनीति एव राजनीतिज्ञों मे अपराधी तत्वो की रोकथाम हो अथवा भारतीय दूरदर्शन को विश्व भर मे व्याप्त और सर्वग्राह्य करने के समय हुए घटनाचक्र से कुछ ऐसी नई समस्याए आ रही हैं, जिनके अपनाते ही हमे राष्ट्र विरोधी तत्त्वो से सघर्ष करना पडता हैं। अच्छा हो कि सभी राज-नीतिक दलो और राष्ट्र नेताओं को इन मौलिक बुनियादी समस्याओ के समाधान के लिए राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाभिमान, स्वदेशी के सिद्धान्तो पर दृढ रह कर एक मान्य सर्वसम्मत दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। ऊपर से यह कठिन और असम्भव-सा समाधान मालूम पडता है, परन्तु जब इन सभी मूल बुनियादी विषयो पर सभी प्रधान दलो की एक ही नीति और लक्ष्य हो तो उसके कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय सहमति और मतैक्य प्राप्त करना कठिन नही होगा, केवल ऐसी राष्ट्रीय सहमति से ही राष्ट्र को दूसरे राष्ट्रो के सम्मुख दीनता एव पलायन वृत्ति से बचाया जा सकता है।

चिट्ठी-पत्री

अंग्रेजी विदेशी दासता की प्रतीक

स्वाधीन भारत मे अग्रेजी भाषा विदेशी दासता की प्रतीक है। इस विदेशी भाषा अग्रेजी की शिक्षा मे किसी भी स्तर पर और लोक-सेवा-परीक्षाओ मे किसी भी रूप मे अनिवार्यता देश की स्वाधीनता, राष्ट्रीय एकता और देश के अधिसख्य गरीबो के विरुद्ध सत्ताधीशो का घिनौना षडयन्त्र है।

—जगन्नाथ, एक्स वाई ५८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

कामरेडों का नया पैंतरा

वेदो के महाविद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी ने कामरेडो की बडी सुन्दर परिभाषा लिखी है—

धर्मार्थ मोक्षानुत्सृज्य काम सेवापरायण ।
काममार्गे डते यस्तु कामरेड इति स्मृत ॥ (कायाकल्प)

अर्थात् जो धर्म, अर्थ, मोक्ष सब को छोड केवल काम की सेवा मे तत्पर रहे और कई बार काम का स्मरण करे वह कामरेड कहलाता है और भी—

अहिंसा, सत्यमस्तेय ब्रह्मचर्यं क्षमा दया।
क्षणादेव पलायन्ते कामरेडेति कीर्त्तनात् ॥ (कायाकल्प)

अर्थात् कामरेड शब्द का कीर्त्तन करते ही अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, क्षमा, दया—ये सब सद्गुण तत्क्षण पलायन कर जाते है।

इन्ही लक्षणो से सम्पन्न कुछ कामरेड आर्यसमाज मे घुसपैठ कर गए है, वे कभी भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना, कभी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद की स्थापना, कभी आर्यसभा की स्थापना, कभी सतीविरोध को पदयात्रा, कभी शबाना आजमी के साथ पदयात्रा, कभी दिल्ली की जामा-मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी का दरबार करना, कभी श्री विश्वनाथसिंह, श्री चन्द्रशेखर के तलवे चाटना कभी स्वरूपानन्द, कभी चन्द्रास्वामी की शरण मे जाना, कभी भाजपा को साम्प्रदायिक बताकर गाली देना एव उन्ही से आशीर्वाद लेने के लिए उन्हे निमत्रित करना, कभी नए सार्वदेशिक का गठन करना, नक्सलवादियो एव आतक-वादियो से हाथ मिलाना, कभी दयानन्द के सपनो को साकार करने का मनमोहक नारा देना तो कभी आर०एस०एस० व विश्व हिन्दू परिषद् को अहर्निश गाली देना फिर उन्ही की शरण मे जाना, कभी शराबबन्दी की ओट मे पैसा इकट्ठा कर ऐश करना इत्यादि। इस तरह उनके विरोधाभासी चरित्र देखे जाते है। विविध नामो और सम्मेलनो को आधार बनाकर पैसे इकट्ठे करने वाले इन कामरेडो से अत्यन्त सावधान रहने की आवश्यकता है तथा वर्तमान सार्वदेशिक सभा जिसके प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् है उनका सहयोग करना चाहिए, जिससे ये कामरेड आर्यसमाज पर आधिपत्य कर इसको नष्ट करने मे सफल न हो सकें, अन्त मे कामरेडो का एक और लक्षण स्वामी जी ने बताया है—

अन्त शाक्ता बहि शैवा सभामध्ये च वैष्णवा ।
नाना रूपधरा: कौला विचरन्ति महीतले ॥ (कायाकल्प)

अर्थात् अन्दर से शाक्त, बाहर से शैव, सभा मे वैष्णव, जहा जैसा अवसर मिले वहा वैसा रूप बना लेना, यही कामरेडो का (इनका) सिद्धान्त है

—भगवत् मुनि, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

सत्य धर्म के व्याख्याता महर्षि दयानन्द

यशपाल आर्यबन्धु

सत्यधर्म के यथार्थ व्याख्याता महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व धर्म अपना वास्तविक स्वरूप खो चुका था। लोग इस महान तथा व्यापक शब्द को मत, मजहब, पंथ, सम्प्रदाय और रिलीजन के अर्थो मे प्रयुक्त करने लग गए थे और यह आशका हो चली थी इन अर्थों मे प्रयुक्त होते-होते यह शब्द अपने मूल अर्थों से कही इतनी दूर न निकल जाए कि आने वाली पीढिया अपने प्राचीन शास्त्रो के अर्थ करने मे ही कही भटक न जाए, जहा पदे-पदे धर्म शब्द का प्रयोग हुआ है। प्राचीन शास्त्रो मे ऐसे-ऐसे प्रसगो मे धर्म शब्द का प्रयोग हुआ है, जहा दूर तक कही सम्प्रदायवाद की गध तक भी नही आती। वहा यह शब्द या तो कर्त्तव्य की आन्तरिक भावना के रूप मे आया है, या फिर वस्तु के स्वभाव के रूप मे ही सर्वत्र प्रयुक्त हुआ है, आधुनिक सम्प्रदायवादी अर्थो मे कही नही। ऋषि की यह आशका निर्मूल नही थी। कारण कि सामान्य जन तो दूर विद्वत् समाज भी इसके व्यापक स्वरूप को समझने मे असमर्थ हो रहा था अपितु यू कहना चाहिए कि इसके सम्बन्ध मे व्यामोह का शिकार हो रहा था। महर्षि को इसका प्रत्यक्ष अनुभव तब हुआ जब काशी के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ मे उन्होने काशी की सम्पूर्ण विद्वतमण्डली से धर्म के लक्षण पूछ लिए थे। इतिहास साक्षी है कि उस समय भारत की धर्मनगरी काशी की सम्पूर्ण विद्वतमण्डली इसका उत्तर नही दे सकी थी। और जब महर्षि ने स्वय इसके मनूक्त प्रसिद्ध लक्षण—

धृति क्षमोऽदमा स्तेय शोचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम् ।"

बता दिए तो वे सब के सब बोल उठे कि यह तो हमे भी ज्ञात थे। प्रश्न उठता है कि जब ज्ञात थे, तो वे बोले क्यो नही? इसी लिए कि धर्म की स्पष्ट अवधारणा उनके मस्तिष्क में उस समय नही थी। जो थी भी, वह भी इतनी विकृत और विवादास्पद हो चुकी थी कि उसका उस समय कोई सर्वमान्य लक्षण या स्वरूप बता पाना उनके लिए कठिन हो रहा था।

धर्म के विपरीत अधर्म

पाठकवृन्द! यह थी महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व धर्म की स्थिति बात यही तक सीमित होती तो भी कोई बात नही थी, पर जब पौराणिक पण्डितमण्डली द्वारा मनु जी के बताए गए धर्म के दश लक्षणो की जानकारी होने की बात कही गई, तो महर्षि ने झट उनसे अधर्म के लक्षण बताने को कह दिया। कैसा दुखद आश्चर्य है कि एक बार फिर काशी के पण्डितो को वाणी को लकवा मार गया और वे चुप्पी साध के बैठ जाने को बाध्य हो गए। आश्चर्य है कि इन धर्मध्वजी धर्मगुरुओ को धर्म और अधर्म का भी ठीक से ज्ञान नही था। धर्म है, तो हिंसा अधर्म। यदि सत्य धर्म है तो असत्य अधर्म होगा। यदि अस्तेय धर्म है तो स्तेय अधर्म होगा। आदि-आदि। मृतप्राय धर्म महर्षि की ओजस्वी व्याख्या पा कर एक बार फिर से जीवित हो उठा था। वस्तुत :—

धर्म तैयार बैठा था जहा से रुठ जाने को।
उसे ऋषिवर दयानन्द आये थे, मना कर लौटा लाने को॥

धर्म के तत्त्व के यथार्थ ज्ञाता, धर्मतत्वज्ञ महर्षि दनानन्द जो स्वय साक्षात-कृतधर्मा ऋषि थे, उन्होने वेद के इस शब्द को वेद से ही समझा था, और यह था भी ठीक क्यो कि वेदोऽखिलो धर्ममूल के अनुसार वेद अखिल धर्म का मूल है तथा वेद एव वेदस्योपाध्याय. वेद ही वेद का उपाध्याय है। अथर्ववेद के निम्न मन्त्र—

"ओजश्च तेजश्च सहश्च बलच वाक्चेन्द्रिय च श्रीश्च धर्मश्च ।" (१२,५ ७) का अर्थ करते हुए अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे धर्म शब्द का भाष्य करते हुए महर्षि लिखते हैं—"(धर्मश्च) जो वेदोक्त न्याय से युक्त होके, पक्षपात को छोड के, सत्य ही का सदा आचरण ओर असत्य का त्याग करना है, या जो सबका उपकार करने वाला और जिसका फल इस जन्म और परजन्म आनन्द है, उसी को धर्म और उससे उलटा करने को अधर्म कहते हैं।" अहा! धर्म और अधर्म की कैसी सुन्दर व्याख्या है कसे उत्तम शब्दो में परिभाषित किया महर्षि ने धर्म को वस्तुत "धर्मस्य तत्व निहित गुहायाम्" के अनुसार धर्म के अनुसार धर्म के तत्त्व को सामान्य जन भला क्या समझेंगे? यह तो साक्षात्कृतधर्मा ऋषि ही इसे जान सकता है। और जानकर फिर यह उद्घोष भी कर सकता है कि "चोदनालक्षणोऽर्थो धर्म" और "यतो अभ्युदय नि.श्रेयस सिद्धि स धर्म"। उपर्युक्त आप्त वचनो का अर्थ करते हुए महर्षि लिखते हैं—"(चोदना) ईश्वर ने वेदो मे मनुष्यो के लिए जिसके करने की आज्ञा दी है, वही धर्म और जिसके करने की प्रेरणा नही दी, वह अधर्म कहाता है।" तथा "यतोऽभ्युदय) जिसके आचरण करने से ससार मे उत्तम सुख और नि श्रेयस अर्थात मोक्षसुख की प्राप्ति होती है, उसी का नाम धर्म है। यह भी वेदो की व्याख्या है।"(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदोक्त धर्म विषय)

धर्मानुसार-सत्य और असत्य के विचार से

अपने जीवन मे सत्य को दृढता से धारण करने वाले सत्यव्रती महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्य का धर्म के साथ अत्यन्त गहरा और अटूट सम्बन्ध बताया है। वह लिखते हैं कि—सत्यभाषा और आचरण से उत्तम धर्म का लक्षण कोई भी नहीं है, क्योंकि सत्पुरुषो मे भी सत्य ही सत्पुरुषपन है। (ऋग्वेदादि भा० भू०, वेदोक्त धर्म विषय) जिस सत्पुरुषपन की पहचान महर्षि दयानन्द ने बताई, वह उनमे कूट-कूट कर भरी थी। वह स्वय एक सत्पुरुष थे। तभी सत्पुरुषपन को वह पहचान सके थे। आर्यसमाज के नियम बनाते हुए भी सत्य और धर्म को वह अलग नहीं करते। इसीलिए वह लिखते हैं कि—सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।" इतना ही नही, महर्षि तो यहा तक लिखते है कि—"जो न्याय अर्थात पक्षपात को छोड के सत्य के आचरण और असत्य का परित्याग करना है, उसी को धर्म कहते है।" (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदोक्त धर्म विषय)

पाठक विचारें कि धर्म के इस स्वरूप और उसकी ऐसी सुन्दर सारगर्भित परिभाषा और व्याख्या मे सम्प्रदायवाद की गध कहा है। फिर पता नही क्यों आज धर्म के विरुद्ध लठ लेकर लोग क्यो पडे है। आज धर्म को इतना हेय और तुच्छ क्यो समझा जाने लगा है? काश! हमारे राजनेतागण धर्म की महर्षि दया-नन्द द्वारा की गई परिभाषा और व्याख्या को हृदयगम कर पाते तो धर्मनिरपेक्षता का जो बेसुरा राग आज अलापा जा रहा है, वह न अलापा जाता। जो भी हो यह देश का दुर्भाग्य ही है कि जो धर्म और मत, मजहब आदि में जो अन्तर है, उसे समझने मे लोग विफल हो रहे हैं।

धर्म के बिगडते स्वरूप को देखकर ही महर्षि ने उसे मत, और सम्प्रदाय की कारा से मुक्ति दिलाने की सोची थी। और इसीलिये उन्हें जब और जहा भी धर्म के यथार्थ स्वरूप की व्याख्या करने का अवसर मिला, वे उससे नहीं चूके। चाहे तो वह महर्षि का विचारपुज सत्यार्थ प्रकाश हो या स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश व्यवहार भानु हो या आर्योद्देश्य रत्नमाला, ऋग्वेदादि भाष्यभूमि हो या वेदभाष्य संस्कार विधि हो या सत्यधर्म विचार तात्पर्य यह कि सर्वत्र धर्म की व्याख्या करना वह नही भूलते। इसी से पता चलता है कि धर्म के प्रति वह कितने सजग थे। आर्योद्देश्य रत्नमाला मे उन्होने लिखा कि धर्म जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात-रहित न्याय सर्वहित करना है। जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणो से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यो के लिए यही एक धर्म मानना योग्य है।"

धर्म की शास्त्रोक्त यथार्थ व्याख्या

महर्षि ने धर्म को केवल परिभाषित ही नही किया, अपितु उसकी शास्त्रोक्त यथार्थ व्याख्या भी की और यह भी बताया कि मनुष्य धर्म का ज्ञान किस प्रकार से प्राप्त कर सकता है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे जहा धर्माचरण की बात महर्षि ने लिखी है, वहा यह भी लिख दिया है कि—"धर्म का ज्ञान किस प्रकार से होता है—एक तो धर्मात्मा विद्वानो की शिक्षा, दूसरा आत्मा की शुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा, तीसरा परमात्मा की कही वेद-विद्या को जानने से मनुष्यों को सत्यासत्य का यथावत् बोध होता है, अन्यथा नहीं" (वेदोक्त धर्म विषय) इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने न केवल धर्म विषयक भ्रान्तियों का निरा—

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वाधीनता संग्राम में क्रान्तिकारियों की भूमिका

(पिछले अंक का शेषांक) नरेन्द्र अवस्थी

बगाल मे सर्वश्री अरविन्द घोष, रास बिहारीबोस, बारीन्द्र घोष, सूर्यसेन, त्रैलोक्य नाथ महाराज, खुदीराम बोस आदि प्रमुख क्रान्तिकारियो ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई—इनके नाम सर्वविदित हैं। इनके अतिरिक्त अन्य अल्पख्यात किन्तु प्रमुख नाम है विनय-बादल-दिनेश की त्रिमूर्ति का जिन्होने राइटर्स भवन पर आक्रमण किया था, कन्हाई लाल दत्त और सत्येन बोस का जिन्हे अलीपुर जेल मे मुखबिर को मारने पर फासी की सजा हुई थी। नलिनी कान्त गुप्त जो 'अलीपुर केस' मे दत्त और बोस के साथ बन्दी थे तथा जतीन्द्र मुखर्जी का जिन्होने लाठी से अकेले बाघ की हत्या करके 'बाघा जतीन' की उपाधि प्राप्त की थी। बंगाल की प्रथम महिला शहीद थी प्रीतिलता ओहदेदार जो 'मास्टर दा' सूर्यसेन की शिष्या थी।

इनके अतिरिक्त बगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, पजाब मे और भी कई क्रान्तिकारी शहीद हुए और अज्ञात रहे अथवा जीवन भर यातनाए सहते हुए जीवित रहे किन्तु क्रान्तिकारियो के इतिहास मे उनका उल्लेख नही मिलता। जैसे क्रान्तिकारी मन्मथनाथ गुप्त के छोटे भाई मनमोहन गुप्त भी क्रान्ति के पथिक थे, जिन्होने मनमाड बमकाण्ड मे सात वर्ष का कारावास बम्बई की जेलो मे 'सी' क्लास बन्दी के रूप मे काटा था। ऐसे ही अनेक ज्ञात व अज्ञात क्रान्तिकारियो का इतिहास जनमानस के सम्मुख नही आ पाया। जब गिरफ्तारी की आशका होती तो तमाम दस्तावेज नष्ट कर दिए जाते थे, इसलिए क्रान्तिकारी गतिविधियो का इतिहास ठीक से नही लिखा गया है। इन क्रान्तिकारियो ने स्वतन्त्रता-आन्दोलन मे जो योगदान किया, उसका पर्याप्त मूल्याकन नही हुआ है।

विदेशों में आजादी का सिंहनाद

विदेशो मे जाकर आजादी का शखनाद फूंकने वाले देशभक्त क्रान्तिकारियो का अपना ही इतिहास है। १९०५ मे सर्वप्रथम स्वराज्य आन्दोलन व क्रान्ति का बिगुल बजाने के लिए उच्च कोटि के विद्वान श्यामजी कृष्ण वर्मा इंग्लैण्ड गए। उन्होने वहा भारतीयो को एक सूत्र मे पिरोने के लिए इण्डियन होम रूल सोसायटी की स्थापना की—उनके द्वारा ही वहा इण्डिया हाउस निर्मित हुआ। राष्ट्रभक्ति के धधकते ज्वालामुखी वीर सावरकर उनके सम्पर्क मे थे। बाद मे महान क्रान्तिकारी देवता स्वरूप भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, वी० एस० अय्यर, सेनापति बापट तथा कुछ अन्य भारतीय इन गतिविधियो मे अग्रसर हुए। भारत के सेक्रेटरी सर विलियम कर्नल वायली के इग्लैण्ड लौटने पर १ जुलाई १९०९ को क्रान्ति वीर मदनलाल धीगरा की गोली का निशाना बनना पडा। वह वीर सावरकर का प्रमुख साथी था। घटना के कुछ दिनो बाद १८ अगस्त १९०९ को मदनलाल धीगरा को फासी की सजा दी गई। शेर की मान्द मे घुसकर शत्रु को मृत्यु की निद्रा मे सुला कर इग्लैण्ड मे शहीद होने वाला भारत माता का प्रथम सपूत था।

एक क्रान्तिकारी सरदार सिंह राजा बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त करने के बाद हीरो का व्यापार करने के लिए पैरिस मे बस गए। उनका घर भारतीय क्रान्तिकारियो का प्रमुख मुख्यालय था। सन् १९०६ मे मिदनापुर (बगाल) के एक युवक हेमचन्द्र कानूनगो को बम बनाने की विधि सीखने के लिए स्वदेश भेजा गया। इस युवक ने पोलैण्ड तथा रूस के क्रान्तिकारियो से भी बम बनाने की विधिया सीखी। वह भारत लौट आया। बाद मे मई १९०८ में कानूनगो मानिकतला बमकाण्ड मे गिरफ्तार हो गया। सेनापति बापट ने लन्दन मे ही एक रूसी इंजीनियर से बम बनाने की विधि सीखी। वीर सावरकर की गतिविधियो से लन्दन की पुलिस चौक उठी। उन्हे गिरफ्तार करके भारत भेजने की योजना बनी। उनका समुद्री पोत से कूद कर समुद्र की छाती पर तैर कर फ्रास के तट पर जा लगना एक रोमाचकारी दास्तान है। बर्लिन मे क्रान्तिकारियो की गतिविधियो उल्लेखनीय रही। जर्मनी ने क्रान्तिकारियो को काफी सहयोग दिया—मगर जब जर्मनी पराजित होने लगा, १९१७ मे क्रान्तिकारियो का केन्द्र बर्लिन से स्थानांतरित होकर मास्को बन गया। राजा महेन्द्र प्रताप स्वतन्त्रता सेनानियो के लिए सहायता हेतु अफगानिस्तान में प्रयत्नशील थे।

अमेरिका और कनाडा मे भी कतिपय भारतीय क्रान्तिकारियो ने देश की आजादी के लिए आन्दोलनकारी गतिविधियो को बढावा दिया। १९०७ मे पांडुरंग खानखोजे और तारकनाथ दास सहित कुछ युवा छात्रो ने केलिफोर्निया मे 'भारतीय स्वाधीनता सघ' नामक सस्था का गठन करके वहा के सिखो मे स्वाधीनता के लिए सघर्ष करने का आह्वान किया। १९०८ मे इसकी एक शाखा पोर्टलैण्ड मे भी स्थापित की गई। बेंकुवर मे इन क्रान्तिवीरो ने 'फ्री हिन्दुस्तानी' के नाम से एक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया। पोर्टलैण्ड गतिविधियो का केन्द्र बन गया था। १९१३ मे लाला हरदयाल, भाई परमानन्द व उससे पूर्व सोहन सिंह चकनार आदि के सम्मिलित होने से यह दल काफी सशक्त हो गया था। सरकार ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन को सख्ती से दमन करने पर तुली थी। लाला हरदयाल को गिरफ्तार किया गया—बाद मे जमानत पर रिहा कर दिया गया। उन्ही दिनो कनाडा मे एक क्रांतिकारी सेवासिंह ने पुलिस अधिकारी को गोली से उडाया—बाद मे स्वय भी शहीद हो गया।

विदेशी धरती पर जाकर स्वतन्त्रता हेतु सघर्ष करने वाले अनेक ज्ञात व अज्ञात क्रांतिकारी स्वातन्त्र्य भवन के नीव के पत्थर बने। सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी कवि रामधारी सिंह दिनकर उन्हे नमन करते हुए ठीक ही लिखा है—

कलम, आज उनकी जय बोल।
जला अस्थिया बारी-बारी छिटकाई जिन ने चिनगारी,
जो चढ गए पुण्य वेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
अन्धा चकाचौंध का मारा, क्या जाने इतिहास बिचारा,
साखी है, उनकी महिमा के सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

—आर्य समाज मार्केट, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-६५

योगिराज हे कृष्ण बने तुम भारत शुभचिन्तक

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

ओज-तेज-साहस से अपने, तुमने दानव-वृत्त भगाया।
एक सूत्र मे बाध राष्ट्र को, जन-जन मे नूतन ज्योत जगाया ॥
कस तथा शिशुपाल-जरासध से असुरो को किया विनष्ठ।
सारी धरती की दानवता का किया, तुम्ही ने निर्भय नष्ट ॥
जन-सेवा मे अपना जीवन, बाल्य काल से किया समर्पित।
भारतमाता के अर्चन मे-तन—मन—धन कर डाला अर्पित ॥
वीर व्रती तुम, धीर महा थे-योगी थे युग के अनुपम।
पूर्ण पुरुष तुम, युग मानवथे—प्राप्त किया था लक्ष्य चरम।
सत्य-धर्म के रक्षक थे तुम, गो सुर-सतो के त्राता।
शक्ति-शौर्य से बने सहज ही, आर्य राष्ट्र के भाग्य विधाता ॥
मोहाक्रान्त पार्थ को तुमने-दिया विमल गीता-सदेश।
युग-युग तक मार्ग दिखाता, सदा रहेगा जो उपदेश ॥
राष्ट्रवाद की प्रखर भावना, किया तुम्ही ने था उद्वेलित।
युवा शक्ति को किया सुजाग्रत-मानवता के मगल हित ॥
योगिराज हे कृष्ण ! बने तुम-भारत शुभ चिन्तक, भगवान।
अपराजेय बने तुम युग के-वेदपथिक है ! जयी महान ॥

मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सत्य धर्म के व्याख्याता

(पृष्ठ ४ का शेष)

करण और निवारण किया अपितु धर्म एवम् उसके ज्ञान विषयक सभी विषयो का विस्तार से वर्णन कर दिया। किन्तु इन सबके अतिरिक्त जो कार्य महर्षि ने और किया, वह अत्यन्त उल्लेखनीय है। वह यह कि आज तक धर्म में जिस तर्क-बुद्धि का प्रवेश वर्जित था, महर्षि ने उसे फिर उसमे प्रवेश दे दिया। महर्षि का यह धर्मविषयक मानव जाति पर बहुत बडा उपकार है। इसके लिए मानवता उनकी चिरकाल तक ऋणी रहेगी।

महर्षि ने धर्म को परलोक की पूजी बताया है। जैसे विदेश मे इस देश की पूजी या सिक्का नही चलता, उसी प्रकार परलोक मे भी इस लोक की पूजी या सिक्का नही चलता। वहा तो केवल धर्म रूपी सिक्का ही चलता है और वही साथ ले जाना होता है। इस सम्बन्ध में महर्षि का कथन है कि—"परलोक मे न माता, न पिता, न पुत्र, स्त्री, न ज्ञाति सहाय कर सकते हैं, किन्तु एक धर्म ही सहायक होता है।" (सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थ समुल्लास) आश्चर्य है इस पर भी लोग परलोक की पूंजी नही बटोरते।

उपर्युक्त प्रमाणों एव विवेचन से यही प्रमाणित होता है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती एक सच्चे धर्मसशोधक थे। अन्य धर्मसंशोधको और महर्षि दयानन्द मे महान अन्तर था। अन्य जितने भी धर्मसशोधक हुए हैं, प्राय वे धर्म की विकृतियों को दूर करने के स्थान पर स्वय एक नया धर्म (जिसे वस्तुत मत कहना अधिक उपयुक्त होगा) चला बैठे। पर महर्षि दयानन्द ने ऐसा नही किया अपितु उन्होने तो यह भी घोषणा कर दी कि—"मेरा कोई नवीन कल्पना व मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है किन्तु जो सत्य है, उसको मानना मनवाना और जो असत्य है, उसको छोडना छुडवाना मुझको अभीष्ट है।' (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश) और हम देखते हैं कि उस महामानव ने आजीवन अपना यह व्रत, अपनी यह प्रतिज्ञा बड़ी तत्परता के साथ निभाई। वस्तुत—

सत्य से जन्मे हुए तुम सत्य मे लयमान।
बन गया जीवन तुम्हारा सत्य का अभियान ॥
और सत्य तो यह है कि—
धर्म का मर्म सारे जग को बता गए।
मृत प्राय. धर्म को ऋषिवर पुन जिला गए।

—आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर में वेद प्रचार दिवस

आर्य महिला मण्डल करौल बाग के तत्वावधान में शनिवार २ सितम्बर, १९९५ को दोपहर १२ बजे से शाम को ५ बजे तक आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर मे श्रीमती सरला जी मेहता की अध्यक्षता में वेद प्रचार दिवस का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

उस दिन दोपहर को १२ बजे से १ बजे तक श्रीमती कृष्णा जी वडेरा एवं डा० चन्द्र प्रभा जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारम्भ होगा। ध्वजा-रोहण श्रीमती वीर बाली जी बख्शी करेंगी और ओ३म् की व्याख्या श्रीमती उमा जी अभि प्रस्तुत करेंगी।

दोपहर को १-३० बजे से २-३० बजे तक यजुर्वेद के पहले पाच मन्त्रो की अर्थ सहित-मन्त्र प्रतियोगिता होगी। प्रतियोगिता की निर्णायिकाएं हैं—श्रीमती पुष्पा जी साहनी, श्रीमती उषा जी शास्त्री और श्रीमती विमला जी ओबराय।

सन्ध्या के समय वेद सम्मेलन होगा जिसमें डा० शशि प्रभा जी (प्रवक्ता मैत्रेयी कालेज) श्रीमती शकुन्तला जी दीक्षित और श्रीमती तारा जी वेद वेदो पर अपना चिन्तन प्रस्तुत करेंगी।

आर्य स्त्री समाज पंजाबी बाग में वेद प्रचार दिवस

प्रातीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे सोमवार, ११ सितम्बर ९५ के दिन प्रात ११ से साय काल ४ बजे तक आर्य स्त्री समाज पंजाबी बाग पश्चिमी मे श्रीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता मे वेद प्रचार दिवस आयोजित किया गया है।

प्रात ११ बजे से १२ बजे तक श्रीमती शान्ति देवी जी के ब्रह्मत्व मे यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारम्भ होगा। श्रीमती विद्यावती जी (फरिश्ता सोप वाले) ध्वजारोहण करेंगी। ओ३म् की व्याख्या श्रीमती कृष्णा जी रहेजा करेंगी।

दोपहर को १ बजे से २ बजे तक सामवेद की प्रथम दशती—१ से १० मन्त्रों की अर्थ सहित-मन्त्र प्रतियोगिता होगी। प्रतियोगिता की निर्णायिकाएं हैं—श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती प्रेमशील जी और श्रीमती शकुन्तला दीक्षित।

सन्ध्या के समय २ से ४ तक मैत्रेयी कालेज की प्रवक्ता डा. शशिप्रभा जी, श्रीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन होगा। डा० उषा जी शास्त्री और श्रीमती सुनीति शर्मा वैदिक वाङ्मय पर अपना चिंतन प्रस्तुत करेंगी।

आवश्यक बैठक

आर्यसमाज मन्दिर अशोक नगर, नई दिल्ली-१८ का वार्षिकोत्सव साधना शिविर के साथ श्रद्धेय स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे १८.९.१९९५ सोमवार से २४.९.१९९५ रविवार तक समारोहपूर्वक मनाने का निश्चय लिया गया है।

इस उपलक्ष्य मे रविवार २०.८.९५ को साय ४ बजे आर्यसमाज मन्दिर अशोक नगर, नई दिल्ली-१८ मे पश्चिमी दिल्ली के वयोवृद्ध आर्य नेता डा. व्यास देव मेहता जी की अध्यक्षता मे एक आवश्यक बैठक रखी गई है, जिसमे उत्सव को सफल बनाने पर विचार किया जायेगा तथा पश्चिमी दिल्ली के ग्रामीण इलाकों में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को प्रगति देने पर भी विचार किया जायेगा।

मगत राम आर्य, आर्य समाज अशोक नगर

आर्यसमाज पश्चिमी पंजाबी बाग में वैदिक ऋचाओं द्वारा यज्ञ

सोमवार ७ अगस्त से रविवार १३ अगस्त तक आर्यसमाज पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली—२६ में वेदप्रचार सप्ताह के अवसर पर आर्यजगत् के विद्वान् प्रो० उत्तमचन्द शरर ने वेदो के चुने हुए मन्त्रो द्वारा यज्ञ कराया। प० सत्यपाल जी मधुर ने ईश्वर भक्ति के भजन प्रस्तुत किए।

वैदिक सत्संग मण्डल का दसवां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक सत्संग मण्डल—ए-२ केशवपुरम, दिल्ली-३५ का दसवा वार्षिकोत्सव ८-९-१० जुलाई को मनाया गया आचार्य रामचन्द्र शर्मा और अश्विनी कुमार जी पाठक के भाषण हुए। दोनो समय सैकडो व्यक्तियो ने धर्म-लाभ उठाया।

आर्यसमाज निर्माण विहार में सामवेद पारायण

आर्यसमाज मन्दिर विहार ए-ब्लाक मे श्री मुक्तेश्वर जी के ब्रह्मात्व मे १० से १७ अगस्त तक सामवेद पारायण महायज्ञ मम्पन्न हुआ। ११ से १७ अगस्त तक को रात्रि ८-३० से ९-३० बजे तक प० भूदेव साहित्याचार्य की वेदकथा हुई। यज्ञ की पूर्णाहुति का कार्यक्रम शुक्रवार १८ अगस्त को प्रात· ७-३० से ९ बजे तक रखा गया है।

मुकदमे वापस लो, आर्यन्याय सभा को दो

आर्य सन्देश के २३ जुलाई के अक मे 'आर्यो। कभी तो सोचो? श्री शरर जी का लेख बहुत ही अच्छा लगा।

इस प्रकार के विचारो को सर्वप्रथम स्थान सर्वत्र मिलना ही चाहिए तथा हम सब को उस पर अमल भी करना चाहिए।

लेखक एव प्रकाशक को बधाई एव धन्यवाद।

आर्यसमाज मे फिर स्वर्ण युग लाने वास्ते सर्वप्रथम जहा कही भी कोई मुकदमा (केस) चल रहा है, उसे वापस लेकर आर्यन्याय सभा या न्याय आर्य सभा मे देकर आर्यजन एक आदर्श स्थापित करेंगे। बस इसी आशा विश्वा के सग।

—रामपथिक बानप्रस्थाश्रम
१०७ नदी मार्ग, मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 17,18-8-1995 Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
२० अगस्त १९९५
साप्ताहिक "सार्वदेशिक"

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश (२) में वेद सप्ताह समारोह

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश (२) नई दिल्ली-४८ मे २१ अगस्त से २७ अगस्त तक आर्य वानप्रस्याश्रम ज्वालापुर के महात्मा आर्य भिक्षु जी के निर्देशन मे वेद सप्ताह समारोह आयोजित किया जा रहा है। २१ से २६ अगस्त तक प्रात ७ से ८-३० बजे तक सामवेद पारायण महायज्ञ आयोजित किया जाएगा, यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा आर्य भिक्षु जी होंगे और गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी वेदपाठ प्रस्तुत करेंगे। २१ से २६ तक प्रतिदिन रात्रि को ७-३० से ८ बजे तक भजन ८ से ९ बजे तक वेदकथा होगी। रविवार २७ अगस्त को प्रात: ८ से १० बजे तक पूर्णाहुति होगी। महात्मा आर्य भिक्षु जी आशीर्वाद देंगे। १२ बजे प्रीतिभोज होगा।

आर्यसमाज सूरजमल विहार में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

शुक्रवार १८ अगस्त के दिन आर्यसमाज सूरजमल विहार, दिल्ली-९२ शिक्षक सदन—बी ब्लाक, सूरजमल विहार मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह का आयोजन कर रहा है। उसमे श्री भूदेव शास्त्री, श्री विश्वमित्र मेधावी, आचार्य कामेश्वर शास्त्री, श्री दिनेशचन्द्र शास्त्री और श्री पुश्किन अरोडा आदि विद्वज्जन भाषण करेंगे।

गऊओं को कटवाने का धन्धा करने वाले सलीम की गिरफ्तारी की मांग

भारत गौसेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने दिल्ली पुलिस से अनुरोध किया है कि गऊओं को कटवाने का धन्धा करने वाले दिल्ली ब्लाक कांग्रेस के नेता सलीम को तुरन्त गिरफ्तार कर सजा दिलवायी जाए।

श्री गुप्त ने दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री दीपचन्द बन्धु को पत्र लिखकर कहा कि समाचार पत्रो से पता चला है कि दिल्ली कांग्रेस के ब्लाक अध्यक्ष सलीम गऊओ को कटवाने के घिनौने काण्ड मे लिप्त है। अत श्री सलीम को तुरन्त कांग्रेस पार्टी से निष्कासित किया जाए, जिससे दिल्ली मे साम्प्रदायिक सौहार्द बना रहे।

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी में वेद प्रचार सप्ताह

शहीद भगतसिंह मोहल्ला न्यू उस्मानपुर, दिल्ली-५३ मे १० अगस्त से १८ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। श्रावणी के दिन बृहत् यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत परिवर्तन किए गए। ११-१२और१४ से १९ तक दैविक सत्सग, बृहद् यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया है। शुक्रवार १८ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव किया जाएगा। दैनिक सत्सगो की व्यवस्था विभिन्न परिवारों मे की गई। आयोजन के अवसर पर श्री नन्दलाल जी निर्णय वैद्यविशारद के भजनो एव प्रवचनो की व्यवस्था की गई है।

सेवा में—

सुदर्शन द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन।—३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि०नं० डी० (एस ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अक ४२ | रविवार, २७ अगस्त १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५१ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

मानव मात्र के लिए एक सामान्य मानवसंहिता हो

आर्य महासम्मेलन में आर्य नेताओं द्वारा महर्षि दयानन्द द्वारा दिखलाए मार्ग का अनुसरण करने का आह्वान

नई दिल्ली। शुक्रवार रक्षाबन्धन के दिन यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर आर्यसमाज कीर्तिनगर दिल्ली-१५ मे स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी, सभा के महामन्त्री डा. धर्मपाल जी ने जनता का आह्वान किया कि आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किसी प्रकार का भेदभाव किए बिना सम्पूर्ण मानवता के लिए एक सामान्य मानवसंहिता प्रचलित करने का आह्वान किया था। आज जरूरत इस बात की है कि सम्प्रदाय, जाति, प्रदेश, देश का भेदभाव किए बिना मानव मात्र के लिए एक सामान्य कानून, विधि व्यवस्था कायम की जाए। इसी से मानव की उन्नति सम्भव है।

मुख्य अतिथि दिल्ली राज्य के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने इस अवसर पर राष्ट्र के नव-जागरण एव स्वातन्त्र्य सग्राम की अलख जगाने मे स्वामी दयानन्द सरस्वती की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा दिल्ली सरकार ने स्वामी जी के प्रति कृतज्ञता के पुष्प प्रस्तुत करने के लिए ही राजधानी के एक महामार्ग का नामकरण स्वामी जी के नाम पर किया है। इस अवसर पर प० सुभाष वेदालकार ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

वेद : जीवन की शिक्षा

जापानी विद्यालयों में वेदों की शिक्षा

जापानी विद्यालयो मे वेदो की शिक्षा। कीजिए मत। वेदो के वैज्ञानिक चरित्र ने जापानी शिक्षाविदो को इतने गहरे तक प्रभावित किया है कि जापान की विद्यालयीन-स्कूली शिक्षा मे वेदो के सरल अध्यायो को सम्मिलित किया जा रहा है।

प्रयोग के रूप मे प्रारम्भ की जाने वाली इस प्रायोजना के यदि अच्छे परिणाम सामने आए तो महाविद्यालयीन या कालिजो के स्तर पर भी वेदो का अध्ययन प्रारम्भ किया जाएगा। याकोहामा विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तासुआ नेती का कथन है कि वेद तो जीवन की शिक्षा हैं, जब तक जीवन है, तब तक इन्हें अनदेखा नहीं कर सकते, पता नही, ज्ञान के इस अक्षय कोष (अथाह भण्डार) की कीमत इनका जनक भारत देश ही नही जान पा रहा है। (नवभारत टाइम्स के २० अगस्त, १९९५ के रविवार्त्ता अंक से साभार)

वेद के ध्वज के नीचे महर्षि का एकता-प्रस्ताव

दिल्ली मे महारानी विक्टोरिया के शासन के महोत्सव के सिलसिले मे वायसराय लार्ड लिटन के दिल्ली दरबार की बडी धूम थी। उसके लिए सभी राजे-महाराजे, देश के प्रमुख नागरिक राज-निमन्त्रण से दिल्ली मे एकत्र हो रहे थे। कहते हैं कि महाराजा इन्दौर ने ऐसे अवसर पर धर्म-प्रचार के लिए स्वामी जी को निमन्त्रित किया था। दिसम्बर, १८७६ महर्षि दयानन्द सरस्वती पहली बार दिल्ली पधारे, वैसे तो स्वामी जी के निवासस्थान पर उच्चकोटि के व्यक्ति आते थे, स्वामी जी की इच्छा थी कि राजो-महाराजो की एक सभा करके सब आर्यों में एक धर्म और एकता का धागा पिरो दिया जाए। दिल्ली दरबार के अवसर पर राजाओं से तो परामर्श का अवसर नही मिल सका, परन्तु भारत के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अबुल फजल द्वारा लिखी रामायण

और १२८ वर्ष पुराना उर्दू मे लिखा महाभारत सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली में प्रदर्शित

नई दिल्ली। मुगल सम्राट् अकबर के नवरत्नो मे से एक अबुल फजल द्वारा लिखी फारसी रामायण तथा १२८ वर्ष पुराना उर्दू मे लिखा महाभारत प्राचीन परम्पराओ से हटते हुए शुक्रवार १८ अगस्त, १९९५ को श्री कृष्णजन्माष्टमी के पवित्र पर्व पर राजधानी दिल्ली के सफदरजंग इन्क्लेव क्षेत्र मे जनता के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बने रहे।

स्वामी दयानन्द हमारी श्रेणी के महापुरुषों में सबसे उच्च

उन्होंने मानव मात्र के लिए समान नागरिक संहिता प्रस्तुत की

दिल्ली। सोमवार १४ अगस्त के दिन श्यामलाल कालेज शाहदरा से गाजीपुर तक के मार्ग को स्वामीदयानन्द मार्ग नाम से उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान प. रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा—"आज सबसे बडी आवश्यकता समस्त मानवमात्र के लिए समान कानून एवं समान नागरिक सहिता बनाए जाने की है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सविधान के जिस उज्ज्वल स्वरूप को प्रस्तुत किया था, आज हमारे राजनेता उस पर आचरण न करके नई धाराओ के माध्यम से भारतीयों को विखण्डित करने का षडयन्त्र रच रहे है, इसलिए भारतीय सस्कृति, सभ्यता को विखण्डित करने के प्रयासो का अवरोध होना चाहिए।

स्वामी दयानन्द मार्ग का उद्घाटन करने के अवसर पर दिल्ली राज्य के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने घोषित किया—"महर्षि दयानन्द सरस्वती हमारे महापुरुषो की श्रेणी के सबसे उच्च महापुरुष है, जिन्होने भारतीय स्वतन्त्रता तथा मानव समाज के लिए महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्राणि मात्र में मित्र दृष्टि

समस्त मानवों से एक सरीखे जन-कल्याण का दृष्टिकोण

वेद मे उद्घोषपूर्वक कहा गया है–मैं मानव समेत सब प्राणियो को मित्र की दृष्टि से देखू । हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखे

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु. ३६।१८

अथर्ववेद मे गायो, ससार के समस्त प्राणियो के कल्याण की इच्छा की गई है–स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य (अथर्व १ ३१ ४ । एक दूसरे मन्त्र में प्रार्थना की गई है–हे प्रभु, आप हमारे समस्त दो पैरो वाले और चार पदो वाले पशुओ के लिए कल्याणकारी और सुखदायी हो ।–

"शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । यजु. ३६,८

अथर्ववेद मे ही एक अन्य स्थान पर प्रार्थना की गई है–"हे भगवन, आप ऐसी कृपा कीजिए जिसमे मैं प्रत्यक्ष एव परोक्ष प्राणिमात्र के प्रति सद्भावना रख सकू ।" वैदिक मन्त्र यह है–

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमति कृधि । अथर्व. १७।१।७

समता एव समष्टि की भावना ।

ऋग्वेद मे एक स्थल पर स्पष्ट रूप से घोषित किया गया है कि ये सब मानव मात्र भाई-भाई है, उनमे से कोई जन्म से बडा नही, छोटा नही । समानता की भावना से सभी ऐश्वर्य और उन्नति के लिए प्रयत्नशील हो और आगे बढते रहे —

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते ।
सं भ्रातरो वावृधु सौभगाय ॥ ऋग् ५।६०।५

इससे पूर्ववर्ती मन्त्र में भी कहा गया है–सब मानव समान है, उनमे कोई बड़ा-छोटा नही और कोई मध्यम भी नही । ये सब अपनी शक्ति से ऊपर उठते है । ये अपना महत्वाकाक्षा से आगे बढते है । ये सभी जन्म से कुलीन और दिव्य मानवधर्मा हैं ।

ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमा सो महसा विवावृधु ।
सु जातासो जनुषा पृश्निमातरो दिवो मर्य्या आनो अच्छा जिगातन ।
ऋग् ५।५९।६

एक ऋचा मे कहा गया है—

समानो अहध्वा पवतामनुष्यदे । ऋग २।१३।२

सब चलने वालो का मार्ग पर समान अधिकार है अथर्ववेद मे कहा गया है–सबका कल्याण सोचो, चाहे शूद्र हो चाहे आर्य ।

प्रिय सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥ अथर्व. १९।६२।१

ऋग्वेद के अन्तिम संगठन सूक्त मे समता का दिव्य वर्णन करते हुए कहा गया है—

स समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ
इलस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥

समस्त सुखो की वृष्टि करने वाले हे भगवन्, ज्ञान के प्रकाशक प्रभो, आप सबके प्रेरक बनकर समस्त प्राणियो और समस्त तत्वो को सयुक्त करते हो। आप भूमि पर अग्नि के समान इस अनाज से बनी देह मे आत्मा के तुल्य वाणी के परम प्राप्तव्य पद ओंकार के रूप मे प्रकाशित होते हैं। आप हमे नाना ऐश्वर्य और लोक प्राप्त कराएं ।

स गच्छध्वं स वदध्व स वो मनासि जानताम् ।
देवा भाग यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥

हे मनुष्यो, आप सब लोग आपस मे भली प्रकार मिल जुल कर रहो। परस्पर मिल-जुलकर स्नेह से वार्त्तालाप करो। सब प्रकार के विरोध छोडकर एक समान वचन कहो। आप सबके मन समान रूप से ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार पूर्व समय के विद्वान सेवनीय-मनन करने योग्य प्रभु का ज्ञान प्राप्त कर उसकी उपासना करते रहे हैं, उसी प्रकार आप लोग भी ज्ञान-सम्पन्न होकर सेवनीय अन्न एवं उपासना के योग्य प्रभु की उपासना करें।

समानो मन्त्र: समिति. समानी समानं मन: सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

इन सब के वचन एक हो, विचार एक हो, परस्पर संगति और मेल-मिलाप भी एक जैसा हो, सब प्रकार के भेदभाव से रहित हो। इनका मन एक जैसा हो, उनके चित्त एक दूसरे के साथ मिले हो। मैं आप लोगों को एक समान विचार वाला करता हू और एक जैसे अन्नादि पदार्थ प्रदान कर आप लोगो का पालन-पोषण करता हू ।

समानी व आकूति समाना हृदयानि व
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति ।

आप लोगों के सकल्प और विचार-अभिप्राय एक जैसे हों। आपके हृदय एक समान हो। आप लोगो के मन एक सरीखे हो, जिसमें आप लोगो का पारस्परिक व्यवहार सदैव सहयोग से भली प्रकार हो सके।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

बोध-कथा

आत्मिक बल की जीत

गाधी जी ने १५ अगस्त, १९४६ से पूर्व एक वक्तव्य मे कहा था–मैं १५ अगस्त के समारोह मे भाग नही ले सकता। उन्हे दुख था कि बत्तीस वर्षों के काम का शर्मनाक अन्त हो रहा है। १३ अगस्त को उन्होने बगाल के भू०पू० मुख्य-मन्त्री श्री सुहरावर्दी को साथ लेकर बेलेघाटा मे एक मुसलमान मजदूर के मकान में रह कर कार्य शुरू किया। गाधी जी के पहुचने के बाद ही कुछ हिन्दू युवक उनके शान्ति प्रयत्नो के खिलाफ प्रदर्शन करने वहा आ धमके। गाधी जी ने उन्हें अपने शान्ति प्रयत्नो का अभिप्राय समझाया और बताया कि भाई-भाई की लडाई को रोकना क्यो जरूरी है। यह भी बताया कि हिंसा और तोड़-फोड से किसी का लाभ न होगा, उल्टे हिन्दुओ का ही नुक्सान होगा। उनकी मधुर प्रेमभरी वाणी से युवको का रोष ठण्डा हो गया। गाधी जी के शान्ति-प्रयासों से कलकत्ते की हालत मे रातो रात परिवर्तन हो गया। दगे रूक गए, आजादी की अगवानी का दिन १४ अगस्त दोनो कौमो ने सयुक्त रूप से साथ मिलकर मनाया।

एकाएक ३१ अगस्त की रात को बेलेघाट मे गाधी जी के निवास-स्थान पर कुछ लोगो ने उन्हे घेर लिया और खिडकियो के काच फोड डाले, लाठियों और ईटो का प्रहार किया। सयोग से गाधी जी को कोई चोट नहीं आई। उपद्रव शुरू होते ही कलकत्ते की भीतरी बस्तियो और गलियो में घूमकर गाधी जी ने शान्ति-सैनिको का सगठन कर शान्ति के लिए काम करने का अनुरोध किया। इन शान्ति-प्रयत्नो के साथ ही गाधी जी ने पहली सितम्बर से कलकत्ता मे अनशन शुरू कर दिया। 'जब तक कलकत्ते मे शान्ति स्थापित नही होगी, तब तक गांधी जी अपना उपवास नही तोडेंगे।' उस घोषणा ने सारे कलकत्ते को हिला दिया। दोनो ही सम्प्रदायो का जोश ठण्डा हो गया। वे लज्जा के मारे झुक गए। उपद्रवकारियो ने आगे आकर कई ट्रक शस्त्र अधिकारियो के पास आकर जमा कर दिए। वे गांधी जी की मौत का कलक अपने पर लेने की हिम्मत नहीं कर सके थे।

दोनो कौमों के नेताओ ने आपस मे शान्ति बनाए रखने की प्रतिज्ञा की और गांधी जी से प्रार्थना की कि वे अनशन समाप्त कर दें। गांधी जी ने इस शर्त पर अपना अनशन तोडा कि फिर शान्ति भग हुई तो वे आमरण अनशन कर देंगे। कलकत्ते के इस उपवास ने जादू का काम किया। लन्दन टाइम्स के भारत-स्थित संवाददाता ने कहा—जो काम सेना के कई डिवीजन नही कर पाते, उसे एक उपवास ने कर दिखाया। उसके बाद कलकत्ता और बगाल में कोई गड़बड़ी नहीं हुई। भारतस्थित ब्रिटिश वायसराय लार्ड माउण्ट बैटन ने कहा था, जो चीज गांधी जी ने केवल आत्मिक बल से प्राप्त कर ली है, उसे चार फौजी डिवीजन भी बल-प्रयोग से हासिल नहीं कर सकते थे।

—नरेन्द्र

सम्पादकीय अग्रलेख

इतिहास से सीख लीजिए

भारत का इतिहास साक्षी है कि जब-जब हम भारतीय जनता और देश समय पर नवीनतम सैन्य विधाओं और रणनीति मे पिछडे तब हम विदेशी आक्रमणकारियो का सामना करने मे असफल हो गए। इस सम्बन्ध मे कुछ ऐतिहासिक घटनाएं साक्षी हैं। सबसे पहला उदाहरण सिकन्दर की तीव्र सघटित घुडसवार सेना के सम्मुख प० पंजाब के प्रमुख शासक पुरु की विशाल परन्तु असगठित मन्थर गति से चलने वाले बड़ी सख्या मे हाथी और उनके भरोसे चलने वाली भारतीय सेना विफल रही। पुरु का शौर्य सिकन्दर की रणनीति के सम्मुख मात खा गया। दूसरा ऐतिहासिक उदाहरण बाबर की नवीन विधा का प्रयोग करने वाली सेना के सम्मुख तलवारो और भालो से लडने वाले राणा संग्रामसिह या सागा और उनके साथी देशभक्त घुड़सवार सैनिक सफल नही हो सके। तीसरा प्रबल ऐतिहासिक उदाहरण डूप्ले और क्लाईव के सघटित नवीन सैनिक कवायद से भाडे के टट्टू देशी सैनिकों के बल पर फ्रेच और अग्रेज विजय पाने मे समर्थ हो गए। ससार का इतिहास कहता है कि केवल वीर जातिया और समाज ही इस सघर्षशील विश्व मे विजय प्राप्त कर सकते है। 'वीरभोग्या वसुन्धरा'—यह पृथ्वी वीरो द्वारा उपभोग मे आ सकती है।

यह तथ्य भी सार्थक है—'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य'—कोई बलहीन व्यक्ति उन्नति नही कर सकता। भारत के सम्बन्ध मे उक्त ऐतिहासिक तथ्यो को याद करने की जरूरत इसलिए पड गई है, विश्व के आधुनिक रणनीति विशारदो ने एक नए कटु तथ्य की ओर ध्यान खीचा है। उन्होने रहस्योद्घाटन किया है कि भारत के पडोसी चीन की सैनिक शक्ति उसकी आर्थिक शक्ति के साथ ही बढ रही है। इस समय विश्व मे सबसे बडी स्थल सेना चीन की है, उसने सेनाओ का आधुनिकीकरण का कार्यक्रम अपनाया है, साथ ही उसने अपनी नौ-सेना का विस्तार भी किया है। सोवियत रूस के विघटन के बाद चीन एशिया मे ही नही विश्व राजनीति मे अपनी स्थिति अधिक सुदृढ बनाने के लिए प्रयत्नशील दीखता है। बड़ी स्थल सेना के बाद, नौसेना के विस्तार के साथ मिसाइलो और अणुशक्ति के प्रयोग मे वह अपनी क्षमता निरन्तर बढा रहा है। इसी के साथ वह लद्दाख, सिक्किम हिमालय के विस्तीर्ण क्षेत्र के साथ मेघालय, असम, मणिपुर आदि उत्तर पूर्व के सीमावर्ती राज्यो और निकोबार, दक्षिणी द्वीपो के साथ ताइवान, हांगकाग से लेकर सिंगापुर तक के विस्तीर्ण क्षेत्र मे अपना आर्थिक तथा सैनिक दबदबा कायम करना चाहता है।

शताब्दियो पहले नेपोलियन ने चेतावनी दी थी कि चीन के अजदहे को सोने दो, उसे उठाने की कोशिश मत करो। १९६२ मे हम चीन के विस्तारवाद का स्वाद चख चुके हैं। उसने लद्दाख और नेफा के बडे क्षेत्र पर गैर-कानूनी अधिकार कर लिया था। लद्दाख से वह अभी तक भी नही हटा है, हिमालय के अनेक क्षेत्रों और उत्तर पूर्वी पडोसी प्रदेशो पर इस समय भी उसकी गृद्ध दृष्टि है सैनिक विशेषज्ञो ने चेतावनी दी है कि अगले पच्चीस वर्षों मे चीन विश्व का आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक समुन्नत और सैनिक दृष्टि से एशिया का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएगा। यह ठीक है कि पिछले वर्षों मे पड़ोसी चीन से हमारे सम्बन्ध सुधरे हैं, उसने आर्थिक सांस्कृतिक सम्बन्धो मे थोड़ी घनिष्ठता दर्शाई है, परन्तु इसी के साथ यह भी कटु तथ्य है कि वह हमारे सनातन शत्रु पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान को आधुनिकतम मिसाइल और अणु शक्ति के प्रयोग एव उत्पादन की विधि एव शस्त्रास्त्र बडी सख्या में दे रहा है। 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के मुगालते मे हम १९६२ मे पडोसी चीन के आक्रमण का शिकार बन चुके हैं, भविष्य में हम पर कोई अप्रत्याशित आक्रमण न हो और हम पराजय का सामना न करें, इसके लिए चीन सरीखे आणविक मिसाइलो के निर्माण और प्रयोग में तथा आधुनिकतम नौसैनिक यानों एव विधाओ मे विशेषज्ञ बनकर ही अपनी स्वाधीनता और सार्वभौम गणतन्त्री व्यवस्था का सरक्षण कर सकते हैं। बलहीन और निर्बल राष्ट्र इस संघर्षशील विश्व मे स्वाभिमान के साथ स्वतन्त्र नही रह सकते, इतिहास की इस अमूल्य परन्तु कडवी सचाई-सीख को हृदयंगम कर ही हम अपनी स्वाधीनता तथा सार्वभौम सत्ता सुरक्षित रख सकते हैं।

चिट्ठी-पत्री

वैदिक धर्म का प्रचार-कार्य

आर्यसमाज की स्थापना से अब तक के उसके जीवन के लगभग सवासौ वर्षों के पूर्वार्द्ध मे वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार जिस जोर-शोर से होता था, वह उसके उत्तरार्द्ध मे शिथिल होता गया। आर्य धर्म के प्रचार-प्रसार मे जीवन समर्पण करने वाले आर्य युवा सन्यासी युवा से प्रौढ, प्रौढ से वृद्ध हो दिवगत हो गए। उनके खाली होते स्थानो को भरने वाले नए संन्यासियो के सामने आते रहने की परम्परा आर्य परिवारों से लुप्त हो गई।

आर्य धर्म के प्रचार-प्रसार में दूसरे सबसे सहायक है भजनोपदेशक। पहले पूरे देश मे इन भजनोपदेशको की धूम मची रहती थी। बाद के वर्षों मे जैसे-२ सच्चे वेदोपदेशक एव भजनोपदेशक दिवगत होते गए, वैसे-वैसे उस स्तर के भजनोपदेशको का आना बन्द होता चला गया—आज जरूरत इन सभी बातो पर गम्भीरता से सोचने की और समस्याओ के समाधान की है।—आज आवश्यकता है कि विभिन्न राज्यो की केन्द्रीय आर्यसभाएं प्रशिक्षित भजनोपदेशक एव महोपदेशक तैयार करवाए। वे उन्हें आकर्षक अथवा व्यावहारिक दृष्टि से सन्तोष योग्य वेतन दें और अपनी प्रचार-योजना तथा निर्देश के अनुसार उनसे वैदिक धर्म प्रचार करवाए।

—प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री, सम्पादक आर्य सकल्प, पटना (बिहार)

मुस्लिम तुष्टिकरण आत्मघाती

लोकसभा के चुनाव सामने है। प्रधानमन्त्री श्री नरसिह राव अपनी हड़बड़ाहट छिपा नही पा रहे हैं। वह अल्पसख्यकों, विशेष रूप से मुस्लिमो के लिए बिछे जा रहे है। प्रत्यक्ष व परोक्ष उपायो से वे मुस्लिमो को तुष्ट करने की पूरी कसरत कर रहे है। वे सैक्यूलर सविधान के कम्यूनल रास्तो/छिद्रो का भरपूर लाभ उठा रहे है। हज यात्रियो को सबसिडी, अल्पसख्यक वित्त निगम, इमामो को वेतन, मजहबी स्वरूप वाली शिक्षा व अन्य सस्थाओं को सहायता आदि अनेक रूपो मे सरकार की उदारता विशेष रूप से मुस्लिमो के प्रति उभर-उभर कर सामने आ रही है। समान नागरिक सहिता बनाने से इन्कार व मुस्लिमो को आरक्षण भी ऐसी ही बातें है।

सैक्यूलर या पथ-निरपेक्ष प्रबन्ध अथवा सर्वधर्म समभाव क्या यही है? ऐसा ही होता है? अन्यथा सरकार की 'विशालहृदयता' मे कोई भी मजहब विशेष मान, विशेष महत्व का स्थान कैसे पा सकता है, और कैसे पा रहा है? और वह भी एक ऐसा मजहब जो देश का बटवारा कर अपने लिए पहले ही अलग भूखण्ड लेकर वहा पाकिस्तान बना चुका है। पाकिस्तान, बागला देश मे हिन्दुओ को लगभग समाप्त कर चुका है, हमारे कश्मीर मे जिसने आतक फैला कर वहा इस्लामीकरण कर लिया है और हिन्दुओ को वहा से लगभग पूरी तरह भगा दिया है।

प्रत्येक स्वतन्त्र देश मे वहा के मूल/मुख्य/बहुसख्यक समुदाय की सस्कृति को ही वहा के सविधान तथा कानून मे प्रतिष्ठित किया जाता है, और वह सविधान तथा कानून देश के सभी नागरिको पर बाध्यकारी रूप से लागू होता है। क्या यह बात गलत है? यदि नही, तो भारत ही को क्यो विश्व की इस अन्य व मान्य धारा से पृथक रहना चाहिए?

पाकिस्तान देने के बावजूद खण्डित भारत मे मुस्लिमो को यहा के मुख्य समुदाय पर अधिमान देना, उन्हे विशेष दर्जा व विशेष अधिकार देना, उन्हे अपना वोट-बैंक बनाने के लिए उनका तुष्टिकरण करना, शासन-प्रबन्ध को उनकी इच्छानुसार ढालना या इस हेतु उनसे प्रभावित होना—सरासर हिन्दू अधिकारो पर सविधान और सरकार का अनाचार है।

अधिकारो व सुरक्षा की दृष्टि से मुस्लिमो का भारत मे स्थान व स्तर वही होना बनता है जो मुस्लिम देशो—विशेष रूप से पाकिस्तान और बागला देश मे तथा भारत के मुस्लिम बहुल प्रदेश कश्मीर मे हिन्दुओ को प्राप्त है या हो।

—सुरेन्द्र कुमार मोगिया, २९/३३, पश्चिमी पटेल नगर, नई दिल्ली

तनावों से मुक्त कराने के लिए मानव-निर्माण में गुरुकुलों की महत्ता

—डा० धर्मपाल

हरिद्वार। गुरुकुल कांगडी विद्यालय विभाग की ओर से श्रावणी पर्व पर मुख्य अतिथि के रूप में गुरुकुल के प्रतिष्ठित स्नातक डा० अनन्तानन्द आयुर्वेदालंकार एव आर्य नेता विद्वान डा० रामेश्वरदयाल आर्य की अध्यक्षता मे श्रावणी पर्व के यज्ञ के बाद कुलपति डा० धर्मपाल जी ने गुरुकुलो को सुसस्कार युक्त-मानव निर्माण का केन्द्र बताते हुए आज के तनावयुक्त विश्व मानसिकता से मुक्त कराने का एकमात्र साधन बताया।

मुख्य अतिथि डा० अनन्तानन्द ने गुरुकुल के वैभव-प्रतिष्ठा और जन-विश्वास को बरकरार रखने का आह्वान किया। अध्यक्ष डा. रामेश्वरदयाल आर्य ने पूर्ण भारतीयत्व युक्त सामाजिक-राजनीतिक और व्यावसायिक परम्पराओ के निर्माण पर बल दिया।

एक से आठ तक प्रत्येक कक्षा मे सर्वाधिक अ क पाने वाले ब्रह्मचारियो तथा विद्यालय मे सर्वाधिक अंक पाने वाले ब्रह्मचारी को मेहता बन्धु स्पोर्ट ज्वालापुर के सौजन्य से प्राप्त इनामो का वितरण कुलपति व मुख्याधिष्ठाता डा० धर्मपाल जी के करकमलो द्वारा हुआ।

इस अवसर भर लगभग ३२ बीघा जमीन मे मुख्याधिष्ठाता डा० धर्मपाल जी द्वारा आम का वृक्ष लगाकर वृक्षारोपण समारोह का शुभारम्भ किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित डा० रामेश्वरदयाल आर्य, डा अनन्तानन्द जी, प्राचार्य क्षेत्रीय ग्राम्य विकास सस्थान विकास सस्थान, सहायक मुख्याधिष्ठाता, मुख्याध्यापक, आश्रमाध्यक्ष, कृषि निरीक्षक आदि शिक्षको, कर्मचारियो और ब्रह्मचारियो ने वृक्ष लगाए। भण्डार से मुख्य मार्ग तक नवनिर्मित सडक तक आम के वृक्ष लगाए गए।

इस अवसर पर सभी बडो ने ब्रह्मचारियो को राखी बाधकर उन्हें सभी प्रकार से योग्य, चरित्रवान, प्रतिभाशाली नागरिक निर्माण करने का सकल्प लिया।

रावण के संहार में सती सीता की भूमिका

नारी की महत्ता पर श्री यशपाल आर्य का उद्बोधन

देहरादून। आर्यसमाज धामावाला मे १० अगस्त को वेद-प्रचार समारोह मे वैदिक साधन आश्रम तपोवन के प्रधान श्री यशपाल आर्य ने मुख्य प्रवचन करते हुए ऐतिहासिक घटनाओ द्वारा वैदिक सस्कृति का दिग्दर्शन कराया। रामायण के आधार पर उन्होने नारी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब मन्दोदरी को युद्ध मे रावण के मारे जाने की सूचना मिली तब उसने कहा "मेरे पति को मारने की शक्ति न लक्ष्मण मे थी, न राम मे। मेरा पति उस पतिव्रता साध्वी के तप से मारा गया है जिसका नाम सीता है"। महाभारत से भी उन्होने दृष्टान्त दिए। श्री आर्य ने कहा कि उस व्यक्ति को अपनी बहन से राखी बधवाने का कोई अधिकार नही है जो दूसरे की ओर कुदृष्टि डालता है।

आर्यसन्देश का शुल्क तुरन्त भेजिए

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० है, उसका आजीवन शुल्क ३५० रु० है। निवेदन है कि मनीआडर, चैक या नकद भेजें।

धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, चिट पर आपकी ग्राहक संख्या लिखी रहती है।

गीता-कन्या : प्रतिभाशालिनी गौरी

प्रतिभाशालिनी पांच वर्ष की गौरी को न केवल भगवद् गीता याद है, वह पचास श्लोकों की व्याख्या भी कर सकती है।

अनन्त एव. राऊत की आदत है कि वह बम्बई के आयकर विभाग के कंम्प्यूटर सेक्सन के नीरस लेखकीय काम से बचाव के लिए अकसर कोई अंग्रेजी कविता गुनगुनाया करते हैं, वर्डसवर्थ की 'डोफोडिल' (सफेद कमलिनी) कविता उन्हे बहुत पसन्द हैं। एक दिन जब वह दफ्तर में जाने के लिए तैयार हो रहे थे, तब उन्हे बैठक से 'डोफोडिल' कविता की गुनगुनाहट सुनाई दी। आवाज उनकी जानी पहचानी थी—यह उनकी बेटी गोरी की थी, जो उस समय तक पूरे तीन वर्ष की नही हुई थी। जिस शिशु ने ए बी सी को भी याद नही किया था, उसने अपने पिता द्वारा किए कविता पाठ से वह सारी कविता याद कर ली थी।

यद्यपि श्री राऊत अचम्भे मे पड गए, तथापि गौरी की प्रतिभा का उन्हें काफी पहले से पता लग गया था। धर्म प्राण पिता नियमित रूप से गीता के श्लोकों का पाठ करते है, उन्होने अक्सर देखा कि गौरी बडी शीघ्रता से संस्कृत शब्द स्मरण कर लेती थी। अपने तीसरे जन्म दिवस पर १३ अक्तूबर, १९९२ को उसने सारी पुस्तक याद कर ली थी। कुछ ही महीनो मे उसने बम्बई की गीता-पाठ की प्रतियोगिता मे प्रतिस्पर्द्धियों में प्रौढो को भी पराजित कर पहला पुरस्कार जीत लिया। अगले वर्ष भी उसने यह कारनामा फिर दोहराया और अनेक सार्वजनिक कार्यक्रमो मे भाग लेने के लिए उसकी बडी माग है।

वैसे गौरी बचपन की उछलकूद और खेलो की शौकीन है, वह बच्चो की प्रतिस्पर्द्धाओ में भाग लेने से इन्कार कर देती है। इस पाच वर्षीया कन्या का सामान्य ज्ञान विस्मयकारी है। वह भारत के हर राज्य और उसकी राजधानी, संसार के हर देश और उसकी राजधानी, आविष्कारको के नाम और उनके द्वारा आविष्कृत चीजो को बतला देती है। आप कुछ भी पूछिए, वह सूक्ष्म यन्त्र की तेजी से जवाब देती जाती है। उसकी स्मरण पंजिका में उसके पिता के अनुसार ६५०० सूचनाए सग्रहीत हैं। वह जूनियर किण्डर गार्डन से हर कक्षा में सर्वोच्च स्थिति प्राप्त करती रही है, यद्यपि इस समय वह पहली कक्षा की छात्रा है, उसके पिता के अनुसार वह चौथी कक्षा मे भी सफल हो सकती है।

श्री राऊत ने कन्या गौरी को एक अनाथालय से गोद लिया था। उसके पिता उसे बहुत कुछ बनाना चाहते है, फिलहाल गौरी गीता-पाठ करने और सामान्यजनो के लिए बावन श्लोको की व्याख्या करने मे प्रसन्न है। जिस समय गौरी गीता-पाठ करती है, तब वह गुरु के तुल्य लगती है। सम्भवतः एक गुरु के रूप में उसका विकास हो रहा है।

सच बोलना भी पाप है

—छाजूराम शर्मा शास्त्री

सच बोलना भी पाप है झूठो के राज में।
सच को ही मिलती फांसी झूठो के राज में॥
सच बोलना है अच्छा यह मानते सभी हैं।
व्यवहार मे झूठ तो है हर काम-काज में॥
अभिमान-ईर्ष्या में नेता फंसे पड़े हैं।
अधिकार झूठ का है तख्तो-व-ताज में॥
कुर्सी टिकी है झूठ पर सच का तो नाम है।
सच का है काम क्या वहा शासक-समाज में॥
अब तो है राष्ट्रभक्त वह शासन की दृष्टि में,
आवाज जो मिलाए उसकी आवाज में॥
सच बोल कर बुरा और गोली जो खाना चाहो।
स्वागत है आओ आपका इस आर्यसमाज में॥
ऐसी स्वतन्त्रता का है लाभ "छाजूराम" क्या।
अपने हुए पराए अपने ही राज में॥

प्रथम जन्मशती के अवसर पर

प्रोफेसर रामसिंह जी

नरेन्द्र अवस्थी

स्वातन्त्र्य समर के सेनानी, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, शिक्षा शास्त्री, सुलझे हुए लेखक, परम हिन्दुत्वनिष्ठ, आर्यसमाज के कर्मठ नेता प्रो० रामसिंह एक व्यक्ति नहीं, अपने आप मे एक संस्था थे। उनकी गणना राजधानी के प्रमुखतम कर्मठ सार्वजनिक कार्यकर्ताओ मे थी। वेदशास्त्र एव धर्मग्रन्थो का पारागण एव राजनीति सम्बन्धी विभिन्न प्राचीन एव अर्वाचीन ग्रन्थो का उन्होंने गहन अध्ययन किया था। वेह कई वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान रहे। उन्होने वर्षो तक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति का पद सुशोभित किया। अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रहे।

उनका जन्म जिला रोहतक के ग्राम फरमाना मे २८ अगस्त, १८९५ को श्री इच्छाराम जी के घर हुआ। यह परिवार अपने वैदिक विचारो के लिए विख्यात था। वैदिक धर्मानुरागी पिता ने बचपन मे ही हिन्दी व सस्कृत का ज्ञान बालक रामसिंह को सुलभ कराया। बाद मे उर्दू, अ ग्रेजी, फारसी भाषाओ का भी अच्छा अध्ययन किया। डी०ए०वी० कालेज लाहौर से बी ए परीक्षा उत्तीर्ण की। पंजाबकेसरी लाला लाजपत राय उनकी प्रेरणा के स्रोत थे। १९१९ मे पंजाब के जनजीवन मे जब एक नया आक्रोश उभरा, तब युवा रामसिंह भी उससे अछूता नही रहा। इनकी गतिविधियो में निरन्तर वृद्धि देखकर पंजाब के मार्शल ल. प्रशासको की क्रूर दृष्टि इन पर पडी। इनको पंजाब से निर्वासित कर पुलिस ने दिल्ली के रेलवे प्लेटफार्म पर छोड दिया। दिल्ली मे सर्वथा अपरिचित इस युवक की दीनबन्धु एण्ड्रूज से भेंट हुई। उनके परामर्श से नेशनल स्कूल के प्राध्यापक का पद सम्भाला। अपनी विलक्षण प्रतिभा, काम करने की अनोखी धुन के कारण वह शीघ्र दिल्ली मे काग्रेस के प्रमुख नेताओ मे माने जाने लगे। श्री आसफ अली, श्री देशबन्धु गुप्ता, हकीम अजमल खा आदि प्रमुख नेताओ के साथ काम किया तथा दिल्ली प्रदेश काग्रेस के मन्त्री बने।

कांग्रेस से मतभेद

काग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति से मतभेद के आधार पर प्रो० रामसिह काग्रेस को सदा के लिए छोडकर हिन्दू महासभा के हो गए। राष्ट्रहित व हिन्दू हितो का ऐसा कोई आन्दोलन नही था, जिसमे प्रो० रामसिह अग्रणी न रहे हो। हैदराबाद सत्याग्रह व भागलपुर सत्याग्रह मे उनकी भूमिका अत्यन्त प्रशसनीय रही। १९३९ ई० से १९५१ ई० तक वह निरन्तर ११ वर्षो तक दिल्ली नगरपालिका के सदस्य रहे और सदा हिन्दू महासभा के टिकट पर चुने जाते रहे। पालिका सदस्य के रूप मे उन्होने अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व तो किया ही, साथ ही नगर के अन्य क्षेत्रो की समस्याओ के समाधान मे भी अपनी सूझबूझ का परिचय दिया। १९५१ म हिन्दू महासभा के प्रत्याशी के रूप मे विधान सभा के लिए चुने गए। चुनाव याचिका के चुनाव रद्द हो जाने पर पुन उपचुनाव मे तीन गुणा अधिक मतो से बिजयी हो कर अपनी लोकप्रियता का परिचय दिया। कश्मीर आन्दोलन, वाराणसी मन्दिर सत्याग्रह, चाऊ एन. लाई के आगमन पर विरोध-प्रदर्शन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गो रक्षा आन्दोलन मे अपने ओजस्वी भाषणो से जनमत तैयार करके विशाल जत्थो का नेतृत्व करके अपनी सगठन कुशलता का परिचय दिया।

प्रो० रामसिह जी शुद्धि को एक विशुद्ध मानवीय आन्दोलन समझते थे। इस सम्बन्ध मे हिन्दू महासभा के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए उन्होने कहा है कि हमे बाध्य होकर हजारो वर्गमील भूमि पाकिस्तान को अर्पित करनी पडी। चौदहवीं सदी मे हमने अफगानिस्तान खोया, जबकि वहा के बहुसख्यक निवासी धर्मान्तरित हो गए थे। पश्चिम पंजाब, सिंध और पूर्वी बगाल भी हमने ऐसे ही खोए। टूटने-फूटने के इस क्रम की रोकथाम का एकमात्र उपाय शुद्धि आन्दोलन को बल देना है। इससे राष्ट्र बलवान होता है। ईश्वर हमें आशीर्वाद दे कि हम शुद्ध हुए भाइयों को हिन्दू धर्म का आध्यात्मिक प्रसाद दे सकें। यह एक विशुद्ध मानवीय आन्दोलन है। ईश्वरीय ज्ञान वेद सबके लिए है। इसका प्रचार और प्रसार करना एक पुण्य कार्य है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्-ससार को आर्य बनाने के इस नारे का क्या अर्थ है, यदि हम अपने बीच मे से प्रतिदिन निकल जाने वाले हजारो हिन्दुओ को धर्मान्तरित होने से नही बचा सकते।

विश्व धर्म सम्मेलन के प्रणेता

हिन्दू समाज मे एक नया जीवन और शक्ति का सचार करने के उद्देश्य से प्रो० रामसिह जी ने प्रो० विष्णु घनश्याम देशपाण्डे व महंत दिग्विजयनाथ जी के सहयोग से विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन की स्थापना की। इस सम्मेलन मे तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन और डा० कन्हैयालाल माणिकलाल मुशी जैसे मनीषी, भारत के प्रथम सेनापति जनरल करिअप्पा, श्री सी. डी. देशमुख आदि अनेक विशिष्ट राष्ट्रनेता सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन मे नेपाल के महाराज को पधारने के लिए निमन्त्रित करने प्रो० साहब एक शिष्टमण्डल ले गए। महाराज तो सम्मेलन मे नही पधार सके, परन्तु आपने अपना एक प्रतिनिधि मण्डल भेजकर सम्मेलन को अपना समर्थन, आशीर्वाद दिया। इस सम्मेलन के आयोजन को सफल बनाने मे प्रो० साहब की महत्वपूर्ण भूमिका रही और विश्व के राष्ट्रो के समक्ष हिन्दू समाज की प्रतिमा बडे उज्ज्वल रूप मे सामने आई।

धर्म निरपेक्षता-एक दुर्भाग्य

प्रो० रामसिह जी ने राजकोट (गुजरात) मे आयोजित हिन्दू महासभा अधिवेशन के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए भारत की धर्म निरपेक्षता को दुर्भाग्यपूर्ण इगित करते हुए कहा कि एक ऐसा देश जहां पर लगभग ९० प्रतिशत हिन्दू हैं, उसमे किसी के लिए स्वय को हिन्दू कहना, हिन्दू पर होने गर्व करना और इस देश को हिन्दुओ का देश कहना अभिशाप और अपराध हो गया। हिन्दू महासभा का पूरी ईमानदारी के साथ विश्वास है कि आज देश को जिन जटिल समस्याओ, सामाजिक और नैतिक व्याधियो और दुर्भाग्यपूर्ण आतरिक एव बाह्य परिस्थितियो का सामना करना पड रहा है, वे सब तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की नीति का ही दुष्परिणाम है। यदि यह देश हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाता तो समस्याएं उठती ही नही। यदि हम भविष्य मे ऐसा कर सकेंगे तो सभी समस्याए शीघ्र ही सुलझ जाएगी और हिन्दुस्तान उभर कर एक प्रबल, सशक्त और समृद्ध राष्ट्र के रूप मे खडा हो सकेगा। आज तो धर्मनिरपेक्षता का अर्थ केवल हिन्दू विरोधी और अल्पसख्यक चाटुकारी नीति का ही दूसरा नाम है।

प्रो० साहब सस्कृत के महान् विद्वान थे। उन्होने बहुत से मित्रो को अष्टाध्यायी पढाकर सस्कृत का ज्ञाता बनाया। उनके व्याख्यानो को सुनने के लिए लोग बहुत उत्सुक रहते थे। प्रो० साहब से पूर्वजो ने देश के प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन मे अ ग्रेजों के विरुद्ध सघर्ष किया और राव तुलाराम के साथ उन्होने इस सघर्ष मे काफी योगदान किया। आपके पूर्वज छत्तीसगढ की किसी रियासत के अधिपति थे। अ ग्रेज सरकार के कोप से बचने के लिए रोहतक जिले के फरमाना गाव मे आकर बस गए, जहा श्री इच्छाराम जी के यहा उनका जन्म हुआ। प्रो० साहब की मा ने गोरक्षा के लिए शहीद होने वाले सद्गुरु रामसिंह जी नामधारी के नाम पर अपने पुत्र का नाम रामसिह रखा। प्रो० साहब यद्यपि अग्रवाल वंश मे पैदा हुए, परन्तु वह प्राचीन वैदिक आदर्श के अनुसार गुणकर्म के आधार पर जातियो की व्यवस्था के पक्षपाती थे। उन्हे हरियाणा की वीरभूमि मे जन्म लेने का अभिमान था, क्योकि यह भूमि योगेश्वर श्री कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन का कार्यक्षेत्र रह चुकी है। वह जब कभी अग्रवाल समाज के सम्मेलनो मे पधारते, तो वह उन्हे राष्ट्र का प्रगतिशील घटक बनने और समाजसेवा मे अपने धन का सदुपयोग करने की प्रेरणा देते।

दिल्ली-केसरी

दिल्ली की जनता ने एक भव्य समारोह मे उन्हे 'दिल्ली-केसरी' की उपाधि से विभूषित किया। सच तो यह है कि अपनी धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक बहुमुखी गतिविधियो के कारण वह 'दिल्ली की धडकन' बन गए।

प्रो. रामसिह का भाई परमानन्द, स्वातन्त्र्यवीर सावरकर, धर्मवीर डा

(शेष पृष्ठ ९ पर)

प्रोफेसर रामसिंह जी

(पृष्ठ ५ का शेष)

मु जे, पजाब केसरी लाला लाजपतराय सरीखे नेताओं से निकट सम्बन्ध रहा। उनके कुशल नेतृत्व मे काम किया। उन्ही की तरह राजनीति मे पैनी सूझबूझ विरासत मे मिली। प्रो साहब शुद्धि आन्दोलन के प्रबल पक्षपाती थे।

वह कहते थे वेद का धर्म शुद्ध और पूर्ण धर्म है, जिसका जगदुत्पति के आरम्भ मे भगवान ने मनुष्यो को उपदेश दिया था। इसलिए वैदिक धर्म के अनुगामी मे तो विश्वबन्धुत्व और आत्मत्याग की भावनाओ का उत्पन्न होना और भी अधिक अनिवार्य है।

हिन्दू, हिन्दी, गोरक्षा अथवा राष्ट्र की अखण्डता हेतु कोई भी आन्दोलन या सत्याग्रह अछूता नही रहा जिसमे प्रो रामसिह अग्रणी न रहे हो। हैदराबाद के धर्मयुद्ध, व भागलपुर सत्याग्रह में उनकी भूमिका प्रमुख रही। कश्मीर के भारत मे पूर्ण विलय आन्दोलन मे वह अग्रगण्य पुरोधा रहे। गोवा आन्दोलन, वाराणसी मन्दिर सत्याग्रह, चाऊ एन लाई के आगमन पर हुए विरोध प्रदर्शन मे उनकी वाणी आग बरसाती थी तो लेखनी रचनात्मक आन्दोलनो को जन्म देती थी।

वैधानिक क्षेत्र में

प्रो. रामसिह जी अगर चाहते तो कांग्रेस नेताओ के सहयोग से राजनीति मे ऊचे से ऊचा पद प्राप्त कर सकते थे, मगर उन्होने अपने सिद्धातो के साथ कभी समझौता नही किया। वह कट्टर हिन्दुत्ववादी रहे। कांग्रेस दल के विरोधी के बावजूद वह ११ वर्ष तक १९३९ से १९५१ तक निरन्तर दिल्ली नगरपालिका के सदस्य निर्वाचित होते रहे। वहा उन्होने अपने ही क्षेत्र का ही नही, बल्कि अन्य क्षेत्रो के हितो का भी प्रतिनिधित्व किया और उनकी समस्याओ को हल कराया। उन्होने लोकसभा का भी चुनाव लडा, पर सफल न हो सके, लेकिन विधानसभा सदस्य के रूप मे उन्होने जनता की जो सेवा की, वह सदा स्मरणीय रहेगी।

पजाब मे उग्रवादियो का उत्पात, असम समस्या आदि देश धर्म पर जब सकट के बादल उमड रहे है, ऐसे विकट समय मे सघर्षशील हिन्दू नेता का देहात हो जाना नि सन्देह अपने दुर्भाग्य की निशानी है। उनके सकल्पो के प्रति आस्था व्यक्त करके उन्हे पूर्ण करने की शपथ लेना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। सच तो यह है—

'बडे गौर मे सुन रहा था जमाना,
तुम्ही सो गए दास्ता कहते-कहते।'

प्रो० साहब के इन उद्गारो मे हिन्दू समाज के लिए कितनी वेदना है, इसे उनका एक-एक शब्द बता रहा है। हिन्दुत्व की भावना उनके रोम-रोम मे समाई हुई थी। हिन्दू आज अपने ही देश मे, अपने सब साधन और ऊचा साहित्य तथा दर्शन होने पर भी सकटग्रस्त है। देशवासियो का कर्त्तव्य है कि वे प्रो० रामसिह जी के पदचिह्नो पर चल कर समाज को धन्य बनाए।

—१, आर्यसमाज मार्केट, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-६५

महर्षि का एकता-प्रस्ताव

(पृष्ठ १ का शेष)

उच्चकोटि के सुधारकों का एक सम्मेलन महर्षि के निवासस्थान पर हुआ। पंजाब के प्रसिद्ध सुधारक कन्हैयालाल अलखधारी, बाबू नवीनचन्द्र राय, श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि, सर सय्यद अहमद, ब्राह्म समाज के नेता केशवचन्द्र सेन, मुंशी इन्द्रमणि आदि इस में पधारे। स्वामी जी ने प्रस्ताव उपस्थित किया—"हम भारतवासी सब परस्पर एक मत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करें तो भारत देश सुधर जाएगा।" स्वामी जी चाहते थे कि वेद के ध्वज के नीचे भारत के सम्प्रदाय एक हो सकते हैं, अतएव वेद प्रतिष्ठा के आधार पर सुधार-कार्य करने से अधिक सफलता मिल सकती है।

उस समय के सर्वाधिक प्रभावशाली ब्रह्मसमाजी केशवचन्द्र सेन ने प्रस्ताव का विरोध किया, फलत महर्षि का वह प्रयत्न सफल नहीं हो सका।

खेद है कि आधुनिक जापान तो वेद को जीवन की शिक्षा मानता है, परन्तु ११९ वर्ष पूर्व ऋषि द्वारा वेदध्वज के नीचे एकता के प्रस्ताव को उपयुक्त समर्थन नहीं मिला।

प्राणि मात्र (पृष्ठ २ का शेष)

समानता की भावना, प्रेरणा देने वाला ऋग्वेद का यह सगठन सूक्त वैदिक चिन्तन के समता से परिपूर्ण दृष्टिकोण का परिचायक है। इस मे मानव मात्र की गतिविधियो, चिन्तन, सकल्प, विचार-विमर्श में पूर्ण सामजस्य की प्रेरणा दी गई है। मानवमात्र का एक सरीखा जन-कल्याण का दृष्टिकोण निश्चय ही समस्त राष्ट्रजनो और राष्ट्र को व्यवस्थित समानता के आधार पर उन्नति के कल्याण मार्ग की ओर प्रशस्त करता है।

राजौरी गार्डन में आर्यनेताओं का उद्बोधन

रविवार २० अगस्त के दिन आर्यसमाज राजौरी गार्डन मे वेद प्रचार सप्ताह के समापन कार्यक्रम मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल, श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री, प० प्रेमचन्द्र श्रीधर और केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री शिवकुमार शास्त्री ने आज के युग मे वेद–प्रचार व आर्यसमाज की महत्ता पर प्रकाश डाला।

प्रतिनिधि सभा की नई भजनमण्डली

आर्यसमाजो की बढ़ती माग को दृष्टि मे रखकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार विभाग के अन्तर्गत प० दाताराम आर्य भजनोपदेशक और प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक की नवीन भजनमण्डली की सेवाए उपलब्ध हैं। आर्यसमाजो और सत्सग प्रेमियो से अनुरोध है कि वे अपने उत्सवों, कार्यक्रमों, सत्सगों या वेदप्रचार निमित्त सम्पर्क करें—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अध्यक्ष वेदप्रचार विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा। १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

स्वामी दयानन्द मार्ग के उद्घाटन कार्यक्रम में कार्यकर्त्ताओं का योगदान

सोमवार १४ अगस्त के दिन श्यामलाल कालेज से गाजीपुर तक के राजमार्ग का स्वामी दयानन्द मार्ग के रूप मे उद्घाटन दिल्ली राज्य के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने किया था। इस उद्घाटन कार्यक्रम को सफल बनाने मे क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पटपडगंज के अधिकारियो तथा उपसभा के अन्तर्गत आर्यसमाजों—क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओ—विशेषत श्री दामोदर दास आर्य, श्री पतराम त्यागी, श्री रवि बहल, श्री रोशनलाल गुप्ता, श्री रामनिवास कश्यप, श्री मिश्री लाल गुप्ता, श्री हरिदेव आर्य, श्री रविदत्त आदि ने यशस्वी योगदान किया। छोटे—बड़े मार्गों को सजाने और तोरण-बैनर लगाने मे घर-घर जाकर जनसम्पर्क कर आमन्त्रित करने और आवश्यक व्यय करने में सभी छोटे-बडे कार्यकर्त्ताओं की भूमिका सराहनीय रही। सहयोग सभा ने क्षेत्रीय सभा और समस्त कार्यकर्त्ताओं

आर्यसमाज

का

रविवार २० अगस्त क

के समापन कार्यक्रम मे डा०

महामन्त्री डा० धर्मपाल जी

और आर्यसमाज के योगदान

आर्यसमाजों और आर्य ज

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल जी ने वेद प्रचार सप्ताह को यशस्वी बनाने कार्यक्रम पूर्ण करने के लिए दिल्ली की आर्यसमाजो और प्रकट किया है।

Posted at N.D.P.S.O. on 24,25-8-1995 Licence to post without prepayment ... No U (C) 139/95
(एल-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५

..थक बनो

..र दिवस

..ान मे आर्य समाज ग्रेटर .. का आयोजन प्रातीय आर्य .. मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती ..छाया परिसर के अन्तर्गत बालिका निरी- .. उल्लास से किया गया। निरीक्षण गृह की ..ा और भक्ति भाव से यज्ञ किया।

..र अनेक कन्याओ को यज्ञोपवीत धारण कराया गया। यज्ञ ..लाश पार्ट-१ की बहिनो ने भक्ति रस से परिप्लावित गीत

अनन्तर मण्डल अध्यक्षा, श्रीमती शकुन्तला आर्या ने वेद मन्त्र के फल की अत्यन्त सरल शब्दो मे व्याख्या करते हुए मानव जीवन ..गता पर बल दिया। श्रीमती प्रकाश बब्बर ने कल्याण पथ के पथिक की प्रेरणा दी। आर्या स्त्री समाज कैलाश कालोनी की प्रधाना श्रीमती ..ती सूद ने अपने सुमधुर भजनो द्वारा सारे वातावरण को आध्यात्मिक रस से ..राबोर कर दिया।

आर्यसमाज नोएडा में विशेष आयोजन

मगलवार १५ अगस्त को प्रात ९ मे ११ बजे तक स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर ३२-नोएडा मे विशेष आयोजन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा थे आचार्य जयदेव वानप्रस्थी। मुख्य प्रवचन स्वामी उमाशंकर सांख्याय का हुआ। १७ अगस्त से २० अगस्त तक महिला आर्यसमाज नोएडा के तत्वावधान मे विशेष यज्ञ एव वैदिक प्रवचनो की व्यवस्था की गई। रविवार २० अगस्त को प्रात: पूर्णाहुति का कार्यक्रम हुआ। श्रीमती ऊषा शास्त्री मुख्य वक्ता थी।

आर्य महासम्मेलन और यज्ञ की पूर्णाहुति

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे श्रावणी से श्री कृष्ण-जन्माष्टमी तक चल रहे यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति शुक्रवार १८ अगस्त को प्रात: ७ से ९-१५ बजे तक आयोजित की गई। प्रात १०-१५ से १२-३० बजे तक स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि दिल्ली राज्य के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना थे और विशिष्ट अतिथि कीर्तिनगर कल्याण सभा के अध्यक्ष श्री अमरनाथ खन्ना थे। महासम्मेलन के प्रमुख वक्ता सार्वदेशिक सभा के प्रधान-श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान-श्री सूर्यदेव जी, सस्कृत विद्यापीठ के उपकुलपति आचार्य वाचस्पति, डा० सच्चिदानन्दशास्त्री और श्री सुभाष आर्य थे।

सम्पादित एव प्रकाशित तथा .. प्रेस .. हाउस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, ..हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन।—३१०१५० के लिए प्रकाशित। पंजी० सं० डी० (एस ११०२४)—९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ४३ रविवार, ३ सितम्बर १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द । १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६
मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश में १० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

विश्व के एक भाग को दूसरे से जोड़ने में अनुवादो की भूमिका

विचारों और कृतियों के आदान-प्रदान में वे सेतु का कार्य करते हैं

—डा० धर्मपाल और उपमन्त्री शैलजा का आह्वान

नई दिल्ली शुक्रवार २५ अगस्त को राष्ट्रीय संग्रहालय के सभागार में भारतीय अनुवाद परिषद् के वाक् सेतु डिप्लोमा पाठ्यक्रम के सातवें दीक्षान्त समारोह में मुख्य भाषण देते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा. धर्मपाल आर्य ने घोषित किया— एक भाषा के विवरण को दूसरी भाषा में पहुंचाने में अनुवाद ने सृष्टि के प्रारम्भ से ही बड़ी निर्णायक भूमिका प्रस्तुत की है। वस्तुतः अनुवाद ही विश्व की भाषाओ को दूसरी भाषाओं तक एक मानवीय धारा के चिन्तन को पृथ्वी के दूसरे भागो तक पहुचाने मे सेतु का कार्य करते हैं। रवीन्द्र नाथ महाकवि कालिदास, उमर खैयाम आदि की कालजयी रचनाए अपने अनुवादों के माध्यम से विश्वव्यापक बनी हैं। मूल के प्रति पूरी निष्ठा रखते हुए पूरी प्रामाणिकता से मूल चिन्तन को दूसरी भाषा मे पहुंचाना बड़ी कठिन विधा है, परन्तु यह अनुवाद द्वारा सम्भव हो सकता है।

इस अवसर पर भारत सरकार के मानव संसाधन मन्त्रालय की उपमन्त्री सुश्री शैलजा ने ३८ प्रशिक्षुओं को डिप्लोमा देते हुए उनका तथा संस्था के छात्रोंका आह्वान किया कि अच्छे अनुवादो के माध्यम से विश्व की विभिन्न साहित्यिक सम्पदा जन-जन तक पहुंचाई जा सकती है। रचनाकार के मूल भावों को ज्यों का त्यो अनुवाद के माध्यम से सजोना एक शिल्प है तो उसे नए स्वरूप में प्रामाणिकता से प्रस्तुत करना एक कला है। मुझे विश्वास है कि अनुवाद की विधा मे प्रवीणता पाकर आप लोग विश्व के ज्ञान-विज्ञान को तथा भारत के विचारो और कृतियो के आदान-प्रदान मे वाक्सेतु का कार्य करेंगे।

स्वातन्त्र्य सेनानी अमर बलिदानी राष्ट्र-निर्माता स्वामी श्रद्धानन्द जी की धरोहर

नई दिल्ली। उस दिन राष्ट्रीय संग्रहालय के सभागार मे भारतीय अनुवाद परिषद् के दीक्षान्त समारोह मे मुख्य वक्ता के रूप मे गुरुकुल कांगडी के कुलपति डॉ० धर्मपाल आर्य का परिचय देते हुए परिषद् के मन्त्री श्री विश्वप्रकाश गुप्त ने कहा—यह उस योद्धा सन्यासी स्वतन्त्रता सेनानी अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित एक अपूर्व राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, जिन्होंने ३० मार्च १९१९ के दिन चादनी चौक मे बन्दूकें ताने हुए गोरे सिपाहियो के सामने अपनी छाती तानते हुए कहा था—"पहले मुझे गोली मारो, फिर इस निहत्थी जनता पर कोई प्रहार करना, यह भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम का एक अविस्मरणीय क्षण था। यह संस्था उस राष्ट्रनिर्माता की धरोहर है जिन्होने भारतीय नव जागरण के लिए अकेले इतना अनूठा कार्य किया है।

आर्य जनता सावधान

कुछ व्यक्ति अनधिकृत रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से विभिन्न आर्य समाजों, आर्यसंस्थाओं और दानी आर्य सज्जनो से आर्य समाज नया बांस, दिल्ली के पते पर मनीआर्डरो, ड्राफ्ट के माध्यम से नकद धनराशि भेजने की अपील कर रहे हैं। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, आर्य संस्थाओं और समस्त दानी महानुभावों से मेरा हार्दिक अनुरोध है कि वे इस तरह की किसी भी अपील पर ध्यान न दें और उक्त पते पर सार्वदेशिक सभा के नाम पर कोई भी धनराशि न भेजी जाए।

आर्य जनता ध्यान रखे कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वास्तविक अधिकारी उसके प्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, कार्यकारी प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह और उसके महामन्त्री—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, कोषाध्यक्ष-श्री वी. पी. जोशी हैं और यह भी भली प्रकार स्मरण रखें कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वास्तविक पता महर्षि दयानन्द भवन, ३/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ है।

सूर्यदेव-प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

श्रद्धांजलि के साथ प्रेरणा और संकल्प लीजिए

संस्कृत के विद्वान अद्भुत चिकित्सक प्रज्ञाचक्षु आचार्य रामशास्त्री की स्मृति में शान्ति यज्ञ

नई दिल्ली। रविवार २७ अगस्त को प्रात लाजपत नगर नई दिल्ली मे संस्कृत के मनीषी आयुर्वेदाचार्य प्रज्ञाचक्षु १०५ वर्षीय मे स्वर्गीय आचार्य रामशास्त्री जी की स्मृति में चल रहे तीन दिन के शान्ति यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर आर्य समाज के विद्वान संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने संस्कृत शिक्षण सरणी के रचयिता और सफल चिकित्सक रामशास्त्री जी द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार व आयुर्वेद के उन्नयन में उनकी अद्वितीय सेवाओ की सराहना की।

श्रद्धांजलि सभा के अध्यक्ष स्वामी दीक्षानन्द जी के जाने पर बने सभा के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति ने अनुरोध किया कि दिवगत संस्कृत मनीषी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

यह भूमि माता हमारा पोषण करे

महाभारत के एक प्रसंग मे उल्लेख है कि प्यास लगने पर पानी की तलाश मे पहले चार पाण्डुपुत्र तालाब का पानी पीने लगे, तब उस तालाब के स्वामी यक्ष ने उन्हें रुक कर पहले अपने प्रश्नो का उत्तर देने के लिए कहा था, चारों पाण्डुपुत्रो ने पहले प्रश्नो के उत्तर देने की अपेक्षा पानी पीना चाहा तो यक्ष ने उन्हें मूर्च्छित कर दिया। अन्त मे युधिष्ठिर भाइयो की तलाश मे वहां आ पहुचे। उन्होंने चारो भाइयो को बेहोश देखा, उस समय यक्ष ने पहले अपने प्रश्नो का उत्तर चाहा फिर पानी पीने का अवसर। उस अवसर पर यक्ष ने बहुत से प्रश्न पूछे थे, सभी का युधिष्ठिर ने ठीक उत्तर दिया था। अपने प्रश्नो के सिलसिले में यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था—"किं स्विद् गुरुतर भूमे"—इस पृथ्वी से भारी क्या है?—उत्तर मे युधिष्ठिर ने कहा था—"माता गुरुतरा भूमे"—माता पृथ्वी से भी भारी होती है।

माता की महत्ता क्यो हैं? क्यों उसे पृथ्वी से भी अधिक भार वाला कहा गया है, सम्भवत इसलिए कि निरुक्तकार यास्क के अर्थ के अनुसार, माता निर्माता भवति, माता ही निर्माण करती है, पर वैदिक वाङ्मय में माता की गरिमा का विस्तार करते हुए कहा गया है—

माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या।
पर्जन्य पिता स उ ना पिपर्तु॥ अथर्व १२.१.१२

भूमि हमारी माता है, हम पृथिवी के पुत्र हैं, मेघ हमारे पिता हैं, वे हमें पवित्र करते हुए पुष्ट करें। अथर्ववेद के इस पृथिवी सूक्त के एक मन्त्र में हमारी इस पृथ्वी माता के बारे में कहा गया है—समुद्र नदियो और जल से भरी-पूरी पृथ्वी, जिसमे कृषि होती है, अन्न होता है, जिससे यह प्राणवान् ससार तृप्त होता है, यह पृथिवी हमे फलरूप देने वाले भूप्रदेश में प्रतिष्ठित करे। मन्त्र यह है—

यस्या समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टय: संबभूवु।
यस्यामिद जिन्वति प्राणदेजत् सा नो. पूर्व पेये दधातु॥

अगले ही मन्त्र मे कहा गया है—जिस पृथिवी में चार दिशाए हैं, जिसमे खेती और अन्न होता है। जो सम्पूर्ण प्राणवान् ससार का सहारा है, वह पृथिवी हमें गौ और अन्न से भर-पूर करे।

हमारे प्राचीन मनीषियो ने भूमि की माता और राष्ट्र की मातृ रूप में स्तुति-वन्दना की। माता-जननी से पुत्र का असीम प्रेम होता है। वैदिक ऋचाओ में भूमि-पृथिवी का माता के रूप में वन्दन किया गया है तो इस पृथिवी माता के गिरि, बर्फ से ढके पर्वत और घने हरे वृक्षो से भरपूर वनो को भी सुखकारी बतलाया गया है। मन्त्र इस प्रकार है—

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्या ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रु कृष्णा रोहिणी विश्वरूपा ध्रुवा भूमिम्॥
पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्। अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठा पृथिवीमहम्॥
अथर्व, १२.१.११

हे पृथिवी, तेरी पहाडिया, हिम से भरपूर पर्वत, तेरे अरण्य मनभावन हों। मैं इस पोषण करने वाली, जोतने योग्य, उपजाऊ अनेक सुनहरे रूपो वाली सुदृढ़ स्वभाव वाली, आश्रयस्थान बनी विस्तीर्ण, ऐश्वर्यशाली और पुरुषों सुरक्षित पृथिवी का बिना जीर्ण हुए, बिना मारे गए, बिना घायल हुए अधिष्ठाता बना रहूं।

इसी पृथिवी-भूमि सूक्त मे कहा गया है—यह हमारी भूमि माता हमे वैसी तरह दूध दे, जैसे माता-पुत्र को दूध देती है। अथर्ववेद का मंत्रांश इस प्रकार है—

सा नो भूमिर्वि सृजता माता पुत्राय मे पय:॥ अथर्व १२.१.१०

गुरुकुल करतारपुर का वार्षिकोत्सव : पारायण यज्ञ

सोमवार १८ सितम्बर से रविवार २४ सितम्बर १९९५ तक गुरुकुल करतारपुर (पंजाब) का वार्षिकोत्सव होगा। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ६-३० बजे और शाम को ६ बजे से डा० जयदेव जी के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचनो के अतिरिक्त वैदिक परीक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। वार्षिकोत्सव में ज्वालापुर के महात्मा आर्य भिक्षु वानप्रस्थी, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के प्रस्तोता डा० जयदेव वेदालकार गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के डा० महावीर अग्रवाल, डी. ए. वी कालेज जालन्धर के डा० रामावतार शर्मा, जालन्धर के आचार्य डा० नरेशकुमार शास्त्री तथा मुजफ्फरनगर के भजनोपदेशक प० नरेश निर्मल आदि आमन्त्रित किए गए हैं।

बोध-कथा

प्रश्नोत्तर : पिता-पुत्र के

व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी बाल्यावस्था से ही सासारिक सुख-सुविधाओं से विरक्त थे। गृहस्थ का मोह छोड़कर बालक शुकदेव वनवास के लिए जब जाने लगे तब उनके पिता व्यास जी ने बड़े आग्रह से पुत्र को रोका और अनुरोध किया-"बेटे, कुछ समय प्रतीक्षा करो, इस बीच मैं तुम्हारे कुछ संस्कार कर दूंगा।" प्रत्युत्पन्न बालक शुकदेव ने कहा-"पिताजी, अब तक पता नहीं मेरे कितने जन्म हो चुके हैं, उन जन्मों में मेरे अनेक सस्कार हो चुके हैं। ये संस्कार ही तो मुझे भव-बन्धनों मे डाले हुए हैं, अब मैं जन्मो के इस चक्र से बचना चाहता हूं।"

पितृश्री व्यास जी ने समझाते हुए कहा—"तुम सच्चा मोक्ष चाहते हो तो तुम्हे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों के सभी दायित्वो को भली प्रकार निबाहना होगा। शुकदेव ने कहा—"पिताजी जी, बुरा न मानें अगर ब्रह्मचर्य से मोक्ष मिलता तो सबसे पहले तो नपुंसकों को मिलता, फिर यदि गृहस्थ से ही मुक्ति मिले तो सारा संसार ही मुक्त हो जाना चाहिए। अगर वानप्रस्थी मोक्ष के अधिकारी हैं तो वनो में रहने वाले सभी पशु-पक्षी मुक्ति पा जाएं, फिर यदि सन्यास से मुक्ति सम्भव है तो सभी दरिद्रो और अभावग्रस्तो को वह मिल जाती।"

व्यास जी ने मनुहार करते हुए कहा—"पर पुत्र, अच्छे गृहस्थियों के लिए, लोक-परलोक दोनो सुखद होते हैं। गृहस्थ की संग्रह वृत्ति सब को सुख देती है।" शुकदेव ने दो टूक जवाब देते हुए कहा—"सूर्य से बर्फ गिरे या चन्द्रमा से ताप बिखरे तो भी परिग्रह सग्रह से तीनो कालो में भी सुख मिलना सम्भव नहीं।"

व्यास जी ने पुत्र को दुलारते हुए कहा—"एक शिशु जब धूल में लिपटता है, तेज चलता है, या तुतला कर बोलता है तो सबको मोह लेता है।" उत्तर में शुकदेव जी बोले—"धूल मे लिपटे अपवित्र शिशु से सन्तोष कर लेना अज्ञान है, उसे सुख कहना भी अज्ञान है।"

व्यास जी ने कुछ कड़ेपन से कहा—"सन्तानहीन नरक जाता है।" पिता की इस उक्ति के जवाब मे शुकदेव जी बोले—"यदि बेटे से ही स्वर्ग मिलता तो सूअरों, कुत्तो, टिड्डियों को सबसे पहले मिलता।"

व्यास जी ने अन्त मे कहा—पुत्र दर्शन से मनुष्य पितृ ऋण से छूटता है, पौत्र दर्शन से देव ऋण से और प्रपौत्र-दर्शन से स्वर्ग मिलता है।" इस उक्ति का उत्तर देते हुए शुकदेव जी बोले—"कई पीढ़ियां जीने वाले गिद्ध कहां जाते हैं, मालूम नहीं, उन्हे किसी ऋण से मुक्ति और स्वर्ग नहीं मिलता यह पक्की बात है।"

पुत्र शुकदेव के उत्तरों से व्यास जी हतप्रभ हो गए। और पिता की ओर देखे बिना शुकदेव वन की ओर चल पड़े।

सम्पादकीय अग्रलेख

वेद : जीवन की शिक्षा

[illegible]चार कुछ नया चमत्कार-सा लगता है, पर यदि वह सच है तो न केवल अद्[illegible]है, परन्तु वह हमारे देश मे अनुकरणीय होना चाहिए। जापानी विद्यालयों में [illegible] की शिक्षा, चौंकिए मत। वेदों के वैज्ञानिक चरित्र ने जापानी शिक्षाशास्त्रियो को [illegible]नी गहराई तक प्रभावित किया है कि जापान की विद्यालयीन शिक्षा-स्कूली शि[illegible] मे वेदों के सरल अध्याय सम्मिलित किए जा रहे हैं। प्रयोग के रूप में प्रारम्भ की [illegible]ने वाली यह प्रायोजना अच्छे परिणाम साथ लाई तो महाविद्यालयों के स्तर पर भी जापान में वेदो का अध्ययन प्रारम्भ किया जाएगा। याकोहामा विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तामुआ नेती का कथन है--"वेद तो जीवन की शिक्षा है, जब तक जीवन है, आप उन्हें अनदेखा नही कर सकते, पता नहीं, कैसे ज्ञान के इस अथाह-अक्षय कोष का मूल्य उसका जनक भारत हीं नही जान पा रहा है।' यह समाचार वस्तुत अद्भुत मालूम पड़ता है, पर यदि सत्य है तो शिक्षाशास्त्रियों और भारत की जनता के लिए प्रेरणास्पद है। स्पष्ट है कि जापान के शिक्षाशास्त्रियो के मूल्याकन मे वेद किसी धर्म या सम्प्रदाय के मजहबी ग्रन्थ न होकर मानवता मात्र के लिए जीवन के सच्चे शिक्षक हैं, यही कारण है कि जापान मे उनके अध्ययन का शुभारम्भ किया गया है।

११९ वर्ष पूर्व रानी विक्टोरिया के लम्बे शासन के उपलक्ष्य मे १८७६ के अन्तिम महीनो मे दिल्ली मे एक बड़े महोत्सव या दरबार का आयोजन तत्कालीन वायसराय लार्ड लिटन ने किया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती की इच्छा थी कि दिल्ली मे एकत्र राजा-महाराजा वेदो और उनकी शिक्षा के महत्व को समझ लें। स्वामी जी चाहते थे कि राजो-महाराजाओ की सभा करके सब आर्यो मे एक आर्य चिन्तन और एकता का सूत्र बाध दिया जाए, पर अनेक कारणो से उसमें सफलता नही मिली। भारतीय नरेशो से परामर्श का अवसर न मिलने पर महर्षि ने देश के प्रमुख सुधारको--श्री केशवचन्द्र सेन, सर सैयद अहमद खा, मुशी कन्हैयालाल अलखधारी, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि, मुंशी इन्द्रमणि, नवीनचन्द्र राय आदि को अपने निवासस्थान पर एकत्र कर वेद के ध्वज के नीचे भारत भर के समस्त सम्प्रदायो को एकत्र करने की चर्चा की। उन्होंने वेद प्रतिष्ठा के आधार पर सुधार कार्य करने का भी आह्वान किया। उन्होंने केशवचन्द्र सेन आदि सुधारको से अनुरोध किया कि पृथक्-पृथक् सभाए स्थापित करने की जगह यदि हम सब मिल कर श्रेष्ठ मानव-आर्य धर्म का प्रचार-प्रसार करें तो बहुत अच्छा है। खेद है कि कई मौलिक मन्तव्यो मे एक सम्मति न होने के कारण सब एकता के सूत्र मे नही बन्धु सके। खेद है कि आज से एक शताब्दी से भी पहले जीवन के दिशा-निर्देश के लिए वेदों के ध्वज के नीचे एकत्र होने के लिए महर्षि के परामर्श पर समुचित ध्यान नही दिया गया।

वेद का अर्थ ज्ञान है। वेद सृष्टि के ज्ञान-विज्ञान के आधार है। वेद इस ब्रह्माण्ड मे मानव ज्ञान की प्राचीनतम अक्षय निधि हैं। मानव पुस्तकालय का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। वस्तुत वेद मानव जाति के कल्याण का मार्ग बतलाने वाला दिव्य ग्रन्थ हैं। वेदों का पवित्र लक्ष्य है मानव मात्र को वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वो का बोध करा कर उसे सुख-शान्ति और आनन्द का सच्चा मार्ग दिखलाना। कहा जा सकता है वेद मानवीय ज्ञान-विज्ञान के मूलस्रोत हैं। वेदों में किसी प्रकार की भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक या साम्प्रदायिक सीमा नही है, वेदों की दृष्टि मे सम्पूर्ण मानवता एक और अखण्ड है। वेदों का मानवता को सन्देश है तू मननशील हो, मन-वचन कर्म से सच्चा मानव बन। इसी के साथ कोरे तन के सुख की अपेक्षा मानसिक आनन्द व आत्मा के परमानन्द की उपलब्धि के लिए मानव को प्रयत्नशील होना चाहिए। भारतीय सभ्यता-संस्कृति ने वैदिक तत्वज्ञान को ग्रहण करने का प्रयत्न किया, जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार मूलाधार निर्धारित किए हैं। [illegible] की प्रासंगिकता व प्रयोजन सीमित है, अर्थ भोजन निवास, कपड़ो, [illegible] शिक्षा के लिए मर्यादित है, हमारी कामनाएं भी मर्यादित हैं, अर्थ-[illegible] धर्म की मर्यादा के अनुकूल होना चाहिए, जीवन जीओ, अपने [illegible] लिए नहीं, मानवता के लिए यही वेदों का जीवन-सन्देश है। हम भारतीय इस वैदिक चिन्तन को समझ कर वेदो का पारायण करें, उसका सन्देश जीवन में कार्यान्वित करें, तभी वेदो की शिक्षा कारगर हो सकती है।

चिट्ठी-पत्री

विद्या का निरन्तर अभ्यास ही आदर्श व्यसन

वस्तुत. यदि हम अपने को शारीरिक मानसिक दोनो दृष्टियो से सुखी बनाना चाहते है तो हम सही अर्थों मे व्यसनी बनें। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा--"व्यसन किम् ?" तो युधिष्ठिर ने कहा--"विद्याव्यसनम्" अर्थात व्यसन क्या है? प्रश्न का उत्तर है--विद्या का निरन्तर अभ्यास ही आदर्श व्यसन है और यह व्यसन किसी भी आत्मा की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

सत्साहित्य का पाठ करना एक अच्छा व्यसन है, इससे मन बहलता है, परिष्कृत होता है, ज्ञान की प्राप्ति होती है और जीवनानुभव भी बढ़ता है। पर्यटन करते रहना भी एक अच्छा व्यसन है, इसके लिए समय और पैसे दोनों की जरूरत होती है--समाजसेवा, परोपकार, कला साधना, साहित्य सृजन आदि बड़े ऊंचे और स्पृहणीय व्यसन है।

--प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री, सम्पादक 'आर्य संकल्प', पटना, बिहार

गुरुओं की परम्परा में गुरु दयानन्द

पूर्वेषामपि गुरु. कालेनानवच्छेदात्। योग २६ सूत्र समाधि

वह ईश्वर गुरुओ का गुरु है, उसका काल कवलित नहीं होता।

सृष्टि के प्रारम्भ मे ईश्वर ने क्रमश अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियो को ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया। इसी वैदिक परम्परा को ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियो ने निभाया।

महाभारत के पश्चात ऋषियों और गुरुओं की टूटी हुई परम्परा को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुन जोडा, वेद-ज्ञान की ज्योति जलाई।

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताकर पाठ-पढाया, पुन गुरुकुल खोलकर गुरु-शिष्य का सम्बन्ध स्थापित किया और जगद्गुरू कहलाए।

ब्र० नन्द किशोर, प्रचार मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली (आर्यावर्त)

अंग्रेजी गुलामी की भाषा और हिन्दी आजादी की भाषा

देश के मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी एन. शेषन को 'राष्ट्र-गौरव' से सम्मानित करते हेतु दिनांक ११ जून को दून सिटीजन्स कौन्सिल नामक संस्था के तत्वावधान मे डी. एम आई पी. के सभागार, देहरादून मे आयोजित सम्मान-समारोह मे अंग्रेजी मे संचालित कार्यक्रम मे उसे गुलामी की भाषा करते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त शेषन ने हिन्दी को आजादी की भाषा कहकर उसी मे अपना सर्वांग भाषण प्रस्तुत किया। उनके इस क्रान्तिकारी कदम पर सभागार ने बार-बार करतल ध्वनि से स्वागत किया। इस सन्दर्भ मे आयोजको को झेंप भी हुई।

(हैदराबाद की 'विवरण पत्रिका' के जुलाई १९९५ के अंक से साभार)

वेद मार्ग पर चलने से विश्वशान्ति

आर्यसमाज मुजफ्फरपुर (बिहार) के तत्वावधान मे पंचदिवसीय वेदकथा कार्यक्रम मे भाषण देते हुए वैदिक विद्वान डा० व्यासनन्दन शास्त्री ने यथेमा वाचं कल्याणीमावदानि मन्त्र के आधार पर घोषित किया वेद किसी खास जाति या वर्ग का पुस्तक नहीं हैं, बल्कि इन्हें पढ़ने का अधिकार सम्पूर्ण मानव मात्र का है वेदों में बताए मार्ग का अनुसरण करने से सम्पूर्ण विश्व मे मानव धर्म प्रतिष्ठित होकर शान्ति होगी।

श्री कपिलदेव द्विवेदी सम्मानित

संस्कृत साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए संस्कृत विद्वान डा० कपिल देव द्विवेदी को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा ने १९९२ का विशिष्ट पुरस्कार दिया।

हिन्दुओं की जनसंख्या घट रही है

नरेन्द्र अवस्थी, पत्रकार

१९९१ की जनसख्या रिपोर्ट पढकर लगता है यदि मुसलमाना की आबादी ऐसे ही बढती रही तो ५० वर्ष के बाद हिन्दू अल्पसख्यक हा जाएगे, तो फिर कोई आश्चर्य नही होगा। इससे देश की राष्ट्रीयता बदलेगी—भारतीय स्वरूप बदलेगा। १९४७ मे जब दो कौमो की बुनियाद पर देश का विभाजन हुआ, उसके जनूनी मुसलमान ये नारे लगाते थे।

लडके लिया था पाकिस्तान ह स के लेंगे हिन्दुस्तान।

और के राजनीति वर्चस्व बढाने के लिए मुसलमान सदैव प्रयत्नशील रहे। इसी अनुसार मुसलमानो की जन्मदर सदा हिन्दुओ से अधिक रही है। वर्ष १८८१ से वर्ष १९४१ तक हिन्दुस्तान मे हिन्दू जनसख्या ५ ६३ प्रतिशत ७५ ०९ से ५९ ४६ प्रति घटी और मुस्लिम जनसख्या इन ६० वर्षो मे ४ ३१ प्रति १९ ९७ से २४ २८ प्रति बढी। अर्थात मुस्लिम जनसख्या हिन्दू बहुसख्या के पीछे से ९ ९४ प्रतिशत बढ गई। परिणामस्वरूप हिन्दुस्तान के उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम के बहुत बडे क्षेत्र मे मुसलमानो की बहुसंख्या हो गई, जिस कारण मुस्लिम लीग की माग पर वर्ष १९४७ मे हिन्दू मुस्लिम बहुसख्या क्षेत्रो के आधार पर देश का दु खद विभाजन हो गया और इस प्रधान हिन्दू देश की धरती पर पहले एक कट्टरपथी मुस्लिम राज्य पाकिस्तान फिर १९७१ मे उसका पूर्वी भाग पृथक् बागलादेश स्थापित हो गया। वहा से लगभग सब हिन्दुओ को हिन्दू बहुसख्या को हिन्दुस्तान मे चले आना पडा। अग्रेजो द्वारा स्थापित भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के नेताओ ने इससे कोई शिक्षा प्राप्त नही की और लगभग ३ करोड मुसलमानो को खण्डित भारत से जान नही दिया गया। उन्होने पुन अपनी जनसख्या बढ़ानी आरम्भ कर दी। कितने दुख की बात है कि देश विभाजन से पूर्व काग्रेसी नेता कहते थे कि हिन्दू और मुस्लिम मिला-जुला एक राष्ट्र है। देश विभाजन के पश्चात भी इस विचार को छोडा नही गया और खण्डित भारत का सविधान इस विचार के आधार पर निर्मित हुआ। खण्डित भारत के सविधान मे मुसलमानो को हिन्दुओ मे अधिक अधिकार द दिए गए।

खण्डित भारत मे पाच बार जनगणना हो चुकी है। वर्ष १९५१, १९६१ १९७१ १९८१ और १९९१ वर्ष मे १९९१ की जनगणना के परिणाम थोडे दिन पूर्व ८७ प्रति ९५ पति की जनगणना आयोग ने पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए हैं। जनगणना आकडो के अनुसार प्रत्येक जनगणना मे मुसलमानो की वृद्धिदर हिन्दू बहुसख्या के वृद्धिदर से सदा अधिक रही हैं। वर्ष १९५१ से १९९१ तक के ४० वर्षों मे मुस्लिम जनसख्या हिन्दू बहुसख्या के पीछे से ४ १९ प्रतिशत आगे बढ गई है। वर्ष १९८१ से १९९१ तक के १० वर्षों मे मुस्लिम जनसख्या से बढी है। वर्ष १९७१-१९९१ के १० वर्षों मे मुसलमानो की वृद्धिदर ३० ८५ प्रतिशत रही थी जबकि यह १९८१-९१ के दशक मे ३ ७८ प्रतिशत रही। केवल एक प्रदेश जम्मू और कश्मीर मे मुसलमानो की बहुसख्या है। जम्मू और कश्मीर मे १९९१ की जनगणना नहीं हो सकी क्योकि कश्मीर घाटी मे १९९० से एक प्रकार का विद्रोह चल रहा है। वर्ष १९८१ की जनगणना के आधार पर जम्मू और कश्मीर मे मुसलमान जनसख्या ६४ १९ प्रतिशत थी और हिन्दू जनसख्या ३२ २४ प्रतिशत थी। इसके अतिरिक्त पूरे भारत और ६ प्रांतो मे मुस्लिम जनसख्या १० प्रतिशत से अधिक है।

हिन्दुओ की जनसख्या सदैव घटती रही है। प्रत्येक १० वर्ष के पश्चात जनगणना होती है। उसका अध्ययन करने पर पता चलता है कि हिन्दुओ की जनसख्या सदैव घटती रही है। प्रजातन्त्र मे अधिक जनसख्या का बहुत अधिक महत्व है। भारत की वर्तमान कठिनाईयो के लिए काग्रेस की धर्मविरोधी नीति प्रमुख कारण है। सन १९९१ की जनगणना से राष्ट्रवाद तत्वो को सचेत होना है और सरकार से माग करनी है कि मुसलमानो क लिए भी परिवार-नियोजन आवश्यक हो, परिवार-नियोजन बिना भेदभाव के समान रूप से सब पर लागू हो। बांगला देश से लगभग डेढ करोड व्यक्ति घुस आए हैं उन्हे वापस भेजा जाए। देश मे समान नागरिक सहिता लागू की जाए।

७।३८ नेहरू नगर, नई दिल्ली-६५

वेद स्वाध्याय सर्वोत्तम है—जन-जन के हृदय में यह बिठाइए

सत्यभूषण वेदालंकार

वेद स्वाध्याय सर्वोत्तम है, जन-जन मे यह बात बिठाइए।
वेद पढे लिखे है यदि आप तो औरो को भी पढना सिखलाइए॥
'स्वाध्यायान्मा प्रमद' यह आचार्यों की शिक्षा सबको सुनाइए।
श्रावण मास विशेषत है स्वाध्याय के हेतु यह धर्म बताइए।
अन्न से होता शरीर का पोषण सर्वविदित यह बात कही है।
वैसे ही मन, आत्मा का भोजन वेद है निश्चित तथ्य वही है।
सत्य सनातन धर्म है वैदिक शाश्वत काल से सीख रही है।
वेद का श्रवण मनन करने की आर्यजनो की रीत रही है।
नाम है श्रावण मास का श्रुति से पढ नहीं सकते तो सुनो सुनाओ।
सब आर्यो का परम धर्म यह तीसरे नियम को मन मे बिठाओ।
होय सुगन्धित गृह-आगन अभिलाषा है ऐसी तो यज्ञ कराओ।
यज्ञ है कर्म श्रेष्ठतम इस मन्तव्य को मानो और मनाओ।
'मानस-मुकुर मनोरम जानिए दर्पण स्वच्छ पारदर्शी हो।
चाहते हैं यदि आप तो वेद की ज्योति से उज्ज्वल इसको बनाइए।
ईश तो है सर्वव्यापक जान के मन को इधर-उधर मत भटकाइए।
वर्षा के काल मे होके समाहित हितको ध्यान मे उसके लगाइए।
शका या सशय जाल में फस मत मानस को अपने उलझाइए।
आश्रमों में ऋषि-मुनियो के जा सुनिए प्रवचन अमभूत पगाइए।

१२, मुनिरका विहार, नई दिल्ली-६७

ओ३म् ध्वज और हिन्दी के लिए समर्पित
महर्षि के अनुपम अनुयायी पं० जगदेवसिंह सिद्धांती

मनमोहनकुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त पं० जगदेव सिंह सिद्धांती ने अपने ७९ वर्षों के जीवन में आर्यसमाज के यश एवं कीर्ति को अक्षुण्ण रखा।

विजयादशमी (दशहरा) १९०० ई० को सिद्धांती जी का जन्म हरयाणा राज्य के रोहतक जिले की झज्जर तहसील के बहराणा ग्राम मे पिता चौ० प्रीतराम व माता मामकौर के यहां हुआ था। पिता सेना मे थे। उन्होंने सन् १८९८ मे पेंशन ग्रहण कर आयुर्वेद का अभ्यास किया और लोगों को नाड़ी देखकर निश्शुल्क औषधि सेवन का परामर्श देते थे। चिकित्सा विषयक नाड़ी विचार पुस्तक भी उन्होंने लिखी थी।

जब जगदेव (सिद्धांती जी का बचपन का नाम) १० वर्ष के थे, तब उनके ग्राम में एक आर्य समाजी प्रचारक आए। इनके उद्योग एवं पिता के आर्य समाज से पूर्व परिचय के कारण हरयाणा मे आर्य समाज स्थापित हो गया। चौ० प्रीतराम जी आर्य समाज के प्रथम प्रधान बने। इसी अवसर पर जगदेव का यज्ञोपवीत संस्कार भी हुआ। सन् १९१६ मे जब वह हाईस्कूल में पढ़ते थे, उसी वर्ष उनकी माता जी का देहान्त हो गया। पिता की इच्छा से उनका विवाह संस्कार भी इसी वर्ष ग्राम बिरोहड़ (रोहतक) के एक कृषक परिवार को कन्या नानती देवी के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह के ६ वर्ष पश्चात सन १९२२ मे पत्नी तत्कालीन प्रथा के अनुसार पितृकुल से पतिकुल आई।

सन् १९१७ मे सिद्धांती जी सेना में भर्ती हुए और वहां सैनिकों को हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी का शिक्षण कर भत्ते मे वेतन के बराबर धन प्राप्त किया। सेना मे कार्य करते हुए उन्होंने मांसाहार के विरोध के साथ सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं का प्रचार किया और वहां आर्य समाज की स्थापना की जिससे यह कार्य निर्विघ्न होता रहे।

लगभग सवा चार वर्ष सेना मे रहकर अवकाश ग्रहण कर घर लौट आए। सन् १९२२ में वे 'गुरुकुल मटिण्डू' के उत्सव पर गए और वहां एक मास तक रहकर निशुल्क सेवा की। वहीं पंडित शान्ति स्वरूप जी से आप संस्कृत का अध्ययन कर पंजाब विश्वविद्यालय की 'प्राज्ञ' परीक्षा मे सम्मिलित हुए। इस परीक्षा मे ५३०·६०० अंक प्राप्त कर उन्होंने प्रथम स्थान ग्रहण किया ही विश्वविद्यालय की परीक्षा के पुराने रिकार्ड को भी तोड़ा। अगले वर्ष उन्होंने विशारद परीक्षा में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। दयानन्द उपदेशक विद्यालय, लाहौर से उन्होंने 'सिद्धांत भूषण' की परीक्षा उत्तीर्ण की और इसके साथ ही अपने नाम के साथ 'सिद्धांती' शब्द का प्रयोग भी आरम्भ किया जिसकी प्रेरणा उन्हें सत्यार्थ प्रकाश मे प्रयुक्त सिद्धांती शब्द से मिली थी। यहां यह उल्लेखनीय है कि उपदेशक विद्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अन्तर्गत चलता था जिसके आचार्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज थे।

सन् १९२४ में उन्हें एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई जो अल्पजीवी रहा। बहन और चाचा की मृत्यु से उत्पन्न महर्षि दयानन्द को वैराग्य की ही तरह उन्होंने भी पत्नी को सूचित कर, परिवार से पृथक होकर स्वयं को मन, वचन व कर्म से महर्षि के मिशन को अर्पित कर दिया।

वैदिक धर्म के उच्चकोटि के विद्वान व प्रचारक तैयार करने के लिए उन्होंने स्वयं वैदिक धर्मग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया और पश्चात मेरठ के अन्तर्गत ग्राम किरठल मे आर्य विद्यालय का संचालन किया। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं० रघुवीर सिंह शास्त्री इस महाविद्यालय की ही देन थे।

सन् १९६५ में कुछ ईर्ष्यालु लोगो ने उन्हें दूध मे संखिया मिलाकर पिला दिया। संखिया की मात्रा यद्यपि काफी अधिक थी परन्तु कम पिया होने, स्वामी विद्यानन्द एवं हकीम नासिरुद्दीन की चिकित्सा एव वमन से उनके प्राण बच गये। यह घटना भी महर्षि दयानन्द, पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल, शंकराचार्य, भगवान बुद्ध के जीवन मे घटित उनके प्राणहरण की ही भांति थी।

सन् १९३३ मे स्वामी सर्वदानन्द जी की पुस्तक 'सन्मार्ग दर्शन' की पं० जगदेव सिंह सिद्धांती जी ने आर्यमित्र में आलोचना की। इससे उत्पन्न विवाद के समाधान के लिए आर्य समाज, मेरठ में आर्य समाज के दोनो दिग्गज विद्वानो में शास्त्रार्थ हुआ। अन्त मे स्वामी सर्वदानन्द जी ने अपनी भूलो को स्वीकार कर पुस्तक के आगामी संस्करण मे उनके सुधार का आश्वासन दिया।

सन् १९५७ मे वह आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री निर्वाचित हुए। इसी बीच 'पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन' चल पड़ा। इस आन्दोलन की सफलता ने सिद्धांती जी को आर्य जगत का सर्वमान्य नेता बना दिया। इससे पूर्व सन '१९५० मे वह सर्व खाप पंचायत, मुज्जफरनगर' के प्रधान भी चुने गए थे और मृत्युपर्यन्त इस पद पर रहे।

सन् १९६२ मे सिद्धांती जी ने लोक सभा की झज्जर सीट से 'हरयाणा लोक समिति दल' की ओर से चुनाव लड़ा। इस चुनाव मे उन्होंने कांग्रेस के [illegible] को भारी बहुमत से पराजित किया। अपनी हार से खिन्न प्रताप सिंह ने ट्रिब्यूनल कोर्ट मे याचिका दायर कर सिद्धांती जी के निर्वाचन को चुनौती दी। याचिका मे सिद्धांती जी द्वारा अपने पक्ष मे प्रयुक्त 'ओ३म् ध्वज' एवं 'हिन्दी भाषा अमर रहे' का विरोध कर ओ३म् ध्वज को धार्मिक एव भाषा विषयक नारे को आपत्तिजनक कहा गया था। यह मुकदमा सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री गजेन्द्र गडकर की अध्यक्षता मे पांच जजो की बेंच मे प्रस्तुत हुआ। न्यायालय ने सर्वसम्मति से सिद्धांती जी के पक्ष में निर्णय दिया। हैदराबाद संघर्ष व पंजाब मे हिन्दी की रक्षा के लिए किए गए संघर्ष की तरह ओ३म् ध्वज व हिन्दी रक्षा संघर्ष मे भी आर्यसमाज ने विजय प्राप्त की।

शेखावटी (सीकर) मे आयोजित 'प्रजापति-यज्ञ' मे भी श्री जगदेवसिंह जी सिद्धांती, उनके सहयोगियो व शिष्यो की प्रमुख भूमिका रही। पौराणिको की चुनौती पर सिद्धांती जी के शिष्य पं. रघुवीर सिंह शास्त्री का 'आत्मा' विषय पर तत्काल धाराप्रवाह संस्कृत भाषण भी सहायक रहा जिसके परिणामस्वरूप वहां जाट बन्धुओं के प्रति प्रचलित कुरीतियां एव कुप्रथाएं समाप्त हुई।

सिद्धांती जी ने गुरुकुल झज्जर में न्याय एवं वैशेषिक दर्शन भी पढाए। अध्यापन मे वह संस्कृत को ही माध्यम के रूप मे प्रयोग करते थे। शंका-समाधान के अवसरो पर भी वह शंकालु के संकेत को समझकर सत्यार्थ प्रकाश के प्रस्तुत उद्धरणों को शब्दश: प्रस्तुत कर स्वीकार्य समाधान करते थे।

उनका जीवन अनेक प्रेरणाप्रद घटनाओ से पूर्ण है। आशा है कि आर्य समाज के अनुयायी स्वार्थ से उपर उठकर उसका अनुकरण करेंगे।

१९६/डी चुक्खूवाला, देहरादून-२४८००१

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया उनके प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखको के कथनो या मतो से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठको के सुझाव व प्रतिक्रियाएं आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, '१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

सम्पादक

योगेश्वर श्रीकृष्ण भारत के राष्ट्रपुरुष थे

वह भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ प्रतिनिधि थे—नरेन्द्र अवस्थी

नई दिल्ली। आर्य समाज मोती बाग में दिनांक २०-८-९५ को योगिराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी बड़े उत्साह से मनाई गई। जिसमें प्रमुख वक्ता के रूप में श्री नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए महान धर्मरक्षक योगेश्वर श्री कृष्ण को ब्राह्म और क्षात्र धर्म के प्रवक्ता, सामाजिक समता के प्रायोगिक प्रणेता, राष्ट्रीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि राष्ट्र धर्म के पुरस्कर्ता योगेश्वर श्री कृष्ण ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व थे जिन्हें राष्ट्रपुरुष और इतिहासपुरुष की दृष्टि से अद्वितीय कहा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त वर्तमान संदर्भ मे श्रीकृष्ण की धर्मनीति पर वैदिक विद्वान डा० हर प्रकाश जी बन्धु, श्री प्रेमकुमार मल्होत्रा, श्री ज्ञानचन्द महाजन श्री विवेक यादव आदि ने भी विचार प्रगट किए। श्री करणसिंह तवर विधायक भी पधारे। उन्होंने भी श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला।

प्रेम कुमार मल्होत्रा, मन्त्री आर्यसमाज मोती बाग, नई दिल्ली

दिल्ली की महिलाओं द्वारा हरितृतीया पर्व

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आयोजित ... विद्या मन्दिर ईस्ट आफ कैलाश मे बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे दिल्ली की समस्त स्त्री समाजो की बहनो ने बृहत् संख्या मे सोत्साह भाग लिया। श्रीमती कृष्णा रहेजा ने विधिपूर्वक यज्ञ कराया। श्रीमती शाति मलिक की अध्यक्षता तथा श्रीमती शकुन्तला दीक्षित के सयोजकत्व मे बहनो ने गीत, भजन, कविताओं के द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया। 'चन्द्र आर्या विद्या मन्दिर' को ३१०० रु० तथा कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर को ५००) बहनो ने दान दिया। प्रसाद का व्यय श्रीमती कृष्णा रहेजा ने किया। प्रधान, श्रीमती प्रकाश आर्या ने सभी का धन्यवाद किया और श्रीमती शकुन्तला आर्या तथा सरला महता जी ने तीज की शुभ कामना दी।

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र में वेदप्रचार एवं कृष्ण जन्माष्टमी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार पूर्वी दिल्ली क्षेत्र मे श्रावणी से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार श्रावणी एवं कृष्ण जन्माष्टमी के कार्यक्रम मनाए गए।

१. आर्यसमाज शकरपुर मे १० से १८ अगस्त तक प्रातः यज्ञ व प्रवचन पं० विजय प्रकाश शास्त्री द्वारा कराए गए। यज्ञ की पूर्णाहुति गुरुकुल दादरी के भू०पू० कुलपति प० भवानीदास शास्त्री ने कराई। १८ अगस्त को पं० भवानी दास शास्त्री जी ने योग एव श्री कृष्ण विषय पर प्रवचन किया।

२ आर्यसमाज निर्माण विहार मे १० से १७ अगस्त तक ब्रह्मा प० मुक्तेश्वर शास्त्री ने सामवेद पारायण महायज्ञ कराया। ११ से १७ अगस्त तक रात्रि को आचार्य भूदेव शास्त्री की वेद कथा हुई।

३. आर्यसमाज मयूर विहार मे १० से १७ अगस्त तक प्रातः ६-३० से ९ बजे तक प० ओमवीर शास्त्री ने यज्ञ-प्रवचनों का कार्यक्रम कराया।

१८ अगस्त को यज्ञ के पश्चात जन्माष्टमी कार्यक्रम मे भजन श्री विजयभूषण आर्य द्वारा और ब्रह्मचारिणी इन्दु आर्य और स्वामी जीवनानन्द के प्रवचन हुए।

४. आर्यसमाज सूरजमल विहार मे जन्माष्टमी कार्यक्रम में श्री पुष्किन अरोडा से भजन, आचार्य कामेश्वर प्रसाद और श्री भूदेव शास्त्री के प्रवचन हुए।

आर्यसमाज करौलबाग में श्री भगतराम शर्मा की विदाई

आर्य समाज करोल बाग मे पिछले चालीस वर्षों से निरन्तर सेवा करने वाले सेवक श्री भगतराम शर्मा को ९ जुलाई, १९९५ को विदाई दी गई। आर्यसमाज ने उन्हें ५००० रु० की भेंट दी तथा सर्वश्री अजय भल्ला, चैतन्य स्वरूप कपूर, दयालचन्द, मन्त्री दयालचन्द और स्त्री समाज की ओर से श्रीमती कृष्णा बढेरा और श्रीमती राजेन्द्रा अवरोल ने श्रीभगतराम जी के योगदान की सराहना की।

महाकवि तुलसी भारतीय संस्कृति के प्रतीक

दिल्ली शासन की ओर से तुलसी जयन्ती सप्ताह के अवसर पर रामचरित मानस गायन प्रतियोगिया में मुख्य अतिथि के रूप में म० प्र० उच्च न्यायालय के भू० पू० न्यायाधीश श्री शिवदयाल ने कहा-मानस की रचना कर तुलसी ने मानव के सामाजिक कर्त्तव्य और जीवन मूल्य प्रदर्शित किए। डा० रामकात त्रिपाठी ने तुलसी को भारतीय संस्कृति का प्रतीक कहा।

गायन प्रतियोगिताओ का उद्घाटन करते हुए श्रीमती आशारानी वोरा ने कहा—भारतीय संस्कृति और पारम्परिक मूल्यों को सुरक्षित रखने में गोस्वामी तुलसी दास का महत्वपूर्ण योगदान है।

विज्ञान तकनीकी पढ़ाई हिन्दी में

इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रकोष्ठ की हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए विश्वविद्यालय के उपकु.पति प्रो. जनार्दन झा ने सूचना दी कि विश्वविद्यालय शीघ्र ही विज्ञान और तकनीकी पाठयक्रम हिन्दी मे शुरु करेगा।

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग के प्रधान श्री जसवन्तराव साही का स्वर्गवास

हमे यह सूचना देते हुए हार्दिक दुख है कि आर्यसमाज राणा प्रताप बाग के कर्मठ एव लोकप्रिय प्रधान श्री जसवन्तराव साही जी का अचानक देहावसान हो गया है। परम दयालु परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति देंगे और शोक संतप्त परिवार को हार्दिक सान्त्वना। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सभा द्वारा संचालित सभाओं और आर्य सन्देश की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धाजलि दी गई।

हिन्दी प्रकाशकों को प्रोत्साहन चाहिए

पुस्तकों का मूल्य उचित हो—डा० विष्णुकांत शास्त्री

पुस्तक मेले के अवसर पर हिन्दी प्रकाशक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ससद सदस्य डा० विष्णुकात शास्त्री ने कहा हिन्दी के प्रकाशक आम तौर पर आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होने कारण अपने कर्त्तव्य का पालन कुशलता से नहीं कर पाते। उन्हें प्रोत्साहन की जरूरत है, इसके साथ पुस्तकों के मूल्य भी उचित रखे जाएं, जिससे पाठकों को अच्छा साहित्य सुविधापूर्वक उपलब्ध हो सके। नन्दन सम्पादक जयप्रकाश भारती ने ऐसा साहित्य रचने की जरूरत पर बल दिया जिससे समाज की बुराइया दूर हो सकें। श्री यशवन्त ने कहा कि हिन्दी मे प्रत्येक विषय की पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए।

आर्यसमाज अनारकली का वार्षिकोत्सव और गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ४ नवम्बर से १२ नवम्बर तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर ६ से ११ नवम्बर, १९९५ तक प्रातः ७ से ८ बजे तक गायत्री महायज्ञ और रात्रि को ७-३० से ९ बजे तक वेदकथा होगी। रविवार १२ नवम्बर को प्रातः ९ बजे गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

सन्मार्ग पर चलने से दोहरा लाभ

मुरादाबाद। आर्यसमाज मण्डी बांस में वेद कथा प्रवचन देते हुए श्री यशपाल आर्यबन्धु ने घोषित किया कि ईश्वर को न मानने वाला, उनके ज्ञान के विपरीत आचरण करने वाला नास्तिक है तो उसकी व्यवस्था को न मानने वाला भी नास्तिक ही माना जाएगा।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के पं० देवव्रत शास्त्री ने कहा सन्मार्ग पर चलने से परमात्मा को पथ-प्रदर्शक मानने पर धन की प्राप्ति के साथ उपासक के पाप भी छूट जाते हैं। ईश्वर की उपासना से व्यक्ति बुरे कर्मों से छूट जाता है।

आर्यसमाज सरस्वती विहार में वेद-प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज सरस्वती विहार की ओर से २१ से २७ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम हुआ। जम्मू वाले आचार्य अखिलेश्वर जी वेदकथा हुई। रविवार २७ अगस्त को प्रातः समापन कार्यक्रम प्रधान श्री सरदारी लाल बजाज की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आ. प्रति. सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी और दिल्ली के विधायक श्री गौरी शंकर भारद्वाज और श्री जय भगवान अग्रवाल ने जनता का उद्बोधन किया।

आर्यसमाज माडल टाउन में यज्ञ की पूर्णाहुति

आर्यसमाज माडल टाउन-३ दिल्ली-९ में २१ अगस्त से शनिवार २६ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह आयोजित किया। आचार्य रामकिशोर जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। २७ अगस्त को प्रातः ७ से ९ बजे तक पूर्णाहुति हुई। विजयभूषण जी के भजन हुआ। आचार्य रामकिशोर जी और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने जनता का उद्बोधन किया।

आर्यसन्देश का शुल्क तुरन्त भेजिए

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० है, उसका आजीवन शुल्क ३५० रु० है। निवेदन है कि मनीआर्डर, चैक या नकद भेजें।

धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, चिट पर आपकी ग्राहक संख्या लिखी रहती है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 1-9-1995 licence to post without prepayment licence No. U (C 139)
डी० (सी०) ... (एन-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५
३ सितम्बर १९९५

आधुनिक अवसाद और वैदिक मनोविज्ञान

डा० प्रह्लाद की स्मृति में वैदिक व्याख्यान

स्व डा प्रह्लाद कुमार की पचासवी जयन्ती पर डा प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति की ओर से सोमवार ११ सितम्बर १९९५ को अपराह्न ३ बजे दिल्ली विश्वविद्यालय के कला सकाय के २२ न कक्ष मे प्रो पुष्पेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में डा (श्रीमती) प्रवेश सक्सेना आधुनिक अवसाद और वैदिक मनोविज्ञान पर वैदिक व्याख्यान प्रस्तुत करेगी। मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति होगे।

आर्यसमाज गोविन्दपुरी में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज गोविन्दपुरी नई दिल्ली में सोमवार २१ अगस्त से शनिवार २६ अगस्त, १९९५ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। सोमवार से शनिवार तक प्रात ६ ३० से ८ बजे तक और साय को ५ ३० से ७ बजे तक ऋग्वेदीय पारायण व्याकरणाचार्य प श्यामनारायण आर्य के ब्रह्मत्व में हुआ। प्रतिदिन रात को ८ से ९ बजे तक श्री जनार्दन आर्य द्वारा सगीत और रात्रि को ९ से १० बजे तक श्री श्याम सुन्दर स्नातक द्वारा वेद प्रचार किया गया। २७ अगस्त को प्रात ७ से ९ बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। मुख्य अतिथि विख्यात सुश्री कुमारी पूर्णिमा सेठी थीं। श्री कृष्णलाल जी खन्ना ने आशीर्वाद दिया।

श्री कृष्ण जी की शिक्षा और नीति उपयुक्त

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई मे रविवार १३ से शुक्रवार १८ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। १८ को अथर्ववेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर डा गौतम श्रीमाली स्वामी प्रेमानन्द जी प० अर्जुनदेव स्नातक, कैप्टन देवरत्न आर्य आदि ने कहा श्रीकृष्ण जी की शिक्षाओ और नीतियो का आज की परिस्थितियो मे भी महत्त्व है।

श्रद्धांजलि के साथ

(पृष्ठ १ का शेष)

चिकित्सक आचार्य रामशास्त्री के प्रति केवल शान्ति की प्रार्थना व श्रद्धांजलि देने के साथ उनके अद्भुत व्यक्तित्व एव कृतित्व से प्रेरणा लेकर उनकी स्मृति को चिरस्थायी करने का सकल्प लेकर उसे कार्यान्वित करना चाहिए। उल्लेखनीय है प्रज्ञाचक्षु आचार्य रामशास्त्री जी के स्मृति शान्ति-यज्ञ की व्यवस्था प-दिल्ली वेद-प्रचार सभा गुरुकुल गौतम नगर आदि अनेक सस्थाओ ने की थी।

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन:-३१०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यसन्देश

वर्ष १८, अक ४४ ` रविवार, १० सितम्बर १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५१ दयानन्दाब्द । १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपये आजीवन—३५० रुपये विदेश मे ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह की नृशंस हत्या

भारत को एक नई खूंखार चुनौती : पंजाब से आतंकवाद का खात्मा नहीं हुआ

सुरक्षा एजेंसियों की लापरवाही का काला चिट्ठा उजागर

चण्डीगढ । बृहस्पतिवार ३१ अगस्त के दिन चण्डीगढ के सचिवालय की ड्योढी मे पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिह की नृशस हत्या युद्धभूमि मे लड रहे किसी योद्धा के बलिदान से कम नहीं, वह मारे नही गए, कहना होगा कि उन्होने देश के लिए अपना बलिदान कर दिया है। वह अपने वीरता भरे जीवन और बलिदान से एक अध्याय लिख गए है—बहादुरी का, कुर्बानी का और राष्ट्र के लिए अपने न्योछावर होने का। राष्ट्रपति डा शकरदयाल शर्मा ने ठीक कहा है कि उनकी शहादत हमे उग्रवाद से लडने की प्रेरणा देगी, लेकिन बेअन्तसिह के बलिदान ने हमारे सामने कई समस्याए खडी कर दी है।

बेअन्तसिह के चार वर्ष के शासन से पजाब मे आतकवाद का नियन्त्रण हो गया था। सासाजिक और सामुदायिक जीवन की प्रतिष्ठा से राज्य का औद्योगिक और कृषि सम्बन्धी उत्पादन पहले की तरह निरन्तर बढ रहा था, ऐसी स्थिति मे पजाब के लोकप्रिय मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिह की जघन्य हत्या ने तीन बातो की ओर देश का ध्यान बरबस खीच दिया है। इस हत्या ने पहली चेतावनी दी है कि पजाब से आतकवाद का खात्मा नही हुआ है। सचिवालय जैसे सुरक्षित गढ मे हुए इस बम विस्फोट से सरकार की लापरवाही दीखती है तो इसमे सुरक्षा एजेंसियो की भी कलई खुल गई है। पहला सवाल तो यह है कि आतकवाद से लडने की सरकार मे क्षमता नही है ? और सुरक्षा एजेसियो की शिथिलता को दूर करने का क्या उपाय है ?

बेअन्तसिह की हत्या आतकवादियो की ताकत का नही, बल्कि आतकवादियो या देशद्रोहियो द्वारा सुरक्षा व्यवस्था मे प्रवेश का ज्वलन्त उदाहरण है। इस दुर्घटना ने एक बार फिर सुरक्षा एजेसियो की लापरवाही का काला चिट्ठा उजागर कर दिया है। इसी के साथ अनेक वर्षों से पाकिस्तान कश्मीर और पजाब मे आतकवाद को खाद पानी देता रहा है। उसने अपने देश मे आतकवादियो के लिए ३३ प्रशिक्षण शिविर चला रखे है, उनमे पाकिस्तान चाहने वाले पृथकतावादियो को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अनेक आतकबादी गुटो की अमेरिका, इंग्लैण्ड और कनाडा में शाखाए हैं। उनका ख्याल है कि अलग इजराइल पाने के लिए यहूदियो ने जैसे सघर्ष किया उसी प्रकार खालिस्तान के लिए करना पडेगा।

पिछले दिनो कश्मीर की स्थिति मे थोडा सुधार होते ही आतकवाद का दूरस्थ कन्ट्रोल करने वाले तत्वो ने बेअन्तसिह की हत्या कर स्पष्ट कर दिया है, पजाब के बारे मे हमे कही अधिक सावधान होना पडेगा। अब समय आ गया है सभी राजनीतिक दलो को कश्मीर और पजाब से आतकवाद का खात्मा कर उन्हें दूर से भडकाने वाले विदेशी आकाओ के मनसूबे व्यर्थ करने के लिए दोनो ही क्षेत्रो मे एक राष्ट्रीय नीति बनाकर सेना और जनता की सक्रिय सहायता से इन क्षेत्रो से आतकवाद के सम्भावित खतरे का सामना करने के लिए एक राष्ट्रीय मोर्चा बनाना होगा।

कश्मीर से कन्या कुमारी तक भारतीयों की एक भाषा

भाई, मेरी आंखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं, जब कश्मीर से कन्या कुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को समझने और बोलने लग जाएंगे। अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करते हैं। —महर्षि दयानन्द

आर्य विचारधारा के विस्तार के लिए सचेष्ट रहें

आर्यसमाज बम्बई (काकड़वाड़ी) में वेद-प्रचार सप्ताह कार्यक्रम सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी द्वारा सर्वप्रथम सस्थापित आर्यसमाज बम्बई (काकडवाडी) मे वेद–प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम उत्साह के साथ हुआ। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी हुआ। इस यज्ञ मे ब्रह्मा की भूमिका पाणिनि कन्या महाविद्यालय की सस्थापिका आचार्या डा० प्रज्ञादेवी जी व्याकरणाचार्या ने प्रस्तुत की। वेदपाठ पाणिनि कन्या महाविद्यालय की छात्राओ तथा आर्ष गुरुकुल एटा के छात्रो ने किया।

प्रतिदिन सायकाल वेद के विभिन्न कल्याणकारी तथ्यो को आधार बनाकर डा० प्रज्ञादेवीजी तथा डा० वागीश शर्मा के प्रवचन हुए। श्रावणी पर्व के दिन नवीन यज्ञोपवीत धारण की विधि सम्पन्न हुई तथा सायकाल को हैदराबाद के धर्मवीरो का बलिदान स्मरणदिवस तथा सस्कृत रक्षा सम्मेलन आयोजित हुआ, जिस मे गुरुकुलो के छात्र-छात्राओ तथा आमन्त्रित विद्वानो ने विचार व्यक्त किए।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर डा० प्रज्ञादेवी, डा० वागीश शर्मा, प० रामदत्त शर्मा, कैप्टन देवरत्न आर्य आदि ने प्रेरक विचार प्रस्तुत किए।

आमन्त्रित विद्वानो, अतिथियो का आर्यसमाज के प्रधान श्री झाऊलाल शर्मा, मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय, उपप्रधान श्री करसनदास राणा, श्री जगनप्रसाद गौतम आदि अधिकारियो ने स्वागत किया। मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय ने विद्वानो, अतिथियो का धन्यवाद करते हुए आशा प्रकट की कि इसी प्रकार आर्यसमाज की विचारधारा के विस्तार के लिए सचेष्ट रहेंगे।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेदों का प्रचार-प्रसार आर्यसमाज का मुख्य कार्य

वेदों और यज्ञ की विचारधारा जन-जन तक व्यापक रूप में पहुंचानी होगी

डा० महेश विद्यालंकार

"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है' ऐसी धारणा और मान्यता किसी और विचारधारा वालो की नही है। ऋषि दयानन्द का जहा अनेक क्षेत्रो मे स्मरणीय एव वन्दनीय योगदान है, वहा वेदो के यथार्थ व वैज्ञानिक स्वरूप का ससार के सामने रखना, अपने में उनका अभूतपूर्व कार्य था। उन्होने वेदो के सत्य स्वरूप को जीवन व जगत् के साथ जोडा, वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद स्वत प्रमाण है। वेद सबके है और सबके लिए हैं उनमें सृष्टि और मानवता का चिन्तन है। वेद सार्वभौतिक सार्वकालिक एव सार्वदेशिक चिन्तन की दृष्टि देते है। सृष्टि के आरम्भ मे परमेश्वर ने प्राणिमात्र के कल्याणार्थ वेद ज्ञान किया।

आर्यसमाज को वेदो के पठन-पाठन, रक्षण तथा परम्परा को जीवित रखने आदि की वसीयत मिली है, इसीलिए वेदो का प्रचार-प्रसार, उसका मुख्य कार्य है। उसके अतीत का इतिहास गवाह है कि वेद–परम्परा को जीवित रखने और आगे बढाने के लिए न जाने कितने लोगो ने अपने तन-मन-धन न्योछावर कर दिए। उन्ही तपस्वियो, त्यागियो, बलिदानियो आदि का पुण्य प्रताप है, जो वेद ज्ञान-परम्परा हमे प्राप्त हुई है। इस वेद ज्योति के ज्ञान को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए न जाने कितने विधर्मियो और आततायियो ने आक्रमण किए, फिर भी यह वेद ज्ञान हमें आलोकित कर रहा है। इस दृष्टि से हम लोग भाग्यशाली हैं।

वेद-प्रचार घट रहा है

दुखद पीडा यह है कि आज का आर्यसमाज, सभाए-सगठन सस्थाए आदि वेद-प्रचार के मुख्य कार्य के विमुख हो रही है? यह हमारे पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वेद–प्रचार घट रहा है। गौण कार्य स्कूल, औषधालय, बरात घर-दुकानें मैरिज ब्यूरो आदि तेजी से बढ रहे है। इनसे समाज मन्दिरो की सात्विकता, धार्मिकता व पवित्रता नष्ट हो रही है। यह कार्य तो सभी कर रहे है। वेद–प्रचार का कार्य कोई नही कर रहा है। इसकी जिम्मेदारी मात्र आर्यसमाज के ऊपर थी, वेद मन्दिर, वेद–कथाए, वेद सम्मेलन और वेद मन्त्रो द्वारा कर्मकाण्ड और नही करता है। 'वेद की ज्योति जलती रहे' और कोई यह नारा नही लगता है। वेद के आदेश उपदेश और सन्देश को जनमानस तक पहुचाने की और कोई जिम्मेदारी नही समझता है। ऋषि ने इसीलिए कहा है–वेद का पढना–पढाना, और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।' आज हम सब लोग मिलकर, इस परमधर्म का गला घोट रहे है, जिन समाज मन्दिरो और सस्थाओ मे वेदाध्ययन शालाए होना चाहिए थी, वहा दुकाने और स्कूल है। वहा सदस्यो, अधिकारियो, पुरोहितो व उपदेशको मे धार्मिकता, नैतिकता आध्यात्मिकता होनी चाहिए थी, वहा नजदीक जाकर घृणा होने लगती है। वेद-प्रचार का दर्द व बेचैनी किसे है? सब ऊपर से नीचे तक पद, स्वार्थ अहकार, कुर्सी, धन व सुख सुविधाओ की दौड मे लगे हुए है, इसीलिए सर्वत्र विवाद-झगडे ईर्ष्या द्वेष आदि फैल रहे हैं? क्या ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी व सन्यासी सभी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज को कैश करके भुना करके अपने आश्रम सस्थाए सस्थान और फिक्स डिपाजिट स्थिर जमा बढा रहे है! किसे फुर्सत है महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के दर्द को समझने की? यदि महर्षि दयानन्द के दर्द को समझा होता तो दुनिया की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज अराजकता, अनुशासनहीनता, व भ्रष्टाचार की दुरव्यवस्था मे न होता? सत्य यह है कि 'सगच्छध्व', 'मित्रस्य चक्षुषा', 'समानो मन्त्र', 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, जैसे आदश वेद-ज्ञान की हम अवहेलना व खिल्ली उडा रहे है, वैसे और कोई नही? ऋषि दयानन्द की आत्मा हमारी करतूतो पर कलपती होगी, हमे धिक्कारती होगी? रोती होगी।

आर्यो, क्या ऋषि दयानन्द ने इसीलिए आर्यसमाज बनाया था? जो ऋषि ने हमे विचार–सिद्धात नियम, नैतिकता आदर्श आदि दिए थे, आज हम उनके विपरीत आचरण कर रहे हैं? हम मूल से हटते जा रहे हैं? हम इतने स्वार्थान्ध होते जा रहे हैं कि धार्मिक स्थानो, सभा, संगठनो व सस्थाओ मे पदो के लिए लड रहे हैं। इन्ही बातो से हमारी विचारधारा में आस्था रखने वालों की सख्या बडी तेजी से घट रही है? युवा पीढी हमसे अलग होती जा रही है? व्यक्ति के जाते ही उस परिवार से आर्यसमाज का शान्तिपाठ हो जाता है। हमारी सन्तानें हमारे क्रियाकलापो से आर्यसमाज की धारा से नही जुड पा रही है? एक खतरा और तेजी से फैलता जा रहा है–आर्यसमाज के पास करोडो की सम्पत्ति सभा-सगठनो सस्थाओ और समाज मन्दिरो के पास है, उस पर गैर आर्यसमाजियो की गृद्ध दृष्टि बड़ी तेजी से पडने लगी। जो येन-केन-प्रकारेण कब्जा व अधिकार करना चाहते है, कर भी रहे है और हो भी गए हैं। ये लोग छद्मवेश से प्रवेश पा लेते है, फिर पदो की तिकड़म करते है। आर्यसमाज के सगठन की लडाई मे यह भी महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसे आज हम नही समझ पा रहे है? इसके परिणाम दूरगामी होंगे। इन सब बातो तथा परिस्थितियो से आर्यसमाज को निकाल कर मुख्य उद्देश्य वेद-प्रचार पर बल देना होगा। (शेष पृष्ठ ६ पर)

बोध-कथा

सेहत का राज : पैदल चलो

अरब मे एक फकीर रहता था। उसके इलाज से कठिन से कठिन बीमारिया भी दूर हो जाती थी। उन्ही दिनो बगदाद का एक सरदार सिरदर्द की बीमारी से बहुत परेशान था, सब तरह के इलाज कराने पर भी जब उसे कोई लाभ नही हुआ, तब कई लोगो ने सरदार को सलाह दी कि वह उस फकीर अल्लामा इशा से इलाज कराए। सरदार ने अपने एक गुमाश्ते को अल्लामा के पास भेजा। जब उसका गुमाश्ता फकीर के ठिकाने पर पहुचा तब उसने वहा एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति को ऊट चराते हुए देखा। गुमाश्ते ने ऊट चराने वाले से फकीर अल्लामा इशा का पता पूछा। ऊट चराने वाले ने कहा–कहिए क्या बात है? मै ही अल्लामा इशा हू।"

यह देखकर गुमाश्ते को बहुत अचम्भा हुआ। उसने फकीर के नीरोग शरीर के बारे मे जिज्ञासा प्रकट की तो अल्लामा बोले–"मैं प्रतिदिन पैदल चलता हू और इस पैदल चलने को ही शरीर और मन की श्रेष्ठ साधना के रूप मे अपनाए हुए हू।" इस पर गुमाश्ते ने फकीर से सरदार का इलाज करने के लिए सरदार के घर पर जाने की प्रार्थना की तो फकीर ने उत्तर दिया–"माफ कीजिए, मैं इलाज के लिए किसी के घर नही जाता।"

गुमाश्ता निराश लौट गया। उसने सरदार को सारा ब्योरा बताया, तब सरदार ने स्वय ही फकीर के पास जाने का निश्चय किया और कई दिनो के सफर के बाद वह अल्लामा के पास पहुचा। अल्लामा ने उसे भली प्रकार देखा। उसके बाद उसे उसे एक कीमती दवाई की पुडिया देते हुए कहा–"इस बढिया दवा की सौ खुराक लेनी है। अल्लाह ने चाहा तो तुम्हारा सिर दर्द छूमन्तर हो जाएगा।' फकीर ने सरदार को सलाह दी जब भी पसीना आए तब थोडी-सी दवा सिर पर मल लेना।'

अल्लामा की नसीहत के अनुसार सरदार को पैदल ही वापस जाना पडा। खूब पसीना आने के लिए सरदार ने तेज चलना शुरू कर दिया। बीस दिन के लम्बे सफर मे सरदार को कई बार पसीना आया और उसने हर बार पुडिया खोल कर दवाई सिर पर लगा ली। घर लौटने तक सरदार का सिर दर्द पूरी तरह दूर हो गया था 'अब बची हुई दवा का क्या किया जाए'–प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए सरदार ने अपने गुमाश्ते को फकीर के पास भेजा।

जब फकीर अल्लामा इशा ने गुमाश्ते की बात सुनी तो हसते हुए कहा–"वह दवा तो मामूली मिट्टी है, उसे फेंक सकते है। तुम्हारे सरदार का असली इलाज तो लम्बा सफर तय करना और लौटना था। अपने सरदार और साथियो को पैदल चलने के लाभ बताना और कहना कि आदमी पैदल चलने की आदत छोड देने से ही रोगी होजाता है।"

–नरेन्द्र

हम सब में संकल्प एक जैसे हों !

समानी व आकूति समाना हृदयानि व ।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति ॥ ऋग्वेद १०,१९१,४

हम सब के सकल्प एक-जैसे हो, सबके निश्चय एक से हो, सबके आशय एक-जैसे हो। सबके मनो मे एक-सरीखी ऊची भावना हो। सब लोग एक दूसरे से सहयोग करते हुए अच्छे ढग से अपने कार्यों को पूर्ण करे।

सम्पादकीय अग्रलेख

समान मानव-संहिता की महत्ता

महाभारत के शान्ति पर्व मे उद्घोषणा की गई है कि इस मानव से अन्य कुछ भी श्रेष्ठतर नही है—न मानुषाच्छ्रेष्ठतर हि किंचित्। (शा० पर्व ८०।१२) "मानववाद एक दर्शन के रूप मे—"ग्रन्थ मे कारलिसे लेमा की स्थापना है—"विश्व के अनेक चमत्कारो मे मानव सरीखा दूसरा कोई चमत्कार नही है।" एक अन्य पाश्चात्य चिन्तक पास्कल ने मानव को ससार का सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक प्राणी स्वीकार किया है। एतेरेय उपनिषद् ने भी स्वीकार किया है—पुरुष ही भगवान की बनाई हुई सुकृति—श्रेष्ठ रचना है। सुकृत वत इति, पुरुष वाव सुकृतम्। (ऐत० १,२,३) इस प्रकार इस मे कोई सन्देह नही, विश्व की सभी कृतियो मे मानव-जीवन सबसे श्रेष्ठ है—सभी प्राणियो मे मानुष देह दुर्लभ है—'दुर्लभो मानुषो देहो देहिनाम्'—परन्तु खेद का विषय है मानव जीवन श्रेष्ठ होने पर भी पशुता, मानवता और देवत्व का अद्भुत सयोग है। इस मानव देह मे ही देवत्व, मानवता और आसुरी वृत्तिय केन्द्रित है, जब वह इन्द्रियो को नियन्त्रण मे रखता है, उनका दमन-अनुशासन करता है, तब वह दिव्य शक्तियो से पूर्ण देव हो जाता है, जब वह सब प्रकार के लोभ का त्याग कर दान-त्यागपूर्वक उपभोग करता है, तब वह मानव बनता है, जब वह अपनी आसुरी वृत्ति छोडकर न कठोरता छोडकर सब से दया करुणा करता है तब वह असुर से सुर बन जाता है।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव के सामने यह समस्या रही है कि वह क्रोध, कठोरता छोड कर आत्म-नियन्त्रण कर त्यागपूर्वक सच्चा मानव-जीवन कैसे व्यतीत करे। वेदो मे मानव का आह्वान किया गया है—'मनुर्भव जनया दैव्य जनम्' तुम दिव्य जन के जीवन को समुन्नत कर सच्चे मानव बनो। यह सच्चा मानव वह उसी स्थिति मे बन सकेगा जब वह मानव समस्त प्राणियो को मित्र की दृष्टि से देखेगा। (मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।) मानव को वैदिक चिन्तन मे कहा गया है—मैं पृथिवी माता का पुत्र हू पुत्रोऽह पृथिव्या—वेद मे ही कहा गया है—ये सब मनुष्य सब भाई है, उनमे जन्म से कोई बडा नही, कोई छोटा नही—इस समानता के भाव से सब ऐश्वर्य और उन्नति के कल्याण-मार्ग पर आगे बढते है—अज्येष्ठासो अकनिष्ठास ऐत, स भ्रातरो वावृधु सौभगाय। वैदिक चिन्तन मे मानवमात्र को पृथिवी माता का पुत्र कहा गया है—वहा मानव मे किसी प्रकार का भेदभाव किए बिना मानवमात्र का आह्वान किया गया है—हे अमृत के पुत्रो, सबके सब सुनो, जीवन मे समानता का व्यवहार करो, किसी प्रकार का कोई भेदभाव न करो।

यह कितनी चिन्ता और खेद का विषय है कि प्रकृति और हमारे मौलिक चिन्तन मे मानव को समान कह और मानकर उस मे लिंग, प्रदेश, देश, धर्म और चिन्तन के आधार पर तरह-तरह के भेदभाव और विषमता के व्यवहार किए जा रहे है। हम मानव चोला धारण कर दानववृत्ति छोड कर झूठे देवत्व के अहकार मे न पड़कर सच्चे मानव बने, उसके लिए मानव मात्र मे एक जैसा कानून, एक जैसा व्यवहार, एक जैसे अवसर और सुविधाए मिलनी चाहिए। मानव मात्र को शिक्षण, उन्नति के समान अवसर-सुविधाए मिलनी चाहिए, उन्हें भोजन, वस्त्र, निवास आदि की समान स्थिति मिले, उन्हे चिकित्सा एव सब तरह के ज्ञान विज्ञान मे समुन्नति के समान अधिकतम अवसर मिलने चाहिए—भारतीय सस्कृति का सदा से यही सन्देश है, हमारे गुरुकुलो और ऋषि—आश्रमो मे भी यही समानता का व्यवहार और आचरण था। आज हमारे देश के सम्मुख अनेक समस्याए हैं। कानूनी समानता और न्याय का तन्त्र रहने पर भी सर्वत्र विषमता, भ्रष्टाचार दिखाई देता है, उसे समाप्त करने के लिए आरक्षण और विशेष प्रावधान की बात कही जाती है। चिकित्सा इजीनियरी, शिक्षण, न्याय, प्रौद्योगिकी, कानून-व्यवस्था के क्षेत्र मे किसी प्रकार का भेदभाव, विषमता, आरक्षण व सरक्षण समस्या का समाधान नही करेगे, उनसे सघर्ष और द्वेष ही बढेगा, इस भीषण समस्या के समाधान का एकमात्र समाधान यही है कि इस समाज, राष्ट्र और विश्व भर मे महर्षि दयानन्द के सन्देश एव मन्तव्यो के अनुसार समान मानव सहिता की प्रतिष्ठा कर उसे सच्चाई-ईमानदारी से कार्यान्वित किया जाए।

चिट्ठी-पत्री

विज्ञान और मातृभाषा

आज उन आलोचको के इस कथन से सहमति प्रकट करना कठिन है, जो कहते है—हमारी मातृभाषाओ मे तो क्या हमारी प्रमुख भाषाओ मे मौलिक या अनूदित वैज्ञानिक ज्ञान और सूचनाए उपलब्ध नही है खेद है पिछली आधी शताब्दी मे इन भाषाओ के प्रसार के लिए हमने जबानी जमाखर्च ही किया है, उनके प्रति अपना दायित्व नही निवाहा है। हमारी प्रमुख भाषाए वैज्ञानिक ज्ञान और विषय वस्तु की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। प्रारम्भिक पाच दशको मे हमारे स्नेही मास्टर मोशय-प्रोफेसर सत्येन बोस आपेक्षिकता के सिद्धात जसे कठिन विषय को चुस्त बगला भाषा मे पढाते थे, वह कार्य, ऊर्जा और शक्ति आदि के लिए पृथक् बगला शब्दो का व्यवहार करते थे। यह सत्य है कि आज के भारत मे प्रोफेसर सत्येन बोस-जैसे बहुत कम व्यक्ति है जो भारतीय भाषाओ मे जटिल वैज्ञानिक और तकनीकी विषय पढा सकते है, परन्तु यह कहना कि हमारी भारतीय भाषाए वैज्ञानिक सन्दर्भ की दृष्टि से बहुत पिछडी है यह पूर्णतया गलत है।

मै प्रोफेसर नर्लीकर के साथ सहमत हू कि विज्ञान का अध्ययन मातृभाषा मे कराना चाहिए। इसके लिए आयोजन, पाठ्यक्रम, विकास, भारतीय भाषाओ मैं वैज्ञानिक विषयो के भाषायी रूपान्तर के लिए उपयुक्त शोध की व्यवस्था होनी चाहिए। इन सभी बातो मे मातृभाषा मे विज्ञान का अध्यापन करने वाले उपयुक्त शिक्षको के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।

—बी०बी० मोहन्ती, भारतीय जनसचार सस्थान, धन कनोल, उडीसा

बृहत्तर भारत के संस्थापक श्रीकृष्ण

आपका साप्ताहिक आर्यसन्देश हमारे लिए अपूर्व वैद्धिक सम्पदा है, इससे ग्रामीण भारत के दूरस्थ कार्यकर्त्ताओ को शक्ति और प्रेरणा मिलती है।

श्री नरेन्द्र वाचस्पति के "बृहत्तर भारत के सस्थापक श्री कृष्ण" के लेख से भगवान श्री कृष्ण के जीवन और कृतित्व पर समुचित प्रकाश पडता है। श्री नरेन्द्र वाचस्पति के इस सुन्दर लेख के लिए हार्दिक धन्यवाद। हार्दिक शुभ-कामनाए।

—आर० के० स्वामी, प्रभुपाद सेवाश्रम लवकुश घाट,
वाल्मीकि नगर, पश्चिमी चम्पारण, बिहार-८४५१०७

घृणा-वैमनस्य फैलाने का मामला उठाया जाए

साप्ताहिक आर्यसन्देश के ६ अगस्त, १९९५ के अक मे भारत के कल्याण-मन्त्री श्री सीताराम केसरी द्वारा हिन्दुओ को बदनाम करने विषयक मामला भारत के सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख ले जाना चाहिए। यह हिन्दुओ के विरुद्ध घृणा-वैमनस्य फैला कर मुस्लिमो के वोट लेने के घृणित इरादे का प्रतीक है। महाराष्ट्र के भू०पू० मुख्यमन्त्री श्री शरद पवार भी ऐसी कोशिश कर चुके है।

शुभ इच्छुक अश्को

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया कम प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

सम्पादक

हिन्दी दिवस ११ सितम्बर के अवसर पर

राष्ट्र की अस्मिता के अनुरूप हिन्दी को गौरव दीजिए

लेखक—डा० कृष्णलाल आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-७

हिन्दी के विषय में हम किसी को दोष क्या दें, हमें अपने आप से निराशा होती है, ग्लानि होती है। खानापूरी के लिए ही सही सरकार ने बहुत सी सरकारी नौकरियो की भर्ती, परीक्षाओ मे हिन्दी माध्यम का विकल्प किया हैं और अपने विभागो में दिखावे के लिए हिन्दी मे काम करने के आदेश निकाले है। परन्तु एक और तो हमारे नवयुवक परीक्षाओ मे हिन्दी माध्यम के विकल्प का समुचित लाभ नही उठाते, दूसरी ओर सरकारी कार्यालयो के बडे अफसर और बहुत से मन्त्री व्यवहार मे हिन्दी को आगे नही आने देते। इतनी दूषित मानसिकता है कि बहुत बार हिन्दी प्रयोग के लिए नियुक्त अधिकारी को भी मन मारकर साहब के निर्देशानुसार अग्रेजी मे कार्य करने को विवश होना पडता है। रेलवे मे आरक्षण चार्ट द्विभाषी नही बनाए जाते, टिकटो पर ली गई राशि शब्दो मे केवल अ ग्रेजीं मे लिखी जाती है, अनबंटी डाक लौटाई जाती है तो उस पर निर्देश केवल अग्रेजी में होता हैं यथा नाट ट्रेसेबल (मिला नहीं), रिफ्यूज्ड (इन्कार किया), एड्रेस चेंज्ड (पता परिवर्तित), एड्रेस इन्कम्प्लीट (पता पूरा नहीं) इत्यादि। क्या डाक कर्मियों ने कभी यह सोचा कि जिनके लिए यह निर्देश लिख कर डाक लौटाई जा रही है, उनमे से कितने इन्हें समझेंगे। उधर सरकारी दूरदर्शन का अ ग्रेजीकरण तीव्र गति से होता जा रहा है। बहुत से विज्ञापन अ ग्रेजी मे आते हैं। हिन्दी कार्यक्रम बताने के लिए भी केवल अंग्रेजी (रोमन लिपि) का आश्रय लिया जाता है। कार्यक्रम सम्बन्धी सूचनायें केवल अंग्रेजी मे दिखाई जाती हैं। प्रश्न यह है कि दूरदर्शन करोडो हिन्दी बोलने, पढने, समझने वाली जनता के लिए है या मुट्ठीभर अ ग्रेजी के दुराग्रही लोगो के लिए? हमारे नेता, मन्त्री, अफसर इस तथ्य को क्यो नहीं समझते? क्या किसी भी स्वतन्त्र देश मे ऐसा होता है? कभी अंग्रेजी के अधीन रहे राष्ट्रमण्डलीय देशो को छोड दें, तो स्वभाषा की यह दुर्दशा अन्यत्र कही भी दिखाई नही देगी।

हमारे नेता, मन्त्री किसी भी देश मे जाए या बाहर से आने वाले किसी अतिथि के सम्मुख बोलें तो न तो वे अपनी राजभाषा का प्रयोग करते हैं और न उस देश की भाषा का। वे केवल अ ग्रेजी का प्रयोग करते हैं—जबकि सभी देशो के राजनयिक दुभाषिया लेकर चलते हैं और शान से अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं। यह राष्ट्र-सम्मान का प्रश्न है।

मानसिक दासता की अनन्त गाथा

जनता को रोजी-रोटी दिलवाने वाली केवल अंग्रेजी दिखाई देती है। इसीलिये 'मां' अपने आप को मम्मी कहलवाने मे गर्व का अनुभव करती है। बच्चो को बोलना आते ही वस्तुओ, अगो के अग्रेजी नाम रटवाती है, उसे अग्रेजी मे गिनती सिखाती है। बच्चे की बुद्धि कुण्ठित होती है, वह अपनों मे पराया हो जाता है। एक बार मैं किसी के घर गया। वहा बच्चे से उसकी आयु पूछी तो उत्तर मिला 'इलेवन'। मैंने कहा समझा। 'अपनी भाषा मे बोलो तो वह बगलें झाकने लगा, फिर यह कह भागने लगा कि 'आप इतना भी नहीं जानते', इतने मे उसकी मा आ गई। बच्चे को कुछ कहने के स्थान पर मुझे कहने लगी—ठीक ही तो कह रहा है, आप इतना भी नहीं जानते। मैं मन मार चला आया और सोचने लगा कि महर्षि दयानन्द, गाधी जी, मालवीय जी के इस देश की अस्मिता कहां गई? कहा गया स्वतन्त्रता का उद्दाम उत्साह। इस सब मे सरकार तो दोषी हैं, ही, हम भी कम दोषी नहीं। मेरे एक मित्र के पुत्र के विवाह का निमन्त्रण अंग्रेजी में आया। निमन्त्रण लडके की दादी की ओर से था जिसने अंग्रेजी कभी बोली, पढी, समझी नहीं होगी। कैसी विडम्बना है। कैसी थोथी शान है। मैं अंग्रेजी के निमन्त्रण पर नहीं जाता, तो बहुत लोग बदले में मेरे हिन्दी के निमन्त्रण पर नहीं आते। यह दास मनोवृत्ति की पराकाष्ठा है। आयुर्वेद का अध्ययन करने वाले अंग्रेजी का प्रयोग करने में गौरव का अनुभव करते हैं। कहा तक लिखें, मानसिक दासता की अनन्त गाथा। दूरभाष की संख्या अग्रेजी मे ही बोलेंगे। क्यो नही, हिन्दी में बोली जा सकती? क्यो नही हम दूसरे से हिन्दी मे संख्या बोलने का आग्रह कर सकते?

पाच-छह वर्ष पूर्व हालैंड के एक सज्जन दिल्ली में थे। उन्होंने समाचार पत्र मे लिखा कि मुझे यहा के लोगों पर आश्चर्य है कि जिस दुकान या कार्यालय मे जाता हू मुझसे लोग अंग्रेजी मे बात करने लग जाते हैं, मुझे बताया पडता कि मैं हिन्दी जानता हू और अंग्रेजी मेरी भाषा नहीं है। इसी प्रकार मेरा एक कोरियाई छात्र है जो बहुत सुविधापूर्वक हिन्दी बोलता है, परन्तु लोग उसे देख अग्रेजी झाड़ने लगते हैं। यह पराधीन मानसिकता है किसी गोरी चमडी तथा विदेशी आकृति वाले को देखकर हम यह समझ बैठते हैं कि वह अ ग्रेजी ही जानता होगा। हमारा यह भी कर्त्तव्य है कि विदेशी व्यक्ति को अपनी भाषा से परिचित कराए। वास्तव में यह अस्मिता का प्रश्न है। बहुत वर्ष पहले एक जापानी युवक हिन्दी सीखने भारत आया था। भारत से स्वदेश लौटते हुए उसने अत्यन्त निराशाभरे स्वर मे कहा था कि मैं यहा हिन्दी सीखने आया था, परन्तु अ ग्रेजी सीख कर जा रहा हू।

राजभाषा के प्रयोग का आग्रह

और अब उद्योगों, उद्यमो, निर्माणियों में तीव्र गति से निजी क्षेत्र का विस्तार हो रहा है। निजी क्षेत्र मे बहुत-सी विदेशी तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियां पदार्पण कर चुकी हैं जिन्हें सरकारी कार्यालयो, अफसरो के व्यवहार से यह निश्चित हो जाता है कि भारत में अ ग्रेजी का ही बोलबाला है। जो भारतीय उद्यमी भी निजी क्षेत्र मे आ रहे है, वे उपरिलिखित मानसिकता लिए हुए है। वे जो भी बिजली के, इलैक्ट्रानिक या अन्य उपकरण बनाते हैं, उनके प्रयोग सम्बन्धी निर्देश केवल अंग्रेजी में छपवाकर रखते हैं, जैसे कि उन उपकरणो का प्रयोग करने वाले सभी ग्राहक अंग्रेजी के विद्वान् हो। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय सरकार का यह कर्त्तव्य है कि सभी कम्पनियो से हिन्दी मे व्यवहार करे और उनके भी भारत की राजभाषा मे व्यवहार का आग्रह करे। विशेष रूप से जब कि अनेक सरकारी। अर्धसरकारी उपक्रम भी निजी क्षेत्र मे हस्तान्तरित होने की प्रक्रिया मे है, सरकार के लिए और भी आवश्यक है उन्हे सरकारी भाषा-नीति के अनुरूप कार्य करने का निर्देश दिया जाए। इससे उपभोक्ताओ को तो सुविधा होगी ही, संविधान के अनुरूप देश की अखण्डता के लिए राजभाषा के प्रयोग को भी बढावा मिलेगा। यदि सरकार निर्देश दे (और राज्य सर्वोच्च प्रभुतासम्पन्न होने के कारण संविधान के अन्तर्गत दे ही सकता है) तो कम्पनियो द्वारा इसका पालन देश की एकता को सुदृढ बनाने मे सहायक होगा।

कुछ उद्यमी उद्योगों में कर्मचारियो, अधिकारियो, स्वामियो के मध्य सम्पर्क की कमी के कारण होने वाली उद्यमी की अव्यवस्था या पिछडेपन की चिन्ता बताते हैं। उसके मूल मे भाषा का अन्तराल बहुत बडा कारण है अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलो से पढकर आए हुए व्यक्ति जब अफसर बन जाते हैं तो उनकी दृष्टि में 'हिन्दी मे गिनती बोलने-समझने वाले हेय हो जाते है। इस अन्तराल को दूर करने का उपाय यह है कि नियुक्ति के समय विषय के ज्ञान के साथ उनके स्वभाषा-ज्ञान की भी परख की जाए क्योंकि सामान्य कर्मचारी से उन्हें उस भाषा में व्यवहार करना है। इस प्रसंग में जापानी उद्योगों का उदाहरण स्मरणीय है। वहां सारा कार्य स्वभाषा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्रीराम-श्रीकृष्ण का इतिहाससम्मत स्वरूप प्रस्तुत करें

—सत्यदेव विद्यालंकार

विद्वान लेखक ने आर्य विद्वानो के सम्मुख चुनौती प्रस्तुत की है कि वे राम और कृष्ण के इतिहाससम्मत स्वरूप को प्रस्तुत करें। आर्य समाज के मनीषी, गु० कु० कागड़ी विश्वविद्यालय के भू० पू० आचार्य स्वर्गीय पं० चमूपति जी के अद्भुत ग्रन्थ 'योगेश्वर कृष्ण' का अवलोकन करने से सम्भवत: उनका समाधान हो सकेगा। इसी प्रकार बाल्मीकि रामायण के आधार पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के बारे में उनकी जिज्ञासा से लिए उपयुक्त पाठ्यसामग्री उपलब्ध हो सकती है।

रामचन्द्र कह गए सिया से ऐसा कलियुग आएगा।
हंस चुगेगा दाना दुनका कौआ मोती खाएगा॥

यह प्रसिद्ध उक्ति हिन्दू मानस के मूलस्वरूप को प्रकट करती है। इसका अभिप्राय यह है कि 'सतयुग बहुत उन्नत धार्मिक, उच्च आदर्शों वाला था। क्रमश: त्रेता और द्वापर और कलियुग में ह्रास होता गया और अब कलियुग अन्धकन्र का युग आ गया है।

मन्वन्तर और युगो की गणना तो आर्य समाज मानता है। बहुत कुछ इसी आधार पर यह प्रयत्न चलता रहता है कि प्राचीनतम साहित्य मे वर्तमान काल तक जो ज्ञान विज्ञान की उन्नति हुई, उसका मूल खोज निकाला जाए। आकाश और समुद्र मे यातायात के साधनो और युद्धादि मे प्रयोग होने वाले शस्त्रों के आदिरूप ढू ढे जाए। यह भी प्रयत्न चल रहा है कि वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक विकास की उन्नति भी कहा तक प्राचीन समय मे थी—उसे दर्शाया जाए।

इस मूल भावना के अतिरिक्त रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों को भी ऐतिहासिक तथ्यों के रूप मे लिया जाए। इसमे कठिनता तब होती है, जब इन महाकाव्यो मे वर्णित पात्रों मे जीवन की असम्भव और अलौकिक तथ्यो को परीक्षा की जाए। उदाहरण के रूप में लगभग महाभारत सर्वत्र मान्य के तथ्यो की परीक्षा की जाए। महाभारत के आधार भूत पात्रो की उत्पत्ति लगभग असम्भव है। पराशर ऋषि का धीवर कन्या सत्यवती को मत्स्यगन्धा के स्थान पर योधजनगन्धा बनाना, भीष्म की माता गंगा का अचानक प्रकट होना, अपने सात वसुपुत्रों की मृत्यु के बाद अचानक लुप्त हो जाना, कर्ण समेत कुन्ती के चार पुत्रों की और माद्री के दो पुत्रों की देवताओ से उत्पत्ति, गान्धारी के गर्भ से ऋषि वेदव्यास द्वारा १०० विभाग किए जाना तथा दिव्य दृष्टि वाले ऋषि वेद—व्यास द्वारा एक दासी कन्या को गलती से पुत्र देना इत्यादि असम्भव विवरणो से महाभारत की ऐतिहासिकता कहा तक प्रमाणित है।

असम्भव बातो के ये कुछ नमूने मात्र रखे गए हैं। रामायण और महाभारत महाकाव्य असम्भव बातो से भरे पडे हैं।

ऊपर कही कुछ विचित्र बातो के अतिरिक्त एक विस्तृत पृष्ठभूमि इन्द्रलोक, देवी-देवताओ, यक्ष-राक्षस, गन्धर्व, सर्पलोक आदि का ताना—बाना है। दोनो महाकाव्यो के पात्र और देवी देवता परस्पर मिलने—जुलते एक दूसरे लोक मे आते—जाते दिखाए गए हैं, जिनकी सत्ता आज के वैज्ञानिक स्वीकार नही करते।

वस्तुत: रामायण—महाभारत भी उस विशाल पुराण साहित्य के भाग है, जिन्हें असख्य विद्वानो ने अपनी—अपनी सामयिक धारणाओं—मान्यताओ के समर्थन और व्याख्याओं के लिए काव्यात्मक सुन्दर रूप मे लिखा है। यह पुराण साहित्य विशाल हिन्दू धर्म की मान्यताओ का अद्भुत भण्डार है।

महर्षि दयानन्द ने मूल वैदिक साहित्य का मन्थन कर अवतारवाद, मूर्ति—पूजा, जड़—पूजा, भूत—प्रेत आदि के अन्धविश्वास और चमत्कारों का जाल इन सबको निरस्त कर दिया है।

महाभारत और रामायण महाकाव्य लिखने का प्रकार भी विचित्र है। किसी ऐतिहासिक खोज का कहीं उल्लेख नही। सिद्ध महात्माओ ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से आश्रम में बैठे-बैठे ही मूल तथ्यो का साक्षात्कार किया और प्रचलित कथानक को विशाल काव्य का रूप दे दिया है। आध्यात्मिक शक्ति और कवि की स्वाभाविक प्रतिभा प्रशंसनीय है पर उनसे इतिहास का रूप बदल जाता है। राम—कृष्ण सम्बन्धी विशाल काव्य साहित्य में सब प्रतिभावान् कवियों ने अपनी कल्पना से अनेक परिवर्तन किए हैं और अब तक हो रहें है वे सब इतिहास के अंग नहीं। एक अवतार के प्रति श्रद्धा का प्रदर्शन मात्र है जिसे आर्यसमाज स्वीकार नही करता।

इसका एक छोटा—सा उदाहरण देता हूं। श्री राम भक्त मैथिलीशरण गुप्त कविवर ने राम जीवन सम्बन्धी अच्छा साहित्य सृजन किया है उसमें बाल्मीकि रामायण से कई भिन्न स्थापनायें हैं।

कविवर से पूछने पर उनका उत्तर था—"हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता' यह दृष्टिकोण इतिहास को मान्य नही।

आर्यसमाज के विद्वानों के लिए यह एक कठिन कार्य है कि वे राम और कृष्ण के इतिहास सम्मत स्वरूप को उपस्थित करें। इतना ही नहीं, उसे सर्वमान्य भी बनाएं। अभी तक तो ऐसा कुछ भी नहीं दिखाई देता। इसमे प्रतिकूल ऐतिहासिक मान्यताओं के विरुद्ध राम और कृष्ण का अलौकिक रूप प्रचार के सब साधनों द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। आर्य—समाज के सामान्य जन भी उसी रूप से आकर्षित हो रहे हैं।

कलियुग अधर्मयुग है यह भावना भी सर्वत्र व्याप्त है। इन अन्ध—विश्वासो को कैसे दूर किया जा सकता है यह एक चिन्ता का विषय है।

आजकल वैदिक काल के सम्बन्ध में बन रही एक चित्रमाला पर विवाद चल रहा है। आर्य विद्वानो का यह कहना है कि यह चित्रमाला हमारी मान्यताओ के विरुद्ध है। मैं इस विरोध को ठीक समझता हूं, पर आश्चर्य होता है कि राम और कृष्ण के जीवन पर बनी फिल्मो में जो राम और कृष्ण का अनैतिहासिक—अस्वाभाविक—अनैतिक—असम्भव घटनाओ से लबालब भरा जो फिल्म साहित्य सामने आ रहा है, उसकी ओर आर्य विद्वानो का ध्यान क्यो नही जाता।

—४३८६।१७, सुखराली, गुडगावां, हरियाणा

राष्ट्र की अस्मिता

(पृष्ठ ४ का शेष)

में होता है। आज जापान अपने उद्योगो, उत्पादो की गुणवत्ता मे अमेरिका से होड़ ही नही ले रहा, उससे आगे निकल गया है और अमेरिका की ईर्ष्या का कारण बन गया है। जापान से व्यवहार करने के लिए पश्चिमी देशों मे जापानी भाषा सीखी जा रही है। भारत की अस्मिता के अनुरूप हिन्दी को उस गौरवपूर्ण पद पर पहुचाना सरकार के साथ-साथ हम सबका कर्तव्य है। हमे संसद और विधान सभाओ तथा विधान परिषदों आदि में बैठे अपने सासदों और विधायकों पर सक्रिय और प्रभावी दबाव डालना चाहिए कि वे जिस क्षेत्र/भाषा से वोट लेकर संसद, विधान सभा आदि में पहुंचे उसी भाषा मे वहा भाषण दें और पत्राचार करे।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार है

(पृष्ठ २ का शेष)

वेद-प्रचार की आज के जीवन व जगत को महती आवश्यकता है जिस वातावरण, परिस्थितियों व हालात में संसार जी रहा है, उसमें चारों ओर अन्धेरा अर्थात हिंसा, मारकाट, पशुता, दुःख दैन्य, चिन्ता आदि फैल रहे हैं। हममें यदि कोई संजीवनी औषधि का कार्य कर सकता है तो वह है—वेद ज्ञान द्वारा प्रदर्शित विचारधारा। वेद का-चिन्तन हमें दुनिया में जीना सिखाता है। हम अपने जीवन और जगत को कैसे सुखी, शान्त एवं आनन्दमय बनाएं। हम जो पाना चाहे पा सकते हैं। वेद-प्रचार का दायित्व आर्यसमाज के ऊपर है। उसे अपना आत्मनिरीक्षण व आत्मशोधन करना होगा। अपने स्वरूप व कर्तव्य को पहचानना होगा। स्वार्थ, अहकार, तथा पद-लिप्सा से ऊपर उठना होगा। "इदं आर्य समाजाय इदं न मम" के मूल मन्त्र को जीवन में उतारना होगा। पदों की दौड़ से पीछे हटकर सदा सहयोग और प्रेम की पंक्ति में खड़ा होना होगा। कुछ काल के पश्चात स्वतः पद को दूसरों को सौंपने की भावना लानी होगी। आर्यसमाज की आत्मा सुरक्षित रखते हुए प्रचार-प्रसार के आधुनिक साधनों को अपनाना होगा। प्रचार के लिए अपनी पत्र-पत्रिकाओं के स्तर, सामग्री व साज-सज्जा का ध्यान देना होगा। वेद-कथा तथा यज्ञ को मन्दिरों की चारदीवारी से निकाल कर मुहल्लों, घरों, पार्कों व चौराहों से जोड़ना होगा। इन कार्यक्रमों में भक्ति भजन संगीत तथा आस्तिकता धार्मिकता एवं प्रभुभक्ति के प्रवचनो को प्रधानता देनी होगी। यज्ञ व वेद-कथा के वातावरण में पवित्रता, सात्विकता, धार्मिकता लानी होगी। ऐसे कार्यक्रमों के अवसरों पर अधिकारियों व सदस्यों को स्वदेशी वेष-भूषा अपनानी होगी। बड़ी श्रद्धा भक्ति आस्था से दीक्षित होकर दूसरो को अपने चरित्र, व्यवहार व स्वभाव से आकर्षित करना होगा।

अपने पुरोहितो, विद्वानों, सन्यासियों को आदर सम्मान पूर्वक उच्चासन पर बैठाना होगा। उन्हें जनता के बीच बड़े अदब, कायदे व भक्ति भावना से उतारना होगा। जिससे लोगों के मनों में उनको सुनने की उत्सुकता जिज्ञासा व आकांक्षा बढ़े। हम अपने विद्वानों को मच पर ढग से प्रस्तुत नहीं कर पाते है। सम्मानित पुरोहितों, विद्वानों, उपदेशकों और संन्यासियों को भी अपनी चारित्रिक गरिमा को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना होगा। तभी प्रभाव स्थायी पड़ेगा।

आर्य समाज को जलसों जलूसो, लगर व पिकनिकों से शक्ति तथा धन को हटाकर मुख्य कार्य वेद प्रचार पर ध्यान और बल देने की आवश्यकता है। हमारे पास दो ऐसे आधार हैं जिससे हम जनता से जुड़ सकते हैं जिनके बारे में किसी को आपत्ति नहीं है। पहला वेद, दूसरा यज्ञ। आज हमने जनता से सम्पर्क करना छोड़ दिया, इसलिए जनता हम से कट गई यह अपने में सुपरीक्षित है कि आर्यसमाज के पास संसार को देने के लिए अपार वैचारिक सम्पदा है, वैसी अन्य किसी विचारधारा वाले के पास नहीं है। इसका चिन्तन सीधा-सरल व सच्चा है। सर्वत्र, गुरुडम, पाखण्ड, पुजापा, चढ़ावा प्रदर्शन आदि फैले हुए हैं। आज का व्यक्ति सत्य व यथार्थ को जानना चाहता है। यह चिन्तन आर्य विचारधारा के पास ही है।

संक्षेपतः आज जरूरत है। आर्यसमाज को अपने को सभालने की। पदों पर बैठे हुए अधिकारी गण आत्म मन्थन करें हम मिशन व ऋषि के लिए क्या कर रहे हैं? नहीं कर रहे, तो पद त्याग कर दूसरों को कार्य करने का अवसर दें तो बात बनेगी। जो सदस्य, विद्वान, उपदेशक आदि हैं, उन्हे भी आर्य समाज व वेद प्रचार की भावना को तीव्र करना चाहिए तभी वेद प्रचार आगे बढेगा। इसी वेद प्रचार पर हमारा आर्य समाज खड़ा है? वेद प्रचार आगे बढ़ेगा तो आर्य समाज का प्रभाव, और उपयोगिता बढेगी। हमारा परम कर्तव्य है कि हम वेद प्रचार को प्रमुखता देकर आगे बढ़ायें। वेद की विचारधारा जन जन तक पहुंचाकर आर्य समाज के उद्देश्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को सफल बनाएं। तभी हम ऋषि के अनुयायी व आर्य समाजी कहलाने के हकदार हैं।

संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का अभियान शुरू

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के प्रधान श्री रणवीर जी भाटिया ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया कि हमारी आर्य समाज वेद प्रचार में सदैव अग्रणी रही है। इस वर्ष और भी वेद प्रचार को अग्रसर करने के लिए तथा सस्कृत को बढ़ावा देने के लिए सर्वहितकारी समाजिक कार्यो को गतिशील बनाने के लिए एक विशेष योजना बनाई है, जिसमें दसवीं कक्षा से एम०ए० संस्कृत तथा हिन्दी और बी०काम० बी०ए० आदि कक्षाओं के छात्रों को निःशुल्क सस्कृत का अध्यायन कराया जायेगा। इस योजना में शास्त्री और आचार्य कक्षा के छात्र भी भाग ले सकते हैं।

एक और योजना के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश की कक्षाये भी प्रारम्भ की जायेंगी, जिनमे सभी वर्ग के लोग भाग ले सकेंगे। श्री भाटिया जी ने कहा कि जो भी व्यक्ति इसमें अध्ययन करना चाहते हैं वे शीघ्र आर्य समाज मे साय ५ बजे से ६ बजे तक सम्पर्क करें।

—कुलदीप राय आर्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हि० प्र० के तत्वावधान में शताब्दी समारोह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत राज्य स्तरीय शताब्दी समारोह हिमाचल प्रदेश की समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, डी०ए वी० शिक्षण संस्थाओ एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से शनिवार रविवार २३ एव २४ सितम्बर १९९५ को शिमला में आर्य समाज मिडिल बाजार मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

शनिवार दिनांक २३-९-१९९५ को दोपहर १ बजे भव्य शोभा-यात्रा समारोह स्थल से आरम्भ होकर शिमला के मुख्य बाजारों से होती हुई समारोह स्थल पर समाप्त होगा तथा रविवार दिनांक २४-९-१९९५ को प्रात: १० बजे से 'आय विराट महा सम्मेलन" आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान श्री जी०पी० चोपड़ा जी की अध्यक्षता में स्त्री पार्क वी रोड, शिमला में आयोजित किया जायेगा।

आप से प्रार्थना है कि आप सपरिवार अपने इष्ट-मित्रों सहित उक्त कार्यक्रम में पधारने की कृपा करें। सभी विद्यालयों से प्रार्थना है कि वे अपने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को बस द्वारा लेकर शोभायात्रा में अपने विद्यालय के बैनर, लेजियम,बैण्ड एवं सुसज्जित झाकियों सहित अवश्य पधारने की कृपा करें।

आर्यसन्देश का शुल्क तुरन्त भेजिए

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० है, उसका आजीवन शुल्क ३५० रु० है। निवेदन है कि मनीआर्डर, चैक या नकद भेजें।

धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, चिट पर आपकी ग्राहक संख्या लिखी रहती है।

प्रेषक—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 7-8-9-1995 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C) 139/95
दि० पी० पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९/९५

चुनाव समाचार

आर्यसमाज साउथ मोती बाग—प्रधान—श्री ज्ञानचन्द महाजन, कार्यकारी प्रधान—श्री एस०पी० सेठी, मन्त्री श्री पी० के० मल्होत्रा, उपमन्त्री—श्री वेद प्रकाश सोनी, कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र महाजन

आर्यसमाज श्री निवासपुरी—प्रधान—दीनानाथ छाबडा, उपप्रधान—डा० रतनकुमार लूथरा) मन्त्री—श्री लाजपतराय बधवा, कोषाध्यक्ष—श्री ओम्प्रकाश वर्मा।

आर्यसमाज चण्डीगढ सैक्टर—२२, प्रधान—श्री बुधराम आर्य, उपप्रधान—श्री केवल कृष्ण महाजन उपप्रधान—श्री बलवीर सिंह चौहान, मन्त्री—श्री सोमदत्त शास्त्री, उपमन्त्री—श्री ब्रह्मदेव बहल, श्री कमल कृष्ण महाजन, कोषाध्यक्ष—श्री सुभाष आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री देसराज थापर, वाचनालयाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, लेखा निरीक्षक—श्री विश्वामित्र महाजन।

—आर्यसमाज खिचडीपुर कालोनी, ब्लाक—४ का वार्षिक चुनाव—प्रधान—श्री रविदत्त आर्य, उपप्रधान श्री रामपाल, मन्त्री—श्री चन्द्रभान खरोलिया, उपमन्त्री—कालीचन्द, कोषाध्यक्ष—श्री सत्यप्रिय।

—आर्यसमाज पानीपत। प्रधान—श्री मेघराज आर्य, उपप्रधान—श्री योगेश्वर चन्द आर्य, मन्त्री—श्री वीरेन्द्र शिडाल, उपमन्त्री—श्री सुलेखचन्द, प्रचारमन्त्री श्री—ठाकुरदास बतरा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रेमचन्द्र आर्य।

आर्यसमाज हनुमान रोड का ७३वां वार्षिकोत्सव

—"आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ७३वां वार्षिकोत्सव सोमवार दिनाक १३ नवम्बर, ९५ से रविवार, दिनाक १९, नवम्बर, ९५ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

अत दिल्ली। नई दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो से निवेदन है कि उपर्युक्त तिथियो मे अपनी आर्यसमाज मे कोई पर्व का आयोजन न करके आर्यसमाज हनुमान रोड के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर एकता का परिचय दें।"

आर्यसमाज नरेला में वेदप्रचार पखवाड़ा

आर्यसमाज नरेला के तत्वावधान मे ६ अगस्त से २७ अगस्त, तक डा० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री के पौरोहित्य मे पारिवारिक यज्ञ की शृंखला के रूप में वेदप्रचार पखवाडा किया गया। यज्ञ के बाद वेद प्रवचन हुआ।

नरेला नगर के सर्वश्री मा० पूर्णसिंह, प्रेमकृष्ण, सन्तोष कुमार, महेन्द्र सिंह, मा० राजसिंह, यज्ञदत्त गौतम, ओम्प्रकाश जी, पहलवान दीपचन्द, डा० धर्मवीर, महा० सूरजभान, धर्मदेव आर्य, सत्यप्रकाशजी, वेद प्रकाश आर्य, देशराज राजेन्द्रसिंह, चौ लायकराम, भीमसिंह जी, जयपाल आर्य फौजी ने अपने परिवारो घरो में यज्ञो का आयोजन किया और आर्यसमाज को उपयुक्त दान-दक्षिणा दी।

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अक ४५ | रविवार, १७ सितम्बर १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५२ | दयानन्दाब्द । १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजीवन—३५० रुपये | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष । ३१०१५०

२३-२४.९ को दिल्ली में राष्ट्रीय आर्य पदाधिकारी सम्मेलन

आर्यसमाज को ठोस कार्यक्रम देने के लिए आर्य विद्वानों एवं सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का आह्वान :

सम्मेलन आर्यसमाज करौल बाग में होगा : अनेक आर्य विद्वान पदाधिकारी आएंगे ।

नई दिल्ली। आर्यसमाज करौल बाग, दिल्ली-५ के प्रधान आचार्य हरिदेव, उपप्रधान श्री अजय भल्ला, मन्त्री श्री ओम्प्रकाश गुप्त और महर्षि दयानन्द रक्षिणी सभा, शालीमार बाग, दिल्ली-५२ के अध्यक्ष श्री आर्यमुनि, मन्त्री-श्री मोहन श्याम आर्य एव सर्वश्री महेन्द्र मुनि, सुमेरचन्द आर्य, आचार्य भद्र कामवर्णी, श्री राममुनि, धर्मपाल आर्य, वीरेन्द्र, राजसिह आर्य आदि ने एक पत्रक निकालकर आर्यो को आमन्त्रित किया है कि वे १३-२४ सितम्बर, १९९५ को आर्यसमाज करौलबाग, दिल्ली आयोजित हो रहे राष्ट्रीय आर्य पदाधिकारी सम्मेलन मे अवश्य भाग लें। सम्मेलन का प्रारम्भ शनिवार २३ सितम्बर को प्रात १० बजे होगा और उसका समापन रविवार २४ सितम्बर, १९९५ को मध्याह्नोत्तर २ बजे होगा।

उक्त आर्य विद्वानो ने आर्य जनता का आह्वान करते हुए घोषित किया है—"जिस आर्य समाज ने अन्धविश्वास, पाखण्डवाद का विनाश किया हो, नारी व दलितोद्धार जैसे कार्य किए हो, हैदराबाद के निजाम जैसो के घुटने टिका दिए हो, आज उस समाज के विषय मे यह सुनने को मिलता है कहा है वह आर्यसमाज? क्या कर रहा है आर्यसमाज? आर्यो आओ, सुषुप्त समाजों को जगाए, यह सम्मेलन करके आर्यसमाज को ठोस कार्यक्रम देकर वही गौरव दिलाएं। इस प्रस्तावित राष्ट्रीय आर्य अधिकारी सम्मेलन में सार्व. आ. प्रति. सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, दिल्ली के आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली आर्य प्रति. सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी उडीसा के स्वामी धर्मानन्द जी, हरयाणा के स्वामी ओमानन्द जी, हिमाचल प्रदेश के आचार्य आर्य नरेश, दिल्ली के आचार्य महेश वेदालकार, स्वामी सुमेधानन्द जी, प० प्रेमचन्द श्रीधर और भजनोपदेशक श्री गुलाबसिंह जी राघव आदि विद्वान् सम्बोधित करेंगे।

राजधानी में यमुना नदी की बाढ़

बाढ़ के प्रकोप में प्रकृति से अधिक मानवीय राजनीति का योगदान

जमना के तटबन्ध सुदृढ़ किए जाएं : निचली बस्तियों के किनारे भी मजबूत किए जाएं

नई दिल्ली। राजधानी में शुक्रवार ८ सितम्बर के दिन यमुना का जलस्तर पूरे उफान पर आने के बाद यद्यपि फिर गिरना शुरू हो गया लेकिन बाढ़ का खतरा कई दिनो तक बना रहा। अनेक बाधो और तटो मे दरार पड़ने के कारण पानी कई बस्तियों में घुस गया। कई नालो और सीवरो से भी पानी बस्तियो में प्रवेश कर गया। कश्मीरी गेट का अन्तरराज्यीय बस अड्डा पानी भर जाने के कारण कई दिन तक बन्द रहा। जमना का पुराना रेल पुल रेलो और दूसरे यातायात के लिए बन्द कर दिया गया। बाढ़ के प्रकोप से हजारो लोग बेघर हो गए।

इस वर्ष की यमुना नदी मे आई बाढ़ महज इन्द्रदेव का क्रुद्ध होना मान लेना अनुचित होगा। खेद है कि इसमे मानव का भी अच्छा खासा योगदान रहा। साथ ही हरियाणा और दिल्ली सरकारो के बीच की राजनीति ने भी इसे बढाया है। गर्मी के मौसम में जब दिल्ली की जनता 'पानी दो'—'पानी दो' की गुहार लगा रही थी, तब तो हरियाणा ने पचास क्यूसेक जल देने से इन्कार कर दिया था, अब जबकि चारों ओर नदी-नाले बरसात से उफन गए, तब हरयाणा ने ताजेवाला बान्ध से साढ़े छह लाख क्यूसेक पानी का परनाला छोड़ दिया। कई गुना अतिरिक्त पानी आने से राजधानी के जमना स्थित तटबन्धो पर बसी बस्तिया जलमग्न हो गई।

बार-बार हाहाकार मचाने वाली यमुना नदी की बाढ यह सन्देश देती है कि केन्द्रीय जल आयोग को जमना नदी से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश, हरयाणा और दिल्ली के सम्बद्ध मन्त्रियो और अधिकारियो की तुरन्त बैठक बुलवाकर स्थिति की समीक्षा करवानी चाहिए कि यमुना नदी के बहाव को कैसे नियन्त्रित किया जाए, गर्मियो मे वहा से सग्रहीत जल का कितना बहाव किया जाए और जब उसके जलग्रहण क्षेत्र मे वर्षा का अधिक जल बहकर आए तो पानी बेकाबू होने पर क्या पानी दिल्ली डुबाने के लिए छोड़ दिया जाए? दिल्ली की सरकार ने भी १९७८ की बाढ से कोई सबक नही सीखा। उस समय भी इसी प्रकार पानी अचानक आया था, इस बार भी वैसे ही आया है।

दिल्ली-हरियाणा सीमा से लगते पुश्तो का २० किलोमीटर का भूक्षेत्र ऐसा है, जहा अनेक निचली बस्तिया है, ये बस्तिया ही बाढ के पानी से डूब जाती हैं। ससार के सभी आधुनिक व विशाल महानगरो के बीच से गुजरने वाली नदियों और उनके किनारो की भलीभांति देखभाल की जाती है। १९७८ और १९९५ की जमना की बाढ़ो से केन्द्र और दिल्ली सरकार को यमुना जल को सामान्य दिनो और अतिवृष्टि के दिनों में समुचित ढग से नियन्त्रित करने की व्यापक योजना बनानी चाहिए। इसी तरह उत्तरी और पूर्वी दिल्ली के निचले इलाको का तटबन्ध इतना मजबूत करना होगा कि यहा की बस्तिया अतिवृष्टि और बाढ से आक्रांत न हो सकें।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

मातृभूमि भारतमाता सद्विचारों की साधना में योग दे

मातृभूमेरभिनन्दनम् सा नो माता भारती भूविभासताम् ।
येयं देवी मधुना तपयन्ती तिस्रो भूमीसदृता वौरुपस्थात् ।।
कामान् दुग्धे विप्रकर्षन्त्यलक्ष्मी मेधां
श्रेष्ठां सा सदास्यासु दध्यात् ।।

द्यु लोक से अवतीर्ण हुई, अपने दिव्य माधुर्य से तीनो लोको को परिपूर्ण करने वाली, सभी वाछित सदिच्छाओ को पूर्ण करने वाली तथा दुख दारिद्रय का उन्मूलन करने वाली देवी स्वरूपिणी भारत माता सद्विचारो की साधना में हमें समुचित सहायता करे।

सर्वे वेदा उपनिषदश्च सर्वाधर्मग्रन्याश्चापरे निधयो यस्या ।
मृत्योर्मत्यानमृत ये दिशन्ति वं सा नो माता भारती भूविभासताम् ।।

मानव मात्र को मृत्यु से हटाकर अमृतत्व का मार्ग दिखलाने वाले समस्त वेद वाङमय, सब उपनिषदें और अन्य सभी धर्मग्रन्थ जिसकी अक्षय निधि हैं, वह विश्वविख्यात भारत माता देदीप्यमान हो।

भद्रा सन्तु प्रशस्तयो भद्रा वाचो वचोविद ।
जागृयाम पुरोहिता स्वस्ति पन्थामनुचरेम ।

हमारी ये समस्त प्रशस्तिया समस्त राष्ट्रवासियो के लिए कल्याणकारी हों। हमारे समस्त पथ-प्रदर्शक लेखक, रचनाकार, अपने-अपने कर्त्तव्य के पालन मे सदा जागरूक और जाग्रत हो और हम सभी लोग कल्याण मार्ग के सच्चे पथिक बनें।

हे पृथ्वी माता, प्राणिमात्र का कल्याण करो।

त्वज्जातास्त्वयि चरन्ती मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पद ।
तमेवे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं
मर्तेभ्य उद्यन्सूर्यो रश्मिभि रातनोति ।। अथर्व० १२,१-१५

हे पृथिवी, तुम पर जन्म लेने वाले समस्त प्राणी तुम्हारी गोद में ही विचरण करते रहते हैं, तुम जिन चतुष्पाद प्राणियो और दो पैर वाले प्राणियो का पोषण करती हो, उन्हे सूर्य अपनी रश्मियो द्वारा उनके प्राण धारण करने के लिए उपयुक्त कन्द-मूल, अन्न, वनस्पति का योगदान करता है।

हे पृथिवी माता, ये पच मानव भी तुम्हारी ही सन्तान हैं।

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस नानाधर्माण पृथिवी यथौकसम् ।
सहस्र धारा द्रविणस्य मे दुहा ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ।।
अथर्व. १२,१,४५

अनेक धर्मों और अनेक भाषाओ वाले मानव समाज को धारण करने वाली पृथिवी अडिग धेनु-गौ के समान मेरे लिए धन-सम्पदा की सहस्रो धाराओं की अभिवृष्टि करे।

शान्तिवा सुरभि स्योना कीलालोघ्नी पयस्वती ।
भूमिरधि ब्रवीतु मे पृथिवी पयसा सह ।। अथर्व १२.१.५६

सुख-शान्ति देने वाली और दूध आदि पदार्थों से परिपूर्ण पृथिवी दूध के समान सार-नवनीत से पूर्ण होती हुए निरन्तर हम सबका कल्याण करे।

बोध-कथा

आग से जूझने वाला वह व्यक्तित्व

भीषण आग लगने पर खतरे की घण्टी के बजने पर भी आखो वाले तो अपनी चपेट मे लेने के लिए बढती तेज आग से अपना बचाव कर सकते है, पर ऐसी परिस्थिति मे जब संगी-साथी चले जाएं, साथी भी कमरे का दरवाजा बाहर से अचानक बन्द कर चले जाएं तो किसी की भी हिम्मत पस्त हो सकती है, पर १९९५ में मई मास की भीषण गर्मी में कस्तूरबा गाधी मार्ग, नई दिल्ली की बहुमंजिली कैलाश बिल्डिंग की आठवी मजिल में नेत्रहीन दीनानाथ यादव ने गजब के जीवट, धीरज, साहस का परिचय दिया।

वह आग लगने के समय अपने कमरे मे अकेला रह गया था, उसके सभी साथी अपनी प्राणरक्षा के लिए जा चुके थे, एक सुरक्षाकर्मी ने हाल का दरवाजा भी बन्द कर दिया था। दीनानाथ ने कुर्सी पर खड़े होकर दरवाजा खोलने की कोशिश की, वह दरवाजा नहीं खुला। हिम्मत न हार कर उसने पडोस मे अवस्थित इण्डियन आयल कम्पनी के दफ्तर मे फोन किया, कई बार की कोशिश करने पर फोन तो मिला, तो उस पडोस की इमारत के भी सब कर्मचारी आग की लपटो और उसे बचाने के प्रबन्ध को देखने बाहर जा चुके थे। अन्त मे कई बार की कोशिश के बाद उनके अपने एक साथी-सहयोगी दिलीप चावला से सम्पर्क स्थापित हुआ, उन्होने फायर ब्रिगेड वालो को सूचना दी और उनके साथ पम्प के सहारे ऊपर चढे और आठवी मजिल से नेत्रहीन दीनानाथ यादव को सकुशल निकल लाए।

दीनानाथ यादव इण्डियन आयल कम्पनी मे स्टेनोग्राफर हैं, उनकी उम्र तीस वर्ष है, नेत्रहीन हैं। महीने भर पहले ही उनका विवाह हुआ था। उन्होने केवल भाग्य पर भरोसा नहीं किया, प्रत्युत आग-और धुएं से कैसे बचें-इसके लिए अपने पहले पढे पाठ से गीले रूमाल के प्रयोग से आग और धुए से अपना बचाव किया।

कह सकते है-दीनानाथ यादव जैसे लोग ही मानव के अदम्य साहस और जीवनी शक्ति के उदाहरण बनते हैं। ऐसे व्यक्ति को विकलांग कहना अनुचित है। शरीर के किसी अंग का अशक्त होना या काम न करना किसी भी मानव के समूचे व्यक्तित्व को मर्यादित नही कर सकता। सकट के समय बाधाओ से जूझने वाले व्यक्ति को आंख वाले से कम आकना ठीक नही, आग के बीच आंख वालो की हडबडी, आपाधापी के बीच अकेले पड़े दीनानाथ ने जैसे संकट का सामना किया, सूझबूझ दिखाई, वह सबके लिए अनुकरणीय है।

—नरेन्द्र

निरन्तर कर्मशील बनो

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा ॥ ऋग्वेद ४ ३३.११

दिव्य शक्तियों-देवों को वे ही लोग प्रिय होते हैं, जो निरन्तर कर्मशील रहते हैं।

सम्पादकीय अग्रलेख

आततायी को समूल नष्ट करो

पजाब मे चार वर्ष की शान्ति एवं जनता की समुन्नति के बाद आतकवाद ने प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमन्त्री श्री बेअन्त हरि की नृशंस हत्या कर दी। इस आकस्मिक घटना ने उस प्रदेश को ही नहीं, समस्त भारत राष्ट्र और मानवता को झकझोर दिया है। विडम्बना की बात है कि इस दुखद घटना से एक घण्टे पहले एक प्रश्नकर्ता ने पूछा था पजाब मे आतंकवाद की स्थिति क्या है? "उत्तर मे श्री बेअन्तसिह ने कहा था वह तो राज्य मे वर्षों से खत्म हो चुका है।" इस आकस्मिक घटना के बाद केन्द्र और पजाब के सुरक्षा अधिकारियों ने स्वीकार किया है लगता है, हमारी सुरक्षा व्यवस्था मे कही कोई भूल रह गई है। इसी के साथ यह भी लगता है कि आतकवाद ने हमारी व्यवस्था मे कही घुसपैठ कर ली है, अथवा यह भी हो सकता है कि हमारी सुरक्षा पुलिस व्यवस्था में कोई राष्ट्रद्रोही तत्व प्रवेश कर गए है। वर्षों से लगातार शान्त रहनेपर और आतकवाद को कोई उल्लेखनीय सफलता न मिलने से शासन व्यवस्था और पुलिस की व्यवस्था मे कोई शिथिलता आ गई, जिसका देशविरोधी आतकवादियो ने भरपूर लाभ उठाया और अवसर मिलते ही पजाब के एक सर्वाधिक लोकप्रिय मुख्यमत्री की बलि ले ली।

भारतीय नीति शास्त्र मे कहा गया है—आततायिनमायान्त हन्यादेवाविचारयन्-आततायी को आते देखकर किसी सशय मे न पड़ कर उसका समूल नाश कर दो। शुक्राचार्य ने अग्नि से, जहर से, शस्त्रों से आक्रमण करने वाले, धन, दारा और सम्पत्ति का अपहरण करने वाले छह प्रकार के आततायी बतलाए हैं। आज के व्यवहार मे आततायी के रूप में पहले आने गए तत्व ही आतंकवादी हो गए हैं। आज ससार भर मे आतकवाद के तत्व देशों की शान्ति और सुरक्षा को सकट पैदा कर रहे हैं। यह कितनी अधिक चिन्ता की बात है कि इस आतकवाद का नियन्त्रण करने वाली भारत के पडोसी शत्रु राष्ट्रो की सरकारे हैं। हमारी लोकप्रिय प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी और लोकप्रिय भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी इन्ही आतकवादियो के घृणित षडयन्त्रो की बलि चढ चुके हैं, अब एक सवेदनशील पश्चिमोत्तर राज्य पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिह आतकवाद के घिनौने षडयन्त्र की बलि बन गए हैं। इस दुर्घटना से पजाब की शान्त स्थिति और भविष्य के लिए सकट के नए खतरे पैदा हो गए हैं। सुरक्षा अधिकारियो ने स्वीकार किया है कि आतकवाद की डोरी का सूत्र संचालन पड़ोसी राष्ट्र से हो रहा है, धन, विस्फोटक पदार्थ और आवश्यक पथ-प्रदर्शन इस आतकवाद को वहा से मिल रहा है।

हमे स्मरण रखना होगा कि यह केवल पजाब लिए ही खतरे और सकट की घड़ी नहीं है, प्रत्युत इससे भारत की शान्ति और सुरक्षा को भी नया खतरा पैदा हो गया है। उम्मीद तो यह थी कि कश्मीर मे शान्ति स्थापित हो जाएगी और वह प्रदेश राष्ट्र की सामान्य धारा में सम्मिलित हो जाएगा, परन्तु श्री बेअन्तसिह की शहादत ने सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर सीमान्त की ओर देश का ध्यान खींच दिया है। कश्मीर के साथ पजाब में भी हमारे सुरक्षा सैनिकों को निरन्तर सचेत और सन्नद्ध होना पड़ेगा। इसी के साथ हमें राजनीति के एक शाश्वत तथ्य को हृदयगम करना होगा, भारतीय नीति शास्त्र के प्रणेताओ का कथन है-केवल शासन दण्ड ही प्रजा की रक्षा करता है, और इस सच्चे प्रजावत्सल राजदण्ड को ही बुद्धिमान् लोग धर्म का नाम देते हैं। यह राजदण्ड ही सोते हुए लोगों में भी सच्चे सुशासन की व्यवस्था करता है, यह राजदण्ड ही प्रजा का सुशासन करता है, और यह राजदण्ड ही प्रजा का संरक्षण करता है। कश्मीर में विदेशी पर्यटकों का विदेशी आकाओं के इशारे पर अपहरण और अब उनके ही इगित पर एक लोकप्रिय मुख्यमन्त्री की हत्या से केन्द्र और राज्यो के राष्ट्रीय नीति-निर्धारको का समझ लेना होगा कि अब वह घडी आ गई है जब आतकवाद के विदेशी आकाओ को सबक सिखाने के लिए उनके आक्रमणो और षडयन्त्रों की रक्षा से काम नहीं चलेगा, प्रत्युत अब शत्रुदेश के काटे को कांटे से निकालने की वैसी घडी आ गई है जैसी कि बागलादेश के सकट के समय शत्रु के आक्रमण का मुहतोड़ उत्तर देने के लिए उस समय की भारतीय प्रधानमन्त्री ने शत्रु के आक्रमण का जवाब नहले पर दहला लगा कर दिया था।

चिट्ठी-पत्री

विज्ञान की शिक्षा और मातृ-भाषाएं

एक बार हमे फिर प्रो० जयन्त नर्लीकर जैसे अग्रणी वैज्ञानिक ने हमें चेतावनी दी है कि विज्ञान की शिक्षा मे हमारी बुनियादी समस्या यह है कि उसे अग्रेजी में पढाया जाता है। उन्होने जो कुछ विज्ञान के लिए कहा है वह सम्पूर्ण शिक्षा के लिए प्रासगिक है। प्रो० नर्लीकर ने अपने निजी अनुभव के आधार पर देशी भाषाओ मे विज्ञान पढाने पर बल दिया है। अपने शैशव के वातावरण मे हिन्दी की शिक्षा से प्रो० नर्लीकर जैसा अग्रणी वैज्ञानिक तैयार हो सकता है तो अग्रेजी के समर्थको की आशंका निराधार है।

अग्रेजी के समर्थको का कथन है कि सरकारी विद्यालयो के घटिया प्रदर्शन मे देशी भाषाए उत्तरदायी हैं जहा माध्यमिक विद्यालयो अथवा उच्चतर वरिष्ठ विद्यालयो मे दसवी कक्षा तक देशी भाषाओ मे शिक्षा दी जाती है, परन्तु वे इस तथ्य पर ध्यान नही देते कि विद्यार्थियो को वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयो मे खास तौर से विज्ञान विषयो का अग्रेजी माध्यम लेने के लिए बाध्य किया जाता है। इसी के साथ यह भी स्पष्ट अन्याय है कि विद्यार्थी देशी भाषाओ मे उत्तर देने का विकल्प लेते है तब उनका मूल्याकन परीक्षक लोग अग्रेजी भाषा मे तैयार किए गए नमूने के उत्तरो के आधार पर करते है।

माध्यमिक बोर्ड कभी भी देशी भाषाओ मे नमूने के उत्तर तैयार नहीं करता। प्रतिवर्ष हजारो विद्यार्थी इस अन्याय के शिकार होते है कि सरकारी और सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालयों मे ८० प्रतिशत विद्यार्थी उत्तर देने के लिए देशी भाषाओ का विकल्प लेते हैं। यदि अग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियो को इस तरह का अन्याय का शिकार होना पडे तो सासद और सचार माध्यमो के अग्रेजी के समर्थक शोर मचा देंगे।

अल्पसख्यक होने पर भी अग्रेजी के समर्थक बहुमत पर हकूमत कर रहे हैं। उन्होने देशी भाषाओ की सृजनात्मक बढोतरी पर यह कह कर रोक लगवाई हुई है कि शिक्षा का माध्यम देशी भाषा अपनाने से अन्धकार युग मे चले जाएगे। इस प्रकार विज्ञान मे देशी-बुनियादी अनुसन्धान की आधारशिला रखने मे नही आ रही। स्वाधीनता प्राप्ति के पचास वर्ष बाद भी विभिन्न प्रौद्योगिकी सस्थानो और विश्वविद्यालयो की सख्या बढने के बावजूद हम विदेशो से प्रोद्योगिकी का आयात कर रहे हैं। हमारे छात्रो की सृजन प्रतिभा कुण्ठित हो रही है, उनकी इच्छाओं की उपेक्षा की जाती है, घरो और विद्यालयो मे उनकी प्रतिभा पर किसी का ख्याल नही जाता है।

—कुसुम जैन, बी २/७ मोडल टाउन, दिल्ली-७

पर्यावरण और धर्मशास्त्र विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता

आर्य परिवार संस्था कोटा राजस्थान द्वारा आयोजित पर्यावरण और धर्म शास्त्र विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त से बढ़ाकर १० सितम्बर कर दी गई है। निबन्ध लिखने के इच्छुक निबन्ध लिखने से पूर्व पत्र-व्यवहार द्वारा नियमादि की जानकारी प्राप्त कर लें। निबन्ध निम्न पते पर भेजें। डा० रामकृष्ण आर्य मन्त्री, ४ भ विज्ञान नगर कोटा (राज०)

वैदिक धर्म के प्रचार के लिए समर्पित

शास्त्रार्थ-महारथी—गणपति शर्मा :

प्राचीन काल मे सत्यासत्य के निर्णयार्थ शास्त्रार्थ किया जाता था। शकराचार्य के काल में विलुप्त इस प्रथा का १०वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पुन: प्रचलन किया।' इसी शास्त्रार्थ परम्परा को प० गणपति शर्मा ने अपने जीवन मे अपनाया और यह सिद्ध किया कि किसी विषय पर एक से अधिक मत होने पर उसका निर्णय शास्त्रार्थ द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

प० गणपति शर्मा का जन्म राजस्थान के अन्तर्गत चूरु नगर मे सन् १८७३ में प्र० भानीराम वैद्य के यहा हुआ था, वह पराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण थे, उनके पिता सच्चे ईश्वरभक्त थे और ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा व विश्वास पुत्र गणपति शर्मा के जीवन मे सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। उनकी शिक्षा काशी, कानपुर आदि स्थानो पर हुई। २२ वर्ष की आयु तक उन्होने सस्कृत व्याकरण एव दर्शनो का अध्ययन किया। जब वह अपने पैतृक स्थान चूरु आए तो वहा महर्षि दयानन्द के शिष्य, राजस्थान मे वैदिक धर्म के महान प्रचारक श्री प० कालूराम जी जोशी के प्रभाव से आर्यसमाजी बने, आर्यसमाजी बनने के पश्चात उन्होने आर्यसमाज का प्रचार आरम्भ कर दिया।

सन् १९०५ के गुरुकुल कागडी हरिद्वार के वार्षिक उत्सव मे वह सम्मिलित हुए। इस उत्सव मे देश भर के आर्यसमाजी सम्मिलित होते थे। लगभग १५ हजार श्रोताओ की उपस्थिति मे उन्होंने व्याख्यान दिया। उन की धाक जम गई, सारे आर्य जगत का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ और इसके बाद जीवन के शेष वर्षों मे वह आर्यसमाज के प्रमुख विद्वान के रूप मे प्रसिद्ध रहे। गुरुकुल के उत्सव मे किए अब्दल गफूर से शुद्ध होकर धर्मपाल बने सज्जन भी उपस्थित थे। गुरुकुल के आयोजन पर अपने विस्तृत लेख मे उन्होने पं० गणपति शर्मा के व्याख्यान की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए लिखा कि वह शब्दो में कुछ कहने मे असमर्थ है पडित जी की ज्ञान प्रसृत वाणी तो सुनने से ही सम्बन्ध रखती है।

प० गणपति शर्मा की एक विशेषता यह भी थी कि वह बिना लाउड-स्पीकर के १५-१५ हजार की जनसभा मे ४-४ घण्टो तक धारा प्रवाह व्याख्यान करते थे, उनकी विद्वता एव व्याख्यान मे रोचकता के कारण श्रोता थकते नही थे। इसका एक कारण जन-जन मे पडित जी के प्रति श्रद्धा का होना था अपने युग के प्रसिद्ध नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने इस सबध मे लिखा था कि लोगो मे पण्डित जी के प्रति श्रद्धा का कारण उनकी विद्वता व व्याख्यान कला नही, अपितु उनका शुद्ध एव उच्च आचरण तथा सेवाभाव है। यही कारण है कि शास्त्रार्थ मे वह जिस विधर्मी विद्वान से वार्तालाप करते थे, वह उनका मित्र व प्रशसक हो जाता था।

सन् १९०४ मे पसरुर (पश्चिमी पजाब) मे पादरी ब्राण्डन ने एक सर्व धर्मसम्मेलन का आयोजन किया। आर्यसमाज की ओर से इस अवसर पर प० गणपति शर्मा सम्मिलित हुए। उनकी विद्वता एव सद् व्यवहार का पादरी ब्राण्डन पर गहरा प्रभाव पडा और वह प० जी के मित्र एव प्रशसक हो गए। इसके बाद उन्होने जब भी कोई आयोजन किया वह आर्य समाज जाकर प० गणपति को भेजने का आग्रह करते थे। ऐसे ही अनेक उदाहरण और हैं जब प्रतिपक्षी विद्वान शास्त्रार्थ मे पराजित होने पर भी उनका सदैव प्रशंसक रहा।

जहा पण्डित जी के व्यक्तिगत आचरण मे सभी के प्रति आदर था, वहीं धर्म प्रचार मे भी वह सदैव तत्पर रहते थे। सन् १९०४ में उनके पिता व पत्नी का अवसान हुआ। पिता की अन्त्येष्टि सम्पन्न कर वह धर्म प्रचार के लिए निकल पडे और चूरु से कुरुक्षेत्र आ गये जहा उन दिनो सूर्यग्रहण पर मेला लगा था। अन्य मतावलम्बियों ने भी यहा प्रचार शिविर लगाए थे। इस मेले पर पायोनियर पत्रिका में एक यूरोपियन लेखक का लेख छपा जिसमे उसने स्वीकार किया कि मेले में आर्यसमाज का प्रभाव अन्य प्रचारकों से अधिक था। इसका श्रेय भी प० गणपति शर्मा को है, जो इस प्रचार के प्राण थे। धर्म प्रचार की धुन के साथ पण्डित जी त्याग-वृत्ति के भी धनी थे। इसका उदाहरण उनके जीवन मे तब देखने को मिला जब पत्नी के देहान्त हो जाने पर उसके सारे आभूषण लाकर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को दान कर दिए।

प० जी ने देश भर मे पौराणिक, ईसाई, मुसलमान व सिखो से अनेक शास्त्रार्थ किए व वैदिक धर्म की मान्यताओ को सत्य सिद्ध किया। १२ सितम्बर, सन् १९०६ को श्रीनगर (कश्मीर) मे पादरी जानसन से महाराज प्रताप सिंह जम्मू कश्मीर की अध्यक्षता मे प० गणपति शर्मा ने शास्त्रार्थ किया। पादरी जानसन सस्कृत भाषा व दर्शनों का विद्वान था। उसने कश्मीरी पण्डितो को शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी, परन्तु जब कोई तैयार नही हुआ तो पादरी महाराजा प्रताप सिंह के पास और कहा कि आप राज्य के पण्डितो से शास्त्रार्थ कराइए अन्यथा उसे विजय पत्र दीजिए। महाराज के कहने पर भी राज्य का कोई पण्डित शास्त्रार्थ के लिए तैयार नही हुआ, कारण उनकी योग्यता न थी। महाराज चिन्तित हुए। इसी बीच महाराज को कहा गया कि एक आर्यसमाजी पण्डित श्रीनगर में विराजमान हैं। वह पादरी जानसन का दम्भ चूर करने में सक्षम है। राज्य पण्डितो ने प० गणपति शर्मा का आर्यसमाजी होने के कारण विरोध किया जिस पर महाराज ने पण्डितो को लताडा और शास्त्रार्थ की व्यवस्था कराई, प० गणपति शर्मा को देख पादरी घबराया और बहाने बनाने लगा, परन्तु महाराजा की दृढता के कारण उसे शास्त्रार्थ करना पडा। शास्त्रार्थ मे पण्डित जी ने पादरी जानसन के दर्शनो पर किये प्रहारो का उत्तर दिया और उनसे कुछ प्रश्न किये। शास्त्रार्थ सस्कृत मे हुआ। सभी राज्य पण्डित शास्त्रार्थ मे उपस्थित थे। प० गणपति शर्मा जी से पण्डित विस्मित हुए। अगले दिन १३ सितम्बर को भी शास्त्रार्थ जारी रहना था, परन्तु पादरी जानसन चुपचाप खिसक गए। इस विजय से प० गणपति शर्मा की कीर्ति देश भर मे फैल गई। महाराज ने पण्डित जी का उचित आदर-सत्कार कर उन्हे कश्मीर आते रहने का निमन्त्रण दिया।

प० गणपति शर्मा का वृक्षो मे विद्यमान जीव है या नही विषय पर आर्यसमाज के ही सुप्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द से

(शेष पृष्ठ ८ पर)

भाषा संकल्प लागू करने के लिए संसदीय समिति द्वारा पुन: जोर

सघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रश्नोत्तर की सुविधा उपलब्ध कराने और अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाने के सम्बन्ध मे ससद ने एक सर्वसम्मत संकल्प पारित किया था जिसे १९६८ मे राजपत्रित किया गया था। इसे लागू न करने पर सघ लोकसेवा आयोग के काम-काज पर घरेलू मामलों की ससदीय समिति ने सरकार की खिचाई की है। समिति ने ऐसे महत्वपूर्ण मामले पर उक्त निर्णय को तेजी से क्रियान्वित करने की अपील की है। समिति ने अपनी २०वीं रिपोर्ट में कहा है कि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस मसले पर सरकार द्वारा अभी तक नीतिगत निर्णय नहीं लिया गया है जब कि २६ वर्ष से अधिक का समय हो चुका है।

—जगन्नाथ संयोजक, राजभाषा कार्य

वर्तमान सन्दर्भ में श्रीकृष्ण की धर्मनीति

विषय पर छात्रों को प्रतियोगिता : आर्यसमाज हनुमान रोड में वेदप्रचार सप्ताह : विशेष प्रवचन एवं वेदकथा

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में ५ कुण्डीय महायज्ञ के साथ वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १० अगस्त श्रावणी पूर्णिमा से जन्माष्टमी तक मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान प० भिक्षु दिवस्पुत्र भारती के प्रात प्रवचन तथा रात्रि मे वेदकथा का आयोजन किया गया। यज्ञ तथा वेद प्रवचन के पश्चात आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहारी भजन होते रहे।

श्रावणी पर्व पर उपस्थित आर्यजनो के अतिरिक्त रघुमल आर्य कन्या सी०सै० स्कूल की छात्राओ तथा अध्यापिकाओ ने यज्ञोपवीत धारण किए।

१३ अगस्त, ९५ को आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस के पर श्री महासिंह वर्मा आर्य तथा आर्य श्री वेद पथिक आर्य झण्डाधारी को आर्यसमाज के प्रधान श्री राममूर्ति कैला द्वारा शाल व राशि भेटकर सम्मानित किया गया।

१५ अगस्त को ब्र० सुखवीर आर्य व ब्र० योगेन्द्र आर्य ने योग प्रवचन तथा अनेक योग क्रियाओ द्वारा प्रदर्शन किया।

१८ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व एवं पचकुण्डीय महायज्ञ द्वारा वेदप्रचार सप्ताह का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन लाल बहादुर शास्त्री सस्कृत विद्यापीठ के कुलपति डा० वाचस्पति उपाध्याय की अध्यक्षता मे किया गया। जिसमे दिल्ली, नई दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओ ने "वर्तमान सदर्भ मे श्रीकृष्ण की धर्मनीति" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए, भाषण प्रतियोगिता मे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले पुरस्कृत किए गए। भाग लेने वाले प्रतियोगियो को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए।

—वीरेश बुग्गा, मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का चुनाव सम्पन्न

महात्मा धर्मपाल जी सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए

नई दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का चुनाव रविवार १० सितवार को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। दिल्ली की आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो ने इस अधिवेशन मे भाग लिया। महा० धर्मपाल जी को सर्वसम्मति से आगामी वर्ष के लिए प्रधान पद का कार्यभार सौपा गया और सर्वसम्मति से उन्हे अधिकार दिया गया कि वे अपना मन्त्रिमण्डल तथा अन्तरग का गठन कर ले। अधिवेशन की अध्यक्षता—बाबू सोमनाथ एडवोकेट ने की।

सुप्रसिद्ध दानवीर लाला दीवानचंदजी का जन्मदिवस समारोह

लाला दीवानचन्द जी का १११वा जन्मदिवस रविवार २४ सितम्बर १९९५ को प्रात. ८ से ११ बजे तक आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली मे आयोजित किया गया है। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान बाबू सोमनाथ मरवाह करेंगे। श्री राजेन्द्र गुप्त, विधायक, श्री वीरेश प्रताप चौधरी आदि नेता दीवानचन्द जी के जीवन तथा उन द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डालेगे।

आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन

देश की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य मे आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम पर विचार करने के लिए आर्य कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन सुप्रसिद्ध लाला दीवानचन्द जी के १११ वें जन्मदिवस के अवसर पर रविवार २४ सितम्बर १९९५ को अपराह्न ४ बजे आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल, दिल्ली मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन मे डा० महेश विद्यालकार, श्री प्रेमचन्द श्रीधर आदि विद्वान आर्य जनता को सम्बोधित करेंगे।

शोक-प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ की शिरोमणि सस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी व कर्मचारी प्रो० शेरसिंह जी के भ्राता श्री विजय सिंह जी पूर्व एस०डी०एम० के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुख व क्षोक व्यक्त करते हैं। वह एक कर्तव्य परायण, निष्ठावान अधिकारी थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त दुखी परिवार व सगे सबधियो को इस दारुण दुख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे।

सूर्यदेव, प्रधान

दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों द्वारा हिन्दी आदि को विधान में मान्यता दिए जाने की मांग

नई दिल्ली के टाइम्स आफ इण्डिया के २७ जुलाई १९९५ के अंक में छपे एक समाचार के अनुसार दक्षिण अफ्रीका के क्वाजुलकु नैटाल तमिल फैडरेशन तथा दक्षिण अफ्रीका हिन्दू महासभा ने क्वाजुलु-नैटाल की सरकार की विधान समिति को एक लिखित ज्ञापन देकर मांग की है कि विधान में तमिल और हिन्दी को भी स्थान दिया जाए। उनका कहना है कि इस क्षेत्र में अफ्रीकी भाषा बोलने वाले केवल एक लाख हैं तो भी उसे विधान में स्थान दिया गया है किन्तु, यद्यपि पाच लाख लोग तमिल बोलते हैं और चार लाख हिन्दी बोलते हैं फिर भी इन्हें मान्यता नही दी गई है।

महासभा ने यह भी मांग की है कि स्कूलों में तमिल, हिन्दी, तेलुगु और गुजराती भी पढ़ाई जाए। इन भाषाओं को बोलने वालों के जो सगठन ये भाषाए पढ़ाते है उनको आर्थिक सहायता भी दी जानी चाहिए।

भारत के नागरिकों को भी उक्त समाचार से प्रेरणा लेनी चाहिए और हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं को भारत में व्यवहार की भाषा बनाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। इससे अफ्रीका में रहने वाले अपनी भाषाओं के लिए सघर्षरत भारतीय मूल के निवासियों को नैतिक बल मिलेगा और उनके हाथ मजबूत होगे।

—जगन्नाथ, सयोजक, राजभाषा कार्य

हिन्दू समाज को कमजोर करने का षड़यन्त्र

श्री केसरी के प्रस्तावित विधेयक पर देवी दास आर्य की चेतावनी

कानपुर। केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी की यह घोषणा कि लोक सभा के अगले सत्र मे ऐसा विधेयक लाया जाएगा जिसमें हिन्दू धर्म को छोड़ कर ईसाई और मुस्लमान बनने पर दलितों को पूर्ववत सुविधाएं प्राप्त होगी, यह सब हिन्दू समाज को कमजोर करने का षडयन्त्र है। आर्य समाज इसका देश भर मे विरोध करेगा।'' यह विचार आर्य नेता केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास ने आर्यसमाज गोविन्द नगर में आर्य समाज द्वारा आयोजित एक समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्ति किए।

श्री देवीदास आर्य ने आगे कहा कि राजनीतिक दल अपना वोट बैंक बनाने हेतु मुस्लमान और ईसाइयों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए संविधान के विरुद्ध ये चालें चल रहे हैं। हर एक देशभक्त को इन चालो को विफल करना चाहिए क्योकि देश के जिस क्षेत्र मे हिन्दू कम हुआ है उस क्षेत्र की सुरक्षा सकट मे पड रही है।

शास्त्रार्थ-महारथी-गणपति

(पृष्ठ ४ का शेष)

५ अप्रैल, १९१२ को गुरुकुल विद्यालय ज्वालापुर मे शास्त्रार्थ हुआ था। दोनो विद्वानो मे परस्पर मैत्री सम्बन्ध थे। यद्यपि इसमे हार जीत का निर्णय नही हुआ, फिर भी दोनो ओर से जो प्रमाण, युक्तिया व तर्क दिये गए, वे महत्त्वपूर्ण एव विचारणीय हैं।

प० जी का जीवन मात्र ३९ वर्ष का रहा। वह चाहते थे कि वह 'व्याख्यान शतक' नाम से पुस्तकें लिखें। इसी क्रम मे उन्होने मस्जिद मोठ में एक लीथे प्रेस भी स्थापित किया, परन्तु प्रचार कार्य मे व्यस्त रहने के कारण वह मात्र एक पुस्तक ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान ही लिख सके।

प० जी ने देश भर मे घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। १०३ डिग्री ज्वर मे भी वह व्याख्यान दिया करते थे। जीवन मे रोगी होने पर भी उन्होने कभी विश्राम नहीं किया, जिसका परिणाम अल्पायु मे २७ जून १९१२ को मृत्यु के रूप मे हुआ।

पण्डित जी ने अपने जीवनकाल में स्वय को वैदिक धर्म के प्रचार के लिए समर्पित किया था परन्तु आज के आर्य समाज में उन भावनाओं का सर्वथा लोप है। आर्य समाज के उन विद्वानो के लिए जो प्रतिष्ठा स्वार्थ से पृथक है, चिन्तन का विषय होना चाहिये कि आर्यसमाज की पुरानी प्रतिष्ठा व गरिमा को कैसे पुन प्राप्त करें?

आर्य कवि नाथूराय शकर शर्मा की निम्न पक्तिया देखिए—

''भारतरत्न, भारती का बड़भागी भक्त, शंकर प्रसिद्ध सिद्ध सागर समुति का मोहतम हारी ज्ञानभूषण प्रतापशील, दूषण विहीन शिरो भूषण वीरता॥ लोहितकारी पुण्य कानन विहार वीर, वीर धर्मधारी अधिकारी शुभगति का, देख लो विचित्र चित्र बावलो चरित्र मित्र, नाम लो पवित्र स्वर्गगामी गणपति का।।

—मनमोहन कुमार आर्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल शिक्षाप्रणाली में छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा एवं अन्य विषयों पर विचार हेतु समिति

सार्वजनिक सूचना

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के विजिटर जस्टिस महावीरसिंह (अवकाश प्राप्त) ने विश्वविद्यालय के सविधान की धारा ४ ए के अन्तर्गत निम्न विषयों पर विचार कर अपने सुझाव देने हेतु एक समिति का गठन किया है।

१–गुरुकुल शिक्षापद्धति और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य।

२–महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज और स्त्री शिक्षा।

३–भारतीय सविधान के समता के सिद्धात और वर्तमान विचारधारा के परिप्रेक्ष्य मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय मे छात्राओ की शिक्षा।

या

४–उसी परिसर मे छात्राओ की शिक्षा।

इस विषय मे रूचि रखने वाले व्यक्तियो, जन-प्रतिनिधियो और सस्थाओ से एतद्द्वारा सादर अनुरोध है कि वे अपने विचार व सुझाव दि० २२.९.९५ तक सक्षिप्त रूप मे लिखकर समिति के सयोजक श्री बृजकिशोर शर्मा, अधिवक्ता ए-१०३ धर्मा अपार्टमैण्ट, २ इन्द्रप्रस्थ एक्सटेन्शन, दिल्ली-९२ को प्रेषित करें।

जिन व्यक्तियो/सस्थाओ के विचार और सुझाव प्राप्त होगे, उन्हे समिति अपने विवेकानुसार मौखिक चर्चा के लिये आमन्त्रित कर सकती है।

समिति की सार्वजनिक बैठक दिनाक २३-९-९५ को पूर्वाह्न १० बजे आर्य समाज १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे तथा दिनांक २४.९.९५ को पूर्वाह्न ११ बजे सीनेट हाल गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार मे सम्पन्न होगी। जो व्यक्ति या सस्था के प्रतिनिधि इस सम्बन्ध मे अपने विचार, सुझाव देना चाहें समिति के समक्ष उपस्थित हो सकते है।

सूर्यप्रकाश
सहायक कुलसचिव समिति सचिव

देश के बलिदानियों को याद किया गया

यज्ञ-प्रवचनों से आर्यसमाज जनकपुरी में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज जनकपुरी बी-ब्लाक मे १४ से २० अगस्त तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चतुर्वेद आंशिक यज्ञ का भी आयोजन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा युवा विद्वान आचार्य विनय कुमार विद्यालकार ने प्रतिदिन प्रात. व साय वेदो पर सारगर्भित प्रवचन किए। आचार्य के प्रवचनो के कैसेट भी तैयार किए गए हैं। इस अवसर पर संगीताचार्या श्रीमती उज्ज्वला वर्मा व श्री जगमाल जी के सुमधुर भजन भी प्रतिदिन हुए।

१५ अगस्त स्वतन्त्रता दिवस पर ओमध्वजा का आरोहण किया गया तथा देश के बलिदानियो को याद किया गया, साथ ही आर्य वीर दल के युवाओ द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन किया गया।

इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर समाज की ओर से आर्य वीर दल को ग्यारह सौ रुपए पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए गए। १८ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर भी विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया।

समापन समारोह के अवसर पर २० अगस्त को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने की। आचार्य सत्यव्रत जी का सुन्दर वेदोपदेश हुआ एवं श्री प्रियव्रत शास्त्री के सुमधुर भजन हुए।

आर्यसमाज नोएडा की वेद प्रचार सम्बन्धी योजना

हर महीने एक प्रपत्र : आर्ष गुरुकुल का शुभारम्भ

आर्यसमाज नोएडा के तत्वावधान में आर्यसमाज नोएडा प्रचारक वेद प्रचार सम्बन्धी कई योजनाए चला रहा है। एक योजना के अन्तर्गत आर्यसमाज नोएडा प्रचारक पत्र का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्र प्रत्येक मास एक प्रपत्र सदस्यों मे वितरित करता है जिसमे विगत मास के कार्यक्रमों की समीक्षा एव चालू मास के कार्यक्रमो की सूचना दी जाती है।

दूसरे आर्यसमाज नोएडा ने अपने यहां एक आर्ष गुरुकुल का प्रारम्भ कर दिया है। यदि प्रत्येक आर्यसमाज इस तरह का प्रयास करे तो आगामी वर्षों मे हजारो नवयुवक वैदिक आर्य प्रचारक तैयार हो सकते हैं।

स्त्री समाज राजेन्द्र नगर में वेद-प्रचार दिवस सम्पन्न

आर्य महिला मण्डल करो। बाग के तत्वावधान मे २.९.९५ को आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर में श्रीमती सरला जी मेहता की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्रीमती कृष्ण बहेरा एवं डा० चन्द्रप्रभा के ब्रह्मात्व में यज्ञ हुआ। श्रीमती वोरा वाली ने ध्वजारोहण किया यजुर्वेद के मन्त्री की प्रतियोगिता हुई, जिसमे प्रथम दूसरी एवं तीसरी आने वाली बहनो को वैदिक साहित्य से पुरस्कृत किया गया। श्री प्रेमलता प्रथम श्रीमती सरला कोहली द्वितीया तथा सरला जी गुप्ता तृतीय रही। सर्वप्रथम श्रीमती प्रकाश जी आर्या ने स्वर्गीय बेअन्तसिह तथा स्वर्गीय शाहभाई के प्रति शोक प्रस्ताव रखा। विदुषी बहनो ने वेद मन्त्रों द्वारा अपने विचार प्रकट किए। श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ताराजी वेद, कृष्ण चड्डा, शान्ति मलिक, कान्ता सिक्का, सुशीला जी आनन्द तथा श्रीमती शकुन्तला आर्या का भव्य स्वागत किय। गया बहन श्रीमती उमा अभि ने वैदिक साहित्य से सभी का स्वागत किया।

स्वामी समर्पणानन्द जन्मशती अगले वर्ष शरद पूर्णिमा को पाली मारवाड़ में गुरुकुल विज्ञानाश्रम का शुभारम्भ

स्वामी ऋतमानन्द द्वारा ७५ एकड़ भूमि एवं आश्रम के भवन प्रभाताश्रम को अर्पित

प्रभात आश्रम मेरठ। पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी की जन्मशती के उपलक्ष्य में स्वामी जी के शिष्य श्री स्वामी ऋतमानन्द अंगिरा जी पाली मारवाड़ ने ७५ एकड़ भूमि तथा आश्रम के समस्त भवन अपने गुरु की स्मृति में गुरुकुल चलाने के लिए वर्णाश्रम संघ के अध्यक्ष व स्वामी समर्पणानन्द जी के उत्तराधिकारी शिष्य स्वामी विवेकानन्द जी प्रभात आश्रम को सौंप दिए हैं। अब वहां विधिवत् गुरुकुल चल रहा है। प्रभात आश्रम से आचार्य व संरक्षक गए हुए हैं। और उन्होंने पूर्णरूप से सुव्यवस्थित ढंग से कार्य प्रारम्भ कर दिया है वहां अन्य छात्रावास एवं यज्ञशाला की महती आवश्यकता है। जल के लिए कूप निर्माणार्थ एक धर्मनिष्ठ दानी व्यक्ति ने समस्त व्यय भार वहन करने का वचन दे दिया है। तथा ६०००) रु० नकद दिए हैं, जिससे कूप का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। यदि आर्य जनता ध्यान दे तो मारवाड की भूमि में भी प्रभाताश्रम की शाखा भूत यह संस्था पुष्पित व पल्लवित होकर आर्यजगत में नई ज्योति प्रकाशित सकेगी। २०५३ में आश्विन मास की शरद पूर्णिमा के अवसर पर स्वामी समर्पणानन्द जन्मशती समापन समारोह का भी आयोजन यहीं किया जा रहा है। जिसकी विस्तृत जानकारी समय-समय पर आर्य जनता को मिलती रहेगी।

गुरुकुल का स्थान—गुरुकुल विज्ञानाश्रम पाली जनपद—पाली मारवाड़ (राजस्थान) है।

—निवेदक—
आचार्य वाचस्पति

आर्यसन्देश का शुल्क तुरन्त भेजिए

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० है, उसका आजीवन शुल्क ३५० रु० है। निवेदन है कि मनीआर्डर, चैक या नकद भेजें।
धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, चिट पर आपकी ग्राहक संख्या लिखी रहती है।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल ११०२४/१-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अक ४६ | रविवार, २४ सितम्बर १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५२ | दयानन्दाब्द : १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपये | आजोवन—३५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

होलैंड में आर्यसमाज का जबर्दस्त प्रचार

गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डा० धर्मपाल आर्य की सफल होलैण्ड यात्रा

—ओमप्रकाश सामवेदी पौरोहित्याचार्य रोटरडम, होलैण्ड

पिछले दिनो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा० धर्मपाल आर्य, रेक्स यूनिवर्सिटी लंदन में आयोजित त्रिदिवसीय रामायण-कार्फेंस मे भाग लेने होलैड पधारे। २८-८-९५ सोमवार को प्रात अमस्टरडम के हवाई-अड्डे पर आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड के प्रधान डा० महेन्द्रस्वरूप, सत्य सनातन वैदिक प्रकाश समाज के प० सुन्दर प्रसाद शुभधन तथा मैंने (ओमप्रकाश सामवेदी ने) कुलपति की अगवानी की। ३०-८-९५ को कान्फ्रेंस मे कुलपति जी ने रामायण और लोकमगल विषयक अपना, वैदिक-शिक्षाओ भरा सदेश क्रमश हिन्दी व अंग्रेजी मे दिया। उनके भोजन निवासादि का प्रबन्ध विश्वविद्यालय मे होते हुए भी कुलपति जी प० शुभधनजी के निवास पर ठहरे। १ ९.९५ को वह रोटरडम नगर मे मेरे निवास पर पधारे, भोजनोपरान्त आर्यसमाज की गतिविधियो पर विचार-विमर्श हुआ। प्रचार-प्रसार की प्रगति उन्हे काफी अच्छी लगी। नगर के दर्शनीय स्थलो को देखकर व प० देवनारायण शुभधन जी से भी भेंट करके आप उसी दिन अमस्टरडम लौट गए। रेडियो द्वारा कुछ महत्वपूर्ण प्रवचन भी किए। सर्वप्रथम दिनाक ३ ९ ९५ रविवार प्रात अमस्टरडम नगर के रेडियो स्टेशन से १० मिनट तक अपना सदेश दिया। उसी दिन सत्य सनातन वैदिकसमाज ने उनका एक प्रवचन कराया। ईश्वर—वेद—यज्ञ—वर्णाश्रमादि विषयों को स्पष्ट करते हुए आत्मा के गुणावगुणो की चर्चा अति मनोरजक ढग से प्रस्तुत की। उनकी तन्तु तन्वन् रजसो—इत्यादि वेदमन्त्र की व्याख्या प्रभावशालिनी थी।

कार्यक्रम का सचालन स्वय मैं कर रहा था तथा प० देवनारायणजी ने यज्ञ कराया था। कार्यक्रम के उपरान्त आप उसी दिन हमारे साथ रोटरडम आ गए। सायकाल वैदिकज्योति सघटन समाज के प्रधान प० इन्द्रजीत वक्तावर के घर भोजन की व्यवस्था थी। अगले दिन ही प्रात रेडियो मिलन स्टेशन से १५ मिनट का वैदिक धर्म का उद्बोधन भरा सदेश प्रसारित हुआ। वही पर वैदिक सविता सस्थान के प्रधान प० विश्वेश्वर से भी भेंट हुई। तदुपरान्त आर्य सगीताचार्य प० बृजलाल वक्तावर के घर पहुचे, भोजनोपरान्त प्रभाकर आर्य-समाज प्रधान प० जीवनगणेश ने आर्य-मन्दिर दिखाया, पुन घर पहुचे। अगले ही दिन प० जीवनगणेश के साथ आप मछलियो का प्रदर्शन देखने गए। उन्हें यह कार्यक्रम बडा अच्छा लगा था। उसी दिन ४ बजे रेडियो द्वारा श्रीमान डी०छेदी (साई-मन्दिर) ने १ घण्टे का धर्म विषयक कार्यक्रम प्रसारित कराया। इस कार्यक्रम का इतना प्रभाव हुआ कि स्वय रेडियो के सचालक श्री शिव बदलू ने पुन: अगले दिन एक घण्टे का समय निर्धारित कर जोर-शोर से प्रचार करना शुरू कर दिया।

तदुपरान्त वहा से भारतीय कल्चरल सेन्टर के प्रधान श्रीमान दहिया जी के घर पहुचे। एक घण्टे पश्चात आर्यसभा मन्दिर में पण्डिता चन्द्रकली बदलू के जन्मदिवस समारोह मे सम्मिलित हुए। वहा सूरीनाम से आये प्रसिद्ध प० सूर्यपाल जी ने यज्ञ कराया, कुलपति जी का पुष्पमालाओ से विधिवत सम्मान करके आसन दिया गया। लगभग ३० मिनट के प्रवचन मे कुलपति डा. धर्मपालजी ने आशीर्वाद के कुछ शब्दो को लेकर अति ओजस्वी वाणी मे उपदेश किया, आशीर्वाद दिया। पं० सूर्यपाल जी ने भी ईश्वर विषयक प्रवचन करके जनता को कहानियो से आनन्दित किया। हमने इस अवसर पर डा० साहब की एक लघु पुस्तिका महर्षि

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज मानवमात्र के कल्याण के लिए समर्पित

शालीमार बाग में दयानन्द द्वार का शिक्षामंत्री श्री वर्मा द्वारा उद्घाटन

आर्यसमाज शालीमार बाग बी०एन० पूर्वी दिल्ली मे दयानन्द द्वार का उद्घाटन करते हुए दिल्ली के विकास एव शिक्षामन्त्री श्री साहबसिंह वर्मा भाव-विभोर हो उठे और बोले कि मैं आज राष्ट्र की जो भी सेवा कर रहा हू वह सब महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओ के कारण है। मैं आर्यसमाजी हू और मानता हू कि आर्य समाज मानवमात्र के कल्याण के लिए समर्पित संस्था है। मैं यहा के कार्य को देखकर अभिभूत हू और अगले रविवार मैं यहा आकर यज्ञ मे सम्मिलित होऊगा।

आर्य समाज शालीमार बाग मे वेद प्रचार सप्ताह ११ से १७ सितम्बर तक आयोजित किया गया। श्री आचार्य अर्जुन देव वर्णी जी के ब्रह्मत्व मे प्रतिदिन प्रात यज्ञ सम्पन्न हुआ और रात्रि मे वेदकथा हुई। श्री श्यामवीर राघव के भजन हुए। पूर्णाहुति के पश्चात रविवार को परिवार निर्माण सम्मेलन में आचार्य रामकिशोर वैद्य, आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री शिवकुमार शास्त्री, प० प्रेमचन्द श्रीधर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल, आचार्य श्री अर्जुनदेव जी ने आर्य जनता को सम्बोधित किया। मच सचालन प० परमानन्द नागर ने किया। इस अवसर पर यजमानो को सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य भेंट किया गया। विद्वान पुरोहित प० सत्यवीर शास्त्री की पुस्तक 'आर्य कौन' का सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने विमोचन किया। ऋषिलगार की व्यवस्था उद्योगपति श्री बृजभूषण तायल की ओर से की गई।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

भारतीय चिन्तन में अवसाद को स्थायी भाव बनाने का कोई अवसर नहीं है–

–नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

सोमवार ११ सितम्बर को डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति के तत्वावधान में डा० प्रह्लादकुमार की ५०वीं जयन्ती पर 'आधुनिक अवसाद और वैदिक मनोविज्ञान विषय पर एक भाषण हुआ था। उस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति ने संलग्न विचार रखे थे :

आज चर्चा का विषय है 'आधुनिक अवसाद और वैदिक मनोविज्ञान'

यह कहना अधिक यथार्थ होगा कि न तो आधुनिक युग अवसाद से अभिभूत है- जीवन मे सर्वत्र सघर्ष, प्रतिस्पर्द्धा–हरेक क्षेत्र मे प्रतियोगिता और प्रतिद्वन्द्विता है, कही भी अवसाद के दर्शन नही होते, फिर चर्चा का विषय आधुनिक अवसाद को वैदिक मनोविज्ञान की दृष्टि से देखने का आग्रह है।

विषय की चर्चा से पूर्व पहले अवसाद शब्द का अर्थ देखना मौजू रहेगा। सस्कृत शब्दकोश मे अवसाद के पाच अर्थ दिए गए हैं, इसका पहला अर्थ है उदासी, मूर्च्छा, सुस्ती। शब्द का दूसरा अर्थ है–बर्बादी, विनाश विपदेति तावदवसादकरी कि० १८।२३।६३ इसका तीसरा अर्थ है अन्त, समाप्ति ४. चौथा अर्थ है–स्फूर्ति का अभाव, थकान, थकावट ५ पाचवा अर्थ है विधि मे अभियोग का खराब होना, पराजय, हार।

चर्चा के विषय की दृष्टि से शब्द का चौथा अर्थ ही अधिक संगत मालूम पड़ता है–स्फूर्ति का अभाव, थकान या थकावट। वैसे, यदि आज हम व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की समस्याओ के मूल पर विचार करे तो हमे यह तथ्य हृदयगम करना होगा कि यह जीवन एक सग्राम है। इसमे वे ही जीतते हैं जो अपने आस-पास की स्थिति का नियन्त्रण कर अपना जीवन बनाते है, वे ही सर्वश्रेष्ठ और सक्षम हैं। हमारा असली शत्रु जो शस्त्रो से हम पर हमला करता है, नही है, बाहर के शत्रु के धावे अधिक हानि नही पहु चाते, असली शत्रु वह नही जो विषैले शब्दो से हम पर चोट करता है, मधुर भाषण, उदार वचनो से हम वाह्य शत्रु को भी मित्र हितैषी बना सकते है।

हमारा असली शत्रु हमारे अन्दर रहता है। जिसने अपने आपको वश मे कर लिया वह नगर के विजय करने वाले से श्रेष्ठतर है। जीवन को किसी ऊ चे लक्ष्य की ओर समर्पित कर अपनी चित्तवृत्तिया अपना सर्वस्व इस उद्देश्य सिद्धि के लिए बलिदान करने वाला जीवन के हर क्षेत्र मे आगे बढता है।

संसार का इतिहास साक्षी है कि दृढ सकल्प वाले व्यक्ति और महापुरुषो ने ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता पाई है मानव ने ससार मे क्या-क्या कार्य किए हैं, उसका विचार करने से चकित होना पड़ता है। उसने है, कला, कौशल, शिल्प, उद्योग, ज्ञान-विज्ञान मे अनेक आविष्कार किए है, जहाजो, विमानो, अन्तरिक्ष यानो का उसने आविष्कार किया है, अग्नि, वायु जल और विद्युत को उसने अपने वश मे किया है।

जीवन के हर क्षेत्र मे मानव की सफलता का एक ही आधार है उसने अपने मन से स्फूर्ति के अभाव, निराश और अवसाद को तिलाजलि देकर जीवन मे बढने के लिए दो मन्त्र अपनाए हैं, उसने व्रत लिया है कि वह न तो जीवन मे दैन्य दिखलाएगा और न पलायन करेगा। 'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम्, प्रत्युत हर क्षेत्र में साहस से आगे बढेगा। आज के उद्यमी अग्रणी मानव को विजय-पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रसिद्ध फ्रेंच योद्धा नेपोलियन के इस सकल्प को मानकर चलना होगा कि मानव के शब्दकोश में असम्भव नाम का कोई शब्द नही है।

आइए, आधुनिक अवसाद की वैदिक मनोविज्ञान की दृष्टि से थोडी चर्चा कर ली जाए। यह ठीक है कि वैदिक चिन्तन में धर्म के पालन करने मे सदाचार मे पाप से बचने की ओर ध्यान दिया गया हैं, पर इसका अर्थ यह नहीं कि वैदिक ऋषि जीवन से उदासीन थे। वे चाहते थे मनुष्य अर्थ और काम के क्षेत्रो मे उपलब्धिया करें, परन्तु धर्म की मर्यादा को ध्यान मे रखकर इस ससार से अलिप्त-मुक्त रहते हुए। वे चाहते थे मनुष्य ठीक ढग से विकसित हो, वह जीवन और प्रकृति का पूरा-पूरा आनन्द ले। हमारे चारों ओर जो आनन्द बिखरा पड़ा है, उसका हम भरपूर लाभ उठाए और उसमें सबका यथायोग्य भाग हो, हम प्रसन्न रहे, हम सौ वर्षों तक जीए, हमारे शरीर मन स्वस्थ रहें, हमारी वाणी पवित्र रहे, हम सबके साथ मिल जुलकर प्रेम–स्नेह से परिपूर्ण जीवन बिताए, हमारा परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवता ही नही–सम्पूर्ण प्राणिजगत सुखी आनन्दित हो–वेद मे जीवन का सारा तत्व भरा पडा है, उसमे आत्मा-परमात्मा का ही वर्णन नही है, धर्म और यज्ञ की ही बात नही है, प्रत्युत सबके साथ मिल-जुल कर आनन्दमय जीवन बिताने की प्रेरणा भरी पडी है। यहा कोई अवसाद और विषाद नही है, उसका बोधवाक्य है

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत्।

यह ठीक है कि एक युग मे भारत मे अवसाद और दुख की अवधि आई थी, उसमे जीवन सघर्ष से बच कर अहिसा का स्वर गू जा था, परन्तु वैदिक मनोविज्ञान मे भारतीय चिन्तन में सघर्ष करते हुए– सबके साथ सुखी-आनन्दी जीवन व्यतीत करने का लक्ष्य है, वहा किसी प्रकार का अवसाद देखने को नही मिलता, कम से कम अवसाद का स्थायी भाव बनाने का कोई अवसर नही है।

—अभ्युदय, बी-२२, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली

चर्चा के विषय मे कुछ कहने से पूर्व उपस्थित विद्वज्जनो का ध्यान खीचना चाहूगा। कहते है कि मुनि वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर विचरण कर रहे थे कि अचानक एक प्राणी-चीत्कार ने एक हृदयस्पर्शी क्रन्दन ने उनका ध्यान बरबस खीच लिया। उन्होने देखा कि नदी के तट पर बालुका मे एक क्रौंच पक्षी बाण से बिंधा हूआ खून से लथपथ पडा है और उसके पास उसकी क्रौंच वधू भीषण पीडा वेदना से भयकर क्रन्दन करती हुई तडप रही थी। अनायास बिना किसी प्रयत्न के मुख से अनुष्टुप् का एक मुखडा फूट उठा

मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगम शाश्वती समा।
यत्क्रौच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम्।।

मुनि के बोल मे कहा गया था–हे व्याध बहेलिए निषाद, अनन्त काल तक तुझे अपयश ही मिलेगा, जो तुमने स्नेह मे डूबे हुए एक क्रौंच युगल मे से एक का हनन कर दिया।

विद्वानो का कथन है कि मानव सहिता के अमरकोश का यह पहला छन्द था और यह मानव के सन्ताप और व्यथा की ही परिणति थी।

इसी के साथ कवि की यह उक्ति भी प्रसिद्ध है–

वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
निकल कर नयनो से चुपचाप बही होगी कविता अनजान।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारों व पर्वों से सम्बन्धित रचनाएं कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमों के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

सम्पादक

दूसरों को बांट कर खाओ

मोघमन्न विन्दते अप्रचेता सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमण पुष्यति नो सखाय केवलाघो भवति केवलादी॥

ऋ० १०।११७।६

जो व्यक्ति उदार मनवाला न हो, उसके यहा भोजन न करे क्योकि उदारता से रहित अन्न विष के समान होता है। जो आदमी अपने अन्न मे से मित्र को नही खिलाता और न ही दिव्य शक्तियो को उनका प्राप्तव्य देता। ऐसा मूर्ख पाप का ही भक्षण करता है।

सम्पादकीय अग्रलेख

समस्याएं अनेक : समाधान एक

यह शीर्षक कुछ विचित्र-सा मालूम पड़ता है, परन्तु हमारी अनेक समस्याओं के होने के बावजूद उनका एक ही समाधान है। यदि हम एक मर्यादा और सयम से रहे, यदि हम राष्ट्रीय समस्याओ और उलझनो को दल, जाति प्रदेश के भेदभाव को छोडकर एक समुचित राष्ट्रीय दृष्टि रखें और उसके लिए अपने संकुचित स्वार्थों को तिलाजलि दे सके तो मौजूदा समस्याए ही नही, प्रत्युत सभी समस्याएं सुलझ सकती हैं। बात ठीक है, असल मे हमारी अधिकाश समस्याएं ही इसलिए हैं क्योकि हम छोटे-मोटे संकुचित स्वार्थों के सम्मुख राष्ट्रीय समस्याओ की अनदेखी कर देते हैं। आइए, देखिए आज की कुछ ज्वलन्त समस्याए। सबसे पहले आर्थिक स्थिति को ही लीजिए। चार साल पहले देश मे आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई गई थी। पिछले दिनो आर्थिक सम्पादको को सम्बोधित करते हुए भारत के वित्तमन्त्री ने देशवासियो को आश्वस्त किया है कि देश की आर्थिक स्थिति में ऐसा कुछ नही है जिससे घबराया जाए। पर भारत के रिजर्व बैंक ने देश की आर्थिक स्थिति का जो आकलन किया है, उससे हमे साव-धान होने की जरूरत है। बैंक ने सामयिक चेतावनी दी है कि यदि अबाध गति से प्रचलित फिजूलखर्ची न रोकी गई तो स्थिति बिगड सकती है। बैंक ने ही सूचना दी है कि पिछले वर्ष सरकार ने २० हजार करोड रुपए कर्ज लिए थे, इस वर्ष वह २७ हजार करोड़ रुपए कर्ज लेने जा रही है। एक ओर सफल उत्पादन की वृद्धि ५.५ प्र०श० है तो दूसरी ओर बढती हुई कर्जदारी के फलस्वरूप राजस्व की आय का ५२ प्र० श० वार्षिक ऋण अदायगी मे चला जाता है।

यह ठीक है कि देश का उत्पादन बढा है, मुद्रास्फीति नियन्त्रित हुई, राष्ट्रीय निर्यात की वृद्धि भी २६ प्र०श० की दर से बढ रही है, ये सभी बाते उत्साहवर्धक हैं, परन्तु हर वर्ष कर्ज का बढना और कर्जों की अदायगी मे सम्पूर्ण राजस्व का ५२ प्र० श० झोक देना चेतावनी दे रहा है कि समय रहते यदि हमने कर्ज लेने बन्द न किए और सरकारी फिजूल खर्ची न रोकी तो अनेक क्षेत्रो मे की मेहनत अकारथ चली जाएगी। हमारी दूसरी सामयिक समस्या सूखे बाढ और अतिवृष्टि की है। हर वर्ष कुछ इलाके सूखे रह जाते है, कही अतिवृष्टि और बाढ से सारा राष्ट्रीय जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। इस वर्ष उ०प्र०, पजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, राजस्थान में अनर्थकारी स्थिति पैदा हो गई दे। बाढ मे ५५० से अधिक व्यक्ति डूब गए, खड़ी फसलों, जनता के घर-द्वार-सग्रहीत अन्न-सामान नष्ट हो गया। उत्तर भारत की भीषण बाढ से हुई क्षति को आत्म सन्तोष और उपेक्षा से टालना ठीक नही। इसी तरह दिल्ली ने आई बाढ प्रकृति के प्रकोप से नही आई। व्यापक क्षेत्रो मे हर वर्ष बाढ़ आती है, हर वर्ष जान-माल की भीषण क्षति होती है। नदियो, तटवर्ती क्षेत्रों से पेड़, हरियाली कटती जा रही है, वहा हरियाली की प्रतिष्ठा नही होती, नदियो के संवेदनशील तटबन्धो पर अवरोध रोक या बाध बनाए जा सकते हैं, इसी प्रकार जो बाध बने भी हैं, वे पानी भरने का काम नहीं करते, वे केवल पानी रोकने मे ही उपयोगी होते हैं। यदि पानी का दबाव बढते ही तटवर्ती ऊपरले-निचले अधिकारी एक दूसरे से सम्पर्क कर व्यवस्था करें तो बाढ की विभीषिका से जनता की रक्षा सम्भव है।

दिल्ली मे आई यमुना की बाढ़ प्रकृति का प्रकोप न होकर मनुष्य की असावधानता और समय पर बचाव की व्यवस्था न किए जाने का नतीजा है। एक तो समस्त नदियों के जलग्रहण क्षेत्रो में हरियाली बढानी चाहिए; तटबन्ध मजबूत किए जाने चाहिए, इसी के साथ पानी को कुछ समय तक रोकने के स्थान पर बड़े जलाशयो और गहरे स्थानो में स्थायी झीलो की व्यवस्था की जानी चाहिए, जहा बाढ का पानी रोकने और जरूरत होने पर पेय पानी की जरूरत पूरी हो सकती है। यदि इस तरह के स्थायी विशाल जलाशय और झील तैयार हो सकती है। उन से राजधानी और समीपस्थ क्षेत्रो के पेय जल की समस्या का स्थायी समाधान हो सकता है। इसी प्रकार एक तीसरी समस्या देश मे व्याप्त शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक विषमता की है। इस समस्या के समाधान के लिए निर्धारित अवधि के लिए पिछड़े, उपेक्षित, दरिद्र वर्गो और समुदायो को आरक्षण और सरक्षण देने की व्यवस्था की गई थी। खेद का विषय है कि आज इन पिछड़े, उपेक्षित वर्गो के नाम पर राजनीति चलने लगी है। दो प्रदेशो ने तो उपेक्षित एव पिछडे वर्गो के प्रतिष्ठित एव सम्पन्न वर्गों को कानूनी रुकावट के बावजूद सहारा देना चाहा था। सर्वोच्च न्यायालय ने समाज के इन पिछडे वर्गों के प्रतिष्ठित वर्गों की विरासत को स्थिर रखने के कानून और प्रावधान निरस्त कर दिए हैं। देश की आर्थिक स्थिति के नियन्त्रण करने की समस्या हो अथवा बरसात मे उफनती नदियो और बाढ का प्रश्न हो अथवा समाज के वास्तविक उपेक्षित, तिरस्कृत दरिद्र वर्गों को समान अवसर-सुविधाए देने का प्रश्न हो अथवा कोई नई ज्वलन्त समस्या हो तो सभी दलों को अपने राजनीतिक दृष्टिकोण, क्षेत्रीय, जातीय स्वार्थों को छोडकर राष्ट्रीय हितो और जन-जन के कल्याण का ध्यान रखकर निजी हितो-स्वार्थों की तिलाजलि देनी चाहिए। केवल इसी रास्ते से चल कर अनेक समस्याओ को एक समाधान से सुलझाया जा सकता है।

चिट्ठी-पत्री

पाकिस्तान से ऐसे निपटें

अंग्रेजी मे एक कहावत है 'टिट फार टैट' अर्थात जैसे को तैसा (नहले पर दहला), यदि इसी कहावत को हम पाकिस्तान से निपटने के लिए प्रयुक्त करें तो समस्या का निदान हो सकता है, लेकिन चूंकि हम विशेष पहचान, सस्कृति के कारण ऐसा करने से हिचकते हैं। आजादी के समय से भारत मे दो विचारधाराए हैं, एक नरम और दूसरी गरम। आजादी दिलाने मे दोनो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, आज उसके आन्तरिक और बाहरी खतरो को खत्म करने के लिए भी यथायोग्य विचारधारा का उप-योग करना चाहिए।

—पकज क्वातरा, रा० उ० मा० बाल विद्यालय, यमुना विहार

हाय रे, आरक्षण

आरक्षित वर्ग आरक्षण को रेवडी, चना, परसी थाली और न जाने क्या समझता है। जैसे भूखा व्यक्ति अखाद्य वस्तु को भी खाद्य वस्तु के रूप मे देखता है, लगभग वही स्थिति है। क्या कभी आरक्षण वादियो ने आरक्षण को उत्पादन, कार्यक्षमता की दृष्टि से देखा है? एक क्षण के लिए यह तो माना जा सकता है कि दलित वर्ग के ऊपर अतीत में अत्याचार हुआ है, अत. वे आरक्षण के पात्र हैं, पर पिछडी जातियो के साथ तो ऐसी बदसलूकी हुई नही, फिर वे आरक्षण की रेवडी के पीछे क्यो दौड रहे है . . असली बात तो यह है कि दलितो और पिछडो के मुह आरक्षण की खीर लग गई है, वे उसे छोडना नही चाहते। आरक्षण मूलत सामा-जिक न्याय से जुडा था, पर भारत की बदलती राजनीतिक जलवायु ने उसे वोट की राजनीति से जोड दिया, इसलिए आरक्षण मे अब सडान्ध पैदा हो गई है। आरक्षित वर्ग की प्रतियोगिता वृत्ति खत्म होकर आलस्य आ जाता है। जब किसी समाज का एक वर्ग आलसी और निष्क्रिय हो जाएगा तो सम्पूर्ण राष्ट्र की कार्यक्षमता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

—वंशीधर त्रिपाठी, काशी विद्यापीठ, वाराणसी

देहि मे ददामि ते :

जो कुछ भी मैं देता हूं, उसका त्यागपूर्वक उपभोग कर

हरिदत्त वि० प्र०

मनुष्य जब योवन को प्राप्त होता है तो उसके सामने सबसे प्रथम प्रश्न यह आता है कि यह धन किसका है अर्थात रुपया-पैसा, सोना-चादी हीरे-मोती किसके हैं इन इनका स्वामी कौन है ? कोई कहता हैं मेरा है, दूसरा कहता है तेरा है, तीसरा कहता है उसका है। आखिर यह है किसका ? क्योकि देखने मे आता है कि यह धन आज किसी के पास है तो कल और किसी के पास, हमेशा किसी के पास नही रहता। छिपाकर रखने के बावजूद यह किसी के पास नही रहता। इस प्रश्न का उत्तर यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का पहला मन्त्र-"ओ३म् ईशावास्यमिद सर्व यत्किच जगत्या जगत्" देता है कि इस चराचर जगत मे जो कुछ भी है वह ईश का है अर्थात जिसने इन्हे बनाया है वही उनका स्वामी है जिसको ईश अथवा ईश्वर कहते हैं।

आगे प्रश्न उठता है कि यह है किसके लिए ? देखने से स्पष्ट मालूम होता है कि यह सभी प्राणियो के लिए है और वह ईश्वर 'याथातथ्यतोऽर्थान व्यदधातृशाश्वतीभ्य समाभ्य ।' अर्थात जीवो के कर्मानुसार यथायोग्य भोग्यपदार्थ देता है। मनुष्यो के अतिरिक्त दूसरे सभी प्राणी भोग योनि मे हैं केवल मनुष्य की ही कर्म और भोग उभय योनि है। इसे जहा पूर्व कर्मों के अनुसार भोग मिलता है वहीं वह नए कर्म करके भोगो को प्राप्त करता है। इसीलिए परमात्मा उसे कहता है कि'देहि मे ददामि ते'अर्थात मैं तुझे देता हू तू मुझे दे अर्थात जिनको आवश्यकता है उनको दे। तभी मैं तुझे दूंगा। उसके लिए परमात्मा कहते है कि 'तेन त्यक्तेन भु जीथा मा गृध:कस्यस्विद् धनम्। तुझे जो कुछ भी मैं देता हूं उसका त्यागपूर्वक भोग कर अर्थात पहले दूसरे प्राणियो को खिलाकर शेष स्वय खा, जिससे तू पापो से बच सके।

गीता मे कहा गया है कि 'यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्मिषै. क्योंकि संसार के सभी प्राणी हम मनुष्यो का उपकार अपने-अपने ढंग से करते हैं-कोई अपना अमृत दूध पिलाकर हमारा पालन करता है, कोई हमारी रक्षा करता है, कोई वायुमण्डल मे से विष चूसकर हमे शुद्ध प्राण वायु देती है, कोई सरल मधु प्रदान कर हमे नीरोग बनाता है, कोई सुन्दर रेशम का निर्माण कर हमे शरीर की सर्दी, गर्मी और वर्षा में रक्षा करता है तो कोई अपनी मधुर वाणी से हमे मुग्ध कर देता है तो इस प्रकार हम देखते है कि सभी प्राणी हमारा उपकार करते है। अतएव सृष्टि-उत्पत्ति के समय मनुष्यो को जन्म देने से पूर्व परमात्मा इन सब प्राणियो को उत्पन्न कर देता है जिससे मनुष्यो की सभी आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं। इस प्रकार देखने में आता है कि इन सब प्राणियो के उपकार का ऋण हम पर चढ जाता है। इस ऋण से उऋण होने के लिए ऋषियों ने प्रत्येक गृहस्थी के लिए बलि वैश्वदेव महायज्ञ का विधान प्रतिदिन अनिवार्य बनाया है, जिसके दो भाग है-(१) अपने लिए बनाए गए भोजन में से दस आहुतिया अग्नि मे दी जाती हैं जिससे वह सूक्ष्म हो कर सभी प्राणियो को मिल सके। (१) भोजन मे से कुछ (मीठा या फीका) भाग निकालकर कुत्ते, पक्षी, कृमि कीट आदि के लिए दिया जाए और उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न किया जाये।

यह सब दान देश, काल और पात्र को देखकर देना चाहिए। इसीलिए गीताकार ने कहा है कि 'दरिद्रान् भर कौन्तेय माप्रयच्छेश्वरे धनम्। अर्थात दरिद्रो को ही दान देना चाहिए धनवानों को नही। जो दान देता है भगवान् उसका निश्चय ही कल्याण करते हैं-'ओ३म् यदग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेतत् सत्यमगिर:॥'दान देने वाले का भद्र वह सर्वप्रियप्रभु अवश्य करते हैं। यह तो उनका सत्य (अटल) नियम है। इस प्रकार प्रत्येक गृहस्थी को दान अवश्य देना चाहिए। जिन के पास विद्या का धन है, उन्हे ज्ञान का दान करना चाहिए। ज्ञान-सबसे श्रेष्ठ दान है। मनुजी कहते हैं कि 'सर्वेषामेव दानानाम् ब्रह्मदानं विशिष्यते।' ज्ञान दान करने से पुन मनुष्य जन्म पाने का सुअवसर मिलने की सभावना बन जाती है क्योकि अन्य वस्तुओ के दान का भुगतान दूसरी योनियो मे हो सकता है जैसे अलशेषन कुत्ते इन सुख-सुविधाओ को भोगते हैं जो अधिकतर मनुष्यो को भी उपलब्ध नही होती।

ज्ञान-दान का फल मनुष्य के शरीर मे ही मिल सकता है। अत जिस के पास जो ज्ञान है वह उसे दूसरे मनुष्यो को दे जिससे मनुष्य जन्म पाने के अधिकारी बन सके। जिसके पास बल है, उससे वह निर्बलो की रक्षा करे। दान देने से व्यक्ति को यश की प्राप्ति होती है, भले ही उसमें दूसरे दुर्गुण भी क्यो न हो। दानवीर कर्ण का नाम इतिहास के पृष्ठो में स्वर्णाक्षरो मे लिखा मिलता है। दुर्योधन का संग करने से उसमें बहुत से दुर्गुण भी आ गए, परन्तु दान देने के कारण ही उसका नाम अमर हो गया। उसे ज्ञात होने पर भी कि इन्द्र ब्राह्मण का वेश धारण कर उससे कवच और कुण्डल मागने आएगा, वैसा करने पर कर्ण ने ब्राह्मण बने इन्द्र को कुण्डल और कवच उतार कर दे दिए। जब युद्ध मे अर्जुन के बाणो से घायल होकर कर्णभूमि पर गिर पडा, तो श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि आज संसार से एक बहुत बडा दानी जा रहा है। अर्जुन ने श्री कृष्ण से पूछा-वह कौन व्यक्ति है ? श्री कृष्ण ने कर्ण का नाम लिया। अर्जुन ने ने विस्मित होकर कहा कि वह कब से दानी बन गया है। श्री कृष्ण बोले- हाथ कंगन को आरसी क्या ! चल कर देखलो। दोनो ब्राह्मण का वेश बना युद्धभूमि मे पहुच गए कर्ण के पास। श्री कृष्ण ने कहा-'महाराज कर्ण की जय हो।' कर्ण ने गर्दन उठाकर देखा तो सामने ब्राह्मण दिखाई दिए। कर्ण ने कहा-कहिए भगवन कैसे आना हुआ ? ब्राह्मणों ने कहा आप ससार से जा रहे हैं, कुछ दान दे दो। कर्ण बोला इस समय देने के लिए मेरे पास कुछ नही हैं। ब्राह्मणो ने कहा-आपके मुखमे सोने के दांत हैं, वही दे दीजिए। कर्ण देने को तैयार हो जाता है, परन्तु दातो को निकाले कैसे ? उसने ब्राह्मणो से कहा-पास मे पड़ा पत्थर का टुकडा पकडा दीजिए ब्राह्मण बोले-हम ऐसा पाप नही कर सकते। कर्ण घिसट कर पत्थर तक पहुचा और उससे दात तोडकर अपने वस्त्रो से पोंछ कर बोला-लो भगवन्। ब्राह्मणो ने खून लगे दात लेने से इनकार कर दिया। तब कर्ण घिसट कर पानी के गड्ढे के पास पहुचा और दात धोकर ब्राह्मणो को दे दिए। वापस लौटते हुए श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा-क्यो अब तो तुमने देख लिया कि कर्ण कितना बडा दानी था, अर्जुन अवाक् रह गया।

लोक मे एक कहावत है-तुम एक पैसा दोगे, वह दस लाख देगा। इसमें भले ही अत्युक्ति हो, परन्तु उसमे सत्यता अवश्य है। हम देखते हैं कि किसान खेत मे कुछ दाने डालता है और बदले मे उसे ढेरो दाने मिल जाते हैं। प्रभु के देने के ढग बडे निराले है। वह जब देता है, तो छप्पर फाडकर भी दे देता है। इसे प्रभु ने सचकर दिखाया, १९४३-४४ में जब भारतीय नौसेना ने विद्रोह कर दिया था, तो उसे दबाने के लिए अग्रेज इगलैण्ड से एक जहाज मे गोला-बारूद भरकर बम्बई लाए। उसी जहाज मे सोने की छडें भी थीं। जहाज मे रात को किसी तरह आग लगगई। फलत गोला बारूद मे विस्फोट हुआ और सोने की छड़ें झोपड-पट्टियों पर जाकर गिरी जिससे उनके छप्पर फट गए और सोने की छडें अन्दर जा गिरी। भले ही अग्रेजो ने उन्हे छीन लिया। देने वाले ने तो उन्हें दे दिया, भले ही वह उनसे छीन लिया गया।

नीतिकारो ने धन की तीन गतियां बताई हैं-'दान भोगो नाश स्तिस्रो गतीह वित्तस्य। यो न ददाति न भुक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति' अर्थात धन की तीन गति होती हैं। उनमे से पहली गति है दान अर्थात अपनी आवश्यकता पूर्ति से अधिक धन दान दे देना चाहिए। इस विषय में सन्तों

(शेष पृष्ठ ७ पर)

राष्ट्रभाषा के सम्मान से राष्ट्रीय गौरव

टेलीफोन पुलिस के अधिकारियों द्वारा हिन्दी में काम करने का संकल्प

दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदन लाल खुराना ने महानगर टेलीफोन निगम तथा नई दिल्ली जिला पुलिस के अधिकारियो को १२ सितम्बर को हिन्दी चेतना माह के एक समारोह मे हिन्दी/देवनागरी मे कार्य करने एव हिन्दी-देवनागरी को व्यवहार में लाने का सकल्प दिलाया।

श्री मदनलाल खुराना ने अपने भाषण मे कहा कि स्वाधीनता के ४८ वर्ष बाद भी यह ठीक नही लगता कि हम विदेशी भाषा का प्रयोग करें और अपने दैनिक व्यवहार मे इसे लाएं। हिन्दी भाषा सभी प्रकार से ज्ञान-विज्ञान और राजभाषा के रूप मे प्रयोग मे लाए जाने की पूरी क्षमता रखती है। अपने राष्ट्र की भाषा और मातृभाषा के सम्मान मे ही राष्ट्रीय गौरव निहित है।

योग एवं स्वस्थ जीवन-प्रणाली

एक नए स्वास्थ्य कार्यक्रम का शुभारम्भ

दिल्ली। योग तथा स्वस्थ जीवन प्रणाली पर आधारित एक नए स्वास्थ्य कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया है, देश मे बढते हुए हृदय रोग के सकट पर नियन्त्रण करने के लिए साओल हेल्थ एण्ड रिसर्च फाउ-ण्डेशन नामक एक स्वयसेवी सस्था ने इस कार्यक्रम का शुभारम्भ किया है।

अमेरिका और भारत मे हुए वर्षों के वैज्ञानिक अध्ययनो के निष्कर्षों पर आधारित यह स्वास्थ्य-कार्यक्रम ध्यान-योग, व्यायाम और शाकाहारी भोजन से सम्बन्धित है। विशेषज्ञो की सम्मति में यह कार्यक्रम उच्च रक्त-चाप, कोरोनरी हृदय रोग आदि कई गम्भीर रोगों का उपचार और नियन्त्रण कर सकता है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हृदयरोगी को दो मास तक नियमित व्या-याम, तनाव दूर करने की साधना, कम वसायुक्त शाकाहारी भोजन तथा अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाने का सतत सख्त प्रशिक्षण योग विशेषज्ञ अपनी देखरेख मे देंगे।

भारत की चिकित्सा में योग और प्राचीन जीवन शैली से प्रभावित स्वास्थ्य विशेषज्ञ डा० डीन ओसीस ने इस प्रकार के पहले कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

तपोवन (देहरादून) का शरदोत्सव ४ अक्तूबर से

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून मे प्रति वर्ष अप्रैल मे होने वाला ग्रीष्मोत्सव और अक्तूबर मे होने वाला शरदोत्सव अब प्रभूत लोक-प्रियता प्राप्त कर चुके हैं और इन अवसरो पर आयोजित बृहद् यज्ञो की पूर्णाहुति वाले दिन तो दूरस्थ स्थानो से आगत श्रद्धालुओं का मेला-सा हो जाया करता है इकले-दुकले आने वाले यात्रियों के अतिरिक्त दिल्ली आदि नगरो से बड़े-बड़े यात्री समूह विशेष बसो से भी आते है।

इस वर्ष का शरदोत्सव ४ अक्तूबर से आरम्भ होकर ८ अक्तूबर को सम्पन्न होगा। योग साधना शिविर का निर्देशन पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती महाराज करेंगे और यज्ञ के ब्रह्मा भी आप ही होंगे। महात्मा चयन मुनि जी यज्ञ मे सहयोगी रहेंगे। प्रवचनकर्ताओ मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार और श्री यशपाल आर्य बन्धु (मुरादाबाद) के नाम विशेष रूप से उलेख्य हैं।

महोत्सव की तैयारियां श्रद्धा और उत्साह के साथ चल रही है।

देवदत्त बाली

आर्यसन्देश के ग्राहकों को सूचना

साप्ताहिक आर्यसन्देश के समस्त ग्राहको से सूचनार्थ निवेदन है कि नई दिल्ली से आर्यसन्देश नियमित रूप से प्रति शुक्रवार को पोस्ट कर दिया जाता है। इसके बावजूद ग्राहको के पत्र मिल रहे है कि आर्यसन्देश उन्हें नियमित नहीं मिल रहा है, ऐसे समस्त ग्राहक शिकायती पत्र कार्यालय में भेजने से पूर्व अपने सम्बन्धित डाक घर से पूछताछ करें और उसकी प्रति-लिपि आर्यसन्देश, नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—सम्पादक आर्यसन्देश

आर्यसन्देश का शुल्क तुरन्त भेजिए

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० है, उसका आजीवन शुल्क ३५० रु० है। निवेदन है कि मनीआडर, चैक या नकद भेजें।

धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, चिट पर आपकी ग्राहक संख्या लिखी रहती है।

आर्यसमाज गांधीनगर का ४० वां वार्षिकोत्सव

सामवेद पारायण यज्ञ : विशेष प्रवचन एवं कार्यक्रम

आर्यसमाज मन्दिर गांधी नगर मे ४० वें वार्षिकोत्सव पर प्रातः ६-३० से ८-१५ बजे से सोमवार १८ सितम्बर १९९५ से शनिवार २३ सितम्बर तक आचार्य रामकिशोर जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम हो रहा है। रात्रि को संगीताचार्य महाशय जनार्दन जी आर्य के भजनोपदेश हो रहे हैं, प्रतिदिन रात्रि को आचार्य रामकिशोर जी शास्त्री के प्रवचन हो रहे हैं। शुक्रवार २२ सितम्बर को दोपहर के समय आर्य महिला सत्संग का कार्यक्रम रखा गया है। रविवार २४ सितम्बर को वार्षिक उत्सव का समापन होगा जिसमे यज्ञ की पूर्णाहुति तथा आर्यसमाज द्वारा संचालित आर्य पुत्री पाठशाला की छात्राओं द्वारा ध्वजवन्दन का कार्यक्रम रखा गया है।

समापन कार्यक्रम के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल, डा० महेश वेदालंकार आदि विशेष अतिथि होंगे।

आर्ष ग्रन्थों का आचार्य भद्रकाम वर्णी द्वारा अध्यापन

आर्य जगत के युवा आचार्य भद्रकाम वर्णी आर्यसमाज बिरला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-६ में मानव निर्माण शिक्षण केन्द्र में प्रतिदिन प्रात ८ ३० से साय ४.३० बजे तक संस्कृत, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद आदि आर्ष ग्रन्थो का अध्यापन करते हैं। शिक्षण निःशुल्क है।

श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री के रूप में डा०विमल मेहता सम्मानित

६ सितम्बर, १९९५ को कनिष्ठ होटल नई दिल्ली मे लायन्स क्लब इण्टर नेशनल के ३२१-ए डिस्ट्रिक्ट ने डा० विमल मेहता, अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान, नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद को हरियाणा के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री के रूप सम्मानित किया।

नगर आर्यसमाज दयानन्द भवन शाहदरा का ४२वां वार्षिकोत्सव

नगर आर्यसमाज दयानन्द भवन, शाहदरा का ४२वा वार्षिकोत्सव रविवार, २४ सितम्बर, ९५ से रविवार १ अक्तूबर, १९९५ तक दयानन्द भवन, मो० महाराम डूंगर, शाहदरा, दिल्ली-३२ मे आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर रविवार २४ सितम्बर को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ होगा और पूर्णाहुति रविवार, १ अक्तूबर को होगी। वेदाचार्यो-विद्वानो के वेदोपदेश व व्याख्यान होंगे, प्रसिद्ध भजनोपदेशकों-सगीतज्ञो के भजनोपदेश होगे। बालिकाओं-बालको की भाषण प्रतियोगिता होगी। छोटे-छोटे बच्चो द्वारा बालकार्यक्रम होगा। युवको द्वारा योगासन व्यायाम प्रदर्शन प्रस्तुत किया जाएगा।

आर्य महिला सम्मेलन मे महिलाओ तथा बालिकाओं का उपयोगी कार्यक्रम रखा गया है।

महायज्ञ को पूर्णाहुति व वार्षिकोत्सव के प्रसाद रूप मे प्रीति भोजन-ऋषि लंकर १ अक्तूबर रविवार को होगा।

म.प्र. में आर्यसमाज के लिए अर्पित पं० विद्याभूषण भोपवे का देहान्त

हिवरखेड के प्रसिद्ध धन्वतरि प० विद्याभूषण जी भोपले सिद्धात प्रभाकर का दि० ३-९-९४ रविवार को सुबह ११ बजे ८९ वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया।

डा० सत्यव्रत जी भोपले मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ के पिताश्री थे। उन्होंने अपना जीवन आर्य समाज के लिए अर्पित किया। उनके पीछे दो पुत्र, एक कन्या तथा बहुत बड़ा भोपले परिवार है।

उनका अन्त्यसंस्कार वैदिक पद्धति से श्रीमान पं० अमृतलाल जी शर्मा विद्यावाचस्पति पूर्व आचार्य आर्ष गुरुकुल (होशंगाबाद), श्रीमान सेवकराम जी आर्य भजनोपदेशक सभा (जबलपुर), श्रीमान रविकुमार वानखडे (प्रद्योट), एव आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने मन्त्रोच्चार द्वारा किया।

श्रीमान कृष्णाजी इगले (विधायक जलब) जलगाव जामोद, श्रीमान प्राचार्य येनकर, गाडगे महाविद्यालय, मूर्तिजापूर, श्री प० अमृतलाल जी शर्मा, श्री सेवकराम जी आर्य, श्री उमेश आर्य एव आर्य भाइयो ने मूक श्रद्धांजलि अर्पित की।

हिन्दी भारत मां की बिन्दी

—राधेश्याम आर्य

हिन्दी है भारत की वाणी, हिन्दी है जन-जन की भाषा।
हिन्दी रही सजोए शाश्वत सत्य शिवम् सुन्दर अभिलाषा।
हिन्दी है भारत का गौरव, हिन्दी है भारत कास्वर,
हिन्दी है अस्मिता राष्ट्र की हिन्दी है बढती सत्वर।
हिन्दी भारत मा की बिन्दी, हिन्दी पर अभिमान करे हम।
ज्योतिर्मय पथ करती है यह, हिन्दी का सम्मान करें हम।
स्वतन्त्रता के आन्दोलन की, हिन्दी है व्यापक ललकार।
हिन्दी ने है किया विदेशी-सत्ता हित भीषण हुंकार।
हिन्दी है नव ज्योतिदायिनी, नभ में ज्योतित ज्योतिष्मान,
रही जगाती अन्तस्तल मे-अनुपम त्याग तथा बलिदान।
देश भक्ति की है प्रेरक यह, इसकी महिमा अमिट अपार।
हिन्दी ने हैं दिया सहर्षित-भारत के जन-जन को प्यार,
हिन्दी की रक्षा मे कोटिक, हाथ रहा करते सन्नद्ध।
हिन्दी का हम मान बढाए सकल्पों से हम प्रतिबद्ध।
सर्वोत्तम यह भारत-भाषा, उतरे इसकी आरती।
अवनी-अम्बर मे यह गूंजे जय हिन्दी-जय भारती।

मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

विज्ञापनों की विकृति पर रोक लगे

वर्तमान युग मे वस्तुओ या पदार्थों की बिक्री के लिए विज्ञापन उसकी बुनियाद होते हैं। इसी आधार पर वस्तुओं या पदार्थों का भविष्य निर्भर करता है और प्रभावी विज्ञापन वस्तु विशेष का बाजार तय करता है, किन्तु भारत मे इस विज्ञापन कला का इस अच्छे ढग से प्रयोग हो रहा है कि दीवारों से लेकर सूचना बोर्डो पर व दिशासूचक पट्टिकाओ से लेकर शिक्षा सस्थाओ समेत तमाम सरकारी भवन पोस्टरों से पुते नजर आते हैं। इसी पोस्टर युद्ध का ही परिणाम है कि सुन्दर व स्वच्छ शहर का सपना धूमिल होता जा रहा है।

छोटे कस्बो और महानगरो की दीवारो व दिशा-निर्देशक पोस्टरो से पुती होने के कारण अपने ही शहर मे आदमी अजनबी-सा हो जाता है। इसी तरह फिल्मी पोस्टर भी जगह-जगह लगे मिल जाते हैं। अक्सर अश्लील फिल्मो के पोस्टर शिक्षा सस्थानो के बाहर लगे ही मिलेंगे, जो वर्तमान युवा पीढी को भ्रष्ट व उसके चारित्रिक पतन के लिए पर्याप्त हैं, क्योंकि जरा से साबुन की तरह जरा-सी अश्लीलता भी युवा वर्ग को कामुक बनाने मे सर्वथा समर्थ है।

अतः आज आवश्यकता है कि विज्ञापन के नाम पर इस तरह की विकृति पर रोक लगाई जाए तभी सुन्दर और स्वच्छ नगर का स्वर्णिम स्वप्न साकार हो सकता है।

—मुनीश भाटिया, ३८३ एल/मोडल टाउन, यमुना नगर (हरियाणा)

देहि मे ददामि ते :

(पृष्ठ ४ का शेष)

के विचार भी सराहनीय माने जा सकते है 'दाता इतना दीजिए जा मे कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा न रहू साधु न भूखा जाए।' कितना सन्तोष-पूर्ण जीवन का दर्शन है? दूसरी गति है भोग अर्थात जैसा पहले कहा जा चुका है कि त्यागपूर्वक भोग। जो न तो देता है और न ही भोगता है उसकी तीसरी गति अर्थात नाश हो जाता है। इससे अच्छा है गरीबो को दे दिया जाए। इस बात को एक और सन्त ने कहा—'पानी बाढे नाव में घर मे बाढे दाम! दोनो हाथ उलीचिये यही सयानो काम, तो सयानो का काम करने मे देरी नही करनी चाहिये, क्योकि 'काल पिवति तद्रसम्। किसी काम को देर तक लट काने से समय उसका रस पी लेता है और वह नीरस हो जाता है, जैसे आजकल सरकार जिस काम को नही करना चाहती उसे आयोग को सौंप देती है, जब तक आयोग की रिपोर्ट आती हैं तब तक जनता उसको भूल जाती है। इसके विपरीत मनीषियो का कथन हैं 'शुभ कार्य जितना शीघ्र ही उतना ही करना चाहिए इसलिए दान की जब भी इच्छा हो, तुरन्त कर दें।

इस प्रकार सर्वत्र दिखाई दे रहा है कि भगवान सबको याथातथ्यत: भोग्य सामग्री दे रहा है। इसीलिए वेद का 'देहि मे ददामि ते' अपने आप मे पूर्णतया सार्थक है।

आर्यसमाज ए-ब्लाक, प्रशान्त विहार-८५

आर्य उपदेशकों की सेवाएं उपलब्ध प्रचारार्थ सदुपयोग करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मे दो महानुभाव भजनोपदेशक पं० दाताराम आर्य भजनोपदेशक व प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक, उपलब्ध हैं अपने कथा, उत्सव, सत्सगो के लिए सेवाए प्राप्त करे।

सम्पर्क—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग
दिल्ली आ० प्र० सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 21-22-9-1995 Licence to post without prepayment No. U (C 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५

होलेण्ड में आर्यसमाज

डा० धर्मपाल की सफल होलेण्ड यात्रा

(पृष्ठ १ का शेष)

दयानन्द हिन्दी भाषा और आर्यसमाज विषयक छपाई । वह लोगो मे बाटी गई ।

अगले ही दिन भोजनोपरान्त रेडियो कृष्णा के कार्यालय पहु चे। १५ मिनट तक ईश्वर सम्बन्धी कुलपति जी का भाषण हुआ। कुछ प्रश्न भी उनसे पूछे गये थे जिनका समाधान उन्होने किया। वहा से निकलकर श्रीमान प्रेमवक्तावर के घर दस्तक दी। कुछ देर बाद ही आकाशवाणी के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम मे पहु च गये। लगातार १ घण्टे तक ईश्वर का स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के उपाय विषयक गम्भीर प्रवचन किया। आज शंकासमाधान भी होना था परन्तु किसी ने कोई भी प्रश्न नही किया। लोगो से प्रश्न करने के लिए १५ मिनट तक अपील की गई। इन दो दिनो के दो आकाशवाणी कार्यक्रमो में रोटरडम मे आर्यसमाज का जबर्दस्त प्रचार हुआ है। आकाशवाणी से हम लोगो को प. शुभधन जी के घर पहु चा दिया गया। यहां अनाथ बच्चो के सहायक समाज द्वारा कुलपति जी के सम्मान मे विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। अमस्टरडम से आए पं० शुभधनजी ने यज्ञ सम्पन्न कराया, कुछ मैंने भी उद्बोधन दिया, पण्डिता विश्वरश्वर ने ईश्वर महिमा का सुन्दर भजन गाया था। आज के प्रवचन मे श्री कुलपति डा० धर्मपाल जी ने अश्मन्वतीरीयते--तथा उलूकयातु शुशुलूकयातु —इत्यादि मन्त्रों का व्याख्यान किया। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रगति हेतु भी लोगो को संगठित होने के लिये प्रेरित किया। साथ ही अपने आगमन का वृत्तान्त सुनाते हुए सबका धन्यवाद भी किया। यही रोटरडम का अन्तिम कार्यक्रम था।

अगले दिन पण्डिता यशोमति नयपाल के घर जाने का कार्यक्रम था। साथ ही दर्शनीय स्थलो का भ्रमण भी किया। शुक्रवार को प्रात: लेलीस्टाद नामक महेशयोगी के आश्रम को देखते हुए लेवार्दन पहु चे, वहा आर्य समाज वेदप्रकाश की प्रधाना श्रीमती आर्यकुमारी रमई का जन्मदिवस समारोह का यज्ञ हुआ जिसमें कुलपति जी ने भी अपनी शुभकामनाए उन्हें प्रदान की व आशीर्वाद दिया। यह आर्यसमाज वेदप्रकाश महिलाओ का एकमात्र आर्यसमाज है। यहा मेरे अग्रज पं० विजय प्रकाश शास्त्री द्वारा संस्कृत-हिन्दी की पढ़ाई भी कराई जाती है तथा इस समाज ने भारत में एक वेद मन्दिर के निर्माण मे सर्वाधिक योगदान किया है। कुलपति जी की यह यात्रा काफी व्यस्त रही। मैंने यहीं से कुलपति जी को विदाई दी। आर्यप्रतिनिधि सभाधिकारियो ने पूर्ण सम्मान के साथ गुरुकुल कांगडी विश्व-विद्यालय के कुलपति श्री धर्मपाल जी को हवाई अड्डे पर इस यात्रा की पूर्ति के समय हार्दिक बधाइयो, शुभकामनाओ सहित विदाई दी।

सेवा में—

सुखदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल ११०२४/९-९५

होलेण्ड में आर्यसमाज

डा० धर्मपाल की सफल होलेण्ड यात्रा

(पृष्ठ १ का शेष)

दयानन्द हिन्दी भाषा और आर्यसमाज विषयक छपाई । वह लोगो मे बाटी गई ।

अगले ही दिन भोजनोपरान्त रेडियो कृष्णा के कार्यालय पहु चे। १५ मिनट तक ईश्वर सम्बन्धी कुलपति जी का भाषण हुआ। कुछ प्रश्न भी उनसे पूछे गये थे जिनका समाधान उन्होने किया। वहा से निकलकर श्रीमान प्रेमवक्तावर के घर दस्तक दी। कुछ देर बाद ही आकाशवाणी के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम मे पहु च गये। लगातार १ घण्टे तक ईश्वर का स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के उपाय विषयक गम्भीर प्रवचन किया। आज शकासमाधान भी होना था परन्तु किसी ने कोई भी प्रश्न नही किया। लोगो से प्रश्न करने के लिए १५ मिनट तक अपील की गई। इन दो दिनो के दो आकाशवाणी कार्यक्रमो मे रोटरडम मे आर्यसमाज का जबर्दस्त प्रचार हुआ है। आकाशवाणी से हम लोगो को प. शुभधन जी के घर पहु चा दिया गया। यहा अनाथ बच्चो के सहायक समाज द्वारा कुलपति जी के सम्मान मे विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। अमस्टरडम से आए पं० शुभधनजी ने यज्ञ सम्पन्न कराया, कुछ मैंने भी उद्‌बोधन दिया, पण्डिता विश्वरश्वर ने ईश्वर महिमा का सुन्दर भजन गाया था। आज के प्रवचन मे श्री कुलपति डा० धर्मपाल जी ने अश्मन्वतीरीयते—तथा उलूकयातु शुशुलूकयातु —इत्यादि मन्त्रो का व्याख्यान किया। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रगति हेतु भी लोगो को सगठित होने के लिये प्रेरित किया। साथ ही अपने आगमन का वृत्तान्त सुनाते हुए सबका धन्यवाद भी किया। यही रोटरडम का अन्तिम कार्यक्रम था।

अगले दिन पण्डिता यशोमति नयपाल के घर जाने का कार्यक्रम था। साथ ही दर्शनीय स्थलो का भ्रमण भी किया। शुक्रवार को प्रात लेलीस्टाद नामक महेशयोगी के आश्रम को देखते हुए लेवार्दन पहु चे, वहा आर्य समाज वेदप्रकाश की प्रधाना श्रीमती आर्यकुमारी रमई का जन्मदिवस समारोह का यज्ञ हुआ जिसमे कुलपति जी ने भी अपनी शुभकामनाए उन्हे प्रदान की व आशीर्वाद दिया। यह आर्यसमाज वेदप्रकाश महिलाओ का एकमात्र आर्यसमाज है। यहा मेरे अग्रज पं० विजय प्रकाश शास्त्री द्वारा सस्कृत-हिन्दी की पढाई भी कराई जाती है तथा इस समाज ने भारत मे एक वेद मन्दिर के निर्माण मे सर्वाधिक योगदान किया है। कुलपति जी की यह यात्रा काफी व्यस्त रही। मैंने यही से कुलपति जी को विदाई दी। आर्यप्रतिनिधि सभाधिकारियो ने पूर्ण सम्मान के साथ गुरुकुल कागडी विश्व-विद्यालय के कुलपति श्री धर्मपाल जी को हवाई अड्डे पर इस यात्रा की पूर्ति के समय हार्दिक बधाइयो, शुभकामनाओ सहित विदाई दी।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल ११०२४/१-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ४७ रविवार, १ अक्तूबर १९९५ विक्रमी सम्वत् २०५२ दयानन्दाब्द : १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपए आजीवन—३५० रुपए विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

आर्यसमाज को संयुक्त, सचेत और संगठित करें

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् द्वारा आर्यजनों का आह्वान

समाज को सबसे बड़ा खतरा अपनों से है : हमें अपनी कमजोरियां दूर करनी होंगी : युवा शक्ति को अवसर दें : दीवान हाल आर्यसमाज में आयोजित आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन में आर्य विद्वानों एवं वक्ताओं का सत्परामर्श

दिल्ली। "आज हमारे देश के लिए गहरा खतरा पैदा हो गया है। खेद है कि आर्थिक उदारीकरण के नाम पर देश बिकता जा रहा है। एक नया खतरा और मण्डरा रहा है, विदेशी धन के बल पर साठ हजार दलितों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र चल रहा है। कुछ वर्ष पूर्व विदेशी धन के आकर्षण से ५०० दलित मीनाक्षी पुरम में मुसलमान बने थे, उस समय केवल आर्यसमाज ने इन लोगों को वर्षों की कोशिश से अपने धर्म में फिर दीक्षित करवाया था। मीनाक्षीपुरम की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए आर्यसमाज को सचेत और संगठित होना पड़ेगा।" इन चेतावनी भरे शब्दों में रविवार २४ सितम्बर १९९५ आर्यसमाज दीवान हाल में दानवीर श्री दीवान चन्द जी के १११वें जन्मदिवस पर आयोजित आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन में एकत्र आर्य नेताओं व आर्य कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने सतर्क किया—"आज अमेरिकी शैली से—अंग्रेजी के वर्चस्व से भारतीय सभ्यता संस्कृति को विनष्ट करने का षड्यन्त्र चल रहा है, इसके लिए आर्यसमाज का आह्वान करता था—सच्चे आर्य बनो, देश को बचाने के लिए आर्यसमाज को बढ़ाना होगा। कुछ काम करो, घर को—समाज को पवित्र करो, शुद्ध करो। आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करो।"

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—"सब समाजों और आर्यजनों को संगठन का आदेश-निर्देश मानना ही होगा। हम अपना सिद्धान्त न छोड़ते हुए अपनी सभ्यता संस्कृति को मजबूत करें।

वैदिक विद्वान पं० नेत्रपाल शास्त्री ने आर्यजनों का आह्वान किया कि "पहले अपने अन्दर की कमजोरियां ईमानदारी से दूर कीजिए, प्रत्येक आर्यजन प्रतिज्ञा करे कि वह आर्यसमाज के माध्यम से व्यक्ति, समष्टि और समाज के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहेगा। आज समाज के पास पैसों की कमी नहीं है, हमें वाणी से आगे बढ़ कर अपने आचरण उत्तर दायित्व को निबाहना होगा। हमारे नियम-उपनियम बहुत सुन्दर हैं, इन उपनियमों का पालन हो, अनुशासन-व्यवस्था सुदृढ़ हो जाएगी।"

आर्य मनीषी डा० प्रेमचन्द्र श्रीधर ने आग्रह किया—"आज आर्यसमाज को सबसे बड़ा खतरा अपनों से है। दूसरों को कोसने की जगह अन्दर को टटोलिए। आज हम सबको मिलकर संगठन को मजबूत करना होगा, हम सब एक संयुक्त होकर ही आगे बढ़ेंगे।"

विदुषी प्राध्यापिका डा० सुमेधा विद्यालंकार ने आर्यजनों को व्यक्ति, परिवार और समाज में स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वदेशी और स्वदेश के चार आधारों को सुदृढ़ करने का आह्वान किया। पत्रकार श्री बनारसीसिंह ने परामर्श दिया कि युवा पीढ़ी के लिए सशक्त आकर्षक कार्यक्रम होने चाहिए। व्यक्तिगत सम्पर्क पर बल दीजिए।

युवानेता श्री राजसिंह, युवा विद्वान् विनय विद्यालंकार, डा० यशवीरसिंह आदि ने संगठन में युवा शक्ति को अधिक अवसर देने का अनुरोध किया। आर्यसमाज गांधी नगर के मन्त्री श्री शिवशंकर जी गुप्ता ने कहा उनके पिता जी की प्रेरणा थी फलतः वह आर्यसमाज से बचपन में जुड़ गए। वैद्य महेन्द्रकुमार शास्त्री ने कहा हमें वर्त्तमान को समझकर समाज के तीनों स्तम्भों को सुदृढ़ करना चाहिए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने एकत्र आर्य विद्वानों व आर्यजनता का आभार प्रकट किया।

गणेश प्रतिमाओं द्वारा दुग्धपान : एक कोरा भ्रम !

वैज्ञानिकों द्वारा भ्रम-निवारण : अफवाहें कैसे फैली : दूध की किल्लत आस्था का अपूर्व प्रदर्शन : मुंह मांगी दरों पर दूध बिका

नई दिल्ली। बृहस्पतिवार २१ सितम्बर १९९५ के दिन अगर भारत में ही नहीं विदेशों में भी लाखों-करोड़ों लोगों के लिए अटूट आस्था की बात रही कि गणेश प्रतिमाएं दूध पी रही हैं तो इसके ठीक विपरीत वैज्ञानिकों और बुद्धिवादियों ने ठोस आधार प्रस्तुत करते हुए यह सिद्ध किया कि इसमें कोई देवी चमत्कार जैसी कोई ठोस चीज है ही नहीं। वैज्ञानिकों ने इसे भ्रम बतलाते हुए कहा कि यह तीन वैज्ञानिक सिद्धांतों, पृष्ठ तनाव वेग के सिद्धांत व गुरुत्वाकर्षण का मिला-जुला असर है, जिसे लोग अन्धविश्वास के कारण देवी-देवताओं का चमत्कार मान रहे हैं।

वैज्ञानिकों ने बताया कि ज्यादातर मूर्तियां छिद्रयुक्त पत्थरों की बनी होती हैं और प्रायः गहरे रंगों में होती हैं। इन पत्थरों में द्रव को सोखने की क्षमता बहुत अधिक होती है। दूध का पृष्ठ तनाव पानी से कम होता है, इसलिए

(शेष पृष्ठ ८ पर

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

आर्यसमाजों के अधिकारियों के नाम आवश्यक परिपत्र

विषय : नव वर्ष कैलेण्डर–१९९६

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा मे नव वर्ष के कैलेण्डर का विषय विचारार्थ आया। अन्तरग सदस्यो ने सुझाव दिए कि नव वर्ष के कैलेण्डर जो आर्यसमाजो/सस्थाओ द्वारा प्रकाशित कराए जाते है उनमे एकरूपता नहीं होती और आर्यसमाज के मन्तव्यों के अनुरूप भी वे नही होते। अतः इस संदर्भ मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को यह दायित्व सौंपा गया कि सभा-सभी आर्यसमाजो, सस्थाओ के अधिकारियो से उनकी आवश्यकता अनुसार सख्या (आर्डर) तथा कैलेण्डर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु लागत मूल्य राशि पर बंधवाकर कैलेण्डर प्रकाशित कराए और सभी समाजो अथवा सस्थाओं को नव वर्ष से पूर्व भिजवा दे।

कैलेण्डर का लागत मूल्य साढे चार रुपए प्रति कैलेण्डर आता है। समाजो, सस्थाओं के अधिकारियो से अनुरोध है कि वे अपनी समाज की ओर से जितने कैलेण्डर छपवाना चाहती हैं उसकी राशि अविलम्ब १० अक्तूबर १९९५ तक सभा कार्यालय को भिजवा दें। कैलेण्डर कम से कम १०० छपवाने होंगे। अपनी सामर्थ्य अनुसार प्रचार-प्रसार के लिए अधिक से अधिक कैलेण्डर छपवाने का आर्डर दें।

नव वर्ष कैलेण्डर में निम्न विशेषताएं होंगी :—

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का भव्य चित्र।
२. चित्र की एक तरफ संगठन सूक्त मन्त्र तथा दूसरी तरफ आर्यसमाज के नियम होंगे।
३. आर्य पर्व सूची।
४. कैलेण्डर में अंग्रेजी तथा देसी तिथियां दोनों प्रकाशित की जाएगी।
५. कैलेण्डर के मध्य मे आर्यसमाज, संस्था का नाम तथा पता मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया जाएगा।
६. कैलेण्डर के ऊपर "ओ३म्" तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अंकित होगा।
७. कैलेण्डर का आकार २० × ३०, फुल साईज बढ़िया कागज पर होगा।

आपसे अनुरोध है कि अपनी आर्यसमाज, संस्था की ओर से आवश्यकता अनुसार कैलेण्डर की सख्या तथा अग्रिम राशि (साढ़े चार रुपए प्रति कैलेण्डर के हिसाब से) निश्चित तिथि १० अक्तूबर १९९५ तक भिजवा दे ताकि समय पर कैलेण्डर प्रकाशित कराकर सभा आपको भिजवा सके।

वैद्य महेन्द्र पाल आर्य — सूर्यदेव
सयोजक, कैलेण्डर प्रकाशन समिति — प्रधान

भ्रष्ट स्वार्थी नेताओं की जब तक है सरकार

—छाजूराम शर्मा शास्त्री

भ्रष्टाचार बढ़ा कर के हम अपना काम बनाए गे।
दिखा-दिखा कर सब्ज बाग जनता को मूर्ख बनाए गे॥
ले कर नाम लोकतन्त्र का निस-दिन ऐश उड़ाए गे।
निर्दोषो का रक्त चूस कर देशभक्त कहलाएगे॥
गरीबी नहीं मिटेगी, हमसे गरीबों को ही मिटाए गे।
सतवादी गौ भक्तों को जेलो मे बन्द कराए गे॥
सयम-नियम की सीख न दे गे नसबन्दी करवाए गे।
ब्रह्मचर्य और सदाचार को देश से मार भगाए गे॥
मैकाले की नई सभ्यता घर-घर मे फैलाए गे।
राम-कृष्ण की भूमि को हम इगलिस्तान बनाए गे॥
आर्य सभ्यता मिटे न जब तक हम विश्राम न पाए गे।
हिन्दी को ही अंग्रेजी की दासी यहा बनाएगे॥
गाधी जी के रामराज्य की धज्जी खूब उड़ाएगे।
किन्तु नाम लेकर उनका हम दौलत खूब कमाएगे॥
जिसमे हमको सुख-सुविधा हो वही विधान बनाएगे।
दुखी लोग चिल्लाते हो पर हम न ध्यान में लाएगे।
रिश्वत लेना पाप, दफ्तरों मे ऐसा लिखवाएगे।
क्योकि, लाभ हमको भी उससे यह सब भेद छिपाएँगे॥
अपराधी पकड़ा जाए तो हम उसको समझाएंगे।
रिश्वत से रिश्वत कटती है यह सिद्धांत बताए गे॥
बलात्कार-हिंसा की घटना जो जुबान पर लाएंगे।
शांत रहो बकवास करो मत उनको भय दिखलाएगे॥
देशद्रोहियों को खुश करके अपने वोट बढ़ाए गे।
यवन-ईसाई बढ़ा देश में हिन्दू कौम घटाए गे॥
साम्प्रदायिकता बढ़ा देश में झगड़े खूब कराएं गे।
विधर्मियो को सुविधा देकर उनको यहा बसाए गे॥
हिन्दू पर आरोप लगा उसको बदनाम कराए गे।
तुष्टिकरण नीति अपना कर जातिवाद बढ़ाए गे॥
भ्रष्ट-स्वार्थी नेताओ की जब तक है सरकार।
"छजूराम" इस देश का कभी न होय सुधार॥

मेरा अंग-अंग सबल हो

वाङ्‌म आसन्नसो प्राणश्चक्षुरक्ष्णो श्रोत्रं कर्णयो ।
अपालिता केशो अशोणा बहु दन्ता बाहवोर्बलम् ॥
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जव पादयो प्रतिष्ठा अरिष्ठानि मे सर्वात्मानिभृष्ट ।
अथर्व० १९.६०.१-२

मेरे मुख मे वाणी हो, नासिका मे प्राण हो, नेत्रो मे देखने की शक्ति हो, मेरे दात मजबूत हो। मेरे बाल काले रहे। मेरी भुजाओ मे बल रहे।

मेरे ऊरूओ मे ओज हो, जाघो मे वेग हो, पैरो मे खडे रहने का सामर्थ्य हो, मेरी आत्मा मे कोई विकृति न हो, मेरे अ ग पाप से शून्य हो।

सम्पादकीय अग्रलेख

एक सांस्कृतिक पर्व का सन्देश

आश्विन शुक्ला दशमी के दिन दशहरे का त्योहार मनाया जाता है। इसे विजय दशमी-विजय का पर्व कहिए अथवा विजया-दुर्गा देवी का कहिए, यह भारत राष्ट्र और संस्कृति का एक बहुत पुराना सास्कृतिक पर्व है। कई पश्चिमी आलोचको की धारणा है कि रामायण और महाभारत किसी ऐतिहासिक घटना के विवरण नही हैं, प्रत्युत ये दो अमर महाकाव्यो के नाटकीय रूपान्तर मात्र है। यह ठीक है, उन युगो के पुरातत्वीय अवशेष अभी तक प्रामाणिक रूप से खोजियो को नही मिले हैं, तथापि भारत मे ही नही, विस्तीर्ण द पू एशिया के क्षेत्र के जन-जन मे ही नही, विश्व के अनेक भागो मे श्री राम की कथा व उनमे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन की जैसी व्यापक हृदयस्पर्शी चर्चा की जाती है और उससे सामान्य जन–जन जैसे स्पन्दित व प्रेरित होता है, उससे स्पष्ट है कि ये दोनो ग्रन्थ मात्र महाकाव्य नही है, प्रत्युत वे भारत राष्ट्र की प्राचीन ऐतिहासिक सास्कृतिक विजय गाथा के अमर स्मारक हैं। इन दोनो से ही हमारे राष्ट्र के प्राचीन अमर जीवनमूल्यो का सन्देश मिलता है, इन सास्कृतिक पर्वो पर हमे उनके सन्देश को यत्नपूर्वक ग्रहण करना चाहिए। ये दोनो ही ग्रन्थ भारत की सास्कृतिक ऐतिहासिक एकता के भगीरथ प्रयत्नो के अमर स्मृति ग्रन्थ हैं। रामायण श्रीराम के उन एकता प्रयत्नो को स्मरण कराती है जब उन्होने उत्तर को दक्षिण से जोडा था और महाभारत श्री कृष्ण के उन प्रयत्नो की साक्षी है, जब उन्होने बिना युद्ध किए ही पूर्व को पश्चिम से ही नही, प्रत्युत एक केन्द्रीय शासन के नियन्त्रण मे एक केन्द्रीय सत्ता की प्रतिष्ठा की थी।

जहा तक विजय दशमी के पर्व का अवसर है, वह भारत के विस्तीर्ण दक्षिणी भाग से रावण के अन्यायी शासन के उन्मूलन की भी याद दिलाता है। रावण शास्त्रो का पण्डित कहा जाता था, परन्तु आचरण की दृष्टि से वह मार्ग से भ्रष्ट हो गया था, वह धोखे मे श्रीराम और लक्ष्मण को भटका कर उनकी अनुपस्थिति मे उनकी पत्नी को साधु के वेश मे बलात् अपहरण कर ले गया। श्री राम ने यत्न किया कि दूतो के माध्यम से सन्देश भेजकर अपहृत पत्नी वापस मिल जाए, परन्तु रावण वनवासी राम व जनजातियो की शक्ति की उपेक्षा करता रहा। आखिर युद्ध हुआ और युद्ध मे अनेक शक्तियो और शस्त्रादि से सम्पन्न रावण का सहार हो गया। विजय दशमी का पर्व बुराई पर अच्छाई की, पाप पर पुण्य की विजय को भी याद दिलाता है। इस पर्व के दिन रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाथ के पुतले बना कर उन्हे जलाने की कोई तुक नही है। यह सास्कृतिक पर्व क्षत्रियों की एक प्राचीन परम्परा और रीति का स्मरण कराता था, जब उस दिन शस्त्रो, यन्त्रो व वाहनो की सफाई कर उन्हे व्यवस्थित किया जाता था। बरसात के मौसम के बाद क्षत्रिय और उद्यमी अपने शस्त्रो, यन्त्रो और वाहनों का भावी कार्यक्रमो के लिए स्वच्छ, व्यवस्थित व सन्नद्ध करें, यह भी सास्कृतिक पर्व का सन्देश है।

विजय दशमी के पर्व पर देश के मध्यवर्ती व दक्षिणी अचल मे एक सुन्दर परिपाटी है। उस दिन प्रत्येक अपने साथ सोने की पत्तिया लेकर चलता है, वह प्रत्येक मिलने वाले से उन सोने की पत्तियो का विनियम कर खुला आलगन कर हरेक से मिलता है और आपसी द्वेष, बुराई, मनोमालिन्य खत्म करने का व्रत लेता है। शीशम या शमी जैसे बृक्ष की पत्तिया ही सोना कहाती है और उनके ही पारस्परिक आदान-प्रदान से आपसी द्वेष खत्म करने का व्रत हर कोई इस दिन ले सके तो हमारे परिवारो, समाज, राज्य और समस्त देश से आपसी मतभेद खत्म हो सकते है। आज के ही दिन देश के बडे भाग मे शक्ति की प्रतीक दुर्गा की पूजा–अर्चना की जाती है। असुरो, दैत्यो की आसुरी शक्ति का उन्मूलन करने वाली भगवान की सच्ची शक्ति, आपसी सगठन और आत्मरक्षा की कराटे और जुजुत्सु आदि नवीन विधाओ के प्रशिक्षण से हरेक नारी, बालिका और बच्चे तक देवी दुर्गा का मूर्त्त रूप धारण कर आत्मरक्षा कर सकते हैं। दुर्गा शक्ति की आराध्या देवी है, आत्मरक्षा व आक्रमण कारी से सघर्ष कर विजय पाना भी विजय पर्व का सास्कृतिक सन्देश हो सकता है। आप कोई प्राचीन सन्दर्भ ले या किसी नई विधा का सहारा लें प्रत्येक राष्ट्रवासी को इस पर्व से आत्मरक्षा व आततायी को उन्मूलन करने का व्रत और सकल्प लेकर उसे कार्यान्वित करना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

जहरीले धुएं से स्वास्थ्य-हानि

वह दिन दूर नही, देश की राजधानी की सडको पर प्रत्येक नागरिक व वाहन-चालक के चेहरे पर आक्सीजन गैस का मास्क लगा होगा। विश्व मे वायु-प्रदूषण के मामले मे चौथा स्थान रखने वाले इस शहर मे दुनिया के सर्वाधिक दुपहिया वाहन चलते हैं। सडको पर स्कूटर, थ्री व्हीलर, बसें, ट्रक व कारो का रेला जो जहरीला धुआ उगलते हैं, उसी से आखो मे जलन और गले मे खराश पैदा होती है।

इन वाहनो के एक दूसरे से आगे निकलने की होड मे ही अधिकाश सड़क-यातायात दुर्घटनाए होती हैं। आखिर कैसे हो यह यातायात-नियन्त्रण ? काश, कोई बेदी जैसी दबग अफसर फिर से इस विभाग मे आए और आशा की नई किरण जगाए, चरमराती यातायात व्यवस्था को काबू मे लाए और सुधारे।

दर असल वाहनो की सख्या मे बढोतरी के अनुपात मे सडके कहा तक चौडी और लम्बी होगी ? कितने पुल बनेंगे ? नए वाहनो को सडको पर उतारने की कोई हद तो होगी ही। विदेशो मे नए लाइसेंस देने से पहले पुराने वाहनो को नष्ट करने या बन्द करने की परम्परा है। आखिर कुछ तो उपाय करना ही होगा।

—पवन सुरेका राजस्थानी, जयमाता मार्केट, त्रिनगर, दिल्ली-३५

एक दिन की हिन्दी

वर्ष मे हिन्दी को केवल एक ही दिन दिया गया है, शेष ३६४ दिन अ ग्रेजी को समर्पित हैं। दुर्भाग्य से हम एक दिन भी पूर्ण आस्था व सपर्पण भाव से नही गुजारते हैं, इससे बडी लज्जा और विडम्बना की बात क्या हो सकती है।

पूरे वर्ष तो हम अ ग्रेजी के नाम से ही जागते है और इसी के नाम से सोते हैं। प्रात उठते ही हम 'बेड टी' मागते हैं, फिर लेट्रिन, टायलेट और बाथ रूम मे घुसते हैं। फिर ब्रेक फास्ट शुरू होता है, बीच-बीच मे मम्मी, पापा, डैडी, डैड, अ कल, आटी सुनते रहते हैं। घर से निकले तो 'टाटा', 'बाय-बाय', 'हाय-हाय', 'सर', 'मैडम', 'ओके', की रट लगाते हुए सब काम अ ग्रेजी मे यहा तक कि हस्ताक्षर भी अ ग्रेजी करते हुए 'सारटी', 'थैंक यू', 'एक्सयूज मी' के सहारे घर लौटते हैं।

—बालकराम वर्मा, दिल्ली

भारत की राजधानी में दो साधु सुर्खियों में उभरे

एक बाबा ने धर्म के नाम यौन–शोषण किया दूसरे ने राजनीतिक सम्बन्धों पर राष्ट्र विरोधी भूमिका प्रस्तुत की

नई दिल्ली। देश के सामाजिक जीवन और राजनीति मे भगवा वस्त्र-धारी साधु बाबा लोगो ने घुसपैठ कर किस तरह अपनी पकड मजबूत की है, उससे समय रहते जागरूक समाजसेवियो विशेषत प्रबुद्ध आर्य चिन्तको को सावधान होना चाहिए। पहली घटना मे पटेल नगर के एक युवक की हत्या के अभियोग मे युवक की शिक्षित पत्नी और उसका प्रेमी ऋषिकेश का रामेश्वरानन्द गिरि गिरफ्तार किया गया। इस स्वामी बाबा के नाम करोडो की सम्पत्ति है, जिससे उसके ऋषिकेश और पुणे मे आश्रम भी है। स्वामी के कई अन्य महिलाओ से भी अवैध सम्बन्ध बतलाए गए है। उल्लेखनीय है–यह युवती विज्ञान विषय मे स्नातिका है और एक डी.ए.वी. पब्लिक मे शिक्षिका है। उसके पिता एक राष्ट्रीय बंक की करौल बाग शाखा मे सहायक मैनेजर है। उसके चाचा एक डाक्टर है। यह स्वामी लडकी के तिलक नगर स्थित सम्पूर्ण परिवार का गुरु था, इस गुरुवाई की आड़ मे वह इस लडकी का ही नही, कई शिक्षित युवतियो का शारीरिक शोषण कर रहा था। वह अपनी इन भक्तिनो से कहा करता था कि उनके आध्यात्मिक स्तर को उठाने के लिए शारीरिक सम्बन्ध जरूरी है। पुलिस के अनुसार स्वामी के पास भारत तथा विदेशी मे करोडो रुपए की सम्पत्ति है और उसके शिष्यो की सख्या भी हजारो मे है। पुलिस जाच कर रही है कि इस स्वामी ने कितनी महिलाओ का यौन शोषण किया।

इन्हीं दिनो राजनीतिज्ञो के गुरु-नक्षत्र सवारने के लिए तन्त्र-मन्त्र करने वाले कथित विवादास्पद धर्मगुरु चन्द्रस्वामी भी समाचार पत्रो की सुर्खियो मे आ गए हैं। आन्तरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री राजेश पायलट ने उनकी गिरफ्तारी का आदेश दे दिया था। कुख्यात अपराधी बबलू श्रीवास्तव द्वारा चन्द्रस्वामी पर लगाए गए आरोप कितने सही है इसका फंसला तो अन्त अदालत मे करेगी। वैसे इस साधुबाबा की छवि एक धार्मिक, राष्ट्रप्रेमी साधु की भी नही थी, कहते है, इस साधु बाबा के तार बम्बई बम काण्ड के मुख्य अभियुक्त दाऊद इब्राहीम और हथियारो के अन्तर्राष्ट्रीय दलाल अदनान खशोगी से जुडे माने जाते थे। सन्तई की आड मे यह साधु बाबा अनेक सरकारी नेताओ, अफसरों और अनेक प्रमुख व्यक्तियो को अपने वश मे किए हुए है और वह सरकारी निर्णयो को भी प्रभावित करता है। देश के कुछ जिम्मेदार राजनीतिक दलो ने खुले आम आरोप लगाए कि इस स्वामी के विरुद्ध कोई कार्रवाई इसलिए नही हो पाती कि उनके कुछ ऊचे मन्त्रियो और अफसरो से सम्बन्ध है। एक केन्द्रीय मन्त्री द्वारा किए गए निर्देश पर बाबा की गिरफ्तारी हो या न हो अब जनता और जागरूक समाजसेवियो को इस तरह के धर्म और गेरुए कपडे की आड मे कार्य करने वाले भ्रष्टाचारियो और राष्ट्र विरोधी दलालो से समय रहते सावधान हो जाना होगा।

विद्यार्थियों की सहायता के लिए जनता से आर्थिक सहयोग की मांग

महर्षि दयानन्द विद्यार्थी कल्याण समिति द्वारा स्त्री आर्य समाज बिरला लाइन्स की प्रधाना श्रीमती सुशीला सेठी ने समस्त आर्य जनता से अपील की है :

अत्यन्त गभीर समस्या है कि अधिकाश वैदिक गुरुकुल ऐसी दयनीय स्थिति मे चल रहे है कि विद्यार्थियो के लिए भोजन-वस्त्र, पुस्तको आदि की पर्याप्त व्यवस्था नही है।

आर्य स्त्री समाज बिडला लाइन्स मे महर्षि दयानन्द विद्यार्थी कल्याण समिति चल रही है जो दिल्ली विश्वविद्यालय एव गुरुकुलो मे पढ़ने वाले प्रति विद्यार्थी को ४००० रुपए वार्षिक सहायता देती है।

इस समय समिति के पास ६० हजार की एफ. डी. एव ४०० रुपए मासिक दान आ रहे है अब तक निम्न विद्यार्थी इस समिति से लाभान्वित है —ब्र० जितेन्द्र कुमार (२) ब्र० राम प्रसाद शास्त्री (३) ब्र, सूर्यनारायण नन्दा, (४) ब्र. चतुर्भुज।

अब योजना के अन्तर्गत एफ. डी. राशि को बढा कर दस लाख कर देने का विचार है जो आप के सक्रिय सहयोग से होगा।

वैदिक धर्म के उत्थान हेतु व गुरुकुलो की व्यवस्था सुधारने हेतु आप अधिक से अधिक राशि का चैंक या ड्राफ्ट द्वारा "महर्षि दयानन्द विद्यार्थी कल्याण समिति, आर्य स्त्री समाज बिड़ला लाइन्ज के नाम भेजने की कृपा करे।

बोध कथा

मूर्त्तिमती मानवता

महाराष्ट्र के सन्त एकनाथ-सन्ध्या आदि के लिए आसन और दूसरी सामग्री लेकर अपनी कुटिया से निकले। गर्मी का मौसम था। वैशाख महीना था। सूर्य अपनी तपती किरणो से धरती माता को झुलसा रहे थे, पर सन्त को मौसम का ख्याल ही नही था, वह नगे पैरो नदी की ओर बढ चले। उनके मुख से स्तोत्रो का पाठ और भगवद् नाम का अनवरत सकीर्त्तन चल रहा था। अचानक उनकी दृष्टि एक करुण दृश्य पर केन्द्रित हो गई। उन्होने देखा एक अन्त्यज नारी तेजी से पानी भरने जा रही थी, पैर गरम मिट्टी से जल रहे थे, इसलिए वह औरत तेजी से बढ रही थी। चुपके से उसका बच्चा भी मा के पीछे चल रहा।

इस बात का पता मा को नही था, बच्चा कुछ दूर मा-मा पुकारता मा के पीछे दौडता चला, किन्तु उस तपती धूप मे अपने नन्हे पावो से मा को कैसे पकडता। जलती हुई रेता आग बरसा रही थी। कुछ दूरी चल कर बच्चा रास्ते मे गिर गया और तडपने लगा। उसे बच्चे के मुह से लार बह रही थी, नाक से मैल, बच्चा न आगे बढ सकता था, न पीछे लौट सकता था, बच्चा चिल्ला उठा।

इस दृश्य को देख सन्त एकनाथ का हृदय पिघल गया। बिना किसी झिझक के उन्होने उस अन्त्यज घिनौने बालक को उठा लिया। अपने अगोछे से बच्चे की नाक, मुह और चेहरा साफ किया और उत्तरीय से बच्चे को ढक कर उसे अन्त्यजो की बस्ती मे ले गए। बच्चे का पिता यह दृश्य देख कर घर दौडता हुआ बाहर आया। इतने मे पानी भर कर बच्चे की मा भी वापस आ पहुची। बच्चे के माता-पिता सन्त एकनाथ के रूप मे सच्ची मूर्त्तिमती मानवता को देखकर गदगद हो उठे। सन्त ने बच्चे के बारे मे भविष्य मे अधिक सावधान रहने के लिए माता-पिता को सचेत किया और प्रभु का नाम स्मरण करते हुए गगास्नान के लिए चल पडे।

—नरेन्द्र

आर्यसन्देश के ग्राहकों को सूचना

साप्ताहिक आर्यसन्देश के समस्त ग्राहको से सूचनार्थ निवेदन है कि नई दिल्ली से आर्यसन्देश नियमित रूप से प्रति शुक्रवार को पोस्ट कर दिया जाता है। इसके बावजूद ग्राहको के पत्र मिल रहे है कि आर्यसन्देश उन्हें नियमित नही मिल रहा है, ऐसे समस्त ग्राहक शिकायती पत्र कार्यालय में भेजने से पूर्व अपने सम्बन्धित डाक घर से पूछताछ करें और उसकी प्रतिलिपि आर्यसन्देश, नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—सम्पादक आर्यसन्देश

आर्य शिक्षण संस्थाएं आर्यसमाज के लक्ष्यों से भटकीं

श्री बुद्धिप्रकाश आर्य एम०ए० (त्रय) रामगंज अजमेर

आर्य समाज की स्थापना के साथ-साथ देश में गुरुकुलों, कन्या विद्यालयों एवं डी०ए०वी० संस्थाओं का तेजी से विकास हुआ महर्षि दयानन्द के भक्त स्वामी दर्शनानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलों की स्थापना पर बल दिया और आर्ष शिक्षा व्यवस्था जुटाकर देश को अनन्य विद्वान प्रदान किए, जिनके योगदान से आज भी आर्य समाज अनुप्राणित हो रहा है। दूसरी तरफ लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज प्रभृति ऋषि भक्तों ने शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष को दृष्टिगत रखते हुए, देश में डी ए वी स्कूलों का शुभारम्भ किया। प्रारम्भ में यह आन्दोलन काफी सफल रहा। लाहौर के डी.ए.वी. कालेज ने देश को कर्मठ देशभक्त और विद्वान प्रदान किए बीसवीं शताब्दी के मध्य दो दशकों में, स्वतन्त्रता सेनानियों की अग्रिम पंक्ति में आर्यसमाजी नेताओं का ही वर्चस्व रहा था: १९वीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में (१८९८ से १९१० तक) श्याम जी कृष्ण वर्मा ने जिस राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया था उससे प्रभावित होने वाले आर्य नेताओं में अधिकांश आर्य नेता डी.ए.वी. आन्दोलन की ही देन थे। रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपत राय व महात्मा हंसराज, दयानन्द द्वारा सम्मत राष्ट्रवादी शिक्षा से ही अनुप्राणित एवं प्रभावित थे।

डी ए वी संस्थाओं का विचलन—आर्यसमाज की विकास प्रक्रिया के साथ-साथ डी ए वी. संस्थाओं का विकास स्वाभाविक था। चेष्टा यह होने लगी कि प्रत्येक आर्यसमाज के साथ एक डी ए वी. स्कूल जुड़ जाए। कुछ सम्पन्न आर्य समाजों ने तो अनेकों स्कूल खोलकर अपनी स्थिति को आर्थिक दृष्टि से सबल बनाने का उद्देश्य ही बना लिया। जनता ने भी भरपूर सहयोग दिया फलतः स्कूलों व कालेजों के भव्य भवन निर्मित हो गये, बड़ी-बड़ी जायदादें, जमीन आदि भी, उन्होंने, क्रय कर ली डी.ए.वी. आदि आर्य शिक्षा संस्थाओं को सरकारी पाठ्यक्रम पढ़ाने की शर्त पर सरकारी अनुदान भी प्राप्त होने लगा। आय के स्रोत बढ़ जाने तथा स्कूलों के वैभव व प्रतिष्ठा लाभ के व्यामोह से इन संस्थाओं में ऐसे आस्था-विहीन एवं अवसरवादी व्यक्ति, आर्य समाज के सदस्य बनकर प्रवेश कर गए जिन्हे न तो सिद्धान्तों पर आस्था थी और न आर्य समाज से हार्दिक स्नेह या लगाव था। परिणाम स्वरूप आर्य समाज का ठोस और सिद्धान्तों के लिये जुझारू स्वरूप शिथिल हो गया। डी ए.वी संस्थायें जिस लक्ष्य को लेकर स्थापित की गई थीं, उस लक्ष्य की ओर इन तथाकथित आर्य अधिकारियों की कोई रुचि नहीं रह गई केवल औपचारिकतायें पूरी करने के लिये प्रार्थना, धर्म शिक्षा तथा यदा-कदा प्रवचनों की व्यवस्था करके प्रशंसा अर्जित करना इनका धर्म बन गया। यहीं से इन संस्थाओं का विचलन शुरू होता है जिसका परिणाम यह देखने में आ रहा है कि सरकारीकरण की चपेट में आकर ये संस्थायें आर्य समाज के हाथ से निकल गई हैं और निकल रही हैं।

अनुदान का व्यामोह

सरकारी धर्म निरपेक्ष पाठ्यक्रम, सरकारी अनुदान एवं सरकार के अनावश्यक हस्तक्षेप ने इन संस्थाओं के उस उद्देश्य को ही समाप्त कर दिया जिसमें आर्य समाज का प्रचार-प्रसार शामिल था यहां तक कि संस्था प्रबन्धकों के लिए भी अनुदान प्राप्ति तथा उसके उपयोग की अनैतिक तिकड़मबाजी के लिये विवश कर दिया गया जिससे आर्य संस्थाओं और आर्य समाज की साख को भारी धक्का लगा फलतः राष्ट्रीय शिक्षा के सशक्त केन्द्र समझी जाने वाली ये संस्थायें पद, पैसा और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के अखाड़े और व्यावसायिक केन्द्र समझे जाने लगी। यही कारण है कि कई प्रान्तों में सरकार ने इन संस्थाओं में नियुक्तियों व वेतन देने आदि के अधिकार छीनकर प्रबन्धकों को अधिकार हीन बना दिया है। सरकारी चयन प्रक्रिया से इन वैदिक संस्थानों में मुसलमान, ईसाई व पौराणिक प्रिंसिपल या संस्था प्रधान नियुक्त किए जा सकते हैं। यह भयावह स्थिति आर्य समाज के आसन्न अवसान का अल्टीमेटम है जिसके खिलाफ समस्त आर्य जगत के ऋषि भक्तों को धर्मयुद्ध छेड़ना होगा। इस अगति का कारण वे संस्थाधिकारी तथा छद्मवेशी घुसपैठिये तत्व हैं जिन्होंने पद, पैसा प्रतिष्ठा की वेदी पर महर्षि के स्वप्नों को चढ़ा कर विश्वासघात किया है।

डी.ए.वी. व आर्य संस्थाओं के साथ जुड़े अभिशाप

इन संस्थाओं के साथ जुड़े अभिशापों में कुछ ऐसे अभिशाप हैं जिन्हें सुधार की दृष्टि से जानकर सचेष्ट होने की आवश्यकता है जैसे (१) सरकारी पाठ्यक्रम, सरकारी अनुदान, सरकारी शर्तों व सरकारी हस्तक्षेप ने आर्य शिक्षण संस्थाओं में स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसंस्कृति व आर्ष वैदिकी शिक्षा के द्वार पूर्णतः बन्द कर दिए हैं। (२) संस्थाओं के उच्च पदों पर गैर आर्य समाजी तत्व अधिकांशतः हावी हो गये हैं जिन्होंने आर्यों की उपेक्षा करके और अनार्यों को नियुक्तियां देकर संस्थाओं का माहौल अनार्यत्व से युक्त बना दिया है (३) विद्वान, कर्मठ व सच्चे पक्के आर्य समाजी अपने को शक्ति व साधन विहीन मानकर तटस्थ एवं किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो चुके हैं (४) इन संस्थाओं में सहशिक्षा की, दुर्भाग्यपूर्ण परम्परा चल पड़ी है जिसका महर्षि दयानन्द ने घोर विरोध किया था (५) दयानन्द के नाम पर चल रही इन संस्थाओं में नेकटाई, गुडमानिंग, अंग्रेजी बोलचाल की प्राथमिकता "नमस्ते" का बहिष्कार, सरस्वती वन्दना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इंगलिश डिस्को डांस, अंडों का स्वल्पाहार, आर्य समाज विरोधी अध्यापकों व अध्यापिकाओं की भरमार तथा यज्ञ, वैदिक पर्व, धर्म शिक्षकों का अभाव आदि विडम्बनायें बरी तरह जुड़ चुकी हैं जिन्होंने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य को हास्यास्पद बनाकर रख दिया है (६) डी.ए वी संस्थानों एवं संगठनों जैसे दिल्ली, कानपुर, अजमेर के कतिपय आर्य सक्षम अधिकारी यदि हृदय से यह चाहते भी हैं कि इन संस्थाओं में आर्य समाजी निष्ठावान शिक्षक नियुक्त किए जायें तो अधीनस्थ १०० प्रतिशत गैर आर्य समाजी कर्मचारी उन्हें अन्धकार में रखकर आर्य समाजी आवेदकों को अवसर मिलने से वंचित कर देते हैं। इसका परिणाम सामने है कि किन्हीं-किन्ही आर्य स्कूलों में तो एक भी आर्य समाजी अध्यापक नहीं है और जहां इक्के दुक्के आर्य समाजी हैं भी वे कुण्ठित निराश होकर हां हजूरी करके अपना समय काट रहे हैं। (७) इन संस्थाओं में धर्म शिक्षा की दुर्दशा है गैर आर्य समाजी अध्यापकों की बहुलता वश धर्मशिक्षा या तो दी नहीं जाती है यदि उन्हें बाध्य भी किया जाता है तो वे भ्रष्ट शिक्षा देकर छात्रों में अनास्था व भ्रम उत्पन्न करते रहते हैं। आर्य धर्म शिक्षक की नियुक्तियों को भी प्रायः फिजूलखर्ची समझा जाता है। (८) इन संस्थाओं की स्वायत्तता छिनती जा रही है जिससे अधिकारियों में असन्तोष और गैर आर्य समाजी अध्यापकों आदि में प्रसन्नता की लहर देखी जा रही है इसे दुर्नीतियों का ही परिणाम कहा जा सकता है।

(अपूर्ण)

बोट क्लब में श्री चुन्नीलाल आर्य का प्रचार

आर्य समाज बोट क्लब नई दिल्ली के अनुरोध पर पिछले दिनों दोपहर के समय श्री चुन्नीलाल जी आर्य भजनोपदेशक अपना वेद प्रचार कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

अगणित उपकारी प्रभु को देखो उनके दर्शन से निर्भयता-आचार्य ज्ञानेन्द्र

देहरादून। आर्यसमाज धामावाला मे प्रवचन करते हुए गुरुकुल अयोध्या के पूर्व कुलपति आचार्य ज्ञानेन्द्र भटनागर ने कहा कि अभय होने के लिए परमात्म-दर्शन करना होता है। सच्चे विद्वान् सदा उसका दर्शन करते रहते हैं। सामान्य जनो को भी उसके दर्शन होते रहते हैं, परन्तु वे उसे पहचानते नही।

सामान्य राह-भूले व्यक्ति को उसके गन्तव्य स्थान की ओर जाने वाला रास्ता यदि कोई बता दे तो उस रास्ता बताने वाले को वह 'भगवान' मानने को तैयार हो जाता है, परन्तु अगणित उपकार जिस परमेश्वर ने किए हैं, उसे वह भूला रहता है।

वेद के आधार पर उन्होने बताया कि ईश्वर इतना महान है कि जिस सृष्टि का निर्माण करके उसके अणु-अणु मे वह व्याप्त हो रहा है, उसी का ओर-छोर ढूंढ पाना मानव-बुद्धि और विज्ञान की क्षमता के बाहर है। वह इतना सूक्ष्म है कि सब भौतिक पदार्थों की अपेक्षा भी जो सूक्ष्मतर है, उस आत्मा में भी उसका प्रवेश है।

कवि समाज की यथार्थ स्थिति व्याख्या करें

दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी ने "हिन्दी चेतना माह" कार्यक्रम के अन्तर्गत १३ सितम्बर को एक साहित्यिक कवि गोष्ठी का आयोजन किया।

सासद डा० सत्यनारायण जटिया "सत्यज" ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा साहित्य समाज का दर्पण होता है, इसलिए साहित्यकार को, कवि को रचनाओ मे समाज की यथार्थ स्थिति की व्याख्या करनी चाहिए।

डा० कन्हैयालाल नन्दन ने अपने भाषण मे कहा कि समाज सुधार, देश मे शान्ति बनाए रखने व उसके विकास मे कवि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आर्यसमाज दाल बाजार, लुधियाना में वेद-प्रचार सप्ताह

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द (दाल बाजार) लुधियाना का वेद-प्रचार सप्ताह चार सितम्बर से दस सितम्बर १९९५ तक सम्पन्न हुआ, इसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के डा० श्री रविदत्त शर्मा, अमृतसर वाले प० सत्यपाल पथिक भजनोपदेशक, तथा लुधियाना नगर के डा० बालकृष्ण शास्त्री, और स्वामी सुमना यति महाराज तथा श्रीमती बहन जनक रानी आर्या और बहन श्रीमती राजेश शर्मा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के महोपदेशक प० चन्द्रपाल और प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक प० विजय कुमार, तथा प० राजेश्वर शास्त्री आदि लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानो ने बड़े उत्साह और निष्ठा के साथ भाग लिया।

सख्त कार्रवाई करनी होगी

कश्मीर समस्या भारत के लिए नासूर बन गई है। कश्मीर को लेकर अब तक पाकिस्तान भारत के विरुद्ध तीन युद्ध कर चुका है और वह चौथे युद्ध की तैयारी कर रहा है, फलत चौथे युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। इतिहास और विश्व साक्षी है कि पाकिस्तान तीन बार युद्ध मे मुंह की खा चुका है और यदि उसने इस बार फिर युद्ध छेडा तो कही उसका अस्तित्व ही मिट जाए। किन्तु यह समझ मे नहीं आता क्यो केन्द्रीय सरकार की ढुलमुल नीति इस समस्या को पेचीदा बनाने पर तुली हुई है, जब भी कोई आतकवादी घटना होती है तो केवल शत्रु को कोसने से समस्या हल नही होगी, समस्या सख्त कार्रवाई से ही सुलझ सकती है।

—राजेन्द्रकुमार अरोड़ा मोतियाखान, दिल्ली

लग गए न पाखण्ड को पंख

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

इक्कीस सितम्बर को, दिल्ली के दरम्यान।
शोर हो रहा हर जगह, दूध पीए भगवान।
हर मन्दिर में भीड लगी थी दूध पिलाने वालो की,
चाल भेडियो की चल निकली मानव भोले भालो की।
अज्ञान अविद्या के पर्दे ने इनको अन्धा बना दिया।
पी रहे दूध गणपति आज का अच्छा धन्धा बना दिया।।
जरा विचारो भोले मानव पत्थर की जड मूरत है।
पत्थर को दूध पिलाने की क्या तुमको कोई जरूरत है।
मक्खी न उडा सकती है न हिलती है नही चलती है।
तुम दूध पिलाने को निकले कितनी महान गलती है।।
मैंने भी स्वय जाकए देखा यह कैसा अजब नजारा है।
जड़ प्रतिमा दूध गटक जाती कहा जाता यही निहारा है।।
चम्मच मे मैंने दूध भरा गणपति के मुंह पर लगा दिया।
गणपति जरा मुंह को खोलो सोते से उसको जगा दिया।।
वह जड मूरत कुछ कह न सकी मन्दिर के पुजारी ने बोला।
कितनो ने दूर पिला डाला अब तक मुखडा नहीं खोला।।
मैं बोला फिर झूठा प्रचार इस तरह यहा क्यो करते हो।
चलती फिरती है नही यह सच्चाई से क्यो डरते हो।
अपने स्वार्थहित ही तुमने सबको बहकाया है।
यह दूध बह रहा नाली मे जो गणेश को पिलाया है।।
छोडो ये झूठी अफवाहे मिथ्या पथ अपनाओ नही।
खुद डूब रहे गहरे जल में औरो साथ डुबाओ नही।
वह प्रभु निराकार है अजर-अमर है। रक्षा अपनी कर न सके चोर चुराए।
यह जड प्रतिमा कुछ न करपाए।
रक्षा अपनी कर न सके चोर चुराए।
जड प्रतिमा को दूध पिलाना।
व्यर्थ ही है भूल न जाना।। इसलिये।।
गहरी डुबकी लगा सिन्धु मे मन्जुल मनहर मोती चुन लो।
ओम नाम है प्रभु का प्यारा भाइयो कान लगाकर सुन लो।

स्व० इकबाल राय बेदी निबंध प्रतियोगिता-१९९५

हिन्दी के अनन्य प्रेमी, आर्य समाज सेवी, बाल साहित्य के प्रकाशक स्व० श्री इकबाल राय बेदी। गुरु जी। आर्य कुमार सभा। पजी। व आर्य धर्मार्थ न्यास के सस्थापक की स्मृति मे "दूरदर्शन कैसा हो" हिन्दी-निबन्ध प्रतियोगिता की रही है। अन्तिम तिथि ३०-१०-१९९५ है। इस प्रतियोगिता मे (१) २० वर्ष तक (२) २० से ४० वर्ष तक के युवा भाग ले सकते है। स्पष्ट अक्षरो में लिखे या टकित निबन्धों की आकार-सीमा दोनो वर्गों के लिये क्रमश १५०० व २००० शब्द है। कुछ ८ पुरस्कार १०० से ५०० रु तक के दिए जाएगे।

भेजने का पता—मत्री, आर्य धमार्थ न्यास (पजी) आर्य कुमार सभा-वाचनालय, ब्लाक-१, डबल स्टोरी, विजय नगर, किंग्जवे दिल्ली—९

दिल्ली सरकार के कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में कार्य करने का संकल्प

दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने हिन्दी दिवस के अवसर पर पुराना सचिवालय मे आयोजित एक समारोह में दिल्ली सरकार सम्बद्ध उपक्रमो, स्वायत्त शासी सस्थाओ, दिल्ली नगर निगम व अन्य कार्यालयो के अधिकारियो, कर्मचारियो को हिन्दी। देवनागरी मे कार्य करने व हिन्दी। देवनागरी को व्यवहार में लाने का संकल्प दिलाया। दिल्ली के सचिव (शिक्षा, भाषा) श्री एस० रघुनाथ ने संकल्प समारोह की अध्यक्षता की।

स्व० श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्मृति दिवस

१५ अक्तूबर १९९५ दिन रविवार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अवसान को एक वर्ष व्यतीत हुआ। उनकी स्मृति में १५ अक्टूबर १९९५ को एक भव्य आयोजन लालकिला मैदान दिल्ली मे समय २ बजे से ५ बजे तक किया गया है।

आप सभी आर्यजनों से प्रार्थना है कि अपने प्रिय आर्य नेता के आयोजन को सफल बनाने हेतु अधिक से अधिक संख्या में पधार कर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें और विद्वानो के भाषणो से लाभ उठायें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री



ऋषि निर्वाणोत्सव

२३ अक्तूबर ९५, सोमवार प्रातः ८ से १२ बजे तक

रामलीला मैदान, नई दिल्ली

मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। आप सब सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या मे पधारें।

निवेदक :—

महाशय धर्मपाल — प्रधान
डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 28-29-9-1995 Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
१ अक्तूबर १९९५
साप्ताहिक "आर्यसन्देश"

एक कोरा भ्रम

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रतिमा पर पानी का बहाव तो दीख जाता है, लेकिन दूध नही दीखता। जब चम्मचो से प्रतिमा पर दूध डालते हैं तो यह धीमी धार के रूप में नीचे आ जाती है। चूंकि दूध का पृष्ठ-तनाव कम होता है और अधिकतर मूर्तियां सफेद संगमरमर की हैं, इसलिए यह धार नही दीख पाती। युवा एम० एम० सी० छात्र कुंवर सजयसिंह ने दैनिक अखबार के कार्यालय मे दिखलाया चम्मच दूध मूर्ति के मुंह से लगाने पर खत्म होता जाता था, यह केवल भ्रम था मूर्त्ति दूध पी रही है, पर दूध बूंद-बूंद कर नीचे गिरता जा रहा था। मूर्त्ति की सतह पर खरोंच से बनाई नाली दूध नीचे बहा देती है।

बृहस्पतिवार की सुबह आए कुछ बेनामी और कुछ नामधारी ट्रंक कालों ने समस्त उत्तर भारत में देवताओं के दुग्धपान का अभूतपूर्व अभियान छेड़ दिया था। प्राप्त जानकारी के अनुसार ये सभी ट्रंक काल पंजाब के अलग-अलग स्थानों से आईं। देश भर के प्रमुख शहरो और लगभग पूरे भारत मे शिव मन्दिरो में गणेश की प्रतिमाओ को दूध पिलाने की घटनाए—अफवाहें पूरे दिन छाई रहीं। बाजारों में व्यापार, कारखानों—दफ्तरो मे कामकाज ठप्प-सा हो गया।

देश भर के प्रमुख शिव मन्दिरों मे तड़के से ही लम्बी लाइनें लग गईं। शिव भक्तों की कतारें बन्ध गई। गणेश के अलावा शिव, पार्वती, नन्दी और नाग की प्रतिमाओ को भी दूध पिलाने की कोशिश की गई। धर्माचार्य इसे दैवी चमत्कार कह रहे थे तो उनके विरोधी उसे पाखण्ड कह रहे थे और प्रमुख वैज्ञानिक इसे कोरा भ्रम घोषित कर रहे थे।

गणेश व शिव परिवार को सामूहिक दुग्धपान का तुरन्त असर यह हुआ कि सांझ होते-होते राजधानी मे दूध की किल्लत हो गई। दूध बेचने वाली एजेंसियो ने दूध बाटने का समय बदला या दूध की सप्लाई बढ़ानी पड़ी। दूध की निजी दुकानो में दूध की सप्लाई मुंह मांगी दरों पर हुई।

पं. गुरुदत्त वेदालंकार कन्या गुरुकुल नरेला के नए व्यवस्थापक

गुरुकुल कांगड़ी के वयोवृद्ध स्नातक पं. गुरुदत्त वेदालंकार ने जुलाई मास के प्रथम सप्ताह से कन्या गुरुकुल नरेला के व्यवस्थापक का पदभार सम्भाल लिया है। उल्लेखनीय है कि ३५ वर्षों तक भारत सरकार के विभिन्न पदो पर कार्य करते हुए श्री गुरुदत्त १९७९ में केन्द्रीय सूचना प्रसारण मन्त्रालय की केन्द्रीय सूचना सेवा के राजपत्रित अधिकारी के रूप में सेवा-निवृत्त हुए।

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एस ११०२४/१-९५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ४८ | रविवार, ८ अक्तूबर १९९५ | विक्रमी सम्वत् २०५२ | दयानन्दाब्द · १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे | वार्षिक—३५ रुपए | आजीवन—३५० रुपए | विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

आर्यसमाज राष्ट्र का सजग प्रहरी बना रहेगा

प्रतिमाओं को दूध पिलाना सर्वथा अवैज्ञानिक : सीरियलों से अश्लील प्रदर्शन बन्द हों, विवाहों पर व्यर्थ का खर्च रोका जाए : दहेज प्रथा का उन्मूलन हो

आर्यसमाजों के कार्यक्रमों के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी का आह्वान

दिल्ली। "आर्यसमाज राष्ट्र का सजग प्रहरी है। वह जड पूजा, गणेश व शिव परिवार की प्रतिमाओ को दूध पिलाने के कृत्यो को पूर्णतया अवैज्ञानिक, अवैदिक व अज्ञानता से परिपूर्ण कार्य समझता है। टी. वी. सीरियलो मे अश्लील प्रदर्शनो का वह विरोधी है। बडे-बडे राष्ट्र नेताओ द्वारा अपनी सन्तान के विवाहोत्सवो पर लाखो-करोडो रुपयो का पानी की तरह खर्च करना, भव्य प्रदर्शन करना और कन्याओ के लिए दहेज पर भारी धनराशि का खर्च करने से घरो में विदुषी कन्याए अनब्याही रह जाती हैं। आर्यसमाज इन असामाजिक राष्ट्रविरोधी प्रथाओ का घोर विरोधी है। हमे समाज और राष्ट्र से इस तरह की सभी कुरीतियो, कुप्रथाओ और अवैज्ञानिक कार्यों का दृढतापूर्वक विरोध करना होगा। राष्ट्रनेताओ को भी इस बारे मे अपनी जिम्मेदारी निबाहनी होगी।" इन ओजस्वी शब्दो में आर्यसमाज विवेक विहार में आयोजित महायज्ञ के पूर्णाहुति कार्यक्रम मे तथा आर्यसमाज गुप्ता कालोनी विजय नगर द्वारा आयोजित राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन में एकत्र आर्यजनो का आह्वान करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने उन्हे अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करने के लिए आमन्त्रित किया।

आर्यसमाज विवेक विहार दिल्ली-९५ में सोमवार २५ सितम्बर से रविवार १ अक्तूबर तक वेदज्ञान यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतिदिन प्रात ब्रह्मा व उपदेशक डा० नरेन्द्र वेदालकार ने यज्ञ करवाया और प्रवचन दिया। प्रतिदिन रात्रि को ८ से ९ बजे तक श्री गुलाबसिंह राघव के भजन हुए और रात्रि को ९ से १० बजे तक वेदाचार्य डा० प्रेमचन्द्र श्रीधर के प्रवचन हुए।

रविवार १ अक्तूबर को प्रात ८ से ९ बजे तक आर्यसमाज विवेक विहार में यज्ञ की पूर्णाहुति व समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेवजी ने की। मुख्य वक्ता डा० प्रेमचन्द श्रीधर और श्री ओमवीर शास्त्री थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी और दिल्ली के विनायक सर्वश्री रामनिवास गोयल और श्री मदनलाल गावा थे।

देवनगर मुल्तान आर्यसमाज मे भी यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

गुप्ता कालोनी विजय नगर आर्यसमाज के राष्ट्रनिर्माण सम्मेलन को प० प्रकाशचन्द शास्त्री, डा० महेश विद्यालकार, डा० सत्यकाम वर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा. धर्मपाल आर्य आदि आर्य विद्वानो ने सम्बोधित किया। श्री अशोक विद्यालकार ने सम्मेलन के कार्यक्रम को उत्साह से आयोजित किया।

विश्व भर में आर्य वीर दलों को सक्रिय करें

सब समाजों में शाखाएं प्रारम्भ हों, समाजों से चौथाई आय देने का अनुरोध

आर्यसमाजों से असम्बद्ध डी० ए० वी० संस्थान अनुशासित हों : आर्यसमाजों के पदाधिकारियों के निर्णय

आर्यसमाज करोलबाग मे दिनाक २४-९-९५ को देश का आर्यसमाजो के हजारो पदाधिकारियों ने महर्षि दयानन्द सिद्धात रक्षिणी सभा के नेतृत्व मे एकत्र होकर कुछ महत्वपूर्ण निर्णय किए हैं। प्रयत्न किया जाए कि उन्हें विश्वभर की आठ हजार आर्यसमाजों में लागू किया जाए।

१—आर्यसमाज के युवासंगठन आर्यवीर दल को सक्रिय करने के लिए सभी समाजें शाखा व कार्यालय हेतु अपने परिसर मे स्थान के साथ आय का भी २५ प्रतिशत दान देंगी। जिससे आठ हजार स्थानो पर नई शाखाए आरम्भ हो जाए।

२—सभी अधिकारियो ने निर्णय किया कि डी० ए० वी० संस्थाए जिनसे आर्यसमाजों का कोई सम्बन्ध नहीं है उनसे माग की जाए या तो वे स्वा. दयानन्द के सिद्धातों के अनुसार उन्हें चलाएं अन्यथा दयानन्द का नाम छोड़ दें। जब तक डी० ए० वी० सभाए ऐसा नही करती तब तक उन्हें कोई सहयोग नही दिया जाए।

३—यह भी निर्णय किया गया कि भविष्य मे आर्यसमाजो मे केवल दैनिक साप्ताहिक सत्सग व अन्तरग की बैठकें हुआ करेंगी। शेष वैदिक पर्व, वेद प्रचार सप्ताह, विद्वान व संन्यासियो के आने पर सभी कार्यक्रम समाजो के बाहर रामलीला मैदानो मे, पार्कों मे, चौराहो पर किए जाएं ताकि वेद का प्रचार व प्रसार आम जनता तक पहुंच सके।

इस सम्मेलन मे श्री वेद प्रताप जी वैदिक (भाषा) स्वामी विद्यानन्दजी, आर्य स्वामी सुमेधा नन्द जी, स्वामी सत्यपति जी, आचार्य नरेश जी, श्री महेन्द्र कुमार जी शास्त्री, आचार्य हरिदेवजी, श्री सूर्यदेवजी प्रधान दिल्ली सभा, श्रीराम स्वरूप जी, श्री नेत्रपाल जी शास्त्री, महाशय धर्मपाल जी, श्री धर्मपाल जी आर्य, श्री कीर्ति शर्मा जी, आदि नेताओ ने सम्बोधित किया। आर्यमुनि

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

श्रीराम की विजय दैवीवृत्तियों की असुर वृत्तियों पर विजय

विजयदशमी त्योहार की शुद्ध तिथि का निर्धारण हो

यह आश्विन मास है या चैत्र मास ?

—चमनलाल

त्योहारो का जीवन मे अपना ही महत्व है। मनुष्य के ही जीवन मे क्यो, इसका महत्व तो किसी राष्ट्र, देश व जाति के जीवन मे भी कुछ कम नही है। त्योहार प्रति वर्ष आते हैं, और अपनी एक छाप जीवन पर लगा चले जाते है। एक बार लोकमान्य बालगंगाधर तिलक महाराज ने कहा था "त्योहार किसी राष्ट्र व जाति के जीवन व मृत्यु के द्योतक होते है, जितनी सुन्दरता, श्रद्धा और भावुकता से कोई राष्ट्र त्योहार को मनाता हैं उसी अनुपात मे उस जाति विशेष के वह जीवन को दर्शाता है। यह मनुष्य व जाति के जीवन का एक अभिन्न अ ग माना जाता है, इससे जीवन मे स्फूर्ति आती है और आनन्द व प्रसन्नता का संचार होता है। यह मनुष्य के दिलो मे उत्साह, प्रेम, श्रद्धा, भावुकता और भक्ति भावना को भरता है। त्योहारो के मनाते समय आज की भौतिकता मे रंगा प्राणी भी कुछ ही मिनटो के लिए ही सही, अपने अन्दर सात्विकता और श्रद्धा भक्ति के अ शो का अनुभव करता ही है।

इन्ही तोहारो मे से एक त्योहार विजयादशमी नाम का भी है, जो लका के राजा रावण को हरा और माता सीता को उसके बन्दीगृह से मुक्त कराने की याद मे प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ला दसवी को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

परन्तु इस आश्विन मास तक तो सीता की खोज भी आरम्भ नही हुई थी। अत कोई भी प्रमाण इसकी शुद्धता का नही मिलता। किसी भी विद्वान रामायण के पण्डित ने इसकी पुष्टि नही की।

तुलसी दास जी ने रामचरित मानस मे लिखा हैं —

"वर्षा विगत शरद ऋतु आई।

फूले कास, सकल मही छाई।"

परन्तु आश्विन मास तक सीता की खोज ही नही हुई।

बाल्मीकि, दशरथ और राम के समकालीन थे और सीता का पूरा वनवास काल बाल्मीकि के ही आश्रम मे बीता था। उनका यह 'बाल्मीकि रामायण' महाकाव्य उसी समय लिखा गया था, यह सबसे प्रमाणित ग्रन्थ इस विषय मे है। इस के अध्ययन से स्पष्ट सिद्ध होता है कि यह तिथि सरासर अशुद्ध है।

बाली का वध और सुग्रीव को अपना राज्य वापस मिलने और अ गद को युवराज बनाते-बनाते वर्षा ऋतु आ गई थी। अत राम जी सुग्रीव को कहते हैं कि अब वर्षा भी आ गई है और वर्षा का यह महीना श्रावण है। इसमे वर्षा विशेष होती है। अब चौमासा आरम्भ हो गया है, कुछ काम करने का समय नही है। इसलिए तुम अपनी नगरी मे चले जाओ। जब चौमासा बीत जाए और कार्तिक मास आ जाए, तब तुम रावण के वध का यत्न करना।

"अ गदोऽयमदीनात्मा यौवराज्यस्य भाजनम्, पूर्वोऽयं वार्षिकोमास सलिलागमः॥ प्रवृत्ताः सौम्य चत्वारो मासा वार्षिक सज्ञका।
नायमुद्योगसमय प्रविश त्वं पुरी शुभाम्।
कार्तिके समनुप्राप्ते त्व रावणवधयेत॥"

—बाल्मीकि रामायण

सुग्रीव के कन्दरा मे चले जाने और वर्षा के पश्चात आकाश मण्डल के स्वच्छ हो जाने पर शोकातुर राम ने जैसे-तैसे चौमासा बिताया। रामने देखा कि सुग्रीव काम-परायण हो गया। समय बीतता जा रहा है और सीता अभी तक मिली नही है। राजाओं की यात्रा का यही अवसर है, किन्तु न कही सुग्रीव दिखाई देता है और न ही उसका कोई उद्योग प्रतीत होता है—"गुहां प्रविष्टे सुग्रीवे विमुक्ते गगने घनै। वर्षरात्रोषितो राम कामशोकाभिपीडित, कामवृत्त च सुग्रीव नष्टा च जनकात्मजाम्। बुद्ध्वा कालमतीतं च मुमोह परमातुरः। इय सा प्रथमा यात्रा पार्थिवाना नृपात्मज, न च पश्यामि सुग्रीवमुद्योगे वा तथाविधम्॥"

ऐसी अवस्था मे राम जी बडे क्रोधित हुए और लक्ष्मण से कहा कि हे लक्ष्मण, तुम जाओ और सुग्रीव को मेरे क्रोध का स्वरूप बता दो और कहा कि हे सुग्रीव अब भी वह रास्ता बन्द नही हो गया है, जिस रास्ते से बाली मरकर गया है। मैंने युद्ध मे बाली को तो अकेले ही मारा था, परन्तु तुम अपनी प्रतिज्ञा का पालन नही करोगे तो तुम्हे तो बन्धु-बाधवो सहित ही मार डालूगा।

जिस समय लक्ष्मण किष्किन्धा पहुचे तो हनुमान सुग्रीव को राम का काम करने की याद दिला रहे थे कि अब तो शरद ऋतु भी आ गई हैं। सब दिशाए साफ है अत सीता की खोज करनी चाहिए। सुग्रीव ने पश्चात्ताप किया और हनुमान सहित अनेक वानरों को सीता की खोज मे भेजा और एक मास में खोज खोज करके वापस आने को कहा। बाल्मीकि के अनुसार खोज की खबर मिलने पर राम जी ने लका पर उत्तरा फाल्गुनी में चढाई की थी।

यह त्योहार प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ला दशमी को मनाया जाता है, परन्तु कई इतिहासशास्त्री ऐसा नही मानते। बाल्मीकि रामायण जो अनेक रामायण के ग्रन्थो मे से एक प्रसिद्ध और प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है, इससे भी यह सिद्ध नही होता। बाल्मीकि के अनुसार तो रामचन्द्र जी ने लका पर उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र मे चढाई की थी।

"उत्तरा फाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते।
अभिप्रयाम सुग्रीव सर्वानीकसमावृता।"

रामचन्द्र जी ने सुग्रीव से कहा—हे सुग्रीव। आज उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र है, कल इसका हस्त नक्षत्र से योग होगा। आज ही हम सेना को लेकर चलें और यह भी कहा कि हे सुग्रीव ? इस समय ही प्रस्थान कर देना चाहिए, क्योंकि यह समय अच्छा है और सूर्य भी मध्य आकाश में है लंका पर विजय प्राप्त कर रामचन्द्र जी ने सुग्रीव से उसी समय अयोध्या वापस लौटने का अनुरोध किया।

"न मे स्नान बहुमत वस्त्राण्या भरणानि च।
इन एव पथाक्षिप्र प्रतिगच्छ्यामि ता पुरीम।"

अर्थात रामचन्द्र जी फिर से बोले कि "मुझे स्नान" वस्त्र तथा आभूषण अच्छे नही लगते, मैं यहीं से और अभी अयोध्या वापस जाना चाहता हू और वह एक ही दिन मे पुष्पक विमान मे अयोध्या पहु च गए।

"पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पचम्या लक्ष्मणाग्रज।
भरद्वाजाश्रम प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्।"

अर्थात ठीक चौदह वर्ष समाप्त होने पर पचमी तिथि के दिन रामचन्द्र जी भारद्वाज मुनि के आश्रम मे पहु चे। भरत के पूछने पर हनुमान जी कहा—

"भरद्वाजाभ्यनुज्ञात द्रक्ष्यस्यद्यरघवम्।
एवमुक्त्वा महातेजा सप्रहृष्टतनूरुह॥
सहसीत ससौमित्ति सत्वा कुशलमब्रवीत्।
पचमीमद्य रजनीमुषित्वा वचनान्मुने॥"

अर्थात सीता और लक्ष्मण के सहित रामचन्द्र जी सकुशल हैं। भारद्वाज ऋषि की आज्ञा से आज पचमी तिथि की रात्रि भर वहा रहकर यहा आएगे।

तंगगा पुनरासाद्य वसन्त मुनिसन्निधौ।
अविघ्न फल्ययोगेन श्वो राम द्रष्टमर्हसि॥"

कल पुष्प नक्षत्र है, फिर वहा से कल उसी मुहूर्त मे आप रामचन्द्र जी से मिलोगे वहा (नदिग्राम) मे आने पर भरत जी ने उन्हें पादुकाए पहना दीं।

"पादुके नेतु रामस्य गृहीत्वा भरत. स्वयम्
चरणाभ्या नरेन्द्रस्य योजयामास धर्मवित।
अब्रवित्त तदा राम भरत स कृतांजलि।"

भरत जी ने रामचन्द्र जी की खडाऊं उनके पैरों में पहना दीं और हाथ

(शेष पृष्ठ ३ पर)

हमें सन्मार्ग पर ले चलिए—

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

ऋग्वेद १ १८९। १

हे अग्रणी परमात्मदेव, आप सब नियमो के ज्ञाता हैं। हमे सन्मार्ग पर ले चलिए। हमारे पाप दूर कीजिए। हम आपको नमस्कार करते हैं।

सम्पादकीय अग्रलेख

विवेक की कसौटी पर कसें

पाषाण की मूर्त्तिया दूध नहीं पीती, पी नही सकती। सभी बुद्धिवादी और वैज्ञानिको की यही सुनिश्चित सम्मति है, इसके बावजूद मन्दिरो मे पाषाण की प्रतिमाओ द्वारा दूध ग्रहण करने की खबर ने राजधानी मे ही नहीं, पूरे देश मे और विश्व भर के भारतवंशियो मे हलचल पैदा कर दी, जिसे देखो, वही दूध लिए मन्दिर की ओर दौडा जा रहा था। हरेक मूर्त्ति को चम्मच से दूध पिलाकर पुण्य कमाना चाह रहा था परन्तु बहुसंख्यक जनता ने यह नहीं सोचा कि ऐसा कैसे हो सकता है उस समय कोई यह मानने को तैयार नही था कि यह एक अफवाह है जिसे सुनियोजित ढग से फैलाया गया है। ऐसा पहली बार हुआ हो, ऐसा नही पहले भी स्टोव देवता के आने और धर्मग्रन्थों में बाल निकलने जैसी अफवाहें फैलाई जा चुकी हैं, पर इस बार जो अफवाह फैलाई गई, वह इतने बड़े पैमाने पर थी कि देश में ही नही, विदेशो मे भी लोग इस अफवाह की चपेट मे आ गए। यहा तक कि दूध के दाम तुरन्त बढ़ गए और दूध की किल्लत हो गई। हर आम आदमी ने इस अफवाह पर विश्वास करना चाहा। अगर किसी ने समझाना चाहा, इसे भ्रम कहा तो उसे नास्तिक, भगवान का अपमान करने वाला, और न जाने क्या-क्या कहा गया।

दिल्ली के रामजस कालेज मे साइन्स-विज्ञान विषय के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री एम. एस. गुप्त सरस्वती विहार स्थित एक मन्दिर मे गए, उन्होने चम्मच से प्रतिमा को दूध पिलाया तो नीचे अपना दूसरा हाथ लगा लिया। बूंद-बूंद करके दूध उनकी हथेली मे इकट्ठा हो गया। उन्होंने वहा एकत्र महिलाओ को ऐसा तीन-चार बार करके दिखलाया। उन महिलाओ ने स्वीकार किया कि धर्म के नाम पर गलत प्रचार किया जा रहा है। अधिकतर वैज्ञानिको ने प्रतिमाओ द्वारा दूध पीने की बात को कोरा भ्रम कहा है। उनका दावा है कि कोई भी प्रतिमा (मूर्त्ति) दूध नहीं पी सकती। यह महज अन्धविश्वास है और कुछ नही। इन वैज्ञानिको के अनुसार संगमरमर की सफेद मूर्त्ति पर दूध की पतली परत होने के कारण बहती हुई दिखाई नही देती। फर्श पर दूध दिखाई न दे, इसलिए समय-समय पर उसकी सफाई कर दी जाती थी। एक व्यक्ति ने तो केले पर भी यही क्रिया करके दिखलाई। एम० एस-सी० के छात्र कुंवर संजय सिंह ने संगमरमर की छोटी-सी मूर्त्ति को चम्मच से दूध पिलाकर दिखलाया। देखने मे भ्रम होता है मूर्त्ति दूध पी रही है, पर वास्तव में बूंद-बूंद कर दूध नीचे गिर रहा था। विज्ञान के वरिष्ठ छात्र संजय सिंह ने स्पष्ट किया कि दूध पीने की यह क्रिया पूरी तरह विज्ञानसम्मत है। इसे कैपिलरी एक्शन वाली क्रिया कहा जा सकता है।

ऐसी क्रिया उस समय शुरू होती है जब पूरी नली मे कही भी हवा का बुलबुला न हो। मूर्त्ति सतह पर या मूर्ति के अन्दर ऊपर से नीचे तक छेद करके सूक्ष्म खांचेदार नाली या नालीदार खाचा या वली बनाई जाए तब यह दूध बहने की क्रिया स्वत शुरू हो जाएगी और दृष्टिभ्रम पैदा हो जाएगा कि मूर्त्ति दूध पी रही है। अत मूर्त्तियों या प्रतिमाओं द्वारा दूध पीना कोई चमत्कार न होकर भ्रममात्र है। एक झूठ को दस या सौ लोगो द्वारा प्रचारित करने से झूठ सच नही हो सकता। किस साजिश और षड्-यन्त्र के माध्यम से यह अफवाह सुनियोजित तरीके से दूर-दूर तक फैलाई गई, इसकी व्यवस्थित जांच होनी चाहिए। हमारे देश में धर्म और आस्था के नाम पर क्या कुछ हो सकता है, इसका नमूना सारे ससार ने २१ सितम्बर के दिन देख लिया। भगवान् को मानिए, उसमें आस्था रखिए; पर अन्धविश्वास पर किसी तरह का ध्यान नही दीजिए। इस घटना से हरेक देशवासी को अपने को जिज्ञासु-महर्षि का शिष्य समझने वाली जनता को भ्रमजाल तोडना चाहिए। उसे ऐसी किसी भी बात पर विश्वास नही करना चाहिए जो तर्क, विवेक और विज्ञान की कसौटी पर खरी न उतरे। हम अपनी बुद्धियो और विवेक का समुचित प्रयोग कर ही इस प्रकार के भ्रमो और अन्धविश्वास का सामना कर सकेंगे।

चिट्ठी-पत्री

मानव-विकास का रास्ता अपनाएं, विनाश का नहीं

परमाणु शक्ति से सम्पन्न देशो ने शायद हिरोशिमा-नागासाकी की विनाश लीला से सबक नही लिया, जबकि आज पचास वर्ष बाद भी उस घटना का विवरण पढकर रूह कांप उठती है। एटमी-आणविक परीक्षण आज भी जारी है। हाल ही मे चीन और फ्रास ने एटमी परीक्षण किए हैं।

एक ओर परमाणु अप्रसार सन्धि एन पी टी की बात होती है और दूसरी ओर एटमी परमाणु परीक्षण किए जा रहे है, आणविक देश, परमाणु रहित देशो पर अपने आतक का दबदबा बनाए रखना चाहते हैं, लेकिन क्या इन आणविक परीक्षणो और एटमी हथियारो के भण्डारो से मानव हित सुरक्षित रह सकते हैं? कभी नही, उनमे तो विनाश ही विनाश है।

आज मानव जाति के सामने दो रास्ते हैं—एक विनाश का और दूसरा विकास का। आणविक विनाश मे तो सम्पूर्ण मानव जाति का विनाश है पर इस सहारक शक्ति को यदि मानव-विकास मे लगाया जाए तो पूरी मानव जाति को खुशहाल समृद्ध बनाया जा सकता है।

—चम्पतराय जैन, ४-बी, रेसकोर्स, देहरादून (उ० प्र०)

समाज कल्याण मन्त्री केसरी द्वारा वर्ग विद्वेष को बढ़ावा

दलितों को लाठी का जवाब लाठी से देने का घिनौना परामर्श

नई दिल्ली। समाज-कल्याण मन्त्री सीताराम केसरी ने दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम मे दलित साहित्यकार सम्मेलन का २४ सितम्बर के दिन उद्घाटन करते हुए दलितों को लाठी का जवाब लाठी से देने की सलाह दी। साथ ही उन्होने कहा—"दलित अब सवर्णो से भीख के बदले लाठी न खाएं, बल्कि उसका जवाब लाठी से दें। अब दलितों को खरीदा नहीं जा सकता और न कोई भी ताकत उन्हें सत्ता मे आने से रोक सकती है। केसरी ने कांशीराम या मायावती द्वारा महात्मा गाधी को अपशब्द कहे जाने के मामले में कहा कि महात्मा गाधी की हत्या के समय गोडसे के भाई गोपाल गोडसे ने गाधी जी को महात्मा की जगह राक्षस कहा था, परन्तु तब देश में गाधी जी के अपमान का विरोध नहीं किया लेकिन आज जब कांशीराम या मायावती ने गांधी जी के बारे में कुछ कह दिया तो व्यापक हंगामा शुरू हो गया क्योंकि इस बार कहने वाले दलित थे।"

प्रेक्षकों को समाज-कल्याण मन्त्री सीताराम केसरी द्वारा दलितों को उभारने वाले इन वक्तव्यों से गहरी चिन्ता है, वह समाज का कल्याण क्या करेंगे, प्रत्युत वह इनमें वर्ग-विरोध एवं विद्वेष का जहर जरूर फैला रहे हैं।

आर्यसन्देश का शुल्क तुरन्त भेजिए

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रु० है, उसका आजीवन शुल्क ३५० रु० है। निवेदन है कि मनीआर्डर, चैक या नकद भेजें।

धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, चिट पर आपकी ग्राहक संख्या लिखी रहती है।

२ अक्तूबर जन्म दिवस पर–

स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री तीन वर्ष आर्यसमाज के उपदेशक रहे

ले०—निहालसिंह आर्य

स्वतन्त्र भारत के दूसरे बहुप्रतिष्ठित शास्त्री प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री मृदुभाषी धैर्यवान, लगनशील, कर्मठ राष्ट्र के एक ईमानदार कर्णधार थे। उन्होने भारतवर्ष की प्राचीन नगरी काशी के पास मुगल सराय ग्राम मे २ अक्तूबर, १९०४ ई० मे शुभ जन्म लेकर अपने धर्मात्मा पिता-माता श्री शारदा प्रसाद अध्यापक तथा रामदुलारी देवी के नामको अमर उज्ज्वल कर दिया। शैशव काल मे इनके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने से उनका बचपन तथा शिक्षा-दीक्षा बहुत निर्धनत, अभावो तथा कष्टो मे हुई। इन्होने आरम्भिक शिक्षा वाराणसी के हरिश्चन्द्र विद्यालय से प्राप्त कर के केवल १७ वर्ष की अल्पावस्था मे ही सन् १९२१ मे महात्मा गाधी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन के तीस हजार स्वदेश भक्तो सत्याग्रहियो के साथ ढाई वर्ष तक जेल मे बन्द रहे।

यद्यपि उनके मन मे उच्च शिक्षा प्राप्ति की उत्कट इच्छा थी, इसलिए उसकी पूर्ति के लिए स्वदेश भक्तो द्वारा काशी मे खोले गए राष्ट्रीय विद्यालय काशी विद्यापीठ मे भारतीय सस्कृति की पद्धति से बहुत कठिन परिश्रम सतत लगन से १९२५ मे प्रथम श्रेणी मे शास्त्री की उपाधि प्राप्त करके 'शास्त्री जी' कहलाए उपाधि पाने। उन दिनो महर्षि दयानन्द द्वारा १८७५ ई० मे बम्बई मे खोले गए आर्य समाज का धर्मदेश प्रचार का कार्य जोरो पर था। स्वदेश भक्त उच्चकोटि के आर्यजन भी स्वतन्त्रता आन्दोलन के इन ऐसे सत्याग्रहो मे तभी से भाग देने लग गए थे। १९०६ ई० मे कुटिल शासक अ ग्रेजो द्वारा बगाल के दो खण्ड किए जाने से सारे भारत मे प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य नेता लाल, बाल, पाल के नाम विख्यात थे। पजाब के वीर वक्ता स्वनाम धन्य लाला लाजपत राय आर्यसमाज की ओर से दलित व अछूतोद्धार सभा के प्रधान थे। उन्होने लाल बहादुर शास्त्री जी को भी धर्मनिष्ठ दयालु परोपकारी और कर्त्तव्य पूर्ण नवयुवक समझकर अपनी सभा मे प्रचारक नियुक्त कर लिया था।

१८२६ ई० मे मुज्जफर नगर का नया मण्डल बनाया गया था। मुज्जफर नगर, तहसील बुढाणा तथा शामली के मध्य ८४ ग्रामो की बालियाण खाप का शीशौली ग्राम प्रमुख तथा बडा होने से वहा १९०५ से प० बस्तीराम आर्य भजनोपदेशक ने आर्यसमाज का प्रचार किया, ला० लाजपत राय ने १९२३ ई० ग्राम को मे मध्य मे आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास किया था। ला० लाजजतराय की बहन शीशौली के धर्मात्मा धनाढ्य लाला बनवारी लाल के आर्य समाजी पुत्र रामचन्द्र सढाय से व्याही थी। बनवारी लाल जी के उस क्षेत्र मे और कई अन्य नगरो मे सैकडो भवन बने हुए थे। उनका बडा मुख्य भवन शीशौली में १९५६ विक्रमी तथा १९९६ वि० का मैं (लेखक) ने भी दो बार स्वय जाकर देखा है। इसलिए लाला लाजपत राय शीशौली बहुत बार जाते रहते थे, लाला बनवारी लाल के बैजनाथ सहाय, रामचन्द्र सहाय आदि सातो पुत्र धनी तथा धर्मात्मा थे।

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने १९२५ से २८ ई० तक तीन वर्ष आर्य उपदेशक के रूप मे मुजफ्फर नगर तथा मेरठ मण्डल के बडे-बडे ग्रामो, नगरो तथा आर्य-उत्सवो में कर्त्तव्य निष्ठा से दलित, अछूतोद्धार का प्रचार किया था। तब इनको १२५ रुपए वेतन मिलते थे। तब ये हरिजनो (तथा कथित भगी और चमार कहाने वाले), में भारत के प्रसिद्ध धर्म ग्रन्थ रामायण और गीता की कथा सुनाया करते थे। यह बहुत ही कोमल वाणी से उत्साह सहित श्लोको की सुन्दर व्याख्या करते थे। इनका उपदेश भी हृदयग्राही होता था। ग्राम्यजन बहुत लगन और श्रद्धा से प्रचार से प्रभावित होकर इनसे स्नेह और सम्मान करते थे।

एक बार १९२७ मे मुजफ्फर नगर के जीमणे ग्राम के आर्यसमाज के महोत्सव मे आर्य विद्वानो, ईसाई पादरियो मे शास्त्रार्थ हुआ था। आर्य समाज के अलगूराय शास्त्री, लाल बहादुर शास्त्री, मास्टर कुन्दन लाल कोली जाट (जो वर्तमान सीताराम बाजार दिल्ली के राजपाल शास्त्री के दादा तथा रामपाल शास्त्री के पिता थे) ईसाइयो के पादरी फिरगुणी साहब और पटियाला के पादरी अबदुलहक थे। पादरी शास्त्रार्थ में हार गए और जीमणे ग्राम के जो चमार बहला-फुसला कर ईसाई बना लिए थे, वे शास्त्रार्थ मे हारे हुए पादरियो के जाल से निकल गए। तो पादरी उनको गाली देने लगे। तब उन हरिजनो ने उस पादरी को खूब पीटा और भगा दिया। ये हरिजन लाल बहादुर शास्त्री के कुशल प्रचार से आर्यसमाज के श्रद्धालु बन गए थे।

उसी जीमणे ग्राम के पास एक ग्राम भैसी भी है। वहा के तथा आसपास के ग्रामो के भी दर्शक श्रोता नर-नारी भी शास्त्रार्थ मे आर्यसमाज की जीत से तथा लाल बहादुर शास्त्री के प्रेम-स्वभाव से बहुत प्रसन्न थे। भैसी ग्राम के चौधरी तिलकराज की वृद्धा दादी तो लाल बहादुर शास्त्री के लिए एक लोटे में दूध घी-खाण्ड मिलाकर भर लाई और शास्त्री जी के हाथ मे लौटा देकर बोली कि बेटा यह दूध का लोटा पी ले और हम तुमको इसी प्रकार दूध ही पिलाया करेगे 'तुम रोटी मत खाया करो'। तब मुजफ्फर नगर मण्डल मे तीन वर्ष तक लाल बहादुर शास्त्री के प्रचार से वह वहा के ग्रामजनो मे बहुत सम्माननीय तथा प्रिय हो गए थे। उन्होने बहुत से जनो, युवको तथा हरिजन भाइयो को सन्ध्या हवन सिखाकर जनेऊ भी दे दिए थे।

मुजफ्फर नगर के डी०ए०वी० कालेज की प्रबन्धकर्तृ सभा ने लाल बहादुरशास्त्री का मासिक वेतन १२५ रुपए थोडा समझ कर मागेराम आर्य की सहायता से उसी कालेज मे शास्त्री जो के निवास की व्यवस्था छात्रावास मे कर दी। तब उस जाट छात्रावास के प्रबन्धक चौधरी शेरसिंह अच्छे आर्यसमाजी थे। उन्होने छात्रावास के ९० छात्रो से शास्त्री जी के लिए बारी-बारी घी देना जिम्मे लगा दिया। और छात्रावास की ओर से दूध का भी दैनिक प्रबन्ध कर दिया, वह शास्त्री जी से कहने लगे कि आप अपने १२५ रुपये सारे घर भेज दिया करें। छात्रावास की दुग्ध शाला से एक जाट चौधरी डेरी से आया करता था, शास्त्री जी को एक सेर दैनिक दूध मिलता था चौधरी शेरसिंह कट्टर आर्य समाजी थे। यह अलीगढ में जनमे और बुलन्दशहर मण्डल के सैदपुर ग्राम में इनके मामा थे, पीछे ये जाट छात्रावास मे से गुरुकुल नारायण के प्रबन्धक बन गए थे जो राधा महेन्द्र प्रताप सिंह के नाम पर रुडकी सडक पर था। जनवरी १९८० ई० चौ० शेरसिंह आर्य का देहान्त हो गया।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसन्देश के ग्राहकों को सूचना

साप्ताहिक आर्यसन्देश के समस्त ग्राहकों से सूचनार्थ निवेदन है कि नई दिल्ली से आर्यसन्देश नियमित रूप से प्रति शुक्रवार को पोस्ट कर दिया जाता है। इसके बावजूद ग्राहकों के पत्र मिल रहे है कि आर्यसन्देश उन्हें नियमित नही मिल रहा है, ऐसे समस्त ग्राहक शिकायती पत्र कार्यालय में भेजने से पूर्व अपने सम्बन्धित डाक घर से पूछताछ करें और उसकी प्रतिलिपि आर्यसन्देश, नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—सम्पादक आर्यसन्देश

श्री राम की विजय

(पृष्ठ २ का शेष)

जोडकर कहा कि हे राजन! आपका जो राज्य धरोहर के रूप मे मेरे पास था,आज मैं आपको वापस लौटा रहा हू। आज मैं कृतकृत्य हू और सफल मनोरथ हो गया हूं क्योकि मे आपको चौदह वर्ष पश्चात अयोध्या मे आया देख रहा हूं। आप अपने कोष, राजमहल, नगर और सेना आदि को सभाल लीजिए।

इससे सिद्ध हुआ कि लका विजय के तुरन्त बाद ही रामचन्द्र जी पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या वापस लौट गए थे और कोई अन्तर राज्य पर विजय और अयोध्या पहुचने मे नही था, परन्तु विजयदशमी के बीस दिन पश्चात जो दीपावली पर्व आता है वह श्री रामचन्द्र जी के अयोध्या वापस आने की खुशी में मनाया जाता है। वह भी तिथि सत्य नही जान पड़ती। ये सारे समारोह कहीं चैत्र मास मे होते प्रतीत होते हैं न कि आश्विन और कार्तिक मे।

उवाच च महातेजा: सुग्रीव राघवानुज.।
अभिषेकाय रामस्य दूतानाज्ञापता प्रभो।।
किरीटेन तत: पश्चाद्वसिष्टेन महात्माता।"

बाल्मीकि जी के इन श्लोको से भी यही सिद्ध होता हैं कि रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक अयोध्या मे तुरन्त आने पर किया गया था।

यह तो रही इतिहास पडितों के लिए खोज का विषय। वर्षा ऋतु मे क्षत्रिय वीर, योद्धाओ ने जो अपने-अपने हथियार और अन्य आयुध सभालकर रख दिए थे, क्योकि प्राचीन काल मे यातायात के सुलभ साधनो के अभाव मे वर्षा ऋतु मे राजा लोग एक दूसरे पर आक्रमण नही करते थे उन हथियारो को अब निकालकर, उनकी देखभाल कर जगादि से उन्हे साफ कर और युद्ध में प्रयोग के लिए उन्हे ठीक करके रखा करते थे।

अत यह क्षत्रियो का त्योहार माना जाता है।

वास्तव में विजय दशमी (दशहरा) का त्योहार पाप, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अधर्म इत्यादि तक और आसुरी एव तामसिक वृतियो पर पुण्य, न्याय, सदाचार, अहिसा, प्रेम और धर्म की विजय का प्रतीक है। लकापति रावण महान पडित वेदज्ञ और प्रभावशासी व शासक होते हुए भी बडा क्रूर, हिंसक, अनाचारी, भ्रष्टाचारी और अन्य दूषित वृतियो वाला हो गया था और कामवासना के वशीभूत हो वह सदाचार और दुराचार असत्य सत्य मे भेद करना ही भूल गया था। इन्ही दुरवृतियो में आसक्त होकर सीता को हर लाया था। दूसरी ओर रामचन्द्र जी का बडा ही उज्ज्वल चरित्र हमारे सामने है। वाल्मीकि जी ने उनको अनेक गुणी का आगार कहा है।

उनको दृढ आत्मा, नीतिज्ञ, बुद्धिमान, सबके प्रति समदृष्टि रखने वाले, विक्रमशाली तेजस्वी, महाविद्वान धैर्यशाली, आर्य, प्रियदर्शन वाला, माता-पिता का आज्ञाकारी सुख-दुख मे समान रहने वाला, सयमी, प्रजाप्रेमी और सबके आनन्द और सुख बढाने वाला तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा है। अत रामचन्द्र जी का रावण पर विजय प्राप्त करना मानो दैवीय और सात्विक वृतियो का असुर व दैत्य वृतियो पर विजय प्राप्ति की ऐतिहासिक घटना है। इस लिए हमे चाहिए कि बडे उल्लास और निष्ठा से यथा समय मनाए। इति

अशोक विहार, दिल्ली

डा० महेश विद्यालंकार को भाभी श्रीमती सत्या जी का देहावसान

आर्य विद्वान डा० महेश विद्यालकार के ज्येष्ठ भ्राता उद्यमी श्री बीरसिंह जी की विदुषी पत्नी व लाइफ इन्शोरेंस मे कार्यरत श्रीमती सत्या जी का निधन विगत २३ सितम्बर को हो गया। उनकी श्रद्धाजलि सभा २६ सितम्बर को जनकपुरी के लक्ष्मी नारायण मन्दिर मे हुई। श्री प्रेमचन्द जी श्रीधर, केन्द्रीय सभा के महामन्त्री शिवकुमार जी शास्त्री, श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य महेन्द्र कुमार जी शास्त्री आदि ने सार्वदेशिक सभा, केन्द्रीय दिल्ली सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आदि सस्थाओ की ओर से दिवगत आत्मा की सद्गति व शोक सन्तप्त परिजनो की सान्त्वना के लिए प्रभु से प्रार्थना की। शोक सतप्त परिवार की ओर से डा० महेश विद्यालकार ने आगत आर्यजनता, परिजनों व विद्वज्जनो का आभार प्रकट किया।

आज ही राशि तथा आर्डर भेजकर कैलेण्डर बुक कराएं :

नव वर्ष कैलेण्डर–१९९६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाजों/संस्थाओं द्वारा प्रकाशित कराए जाने वाले कैलेण्डरो मे एकरूपता लाने तथा आर्यसमाज के मन्तव्यों के अनुरूप कैलेण्डर प्रकाशित कराकर सभी आर्यसमाजों तथा सस्थाओं को लागत मूल्य पर उपलब्ध कराने का निश्चय किया है।

कैलेण्डर का लागत मूल्य साढ़े चार रुपए प्रति कैलेण्डर आता है।

आर्यसमाजो, सस्थाओं के अधिकारियो से अनुरोध है कि वे अपनी समाज, सस्था की ओर से जितने कैलेण्डर छपवाना चाहती हैं उसकी राशि अविलम्ब १० अक्तूबर १९९५ तक सभा कार्यालय को भिजवा दें। कैलेण्डर कम से कम १०० छपवाने होंगे। अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रचार-प्रसार के लिए अधिक से अधिक कैलेण्डर छपवाने का आर्डर दे।

नव वर्ष कैलेण्डर में निम्न विशेषताएं होंगी :—

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का भव्य चित्र।
२. चित्र के एक तरफ सगठन सूक्त मन्त्र तथा दूसरी तरफ आर्यसमाज के नियम होगे।
३ आर्य पर्व सूची।
४ कैलेण्डर मे अग्रेजी तथा देसी तिथिया दोनो प्रकाशित की जाएगी।
५ कैलेण्डर के मध्य मे आर्यसमाज, सस्था का नाम तथा पता मोटे अक्षरो मे प्रकाशित किया जाएगा।
६ कैलेण्डर के ऊपर "ओ३म्" तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अकित होगा।
७. कैलेण्डर का आकार २० × ३०, फुल साइज बढिया कागज पर होगा।

कृपया अपनी आर्यसमाज, सस्था की ओर से आवश्यकता अनुसार कैलेण्डर की सख्या तथा अग्रिम राशि (साढे चार रुपए प्रति कैलेण्डर के हिसाब से) अविलम्ब भेजकर आज ही अपने कलेण्डर आरक्षित करा लें। ताकि समय पर कैलेण्डर प्रकाशित कराकर सभा आपको भिजवा सके। राशि नकद, चैक, बैक ड्राफ्ट मनीआर्डर द्वारा भेज सकते है।

राशि तथा आर्डर भेजने का पता—
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पजीकृत)
१५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१.
दूरभाष : ३१०१५०, ३११२८०

वैद्य महेन्द्र पाल आर्य
सयोजक, कैलेण्डर प्रकाशन समिति

स्व. लाल बहादुर शास्त्री

(पृष्ठ ४ का शेष)

जब यह मुजफ्फर नगर के जाट छात्रावास में प्रबन्धक थे, तो एक अंग्रेज यग साहब भी इनके पास आया करता था, जिसने अलग पुलिस बनाकर बिजनौर मुरादाबाद के डाकू सुलताना को पकड़ा था। यंग साहब ने ही सिंध मे हूर मुस्लमानो का विद्रोह दबाया था। यंग साहब कई कई दिन जाट छात्रावास में ही चौ० शेरसिंह के पास ठहरते थे। शेरसिंह आर्य ने उनका मासाहार छुडाकर हलवा, पुरी, खीर के भोजन का संस्कार बना दिया था। वह यग साहब को अपने पास हवन मे भी बैठाते थे, और यग साहब को हिन्दी सिखाकर अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भी पढवाया करते थे। फिर चौ० शेरसिंह इन्द्रजीत सिंह आर्य प्रिंसपिल के पास गुरुकुल नारायणा चले गए। इस सुधार-प्रचार आर्य सन्ध्या हवन आर्य सस्कार का सारा श्रेय तथा यश जगदाचार्य महर्षि दयानन्द को जाता है।

तब लाल बहादुर शास्त्री ने दलित अछूतोद्धार सभा तथा लोक सेवा मण्डल मे आजीवन सदस्यता ग्रहण करके हरिजन उत्थान का बहुत कार्य किया, उनके बच्चो को सबको के साथ प्रवेश करवाया। २३ वर्ष की अवस्था में ही इन्होने अपने विवाह में अपने श्वसुर से दहेज मे केवल एक चर्खा और कुछ गज खादी ही लेना स्वीकार किया। शेष को नकार कर दिया उनकी धर्मपत्नी ललिता देवी भी एक आदर्श साध्वी नारी थी। लाल बहादुर शास्त्री जी भारत की राजनीति में उत्तरोत्तर प्रगति करते ही गए। वह १९३७ ई० उत्तर प्रदेश कांग्रेस पार्टी के सचिव बने। १९४०-४१ मे व्यक्तिगत सत्याग्रह के कठिन कष्टो को झेलते हुए एक वर्ष की जेल काटी। घर की हालत बहुत चिन्ताजनक थी। १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन मे जेल मे गए। १९४६ ई० मे उत्तर प्रदेश के विधायक तथा स्वतन्त्र भारत में पुलिस मन्त्री बने। १९५२ मे बहुत कुशल रेलमन्त्री बने। १९५८ मे उद्योग मन्त्री, १९६१ ई० पन्त जी के निधन के पश्चात गृहमन्त्री बने। २७ मई, १९६४ को प० जवाहार नेहरू के देहान्त के पश्चात पूरे १८ मास तक भारत के हृदय सम्राट प्रधानमन्त्री बने रहे। १९६५ के पाकिस्तान युद्ध मे बहुत उदारता और वीरता का परिचय दिया। युद्ध में पाकिस्तान को हराकर रूस के प्रधानमन्त्री की सीमिन के झासे में आकर सन्धि पर हस्ताक्षर करके १० जनवरी १९६६ को कलुषित षडयन्त्र के अत्याचार मे फस कर अमर स्वर्गारोही बन गए। आपको शतश: नमन है।

—बी-११ यादव पार्क रोहतक रोड नागलोई दिल्ली

आठवां वेद प्रचार समारोह : ५०१ यज्ञकुण्डों पर यज्ञ

वैदिक वृद्ध सन्यास आश्रम अशोक नगर, रेलवे वर्कशाप रोड, यमुनानगर, हरयाणा आर्य केन्द्रीय सभा यमुनापार के तत्वावधान मे वृहस्ततिवार ५ अक्तूबर से रविवार ८ अक्तूवर, १९९५ तक आठवा वेद प्रचार समारोह, स्वामी विरजानन्द जयन्ती समारोह और ५०१ यज्ञकुण्डो पर यज्ञ हो रहा। यज्ञ के ब्रह्मा दिल्ली के ब्रह्मचारी श्री राजसिंह जी आर्य है।

वृहस्पतिवार ५ अक्तूबर और शुक्रवार ६ अक्तूवर को प्रात ८-३० से ११ बजे तक और साय ३ से ५.३० बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन होगे शनिवार ६ अक्तूबर को प्रात ८ ३० से १० बजे तक यज्ञ और रात्रि ८.३० से १० बजे तक भजन प्रवचन होगे। दोपहर को २ ३० बजे से शोभायात्रा निकलेगी।

रविवार ८ अक्तूबर को प्रात ८ ३० से १० ३० बजे तक ५०१ यज्ञकुण्डों पर यज्ञ होगा। ११ से २ बजे तक भजत प्रवचन होंगे। ऋषि लंगर २ से ४ बजे तक होगा।

शांति यज्ञ

आर्यसमाज के नेता बाल दिवाकर हस जी के देहावसान पर, शान्ति यज्ञ दिनाक ८-१०-९५ दिन रविवार दिल्ली

समय–प्रात . १० बजे

स्थान–आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे सम्पन्न होगा।

आर्यजन अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर श्रद्धासुमन अर्पित करें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

प्रभाकर एव
समस्त पारिवारिक जन

R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 5-6-10-1995 License to post without prepayment, License No. U (C 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
८ अक्तूबर १९९५ साप्ताहिक "आर्यसन्देश" ८

आर्यसमाज गांधी नगर का ४० वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गांधी नगर का ४० वां वार्षिकोत्सव सोमवार १८ सितम्बर से रविवार २४ सितम्बर तक आयोजित किया गया। आचार्य रामकिशोर शास्त्री के ब्रह्मत्व मे प्रातः सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। म जनार्दन जी आर्य संगीताचार्य के भजन हुए तथा रात्रि को ८ से १० बजे भजनो के बाद आचार्य रामकिशोर शास्त्री जी की वेद कथा की गई।

रविवार को पूर्णाहुति एव समापन कार्यक्रम हुआ। आर्य पुत्री पाठशाला गांधी नगर के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उत्साहवर्धन के लिए पुरस्कार दिए गए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने आर्य जनता का उद्बोधन किया।

आर्यसमाज अशोकनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अशोकनगर, नई दिल्ली-१८ का वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। शनिवार २३ सितम्बर को शोभायात्रा, (नगर-कीर्तन) का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया, उसमें स्थानीय समाजों के आर्य पुरुषो, युवा स्त्री जनता भारी सख्या मे उपस्थित हुई। दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलकनगर के बच्चो तथा अध्यापिकाओ ने इस शोभायात्रा में उत्साह से भाग लिया।

रविवार २४ सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति तथा समापन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने उपस्थित जनता को सम्बोधित किया।

काका हाथरसी को भावभीनी श्रद्धांजलि

दिल्ली सरकार की दिल्ली अकादमी द्वारा पुराना सचिवालय में एक श्रद्धाजलि सभा में काका हाथरसी को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई। सभा मे दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना, शिक्षा मन्त्री श्री साहिबसिंह वर्मा, स्वास्थ्य मन्त्री डा० हर्षवर्धन, वित्त मन्त्री प्रोफेसर जगदीश मुखी, श्री गोपाल प्रसाद व्यास, श्री अशोक चक्रधर तथा बडी सख्या मे विधायकगण, कवि साहित्यकार और काका के प्रशसक मौजूद थे। सभा की अध्यक्षता प्रो० विजयेन्द्र स्नातक ने की।

लेखकों से निवेदन

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस में टाइप की हुई होनी चाहिए।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

सम्पादक

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल ११०२४/९-९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १८, अंक ४९ रविवार १५ अक्तूबर १९९५ विक्रमी सम्वत २०५२ दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक—३५ रुपए आजीवन—३५० रुपए विदेश में ३० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

तमिलानाडु में मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा धर्मान्तरण की कोशिश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् ने मोर्चा सम्भाला

पांच दक्षिणी जिलो के दौरे पर रवाना : तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा सक्रिय : स्वामी नारायण सरस्वती केउपवासो से लहर बदली

नई दिल्ली। मीनाक्षीपुरम म धर्मान्तरण के बाद आर्यसमाज ने बडे यत्न से उन्हें वापस हिन्दू धर्म मे लिया था ज्ञात हुआ है कि पिछले कुछ समय से मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्व तमिलनाडु मे रामनाथपुरम और मदुर आदि जिलो मे हरिजन व दलित जनता को बहला फुसलाकर और आर्थिक प्रलोभनो द्वारा इस्लाम धर्म में ले आने के लिए सक्रिय हो उठे है। कहते है कि मीनाक्षीपुरम की घटना से भी भीषण षडयन्त्र इस बार रचा गया है। जुलाई मास मे रामनाथपुरम जिले के एक गाव के १५ परिवारो को धन तथा अरब देशो मे नौकरी का प्रलोभन देकर मुसलमान बनाया गया।

कहते हैं कि इन्ही मुस्लिम शरारती तत्वो ने दलित वर्गों और हिन्दू सवर्ण वर्गों मे द गे भडका दिए। सारा काम असामाजिक तत्वो को धन देकर किया गया। तमिलनाडु पुलिस ने भी दलितो के एक गाव के विरुद्ध सशस्त्र कार्रवाई की। कई गांवो में गोलिया भी चलाई गई। इस घटना से मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्वो का मनोवल ऊ चा हो गया और उन्होने इसे सवर्ण हिन्दुओ द्वारा दलित वर्गों पर अत्याचार कहा। यह भी प्रचार किया गया कि इस्लाम मे उन्हें समान दर्जा और अरब देशो मे नौकरी दी जाएगी। दलितो के कई गावो मे हजारो की सख्या को इस्लाम मे लाने की बात भी कही गई।

इस दु खद समय मे तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ कार्यकर्ता गाव गाव घर घर जाकर बतला रहे है कि हिन्दू धर्म में किसी प्रकार का वर्ग भेद नहीं है। स्वामी नारायण सरस्वती द्वारा स्थान स्थान पर उपवास करने से अच्छा परिणाम आ रहा है। प्रसन्नता का विषय है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् तमिलनाडु के पाच दक्षिणी जेलो के दौरे पर रवाना हो गए हे। उन्होने मोर्चा सम्भाल लिया है। वह अनेक स्थानो पर जाकर स्पष्ट कर रहे है कि व दिक सिद्धातो के आधार पर काई भेदभाव नही है जो अन्तर है वह स्वार्थी तत्वो के कारण है।

आर्यवीर दल के पूर्व संचालक एवं

स्वातन्त्र्य सेनानी श्री बाल दिवाकर हंस का स्वर्गवास

अत्यन्त दुख का विषय हे कि अ०भा० आर्य वीर दल के पूर्व सचालक स्वातन्त्र्य सेनानी श्री बाल दिवाकर ह स का २६ सितम्बरको बिकासनगर लोनी गाजियाबाद में अपने निवास स्थान पर निधन हो गया। उनके असामयिक निधन से आर्यसमाज को विशेष रूप से आर्य वीर दल को गहरी क्षति पहु ची है। उन्होने अनेक वर्षों तक आर्य वीर दल के माध्यम से आर्य युवाओ का मार्गदर्शन किया।

श्री बाल दिवाकर जी का अन्तिम स स्कार पूर्ण वैदिक रीति से २६ सितम्बर को ४ बजे हिण्डन श्मशान घाट, गाजियाबाद मे किया गया। इस अवसर पर बडी संख्या में आर्य वीर दल के युवाओ एव जनता ने उन्हें श्रद्धाजलि दी।

रविवार ८ अक्तूबर को आर्य वीर दल के यशस्वी सेनानी स्वातन्त्र्य योद्धा श्री बाल दिवाकर को आर्य समाज दीवान हाल मे एकत्र आर्य वीर सैनिकों और आर्यजनों ने श्रद्धासुमन प्रस्तुत किए। वैदिक विद्वान् स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने श्री बाल दिवाकर के निधन को आर्य समाज तथा आर्य वीर दल के लिए एक अपूरणीय क्षति घोषित किया।

स्वातन्त्र्य योद्धा श्रीराधेश्याम त्यागी की जयन्ती

और आर्यसमाज राधेश्याम भवन का १७वां वार्षिकोत्सव

रविवार ८ अक्तूबर, १९९५ को प्रात ९ बजे से दोपहर तक स्वतन्त्रता सेनानी श्री राधेश्याम त्यागी का ८७ वा जन्म दिवस और आर्य समाज राधेश्याम भवन, बुराडी दिल्ली-९ का १७वा वार्षिकोत्सव बडे उत्साह से मनाया गया।

प्रात ९ से १० बजे तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती क ब्रह्मात्व मे यज्ञ किया गया। प्रात १०-३० बजे स्वामी स्वरूपानन्द जी ने डा० राजेन्द्र आयुर्वेदाचार्य के सानिध्य में श्री कन्हैयालाल आर्य को वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा दी।

कार्यक्रम मे धर्मानन्द मण्डली देवेन्द्र र गा द्वारा सगीत भजन प्रस्तुत किया गया। श्री रघुनाथ बुराडी के विद्यार्थियो का कार्यक्रम अच्छा रहा।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेवजी महामन्त्री डा० धर्मपाल जी पूर्व कार्यकारी पार्षद चौ० हीरासिंह नगर निगम के पूर्व पार्षद श्री कल्याण सिंह ने जनता का उद्बोधन किया।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

आर्यसमाज को एक रचनात्मक सही दिशा दें

आचार्य वेदभूषण

सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहने का साहस आज बिरलो मे ही रह गया है। आज की राजनीति ने भी मनुष्य के नैतिक मूल्यो का ह्रास या अवमूल्यन कर दिया है। 'रामाय स्वस्ति और रावणाय स्वस्ति' इसे ही 'गगा गए गगादास और जमुना गए जमुनादास' कहते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द आए। महर्षि ने दूध का दूध और पानी का पानी करके दिखलाया।

महर्षि ने अपने अद्भुत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे दो टूक शब्दो मे सत्य को सत्य और असत्य को असत्य के रूप मे प्रस्तुत किया।

अभी आर्यसमाज की स्थापना हुए पूरे सवासौ साल भी नही हुए। इतने थोडे समय मे ही आर्यसमाज के अनुयायी दुर्बल हो गए हैं। वे भी आज खण्डन की पद्धति का विरोध करते देखे जाते हैं। आज आर्यसमाजी कहाने वाले भी दिग्भ्रमित से दिखाई पड रहे है। महर्षि की शैली को अब आर्यसमाजी भी पीछे ढकेल रहे है। सर्वत्र मुह देखी बात और औरो की कार्यशैली का अनुकरण दिखाई पड रहा है। आजादी से पूर्व के आर्यो मे जो तेजस्विता व वीरता थी अब वह निरन्तर घटती चली जा रही है। सिद्धातो की दृढता और सत्य के प्रति आस्था का अभाव होता जा रहा है। आज समूचे आर्य जगत की स्थिति किंकर्त्तव्य विमूढ की सी हो चली है।

प्राय यह बात पूछी जाती है कि "आज की विषम स्थिति मे हम आर्यसमाज की रक्षा कैसे करें? आर्य समाज को कैसे आगे बढाया जाए। जब कोई इस प्रकार का प्रश्न करता है तो हमे ऐसा लगता है कि इस मनुष्य के मन मे ऋषियो के प्रति आस्था नही है। यदि महर्षियो के प्रति आस्था होती तो फिर यह प्रश्न करना कि वर्तमान परिस्थिति मे क्या किया जाए? ऋषि भक्त से हृदय मे ऐसी शका उठ ही नही सकती, क्योंकि ऋषियो का दर्शाया जो मार्ग है वह मार्ग स्वयं ही समस्त समास्याओ का एक मात्र समाधान है।

सुधार और उन्नयन कैसे हो ?

इस प्रश्न को मूल रूप मे समझना होगा कि—सुधार व उन्नयन कैसे होगा?

इसके दो ही उपाय है। जो बिगड गया है, उसे सुधारना पहली बात है। उन्नयन के लिए जो नया निर्माण है, उसे आरम्भ से ठीक रखना। मान लीजिए हम मोटर रूपी वाहन में सुधार लाना चाहते हैं तो दो कार्य करने होगे कि—जो मोटर उपलब्ध है उनमे सुधार किया जाए और नई मोटरों के उत्पादन के समय ही निर्माण के समय ही उसे निर्दोष बनाया जाए।

हमारे पास दो शब्द है एक गुरु और दूसरा आचार्य। गुरु निर्माण करता है पैदा करता है। गुरु ज्ञान का सिद्धात पक्ष है। आचार्य ज्ञान का व्यवहार पक्ष है जिसे अ ग्रेजी भाषा मे थियरी और प्रेक्टीकल कहते हैं, उसे ही ज्ञान के क्षेत्र मे हिन्दी मे सिद्धात और व्यवहार कहते हैं। जो सिद्धात सिखलाता है वह गुरु और जो व्यवहार सिखलाता है उसे आचार्य कहा जाता है। मानव जाति की उन्नति के ये ही दो मौलिक आधार हैं। गुरु के पास बच्चे को नए रूप में निर्माण के लिए भेजा जाता है। गुरु उसे द्विज बनाता है। अर्थात उसे दूसरी जन्म देता है पुरोहित या आचार्य माता-पिता का दिशाबोधक होता है। वह बने हुए को संस्कारित करता है।

यदि मानव जाति का उन्नयन करना है तो वर्तमान जन समुदाय को सुधारने के लिए पुरोहितो को तैयार करो। सुयोग्य पुरोहित परिवारो को सुधारेगा। पुरोहित सुधार का "रिपेयर" मरम्मत का कार्य करता है। वह वर्तमान को बनाता है और गुरु भविष्य का निर्माण करता है।

आर्यसमाज और मानव समाज की उन्नति व सुधार का एक ही मार्ग है कि—परिवारो मे सस्कारो की अनिवार्यता कर दी जाए तथा दूसरा उपाय गुरुकुलो का निर्माण किया जाए। प्रशिक्षित पुरोहित वर्तमान समाज को सुधारेगा और गुरु भावी पीढी का निर्माण करेगा।

वर्तमान मे जो गुरुकुल चल रहे हैं इनमें सुधार किया जाना चाहिए। गुरुकुलो को जन-उपयोगी बनाया जाए उसका उपाय यह है कि सब गुरुकुलों के पाठ्यक्रम मे केन्द्रीय सरकार का अ ग्रेजी माध्यम वाला पाठ्यक्रम अनिवार्य किया जाए और दूसरी ओर महर्षि ने जो पाठ्यविधि वेदाग्रप्रकाश के १४ चौदह भागों के रूप मे तैयार की है उसे केन्द्रीय सरकार के पाठ्यक्रम के साथ-साथ अनिवार्य कर दिया जाए। ऐसा करने से गुरुकुलो का महत्व एक दम बढ़ जाएगा। यहां अभिभावक उत्तम सन्तानो को मुंहमागा शुल्क देकर भेजेंगे।

दूसरी ओर पुरोहितो को तैयार किया जाए जो गृहस्थाश्रम के विज्ञान के विशेषज्ञ हो। व्यवहारकुशल तथा सुयोग्य सेवाभावी पुरोहित परिवारों को अनुशासित करता है। उनकी समस्याओ को सुलझाता है। मानव निर्माण की प्रक्रिया दिशा-निर्देश करता है। संस्कार एक घण्टे का नहीं होता है, जब जो संस्कार कराया जाता है वह कम से कम अगले सस्कार तक की जीवन प्रक्रिया व कर्त्तव्य का बोध कराता है।

महर्षि देव दयानन्द की सर्वश्रेष्ठ व सर्वाधिक हितकारी व क्रियात्मिक रूप से समाज को लाभ पहुंचाने वाली सर्वश्रेष्ठ रचना सस्कार विधि है। संस्कार विधि समूचे कर्मक्षेत्र का अनुशासन ग्रन्थ है, जो समाज को अनुशासित करता है। आज कर्मकण्ड तथा सस्कारो को एक अभिनय या तमाशा बना दिया गया है। जैसे थिएटरो वा सिनेमा घरो में तीन घण्टे का एक मनोर जन का कार्यक्रम चलता है। वैसे ही एक प्रदर्शन मात्र के लिए और मनसतुष्टि के लिए सस्कारो का आयोजन किया जाता है। सस्कारो के सूक्ष्म महत्व और गहरे लाभकारी स्वरूप को समझना होगा। तब समाज सुधार की वास्तविक प्रक्रिया आरम्भ होगी।

स्कूलो के प्रजाल मे फसी व धंसी पडी आर्यसमाजे स्कूलो को बन्द करें। रेसीडेशियल छात्रावास युक्त शिक्षा की सही पद्धति को चलाए तब हम लाभकारी प्रभाव डाल सकेंगे और सस्कार विधि के मानव-निर्माण प्रक्रिया के रहस्यो को जानने वाले सुयोग्य पुरोहितो का निर्माण करेंगे। तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम का स्वप्न पूरा हो सकेगा।

प्रत्येक आर्यसमाज को इस योजना पर गम्भीरता से विचार करना होगा। महर्षि ने आर्यसमाज की रचना मौलिक आधारो को लेकर की है। आर्य समाज उछलकुद कम्पनी नहीं है, परन्तु आज दुर्भाग्य से आर्यसमाज मे केवल नारे लगाने वाले और नकली आर्यराष्ट्र बनाए गे के नारे लगाने वाले या दूसरी ओर धार्मिक और राजनीतिक दल की बात करने वाले लोग घुस गए है। आर्य समाज को सामूहिक रूप से राजनीति मे ले जाने की बात करने वाले भी अदूरदर्शी हैं। आर्यसमाज का स्वरूप कारखाने के समान नहीं है। आर्यसमाज का स्वरूप तो प्रायः टूल्स के समान ऐसी मशीनरी व पुर्जे तैयार करना है जिनसे लोग कारखानों का सचालन करते हैं।

हमारा मुख्य उद्देश्य ससार भर के लोगों की शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है मानव-निर्माण हमारा मुख्य ध्येय है। यह निर्माण ऊपर दर्शाये हुए दो उपायो से ही सम्भव है। एक उत्पादन केन्द्र गुरुकुल पद्धति के आधार पर स्थापित शिक्षा के ऐसे केन्द्र खोलना जहां अध्यात्म विद्या और अविद्या भौतिक ज्ञान-विज्ञान दोनो ही प्रकार के ज्ञान में दक्ष बनाया जाए।

दूसरा आधार केन्द्र इनकी इकाई हर परिवार है, जहां दम्पत्ति रहते हैं। वहा हमारे सुयोग्य पुरोहित जाए और परिवारो के सुधार का करें। इससे वर्तमान और भविष्य दोनो भी उज्ज्वल हो जाएंगे। जब सारा समाज जागरूक होगा, तभी ससार मे प्रभावशाली परिवर्तन लाया जा सकता है। यह योजना महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट है। इसका आधार सत्यार्थ प्रकाश का तृतीय समुल्लास और सस्कारविधि है। जो अन्त करण से आर्यसमाज की उन्नति चाहते हैं ऐसे विचारशील जन इन विषयों पर विचार कर आर्य समाज को एक रचनात्मक सही दिशा प्रदान करेंगे।

—अधिष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

उठो, जागो और अज्ञान नष्ट करो !

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ।

कठोपनिषद् १-३-१४

अनादि अविद्या मे सोए हुए लोगों, उठो अज्ञान-निद्रा से जागो और श्रेष्ठ पुरुषो के समीप जाकर ज्ञान प्राप्त करो, जिस प्रकार छुरे की धारा तेज और पैनी होती है। तत्वज्ञानी उसी प्रकार ज्ञान के इस मार्ग को दुर्गम और दुष्प्राप्य कहते हैं।

सम्पादकीय अग्रलेख

नायमात्मा बलहीनेन लभ्य :

यद्यपि हमारे भारत राष्ट्र को राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए अडतालिस वर्ष हो गए हैं और जनसख्या की दृष्टि से हमारा देश विश्व मे दूसरे क्रम मे है और क्षेत्रफल तथा ससाधनो की दृष्टि से वह विश्व के अग्रणी राष्ट्रो मे है, परन्तु यह अत्यन्त निराशा की बात है कि विश्व की राजनीति और ससार के श्रेष्ठ अग्रणी राष्ट्रो की गिनती मे हमारा स्थान पहले राष्ट्रो की पंक्ति मे न होकर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्रो की श्रेणी में न होकर—उन्नति के लिए प्रयत्नशील राष्ट्रो मे है। आज विश्व में सब कुछ होते हुए भी हम जो याचको और भिक्षुको जैसा व्यवहार कर रहे हैं, उससे प्रतीत होता है कि आज देश के राष्ट्रीय नेताओ व प्रमुख राजनीतिक दलो को मिल बैठकर आत्मचिन्तन कर—उठो, जागो और अपनी मोहनिद्रा का नाश कर यह अनुभव करना होगा कि भारत राष्ट्र की समृद्धि और समुन्नति दूसरो पर भरोसा करने से नहीं प्रत्युत अपनी मानव शक्ति और संसाधनो के बल पर करनी होगी। आज हमारी स्थिति लगभग वैसी ही है, जब श्री राम की वानर व वन्य-जातियो की सेना समुद्र तट पर पहुच गई थी। उस समय सम्पाती ने कहा था—समुद्र के पारा त्रिकूट पर्वत पर लका बसी है, वही अशोक वाटिका मे सीता जी कैद हैं। आप लोगो को समुद्र पार कर लंकापति रावण की स्थिति का सही आकलन करना चाहिए। उस समय ऋक्षराज जाम्ववान् ने कहा था—मैं बूढ़ा हो गया हू, मै समुद्र पार कर लका चला जाऊ गा, पर लौट नही सकू गा।

उस समय जाम्बवान ने कहा था कि हमारी सेना मे केवल हनुमान ऐसा वीर है जो कठिन से कठिन काम कर सकता है-'कवन सो काज कठिन जग माहीं, जो नहिं होइ तात् तुम्ह पाहीं—जगत में कौन-सा ऐसा कठिन काम है, जो हे तात तुम से न हो सके। सचमुच हनुमान ऐसे ही शूर योद्धा थे, जिन्होंने दूत के सभी दायित्वों को भली प्रकार निवाहा। आज स्वाधीन भारत की भी कुछ किंकर्तव्य विमूढ-सी स्थिति है। विश्व की राजनीति मे हमारी कोई स्वतन्त्र स्पष्ट स्थिति नही है, कोटि-कोटि मानव शक्ति और अपूर्व प्राकृतिक संसाधनो के बावजूद हम अपनी आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक समस्याओ को सुलझा कर अपनी विशिष्ट स्थिति बनाने के लिए महाशक्तियों और बड़े राष्ट्रो की सहायता और सहयोग पर उनकी सरल दृष्टि पर अत्यधिक भरोसा कर रहे हैं। यह स्थिति ठीक नही है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् मे दस स्थायी देशों मे भारत को अपनी स्थिति के कारण सदस्यता देनी चाहिए थी, उसे वह स्थिति नहीं दी जा रही है। विश्व का इतिहास साक्षी है कि इस विश्व मे केवल उन्ही राष्ट्रो को महत्ता मिल सकती है जो प्रत्येक दृष्टि से महान, स्वावलम्बी और अग्रणी हों, हम स्वाधीनता के वर्षो मे कृषि और उद्योगों की दृष्टि के आगे बढ़े हैं, परन्तु उस तेजी और शक्ति से नहीं बढे हैं, जिस तेजी और शक्ति से पिछले महायुद्ध में पराजित होने के बावजूद जापान और जर्मनी बढे हैं। इतना ही नहीं, द०पू० एशिया और एशिया के अनेक छोटे और पिछड़े राष्ट्र भी आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से आगे बढ़े हैं।

भारत राष्ट्र को आज हनुमान की तरह अपनी क्षमता और शक्ति का सही आकलन करना होगा। यदि हमारे राष्ट्र के राष्ट्रीय नेता और प्रमुख राजनीतिक दल मिल-बैठकर अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए कुछ मौलिक सिद्धांत अंगीकार करें तो देश की प्रगति और समुन्नति बहुत तेजी से हो सकती है। ये कुछ मौलिक सिद्धात ये हो सकते हैं किसी भी राष्ट्रीय या राज्य के चुनावो मे किसी भी भ्रष्टाचारी, दोषी अभियोगो से लिप्त व्यक्ति को किसी भी दल का उम्मीदार घोषित या स्वीकार न किया जाएगा। देश के आर्थिक और सामाजिक अभ्युदय के लिए हम विदेशो से उतना ही आर्थिक सहयोग स्वीकार करेंगे जिससे हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और स्वाभिमान को क्षति न पहुंचे। तीसरे हम विदेशों से केवल मौलिक बुनियादी वैज्ञानिक आर्थिक फार्मूले या सूत्र ही आयात करेंगे, उनसे व्यर्थ की आर्थिक सहायता व उपभोग की वस्तुओ का आयात नही करेंगे। यदि विश्व के ज्ञान-विज्ञान को उनके प्रकाशित होते ही तुरन्त कम से कम समय में उनका भारतीय भाषाओ मे रूपान्तर कर लिया जाए और प्रत्येक आविष्कार को यत्नपूर्वक भारत मे उसका स्वदेशी रूपान्तरण कर लिया जाए तो कुछ ही समय में भारत आर्थिक, राजनतिक व प्रत्येक दृष्टि से विश्व मे अपनी उपयुक्त स्थिति प्राप्त कर सकता है। हा इस सबके लिए प्रत्येक देशवासी को स्मरण करना होगा—नायमात्मा बलहीनेनलभ्य, विश्व के प्रत्येक क्षेत्र मे केवल वीर बलशाली व्यक्ति, जातिया और राष्ट्र जीवित रह सकते हैं। विजय दशमी पर पविजयपूर्व और शक्ति का भी यही सन्देश है।

चिट्ठी-पत्री

ओ३म्ध्वज और हिन्दी के लिए समर्पित सिद्धांती जी

आर्य सन्देश ३ सितम्बर, १९९५ मे प्रकाशित मनमोहन आर्य के लेख 'ओ३म्ध्वज और हिन्दी के लिए समर्पित महर्षि के अनुपम अनुयायी प० जगदेवसिंह सिद्धाती' से सिद्धाती जी के उज्ज्वल जीवन व उनके जन्म-काल, ग्राम व माता-पिता का परिचय मिला। लेखक ने सिद्धाती जी के विवाह आदि के पश्चात के ठोस कार्यों को अच्छी प्रकार दर्शाया है। प्रकाशक, सम्पादक व लेखक को धन्यवाद व बधाई।

—रामपथिक, वानप्रस्थाश्रम, १०१ नदी मार्ग, मुजफ्फर नगर-२५१००२

रामायण-महाभारत का अन्तर

रामायण मे दिखाया गया कि भाई-भाई के लिए जीवन लगा देता है। महाभारत मे भाई-भाई की जान भी ले लेता है।

—सजीव गुड्डू, पल्टन बाजार, देहरादून

व्यर्थ के अवकाश बन्द करने होंगे

३ सितम्बर को शहीदी दिवस के अवसर पर अवकाश रहा, यह अवकाश स्वतन्त्रता सग्राम के शहीदो को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए किया जाता है, लेकिन हमें ठण्डे दिमाग से सोचना होगा कि क्या हम इस तरह देश पर मिटने वाले शहीदो को सच्चा सम्मान दे रहे हैं।

यद्यपि हमारा देश आर्थिक परतन्त्रता की ओर तेजी से बढ रहा है, सरकार अवकाश घोषित करने की भूल का भी मौका नही चूकती। देश को एक दिन मे ही करोडो रुपयों का चूना लग जाता है। शहीद देश को नुकसान पहुचाना नहीं, बल्कि ऊपर उठाना चाहते थे। यदि हमारी सरकार शहीदो को सच्चा सम्मान देना चाहती है तो उसे ये फिजूल के अवकाश बन्द करने होंगे।

—मनोज मबल गोनिया, तोशाम

निराशा के कुहासे में आशा की किरण–आर्य वीर दल !

उत्तमचन्द शरर

आर्यसमाज का इतिहास प्रायः संघर्ष का रहा है। अन्धकार से प्रकाश का युद्ध सृष्टि के आरम्भ से चला आया है। आधुनिक काल में भी यह युद्ध जारी है। उन्नीसवीं शती में जब राजनीतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में पूरा अन्धकार था, विदेशियों की दासता ने देश को स्वसंस्कृति से परिचित भी नहीं रहने दिया गुरुडम ने भक्तों के हृदय से भगवान् को छोड़ गुरु का पूर्ण पाठ पढ़ा दिया था। जब इतना अन्धकार था कि मनुष्य कुत्ते,बिल्लीको तो छू सकता था, परन्तु मनुष्य की छाया से भी भ्रष्ट हो जाता था ऐसे घोर अन्धकार के समय महर्षि सूर्य बनकर चमके, उन्होंने हर क्षेत्र में सत्य के प्रकाश से आलोक का प्रसार किया, अन्धकार ने भी अपने अस्तित्व के बचाव के लिए प्रकाश के केन्द्र से युद्ध की ठान ली। परन्तु विजय प्रकाश की रही ऋषि के जीवन में वेद के प्रकाश से जन साधारण को भटकने से छुटकारा मिला, और प्रकाश अन्धकार का युद्ध जारी था, कि दीपावलि को सायंकाल को भौतिक सूर्य का ही अस्त नहीं हुआ, अध्यात्म प्रकाश देने वाले सूर्य दयानन्द का भी अस्त हो गया। ऋषि अपने जीवन की नश्वरता से अनभिज्ञ नहीं थे, उन्हें यह भी ध्यान था कि अन्धकार से युद्ध तो चलता रहेगा अतः उन्होंने प्रकाश के वितरण के लिए आर्यसमाज का निर्माण कर दिया, ताकि उनके चले जाने के पश्चात भी प्रकाश का प्रसार होता रहे।

पाठक जानते हैं कि ऋषि के पश्चात् पं० गुरुदत्त, पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज और न जाने कितने ऋषि-भक्तों ने अपने जीवन की बाजी लगाकर भी अन्धकार से लोहा लिया, सत्य की सदा जीत रही, विरोधी परास्त हुए और आर्य समाज फलता-फूलता रहा।

युद्ध आज भी जारी है। इतना अवश्य है कि अन्धकार ने राजनीति का कवच पहन अपना बचाव आरम्भ किया है। इधर आर्य समाज के कर्णधार दुर्भाग्य से पदों की लालसा के शिकार हो गए। प्रकाश के विस्तार की चिन्ता न करके आपस में ही उलझ गए—
"रोशनी की किसी को फिक्र नहीं। जंग यह है, दिया हमारा है।"
(रोशनी की किसी को चिन्ता नहीं, है यह तकरार दीप मेरा है)

आर्य जनता में निराशा-सी फैल गई समाज का अनुशासन, संगठन, कार्य की लगन अन्धकार से उलझने की तड़प आपस की झड़पों का शिकार हो गई।

अवस्था विचित्र है—"बिकते जो चन्द राही, कोई खास गम न था।
मुश्किल तो यह है काफला-सालार बिक गए।।

अन्धकार में एक छोटा-सा दीपक टिमटिमा रहा है। रात के घने अन्धकार से अपनी थोड़ी सी लौ से जूझ रहा है। सूर्य कब उदय होगा, इसका पता नहीं परन्तु दीपक का व्रत है कि रात्रि की समाप्ति तक यह स्वय को जला कर भी टिमटिमाएगा और इस नन्हें दीपक का नाम है आर्य वीर दल। सत्य तो यह है कि मानवता का प्राण आर्य समाज से ही सम्भव है और आर्य समाज का भविष्य है आर्य वीर दल।

मेरी सहृदय आर्यों से प्रार्थना है कि वे अन्धकार भरी निशा से निराश न हों, और जो कुछ हो सके इस दीपक में अपने रक्त का तेल डाल कर ही इसे प्रदीप्त रखें, यह दीपक भूले-भटके यात्रियों को मार्ग, और आशा का सम्बल तो बनेगा ही आर्य समाज का भविष्य भी उज्ज्वल करेगा। अन्धकार की आंधी में आओ! इस दीपक को सम्भाल कर चलें समय आएगा जब आर्यों के बलिदान और कार्य कुशलता को देखकर विरोधी भी पुकारेंगे:—

ये लोग जो आंधी में दिया ले के चले हैं।
तूफानों से वाकिफ हैं, ये आंधी में पले हैं।।

गीता का अमर उपदेश

तीन प्रकार के तप

देव द्विज गुरु प्राज्ञ पूजन शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते।।

ईश्वर, ब्राह्मण, गुरु और विद्वानों के प्रति सम्मान, शरीर की बाहरी और आन्तरिक शुद्धि ब्रह्मचर्य-पालन और किसी भी प्राणी को कष्ट न देना शारीरिक तप है।

अनुद्वेगकरं वाक्यं प्रियं हितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।

दूसरों को दुखाने या चुभने वाली बातें न कहना, सत्य और मीठी वाणी बोलना और अच्छी पुस्तकें पढ़ना और मैं कौन हूं। इस तत्व का चिन्तन करना वाणी का तप है।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भाव संशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।।

मन से सदा प्रसन्न रहना, शान्त एवं सौम्य रहना, मन को वश में रखना, अन्तकरण को शुद्ध और पवित्र विचारों से संयुक्त रखना यह मानस तप है।

स्व० पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का

स्मृति दिवस समारोह

१५ अक्तूबर १९९५ (रविवार) को
मध्यान्ह २ बजे से ५ बजे तक

स्थान—लाल किला मैदान, दिल्ली-६

अध्यक्षता—

पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

मुख्य वक्ता	श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती	
	श्री मदन लाल खुराना	(मुख्यमन्त्री दिल्ली सरकार)
	श्री बच्चनसिंह आर्य	(मन्त्री हरियाणा सरकार)
	श्री जत्थेदार रिछपाल सिंह	
	श्री एच. के. एल भगत	(पूर्व केन्द्रीय मन्त्री भारत)
	श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा	(अध्यक्ष डी. ए. वी कमेटी)
	जैन साध्वी साधना देवी	
	श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्	(प्रधान सार्वदेशिक सभा)
	श्री सोमनाथ मरवाह	(सीनियर एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
	श्री वेदप्रताप वैदिक	(सम्पादक भाषा)
	श्री रमाकान्त गोस्वामी	(हिन्दुस्तान समाचार पत्र)
	श्री वाचस्पति उपाध्याय	(कुलपति लालबहादुर विद्यापीठ)
	श्री प्रेमचन्द्र गुप्त	(सनातन धर्म सभा दिल्ली)

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित है।

निवेदक :

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

क्रोध कैसे दूर करें

लेखक—विवेक भूषण दर्शनाचार्य

क्रोध को छोड़ने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाइए।

१. क्रोध को दूर करने की तीव्र इच्छा करे, कि—"मैं इस क्रोध से बहुत तंग हो गया हू, अब मैं इसे छोड़ना चाहता हू।"

२. क्रोध छोड़ने के लिए दृढ सकल्प करे, कि—"मैं पूरी कोशिश करके क्रोध को छोडकर ही दम लूंगा।"

३. जब तक क्रोध पूरी तरह छूट न जाए, तब तक क्रोध को छोडने की पूरी कोशिश करते रहें। इसमे आलस्य, प्रमाद (लापरवाही) न करें।

४. शात स्वभाव के व्यक्तियो के साथ उठने बैठने आदि की संगत करें। क्रोधी स्वभाव वालो की संगत न करें।

५ "दूसरे लोग मेरे साथ कम से कम ऐसा (अच्छा) व्यवहार तो अवश्य करे", इस प्रकार की इच्छाए घटाते जाइए।

६ प्रतिदिन कुछ समय (२-३ घण्टे) मौन रहिए।

७. जब कभी क्रोध आने लगे, तब अवश्य ही मौन रखें। इसके लिए क्रोध आने पर मुह में थोड़ा पानी भर कर रख सकते है,

८. यदि क्रोध के समय चुप रहना सभव न हो और बोलना जरूरी ही हो, तो बोलने से पूर्व उसी समय दृढ सकल्प करे, कि—"बिना क्रोध किए ही बातचीत करूगा।"

९. यदि किसी समय बहुत अधिक क्रोध आने लगे और आप उसे नियन्त्रित करने मे तो असमर्थ उस समय उस स्थान से दूर चले जाए।

१०. यदि कभी भूल से क्रोध कर ले तो अपनी स्थिति ठीक करने के लिए एक गिलास ठण्डा पानी पीए।

११ यदि क्रोध कर बैठें, तो उसका कुछ प्रायश्चित्त करें, अर्थात उस दिन एक घण्टा विशेष रूप से मौन रहकर ईश्वर का ध्यान, प्रार्थना करें और फिर से सकल्प करे, कि—अब क्रोध नहीं करुगा।"

१२. प्रतिदिन (प्रात और साय) ईश्वर का ध्यान करे और उनसे प्रार्थना करे, कि—"हे प्रभो! मुझसे यह क्रोध दूर कर दीजिए और मेरी बुद्धि को अच्छे मार्ग पर चलाइए।"

१३. निम्नलिखित दोनो सूचियो को प्रतिदिन कम से कम तीन बार अवश्य पढें।

सूची—१—क्रोध करने से हानि

क्रोध करने से सिर मे दर्द होता है।
क्रोध से रक्तचाप ब्लड प्रेशर बढ़ता है।
गुस्सा करने से अम्लता होती है।
गुस्से से शरीर मे कम्पन।
क्रोध से शरीर में निर्बलता।
गुस्से से व्यक्ति पागल हो सकता है।
क्रोध के कारण सब घृणा करते है, कोई पास बैठता।
गुस्से से प्रतिष्ठा घटती है, निन्दा भी होती है।
क्रोध से बुद्धि का ह्रास निर्णय लेने की क्षमता मे कमी।

गुस्से से मन, वाणी और शरीर पर नियन्त्रण नही रहता, फलत व्यक्ति गलत बोलता है या गलत काम करता है।

क्रोध के बाद जब व्यक्ति होश मे आता है, तब सोचता है, कि—"मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

सूची—२—प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से लाभ

शिष्ट व्यवहार से शरीर स्वस्थ रहता है।
शिष्ट व्यवहार से शरीर बढ़ता है।
अच्छे व्यवहार से मन प्रसन्न रहता है।
शोभनीय व्यवहार से बुद्धि का विकास।
अच्छे व्यवहार से निर्णय लेने की क्षमता बढती है।
शिष्ट प्रेमपूर्वक व्यवहार से समाज मे प्रतिष्ठा है
शोभनीय व्यवहार से परस्पर का सुख।
अच्छे व्यवहार से सभी लोगो का प्रेम और स्नेह सम्बन्ध।

शिष्ट व्यवहार से मन, वाणी और शरीर पर नियन्त्रण, फलत अच्छे काम और मीठी वाणी।

दीर्घ काल तक क्रोध पर नियन्त्रण करें शिष्ट व्यवहार करे आपका जीवन बदल जाएगा।

—दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड, पत्रा-सागपुर, जि०-साबरकाठा, गुजरात-३८३३०७

जिस दिन भगवान दूध पीने लगेंगे

—आचार्य सत्यवीर शर्मा वाचस्पति

ऋषियो-महर्षियो की सन्तान जिसको अध्यात्म क्षेत्र मे आज भी विश्व अपना गुरु मानता है, जिस हिन्दू समाज को अध्यात्म जगत में प्रबुद्ध समझा जाता है उसी प्रबुद्ध समाज को बुद्धू बनाया जा रहा है। हिन्दू समाज का ही एक प्रबुद्ध वर्ग आर्य समाज रूढिवाद व मूर्ति पूजा पर विश्वास नहीं करता। केवल यही कि हम ईश्वर के स्वरूप को नही समझते। भगवान के बारे मे किसी भी बात पर सन्देह करेंगे तो भगवान नाराज हो जाएगे, पाप लगेगा। हमारा हिन्दू समाज पाप से इतना डरता है कि पाप के डर से ईश्वर के वास्तविक मार्ग से भटक जाता है, ठगा जाता है लेकिन यह नही समझता कि ठगना पाप है और ठगा जाना भी पाप है।

मेरी प्रबुद्ध हिन्दू समाज से अपील है कि जागने का समय है यह दूध पिलाने की घटना मूर्ति मे ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नही करती अपितु हमारे भगवान का भूखा होना सिद्ध करती है जो कि भगवान के नाम पर बहुत बड़ा मजाक है। हम ईश्वर के स्वरूप को समझने का प्रयास करे। जो खाता है वह ईश्वर नहीं हो सकता। ईश्वर वह है जो खाता नही खिलाता है जो चलता नही है। चू कि उसके चलने को कोई स्थान ही नहीं। चल वही सकता है जो यहा है वहा नही वह यहा से वहा तक चल सकता है किन्तु जो सब जगह है वह कहा चलेगा। खाने वाले का कभी पेट नहीं भरता। न आज तक भरा है न भरेगा वह दूसरे को तब देगा जब उसका भर जाय हमारी भावना है।

साई इतना दीजिए जा मे कुटुम्ब समाई।
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाई॥

भावना तो है किन्तु अभी तो मेरा ही नही भरा साधु को कहा से दू। सज्जनो, खाने वाले का कभी न भरता है जिस दिन प्रभु खाना शुरू कर देंगे। उस दिन कुछ नहीं बचेगा फिर प्रभु हमें से कहा से देगा, जिस दिन भगवान दूध पीने लगेंगे उस दिन न दूध बचेगा न भगवान हो भगवान रहेगा। हमारे समक्ष हमारे बुजुर्गों के दिए कुछ ऐसे सूत्र है जो सचाई का बोध कराते हैं। एक सूत्र है "नेकी नौ कोस, बद्दी सौ कौस" जितने समय मे अच्छाई नौ कोस जाती है बुराई इतने समय में सौ कोस जाती है। अच्छाई और सच्चाई इतनी जल्दी नही फैलती इतनी जल्दी पाखण्ड ही फैल सकता है। इसके साथ एक और भी सूत्र है कि 'सहज पके सो मीठा होवे' जो धीरे-धीरे फैलता फूलता और पकता है, उसका फल मीठा होता है जो जल्दी फैले पके वह मीठा नही होता जल्दी फैलने व पकने वाला पाप होता है जिसका फल मीठा नहीं हो सकता और अच्छाई, धर्म धीरे-धीरा फैलता हैं जो स्थायी होता है, सुखद भी होता है। ये 'भगवान दूध पीते हैं' की घटना आधी रात मे ही देश-देशान्तर मे फैल गई। इसीलिए इसमे न सच्चाई हो सकती न ही मिठास हो सकता अर्थात न भगवान दूध पीते है और नहीं भगवान का दूध पीना हमारे हित मे है। ओम् शम्!

आर्य समाज करौल बाग, नई दिल्ली-५



उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के श्री कृष्ण जन्मदिवस समारोह में श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् प्रवचन देते हुए। साथ मे हैं श्री ओम सपरा, महाशय रामविलास खुराना, प्रिंसिपल सुशीला सेठी

योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लें आर्य विद्वानों का उद्बोधन : गुजरावालां में

दिल्ली। उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल एव आर्यसमाज गुजरावाला टाउन-२ के तत्वावधान मे योगीराज श्री कृष्ण के जीवन-दर्शन पर डा० प्रेमचन्द श्रीधर ने तीन दिन तक प्रवचन प्रस्तुत किए। श्री नरेन्द्र आर्य ने भजन प्रस्तुत किए। डा० सरोज दीक्ष., सोनीपत के ब्र० रामचन्द्र आर्य ने भी श्री कृष्ण के जीवन दर्शन पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

समापन समारोह मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने आर्यसमाज अशोक विहार के ९२ वर्षीय श्री चमनलाल और आदर्शनगर के श्री महावीर बत्रा को प्रतिष्ठित आर्य सभासद के सम्मान, प्रमाणपत्र और चादी के पदक और वैदिक साहित्य से अलकृत किया। इस अवसर समाजसेवी बी०बी० तायल, बिड़ला कन्या विद्यालय के प्रबन्धक श्री रामप्रकाश आहलूवालिया, युवा समाजसेवी अशोक खुराना, विनोद खुराना, हिन्दी-कवि श्री बालकृष्ण चौधरी को भी वैदिक साहित्य भेंट किया गया। सार्वदेशिक सभा के कार्यवाह अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, श्री वन्देमातरम् जी, डा. सच्चिदानन्द शास्त्री ने श्री कृष्ण के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश सपरा ने आर्यजनता से अनुरोध किया कि सभी सम्बद्ध विवाद वापस लेकर उन्हें पारस्परिक चर्चा व आर्य सन्यासियो व समक्ष सुलझा लें।

श्रीमती गोमती देवी नहीं रही

आर्यसमाज तिमारपुर की भू०पू० वरिष्ठ उपप्रधाना थी

श्रीमती गोमती देवी, पूर्व वरिष्ठ उपप्रधान, आर्य समाज तिमारपुर का २४ सितम्बर को अकस्मात निधन हो गया। वह ७२ वर्ष की थी और अपने पीछे ५ पुत्र, २ पुत्रिया व भरा पूरा परिवार छोड गई।



उल्लेखनीय है कि श्रीमती गोमती देवी, आर्य समाज तिमारपुर के पूर्व प्रधान स्वर्गीय लाला रामेश्वर दास की धर्मपत्नी थी और आर्यसमाज के सभी कार्यक्रमो मे सक्रिय भाग लेती थी।

श्रीमती गोमती देवी का अन्तिम संस्कार २४ सितम्बर को ही निगम बोधघाट पर हुआ शान्तियज्ञ व रस्म पगडी २७ सितम्बर को डा० सत्यकाम वेदालकार द्वारा सम्पन्न कराई गई। आर्य समाज व अनेक सामाजिक व शैक्षिक सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने उन्हें श्रद्धांजलि दी एवं शोक संदेश भेजे।

आर्यसमाज अशोक विहार-२ का १६वां वार्षिकोत्सव

शुक्रवार ६ अक्तूबर से रविवार ८ अक्तूबर तक आर्य समाज अशोक विहार-२ दिल्ली-५२ का १६वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अर्जुनदेव जी थे। उन्होने ही रात्रि को प्रवचन किए। रविवार ८ अक्तूबर को प्रात. यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। उस अवसर पर सर्वश्री चमनलाल जी, यशपाल जी और आचार्य अर्जुनदेव जी के प्रवचन हुए। श्री रामशरणदास सलूजा के सौजन्य से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई।

कन्या गुरुकुल की चार गौओं का अपहरण

आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर में पानी की किल्लत और अन्य समस्याएं

आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली-६० की आचार्या शान्ति देवी जी सूचित करती हैं —

२२ अगस्त १९७६ को श्रीमजय और उपराज्यपाल श्री बहादुरलाल टमटा ने गुरुकुल के भवन की रक्षा की थी और गुरुकुल के साथ सलग्न भूमि छात्राओं के लिए क्रीडास्थल से रूप मे दी थी, परन्तु अब वहा डी०डी०ए० के चौकीदार तथा कुत्त बैठा दिए गए है, जो किसी को निकलने नही देने, छतो के पतनाले तोड़ दिए गए है, खिड़की-दरवाजे बन्द कर दिए गए हैं, चार गौओं का अपहरण कर लिया गया है।

डी०डी०ए० से बीस वर्षों से पत्र व्यवहार चल रहा है, छतो के पतनालों से गुरुकुल का आगन घुटनो नक पानी से भर जाता है। गुरुकुल मे पानी के दो कनेक्शन है, दो मशीनें भी लगी हैं, फिर भी कन्याओं और गौओ के लिए पर्याप्त पानी नही मिलता।

क्या डी०डी०ए० और दिल्ली प्रशासन कन्या गुरुकुल की छात्राओ की समस्याओ पर ध्यान देकर उनका निराकरण करेंगे।

पंजाबी बाग में वेदप्रचार दिवस

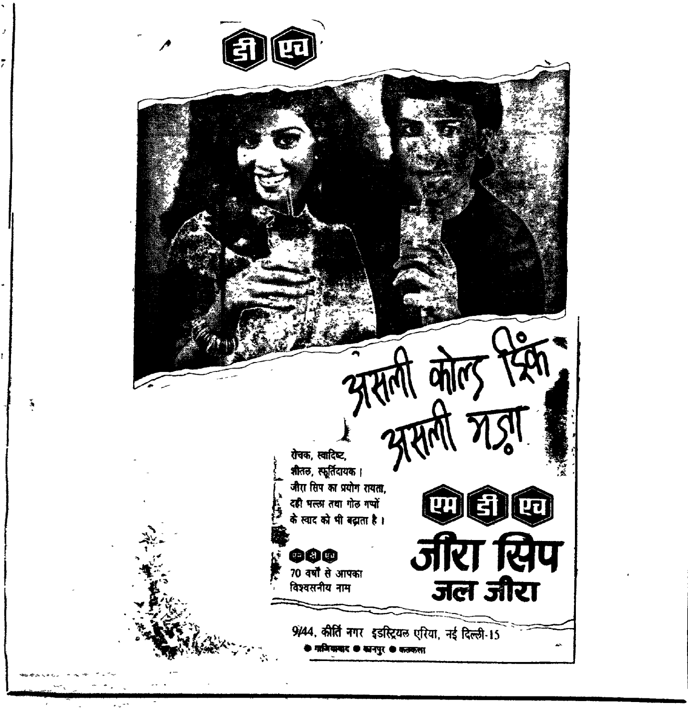
आर्य स्त्री समाज का सफल आयोजन

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आयोजित 'वेद प्रचार दिवस' आर्य स्त्री समाज पंजाबी बाग (पश्चिमी) में श्रीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता में सोत्साह मनाया गया। जिसमें सामवेद के मन्त्रों की अर्थ सहित प्रतियोगिता हुई। इसमें बहनों ने वृहद संख्या में भाग लेकर वेद के प्रति अपनी श्रद्धा और निष्ठा का परिचय दिया। निर्णायक थीं श्रीमती शकुन्तला जी आर्य एव प्रेमशील जी महिन्द्र। २ से ५ तक वेद सम्मेलन शकुन्तला दीक्षित के संयोजन में सम्पन्न हुआ जिसमें विदुषी डा० शशि प्रभा, डा० उषा शास्त्री सुनीति जी शर्मा ने वैदिक वांग्मय के विषय में अपने विद्वत्ता पूर्ण विचार प्रस्तुत किए। सर्व श्रीमती प्रकाश आर्या, शान्ति जी मलिक सरला जी मेहता आदि ने अपनी शुभ कामनाए दीं।

मौत के सौदागर

क्या एक प्रतिशत और चार प्रतिशत अंको से दाखिला पाने वाले समाज मे सम्मान पा सकेंगे? क्या उनके इलाज से मरीज जिन्दा घर आ सकेंगे? क्या मकान और पुल बनने के साथ ही गिर नहीं जाएंगे? क्या लखपति और राजनेता उनसे अपना इलाज कराएंगे? . मकान या पुल बनाने के साथ ही टूटता जाएगा ताकि मजदूर उसके नीचे दबकर मर जाए- यात्री जहाजो और गाड़िया के टकराने से मरेंगे। सरकार को चाहिए स्कूलो और कालेजो में प्रिंसिपलो, लेक्चरारो, प्रोफेसरो तथा उनके रख-रखाव का खर्चा न करना पडे, उन्हे ही वजीफे देकर विदेशो मे उच्च शिक्षा के लिए भेज देना चाहिए, और विदेशो से लौटते ही देश की बागडोर उन्हें सौंप देनी चाहिए।

—कृष्ण चावला, दिल्ली



आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 12-13-10-1995 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C 139/9
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एस-११०२४/९५ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९५
१५ अक्तूबर १९९५ साप्ताहिक "आर्य सन्देश" ८

वैदिक विद्वान चन्द्रपाल शास्त्री का निधन

वह वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे—आर्यसमाज की श्रद्धांजलि

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी मे श्री राम लखन आर्य की अध्यक्षता मे स्व० प० चन्द्रपाल शास्त्री के निधन पर शोक सभा हुई। संस्कृत व्याकरण और वेदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री शास्त्री जी के निधन से आर्य जगत को अपूरणनीय क्षति हुई है। शास्त्री जी को वैदिक सोलहो सस्कार तथा यजुर्वेद कण्ठस्थ (याद) था।

शास्त्री जी ९० वर्ष के थे। शोक सभा मे अनेक आर्यो ने शास्त्री जी के जीवन पर प्रकाश डाला। सभी ने मौन रह कर दो मिनट तक स्व० शास्त्री जी के आत्मा की शांति के लिए एव शोक सन्तप्त परिवार के धैर्य धारण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

डा० सत्यव्रत राजेश के वैदिक प्रवचन

वेद प्रचार मण्डल मुरादाबाद द्वारा १६ से १९ सितम्बर तक डा० सत्यव्रत राजेश ने अपने प्रवचनो मे ईश्वर के स्वरूप व उपासना, कुरीति-निवारण, श्राद्ध-पितृ तर्पण के वैदिक स्वरूप, भक्ष्य-अभक्ष्य, देवपूजा आदि विषयो की व्याख्या की गई। सर्वश्री मामचन्द पथिक व दीपचन्द जी ने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

पाठकों व ग्राहकों को सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वर्गीय स्वामी आनन्दबोध की स्मृति में साप्ताहिक आर्य सन्देश का एक आनन्दबोध स्मृति विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। फलतः २२ अक्तूबर का साप्ताहिक आर्य सन्देश का सामान्य अंक पृथक् नहीं निकलेगा। सूचनार्थ निवेदन है।

—व्यवस्थापक

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का वार्षिकोत्सव

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ (रोहतक) हरियाणा का २९वा वार्षिकोत्सव २६ सितम्बर से २ अक्तूबर तक हुआ। उसमे ऋग्वेद के चुने हुए मन्त्रो, गायत्री अनुष्ठान की व्यवस्था की गई। ध्यान, प्राणायाम और आसनो का प्रशिक्षण दिया गया।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल ११०२४/९-९

ओ३म

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

वर्ष १९, अंक ८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ | विक्रमी सम्वत् २०५२ | दयानन्दाब्द : १७१ | रविवार, १७ दिसम्बर, १९९५

मूल्य एक प्रति ७५ पैसे वार्षिक ३५ रुपये | आजीवन ३५० रुपये | विदेशों में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१० १५०

श्री सूर्यदेव जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के प्रस्ताव का प्रतिनिधियों द्वारा करतल ध्वनि से समर्थन

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन रविवार दिनाक १० दिसम्बर को प्रात १०-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर, दीवानहाल दिल्ली मे सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। सभा के महामन्त्री डॉ० धर्मपाल जी ने विगत् तीन वर्षो मे सभा के आय-व्यय का विस्तृत विवरण, सभा के आगामी वर्ष के अनुमानित आय-व्यय का बजट और विभिन्न क्षेत्रो, संस्थाओ और योजनाओ के अन्तर्गत की गई उपलब्धियो एव प्रगति का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। उपस्थित सदस्यो ने करतल ध्वनि से उन्हे स्वीकार किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी के समाकक्ष मे पधारने पर श्री वन्देमातरम जी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन के लिए निर्वाचन अधिकारी के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् जी ने घोषणा की कि पिछले तीन वर्षो के कार्यों और उपलब्धियो के कारण मैं **श्री सूर्यदेव जी** का नाम सभा के **प्रधान** पद के लिए प्रस्तावित करता हू। मेरा यह प्रस्ताव भी है कि **प० शिवकुमार जी शास्त्री** का सभा के **उपप्रधान** पद पर चयन किया जाए। यदि प्रतिनिधि इन प्रस्तावो से सहमत हो तो वे करतल ध्वनि से इन दानो प्रस्तावो का समर्थन करे। प्रतिनिधियो ने करतल ध्वनि से एव हाथ उठाकर इन दोनो प्रस्तावो का समर्थन किया।

सभा के अन्य पदाधिकारियो, अन्तरग सदस्यो, सभा की विभिन्न समितियो और विभागो के अधिकारियो/सदस्यो तथा विभिन्न सस्थाओ तथा सभाओ के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियो के मनोनयन का अधिकार भी प्रधान जी को सौंपा गया जिसका प्रतिनिधियो ने हाथ उठाकर समर्थन किया।

आगामी तीन वर्षों के लिए सभा अधिकारियो व अन्तरग सदस्यो की विस्तृत सूची निम्न प्रकार है –

प्रधान	**श्री सूर्यदेव**
उप-प्रधान	डॉ० शिवकुमार शास्त्री
	डॉ० धर्मपाल
	श्रीमती ईश्वर देवी धवन
	श्री लखीराम कटारिया
महामन्त्री	**श्री वेदव्रत शर्मा**
मन्त्री	श्री तेजपाल सिह मलिक
	श्री रोशनलाल गुप्त
	श्री पतराम त्यागी
	श्रीमती शशि प्रभा आर्या
	श्री प्रतापसिह गुप्त
	श्री वैद्य कर्मवीर
कोषाध्यक्ष	**श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्त**
प्रतिष्ठित	श्री राममूर्ति कैला
	श्री मूलचन्द गुप्त
	श्री ओमप्रकाश आर्य
	प्रा० महेश विद्यालकार
	श्री खुशीराम सहगल
	श्री वैद्य इन्द्रदेव
	श्री हरबस सिह खेर
	श्री जगदीश आर्य
	श्री वीरन्द्र खट्टर
	श्री चौ० लायकराम
प्रधानजी द्वारा मनोनीत	श्री ओमप्रकाश आहूजा
	श्री हसराज चोपडा
	श्री महाशय रामविलास खुराना
	श्री श्रीनिवास गुप्त
	श्री शिवशकर गुप्त
वर्ग प्रतिनिधि	श्री राजसिह भल्ला
	श्री चेतन स्वरूप कपूर
	श्री ओमप्रकाश गुप्त
	श्री रवि बहल
	श्री मनवीर सिह राणा
	श्री चौ० जलसिह
	श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा
	श्री रामचन्द्र आर्य
	कर्नल डी० आई० एस० साहनी
	श्री तिलकराज चोपडा
	श्री जगदीश वर्मा
	श्री रामदुलारे मिश्र
	श्री मास्टर पूर्णसिह

महर्षि दयानन्द क्या थे ?

इस सन्यासी के हृदय मे प्रबल इच्छा और उत्साह था कि सारे भारतवर्ष मे एकता प्रतिष्ठित हो, एक देवता पूजित हो एक जाति सगठित हो और एक भाषा प्रचलित हो। यही नही कि उनमे केवल ऐसी सदिच्छा और उत्साह ही था, वरन् इस इच्छा और उत्साह को किसी अश तक कार्य मे परिणत करने मे कृतकार्य भी हुए थे अतएव स्वामी दयानन्द केवल सन्यासी ही नहीं थे केवल वेद-व्याख्याता ही नहीं थे केवल शास्त्रो के मर्मोद्घाटक ही नही थे, केवल तार्किक ही नही थे, केवल दिग्विजयी पण्डित ही नहीं थे, वह भारतीय एकता (राष्ट्रीयता व स्वराज्य भावना) के संस्थापनाकर्त्ता भी थे भारत की जातीयता के प्रतिष्ठाता भी थे। इसलिए भारत की आचार्य मण्डली मे दयानन्द का स्थान विशिष्ट और अद्वितीय है।

– **देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय**

प्रधान सम्पादक - सूर्यदेव

सम्पादक - नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वैदिक वाड्मय से

सदा स्मरणीय सात तथ्य

अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पूर्ण प्रयत्न करो तभी आपकी प्रार्थना स्वीकृत हो सकेगी

मनोहर विद्यालंकार

१ **न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा.।**

ऋक् ४-३३-११

ऋषि – वामदेवो गौतम। देवता–ऋभव। छन्द त्रिष्टुप्।

अपने क्षेत्र मे प्रदीप्त विद्वान् कर्म करने के कारण न थक जाने वाले मनुष्य के मित्र बनकर, उसकी सहायता नही करते। इस तथ्य को ब्राह्मण दूसरे शब्दो म निम्न प्रकार से कहता है – **'नाना श्रान्ताय श्रीररित'** ऐ०ब्रा० ४-१७ अपने कर्त्तव्य-कर्मो को लगन से करने क कारण थके हुए व्यक्ति को नाना प्रकार की समृद्धि यश धन पदरूप मे प्राप्त होती है।

स्वामी दयानन्द ने इस तथ्य को निम्न रूप मे प्रकट किया है – अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूर्ण प्रयत्न करने के बाद की जाने वाली प्रार्थना ही स्वीकृत होती है अथवा सफल होती है।

२ **सत्यस्य नाव सुकृतमपीपरन्।**

ऋक् ६-७३-१

ऋषि – पवित्र आगिरस। देवता-पवमान सोम। छन्द जगती।

सत्य की नौका, सदाचारी तथा सत्कर्मी को कर्म रूपी नदी के पार पहुचा कर अपने लक्ष्य तक पहुचा देती है। किन्तु

ऋतस्य पन्था तरन्ति दुष्कृत । ऋक् ६-७३-६

दुष्कर्मी और दुराचारी सत्य के मार्ग को पार नही कर पाते है।

३ **हिरण्यदा अमृतत्व भजन्ते।** ऋक् १०-१०७-२

हितकर तथा रमणीय पदार्थ, उपदेश या सलाह तथा निष्काम सहयोग देने वाले दीर्घ कालव्यापी यश को भोगते है। अत एव

दक्षिणा वर्म कृणुते विज्ञानन्। ऋक् १०-१०७-७

समझदार व्यवहार कुशल जन, दान-दक्षिणा को अपना कवच बनाते है।

४ **केवलाघो भवति केवलादी।** ऋक १०-११७-७

अपने सगी साथियो, आश्रितो तथा मित्रो को बिना खिलाए, अकेले भोग करने वाला सदा सुखी नहीं रहता सब को खिला खाने वाला 'अर्ध्य' = पुण्य लाभ करता है।। वह तो अद्य पाप (दुख, शोक, रोग) ही भोगता है। अत एव वेद कहता है

न स सखा यो न ददाति सख्ये सचा भुवे सचमानाय पित्व । अस्मात्प्रेयाभतदोको अस्ति। ऋक् १०-११७-४ ऋ० भिक्षु। दे० धनान्नदानम्। त्रिष्टुप।

जो व्यक्ति सदा साथ रहने वाले सगी-साथी या आश्रित का पेट तक नही भर सकता उसे छोड देना बेहतर है। वह शरण लेने योग्य आश्रय नही है। पित्व– अन्नम (पितु) नि० २-७ ओक गृहम। निरु ८-२६

५ **हिरण्मयेण पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम्।**

यजु ४०-१७

स्वर्ण के समान आकर्षक पात्र अर्थात बाह्य आवरण (पैकिग) देह या डिब्बे से आन्तर पदार्थ की वास्तविकता छिपी रहती है। बाह्य रूप आन्तरिक सत्य तक पहुचने मे प्राय बाधक होता है। इसी बात की पुष्टि करता है। अथर्व वेद मन्त्र

पश्यन्ति सर्वे चक्षुषा न सर्वे मनसा विदु.।

१०-८-१४

आख से बाह्य आवरण को सब देखते है, किन्तु मन से वास्तविकता को नहीं जान पाते हैं। अत बाह्य आकृति मे नही उलझना चाहिए।

६. **व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।**

यजु १९-३०

ऋषि-हैमवर्चि। देवता-यज्ञ। छन्द-अनुष्टुप्।

व्रत – नियमित नित्य कर्म से दीक्षा–निष्ठा या आत्मनिग्रह प्राप्त होता है। दीक्षा से दक्षिणा रूप फल अथ दक्षता प्राप्त होती है। दक्षता प्राप्ति के बाद कर्म या मान्यता मे श्रद्धा उपजती है अथवा वास्तविक स्थिति ज्ञात होती है और वास्तविक स्थिति के ज्ञान से पदार्थ का अन्तिम या असल सत्य जाना जाता है। स्वामी दयानन्द ने सत्य का अर्थ परमेश्वर किया है।, क्योकि इस जगती का असल सत्य परमेश्वर है।

७ **अनागोहत्या वै भीमा।** अथर्व १०-१-२६

ऋषि–प्रत्यङ्गिरस। देवता-कृत्यादूषणम्। छन्द-मध्ये ज्योतिष्मती जगती

निरापराध व्यक्ति की हिसा अर्थात उसे दण्ड या पीडा देना बहुत भयकर प्रतिफल उत्पन्न करता है। इस दृष्टि से यह मन्त्र इगलिश कानून को पुष्ट करता है कि चाहे जितन अपराधी छूट जाए, किन्तु प्रयत्न यह होना चाहिए की किसी निरपराध को दण्ड न मिले। किन्तु वर्तमान काल मे हमारे देश मे इस मनोवृति के कारण अपराधो की सख्या बहुत बढी है इसी प्रवृति ने आतकवाद को जन्म दिया है। अत विचारणीय है। अब इस मन्त्र की पुष्टि और प्रतिफल के विस्तार का वर्णन देखिए।

अधा स वीरैर्दशभिर्वियूया यो मा मोघ यातुधानेत्याह।।

ऋक् ७-१०५-१५

जो मुझ झूठ-मूठ यातुधान कहकर पीडित करता है, वह अपने दसो पुत्रो से वियुक्त हो जाए। अर्थात् समूल वश विनाश तक सभव है।

श्यामसुन्दर राधेश्याम,
५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावडी दिल्ली-६

बोध-कथा

अहंकार जीतना शेष है

सवत १९२३ विक्रमी मे स्वामी दयानन्द जी सरस्वती अजमेर पधारे। इस प्रवास के दौरान एक दिन सावल रग के दो तपस्वी युवक नाग पर्वत के जगल म स्वामी जी के दर्शन के लिए आए। स्वामी जी न उन्हे बड आदर-सत्कार स बिठलाया। दोनो तपस्वी सस्कृत को छोडकर दूसरी किसी भाषा म बातचीत नही करते थे। कुछ समय योग सम्बन्धी चर्चा होती रही। चलते समय वे दोनो स्वामी जी से कहने लगे – स्वामी जी, हम तो अब तृप्त ह पूण शान्त है।" स्वामी जी ने कुछ हस कर कहा – "नही महात्मा जी अभी अहकार जीतना शेष है।" दोनो ने कहा – "हम ने अहकार सर्वथा जीत लिया है।"

अभी भीतर से निकल कर तपस्वी बाहर गए ही थे कि स्वामी जी के सकेत से एक ब्रह्मचारी ने उनसे कलह करना प्रारम्भ कर दिया। वह झगडा इतना बढा कि दोनो तपस्वी और ब्रह्मचारी आपस मे गुत्थमगुत्था हो गए और एक दूसरे को पटकते हुए ऊपर-नीचे होने लगे। कलह की आवाज सुन कर भीतर बैठे हुए सब मनुष्य स्वामी जी सहित बाहर आ गए और उन्हे पृथक-पृथक् कर दिया।

उन तपस्वियो को भीतर ले जाकर स्वामी जी महाराज ने समझाया कि आप हमारा कहना नही मानते परन्तु अब परीक्षा से सिद्ध हो गया कि आप मे अहकार की कला अभी मन्द नही हुई। मुनियो को और विशेषत अभ्यासियो को अभिमान कदापि नही करना चाहिए क्योकि

कलश पूर्ण छलके नहीं घोषण ऊना करे,
गर्व करे न ज्ञानी जन अज्ञानी दम्भ करे
गरजे बहुत बरसे नहीं ओछे मे अहकार,
बजे घमा थोथा चना कह गए ज्ञानी सार।।

महाराज से क्षमा–याचना कर दोनो तपस्वी 'नमो नारायण' कहकर चले गए। इसके बाद दोनो तपस्वी दो बार स्वामी जी के दर्शनो के लिए गए।

– नरेन्द्र

गृहस्थ आश्रम : एक ज्येष्ठाश्रम

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

यथा नदी नदा सर्वे सागरे यान्ति सस्थितिम्।
तथैवाश्रमिण सर्वे गृहस्थे यान्ति सस्थितिम्।।१।।
मनु० ६/९०
यथा वायु समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व जन्तवः।
तथा गृहस्थाश्रमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमा।।२।।
यस्मात्त्रयो ऽप्याश्रमिणो दानेनाऽन्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनेव धार्यन्ते तस्माज्येठाश्रमो गृही।।३।।
स सन्धार्य प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुख चेहेच्छता नित्य योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियै।।४।।

जैसे नदी और बडे-बडे नद तब तक घूमते ही रहते है जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते वैसे गृहस्थ ही के आश्रय से सब आश्रम स्थिर रहते है। बिना इस आश्रय के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता।।१।। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यास तीन आश्रमो को दान और अन्नादि देके प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है। इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है अर्थात् सब व्यवहारो मे धुरन्धर कहाता है।।२।। इसलिए जो मोक्ष और ससार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गृहाश्रम का धारण करे।।३।। जो गृहाश्रम दुर्बलेन्द्रिय अर्थात् भीरु और निर्बल पुरुषो से धारण करने के अयोग्य है, उसको अच्छे प्रकार धारण करे।।४।।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वृष्णि कुल का आचार–व्यवहार

न ज्ञातिमवन्यन्ते वृद्धानां शासन रताः, ब्रह्मद्रव्ये गुरुद्रव्ये ज्ञातिद्रव्येऽप्यहिंसका । अर्थवन्तो न चोत्सिक्ताः ब्रह्मण्या. सत्यवादिनः। समर्थानपि मन्यन्ते दीनानभ्युद्धरन्ति च। नित्यं देवपरा दान्ताः दातारश्च विकत्थनाः। तेन वृष्णि प्रवीराणां चक्रं न प्रतिहन्यते।। द्रोण १-१४४/२४-२५

वृष्णिवीरो का राज्य इसलिए नश्ट नहीं होता क्योंकि वे वृद्धो की आज्ञा मे चलते हैं, अपने सजातीयो का अपमान नहीं करते । ब्राह्मण, गुरु और सहजातीयों के धन के प्रति अहिसा–वृत्ति रखते हैं। धनवान होकर भी अभिमान रहित हैं। ब्रह्म के उपासक सत्यवादी समर्थो का मान करते हैं। दीनो की सहायता देते हैं। सदा देवोपासना मे सलग्न, सयमी और दानशील हैं, डींगे नहीं मारते।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

भारत विरोधी षड़यन्त्र और राष्ट्रीय दायित्व

४ दिसम्बर के दिन भारतीय लोकसभा मे गृह-मन्त्री श्री चव्हाण ने पूरी जिम्मेदारी के साथ आरोप लगाया है कि कश्मीर की बिगडती कानून व्यवस्था के लिए पाकिस्तान के अतिरिक्त अमेरिका जिम्मेदार है। अमेरिकी शासन को न तो भारत से मतलब है, न पाकिस्तान से, वह तो कश्मीर मे अपने [illegible] जमाने की कोशिश कर रहा है। प्रश्न हो सकता है कि अमेरिका को अपनी सीमा से हजारो मील दूर कश्मीर मे रुचि क्यो है ? सोवियत सघ के विघटन के बाद अमेरिका विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र रह गया है। भौगोलिक दृष्टि से कश्मीर की स्थिति महत्त्वपूर्ण है, चीन, भारत, अफगानिस्तान आदि क्षेत्रो पर नजर रखने के लिए कश्मीर उपयुक्त सैनिक चौको का काम कर सकता है। भारत के विरुद्ध पाकिस्तान को मजबूत करने मे अमेरिका का यही निहित स्वार्थ है। गृहमन्त्री ने घोषित किया है कि जब-जब कश्मीर मे राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने का प्रयत्न किया जाता है, तब-तब अमेरिका की ओर से कश्मीर को विवादित क्षेत्र घोषित किया जाता है। कश्मीर के मुद्दे पर अमेरिका की नीयत साफ नहीं है। आज से नहीं, वर्षों से अमेरिका कश्मीर के पत्ते का प्रयोग भारत के विरुद्ध करता है।, यही कारण है कि कश्मीर के आतकवाद के पीछे अमेरिका का अदृश्य हाथ निरन्तर कार्य कर रहा है। महाशक्ति के रूप मे अमेरिका किसी भी देश को आगे बढते नहीं देख सकता। १९७१ के बागलादेश के युद्ध के समय पूर्वी मोर्चे पर भारत की निर्णायक विजय के समय अमेरिका ने रूस के माध्यम से भारत पर दबाव डाला था कि वह तुरन्त युद्धविराम कर ले अन्यथा आशका थी कि पश्चिमी मोर्चे पर भी भारत को निर्णायक विजय मिल जाएगी और उसे एक उदीयमान विश्वशक्ति के रूप मे आगे बढने से कोई नहीं रोक सकेगा।

भारत के विरुद्ध स्पष्टतया एक विदेशी षडयन्त्र चल रहा है। अमेरिका नहीं चाहता, आर्थिक, राजनीतिक एवं सैनिक दृष्टि से भारत एक महाशक्ति के रूप मे उभरे और वह एशिया और सम्पूर्ण विश्व मे छा जाए, वह अपनी स्थिति का लाभ उठा कर पूरी दुनिया को धमकाना उसका रोज का नियम बन गया है। कश्मीर के सम्बन्ध मे उसकी दिलचस्पी लेना और उसे विवादित क्षेत्र घोषित कर, स्वत मध्यस्थ बन कर विवाद को सुलझाने का सुझाव भी उसके स्वार्थ से परिपूर्ण है। स्पष्ट है कि अमेरिका कश्मीर मे पाकिस्तान के समर्थन या भारत विरोध मे नहीं, प्रत्युत अपने नवीन विश्वव्यापी स्वार्थो के सरक्षण के लिए प्रयत्नशील है। वह कश्मीर मे किसी भी शान्तिपूर्ण समझौते मे बाधा डालने मे सम्भवत हस्तक्षेप करेगा। आज की जरूरत है कि सभी राजीतिक दल और सम्पूर्ण जनता इस प्रश्न पर एक सयुक्त राष्ट्रीय मोर्चा बनाने और कश्मीर के प्रश्न पर कोई ठोस नीति बना कर उसके कार्यान्वयन मे अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करे। कश्मीर के प्रश्न पर भारत के विरुद्ध विदेशी षडयन्त्र को समझ कर उसे समूलत नष्ट करने के लिए आज प्रत्येक राष्ट्र जन का राष्ट्रीय दायित्व है। ऐसे समय यदि जनता और चिन्तक भारत के इतिहास से सीख ले और देखे कि हमारे मतभेद और आपसी फूट ने ही हमेशा विदेशी आक्रमणकारियो को भारत मे पैर जमाने का अवसर दिया है। पृथ्वीराज-जयचन्द्र के आपसी मतभेदो मे शाहवुद्दीन गौरी को, मीरजाफर की गद्दारी ने प्लासी की लडाई मे क्लाईव को विजय का मौका दिया, आज भी सकट की घडी मे अपने इतिहास के कटु सत्य को हृदयगम करना होगा कि एकता से ही भारत बढेगा।

ऐसे समय इतिहास के दो प्रसग उल्लेखनीय हैं। महाभारत मे द्वारिका मे बसे यादववशी वृष्णि वीरो के राज्य के बारे मे महाभारतकार कहते है ' "वृष्णि वीरो का राज इसलिए नष्ट नहीं होता, क्योकि वे बडो का अनुशासन मानते हैं, साथियो का अपमान नहीं करते, विद्वानो, गुरुओ, नागरिको के धन के प्रति सहिष्णु हैं, धनी होकर भी अभिमानरहित है, परमात्मा की उपासना करते हैं, सत्यवादी हैं, दीनो की मदद करते हैं, सयमी और दानशील हैं।" महाभारत मे ही उल्लेख है देश मे केन्द्रीय शासन सुदृढ होने पर २५ साल बीतने पर यादव उच्छृखल हो गए, कोई पाप करने मे उन्हे लज्जा नहीं रही, बुजुर्गों, विद्वानो, गुरुओ का अपमान करने लगे, भोग-विलास मे पड गए, सब व्यसनो मे भोग मे लिप्त होने पर एक छोटी-सी घटना मे सारा यादव वश नष्ट हो गया। भारतीय इतिहास का एक दूसरा उदाहरण भी स्मरणीय है। लिच्छवियो का छोटा-सा गंणराज्य था, वह बहुत ही समृद्ध और सशक्त था, उस पर पडोसी निरकुश बडे शासक ने कई हमले किए, परन्तु कभी सफलता नहीं मिली। उस सम्राट् ने म० बुद्ध से पूछा – "लिच्छवी गणराज्य की उन्नति-समृद्धि का क्या कारण है ?" उस समय बुद्ध ने कहा था –"जब तक गणराज्य के नेतागण आपसी मतभेद मिल कर सुलझा लेते हैं, वे व्यक्तिगत दोषो को दूर कर सामूहिक हितो भी भावना से प्रयत्नशील हैं, जब तक वे परास्त नहीं होगे।" सचमुच लिच्छवी जब तक आपसी मतभेद खत्म कर एक रहे, वे अजेय रहे और एक नगर वधू के आर्कषण और आपसी मतभेद मे लड मरे। भारत के प्राचीन-मध्यकाल के इतिहास से यही सीख मिलती हैं, हम मिलकर मतभेद सुलझाएगे और सदा राष्ट्रीय हितो को सर्वोपरि स्थान देकर अपने दायित्व को पूर्ण करेगे, तो भारत का वर्त्तमान और भविष्य सुरक्षित रहेगा।

❑

चिट्ठी-पत्री

उपभोक्ता कानून वकीलों पर भी लगे

चिकित्सको पर उपभोक्ता सरक्षण कानून लागू होना अच्छी बात है। शासकीय चिकित्सको को भी इस कानूम से छूट नही मिलनी चाहिए। साथ ही इस कानून के दायरे में वकीलों को भी लाना चाहिए। आज बडे वकील फीस के लालच मे छोटे केस ले तो लेते हैं, पर बाद मे उन पर काम करना तौहीन समझते हैं। इस लापरवाही के कारण वे कभी-कभी पक्षकार की हानि भी करवा देते हैं। कई वकील तो दूसरे पक्ष से मिल भी जाते हैं, इसलिए वकीलो को भी उपभोक्ता अदालतों के दायरे मे लाया जाना चाहिए।

राकेश अग्रवाल, २९८, जीवाजी नगर, थाहीपुर, ग्वालियर (म०प्र०)

❑

जातिविहीन समाज

अगर अन्तरजातीय विवाह को कानूनी तौर पर आवश्यक घोषित कर दिया जाए तो शायद जाति-प्रथा के साप के सर को कुचलने मे कोई कमी नहीं रह जाएगी। इस तरह हम केवल ५०-६० वर्षों मे ही एक जातिविहीन समाज का निर्माण कर सकते हैं

–सुरेन्द्र प्रतापसिह, ६५७/५, महरौली, दिल्ली

❑

पेडों की संख्या कम हो रही है।

आज औद्योगीकरण और उपभोक्तावाद के युग मे पर्यावरण को गम्भीर खतरा पैदा हो रहा है। जहा देखो पेड काटे जा रहे हैं। हिमाचल, उत्तरप्रदेश मे महीनो तक जगलो मे आग लगी रही, पर किसी को चिन्ता नहीं। कितने ही निरीह पशु-पक्षी जल गए, किसी ने उफ तक नहीं की, क्योकि वे मूक थे। उनका कोई मनुष्यो की तरह सविधान नहीं था। जनता कम होती पेडो की सख्या पर ध्यान दे।

-ईश्वरचन्द्र, इको क्लब, उच्चतम माध्य विद्यालय, सिसाय हिसार

❑

बहुत अधिक छुट्टियां

हमे छुट्टियो और कामबन्दी के दिनो को कम करना होगा। किसी को भी मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए ससद को उस दिन के लिए स्थगित करने का कोई औचित्य नहीं है। राष्ट्रीय अध्यवसाय का यह दुरुपयोग अनुचित है। जनता इसे अनुचित समझती है। इस सम्बन्ध मे सरकार के सूत्रधार सुनने के लिए तैयार नहीं है। सर्वोच्च ⁓ के रूप मे न्यायपालिका अपने शीर्ष स्तर पर अत्यधिक छुट्टियो के विरुद्ध किसी भी आवेदन पर ध्यान देने से इन्कार कर चुकी है। ससद को जनता की पुकार सुनकर यह निर्धारित करना चाहिए (क) किसी भी शोक को प्रकट करने के लिए उसे स्थगित नहीं किया जाएगा, (ख) उसे मौजूदा १८ छुट्टियो के स्थान पर दस राष्ट्रीय अवकाश और दो प्रतिबन्धित अवकाश मर्यादित करते हुए राजपत्रित अवकाशो के निर्धारण के लिए सुनिश्चित नियम बनाने चाहिए। दूसरे धार्मिक समारोह मनाने वाले अपने सामान्य अवकाश ले सकते हैं।

इन राष्ट्रीय एव प्रतिबन्धित अवकाश के दिनो को छोड कर कार्यालयो, बैंको, सस्थाओ या किन्हीं उद्योगो या प्रतिष्ठानो को किसी भी दूसरे अवसर पर किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति का चाहे उसके पद रहते हुए या दूसरी स्थित मे अवसान हो जाए, तो बन्द नहीं किया जाएगा। केन्द्रीय या राज्य सरकारो के शीर्ष व्यक्तियो के निधन पर उन्हे श्रद्धाजलि देने के लिए निर्धारित दिनो पर झण्डे आधे झुकाए जा सकते हैं, निर्धारित दिनो के लिए राजकीय शोक रखा जा सकता है। विधान सभाए दिन भर के लिए स्थगित होने के स्थान पर श्रद्धाजलि या शोक–प्रस्ताव स्वीकार कर दो मिनट का मौन रख सकती है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सामान्य से असाधारण प्रेरणास्रोत बने : कर्मठ धर्मसमाज सेवी

महात्मा नारायण स्वामी

मनमोहन आर्य

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत आर्य विचारधारा मे वह शक्ति है जिसका अनुसरण करने पर एक सामान्य व्यक्ति असाधारण प्रेरणास्रोत बनकर देश धर्म एव समाज की भूरिश सेवा कर स्वजीवन को धन्य बना सकता है, ये शब्द महात्मा नारायण स्वामी मे पूर्णतया घटित देखे जा सकते है।

सन्यास से पूर्व महात्मा नारायण स्वामी नारायण प्रसाद के नाम से जाने जाते थे। उनका जन्म सवत १९२२ (सन् १८६५) की वसत पचमी को अलीगढ मे मुशी सूर्य प्रसाद के यहा हुआ। उनकी प्रारभिक शिक्षा एक मौलवी के पास हुई जिसने उन्हे उर्दू व फारसी का अध्ययन कराया। वह उर्दू के अच्छे कवि बन गए। मासिक उर्दू पत्रो मे उनकी कविताए प्रकाशित होती रहती थीं। उन्होने अग्रेजी भाषा का भी अध्ययन किया। १४ वर्ष की अवस्था होने पर उनके पिता का देहात हो गया।

बालक नारायण प्रसाद ने अलीगढ मे स्वामी जी के दर्शन किए थे। यह घटना सभवत स्वामी दयानन्द जी के २२ से २५ अगस्त १८७८ के अल्पकालीन प्रवास के मध्य घटी। महात्मा जी के ही शब्दो मे घटना प्रस्तुत है। वह लिखते है, एक दिन जब मै एक अग्रेजी स्कूल मे पढता था, स्कूल मे चर्चा हुई कि आज एक बडे सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती आने वाले है। उत्सुकता से बहुत से विद्यार्थी और अध्यापक देखने के लिए स्कूल से बाहर उस रास्ते मे जहा से वह गुजरने वाले थे, खडे हो गए। थोडी ही देर मे देखा कि एक जोडी (बग्घी) मे स्वामी जी सवार होकर हम सबके सामने से जा रहे थे। उनके दिव्य एव चमकते हुए चेहरे के देखने मात्र ही से ऐसा कोई न था जो प्रभावित न हुआ हो।

आर्यसमाज मे प्रविष्ट होने से पूर्व महात्मा जी शैवमत के अनुयायी थे। वह वर्ष मे दो बार व्रत रखते थे। आर्यसमाज के विषय मे उनकी धारणा थी कि ये खण्डन ही करते है। आर्यसमाज मुरादाबाद के सभासद म० हरसराय सिह के सम्पर्क मे आकर एव उनसे आर्यसमाज के नियम देखकर उनका भ्रम दूर हुआ। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश पढा जिसने उनकी आखे खोल दीं और वह आर्यसमाज के महत्व को समझ सके। स्वाध्याय ने उन्हे यज्ञोपवीत धारण करने की प्रेरणा दी। रामगगा के तट पर उन्होने यज्ञोपवीत धारण कर यज्ञ के पश्चात जीवन मे कुछ व्रत धारण करने की घोषणा की जिसके अतर्गत सध्या हवन करना, ईमानदारी एव परिश्रम से जीविका उपलब्ध करना, सदगृहस्थ की तरह जीवन व्यतीत करना तथा सस्कृत एव अग्रेजी की शिक्षा प्राप्ति के पूर्ण प्रयत्न सम्मिलित थे। एक वर्ष बाद व्रतपालन मे पूर्ण सफलता मिलने पर उन्होने आर्यसमाज मुरादाबाद की सदस्यता ग्रहण की। सन् १८९१ मे साहू श्यामसुन्दर द्वारा प्रदत्त भूमि धन एव अन्यत्र सगहीत धन से मुरादाबाद मे आर्यसमाज मदिर का भवन तैयार हो गया। वह समाज के उपमत्री थे और वार्षिकोत्सव मे वह भोजन प्रबन्ध का कार्य सभालते थे, जिससे वह तत्कालीन प्रमुख विद्वानो एव नेताओ के सम्पर्क मे आए। इन प्रमुख विद्वानो मे प० तुलसीराम स्वामी प० लेखराम, लाला मुशीराम, प० आर्य मुनि, प० घनश्याम शर्मा मिर्जापुरी एव अन्य अनेक मनीषी थे।

वह सन् १९१६ तक लगातार प्रातीय सभा की अतरग के सदस्य रहे और सभा के कार्यो मे सक्रिय भाग लेते रहे। **आर्यसमाज के विद्वान् के लिए सस्कृत, हिन्दी एव अग्रेजी का ज्ञान अपरिहार्य है।** हिन्दी का ज्ञान तो था अत सस्कृत का अध्ययन उन्होने प० कल्याण दत्त राजवैद्य से किया। अग्रेजी अध्ययन मे उन्होने बाबू हरिदास जी अधिवक्ता से भरपूर सहायता ली।

महात्मा नारायण स्वामी ने रामगढ मे अपने निवास के लिए २० मई सन १९२० को एक कुटिया का निर्माण आरभ किया था जो "नारायण आश्रम" से जाना गया। ८ दिसम्बर सन् १९२० म महात्मा जी ने इस आश्रम मे प्रवेश किया। निर्माण अवधि मे वह ठाकुर कृष्ण सिह जी की वाटिका मे रहे और वहा अपने अस्थायी निवास को उन्होने पाठशाला का रूप दिया।

सस्था गुरुकुल वृदावन ने देश को उच्च कोटि के विद्वान् साहित्यकार देशभक्त दिए है। सन् १९१६ मे उसे फर्रुखाबाद से पौराणिको के गढ वृदावन लाया गया था। अत पोपो की इस नगरी मे वेद-शास्त्र ज्ञान से शून्य अहकारी ब्राह्मणो ने इसके विरोध के साथ यहा के ब्रह्मचारियो एव शिक्षको के साथ असभ्यता एव मनुष्यता शून्य व्यवहार किए। इस स्थिति मे महात्मा नारायण स्वामी जी के धैर्य एव गुरुकुल के ब्रह्मचारियो एव कुलवासियो की प्रतिक्रिया मे प्रेम एव सोहार्दपूर्ण व्यवहार की प्रेरणा से गुरुकुल के सामान्य क्रियाकलापो मे उपस्थित की जाने वाली समस्याओ पर नियत्रण किया जा सका। महात्मा नारायण स्वामी इस गुरुकुल के सर्वाधिकारी बनाए गए थे। उनके एव ब्रह्मचारियो के सहयोगात्मक व्यवहार ने जिलाधिकारी मि० डैम्पीयर को गुरुकुल का प्रशसक बना दिया। यह भी एक तथ्य है कि गुरुकुल वृदावन की स्थापना प्रसिद्ध क्रातिकारी राजा महेन्द्र प्रताप द्वारा दान मे प्राप्त भूमि पर की गई थी। गाधी जी का भी यहा पदार्पण हुआ था और अपने यहा के प्रवास को उन्होने महत्वपूर्ण एव सुखद कहा। गुरुकुल के सबध मे यह भी महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि उसके भवनो का शिलान्यास गवर्नर जेम्स मैस्टन ने किया था। इसके बाद आपने आजीवन अपनी जमा पूजी से २००० के मासिक ब्याज रुपये १३ से जीवनयापन किया। गुरुकुल वृदावन मे वह जो भोजन किया करते थे, उसका मासिक भुगतान रुपये १० वह करते थे और शेष २ रुपये मे वस्त्र, यात्राए आदि करते थे। त्याग का यह उदाहरण ही इस गुरुकुल का निमित्त कारण था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के २३ दिसम्बर सन् १९२६ को एक धर्मान्ध अब्दुल रशीद द्वारा हत्या किए जाने के पश्चात् देश भर मे आर्यसमाजो के नगर कीर्तनो और उत्सवो मे विघ्न पैदा किए जाने लगे। आर्यसमाजियो की हत्याए भी सामान्य हो गईं तो दिल्ली मे महात्मा हसराज जी की अध्यक्षता मे प्रथम आर्य महासम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन मे महात्मा नारायण स्वामी ने प्रस्ताव किया कि आर्यसमाज के विरुद्ध जारी हिसा एव नगर कीर्तनो आदि मे बाधाओ के विरोध मे सत्याग्रह किया जाए जिसके लिए १०,००० आर्यवीर भर्ती किए जाए एव ५०,००० रुपए एकत्र किए जाए। इस प्रस्ताव के अनुसार १०,००० आर्यवीरो की भर्ती एव धनसग्रह का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर महात्मा जी ने अपूर्व साहस एव दूरदर्शिता का परिचय दिया। कुछ समय पश्चात् १०,६०० आर्यवीर धर्मरक्षक भर्ती किए गए जिसका कुछ श्रेय प्रो० रामदेव स्वामी ब्रह्मानन्द (नैसवाल) एव आचार्य परमानन्द (झज्जर) आदि को है। इस बीच गुरुकुल कागडी के वार्षिकोत्सव क अवसर पर आयोजित आर्य सम्मेलन का उन्हे सभापति बनाया गया।

गुरुकुल वृन्दावन मे वह एक छप्पर की कुटिया मे रहते थे।

उनके जीवन का अनुकरण देश को नई दिशा दे सकता है।

महात्मा नारायण स्वामी जी ने मुरादाबाद की राजकीय सेवा मे जिन पदो पर कार्य किया वहा हजारो रुपए कमाए जा सकते थे। परन्तु उन्होने जीवन भर कभी एक पैसा भी घूस मे नही लिया। कलेक्टर पी हरिसन, जिसके अधीन उन्होने कार्य किया था उन्होने लिखा कि महात्मा नारायण स्वामी की ईमानदारी में प्रतिष्ठा उल्लेखनीय थी। आगे चलकर इन्ही पी० हरिसन ने प्रयाग एक एक अग्रेज भक्त बाबा आलाराम द्वारा आर्यसमाज एव सतयार्थ प्रकाश के विरुद्ध स्थापित अभियोग मे उनकी जमकर खिचाई की थी।

फरवरी, १९२५ मे आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी मथुरा मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया गया था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरस्कर्त्ता, स्वतत्रता आन्दोलन के लोकप्रिय नेता एव शुद्धि आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधार स्वामी श्रद्धानन्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव शताब्दी सभा के प्रधान थे। आर्यसमाज मे पार्टीबाजी के कारण सहयोग न मिलने की आशका से स्वामी जी ने १९२३ मे दोनो पदो से त्यागपत्र दे दिया। दिसम्बर १९२३ मे सम्पन्न शताब्दी सभा की बैठक में महात्मा नारायण स्वामी जी को सर्वसम्मति से दोनो सभाओ का प्रधान चुना गया।

जन्म शताब्दी समारोह १५ फरवरी से २१ फरवरी १९२५ तक आयोजित किया गया। इस आयोजन का महत्व इसी तथ्य से जाना जा सकता है कि इस आयोजन मे सम्मिलित होने वाले सरकारी कर्मचारियों का भारत सरकार ने एक सप्ताह का अवकाश प्रदान किया था। प्रातीय सरकारो एव देशी रजवाडो ने भी इसी प्रकार की घोषणाए की थीं। रेल विभाग ने इस आयोजन के लिए अनेक स्थानो से विशेष रेले चलाइ। स्थानीय लोगों ने भी समारोह के आयोजको एव आगतुको का असहयोग एव व्यापक सहायता की। इन सब कारणो से यह आयोजन भारत के इतिहास मे अपने समय का अभूतपूर्व आयोजन सिद्ध हुआ। मथुरा जक्शन पर रेलयात्रियो से एकत्र टिकटो के अनुसार २,५४,००० यात्री इसमे उपस्थित थे। अन्य साधनो की गणना करने पर लगभग ४,००,००० लाख ऋषि दयानन्द भक्तो ने इसमे भाग लिया। जापान, चीन बर्मा, अफ्रीका मारीशस, मेडागास्कर, वेस्टइडीज जावा, सुमात्रा,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ठुकराई गई पहाड़ी बालिकाओं का स्वावलम्बन

श्रद्धानन्द अनाथ वनिता आश्रम की यशस्विनी भूमिका

–दूनरत्न श्रीमती सुशीला शर्मा,
अधिष्ठात्री, श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम देहरादून

१७ वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गढवाल प्रवास से लौटने के बाद आर्यसमाज देहरादून के अधिकारियो तथा कार्यकर्त्ताओ को प्रेरित किया कि अपने उपेक्षित तथा निर्धन पर्वतीय क्षेत्र के मातृ-पितृविहीन बालक/बालिकाओ के रक्षण पालन-पोषण, शिक्षण के लिए तथा भावी जीवन मे उन्हे स्वावलम्बी बनाने के लिए एक सस्था का निर्माण करे। तदनुसार आर्यसमाज मन्दिर, धामावाला, देहरादून मे १९२४ मे श्री श्रद्धानन्द अनाथ वनिता आश्रम का शुभारम्भ किया गया।

देहरादून के रईस स्व० श्री मुकुन्दलाल जी ने सस्था का वर्तमान स्थल ६ तिलक मार्ग, देहरादून को भूमिदान के रूप मे दिया और इसी भूखण्ड पर दिनाक १६ अक्तूबर, १९२६ के दिन महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गाधी जी ने अपने कर-कमलो से यहा के भवन का पवित्र शिलान्यास किया था।

देहरादून नगर के दानियो के स्नेहपूर्ण सहयोग से इस सस्था ने सैकडो निराश्रित बालक/बालिकाओ तथा परित्यक्ता नारियो की रक्षा कर उन्हे राष्ट्र का योग्य नागरिक बनाया है। इस आश्रम की सहायता करने वालो की इससे बढ कर प्रामाणिकता क्या हो सकती है कि सस्था को न दान की अपील करनी पडती है और न धन एकत्र करने के लिए दानियो के घरो पर जाना पडता है। आश्रम के सहयोगियो ने देहरादून नगर की जनता ने इसे ऐसे अपना लिया है कि इसकी समस्त आवश्यकताए वह स्वयमेव पूरा करती रहती है।

हमे स्मरण रखना होगा कि युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के नियमो मे लिखा – **"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"** अपने इस मुख्य उद्देश्य की पूर्त्ति हेतु आर्यसमाज ने समाज-सुधार, कुरीति निवारण तथा समाजसेवा के विभिन्न कार्यो मे अगुआ बन कर मार्ग प्रशस्त किया। महर्षि दयानन्द के सैनिको ने महर्षि के उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए त्याग-बलिदान का रास्ता अपनाया। समाज-सुधार, कुरीति निवारण, सेवा के निमित्त अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस सस्था का शुभारम्भ किया था। राजनीति मे महात्मा गाधी के नेतृत्व को सब जानते हैं, परन्तु दु:खी पीडित, त्रस्त मानवो के कल्याण के लिए उनके योगदान पर उचित ध्यान नहीं दिया गया है। यदि हमारी सस्थाए और युवा वर्ग महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गाधी सरीखे जननायको के जीवनादर्शो से – दुखी, पीडित, असहाय जनो की सेवा सहायता करने की प्रेरणा ग्रहण कर सके तो हम सच्चे जनसेवक और प्रभुभक्त बन कर भगवान् के आशीर्वाद के पात्र बन सकेगे।

विगत् १७ अक्तूबर को पंच परमेश्वर मेले में समाज सेवा के लिए दूनरत्न से विभूषित आश्रम की अधिठात्री श्रीमती सुशीला शर्मा द्वारा दिए गए भाषण से

❑

बड़ा ही महत्व है

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सावन में झूलो का, बगीचे मे फूलो का।
गाव मे स्कूलो का बडा ही महत्व है।।१।।

सर्दी मे रजाई का रोग मे दवाई का।
राखी पर भाई का, बडा ही महत्व है।।२।।

वृक्षो मे पीपल का, जलो मे गगाजल का।
किसान के हल का, बडा ही महत्व है।।३।।

गाव मे सरपच का, उत्सवो मे मच का।
ऑफिस मे लच का, बडा ही महत्व है।।४।।

देहरादून की लीचियो का, मेरठ की कैंचियो का।
मथुरा की बगीचियो का, बडा ही महत्व है।।५।।

गाय के क्षीर का, सावन में खीर का।
दयानन्द फकीर का, बडा ही महत्व है।।६।।

❑

धर्म, हिन्दू या हिन्दुत्व का उच्चारण आपत्तिजनक नहीं

धर्म के नाम पर वोट देने या न देने के लिए कहना ही अपराध है

भारत के उच्चतम न्यायालय का एक नया सन्तुलित एतिहासिक निर्णय

भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति के जे०एस० वर्मा, न्यायमूर्त्ति एन०पी० सिह और न्यायमूर्त्ति के वेकटस्वामी की खण्डपीठ ने बम्बई उचच न्यायालय के फैसले को निरस्त करते हुए एक ऐतिहासिक निर्णय दिया है। बम्बई उच्च न्यायालय ने उन आरोपो को सही ठहराया था कि १९९० के चुनाव के दौरान उम्मीदवारो ने हिन्दुत्व के नाम पर धार्मिक भावनाए भडका कर जन प्रतिनिधित्व कानून का उल्लघन किया था।

उच्चतम न्यायालय ने हिन्दुत्व हिन्दू और हिन्दूवाद पर विस्तार से चर्चा की। न्यायाधीशो ने १९५२ से १९७६ की अवधि मे विभिन्न सविधान पीठो के इन निर्णयो मे यही सकेत दिया हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति को अकित करता है, इसलिए इसे हिन्दू कट्टरवाद नहीं समझना चाहिए। इस सन्दर्भ मे न्यायधीशो मे कुलतारसिह के मामले मे दिए गए निर्णय का उल्लेख किया। इस फैसले मे पन्थ शब्द के इस्तेमाल पर विस्तार से विचार किया गया था। न्यायाधीशो ने कहा "इसलिए हिन्दुत्व शब्द के इस्तेमाल का वैमनस्य के रूप मे नहीं लेना चाहिए।" न्यायाधीशो ने कहा "यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ राजनीतिक दल चुनाव के दौरान इस शब्द का दुरुपयोग करते है।"

न्यायालय ने कहा – "भाषणो मे 'धर्म' को उद्धृत करने पर मनाही नहीं है, लेकिन धर्म के नाम पर एक समुदाय अथवा वर्ग से वोट नहीं मागे जा सकते।

राहत और चेतावनी भी

इस निर्ण पर 'राहत और चेतावनी भी' शीर्षक से नई दिल्ली का **नवभारत टाइम्स** लिखता है – "विद्वान् न्यायाधीशो ने जहा एक ओर मात्र धर्म का नाम लेने का धर्म के नाम पर वोट न मागना बताया है, वहीं धर्म के नाम पर वोट मागने का गलत बता कर उन सबके रास्ते भी बन्द कर दिए हैं, जो धर्म की राजनीति को अपने लक्ष्यो की प्राप्ति का माध्यम बना रहे थे या बनाना चाहते थे उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय मे स्पष्ट कहा है कि हिन्दुत्व या हिन्दू शब्दो के उच्चारण से ही किसी को चुनाव कानून का उल्लघन करने का दोषी नहीं ठहराया जा सकता है लेकिन इतनी ही स्पष्टता और दृढता के साथ न्यायालय ने यह भी कहा है कि धर्म का नाम लेकर मतदाताओ को वोट देने के लिए प्रेरित करना या धर्म के नाम पर किसी उम्मीदवार को वोट देने के लिए कहना हमारे सविधान के अनुसार अपराध है।"

इसी सन्दर्भ मे नई दिल्ली का **जनसत्ता** लिखता है – "खण्डपीठ का इन फैसलो के माध्यम से सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि चुनावी भाषणो या राजनीतिक विमर्श मे धर्म, हिन्दू या हिन्दुत्व के उल्लेख मात्र से बिकने वाले विद्वानो और न्यायाधीशो दोनो को उसने विचार का एक नया और सन्तुलित पक्ष दिखाया है।"

(पृष्ठ ३ का शेष)

बहुत अधिक छुट्टियां

हमे दूसरो से सीख लेनी चाहिए। कोई भी प्रमुख बडा राष्ट्र १०-१२ दिन से अधिक का राष्ट्रीय अवकाश नहीं रखता। जब राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या हुई थी तब वाशिगटन या सयुक्त राज्य अमेरिका के सरकारी दफ्तर बन्द नहीं हुए थे। दफ्तरो के खुले रहने और ससद के कार्य करते रहने से दिवगत व्यक्ति के प्रति असम्मान नहीं होता, प्रत्युत जन प्रतिनिधियो द्वारा प्रजातान्त्रिक ढग से कार्य करने से हमारा सम्मान बढेगा। हमारे सचार माध्यमो को इस बारे मे जनता की आवाज बुलन्द कर नई परम्परा डालनी चाहिए।

–ह०द०स०, ए–३१, वेस्ट एण्ड, नई दिल्ली-११००२१

❑

(पृष्ठ २ का शेष)

गृहस्थ आश्रम : एक ज्येष्ठाश्रम

इसलिए जितना कुछ व्यवहार संसार मे है उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न हो तो सन्तानोत्पत्ति न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम कहा से हो सकते ? जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है, वही निन्दनीय है और जो प्रशसा करता हैं, वही प्रशसनीय है। परन्तु, तभी गृहाश्रम मे सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनो परस्पर प्रसन्न विद्वान् पुरुषार्थी और सब व्यवहारो के ज्ञाता हो।

–सत्यार्थ प्रकाशः चतुर्थ समुल्लास

❑

हिन्दी की प्राचीन नाट्य परम्परा से ही भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों की रक्षा

हिन्दी अकादमी के सहयोग से कल्याणी प्रतिष्ठान के माध्यम से गाधी शान्ति प्रतिष्ठान मे आयोजित एक सगाष्ठी मे 'हिन्दी की रग-परम्परा पर बढता विदेशी प्रभाव चुनौती और दिशाए' विषय पर भाषण देते हुए दिल्ली विधान सभा क अध्यक्ष श्री चरतीलाल गोयल ने कहा यह चिन्ता का विषय है कि हमारे रगमच पर विदेशी प्रभाव बढता जा रहा है। हिन्दी के नाटको की शुरूआत भारतीय सास्कृतिक प्रेरणा से हुई थी आज फिर से नाटको को स्वदेशी भावना से भरपूर होना चाहिए।

दिल्ली के शिक्षामन्त्री श्री साहिब सिह न कहा बाहर के प्रभाव और प्रेरणा तब अनुचित होती है जब हम बाहर के प्रभावो को प्रधानता दे और अपनी रग परम्परा को दबाने और समाप्त करने अथवा विकृत करने के लिए करे –

अध्यक्ष श्री विद्यानिवास मिश्र ने कहा हमे अपनी प्राचीन रग-परम्परा को याद करना चाहिए क्योकि इससे भारतीय सस्कृति व नैतिक मूल्यो को जीवित रखने म सहायता हा सकती है।

गृहणियां हिन्दी के प्रयोग का व्रत लें

हिन्दी अकादमी द्वारा पालम कालोनी मे आयोजित गोष्ठी मे श्रीमती मृदुला ने गृहणियो से आग्रह किया कि वे अपने बच्चो को हिन्दी माध्यम से ही शिक्षा दिलाए और स्वय हिन्दी के प्रयोग का व्रत ले और अपने सभी दैनिक कार्यो मे हिन्दी का ही प्रयोग करे। इस अवसर पर श्रीमती इन्दिरा मोहन, श्री हरिबाबू कसल आदि वक्ताओं ने कहा – हिन्दी के उत्थान से समाज और देश का उत्थान होगा।

बच्चों को भारतीय संस्कृति की पहचान कराएं

राष्ट्रीय एकता सप्ताह पर आयोजित बाल कविता प्रतियोगिता के अवसर पर दिल्ली के समाज कल्याण मन्त्री श्री रातावाल ने कहा – आज पाश्चात्य सस्कृति के बढते फैलाव का बच्चो पर बुरा प्रभाव पड रहा है। अभिभावक अपने बच्चो को भारतीय सस्कृति व जीवन मूल्यो की पहचान कराए जिससे बडे होकर वे सुसभ्य नागरिक बने। ❑

(पृष्ठ ४ का शेष)

महात्मा नारायण स्वामी

फिलीपाइन और अमेरीका आदि देशो के प्रतिनिधि भी बडी सख्या मे सम्मिलित हुए। महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस उत्सव के विषय मे साय लिखा है कि स्त्रिया शायद इतनी स्वतन्त्रता के साथ बेखटके किसी भी मेले मे नही धूम सकती थी। जितनी स्वतत्रता उन्हे इस मेले मे थी। विशेषज्ञो का कहना है कि इतना बडा धार्मिक मेला हजारो वर्षो के बाद हुआ है। शायद महाराजा अशोक के काल मे इतने बडे धार्मिक मेले हुए हो तो हुए हो। उत्सव मे पुलिस का कोई प्रबन्ध नही था। सारा उत्सव और मेले का प्रबन्ध आर्य वीरो के हाथ मे था। परन्तु इतना उत्तम कि किसी का कुछ नुकसान नहीं हुआ। न कही चोरी की वारदात न ठगी। न किसी की गाठ काटी गई न और प्रकार से किसी को ठगा गया। भोजन का पर्याप्त और अधिक से अधिक अच्छा प्रबन्ध था। छूत-अछूत किसी प्रकार का भेदभाव न था। इतना बडा मेला केवल शिक्षितो का था कोई मैला कपडा पहने हुए कही भी दिखाई नही दे सकता था।

मेले मे कहीं भी सिगरेट एव नशीले पदार्थ उपलब्ध नही थे। सर्वत्र रामराज्य की स्थिति थी। लाउडस्पीकर का उन दिनो प्रचलन नहीं था। अत वक्ताओ को अपने स्थान पर मेजो पर खडे होकर बोलना पडा। १९ फरवरी को जो शोभायात्रा निकली वह भी अभूतपूर्व थी। आर्य जगत् के प्रख्यात विद्वान् प० युधिष्ठिर मीमासक ने अपने आत्म परिचय मे इस समारोह की प्रशसा करते हुए लिखा है कि यहा भोजन मे जो स्वाद आया वह फिर कभी नहीं प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मथुरा नगर मे अभ्यागत आर्यो का जो जुलूस निकला वह अपने आप मे अभूतपर्व था। प्रत्येक नर-नारी के हृदय मे ऋषि दयानन्द के प्रति जो श्रद्धा और उल्लास इस अवसर पर दिखाई पडा वह अन्य किसी शताब्दी समारोह मे देखने को नहीं मिला।

शताब्दी समारोह के निर्विघ्न समाप्त होने के पश्चात् आयोजन मे उपस्थित आर्य जगत की समस्त विभूतियो एव भारत और उपनिवेशो के समस्त आर्य नर-नारियो की ओर से श्री नारायण स्वामी जी महाराज कार्यकर्त्ता प्रधान श्री मद्दयानन्द शताब्दी सभा एव प्रधान सार्वदेशिक सभा की सेवा में २० फरवरी १९२५ की एक बैठक मे अभिनन्दन पत्र भेट किया। अभिनन्दन पत्र शाहपुराधीश राजाधिराज सर नाहर सिंह ने पढा। आप जो वाक्य पढते थे उन्हे प्रिंसिपल दीवान चद जी कानपुर उच्च स्वर से दुहराते थे। अभिनन्दन पत्र मे कहा गया था कि जो अथक पुरुषार्थ जो नि स्पृह तपस्या आपने इस दयानन्द महायज्ञ को पूर्ण करने के लिए की है, उससे हमारा हृदय कृतज्ञता के सच्चे भावो से गद्गद हो रहा है और हमे निश्चय है कि आपकी आदर्श नि स्वार्थ सेवा, अगली पीढी के लिए दृष्टात बनेगी और उसकी विद्युत से न जाने कितने युवक हृदय प्रभावित होगे। आर्यसमाज का गौरव है कि उसमें आप जैसे दयानन्द के सच्चे भिक्षु विद्यमान है। उन्होंने आर्यसमाज और उसके प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द के काम पर सर्वस्व न्योछावर किया है। आपका विशुद्ध उन्नत चारित्र्य, विद्वत्ता, दृढ अध्यवसाय, आत्म स्वाध्याय, शाति युक्त कर्मण्यता ये ऐसे गुण है जिन्हे हम सब अनुभव कर रहे हैं।

पराधीन भारत मे स्वतत्र हैदराबाद रियासत मे नवाब उस्मान अली द्वारा अपनी ८५ प्रतिशत बहुसख्यक आर्य (हिन्दू) प्रजा के प्राय सभी धार्मिक एव मानव अधिकारो के हनन के विरुद्ध आर्यसमाज द्वारा लगातार सात वर्ष तक उनके समाधान का प्रयास किया गया। रियासत की साम्प्रदायिक एव हठधर्मिता की नीति के विरोध मे महात्मा नारायण स्वाजी जी के नेतृत्व मे ३. जनवरी सन् १९३९ से शातिपूर्ण सत्याग्रह आरभ किया गया जो १७ अगस्त १९३९ को सफलता प्राप्त कर समाप्त हुआ। हैदराबाद रियासत के भारत मे विलय के अवसर पर भारत के प्रथम गृहमत्री सरदार पटेल ने विलय का सारा श्रेय आर्य सत्याग्रह को दिया। उन्होने कहा कि आर्यसमाज ने यदि पहले से भूमिका तैयार न की होती तो ३ दिन मे हैदराबाद मे पुलिस एक्शन सफल नही हो सकता था। हैदराबाद मे यह पुलिस कार्यवाही **१५ से १७ सितम्बर, सन् १९४८ के बीच हुई जिसमें रजाकारों के ८०० सैनिक मारे गए थे।**

महात्मा नारायण स्वामी इस हैदराबाद सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी थे। उनकी प्रथम गिरफ्तारी ३१ जनवरी १९३९ को हैदराबाद मे एव दूसरी गुलबर्गा मे ४ फरवरी, १९३९ को हुई। जेल मे उन्हे लोहे के भारी कडे पहनाए गए। ६ फरवरी को उन्हे एक वर्ष की कडी कैद की सजा सुनाई गई। जेल जीवन के प्रथम डेढ महीनो मे आपको प्रतिदिन आठ घटे कठोर परिश्रम करना पडा। यह चरखे पर दो सेर सूत दुहरा करते थे। इस बीच उनका शारीरिक भार १९६ से घट कर १६१ पौण्ड हो जाने पर काम मे छूट दी गई। जेल सुपरिटेण्डेट उनके आचरण एव व्यवहार से उनका भक्त बन गया। एक दिन वह अपनी पत्नी और बच्चो को जेल ले गया और महात्मा जी से आग्रह किया कि वह उनके सिरो पर हाथ रखकर उन्हे आर्शीवाद दे।

महात्मा जी ने उसकी इच्छा पूर्ण की। जेल डायरेक्टर सर हालेस भी उनके प्रति श्रद्धा भाव रखते थे। गुलबर्गा के बदी जीवन मे उन्होने छादोग्य-उपनिषद का भाष्य किया। वह जेल मे साय ४ बजे तक उपनिषदो की नियमित कथा भी करते थे। यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि इस सत्याग्रह मे १२ ००० गिरफ्तारिया हुई थीं एव लगभग ३० आर्य वीर जेल जीवन की विपरीत परिस्थितियो एव यातनाओ के कारण शहीद हुए। इस सत्याग्रह की सफलता के पश्चात् देश भर मे महात्मा जी का भव्य स्वागत किया गया एव अभिनन्दन पत्र भेट किए गए।

महात्मा नारायण स्वामी जी दिसम्बर, १९२३ से १९३७ तक १४ वर्ष एव सन् १९४१, १९४५ से १९४७ तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। यह कार्यकाल सार्वदेशिक सभा का स्वर्णिम काल रहा। १५ सितम्बर १९३९ को आपका रामगढ मे अभिनन्दन कर एक हाई स्कूल की स्थापना का निर्णय लिया गया। १ जुलाई को स्थापित यह स्कूल सन् १९४३ मे हाई स्कूल बना। स्कूल का नाम नारायण स्वामी रामगढ रखकर रामगढ की जनता ने महात्मा जी की सेवाओ के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित की। काशी विश्वविद्यालय मे प्रो० महेश प्रसाद की पुत्री कल्याणी देवी को वेद मध्यमा श्रेणी मे प्रवेश को लेकर भी आर्यसमाज ने अपना समर्थन प्रदान किया।

सदियो से स्त्रियो के वेदाध्ययन के अधिकार पर लगा प्रतिबन्ध आर्यसमाज क प्रयास से १४ सितम्बर १९४६ को समाप्त हुआ। इस सफलता के पीछे भी महात्मा जी की ही प्रेरणा एव प्रयत्न मुख्य था। मुस्लिम लीग सरकार ने सिंध प्रान्त म सन १९४४ मे आर्यसमाज की पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" के चौदहवे समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसके विरोध मे १४ जनवरी १९४७ को कराची में महात्मा जी ने सत्याग्रह का श्रीगणेश किया। यहा भी सफलता ने उनके चरण चूमे। गढवाल की डालो-पालकी प्रथा के अतर्गत सवर्णो द्वारा शिल्पकारो के प्रति किए जाने वाले धार्मिक शोषण को भी उनके नेतृत्व मे दूर किया गया। शुद्धि, धर्म प्रचार एव प्लेग रोगियो की सेवा के क्षेत्र मे भी उन्होने महत्वपूर्ण सेवाए दी। अपेण्डिक्स के जान लेवा आपरेशन मे बिना पूर्ण बेहोश हुए आपरेशन करवाकर आपने डाक्टरो को भी आश्चर्य मे डाल दिया। पेट का कैंसर बरेली मे १५ अक्तूबर, १९४७ को उनकी मृत्यु का कारण बना।

आज आर्यसमाज और देश को महात्मा नारायण स्वामी जैसे कर्मठ धर्म समाज सेवी नेताओ की आवश्यकता है उनके जीवन का अनुकरण देश को नई दिशा दे सकता है।

–१९६/II, चुक्खूवाला, देहरादून ❑

ओ३म्

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

विशाल शोभायात्रा

सोमवार, २५ दिसम्बर १९९५, प्रातः १० बजे

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की शोभायात्रा श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर खारी बावली नयाबास लालकुआ चावडी बाजार नई सडक, चान्दनी चौक, फव्वारा, दरीबा होती हुई **दोपहर २ बजे लाल किला मैदान** मे सार्वजनिक सभा के रूप मे परिणत हो जाएगी। जिसमे अनेक आर्य विद्वान व राष्ट्रीय नेता स्वतत्रता आन्दोलन के महान् सेनानी, सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एव गुरुकुल कागडी के सस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेगे। इस शोभायात्रा मे अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर सगठन को सुदृढ करने की कृपा करे। आप केसरिया वस्त्र पहन कर ओ३म ध्वज के साथ उपयुक्त वाहनो मे शोभायात्रा मे सम्मिलित हो।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

श्री चुन्नीलाल जी द्वारा वेदप्रचार कार्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री चुन्नीलाल आर्य ने नवम्बर के चौथे सप्ताह क प्रारम्भ मे आर्यसमाज पलवल जिला फरीदाबाद (हरयाणा) और नवम्बर के आखिरी दिना मे आर्यसमाज लश्कर ग्वालियर (मध्यप्रदेश) म वेद प्रचार के कार्यक्रमा म योगदान किया।

आर्य सन्देश – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 14-15/12/1995 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/95
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/95 14-15/12/1995 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू० (सी०) १३६/९५

राष्ट्रपति ने स्वतन्त्रता सेनानी के पैर छूकर गले लगाया

पुसद (महाराष्ट्र) १० दिसम्बर के दिन यहा उस समय विलक्षण दृश्य उपस्थित हो गया, जब १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे भाग लेने वाले दो स्वतन्त्रता सेनानियो ने एक दूसरे के पैर छूकर पारस्परिक सम्मान व्यक्त किया। यह स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४८ साल बाद भावपूर्ण पुनर्मिलन का स्मरणीय क्षण था।

राष्ट्रपति चिमूर मे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध हुए जन-आन्दोलन मे उल्लेखनीय भूमिका निभाने वाले सात स्वतन्त्रता सेनानियो का सम्मान कर रहे थे उसी समय उनमे से एक ने राष्ट्रपति डॉ० शर्मा के पैर छू लिए। डॉ० शर्मा सहसा झुक और योवृद्ध सेनानी के पैर छूकर उसे गले लगा लिया।

क्रान्तिकारी सन्त तुकडो जी का डाक-टिकट जारी करने के बाद राष्ट्रपति ने कहा – यह विडम्बना ही है कि मेरे जैसे छोटे आदमी को लोग राष्ट्रपति कहते है जबकि राष्ट्र के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को कोई नही जानता। ❑

आर्यसमाज देवलाली कैम्प में विश्वशान्ति महायज्ञ

आर्यसमाज देवलाली कैम्प, जिला नासिक महाराष्ट्र मे रविवार २४ दिसम्बर से बृहस्पति २८ दिसम्बर, १९९५ तक विश्वशान्ति महायज्ञ सम्पन्न होगा। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार होगे। डॉ० महावीर प्रसाद, वानप्रस्थी श्री मुनि वसिष्ठ आर्य, गुरुकुल कागडी के ब्रह्मचारी आशुतोष जी यज्ञ मे भाग लेगे। दिल्ली के प० सत्यपाल जी के मधुर भजनोपदेश होगे। ❑

पुनर्विवाह के इच्छुक स्त्री-पुरुष सम्पर्क करें

हिन्दू विधुर पुरुषो एव विधवाओ तथा तलाकशुदा स्त्रिय के पुनर्विवाह निमित्त – पुनर्विवाह के इच्छुक हिन्दू भाई–बह पत्र द्वारा सम्पर्क करे – प्रेमचन्द्र गोयल, प्रधान ला० रामचन अनाज वाले धर्मार्थ ट्रस्ट (रजि०), रामकुटीर लाल कोर्ठ यज्ञशाला वैदिक मन्दिर ब्रजघाट, जिला गाजियाबाद (उ०प्र

चुनाव-समाचार

आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली

प्रधान - श्री रामकिशन अग्रवाल, **मन्त्री** - श्री अरुण गुप्त **कोषा** श्री बाबूराम आर्य। अन्य अधिकारी और अन्तरग सदस्य भी नि किए गए।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित, **सार्वदेशिक प्रेस**, पटौदी हाऊस दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ में मुद्रित होकर
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३१०१५० के लिए प्रकाशित।